दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय-जय, काल-विनाशिनि काली जय जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय जय॥
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, जय शंकर।
हर हर शंकर दुखहर सुखकर अघ-तम-हर हर हर शंकर॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
जय-जय दुर्गा, जय मा तारा। जय गणेश जय शुभ-आगारा॥
जयति शिवाशिव जानकिराम। गौरीशंकर सीताराम॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम। व्रज-गोपी-प्रिय राधेश्याम॥
रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥

(संस्करण २,२५,०००)

'सा धेनुर्वरदास्तु मे'

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेषु संस्थिता। धेनुरूपेण सा देवी मम शान्तिं प्रयच्छतु॥
देहस्था या च रुद्राणी शंकरस्य सदा प्रिया। धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥
विष्णोर्वक्षसि या लक्ष्मीः स्वाहा या च विभावसोः। चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्या धेनुरूपास्तु सा श्रिये॥
चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च। लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे॥
स्वधा या पितृमुख्यानां स्वाहा यज्ञभुजां च या। सर्वपापहरा धेनुस्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे॥

जो समस्त प्राणियोंकी तत्त्वतः वास्तविक लक्ष्मी हैं और जो सभी देवताओंमें हविष्यरूपसे स्थित हैं, वह धेनुरूपा देवी मुझे सुख-शान्ति प्रदान करें। भगवान् शंकरके आधे अङ्गमें विराजनेवाली जो मूल रुद्राणी नामकी प्रियतमा शक्ति हैं, वह गोरूपा देवी मेरे पाप-तापको दूर करें। जो भगवान् विष्णुके हृदयमें विराजनेवाली पद्मालया भगवती लक्ष्मी हैं और जो अग्निके साथ नित्यस्थित रहनेवाली स्वाहा नामकी शक्ति हैं तथा जो चन्द्रमा, सूर्य एवं इन्द्रकी साक्षात् इष्ट शक्ति हैं, वह गोरूपा देवी मेरे लिये कल्याणदायिनी लक्ष्मी बनें। जो चतुर्मुख ब्रह्माजीकी आत्मशक्तिरूपा गिराकी अधिष्ठात्री सरस्वती देवी हैं और जो धनाधीश कुबेरकी लक्ष्मीरूपा शक्ति हैं तथा जो समस्त लोकपालोंकी ऐश्वर्यरूपा लक्ष्मी हैं, वह गौरूपा धेनु मेरे लिये वरदायिनी हों। जो श्रेष्ठ पितरोंकी स्वधा नामकी शक्ति हैं और जो यज्ञभुक् देवताओंके लिये स्वाहा नामकी सहायिका शक्ति हैं, वह सब पाप-तापोंको नष्ट करनेवाली कल्याणस्वरूपा गौ मुझे परम शान्ति प्रदान करें।

इस अङ्कका मूल्य ६५ रु०
वार्षिक शुल्क (भारतमें)
डाक व्ययसहित ६५ रु०
(सजिल्द ७२ रु०)
विदेशमें—US$10

जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय॥
जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन् जय जय॥
जय विराट् जय जगत्पते। गौरीपति जय रमापते॥

पञ्च वर्षीय शुल्क
डाक व्ययसहित
(भारतमें) ५०० रु०
(सजिल्द ६०० रु०)

संस्थापक—ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका
आदिसम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार
सम्पादक—राधेश्याम खेमका
केशोराम अग्रवालद्वारा गोविन्दभवन-कार्यालयके लिये गीताप्रेस, गोरखपुरसे मुद्रित तथा प्रकाशित

'कल्याण' के सम्मान्य ग्राहको और प्रेमी पाठकोसे नम्र निवेदन

१-'कल्याण' के ६९वें वर्ष सन् १९९५ का यह विशेषाङ्क 'गोसेवा-अङ्क' आपलोगोंकी सेवामे प्रस्तुत है। इसमे ४११ पृष्ठोमे पाठ्यसामग्री और ८पृष्ठोमे विषय-सूची आदि है। कई बहुरगे तथा सादे चित्र भी दिये गये हैं। फरवरी मासका अङ्क विशेषाङ्कके जिल्दम ही सलग्न है।

२-जिन ग्राहकोसे शुल्क-राशि अग्रिम मनीआर्डरद्वारा प्राप्त हो चुकी है, उन्हे विशेषाङ्क तथा मार्चतकका अङ्क रजिस्ट्रीद्वारा भेजा जा रहा है तथा जिनसे शुल्क-राशि यथासमय प्राप्त नहीं होगी, उन्हे ग्राहक-सख्याके क्रमानुसार वी०पी०पी० द्वारा भेजा जायगा। रजिस्ट्रीकी अपेक्षा वी०पी०पी०के द्वारा विशेषाङ्क भेजनेमे डाक-खर्च आदि अधिक लगते है, अत वार्षिक शुल्क-राशि मनीआर्डरद्वारा भेजनी चाहिये। 'कल्याण' का वर्तमान वार्षिक शुल्क डाक-खर्च-सहित ६५ ०० (पैसठ रुपये) मात्र है, जो केवल विशेषाङ्कका ही मूल्य है। सजिल्द विशेषाङ्कके लिये ७ ०० (सात रुपये) अतिरिक्त देय होगा।

३-'कल्याण'के पद्रह वर्षीय ग्राहक भी बनाये जाते है। सदस्यता-शुल्क रु० ५०० ०० (पाँच सौ रुपये), सजिल्द विशेषाङ्कका ६०० ०० (छ सौ रुपये) मात्र है। इस योजनाके अन्तर्गत फर्म, प्रतिष्ठान आदि सभी ग्राहक बन सकते है।

४-ग्राहक सज्जन मनीआर्डर कूपनपर अपनी ग्राहक-सख्या अवश्य लिखे। ग्राहक-सख्या या पुराना ग्राहक न लिखनेसे आपका नाम नये ग्राहकोमे लिखा जा सकता है, जिससे आपकी सेवामे 'गोसेवा-अङ्क' नयी ग्राहक-सख्याके क्रमसे रजिस्ट्री-द्वारा पहुँचेगा और पुरानी ग्राहक-सख्याके क्रमसे इसकी वी०पी० पी० भी जा सकती है। वी०पी० पी० भेजनेकी प्रक्रिया प्रारम्भ होनेके बाद जिन ग्राहकोका मनीआर्डर प्राप्त होगा, उनका समयसे समायोजन न हो सकनेके कारण हमारे न चाहते हुए भी विशेषाङ्क उन्हे वी०पी० पी०द्वारा जा सकता है। ऐसी परिस्थितिमे आप वी०पी० पी० छुड़ाकर किसी अन्यको 'कल्याण'का नया ग्राहक बनानेकी कृपा करे। एसा करनेसे आप 'कल्याण'को आर्थिक हानिसे बचानेके साथ 'कल्याण'के पावन प्रचार-कार्यमे सहयोगी होगे। ऐसे ग्राहकोसे मनीआर्डरद्वारा प्राप्त राशि अन्य निर्देश न मिलनेतक अगले वर्षके वार्षिक शुल्कके निमित्त जमा कर ली जाती है। जिन्होने वी०पी०पी० छुड़ाकर दूसरेको ग्राहक बना दिया है, वे हमे तत्काल नये ग्राहकका नाम और पता, वी०पी०पी० छुड़ानेकी सूचना तथा अपने मनीआर्डर भेजनेका विवरण लिखनेकी कृपा करें, जिससे उनके आये मनीआर्डरकी जाँच करवाकर रजिस्ट्रीद्वारा उनका अङ्क तथा नये ग्राहकका अङ्क नियमितरूपसे भेजा जा सके।

५-इस अङ्कके लिफाफे (कवर) पर आपकी ग्राहक-सख्या एव पता छपा हुआ है, उसे कृपया जाँच ले तथा अपनी ग्राहक-सख्या सावधानीसे नोट कर ल। रजिस्ट्री अथवा वी०पी०पी० का नम्बर भी नोट कर लेना चाहिये। पत्र-व्यवहारम ग्राहक-सख्याका उल्लेख नितान्त आवश्यक है, क्योकि इसके बिना आपके पत्रपर हम समयसे कार्यवाही नहीं कर पाते है। डाकद्वारा अङ्कोके सुरक्षित वितरणमे सही पिन-कोड नम्बर आवश्यक है। अत अपने लिफाफेपर छपा पता जाँच कर ल।

६-'कल्याण' एव 'गीताप्रेस-पुस्तक-विभाग' की व्यवस्था अलग-अलग है। अत पत्र, मनीआर्डर आदि सम्बन्धित विभागको पृथक्-पृथक् भेजने चाहिये।

व्यवस्थापक—'कल्याण'-कार्यालय, पत्रालय—गीताप्रेस—२७३००५, गोरखपुर (उ० प्र०)

'कल्याण'के पुराने अति उपयोगी विशेषाङ्क

[पुनर्मुद्रित ग्रन्थाकारमे उपलब्ध]

	कल्याण वर्ष	मूल्य	डाकखर्च		'कल्याण' वर्ष	मूल्य	डाकखर्च
शक्ति-अङ्क	९	६०/-	८/-	भक्त-चरिताङ्क	२६	६०/-	८/-
योगाङ्क	१०	६०/-	८/-	बालक-अङ्क	२७	७०/-	८/-
साधनाङ्क	१५	६५/-	८/-	सत्कथा-अङ्क	३०	६५/-	८/-
सं० मार्कण्डेय-ब्रह्मपुराणाङ्क	२१	६५/-	८/-	सं० योगवासिष्ठाङ्क	३५	६५/-	८/-
नारी-अङ्क	२२	५०/-	८/-	परलोक पुनर्जन्माङ्क	४३	६५/-	८/-
हिन्दू संस्कृति-अङ्क	२४	७५/-	८/-	हनुमान-अङ्क	४९	४०/-	८/-
सं० स्कन्दपुराण	२५	८०/-	८/-	शिवोपासनाङ्क	६७	४५/-	८/-

व्यवस्थापक—'कल्याण'-कार्यालय पत्रालय—गीताप्रेस—२७३००५, गोरखपुर (उ० प्र०)

श्रीऋषिकुल-ब्रह्मचर्याश्रम, चूरू (राजस्थान)

गीताप्रेस, गोरखपुर (प्रधान कार्यालय—श्रीगोविन्दभवन, कलकत्ता) द्वारा सचालित राजस्थानके चूरू नगर-स्थित इस आश्रममे बालकोके लिये प्राचीन भारतीय सस्कृति एव वैदिक परम्परानुरूप शिक्षा-दीक्षा और आवासकी उचित व्यवस्था है। इस आश्रमकी स्थापना ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दकाद्वारा आजसे लगभग ७१ वर्ष पूर्व इस विशेष उद्देश्यसे की गयी थी कि इसमे पढ़नेवाले बालक अपनी सस्कृतिके अनुरूप विशुद्ध सस्कार तथा तदनुरूप शिक्षा प्राप्तकर सच्चरित्र, आध्यात्मिक दृष्टिसे सम्पन्न आदर्श भावी नागरिक बन सके—एतदर्थ भारतीय सस्कृतिके अमूल्य स्रोत—वेद तथा श्रीमद्भगवद्गीता आदि शास्त्रो एव प्राचीन आचार-विचारोकी दीक्षाका यहाँ विशेष प्रबन्ध है। सस्कृतके मुख्य अध्ययनके साथ अन्य महत्त्वपूर्ण उपयोगी विषयाकी शिक्षा भी यहाँ दी जाती है। विस्तृत जानकारीके लिये मन्त्री, श्रीऋषिकुल-ब्रह्मचर्याश्रम, चूरू (राजस्थान) के पतेपर सम्पर्क करना चाहिये।

व्यवस्थापक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

श्रीगीता-रामायण-प्रचार-संघ

श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानस दोनो विश्व-साहित्यके अमूल्य ग्रन्थ-रत्न है। इनके पठन-पाठन एव मननसे मनुष्य लोक-परलोक दोनोमे अपना कल्याण-साधन कर सकता है। इनके स्वाध्यायमे वर्ण-आश्रम, जाति, अवस्था आदि कोई भी बाधक नहीं है। आजके इस कुसमयमे इन दिव्य ग्रन्थोके पाठ और प्रचारकी अत्यधिक आवश्यकता है। अत धर्मपरायण जनताको इन कल्याणमय ग्रन्थोंमे प्रतिपादित सिद्धान्तो एव विचारोसे अधिकाधिक लाभ पहुँचानेके सदुद्देश्यसे श्रीगीता-रामायण-प्रचार-सघकी स्थापना की गयी है। इसके सदस्योकी सख्या इस समय लगभग २८ हजार है। इसमे श्रीगीताके छ प्रकारके और श्रीरामचरितमानसके तीन प्रकारके सदस्य बनाये गये है। इसके अतिरिक्त उपासना-विभागके अन्तर्गत नित्यप्रति इष्टदेवके नामका जप, ध्यान और मूर्तिकी पूजा अथवा मानसिक पूजा करनेवाले सदस्योकी श्रेणी भी है। इन सभीको श्रीमद्भगवद्गीता एव श्रीरामचरितमानसके नियमित अध्ययन तथा उपासनाकी सत्प्रेरणा दी जाती है। सदस्यताका कोई शुल्क नहीं है। इच्छुक सज्जन 'परिचय-पुस्तिका' नि शुल्क मँगवाकर पूरी जानकारी प्राप्त करनेकी कृपा करे एव श्रीगीताजी और श्रीरामचरितमानसके प्रचार-यज्ञमे सम्मिलित होकर अपने जीवनका कल्याणमय पथ प्रशस्त करे।

पत्र-व्यवहारका पता—मन्त्री, श्रीगीता-रामायण-प्रचार-सघ, *पत्रालय*—स्वर्गाश्रम, *पिन*—२४९३०४ (वाया-ऋषिकेश), जनपद—पौड़ी-गढवाल (उ० प्र०)।

साधक-सघ

मानव-जीवनकी सर्वतोमुखी सफलता आत्म-विकासपर ही अवलम्बित है। आत्म-विकासके लिये जीवनमे सत्यता, सरलता निष्कपटता, सदाचार, भगवत्परायणता आदि दैवी गुणोका ग्रहण और असत्य, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, हिंसा आदि आसुरी गुणाका त्याग ही एकमात्र श्रेष्ठ और सरल उपाय है। मनुष्यमात्रको इस सत्यसे अवगत करानेके पावन उद्देश्यसे लगभग ४७ वर्ष पूर्व 'साधक-सघ' की स्थापना की गयी थी। इसका सदस्यता-शुल्क नहीं है। सभी कल्याणकामी स्त्री-पुरुषोको इसका सदस्य बनना चाहिये। सदस्योके लिये ग्रहण करनेके १२ और त्याग करनेके १६ नियम बने है। प्रत्येक सदस्यको एक 'साधक-दैनन्दिनी' एव एक 'आवेदन-पत्र' भेजा जाता है सदस्य बननेके इच्छुक भाई-बहनोको 'साधक-दैनन्दिनी का वर्तमान मूल्य १५० तथा डाकखर्च ०५० पैसे—कुल रु० २ ०० मात्र, डाकटिकट या मनीआर्डरद्वारा अग्रिम भेजकर उन्हे मँगवा लेना चाहिये। सघके सदस्य इस दैनन्दिनीमे प्रतिदिन साधन-सम्बन्धी अपने नियम-पालनका विवरण लिखते है। विशेष जानकारीके लिये कृपया नियमावली नि शुल्क मँगवाइये।

पता—सयोजक, 'साधक-सघ' *पत्रालय*—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५ (उ० प्र०)।

श्रीगीता-रामायण-परीक्षा-समिति

श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानस दोनो मङ्गलमय एव दिव्यतम ग्रन्थ है। इनमे मानवमात्रको अपनी समस्याओका समाधान मिल जाता है तथा जीवनमें अपूर्व सुख-शान्तिका अनुभव होता है। प्राय सम्पूर्ण विश्वमे इन अमूल्य ग्रन्थोका समादर है और करोड़ों मनुष्योने इनके अनुवादोको भी पढकर अवर्णनीय लाभ उठाया है। इन ग्रन्थाके प्रचारके द्वारा लोकमानसको अधिकाधिक परिष्कृत करनेकी दृष्टिसे श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानसकी परीक्षाओका प्रबन्ध किया गया है। दोनो ग्रन्थोंकी परीक्षाओंमें बैठनेवाले लगभग दस हजार परीक्षार्थियोके लिये २०० परीक्षा-केन्द्रोकी व्यवस्था है। नियमावली मँगानेके लिये कृपया निम्नलिखित पतेपर पत्र-व्यवहार करे।

व्यवस्थापक—श्रीगीता-रामायण-परीक्षा-समिति *पत्रालय*—स्वर्गाश्रम, *पिन*—२४९३०४ (वाया-ऋषिकेश), जनपद—पौड़ी-गढवाल (उ० प्र०)।

'गोसेवा-अङ्क'की विषय-सूची

गो-स्तवन

माता रुद्राणा दुहिता वसूना स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि ।
प्र नु वोच चिकितुषे जनाय मा गामनागामदिति वधिष्ट॥

'गौ रुद्रोकी माता, वसुओकी पुत्री, अदितिपुत्रोकी बहिन और घृतरूप अमृतका खजाना है, प्रत्येक विचारशील पुरुषको मैंने यही समझाकर कहा है कि निरपराध एव अवध्य गौका वध न करो।'

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावती पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहाना ॥

'गौओने हमारे यहाँ आकर हमारा कल्याण किया है। वे हमारी गोशालामे सुखसे बैठे और उसे अपने सुन्दर शब्दोसे गुँजा दे। ये विविध रगोकी गौएँ अनेक प्रकारके बछडे-बछडियाँ जने और इन्द्र (परमात्मा) के यजनके लिये उष कालसे पहले दूध देनेवाली हो।'

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
दवाश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभि सचते गोपति सह॥

'वे गौएँ न तो नष्ट हो न उन्हे चोर चुरा ले जाय और न शत्रु ही कष्ट पहुँचाये। जिन गौओंकी सहायतासे उनका स्वामी देवताओंका यजन करने तथा दान देनेम समर्थ होता है, उनके साथ वह चिरकालतक सयुक्त रहे।'

गावो भगा गाव इन्द्रो म इच्छाद्गाव सोमस्य प्रथमस्य भक्ष ।
इमा या गाव स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम्॥

'गौएँ हमारा मुख्य धन हो, इन्द्र हमे गोधन प्रदान करे तथा यज्ञोकी प्रधान वस्तु सोमरसके साथ मिलकर गौओका दूध ही उनका नैवेद्य बन। जिसके पास ये गौएँ हैं, वह तो एक प्रकारसे इन्द्र ही है। मैं अपने श्रद्धायुक्त मनसे गव्य पदार्थोके द्वारा इन्द्र (भगवान्) का यजन करना चाहता हूँ।'

यूय गावो मेदयथा कृश चिदश्रीर चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्र गृह कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥

'गौओ! तुम कृश शरीरवाले व्यक्तिको हृष्ट-पुष्ट कर देती हो एव तेजोहीनको देखनम सुन्दर बना देती हो। इतना ही नहीं तुम अपने मङ्गलमय शब्दस हमार घरोको मङ्गलमय बना देती हो। इसीसे सभाओंम तुम्हारे ही महान् यशका गान होता है।'

प्रजावती सूयवसे रुशन्ती शुद्धा अप सुप्रपाणे पिबन्ती ।
मा व स्तेन ईशत माघशस परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु॥

'गौओ! तुम बहुत-से बच्चे जनो, चरनेके लिये तुम्हे सुन्दर चारा प्राप्त हो तथा सुन्दर जलाशयमे तुम शुद्ध जल पाती रहो। तुम चारो तथा दुष्ट हिसक जावाके चगुलम न फँसो और रुद्रका शस्त्र तुम्हारी सब ओरसे रक्षा करे।'

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूना वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्।
दुहामश्विभ्या पयो अघ्न्येय सा वर्धता महते सौभगाय॥

'रँभानेवाली तथा ऐश्वर्योका पालन करनेवाली यह गाय मनसे बछडेकी कामना करती हुई समीप आयी है। यह अवध्य गौ दोना अश्विदेवोक लिये दूध दे और वह बडे सौभाग्यके लिये बढे।'

गवोपनिषद्

सौदास उवाच

त्रैलोक्ये भगवन् किंस्वित् पवित्रं कथ्यतेऽनघ।
यत् कीर्तयन् सदा मर्त्यः प्राप्नुयात् पुण्यमुत्तमम्॥

सौदास बोले—'भगवन्! निष्पाप महर्षे! तीनों लोकोंमें ऐसी पवित्र वस्तु कौन कही जाती है, जिसका नाम लेनेमात्रसे मनुष्यको सदा उत्तम पुण्यकी प्राप्ति हो सके।'

[गौओंकी महिमाके गूढ़ रहस्यको प्रकट करनेवाली विद्याके महान् विद्वान् महर्षि वसिष्ठने गौओंको नमस्कार करके राजा सौदाससे इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—]

गावः सुरभिगन्धिन्यस्तथा गुग्गुलुगन्धयः।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥

[वसिष्ठजी बोले—] 'राजन्! गौओंके शरीरसे अनेक प्रकारकी मनोरम सुगन्ध निकलती रहती है तथा बहुतेरी गौएँ गुग्गुलके समान गन्धवाली होती हैं। गौएँ समस्त प्राणियोंकी प्रतिष्ठा (आधार) हैं और गौएँ ही उनके लिये महान् मङ्गलकी निधि हैं।'

गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथा मूलं गोषु दत्तं न नश्यति॥

'गौएँ ही भूत और भविष्य हैं। गौएँ ही सदा रहनेवाली पुष्टिका कारण तथा लक्ष्मीकी जड़ हैं। गौओंको जो कुछ दिया जाता है, उसका पुण्य कभी नष्ट नहीं होता।'

अन्नं हि परमं गावो देवानां परमं हविः।
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ॥

'गौएँ ही सर्वोत्तम अन्नकी प्राप्तिमें कारण हैं। वे ही देवताओंको उत्तम हविष्य प्रदान करती हैं। स्वाहाकार (देवयज्ञ) और वषट्कार (इन्द्रयाग)—ये दोनों कर्म सदा गौओंपर ही अवलम्बित हैं।'

गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः।
गावो भविष्यं भूतं च गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः॥

'गौएँ ही यज्ञका फल देनेवाली हैं। उन्हींमें यज्ञोंकी प्रतिष्ठा है। गौएँ ही भूत और भविष्य हैं। उन्हींमें यज्ञ प्रतिष्ठित हैं अर्थात् यज्ञ गौओंपर ही निर्भर है।'

सायं प्रातश्च सततं होमकाले महाद्युते।
गावो ददति वै हौम्यमृषिभ्यः पुरुषर्षभ॥

'महातेजस्वी पुरुषप्रवर! प्रातःकाल और सायंकाल सदा होमके समय ऋषियोंको गौएँ ही हवनीय पदार्थ (घृत आदि) देती हैं।'

यानि कानि च दुर्गाणि दुष्कृतानि कृतानि च।
तरन्ति चैव पाप्मानं धेनुं ये ददति प्रभो॥

'प्रभो! जो लोग (नवप्रसूतिका दूध देनेवाली) गौका दान करते हैं, वे जो कोई भी दुर्गम संकट आनेवाले होते हैं उन सबसे, अपने किये हुए दुष्कर्मोंसे तथा समस्त पाप-समूहसे भी तर जाते हैं।'

एकां च दशगुर्दद्याद् दश दद्याच्च गोशती।
शतं सहस्रगुर्दद्यात् सर्वे तुल्यफला हि ते॥

'जिसके पास दस गौएँ हों, वह एक गौका दान करे। जो सौ गाय रखता हो, वह दस गौओंका दान करे और जिसके पास एक हजार गौएँ मौजूद हों, वह सौ गौएँ दानमें दे दे तो इन सबको बराबर ही फल मिलता है।'

अनाहिताग्निः शतगुरयज्वा च सहस्रगुः।
समृद्धो यश्च कीनाशो नार्घ्यमर्हन्ति ते त्रयः॥

'जो सौ गौओंका स्वामी होकर भी अग्निहोत्र नहीं करता, जो हजार गौएँ रखकर भी यज्ञ नहीं करता तथा जो धनी होकर भी कृपणता नहीं छोड़ता—ये तीनों मनुष्य अर्घ्य (सम्मान) पानेके अधिकारी नहीं हैं।'

कपिलां ये प्रयच्छन्ति सवत्सां कांस्यदोहनाम्।
सुव्रतां वस्त्रसंवीतामुभौ लोकौ जयन्ति ते॥

'जो उत्तम लक्षणोंसे युक्त कपिला गौको वस्त्र ओढ़ाकर बछड़ेसहित उसका दान करते हैं और उसके साथ दूध दुहनेके लिये एक कांस्यका पात्र भी देते हैं, वे इहलोक और परलोक दोनोंपर विजय पाते हैं।'

युवानमिन्द्रियोपेतं शतेन शतयूथपम्।
गवेन्द्रं ब्राह्मणेन्द्राय भूरिशृङ्गमलंकृतम्॥
वृषभं ये प्रयच्छन्ति श्रोत्रियाय परंतप।
ऐश्वर्यं तेऽधिगच्छन्ति जायमानाः पुनः पुनः॥

'शत्रुओका सताप देनेवाले नरेश! जो लाग जवान, सभी इन्द्रियोसे सम्पन्न, सौ गायोके यूथपति, बडी-बडी सींगोवाले गवेन्द्र वृषभ (साँड) को सुसज्जित करके सौ गायोसहित उसे श्रेष्ठ श्रोत्रिय ब्राह्मणको दान करते हैं, वे जब-जब इस ससारम जन्म लते हैं, तब-तब महान् ऐश्वर्यके भागी होत हैं।'

नाकीर्तयित्वा गा सुप्यात् तासा सस्मृत्य चोत्पतेत्।
सायप्रातर्नमस्येच्च गास्तत पुष्टिमाप्नुयात्॥

'गौओका नाम-कीर्तन किये बिना न सोये। उनका स्मरण करके ही उठे और सवेरे-शाम उन्ह नमस्कार करे। इससे मनुष्यको बल एव पुष्टि प्राप्त होती है।'

गवा मूत्रपुरीषस्य नोद्विजेत कथचन।
न चासा मासमश्नीयाद् गवा पुष्टि तथाप्नुयात्॥

'गौआके मूत्र और गोबरसे किसी प्रकार उद्विग्न न हो—घृणा न करे और उनका मास न खाय। इससे मनुष्यका पुष्टि प्राप्त होती है।'

गाश्च सकीर्तयन्नित्य नावमन्येत तास्तथा।
अनिष्ट स्वप्नमालक्ष्य गा नर सम्प्रकीर्तयत्॥

'प्रतिदिन गौओका नाम ल उनका कभी अपमान न करे। यदि बुरे स्वप्न दिखायी दें तो मनुष्य गोमाताका नाम ले।'

गोमयेन सदा स्नायात् करीषे चापि सविशेत्।
श्लेष्ममूत्रपुरीषाणि प्रतिघात च वर्जयेत्॥

'प्रतिदिन शरीरमे गोबर लगाकर स्नान करे सूखे हुए गाबरपर बैठे। उसपर थूक न फेके मल-मूत्र न छोडे तथा गौआके तिरस्कारसे बचता रह।'

× × ×

घृतेन जुहुयादग्नि घृतेन स्वस्ति वाचयेत्।
घृत दद्याद् घृत प्राशेद् गवा पुष्टि सदाश्नुते॥

'अग्निमें घृतसे हवन करे। घृतसे ही स्वस्तिवाचन कराये। घृतका दान करे और स्वय भी गौका घृत ही खाय। इससे मनुष्य सदा गोआकी पुष्टि एव वृद्धिका अनुभव करता है।'

गोमत्या विद्यया धेनु तिलानामभिमन्त्र्य य ।
सर्वरत्नमयी दद्यान्न स शोचेत् कृताकृते॥

'जो मनुष्य सब प्रकारके रत्नासे युक्त तिलकी धेनुको 'गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी' (ऋग्वेद ४। २। ५) इत्यादि गोमती-मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके ब्राह्मणको दान करता है, वह किये हुए शुभाशुभ कर्मके लिय शोक नहीं करता।'

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृग्य पयोमुच ।
सुरभ्य सौरभेय्यश्च सरित सागर यथा॥

'जैसे नदियाँ समुद्रके पास जाती हैं, उसी तरह सोनेसे मढी हुई सींगावाली, दूध देनेवाली सुरभी और सौरभेयी गौएँ मेर निकट आय।'

गा वै पश्याम्यह नित्य गाव पश्यन्तु मा सदा।
गावोऽस्माक वय तासा यतो गावस्ततो वयम्॥

'मैं सदा गौओका दर्शन करूँ आर गौएँ मुझपर कृपादृष्टि करे। गौएँ हमारी हैं और हम गौओंके हैं। जहाँ गोए रह, वहीं हम रहे।'

एव रात्रौ दिवा चापि समेषु विषमेषु च।
महाभयेषु च नर कीर्तयन् मुच्यते भयात्॥

'जो मनुष्य इस प्रकार रातमे या दिनम, सम अवस्थामे या विषम अवस्थाम तथा बडे-से-बडे भय आनेपर भी गोमाताका नामकीर्तन करता है वह भयसे मुक्त हो जाता है।'

गो-प्रदक्षिणा

गवा दृष्ट्वा नमस्कृत्य कुर्याच्चैव प्रदक्षिणम् । प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा॥
मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा । वृद्धिमाकाक्षता नित्य गाव कार्या प्रदक्षिणा ॥

'गोमाताका दर्शन एव उन्ह नमस्कार करक उनकी परिक्रमा कर। एसा करनसे साता द्वीपासहित भूमण्डलकी प्रदक्षिणा हा जाता है। गौएँ समस्त प्राणियाकी माताएँ एव सार सुख दनवाला हैं। वृद्धिकी आकाक्षा करनेवाल मनुष्यको नित्य गौआकी प्रदक्षिणा करना चाहिय।'

गोमती-विद्या

गोमतीं कीर्तयिष्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम्। ता तु मे वदतो विप्र शृणुष्व सुसमाहित ॥
गाव सुरभयो नित्य गावो गुग्गुलगन्धिका । गाव प्रतिष्ठा भूताना गाव स्वस्त्ययन परम्॥
अन्नमेव पर गावो देवाना हविरुत्तमम्। पावन सर्वभूताना रक्षन्ति च वहन्ति च॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि। ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमे प्रयोजिता ॥
सर्वेषामेव भूताना गाव शरणमुत्तमम् । गाव पवित्र परम गावो मङ्गलमुत्तमम्॥
गाव स्वर्गस्य सोपान गावो धन्या सनातना । (ॐ)नमो गोभ्य श्रीमतीभ्य सौरभेयीभ्य एव च॥
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम । ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेक द्विधा स्थितम्॥
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति । देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभि सकल जगत्॥
धार्यते वै सदा तस्मात् सर्वे पूज्यतमा सदा। यत्र तीर्थे सदा गाव पिबन्ति तृषिता जलम्।
उत्तरन्ति पथा येन स्थिता तत्र सरस्वती॥
गवा हि तीर्थे वसतीह गङ्गा पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मी करीषे प्रणतौ च धर्मस्तासा प्रणाम सतत च कुर्यात्॥

(विष्णुधर्मोत्तरपु० द्वि० ख० ४२। ४९—५८)

[जलाधिनाथ वरुणके पुत्र पुष्कर-द्वीपके स्वामी सर्वशास्त्रोके ज्ञाता पुष्कर भगवान् परशुरामके पूछनेपर इस विद्याका उपदेश करते हुए उनसे कहते हैं—] हे विप्रवर! अब मैं गोमती-विद्याका वर्णन कर रहा हूँ, यह गोमती-विद्या समस्त पापोका समूल उन्मूलन करनेवाली है, इसे आप पूर्णतया एकाग्रचित्त होकर सुने—

गौएँ नित्य सुरभिरूपिणी—गौओकी प्रथम उत्पादिका माता एव कल्याणमयी, पुण्यमयी, सुन्दर श्रेष्ठ गन्धवाली हैं। वे गुग्गुलके समान गन्धसे सयुक्त हैं। गायोपर ही समस्त प्राणियाका समुदाय प्रतिष्ठित है। वे सभी प्रकारके परम कल्याण अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एव मोक्षकी भी सम्पादिका हैं। गाय समस्त उत्कृष्ट अन्नाके उत्पादनकी मूलभूता शक्ति हे और वे ही सभी देवताआके भक्ष्यभूत हविष्यात्र और पुरोडाश आदिकी भी सर्वोत्कृष्ट मूल उत्पादिका शक्ति हैं। ये सभी प्राणियोको दर्शन-स्पर्शादिके द्वारा सर्वथा शुद्ध निर्मल एव निष्पाप कर देती हैं। वे दुग्ध, दधि तथा घृत आदि अमृतमय पदार्थोंका क्षरण करती हैं तथा उनके वत्सादि समर्थ वृषभ बनकर सभी प्रकारके भारी बोझा ढोने और अन्न आदि उत्पादनका भार वहन करनेम समर्थ होते हैं। साथ ही वेदमन्त्रासे पवित्रीकृत हविष्याके द्वारा स्वर्गमे स्थित देवताओतकको ये ही परितृप्त करती हैं। ऋषि-मुनियोके यहाँ भी यज्ञो एव पवित्र अग्निहोत्रादि कार्योंमे हवनीय द्रव्योक लिये गौओके ही घृत, दुग्ध आदि द्रव्योका प्रयोग होता रहा है (अत वे गायाका विशेष श्रद्धा-भक्तिसे पालन करते रहे हैं)। जहाँ कोई भी शरणदाता नहीं मिलता है वहाँ विश्वके समस्त प्राणियोके लिये गाय ही सर्वोत्तम शरण-प्रदात्री बन जाती हैं। पवित्र वस्तुओमे गाये ही सर्वाधिक पवित्र है तथा सभी प्रकारके समस्त मङ्गलजात पदार्थोकी कारणभूता है। गाय स्वर्ग प्राप्त करनेकी प्रत्यक्ष मार्गभूता सोपान हैं और वे निश्चित रूपसे तथा सदासे ही समस्त धन-समृद्धिकी मूलभूत सनातन कारण रही हैं। लक्ष्मीको अपने शरीरमे स्थान देनेवाली गौआको नमस्कार। सुरभीके कुलम उत्पन्न शुद्ध सरल एव सुगन्धियुक्त गौआको नमस्कार। ब्रह्मपुत्री गौआको नमस्कार। अन्तर्बाह्यसे सर्वथा पवित्र एव सुदूरतक समस्त वातावरणको शुद्ध एव पवित्र करनेवाली गौओको बार-बार नमस्कार।

वास्तवम गौएँ और ब्राह्मण दोना एक कुलके ही प्राणी हैं, दोनाम विशुद्ध सत्त्व विद्यमान रहता है। ब्राह्मणोम वेदमन्त्राकी स्थिति हे ता गौआम यज्ञके साधनभूत हविष्यकी। इन दोनाक द्वारा ही यज्ञ सम्पन्न होकर विष्णु आदि

देवताओसे लेकर समस्त चराचर प्राणियाका आप्यायन होता है। यह सारा विश्व शुद्ध सत्त्वसे परिपूर्ण देवता, ब्राह्मण, गाय, साधु-सत-महात्मा तथा पतिव्रता सती-साध्वी, सदाचारिणी नारियाके पुण्याके आधारपर ही टिका हुआ है। ये ही धार्मिक प्राणी सम्पूर्ण विश्वको सदा धारण करते हैं, अत ये सदा पूजनीय एव वन्दनीय हैं। जिस जलराशिमे प्यासी गाये जल पीकर अपनी तृषा शान्त करती हैं और जहाँ जिस मार्गसे वे जलराशिको लाँघती हुई नदी आदिको पार करती हैं, वहाँ-वहाँ गङ्गा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती आदि नदियाँ या तीर्थ निश्चित रूपसे विद्यमान रहते हैं। गौ-रूपी तीर्थमें गङ्गा आदि सभी नदियाँ तथा तीर्थ निवास करते हैं और गौआके रज कणमे सभी प्रकारकी निरन्तर वृद्धि होनेवाली धर्म-राशि एव पुष्टिका निवास रहता है। गायाके गोबरमे साक्षात् भगवती लक्ष्मी निरन्तर निवास करती हैं और इन्हें प्रणाम करनेमे चतुष्पाद धर्म सम्पन्न हो जाता है। अत बुद्धिमान् एव कल्याणकामी पुरुषको गायोको निरन्तर प्रणाम करना चाहिये।
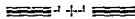
गौओके लिये नमस्कार

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नम। बालेभ्य शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नम ॥

'हे अवध्य गो! उत्पन्न होते समय तुम्हे नमस्कार और उत्पन्न होनेपर भी तुम्हे प्रणाम। तुम्हारे रूप (शरीर) रोम और खुरोको भी प्रणाम।'

नमो गोभ्य श्रीमतीभ्य सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम ॥

'श्रीमती गौओको नमस्कार। कामधनुकी सतानाको नमस्कार। ब्रह्माजीकी पुत्रियोको नमस्कार। पावन करनेवाली गोआको नमस्कार।'

पञ्च गाव समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ । तासा मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नम ॥
सर्वकामदुघ देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनि । पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्य नमो नम ॥

'क्षीरसमुद्रके मथे जानेपर उसमेसे पाँच गौएँ प्रकट हुईं, उनमसे जा नन्दा नामकी श्रेष्ठ गो है, उस देवीको बारबार नमस्कार है। ह श्रेष्ठ सुरभिदेवी! तुम समस्त कामनाआको पूर्ण करनेवाली तथा समस्त तीर्थोमे स्नान करनेवाली हो। अत ह पवित्र करनेवाली देवि! तुम्हे बार-बार नमस्कार है।'

यया सर्वमिद व्याप्त जगत् स्थावरजङ्गमम् । ता धेनु शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्॥

'जिस गौसे यह स्थावर-जगम अखिल विश्व व्याप्त है उस भूत और भविष्यकी जननी गोका मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।'

गोशुश्रूषा

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वश । तस्मै तुष्टा प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥
द्रुह्येन्न मनसा वापि गापु नित्य सुखप्रद । अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥
दान्त प्रीतमना नित्य गवा व्युष्टि तथाश्नुते।

'जो पुरुष गौओकी सेवा करता हे और सब प्रकारसे उनका अनुगमन करता है उसपर सतुष्ट होकर गौएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओक साथ मनसे भी कभी द्वेष न करे उन्हे सदा सुख पहुँचाये उनका यथाचित सत्कार करे आर नमस्कार आदिके द्वारा उनका पूजन करता रह। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौआकी सवा करता है वह समृद्धिका भागी हाता है।'

गौका विश्वरूप

[श्रीमद्भगवद्गीतामे भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको अपने विश्वरूपका दर्शन कराया। सम्पूर्ण विभूतियोसहित चराचर जगत्, त्रिभुवन-त्रैलोक्य और सारे देवी-देवताओके दर्शन अर्जुनको भगवान् श्रीकृष्णमे हुए।

अपने शास्त्राके अनुसार हिन्दूधर्ममे तैंतीस करोड देवता माने गये हैं। सम्पूर्ण विश्व—चराचर-जगत्के जड-चेतन सभी अवयवोके अधिष्ठातृ देवता होते हैं और इन सभी देवी-देवताओका निवास गौ मातामे होनेके कारण गौ विश्वरूप है। इतना ही नहीं, यहाँतक कहा गया है कि 'गावो विश्वस्य मातर ' अर्थात् गाय चराचर जगत्की माता है यानी अखिल विश्वका आधार गौ माता ही है। यही कारण है कि केवल गौकी पूजा एव सेवासे सम्पूर्ण देवी-देवताओका आराधन हो जाता है।

अत यहाँ वेदो स्मृतियो तथा पुराणोमे उपलब्ध गौके विश्वरूपका वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है, साथ ही गोमहिमा और गोसेवाकी महिमाका भी दिग्दर्शन कराया गया है—सम्पादक]

गौका विश्वरूप

[सर्वे देवा स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ]

वेदोमे

प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्र. शिरो अग्निर्ललाट यम कृकाटम्॥
सोमो राजा मस्तिष्को द्यौरुत्तरहनु पृथिव्यधरहनु ॥
विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता रेवतीर्ग्रीवा कृत्तिका स्कन्धा घर्मो वह ॥
विश्व वायु स्वर्गो लोक कृष्णद्र विधरणी निवेष्य ॥
श्येन क्रोडोऽन्तरिक्ष पाजस्य बृहस्पति ककुद् बृहती कीकसा ॥
देवाना पत्नी पृष्टय उपसद पर्शव ॥
मित्रश्च वरुणश्चासौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू॥
इन्द्राणी भसद् वायु पुच्छ पवमानो बाला ॥
ब्रह्म च क्षत्र च श्रोणी बलमूरू॥

प्रजापति और परमेष्ठी इसके (गौके) सींग, इन्द्र सिर अग्नि ललाट और यम गलेकी सधि है। नक्षत्राके राजा चन्द्रमा मस्तिष्क, द्युलाक ऊपरका जबडा और पृथ्वी नीचेका जबडा है। बिजली जीभ, मरुत् देवता दाँत, रेवती नक्षत्र गला, कृत्तिका कधे और ग्रीष्म ऋतु कधेकी हड्डी है। वायु देवता इसके समस्त अङ्ग हैं, इसका लोक स्वर्ग है और पृष्ठवशकी हड्डी रुद्र है। श्येन पक्षी (बाज) इसकी छाती, अन्तरिक्ष इसका बल, बृहस्पति इसका कूबड और बृहती नामके छन्द इसकी छातीकी हड्डियाँ हैं। देवाङ्गनाएँ इसकी पीठ और उनकी परिचारिकाएँ पसलीकी हड्डियाँ है। मित्र और वरुण नामके देवता कधे हैं, त्वष्टा और अर्यमा हाथ हैं तथा महादेव इसकी भुजाएँ हैं। इन्द्रपत्नी इसका पिछला भाग है, वायु देवता इसकी पूँछ और पवमान इसके रोये हैं। ब्राह्मण और क्षत्रिय इसके नितब और बल जाँघे हैं।

धाता च सविता चाष्ठीवन्तौ जङ्घा गन्धर्वा अप्सरस कुष्ठिका अदिति शफा ॥
चेत्तो हृदय यकृन्मेधा व्रत पुरीतत्॥
क्षुत्कुक्षिरिरा वनिष्ठु पर्वता प्लाशय ॥

विधाता और सविता घुटनेकी हड्डियाँ हैं गन्धर्व पिडलियाँ, अप्सराएँ छोटी हड्डियाँ और देवमाता अदिति खुर हैं। चित्त हृदय, बुद्धि यकृत् और व्रत ही पुरीतत् नामकी नाडी है। भूख ही पट, देवी सरस्वती आँते और पर्वत भीतरी भाग हैं।

क्रोधो वृक्कौ मन्युराण्डौ प्रजा शेप ॥
नदी सूत्री वर्षस्य पतय स्तना स्तनयित्नुरूध ॥
विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम्॥

देवताओसे लेकर समस्त चराचर प्राणियाका आप्यायन होता है। यह सारा विश्व शुद्ध सत्त्वसे परिपूर्ण दवता, ब्राह्मण गाय, साधु-सत-महात्मा तथा पतिव्रता मती-साध्वी, सदाचारिणी नारियाके पुण्याके आधारपर ही टिका हुआ है। ये ही धार्मिक प्राणी सम्पूर्ण विश्वको सदा धारण करते हैं, अत ये सदा पूजनीय एव वन्दनीय हैं। जिस जलराशिमे प्यासी गाय जल पीकर अपनी तृपा शान्त करती हैं और जहाँ जिस मार्गसे वे जलराशिको लाँघती हुई नदी आदिको पार करती हैं, वहाँ-वहाँ गङ्गा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती आदि नदियाँ या तीर्थ निश्चित रूपसे विद्यमान रहते हैं। गौ-रूपी तीर्थम गङ्गा आदि सभी नदियाँ तथा तीर्थ निवास करते हैं और गौआके रज कणमे सभी प्रकारकी निरन्तर वृद्धि होनेवाली धर्म-राशि एव पुष्टिका निवास रहता है। गायाके गोबरम साक्षात् भगवती लक्ष्मी निरन्तर निवास करती हैं और इन्हे प्रणाम करनेमे चतुष्पाद धर्म सम्पन्न हो जाता है। अत बुद्धिमान् एव कल्याणकामी पुरुपको गायाको निरन्तर प्रणाम करना चाहिये।

गौओंके लिये नमस्कार

नमस्ते जायमानायै जाताया उत त नम। बालेभ्य शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नम॥

'हे अवध्य गौ! उत्पन्न होते समय तुम्हे नमस्कार और उत्पन्न होनेपर भी तुम्ह प्रणाम। तुम्हारे रूप (शरीर), रोम और खुरोका भी प्रणाम।'

नमो गोभ्य श्रीमतीभ्य सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम॥

'श्रीमती गौआको नमस्कार। कामधेनुकी सतानाको नमस्कार। ब्रह्माजीकी पुत्रियोको नमस्कार। पावन करनवाली गौआको नमस्कार।'

पञ्च गाव समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ। तासा मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नम॥
सर्वकामदुघे देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनि। पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्य नमो नम॥

'क्षीरसमुद्रके मथे जानपर उसमेसे पाँच गौएँ प्रकट हुई उनमेसे जो नन्दा नामकी श्रेष्ठ गौ है, उस देवीको बारबार नमस्कार है। हे श्रेष्ठ सुरभिदेवी! तुम समस्त कामनाओको पूर्ण करनेवाली तथा समस्त तीर्थोंमे स्नान करनेवाली हो। अत हे पवित्र करनेवाली देवि! तुम्ह बार-बार नमस्कार है।'

यया सर्वमिद व्याप्त जगत् स्थावरजङ्गमम्। ता धेनु शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्॥

'जिस गौसे यह स्थावर-जगम अखिल विश्व व्याप्त है उस भूत ओर भविष्यकी जननी गाको मै सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।'

गोशुश्रूषा

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वश। तस्मै तुष्टा प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥
द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्य सुखप्रद। अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥
दान्त प्रीतमना नित्य गवा व्युष्टि तथाश्नुते।

'जो पुरुष गौआकी सेवा करता हे और सब प्रकारसे उनका अनुगमन करता है उसपर सतुष्ट होकर गौएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओके साथ मनसे भी कभी द्वेष न करे उन्ह सदा सुख पहुँचाये उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदिके द्वारा उनका पूजन करता रहे। जा मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौआकी सेवा करता है, वह समृद्धिका भागी होता है।'

गौका विश्वरूप

[श्रीमद्भगवद्गीतामे भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको अपने विश्वरूपका दर्शन कराया। सम्पूर्ण विभूतियोसहित चराचर जगत्, त्रिभुवन-त्रैलोक्य और सारे देवी-देवताओके दर्शन अर्जुनको भगवान् श्रीकृष्णमे हुए।

अपने शास्त्रोके अनुसार हिन्दूधर्ममे तैंतीस करोड देवता माने गये हैं। सम्पूर्ण विश्व—चराचर-जगत्के जड-चेतन सभी अवयवोके अधिष्ठातृ देवता होते हैं और इन सभी देवी-देवताओका निवास गौ मातामे होनेके कारण गौ विश्वरूप है। इतना ही नहीं, यहाँतक कहा गया है कि 'गावो विश्वस्य मातर ' अर्थात् गाय चराचर जगत्की माता है यानी अखिल विश्वका आधार गौ माता ही है। यही कारण है कि केवल गौकी पूजा एव सेवासे सम्पूर्ण देवी-देवताओका आराधन हो जाता है।

अत यहाँ वेदो, स्मृतियो तथा पुराणोमे उपलब्ध गौके विश्वरूपका वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है, साथ ही गोमहिमा और गोसेवाकी महिमाका भी दिग्दर्शन कराया गया है—सम्पादक]

गौका विश्वरूप

[सर्वे देवा स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ]

वेदोमे

प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्र शिरो अग्निर्ललाट यम कृकाटम्॥
सोमो राजा मस्तिष्को द्यौरुत्तरहनु पृथिव्यधरहनु ॥
विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता रेवतीर्ग्रीवा कृत्तिका स्कन्धा घर्मो वह ॥
विश्व वायु स्वर्गो लोक कृष्णद्र विधरणी निवेष्य ॥
श्येन क्रोडोऽन्तरिक्ष पाजस्य बृहस्पति ककुद् बृहती कीकसा ॥
देवाना पत्नी पृष्टय उपसद पर्शव ॥
मित्रश्च वरुणश्चासौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू॥
इन्द्राणी भसद् वायु पुच्छ पवमानो बाला ॥
ब्रह्म च क्षत्र च श्रोणी बलमूरू॥

प्रजापति और परमेष्ठी इसके (गौके) सींग, इन्द्र सिर अग्नि ललाट और यम गलेकी सधि है। नक्षत्रोके राजा चन्द्रमा मस्तिष्क, द्युलोक ऊपरका जबडा और पृथ्वी नीचेका जबडा है। बिजली जीभ, मरुत् देवता दाँत, रेवती नक्षत्र गला, कृत्तिका कधे और ग्रीष्म ऋतु कधेकी हड्डी है। वायु देवता इसके समस्त अङ्ग हैं, इसका लोक स्वर्ग है और पृष्ठवशकी हड्डी रुद्र है। श्येन पक्षी (बाज) इसकी छाती, अन्तरिक्ष इसका बल, बृहस्पति इसका कूबड और बृहती नामके छन्द इसकी छातीकी हड्डियाँ है। देवाङ्गनाएँ इसकी पीठ और उनकी परिचारिकाएँ पसलीकी हड्डियाँ है। मित्र और वरुण नामके देवता कधे हे, त्वष्टा और अर्यमा हाथ हैं तथा महादेव इसकी भुजाएँ हैं। इन्द्रपत्नी इसका पिछला भाग है, वायु देवता इसकी पूँछ और पवमान इसके रोय हैं। ब्राह्मण और क्षत्रिय इसके नितब और बल जाँघे हैं।

धाता च सविता चाष्ठीवन्तौ जङ्घा गन्धर्वा अप्सरस कुष्ठिका अदिति शफा ॥
चेतो हृदय यकृन्मेधा व्रत पुरीतत्॥
क्षुत्कुक्षिरिरा वनिष्ठु पर्वता प्लाशय ॥

विधाता और सविता घुटनेकी हड्डियाँ हैं गन्धर्व पिडलियाँ, अप्सराएँ छोटी हड्डियाँ और देवमाता अदिति खुर हैं। चित्त हृदय, बुद्धि यकृत् और व्रत ही पुरीतत् नामकी नाडी है। भूख ही पेट देवी सरस्वती आँते और पर्वत भीतरी भाग है।

क्रोधो वृक्कौ मन्युराण्डौ प्रजा शेप ॥
नदी सूत्री वर्षस्य पतय स्तना स्तनयित्नुरूध ॥
विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम्॥

देवजना गुदा मनुष्या आन्त्राण्यत्रा उदरम्॥
रक्षांसि लोहितमितरजना ऊबध्यम्॥
अभ्रं पीबो मज्जा निधनम्॥
अग्निरासीन उत्थितोऽश्विना॥
इन्द्रः प्राङ् तिष्ठन् दक्षिणा तिष्ठन् यमः॥

क्रोध गुर्दे, मन्यु (शोर) अण्डकोश और प्रजा जननेन्द्रिय है। नदी गर्भाशय, वर्षाके अधिपति स्तन हैं तथा गड़गड़ाहट करनेवाले बादल ही दुग्धाशय हैं। विश्वव्यापिनी शक्ति चमड़ी, ओषधियाँ रोएँ और नक्षत्र इसके रूप हैं। देवगण गुदा, मनुष्य आँतें एवं भक्ष्य पेट हैं। राक्षस रुधिर एवं दूसरे प्राणी आमाशय हैं। आकाश स्थूलता और मृत्यु मज्जा है। बैठनेके समय यह अग्निरूप है और उठते समय अश्विनीकुमार। पूर्वकी ओर खड़े होते समय इन्द्र और दक्षिणकी ओर खड़े होनेपर यमराज है।

प्रत्यङ् तिष्ठन् धातोदङ् तिष्ठन्त्सविता॥
तृणानि प्राप्तः सोमो राजा॥

पश्चिमकी ओर खड़े होते समय विधाता और उत्तरकी ओर खड़े होते समय यही सविता देवता है। घास चरते समय यही नक्षत्रोंका राजा चन्द्रमा है।

मित्र ईक्षमाण आवृत्त आनन्दः॥
युज्यमानो वैश्वदेवो युक्तः प्रजापतिर्विमुक्तः सर्वम्॥
एतद्वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्॥
उपैनं विश्वरूपाः सर्वरूपाः पशवस्तिष्ठन्ति य एवं वेद॥
(अथर्व० ९। ७। १—२६)

देखते समय यह मित्र देवता है और पीठ फेरते समय आनन्द है। हल अथवा गाड़ीमें जोतनेके समय यह (बैल) विश्वेदेव, जोत दिये जानेपर प्रजापति और जब खुला हुआ रहता है उस समय यह सब कुछ बन जाता है। यही विश्वरूप अथवा सर्वरूप है और यही गोरूप भी है। जिसको इस विश्वरूपका यथार्थ ज्ञान होता है उसके पास विविध आकारके अनेक पशु रहते हैं।

इस सूक्तमें गौका तथा बैलका विश्वरूप बताया गया है। जिस प्रकार भगवद्गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने अपने विश्वरूपका वर्णन किया है उसी प्रकार गौके भी विश्वरूपका इस सूक्तमें वर्णन है। संस्कृतके प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् व्हिटनि महाशय कहते हैं कि इस सूक्तमें आदर्श बैल और गायकी प्रशंसा की गयी है।

इस सूक्तपर कई दृष्टियोंसे विचार किया जा सकता है, परंतु यहाँ केवल एक-दो मुख्य बातें बतलानी हैं। सम्पूर्ण सूक्तके सभी अंशोंपर विचार करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। इस सूक्तके विचारणीय अंश नीचे दिये जाते हैं—

(१) ब्राह्मण और क्षत्रिय विश्वरूपिणी गौके नितंब हैं। (मन्त्र ९)

(२) गन्धर्व पिंडलियाँ और अप्सराएँ छोटी हड्डियाँ हैं। (मन्त्र १०)

(३) देवता इसकी गुदा हैं, मनुष्य आँतें और अन्य प्राणी आमाशय हैं। (मन्त्र १६)

(४) राक्षस रक्त एवं इतर मनुष्य पेट हैं। (मन्त्र १७)

उपर्युक्त मन्त्रोंमें यह भाव दिखलाया गया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा इतर लोग अर्थात् वैश्य, शूद्र, निषाद, गन्धर्व, देवता, अप्सराएँ, मनुष्यमात्र, राक्षस एवं अन्य सब प्राणी गौ-रूप ही हैं। सम्पूर्ण जनता हृदयसे समझे कि हम सब मनुष्य गोमाताके ही अङ्ग हैं—इसीलिये इन मन्त्रोंकी अवतारणा की गयी है। इस प्रकार हमलोग गोमाताके शरीरके साथ अपनी एकरूपता देखना सीखें। गौके शरीरको कष्ट होनेपर वह कष्ट हमींको होगा—यह भाव मनमें धारण करें। यदि कोई मनुष्य गौको कष्ट देता है या उसे काटता है या और किसी भी तरहसे दुःख देता है तो वह केवल गौको ही दुःख देता है तथा गौके दुखी रहनेपर भी हम सब सुखी रह सकते हैं—यह हीन भाव मनसे हटा दें। गौका हमारे साथ अवयवी और अवयवका सम्बन्ध है। हम गौके ही अङ्ग हैं, इसलिये जो दुःख गौको मिलता है, वह हमींको मिलता है—ऐसा मानना चाहिये और इसी भावनासे गौका पालन तथा रक्षण करना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें स्वयं अपने ऊपर दुःख आनेपर जिस लगनके साथ उसका प्रतिकार किया जाता है उसी तीव्रताके साथ गौके कष्टोंको दूर करनेकी चेष्टा होनी चाहिये।

गौ एक निरा दूध देनेवाला पशु ही नहीं है, प्रत्युत वह अपने कुटुम्बका हकदार है, या यों कहिये कि मालिक

है और हम उसके परिवारके लोग हैं—यह भाव सदा मनम जीवित और जाग्रत् रहना चाहिये।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, निषाद, राक्षस आदि सभी जातिके लोगोमे यह विचार जाग्रत् रहना चाहिये। एसा होनेसे सम्पूर्ण जगतीतलपर गोमाताकी पूजा होने लगेगी।

यह सम्पूर्ण जगत् ही गोरूप अर्थात् गायका ही रूप है, इसलिये गौक साथ किसी एक पदार्थकी तुलना हो ही नहीं सकती। अन्य सभी पदार्थोको विविध उपमाएँ दी जा सकती हैं, केवल गौ ही ऐसा प्राणी है, जो अनुपम है, क्योकि वह प्राणीमात्रकी निरूपम माता है, मानव-वशोका पालन करनेवाली है और मानवमात्र उसके अवयव हैं। पाठक यदि विचार करगे और गौके उपकाराका मनन करगे तो वेदका यह कथन ठीक तरहसे उनकी समझमे आ सकता है।

यहाँ प्रश्न यह हो सकता है कि उपर्युक्त वर्णनसे वेदने किस बातकी शिक्षा दी है? इस प्रश्नके उत्तरमे निवेदन है कि वेदने इस सूक्तके द्वारा अहिसाका उत्तमोत्तम उपदेश दिया है। मनुष्य तो क्या, कोई भी प्राणी अपने-आपकी हिसा कदापि नहीं करेगा। सिह या अन्य हिसक जन्तु दूसरे जीवोको मारकर खा जाते हैं। राक्षस भी मनुष्यादि प्राणियोको खा जाते हैं। परतु दूसरेके मासपर निर्वाह करनेवाले ये क्रूर प्राणी अत्यधिक भूख लगनेपर भी अपनी ही देहके अवयवोको कभी काटकर नहीं खाते।

अत इस स्वाभाविक प्रवृत्तिको लेकर ही वेद मनुष्योको इस सूक्तके द्वारा गाय और बैलके माससे पूर्णतया निवृत्त करना चाहता है। यह बात उपर्युक्त वर्णनसे स्पष्ट हो जाती है।

जब सम्पूर्ण हृदयसे मनुष्य अपने-आपको गौके शरीरके अवयव मानने लगगे तब वे लोग गौ या बैलका मास किस तरह खा सकेगे, क्योकि कोई भी जीव अपने शरीरका मास नहीं खाता। औरोकी तो बात ही क्या, निरे आमिषभोजी अथवा नरमासभोजी मनुष्य भी अपने शरीरका मास नहीं खाते। इसलिये जा मनुष्य अपने-आपको गौके शरीरका अवयव मानेगा वह गामास-भभणस पूर्णतया निवृत्त होगा ही।

देखिये, कितनी प्रबल युक्तिसे वेदने लोगोको—मासभोजी राक्षस-श्रेणीके लोगोको भी निरामिषभोजी बनानेका यत्न किया है। यह इतनी प्रबल युक्ति है कि यदि इस प्रकारका विचार मनमे सदाके लिये स्थिर हा जाय तो कभी कोई गोमास खाये ही नहीं। इतनी प्रबल युक्ति देनेपर भी कई पाश्चात्य विद्वान् यह मानते हैं कि वैदिक कालमे गोमास खानेकी प्रथा थी और बैलका भी मास खाया जाता था। उन लोगोसे हमारी प्रार्थना है कि वे इस प्रबल युक्तिका अधिक विचारपूर्वक मनन करे और इसके बाद अपना मत स्थिर कर।

गो मुझसे भिन्न नहीं, मैं उसके शरीरका एक भाग हूँ, इसलिये मुझे जिस प्रकार अपनी रक्षा करनी चाहिये, उसी प्रकार गौकी भी रक्षा अवश्य करनी चाहिये—यह कितना उच्चतम उपदेश है। पाठक इस उपदेशका महत्त्व समझ।

दुराचारी मनुष्य भी जिस समय किसी स्त्रीको 'माँ' कहता है, उस समय उसकी दृष्टिम तत्काल पवित्रता आ जाती है। किसीको माता कहनेका तात्पर्य ही यह है कि उसे पवित्रताकी दृष्टिसे देखा जाय।

गौको माता कहनेका अर्थ यही है कि उसे हम पवित्र एव पूज्य दृष्टिसे दख। 'गौ हमारी परम पूजनीय, वन्दनीय एव पालनीय माता है'—यह भाव हम हर समय जाग्रत् रखना चाहिये। पाठक इस सूक्तका मनन इसी दृष्टिसे करे। इन्द्रादि देवगण जीवित और जाग्रत् गोमाताके देहमे हैं। जहाँ इन्द्रादि देव रहते हैं, वहीं स्वर्ग है अर्थात् गा ही स्वर्गलोक है—यही भाव पूर्वोक्त सूक्तके चतुर्थ मन्त्रम कहा गया है।

गौको माता कहनवाले कुछ लोग गौके शरीरम नाना देवताओका निवास मानते हैं, किंतु यह सब मानते हुए भी उनका आचरण ऐसा होता है मानो वे यह कुछ भी नहीं मानते। इसका कारण उनका धर्मविषयक अज्ञान ही है। यदि वेदका यह उपदेश उनके मनमे जाग्रत् रहेगा तो वे गौकी रक्षा भलीभाँति कर सकगे। गौके जिस गौरवका वर्णन इस सूक्तमे हुआ है, वह गौरव जिस कालमे जनताके मनोम रहा होगा उस कालमें गौका वध असम्भव था—इस बातको अधिक विस्तारसे कहनेकी आवश्यकता नहीं है।
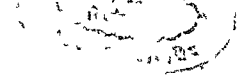
वेदोके समान ही विभिन्न इतिहास-पुराणोमे भी गौके विश्वरूपके अलग-अलग वर्णन मिलते हैं। उनमेंसे कुछको यहाँ दिया जा रहा है—

बृहत्पराशरस्मृतिमे

शृगमूले स्थितो ब्रह्मा शृंगमध्ये तु केशव ।
शृगाग्रे शकर विद्यात् त्रयो देवा प्रतिष्ठिता ॥
शृगाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च।
सर्वे देवा स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ ॥
ललाटाग्रे स्थिता देवी नासामध्ये तु षण्मुख ।
कम्बलाश्वतरौ नागौ तत्कर्णाभ्या व्यवस्थितौ॥
स्थितौ तस्याश्च सौरभ्याश्चक्षुषो शशिभास्करौ।
दन्तेषु वसवश्चाष्टौ जिह्वाया वरुण स्थित ॥
सरस्वती च हुकारे यमयक्षौ च गण्डयो ।
ऋषयो रोमकूपेषु प्रस्रावे जाह्नवीजलम्॥
कालिन्दी गोमये तस्या अपरा देवतास्तथा।
अष्टाविंशतिदेवाना कोट्यो लोमसु ता स्थिता ॥
उदरे गार्हपत्योऽग्निर्हृदये दक्षिणस्तथा।
मुखे चाहवनीयस्तु सभ्यावसथ्यौ च कुक्षिषु॥
एव यो वर्तते गोषु ताडनक्रोधवर्जित ।
महतीं श्रियमाप्नोति स्वर्गलोके महीयते॥

(५। ३४—४१)

गौओके सींगोके मूलमे ब्रह्माजी और दोनो सींगोके मध्यमे भगवान् नारायणका निवास है। सींगके शिरोभागमे भगवान् शिवका निवास जानना चाहिये। इस प्रकार ये तीनो देवता गौके सींगमे प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त सींगके अग्रभागमे चर तथा अचर सभी तीर्थ विद्यमान रहते हैं। इसी प्रकार सभी देवता गौके शरीरमे निवास करते हैं, अत गौ सर्वदेवमयी है। गौके ललाटके अग्रभागमे देवी पार्वती तथा नाकके मध्यमे कुमार कार्तिकेयका निवास है। गौके दोनो कानोमे कम्बल और अश्वतर नामके दो नाग निवास करते हैं और उस सुरभी गौके दाहिनी आँखमें सूर्य और बायीं आँखमे चन्द्रमाका निवास है। दाँतोमे आठो वसु और जिह्वामे भगवान् वरुण प्रतिष्ठित हे। गौके हुंकारमे भगवती सरस्वती निवास करती हैं और गण्डस्थलो (गाल)-मे यम और यक्ष निवास करते हैं। गौके सभी रोमकूपोमे ऋषिगणोका निवास है तथा गोमूत्रमे भगवती गङ्गाके पवित्र जलका निवास है और गोमय (गोबर)-मे भगवती यमुना तथा सभी देवता प्रतिष्ठित हैं। अट्ठाईस करोड देवता उसके रोमकूपोमे स्थित हैं। गौके उदर-देशमे गार्हपत्य अग्निका निवास है और हृदयमे दक्षिणाग्निका निवास है। मुखमे आहवनीय नामकी अग्नि तथा कुक्षियोमे सभ्य एव आवसथ्य नामक अग्नियाँ निवास करती हैं। इस प्रकार गायके शरीरमे सभी देवताओको स्थित समझकर जो कभी उनके ऊपर क्रोध तथा प्रताडना नहीं करता है वह महान् ऐश्वर्यको प्राप्त करता है और स्वर्गलोकमे प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

पद्मपुराणमे

गोमुखे चाश्रिता वेदा सषडङ्गपदक्रमा ॥
शृगयोश्च स्थितौ नित्य सहैव हरकेशवौ।
उदरेऽवस्थित स्कन्द शीर्षे ब्रह्मा स्थित सदा॥
वृषध्वजो ललाटे च शृगाग्रे इन्द्र एव च।
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषो शशिभास्करौ॥
दन्तेषु गरुडो देवो जिह्वाया च सरस्वती।
अपाने सर्वतीर्थानि प्रस्रावे चैव जाह्नवी॥
ऋषयो रोमकूपेषु मुखत पृष्ठतो यम ।
धनदो वरुणश्चैव दक्षिण पार्श्वमाश्रितौ॥
वामपार्श्वे स्थिता यक्षास्तेजस्वन्तो महाबला ।
मुखमध्ये च गन्धर्वा नासाग्रे पन्नगास्तथा॥
खुराणा पश्चिमे पार्श्वेऽप्सरसश्च समाश्रिता ।
गोमये वसते लक्ष्मीर्गोमूत्रे सर्वमङ्गला॥
पादाग्रे खेचरा वेद्या हम्भाशब्दे प्रजापति ।
चत्वार सागरा पूर्णा धेनूना च स्तनेषु वै॥
गा च स्पृशति यो नित्य स्नातो भवति नित्यश ।
अतो मर्त्य प्रपुष्टैस्तु सर्वपापै प्रमुच्यते॥
गवा रज खुरोद्धूत शिरसा यस्तु धारयेत्।
स च तीर्थजले स्नात सर्वपापै प्रमुच्यते॥

(सृष्टिखण्ड ५७। १५६—१६५)

छहो अङ्गो पदो और क्रमोसहित सम्पूर्ण वेद गौओके मुखमे निवास करते है। उनके सींगोमे भगवान् श्रीशकर और श्रीविष्णु सदा विराजमान रहते हैं। गौओंके

उदरमे कार्तिकेय, मस्तकमे ब्रह्मा, ललाटमे महादेवजी, सींगोके अग्रभागमे इन्द्र, दोनो कानोमे अश्विनीकुमार, नेत्रामे चन्द्रमा और सूर्य, दाँतोमे गरुड, जिह्वामे सरस्वती देवी, अपान (गुदा)-मे सम्पूर्ण तीर्थ, मूत्रस्थानमे गङ्गाजी, रोमकूपोम ऋषि, मुख और पृष्ठभागमे यमराज, दक्षिण पार्श्वमे वरुण और कुबेर, वाम पार्श्वमे तेजस्वी और महाबली यक्ष, मुखके भीतर गन्धर्व, नासिकाके अग्रभागमे सर्प, खुरोके पिछले भागमे अप्सराएँ स्थित हैं। गायके गोबरमे लक्ष्मी, गोमूत्रमे सर्वमङ्गला भगवती पार्वती, चरणोके अग्रभागमे आकाशचारी देवता, रँभानेकी आवाजमे प्रजापति और थनामे भरे हुए चारो समुद्र प्रतिष्ठित हैं। जो मनुष्य प्रतिदिन स्नान करके गौका स्पर्श करता है, वह सब प्रकारके पापोसे मुक्त हो जाता है। जो गौओके खुरसे उडी हुई धूलिको सिरपर धारण करता है वह मानो तीर्थके जलमे स्नान कर लेता है और सभी पापोसे छुटकारा पा जाता है।

भविष्यपुराणमे

शृगमूले गवा नित्य ब्रह्मा विष्णुश्च सस्थितौ।
शृगाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च॥
शिवो मध्ये महादेव सर्वकारणकारणम्।
ललाटे सस्थिता गौरी नासावशे च षण्मुख॥
कम्बलाश्वतरौ नागौ नासापुटसमाश्रितौ।
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुर्भ्यां शशिभास्करौ॥
दन्तेषु वसव सर्वे जिह्वाया वरुण स्थित।
सरस्वती च कुहरे यमयक्षौ च गण्डयो॥
सध्याद्वय तथोष्ठाभ्या ग्रीवाया च पुरन्दर।
रक्षासि ककुदे द्यौश्च पार्ष्णिकाये व्यवस्थिता॥
चतुष्पात्सकलो धर्मो नित्य जघासु तिष्ठति।
खुरमध्येषु गन्धर्वा खुराग्रेषु च पन्नगा॥
खुराणा पश्चिमे भागे राक्षसा सम्प्रतिष्ठिता।
रुद्रा एकादश पृष्ठे वरुण सर्वसन्धिषु॥
श्रोणीतटस्था पितर कपोलेषु च मानवा।
श्रीरपाने गवा नित्य स्वाहालकारमाश्रिता॥
आदित्या रश्मयो बाला पिण्डीभूता व्यवस्थिता।
साक्षाद्गङ्गा च गोमूत्रे गोमये यमुना स्थिता॥
त्रयस्त्रिशद् देवकोट्यो रोमकूपे व्यवस्थिता।
उदरे पृथिवी सर्वा सशैलवनकानना॥
चत्वार सागरा प्रोक्ता गवा ये तु पयोधरा।
पर्जन्य क्षीरधारासु मेघा विन्दुव्यवस्थिता॥
जठरे गार्हपत्योऽग्निर्दक्षिणाग्निर्हृदि स्थित।
कण्ठे आहवनीयोऽग्नि सभ्योऽग्निस्तालुनि स्थित॥
अस्थिव्यवस्थिता शैला मज्जासु क्रतव स्थिता।
ऋग्वेदोऽथर्ववेदश्च सामवेदो यजुस्तथा॥

(उत्तरपर्व ६९। २५—३७)

गौओके सींगकी जडमे सदा ब्रह्मा और विष्णु प्रतिष्ठित हैं। सींगके अग्रभागम चराचर समस्त तीर्थ प्रतिष्ठित हैं। सभी कारणोके कारणस्वरूप महादेव शिव सींगोके मध्यमे प्रतिष्ठित हैं। गौके ललाटमे गौरी, नासिकाके अस्थिभागमे भगवान् कार्तिकेय और नासिकाके दोनो पुटोम कम्बल तथा अश्वतर—ये दो नाग प्रतिष्ठित हैं। दानो कानोमे अश्विनीकुमार, नेत्रोम चन्द्र और सूर्य दाँतामे आठो वसुगण, जिह्वामे वरुण कण्ठदेशम सरस्वती, गण्डस्थलामे यम और यक्ष, ओष्ठोमे दोनो सध्याएँ, ग्रीवामे इन्द्र, ककुद् (मौर)-मे राक्षस, पार्ष्णि-भागम आकाश और जघाआमे चारा चरणासे धर्म सदा विराजमान रहता है। खुरोके मध्यम गन्धर्व, अग्रभागमे सर्प एव पश्चिम-भागमे राक्षसगण प्रतिष्ठित हैं। गौके पृष्ठदेशमे एकादश रुद्र सभी सधियामे वरुण श्रोणितट (कमर)-मे पितर, कपोलोम मानव तथा अपानमे स्वाहा-रूप अलकारको आश्रित कर श्री अवस्थित हैं। आदित्यरश्मियाँ केश-समूहाम पिण्डीभूत हो अवस्थित हैं। गोमूत्रमे साक्षात् गङ्गा और गोमयम यमुना स्थित हैं। रोमसमूहम तेंतीस करोड दवगण प्रतिष्ठित हैं। उदरमे पर्वत और जगलाक साथ पृथ्वी अवस्थित है। चारा पयोधरामे चारो महासमुद्र स्थित हैं। क्षीरधाराआम पर्जन्य नामक देवता एव क्षीरविन्दुआमे मेघ नामक देवता अवस्थित हैं। जठरमे गार्हपत्याग्नि हृदयम दक्षिणाग्नि कण्ठम आहवनीयाग्नि और तालुम सभ्याग्नि स्थित हैं। गौआकी अस्थियाम पर्वत और मज्जाआम यज्ञ स्थित हैं। ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद तथा अथववद—य सभी वेद भी गौओम ही प्रतिष्ठित हैं।

ब्रह्माण्डपुराणमें

(गोसावित्री-स्तोत्र)

अखिल विश्वके पालक देवाधिदेव नारायण! आपके चरणोंमें मेरा प्रणाम है। पूर्वकालमें भगवान् व्यासदेवने जिस गोसावित्री-स्तोत्रको कहा था उसीको मैं सुनाता हूँ। यह गौओंका स्तोत्र समस्त पापोंका नाश करनेवाला, सम्पूर्ण अभिलषित पदार्थोंको देनेवाला दिव्य एवं समस्त कल्याणोंको करनेवाला है। गौके सींगोंके अग्रभागमें साक्षात् जनार्दन विष्णुस्वरूप भगवान् वेदव्यास रमण करते हैं। उसके सींगोंकी जड़में देवी पार्वती और सींगोंके मध्यभागमें भगवान् सदाशिव विराजमान रहते हैं। उसके मस्तकमें ब्रह्मा, कंधेमें बृहस्पति, ललाटमें वृषभारूढ भगवान् शंकर, कानोंमें अश्विनीकुमार तथा नेत्रोंमें सूर्य और चन्द्रमा रहते हैं। दाँतोंमें समस्त ऋषिगण, जीभमें देवी सरस्वती तथा वक्षःस्थलमें एवं पिंडलियोंमें सारे देवता निवास करते हैं। उसके खुरोंके मध्यभागमें गन्धर्व, अग्रभागमें चन्द्रमा एवं भगवान् अनन्त तथा पिछले भागमें मुख्य-मुख्य अप्सराओंका स्थान है। उसके पीछेके भाग (नितम्ब)-में पितृगणोंका तथा भृकुटिमूलमें तीनों गुणोंका निवास बताया गया है। उसके रोमकूपोंमें ऋषिगण तथा चमड़ीमें प्रजापति निवास करते हैं। उसके थूहेमें नक्षत्रोंसहित द्युलोक, पीठमें सूर्यतनय यमराज, अपानदेशमें सम्पूर्ण तीर्थ एवं गोमूत्रमें साक्षात् गङ्गाजी विराजती हैं। उसकी दृष्टि, पीठ एवं गोबरमें स्वयं लक्ष्मीजी निवास करती हैं, नथुनोंमें अश्विनीकुमारोंका एवं होठोंमें भगवती चण्डिकाका वास है। गौओंके जो स्तन हैं, वे जलसे पूर्ण चारों समुद्र हैं, उनके रँभानेमें देवी सावित्री तथा हुंकारमें प्रजापतिका वास है। इतना ही नहीं समस्त गौएँ साक्षात् विष्णुरूप हैं, उनके सम्पूर्ण अङ्गोंमें भगवान् केशव विराजमान रहते हैं।

स्कन्दपुराणमें

गौ सर्वदेवमयी और वेद सर्वगोमय हैं। गायके सींगोंके अग्रभागमें नित्य इन्द्र निवास करते हैं। हृदयमें कार्तिकेय, सिरमें ब्रह्मा और ललाटमें वृषभध्वज शंकर, दोनों नेत्रोंमें चन्द्रमा और सूर्य, जीभमें सरस्वती, दाँतोंमें मरुद्गण और साध्य देवता, हुंकारमें अङ्ग-पद-क्रमसहित चारों वेद, रोमकूपोंमें असंख्य तपस्वी और ऋषिगण, पाठमें दण्डधारी महाकाय महिषवाहन यमराज, स्तनोंमें चारों पवित्र समुद्र, गोमूत्रमें विष्णु-चरणसे निकली हुई, दर्शनमात्रसे पाप नाश करनेवाली श्रीगङ्गाजी, गोबरमें पवित्र सर्वकल्याणमयी लक्ष्मीजी, खुरोंके अग्रभागमें गन्धर्व, अप्सराएँ और नाग निवास करते हैं। इसके सिवा सागरान्त पृथ्वीमें जितने भी पवित्र तीर्थ हैं सभी गायोंके देहमें रहते हैं। विष्णु सर्वदेवमय हैं, गाय इन विष्णुके शरीरसे उत्पन्न हुई है, विष्णु और गाय—इन दोनोंके ही शरीरमें देवता निवास करते हैं। इसीलिये मनुष्य गायोंको सर्वदेवमयी मानते हैं।

(आवन्त्यखण्ड रेवाखण्ड अ० ८३)

महाभारतमें

यदा च दीयते राजन् कपिला ह्यग्निहोत्रिणे।
तदा च शृङ्गयोस्तस्या विष्णुरिन्द्रश्च तिष्ठतः॥
चन्द्रवज्रधरौ चापि तिष्ठतः शृङ्गमूलयोः।
शृङ्गमध्ये तथा ब्रह्मा ललाटे गोवृषध्वजः॥
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषी शशिभास्करौ।
दन्तेषु मरुतो देवा जिह्वायां वाक् सरस्वती॥
रोमकूपेषु मुनयश्चर्मण्येव प्रजापतिः।
निःश्वासेषु स्थिता वेदाः सषडङ्गपदक्रमाः॥
नासापुटे स्थिता गन्धाः पुष्पाणि सुरभीणि च।
अधरे वसवः सर्वे मुखे चाग्निः प्रतिष्ठितः॥
साध्या देवाः स्थिताः कक्षे ग्रीवायां पार्वती स्थिता।
पृष्ठे च नक्षत्रगणाः ककुद्देशे नभःस्थलम्॥
अपाने सर्वतीर्थानि गोमूत्रे जाह्नवी स्वयम्।
अष्टैश्वर्यमयी लक्ष्मीर्गोमये वसते सदा॥
नासिकायां सदा देवी ज्येष्ठा वसति भामिनी।
श्रोणीतटस्थाः पितरो रमा लाङ्गूलमाश्रिता॥
पार्श्वयोरुभयोः सर्वे विश्वेदेवाः प्रतिष्ठिताः।
तिष्ठत्युरसि तासां तु प्रीतः शक्तिधरो गुहः॥
जानुजङ्घोरुदेशेषु पञ्च तिष्ठन्ति वायवः।
खुरमध्येषु गन्धर्वा खुराग्रेषु च पन्नगाः॥
चत्वारः सागराः पूर्णास्तस्या एव पयोधराः।

(आश्वमेधिकपर्व वैष्णवधर्मपर्व अध्याय ९२)

[भगवान् श्रीकृष्णने राजा युधिष्ठिरसे कहा—] राजन्!

जिस समय अग्निहोत्री ब्राह्मणको कपिला गौ दानमे दी जाती है, उस समय उसके सींगोके ऊपरी भागमे विष्णु और इन्द्र निवास करते हैं। सींगोकी जडमे चन्द्रमा और वज्रधारी इन्द्र रहते है। सींगोके बीचम ब्रह्मा तथा ललाटमे भगवान् शकरका निवास होता है। दोनो कानोमे अश्विनीकुमार, नेत्रोमे चन्द्रमा और सूर्य, दाँतोमे मरुद्गण, जिह्वामे सरस्वती, रोमकूपोमे मुनि, चर्ममे प्रजापति एव श्वासोमे षडङ्ग, पद और क्रमसहित चारो वेदाका निवास है।

नासिका-छिद्रोमे गन्ध और सुगन्धित पुष्प, नीचेके ओठम सब वसुगण तथा मुखम अग्नि निवास करते है। कक्षमे साध्य देवता, गरदनम पार्वती, पीठपर नक्षत्रगण, ककुद्के स्थानम आकाश, अपानमे सारे तीर्थ, मूत्रमे साक्षात् गङ्गाजी तथा गोबरमे आठ ऐश्वर्योमे सम्पन्न लक्ष्मीजी रहती हैं। नासिकामे परम सुन्दरी ज्येष्ठा देवी, नितम्बाम पितर एव पूँछमे भगवती रमा रहती हैं। दोनो पसलियामे सभी विश्वेदेव स्थित हैं और छातीमे प्रसन्नचित्त शक्तिधारी कार्तिकेय रहते हैं। घुटना और ऊरुआमे पाँच वायु रहते हैं खुराके मध्यमे गन्धर्व और खुराके अग्रभागम सर्प निवास करते हैं। जलसे परिपूर्ण चारो समुद्र उसके चारा स्तन हैं।
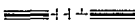
गोस्तु मात्रा न विद्यते

एक बार देवी-देवता, ऋषि-मुनि एव ऋतुओमे वाद-विवाद होने लगा। आपसम सभी एक-दूसरेसे अपनेको बडा एव महान् मानते थे। आपसमे निर्णय न होनेपर वेद भगवान्के न्यायालयमे सभी उपस्थित हुए। अपनी-अपनी प्रतिष्ठाके अभिलाषी देवतादि भगवान् वदके न्यायकी प्रतीक्षा करने लगे। भगवान् वेदके आदेशपर सभीने अपना-अपना मत प्रकट किया। किसीने कहा कि मैंने अपने सत्कर्तव्यसे समाजको ऊपर उठाया। किसीने कहा कि मैंने अपने कर्मसे लोगोका उत्थान किया आदि।

इसका निर्णय देते हुए अथर्ववेद भगवान्ने कहा कि ससारमे केवल एक ही सबसे महान् एव श्रेष्ठ है। उसीको चाहे गाय कहो या ऋषि या एक धाम या आशीर्वाद। अथवा ससारमे एक ऋतु या एक ही पूजनीय देव मानो जो समाजका सर्वप्रकारेण उत्थानकारी है। वैदिक मन्त्रमे प्रश्न इस प्रकार है—

को नु गौ क एकऋषि किमु धाम का आशिष ।
यक्ष पृथिव्यामेकवृदेकर्तु कतमो नु स ॥

(अथर्व० ८। ९। २५)

इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—सम्पूर्ण धरातल एक ही विश्वरूपी गौ है। सम्पूर्ण विश्वमे व्याप्त एक ही परमात्मा, परमेश्वर, परब्रह्म श्रीराम सबके ज्ञाता और द्रष्टा ऋषि हैं। क्याकि—

रमन्ते योगिनाऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ पर ब्रह्माभिधीयते॥

(श्रीरामपूर्वतापिन्युपनिषद् म० ६)

सब विश्व मिलकर एक ही धाम है। एक ही स्थान है। सबके लिये एक ही आशीर्वाद है, जो सबको कल्याणके लिये ही दिया जाता है। एक ही ऋतु वह है, जो मानवोमे शुभकर्म करनेके लिये अखण्ड उत्साह-रूपसे रहती है। यथा—

एको गौरेक एकऋषिरेक धामैकधाशिष ।
यक्ष पृथिव्यामेकवृदेकर्तुर्नाति रिच्यते॥

(अथर्व० ८। ९। २६)

स्वतन्त्र-रूपसे भी वेदभगवान्ने पञ्चपरोपकारियामे श्रेष्ठ गायको ही माना है। अर्थात् गाय जीवोक हर पहलुआमे लाभकारी है। यथा—

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्व पशुपते नमस्ते।
तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वा पुरुषा अजावय ॥

(अथर्व० ११। २। ९)

ह पशुओके स्वामी श्रीरामजी। ऐसे पशुओको उत्पन्न करनेवाले देव। आपको चारा प्रहरमे साष्टाङ्ग एव

देगा वायुसहित आपको प्रणाम है। आपके द्वारा उत्पन्न जो आपके लिये ही पाँच पशु नियुक्त किये गये हैं—गाय, घोड़े, पुरुष तथा बकरियाँ और भेड़—इन पाँचों श्रेष्ठ पशुओंमें आपने गायको प्रथम स्थानपर रखकर गायकी श्रेष्ठता प्रदर्शित की है। अतएव विश्वरूपा एक ही गौ है जिसके दूधको विविध रूपमें सभी सेवन करते हैं तथा उससे हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इस गौकी देखभाल करनेवाले स्वामी एक ही परब्रह्म श्रीरामजी हैं। इस गौके रहनेके लिये व्यापक विश्व ही गोशाला है और यही परमपद है।

ऋग्वेदमें ऐसा वर्णन है कि एक बार इन्द्र भगवान्‌ने समस्त सभाके बीच यह घोषणा की—'हे पाप नष्ट करनेवाले व्यापक तथा शत्रु-दलपर आक्रमण करनेवाले गोपाल! हमारे कर्म गौको प्रमुख स्थान देकर नियुक्त कीजिये और हमें कल्याणमय स्थितिमें रखिये जिससे हम सभी सुखी रहें। अर्थात् गायकी महिमा समझाइये। वैदिक मन्त्र इस प्रकार है—

उत नो धियो गोअग्रा पूषन् विष्णवेवयाव । कर्ता न स्वस्तिमत ॥

(ऋ० १।९०।५)

अन्य देवोंसे भी प्रार्थना की कि हमें उस प्रकारकी बुद्धि प्रदान कीजिये जिस प्रकार कि गायको प्रमुख स्थान देकर या आगे करके स्वयं अनुचर बनकर चलनेसे हम अजेय हों। यथा—

समिन्द्र राया समिषा रभेमहि स वाजेभि पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभि ।
स देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि॥

(ऋ० १।५३।५)

वेद भगवान्‌का निर्देश है कि यदि किसीको इस लोक-परलोकमें सब प्रकारका वैभव प्राप्त करना है तो गौ माताकी प्रमुख-रूपसे सेवा करे। सायण भाष्यकारने भी इसका स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है कि—'स्तोतृभ्यो दानार्थमग्रे प्रमुखा एव गावो०' अर्थात् गायोंका दान गायोंकी पूजा-स्तुति प्रमुखरूपसे करना चाहिये, क्योंकि दानोंमें गोदान प्रमुख है। इसीसे सभी देवता गौ माताके साथ अपनी पूजा करानेके लिये विविध अङ्गोंपर निवास करने लगे। गौ माताके मल-मूत्रकी महानता समाजमें सर्वश्रेष्ठ विद्यमान रहे इस उद्देश्यसे स्वयं श्रीलक्ष्मीजी भी गोबर एवं गोमूत्रमें वास करने लगीं।

यजुर्वेदका निम्न मन्त्र निर्देश करता है कि जिस ब्रह्मविद्याद्वारा मनुष्य परम सुखको प्राप्त करता है, उसकी सूर्यसे उपमा दी जा सकती है, उसी प्रकार द्युलोककी समुद्रसे तथा विस्तीर्ण पृथ्वीकी इन्द्रसे उपमा दी जा सकती है किंतु प्राणीमात्रके अनन्त उपकारोंको अकेली सम्पन्न करनेवाली गौकी किसीसे उपमा नहीं दी जा सकती, गौ निरुपमा है वास्तवमें गौके समान उपकारी जीव मनुष्यके लिये दूसरा कोई भी नहीं है—

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौ समुद्रसमं सर ।
इन्द्र पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते॥

(यजुर्वेद २३। ४८)

अतएव मानवोंको गौ माताकी सेवा करनेके लिये वेद भगवान्‌का आदेश हुआ। जो व्यक्ति सब प्रकारसे अपना कल्याण चाहता हो वह वेद भगवान्‌के आदेशका पालन करे। अस्तु''

(मानसप्रान प० श्रीरामराघवदासजी शास्त्री 'पुजारी')

जीवनदान सर्वश्रेष्ठ दान है

जीवितस्य प्रदानाद्धि नान्यदान विशिष्यते। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देय प्राणाभिरक्षणम्॥
अहिंसा सर्वदेवेभ्य पवित्रा सर्वदायिनी। दान हि जीवितस्याहु प्राणिना परम बुधा ॥

(वायुपुराण ८०। १७-१८)

जीवनदानसे बढकर और कोई भी उत्तम दान नही है, इसलिये सब प्रकारके प्रयत्नसे सबको प्राणदान देना चाहिये। अहिंसा सब फल देनेवाली है और परम पवित्र है। प्राणियोको जीवनदान सर्वश्रेष्ठ दान है।

गौकी महिमा

महाभारतमे

गोभिस्तुल्य न पश्यामि धन किंचिदिहाच्युत॥
कीर्तन श्रवण दान दर्शन चापि पार्थिव।
गवा प्रशस्यते वीर सर्वपापहर शिवम्॥
गावो लक्ष्म्या सदा मूल गोषु पाप्मा न विद्यते।
अन्नमेव सदा गावो देवाना परम हवि ॥
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्य प्रतिष्ठितौ।
गावो यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखम्॥
अमृत ह्यव्यय दिव्य क्षरन्ति च वहन्ति च।
अमृतायतन चैता सर्वलोकनमस्कृता ॥
तेजसा वपुषा चैव गावो वह्निसमा भुवि।
गावो हि सुमहत् तेज प्राणिना च सुखप्रदा ॥
निविष्ट गोकुल यत्र श्वास मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति त देश पाप चास्यापकर्षति॥
गाव स्वर्गस्य सोपान गाव स्वर्गेऽपि पूजिता ।
गाव कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् पर स्मृतम्॥
इत्येतद् गोषु मे प्रोक्त माहात्म्य भरतर्षभ।
गुणैकदेशवचन शक्य पारायण न तु॥

(अनुशासनपर्व दानधर्मपर्व ५१। २६—३४)

[महर्षि च्यवनने राजा नहुषसे कहा—] अपनी मर्यादासे कभी च्युत न होनेवाले हे राजेन्द्र! मैं इस ससारमे गौओके समान दूसरा कोई धन नहीं देखता हूँ। वीर भूपाल! गौओके नाम और गुणोका कीर्तन तथा श्रवण करना, गौओका दान देना और उनका दर्शन करना—इनकी शास्त्रोमे बडी प्रशसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण पापोको दूर करके परम कल्याणकी प्राप्ति करानेवाले हैं। गौएँ सदा लक्ष्मीकी जड हैं। उनमे पापका लेशमात्र भी नहीं है। गौएँ ही मनुष्योको सर्वदा अन्न ओर देवताओको हविष्य देनेवाली हैं। स्वाहा और वषट्कार सदा गौओमे ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएँ ही यज्ञका सचालन करनेवाली तथा उसका मुख हैं। वे विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहनेपर अमृत ही देती हैं। वे अमृतकी आधारभूत हैं। सारा ससार उनके सामने नतमस्तक होता है। इस पृथ्वीपर गौएँ अपनी काया और कान्तिस अग्निके समान हैं। वे महान् तेजकी राशि और समस्त प्राणियाको सुख देनेवाली हैं। गौओका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, उस स्थानकी शोभा बढा देता है और वहाँके सारे पापोको खींच लेता है। गौएँ स्वर्गकी सीढी हे। गौएँ स्वर्गमे भी पूजी जाती हैं। गौएँ समस्त कामनाआको पूर्ण करनेवाली देवियाँ है। उनसे बढकर दूसरा कोई नहीं है। भरतश्रेष्ठ! यह मैंने गौओका माहात्म्य बताया है। इसमे उनके गुणोका दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। गौओके सम्पूर्ण गुणोका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।

× × ×

तुल्यनामानि देयानि त्रीणि तुल्यफलानि च।
सर्वकामफलानीह गाव पृथ्वी सरस्वती॥
मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा ।
वृद्धिमाकाङ्क्षता नित्य गाव कार्या प्रदक्षिणा ॥
सताड्या न तु पादेन गवा मध्ये न च व्रजेत्।
मङ्गलायतन देव्यस्तस्मात् पूज्या सदैव हि॥
प्रचोदन देवकृत गवा कर्मसु वर्तताम्।
पूर्वमेवाक्षर चान्यदभिधेय तत परम्॥
प्रचारे वा निवाते वा बुधो नोद्वेजयेत गा ।
तृषिता ह्यभिवीक्षन्त्यो नर हन्यु सबान्धवम्॥
पितृसद्मानि सतत देवतायतनानि च।
पूयन्ते शकृता यासा पूत किमधिक तत ॥
घासमुष्टि परगवे दद्यात् सवत्सर तु य ।
अकृत्वा स्वयमाहार व्रत तत् सार्वकामिकम्॥

(अनुशासनपर्व दानधर्मपर्व अ० ६९)

[भीष्मजीने कहा—युधिष्ठिर!] गाय भूमि और सरस्वती—ये तीना समान नामवाली हैं—इन तीना वस्तुआका दान करना चाहिये। इन तीनाके दानका फल भी समान ही है। ये तीनो वस्तुएँ मनुष्याकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करनेवाली हैं। गौएँ सम्पूर्ण प्राणियाकी माता कहलाती हैं। वे सबको सुख देनेवाली हैं। जो अपने अभ्युदयकी इच्छा रखता हो उसे गौआको सदा दाहिने करके चलना चाहिय।

गौओको लात न मारे। उनके बीचसे होकर न निकले। वे मङ्गलकी आधारभूत देवियाँ है, अत उनकी सदा ही पूजा करनी चाहिय। दवताओने भी यज्ञके लिये भूमि जोतते समय बैलोको डडे आदिसे हाँका था। अत पहले यज्ञके लिये ही बैलाको जातना या हाँकना श्रेयस्कर माना गया है। उससे भिन्न कर्मक लिये बलोको जोतना या डडे आदिसे हाँकना निन्दनीय है। विद्वान् पुरुषको चाहिये कि जब गौएँ स्वच्छन्दतापूर्वक विचर रही हो अथवा किसी उपद्रवशून्य स्थानमे बैठी हो तो उन्हे उद्वेगम न डाले। जब गौएँ प्याससे पीडित हो जलकी इच्छासे अपने स्वामीकी आर देखती हैं (और वह उन्ह पानी नहीं पिलाता है), तब वे रोषपूर्ण दृष्टिसे बन्धु-बान्धवोसहित उसका नाश कर देती हैं। जिनके गोबरसे लीपनेपर देवताआके मन्दिर और पितरोके श्राद्धस्थान पवित्र हाते हैं, उनसे बढकर पावन और क्या हो सकता है? जो एक वर्षतक प्रतिदिन स्वय भोजनक पहले दूसरेकी गायको एक मुट्ठी घास खिलाता है, उसका वह व्रत समस्त कामनाओको पूर्ण करनेवाला होता है।

भविष्यपुराणमे

क्षीरोदतोयसम्भूता या पुरामृतमन्थने।
पञ्च गाव शुभा पार्थ पञ्चलोकस्य मातर ॥
नन्दा सुभद्रा सुरभि सुशीला बहुला इति।
एता लोकोपकाराय देवाना तर्पणाय च॥
जमदग्निभरद्वाजवसिष्ठासितगौतमा ।
जगृहु कामदा पञ्च गावो दत्ता सुरैस्तत ॥
गोमय रोचना मूत्र क्षीर दधि घृत गवाम्।
षडङ्गानि पवित्राणि सशुद्धिकरणानि च॥
गोमयादुत्थित श्रीमान् बिल्ववृक्ष शिवप्रिय ।
तत्रास्ते पद्महस्ता श्री श्रीवृक्षस्तेन स स्मृत ।
बीजान्युत्पलपद्माना पुनर्जातानि गोमयात्॥
गोरोचना च माङ्गल्या पवित्रा सर्वसाधिका।
गोमूत्राद् गुग्गुलुर्जात सुगन्धि प्रियदर्शन ।
आहार सर्वदवाना शिवस्य च विशषत ॥
यद्बीज जगत किंचित् तज्ज्ञेय क्षीरसम्भवम्।
दधिजातानि सर्वाणि मङ्गलान्यर्थसिद्धय।
घृतादमृतमुत्पन्न दवाना तृप्तिकारणम्॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेक द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति॥
गोषु यज्ञा प्रवर्तन्ते गोषु देवा प्रतिष्ठिता ।
गोषु वेदा समुत्कीर्णा सषडङ्गपदक्रमा ॥

(उत्तरपर्व, अ० ६९)

[भगवान् श्रीकृष्णने युधिष्ठिरसे कहा—पार्थ!] समुद्र-मन्थनके समय क्षीरसागरसे पाँच लोकोकी मातृस्वरूपा कल्याणकारिणी जो पाँच गौएँ उत्पन्न हुई थीं, उनके नाम थे—नन्दा, सुभद्रा सुरभि, सुशीला और बहुला। ये सभी गौएँ समस्त लोकोके कल्याण तथा देवताओको हविष्यके द्वारा परितृप्त करनेके लिये आविर्भूत हुई थीं। फिर देवताआन इन्हे महर्षि जमदग्नि, भरद्वाज, वसिष्ठ, असित और गौतम मुनिको समर्पित किया और उन्होने इन्हे प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण किया। ये सभी गौएँ सम्पूर्ण कामनाओको प्रदान करनवाली कामधेनु कही गयी हैं। गौओसे उत्पन्न दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र और रोचना—ये छ अङ्ग (गोषडङ्ग) अत्यन्त पवित्र हैं और प्राणियोके सभी पापाको नष्ट कर उन्हे शुद्ध करनेवाले हैं। श्रीसम्पन्न बिल्व-वृक्ष गौओके गोबरसे ही उत्पन्न हुआ है। यह भगवान् शिवजीको अत्यन्त प्रिय है। चूँकि उस वृक्षमे पद्महस्ता भगवती लक्ष्मी साक्षात् निवास करती हैं, इसीलिये इसे श्रीवृक्ष भी कहा गया है। बादम नीलकमल एव रक्तकमलके बीज भी गोबरसे ही उत्पन्न हुए थे। गौआके मस्तकसे उत्पन्न परम पवित्र 'गोरोचना' समस्त अभीष्टोकी सिद्धि करनेवाली तथा परम मङ्गलदायिनी है। अत्यन्त सुगन्धित गुग्गुल नामका पदार्थ गौओके मूत्रसे ही उत्पन्न हुआ है। यह देखनेसे भी कल्याण करता है। यह गुग्गुल सभी देवताओका आहार है, विशेषरूपस भगवान् शकरका प्रिय आहार है। ससारके सभी मङ्गलप्रद बीज एव सुन्दर-से-सुन्दर आहार तथा मिष्टान्न आदि सब-के-सब गौके दूधसे ही बनाये जाते हैं। सभी प्रकारकी मङ्गल-कामनाओको सिद्ध करनके लिये गायका दही लोकप्रिय है। देवताआका परम तृप्त करनेवाला अमृत नामक पदार्थ गायके घीसे ही उत्पन्न हुआ है। ब्राह्मण और गौ—ये दो नहीं हैं अपितु एक ही कुलके दो पहलू या रूप हैं। ब्राह्मणमे तो मन्त्राका निवास है और गौमें हविष्य स्थित है, इन दानाके सयागसे ही विष्णुस्वरूप यज्ञ सम्पन्न होता है—(यज्ञो वै विष्णु)। गौओसे ही यज्ञकी

प्रवृत्ति होती है और गौओमे सभी देवताओका निवास है। छहो अङ्ग—शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और पद, जटा, शिखा, रेखा आदि क्रमोके साथ सभी वेद गौओमे ही सुप्रतिष्ठित हैं।

पद्मपुराणमे

[ब्रह्माजीने कहा—नारद!] पहले भगवान्‌के मुखसे महान् तेजोमय पुज प्रकट हुआ। उस तेजसे सर्वप्रथम वेदकी उत्पत्ति हुई। तत्पश्चात् क्रमश अग्नि, गौ और ब्राह्मण—ये पृथक्-पृथक् उत्पन्न हुए। मैंने सम्पूर्ण लोका और भुवनोकी रक्षाके लिये पूर्वकालमे एक वेदसे चारो वेदोंका विस्तार किया। अग्नि और ब्राह्मण देवताओके लिये हविष्य ग्रहण करते हैं और हविष्य (घी) गौओसे उत्पन्न होता है, इसलिये ये चारो ही इस जगत्‌के जन्मदाता हैं। यदि ये चारो महत्तर पदार्थ विश्वमे नहीं होते तो यह सारा चराचर जगत् नष्ट हो जाता। ये ही सदा जगत्‌को धारण किये रहते हैं, जिससे स्वभावत इसकी स्थिति बनी रहती है। ब्राह्मण, देवता तथा असुरोको भी गौकी पूजा करनी चाहिये, क्याकि गौ सब कार्योंमे उदार तथा वास्तवमे समस्त गुणोकी खान है। वह साक्षात् सम्पूर्ण देवताओका स्वरूप है। सब प्राणियोपर उसकी दया बनी रहती है। प्राचीन कालमे सबके पोषणके लिये मैंने गौकी सृष्टि की थी। गौओकी प्रत्येक वस्तु पावन है और समस्त ससारको पवित्र कर देती है। गौका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी—इन पञ्चगव्योका पान कर लेनेपर शरीरके भीतर पाप नहीं ठहरता। इसलिये धार्मिक पुरुष प्रतिदिन गौका दूध दही और घी खाया करते हैं। गव्य पदार्थ सम्पूर्ण द्रव्योमे श्रेष्ठ, शुभ और प्रिय हैं। जिसको गायका दूध, दही और घी खानेका सौभाग्य नहीं प्राप्त होता उसका शरीर मलके समान है। अन्न आदि पाँच रात्रितक, दूध सात रात्रितक दही बीस रात्रितक और घी एक मासतक शरीरमे अपना प्रभाव रखता है। जो लगातार एक मासतक बिना गव्यका भोजन करता है उस मनुष्यके भोजनमे प्रेतोका भाग मिलता है, इसलिये प्रत्येक युगम सब कार्योंके लिये एकमात्र गौ ही प्रशस्त मानी गयी है। गौ सदा और सब समय धर्म, अर्थ काम और मोक्ष—ये चारो पुरुपार्थ प्रदान करनेवाली है।

जो गौकी एक बार प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करता है, वह सब पापोसे मुक्त होकर अक्षय स्वर्गका सुख भोगता है। जैसे देवताओके आचार्य बृहस्पतिजी वन्दनीय हैं, जिस प्रकार भगवान् लक्ष्मीपति सबके पूज्य है, उसी प्रकार गौ भी वन्दनीय और पूजनीय है। जो मनुष्य प्रात काल उठकर गौ और उसके घीका स्पर्श करता है, वह सब पापासे मुक्त हो जाता है।

गौएँ दूध और घी प्रदान करनेवाली हैं। वे घृतकी उत्पत्ति-स्थान और घीकी उत्पत्तिमे कारण हैं। वे घीकी नदियाँ हैं, उनमे घीकी भँवरे उठती हैं। ऐसी गौएँ सदा मेरे घरपर मोजूद रहे। घी मेरे सम्पूर्ण शरीर और मनम स्थित हो। 'गौएँ सदा मेरे आगे रहे। वे ही मेरे पीछे रह। मेरे सब अङ्गोको गौओका स्पर्श प्राप्त हो। मैं गौओके बीचमे निवास करूँ।' इस मन्त्रको प्रतिदिन सध्या और प्रात कालम शुद्ध भावसे आचमन करके जपना चाहिये। ऐसा करनेसे उसके सब पापोका क्षय हो जाता है तथा वह स्वर्गलोकमे पूजित होता है। जैसे गौ आदरणीय है वैसे ब्राह्मण, जैसे ब्राह्मण हैं वैसे भगवान् श्रीविष्णु। जैसे भगवान् श्रीविष्णु हैं वैसी ही श्रीगङ्गाजी भी हैं। ये सभी धर्मके साक्षात् स्वरूप माने गये हैं। गौएँ मनुष्योकी बन्धु हैं और मनुष्य गौओके बन्धु हैं। जिस घरमे गौ नहीं है, वह गृह बन्धुरहित है—

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवा ।
घृतनद्यो घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे॥
घृत मे सर्वगात्रेषु घृत मे मनसि स्थितम्।
गावो ममाग्रतो नित्य गाव पृष्ठत एव च॥
गावश्च सर्वगात्रेषु गवा मध्ये वसाम्यहम्।
इत्याचम्य जपेन्मन्त्र साय प्रातरिद शुचि ॥
सर्वपापक्षयस्तस्य स्वर्लोके पूजितो भवेत्।
यथा गौश्च तथा विप्रो यथा विप्रस्तथा हरि ॥
हरिर्यथा तथा गङ्गा एते न ह्यवृषा स्मृता ।
गावो बन्धुर्मनुष्याणा मनुष्या बान्धवा गवाम्॥
गौश्च यस्मिन् गृहे नास्ति तद्बन्धुरहित गृहम्।

(सृष्टिखण्ड ५७। १५१—१५६)

अग्निपुराणमे

गाव पवित्रा माङ्गल्या गोपु लोका प्रतिष्ठिता ॥
शकृन्मूत्र पर तासामलक्ष्मीनाशन परम्।
गवा कण्डूयन वारि शृङ्गस्याघौघमर्दनम्॥

गोमूत्र गोमय क्षीर दधि सर्पिश्च रोचना।
षडङ्ग परम पाने दु स्वप्नाद्यादिवारणम्॥
रोचना विषरक्षोघ्नी ग्रासद स्वर्गगो गवाम्।
यद्गृहे दु खिता गाव स याति नरक नर ॥
परगोग्रासद स्वर्गी गोहितो ब्रह्मलोकभाक्।
गोदानात् कीर्तनाद्रक्षा कृत्वा चोद्धरते कुलम्॥
गवा श्वासात् पवित्रा भू स्पर्शनात् किल्बिषक्षय ।

[भगवान् धन्वन्तरि आचार्य सुश्रुतसे कहते है—हे सुश्रुत!] गौएँ पवित्र एव मङ्गलमयी हैं। गौओमे सम्पूर्ण लोक प्रतिष्ठित हैं। गौओका गोबर और मूत्र अलक्ष्मी (दरिद्रता)-के नाशका सर्वोत्तम साधन है। उनके शरीरको खुजलाना तथा उनका शृगोदक [शृगोदकसे स्नान करना] समस्त पापोका मर्दन करनेवाला है। गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत और गोरोचना—यह 'षडङ्ग' पीनेके लिये उत्कृष्ट वस्तु तथा दु स्वप्न आदिका निवारण करनेवाला है। गोरोचना विष और राक्षसोका [राक्षसजन्य कष्टोका] विनाश करती है। गौओको ग्रास देनेवाला स्वर्गका प्राप्त होता है। जिसके घरम गौएँ दु खित होकर निवास करती हैं वह मनुष्य नरकगामी होता है। दूसरेकी गायको ग्रास दनेवाला स्वर्गको और गोहितम तत्पर रहनेवाला ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है। गोदान गो-माहात्म्य-कीर्तन और गोरक्षणसे मानव अपने कुलका उद्धार कर देता है। यह पृथ्वी गौओके श्वाससे पवित्र होती है। उनके स्पर्शसे पापोका क्षय होता है।

गोमूत्र गोमय क्षीर दधि सर्पि कुशोदकम्॥
एकरात्रोपवासश्च श्वपाकमपि शोधयेत्।
सर्वाशुभविनाशाय पुराचरितमीश्वरै ॥
प्रत्येक त्र्यहाभ्यस्त महासान्तपन स्मृतम्।
सर्वकामप्रद चैतत् सर्वाशुभविमर्दनम्॥
कृच्छ्रातिकृच्छ्र पयसा दिवसानकविंशतिम्।
निर्मला सर्वकामाप्त्या स्वर्गगा स्युर्नरोत्तमा ॥
त्र्यहमुष्ण पिबेन्मूत्र त्र्यहमुष्ण घृत पिबेत्।
त्र्यहमुष्ण पय पीत्वा वायुभक्ष पर त्र्यहम्॥
तप्तकृच्छ्रव्रत सर्वपापघ्न ब्रह्मलोकदम्।
शीतैस्तु शीतकृच्छ्र स्याद् ब्रह्मोक्त ब्रह्मलोकदम्॥
गोमूत्रेणाचरेत् स्नान वृत्ति कुर्याच्च गोरसै ।
गोभिर्व्रजेच्च भुक्तासु भुञ्जीताथ च गोव्रती॥
मासेनैकेन निष्पापो गोलोकी स्वर्गगो भवेत्।
विद्या च गोमतीं जप्त्वा गोलोक परम व्रजेत्॥
गीतैर्नृत्यैरप्सरोभिर्विमाने तत्र मोदते।

एक दिन गोमूत्र गोमय, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि और कुशोदकका सेवन एव एक दिनका उपवास चाण्डालको भी शुद्ध कर देता है। पूर्वकालमे देवताओने भी समस्त पापाके विनाशके लिये इसका अनुष्ठान किया था। इनमेसे प्रत्येक वस्तुका क्रमश तीन-तीन दिन भक्षण करके रहा जाय तो उसे 'महासान्तपन-व्रत' कहते हैं। यह व्रत सम्पूर्ण कामनाओको सिद्ध करनेवाला और समस्त पापाका विनाश करनेवाला है। केवल दूध पीकर इक्कीस दिन रहनेसे 'कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत' होता ह। इसके अनुष्ठानसे श्रेष्ठ मानव सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुओको प्राप्तकर पापमुक्त हो स्वर्गलोकमे जाते हैं। तीन दिन गरम गोमूत्र तीन दिन गरम घृत, तीन दिन गरम दूध और तीन दिन केवल गरम वायु पीकर रहे। यह 'तप्तकृच्छ्र-व्रत' कहलाता है, जो समस्त पापाका प्रशमन करनेवाला और ब्रह्मलोककी प्राप्ति करानेवाला है। यदि इन वस्तुओको इसी क्रमसे शीतल करके ग्रहण किया जाय तो ब्रह्माजीके द्वारा कथित 'शीतकृच्छ्र' होता है, जो ब्रह्मलाकप्रद है। एक मासतक गोव्रती होकर गोमूत्रसे प्रतिदिन स्नान करे, गोरससे जीवन चलाये, गौओका अनुगमन करे और गौआके भोजन करनेके बाद भोजन करे। इससे मनुष्य निष्पाप होकर स्वर्गोमे भी सर्वश्रेष्ठ लोक गोलोकको प्राप्त करता है। 'गोमती-विद्या' के जपसे भी उत्तम गोलोककी प्राप्ति होती है। उस लोकमे मानव विमानमे अप्सराओके द्वारा नृत्य-गीतसे सवित होकर प्रमुदित होता है।

गाव सुरभयो नित्य गावो गुग्गुलगन्धिका ॥
गाव प्रतिष्ठा भूताना गाव स्वस्त्ययन परम्।
अन्नमेव पर गावो देवाना हविरुत्तमम्॥
पावन सर्वभूताना क्षरन्ति च वहन्ति च।
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि॥
ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमेषु योजिता ।
सर्वेषामेव भूताना गाव शरणमुत्तमम्॥
गाव पवित्र परम गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गाव स्वर्गस्य सोपान गावो धन्या सनातना ॥

नमो गोभ्य श्रीमतीभ्य सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम ॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेक द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति॥
देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभि सकल जगत्।
धार्यते वै सदा तस्मात् सर्वे पूज्यतमा मता ॥
पिबन्ति यत्र तत् तीर्थं गङ्गाद्या गाव एव हि।

(२९२। १—२२)

गौएँ सदा सुरभिरूपिणी हैं। वे गुग्गुलके समान गन्धसे सयुक्त हैं। गौएँ समस्त प्राणियोकी प्रतिष्ठा हैं। गौएँ परम मङ्गलमयी हैं। गौएँ परम अन्न और देवताओके लिये उत्तम हविष्य हैं। वे सम्पूर्ण प्राणियाको पवित्र करनेवाले दुग्ध ओर गोमूत्रका वहन एव क्षरण करती हैं और मन्त्रपूत हविष्यसे स्वर्गम स्थित देवताआको तृप्त करती हैं। ऋषियोके अग्निहोत्रमे गौएँ होमकार्यमे प्रयुक्त होती हैं। गौएँ सम्पूर्ण मनुष्योकी उत्तम शरण हैं। गौएँ परम पवित्र, महामङ्गलमयी, स्वर्गकी सोपानभूत, धन्य और सनातन (नित्य) हैं। श्रीमती सुरभिपुत्री गौआको नमस्कार है। ब्रह्मसुताआको नमस्कार है। पवित्र गौओको बारबार नमस्कार है। ब्राह्मण और गौएँ एक ही कुलकी दो शाखाएँ हैं। एकके आश्रयम मन्त्रकी स्थिति है और दूसरीम हविष्य प्रतिष्ठित है। देवता, ब्राह्मण, गौ, साधु ओर साध्वी स्त्रियोक बलपर यह सारा ससार टिका हुआ है इसीसे वे परम पूजनीय हैं। गौएँ जिस स्थानपर जल पीती हैं, वह स्थान तीर्थ है। गङ्गा आदि पवित्र नदियाँ गोस्वरूपा ही हैं।

बृहत्पराशरस्मृतिमे

अनादेयतृणान्यत्त्वा स्रवन्त्युदिन पय ।
तुष्टिदा देवतादीना पूज्या गाव कथ न ता ॥
स्पृष्टाश्च गाव शमयन्ति पाप
ससेविताश्चोपनयन्ति वित्तम्।
ता एव दत्तास्त्रिदिव नयन्ति
गाभिर्न तुल्य धनमस्ति किचित्॥
यस्या शिरसि ब्रह्मास्ते स्कन्धदेशे शिव स्थित ।
पृष्ठे नारायणस्तस्थौ श्रुतयश्चरणेपु च॥
या अन्या देवता काश्चित् तस्या लोमसु ता स्थिता ।
सर्वदेवमया गावस्तुष्येत् तद्भक्तितो हरि ॥
हरन्ति स्पर्शनात् पाप पयसा पोपयन्ति या ।
प्रापयन्ति दिव दत्ता पूज्या गाव कथ न ता ॥
यत्खुराहतभूमेर्य उत्पद्यन्ते रज कणा ।
प्रलीन पातक तैस्तु पूज्या गाव कथ न ता ॥
शकृन्मूत्र हि यस्यास्तु पीत दहति पातकम्।
किमपूज्य हि तस्या गोरिति पाराशरोऽब्रवीत्॥

मनुष्याके व्यवहारके अयोग्य—सामान्य तृण-पत्ता-घास आदिको चरकर जो गौ निरन्तर प्रतिदिन दूधका प्रस्रवण करती है तथा उस दूधसे घी-दही आदिका निर्माण होकर देवता भी [आहुतियासे] सतुष्ट होते हैं, भला ऐसी वे गाये पूज्य कैसे नहीं हैं? अर्थात् वे सब प्रकारसे पूज्य हैं। स्पर्श कर लेने मात्रसे ही गौएँ मनुष्यके समस्त पापोको नष्ट कर देती है और आदरपूर्वक सेवन किये जानेपर अपार सम्पत्ति प्रदान करती है, वे ही गाय दान दिये जानेपर सीधे स्वर्ग ले जाती हैं, एसी गौओके समान ओर कोई भी धन नहीं है। जिसके सिरपर ब्रह्माजीका निवास है, स्कन्धदेशपर भगवान् शिव विराजमान रहते हैं, पृष्ठभागपर भगवान् नारायण स्थित रहते हैं और चारो वेद उस गौके चारा चरणोमे निवास करते हैं, शेष अन्य सभी देवगण गौआके रोम-समूहमे स्थित रहते हैं, इसलिये गौएँ सर्वदेवमयी है, ऐसी उन गोओकी सेवा-भक्तिसे भगवान् श्रीहरि सर्वथा प्रसन्न हो जाते है। जो गाये स्पर्श करनेसे सब पापोका हरण कर लेती हैं और अपने दूधसे सबका पालन-पोषण करती है, दान करनेपर सीधे स्वर्गकी प्राप्ति करा देती हैं, भला ऐसी वे गौएँ कैसे पूजनीया नहीं है? जिन गायोके खुरासे आहत होनेके कारण पृथ्वीसे जो धूलिकण उत्पन्न होते हैं उनके छूते ही सभी पाप ध्वस्त हो जाते हैं, ऐसी (महिमामयी) वे गाये कैसे पूजनीया नहीं हैं? अर्थात् सर्वथा पूजनीया ही हैं। जिसके गोबर या मूत्र [पञ्चगव्य] का पान करनेसे सारे पाप भस्म हो जाते हैं उन गायोसे प्राप्त कौन-सा द्रव्य है जो अपूज्य है अर्थात् सब कुछ पूज्य ही है—ऐसा महर्षि पराशरजीका कहना है।

एकत्र पृथिवी सर्वा सशैलवनकानना।
तस्या गौर्ज्यायसी साक्षादेकत्रोभयतोमुखी॥

यथोक्तविधिना चैता वर्णै पाल्या सुपूजिता ।
पालयन् पूजयन्नेता स प्रेत्येह च मोदते॥

एक तरफ तो पर्वत, वन तथा अरण्यस युक्त सम्पूण पृथिवी है आर दूसरी तरफ उन सबसे श्रेष्ठ उभयतामुखी गो (ब्याती हुई गा) है। [उसकी प्रदक्षिणासे सार विश्वकी प्रदक्षिणा हो जाती हे।] इस प्रकार यथोक्त-विधिसे ब्राह्मण आदि सभी वर्णोके द्वारा पालित-पोषित एव पूजित होनेपर [गायाकी कृपासे] वह इस लोक तथा परलोकमे सुखपूर्वक निवास करता है।

गावो देया सदा रक्ष्या पाल्या पोष्याश्च सर्वदा।
ताडयन्ति च ये पापा य चाक्रोशन्ति ता नरा ॥
नरकाग्नो प्रपच्यन्ते गोनि श्वासप्रपीडिता ।
सपलाशेन शुष्केण ता दण्डेन निवर्तयेत्॥
गच्छ गच्छेति ता ब्रूयान्मा मा भैरिति वारयत्।
सस्पृशन् गा नमस्कृत्य कुर्यात् ता च प्रदक्षिणम्॥
प्रदक्षिणीकृता तन सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

गाआका सदा दान करना चाहिये, सदा उनकी रक्षा करनी चाहिय और सदा उनका पालन-पोषण करना चाहिये। जो मूर्ख इन्ह डाँटते तथा मारते-पीटते ह व गौआके दु खपूर्ण नि श्वाससे पाडित होकर घार नरकाग्निम पकाय जात हें। [यदि काई मारनवाली गाय घरमें आ गयी है ता] उस सूखे पलाशके डडसे हटा दे ओर उससे यह कहे कि तुम डरा मत वापस चली जाओ। गायका दखनपर छूत हुए उन्ह प्रणाम कर और उनकी प्रदक्षिणा करे। इस प्रकार करनेसे उसने मानो समस्त सप्तद्वीपवती पृथिवीको ही परिक्रमा कर ली।

तृणोदकादिसयुक्त य प्रदद्यात् गवाह्निकम्॥
सोऽश्वमेधसम पुण्य लभते नात्र सशय ।
गवा कण्डूयन स्नान गवा दानसम भवत्॥
तुल्य गोशतदानस्य भयतो गा प्रपाति य ।
पृथिव्या यानि तीर्थानि आसमुद्र सरांसि च॥
गवा शृङ्गोदकस्नानकला नार्हन्ति षोडशीम्।
पातकानि कुतस्तेषा यषा गृहमलकृतम्॥
सतत बालवत्साभिर्गोभि श्रीभिरिव स्वयम्।
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेक द्विधा कृतम्॥
तिष्ठन्त्येकत्र मन्त्रास्तु हविरेकत्र तिष्ठति।
गोभिर्यज्ञा प्रवर्तन्ते गोभिर्देवा प्रतिष्ठिता ॥
गोभिर्वेदा समुद्गीर्णा षडङ्गा सपदक्रमा ।
सौरभेयास्तु यस्याग्रे पृष्ठतो यस्य ता स्थिता ॥
वसन्ति हृदये नित्य तासा मध्य वसन्ति य।
ते पुण्यपुरुषा क्षोण्या नाकेऽपि दुर्लभाश्च ते॥
ये गोभक्तिकरा नित्य विद्यन्ते ये च गोप्रदा ।

(अध्याय ५)

जो गौओको भोजनके लिय प्रतिदिन जल और तृणसहित कुछ भाजन प्रदान करता है, उसे अश्वमेधके समान फलकी प्राप्ति हाती है, इसम तनिक भी सदेह नहीं है। गोआका खुजलाना तथा उन्हे स्नान कराना भी गोदानके समान फलवाला होता हे। जो भयसे दु खी (भयग्रस्त) एक गायकी रक्षा करता है उस सौ गोदानका फल प्राप्त होता है। पृथिवीम समुद्रसे लकर जितने भी बडे तार्थ—सरिता-सरावर आदि हैं, वे सब मिलकर भी गाक सींगके जलसे स्नान करनेके षोडशाशके तुल्य भी नहीं हाते। जिनके घर साक्षात् स्वय लक्ष्मीस्वरूपा सवत्सा गौओसे अलकृत हैं उनक पाप-ताप भला कैसे टिक सकते हैं? ब्राह्मण और गौएँ वस्तुत एक ही कुलकी वस्तुएँ हैं जिन्ह दो भागाम विभक्त कर दिया गया है, एक ओर ता ब्राह्मणम मन्त्र स्थित हें और दूसरी ओर गौम हविष्य स्थित है, गौओसे ही यज्ञकी पूर्ति होती है और गौओस ही देवताओकी प्रतिष्ठा हाती है तथा गौआसे ही पद क्रम एव व्याकरण आदि छ अङ्गोसहित सभी वेद अभिव्यक्त हुए। गौएँ जिनक आग पीछे हृदयक सामने नित्य निवास करती है और गौआके बीचम हा जो निवास करत हैं तथा जा गौआकी नित्य भक्ति करते हैं, उपासना करत तथा प्रतिदिन गौआका दान करते हैं ऐसे पुण्यात्मा पवित्र पुरुष पृथिवीपर भी दुर्लभ हैं और स्वर्गम भी दुर्लभ हैं।

गोसेवाकी महिमा

विष्णुधर्मोत्तरपुराणमे

(क)

गवा कण्डूयनान्मर्त्य सर्वं पाप व्यपोहति।
तासा ग्रासप्रदानेन महत्पुण्यमवाप्नुयात्॥
तासा च प्रचर कृत्वा तथैव सलिलाशयम्।
स्वर्गलोकमुपाश्नन्ति बहून्यब्दगणानि तु॥
तासा प्रचारभूमि तु कृत्वा प्राप्नोति मानव।
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फल प्राप्नोत्यसशयम्॥
तासामावसथ कृत्वा नगराधिपतिर्भवेत्।
तथा लवणदानेन सौभाग्य महदश्नुते॥

[भगवान् हस कहते हैं—हे ब्राह्मणो!] गौओके शरीरको खुजलानेसे या उनके शरीरके कीटाणुओको दूर करनेसे मनुष्य अपने समस्त पापोको धो डालता है। गौओको गोग्रास दान करनेसे महान् पुण्यकी प्राप्ति होती है। गौओको चराकर उन्हे जलाशयतक घुमाकर जल पिलानेसे मनुष्य अनन्त वर्षोतक स्वर्गमे निवास करता है। गौओके प्रचारणके लिये गोचरभूमिकी व्यवस्था कर मनुष्य नि सदेह अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त करता है। गौओके लिये गोशालाका निर्माणकर मनुष्य पूरे नगरका स्वामी बन जाता है और उन्हे नमक खिलानेसे मनुष्यको महान् सौभाग्यकी प्राप्ति होती है।

आतुरा पङ्कलग्ना वा चौरव्याघ्रभयार्दिताम्।
मोचयित्वा द्विजश्रेष्ठास्त्वश्वमेधफल लभेत्॥
तासामौषधदानेन विरोगस्त्वभिजायते।
विप्रमोच्य भयेभ्यश्च न भय विद्यते क्वचित्॥
क्रीत्वा चण्डालहस्ताच्च गोमेधस्य फल लभेत्।
गोपकस्त्वस्य चान्यस्य क्रीत्वा हस्तात् तथैव च॥
कृत्वा शीतातपत्राण तासा स्वर्गमवाप्नुयात्।

हे ब्राह्मणो! विपत्तिमे या कीचडमे फँसी हुई या चोर तथा बाघ आदिके भयसे व्याकुल गौको क्लेशसे मुक्त कर मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त करता है। रुग्णावस्थामे गौओंको ओषधि प्रदान करनेसे स्वय मनुष्य सभी रोगोसे मुक्त हो जाता है। गौओको भयसे मुक्त कर देनेपर मनुष्य स्वय भी सभी भयोसे मुक्त हो जाता है। चण्डालके हाथसे गौको खरीद लेनेपर गोमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है तथा किसी अन्यके हाथसे गायको खरीदकर उसका पालन करनेसे गोपालकको गोमेधयज्ञका ही फल प्राप्त होता है। गौओकी शीत तथा धूपसे रक्षा करनेपर स्वर्गकी प्राप्ति होती है।

उत्थितासूत्थितस्तिष्ठेद्विष्ठितासु च विष्ठित॥
भुक्तवत्सु तु चाश्नीयाज्जले पीते पिबेत्तु च।
गोमूत्रेणाचरेत् स्नान गोपुरीषात् तथा यवै॥
शरीरयात्रा कुर्वीत गोरसैरथ वा द्विजा।
एतद्धि गोव्रत मासात् सर्वकल्मषनाशनम्॥
एका गा धारयेन्मास दद्यात् तस्यास्तथा यवान्।
गोमयात् तान् समश्नीयान्मासमेकमत शुचि॥
मासान्ते ता तथा धेनु दद्याद्विप्राय भक्तिमान्।
व्रतमेतत् समुद्दिष्ट सर्वकल्मषनाशनम्॥
राजसूयाश्वमेधाभ्या व्रतमेतत् तथाधिकम्।
व्रतेनानेन चीर्णेन कामानिष्टानवाप्नुयात्॥
विमानेनार्कवर्णेन ब्रह्मलोक च गच्छति।
विनापि गोप्रदानेन व्रतमेतन्महत् फलम्॥
त्रिरात्र सप्तरात्र वा शक्ति ज्ञात्वा तथा स्वकाम्।
गवा निर्हारनिर्मुक्तैर्वृत्ति कृत्वा तथा यवै॥
पापमोक्षमवाप्नोति पुण्य च महदश्नुते।

गाओके उठनेपर उठ जाय और बैठनेपर बैठ जाय। गौआके भाजन कर लेनेपर भोजन करे और जल पी लेनेपर स्वय भी जल पीये। गोमूत्रसे स्नान करे और हे ब्राह्मणो! अपनी जीवनयात्राका गोदुग्धपर अथवा गोमयसे नि सृत जौ-द्वारा निर्वाह करे। इसीका नाम 'गोव्रत' है। एक माहतक ऐसा करनेवाले गाव्रतीके सम्पूर्ण पाप सर्वथा नष्ट हा जाते हैं। किसी एक गौका पालन करते हुए उसे जौ खिलाता रहे और उसके गोबरसे जौ निकालकर उसे धाकर उसका सेवन करे तो इस प्रकार एक महीनेतक करनसे वह अत्यन्त पवित्र हो जाता है। एक महीना वीत जानेपर उस गायको भक्तिपूर्वक किसी ब्राह्मणको दान कर द यह भी एक प्रकारका 'गाव्रत' कहा गया है, जा सभी पापाका नष्ट कर

देनेवाला है। यह व्रत राजसूययज्ञ तथा अश्वमेधयज्ञ आदिसे अधिक फलदायी है। इस व्रतके अनुष्ठानसे मनुष्य अनेक अभीष्ट कामनाओको प्राप्त कर लेता है। ऐसा करनेवाला सूर्यके समान प्रकाशमान विमानसे ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है। बिना गोदानके भी यह व्रत महान् फलदायी कहा गया है। अपनी शक्तिको ठीकसे समझकर तीन दिन या सात दिनोंतक जौ आदिसे गाओंके भोजन आदिकी व्यवस्था करनेसे मनुष्य सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त हो जाता है और उसे महान् पुण्यकी प्राप्ति होती है।

रजश्च गोखुरोद्भूत सर्वकल्मषनाशनम्॥
यादृशात् तादृशाद्देशान्नात्र कार्या विचारणा।
मङ्गल्य च पवित्र च तदलक्ष्मीविनाशनम्॥
गवा हि परिवासेन भूमि शुद्धिमवाप्नुयात्।
तद्धि शुद्ध यदा वेश्म यत्र तिष्ठन्ति धेनव॥
तासा नि श्वासवातेन पर नीराजन भवत्।
तासा सस्पर्शन पुण्य दु स्वप्नाघविनाशनम्॥
ग्रीवामस्तकसन्धौ तु तासा गङ्गा प्रतिष्ठिता।
सर्वदेवमया गाव सर्वतीर्थमयास्तथा॥
तासा लोमानि पुण्यानि पवित्राणि तथा द्विजा।

हे ब्राह्मणो! गायके खुरसे उत्पन्न धूलि समस्त पापोको नष्ट कर देनेवाला है। वह धूलि चाहे तीर्थकी हो चाहे मगध-कीकट आदि निकृष्ट दशाकी ही क्या न हो। इसमे विचार अथवा सदेह करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। इतना ही नहीं वह सब प्रकारकी मङ्गलकारिणी, पवित्र करनेवाली और दु ख-दरिद्रतारूप अलक्ष्मीको नष्ट करनेवाली है। गोओके निवास करनेसे वहाँकी पृथिवी भी शुद्ध हो जाती है। जहाँ गाय बैठती हैं वह स्थान वह घर सर्वथा पवित्र हो जाता है। वहाँ कोई दोष नहीं रहता। उनके नि श्वासकी हवा देवताओके लिये नीराजनके समान है। गौओको स्पर्श करना बडा पुण्यदायक है और उससे समस्त दु स्वप्न पाप आदि भी नष्ट हो जाते हैं। गौओके गरदन और मस्तकके बीचमे साक्षात् भगवती गङ्गाका निवास है। गौएँ सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी हैं। उनके रोएँ भी बडे ही पवित्रताप्रद और पुण्यदायक हैं।

गोमयेनोपलिप्त तु शुचि स्थान प्रकीर्तितम्॥
अग्न्यागारसुरागारान् गोमयेनोपलेपयत्।
गोमये तु सदा लक्ष्मी स्वयमेव व्यवस्थिता॥
गोमूत्रे च तथा गङ्गा दधिक्षीरघृतेषु च।
सदा व्यवस्थित सोम रोचनाया सरस्वती॥
विष्णुर्यज्ञ समाख्यात स च गोषु प्रतिष्ठित।
तस्माद् गावो विनिर्दिष्टा विष्णुरेव पुरातनै॥
पूज्यास्तास्तु नमस्कार्या कीर्तनीयाश्च तास्तथा।
तासामाहारदान च कार्यं शुश्रूषण तथा॥
शुश्रूषणेनेह गवा द्विजेन्द्रा
प्राप्नोति लोकानमलान् विशोकान्।
तस्मात् प्रयत्नेन गवा हि कार्यं
शुश्रूषण धर्मपरैर्मनुष्यै॥

(तृतीयखण्ड अ० २९१)

गायके गोमयसे उपलिप्त स्थान सब प्रकारसे पवित्र स्थान कहा गया है। इसलिये यज्ञशाला और भोजन बनानेके स्थानको गोमयसे लीपना चाहिये। गोबरमे तो साक्षात् लक्ष्मी अपने स्वरूपमे विराजमान रहती हैं। गोमूत्रमे भगवती गङ्गा तथा गोदधि, गोदुग्ध और गोघृतमे सोम तथा गोरोचनामे भगवती सरस्वती सर्वदा प्रतिष्ठित रहती हैं। यज्ञको भगवान् विष्णुका स्वरूप माना गया है और वह सर्वाङ्गतया गौओमे ही प्रतिष्ठित है, इसलिये गौओको भी प्राचीन आचार्योंने विष्णुका स्वरूप ही माना है। वे गौएँ सभी प्रकार पूजनीय कीर्तनीय और नमस्करणीय हैं। उन्हे सदा भोजन देना चाहिये और उनकी सेवा भी करनी चाहिये। हे ब्राह्मणो! गायोकी सेवासे मनुष्य निर्मल और दु ख तथा शोकरहित श्रेष्ठ लोकोको प्राप्त करता है। इसलिये धर्मपरायण मनुष्योको बहुत प्रयत्नपूर्वक गायोकी सेवा अवश्य करनी चाहिये।

[ख]

[राजनीति एव धर्मशास्त्रके सम्यक् ज्ञाता पुष्करजी बोले—] हे भृगुनन्दन परशुरामजी! राजाको गोपालनका कार्य अवश्य करना चाहिये। क्योकि गायोकी सगति परम पवित्र है और सम्पूर्ण लोक गायोमे ही प्रतिष्ठित हैं। गायें ही यज्ञका विस्तार करती हैं और गाये ही विश्वकी माता हैं। गौओका गोबर और मूत्र सम्पूर्ण अलक्ष्मीका नाश करनेवाला कहा गया है। इसलिये उन दोनोका प्रयत्नपूर्वक

आश्रय लेना चाहिये सेवन करना चाहिये क्याकि भगवती लक्ष्मी उनमे निवास करती हैं। गोबर और गोमूत्रके रहस्यके जाननेवालेको किसी प्रकार उद्विग्न, खेद-खिन्न होनेकी आवश्यकता नहीं है। इसलिये गाया गोकुल गोमय आदिपर थूक-खखार नहीं छोडना चाहिये। गायाकी धूलि सब प्रकारस पवित्रकारिणी और समस्त विघ्ना तथा अलक्ष्मीको दूर करनेवाली है। गायोके शरीरको खुजलानेसे मनुष्यके सभी पाप-ताप दूर हो जाते हैं। गौओका शृगोदक गङ्गाजलके तुल्य है। गोमूत्र, गोमय गोदुग्ध गोदधि, गोघृत तथा गोरोचना—यह 'गोषडङ्ग'के नामसे कहा जाता है, जो सब प्रकारसे कल्याण—मङ्गलका विस्तार करनेवाला है और पृथक्-पृथक् भी यह परम पवित्र और शुद्धिकारक है। हे भार्गवजी। गामूत्र, गोमय, गोदुग्ध, गोदधि, गोधृत और कुशादक—यह पञ्चगव्य स्नानीय और पेयद्रव्योम परम पवित्र कहा गया है। ये सब मङ्गलमय पदार्थ भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस आदिसे रक्षा करनेवाले, परममङ्गल तथा कलिके दु ख-दोषाका नाश करनेवाले हें। गोरोचना भी इसी प्रकार राक्षस, सर्पविष तथा सभी रोगाको नष्ट करनेवाली एव परम धन्य है। जो प्रात काल उठकर अपना मुख गोघृतपात्रमे रखे घीम देखता है उसकी दु ख-दरिद्रता सर्वदाके लिये समाप्त हो जाती है और फिर पापका बोझ नहीं ठहरता।

'गायाको भोजनका ग्रास देनेसे महान् पुण्यकी प्राप्ति होती है। अपने घरमे जितनी गौओको रख सके रखे पर अत्यन्त सुखपूर्वक ही रखे, उनमेसे किसीको भी भूखी-प्यासी न रख। हे परशुरामजी। जा व्यक्ति अपने घरम गौओको दु खी रखता है उसे नरककी ही प्राप्ति होती है, इसमे कोई सदेह नहीं। किसी दूसरेकी गायको भाजन देकर मनुष्य महान् पुण्यका भागी होता है। पूरे जाडे भर किसी दूसरेकी गायको ग्रास प्रदान करनेवाला व्यक्ति ६०० वर्षोंतक श्रेष्ठ स्वर्गका उपभोग करता है और भोजनके समय पहले ही यदि ६ मासतक गोग्रास निकालकर उन्हे नित्य प्रदान करता है तो वह स्वर्ग-सुखको प्राप्त करता है। जो एक वर्षतक सायकाल तथा प्रात काल देवताआके निमित्त बने सात्त्विक भोजनके प्रथम भागको नित्य निरालस्य होकर गायोको प्रदान करता है और द्वितीय अवशिष्ट भागका जो स्वय भोजन करता है वह हे परशुरामजी। एक मन्वन्तरपर्यन्त गौओंके लोकमे निवास करता है। जो गौओके चलनेके मार्गम, चरागाहम जलकी व्यवस्था करता है, वह वरुणलोकको प्राप्तकर वहाँ दस हजार वर्षोंतक विहार करता है और जहाँ-जहाँ उसका आगे जन्म होता है वह वहाँ सभी आनन्दोसे परितृप्त रहता है। गोचरभूमिको हल आदिसे जोतनेपर चोदह इन्द्रापर्यन्त भीषण नरककी प्राप्ति होती है। हे परशुरामजी। जो गौआके पानी पीते समय विघ्न डालता है, उसे यही मानना चाहिये कि उसने घोर ब्रह्महत्या की। सिह, व्याघ्र आदिके भयसे डरी हुई गायकी जो रक्षा करता है और कीचडमे फँसी हुई गायका जो उद्धार करता है, वह कल्पपर्यन्त स्वर्गमे स्वर्गीय भोगाका भोग करता हे। गायाको घास प्रदान करनेसे वह व्यक्ति अगल जन्मसे रूपवान् हो जाता है और उसे लावण्य तथा महान् सौभाग्यकी प्राप्ति होती हे। गायोको औषध प्रदान कर मनुष्य सर्वथा नीरोग हो जाता है। यदि मनुष्य गायकी विपत्तिमे ओषधि, नमक, जल प्रदान करता है, भोजन प्रदान करता है तथापि वह गाय यदि मर भी जाय तो सहायक व्यक्तिको पाप नहीं लगता और न उसे यमयातना भोगनी पडती है[1]।'

१-गवा ग्रासप्रदानेन पुण्य सुमहदश्नुते। यावत्य शक्नुयाद् गाव सुख धारयितु गृहे॥
धारयेत् तावतीर्नित्य क्षुधितास्तु न धारयेत्। दु खिता धेनवो यस्य वसन्ति द्विजमन्दिरे॥
नरक समवाप्नाति नात्र कार्या विचारणा। दत्त्वा परगवे ग्रास पुण्य सुमहदश्नुते॥
शैशिर सकल काल ग्रास परगवे तथा। दत्त्वा स्वर्गमवाप्नोति सवत्सरशतानि षट्॥
अग्रभक्त नरो दत्त्वा नित्यमेव तथा गवाम्। मासषट्केन लभते नाकलोक समायुतम्॥
साय प्रातर्मनुष्याणामशन दवनिर्मितम्। तत्रैवमशन_ दत्त्वा गवा नित्यमतन्द्रित॥
द्वितीय य समश्नाति तेन सवत्सरान्तर। गवा लोकमवाप्नोति यावन्मन्वन्तर द्विज॥
गवा प्रचारे पानीय दत्त्वा पुरुषसत्तम। वारुण लोकमासाद्य क्रीडत्यब्दगणायुतम्।

हे परशुरामजी! गायोको बेचना भी कल्याणकारी नहीं है। गायाका नाम लेनेसे भी मनुष्य पापोंसे शुद्ध हो जाता है। गौओका स्पर्श सभी पापोका नाश करनेवाला तथा सभी प्रकारका सौभाग्य एव मङ्गलका विधायक है। गौआका दान करनेसे अनेक कुलोका उद्धार हो जाता है। मातृकुल, पितृकुल और भार्याकुलमे जहाँ एक भी गौ निवास करती है वहाँ रजस्वला और प्रसूतिका आदिकी अपवित्रता भी नहीं आती और पृथिवीमे अस्थि, लोहा हानेका, धरतीके आकार-प्रकारकी विषमताका दोष भी नष्ट हो जाता है। गौओके श्वास-प्रश्वाससे घरमे महान् शान्ति हाती है। सभी शास्त्राम गौआके श्वास-प्रश्वासको महानीराजन कहा गया है। हे परशुराम! गौओको छू देनेमात्रसे मनुष्याके सारे पाप क्षीण हो जाते हैं। जो एक महीनेतक गौओको जौ आदिके आहारसे प्रतिदिन सतुष्ट करता है वह जो कुछ भी अभिलषित पदार्थ हा उसे प्राप्त करता है। और गोमती नामकी विद्याको साय-प्रात काल पढते हुए मनुष्य गोलोकको प्राप्त करता है इसम कोई सदेह नहीं। सभी लोकोके ऊपर गौआका लोक गोलाक प्रतिष्ठित है। जहाँ गौएँ सभी आकाशचारियाके ऊपर निवास करती हैं वहाँ गौएँ विभिन्न विमानोके ऊपर अप्सराआसे घिरी रहती हैं। जिन विमानोम किकिणीका जाल लगा रहता है और वीणा-मुरज आदि वाद्य बजते रहते हैं वहाँ गोलोकमें सभी कामनाओंकी पूर्तिरूपी नदियोंका जल बहता है और दूध, खीर, घी कीचडके रूपम बहता है। जहाँकी पुष्करिणियाम वैदूर्य मणिके कमल खिले रहते हैं, जहाँ जल अत्यन्त निर्मल होता है और सुवर्णकणोसे निर्मित वालुकाएँ होती हैं, हे भृगूत्तम! वहाँ मनमें सकल्प करते ही सिद्धि उपस्थित हो जाती है। गायाकी भक्ति करनेसे मनुष्य उन्हीं लोकाम जाता है।
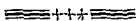
गोभक्तके लिये कुछ भी दुर्लभ नही है

गोषु भक्तश्च लभते यद् यदिच्छति मानव । स्त्रियोऽपि भक्ता या गोषु ताश्च काममवाप्नुयु ॥
पुत्रार्थी लभते पुत्र कन्यार्थी तामवाप्नुयात्। धनार्थी लभते वित्त धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात्॥
विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्या सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम्। न किचिद् दुर्लभ चैव गवा भक्तस्य भारत॥
(महा० अनु० ८३। ५०—५२)

गोभक्त मनुष्य जिस-जिस वस्तुकी इच्छा करता है वह सब उसे प्राप्त होती है। स्त्रियोमे भी जो गौआकी भक्त हैं वे मनोवाञ्छित कामनाएँ प्राप्त कर लेती है। पुत्रार्थी मनुष्य पुत्र पाता है और कन्यार्थी कन्या। धन चाहनेवालेको धन और धर्म चाहनेवालेको धर्म प्राप्त होता है। विद्यार्थी विद्या पाता है और सुखार्थी सुख। भारत! गोभक्तके लिये यहाँ कुछ भी दुर्लभ नहीं है।
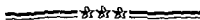
परा तृप्तिमवाप्नोति यत्र यत्राभिजायते॥
गवा प्रचारभूमि तु वाहयित्वा हलादिना। नरक महदाप्नोति यावदिन्द्राश्चतुर्दश॥
गवा पानप्रवृत्ताना यस्तु विघ्न समाचरेत्। ब्रह्महत्या कृता तेन घोरा भवति भार्गव।
सिहव्याघ्रभयत्रस्ता पङ्कमग्ना जल गताम्॥
गामुद्धृत्य नर स्वर्गे कल्पभोगानुपाश्नुते। गवा यवसदानेन रूपवानभिजायते॥
सौभाग्य महदाप्राति लावण्य च द्विजोत्तम। औषध च तथा दत्त्वा विरोगस्त्वभिजायते॥
औषध लवण तोयमाहार च प्रयच्छत। विपत्तौ पातक नास्य भवत्युद्बन्धनादिकम्॥
(विष्णुधर्मो० खण्ड २ अ० ४२)

ब्रह्मा-विष्णु-महेशद्वारा कामधेनुकी स्तुति

त्व माता सर्वदेवाना त्वं च यज्ञस्य कारणम्। त्वं तीर्थं सर्वतीर्थाना नमस्तेऽस्तु सदानघे॥
शशिसूर्यारुणा यस्या ललाटे वृषभध्वज। सरस्वती च हुकारे सर्वे नागाश्च कम्वले॥
क्षुरपृष्ठे च गन्धर्वा वदाश्चत्वार एव च। मुखाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च॥

(स्कन्द० ब्रह्म० धर्मारण्य० १०। १८—२०)

'हे निष्पाप! तुम सब दवताओकी माता यज्ञकी कारणरूपा आर सम्पूर्ण तीर्थोंकी तीर्थरूपा हो। हम तुम्ह सदा नमस्कार करते हैं। तुम्हारे ललाटमे चन्द्रमा सूर्य, अरुण ओर वृषभध्वज शकर हैं, हुकारमे सरस्वती, गलकम्बलमे नागगण, खुरोमे गन्धर्व और चारो वेद तथा मुखाग्रम चर एव अचर सम्पूर्ण तीर्थ विराजमान हैं।'

भगवान् शकरकी विलक्षण गोनिष्ठा

साक्षात् शकर ही नीलवृष ह

एक वार भगवान् शकरसे ब्रह्मतेजसम्पन्न ऋपियाका कुछ अपराध हो गया। ऋपियाने घार शाप दे दिया जिसके भयस त्रस्त हाकर शकरजी गोलोक पहुँचे और पवित्र ब्राह्मणाके ही दूसरे रूप सुरभि माताका स्तवन करने लगे। उन्हाने कहा—

सृष्टिस्थितिविनाशाना कर्त्र्यै मात्रे नमो नम॥
या त्व रसमयैर्भावैराप्याययसि भूतलम्।
देवाना च तथा सघान् पितृणामपि वै गणान्॥
सर्वैर्ज्ञात्वा रसाभिज्ञैर्मधुरास्वाददायिनी।
त्वया विश्वमिद सर्वं बलस्नेहसमन्वितम्॥
त्व माता सर्वरुद्राणा वसूना दुहिता तथा।
आदित्याना स्वसा चैव तुष्टा वाञ्छितसिद्धिदा॥
त्व धृतिस्त्व तथा तुष्टिस्त्व स्वाहा त्व स्वधा तथा।
ऋद्धि सिद्धिस्तथा लक्ष्मीर्धृति कीर्तिस्तथा मति॥
कान्तिर्लज्जा महामाया श्रद्धा सर्वार्थसाधिनी।

'सृष्टि, स्थिति और विनाश करनेवाली हे माँ! तुम्ह बार-बार नमस्कार है। तुम रसमय भावोसे समस्त पृथिवीतल देवता आर पितरोका तृप्त करती हो। सब प्रकारके रसतत्त्वाके मर्मज्ञाने बहुत विचार करनपर यही निर्णय किया कि मधुर रसका आस्वादन प्रदान करनेवाली एकमात्र तुम्हीं

हो। सम्पूर्ण चराचर विश्वको तुम्हींने बल आर स्नेहका दान

दिया है। हे देवि! तुम रुद्राकी माँ, वसुओंकी पुत्री, आदित्याकी स्वसा हो और संतुष्ट होकर वाञ्छित सिद्धि प्रदान करनेवाली हो। तुम्हीं धृति, तुष्टि, स्वाहा, स्वधा ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी, धृति (धारणा), कीर्ति, मति, कान्ति, लज्जा, महामाया, श्रद्धा और सर्वार्थसाधिनी हो।'

तुम्हारे अतिरिक्त त्रिभुवनमे कुछ भी नहीं है। तुम अग्नि और देवताओंको तृप्त करनेवाली हो और इस स्थावर-जगम—सम्पूर्ण जगत्मे व्याप्त हो। देवि! तुम सर्वदेवमयी, सर्वभूत-समृद्धिदायिनी और सर्वलोकहितैषिणी हो, अतएव मेरे शरीरका भी हित करो। अनघ! मै प्रणत होकर तुम्हारी पूजा करता हूँ। तुम विश्व-दुःखहारिणी हो, मेरे प्रति प्रसन्न हो। हे अमृतसम्भवे! ब्राह्मणोके शापानलसे मेरा शरीर दग्ध हुआ जा रहा है, तुम उसे शीतल करो।

इतना कहकर शकरजी परिक्रमा करके सुरभिके देहमे प्रवेश कर गये। सुरभि माताने उन्हे अपने गर्भमे धारण कर लिया। इधर शिवजीके न होनेसे सारे जगत्मे हाहाकार मच गया। तब देवताओने स्तवन करके ब्राह्मणोको प्रसन्न किया और उनसे पता लगाकर वे उस गोलोकमे पहुँचे, जहा पायसका पङ्क घीकी नदी, मधुके सरोवर विद्यमान है। वहाँके सिद्ध और सनातन देवता हाथोमे दही और पीयूष लिये रहते हैं।

गोलोकमे उन्होने सूर्यके समान तेजस्वी 'नील' नामक सुरभि-सुतको देखा। *भगवान् शकर ही इस वृषभके* रूपमे सुरभिसे अवतीर्ण हुए थे। देवता और मुनियोने देखा—गोलोककी नन्दा, सुमनसा स्वरूपा सुशीलका कामिनी नन्दिनी मेध्या हिरण्यदा धनदा धर्मदा, नर्मदा सकलप्रिया वामनलम्बिका कृष्णा दीर्घशृगा सुपिच्छिका तारा तोयिका शान्ता, दुर्विषह्या मनोरमा सुनासा गोरा गौरमुखी हरिद्रावर्णा नीला शङ्खिनी पञ्चवर्णिका विनता, अभिनता भिन्नवर्णा सुपत्रिका जया अरुणा कुण्डोध्नी सुदती और चारुचम्पका—इन गौओके बीचमे नील वृषभ स्वच्छन्द क्रीडा कर रहा है। उसके सारे अङ्ग लाल वर्णके थे। मुख और पूँछ पीले तथा खुर और सींग सफेद थे। वह नील वृष ही महादेव थे। वही चतुष्पाद धर्म थे और वही पञ्चमुख हर थे। उनके दर्शनमात्रसे वाजपेय यज्ञका फल मिलता है। नीलकी पूजासे सारे जगत्की पूजा होती है। नीलको चिकना ग्रास देनेसे जगत् तृप्त होता है। नीलकी देहमे विश्वव्यापी जनार्दन नित्य निवास करते हैं। देवता और ऋषियोने विविध प्रकारसे नीलकी स्तुति करते हुए कहा—
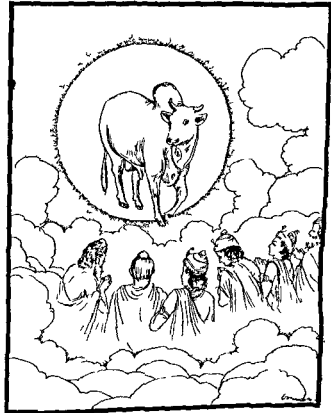
वृषस्त्वं भगवान् देव यस्तुभ्यं कुरुते त्वघम्॥
वृषलः स तु विज्ञेयो रौरवादिषु पच्यते।
पदा स्पृष्ट्वा स तु नरो नरकादिषु यातना॥
सेवते यामनिचयैर्निगाढप्रायबन्धनैः।
क्षुत्क्षामञ्च तृषाक्रान्त महाभारसमन्वितम्॥
निर्दया ये प्रशोष्यन्ति मतिस्तेषां न शाश्वती।

देव! तुम वृषरूपी भगवान् हो। जो मनुष्य तुम्हारे साथ पापका व्यवहार करता है वह निश्चय ही वृषल होता है और उसे रौरवादि नरकोकी यन्त्रणा भोगनी पडती है। जो मनुष्य तुम्हे पैरोसे छूता है, वह गाढे बन्धनोमे बँधकर, भूख-प्याससे पीडित होकर नरक-यातना भोगता है और जो निर्दय होकर तुम्हे पीडा पहुँचाता है वह शाश्वती गति—मुक्तिको नहीं पा सकता।

ऋषियोद्वारा स्तवन करनेपर नीलने प्रसन्न होकर उनको प्रणाम किया। फिर ब्राह्मणोने नील वृषरूप महेश्वरको

वरदान दिया कि मृत प्राणीके एकादशाहके दिन सुन्दर सुदृढ शक्तिसम्पन्न नील वृपको, उसक वाम-भागमे चक्र और दक्षिण-भागमे शूल अङ्कित करके गायाके समूहम छाड दिया जायगा तो वह जगत्का कल्याण करता रहगा। इस अवस्थाम देवता उसकी रक्षा करगे।

(स्कन्द०, नागर० अ० २५८-५९)

श्रीशिवजी वृपभध्वज और पशुपति केसे बने?

एक समय सुरभीका बछडा माँका दूध पी रहा था। उसक मुखसे दूधका झाग उडकर समीप हा बैठ हुए श्रीशकरजीक मस्तकपर जा गिरा। इससे शिवजीका क्रोध हो गया तब प्रजापतिने उनसे कहा—'प्रभो। आपक मस्तकपर यह अमृतका छींटा पडा है। बछडाके पानेसे गायका दूध जूठा नहीं होता। जैसे अमृतका सग्रह करके चन्द्रमा उसे बरसा देता ह, वैसे ही रोहिणी गौएँ भी अमृतसे उत्पन्न दूधको बरसाती है। जैस वायु, अग्नि सुवण समुद्र और देवताओका पिया हुआ अमृत—य काई जूठे नहीं होते वैसे ही बछडोको पिलाती हुई गो भी दूपित नहीं होती। ये गौएँ अपने दूध ओर घीसे समस्त जगत्का पाषण करगी। सभी लाग इन गौआके अमृतमय पवित्र दूधरूपी ऐश्वर्यकी इच्छा करत हैं।'

इतना कहकर प्रजापतिने श्रीमहादेवजीको कई गौएँ और एक वृपभ दिया। तब शिवजीन भी प्रसन्न होकर वृपभको अपना वाहन बनाया और अपनी ध्वजाका उसी वृपभक चिह्नस सुशोभित किया। इसीसे उनका नाम 'वृपभध्वज' पडा। फिर दवताआने महादेवजीको पशुओका स्वामी (पशुपति) बना दिया और गौआके वीचमे उनका नाम 'वृपभाङ्क' रखा गया। गोएँ ससारम सर्वश्रेष्ठ वस्तु है। वे सारे जगत्को जीवन देनेवाली है। भगवान् शकर सदा उनके साथ रहते है। वे चन्द्रमासे निकले हुए अमृतसे उत्पन्न शान्त, पवित्र, समस्त कामनाआको पूर्ण करनेवाली और समस्त प्राणियोके प्राणोकी रक्षा करनेवाली हैं। (महा०, अनु० ७७)
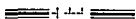
भगवान् श्रीरामके लीला-उपकरणोंमे गौकी विशेषता

गौएँ विश्वकी माता मानी गयी हैं। स्वयम्भू श्रीब्रह्माजीने जब लोकसृष्टिकी कामना की थी तब उन्हाने समस्त प्राणियाकी जीवन-वृत्तिक लिय पहल-पहल गाआका ही सृष्टि की थी—

लोकान् सिसृक्षुणा पूर्वं गाव सृष्टा स्वयम्भुवा।
वृत्त्यर्थं सर्वभूताना तस्मात् ता मातर स्मृता ॥

(महाभा० अनु० १४५)

गौ माता मातृशक्तिकी साक्षात् प्रतिमा है। जिस दिन विश्वम गौएँ नहीं रहगी उस दिन विश्व मातृशक्तिसे वियुक्त हा जायगा और उस दशाम काई भी प्राणी नहीं बचेगा। प्राचीन युगाम भारतमे जा विबुध-विस्मयकारी वैभव विद्यमान हानेकी विशद चचा पुराणतिहासाम मिलती हे उस वैभवका मूलाधार गोएँ ही थीं। यहाँके ऋषि-मुनियाका ता जीवन-निर्वाह, धार्मिक क्रिया-कलाप एव विविध प्रकारकी विद्याएँ गौओंपर ही निर्भर थीं। इसक प्रमाणस्वरूप श्रीवाल्मीकीय रामायणमे उल्लिखित श्रीवसिष्ठजीका यह कथन पठनीय ह—

शाश्वती शबला मह्य कीर्तिरात्मवतो यथा।
अस्या हव्य च कव्य च प्राणयात्रा तथैव च॥
आयत्तमग्निहोत्र च बलिर्होमस्तथैव च।
स्वाहाकारवषट्कारौ विद्याश्च विविधास्तथा॥

(वा०रा० १। ५३। १३-१४)

अर्थात् आत्मवान् पुरुपकी अक्षय कीर्तिक समान सदा मेर साथ मम्बन्ध रखनवाली यह चितकबरी गौ मुझसे पृथक् नहीं हो सकता। मेरा हव्य-कव्य और जीवन-निर्वाह इसीपर निर्भर है। मेरा अग्निहात्र, बलि, होम स्वाहा-वषट्कार ओर भाँति-भाँतिकी विद्याएँ इसीके अधीन हैं।

इन उद्धरणोम गौआकी अप्रतिम उपयोगिता व्यक्त है। इतना ही नहीं अखिल ऐश्वर्यागार भगवान् श्रीरामके लीला-प्रसगाका अनुशीलन करनेपर श्रीभगवान्के लीला-उपकरणामे

भी गौकी विशेषताके दर्शन होते हैं।

परम प्रभु भक्तोके लिये लीला-शरीर धारण करते हैं—*'भगत हेतु लीलातनु गहई ॥'* (मानस १। १४४। ७)। किंतु लीला अकेले नहीं हो सकती। लीलाम सहचरा और उपकरणाकी भी अपरिहार्य भूमिका होती है। प्रभु श्रीरामकी लीला भी इसका अपवाद नहीं। भगवान् श्रीरामकी पाँच लीलाएँ मुख्य प्रतीत होती हैं—बाललीला, विवाहलीला, वनलीला, रणलीला तथा राजलीला। इन सभी लीलाआम गौओका बहुधा उपयोग दर्शनीय है।

भगवान् श्रीरामने महाराज श्रीदशरथ एव महारानी कौसल्याके पुत्र-रूपम जन्म ग्रहणकर जा लौकिक बालकवत् लीलाएँ कीं, उसका परोक्षत श्रेय गौको ही है। असुराक अत्याचारसे आकुल पृथ्वीक आधिदैविक रूप गौके साथ ब्रह्मादि देवाने गुहार की जिसस द्रवित होकर भगवान् श्रीहरिने महाराज श्रीदशरथ एव महारानी कौसल्याके घर अवतरित होनेका आश्वासन दिया। आगे चलकर महाराज श्रीदशरथका पुत्र-प्राप्तिम विलम्ब होने लगा ओर उनका जीवन चोथेपनमे पहुँच गया, पर उन्हे कोई पुत्र नहीं हुआ। अन्तमे उन्हाने गुरु वसिष्ठके परामर्शसे शृगी ऋषिसे यज्ञ करवाया। यहाँ ध्यातव्य है कि यज्ञ गौआद्वारा प्रदत्त हविस ही होता है। अत कहा गया है कि गायाम ही यज्ञकी प्रतिष्ठा है और गाय ही यज्ञफलका कारण है—

गावो यज्ञस्य हि फल गोपु यज्ञा प्रतिष्ठिता ।

(महाभा० अनु० ७८। ८)

उस यज्ञक अवसरपर महाराज श्रीदशरथने दस लाख गोएँ दान की थीं—

गवा शतसहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृप ॥

(वा०रा० १। १४। ५०)

यज्ञफलका प्राप्तिमे कारण-स्वरूपा गौआका जहाँ दानम इतनी बडी सख्यामे उपयोग हुआ, वहाँ स्वय प्राजापत्य पुरुष अग्निदेव स्वर्णपात्रम दिव्य खीर लिये प्रकट हुए और उन्होने उसे महाराज श्रीदशरथको देकर रानियोको खिला देनेके लिये कहा। उस खीरको खाकर रानियाँ गर्भवती हुईं और शुभ समयपर भाइयासहित भगवान् श्रीराम अवतरित हुए। उनके अवतरणके उपलक्ष्यम महाराज श्रीदशरथने पुन ब्राह्मणाका बहुत-सी गौएँ दानम दीं—

हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह॥

(मानस १। १९३)

भगवान् श्रीरामकी बाललीलाके दो भाग हैं। पहला भाग शिशुलीला है और दूसरा भाग बाललीला। शिशुको बोलना नहीं आता। अत वह अपनी पीडाकी बात बोलकर नहीं बता सकता। वह पीडित होनेपर बेचैनीसे रोता है। परात्पर ब्रह्म श्रीराम भी शैशवावस्थाम सामान्य शिशुकी तरह ही कभी-कभी बचैन हो उठते थे। वे ठीकसे दूध नहीं पीते और बैठे, खडे या पालनेम झुलानेसे भी रोना नहीं छोडते थे। माताएँ दुष्टा स्त्रियोकी नजर लग जानेकी शका कर उसके निवारणके लिये देव पितर और ग्रहोकी पूजा करतीं तथा शिशु श्रीरामको घीसे तौलकर घीका तुलादान किया करती थीं—

देव पितर, ग्रह पूजिये तुला तौलिये घीके'

(गीतावली १। १२। २)

गोघृतमे कुरूपता, पाप राक्षस-बाधा-नाशकादि अनेक गुण कहे गये हैं।

माता-पिता बालकाके स्वास्थ्य-वर्धनके लिये उन्हे यथासाध्य पुष्टिकर भोजन खिलाना चाहते हैं और बालक आनाकानी करते हैं। श्रीरामचरितमानसमे आया है कि महाराज श्रीदशरथ अपने साथ भोजन करनेके लिये बालक्रीडामे रत श्रीरामको बुलाते थे, पर श्रीराम बालमण्डली छाडकर नहीं जाते थे। माता कौसल्या उन्हे पकडकर लातीं और भोजनपर बैठाती थी। श्रीराम भोजन करते-करते अवसर पाकर मुखमे दही-भात लपटे भाग जाते थे—

भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ॥

(मानस १। २०३)

बालक श्रीरामके भोजनम दहीका उल्लेख गोका स्मरण कराता है।

भगवान् श्रीरामके विवाहके अवसरपर राजा जनकने महाराज श्रीदशरथसे अनुरोध किया—'राजन्! श्रीराम-लक्ष्मणसे गोदान करवाइये, पितृकार्य भी सम्पन्न कीजिये। तत्पश्चात् विवाहका कार्य आरम्भ कीजियेगा—

रामलक्ष्मणयो राजन् गोदान कारयस्व ह।
पितृकार्य च भद्र ते ततो वैवाहिक कुरु॥
(वा० रा० १। ७१। २३)

इस अनुरोधपर महाराज श्रीदशरथने उत्तम गोदान किये—'चक्रे गोदानमुत्तमम्।' उस समय स्वर्णमण्डित सींगोवाली चार लाख गौएँ काँसेके दोहनपात्रके साथ ब्राह्मणाको दानमे दी गयी थीं—

सुवर्णशृग्य सम्पन्ना सवत्सा कास्यदोहना।
गवा शतसहस्राणि चत्वारि पुरुषर्षभ॥
(वा० रा० १। ७२। २३)

महाराज श्रीदशरथद्वारा एक-एक पुत्रके मङ्गलार्थ एक-एक लाख गौएँ दान की गयी थीं। चारो कुमार-कुमारियाके विवाह सम्पन्न हो जानेपर श्रीजनकजीने चक्रवर्ती महाराज श्रीदशरथको कामधेनुसे समता करनेवाली अनेका गौएँ प्रदान कीं। पुत्रोके विवाहके बाद भी प्रात कृत्य करक भूपशिरोमणि महाराज श्रीदशरथने गुरु वसिष्ठके समीप जाकर निवेदन किया—

अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं। देहु धेनु सब भाँति बनाईं॥
(मानस १। ३३०। ७)

देनेके समय कामधेनु-सदृश चार लाख गौएँ मँगायी गयी और अलकृतकर ब्राह्मणाको दी गयीं—

चारि लच्छ बर धेनु मगाईं। काम सुरभि सम सील सुहाईं॥
सब बिधि सकल अलकृत कीन्हीं। मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं॥
(मानस १। ३३१। २-३)

भगवान् श्रीरामकी वनयात्रा परिजनोके लिये विषादका विषय था, पर स्वय श्रीरामके लिये विनादका। उन्हाने उत्साहपूर्वक अकृत अन्न-धन-रत्नादि तथा बहुत-सी गौएँ दानकर वनयात्रा आरम्भ की। उस समय भगवान् श्रीरामने लक्ष्मणजीसे कहा कि महर्षि अगस्त्य एव विश्वामित्रजीका हजारा गौएँ देकर सतुष्ट करो—'तर्पयस्व महाबाहो गोसहस्रेण राघव।' इसी प्रकार उन्हाने सूतश्रेष्ठ सचिव चित्ररथको वस्तु-वाहन-धनादिके साथ एक हजार गौएँ—'गवा दश शतेन च' एव कठ तथा कलाप-शाखाके अध्येता ब्रह्मचारियाको चावल और चनेका भार वहन करनेवाले बारह सौ बैल और व्यजन एव दही-घीके लिय एक हजार गौएँ दिलवायीं—

शालिवाहसहस्र च द्वे शते भद्रकास्तथा॥
व्यञ्जनार्थ च सौमित्रे गोसहस्रमुपाकुरु॥
(वा०रा० २। ३२। २०-२१)

भगवान् श्रीरामकी वनयात्राके अवसरपर गोदानकी एक विनोदपूर्ण कथा श्रीवाल्मीकीय रामायणमे आयी है। श्रीराम वन जानेको तैयार थे। उस बातसे अनभिज्ञ त्रिजट नामक एक दीन-दुर्बल ब्राह्मणको पत्नीने प्रेरित किया—'नाथ! आप श्रीरामचन्द्रजीके दर्शन कर तो अवश्य कुछ पा जाइयेगा, वे बडे धर्मज्ञ हैं।' त्रिजटने भगवान् श्रीरामके पास पहुँचकर कहा—'मैं निर्धन हूँ, मेरे बहुत-सी सतान हैं। आप मुझपर कृपा करे।' दुर्बलतासे पीले पडे हुए ब्राह्मणकी बात सुनकर भगवान् श्रीरामने विनोदमे कह दिया—'विप्रवर! आप अपना डडा जितनी दूर फेक सके, फेकिये। वह जहाँ जाकर गिरेगा, वहाँतककी सब गौएँ आपकी हो जायँगी।' यह सुनकर त्रिजटने शीघ्रतासे धोतीका फेटा कसकर डडेको घुमाकर ऐसे जोरसे फेका कि वह सरयूजीके पार हजारो गौओके बीच एक साँडके पास गिरा। भगवान् श्रीरामने त्रिजटको गले लगा लिया ओर कथनानुसार सारी गौएँ उनके पास भिजवा दीं। गौओके समूहको पाकर मुनि त्रिजट पत्नीसहित प्रसन्न हो गये—'गवामनीक प्रतिगृह्य मोदित।' (वा०रा० २। ३२। ४३)

भगवान् श्रीरामकी रणलीलाका पूर्वाभ्यास विश्वामित्रजीके यज्ञकी रक्षाके समय देखनेको मिलता है। वह रण गो-ब्राह्मणोके हितार्थ हुआ।

विश्वामित्रजीने भगवान् श्रीरामको गा-ब्राह्मणोके हितके लिये दुष्ट पराक्रमवाली परम भयकर यक्षी ताडकाका वध करनेके लिये प्रेरित किया—

'गोब्राह्मणहितार्थाय जहि दुष्टपराक्रमाम्।'

श्रीरामने आदेश शिरोधार्य करते हुए कहा—'गो-ब्राह्मणो एव समूचे राष्ट्रके हितके लिय मैं आप-जैसे अनुपम प्रभावशाली महात्माके आदेशका पालन करनेको सब तरहसे तैयार हूँ—

गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्य च हिताय च।
तव चैवाप्रमेयस्य वचन कर्तुमुद्यत॥
(वा०रा० १। २६। ५)

भगवान् श्रीरामने गौ-ब्राह्मणोके हितके लिये ही पहले-पहल भीषण सग्राम किया और ताडका-सुबाहुका सेना-समेत सहार किया।

भगवान् श्रीरामका रावणके साथ जो युद्ध हुआ उसका भी एक कारण रावणका गौओके साथ शत्रु-भाव था। रावणके आदेशसे उसके अनुचर जिस देशमे गो-ब्राह्मणोको पाते थे, उस देशके नगर, गाँव एव पुरमे आग लगा देते थे—

जहँ जेहि देस धेनु द्विज पावहिं । नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं॥

(मानस १। १८३। ६)

इधर भगवान् श्रीराम तो विप्र धेनु, सुर सत-हितार्थ अवतरित ही हुए—

बिप्र धेनु सुर सत हित लीन्ह मनुज अवतार।

(मानस १। १९२)

अत उन्होने गोघाती आततायी असुरोके विनाशके लिये लकामे ऐसा प्रचण्ड युद्ध किया जैसा 'न भूतो न भविष्यति।'

भगवान् श्रीरामकी राजलीलाका भी शुभारम्भ गौओकी भूमिकासे ही होता है। वनवाससे लौटनेपर श्रीराम जब स्वागतमे आगत एक विशाल जनसमूहके साथ राजधानी अयोध्यामे प्रवेश करने लगे तब उनके आगे-आगे अन्यान्य मङ्गलसूचक प्रतीकोपकरणोके साथ गौएँ भी चल रही थीं—

अक्षत जातरूप च गाव कन्या सहद्विजा ।
नरा मोदकहस्ताश्च रामस्य पुरतो ययु ॥

(वा० रा० ६। १२८। ३८)

अपने राज्याभिषेकके अवसरपर भगवान् श्रीरामने ब्राह्मणोको एक लाख घोडे उतनी ही सख्यामे दुधारु गौएँ तथा एक सौ साँड दानमे दिये थे—

सहस्रशतमश्वाना धेनूना च गवा तथा॥
ददौ शतवृषान् पूर्वं द्विजेभ्यो मनुजर्षभ ।

(वा० रा० ६। १२८। ७३-७४)

श्रीवाल्मीकीय रामायणमे कहा गया है कि श्रीरामचन्द्रजीने बहुतसे अश्वमेध-यज्ञ और उससे दसगुने वाजपेय तथा अपार धन व्ययकर बहुतसे अग्निष्टोम अतिरात्र, गोसव तथा अन्य बडे-बडे यज्ञ किये। एक गोसव-यज्ञकी दक्षिणामे दस हजार गौएँ देनेका विधान है। सब प्रकारके यज्ञोमे जितनी गौएँ दान की गयी होगी, उस सख्याका अनुमान भी नहीं किया जा सकता। श्रीरामचरितमानसमे भी उल्लिखित है कि भगवान् श्रीरामने करोडो अश्वमेधयज्ञ किये थे—

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे॥

(मानस ७। २४। १)

गोघृत और दधिके बिना यज्ञ नहीं होता। उन्हींसे यज्ञका यज्ञत्व सफल होता है। अत गौओको यज्ञका मूल कहते हैं—

ऋते दधि घृतेनेह न यज्ञ सम्प्रवर्तते।
तेन यज्ञस्य यज्ञत्वमतो मूल च कथ्यते॥

(महाभा० अनु० ८३। २)

करोडो अश्वमेधके उद्देश्यसे राजराजेश्वर श्रीरामकी राजकीय गोशालाओमे असख्य गौओकी सेवा होती थी और उन्हींका दानोपहारमे उपयोग होता था। रामराज्यमे गौएँ पूज्या थीं उनकी सेवा राजधर्म था। उस समय गौएँ मनोवाञ्छित दूध देती थीं—

मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥

(मानस ७। २३। ५)

आनन्दरामायणमे भगवान् श्रीरामकी दिनचर्या उल्लिखित है। उससे पता चलता है कि श्रीराम सोकर उठते ही देव-द्विज-गुरु-माता-पिता एव कामधेनुका स्मरण किया करते थे। सीताजी नित्य ही सोनेके पात्रमे पूजनकी सामग्रियाँ लेकर कामधेनुकी पूजाकर उसे पक्वान्न खिलाया करती थीं। कामधेनु प्रसन्न होकर विविध प्रकारके भोज्य पदार्थ प्रदान करती थी जिन्हे सीताजी पाकशालामे रखती थीं और ब्राह्मणो इष्ट-मित्रो तथा परिजनोको परोसती थीं।

इस प्रकार भगवान् श्रीरामकी लीलाओमे गौओके सहयोगके अनेक प्रसग भरे हैं। (श्रीरामपदारथसिहजी)

———

श्रीकृष्ण-लीलाके उपकरणोमें गाय

सुर-वनिताओकी वीणाविनिन्दित स्वरलहरी अन्तरिक्षको चीरकर नन्दप्राङ्गणके मणिमय स्तम्भोमे प्रतिध्वनित हो उठी—

रिङ्गणकेलिकुले जननीसुखकारी।
व्रजदृशि सुकृतस्फुरदवतारी।
वलयितबाल्यविलास! जय बलवलित! हरे!*

नन्दरानी चकित-सी होकर एक क्षणके लिये आकाशकी ओर देखने लगीं, पर उनकी आँखे तो अपने नयनानन्द प्राणाराम हृदयधन नीलमणिकी छबिसे निरन्तर परिव्याप्त थीं। उन्हे वहाँ भी उस नीले गगनके वक्ष स्थलपर भी दीखा—

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु-तन-मंडित मुख दधि लेप किए॥
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिए॥
कठुला-कंठ बज्र केहरि-नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिए॥

नीलमणि श्यामसुन्दरके अरुण करपल्लवमे उज्ज्वलतम नवनीत है, नवनीरद श्रीअङ्गोको नचा-नचाकर घुटुरुआँ चलते हुए वे घूम रहे हैं, प्राङ्गणके बडभागी धूलिकणोमे श्यामल अङ्ग परिशोभित है, अरुण अधर तथा ओष्ठ धवल दधिसे सने हैं, सुन्दर कपोल एव चञ्चल नयनोकी शोभा निराली ही है, उन्नत ललाटपर गोरोचनका तिलक है मनोहर मुखारविन्दपर घनकृष्ण केशोकी घुँघराली लटे लहरा रही हैं, लटे ऐसी प्रतीत होती हैं मानो भ्रमर हो, श्यामसुन्दरके मनोहर मुखारविन्दका मधुर मधुपान करने आये हो, मधु पीकर मत्त हो गये हो, सुध-बुध भूले हुए, अरविन्दपर अरबरा रहे हो कमनीय कण्ठमे कठुला शोभा पा रहा है विशाल हृदयपर व्याघ्रनख आदि टोना-निवारक वस्तुओसे निर्मित माला झूल रही है। एक ओर इस छबिके क्षणभर दर्शनका आनन्द तथा दूसरी ओर सैकडो कल्पोका समस्त जीवन-सुख—इन दोनोकी तुलनामे वह एक क्षण ही धन्य है, कल्पोका जीवन तुच्छातितुच्छ सर्वथा व्यर्थ— अनर्थ है।

नन्दरानीने आकाशसे दृष्टि हटा ली तथा वह आँगनमे किलकते हुए नीलमणिको पुन देखने लग गयी। आँखोके कोयोमे आनन्दाश्रु छलक आये। यही दशा व्रजनरेश नन्दराजकी भी थी, जो कुछ ही दूरपर खडे हुए अपने पुत्रकी रिङ्गण-लीला निर्निमेष नयनोसे निहार रहे थे।

अग्रज दाऊ पास ही बैठे आनन्दाम्बुधिमे आकण्ठ निमग्न थे। उनके आनन्दकी सीमा नहीं थी। कभी आगे, कभी पीछे रहकर छायाकी तरह वे श्यामसुन्दरका अनुगमन करते थे। दोनो भाई परस्पर अस्पष्ट कुछ बोलते और दोनो ही खिलखिलाकर हँस पडते थे। थोडी दूर घुटरूँ चलकर अपने ही नूपुरकी रुनझुन ध्वनिसे चकित हो जाते, स्निग्ध गम्भीर मुद्रामे कुछ क्षण सोचने-से लगते फिर आगे बढते फिर रुनझुन शब्द होता फिर ठिठक जाते। ठहरते ही

---

* ये नन्दनन्दन बकैयाँ चलते हुए अपनी विविध क्रीडाओसे माता यशोदाको आनन्दित करते हैं तथा व्रजवासियोके अपूर्व सौभाग्यसे ही उनके नेत्रोके सामने स्वय अवतारी ही स्फुरित हुए हैं। विविध बाल्यविलाससे युक्त बलरामजीसहित श्रीकृष्णकी जय हो।

मणिमय आँगनमे मनोहर मुखकमल प्रतिबिम्बित हो जाता और विस्फारित नेत्रासे उसकी ओर देखने लगते। कभी उसे पकडनेके उद्देश्यसे उसके सिरपर हाथ रख देते। हाथका व्यवधान आनेसे प्रतिबिम्ब लुप्त हो जाता, श्यामसुन्दर आश्चर्यभरी मुद्रामे जननीकी ओर देखने लगते।

इस प्रकार बाललीलाधारी गोलोकविहारीकी अभिनव रिङ्गणलीला प्रारम्भ हुई तथा प्रतिक्षण नयी-नयी होकर बढ चली। यह कोई प्राकृत शिशुका स्वभावजात घुटुरुन तो था नहीं कि जिसकी निश्चित सीमा हो। यह तो स्वय भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन श्यामसुन्दर श्रीकृष्णके चिदानन्दमयस्वरूपभूत रससागरका एक तरङ्ग-विशेष था। चन्द्रकलाकी भाँति जिस अनुपातसे वात्सल्य-स्नेहवती माता यशोदा एव अन्य व्रजसुन्दरियाकी भावनाएँ बढ रही थीं, उसी अनुपातसे उस अचिन्त्य-अनन्त चिन्मय-रस-सार-सुधा-समुद्रमे सरल वक्र और तीक्ष्ण तरङ्ग उठ रही थीं। बालकृष्णके घुटरूँ चलनेका समाचार विद्युत्की तरह समस्त गोष्ठम फैल चुका था। यूथ-की-यूथ भाग्यवती व्रज-वनिताएँ प्रतिदिन नन्दद्वारपर एकत्र हो जातीं तथा उस अनुपम लीलारस-सुधाका अतृप्त पान करके बलिहार जाती। सबका अलग-अलग हृदय था सबकी अपनी-अपनी भावनाएँ थी, सभी अपनी भावनाके अनुरूप लीलाका रस लेती थी। रस लेती-लेती रसके तीव्र स्रोतोम वे बह जाती, न जाने किन-किन मधुमय अभिलाषाओको अन्तस्तलम छिपाये रहतीं। इन सबका प्रतिबिम्ब श्यामसुन्दरके हृदयपर पडता एव सबकी रुचिके अनुकूल सर्वसुखदायिनी अत्यन्त मनोहारिणी लीलाका प्रकाश होता। श्यामसुन्दरमे कितना ज्ञान हुआ है इसका रस लेनेवालीके लिये वैसी ही लीला होती। गोपी पूछती—नीलमणि! तेरा मुख कहाँ है? उत्तरम नीलमणि मनोहर मुखपर अपनी अँगुली रख देते। आँख कहाँ है? नीलमणि काजल लगे हुए नयनकमलोको दोनो कर-कमलोकी नन्ही-नन्ही अँगुलियासे मूँदकर गोपीकी ओर मुँह करके बैठ जाते। अच्छा लल्ला! नाक क्या वस्तु है? नन्दनन्दन प्राणायामकी मुद्राम नाकका स्पर्श करते।

वाह वाह! मेरे प्राण-धन! अच्छा इस बार कान और चोटी तो मुझे दिखा दे। श्रीकृष्ण चटपट कानोको छूकर दोनो हाथासे शिखाके स्थानको दबाकर सिर हिलाने लगते। गोपी आनन्दम डूब जाती—

> क्वानन क्व नयन क्व नासिका
> क्व श्रुति क्व च शिखेति केलित ।
> तत्र तत्र निहिताङ्गुलीदलो
> वल्लवीकुलमनन्दयत् प्रभु ॥

कोई गोपी देखना चाहती यशोदानन्दनम खडे होनेकी शक्ति आयी है या नहीं। उसके लिये व्रजेन्द्रनन्दन धीरे-धीरे उठ खडे होते। चार-पाँच पग चलकर गिर पडते। किसी व्रजवनिताके मनम आता, यह सलोना साँवरा बोल सकता है या नहीं? उसके मनोरथकी पूर्तिके लिये दोनो भाई परस्पर अस्फुटस्वरमे कुछ बोल जाते, गोपीका हृदय आनन्दसे उछलने लगता। इस तरह लीलामयके लीलारसप्रवाहसे समस्त व्रज प्लावित हो गया। फिर भी व्रजवनिताओकी आँखें तृप्त नहीं होतीं। उत्तरोत्तर मधुरातिमधुर लीला देखनेकी चाह बढती ही जाती। अत एक ही साथ सबको वात्सल्य-रस-सिन्धुम डुबो देनेके उद्देश्यसे एक अत्यन्त मधुर बाललीलाका आस्वादन करनेकी इच्छा श्यामसुन्दरके मनमे जाग्रत् हुई। इच्छाकी देर थी, अचिन्त्यलीलामहाशक्तिने तत्क्षण व्रजराजनन्दनको उसी साजसे सजा दिया और लीला प्रारम्भ हो गयी।

व्रजराज गोशालामे बछडोकी सँभाल करने गये हैं और व्रजरानी अपने प्राणधन ललनके लिये भोजन बनानेमे सलग्न है। राम-श्याम दोनो भाई आँगनम खेल रहे हैं। अबतक दोनो भाई मैया एव बाबाकी गोदमे चढकर ही द्वारदेश एव गोशाला आदिमे जाते थे। आज स्वतन्त्ररूपसे दोनो भाई तोरणद्वारकी ओर चल पडे। कभी खडे होकर कुछ डग चलते कभी घुटनाके बल। इस तरह बाहर चले आये। आम्रकी शीतल छायामे कुछ गोवत्स विश्राम कर रहे थे। धीरे-धीरे उनके पास जा पहुँचे। बछडेकी सुकोमल पूँछको देखकर आश्चर्यचकित-से होकर विचारने लगे यह क्या है? फिर दोनो भाइयाने अपने नेत्रकमलोको किञ्चित् नचाकर मानो कुछ परामर्श-सा किया और धीरेसे एक ही साथ पूँछको दोनो हाथासे मुट्ठी बाँधकर पकड लिया। अचानक पूँछ खिच जानेसे बछडा उठ खडा हुआ तथा भागने लगा। अचिन्त्यलीलामहाशक्तिने इसी क्षण श्यामसुन्दरकी स्वाभाविक अनन्त असीम सर्वज्ञतापर

बाललीलोचित मुग्धताकी यवनिका गिरा दी। दोनों भाई बछडेसे खिंचे जाते हुए भयभीत हो उठे। जिसके अनन्तानन्त ज्ञानभण्डारके एक क्षुद्रतम कण-ज्ञानसे समस्त विश्वमें कर्तव्याकर्तव्य-ज्ञानका सञ्चार होता है, वे भगवान् श्रीकृष्ण यह ज्ञान भूल गये कि पूँछ छोड देनेसे ही बछडेका सम्बन्ध छूट जायगा, बल्कि उन्होंने तो अपनी रक्षाके लिये और भी अधिक शक्ति लगाकर पूँछको जकड लिया तथा माँ-माँ! बाबा-बाबा! पुकारकर रोने लगे। उसी क्षण समस्त व्रजवनिताओंकी हृदय-वीणापर माँ-माँ, बाबा-बाबाकी करुणामिश्रित स्वरलहरी झंकृत हो उठी, क्योंकि उनके हृत्तन्तु सर्वथा श्याममय होकर निरन्तर श्यामसुन्दरसे ही जुडे रहते थे। अतः जो जहाँ जिस अवस्थामें थीं, चल पडीं। इतनी शीघ्र कैसे आ पहुँचीं, यह किसीने नहीं जाना, पर सभी आ पहुँचीं। सबने देखा, भयभीत गोवत्स धीरे-धीरे भाग रहा है तथा उसकी पूँछ पकडे नीलमणि एवं दाऊ माँ-माँ, बाबा-बाबाकी पुकार करते हुए खिंचे चले जा रहे हैं। अचिन्त्यलीला-शक्तिके महान् प्रभावसे कुछ क्षण सभी किंकर्तव्यविमूढ-सी हो गयीं। इसी समय उपनन्द-पत्नीने शीघ्रतासे बछडेके आगे जाकर उसे थाम लिया। इतनेमें नन्दरानी एवं नन्दराय भी आ पहुँचे। 'बेटा नीलमणि! दाऊ! पूँछ छोड दे, पूँछ छोड दे' कहते हुए दोनोंने हाथसे पकडकर पूँछ छुडा दी। नन्दरानीने नीलमणि एवं दाऊको अपनी गोदमें ले लिया, दोनोंका मुख चूमने लगीं। इधर व्रजसुन्दरियोंमें हँसीका स्रोत उमड पडा, बाललीलाविहारीकी इस अद्भुत अभूतपूर्व ललित लीलाको देखकर सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयीं। एक ग्वालिन बोली—'नीलमणि! अरे दाऊ! तुम दोनों भला इस बछडेसे भी दुर्बल हो! अरे, पूँछ पकडकर बछडेको रोक लेते या पूँछ पकडे-पकडे सारे व्रजमें घूम आते, यह बछडा तुम्हें व्रजमें घुमा लाता। हमलोग अपने-अपने घरोंपर तुम्हें देखकर निहाल होतीं, बछडे भी निहाल होते।' यों कहते-कहते ग्वालिनकी आँखोंमें प्रेमके आँसू छलछल करने लगे।

श्यामसुन्दर हँसने लगे, मानो संकेतसे कह रहे हैं—'एवमस्तु।' इसके पश्चात् भक्तवाञ्छाकल्पतरु व्रजराजनन्दनने बछडोंको अपने करस्पर्शका योगीन्द्र-मुनीन्द्र-दुर्लभ आनन्द देते हुए इस परम सुन्दर लीलाको अनेकों बार प्रकाशित किया।

दोनों भाई बछडेकी पूँछ पकड लेते, बछडा

कुछ दूर पीछे-पीछे खिंचते हुए चले जाते, फिर पूँछ छूट जाती तो किसी दूसरेकी पकड लेते, दूसरेकी छूटनेपर तीसरेकी। कभी एक साथ ही तीन-चार बछडोंकी पूँछ पकडते, बछडे कूदते और श्यामसुन्दर हँसने लगते। कितने ही बछडे स्वाभाविक प्यारवश श्यामसुन्दरके इच्छानुसार उन्हें खींच ले जाते। आगे-आगे करस्पर्शके आनन्दसे पुलकित होता हुआ बछडा और पीछे-पीछे पूँछमें टँगे हुए व्रजनयनानन्द पुरुषोत्तम स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण एवं दाऊजी। व्रजदेवियाँ इस परम मनोहर लीलाको देखकर आनन्दसे हँसते-हँसते आत्मविस्मृत हो जातीं। उनका गृह गृह-कार्य, सब कुछ छूट जाता—

> यर्ह्यङ्गनादर्शनीयकुमारलीला-
> वन्तर्व्रजे तदबलाः प्रगृहीतपुच्छैः।
> वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ
> प्रेक्षन्त्य उज्झितगृहा जहृषुर्हसन्त्यः॥*
> (श्रीमद्भा० १०। ८। २४)

× × ×

दही बिलोती हुई एक व्रजसुन्दरी धीमे-धीमे गा रही है—

> बलकृष्णौ बलवलितविलासौ
> खेलत इह सखि! सखिकृतहासौ॥ ध्रु०॥
> तर्णकपुच्छधृतिव्यापृतिनौ
> प्रणयकलितकलिकलन कृतिनौ॥
> (श्रीगोपालचम्पू)

'सखि! देख, दाऊको साथ लिये बालकृष्ण खेल रहा है। कुछ सखा भी साथ हैं, सभी उसकी मधुमयी लीला देख-देखकर हँस रहे हैं। अहा! देख बहन! उसी दिनकी तरह आज भी दोनों पुनः बछडेकी पूँछ पकडे हैं। सचमुच बहन! ये दोनों अब बडे चञ्चल हो गये हैं, लोगोंको खिझाना सीख गये हैं। अरी! उस दिन मैयासे कलह करते हुए तुमने इन्हें देखा नहीं? आह! इनका प्रेम-कलह अद्भुत ही है, इस कलामें ये दोनों ही बडे प्रवीण हो गये हैं।'

व्रजसुन्दरियाँ अन्य समस्त कर्म, समस्त उपासनाएँ भूल गयीं। उनके लिये तो अब सम्पूर्ण उपासनाओंका सारसर्वस्व एक यशोदानन्दन ही बन गये हैं। सारा दिन, सारी रात उनकी आँखोंके सामने बाललीला-रसमत्त परमानन्दकन्द नन्दनन्दनकी नयनाभिराम नित्य नयी छटामयी छवि ही नाचती रहती है। दिनका अधिकांश भाग वे नन्दद्वारके समीप खडी रहकर बिता देतीं। गुरुजनोंकी बारबारकी प्रेरणासे घर लौटतीं, पर मन तो नन्दनन्दनके पास ही रह जाता। अन्यमनस्क ही रहकर गृहकार्यमें लगतीं किंतु ठीकसे कर नहीं पातीं। दूध दुहने बैठतीं तो आँखोंके सामने गायोंके थनकी जगह नन्दनन्दन दीखते, धानका छिलका उतारने बैठतीं तो ऊखलमें, मूसलमें यहाँतक कि धानके कणोंमें श्यामसुन्दर दीखते, दही बिलोतीं तो दीखता मनमोहन नीलमणि मथानीको पकडे खडे हैं, घर लीपने बैठतीं तो हाथ चलता नहीं, क्योंकि उन्हें सर्वत्र व्रजेन्द्रनन्दन नाचते-थिरकते दीखते, उनके छोटे बालक रोने लगते, गोपियाँ लोरी देनेका विचार करतीं, पर आँखोंसे बच्चा नहीं दीखता, यशोदानन्दन दीखते, वस्त्र धोने बैठतीं तो जलमें, जलपात्रमें, वस्त्रके धागोंमें मानो श्यामसुन्दर समाये हों—यह दीखने लगता और वे चकित-सी, मुग्ध-सी होकर बैठी रह जातीं, झाड़ू देने जातीं तो दीखता, मैं तो नन्दरायजीकी गोशालामें बैठी हूँ, गो-रजमें लिपटे नन्दनन्दन सामने खेल रहे हैं, बस फिर झाड़ू हाथमें ही रह जाता। इस प्रकार वे अधिकांश समय भावाविष्ट रहतीं। लीलाशक्तिकी प्रेरणासे जब आवेश कुछ शिथिल होता, तो किसी प्रकार गृहकार्यका समाधान कर पातीं। पर उस समय भी उनका मन तो रसराजशिरोमणि यशोदानन्दनके लीला-रस-सुधा-सागरमें ही डूबा रहता तथा वाणी निरन्तर उन्हींका ललित लीलागान करती रहती, ऐसा प्रतीत होता कि मानो उनके अन्तर्हृदयका सरस रस-स्रोत ही सुरीले शब्द बनकर झर रहा हो—

---

* जब राम और श्याम दोनों कुछ और बडे हुए, तब व्रजमें घरके बाहर ऐसी-ऐसी बाललीलाएँ करने लगे, जिन्हें गोपियाँ देखती ही रह जातीं। जब वे किसी बैठे हुए बछडेकी पूँछ पकड लेते और बछडे डरकर इधर-उधर भागते, तब वे दोनों और भी जोरसे पूँछ पकड लेते और बछडे उन्हें घसीटते हुए दौडने लगते। गोपियाँ अपने घरका काम-धंधा छोडकर यही सब देखती रहतीं और हँसते-हँसते लोट-पोट हो जातीं।

या दोहनेऽवहनने मथनोपलेप-
प्रेङ्खेङ्खनार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ ।
गायन्ति चैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्यो
धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तयाना ॥
(श्रीमद्भा० १०। ४४। १५)

हरिलीला गावत गोपीजन अति आनँद भरि निसिदिन जाई।
बालचरित्र बिचित्र मनोहर कमलनैन ब्रजजन सुखदाई॥
दोहन मथन खँडन गृहलेपन मडन सुत-पति-सेवा।
चारि जाम अवकास नही पल सुमिरत कृष्ण देवदेवा॥
भवन भवन प्रति दीप बिराजत कर ककन पग नूपुर बाजे।
परमानद घोष कौतूहल निरखि भाँति सुरपति जिय लाजे॥

आज वह व्रजसुन्दरा भी इसी तरह विशषरूपसे भावाविष्ट होकर गा रही है। उसके मानस-नेत्राके सामने कभी गोवत्सपुच्छधारी श्यामसुन्दरकी, और कभी माताके साथ कमनीय कलहम सलग्न यशोदानन्दनकी छबि आ रही है। गापी भावनाके स्रोतमे डूब रही है और इधर उसके प्राणधन श्यामसुन्दर सचमुच ही वत्सपुच्छधारणकी लीलाम मत्त हैं—

खेलत मदनसुदर अग।
जुवति जन मन निरखि उपजत बिबिध भाँति अनग॥
पकरि बछरा पूँछ एचत अपनि दिसि बरजोर।
कबहुँ बच्छ लै भजत हरि कों जुवति जन की ओर॥
देखि परबस भए प्रीतम भयो मन आनद।
मनहिं आकुल भई ब्याकुल गई लाज अमद॥
कोउ देखत गहत कोऊ हँसत छाड़त गेह।
करत भायो अपने मन को प्रगट करि निज नेह॥
अति अलौकिक बाललाला क्योहुँ जानि न जाय।
मुग्धता सा महारस मुख देत रसिक मिलाय॥

यह नियम है कि मिथ्या प्रापञ्चिक मानसिक कल्पनाएँ भी यदि प्राणशक्तिका पर्याप्त बल पा ल तो मूर्तिमती एव सत्य बनकर प्रत्यक्ष दीखन लग जाती हैं। फिर गापाकी कल्पना तो सत्यक भी सत्य परमपरात्पर पुरुषात्तम साक्षात् भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन परमानन्दघन श्राकृष्णक सम्बन्धकी है। तथा श्रीकृष्णमय बने हुए प्राणाके बलपर श्रीकृष्णका गोपीकी ओर खींच लानेके लिय दौड रहा है। अत विलम्ब ही क्या था, श्यामसुन्दर मधुरातिमधुर आकर्षणसे युक्त उस भावनाके सूत्रम बँधे हुए, खिचे हुए-से ग्वालिनके घर आ पहुँचे। ग्वालिनने देखा—श्यामसुन्दर खडे है, पर अकले हैं। वास्तवमे श्यामसुन्दर अकेले ही आये थे, दादा दाऊ एव साथियोसे परामर्श करके सबको द्वारपर ही छोड दिया था अकले भीतर घुसे थे। अस्तु,

ग्वालिनके आनन्दका पार नही। उसने सोचा स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ? निर्णय करनेके उद्देश्यसे उसने बाहरकी ओर झरोखेसे झाँका, कुछ सखाआके साथ दाऊ अतिशय शान्त मुद्राम छिप-से खडे है, स्पष्ट था अपने अनुजके किसी सकेतकी प्रतीक्षामे खडे हैं। ग्वालिन समझ गयी—स्वप्न नहीं है सत्य है किसी मधुर गुप्त अभिसन्धिसे मेरे प्राणधन मेरे घर आये है। श्यामसुन्दरकी भोली चितवनकी ओर ग्वालिन देखने लगी। अधिक देरतक धैर्य न रख सकी, उसी क्षण दौड पडी और गोद उठाकर हृदयसे लगा लिया—

बालदसा गोपाल की सब काहू को भावै।
जाके भवन मे जात है सो लै गोद खिलावै॥
स्यामसुँदर मुख निरखि कै अबला सचु पावै।
लाल लाल कहि ग्वालिनी हँसि कठ लगावै॥

श्यामसुन्दरका स्पर्श-सुख पाकर ग्वालिनी मानो समाधिस्थ-सी हा गयी, सारी सुध-बुध खा बैठी। गादम बैठ हुए अन्तर्यामीने ग्वालिनक अन्तरमे झाँककर देखा। अन्तर्हृदयके तार झन-झन कर रहे हैं—

प्रणयकलितकलिकलने कृतिनौ।

राम-श्याम प्रणय-कलहम बडे ही चतुर हैं बडे ही चतुर है। उस झनकारकी ओटमे एक लालसा छिपी है—कभी श्यामसुन्दर मुझ खिझाते मैं रोष करती ये झगडते एसे प्रणय-कलहका सौभाग्य मुझे भी मिलता।

नीलमणि ग्वालिनका यही मनोरथ तो पूर्ण करने आये थे। व चुपचाप गोदस उठ खडे हुए। ग्वालिन प्रस्तर-मूर्तिकी तरह निश्चल बैठी थी। श्यामसुन्दर अपने सुकामलतम करपल्लवास धीर-धीरे ताली बजान लगे। ताली बजा कि गापमण्डलीक सहित दाऊ भीतर आ गये। नीलमणिने माखनगृहकी आर सकेत कर दिया। व सब चुपचाप बिना

किसी शब्दके भीतर जा पहुँचे। इधर स्वय नीलमणि गोशालाकी तरफ चल पडे। गोशालामे बहुत-से बछडे बँधे थे। गाये रँभा रही थीं। आज अभीतक दुही नहीं गयी थीं। दुहता कौन? ग्वालिन तो आधी रातसे भावाविष्ट थी, तबसे दधि-भाण्डमे मथानी डालकर बिलो रही थी, दो-चार बार मथानी घुमाती, फिर ठहरकर गीत गाती, फिर कुछ देर मथती, फिर गाने लगती, उसे यह ज्ञान ही नहीं था कि कब प्रभात हुआ।

श्यामसुन्दरको देखकर बछडे अपने सिर हिलाने लगे, गाय हम्बारव करने लगी। श्यामसुन्दरने एक बार चञ्चल दृष्टिसे सब तरफ देखा कि कोई देख तो नही रहा है। फिर एक बछडेको खोल दिया। बछडा जाकर मॉका दूध पीने लगा। उसके पश्चात् एक-एक करके वहाँ जितने बछडे थ सबको उन्मुक्त कर दिया, सभी अपनी-अपनी माँके थनोमे हुमक-हुमक कर दूध पीने लगे। यशोदानन्दनके मनोहर मुखारविन्दपर एक अनिर्वचनीय उल्लास छा गया। अपने इस कौतुकको देखकर वे आनन्दमे भर गये ओर गाय तथा बछडोकी ओर परम आह्लादभरे नेत्रोस देखने लगे। गाय एव बछडोकी दशा भी आज विचित्र ही हे। गायाने दूध पीते हुए बछडोका चाटनेकी बात तो दूर देखना तक छोड दिया। वे एकटक श्यामसुन्दरकी ओर देख रही ह। बछडे भी कुछ क्षण तो थनम मुँह लगाकर दूध पीते, पर फिर पीना छोडकर श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाते। श्यामसुन्दर उन्ह पुचकारकर अपने नन्हे-नन्ह हाथाका उठाकर शैशवोचित सरलतावश सकेत करते कि 'रे वत्सो। पी लो, पी ला ग्वालिनीके आनेक पहले-पहले ही सारा दूध आज पी डालो।' सचमुच आज श्रीकृष्णकी अचिन्त्यलीला-महाशक्तिकी प्रेरणासे ही बछडे दूध पीते रहे अन्यथा सभी दूध पीना छोडकर श्रीकृष्णको ही देखते रह जाते।

परमानन्दसुन्दर यशोदानन्दन एक गायके कुछ और निकट जाकर खड हो गय। गायने अपनी गर्दन बढायी। यशादानन्दन एक बार कुछ भयभीत-से हो गये पर गायकी अतिशय शान्तमुद्रा दखकर उन्ह साहस हो आया। लगे गायकी गर्दनको सहलाने। गायने गर्दन फैला दी।
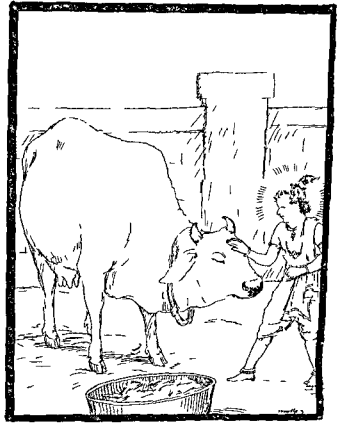
यशोदानन्दनने देखा—गाय बडी सूधी है, मारेगी नहीं। यह सोचकर वे धीरेसे उसके थनके पास बैठ गये। बछडा पहलेसे ही थन छोडकर, अलग हटकर श्यामसुन्दरकी ओर देखने लगा था। श्यामसुन्दरने थन दबाकर दूधकी धार निकालनी चाही। धार निकली तथा उससे श्यामसुन्दरका बायाँ कधा भींग गया। श्यामसुन्दरके आनन्दकी सीमा न थी। दूसरी बार दबाया। इस बार भी धार निकली। श्यामसुन्दरने चाहा था कि मुँहमे ही गिरे, पर धारने चिबुकका ही अभिषेक किया। तीसरी बारकी चेष्टामे यशोदानन्दन सफल हुए, दूधकी उज्ज्वल धार मुँहमे गिरी। दूधकी घूँट पीकर हर्षोत्फुल्ल नेत्रोसे नन्दनन्दनन पीछे मुँह फिराकर देखा तो दीखा—दाऊ एक स्तम्भकी ओटमे छिपे सकेत कर रहे हैं कि 'कन्हैया। जल्दी भाग जा।' उनसे कुछ ही दूरपर ग्वालिन दिव्य प्रेमसागरमे डूबती-उतराती खडी-खडी यशादानन्दनकी आर देख रही है। उसकी आँखासे दर-दर प्रमाश्रु बहकर उसके वक्ष स्थलको भिगो रहे हैं।

यशोदानन्दन उठकर भागे पर ग्वालिनी पथ रोके

खडी थी। बहुत चेष्टा करनेपर भी आखिर, श्यामसुन्दर ग्वालिनीके द्वारा पकड ही लिये गये। ग्वालिनीके अन्तर्हृदयमे तो आनन्दकी बाढ आ रही थी, पर बाहरसे वह गम्भीर होकर बोली—'अरे नटखट! यह तुमने क्या किया, सारे बछडोको खोलकर सारा दूध पिला दिया। और दाऊ!' कहकर ग्वालिनी लपकी तथा बडी तेजीसे उसने दाऊको भी पकड लिया। वे पास ही खड थ, अनुजके पकडे जानेसे स्नेह-परवश होकर पास चले आये थे कि देखे ग्वालिनी क्या करती है—उन्ह कल्पना भी नहीं थी कि यह मुझे भी पकड लेगी। वे तो समझे हुए थे कि हमलोगोके माखन खानेकी बात अभी ग्वालिनी जानती ही नहीं। जो हो, ग्वालिनी दोनाका हाथ पकडे हुए द्वारपर चली आयी और सब साथी भाग निकले।

अन्यान्य व्रजसुन्दरियाँ यह अनुपम दृश्य देखनेके लिये एकत्र हो गयीं। ग्वालिनी बाय हाथसे यशोदानन्दनका एव दाहिने हाथसे दाऊको पकडे खडी है। श्यामसुन्दर तरह-तरहकी बाते बना रहे हैं। पहले तो अपनेको निर्दोष सिद्ध करने लगे, फिर छोड देनेके लिये कातर प्रार्थना की। पर जब ग्वालिनने न छोडा तो उसीपर सारा दोष मढकर उससे झगडा करने लगे। कहने लग—'इसीने तो मुझे बुलाया था, मैं जब आया तो मुझे गोदमे लकर सो गयी, इसे सोयी देख मैं इसकी गोशालामे खेलने चला गया। बछडे दूध पी गये तो मैं क्या करता।' ग्वालिनी छोटे-से यशोदानन्दनमे इतनी बुद्धि देखकर चकित रह गयी। अन्तर्हृदयका प्रेमसागर उमड पडा, ग्वालिनीके सारे अङ्ग शिथिल हो गय, हाथ ढील पडने लगे पर श्यामसुन्दर उसकी प्रेमभरी मुट्ठीसे बिना उसकी इच्छाके निकल नहीं सकते थे। ग्वालिनीने यशादानन्दनके मुखारविन्दकी ओर देखा उसपर प्रस्वेद-कण छा रहे हैं। प्रस्वेद-कणापर दृष्टि जाते ही ग्वालिनीने हाथ छोड दिया। श्यामसुन्दर एव दाऊ भाग निकले। ग्वालिनी बावली-सी होकर भीतर चली गयी। लगातार छ पहर बीत गये, ग्वालिनी देख रही है—गायोके थनसे दूधकी धार निकल रही है और यशादानन्दन पी रहे हैं।

प्रतिदिनका अभ्यास है कि उष कालसे कुछ पहले-ही वे उठ पडती हैं अपने कोटि-कोटि प्राणोपम नयनमनोऽभिराम नित्यनवसुन्दर नीलमणिकी ललित लीलाएँ गाती हुई दही मथती हैं। अभ्यासवश ठीक उसी समय उसे बाह्यज्ञान हुआ, नयन-मन-चोर नीलमणिको देखनेके लिये उसके प्राण व्याकुल हो गये। पर अभी तो रात थी। प्रभातमे तीन घडीका विलम्ब था। तीन घडियाँ तीन कल्प-सी बीतीं। आखिर प्रभात हुआ। पर इस समय जानेपर नन्दरानी पूछगी, क्यो आयी है, तो क्या उत्तर दूँगी? समाधान न पाकर ग्वालिनीके प्राण छटपटा उठे। उसकी व्याकुलतासे द्रवित होकर अन्तर्यामीने तुरत उपाय बता दिया—'उलाहनेके बहाने चली जा।' फिर देर क्या थी, ग्वालिनी चल पडी।

विद्युत्-वगसे नन्दरानीके घर जा पहुँची। नन्दरानीने पूछा—'इतने सबेरे कैसे आयी, बहन?' ग्वालिनी उत्तर देने जा रही थी कि यशोदानन्दन शय्यासे उठकर आँखे मलते हुए वहीं चले आये। आज यह पहला ही अवसर है कि यशोदानन्दन अपने-आप निद्रा त्यागकर शय्यासे उठकर बाहर आये हैं। ग्वालिनीकी दृष्टि श्यामसुन्दरके विधि-हर-मुनि-मोहन वदनारविन्दपर पडी। फिर क्या था—

भूली री उराहने को दैबो।
परि गए दृष्टि स्यामघन सुदर चक्रित भई चितैबो॥
चित्र लिखी-सी ठाढी ग्वालिन को समुझै समुझैबो।
चत्रभुज प्रभु गिरिधर मुख निरखत कठिन भयो घर जैबो॥

कुछ देर निश्चल खडी रहकर विक्षिप्त-सी गाती हुई ग्वालिनी पीछेकी ओर लौट पडी। श्यामसुन्दरके मनोहर मुखारविन्दपर मधुर मन्द मुसकान है और मैयाके मुखपर अत्यन्त आश्चर्य। ग्वालिनी गाती जा रही है—

तव सूनुर्मुहुरनय कुरुते।
अकुरुत कि वा व्यञ्जितमुरु ते॥
मुञ्चति वत्सान् भ्राम भ्रामम्।
साचिव्य व कुरुते कामम्॥
असमयमोचनमसुखनिधानम् ।
क कि कुरुते न यदि निदानम्॥
विना निदान कुरुते स्वामिनि।
क्रोश न किमिव कुरुषे भामिनि!॥

(श्रीगोपालचम्पू)

'अरी नन्दरानी! तुम्हारा यह लाडिला बार-बार अनीति करता है। इसने क्या किया है? यह तुम्हे अच्छी तरह

मालूम है। यह चलता-फिरता बछडोको खाल देता है और म समझती हूँ कि तुमलोगाकी सलाहसे ही सब कुछ करता है। यदि तुम्हारा सकेत न हा तो और असमयम ही बछडोको खोल देनेका अप्रिय कार्य कौन कर सकता है? यदि कहो कि यह तुम्हारी सलाहसे ऐसा नहीं करता तो फिर तुम इसे डाँटती क्या नहीं।'

× × ×

दिन कुछ चढ चुका है। यशोदानन्दन व्रजवनिताआके आँगनम खलते हुए घूम रहे ह—

> कण्ठे रुरोर्नखमनुत्तमहेमनद्ध
> श्रोणौ महार्हमणिकिङ्किणिदाम बिभ्रत्।
> मन्द पुराद्बहिरुपेत्य करोति खेला-
> माभीरनीरजदृशा भवनाङ्गनेषु॥
>
> (श्रीआनन्दवृन्दावनचम्पू)

गलेम उत्कृष्ट सानेसे मँढा हुआ व्याघ्रनख है, कटिदेशमे अतिशय मूल्यवान् मणियासे युक्त करधनी पहने हे। चुपचाप धीरसे अपन घरमे बाहर आकर यशादानन्दन व्रजसुन्दरियाके भवनोम जाकर उनके आँगनामे खेलते हैं।

खेलते-खेलते अपनी गोशालाम चले गये। वहाँ जाकर—

> धेनु दुहत देखत हरि ग्वाल।
> आपुन बैठि गए तिन के ढिग सिखवौ मोहि कहत गोपाल॥
> कालि देहौ गादोहन सिखवैं आज दुही सब गाय।
> भोर दुहौ जिन नद दुहाई उन सा कहत सुनाय सुनाय॥
> बड़ो भयो अब दुहत रहौंगो आप आपनी धेनु निबेर।
> सूरदास प्रभु कहत सौंह दै मोहि लीजिए टेर॥

—अतिशय मनायागस गायाका दुहा जाना दखने लग। व्रजनरश नन्दराय पास हा दाहनाक दूधका सँभाल कर रह हैं। चञ्चल नन्दनन्दन पिताका दृष्टि बचाकर गाशालाम दूर जा निकले। एक बूढा ग्वाला मन्द-मन्द स्वरम श्यामसुन्दरकी लीला गाता हुआ गाय दुह रहा है। श्यामसुन्दरका देखत ही गाय जारस रँभा उठी। ग्वालन दृष्टि फिराकर देखा। देखत ही उसका पाक पडना बद हो गया। गोपका रोम-रोम आनन्दम नाच उठा। यह गोप व्रजनरश नन्दरायजीका अतिशय प्रिय था क्योंकि वह उनका बालसखा था। किसी दैवी प्रेरणासे इसने ब्याह नहीं किया था, आजीवन एकाकी नन्दरायजीके पास रहा। नन्दरायजी इसे मित्र ही नही, बडे भाईके रूपमे देखते थे। श्यामसुन्दरके जन्म-दिनके समयसे यह गोप अर्द्धविक्षिप्त-सा रहता, अवश्य ही गायोकी सेवा जैसे करता था, वैसे ही करता रहा। आज मानो उसके समस्त जीवनकी तपस्याका फल देनेके लिय नन्दनन्दन एकान्तम उसके सामने चल आये।

नन्दनन्दन उसके पास बेठ गये। बाय हाथसे उसके दाहिने कधेको तथा दाहिने हाथसे उसके चिबुकको स्पर्श करके बोले—'ताऊ! मुझे भी दुहना सिखा दो।' इस मधुर कण्ठध्वनिमे न जान क्या जादू भरा है, वृद्ध गोप रो पडा। गोपके हाथस दोहनी नीचे गिर पडी तथा नन्दनन्दनको छातीसे चिपटाकर वह बेसुध हो गया। बाह्यदृष्टिमे तो एक-दो क्षण ही बाते, पर वस्तुत गोपकी दृष्टिम अनन्त कल्पातक वह नन्दनन्दनको हृदयसे लगाये अनिर्वचनीय परमानन्दका रस लेता रहा। इधर नन्दनन्दन अपनी छोटी-छोटी अँगुलियास उसकी आँख पोछ रहे हैं तथा कह रहे हैं—'क्या ताऊ! मुझे नही सिखा दोगे?'

गोपकी भावसमाधि शिथिल हुई पर आज तो सभी गाय दुही जा चुकी हैं। गोप बोला—'मेरे लाल! कल सिखा दूँगा।' नन्दनन्दनका मुखारविन्द परमोल्लाससे जगमगा उठा। बोल—'ताऊ! बाबाकी सौंह है, कल अवश्य सिखला दना भला। मरे आनेतक कम-से-कम एक गाय बिना दुहे हुए अवश्य रखना।' गोप एकटक अपने प्राणधनकी आर दख रहा था। यशादानन्दन फिर बाल—'ताऊ! अब तो मैं सयाना हो गया, अपनी गाय अपने-आप दुह लूँगा।' गोप प्रस्तरमूतिकी तरह निश्चल था। नन्दनन्दन फिर बाले—'अच्छा ताऊ! आज सन्ध्याको सिखा दो तो कैसा रहे?' वृद्ध गोपन कुछ कहना चाहा पर शब्द कण्ठस बाहर नहीं निकले। व्रजराजनन्दन चटपट बाल उठ—'नहीं ताऊ सायकाल तो मैया आने नहीं देगी कल ही सिखा दना कल तुम गोशाला दुहने जब आओ तो मुझे पुकार लेना।' यह कहकर यशोदानन्दन कुछ सोचने-से लगे। फिर बोले—'नहीं पुकारनेकी आवश्यकता नहीं मैं अपने-आप ही आ जाऊँगा पर तुम भूलना मत ताऊ!' वृद्ध गोपने कठिनतासे पुरस्कारका एक शब्द करके

यह सूचित कर दिया कि 'मेरे लाल, एसा ही करूँगा।' नन्दनन्दन उल्लसित होकर बाबाक पास लौट गय।

दूसरे दिन जितना शीघ्र हो सकता था, यशोदानन्दन गोपके पास पहुँचे। उनकी आँखोम उत्कण्ठा भरा थी। आज दाऊ भी साथ ह। श्यामसुन्दर कुछ परामर्श करके उन्ह साथ ले आये हैं। आते ही गोपकी दोहनी उन्होने थाम ली तथा अतिशय उत्सुक होकर बाले—'चलो ताऊ, गाय कहाँ है? सिखा दो।' अग्रज दाऊ भी प्रार्थनामिश्रित स्वरम बाले—'हाँ-हाँ, ताऊ इसे आज अवश्य सिखा दो।'

वृद्ध गोपने श्यामसुन्दरका मुख चूमकर उनके हाथामे एक छोटी-सी दोहनी दे दी। श्यामसुन्दर दुहनेकी मुद्रामे गायके थनके पास जा बैठे। गापने श्यामसुन्दरकी अँगुलियोको अपनी अँगुलियोम पकडकर थनका दबाना सिखाया। ठीक उसके कथनानुसार वे दबाने लग। दूधकी धारा गिरने लगी, पर वह दोहनीपर न गिरकर कभी श्यामसुन्दरके पेटपर और कभी पृथ्वीपर गिरती। श्यामसुन्दर दोहनीको कभी धरतीपर रख देते, कभी घुटनोम दबा लेते।
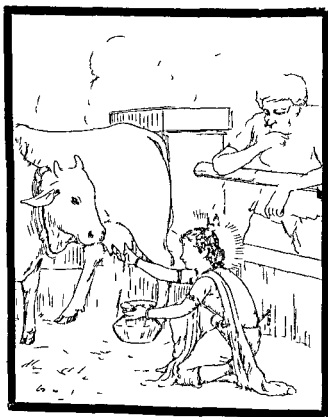
इस क्रियामे एक-दा धारे दोहनीम, एक-दो श्यामसुन्दरके श्रीअङ्गपर ओर एक-दो धरतीपर गिरतीं। फिर भी कुछ दूध दोहनीमे एकत्र हो गया। हर्षोत्फुल्ल मुखसे दोहनी लेकर वे उठ खडे हुए तथा नाच-नाचकर दाऊको दिखाया कि 'देखो, मैं दुहना सीख गया।' दाऊ एव वृद्ध गोप दोनो ही यशोदानन्दनके हर्षोत्फुल्ल मुखको देख-देखकर मुग्ध हो गये। इस तरह गो-दोहनकी आधी शिक्षा समाप्त हुई।

तीसरे दिन प्रात काल उठते ही श्यामसुन्दर माताका आँचल पकडकर प्रार्थना करने लगे—

> दे मैया री दोहनी दुहि लाऊँ गैया।
> माखन खाय बल भयो, तोहि नद दुहैया॥
> सेदुर काजरि धूमरी धौरि मेरी गैया।
> दुहि लाऊँ तुरतहि तब, मोहि कर दे घैया॥
> ग्वालन के सँग दुहत हौ बूझौ बल भैया।
> सूर निरखि जननी हँसी तब लेत बलैया॥

नन्दरानी समझाने लगी पर श्यामसुन्दरने एक भी नहीं सुनी। किसी तरह मनुहार कर-करके माताने माखन खिलाया, शृगार किया तथा गोदोहनकी बात भुला देनकी चेष्टा की। माँके अनुरागभरे हृदयमे यह भय था कि मेरा नीलमणि अभी निरा अबोध शिशु है कहीं दुहते समय काई गाय लात न मार दे। पर आज ता हठीले मोहन मचले हुए हैं। नन्दरानी अन्तमे गोद लेकर, कोटि-कोटि प्राणाका प्यार देकर बोली—'मेरे प्राणधन नीलमणि। पहले अच्छी तरह बाबाके पास जाकर दुहना सीख ले तब मैं दोहनी दूँगी और तू दूध दुह लाना।' माँकी बात सुनकर तत्क्षण नन्दनन्दन बाबाक पास दोड गये। उनकी धोती पकडकर बार-बार हठ करने लग—

> बाबाजू! मोहि दुहन सिखावो।
> गाय एक सूधी-सी मिलवो हौहुँ दुहौ बलदाउ दुहावो॥

व्रजराज अपने हठीले लालकी मुखभगिमा देखकर मुग्ध हा गये। गोदम लेकर शुभ मुहूर्तम सिखा देनेकी बात कहने लगे, पर व्रजदुलार आज किसीकी बातपर माननेवाले न थे। पास ही उपनन्द खडे थे। उनके परामर्शसे यह निश्चित हुआ कि नारायणका स्मरण करके नीलमणिकी साध पूरी कर दी जाय। फिर तो श्यामसुन्दरके उल्लासका

कहना ही क्या। वे उसी क्षण बाबाकी गोदसे कूदकर मैयाकी गोदमें जा पहुँचे—

तनक कनक की दोहनी दे री मैया।
तात दुहन सिखवन कह्यौ मोहि धौरी गैया॥

श्यामसुन्दरके मनोहर मुखारविन्दपर प्रस्वेद-कण मोतीकी तरह चमक रहे थे। माँने उन्हें अञ्चलसे पोंछकर अपने नीलमणिको हृदयसे लगाया, छोटी-सी सुवर्णकी दोहनी हाथमें दे दी और स्वयं साथ चल पड़ीं। नन्दरानीके पीछे-पीछे यूथ-की-यूथ व्रजवनिताएँ नीलमणिकी गोदोहन-लीला देखनेको एकत्र हो गयीं। इष्टदेव नारायणका स्मरण करके व्रजराजने अपने प्राणाधार पुत्रका सिर सूँघा तथा गोदोहनशिक्षाका अभिनय सम्पन्न हुआ। गोपनन्दन गो दुहने बैठे—

हरि बिसमासन बैठि कै मृदु कर थन लीनो।
धार अटपटी देखि कै ब्रजपति हँसि दीनो॥
गृह गृह ते आयीं देखन सब ब्रजनारी।
सकुचत सब मन हरि लियो हँसि घोषबिहारी॥

व्रजराजके आदेशसे उस दिन नन्दभवन सजाया गया। मङ्गलगान हुए, मङ्गलवाद्य बजे। व्रजराजने ब्राह्मणोंको मुक्तहस्त होकर दान दिया—

द्विज बुलाय दछिना दई बिधि मंगल गावै।
परमानँद प्रभु साँवरो सुख-सिंधु बढावै॥

आगे चलकर यशोदानन्दन गोदोहन-कलामें अत्यन्त कुशल हो गये। सबसे अधिक आश्चर्य यह था कि जो गायें कठिनतासे दुहने देती थीं, वे श्यामसुन्दरके हाथका स्पर्श पाते ही सर्वथा स्थिर खड़ी रहतीं और अपेक्षाकृत बहुत अधिक दूध देतीं। अतः अपने प्राणधन नीलमणिको गौ दुहनेके लिये व्रजवनिताएँ अपने-अपने घर ले जाने लगीं। अवश्य ही गोदोहन बहाना मात्र ही था, इस मिससे वे अपने प्राणधनके दर्शनका परम सुख लेतीं। इस गोदोहनको निमित्त बनाकर चिदानन्दरस-घनविग्रह व्रजराजनन्दनने अनेकों मधुमयी लीलाओंका प्रकाश किया। वह छबि अद्भुत ही होती। व्रजाङ्गनाएँ बछड़ोंके पास खड़ी रहकर निर्निमेष नयनोंसे दिव्य शोभा निहारतीं और लीलारसमत्त स्वयं भगवान् यशोदानन्दन श्रीकृष्णचन्द्र उनकी गायें दुहते। गोदोहनका पारिश्रमिक था श्यामसुन्दरपर बिक जाना—

जा दिन ते गैया दुहि दीनी।
ता दिन ते आप को आपुहि मानहुँ चितै ठगोरी लीनी॥
सहज स्याम कर धरी दोहनी दूध लोभ मिस बिनती कीनी।
मृदु मुसकाय चितै कछु बोले ग्वालिनि निरखि प्रेम रस भीनी॥
नितप्रति खिरक सवारे आवत लोकलाज मनो घृत सो पीनी।
चत्रभुज प्रभु गिरिधर मनमोहन दरसन छल बल सुधि बुधि छीनी॥

चञ्चल यशोदानन्दनके बाललीला-रसका आस्वादन करते हुए सौभाग्यशाली व्रजवासियोंके दिन क्षणके समान बीत रहे थे। अब उलूखल-बन्धनकी परम मनोहारिणी लीलाके पश्चात् उपनन्दके परामर्शसे समस्त नन्दव्रज वृन्दावनमें चला आया। अतः वृन्दावनके अनुरूप ही श्यामसुन्दर नन्दनन्दनके लीलारससिन्धुमें तरंगें उठने लगीं और उससे वृन्दावन प्लावित हो उठा।

श्यामसुन्दर अब वंशी बजाना सीख गये हैं। कब, कैसे, किससे सीखा—यह किसीने नहीं जाना पर वंशीकी ध्वनिसे समस्त व्रजवासी मोहित हो उठे। श्यामसुन्दर अपनी मैयाकी, बाबाकी गोदमें बैठे रहते। व्रजाङ्गनाएँ आतीं

और कहतीं—

हे कृष्ण मातृकुचचूचुकचूषणेऽपि
नाल यदेतदधरोष्ठपुट तवासीत्।
तेनाद्य ते कतिपयेषु दिनेष्वकस्मात्
कस्माद् गुरोरधिगत कलवेणुपाठ ॥
(श्रीआनन्दवृन्दावनचम्पू)

'प्यारे कन्हैया! तुम्हारे ये कोमल अधर तो मातृ-स्तनपानमें भी समर्थ न थे, फिर भला इने-गिने दिनोमे ही तुमने इतनी मधुर वशी बजानेकी शिक्षा किस गुरुसे सीख ली।' इस प्रकार व्रजाङ्गनाओका आग्रह देखकर श्यामसुन्दर वशी बजाते और वे मुग्ध हो जातीं।

श्यामसुन्दर दिनभर दो कार्योंमे व्यस्त रहते—एक वशी बजाना और दूसरा सखाओके साथ विविध क्रीडा करना। अब विशेषत गाय एव गोवत्सोके साथ ही क्रीडा होती थी। कभी दो, चार छ गोवत्साको अथवा गायोको पकड लेते, उनको अपने अधीन करके नचाते तथा स्वय उनके साथ नाचते! कभी उनके सींगोको पकडकर खेलते। कभी गाडीमे जुते हुए बैलोंके सींग पकडकर उनसे विविध क्रीडा करते। नन्दरानी, नन्दराय स्नेहवश भयभीत हो जाते। बार-बार मना करते, पर श्रीकृष्ण एक नहीं सुनते। साथमे दाऊका प्रोत्साहन था। दोना भाई परामर्श करके बहुत दूर निकल जाते। जननी व्याकुल होकर ढूँढने जाती तो दोनो भाई व्रजकी सीमाके बाहर वनके पास बछडा चराते हुए गोपशिशुओके साथ खेलते मिलते। अपने कोटि-कोटि-प्राणप्रतिम नीलमणिको कण्ठमे लगाकर जननी इतनी दूर अकेले आनेके लिये मना करतीं। नीलमणि कहते—

मैया री! मैं गाय चरावन जैहौं।
तूँ कहि महरि नदबाबा सो, बड़ो भयो न डरैहौं॥
श्रीदामा लै आदि सखा सब अरु हलधर सँग लैहौं।
दह्यो भात काँवरि भरि लैहौं, भूख लगै तब खैहौं॥
बसीवट की सीतल छैयाँ खेलत मे सुख पैहौं।
परमानददास सँग खेलौं जाय जमुनतट न्हैहौं॥

लालकी बात सुनकर जननीका हृदय आनन्दसे उछलने लगा। एक दिन था, नन्दरानी अपने प्राणधनको दुलराती हुई नाना मनोरथ करती थीं—कब मेरा नीलमणि बकैयाँ चलेगा, कब डगमग करते हुए धरतीपर पैर रखेगा, कब मुझे माँ-माँ कहकर पुकारेगा, कब माखन माँगेगा, कब गाय दुहने बैठेगा और वह दिन कब होगा, जब मैं माथेपर तिलक करके अपने नीलमणिको गाय चराने वन भेजूँगी। नन्दरानीके ये सभी मनोरथ पूर्ण हुए। गाय चरानेका मनोरथ भी मानो नीलमणिकी इस बातसे ही पूर्ण हो गया। पर अभी नीलमणिके तो दूधके भी दाँत नहीं उतरे है, यह भला वनमे गोचारण करने कैसे जायगा—इस भावनासे मैया अपने लालको तरह-तरहसे समझाने लगी कि 'मेरे लाल! अभी कुछ दिन बाद गाय चराने भेजूँगी।' नन्दराय भी समझाते, पर चञ्चल श्यामसुन्दर भाग ही जाते। इसीलिये इस भयसे कि खेलते-खेलते पता नहीं किसी दिन किधर जा निकले, नन्ददम्पतिने परस्पर परामर्श करके यह निश्चय किया—

यदि गोसङ्गावस्थान विना न स्थातु पारयतस्तर्हि व्रजसदेशदेशे वत्सानेव तावत्सञ्चारयतामिति।

(श्रीगोपालचम्पू)

सचमुच ये राम-कृष्ण दोनो अब बडे चञ्चल हो गये हैं तथा विशेषत इन्हे गायोका सङ्ग बडा प्रिय है। 'यदि गायोके सग बिना ये नहीं रह सकते तो अच्छा यह है कि व्रजके निकट रहकर ये छोटे बछडोको चराया करे।'

उपनन्दने भी यही सम्मति दी। अत ज्यौतिषियोको बुलाकर पुण्यतिथि—पुण्यमुहूर्त निश्चय कर लिया गया। व्रजमे बात फैलते क्या देर लगती? सुनते ही सबने निश्चय किया कि हम भी अपने-अपने बच्चोको उसी दिनसे वत्सचारणके लिये भेजेगे।

मङ्गलमय प्रभात हुआ। आज यशोदानन्दन वत्सचारण प्रारम्भ करेगे। नन्दरानीके आनन्दका क्या कहना? माताने तरह-तरहके वस्त्राभूषणोसे अपने हाथो लालको सजाया, पर स्नेहभरे हृदयमे तुरत ही आशङ्का उठी—इसका सौन्दर्य तो पहलेसे ही भुवन-मन-मोहन है। मैंने इसको सजाकर और भी सुन्दर बना दिया। कहीं नजर न लग जाय! जननीने उसी क्षण लालके विशाल भालपर काजलकी टेढी रेखा खींच दी। इष्टदेव नारायणको मनाया। ब्राह्मणोको स्वर्ण-दान किया और श्यामसुन्दरके लिये सबसे आशीर्वाद लिये। बडी सुखी हैं नन्दरानी आज। पर जब श्यामसुन्दर चलनेको

तैयार हुए, तब तो वात्सल्य-स्नेहने जननीके मनमें शङ्काओंके

पहाड़ खड़े कर दिये। वे डर गयीं—कहीं जंगलमें मेरे कन्हैयाका अनिष्ट न हो जाय। इसे कोई वन्य कीट-पतङ्ग न काट ले। कहीं यह गिर न पड़े। नन्दरानीकी आँखोंमें आँसू छलक आये। उन्होंने दाऊको समीप बुलाकर उनके हाथमें कन्हैयाका हाथ पकड़ाकर कहा—'बेटा! तुम बड़े हो, यह कन्हैया बड़ा चञ्चल है, अपने इस छोटे भाईकी सँभाल रखना, भला!'

वत्स चरावन जात कन्हैया।
उबटि अंग अन्हवाय लाल को फूली फिरत मगन मन मैया॥
निज कर करि सिंगार विविध विधि काजल रेख भाल पर दीन्हीं।
दीठि लागिबे के डर जसुमति इष्टदेव सौं विनती कीन्हीं॥
विप्र बुलाय दान करि सुबरन सबकी सुखद असीसें लीन्हीं।
कर पकराइ नयन भरि अँसुवन सकल सँभार दाउए दीन्हीं॥

नन्दरायजी निर्निमेष नयनोंसे अपने पुत्रका शृंगार और यशोदाकी प्रमदशा देख रहे हैं। हृदयका आनन्दरस पानी बनकर आँखोंकी गह बाहर आना चाहता है, पर मङ्गल-मुहूर्तकी स्मृति बाँध लगा देती है। मन-ही-मन नन्दराय आजके पुण्यप्रभातको धन्यवाद दे रहे हैं। सब ओर आनन्द छाया है।

आजु ब्रज छायो अति आनंद।
वत्स चरावन जात प्रथम दिन नंदसुवन सुखकंद॥

माताके वात्सल्यपूर्ण हाथोंसे सजकर नीलमणि आँगनमें खड़े हुए। नन्दरायने अपने पुत्रके हाथमें एक छोटी-सी लाल छड़ी पकड़ा दी—'तनुतरां लोहितयष्टिकामका करे धारयित्वा' (श्रीआनन्दवृन्दावनचम्पू)। सब बालगोपाल समीप आकर खड़े हो गये।

सोहत लाल लकुट कर राती।
सूथन कटि चोलना अरुन रँग पीतांबर की गाती।
ऐसेहि गोप सबै बनि आए, जो सब स्याम सँगाती॥

नन्दरायकी आज्ञासे आज गोवत्सोंका भी सुन्दर शृंगार किया गया है। वे तोरणद्वारके बाहर सुन्दर सजे हुए सिर उठाये खड़े हैं, मानो नन्दनन्दनकी प्रतीक्षा कर रहे हों।

सचमुच नन्दनन्दनके आते ही वे सभी आनन्दमें भरकर कूदने लगे। नन्दनन्दन दौड़कर उनके पास जा पहुँचे। उनके बीच खड़े होनेपर वे पुनः शान्त हो गये। तदनन्तर

यशोदानन्दनने सब गुरुजनोंको प्रणाम किया और वत्सचारणके लिये प्रस्थान किया—

चले हरि बत्स चरावन आज।
मुदित जसोमति करत आरती साजे सब सुभ साज॥
मगलगान करत ब्रजबनिता मोतिन पूरे थाल।
हँसत हँसावत बत्स-बाल सँग चले जात गोपाल॥

आज नन्दद्वारसे लेकर वनतक समस्त गोपोंके गृह सजाये गये हैं। सबके द्वारपर मङ्गलकलश हैं। घर-घर मङ्गलगीत गाये जा रहे हैं। अपने गृहके सामने आनेपर सभी व्रजाङ्गनाएँ नन्दनन्दनकी आरती उतार रही हैं। आगे-आगे गोवत्स चल रहे हैं तथा उनके पीछे ग्वालसखाओंके बीचमें कंधेपर छींका रखे हुए नन्दनन्दन हैं। उन गोवत्सोंपर, ग्वालसखाओं एवं नन्दनन्दनपर व्रजाङ्गनाएँ पुष्प बरसा रही हैं और उन सबको अपनी प्यारभरी चितवनसे निहाल करते हुए नन्दनन्दन वनकी ओर चले जा रहे हैं—

गोबिंद चलत देखियत नीके।
मध्य गुपाल मंडली मोहन काँधन धरि लिये छीके॥
बछरा-बृंद घेरि आगे दै ब्रजजन सृंग बजाए।
मानहुँ कमल-सरोवर तजि कै मधुप उनींदे आए॥

परस्पर हँसते-खेलते एवं गोवत्सोंको उछलाते-कुदाते सबने वनमें प्रवेश किया। तृण-लताङ्कुरोंसे अत्यन्त शोभित हरित वनभूमिपर बछड़ोंको चरनेके लिये छोड़ दिया। एवं परस्पर खेलमें संलग्न हो गये। कुछ देर सखाओंके साथ खेलकर फिर नन्दनन्दनने गोवत्सोंसे खेलनेका विचार किया। श्यामसुन्दर अपने सुकोमलतम हाथोंसे हरी-हरी दूब तोड़ते तथा बछड़ोंके मुँहमें जाकर देते। बछड़ा अपना मुख श्यामसुन्दरके हाथोंपर रख देता तथा धीरे-धीरे दूब चरने लग जाता। उसे चरते देखकर सभी गोवत्स श्यामसुन्दरको चारों ओर घेरकर खड़े हो जाते और उनके हाथसे दूब चरनेकी चेष्टा करते। श्यामसुन्दर भी अतिशय प्यारसे क्रमशः सबके मुँहमें हरी-हरी दूब देते। ग्वालसखाओंकी मण्डली श्यामसुन्दरके हाथोंमें तोड़-तोड़कर दूब देती और वे उन्हें खिलाते जाते। उस दिन दोपहरतकका समय श्यामसुन्दरने सखाओंके साथ दूब तोड़-तोड़कर बछड़ोंको खिलानेमें ही बिताया। जब

बछड़े तृणसे तृप्त हो गये तो उन्हें जलाशयके समीप ले जाकर पानी पिलाने लगे। एक बछड़ेने जल-पान नहीं किया। बाललीला-रसमत्त श्यामसुन्दरने सोचा—अच्छा, अपने हाथोंसे इसे जल पिला दूँ, सम्भवतः यह जलाशयमें जानेसे डरता है। यह सोचकर अपने करकमलोंकी छोटी-सी अञ्जलि बनायी तथा जलाशयसे जल भरकर बछड़ेके मुँहके पास ले गये। छोटी-सी अञ्जलि मुँहतक पहुँचते-पहुँचते खाली हो गयी। श्यामसुन्दर कुछ उदास-से हो गये। दो-चार बार ऐसा करनेपर भी जब सफल नहीं हुए तो अपना पीताम्बर भिगोया। श्यामसुन्दर बछड़ेके सामने अञ्जलि बाँधे रहे एवं दाऊ ऊपरसे भीगे पीताम्बरको निचोड़ने लगे। जल अञ्जलिमें गिरने लगा पर बछड़ा जलकी धारासे चिहुँककर अलग कूद गया। नन्दनन्दन एवं सभी सखा हँस पड़े।

जलसे तृप्त हुए बछड़ोंको एक वृक्षकी शीतल छायामें बैठाया। फिर उनसे खेलने लगे। एक बछड़ेके पास गये, उसके सारे अङ्गोंको सहलाया, उसके गलेमें अपनी दोनों भुजाएँ डाल दीं पश्चात् गोवत्सके कपालपर अपना कपोल

रखा। फिर कानके पास मुँह लगाकर बाले—'क्यो रे वत्स! मातासे मिलना चाहता है? अच्छी बात है, मिला दूँगा।' इस तरह उससे बहुत देरतक बाते करते रहे, बछडा श्रीकृष्णके करस्पर्श, कपोलस्पर्शका योगीन्द्र-मुनीन्द्र-दुर्लभ आनन्द पाकर निहाल हो रहा है एव उसे सुखी देखकर श्रीकृष्ण भी सुखसागरम निमग्न हो रहे है—

×× मातर मिलितुमिच्छसि? मेलयिष्यामीति तत्कर्णे मिथ कपोलमेलनपूर्वकवृथावर्णनेन च तमुपचर्य्य सुखमुपलब्धवान्। (श्रीगोपालचम्पू)

ऐसे ही अनेक कौतुकोसे बछडे एव गोपबालकोका सुखी कर जननीके द्वारा भेजी हुई छाकका सबने मिलकर भोजन किया। भोजनके बाद विश्राम, विश्रामके बाद वशीवादन एव नृत्य आदि हुए। पर अब दिन अधिक ढल चुका था। अत यशोदानन्दन बछडोको एकत्र कर व्रज लौटे। जननी-जनक एकान्त मनसे वनकी ओर नेत्र लगाये प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने हृदयधनको आते देखकर दोनो ही दौड पडे। मार्गमे ही मिलन हुआ, यशोदाने अपन प्राणधनको हृदयसे लगा लिया, अपनी गोदमें नीलमणिको लिये घर पहुँची। बछडोको नन्दरायजी स्वय उनकी माताआके पास पहुँचा आये। वनक विविध दृश्योका एव अपने खेलोका वर्णन राम-श्याम एव सखा करन लग। व्रजराज, व्रजरानी एव व्रजाङ्गनाएँ बडे चावसे सुनने लगी। यह प्रथम दिनका वत्सचारण हुआ। (क्रमश)
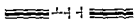
महर्षि वसिष्ठकी गोसेवा

ब्रह्मशक्तिके मूर्तिमान् स्वरूप तपोनिधि महर्षि वसिष्ठजीके उज्ज्वल चरित्रसे हमारे धर्मशास्त्र, इतिहास ओर पुराण भरे पडे है। इनकी सहधर्मिणी अरुन्धती पतिव्रताओका आदर्श है, जो सप्तर्षिमण्डलके पास ही इनकी सेवाम लगी रहती हैं। ब्रह्माजीके मानसपुत्र महर्षि वसिष्ठजीने 'भूतलमे भगवान् श्रीरामका आविर्भाव होगा' यह समझकर सूर्यवशका कुलगुरु-पद स्वीकार किया ओर भगवान् श्रीरामको अपने शिष्यरूपमे पाकर महर्षिने अपनेको धन्य माना। यहाँ आकर इन्होने अपनेको सर्वभूतहितमे लगाये रखा। जब कभी अनावृष्टि हुई दुर्भिक्ष पडा तब इन्होंने अपने तपोबलसे वर्षा करायी ओर जीवोकी अकालमृत्युसे रक्षा की। इन्हींके उपदेशके बलपर राजर्षि भगीरथ देवनदी गङ्गाका लानेमे समर्थ हुए।

महर्षि वसिष्ठजी महान् तपस्वी थे एव क्षमाकी तो वे साक्षात् मूर्ति ही थे। जब विश्वामित्रजीने इनक सा पुत्राका सहार कर दिया उस समय यद्यपि इन्हाने बडा शाक प्रकट किया परतु सामर्थ्य होनपर भी विश्वामित्रक किसी प्रकारक अनिष्टका चिन्तन नहीं किया बल्कि अन्त करणके क्षणिक शोकाकुल होनपर भी ये अपनी निर्लेपता और असगताको नहीं भूले।

महर्षि वसिष्ठ योगवासिष्ठके उपदेशकके रूपम ज्ञानकी साक्षात् मूर्ति हैं। उनका जीवन भगवान् श्रीरामके प्रेममें निमग्न है। वे आज भी सप्तर्षियामे स्थित रहकर सारे जगत्के कल्याणमें लगे हुए हैं।

तपोवन-सस्कृतिके जीवन्त-स्वरूप महर्षि वसिष्ठजीकी गामाताम कितनी भक्ति थी यह सर्वविदित ही है। किस प्रकार उन्होने शबला गौके प्रभावसे राजर्षि विश्वामित्रजीका सेनासहित विशिष्ट आतिथ्य किया था, यह बात भी वाल्मीकि आदि रामायणोंमे प्रसिद्ध ही है। वे स्वय अपने हाथो नित्य गौकी सेवा करते थे। अपने आश्रममे देवी अरुन्धती एव स्वय वे नित्य गौकी पूजा करते थे। गौकी कितनी अनन्त महिमा है तथा गोसेवा क्या है, उसका क्या फल है वे भलीभाँति जानते थे। इसलिये नित्य वे गायाका सानिध्य चाहते थे। गोतत्त्ववेत्ताओके तो महर्षि वसिष्ठ आद्य आचार्य ही हैं। महाभारतम राजा सौदासको उन्हान जिस गातत्त्व और गोसेवाका उपदेश दिया है वैसा अद्भुत वर्णन अन्यत्र दीखता नहीं महर्षि गामहिमाका वर्णन करत हुए कहत हैं—

'राजन्! गौएँ ही मनुष्यो किंवा समस्त प्राणियोंके जीवनका अवलम्ब हैं, गौएँ कल्याण-मङ्गलका परम निधान ह। पहलेके लोगोका ऐश्वर्य गौपर अवलम्बित था और आगेकी उन्नति भी गौपर ही अवलम्बित है। गौएँ ही सब समय पुष्टिका साधन हैं—

गाव प्रतिष्ठा भूताना गाव स्वस्त्ययन महत्॥
गावो भूत च भव्य च गाव पुष्टि सनातनी।

(महाभा०, अनु० ७८। ५-६)

महर्षि वसिष्ठजीने अनेक प्रकारसे गामहिमा तथा उनके दान आदिकी महिमा बताते हुए मनुष्याके लिये एक महत्त्वपूर्ण उपदेश तथा एक मर्यादा स्थापित करते हुए कहा—

नाकीर्तयित्वा गा सुप्यात् तासा सस्मृत्य चोत्पतेत्।
सायप्रातर्नमस्येच्च गास्तत पुष्टिमाप्नुयात्॥
गाश्च सकीर्तयेन्नित्य नावमन्येत तास्तथा।
अनिष्ट स्वप्नमालक्ष्य गा नर सम्प्रकीर्तयेत्॥

(महाभा० अनु० ७८। १६ १८)

अर्थात् 'गौओका नामकीर्तन किये बिना न सोये। उनका स्मरण करके ही उठे ओर सबेरे-शाम उन्हे नमस्कार करे। इससे मनुष्यको बल आर पुष्टि प्राप्त होती है। प्रतिदिन गौआका नाम ले, उनका कभी अपमान न करे। यदि बुरे स्वप्न दिखायी दें तो मनुष्य गोमाताका नाम ले।'

इसी प्रकार वे आगे कहते हैं कि जा मनुष्य श्रद्धापूर्वक रात-दिन निम्न मन्त्रका बराबर कीर्तन करता है वह सम अथवा विषम किसी भी स्थितिम भयसे सर्वथा मुक्त हो जाता है और सर्वदेवमयी गोमाताका कृपा-पात्र बन जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

गा वै पश्याम्यह नित्य गाव पश्यन्तु मा सदा।
गावोऽस्माक वय तासा यतो गावस्ततो वयम्॥

(महाभा०, अनु० ७८। २४)

अर्थात् 'मैं सदा गौआका दर्शन करूँ और गौएँ मुझपर कृपा-दृष्टि करें। गौएँ हमारी हैं और हम गौओके हैं। जहाँ गौएँ रहे, वहीं हम रह चूँकि गौएँ हैं इसीसे हमलोग भी हैं।'

इस प्रकार महर्षि वसिष्ठजीने हमारे लिये गोसेवाका कितना सुन्दर उपदश दिया है। त्रिकालदर्शी महर्षिने जीवोके उद्धारके लिये ही गोसेवा-व्रतका आदर्श सामने रखा और बताया कि यदि मनुष्य गौकी सच्ची सेवा करे तो उसका सर्वविध कल्याण निश्चित ही है।

महर्षि वसिष्ठकी गोसेवा सभी इतिहास-पुराणो तथा काव्योंम प्रसिद्ध ही है। शबला, नन्दिनी आदिकी कथाएँ भी सम्पूर्ण भारतीय साहित्यमें प्रसिद्ध है। नन्दिनी इन्हींकी कामधेनुकी पुत्री थी, जिसकी सेवासे दिलीपकी पत्नी सुदक्षिणाके गर्भसे महाराज रघुका जन्म हुआ और उसीके कारण 'सूर्यवश'का नाम 'रघुवश' प्रसिद्ध हुआ। कालिदासके 'रघुवश' ग्रन्थमें मूलरूपसे यही कथा व्याप्त है। या यो कहिये कि इसी कथाके कारण कालिदास प्रसिद्ध हुए और उनके काव्योका सर्वत्र प्रचार-प्रसार हुआ। उन्होंने सभी पडितो तथा प्रारम्भिक सस्कृत विद्यार्थियाको गोसेवा करनेकी सलाह दी। यह सब कालिदासन महर्षि वसिष्ठकी गो-सेवासे एव उनके ग्रन्थोसे प्राप्त किया।

महर्षि वसिष्ठका मुख्य ग्रन्थ योगवासिष्ठ है, जिसको आधार बनाकर स्वामी विद्यारण्यने पञ्चदशी ग्रन्थके मध्य-खण्डमे पञ्चप्रदीप-प्रकरण लिखा। वह प्रदीप गायोंके घीसे ही प्रदीप्त होता हे उसीके आधारपर गोस्वामीजीने ज्ञानदीपकका प्रकरण लिखा। मुख्य प्रसग है—*'सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई'* से प्रारम्भ होकर *'एहि विधि लेसै दीप'* और *'दीप सिखा सोइ परम प्रचडा'* पर समाप्त हाता है। इस दीपशिखाको कालिदासने बडे आदरसे अपने रघुवश ग्रन्थम स्थान दिया है। लिखा है—'सचारिणी दीपशिखेव रात्रौ य य व्यतीयाय पतिवरा सा।' जिसस अन्य कवियोने उनका नाम दीपशिखाका कवि रख दिया है। ओर यह दीपशिखा गौके घीसे ही जलती है। शबला गायके इतिहाससे तो सभी पुराण, वाल्मीकिरामायण एव दूसरे भी रामायण भरे पडे हैं जिसका कुछ सक्षिप्त अश यहाँ दिया जा रहा है—

एक बार क्षत्रिय राजा विश्वामित्र अपनी सारी सनाक साथ वसिष्ठजीके आश्रमसे गुजरे। उनके साथ पूरी चतुरङ्गिणी सेना थी, जिसमे लाखा सैनिक थे। शबला कामधेनु थी,

फलत उसने सभी लोगाके लिये स्वादिष्ट भोजन उत्पन्न कर दिया, जिसे ग्रहणकर सेनासहित विश्वामित्र तृप्त हो चकित हो गये ओर मोचने लगे महर्षि वसिष्ठने ऐसी सामर्थ्य कहाँसे प्राप्त कर ली। क्योंकि उनके पास कोई अन्य धन नहीं दीखता। जब पता लगा कि यह सब शबलाका ही दिव्य विलक्षण प्रभाव है, तब उन्होने उसे वसिष्ठजीसे माँगा और कहा कि मैं इसके बदले आपको पर्याप्त धन दूँगा। पर महर्षि वसिष्ठ तैयार नहीं हुए। तब राजाने उस शबलाको जबर्दस्ती घसीटकर ले जानेके लिये अपने सिपाहियाको आज्ञा दी। वे लोग उसे घसीटने लगे। शबलान उस समय रोकर महर्षि वसिष्ठसे कहा कि आपने मुझे इसे क्या दे दिया? इसपर वसिष्ठजीने कहा—'मैने तुम्हे नहीं दिया यह राजा बलवान् है। मेरी बात नहीं मानता और तुम्हे बलपूर्वक घसीटता है। तुम्हारी जो इच्छा हो करा, मै तुम्हे जानेको नहीं कहता।' इसपर शबलाने अपने शरीरसे अनन्त सख्याम यवन, खस, पह्लव, हूण आदि सैनिकोको उत्पन्न किया, जिन्हाने महर्षि विश्वामित्रकी सेनाको नष्ट कर दिया। इसका वर्णन महर्षि वाल्मीकिने अपनी रामायणमे बडे रमणीय एव आकर्षक शब्दामे किया है—

तस्य तद् वचन श्रुत्वा सुरभि सासृजत् तदा।
तस्या हुभारवोत्सृष्टा पह्लवा शतशो नृप॥
नाशयन्ति बल सर्व विश्वामित्रस्य पश्यत ।
स राजा परम क्रुद्ध क्रोधविस्फारितेक्षण ॥
पह्लवान् नाशयामास शस्त्रैरुच्चावचैरपि।
विश्वामित्रार्दितान् दृष्ट्वा पह्लवाञ्शतशस्तदा॥
भूय एवासृजद् घोराञ्छकान् यवनमिश्रितान्।
तैरासीत् सवृता भूमि शकैर्यवनमिश्रितै ॥
प्रभावद्भिर्महावीर्यैर्हेमकिजल्कसनिभै ।
तीक्ष्णासिपट्टिशधरैर्हेमवर्णाम्बरावृतै ॥
निर्दग्ध तद्बल सर्वं प्रदीप्तैरिव पावकै ।

(वाल्मीकिरामा० १। ५४। १८—२३)

अर्थात् 'महर्षि वसिष्ठजीके आदशानुसार उस गौने उस समय वैसा ही किया। उसके हुकार करते ही सैकडो पह्लव जातिके वार पैदा हा गय। व सत्र विश्वामित्रके देखत-देखते उनकी सारी सनाका नाश करने लगे। इससे राजा विश्वामित्रको बडा क्राध हुआ। वे रोषस आँख फाड-फाडकर देखने लगे। उन्हान छाटे-बड कई तरहक अस्त्राका प्रयाग करके उन पह्लवाका सहार कर डाला। विश्वामित्रद्वारा उन सेकडा पह्लवाको पीडित एव नष्ट हुआ देख उस समय उस शबला गान पुन *यवनमिश्रित शक* जातिक भयकर वीराको उत्पन्न किया। उन यवनमिश्रित शकासे वहाँकी सारी पृथ्वी भर गयी। वे वीर महापराक्रमी और तेजस्वी थे। उनके शरीरकी कान्ति सुवर्ण तथा केसरके समान था। वे सुनहरे वस्त्रास अपने शरीरको ढँके हुए थे। उन्होन हाथामे तीखे खड्ग और पट्टिश ले रखे थ। प्रज्वलित अग्निके समान उद्भासित होनवाले उन वीराने विश्वामित्रकी सारी सेनाका भस्म करना आरम्भ किया।'

महर्षि वसिष्ठजीकी गासवा कैसी थी और गोमाताकी शक्ति कितनी प्रबल होती है अथवा हो सकती है उसकी कल्पना भी कठिन है। यह बात इस घटनासे स्पष्ट हो जाती है। अत अत्यन्त श्रद्धा-भक्तिसे गोआकी सेवा करनी चाहिये। क्योकि *गोमाता* तो सबके लिय समान फलदायिनी हैं। वे अपने सेवकको समस्त पाप-तापसे मुक्त कर महर्षि वसिष्ठके समान ज्ञानी पूज्य वन्द्य यशस्वी तेजस्वी एव सब प्रकार समृद्धिशाली शक्तिसम्पन्न आर सुखी बना सकती है।

वेदमे गौका जुलूस

यया द्यौर्यया पृथिवी ययापो गुपिता इमा । वशा सहस्रधारा ब्रह्मणाच्छावदामसि॥
शत कसा शत दोग्धार शत गोप्तारो अधि पृष्ठे अस्या । ये देवास्तस्या प्राणन्ति ते वशा विदुरेकधा॥

अर्थात् जिस गौके द्वारा द्यु, पृथिवी एव जलमय अन्तरिक्ष—ये तीना लोक सुरक्षित हैं उस सहस्रधाराआसे दूध दनवाली गौकी हम प्रशसा करते हैं। सौ दोहनपात्र लिय सौ दुहनवाले तथा सौ सरक्षक इसकी पीठपर सदा खडे रहते हैं। इस गौस जो दव जीवित रहते हैं, वे ही सचमुच उस गौका महत्त्व जानत हैं। (अथर्ववेद १०। १०। ४-५)

भगवान् व्यासदेवकी दृष्टिमे गोसेवा

व्यास वसिष्ठनप्तार शक्ते पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मज वन्दे शुकतात तपोनिधिम्॥

भगवान् वदव्यास वेदोके भावपूर्वक विभाजन करनेवाले हैं और महाभारत तथा सभी पुराण, उपपुराणा, बृहद् व्यासस्मृति आदि स्मृतिया तथा वेदान्त-दर्शन, यागदर्शन आदि सभीके निर्माता हैं और आजका सम्पूर्ण विश्वसाहित्य इन्हींका उच्छिष्ट है। इसलिये 'व्यासोच्छिष्ट जगत्सर्वम्' की परम्परासे प्रसिद्धि है। इन्हाने अपने समग्र साहित्यम गोसेवाको प्रमुख माना है और उसे यज्ञ तप धर्म, दान आदिका मूल माना है। स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण पद्मपुराण अग्निपुराण तथा महाभारतके अधिकाश भाग गा-महिमासे भरे पडे हैं। वृहद्धर्मपुराण तथा विष्णुधर्मोत्तर, शिवधर्मोत्तर पुराणोम भी गो-महिमा भरी पडी है। धर्मको वृषभ (बैल)-रूप माना गया है—

वृषो हि भगवान् धर्मो यस्तस्य कुरुते ह्यलम्।
वृषल त विदुर्देवास्तस्माद् धर्मं न लोपयेत्॥

—इत्यादि श्लोकाम गाय ओर बेलका थाडा भी कष्ट देना महान् पाप माना गया है।

पुराणाम अनेक जगह 'गोमती-विद्या' और 'गो-सावित्रीस्तोत्र'का उल्लख प्राप्त हाता है। वे भगवान् व्यासदेवकी रचनाएँ हैं। इनम उन्हाने कहा है—'ससारकी रक्षाके लिये वद और यज्ञ ही दो श्रेष्ठ उपाय हैं और इन दोनोका सचालन गायके दूध घी और बैलाके द्वारा उत्पन्न किये व्रीहिसे निर्मित चरु पुरोडाश हविष्य आदिसे ही सम्पन्न होता है। मूलत ब्राह्मण, वेद और गौ—ये तीना एक ही हैं। यज्ञकी सम्पन्नताके लिये ब्राह्मण ओर गौ—य दोना अलग-अलग रूपमें दीखते हैं। ब्राह्मणाक पास तो वेद मन्त्र और यज्ञ करानेकी बुद्धि और विधियाँ हैं तथा उन्हीं यज्ञोके लिये हविष्यकी सारी सामग्री गोके उदरम सनिहित है—

ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेक द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति॥

उनक कथनानुसार गायासे सात्त्विक वातावरणका निर्माण होता है। गाये अत्यन्त पवित्र हैं इसलिये जहाँ रहती ह, वहाँ कोई भी दूषित तत्त्व नहीं रहता। उनके शरीरसे दिव्य सुगन्धयुक्त वायु प्रवाहित होती ह और सब प्रकारका कल्याण-ही-कल्याण होता है—

गाव पवित्र परम गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गाव स्वर्गस्य सोपान गावो धन्या सनातना ॥

अर्थात् गाएँ स्वर्ग जानेकी साढी है। गौएँ सब प्रकारकी कल्याणमयी हैं। देवता तथा मनुष्य सबका भोजन देनेवाली भी गौएँ ही हैं—

'अन्नमेव पर गावो देवाना हविरुत्तमम्।'

अर्थात् गोएँ समस्त प्राणियाको खिलाने-पिलाने एव जिलानेवाली हे।

भगवान् वेदव्यासने वेदान्तदर्शनम—'क्षीरवद्धि' इस सूत्रम दिखाया ह कि परमात्मा गायक दूधका तरह शरीरम स्थित है। बाहर दिखायी नहीं पडता परतु शास्त्रीय विधानसे उसका साक्षात्कार किया जा सकता हे। इस प्रकार और भी दूसर सूत्रोंम गायक दूधकी उपमा दी गयी है। उनका महाभारतका सम्पूर्ण वैष्णवधर्म-पर्व गा-उपासनासे ही सम्बन्धित ह। इनक पिता पराशरजीने 'कृषिपराशर' ग्रन्थ लिखा था जिसम गाय-बलाके द्वारा उत्पन्न अन्नको भी श्रेष्ठ कहा हे आर यह भी बतलाया है कि खेतीक कामाम गायोको बहुत आरामसे प्रयुक्त करना चाहिय। उन्ह सदा सुख देना चाहिये। उन्ह सदा गोशालाआम रखना चाहिये। बीमार हानेपर आपधिकी व्यवस्था करनी चाहिये। गाशालाआम किसी प्रकारका भय नहीं होना चाहिये। बारहो महीना उसमे शीत, वर्षा ओर गर्मीसे रक्षाके लिये साधन हाने चाहिय। जिससे उन्ह तथा उनके बच्चाको कष्ट न हो। ये बात भविष्यपुराणके उत्तरपर्व मध्यमपर्व एव महाभारतके वैष्णवधर्म-पर्व एव बृहद् व्यासस्मृतिम भी कही गयी हैं।

मध्यमपर्वम विस्तारसे कहा गया हे कि सभी गाँवाम गाचरभूमि रहनी चाहिये। गोचरभूमि गाँवके चारा आर कम-से-कम एक हजार हाथके परिमाणम हानी चाहिये। उसम पीपल आदिके या दूसरे फलदार वृक्ष रख जा

है। उसे कभी भूलकर भी न जोतना चाहिये एव न खेती-खलिहानके कामम ही लाना चाहिय। आस-पासमे वन-उपवन रहे तो और उत्तम है। पर बडे खेदकी बात है कि आज गोचरभूमिकी व्यवस्था प्राय नही रह गयी है। इसस गायोंको बडा कष्ट हो गया है। उनकी स्वच्छन्दता मिट गयी है। इसलिये भारतमे निवास करनेवाले सभी धर्मात्मा लोगोसे प्रार्थना है कि गोचरभूमिकी व्यवस्था पुन प्रवर्तित करे आर भविष्य आदि पुराणोमे व्यासनिर्दिष्ट-पद्धतिसे सकल्पपूर्वक दश दिक्पालो आदिका आवाहन-पूजन-स्थापन कर उसे गाओके लिये उत्सर्ग कर दे। इससे गौओका तो कल्याण होगा ही सभी प्राणियोमे भगवद्भावना एव समताकी स्थापना भी होगी। अन्यथा गौ आदि अन्य प्राणियोकी सर्वथा उपेक्षा कर मनुष्य केवल अपना कल्याण करनेमे कभी सक्षम नहीं हो सकता। केवल मानवतावादी सगठन न बनाकर प्राणिनिकायका कल्याण देखना चाहिये और गौओका तो सर्वाधिक, क्योकि उनमे सभी देवताओं और तीर्थोका निवास है तथा वे भगवान्‌को सर्वाधिक प्रिय हैं। गौओकी प्रसन्नतासे सभी देवता, ऋषि, भगवान् भी प्रसन्न होगे। तभी राष्ट्रका कल्याण होगा। यही भगवान् व्यासदेवके समस्त वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, महाभारत आदिमें प्रदिष्ट गोसेवा-धर्मके प्रतिपादन-पद्धतिका सक्षिप्त साराश है।
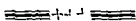
भगवान् आदिशंकराचार्यकी दृष्टिमे गोसेवाका महत्त्व

आचार्य शकरकी सम्प्रदाय-परम्पराम प्रतिदिन पढे जानेवाल ये श्लोक बहुत प्रसिद्ध हैं—

नारायण पद्मभव वसिष्ठ
शक्ति च तत्पुत्रपराशर च।
व्यास शुक गौडपद महान्त
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥
श्रीशकराचार्यमथास्य पद्म-
पाद च हस्तामलक च शिष्यम्।
त त्रोटक वार्तिककारमन्या-
नस्मद्गुरु सततमानतोऽस्मि॥
नारायणसमारम्भा शकराचार्यमध्यगाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्ता वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

—इन श्लाकाम भगवान् नारायणसे लेकर आचार्य शकर एव उनके शिष्यातककी परम्पराका उल्लेख हुआ है। प्राय ये सभी-क-सभी अनन्य गाभक्त थे। भगवान् नारायण या कृष्णका आवास ही गालाकधाम है। उन्हाने कृष्णरूपमे अवतीर्ण होकर सर्वोपरि गोसेवाका अद्भुत आदर्श रखा। जिनक लिय कहा गया है—

सर्वोपनिषदा गावो दाग्धा गोपालनन्दन ।
पार्थो वत्स सुधीर्भोक्ता दोग्धा गोपालनन्दन ॥

इसीलिय उनका गाविन्द गापालनन्दन आदि नाम भी पड गया। गोवर्धन-पर्वत ही उनका मुख्य भ्रमण-रमणका विहार-स्थल था।

भगवान् आदिशकराचार्यने प्राय अपने सभी ग्रन्थामे गामहिमाका गान किया है। वे अद्वयवादी ब्रह्मद्रष्टा थे और ब्रह्मसाक्षात्कारको ही सर्वोपरि उपलब्धि मानत थे। इस ब्रह्मोपलब्धिमे भी गोसेवाका सर्वोपरि साधन मानते थे। उपनिषदोके अनुसार सत्यकाम जाबालको गोसेवासे अतिशीघ्र परमात्मसाक्षात्कार हा गया था। वह जब अपने आचार्य हारिद्रुमत गोतम (हरे वृक्षाके जगलम रहकर गौआकी सेवा करनवाले) के पास पहुँचा तो उन्हाने उसे गौ चरानेका ही आदेश दिया और कहा कि जब गौओकी सख्या एक हजार हो जाय तब वापस आ जाना। उसके साथ चार सौ गौएँ और कुछ साँड भी थे। कुछ दिनमे जब उनकी सख्या एक हजार हुई तो वह उन्हे लेकर आचार्यके आश्रमकी ओर चला ता उसको सात्त्विक श्रद्धामे प्रभावित होकर ब्रह्मविद्याने भी गौ अर्थात् साँडका रूप धारण कर लिया और उसे ब्रह्मतत्त्वका उपदेश दिया तथा कहा—'ब्रह्म दिव्य प्रकाशसे युक्त हाता है। अर्थात् दिव्य विशुद्ध ज्ञानात्मक है।' यह वणन विस्तारसे भगवत्पाद शकराचार्यने अपन शाकरभाष्यम लिखा है। भगवान् आदिशकराचार्यके मूल वचन इस प्रकार हैं—

तमेत श्रद्धातपोभ्या सिद्ध वायुदेवता दिक्सम्बन्धिनी तुष्टा सत्यृषभमनुप्रविश्यर्षभभावमापन्नानुग्रहाय।

अथ हैनमृषभोऽभ्युवादाभ्युक्तवान् सत्यकाम ३ इति सम्बोध्य तमसौ सत्यकामो भगव इति ह प्रतिशुश्राव प्रतिवचन ददौ। प्राप्ता सौम्य सहस्र स्म , पूर्णा तव प्रतिज्ञा, अत प्रापय नोऽस्मानाचार्यकुलम्।

यहाँ आचार्यकी भावना या शब्दावली इतनी पवित्र है, जिसकी ठीकसे कल्पना या इयत्ता नहीं मापी जा सकती। भाव यह हे कि सत्यकामकी जिज्ञासा गासेवाकी चरम परिणति मूर्तिमती श्रद्धा ही ब्रह्मविद्याके रूपमे गौ (वृषभ, ऋषभ या साँड) म प्रविष्ट हुई, जा हिन्दूशास्त्राम साक्षात् धर्मका मूर्तिमान् विग्रह माना गया हे। उसन सत्यकामस कहा—सत्यकाम! देखो मैं तुम्ह ब्रह्मज्ञानका उपदेश द रहा हूँ। ब्रह्म चतुष्पाद और षोडशकला अर्थात् सोलह कलाआसे सयुक्त है। उसके पूर्व दिशाका जा पाद है वह विशुद्ध ज्ञानमय और प्रकाशस्वरूप है, ये सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि आदि इसीसे प्रकाशित होते हैं[1]। और आगे उसीन हस मद्गु आदिस ब्रह्मक सच्चिदानन्दस्वरूपका पूर्ण उपदेश कराया तथा आश्रमपर आते ही सत्यकामसे आचायने कहा—सत्यकाम! तुम्हारे मुखपर ब्रह्मतेज विराजमान है, जिससे निश्चय ही तुम्ह परमात्माकी पूर्णतया प्राप्ति हो गयी है।

आचार्यने यह भी लिखा है कि ब्रह्मवेत्ता ही ज्ञानक प्रसादसे पूर्ण प्रसन्नचित्त और मुखपर तजयुक्त प्रतिभासित होता है—'प्रसन्नेन्द्रिय प्रहसितवदनश्च निश्चिन्त कृतार्थो ब्रह्मविद्भवति' (छान्दोग्य० ४। ९। २) का भाष्य)।

इसी प्रकार वेदान्तदर्शनके 'उपसहारदर्शनान्नेति चेन्न क्षीरवद्धि।' (वेदान्तदर्शन २। १। २४) के भाष्यमे आचार्यने लिखा है कि जैसे गोदुग्ध बिना किसी अन्य वस्तुके आश्रय लिये दहीके रूपम विवर्तित हाता है इसी प्रकार जैसे मकडीको जाला बुननमे अपने मुँहके लारकी आवश्यकता होती है[2] किसी बाह्य उपकरणकी आवश्यकता नहीं, वैसे ही परमात्मा स्वय ससारके रूपम विवर्तित हुआ है। उसे किसी बाह्य उपकरणकी आवश्यकता नहीं होती। आचार्यके मूल वचन इस प्रकार हैं—

क्षीरवद् द्रव्यस्वभावविशेषादुपपद्यते। यथा हि लोके क्षीर जल वा स्वयमव दधिहिमभावेन परिणमतेऽनपेक्ष्य बाह्य साधन तथेहापि भविष्यति। ननु क्षीराद्यपि दध्यादिभावेन परिणममानमपेक्षत एव बाह्य साधनमौष्ण्यादिकम्।

(वेदान्तदर्शनका शाङ्करभाष्य २। १। २४)

इसी प्रकार इनके अनुयायियाने रत्नप्रभा, न्यायनिर्णय, भामती, वेदान्त-कल्पतरु, परिमल एव आभोग आदि टीकाआमे गो-क्षीरका विस्तारसे विवरण लिखा है। भगवद्गीतामे 'ब्राह्मणे गवि हस्तिनि' मे 'गवि' पदपर आचार्यने तथा भाष्योत्कर्ष दापिकाकारने पर्याप्त प्रकाश डाला है। आचार्य शकरभगवत्पादके अन्य ग्रन्थाम भी गोमहिमाकी चर्चा है। विस्तारभयसे सबका सग्रह नही किया गया है। श्रद्धालु लोग स्वय अन्वेषण कर सकते हैं। आचार्यकी दृष्टिसे इस प्रकार सबका गोसेवा आदिके द्वारा भगवत्प्राप्ति या परमात्मसाक्षात्कार एव सुख-समृद्धिमे पूर्ण अधिकार है।

गौको दाहिने रखे

पवित्रमग्र्य जगत प्रतिष्ठा दिवौकसा मातरोऽथाप्रमेया ।
अन्वालभेद् दक्षिणतो व्रजेच्च दद्याच्च पात्रे प्रसमीक्ष्य कालम्॥

गौ सबसे अधिक पवित्र, जगत्‌का आधार और देवताओकी माता है। उसकी महिमा अप्रमेय हे। उसका सादर स्पर्श करे और उसे दाहिने रखकर चले तथा उत्तम समय देखकर उसका सुपात्र ब्राह्मणको दान करे।

१-यदादित्यगत तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥ (गीता १५। १२)

२-यथोर्णनाभि सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधय सम्भवन्ति। यथा सत पुरुषात् केशलोमानि तथाक्षरात् सम्भवतीह विश्वम्॥ (मुण्डकोप० १। १। ७)

महर्षि च्यवनकी गो-निष्ठा

पूर्वकालकी बात है एक बार महर्षि च्यवन अभिमान, क्रोध, हर्ष और शोकका त्याग करके महान् व्रतका दृढतापूर्वक पालन करते हुए बारह वर्षतक जलके अदर रहे। जल-जन्तुओसे उनका बडा प्रेम हो गया था और वे उनके आस-पास बडे सुखसे रहते थे। एक बार कुछ मल्लाहोने गङ्गाजी और यमुनाजीके जलमे जाल बिछाया। जब जाल खींचा गया तब उसमे जल-जन्तुओसे घिरे हुए महर्षि च्यवन भी खिच आये। जालमे महर्षिको देखकर

मल्लाह डर गये और उनके चरणोमे सिर रखकर प्रणाम करने लगे। जालके बाहर खीचनेसे स्थलका स्पर्श होनेसे और त्रास पहुँचनेसे बहुत-से मत्स्य कलपने और मरने लगे। इस प्रकार मत्स्योका बुरा हाल देखकर ऋषिको बडी दया आयी और वे बारबार लबी साँस लेने लगे। मल्लाहोके पूछनेपर मुनिने कहा—'देखो ये मत्स्य जीवित रहेगे तो मैं भी रहूँगा अन्यथा इनके साथ ही मर जाऊँगा। मैं इन्हे त्याग नहीं सकता।' मुनिकी बात सुनकर मल्लाह डर गये और उन्होने काँपते हुए जाकर सारा समाचार महाराज नहुषको सुनाया।

मुनिकी सकटमय स्थिति जानकर राजा नहुष अपने मन्त्री और पुरोहितको साथ लेकर तुरत वहाँ गये। पवित्र-भावसे हाथ जोडकर उन्होने मुनिको अपना परिचय दिया और उनकी विधिवत् पूजा करके कहा—'द्विजोत्तम! आज्ञा कीजिये, मैं आपका कौन-सा प्रिय कार्य करूँ ?'

महर्षि च्यवनने कहा—'राजन्! इन मल्लाहोंने आज बडा भारी परिश्रम किया है। अत आप इनको मेरा और मछलियोका मूल्य चुका दीजिये।' राजा नहुषने तुरत ही मल्लाहोको एक हजार स्वर्ण-मुद्रा देनेके लिये पुरोहितजीसे कहा। इसपर महर्षि च्यवन बोले—'एक हजार स्वर्णमुद्रा मेरा उचित मूल्य नहीं है। आप सोचकर इन्हे उचित मूल्य दीजिये।'

इसपर राजाने एक लाख स्वर्णमुद्रासे बढते हुए एक करोड, अपना आधा राज्य और अन्तमे समूचा राज्य देनेकी बात कह दी, परतु च्यवन ऋषि राजी नहीं हुए। उन्होने कहा—'आपका आधा या समूचा राज्य मेरा उचित मूल्य है, ऐसा मै नहीं समझता। आप ऋषियोके साथ विचार कीजिये और फिर जो मेरे योग्य हो वही मूल्य दीजिये।'

महर्षिका वचन सुनकर राजा नहुषको बडा खेद हुआ। वे अपने मन्त्री और पुरोहितसे सलाह करने लगे। इतनेहीमे गायके पेटसे जन्मे हुए एक फलाहारी वनवासी मुनिने राजाके समीप आकर उनसे कहा—'महाराज! ये ऋषि जिस उपायसे सतुष्ट होंगे, वह मुझे मालूम है।'

नहुषने कहा—'ऋषिवर! आप महर्षि च्यवनका उचित मूल्य बतलाकर मेरे राज्य और कुलकी रक्षा कीजिये। मैं अगाध दु खके समुद्रमे डूबा जा रहा हूँ। आप नौका बनकर मुझे बचाइये।'

नहुषकी बात सुनकर मुनिने उन लोगोको प्रसन्न करते हुए कहा—'महाराज! ब्राह्मण सब वर्णोमे उत्तम हैं। अत इनका कोई मूल्य नहीं आँका जा सकता। ठीक इसी प्रकार गौओका भी कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता। अतएव इनकी कीमतमे आप एक गौ दे दीजिये।'

महर्षिकी बात सुनकर राजाको बडी प्रसन्नता हुई और

उन्होंने उत्तम व्रतका पालन करनेवाले महर्षि च्यवनके पास जाकर कहा—'महर्षे! मैंने एक गौ देकर आपको खरीद लिया है। अब आप उठनेकी कृपा कीजिये। मैंने आपका यही उचित मूल्य समझा है।'

च्यवनने कहा—'राजेन्द्र! अब मैं उठता हूँ। आपने मुझे उचित मूल्य देकर खरीद लिया है। मैं इस संसारमें गौओंके समान दूसरा कोई धन नहीं समझता'—

कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥
गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः॥
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ।
गावो यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखम्॥
अमृतं ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च।
अमृतायतनं चैता सर्वलोकनमस्कृताः॥
तेजसा वपुषा चैव गावो वह्निसमा भुवि।
गावो हि सुमहत्तेजः प्राणिनां च सुखप्रदाः॥
निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किञ्चित् परं स्मृतम्॥
इत्येतद् गोषु मे प्रोक्तं माहात्म्यं भरतर्षभ।
गुणैकदेशवचनं शक्यं पारायणं न तु॥

(महा० अ० ५१। २७—३४)

वीरवर! गायोंके नाम और गुणोंका कीर्तन करना-सुनना, गायोंका दान देना और उनके दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है। ऐसा करनेसे पापोंका नाश और परम कल्याणकी प्राप्ति होती है। गायें लक्ष्मीकी मूल हैं, उनमें पापका लेश भी नहीं है। वे मनुष्योंको अन्न और देवताओंको उत्तम हविष्य देती हैं। स्वाहा और वषट्कार नित्य गायोंमें ही प्रतिष्ठित हैं। गौएँ ही यज्ञका संचालन करनेवाली और उसकी मुखरूपा हैं। गायें विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहनेपर अमृत ही प्रदान करती हैं। वे अमृतकी आधार हैं। समस्त लोक उनको नमस्कार करते हैं। इस पृथिवीपर गायें अपने तेज और शरीरमें अग्निके समान हैं। वे महान् तेजोमयी और समस्त प्राणियोंको सुख देनेवाली हैं। गौओंका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतासे साँस लेता है वह स्थान चमक उठता है और वहाँका सारा पाप नष्ट हो जाता है। गायें स्वर्गकी सीढ़ी हैं और स्वर्गमें भी उनका पूजन होता है। वे समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली देवियाँ हैं। उनसे बढ़कर और कोई भी नहीं है। राजन्! यह जो मैंने गायोंका माहात्म्य कहा है सो केवल उनके गुणोंके एक अंशका दिग्दर्शनमात्र है। गौओंके सम्पूर्ण गुणोंका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।

तदनन्तर मल्लाहोंने मुनिसे उनकी दी हुई गौको स्वीकार करनेके लिये कातर प्रार्थना की। मुनिने उनकी दी हुई गौ लेकर कहा—'मल्लाहो! इस गोदानके प्रभावसे तुम्हारे सारे पाप नष्ट हो गये। अब तुम इन जलमें उत्पन्न हुई मछलियोंके साथ स्वर्गको जाओ।'

देखते-ही-देखते महर्षि च्यवनके आशीर्वादसे वे मल्लाह तुरंत मछलियोंके साथ स्वर्गको चले गये। उनको इस प्रकार स्वर्गको जाते देख राजा नहुषको बड़ा आश्चर्य हुआ। तदनन्तर राजा नहुषने महर्षिकी और गोजातिकी पूजा की और उनसे धर्ममें स्थित रहनेका वरदान प्राप्त करके वे अपने नगरको लौट आये और महर्षि अपने आश्रमको चले गये। (महा०, अनु० ५०-५१)।

गोबरसे चौका लगाना चाहिये

लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमङ्गला।
गोमयालेपनं तस्मात् कर्तव्यं पाण्डुनन्दन॥

(स्कन्द० अव० रेवा० ८३। १०८)

गोबरमें परम पवित्र सर्वमङ्गलमयी श्रीलक्ष्मीजी नित्य निवास करती हैं, इसलिये गोबरसे लेपन करना चाहिये।

महाराज ऋतम्भरकी गो-सेवा

[गोसेवा-व्रतसे पुत्रप्राप्ति और रामनाम-स्मरणसे गोहत्या-पापका नाश]

ऋतम्भर नामके एक राजा थे। उनके कई स्त्रियाँ थीं, पर उनके कोई सतान नहीं थी। एक दिन अकस्मात् जाबालि मुनि आ पहुँचे। राजाने स्वागत-सत्कारके बाद सतानके लिये उपाय पूछा। मुनिने गायाकी महिमाका गान करते हुए कहा—

'विष्णो प्रसादा गोश्चापि शिवस्याप्यथवा पुन ।'

भगवान् विष्णु, गौ आर भगवान् शङ्करकी कृपासे पुत्रकी प्राप्ति हो सकती है।

राजाने आदरपूर्वक मुनिसे पूछा—'मुने। गौकी पूजा किस प्रकार की जानी चाहिये और उससे क्या फल होगा।' मुनिने कहा—'महाराज। गो-सेवाका व्रत लेनवाले पुरुपका गाय चरानेके लिये स्वय प्रतिदिन जगलमे जाना चाहिये। गायको जौ खिलाकर उसके गोबरम जितने जौ निकले उनको चुनकर सग्रह करना चाहिये और पुत्रकी इच्छा करनेवाले पुरुपको वही जा खाने चाहिय। जब गौ जल पी चुके तभी उसे भी पवित्र जल पीना चाहिय। गो जब ऊँची जगहपर रहे तब उसस नीची जगहमे रहना चाहिये। निरन्तर गाके शरीरसे मच्छर आर डाँसाका हटाना चाहिय और उसके खानेक लिये अपन हाथा घास लानी चाहिये। इस प्रकार यदि तुम गोसेवा-व्रतका पालन कराग तो गा माता तुम्हे निश्चय ही धर्मपरायण पुत्र दगी।'

पुत्रकामी धर्मात्मा राजा ऋतम्भरने मुनिके आज्ञानुसार गो-सेवाव्रत ग्रहण कर लिया। एक दिन वनम राजा प्रकृतिकी शाभा देख रहे थे कि इसी बीच दूसरे वनस आकर एक सिहने गौको मार डाला। उस समय गौने बड कातर-स्वरसे डकारनेकी ऊँची आवाज की। राजाने दौडकर दखा आर अपनी गो माताको सिहके द्वारा निहत जानकर वे विकल,होकर रान लग। तदनन्तर धर्य धारण करक वे जाबालि मुनिक पास आय आर सारी घटना सुनाकर उनसे इस पापसे छूटनका और पुत्रप्रद व्रतकी पूर्तिका उपाय पूछा। मुनिने कहा—'पापाका नाश करनेके लिये शास्त्रान भाँति-भाँतिक प्रायश्चित बतलाये हैं। नियमानुसार उनका अनुष्ठान

करनेसे पाप नष्ट हो जाते हैं। परतु—

द्वयोर्वै निष्कृतिर्नास्ति पापपुञ्जकृतोस्तयो ।
मत्या गोवधकर्तुश्च नारायणविनिन्दितु ॥
गवा यो मनसा दु ख वाञ्छत्यधमसत्तम ।
स याति निरयस्थान यावदिन्द्राश्चतुर्दश॥
योऽपि दव हरिं निन्दत् सकृद्दुर्भाग्यवान् नर ।
स चापि नरक गच्छेत् पुत्रपौत्रपरीवृत ॥
तस्माज्ज्ञात्वा हरिं निन्दन् गोषु दु ख समाचरन्।
कदापि नरकान्मुक्ति न प्राप्नोति नरेश्वर॥

(पद्म० पाताल० १९। ३३—३६)

'जान-बूझकर गो-वध और भगवान् नारायणकी निन्दा करनवाले—इन दोनो महान् पापियाका निस्तार नहीं हो सकता। जो नराधम मनमे भी गायाके दु ख होनेकी इच्छा कर लेता हे, उसे चौदह इन्द्राके कालतक नरकमे

रहना पडता है। जो अभागा मनुष्य एक बार भी भगवान् हरिकी निन्दा करता है, वह अपने पुत्र-पौत्रोंके साथ नरकमे जाता है। इसलिय राजन्! जो मनुष्य जान-बूझकर भगवान्‌की निन्दा और गायोको दु ख देता ह, उसका नरकसे छुटकारा कभी नहीं हो सकता।'

परतु अज्ञानसे किये हुए गो-वधका प्रायश्चित्त है। तुम राजा ऋतुपर्णके पास जाओ व तुम्हे उचित परामर्श दग।

जाबालि मुनिके आज्ञानुसार राजा ऋतम्भर समदृष्टिसम्पन्न श्रीराम-भक्त राजा ऋतुपर्णके पास गये और सारी कथा सुनाकर उन्होने उपाय पूछा। प्रतापवान् धर्मविद् बुद्धिमान् ऋतुपर्णने हँसते हुए कहा—'महाराज! कहाँ शास्त्रवत्ता मुनि और कहाँ मैं। आप उन्हे छोडकर मुझ पण्डिताभिमानी मूर्खके पास क्या आये? परतु यदि मेरे ही प्रति आपकी श्रद्धा है तो मैं निवेदन करता हूँ, आप आदरपूर्वक सुनिये—

भज श्रीरघुनाथ त्व कर्मणा मनसा गिरा।
नैष्कापट्येन लोकेश तोषयस्व महामते॥
सतुष्टो दास्यते सर्वं तव हृत्स्थ मनोरथम्।
अज्ञानकृतगोहत्यापापनाश करिष्यति॥

(पद्म० पाताल० १९। ४६-४७)

'महामते! अब आप कपट छोडकर तन, मन, वचनसे सर्वलोकेश्वर भगवान् श्रीरामका भजन कीजिये और उनको सतुष्ट कीजिये। वे सतुष्ट होकर आपके हृदयकी समस्त कामनाओको पूर्ण कर दगे और आपके इस अज्ञानकृत गो-हत्या-पापको भी नष्ट कर दगे।'

महाराज ऋतुपर्णसे आदेश प्राप्त करके गो-सेवाव्रती राजा ऋतम्भर भगवान् श्रीरामके भजन-स्मरणसे पवित्रात्मा होकर पुन व्रतपालनमे लग गये। वे प्राणीमात्रके हित-साधनमे लगकर निरन्तर भगवान् श्रीरामचन्द्रके नामका स्मरण करते हुए गो-सेवाके लिये महान् वनमे चले गये। कुछ दिनोंके बाद उनकी सेवासे सतुष्ट होकर कृपामयी देवी
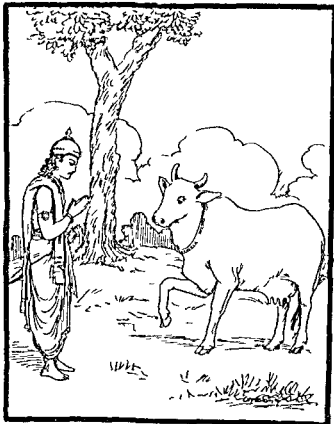
कामधेनुने प्रकट होकर उन्हे अभीष्ट वर दिया और फिर वे अन्तर्धान हो गयीं। उसी वरके फलस्वरूप नरेन्द्र ऋतम्भरके घर परम भक्त सत्यवान् नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। (पद्म०, पाताल० १८। १९)

हलका धर्म्याधर्म्य-विचार

हलमष्टगव धर्म्यं षड्गव वृत्तिलक्षणम्। चतुर्गव नृशसाना द्विगव गोजिघासुमत्॥
× × ×। द्विगव वाहयेत् पाद मध्याह्नन्तु चतुर्गवम्॥
षड्गव तु त्रियामाहेऽष्टभि पूर्णे तु वाहयेत्। न याति नरकेष्वेव वर्तमानस्तु वै द्विज॥ (पाराशरस्मृति अ० २)

आठ बैलोका हल धर्मका छ बैलोका हल जीविका करनेवालोका, चार बैलोका हल निर्दयीका और दो बैलोका हल गोहत्यारेका है। दो बैलवाले हलको चौथाई दिन चार बैलवाले हलको आधा दिन, छ बैलवाले हलको तीन प्रहर और आठ बैलवाले हलको दिनभर जोतनेसे द्विज नरकमे नहीं जाते।

जबालापुत्र सत्यकामको गोसेवासे ब्रह्मज्ञान

एक सदाचारिणी ब्राह्मणी थी, उसका नाम था जबाला। उसका एक पुत्र था सत्यकाम। जब वह विद्याध्ययन करने योग्य हुआ, तब एक दिन अपनी मातासे कहने लगा—'माँ! मै गुरुकुलमे निवास करना चाहता हूँ गुरुजी जब मुझसे नाम और गोत्र पूछेंगे तो मै अपना कौन गोत्र बतलाऊँगा?' इसपर उसने कहा कि 'पुत्र! मुझे तेरे पितासे गोत्र पूछनेका अवसर नही प्राप्त हुआ, क्योकि उन दिनो मे सदा अतिथियोकी सेवामे ही व्यस्त रहती थी। अतएव जब आचार्य तुमसे गोत्रादि पूछे, तब तुम इतना ही कह देना कि मै 'जबाला'का पुत्र 'सत्यकाम' हूँ।' माताकी आज्ञा लेकर सत्यकाम हारिद्रुमत गौतमऋषिके यहाँ गया और बोला—'मै श्रीमान्‌के यहाँ ब्रह्मचर्यपूर्वक सेवा करने आया हूँ।' आचार्यने पूछा—'वत्स! तुम्हारा गोत्र क्या है?'

सत्यकामने कहा—'भगवन्! मेरा गोत्र क्या है, इसे मै नही जानता। मै 'सत्यकाम जाबाल' हूँ, बस इतना ही इस सम्बन्धमे जानता हूँ।' इसपर गौतमने कहा—'वत्स! ब्राह्मणको छोडकर दूसरा कोई भी इस प्रकार सरल भावसे सच्ची बात नहीं कह सकता। जा थोडी समिधा ले आ। मैं तेरा उपनयन-संस्कार करूँगा।'

सत्यकामका उपनयन करके चार सौ दुर्बल गायोको उसके सामने लाकर गौतमने कहा—'तू इन्हे वनमे चराने ले जा। जबतक इनकी संख्या एक हजार न हो जाय इन्हे वापस न लाना।' उसने कहा—'भगवन्! इनकी संख्या एक हजार हुए बिना मै न लौटूँगा।'

सत्यकाम गायोको लेकर वनमे गया। वहाँ वह कुटिया बनाकर रहने लगा और तन-मनसे गौओकी सेवा करने लगा। धीरे-धीरे गायोकी संख्या पूरी एक हजार हो गयी। तब एक दिन एक वृषभ (साँड) ने सत्यकामके पास आकर कहा—'वत्स! हमारी संख्या एक हजार हो गयी है, अब तू हमे आचार्यकुलमे पहुँचा दे। साथ ही ब्रह्मतत्त्वके सम्बन्धमे तुझे एक चरणका मैं उपदेश देता हूँ। वह ब्रह्म 'प्रकाशस्वरूप' है, इसका दूसरा चरण तुझे

अग्नि बतलायगे।'

सत्यकाम गौओको हाँककर आगे चला। संध्या होनेपर उसने गायोको रोक दिया और उन्हे जल पिलाकर वहीं रात्रि-निवासकी व्यवस्था की। तत्पश्चात् काष्ठ लाकर उसने अग्नि जलायी। अग्निने कहा—'सत्यकाम! मैं तुझे ब्रह्मका द्वितीय पाद बतलाता हूँ, वह 'अनन्त' लक्षणात्मक है अगला उपदेश तुझे हंस करेगा।'

दूसरे दिन सायंकाल सत्यकाम पुनः किसी सुन्दर जलाशयके किनारे ठहर गया और उसने गौओके रात्रि-निवासकी व्यवस्था की। इतनेमे ही एक हंस ऊपरसे उडता हुआ आया और सत्यकामके पास बैठकर बोला—'सत्यकाम!' सत्यकामने कहा—'भगवन्! क्या आज्ञा है?' हंसने कहा—'मैं तुझे ब्रह्मके तृतीय पादका उपदेश कर रहा हूँ, वह 'ज्योतिष्मान्' है चतुर्थ पादका उपदेश तुझे मद्गु

(जलकुक्कुट) करेगा।'

दूसरे दिन सायकाल सत्यकामने एक वटवृक्षके नीचे गौआक रात्रिनिवासकी व्यवस्था की। अग्नि जलाकर वह बैठ ही रहा था कि एक जलमुर्गने आकर पुकारा ओर कहा—'वत्स! मैं तुझे ब्रह्मके चतुर्थ पादका उपदेश करता हूँ, वह 'आयतनस्वरूप' है।'

इस प्रकार उन-उन देवताआसे सच्चिदानन्दघन-लक्षण परमात्माका बाध प्राप्तकर एक सहस्र गौआको लेकर सत्यकाम आचार्य गोतमके यहाँ पहुँचा। आचार्यने उसकी चिन्तारहित, तेजपूर्ण दिव्य मुखकान्तिको देखकर कहा—'वत्स! तू ब्रह्मज्ञानीके सदृश दिखलायी पडता है।' सत्यकामने कहा—'भगवन्! मुझे मनुष्यत्तरोसे विद्या मिली है। मैंने सुना है कि आपके सदृश आचार्यके द्वारा प्राप्त हुई विद्या ही श्रेष्ठ होती है, अतएव मुझे आप ही पूर्णरूपसे उपदेश कीजिये।' आचार्य वडे प्रसन्न हुए और बोल—'वत्स! तूने जो प्राप्त किया है, वही ब्रह्मतत्त्व है।' तदनन्तर आचार्यने उस सम्पूर्ण तत्त्वका पुन ठीक उसी प्रकार उपदेश किया। (छान्दोग्य० ४। ४—९)

गोसंरक्षक सम्राट् दिलीपका गोप्रेम

महाराज दिलीप और देवराज इन्द्रम मित्रता थी। देवराजके बुलानेपर दिलीप एक बार स्वर्ग गये। वहाँसे लौटते समय मार्गम कामधेनु मिला, किंतु दिलीपने पृथ्वीपर आनेकी आतुरताके कारण उसे देखा नही। कामधेनुको उन्होने प्रणाम नहीं किया। इस अपमानसे रुष्ट होकर कामधेनुने शाप दिया—'मेरी सतान यदि कृपा न करे ता यह पुत्रहीन ही रहेगा।'

महाराज दिलीपको शापका कुछ पता नहीं था। किंतु उनके कोई पुत्र न होनेसे वे स्वय, महारानी तथा प्रजाके लोग भी चिन्तित एव दुखी रहते थे। पुत्र-प्राप्तिकी इच्छास महाराज रानीके साथ कुलगुरु महर्षि वसिष्ठके आश्रमपर पहुँचे। महर्षिने उनकी प्रार्थना सुनकर आदेश दिया—'कुछ काल आश्रममे रहो और मेरी होमधेनु नन्दिनीकी सेवा करो।'

महाराजने गुरुकी आज्ञा स्वीकार कर ली। महारानी सुदक्षिणा प्रात काल उस गौकी भलीभाँति पूजा करती था। आरती उतारकर नन्दिनीको पतिके सरक्षणम वनम चरनके लिये बिदा करतीं। सम्राट् दिनभर छायाकी भाँति उसका अनुगमन करते उसक ठहरनेपर ठहरते, चलनेपर चलते, बैठनेपर बैठते और जल पीनेपर जल पीते[१]। सध्या-कालम जब सम्राट्के आगे-आग सद्य प्रसूता बालवत्सा (छोटे
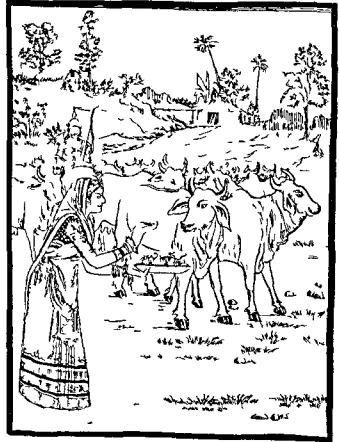
दुधमुहे बछडवाली) नन्दिनी आश्रमको लौटती ता सम्राज्ञी

१-स्थित स्थितामुच्चलित पयाता निषदुषीमासनबन्धधार। जलाभिलाषी जलमाददाना छायेव ता भूपतिरन्वगच्छत्॥ (रघुवश २। ६)

देवी सुदक्षिणा हाथमे अक्षत-पात्र लकर उसकी प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करतीं और अक्षतादिसे पुत्र-प्राप्तिरूप अभीष्ट-सिद्धि देनेवाली उस नन्दिनीका विधिवत् पूजन करतीं[१]। अपने बछडेको यथेच्छ पय पान करानेके बाद दुह ली जानेपर नन्दिनीकी रात्रिम दम्पति पुन परिचर्या करते, अपने हाथासे कोमल हरित शष्प-कवल खिलाकर उसकी परितृप्ति करते और उसके विश्राम करनेपर शयन करते। इस तरह उसकी परिचर्या करते इक्कीस दिन बीत गये।

एक दिन वनमे नन्दिनीका अनुगमन करते महाराज दिलीपकी दृष्टि क्षणभर अरण्यकी प्राकृतिक सुषमामे अटक गयी कि तभी उन्हे नन्दिनीका आर्तनाद सुनायी दिया। वह एक भयानक सिहके पजोमे फँसी छटपटा रही थी। उन्होने आक्रामक सिहको मारनेके लिये अपने तरकशमे तीर निकालना चाहा किंतु उनका हाथ जडवत् निश्चेष्ट हाकर वहीं अटक गया वे चित्र-लिखे-से खड रह गये और मन्त्र-रुद्ध भीषण भुजगकी भाँति विफल आक्रोशसे भीतर-ही-भीतर छटपटाने लगे तभी मनुष्यकी वाणीम सिह बाल उठा—'राजन्! तुम्हारे शस्त्र-सधानका श्रम उसी तरह व्यर्थ है जैस वृक्षाको उखाड देनेवाला प्रभजन पर्वतसे टकराकर व्यर्थ हो जाता है[२]। मैं भगवान् शिवक गण निकुम्भका मित्र कुम्भोदर हूँ। भगवान् शिवने सिहवृत्ति देकर मुझ हाथी आदिसे इस वनके देवदारुओकी रक्षाका भार सौंपा है। इस समय जो भी जीव सर्वप्रथम मरे दृष्टिपथम आता है वह मेरा भक्ष्य बन जाता है। इस गायन इस सरक्षित वनमे प्रवेश करनेकी अनधिकार चेष्टा की है और मेरे भाजनकी वेलामे यह मेरे सम्मुख आयी है, अत मैं इसे खाकर अपनी क्षुधा शान्त करूँगा। तुम लज्जा और ग्लानि छोडकर वापस लौट जाओ।

किंतु परतु खकातर दिलीप भय और व्यथासे छटपटाती नेत्रास अविरल अश्रुधारा बहाती नन्दिनीका दखकर और उस सध्याकालम अपनी माँकी उत्कण्ठासे प्रतीक्षा करनेवाले उसके दुधमुँहे बछडका स्मरण कर करुणा-विगलित हो उठे। नन्दिनीका मातृत्व उन्हे अपने जीवनसे कहीं अधिक मूल्यवान् जान पडा और उन्होने सिहसे प्रार्थना की कि वह उनके शरीरको खाकर अपनी भूख मिटा ले और बालवत्सा नन्दिनीका छोड दे—

स त्व मदीयेन शरीरवृत्ति
देहेन निर्वर्तयितु प्रसीद।
दिनावसानोत्सुकबालवत्सा
विसृज्यता धेनुरिय महर्षे ॥
(रघु० २। ४५)

सिहने राजाके इस अद्भुत प्रस्तावका उपहास करते हुए कहा—'राजन्! तुम चक्रवर्ती सम्राट् हो। गुरुको नन्दिनीके बदले करोडो दुधार गौएँ देकर प्रसन्न कर सकते हो। इस तुच्छ प्राणीके लिये अपन स्वस्थ-सुन्दर शरीर और यौवनकी अवहेलना कर जानकी बाजी लगानेवाले सम्राट्! लगता है, तुम अपना विवेक खो बैठे हो—

एकातपत्र जगत प्रभुत्व
नव वय कान्तमिद वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढ प्रतिभासि मे त्वम्॥
(रघु० २। ४७)

यदि प्राणियोपर दया करनेका तुम्हारा व्रत ही है तो भी आज यदि इस गायक बदलेमें मैं तुम्हे खा लूँगा तो तुम्हारे मर जानेपर केवल इसकी ही विपत्तिसे रक्षा हो सकेगी और यदि तुम जीवित रह तो पिताकी भाँति सम्पूर्ण प्रजाकी निरन्तर विपत्तियासे रक्षा करते रहोगे[३]। इसलिये तुम अपने सुखभोक्ता शरीरकी रक्षा करो। स्वर्ग-प्राप्तिके लिये तप त्याग करके शरीरका कष्ट देना तुम-जैसे अमित ऐश्वर्यशालियोंके लिये निरर्थक है। स्वर्ग? अरे वह तो इसी पृथ्वीपर है। जिसे सासारिक वैभव-विलासके समग्र साधन उपलब्ध हैं, वह समझो कि स्वर्गमे ही रह रहा है। स्वर्गका काल्पनिक आकर्षण तो मात्र विपन्नोंके लिये ही है, सम्पन्नोंके लिये नहीं[४]।

१-प्रदक्षिणाकृत्य पयस्विनीं ता सुदक्षिणा साक्षतपात्रहस्ता। प्रणम्य चानर्च विशालमस्या शृगान्तर द्वारमिवार्थसिद्धे ॥
२-अल महीपाल तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्। न पादपोन्मूलनशक्ति रह शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य॥
३-भूतानुकम्पा तव चेदिय गौरेका भवेत् स्वस्तिमती त्वदन्ते। जीवन् पुन शश्वदुपप्लवेभ्य प्रजा प्रजानाथ पितेव पासि॥
४ तदक्ष कल्याणपरम्पराण भोक्तारमूर्जस्वलमात्मदेहम्। महीतलस्पर्शनमात्रभिन्नमृद्ध हि राज्य पदमैन्द्रमाहु ॥
(रघुवश २। २१ ३४ ४८ ५०)

भगवान् शकरके अनुचर सिहकी बात सुनकर अत्यन्त दयालु महाराज दिलीपने उसके द्वारा आक्रान्त नन्दिनीको देखा जो अश्रुपूरित कातर नेत्रोसे उनकी ओर देखती हुई प्राणरक्षाकी याचना कर रही थी।

राजाने क्षत्रियत्वके महत्त्वको प्रतिपादित करते हुए उत्तर दिया—'नहीं सिह! नहीं, मैं इसे तुम्हारा भक्ष्य बनाकर नहीं लोट सकता। मैं अपने क्षत्रियत्वको क्यो कलकित करूँ?' क्षत्रिय ससारमे इसलिये प्रसिद्ध है कि वे 'क्षत'—विनाश या विपत्तिसे औरोकी रक्षा करते हैं। राज्यका भोग उनका लक्ष्य नहीं। उनका लक्ष्य तो है लोक-रक्षासे कीर्ति अर्जित करना। निन्दासे मलिन प्राणा और राज्यको तो वे तुच्छ वस्तुआकी तरह त्याग देते हैं—

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्र
क्षत्रस्य शब्दो भुवनेपु रूढ ।
राज्येन कि तद्विपरीतवृत्ते
प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा ॥
(रघु० २। ५३)

इसलिये तुम मेरे यश शरीरपर दयालु होओ—मेरे भौतिक शरीरको खाकर उसकी रक्षा करो, क्याकि यह शरीर तो नश्वर है, मरणधर्मा है। इसलिये इसपर हम-जैसे विचारशील पुरुपोकी ममता नहीं होती। हम तो यश - शरीरके पोषक हैं—

किमप्यहिस्यस्तव चेन्मतोऽह
यश शरीरे भव मे दयालु ।
एकान्तविध्वसिषु मद्विधाना
पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेपु॥
(रघु० २। ५७)

सिहके स्वीकृति दे देनेपर राजर्षि दिलीपने शस्त्रोको फक दिया और उसके आगे अपना शरीर मासपिण्डकी तरह खानेके लिये डाल दिया[१] और वे उसके आक्रमणकी प्रतीक्षा करन लगे, तभी आकाशसे विद्याधर उनपर

पुष्पवृष्टि करने लगे। नन्दिनीने कहा—'हे पुत्र! उठो!' यह मधुर दिव्य वाणी सुनकर राजाको महान् आश्चर्य हुआ और उन्होने वात्सल्यमयी जननीकी तरह अपने स्तनोसे दूध बहाती हुई नन्दिनी गोको देखा, किंतु सिह दिखलायी नहीं दिया[२]। आश्चर्यचकित दिलीपसे नन्दिनीने कहा—'हे सत्पुरुष! तुम्हारी परीक्षा लेनेके लिये मेने ही मायासे सिहकी सृष्टि की थी। महर्षि वसिष्ठके प्रभावसे यमराज भी मुझपर प्रहार नहीं कर सकता तो अन्य हिसक सिहादिकी क्या शक्ति हे। मै तुम्हारी गुरुभक्तिसे और मेरे प्रति प्रदर्शित दयाभावसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ। वर माँगो! तुम मुझे दूध देनेवाली मामूली गाय मत समझो अपितु सम्पूर्ण कामनाएँ पूरी करनेवाली कामधेनु जानो[३]।' राजाने दोनो हाथ जोडकर वश चलानेवाले अनन्तकीर्ति पुत्रकी

१-स न्यस्तशास्त्रो हरये स्वदेहमुपानयत् पिण्डमिवामिपस्य॥
२-उत्तिष्ठ वत्सेत्यमृतायमान वचो निशम्योत्थितमुत्थित सन्। ददर्श राजा जननीमिव स्वा गामग्रत प्रस्रविणीं न सिहम्॥
३-भक्त्या गुरौ मय्यनुकम्पया च प्रीतास्मि ते पुत्र वर वृणीष्व । न केवलाना पयसा प्रसूतिमवेहि मा कामदुघा प्रसन्नाम्॥
(रघु० २। ५९ ६१ ६३)

याचना की—

> यशस्य कर्तारमनन्तकीर्तिं
> सुदक्षिणाया तनय ययाचे॥
> (रघु० २। ६४)

नन्दिनीने 'तथास्तु' कहकर उन्हे पत्तेके दोनेम अपना दूध दुहकर पी लेनेकी आज्ञा दी—

> दुग्ध्वा पय पत्रपुटे मदीय
> पुत्रोपभङ्क्ष्वेति तमादिदेश॥
> (रघु० २। ६५)

राजाने निवेदन किया—'माँ। बछडेके पीने तथा होमादि अनुष्ठानके बाद बचे हुए ही तुम्हारे दूधको मैं पी सकता हूँ।'

राजाके धैर्यने नन्दिनीके हृदयको जीत लिया। वह प्रसन्नमना धेनु राजाके आग-आगे आश्रमको लौट आयी। राजाने बछडेके पीने तथा अग्निहात्रसे बचे दूधका महर्षिकी आज्ञा पाकर पान किया फलत वे रघु-जैसे महान् यशस्वी पुत्रसे पुत्रवान् हुए और उनकी गोभक्ति तथा गोसवा सभीके लिये एक महानतम आदर्श बन गयी। इसीलिये आज भी गोभक्ताकी परिगणनाम महाराज दिलीपका नाम बडे ही श्रद्धाभाव एव आदरसे सर्वप्रथम लिया जाता है।

(डॉ० श्रीदादूरामजी शर्मा, एम्० ए० (सस्कृत, हिन्दी), पी-एच्०डी०)

राजा विराटकी गोसम्पदा और पाण्डुपुत्र सहदेवकी गो-चर्या

गौ भारतकी राष्ट्रिय समृद्धि और सम्पदाकी विशिष्ट प्रतीक रही है। तपोवन-सस्कृतिकी यह महत्त्वपूर्व अङ्ग थी। गृहस्थोकी ही नहीं आश्रमम रहनेवाले ऋषियोकी समृद्धिका परिचय भी उनके यहाँ रहनेवाली गौओकी सख्यासे मिलता है। उपनिषदोमे ऐसी अनेक कथाएँ हैं, जिनमे राजा शास्त्रार्थमें विजयी ऋषियोको अनेक सोनेसे मढी सींगोवाली गाये देनेकी घोषणा करते थे। महाभारतमे मत्स्यदेशके राजा विराटके गोहरणकी कथामे इसका ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है कि गोसम्पदाको कितना महत्त्व दिया जाता था तथा राजाओके यहाँ उनके रक्षणकी व्यवस्था क्या थी।

राजा विराटका मत्स्यदेश अपनी विशाल गोसम्पदाके लिये प्रसिद्ध था। यह सम्पदा इतनी विशाल थी कि दूसरे राष्टोकी आँख इसपर लगी रहती थी। द्रोपदीसहित पाँचा पाण्डव अपने वनवासके तेरहवे वर्षमें छद्म-वेषमे राजा विराटके यहाँ रह रहे थे। इधर दुर्योधन अपने गुप्तचरोद्वारा चारो ओर उनकी खोज करवा रहा था। इसी क्रममें दुर्योधनने राजा विराटके यहाँ भी गुप्तचरोको भेजा और राजा विराटके गोधनका अपहरण करनेकी योजना बनायी। दुर्योधनका यह सम्भावना थी कि यदि पाण्डव वहाँ छिपे होगे तो निश्चय ही वे अपने मित्र विराटके गोधनकी रक्षाके लिय बाहर आयेगे। यदि उनका पता नहीं भी लगेगा तो गायाकी विशाल सम्पदा हमारे हाथ लगेगी ही। अत उन्हाने मत्स्यदेशपर चढाई कर दी। और विशाल गोसम्पदाका अपहरण कर लिया परतु पाण्डवोके सहयोगसे राजा विराटने पुन उसे प्राप्त कर लिया।
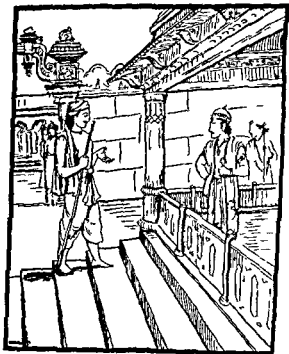
सहदेव ग्वालाका परम उत्तम रूप बनाकर विराटकी

सभामे गय। वहाँ उन्होने पाण्डवाकी गोसमृद्धि आर उसकी व्यवस्थाका राजा विराटको जो परिचय दिया है उससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि राजाआके यहाँ गायोके सरक्षण आर उनक पालनकी विशष व्यवस्था था और उसके लिय पृथक् विभाग हुआ करता था। महाभारतके उल्लेखसे ज्ञात होता है कि विराटके यहाँ गौओके रहनेका स्थान राजभवनके निकट ही था—

गाष्ठमासाद्य तिष्ठन्त भवनस्य समीपत ।

(विराटपर्व १०। २)

विराटके समक्ष सहदेवने अपना परिचय दिया कि व पाण्डवोके यहाँ गासरक्षक थ। उनका काम गौआकी गणना और उनकी देखभाल करना था। पाण्डवाका गौओकी विशाल सख्या, उनका वर्गीकरण गणना ओर देखभालकी व्यवस्थाका परिचय उन्होने राजा विराटके समक्ष इस रूपमे दिया—'युधिष्ठिरके पास गौओक आठ लाख वर्ग थे ओर प्रत्येक वर्गम सो-सौ गाये थीं। इनसे भिन्न प्रकारकी गायोक एक लाख वर्ग तथा तीसरे प्रकारकी गायाके इनसे दूने अर्थात् दा लाख वर्ग थे। पाण्डवोकी इतनी गायाका मैं गणक तथा निरीक्षक था। वे लोग मुझे 'तन्तिपाल' कहा करते थे। गायोकी मुझे इतनी सूक्ष्म पहचान है कि चारा ओर दस याजनकी दूरीमे जितनी गाय हा उनकी भूत, वर्तमान भविष्यम जितनी सख्या थी है और होगी, उसे बतला सकता हूँ। गौआक सम्बन्धम तीनो कालोम होनेवाली कोई ऐसी बात नहीं है जो मुझे ज्ञात न हो। महाराज युधिष्ठिर मेरे इन गुणासे भलीभाँति परिचित थे इसलिये वे मुझपर सदा सतुष्ट रहते थे। जिन-जिन उपायास गोआकी सख्या शीघ्र बढ जाती है और उनमे कोई रोग नहीं हाता वह सब मुझे ज्ञात है। इसके अतिरिक्त उत्तम लक्षणवाले उन बैलाकी भी मुझे पहचान हे, जिनके मूत्रका सूँघ लनेमात्रसे वध्या स्त्रा भी गर्भ धारण करने याग्य हा जाती है—

ऋपभाश्चापि जानामि राजन् पूजितलक्षणान्।
येपा मूत्रमुपाघ्राय अपि वन्ध्या प्रसूयते॥

(विराट० १०। १४)

सहदेवद्वारा कथित विवरणसे ज्ञात होता है कि उस युगका गोलक्षण ओर सरक्षण-विज्ञान अत्यन्त विकसित था और बडे राजाओक यहाँ इसकी विशेष व्यवस्था थी। राजा विराटके राज्यम भी एक लाख गाय थीं। इनम कुछ ता एक ही रगकी थीं और कुछ मिश्रित रगकी। ये सभी भिन्न-भिन्न गुणोसे युक्त थीं। विराटने अपनी सम्पत्तिका परिचय इन शब्दाम दिया हे—

शत सहस्राणि समाहितानि
सवर्णवर्णस्य विमिश्रितान् गुणै ।

(विराटपर्व १०। १५)

विराटने सहदेवको पशुपालकाके साथ इन गौआके सरक्षणका भार सौंपा। गोपाल पशुपालनमे ही नही, युद्धकलामे भी निपुण होते थे। जब कोरवोके मित्र त्रिगर्तोंकी सेनाने गौओकी बस्तीपर आक्रमण किया और गौओको हरकर ले जाने लगे तब गोपालोने अस्त्र-शस्त्रोसे वीरतापूर्वक युद्ध किया। युद्धमे उन्होने परशु, मुसल भिन्दिपाल मुद्गर तथा कर्षण नामक विचित्र अस्त्रोका प्रयोग किया। पहली बार तो वे अश्व-सैनिकाको मार भगानेमे सफल हुए, किंतु सैनिकोकी शरवर्षाके आगे वे टिक नहीं सके। त्रिगर्तराज गौओका अपहरण करके ले जाते हे। विराट उन्हे छुडानेके लिये जाते है, किंतु बदी बना लिये जाते है। विराटके युद्धके लिये जाते ही कौरव उत्तर दिशासे मत्स्यदेशपर आक्रमण कर देते हैं और वहाँकी साठ हजार गौओका अपहरण कर लेते है। अर्जुन भीपण युद्धद्वारा कौरवोकी विराट् सेनापर विजय प्राप्त करके गौओको मुक्त करते हैं। यहीं पाण्डवोका अज्ञातवास समाप्त होता है और वे अपना छद्मवेष त्यागकर अपने असली रूपमे प्रकट हाते ह।

महाभारतका यह गोहरण-आख्यान महाभारतकालीन गासम्पदाके महत्त्व तथा गोरक्षण-व्यवस्थाका ऐतिहासिक प्रमाण हे। गो राष्ट्रकी महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति समझी जाती थी तथा इसकी अस्मिता और गरिमाका प्रश्न इससे जुडा हुआ था।

(डॉ० श्रीजगदीश्वरप्रसादजी, डी० लिट्०)

संत नामदेवजीकी गोनिष्ठा

परम गोभक्त संत नामदेवजीने लोगोंको ईश्वर-भक्तिका सच्चा मार्ग दिखाया। ईश्वर-कृपासे समस्त भारतके लोगोंके कल्याणार्थ जब संत नामदेव यात्रापर निकले, उस समय उनके साथ ज्ञानेश्वर, सोपानदेव, निवृत्तिनाथ, बहन मुक्ताबाई, साँवता माली, गोरा कुम्हार, चोखामेला, सेना नाई, नरहरि सुनार, गोणाबाई आदि संत महात्मा अमृत-रस बरसाने महाराष्ट्रसे चल पडे। धीरे-धीरे संत नामदेवकी कीर्ति समस्त भारतमें फैलने लगी। जब यह संत-मण्डली भारत-भ्रमण करते हुए दिल्ली पहुँची, उस समय दिल्लीमें मुगल-शासन था। बादशाहको सूचना मिली कि नामदेव संत-मण्डलीके साथ दिल्ली पहुँच गया है। वह लोगोंको हरिनाम-संकीर्तन सिखाता है। बादशाहने सिपाही भेजकर सारी संत-मण्डलीको बुला लिया। बादशाहने नामदेवको मुसलमान बनानेकी बात सोचकर कठिन परीक्षा ली। यह सोचकर कि हिंदू गायकी कुर्बानीसे ठिकाने आते हैं, बादशाहने गाय मँगवाकर, कसाईसे उसका सिर कटवा दिया। यह दृश्य देखकर सब दाँतो-तले अँगुली दबाकर रह गये। शान्त एवं गम्भीर वातावरणको चीरती हुई बादशाहकी आवाज आयी—'नामदेव! यदि तुम सच्चे फकीर हो तो इसे (गायकी ओर ईशारा कर) जीवित करो। तभी हिंदूपर तुम्हारा प्रेम माना जायगा और यदि गाय जीवित नहीं हुई तो तुम्हारे संतपनको ढोंग मानकर तुम्हारा सिर कलम कर दिया जायगा।'

नामदेवजीने कहा—'मुझमें कोई शक्ति नहीं जो प्रभुको स्वीकार होता है, वही होता है। इस संसारसे सभीको एक दिन जाना है।'

बादशाहने कहा—'नामदेव! तुम इस्लाम-धर्म स्वीकार करो तो तुम्हें छोड दिया जायगा।'

नामदेव बोले—'नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता।' इस उत्तरसे बादशाह क्रोधसे तमतमा उठा और उसने आदेश दिया कि इसे मतवाले हाथीके नीचे कुचलवा डालो। मतवाला हाथी नामदेवपर वार करता परंतु भगवान् विट्ठलकी कृपासे वे बच जाते। अब नामदेवजीके एक हाथमें वीणा थी, दूसरेमें करताल तथा पैरोंमें बेडियाँ। नामदेवजी द्रवित-हृदयसे भगवान्‌को पुकारने लगे—

> बिनती सुनहु जगदीश हमारी।
> तेरो दास आस मोहि तेरी इत करो कान मुरारी॥
> दीनानाथ दीन ह्वै टेरत गाईहि क्यो नहि जिवाओ।
> आछे सबे अंग हैं याको, मेरे यशहि बढाओ॥
> जो कहु याके कर्मन में नहिं जीवन लिखो विधाता।
> तौ नामदेव की आयुर्दा सो होहु प्रभुहि तुम दाता॥

हे प्रभो! शीघ्र आओ। गायको जीवन देकर धर्मकी रक्षा करो। नामदेवजीकी आँखोंसे अविरल अश्रुधारा बह रही थी। नामदेव बार-बार यही कहते रहे कि 'मुझमें कोई शक्ति नहीं, जो प्रभु करता है वही होता है।' इस घटनाके समय गोणाबाई भी वहाँपर थीं। अपने पुत्रकी ऐसी दशा उनसे देखी नहीं गयी। बोलीं—'हे नामदेव! तू विट्ठलका नाम छोडकर अल्लाहका नाम ले।'

नामदेव बोले—'ऐसा उपदेश करनेवाली तू मेरी माता नहीं मैं तेरा पुत्र नहीं।' कहा जाता है कि निश्चित समय बीतनेसे पूर्व भक्तवत्सल आनन्दकन्द भगवान् विट्ठल अपने वैकुण्ठसे गरुडपर चढकर वहाँ आये और उन्होंने मृत गायको जीवित कर दिया। बछडा गायका दूध पीने लगा। गाय नामदेवको चाटने लगी। वात्सल्यमूर्ति भगवान् विट्ठलका मधुर एवं सुरीला बोल सुनायी दिया—'नामदेव! तुम धन्य हो। धर्म और प्यारी गायकी रक्षा-हेतु अपने प्राणोंको न्योछावर करनेवाले नामदेव! धन्य हो।' फिर भगवान् अन्तर्धान हो गये।

बादशाह शर्मसे पानी-पानी हो गया, नामदेवजीके आगे झुक गया क्षमा माँगने लगा और नामदेवजीका आदर-सम्मान करने लगा। 'गुरु ग्रन्थसाहिब'में यह घटना पृष्ठ ६३० पर वर्णित है। वह पद्य यहाँ दिया जा रहा है—

> सुलतानु पूछै सुनु बे नामा। देखउ राम तुमारे कामा॥
> नामा सुलताने बाधिला। देखउ तेरा हरि बीठुला॥
> बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ। नातरु गरदनि मारउ ठाइ॥
> बादिसाह ऐसी किउ होइ। बिसमिलिकी आन जीवै कोइ॥

मेरा कीआ कछू न होइ। करिहै रामु होइहै सोइ॥
बादिसाहु चढ़िओ अहंकारि। गजहसती दीनो चमकारि॥
रुदनु करै नामेकी माइ। छोडि रामकी न भजेहि खुदाइ॥
न हउ तेरा पूंगडा न तू मेरी माइ। पिंडु पड़ै तउ हरिगुन गाइ॥
करै गजिंदु सुंडकी चोट। नामा उबरै हरिकी ओट॥
काजी मुला करहि सलामु। इनि हिंदूमे राम लिआ मानु॥
बादिसाह बेनती सुनेहु। नामे सरभरि सोना लेहु॥
मालु लेउ तउ दोजकि परउ। दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ॥
पावहु बेड़ी हाथहु ताल। नामा गावै गुन गोपाल॥
गंग जमुन जउ उलटी बहै। तउ नामा हरि करता रहै॥
सात घड़ी जब बीती सुणी। अजहु न आइओ त्रिभवनधणी॥
पारवतण बाज बजाइला। गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला॥
अपने भगत परि की प्रतिपाल। गरुड़ चढ़े आये गोपाल॥
कहहित धरणि इ कोडि करउ। कहहि तले करि ऊपरि धरउ॥
कहहि तमुई गऊ देउ जीआइ। सभु कोई देखै पतीआइ॥
नामा प्रणवै सेलमसेल। गऊ दुहाई बछरा मेलि॥
दुधहि दुहि जब मटुकी भरी। ले बादिसाहके आगे धरी॥
बादिसाहु महलमहि जाइ। अउघटकी घट लागी आइ॥
काजी मुला बिनती फुरमाइ। बखसी हिंदू मै तेरी गाइ॥
नामा कहै सुनहु बादिसाह। इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ॥
इस पतीआका इहै परवानु। साचि सीलि चालहु सुलितानु॥
नामदेउ सभरहि आसमाइ। मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि॥
जउ अबकी बार न जीवै गाइ। त नामदेवका पतीआ जाइ॥
नामेकी कीरति रही संसारि। भगत जना लेउ धरिआ पारि॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु। नामे नाराइन नाही भेदु॥

संत नामदेवजी महाराजने गायकी बहुत सेवा की। स्वयं उनके घरपर गाय थी। जिसका दूध वे प्रभुको पिलाकर धन्य होते थे। एक बार जब गाय ब्यायी तो उसका दूध स्वयं नामदेवजीने भगवान् विट्ठलको पिलाया—

दूध कटोरै गड़वै पानी। कपिला गाइ नामै दुहि आनी॥
दूधु पीउ गोबिंदे राइ। दूधु पीउ मेरो मनु पतिआइ॥
। नाहीं त घरको बापु रिसाइ॥ ।
सोइन कटोरी अमृत भरी। लै नामै हरि आगे धरी॥ ।
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै। नामे देखी नराइनु हसै॥
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ। नामें हरि का दरसनु भइआ॥

नामदेवजीकी वाणीमे जगह-जगह गायका वर्णन मिलता है। भक्तकी भगवान्‌को प्राप्त करनेकी जो व्याकुलतामे तीव्रता एव आतुरता होती है, उसे नामदेवजीने यो व्यक्त किया—

मोहि लागती तालाबेली। बछरे बिनु बापरो गाइ अकेली॥
पानीया बिनु मीनु तलफै। ऐसे रामनाम बिनु बापरो नामा॥

नामदेवका कहना है कि हरिनामके विषयमे मेरी तालाबेली (व्याकुलता) उसी प्रकारकी है, जिस प्रकार गायका बछडा गायसे बिछुडकर व्याकुल होता है, जिस प्रकार मछलीको पानीसे बाहर निकालनेपर व्याकुलता होती है और पानीके बिना वह अपने प्राण भी त्याग देती है। यहाँ नामदेवने अपनी भगवान्‌के प्रति व्याकुलताकी उपमा बहुत ही सुन्दर ढगसे गाय और उसके बछडेसे की है।

हिदू और मुसलमानोको गायका महत्त्व समझाते हुए वे कहते हैं—

पाडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेत खाती थी।
लेकरि ठेगा टगरी तोरी लागत लागत जाती थी॥

गायके लिये क्या हिदू क्या मुसलमानका खेत। उसके लिये सारी धरती एक है। गाय दूध देते समय भी कोई भेदभाव नहीं करती। उसका दूध बिना भेदभाव सब सेवन करते हैं तो तुम यह भेद क्यो करते हो? डडा मारकर उसकी टाँगे क्या तोडते हो?

नामदेवजी महाराजने अपनी वाणीमे गोदानकी महत्तापर प्रकाश डालते हुए कहा है—

गौ शत लक्ष विप्र को दीजै। मन बञ्छित सब पुरवै कामा॥
कोटि गऊ जो दान दे नहि नाम समाना।

इस प्रकार सत नामदेवजी महाराजने विट्ठलकी भक्तिके साथ ही गोसेवा करनेका महत्त्वपूर्ण सदेश लोगोंमे वितरित किया। उनके त्याग, वैराग्यमय, भक्तिमय जीवन-पथमे गौका विशिष्ट स्थान था। यहाँतक कि उन्होने गोमाताकी रक्षाके लिये अपनी कुर्बानीकी प्रतिज्ञा कर ली तत्काल विट्ठल भगवान्‌की कृपासे गाय जीवित हो उठी। धन्य हैं गोसेवक नामदेवजी! उनका गोप्रेम स्तुत्य है, वन्द्य है। किंतु विडम्बना है कि आज गोमाताकी स्थिति बडी ही दयनीय है। हजारो गोभक्तोकी कुर्बानियोपर भी गोरक्षामे कोई सुधार

नहीं हो सका है। हमारे गोमांसाहारी मुसलमान भाइयोंको हमारी नहीं, तो अपने काजी मुल्लाओंकी बात तो माननी ही चाहिये, जिन्होंने कुछ सोच-समझकर और देख-सुनकर ही कहा होगा—'*बखसी हिंदू मै तेरी गाइ॥*'

यह हमारे समाजकी भी कमी है कि वह अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिये ऐसा करता है। सरकार आश्वासन देती है, परंतु पूर्ण गोवध और गोरक्षापर स्पष्ट कुछ नहीं कहती। सरकारको सारे राष्ट्रके लिये एक-जैसा कानून बनाना चाहिये। पूर्ण गोवधबंदीकरण कानून बने। गायके चमड़े, गोमांस आदिके निर्यातपर पूर्ण पाबंदी लगे। गाँव तथा शहरोंके बाहर गोचरभूमि जरूर छोड़ी जाय। शहरोंके बाहर जहाँ जल और चारेकी भरपूर मात्रा उपलब्ध हो वहाँ गोशाला खोली जाय। बूढ़ी तथा अपंग गायोंके लिये अलग गोसदनोंकी व्यवस्था की जाय। गायोंकी नस्लमें सुधार तथा उनकी देखभालके लिये योग्य चिकित्सकोंका भी उचित प्रबन्ध हो। इन सब कार्योंको करने तथा करवानेके लिये केवल सरकारके भरोसे ही रहना नहीं होगा, क्योंकि सरकार तो कानून बना देगी, पर इसको सुचारु रूपसे लागू करनेके लिये गोभक्त लोगोंको, समाजसेवी तथा गो-गोविन्दप्रेमी संस्थाओंको ही आगे आना होगा।

(श्रीगिरिककुमारजी)
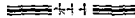
बालक शिवाजीकी गोभक्ति

एक समय शिवाजी, जब वे आठ-दस वर्षके बालक थे, अपने पिता राजा शाहाजीके दर्शनके लिये पूनासे बीजापुर गये थे। वहाँ पहुँचनेपर राजा शाहाजीने अपने पुत्रसे शाही दरबारमें चलनेको कहा। बालक शिवाजी अत्यन्त मातृ-पितृ-भक्त थे। बचपनसे ही उनके अन्तःकरणपर रामायण-महाभारतादि ग्रन्थोंके सुननेसे ऐसे सुसंस्कार जम गये थे कि वे माता-पिताकी आज्ञा अस्वीकार नहीं कर सकते थे, किंतु यह प्रसंग ऐसा था कि एक ओर शाही दरबारमें जानेके लिये उनकी अन्तरात्मा उनको मना कर रही थी और दूसरी ओर उनके पिता चलनेको आग्रह कर रहे थे। वे धर्मसंकटमें पड़ गये। अन्तमें उस बुद्धिमान् और तेजस्वी बालकने स्पष्ट किंतु नम्र शब्दोंमें अपनी आन्तरिक व्यथा अपने पितासे निवेदन कर दी। उन्होंने कहा—'पिताजी! हमलोग हिंदू हैं। रास्तेमें आते-जाते समय हमारी आँखोंके सामने गोमाता कट जाती हैं। गोमांसका विक्रय होता है। यह घृणित तथा दुस्सह दृश्य देखकर मन क्षुब्ध हो जाता है और जी चाहता है कि गोहत्या करनेवालेके गर्दन उड़ा दें। हम क्षत्रिय जीते हुए यह गोहत्याका दृश्य देखते हैं, इससे तो मरना अच्छा। धिक्कार है हमारी क्षत्रियताको!! गोवधिकोंपर तत्काल शासन करना अथवा गोप्राण-रक्षणमें आत्मार्पण करना—इन दोमेंसे एक अवश्य होना चाहिये, किंतु ऐसा करनेमें मुझे आपकी अप्रसन्नताका डर है, नहीं तो कसाईको देखते ही मैं उसका सिर उड़ा देता।'

बालक शिवाजीके सच्चे हिंदू-अन्तःकरणकी यह व्यथा बादशाहके कानोंतक पहुँची। बादशाह उस तेजस्वी बालकको देखनेके लिये बहुत उत्सुक हुए। इसलिये उन्होंने कसाइयोंको आज्ञा दी कि 'गोहत्या तथा मांस-विक्रीका सब व्यवहार शहरसे दूर एक अलग मुहल्लेमें हो। इसके विरुद्ध बर्ताव करनेवाले अपराधी समझे जायँगे।' इतना हो जानेपर शिवाजी अपने पिताके साथ दरबारमें जाने लगे। बादशाहने यह हुक्म निकाल तो दिया था, किंतु कसाइयोंने इसपर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। हुक्म तोड़नेवाले कुछ निकल आये। यह देखकर शिवाजीने दरबारमें आना-जाना फिर बंद कर दिया। पूछताछ होनेपर शाहाजी महाराजने बादशाहसे सब कारण बता दिया। इसपर बादशाहने दूसरा कड़ा हुक्म निकाला कि 'कसाई और कलालोंकी सब दूकानें शहरके दक्षिण एक कोसकी दूरीपर होनी चाहिये। यदि कोई बेचनेवाला इस

हुक्मको तोडकर शहरमे गोमास या दारू बेचने आयेगा और उसे कोई हिदू मार देगा तो वह हिदू अपराधी नहीं समझा जायगा और उसे किसी प्रकारका दण्ड नहीं मिलेगा।'

इतनी कडी आज्ञा होनेपर भी एक दिन एक कसाई अभिमान और हठवश एक गायको रस्सीसे बाँधे लिये जा रहा था। गाय आगे जाना नहीं चाहती, डकराती थी और इधर-उधर कातर नेत्रोसे देखती थी। कसाई उसे डडेसे बार-बार पीट रहा था। इधर-उधर दुकानोपर जो हिदू थे, वे मस्तक झुकाये यह सब देख रहे थे। उनमे इतना साहस नहीं कि कुछ कह सके। मुसल्मानी राज्यमे रहकर वे कुछ बोले तो पता नहीं क्या हो। लेकिन लोगाकी दृष्टि आश्चर्यसे खुली-की-खुली रह गयी। बालक शिवाकी तलवार म्यानसे निकलकर चमकी, वे कूदकर कसाईके पास पहुँचे और गायकी रस्सी उन्हाने काट दी। गाय भाग गयी एक ओर। कसाई कुछ बोले इससे पहले तो उसका सिर धडसे कटकर भूमिपर लुढकने लगा था।

जब मृत कसाईके रिश्तेदारने बादशाहके सामने इस मामलेको पेश किया, तब पहले कसाईका ही गुनाह समझकर बादशाहने उसकी फरियाद खारिज कर दी

और एक बार फिर कसाइयाको शहरमे मास बेचनेसे मना कर दिया।

गौ माता

(श्रीहरीशजी 'मधुर')

गौ माता! अभिनन्दन तेरा।

तुम जग-जीवनकी जननी हो,
दूध-दही देनेवाली।
तुम गोकुलकी भी गरिमा हो,
मोहनकी हो तुम प्यारी॥
तेरे सबल पुत्र है माता!
है जीवनके भाग्य-विधाता।
कृषकोके नयनाके तारे,
मिटा रहे है कष्ट हमारे॥
धरती जोते, पानी ढोते,
वाहक बनकर बोझा ढोते।
फैलाते है — गौरव तेरा,
गौ माता! अभिनन्दन तेरा॥

तुमसे जीवन है हम पाते,
दूध, दही, घी, मक्खन खाते।
सन,तृण, तेल, अन्न, पट पाते,
बदलेमे है क्या दे पाते॥
तुम घूम-घूम तिनके चरती हो,
दुख सहती पर दुख हरती हो।
नहीं किसीसे कुछ कहती हो,
जगमे जीवन भर देती हो॥
पर तेरी सुधि जब है लाते,
नयन अश्रुसे है भर आते।
करते हैं हम वन्दन तेरा,
गौ माता! अभिनन्दन तेरा॥

गोस्वामी तुलसीदासजीकी दृष्टिमें गोसेवा और उसका रहस्य

गोस्वामीजीने अपने सम्पूर्ण साहित्यमें गौकी निरन्तर चर्चा की है। वे काशीको भी गायका रूप मानते हुए बड़ी सुन्दर पद-रचना करते हुए लिखते हैं—

सेइअ सहित सनेह देह भरि कामधेनु कलि कासी।
समनि सोक-संताप-पाप-रुज, सकल-सुमंगल-रासी॥
मरजादा चहुँ ओर चरनबर सेवत सुरपुर-बासी।
तीरथ सब सुभ अंग रोम सिवलिंग अमित अबिनासी॥
अंतरऐन ऐन भल, थन फल बच्छ बेद-बिस्वासी।
गलकंबल बरुना बिभाति जनु, लूम लसति, सरिताऽसी॥
दंडपानि भैरव बिषान, मलरुचि-खलगन-भयदा-सी।
लोलदिनेस त्रिलोचन लोचन, करनघंट घंटा-सी॥
मनिकर्निका बदन-ससि सुंदर, सुरसरि-सुख सुखमा-सी।
स्वारथ परमारथ परिपूरन, पंचकोसि महिमा-सी॥
बिस्वनाथ पालक कृपालुचित लालति नित गिरिजा-सी।
सिद्धि सची, सारद पूजहिं मन जोगवति रहति रमा-सी॥
पंचाच्छरी प्रान, मुद माधव गव्य सुपंचनदा-सी।
ब्रह्म-जीव-सम रामनाम जुग आखर बिस्व-बिकासी॥
चारितु चरति करम कुकरम करि मरत जीवगन घासी।
लहत परमपद पय पावन जेहि चहत प्रपंच-उदासी॥
कहत पुरान रची केसव निज कर-करतूति कला-सी।
तुलसी बसि हरपुरी राम जपु, जो भयो चहै सुपासी॥

(विनय-पत्रिका २२)

इस पदमें* गङ्गाके अनुकूल गायको उत्तरकी ओर मुख करके खड़ा किया गया है, उसका गलकम्बल और मुख वरुणा नदीके पास और पूँछ अस्सीके पास माना गया है। मुख्य काशी वरुणा और अस्सीके बीच मानी जाती है इसीलिये इसका दूसरा नाम वाराणसी भी है। इस पदका एक-एक अक्षर बहुमूल्य तथा निरन्तर मननीय है।

यद्यपि इसमें सभी काशीके मुख्य देवताओं और पवित्र तीर्थोंका वर्णन सन्निविष्ट है, परंतु उसका मुख्य तत्त्व है गो-दुग्ध, जिसे ज्ञानियोंके समान सामान्य प्राणी भी समान-रूपसे परमसुखदायक निर्वाणके रूपमें प्राप्त कर लेता है—

लहत परमपद पय पावन जेहि चहत प्रपंच-उदासी॥

मानसमें ज्ञानदीपकका, जिसका मुख्य आधार श्रद्धारूपी गौ ही है, उस प्रकरणमें गोस्वामी तुलसीदासजीके वेदान्त-ज्ञान-सम्बन्धी श्रमका अनुमान होता है। वे वहाँ लिखते हैं—

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई॥

(रा०च०मा० ७। ११७। ९)

---

* पदका अर्थ हिन्दी होनेसे सरल ही है फिर भी विशेष सुविधाके लिये उसका संक्षिप्त एवं सरल अर्थ दिया जा रहा है। विशेष जानकारीके लिये विनयपीयूष, सिद्धान्ततिलक आदि टीकाएँ देखनी चाहिये—

इस कलियुगमें काशीरूपी कामधेनुका प्रेमसहित जीवनभर सेवन करना चाहिये। यह शोक, संताप, पाप और रोगका नाश करनेवाली तथा सब प्रकारके कल्याणोंकी खान है। काशीके चारों ओरकी सीमा इस कामधेनुके सुन्दर चरण हैं। स्वर्गवासी देवता इसके चरणोंकी सेवा करते हैं। यहाँके सब तीर्थस्थान इसके शुभ अङ्ग हैं और नाशरहित अगणित शिवलिङ्ग इसके रोम हैं। अन्तर्गृही (काशीका मध्यभाग) इस कामधेनुका ऐन (थनोंके ऊपरका भाग जिसमें दूध भरा रहता है) है। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—ये चारों फल इसके चार थन हैं, वेद-शास्त्रोंपर विश्वास रखनेवाले आस्तिक लोग इसके बछड़े हैं, विश्वासी पुरुषोंको ही इसमें निवास करनेसे मुक्तिरूपी अमृतमय दूध मिलता है, सुन्दर वरुणा नदी इसकी गलकम्बलके समान शोभा बढ़ा रही है और असी नामक नदी पूँछके रूपमें शोभित हो रही है। दण्डधारी भैरव इसके सींग हैं, पापमें मन रखनेवाले दुष्टोंको उन सींगोंसे यह सदा डराती रहती है। लोलार्क (कुण्ड) और त्रिलोचन (एक तीर्थ) इसके नेत्र हैं और कर्णघण्टा नामक तीर्थ इसके गलेका घण्टा है। मणिकर्णिका इसका चन्द्रमाके समान सुन्दर मुख है, गङ्गाजीसे मिलनेवाला पाप-ताप-नाशरूपी सुख इसकी शोभा है, भोग और मोक्षरूपी सुखोंसे परिपूर्ण पञ्चकोसीकी परिक्रमा ही इसकी महिमा है। दयालु-हृदय विश्वनाथजी इस कामधेनुका पालन-पोषण करते हैं और पार्वती-सरीखी स्नेहमयी जगज्जननी इसपर सदा प्यार करती रहती हैं, आठों सिद्धियाँ, सरस्वती और इन्द्राणी शची इसका पूजन करती हैं, जगत्‌का पालन करनेवाली लक्ष्मी-सरीखी इसका रुख देखती रहती हैं। 'नमः शिवाय' यह पञ्चाक्षरी मन्त्र ही इसके पाँच प्राण हैं। भगवान् बिन्दुमाधव ही आनन्द हैं। पञ्चनदी (पञ्चगङ्गा) तीर्थ ही इसके पञ्चगव्य (दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र) हैं। यहाँ संसारको प्रकट करनेवाले रामनामके दो अक्षर 'रकार' और 'मकार' इसके अधिष्ठाता ब्रह्म और जीव हैं। यहाँ मरनेवाले जीवोंका सब सुकर्म और कुकर्मरूपी घास यह चर जाती है, जिससे उनको वही परमपदरूपी पवित्र दूध मिलता है, जिसको संसारके विरक्त महात्मागण चाहा करते हैं। पुराणोंमें लिखा है कि भगवान् विष्णुने सम्पूर्ण कला लगाकर अपने हाथोंसे इसकी रचना की है। हे तुलसीदास! यदि तू सुखी होना चाहता है तो काशीमें रहकर श्रीरामनाम जपा कर।

अर्थात् श्रद्धा ही सब धर्मोंकी जननी होती है। यदि वह पूर्ण सात्त्विकी श्रद्धा है तो वह धेनु तथा गौका रूप धारण कर लेती है और वह धेनु या गौ यदि निरन्तर हृदयम वास करती है तथा सभी प्रकारके जप-तप, यम-नियम, आचार-विचार, ज्ञान-विज्ञान सबका अहर्निश तृणके रूपमे सेवन करती है अर्थात् व्यक्ति सदा शास्त्र, वेद आदिमे निर्दिष्ट नियमोका पालन करता है तो सद्भावना, शुभ-भावनाके योगसे गायका दूध विशुद्ध धर्मके रूपमे उस गायके स्तनोसे नीचे उतरता है। फिर उसी दूधसे दही और घृतके रूपमे निकला हुआ ज्ञान-तत्त्व तीना अवस्थासे ऊपर उठकर नित्यसमाधिमे स्थित होकर समस्त विश्वमे एकमात्र परब्रह्मका भान होते हुए अखण्ड दीपज्योतिका काम करता है—

सोहमस्मि इति बृत्ति अखडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचडा॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा॥
(रा०च०मा० ७। ११८। १-२)

यहाँ सारा ससार और उसकी मूल अविद्या भी नष्ट हो जाती है। यही योगवासिष्ठ, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र पञ्चदशी, जीवन्मुक्तिविवेक आदि वेदान्त, योग-ग्रन्थोका निष्कर्ष है।

भगवान्के अवतारके कारणोका भी जहाँ श्रीगोस्वामीजी निर्देश करते हैं, वे कहते हैं—

गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपासिधु मानुष तनु धारी॥
(रा०च०मा० ५। ३९। ३)

इसमे ध्यान देनेकी बात है कि इसमे 'गो' और 'धेनु' शब्द दो बार आया है। यह गोभक्तिका ही कारण है। यह बडी विचित्र बात है। टीकाकार लोग इसमे किसी एकका पुनरुक्ति होनेके कारण 'पृथ्वी' अर्थ भी ल सकते हैं, क्योकि पृथ्वी भी गायका रूप धारणकर भगवान्के पास जाती है—

सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका॥'
(रा०च०मा० १। १८४ छ०)

तथा—

धेनु रूप धरि हृदयँ बिचारी। गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी॥
(रा०च०मा० १। १८४। ७)

इसी तरह और भी व लिखते हैं—

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढहिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
(रा०च०मा० १। १२१। ६-७)

यहाँ भी धेनुका नाम मुख्य होनेके कारण बीचमे आया है। किंतु सभी स्थानामे गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी भगवान्को नहीं भूलते। वे भलीभाँति जानत हैं कि भगवान् ही गौ-ब्राह्मण और पृथ्वीके क्लेश दूर करनेमे समर्थ हैं। इसीलिये गोवत्सका धर्म-रूप प्रसिद्ध है और पृथ्वी धेनुरूप धारणकर ही भगवान्के पास प्रार्थना करने जाती है। भगवान् भी नाम-जप और प्रार्थना आदिसे ही प्रसन्न होते हैं। गोस्वामीजी लिखते हैं—

नाम रामको अक है सब साधन है सून।
अक गएँ कछु हाथ नहिं अक रहे दस गून॥
(दोहावली १०)

अत तीव्रगतिसे नामजपपूर्वक ही गोसेवा और गोरक्षार्थ प्रयास करना चाहिये। साथ ही गौको पशु न समझकर सर्वदेवमयी धेनु—साक्षात् भगवान्का स्वरूप मानकर उसकी सेवा-शुश्रूषा, पूजा करनी चाहिये। भागवतकारने भी लिखा है—

प्रत्युद्गमप्रश्रयणाभिवादन
विधीयते साधु मिथ सुमध्यमे।
प्राज्ञै परस्मै पुरुषाय चेतसा
गुहाशयायैव न देहमानिने॥
(श्रीमद्भा० ४। ३। २२)

अर्थात् यदि किसी व्यक्तिके हृदयम भगवान्की स्थितिको समझकर उसका स्वागत सवा-शुश्रूषा दण्ड-प्रणाम आदि कर्मोंका आचरण किया जाता हे तब तो वह सफल होता है, ऐसा ही महात्मा लोग करते हैं न कि देहाभिमानी पशु, मनुष्य आदिकी दृष्टिसे। तुलसी, पीपल, शालग्राम आदिमे भी इसी दृष्टिसे पूजा की जाती है। अत इसी दृष्टिसे अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति और विनयपूर्वक तन-मन और धनसे गोसेवा करनी चाहिये। यही सभी शास्त्रा, सता, गोस्वामी तुलसीदास, व्यास, वसिष्ठ आदिका मत है।

गोधन

(भगवत्पूज्यपाद अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीशकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन श्रीब्रह्मानन्द सरस्वतीजी महाराजका उपदेश)

धर्मशास्त्रमे गोधनका विशेष माहात्म्य बतलाया गया है। लिखा है--

सर्वेषामेव भूताना गाव शरणमुत्तमम्।

हिदू-सस्कृति इस भावनासे परिपूर्ण है कि--

यद्गृहे दु खिता गाव स याति नरक नर।

किंतु जबसे पाश्चात्योकी सभ्यता-सस्कृतिका हमारी सभ्यता-सस्कृतिके साथ सम्मिश्रण हुआ है, तबसे भारतीय शिक्षा-विधानके लोप होनेसे अधिकाशत शास्त्र-पुराणादिकी अनभिज्ञताके कारण गो-ब्राह्मणादिके प्रति शास्त्रीय धार्मिक बुद्धिका लोप-सा हो गया है।

गोवश आज व्यावहारिक उपयोगिताकी दृष्टिसे भौतिक तुलापर तौला जा रहा है, किंतु स्मरण रहे कि आजका भौतिक विज्ञान गोवशकी उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमोत्कृष्ट उपयोगिताका पता ही नहीं लगा सकता जिसे भारतीय शास्त्रकारोने अपनी दिव्यदृष्टिसे प्रत्यक्ष कर लिया था। गोवशकी धार्मिक महानता उसमे जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म कारणरूप तत्त्वोकी प्रखरताके कारण है, उनकी खोज और जानकारीके लिये आधुनिक वैज्ञानिकाके भौतिक यन्त्र सदेव स्थूल ही रहेगे। यही कारण है कि आजका प्रौढ विज्ञानवेत्ता भी गोमाताके लोम-लोममे देवताओके निवासका रहस्य और प्रात गोदर्शन, गोपूजन, गोसेवा आदिका वास्तविक तथ्य समझनेम असफल रहता है। गोधनका धार्मिक महत्त्व भावजगत्से सम्बन्ध रखता है और वह या तो ऋतम्भरा प्रज्ञाद्वारा अनुभवगम्य है अथवा शास्त्रप्रमाणद्वारा जाना जा सकता है भौतिक यन्त्रोद्वारा नहीं।

धर्मशास्त्र तो गोधनकी महानता और पवित्रताका वर्णन करता ही है, किंतु भारतीय अर्थशास्त्रम भी गोपालनका विशेष महत्त्व है। कौटिलीय अर्थशास्त्रमे गोपालन और गोरक्षणका विस्तृत विवरण मिलता है। जिस भूमिम खेती न होती हो उसे गोचर बनानेका आदेश अर्थशास्त्रका ही है। इस प्रकार गोधन 'अर्थ' और 'धर्म' दोनाका प्रबल पोषक है। अर्थसे ही काम (कामनाआ) की सिद्धि होती है और धर्मसे ही मोक्षकी। अतएव गोधनसे अर्थ धर्म, काम मोक्ष--चाराकी प्राप्ति होती है। इसीलिये भारतीय जीवनम गोधनका इतना ऊँचा माहात्म्य है। जो हिंदू धर्मशास्त्रपर विश्वास रखते हैं, उन्हे चाहिये कि चतुर्वर्ग-फल-सिद्ध्यर्थ शास्त्रविधानके अनुसार गोसेवा करते हुए गोधनकी वृद्धि करे और जो धर्मशास्त्रपर आस्था नहीं रखते, उन्हे चाहिये कि 'अर्थ' और 'काम' की सिद्धिके लिये अर्थशास्त्रके नियमाके अनुसार गोपालन करते हुए गोवशकी वृद्धि करनेका प्रयत्न करे।

प्रत्यक्षवादियोंके लिये इससे अधिक गोमाताकी दयालुता हो ही क्या सकती है कि वह सूखे तृण भक्षण करके जन्मभर उन्हे दुग्ध-घृत-जैसे पौष्टिक द्रव्य प्रदान करे। इतनेपर भी यदि वे गोमाताके कृतज्ञ न हुए, तब तो उनमे मानवताका लेश भी नहीं माना जा सकता। गोमाताके द्वारा मानव-समाजको जो लाभ है, उस पूर्णतया व्यक्त करनेके लिये सहस्रो पृष्ठोकी कई पुस्तक लिखनी होगी। सक्षेपमे यही कहा जा सकता है कि गोमातासे मानव-समाजको जो लाभ है, उससे मानवजाति गोमाताकी सदा ऋणी रहेगी।

वध आदि हिसक उपायाद्वारा गोवशका ह्रास करना धार्मिक और आर्थिक दोनो दृष्टियोंसे राजा-प्रजा दोनोंके लिये हानिकर है। अतएव ऐसी भयकर प्रथाओको सर्वथा रोकनेका प्रयत्न सभीको करना चाहिये। जबतक केन्द्रीय सरकार इसके लिये सकल्प नहीं ल लेती, तबतक सतोषजनक परिणाम असम्भव-सा प्रतीत होता है। इसके लिये देशव्यापी यथेष्ट प्रयत्न होना चाहिये।

साथ-ही-साथ प्रत्येक गृहम गोपालनकी प्राचीन प्रथाको बढानेका प्रयत्न भी सभी सद्गृहस्थोको करना चाहिये। धनी-मानी लोगा, श्रीजनों, सेठ-साहूकारा आदिको चाहिये कि गाशालाओकी वृद्धि करे जहाँसे आदर्श हृष्ट-पुष्ट गौआ और बैलाकी प्राप्ति हो सके। गोचरभूमिके सम्बन्धमे आजकलकी व्यवस्था अत्यन्त शोचनीय है। इस सम्बन्धमें मनुजीने लिखा है--'प्रत्येक गाँव और नगरके चारो आर प्रचुर मात्रामे गोचरभूमि छाडनी चाहिये।' सभी समर्थ किसाना श्रीमन्ता और सेठ-साहूकारोको अपने-अपने केन्द्रोमे गोचरभूमियाका यथोचित प्रबन्ध करना चाहिये और गोधनकी वृद्धिका सदैव ध्यान रखना चाहिये। इसामें भारत और भारतीय सभ्यताका गौरव तथा सच्चा स्वार्थ निहित है।

गोवंश भारतीय जीवनका मूलाधार

(ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज)

माता रुद्राणा दुहिता वसूना स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि ।
प्र नु वोच चिकितुषे जनाय मा गामनागामदिति वधिष्ट॥

(ऋग्वेद ८। १०१। १५)

गाय धर्म एव सस्कृतिकी प्रतीक

गाय वैदिक कालसे ही भारतीय धर्म और सस्कृति-सभ्यताकी प्रतीक रही है। स्वय वेद गायको नमन करता है—'अघ्न्ये! ते रूपाय नम ।'

'रूपायाघ्न्ये ते नम ।'

(अथर्व० शौन० १०। १०। १ पैप्प० १६। १०७। १)

'हे अवध्य गौ! तेरे स्वरूपके लिये प्रणाम है।' ऋग्वेद (१। १५४। ६) के अनुसार 'जिस स्थलपर गाय सुखपूर्वक निवास करती है, वहाँकी रज तक पवित्र हो जाती है, वह स्थान तीर्थ बन जाता है।' हमारे जन्मसे मृत्युपर्यन्त सभी सस्कारोमे पञ्चगव्य और पञ्चामृतकी अनिवार्य अपेक्षा रहती है। गोदानके बिना हमारा कोई भी धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता। व्रत, जप, उपवास सभीमे गौ और गोप्रदत्त पदार्थ परमावश्यक हैं। गाय अपनी उत्पत्तिके समयसे ही भारतके लिये पूजनीय रही है। उसके दर्शन, पूजन, सेवा-शुश्रूषा आदिमे आस्तिक जन पुण्य मानते हैं। किसी पूज्य-से-पूज्य व्यक्तिकी भी विष्ठा पवित्र नहीं मानी जाती, किंतु गोमूत्र गङ्गाजलके समान पवित्र माना गया है और गोमयमे साक्षात् लक्ष्मीका निवास कहा गया है। चान्द्रायणादि महाव्रता एव यज्ञामे पञ्चगव्य पीनेका विधान है, जिसमे गोमय-गोमूत्र मिश्रित रहते हैं। शास्त्रोके अनुसार हमारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग मास-मज्जा चर्म और अस्थिमे स्थित पापोका विनाश पञ्चगव्यके पानसे होता है। गाय सर्वदेवमयी है—

'सर्वे देवा स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ ।'

गायके शरीरमे सभी देवताआका निवास है, अत गाय सर्वदेवमयी है।

भारतीय सस्कृति यज्ञ-प्रधान है। वेदसे लेकर रामायण महाभारतादि इतिहास-ग्रन्थोतक सर्वत्र यज्ञको ही सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यज्ञके आधार हैं, मन्त्र और हवि, जिनमे मन्त्र ब्राह्मणके मुखमे निवास करते हैं तो हवि गायके शरीरमे। हविके अभावमे यज्ञकी कल्पना भी सम्भव नहीं। इसीसे गाय भारतीय धर्म और सस्कृतिकी मूलाधार रही है। धर्मग्लानिको दूरकर धर्मसस्थापनके उद्देश्यसे अवतरित भगवान् एव भगवद्विभूतियोंने सदैव गो-ब्राह्मणोकी रक्षाको ही सर्वोच्च प्राथमिकता दी है—

विप्र धेनु सुर सत हित लीन्ह मनुज अवतार।'

आनन्दकन्द, मदनमोहन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने तो यही कामना की है—

गावो ममाग्रत सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठत ।
गावो मे सर्वत सन्तु गवा मध्ये वसाम्यहम्॥

अर्थात् 'गाये मेरे आगे हो, मेरे पीछे हो, गाये मेरे सब ओर हो, मैं गायोके मध्य वास करूँ।'

चक्रवर्ती नरेन्द्र दिलीपने गोरक्षाके लिये अपना कमनीय-कान्त युवा शरीर ही सिहके लिये अर्पण कर दिया और कहा कि क्षतसे त्राण करनेके कारण ही 'क्षत्रिय' शब्द ससारम रूढ हुआ है, यदि मैं नन्दिनी गौकी रक्षा नहीं कर सका तो 'क्षत्र'-शब्दार्थके विपरीत आचरणके कारण राज्य एव प्राणियोकी निन्दासे मलीमस प्राणोसे मुझे कोई प्रयोजन नहीं—

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्र क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ ।
राज्येन किं तद्विपरीतवृत्ते प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा॥

दिलीपने सिहसे यह भी कहा था कि 'जितनी कृपा आप मेरे भौतिक शरीरपर कर रहे हैं, उतनी कृपा मेरे यश-शरीरपर क्या नहीं करते? मेरे देखते-देखते यदि नन्दिनी गौकी हत्या हुई तो सूर्यवशकी कीर्तिमे कलङ्ककी कालिमा लग जायगी।'

श्रीरामचन्द्र राघवेन्द्रके कमल-से कोटिगुणित सुकोमल चरणारविन्दोमे गो-ब्राह्मण-रक्षणार्थ ही दण्डकवनके कण्टक चुभे थे। भक्तोके हृदयमे उसी दण्डक-कण्टकविद्ध पादारविन्दको स्थापित करके भगवान् साकेतधाम पधारे—

स्मरता हृदि विन्यस्य विद्धदण्डककण्टकै ।
स्वपादपल्लव रामो ह्यात्मज्योतिरगात् प्रभु ॥

भगवान् श्रीकृष्ण तो गोचारण और गोपालनके आदर्श ही हैं। उनकी गोपाङ्गनाएँ उनके नलिनसुन्दर चरणारविन्दोमे तृण, अकुर आदिके गड जानेकी कल्पनासे ही सतप्त हो उठती हैं—

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दर नाथ ते पदम्।
शिलतृणाङ्कुरै सीदतीति न कलिलता मन कान्त गच्छति॥

अर्थ-व्यवस्थाकी रीढ

धर्म और सस्कृतिका प्रतीक होनेके साथ-साथ गाय भारतकी कृषिप्रधान अर्थव्यवस्थाकी भी रीढ है। देशमे सदैवसे गोधनको ही 'धन' माना जाता रहा है। प्राचीन कालम तो किसी भी वस्तुका मूल्याङ्कन गौके द्वारा ही होता था। हमारे यहाँ गोपालन पश्चिमी देशोकी भाँति केवल दूध और मासके लिये नहीं होता। अमृततुल्य दूधके अतिरिक्त खत जोतने एव भार ढोनेके लिये बेल तथा भूमिकी उर्वरता बनाये रखनेके लिये उत्तम खाद भी हमे गायसे ही प्राप्त होती है, जिसके अभावमे हमारे राष्ट्रकी अर्थव्यवस्थाका शकट किसी प्रकार चल नहीं सकता।

भारतीय कृपिकी यह अनिवार्य अपेक्षा है कि देशमे पर्याप्त सख्यामे उत्तम बैल उपलब्ध हों। इस समय दशमे उनकी जो स्थिति है, वह उत्कृष्टता और सख्या दोना दृष्टियासे असतापजनक है। द्वितीय पञ्चवर्षीय योजनाक अनुमानानुसार देशम ३१ करोड ५२ लाख एकड भूमिम खेती हाती है। १९२७ के 'रायल कमीशन' की कृपिसम्बन्धी रिपोर्टक अनुसार प्रति एक सौ एकड भूमिके लिये २० (बीस) बैलाकी आवश्यकता है। 'कैटल मार्केटिग रिपोर्ट—१९४६ के अनुसार उक्त हिसाबसे ८ करोड ६ लाख ५ हजार बैलाकी आवश्यकता है। १९६१ की पशु-गणनाक अनुसार दशमे केवल ६ करोड ८६ लाख १ हजार ६१४ कार्यक्षम बैल उपलब्ध हैं। इस प्रकार देशम एक कराडसे अधिक बैलाकी कमी है जिसस कृपि-उत्पादन उत्तरात्तर कम हाता जा रहा है। इसक अतिरिक्त प्रतिवर्ष १० प्रतिशत बैल सवानिवृत्त हो जात हैं जिनकी पूर्तिक लिय एक करोड नय बैलाकी प्रतिवर्ष आवश्यकता होती है। यह पूर्ति वर्तमान गोधनसे ही सम्भव है, भले ही उनकी दुग्धोत्पादनकी क्षमता कितनी ही कम क्यो न हो। इसी सदर्भमं भारत-सरकारकी 'मानव तथा पशु -भोजन-विशेषज्ञ समिति'-ने अपनी रिपोर्टमें कहा है कि—'चूँकि बैलाकी वर्तमान सख्याको कृपिके लिये बनाये रखना आवश्यक है और प्रजननके द्वारा उनकी पूर्ति करना भी अनिवार्य है, अत प्रजननयोग्य गौआकी सख्या कम करना हितकर नहीं हो सकता भले ही उनमेसे अधिकाशकी दूध देनेकी क्षमता कितनी भी कम क्यों न हो।'

ट्रैक्टरोका प्रयोग

ट्रैक्टर उक्त समस्याका हल नहीं है। स्व० लालबहादुर शास्त्रीके अनुसार 'देशमे लाखो एकड भूमि ऐसी है, जहाँ ट्रैक्टरोका प्रयोग हो ही नहीं सकता। अमेरिकामे ट्रैक्टरोसे खती हो सकती है क्योकि वहाँ एक किसानके पास कम-से-कम १४ एकड भूमिका औसत है, जब कि भारतमे एक एकड भूमिका औसत हे। ऐसी दशाम हमे भारतम खेतीके लिये लबे समयतक बैलापर निर्भर रहना पडेगा।' (भाषण, हैदराबाद १९६५)

केन्द्रीय गोसवर्धन-परिषद्के अध्यक्ष श्री उ० न० ढेबरके शब्दाम '१९६५ के ताजे आँकडोसे पता चलता है कि दशमे कुल ४० हजार ट्रैक्टर हैं, जिनमे २० हजार बेकार पड हैं। इससे प्रकट हाता है कि इस देशम ट्रैक्टरोकी कितनी कार्यक्षमता है और ट्रैक्टरसे खेती करना कितना लाकप्रिय हो सकता है। जो लाग ट्रैक्टरसे खेती करनेक लिये उतावले हो रहे हैं, उन्ह इस सम्बन्धमे शान्तिसे विचार करना चाहिये।' (भाषण, हैदराबाद १९६५)

देशमं कृपि और अन्य कार्योमे सलग्न बैलाकी सख्या लगभग सात करोड है। उनके द्वारा बिना किसी अन्य सहायताके ३ करोड हॉर्स पॉवर शक्ति पैदा होती है, जिसे उत्पन्न करनक लिये मध्यम प्रकारके ४० लाख ट्रैक्टराकी आवश्यकता होगी। इन ४० लाख ट्रैक्टराका प्राप्त करने और चलानमें कितना धन खर्च हागा उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकत।

सर अलबर्ट हॉवर्डने अपने (An Agricultural Testament) म ट्रैक्टरस खेती करनकी हानि भी

दिखायी है। आपने लिखा है—'घोडे और बैलके बदले बिजलीकी मोटर और तेलवाले इंजनोंसे खेती करनेमें एक हानि यह है कि इन मशीनोंसे गोबर और मूत्र नहीं मिलता। फलतः ये मिट्टीकी उर्वरता बनाये रखनेमें किसी कामके नहीं हैं' (उल्टे उनके तेल और धुएँसे खेतकी उर्वराशक्तिको नुकसान पहुँचता है, पृष्ठ १८)। इसके अतिरिक्त कृषि-विशेषज्ञोंके मतानुसार भी ट्रैक्टर सर्वत्र और सदैव उपयोगी नहीं होते, बंजरभूमिको तोडने एवं कृषियोग्य बनानेमें अथवा ऊबड-खाबड भूमिके लिये भले ही वे उपयोगी हों।

उपर्युक्त स्थितिमें भारतमें कृषिके लिये ट्रैक्टरोंका प्रयोग न तो सम्भव है और न उपयोगी ही। इस प्रकार भारतीय कृषिके लिये गायकी संतति बैल ही रह जाते हैं। १९२९ में भारतीय कृषि रायल कमीशनने भी लिखा है कि 'गाय और बैल अपनी दृढ पीठपर हमारी अर्थव्यवस्थाका सम्पूर्ण भार उठाये हुए हैं।'

गोमय और गोमूत्र

आर्थिक एवं व्यावहारिक दृष्टिसे अमृततुल्य दूध एवं बैलके पश्चात् गोबर और गोमूत्रका स्थान है। भूमिकी उर्वरता और उत्पादन-शक्ति बनाये रखनेके लिये उत्तम खादकी अनिवार्य अपेक्षा सर्वमान्य है। वृद्धता अथवा रोगके कारण गाय यदि दूध और बछडे देने योग्य न रहे तो भी खाद तो वह जबतक जीवित रहती है, देती ही है। डॉ० बॉयलरने गायके गोबरका विश्लेषण करके बतलाया है कि एक टन सूखा गोबर १५५ रत्तल 'सलफेट अमोनिया' (Sulphate Ammonia) की खादके बराबर है।' उन्हींके अनुमानानुसार भारतमें गोवंशसे प्राप्त होनेवाले गोबरसे ही एक करोड रुपयेके मूल्यकी खाद प्रतिदिन प्राप्त हो सकती है। यह केवल सूखे गोबरके मूल्यका अनुमान है, जो वर्षमें ३६० करोड रुपयेका होगा। डॉ० बॉयलर अंग्रेजी शासनकालमें भारतीय कृषिकी उन्नतिकी जाँच करने कृषि-निष्णातोंका कमीशन लेकर भारत आये थे और तेरह मासतक भारतमें दौराकर उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी।

डॉक्टर इकल्सनने 'दुधारू ढोर और दुग्ध-उत्पादन' (Dairy cattles and milk production) नामक पुस्तकमें बताया है कि 'एक हजार रत्तल वजनकी गाय वर्षमें ८ हजार रत्तल मूत्र और १८ हजार रत्तल गोबर देती है। ८ हजार रत्तल मूत्रकी खादका मूल्य १३ ६० डालर और १८ हजार रत्तल गोबरकी खादका मूल्य १३ १० डालर होता है।' उनका कहना है कि 'यह ठीक है कि व्यवहारमें प्रायः इसका ध्यान नहीं रखा जाता कि पशुओंके गोबर और मूत्रमें उपजाऊ गुणवाले पदार्थ अधिक होते हैं। ऊपरके आँकडोंमें ८००० रत्तल मूत्रमें जितना नाइट्रोजन होता है, लगभग उतना ही गोबरमें है' (यह दिखाकर उक्त बात स्पष्ट की गयी है—पृष्ठ ४८१)।

इकल्सनकी गवेषणाको ध्यानमें रखकर यह कहा जा सकता है कि एक करोड रुपयेसे अधिक मूल्यकी खाद प्रतिदिन गोवंशके मूत्रसे ही मिल सकती है। इसके अतिरिक्त गायके गोबर और गोमूत्रकी एक मात्रा पौधोंके कचरेकी ५ से १० मात्रातकको कम्पोस्टमें परिणत कर सकती है। यदि कम्पोस्ट खादके लिये गोबरसे अच्छा है तो यह बात हमारी बुद्धिमें सहज ही बैठ सकती है कि गाय खाद देनेमात्रसे ही अपनी उपयोगिता सिद्ध कर देती है।

कृत्रिम रासायनिक खाद

कृत्रिम रासायनिक खादसे प्रारम्भमें भले ही उत्पादनमें कुछ वृद्धि दिखायी दे, पर स्वल्पकालमें ही उससे भूमिकी उत्पादनशक्तिका ह्रास हो जाता है और वह प्रायः ऊसर बन जाती है। इस भावी संकटकी गम्भीरतापर हमें अवश्य विचार करना चाहिये।

सर अलबर्ट हार्वर्डने इस विषयमें जो खोज की है, वह आँखें खोल देनेवाली है। वे भारत-सरकारके इकोनॉमिक बॉटनिस्ट (Economic Botanist) बनकर भारत आये और 'पूसा कृषि-गवेषणा परिषद्' में काम करने लगे। अपने दीर्घकालीन अनुभवको आपने ग्रन्थरूपमें उपस्थित किया है जो 'ऐन एग्रीकल्चरल टैस्टामेण्ट' (An Agricultural Testament) नामसे प्रकाशित है। इस ग्रन्थमें आपने लिखा है कि 'फसलोंके रोग भूमिके अस्वस्थ और रोगी होनेके कारण होते हैं और भूमिके रोगी होनेका कारण है प्राकृतिक खाद, गोबर या हरी खादका न मिलना। अतः गोबर तथा हरी खाद ही भूमिकी प्राकृतिक खाद है। रासायनिक खाद भूमिको जीवांश (ह्यूमस) प्रदान नहीं करती।' आप लिखते हैं कि 'ये रासायनिक पदार्थ भूमिको संतुष्ट नहीं रख सकते। इनके उपयोगसे वृद्धि और क्षयका

कभी सतुलन नहीं हो सकेगा। पृथ्वी माताका प्राकृतिक खादका अधिकार छीन लेनेसे वह विद्रोही हो गयी हे, उसने हडताल कर रखी है। कृषिका उत्पादन घट रहा है। जिस क्षेत्रने ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain) जैसे देशकी प्रजाको खिलाया और जहाँस वहाँकी मशीनोको कच्चा माल दिया जाता हे, उसकी जॉच बताती है कि निस्सदह वहॉकी भूमि अव भार वहन करनेम असमर्थ हो रही है। भूमिकी उपज विशेषकर सयुक्त राष्ट्र अमरिका कनाडा, अफ्रीका आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडमे द्रुतगतिम घट रही है।'

डॉक्टर हॉवर्डके निष्कर्पोसे यह स्पष्ट है कि रासायनिक खादका उपयोग करनेसे केवल यही हानि नही कि भविष्यम उससे उपज कम होगी, अपितु यह भी कि उससे भूमिका स्वास्थ्य बिगडेगा। फलस्वरूप अस्वस्थ भूमिसे अन्न और चारा भी दूषित उत्पन्न होगा, जिससे मनुष्यो और पशुओके स्वास्थ्यपर विपरीत प्रभाव पडेगा। भारतीय कृषिकी उन्नतिके लिये रासायनिक खादका उपयोग कभी हितकर नहीं हो सकता। इसके साथ ही रासायनिक खादम काम आनेवाला गन्धक और मशानाका विदेशोसे आयात करना पडता है, जा भारतकी अर्थ-व्यवस्थापर एक बडा भार है। अत भारतकी कृषि-अर्थव्यवस्थाकी उन्नतिके लिये गोवशका सम्यक् सरक्षण और सवर्धन परमावश्यक है जिसे हम किसी प्रकार आँखोमे ओझल नहीं कर सकते।

गो-दुग्ध

कृषिके लिये बैल उत्तम खादके अतिरिक्त गाय हम शरीर और मस्तिष्कका पुष्ट करनेके लिये अमृततुल्य दुग्ध भी प्रदान करती हे। हमार देशकी अधिकाश जनता आज भी शाकाहारी है। अत दूध ही भारतकी अधिकाश जनताका सर्वश्रेष्ठ पौष्टिक आहार है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे गो-दुग्ध गादधि गातक्र अत्यावश्यक है। उसस अनेक प्रकारक राग दूर हात हैं। इसी प्रकार आयुर्वेद एव आधुनिक विज्ञानक अनुसार भा शरार-स्वास्थ्य एव रागनिवृत्तिक लिये गायक दूध दही मट्ठा मक्खन घृत मूत्र गोवर आदिका अत्यन्त उपयाग हैं।

किंतु दूधका जा मात्रा आज हमार दशम उपलब्ध है वह बहुत हा निराशाजनक है। भारतम प्रतिव्यक्ति दूधकी खपत केवल ४.७५ औंस है जबकि अमरिका डेन्मार्क स्विट्जरलैंड आदि देशाम प्रतिव्यक्ति ५० औंस तक है। भोजनविशेषज्ञोक मतानुसार एक व्यक्तिको प्रतिदिन कम-स-कम १३ औंस दूध चाहिय। ऐसी स्थितिम देशमे एक भी गायकी हत्या होना कदापि उचित नहीं माना जा सकता। यद्यपि देशके वर्तमान गोधनकी दुग्धात्पादन-क्षमता बहुत क्षीण है, तथापि हमे यह नही भूलना चाहिये कि देशमे आज जितने परिमाणम दूधका उत्पादन होता है और जितनी भी सख्यामे बेल तैयार होते है, वे सब हमे इन्हीं गोआसे ही उपलब्ध होते हैं। इस सम्बन्धम 'मनुष्य तथा पशुभोजन-कमेटी' (Human Nutrition vis a vis Animal Nutrition in India) की निम्नलिखित सम्मति विचारणीय है—

'उक्त तथ्यासे विदित है कि दुधारू पशुआ और विशेषत गायाक दूध दनेकी क्षमता बहुत क्षीण है। यह न्यायसगत नहीं मालूम होता कि दा पौंड या इससे कम प्रतिदिन दूध देनेवाल पशुओका पालन-पोषण किया जाय। सामान्य दृष्टिसे देखे ता ऐसे पशुओंका निष्कासन कर देना चाहिय परतु ऐसा करनेसे पहले यह समझ लेना चाहिये कि इस प्रकारकी नीतिका क्या भयकर परिणाम होगा? यदि दा पौंडसे कम दूध देनेवाले ऐसे पशुआका बकार समझकर नष्ट कर दिया गया तो उसके परिणामस्वरूप हमारी वर्तमान दुधारू गायाकी ९० प्रतिशत सख्या नष्ट हा जायगी। इसका फल यह होगा कि हम इस समय जो ९.७ मिलियन टन दूध प्राप्त हो रहा है, उसमेस ७ मिलियन टन दूधसे हाथ धोना पडगा।'

उपर्युक्त तथ्योको ध्यानम रखते हुए यदि हमे देशम दूधका वर्तमान उत्पादन कायम रखना है और उसम वृद्धि करनी ह तो एक भी गायकी हत्या होना कदापि उचित नहीं माना जा सकता। हाँ सतुलित आहार आदि साधनासे उसकी दुग्धात्पादन-क्षमता बढानका प्रयास ही अधिक उपयोगी हा सकता है। अनुभवा विशषज्ञाने अब इस तथ्यका स्वीकार कर लिया है कि गायका पर्याप्त मात्राम सतुलित आहार देनमात्रसे उसका दुग्धात्पादन लगभग ४०—५० प्रतिशत बढाया जा सकता है। अत कम दूध दनवाली गायाका दुग्धात्पादन-क्षमता बढानके लिये अनुभूत प्रयाग करना दशक सर्वविध हितम है (अच्छे साँडांके

साथ सम्बन्ध कराने और गो-सतानोको गौका सम्पूर्ण दूध पिलानेसे दो-तीन पीढियोमे ही आशातीत गोवशकी उत्तम स्थिति और दुग्धवृद्धि हो सकती है)। भारत-सरकारद्वारा प्रस्ताव-सख्या एफ २५-८।४७ एल, दिनाक १९ नवम्बर १९४७ के अन्तर्गत गोरक्षण एव गोसवर्धन-विशेषज्ञ समितिकी निम्नलिखित सिफारिश उपर्युक्त तथ्याके प्रमाणित करनेके लिये नि सदेह पर्याप्त है—

'इस समितिकी रायमे किसी भी अवस्थामे भारतमे गोहत्या होना वाञ्छनीय नहीं है। कानूनद्वारा गोहत्या बद हो जानी चाहिये। भारतकी सुख-समृद्धि अधिकाशत गोवशके ऊपर निर्भर है। भारतकी आत्माको तबतक सतोष नहीं होगा, जबतक पूर्णतया गोहत्या बद नहीं हो जायगी और गोवशकी वर्तमान दीन-हीन दशाको सुधारा नहीं जायगा।'

अनुपयोगी पशुओका हौआ

सम्पूर्ण गोवशकी हत्यापर प्रतिबन्धके विरुद्ध गोहत्याके समर्थकोकी ओरसे देशम अनुपयोगी पशुआकी सख्याका हौआ खडा किया जाता है। इस सम्बन्धमे पहली बात तो यह है कि गोवशके पशुओकी विविध उपयोगिता देखते हुए, जैसा कि विस्तारस दिखाया जा चुका है, देशमे कोई अनुपयोगी पशु है ही नहीं। हमारे यहाँ गोपालन दुग्ध, बैल और खादके लिये किया जाता है। अत केवल दूध और बैल-शक्तिकी दृष्टिसे गोवशकी उपयोगिता निश्चित करना ठीक नहीं है। किंतु सरकारी निष्णातोने सदैव केवल दुग्धोत्पादन और बैल-शक्तिको लेकर ही अनुपयोगी पशुओकी सख्या बढा-चढाकर प्रस्तुत करनेका प्रयत्न किया है। इतनेपर भी सन् १९५१ की पशुगणना-रिपोर्टके अनुसार तथाकथित अनुपयोगी पशुओकी सख्या २५ प्रतिशत अर्थात् लगभग ४० लाख थी। देशके ७ लाख गाँवाम फैले ये पशु एक मोटे अनुमानके अनुसार गोबर और गोमूत्रके रूपमे प्रतिपशु ४८ रुपये वार्षिक आय देता है जब कि विशेपज्ञोद्वारा निर्मित गोसदन-योजनाके अनुसार ऐसे एक अनुपयोगी पशुके पालनपर ३६ रुपये प्रतिवर्ष खर्च आता है। इस प्रकार तथाकथित अनुपयोगी पशु भी वास्तवमे अनुपयोगी नहीं है।

दूसरी बात यह कि गोहत्यापर प्रतिबन्धसे अनुपयोगी गायोकी सख्याका कोई सम्बन्ध नहीं है। सरकारी आँकडोको देखनेसे पता चलता है कि जिन राज्याम गोहत्या बद है, वहाँ अनुपयोगी पशुओकी सख्या उन राज्योकी तुलनामे बहुत कम है, जिनमे गोहत्या जारी है। उदाहरणके लिये जम्मू और कश्मीरमे केवल ० ७७ प्रतिशत निरुपयोगी पशु हैं। राजस्थानमे १ २२ प्रतिशत, बिहारमे १ ९२ प्रतिशत, मध्यप्रदेशमे १ ५१ प्रतिशत, मैसूरमे २ १५ प्रतिशत, पजाबमे ० ७ प्रतिशत और उत्तरप्रदेशमे ० ७८ प्रतिशत अनुपयोगी पशु हैं, यद्यपि इन प्रदेशोमे गोहत्यापर पूर्ण अथवा आशिक प्रतिबन्ध है। जबकि जिन प्रदेशोमे गोहत्यापर प्रतिबन्ध नहीं है, उनमे यह सख्या आसाममे ४ ३६ प्रतिशत, मद्रासमे ५ २८ प्रतिशत, आन्ध्रप्रदेशमे ३ ३४ प्रतिशत और बगालम २ ४७ प्रतिशत है। इन आँकडोसे सिद्ध होता है कि गोहत्या-बदीके साथ अनुपयोगी पशुओकी सख्याका कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस प्रकार गोहत्या-बदीसे देशमे अनुपयोगी पशुओकी बढोत्तरीके कारण उत्पन्न आर्थिक सकटकी बात सर्वथा निराधार सिद्ध होती है। 'दातार-कमेटी' की रिपोर्ट, जिसमे सभी सरकारी पशु-निष्णात सम्मिलित थे, की पूर्ण गोहत्या-बदीके लिये सिफारिश तथा प्रोफेसर भाभाके ये शब्द कि 'आज जिस स्थितिमे हम हैं, उसमे गोहत्या बद होनी चाहिये, क्याकि इससे देशको हानि है' एव सविधानकी ४८ वीं धारा उपर्युक्त निष्कर्षकी पुष्ट साक्षी हैं।

गो-सवर्धन

इसमे सदेह नहीं कि गोहत्या-बदीके साथ-साथ गायोकी दुग्धोत्पादन-क्षमता बढाने, नस्ल-सुधार एव गोमय और गोमूत्रके समुचित उपयोगकी व्यवस्थाके लिये गोसवर्धनका सबल प्रयास अपेक्षित है। किंतु गोहत्यापर प्रतिबन्धके अभावमे गोसवर्धनकी बात गारक्षाकी दृष्टिसे विशेष महत्त्वकी नहीं, क्योकि गोहत्याके चलते सरकारद्वारा प्रस्तावित गासवर्धन भी उसके मुर्गा-मुर्ग-सवर्धन, मत्स्य-सवर्धन और शूकर-सवर्धनकी तरह ही केवल अधिक मासप्राप्तिके लिये ही होगा। अत सम्पूर्ण गोवशकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगे बिना गोसवर्धनकी बात केवल धोखाधडी ही है।

गौ माताकी सेवा सर्वोपरि धर्म है

(ब्रह्मलीन जगद्गुरु शकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजके सदुपदेश)

अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज महान् उच्चकोटिके अद्भुत विद्वान्, घोर त्यागी, तपस्वी, शास्त्रानुसार जीवन व्यतीत करनेवाले विलक्षण महापुरुष थे। आपने अपने समस्त जीवनभर बडी अद्भुत गोभक्ति की थी और गोरक्षामे खुल करके भाग लिया था तथा गोरक्षार्थ समस्त भारतमे घूम-घूमकर प्रचार किया था और गोरक्षार्थ नाना प्रकारके कष्ट झेले थे। आप जीवनभर गोदुग्धका पान करते रहे। आपका यह नियम था कि आप कहीं भी जा रहे हो यदि रास्तेमे पूज्या गौ माता आती या सामने खडी दिखलायी पडती थी तो झटसे उसे आप अपने सीधे हाथपर लेते थे और उसे मन-ही-मन बडी श्रद्धा-भक्तिके साथ प्रणाम किया करते थे। गोभक्षकासे स्पर्श कराना, गोभक्षकोको देखना और गोभक्षकोकी वायुका स्पर्श हो जाना भी बडा पाप मानते थे और इनसे बिलकुल दूर रहा करते थे। वे गौ माताको पूज्या, प्रात स्मरणीया और अपने प्राणोसे भी प्यारा समझा करते थे और गौ माताकी ओर पैर करके कभी नहीं बैठते थे तथा गोरक्षार्थ प्राण दे देना महान् परम सौभाग्य समझा करते थे।

कुछ समय पूर्व भक्त श्रीरामशरणदासजीने श्रीस्वामीजीके श्रीचरणोमे बैठ करके गोरक्षा-सम्बन्धी जो महत्त्वपूर्ण सदुपदेश प्राप्त किये थे, सक्षेपमे उन्हे यहाँ दिया जा रहा है—

पूज्या गौ माताकी अद्भुत महिमाको समझो

प्रश्न—पूज्य महाराजजी। गौ माताकी रक्षा कैसे हो और धर्मप्राण भारतसे गोहत्याका काला कलक कैसे मिटे?

उत्तर—गोहत्या बद करनेकी बात करनेसे पहले पूज्या गौ माताकी अद्भुत विलक्षण महिमाका समझो और गोहत्या कैसे बद हो फिर इसपर विचार करो तथा जो गोहत्यार हैं अथवा जो गोहत्याके समर्थक हैं, उनसे अपना सम्बन्ध-विच्छेद करो। तभी कुछ हो सकेगा अन्यथा नहीं। परम पूज्या प्रात स्मरणीया गौ माताकी बडी ही अद्भुत महिमा है। 'गौ मातामे ३३ करोड देवी-देवताओका वास है'—यह कोई कपालकल्पित बात नहीं है। गौ माताकी रक्षामे हँसते-हँसते बलिदान हो जानेपर निश्चितरूपसे बडी महान् उत्तम गति प्राप्त होती है। इनकी रक्षामे प्राण दे देनेवालोंको श्रीगोलोकधामकी प्राप्ति होती है, इसमे तनिक भी सदेह करनेकी आवश्यकता नहीं है। गौ माता जहाँ हमारी पूज्या है वहीं वह साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्पर ब्रह्म भगवान् श्रीकृष्णकी भी पूज्या है और परम इष्टदेवी है। भगवान् श्रीराम-कृष्णके इस धराधामपर अवतार लेनेका एकमात्र कारण पूज्य गौ-ब्राह्मणोकी रक्षा करना है, यह एक बिलकुल सत्य बात है। पूज्या गौ माताके बिना हिन्दू-जाति, हिन्दूधर्म, हिन्दूसभ्यता-सस्कृतिकी कभी भी रक्षा नहीं हो सकती। याद रखो—पूज्या गौ माताके कारण ही हिन्दू-जातिका अस्तित्व बचा हुआ है और हिन्दू-जाति दिखलायी पड रही है। यदि पूज्या गौ माता समाप्त कर दी गयी तो हिन्दू-जाति भी सदा-सर्वदाके लिये समाप्त हो जायगी, इसमे तनिक भी सदेह नहीं है। पूज्या गौ माताका घृत और पूज्य ब्राह्मणोद्वारा उच्चारित वेदमन्त्र दोनो ही यज्ञमे काम आते हैं और यज्ञ हिन्दू-जातिका प्राण है।

धर्मप्राण भारतमे एक ऐसा सुन्दर समय था और ऐसा भी स्वर्णयुग था जब कि भारतके हिन्दुओंके घर-घरमे पूज्या गौ माताओकी पूजा-आरती हुआ करती थी। साक्षात् परब्रह्म परमात्मा भी भगवान् श्रीराम-कृष्णके रूपमें अवतार लेकर आते थे और स्वय अपने हाथोसे उनकी सेवा-शुश्रूषा किया करते थे तथा नगे पाँवो जगल-जगल जाकर गायोको चराया करते थे और अपना गोपाल नाम रखाते थे। भारतके बडे-बडे चक्रवर्ती सम्राट्तक पूज्या प्रात स्मरणीया गौ माताकी अपने हाथोसे सेवा करनेमे और उनकी रक्षाके लिये हँसते-हँसते अपने प्राणतक दे देनेमे बडे गर्व तथा महान् गौरवका अनुभव किया करते थे। घर-घरमें गोदुग्धकी

नदियाँ बहा करती थीं और पूज्या गौ माता निर्भय होकर विचरा करती थीं और सारा भारत तथा सारा हिन्दूसमाज परम गोभक्त था।

मुसलमानी कालमे जब भारतके और हिन्दू-जातिके महान् दुर्दिन आये तो मुसलमानोने भारतमे प्रवेश किया और यहाँकी धर्म-सस्कृतिको मिटाना प्रारम्भ कर दिया। हमारे परम पवित्र देव-मन्दिर तोड डाले गये, पर हमने फिरसे मन्दिर बना डाले। मुसलमानोने गौको मारना चाहा, पर हमने अपने प्राण देकर भी उसे बचा लिया। उन्होने अत्याचार किये और बडे-बडे जुल्म ढाये, पर लाख प्रयत्न करनेपर भी वे हमारी श्रद्धाको, भावनाको और गौओके प्रति श्रद्धा-विश्वासको हमारे हृदयसे, मनसे नहीं मिटा सके और हम पुन पहले-जैसे बनकर और छाती तानकर खडे हो गये। देशका महान् दुर्भाग्य तो तब सामने आया जब कि हिन्दुआके अदर ही कुछ पथभ्रष्ट मनुष्योने समाजको दिग्भ्रमित कर डाला ओर गौको एक सामान्य पशुकी सज्ञा दे दी।

जबतक हिदू गायको पूज्य और ३३ करोड देवी-देवताओका दिव्य मन्दिर मानता रहा तबतक इसके लिये मरता रहा, परतु जब गायको उसने केवल कोरा दूध देनेवाला पशु बताकर सामने खडा कर दिया तब हिन्दुआने झटसे गोरक्षासे मुँह मोड लिया। हमारी जिस पवित्र भावनाको औरगजेब, महमूद गजनवी तैमूरलग नहीं खतम कर सके उसी परम पवित्र भावनाको, श्रद्धाको हिन्दुआमे ही उत्पन्न होनेवाले कुछ नेताआने अपने ही हाथा समाप्त कर डाला, इससे बढकर महान् घोर दु खकी बात आर क्या होगी!

गौ माताकी अद्भुत महिमा

महामहिमामयी गौ हमारी माता है। उसकी बडी ही अद्भुत महिमा है। वह सभी प्रकारसे पूज्य है। समस्त वेद शास्त्र पुराण, रामायण भागवत महाभारत आदि गोमाताकी महिमासे भरे पडे हैं। गोमाताकी रक्षा और सेवासे बढकर कोई दूसरा महान् पुण्य नहीं है। हिदुओको हमारी आगे कथित बातोपर अवश्य ही ध्यान देना चाहिये ओर इन बातोका मनोयोगसे पालन करना चाहिये—

१-गोमाताको कभी भूलकर भी भैंस, बकरी आदि अन्य पशुओकी भाँति साधारण पशु नहीं मानना चाहिये। वह सामान्य पशु नहीं है। उसके शरीरम ३३ करोड देवी-देवताओका वास है। गोमाता परब्रह्म श्रीकृष्णकी परमाराध्या है और गोमाता भवसागरसे पार लगानेवाली साक्षात् देवी है, यह मानना चाहिये।

२-हमे अपने स्थानपर गोमाताको रखना चाहिये और उसकी तन, मन, धनसे सेवा करनी चाहिय।

३-प्रात काल उठते ही श्रीभगवत्स्मरण करनेके पश्चात् यदि सबसे पहले गोमाताके दर्शन करनेको मिल जाय तो इसे अपना परम सौभाग्य मानना चाहिये। गोमाताका प्रात -काल नित्य दर्शन करना चाहिये।

४-गोमाताको देखते ही बडी श्रद्धा-भक्तिके साथ प्रणाम करना चाहिये।

५-यदि रास्तेमे जाते समय कहीं गोमाता आती हुई दृष्टिम पड जाय तो उसे अपने दाहिनेसे जाने देना चाहिये।

६-जहाँतक हो सके गोमाताका ही दूध पीना और गोघृतका प्रयोग करना चाहिये। विदशोसे आये डिब्बाका दूध कभी नहीं पीना चाहिये। कोटोजम नामक नकली घी, जो बहुत चला है, उसमे सूअरकी चर्बीका प्रयोग होता है। उसे भूलकर भी कभी प्रयोगमे नहीं लाना चाहिये। गायकी और सूअरकी चर्बीसे बनाया गया साबुन कदापि काममे नहीं लेना चाहिये, बडा घोर पाप लगता है।

७-गोमाताको न कभी मारना चाहिये और न कभी सताना चाहिये। उन्हे किसी भी प्रकारका कष्ट नहीं देना चाहिये, नहीं तो २१ पीढी घोर नरकमे जाती है।

८-गोमाताकी ओर कभी भूलकर भी न तो पैर करके बैठना चाहिये और न कभी पैर करके सोना चाहिये। गोमातासे पैरका स्पर्श कभी नहीं होना चाहिये और गोमाताके ऊपर कभी थूकना नहीं चाहिये, इससे बडा पाप लगता है।

९-गोमाताको घरपर रखकर कभी भूखी-प्यासी नहीं रखना चाहिये तथा उसे गर्मीकी धूपम नहीं बाँधना चाहिये। जाडेके दिनामे उसे सर्दीमे नहीं बाँधना चाहिये। जा गायको भूखी रखता है और जो गायको प्यासी रखता है और

गायको धूपसे तथा सर्दीसे नहीं बचाता और गर्मी-सर्दीसे रक्षा नहीं करता, उसका कभी श्रेय नहीं होता है। गायको पूरा भरपेट खिलाना चाहिये और स्वच्छ पानी पिलाना चाहिये। गायकी खूब सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिये और खूब प्रसन्न रखना चाहिये। गाय लोकमाता हैं।

१०-नित्यप्रति भोजन बनाते समय सबसे पहले गायके लिये रोटी बनानी चाहिये। गोग्रास निकालना चाहिये और गायको नित्यप्रति रोटी खिलानी चाहिये। गोग्रासका बडा महत्त्व है।

११-गौआके लिये चरणि बनानी चाहिये और उसमे नित्यप्रति पवित्र ताजा ठडा जल भरना चाहिये, जिसे पीकर गाय-बैल प्रसन्न हो और तुम्हारी २१ पीढी तर जाय। यह हमारा-तुम्हारा कर्तव्य है।

१२-अनाथ गायोके लिये अपनी ओरसे हरी-हरी घासकी गठिया मोल लेकर डाल देनी चाहिये, जिससे गाये पेट भरकर खायँ और सुखकी साँस ले।

१३-भूलकर भी कभी अपनी गाय गोभक्षकोको नहीं बेचनी चाहिये। गायोको यवनोके हाथ बेचना पाप मानना चाहिये। उनकी रक्षा और पोषणका ध्यान उस समय भी रखना चाहिये।

१४-गाय उसी ब्राह्मणको दान देना चाहिये जो वास्तवमे गायको पाल और गायकी रक्षा-सेवा करे। यवनाको और कमाईको न बेचे। अनधिकारीको गायका दान देना घोर पाप करना है।

१५-गायको कभी भूलकर भी अपनी जूठी वस्तु नहीं खिलानी-पिलानी चाहिये। गाय माता साक्षात् जगदम्बा हैं। इन्हे जूठी वस्तु खिला-पिलाकर भला कौन सुखी रह सकता है?

१६-धर्मप्राण भारतकी पूज्या गायोको कृत्रिम गर्भाधान नहीं कराना चाहिये, यह महान् घोर पाप है और अक्षम्य अपराध है। विदेशी साँड जो वास्तवमे साँड नहीं होते और जो गाय-भैंसे आदिको मिलाकर वर्णसकर जानवर होते हैं उन वर्णसकरोके वीर्यको विदेशोसे मँगाकर और उस वीर्यको मुर्गीके अडेके साथ गायके गर्भाशयमे चढाना तथा उस घोर पापको नस्ल-सुधार बताना घोर पाप करना है और अपनी इक्कीस पीढियाको घोर नरकामे ढकेलना है। भारतीय गायाकी नस्लके सुधारके नामपर उनका नस्ल-सहार करना है। इस घार पापसे बचना चाहिये।

१७-नित्यप्रति गायके परम पवित्र गोबरसे रसोईघरको लीपना और पूजाके स्थानको भी गोमाताके गोबरसे लीपकर शुद्ध करना चाहिये।

१८-गायके दूध, गायके घी, गायका दही, गायके गोबर और गोमूत्र—इन पाँचाके द्वारा तैयार किये गये पञ्चगव्यके द्वारा मनुष्योके अस्थिगत पाप भी दूर हो जाते हैं। इसलिये समय-समयपर पञ्चगव्यका सेवन करते रहना चाहिये। गायक गाबरमे लक्ष्मीजीका, गोमूत्रमे गङ्गाजीका वास है। इसके अतिरिक्त इनका दैनिक जीवनमे प्रयोग करनेसे पापाका नाश और गोमूत्रके ओषधरूपमे सेवनसे रोगाणु नष्ट होते हैं।

१९-जिस देशमे गोमाताके रक्तका एक भी बिन्दु गिरता है, उस देशमे किये गये याग, यज्ञ, जप, तप, भजन-पूजन, दान-पुण्य आदि सभी शुभ कर्म निष्फल हो जाते हैं और सब धर्म-कर्म भी व्यर्थ हो जाते हैं। आज इस धर्मप्राण भारत देशमे नित्यप्रति हजारो गौएँ काटी जाती हैं, इससे बढकर भला घोर पापकी पराकाष्ठा और क्या होगी? धर्मप्राण भारतसे यदि गोहत्याका काला कलक नहीं मिटाया गया तो फिर भारतका स्वतन्त्र होना किस कामका? यदि भारत वास्तवमे स्वतन्त्र हो गया तो फिर स्वतन्त्र भारतमे यह गोहत्या क्यो? इस स्वतन्त्रताका राग अलापना कोरा धोखा देना है और कुछ नहीं है।

२०-यदि तुम नित्यप्रति गोमाताकी पूजा-आरती, परिक्रमा किया करो तो यह बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है। पर यदि तुम नित्यप्रति ऐसा न कर सको तो वर्षमे एक बार गोपाष्टमीके दिन तो कम-से-कम अवश्य ही तुम्हे व्रत रखकर गोमाताकी श्रद्धा-प्रेमसे पूजा करनी ही चाहिये और उस दिन गामाताकी आरती परिक्रमा आदि करनी चाहिये एव गोमाताको मिष्टान्नादि खिलाना चाहिये।

२१-गाय यदि बीमार हो लँगडी-लूली हो गयी हो, अपाहिज हो गयी हो तो उसकी तन-मन-धनसे सदा सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिये और उसको ओषधि देनी चाहिये तथा

उसकी देख-भाल तत्परतासे करनी चाहिय।

२२-गोरक्षार्थ यदि प्राण भी दे दने पडे तो सहर्ष द देनेसे निश्चित रूपसे श्रीगोलोकधामकी प्राप्ति होती है, इसम तनिक भी सदेह नहीं करना चाहिये।

२३-गामाता यदि किसी खड्डम गिर गयी हो, किसी कूएँम गिर गयी हो अथवा किसी दलदलम फँस गयी हो तो सब काम छोडकर सबसे पहले गामाताको निकालनेका और बचानेका प्राणपणसे प्रयत्न करना चाहिये। यह सबसे बडा योग हे, यज्ञ हे, जप-तप है, पूजा-पाठ है तथा दान-पुण्य है, इसे स्मरण रखना चाहिये।

२४-जा गोमाताके बछडाका—बैलाको हलामे जोतकर उन्ह बुरी तरहसे मारते-पीटते है, सताते हैं, काँटी चुभात हैं, गाडीमे जोतकर उनके ऊपर उनकी सामर्थ्यसे वाहर बोझा लादते हैं उन्ह घोर नरककी प्राप्ति होती ह ओर उनके किये हुए दान-पुण्य सब निष्फल हो जाते ह। ऐसा कभी नही करना चाहिय।

२५-जो जल पीती आर घास खाती गायको हटात हैं, वे पापके भागी बनत हैं। गायको कभी भूलकर भी यदि वह जल पी रही हो अथवा घास खा रही हो तो नहीं हटाना चाहिये।

२६-यदि तीर्थयात्रा करनेकी इच्छा हो ओर मन करता हो परतु शरीरम बल न हानेके कारण और पासम धन न होनेके कारण असमर्थता हो तो चिन्तित होनेकी आवश्यकता नही है। पूज्या गोमाताके दर्शन करो, गोमाताकी पूजा करो और सर्वतीर्थमयी गोमाताका परिक्रमा करो। गो-माताको मधुर पक्वान्न, गुड या मीठी रोटी खिलाओ, इस तरह सब प्रकारसे उसकी सेवा करो। बस घर बेठे तेतीस करोड देवी-देवताओका पूजन हो गया, कारण कि गोमातामे समस्त देवताओका निवास है। इसलिये तुम्हे घर बैठे ही समस्त तीर्थोकी यात्राका सुफल प्राप्त हो जायगा। यह बडा ही सरल और सुलभ साधन है, इसे करनेसे न चूको।

२७-जो लोग गोरक्षाके नामपर, गोशालाओके नामपर रुपये-पैसे इकट्ठा करते है और उन रुपयोको गोरक्षामे न लगाकर स्वय ही खा जाते हैं, उनसे बढकर पापी और दूसरा कौन होगा। इससे बचना चाहिये। गोमाताके निमित्त आये हुए पैसोमसे एक पाई भी कभी भूलसे भी अपने काममे मत लगाओ और जितना बने अपनी ओरसे गोहितमे तन-मन-धन लगाते रहो। पर गौके हकका द्रव्य और स्वत्व कभी भूलकर भी मत लो। इसीमे भलाई है। गोमाताके नामपर पैसा खानेवालोको नरकका कीडा बनना पडता है।

तात्पर्य यह है कि भारतम रहनेवाले प्रत्येक भारतीय और हिंदूमात्रका गोमाताकी सवा करनेमे ही सब प्रकारसे श्रेय और कल्याण हे।

गोविंदकी गैया

आठो जाम सेवाम दिलीप-से महीप रहे,
पायो पुचकार-प्यार कुँवर कन्हैयाको।
दूध-घृत-अमृत सा पोषत हमारो तनु,
जाको साँड बन्यो डाँड़ भारतकी नैयाको॥
गो-धन रखैयाहीका साँचा धनवान जानो,
नीको सनमानो धेनु-धनके चरैयाको।
गौर करो गायकी गुहारपर दौर परो,
कष्ट हरो भैया! भारी गोविदकी गैयाको॥

(एक स्वान्त सुखाय)

संस्कृतिकी दृष्टिसे गौका महत्त्व

(ब्रह्मलीन योगिराज श्रीदेवराहा बाबाजी महाराजकी अमृत-वाणी)

भारतीय संस्कृतिकी दृष्टिसे गौका महत्त्व तो गायत्री और गङ्गासे भी बढकर है। गायत्रीकी साधनामे कठिन तपस्या अपेक्षित है। गङ्गासेवनके लिये भी कुछ त्याग करना ही पडता है, परतु गौका लाभ तो घर बैठे ही मिल जाता है। दु खकी बात यह है कि आज गौको साधारण पशु समझकर उसकी उपेक्षा की जा रही है और लोग उसका महत्त्व नहीं समझ पा रहे हैं। यदि वाक् गायत्री है, प्राण गङ्गा है तो मन गौ है। मनकी शुद्धिके बिना न तो कोई साधना हो सकती है और न भौतिक उपलब्धिका सुख ही प्राप्त हो सकता है। मनुष्यकी सम्पूर्ण क्रियाओका मूल मन है और गौ मनकी शुद्धिका मूल हेतु है। मानव-जीवनसे पशु-जगत्का यों भी घनिष्ठ सम्बन्ध है फिर दिव्य पशु तो मानव-जीवनकी आधारशिला है। वेदमे सामान्य और दिव्य पशुओका पर्याप्त विवेचन हुआ है। गौ और गौकी सतान दोनो ही दिव्य पशु हैं।

ऋग्वेदमे गौको वृषभ कहा गया है। वृषभ गौका ही पुँल्लिङ्ग-रूप है। वेदमे सबसे अधिक वर्णन गौका हुआ है। जिस प्रकार गायत्री और गङ्गा प्रतीक और स्थूल दोनो ही रूपोमे विश्व-विज्ञान और मानव-जीवनका प्रतिनिधित्व करती हैं उसी प्रकार गौका भी महत्त्व है। उषाकी रश्मियोको गौके ही रूपमे चित्रित किया गया है। मेघका भी गौके रूपमे मूर्तीकरण हुआ है। मेघ-रूप गौसे ही विद्युत्-रूप बछडेका जन्म होता है। बडे-बडे सुन्दर रूपका और उपमानासे वेदमे गौकी महिमा गायी गयी है। अथर्ववेदमे लिखा है—'विश्वरूपा धेनु कामदुघा मेऽस्तु' (४। ३४। ८)। भारतीय सस्कृति कर्म-प्रधान है। यज्ञ भी कर्मका ही एक रूप है। जिस प्रकार यज्ञचक्र गौके बिना सम्भव नहीं उसी प्रकार कर्मचक्रको भी सुन्दर सुखद और अनुकूल बनानेके लिये गौकी आवश्यकता है। गौके पाँचो गव्योका उपयोग जिस प्रकार यज्ञमे होता है, उसी प्रकार मानव-जीवनमे भी पञ्चगव्यका बहुत उपयोग है। वेदमे गौकी इतनी महिमा है कि देवताओंकी माता अदितिको 'धेनु' कहा गया है और देवताओको गोजात बताया गया है। यत्र-तत्र गौके दूध और घीकी आहुतिको 'इडा' कहा गया है। वाजसनेयी सहितामे गौको चित्, मन, धी तथा दक्षिणा आदि अनेक नामोसे अभिहित किया गया है और उसे हर प्रकारसे पूज्य माना गया है—

चिदसि मनासि धीरसि दक्षिणासि क्षत्रियासि यज्ञियास्यदितिरस्युभयत शीर्ष्णी। सा न सुप्राची सुप्रतीच्येधि मित्रस्त्वा यदि बध्नीता पूषाध्वनस्पात्विन्द्रायाध्यक्षाय॥ अनु त्वा माता मन्यतामनु पिताऽनु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्य । सा देवि देवमच्छेहीन्द्राय सोम रुद्रस्त्वा वर्त्तयतु स्वस्ति सोमसखा पुनरेहि॥ (यजुर्वेद ४। १९-२०)

अर्थात् 'हे सोमक्रयणी गौ! तुम चिदात्मा हो, बुद्धिस्वरूपा हो, मन स्वरूपा हो, दक्षिणारूप हो दाताकी कष्टसे रक्षा करनेवाली हो, यज्ञसम्बन्धिनी होनेसे यज्ञके योग्य हो, देवमाता अदितिस्वरूपा हो, पृथ्वी और स्वर्ग दोनो ओर सिर रखनेवाली, अर्थात् दिव्य और भौम भोगोको देनेवाली हो। तुम हमारे लिये पूर्वमुखी, पश्चिममुखी होओ। सूर्य दक्षिण पादसे तुमको बाँधे। पूषा देवता यज्ञके स्वामी इन्द्र देवताकी प्रसन्नताके लिये मार्गमे तुम्हारी रक्षा करे। हे वाणीरूपी गौ! सोम लानेमे प्रवृत्त तुमको तुम्हारी पृथ्वी माता आज्ञा दे, स्वर्ग पिता आज्ञा दे सहोदर भाई ईश आज्ञा दे एक यूथ (समूह) मे प्रकट होनेवाला आत्मप्रतिबिम्ब सखा आज्ञा दे। हे दिव्यगुणयुक्त सोमक्रयणि! तुम इन्द्रके लिये सोमलता लानेको जाओ। रुद्र देवता तुमको पुन हमारी तरफ लौटावे, सोमको लेकर तुम क्षेमपूर्वक फिर हमारे पास आ जाओ। (इन मन्त्राद्वारा वाणीरूपी गौकी स्तुति की गयी है।)

अथर्ववेदमें तो 'रूपायाघ्न्ये ते नम ' कहकर गौका देववत् पूजाका विधान है। ऋग्वेदमे उस स्थलको भी परम पवित्र माना गया है जहाँ गाय निवास करती है। सभी प्रमुख स्मृतियो और पुराणोमे गौकी महिमाका गान है। यह सब प्रशस्ति किसी कारण-विशेषसे की गयी है और इसमे कारण-विशेष यही था कि मानव-जीवनमे गौसे बढकर कोई दूसरा पदार्थ नहीं है। गौकी महिमाका सबसे अधिक वर्णन महाभारतके अनुशासनपर्वमे हुआ है। श्रुतिको उद्धृत करते हुए भीष्म कहते हैं—

गौर्मे माता वृषभ पिता मे
दिव शर्म जगती मे प्रतिष्ठा।
(महाभा० अनु० ७६। ७)

ऊर्जस्विन्य ऊर्जमेधाश्च यज्ञे
गर्भोऽमृतस्य जगतोऽस्य प्रतिष्ठा।
क्षिते रोह प्रवह शश्वदेव
प्राजापत्या सर्वमित्यर्थवाद ॥
(महाभा० अनु० ६। १०)

गायत्री और गङ्गाकी भाँति गोका सम्बन्ध सूर्य और चन्द्रमासे है—इसलिये सौर्य और सौम्य विशेषण गौके लिये प्रयुक्त हुए हैं तथा उशीनरसे लेकर चक्रवर्ती दिलीपतकके गो-प्रेमका वर्णन पुराणो एव महाभारतमे हुआ है। वेदम सूर्यकी एक प्रमुख किरणका नाम कपिला है। इसलिये महाभारतमे कपिला गौकी बहुत प्रशसा की गयी है। यज्ञमे जिस सोमकी चर्चा है वह कपिलासे ही प्राप्त होता है—'यज्ञैराप्यायते साम स च गोषु प्रतिष्ठित ।' कपिला गौकी उत्पत्ति और स्वरूपका विवेचन महाभारतमे हुआ है। महाभारतकार कहते हैं—

गाव प्रतिष्ठा भूताना गाव स्वस्त्ययन महत्॥
गावो भूत च भव्य च गाव पुष्टि सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथा मूल गोषु दत्त न नश्यति॥
अन्न हि परम गावो देवाना परम हवि ।
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्य प्रतिष्ठितौ॥
गावो यज्ञस्य हि फल गोषु यज्ञा प्रतिष्ठिता ।
(महाभा० अनु० ७८। ५—८)

दूध, घी और दहीके अतिरिक्त गौका मूत्र और गोबर भी इतने उपयोगी माने गये हैं कि महाभारतम स्पष्ट कहा गया है कि 'गवा मूत्रपुरीषस्य नोद्विजेत कदाचन।' फिर आगे लिखा है—'गोमयेन सदा स्नायाद् गोकरीषे च सविशेत।' धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारो पुरुषार्थोकी सिद्धि गौसे सम्भव है—

गावो महार्था पुण्याश्च तारयन्ति च मानवान्।
धारयन्ति प्रजाश्चेमा हविषा पयसा तथा॥
गाश्च शुश्रूषत यश्च समन्वेति च सर्वश ।
तस्मै तुष्टा प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥

द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्य सुखप्रद ।
अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥
(महा० अनु०८१। २ ३३-३४)

गौका गोबर श्रीयुक्त होता है, इसकी बडी सुन्दर आख्या अनुशासनपर्वके ८१ वे अध्यायमे आती है। गौकी कृषिके लिये उपयोगिताका उल्लेख भी महाभारतमे है—

धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा।
एतासा तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च।
ततो यज्ञा प्रवर्तन्ते हव्य कव्य च सर्वश ॥
(अनुशा० ८३। १७-१८)

गोक सम्बन्धमे एक विशेष बात लक्ष्य करनेकी यह भी है कि पृथिवीके अर्थमे भी 'गौ' शब्दका प्रयोग अनक बार हुआ है। इसी प्रकार 'गौ' शब्दका अर्थ इन्द्रिय भी है। इसलिय गो-तत्त्वका विचार पृथिवी और इन्द्रियाके सम्बन्धसे किया जाता है। किसी इन्द्रियवान् प्राणीका जीवन-तत्त्व पित्त है—यह तथ्य प्राय सभी ओषधि-विज्ञानामे मान्य है। इसी प्रकार पृथिवीका मूलाधार तत्त्व सुवर्ण हे, जिसे वेदमे पृथिवीका पित्त बताया गया है। सुवर्ण वास्तवमे पृथिवीका अग्नितत्त्व है और पित्त प्राणिशरीरका अग्नितत्त्व है—'अग्निर्हि देवता सर्वा सुवर्णश्च तदात्मकम्।' स्वर्णके कारण ही पृथ्वी वसुमती कहलाती है। पौराणिक आख्यानक रूपम स्वर्णको गङ्गाके माध्यमसे अग्निपुत्र बताया गया है। गौक सदर्भम इस रहस्यको भलीभाँति समझा जा सकता है। विज्ञानक प्रयोगासे यह सिद्ध किया गया है कि पञ्चगव्यम जितनी पित्तकी मात्रा है—उतनी किसी दूसरे पदार्थमे उपलब्ध नहीं है। पृथिवीके कण-कणमे व्याप्त स्वर्ण सर्वसुलभ नहीं है। इसी प्रकार गाङ्गेय स्वर्ण प्राप्त करनेके लिये भी श्रम और साधना आवश्यक है। परतु साक्षात् शरीरी वसुमती गौ मातासे पित्तरूपी स्वर्ण सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। मानव-जीवनके लिय गौकी उपयोगिताका इससे बडा प्रमाण क्या हो सकता है?

अत मानवमात्रको गौकी महिमा-महत्तापर ध्यान रखते हुए उसकी प्राण-पणसे सेवा करनी चाहिये। गौ सर्वपूज्या है तथा सर्वसेव्या है। [प्रेषक—श्रीमदनशर्माजी शास्त्री]

स्वराज्य एवं गो-रक्षा

(गोलोकवासी सत पूज्यपाद श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी महाराज)

गोहत्या जहँ होहि तहाँ शुभ करम न होवे।
गोहत्यातै मनुज सकल पुन्यादिक खोवे॥
गोतन-मन्दिर माहिँ बसै सुरगन मिलि सबई।
गोमाता तन कटै भगे सुर तहँते तबई॥
गोहत्या करि जगतमहँ यश कोई नहिं पाइयो।
गोहत्या जिहि राजमहँ होवै सो मिटि जाइया॥

आज गारक्षाका प्रश्न एक आवश्यक विचारणीय प्रश्न बन गया है। आज ही नहीं, यह प्रश्न सनातन है गो हमारी दृष्टिमे पशु नहीं वह पृथ्वी माता भू दवीका प्रतीक ह। भू माताकी पूजा हम गौके ही रूपम करते हैं। भूमिपर जब-जब भी विपत्ति पडी तब-तब वह गाका रूप बनाकर भगवान्‌के निकट गयी। गा हमारे इहलोक आर परलोकके आहारकी अधिष्ठात्री देवी है। हमे इस लोकमे भोजन और परलोकम पुण्य गोमाताकी ही कृपासे प्राप्त होता है। गौ स्वय तृण खाकर दूध दती है जिससे अनेक स्वादिष्ट पौष्टिक पदार्थ बनते हैं गौआके बच्चे बल खती करके हमे खाद्यान्न देत है। इस प्रकार रोटी, दाल भात और साग तो हम गौ माताके पुत्र बछडासे ही मिलता है। और दूध, दही, घी मक्खन तथा खोयाके अनेक पदार्थ प्रत्यक्ष गौ मातास मिलते हैं। यह तो इस लोककी बात हुई। अब परलोकका सुन लीजिये।

गर्भाधान-सस्कारस लेकर दाह-सस्कारतक ऐसा एक भी मस्कार नहीं जिनमे गोदानकी आवश्यकता न पडती हा। हम हिन्दुआका विश्वास है कि मरनपर जा वैतरणी नदी पार करनी पडती है वह गौकी पूँछ पकडकर ही पार का जा सकती है। अत प्रत्येक धर्मप्राण हिन्दू मरत समय अव भी कम-स-कम एक गाका दान तो करता ही है। इस प्रकार गौ इस लाकम भी हमारा उपकार करती है और मरनेपर हम वैतरणीसे भी पार करती है। एसी गौका जो मारता है, वह अपने इहलाक तथा परलाकक समस्त सुकृता-पुण्यकर्मोका नष्ट करता है। जिस राज्यम गौका वध हाता है वह राज्य आध्यात्मिकतास दूर हटता जाता है वहाँके निवासियाका मानसिक शान्ति नहीं हाती व आध्यात्मिकतास हीन अशान्त सशयालु तथा भागी हात हैं। जो राष्ट्र गौरक्षामे प्रमाद करता है, वह इस ससारमे यश और श्रीसे हीन हो जाता है।

भारतने गौके महत्त्वको आजसे नहीं अनादि कालसे समझा है। वेदोमे, उपनिषदोमे, पुराणोम सर्वत्र गौकी ही महिमा गायी गयी है। जबतक भारतीय शासन रहा, तबतक गोवध हत्याके समान अपराध माना जाता था। जब विधर्मी विदेशी आततायी आक्रमणकारी लागाने इस देशपर आक्रमण किये, तब उन्होने हिन्दूधर्मको नष्ट करनेके अनेक उपाय किये। जैसे यहाँके धार्मिक ग्रन्थाको जलवा देना, मन्दिराको तोडना बलपूर्वक लोगोका धर्म-परिवर्तन कर लेना इत्यादि। उन्होन केवल हिन्दुओकी धार्मिक भावनापर आक्रमण करनेके लिये गौका वध करना आरम्भ कर दिया। पीछे जब व यहाँ बस गय आर इसी देशक हो गये तो उनमसे अनेक राजाओने राजाज्ञा निकालकर गोवध बद कराया था, जिनम हुमायूँ, अकबर, बहादुरशाह तथा अन्य कई राजाओका नाम विशेष उल्लेखनीय है इसके अनन्तर मराठा तथा सिक्खोका राज्य हुआ, ये राजा ता केवल गो-ब्राह्मणके रक्षार्थ ही उदय हुए थे इनके राज्यम तो सर्वथा गोवध बद था ही।

अँगरेजाने हिन्दुत्वको मिटानका प्रयत्न तो किया किंतु बहुत छिपकर शनै -शनै किया। अँगरेजी राज्यमे गोवध होता था किंतु नियमित सख्याम नियमके भीतर होता था। इसे मिटानक लिये आरम्भसे ही बडे-बडे प्रयत्न किये गय। लोकमान्य तिलक, महामना मालवीयजी, महात्मा गाँधी, स्वामी हासानन्दजा आदि महानुभावान गोहत्या रोकनके बहुत प्रयत्न किये। काँग्रसके साथ 'गोरक्षा-सम्मेलन' होते थे महात्मा गाँधीजीने खिलाफतके आन्दोलनम सहयोग देते हुए कहा था कि 'मैं मुसलमानाके इस आन्दोलमे इसलिय सहयाग देता हूँ कि व मरी गौकी रक्षा कर।' उन दिनो प्राय सभा मुसलमानाके मोलवीयाने व्यवस्था दी थी कि गोवध करना इस्लाम-धर्मम आवश्यक नहीं। उन दिना सभी मुसलमान नता गारक्षाका समर्थन करत थे। काँग्रेसी नेता ता यहाँतक कहा करते थे कि विदेशी वस्त्राको इसलिये मत पहिना कि इनम गौकी चरबा लगती है। कुछ तो यहाँतक कहत थे कि अँगरजासे इसलिय असहयाग करना चाहिये

कि ये गोहत्या कराते हैं। उन दिनो काँग्रेसी नेताआकी गोभक्ति और गोरक्षाके विचारोको सुनकर सभीको पूर्ण विश्वास था कि जिस दिन स्वराज्यकी घोषणा हागी, उसी दिन गोहत्या-बदीकी भी घोषणा हा जायगी। लोग कहा भी करते थे कि गोवध-बदीकी बात अभी क्यो करते हो, हत्याकी जड तो ये अँगरेज है, जिस दिन ये अँगरेज चले जायँगे, उस दिन एक लेखनीकी नोकसे गोवध बद हो जायगा।

भगवान्ने वह दिन दिखाया, स्वराज्य हो गया अँगरेज भारतसे चले गये, हमे आशा थी अब गोवध बद हो ही जायगा। इसलिये सरकारके पास इतने तार और पत्र आये कि उनकी गणना ही नहीं हो सकी, केवल उनकी तौल की गयी। छ दिनतक पोस्ट ऑफिसमे इतने अधिक तार आये कि उन्हे लेना कठिन हो गया।

तब तो शासकोकी आँखे खुलीं उन्होने कहा—'हम गोरक्षाके लिये एक समिति बनाते हैं। तुम आन्दोलन मत करो। उस समितिमे हम गोरक्षाके समर्थकोको रखगे।' समिति बनी, उसम ६ सरकारी और ७ अ-सरकारी आदमी रखे गये। उस समितिने सुझाव दिया कि दो वर्षमे सर्वथा गोवध बद कर दिया जाय। उपयोगी पशुओका वध तो तत्काल बद हो और दो वर्षमे बूढी, टेढी, लूली, लँगडी गौओके लिये गा-सदन बन।

समिति सरकारने ही स्थापित की थी, अत उसके सुझाव माननेको सरकार बाध्य थी, इसलिये सबको विश्वास हो गया कि दो वर्षम यह गोवध-रूपी भारतके भालका कलक अवश्य ही दूर हो जायगा। सब निश्चिन्त थे, आन्दोलन करनेकी आवश्यकता ही नहीं समझी। ज्यो-ज्यो समय बीतता गया सरकारकी कूटनीति आगे आने लगी। अन्तमे सरकारने सभी प्रान्तीय सरकाराके पास एक गुप्त परिपत्र भेजा। आन्दोलनके समय भारताय सविधानमे एक धारा स्वीकार की गयी थी, जिसमे स्पष्ट स्वीकार किया गया था कि सभी प्रकारकी गौआका वध रोकना भारत सरकारकी नीति होगी। जब आन्दोलन ढीला हो गया ता सरकारने प्रान्तीय सरकाराको आदेश दिया कि उस धाराका अर्थ उपयागी गौके वधाको रोकनेसे है अत पूर्ण गोवध बद न किया जाय। जहाँ बद कर दिया हो वहाँ उसपर पुन विचार हो। उससे स्पष्ट हो गया कि सरकार गौओको काटनेके पक्षमे है। ऐसा भी मत व्यक्त किया गया कि १०० मेसे ६० दुबली गौएँ अनुपयोगी हैं। अनुपयोगीका अर्थ कम दूध देनेवाली, पतली, लूली, लँगडी, बूढी, छोटी और न जाने क्या?

हमारे पश्चिमी सभ्यतामे पले हुए नेताओका सुझाव था कि लोगाके खानेकी आदतोमे परिवर्तन करके धार्मिक क्रान्ति करके फालतू गोवशको कटवा दिया जाय। उनके मासके उपयोगसे अन्नकी बचत होगी, उनके चर्म, हड्डी, आँते, सींग आदिको बेचकर विदेशी डालर कमाये जायँ।

इन सब बातोको सुनकर हमारी आँखे खुलीं कि सरकार गोवध बद न करानेके लिये कटिबद्ध है।

आज स्वराज्यको हुए इतना समय हो गया। गोवधको रोकना तो दूर रहा, उत्तरोत्तर बढता ही गया। बबई सरकार तो सबसे अधिक बढ गयी। उसने कसाईखानोकी उन्नति कैसे हो, इसके लिये एक समिति तक बना डाली।

सरकारको गोवध-बदीके नामसे चिढ है। इसका कहना है, गोरक्षा न कहकर गोसवर्धन कहो। अर्थात् गौओका पालन करो, उनका दूध बढाओ उनकी जाति सुधारा, वश-वृद्धि करो, अनुपयोगी गौओको कटा दो। अर्थात् जो करना हो सब तुम्ही करो, सरकार तो गौ काटनेका ही काम करगी। गौओमे उपयोगी-अनुपयोगीका भेद करके लोगाम भाँति-भाँतिके भ्रम फैलाये जाते हैं। लागोको उलटी-सीधी बाते बताकर पथ-भ्रष्ट किया जाता है, अनेक शकाएँ उठाकर गोवधका अप्रत्यक्ष रीतिसे समर्थन किया जाता है। यहाँपर हमे उन्हीं सब शकाओका समाधान करना है—

१-पहली बात तो यह कही जाती है कि गोवध-बदीके लिये 'नियम' बनानेकी क्या आवश्यकता है? कसाइयोको गौएँ तो हिन्दू ही बेचते हैं। हिन्दू कसाइयोको गौएँ देना बद कर द तो अपने-आप गोहत्या बद हो जायगी। लोगोको समझाआ कि घर-घर गौ रखे, कसाइयोके हाथ गौ न बेच।

हम कहते हैं—यदि समझानेसे ही माननेवाले हो तो आप एक-एक उपदेशक रख दे। लोगोको शिक्षा दे, कोई लडाई न कर, चोरी न करे, नियम-भङ्ग न कर सबका भाग दे दे। फिर फौज, पुलिस, न्यायालय—इन सबको समाप्त कर देना चाहिये। नियम तो उन्हीं लोगोके लिये होता है, जो उस नियमके भयसे अपराध न कर। जब

चोरी, जारी, लडाई सबके लिये नियम है ता गो-हत्या न करनेका नियम क्यो न हो?

२-कुछ लोग कहते हैं गौ ता पशु है, उसको मारनेपर दण्डकी क्या आवश्यकता?

—हम ता गौको पशु नहीं मानते हैं। हम तो गौको माता कहते हैं। भारतीय सस्कृतिम गोको देवता माना गया है। हम लोग प्रतीक-उपासक है। जैसे सभी जानते हैं—मन्दिरोकी प्रतिमाएँ पाषाणकी होती हैं किंतु हम उनम देवत्वकी भावना करते हैं। भारतीय दण्ड-विधानम एक नियम है जो मूर्तिको कोई दूसरे पाषाणसे तोड देता है, तो उसे दण्ड इसीलिये दिया जाता है कि उसने मूर्ति-पूजाकी भावनाको ठेस पहुँचायी। जब पाषाणकी मूर्तिको न तोडनेका नियम है तो जिस गौमे हम तैंतीस कोटि देवताआका वास *मानते हैं, उसे जो छुरीसे काटकर हमारी भावनाआपर* आघात करता है तो उसे दण्ड क्या न दिया जाय? उनके लिये नियम-कानून क्या न बनाया जाय?

३-कुछ लोग कहते हैं—हमारे घरकी गौ है, हम उसे काटते है, इसमे दूसरोका क्या है, इसके लिये कानून *बनानेकी क्या आवश्यकता?* हम कहते हैं माताके पेटमे उसीका बच्चा है। उसे वह पैदा हाते ही मार देती है तो उसे दण्ड क्या दिया जाता है? हम स्वतन्त्र हे आत्महत्या करनेके लिये, किंतु जो आत्महत्या करता हे या करनेका प्रयत्न करता है तो उसे दण्ड क्यो दिया जाता है? जब हम स्त्री, पुत्र, भाई बन्धु तथा अपने-आपकी हत्या करनेमे स्वतन्त्र नहीं, तो गो जो हमारी सदासे पूजनीय है उसके मारनेमे क्यो स्वतन्त्र हो सकते हैं? तब इनके वधपर प्रतिबन्ध होना चाहिय।

४-कुछ लाग कहत हे, ये सब भावुकताकी बाते हैं, तर्कसे ये बात सिद्ध नहीं होतीं। पशुने जबतक दूध दिया कामका रहा बच्चा पाला-पोसा तबतक तो ठीक है किंतु जब अनुपयागी हुआ उसे मारकर उसकी हड्डी चर्म, आँत आदिका उपयोग करो।

हम कहत हैं कि भावनाके बिना तो कोई काम होता नहीं। राष्ट्रिय ध्वजम भावनाक अतिरिक्त ओर क्या है! भावना निकाल देनेपर वस्त्रका टुकडा मात्र है। महापुरुषाकी समाधियापर पुष्प क्या चढात हैं। मन्दिरोम भावना ही तो है अपने स्वजनाको भस्मको इतना व्यय करके त्रिवेणीम ले जाते हैं, इसम भावना ही तो है। भावनाके बिना मानवता नहीं, गौके प्रति हमारी भावना ही है। वह भावना सौ दो सौ *या हजारा-लाखाकी नहीं, अपितु करोडों-करोड* हिन्दुआकी भावना है, प्रजातन्त्रीय सरकारका इतने लोगोकी भावनाकी रक्षा करनी ही पडेगी।

५-कुछ लोग कहत हैं कि यदि बूढी, ठढी, गौएँ काटी न भी जायँ तो वे मारी-मारी फिरेगी, हरे-भरे अन्नके खेताका खा जायँगी, अन्न और चारेको बरबाद करगी अत ऐसी गौकी रक्षाका आग्रह व्यर्थ है।

हम कहते हैं—यह लोगाका भ्रम है। जहाँ भी नियमसे गोवध बद है, वहाँ ऐसी कोई समस्या नहीं, अत यह कल्पना निर्मूल है। जो किसान पशु रखता है, वह दो बूढे भी रख सकता है। यदि ऐसे कुछ पशु हो भी तो उनका पालन करना *सरकारका कर्तव्य है। सरकार उसके* लिये गोसदन बनवाये।

६-कुछ लोग कहते हैं—पहले *अनुपयोगी पशुआके* लिये गोसदन बनवाओ गोचरभूमि छुडवाओ, जब उनका प्रबन्ध हो जाय तभी कानून बनानेकी बात करो, इसके पहले करोगे तो अनुपयोगी पशु कहाँ जायँगे।

हम कहते हैं—गौ तो कभी अनुपयोगी होती ही नहीं। वह दूध और बच्चे न भी दे, तो उसक गोबर-मूत्रस ही इतनी आय हो सकती हे कि उतना चारा वह खा भी नहीं सकती। पहले प्रबन्ध करके गोवध-बदीका नियम बनाव तो कभी हो ही नहीं सकता 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी'। अँगरज भी ता यही कहते थे कि पहले स्वराज्यकी योग्यता प्राप्त कर लो तब स्वराज्य माँगा। यदि योग्यताकी कसौटी उन्हींपर छाड दी जाती तब तो भारत कभी स्वतन्त्र हाता ही नहीं। पहले गावध-बदीका नियम बनाओ फिर जो-जो असुविधाएँ आवे उनके निवारणका प्रयत्न करो।

७-कुछ लोग कहत हैं—'गोआको इतना उपयोगी बना लो कि उन्ह काटनेका साहस ही न हो। विदेशोंम गौ मन-मन भर दूध देती हैं। ऐसी गौएँ यहाँ हो जायँ ता उन्हे कौन काटेगा?'

हम विदेशी लोगोकी भाँति गौका पालन नहीं करते। दूसरे देशाम गौ केवल दूधके लिये पाली जाती है। उसके बछडे तो खानेके ही कामम आते हैं। खती वहाँ घोडासे या ट्रैक्टर आदि अन्य साधनासे हाती है। *किंतु हमारे*

पूर्वजोने एक गौसे ही दोनो काम ले लिये। गौका दूध पीओ, उसके बच्चे बैलसे खेती करके अन्न उपजाओ। विदेशोमे बछडोको, बूढी गौओको तथा कम दूध देनेवालियोको मारकर खा जाते हैं। केवल दूधके ही लिये जो गौ पाली जाती है उसके बछडे खेतीके सर्वथा अनुपयोगी होते हैं। हमे तो गौसे दूध भी लेना है, उसके बछडोसे खेती भी करनी है, अपनी भावनाकी रक्षा भी करनी है। यह तभी सम्भव होगा जब गोवध-बदीका राजनियम बन जाय। रही उपयोगी-अनुपयोगीकी बात? सो कसाईको सबसे अधिक आय हृष्ट-पुष्ट युवती गौके वधसे होता है, हरियाने आदिसे अच्छी-से-अच्छी दूध देनेवाली गौको कलकत्ते ले जाते हैं। जबतक वह दूध देती है, तबतक ग्वाला उसे रखता है। जिस दिन दूध देना बद करती हे उसी दिन उस निकालनेकी चिन्ता करता है, कलकत्ते-जैसे बडे नगरमे ऐसी दूध न देनेवाली गौको रखनेका न स्थान है, न ग्वाला वर्षभर उसे खिलाकर उसके अगले ब्यानतक प्रतीक्षा कर सकता है। कसाई उसके यहाँ आता है, एक दूधकी गौ देकर दो बिना दूधकी गौ उससे ले जाता हे। इसलिये जबतक नियम, कानून नहीं बनता, तबतक न गोसवर्धन हो सकता है, न गोवशकी वृद्धि हो सकती है, न जाति-सुधार तथा दुग्धोन्नति हो सकती है।

८-कुछ लाग कहते हैं—यदि गौआका वध बद कर दिया गया तो चर्मका अभाव हो जायगा।

यह विचार करनेकी बात है, गौ तो एक ही बार मरेगी एक बार ही चर्म देगी, उसे छूरीसे काटकर चर्म ले लो या अपनी मौतस मरनेके अनन्तर ले लो। मरे हुए पशुआके चर्मसे ही सब काम चलते थे और उन्हींके जूते आदि सब व्यवहारम लाते थे। जितनी गौएँ हैं एक दिन सब मरेगी उनके चर्म तुम्ह मिलेगे ही।

इसपर कुछ लोग कहते हैं कि काटे हुए पशुका चर्म कोमल होता हे मरे हुए पशुका अत्यन्त कठोर होता है, उसके कोमल जूते बैग आदि न बन सकेगे।

हमारा कहना है कि जिस विज्ञानने अणुबम-जैसी वस्तुका आविष्कार कर लिया, क्या वह ऐसी कोई ओषधिका आविष्कार नहीं कर सकता जिससे मृतका चर्म कोमल हो जाय मैंने सुना है जर्मनीम ऐसे चर्मको मुलायम बनानेके लिये कार्यालय हैं। हम कहते हैं न हो कोमल चर्म, कठिनतासे ही काम चलाया जाय, या कागद-गत्ता अथवा प्लास्टिककी वस्तुओसे काम चले, किंतु चर्म कोमल हो, इसलिये गौ माताके गलेपर छुरी चले यह उचित नहीं।

९-कुछ लोग कहते हैं जो गौएँ इधर-उधर फिरती रहती हैं अन्न और बाजारके सामानको बिगाडती हैं, जहाँ जाती हैं वहाँ मार खाती हैं, भूखो मर जाती हैं, इससे अच्छा यही है कि एक दिनमें उन्हे काटकर उनका भी दु ख दूर कर दिया जाय और उनके कोमल चर्म, मास हड्डी, नस, आँत, सींग आदिसे आय बढायी जाय।

यदि गोवधपर प्रतिबन्ध लग जाय और स्थान-स्थानपर गोसदन खुल जायँ तो ऐसी गौएँ कहीं मिलेगी ही नहीं। मान लो ऐसी गौएँ भी हा और वे भूखो मरती भी हो, तो मैं यह अच्छा समझूँगा कि वे भूखो अपनी मौतसे तो भले ही मरे किंतु वे कसाईकी छुरीसे न कटे।

१०-कुछ लोग कहते हैं—केवल गोवध न करनेका नियम बनानेसे ही काम न चलेगा। यदि ऐसी ही दशा रही तो फिर कसाईखानेमे तो गौ कटेगी नहीं, घरोमे लुक-छिपकर और भी अधिक गोवध होगा, इसलिये कानून बनाना व्यर्थ है।

हम कहते हैं, लोग लुक-छिपकर चोरी करते हैं। लोगाको ठगते हैं। फिर चोरी करनेपर दण्ड देनेके नियम क्या बने हे? लुक-छिपकर जो गोवध करे उसे कडे-से-कडा दण्ड देना सरकारका धर्म हे। जो सरकार इतनी निर्बल हो कि अपने नियमका दृढतासे पालन नहीं करा सकती उसे शासन करनेका क्या अधिकार है? फिर नियममे अपवाद हा ही जाता है। बिना नियम गोवध बद हो ही नहीं सकता।

११-कुछ लोग कहते है—कुछ जातियामे गोवध करना धर्म है। हमारी सरकार धर्म-निरपेक्ष है, वह दूसरेके धर्ममे कैसे हस्तक्षेप कर सकती है। ऐसा नियम बनानेसे उसकी अन्ताराष्ट्रिय ख्याति नष्ट होगी। इसीलिये गोवध-बदीका नियम बनाना सरकारके नीतिके विरुद्ध है।

जहाँतक मुसलमान और ईसाइयाके धर्मग्रन्थोमे हमने सुना है किसीके यहाँ गोवध करना धर्म नहीं, आवश्यक नहीं। आसाम प्रान्तकी कुछ जातियाँ ऐसी बतायी जाती थीं, किंतु हमने आसाममे स्वय जाकर देखा वहाँ कोई भी ऐसी जाति नहीं जिसके यहाँ गोवध करना धर्म हो। इसके विरुद्ध

हिन्दुओके यहाँ गौका वध न करना धर्म है, उनके जीवन-मरणका प्रश्न है, उनकी सस्कृति तथा परस्पर रक्षाका प्रश्न है, तो ऐसी दशामे गोवध कराते रहना हिन्दुओक धर्ममे प्रत्यक्ष आघात करना है, सरकारकी धर्मनिरपेक्षताकी नीति स्वय ही नष्ट होती है। करोडों-करोड हिन्दुओकी धर्म-भावनापर आघात पहुँचाना क्या यही धर्म-निरपेक्षता है? यह तो धर्मद्वेषता है।

१२-कुछ लोग कहते है कि राज्यम बहुतसे लोग नहीं चाहते कि गावध-बदीका कानून बने तो उनके भावोके विरुद्ध कानून सरकार कैसे बनावे?

हम कहते हैं, बहुतसे लोग तो मद्यनिषेध-नियम बनानेके विरुद्ध हैं और बहुतसे लोग और भी न जाने किस-किस बातके विरुद्ध हैं फिर सरकार इनक लिये नियम क्यो बनाती ह, गोवधक पक्षमे तो बहुत ही कम लोग होंगे।

१३-कुछ लोग कहते हैं यह प्रश्न तो प्रान्तोका हे, प्रान्तीय सरकार चाहे तो अपने यहाँ नियम बना ले, केन्द्रीय सरकारका नियम बनानेकी क्या आवश्यकता हे?

प्रान्तीय सभी सरकार नियम बना लें, तब तो गोवध बद हो ही जायगा किंतु प्रान्तीय सरकाराको तो केन्द्रीय सरकार बाध्य करती रहती है, तुम सर्वथा गोवध-बदीका नियम मत बनाओ। मान लो उन्हे केन्द्रीय सरकार स्वतन्त्रता भी दे दे और उनमेसे एक-दो भी नियम न बनावे तो सब व्यर्थ हे। क्योकि जो उत्तरप्रदेशमे न कटी, बबई या मद्रासमे जाकर कट गयी। गोकी रक्षा तो इससे नहीं हुई। इसलिये जबतक केन्द्रीय सरकार नियम बनाकर सम्पूर्ण दशमे गोवध-बदीका आदेश नहीं देगी तबतक गौकी रक्षा नहीं हो सकती।

१४-कुछ लोग कहते हैं, हम गोवध-बदीका कानून बना दे तो अमरिका आदि देश जिन्हे यहाँसे बछडोका काटी हुई गौकी खाले आँते आदि भेजी जाती हैं, वे हमस अप्रसन्न हो जायँगे, फिर हम वे जा उन्नतिक नामपर सहायता देते हैं उसे बद कर देगे।

हम कहते हे कि इससे बढकर मूर्खताकी दूसरी बात कोई हो नहीं सकती, कि अपनी माताको कटाकर दूसरे देशोकी प्रसन्नता प्राप्त करे। दूसरे देशवाले चाहे कि हम सब ईसाई बन जायँ तो क्या उन्हे प्रसन्न करनेके लिये हमारी सरकार हमे ईसाई बननेका आदेश देगी? हमे अपनी ओर देखना चाहिये, अपना हित-अनहित स्वय ही अपनी दृष्टिसे सोचना चाहिये।

१५-कुछ लोग कहते हैं—मुसलमान अल्प सख्याम हैं, हमे उनकी भावनाआका आदर करना चाहिये। जिससे उन्ह दु ख न हो, ऐसा काम करना चाहिये।

आदर करते-करते ही हम आधे देशसे हाथ धो बैठे। भारतका बहुत-सा भाग हिन्दुत्वका विरोधी बन गया, अब भी हम वोटाके लिये, अल्प स्वार्थके लिये अपनी गौको कटवावे यह कितनी बुद्धिमानी होगी?

ये बाते अब तो गौण है, यथार्थ बात तो यह है कि यह हमारा विशुद्ध धार्मिक प्रश्न है, धर्मका पालन घाटा सहकर भी किया जाता है, अत गोवध बद करनेसे कितना भी घाटा हो—यद्यपि घाटा नहीं ओर लाभ भी होगा तब भी हम उसे बद करना ही पडेगा। गोवध बद करनेम चाहे जितनी अडचने हा, करोडो-करोड हिन्दुओकी धार्मिक भावनाका आदर करना ही पडेगा। जो सरकार गोवधका समर्थन करेगी, उसे प्रोत्साहन देगी वह भारतमे कभी टिक नहीं सकती। अत गोवधपर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाना चाहिये। गोवध-बदीका नियम-कानून केन्द्रीय सरकारको शीघ्र-स-शीघ्र बनाना चाहिय। यदि सरकार ऐसा न करे तो इसक विरुद्ध जनमत तैयार करके प्रबल आन्दोलन करना चाहिये।

कैसे भी हा धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक सभी दृष्टिसे गोरक्षा आवश्यक है चाहे जैसे हो, हमारे देशसे गोवध बद होना चाहिये। इसक लिये सभी भारतीय नर-नारियोका सभी प्रकारका बलिदान करना चाहिय।

भगवान् नन्दनन्दन गोपालक पादपद्मामे प्रार्थना है कि वे शीघ्र भारतसे गोवध बद करा दे। गोमाताकी जय।

गोकी रक्षा होइ जाइ सब धार चितम।
गोवध होवे बन्द होइ आनन्द जगतमे॥
गौ के हित सब त्याग कर तन मन धन देवें।
लोक और परलोक माहिं अक्षय फल लेवें॥
गोपालक गोविन्द प्रभु गैयनिकी रक्षा करो।
गोवध करिकें बन्द अब भारत माँ के दुख हरो॥

[प्रपक—डॉ० श्रीविद्याधरजा द्विवेदी]

गो-महिमा और गोरक्षाकी आवश्यकता

(ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका)

गोरक्षा हिंदूधर्मका एक प्रधान अङ्ग माना गया है। प्राय प्रत्येक हिंदू गौको माता कहकर पुकारता है और माताके समान ही उसका आदर करता है। जिस प्रकार कोई भी पुत्र अपनी माताके प्रति किये गये अत्याचारको सहन नहीं करेगा, उसी प्रकार एक आस्तिक और सच्चा हिंदू गोमाताके प्रति निर्दयताके व्यवहारको नहीं सहेगा, गोहिसाकी तो वह कल्पना भी नहीं सह सकता। गौके प्राण बचानेके लिये वह अपने प्राणोकी आहुति दे देगा, किंतु उसका बाल भी बाँका न होने देगा। मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामके पूर्वज महाराज दिलीपके चरित्रसे सभी लोग परिचित हैं। उन्होने अपने कुलगुरु महर्षि वसिष्ठकी बछिया नन्दिनीकी रक्षाके लिये सिहको अपना शरीर अर्पण कर दिया, किंतु जीते-जी उसकी हिसा न होने दी। पाण्डवशिरोमणि अर्जुनने गोरक्षाके लिये बारह वर्षोंतक वनवासकी कठोर यातना स्वीकार की।

परतु हाय! वे दिन अब चले गये। हिंदूजाति आज दुर्बल हो गयी है। हम अपनी स्वतन्त्रता, अपना पुरुषत्व, अपनी धर्मप्राणता ईश्वर और ईश्वरीय कानूनमे विश्वास, शास्त्रोके प्रति आदरबुद्धि, विचार-स्वातन्त्र्य, अपनी सस्कृति एव मर्यादाके प्रति आस्था—सब कुछ खो बैठे हैं। आज हम आपसकी फूट एव कलहके कारण छिन्न-भिन्न हो रह हैं। हम अपनी सस्कृति एव धर्मपर किये गये प्रहारो और आक्रमणोको व्यर्थ करनेके लिय सघटित नही हो सकते। हम अपनी जीवनी-शक्ति खो बैठे हैं। मूक पशुओकी भाँति दूसरोके द्वारा हाँके जा रहे हैं। राजनीतिक गुलामी ही नहीं अपितु मानसिक गुलामीके भा शिकार हो रहे हैं। आज हम सभी बातोपर पाश्चात्त्य दृष्टिकोणसे ही विचार करने लगे हैं। यही कारण है कि हमारी इस पवित्र भूमिमे प्रतिवर्ष लाखो-करोडाकी सख्यामे गाय और बैल काटे जाते हैं और हम इसके विरोधम अँगुलीतक नही उठाते। आज हम दिलीप और अर्जुनके इतिहास केवल पढते और सुनते हैं, उनसे हमारी नसोमे जोश नहीं भरता। हमारी नपुसकता सचमुच दयनीय है।

हम सरकारके मत्थे अपनी धार्मिक भावनाओको कुचलनेका दोष मँढते हैं, हम अपने मुसलमान भाइयोपर गायके प्रति निर्दयताका अभियोग लगाते हैं, किंतु अपने दोष नहीं देखते। गौओके प्रति हमारी आदरबुद्धि केवल कहनेभरके लिये रह गयी है। हम केवल वाणीसे ही उसकी पूजा करते है। हमीं तो अपनी गौओ और बैलोको कसाइयोके हाथ बेचते हैं। हमीं उनके साथ दुष्टता एव क्रूरताका बर्ताव करते हैं—उन्ह भूखो मारते हैं, उनका सारा दूध दुह लेते हैं, बछडेका हिस्सा भी छीन लेते हैं, बैलोपर बेहद बोझा लाद देते हैं, न चलनेपर उन्हे बुरी तरहसे पीटते हैं, गोचरभूमियोका सफाया करते जा रहे हैं और फिर भी अपनेको गो-रक्षक कहते हैं और विधर्मियोको गोघातक कहकर कोसते हैं। हमारी वैश्य-जातिके लिये कृषि और वाणिज्यके साथ-साथ शास्त्रोने गोरक्षाको भी प्रधान धर्म माना है परतु आज हमारे वैश्य भाइयोने गोरक्षाको अनावश्यक मानकर छोड रखा है। हमारी गोशालाओका बुरा हाल है और उनके द्रव्यका ठीक-ठीक उपयोग नहीं होता। उनमे परस्पर सहयोगका अभाव है। साराश सब कुछ विपरीत हो गया है।

दूसरी जातियाँ अपने गोधनकी वृद्धिमे बडी तेजीके साथ अग्रसर हो रही हैं। दूसरे देशोमे क्षेत्रफलके हिसाबसे गौओकी सख्या भारतकी अपेक्षा कहीं अधिक है और प्रतिमनुष्य दूधकी खपत भी अधिक है। वहाँकी गौएँ हमारी गौओकी अपेक्षा दूध भी अधिक देती है। कारण यही है कि वे गौओको भरपेट भोजन देते हैं, अधिक आरामसे रखते हैं, उनकी अधिक सँभाल करते हैं और उनके साथ अधिक प्रेम और कोमलताका बर्ताव करते हैं। अन्य देशोमे गोचरभूमियोका अनुपात भी खेतीके उपयोगमे आनेवाली भूमिकी तुलनामे कहीं अधिक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यद्यपि हम अपनेको गोपूजक और गोरक्षक कहते हैं, वस्तुत आज हम गोरक्षामे बहुत पिछडे हुए हैं। गोजातिके प्रति हमारे इस अनादर एव उपेक्षाका परिणाम भी प्रत्यक्ष ही है। अन्य देशाकी अपेक्षा हम भारतीयोकी औसत आयु बहुत ही कम है और अन्य देशोकी तुलनामें हमारे यहाँके बच्चे बहुत अधिक सख्यामे मरते हैं। यही नहीं, अन्य

लोगोकी अपेक्षा हमलोगाम जीवट भी बहुत कम है। कहना न होगा कि दूध ओर दूधसे बने हुए पदार्थोकी कमी ही हमारी इस शोचनीय अवस्थाका मुख्य हेतु है। इससे यह बात प्रत्यक्ष हो जाती है कि किसी जातिके स्वास्थ्य एव आयु-मानक साथ गाधनका कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है। अस्तु,

हमारे शास्त्र कहते हैं कि गायसे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—चारा पुरुषार्थोंकी सिद्धि होती है। दूसरे शब्दोंमे धार्मिक, आर्थिक, सासारिक एव आध्यात्मिक—सभी दृष्टियोसे गाय हमारे लिये अत्यन्त उपयोगी है। पुराणोमे लिखा है कि जगत्मे सर्वप्रथम वेद, अग्नि, गौ एव ब्राह्मणाकी सृष्टि हुई। वेदास हमे अपने कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है, वे हमारे ज्ञानके आदिस्रोत है। वे हमे देवताआको प्रसन्न करनेकी विद्या—यज्ञानुष्ठानका पाठ पढाते है। गीतामे भी कहा है—

सहयज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥
देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु व ।
परस्पर भावयन्त श्रेय परमवाप्स्यथ॥
इष्टान् भोगान् हि वा देवा दास्यन्ते यज्ञभाविता ।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव स ॥
यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषै ।
भुञ्जते ते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसभव ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञ कर्मसमुद्भव ॥
कर्म ब्रह्मोद्भव विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगत ब्रह्म नित्य यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥
एव प्रवर्तित चक्र नानुवर्तयतीह य ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघ पार्थ स जीवति॥

(३। १०—१६)

'प्रजापति ब्रह्माजीने कल्पक आदिमें यज्ञसहित प्रजाओको रचकर उनस कहा कि 'तुमलाग यज्ञके द्वारा वृद्धिको प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुमलोगाको इच्छित भोग प्रदान करनेवाला हो। तुमलोग इस यज्ञके द्वारा देवताओको उन्नत करो और वे देवता तुमलोगोको उन्नत करे। इस प्रकार नि स्वार्थभावसे एक दूसरेको उन्नत करते हुए तुमलोग परम कल्याणको प्राप्त हो जाओगे। यज्ञक द्वारा बढाये हुए देवता तुमलोगोको बिना माँगे ही इच्छित भोग निश्चय ही दते रहेंगे।' इस प्रकार 'उन देवताआक द्वारा दिये हुए भागाको जो पुरुष उनको बिना दिये स्वय भोगता है, वह चोर ही है। यज्ञसे बचे हुए अन्नको खानेवाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापोसे मुक्त हा जाते हैं आर जा पापीलाग अपना शरीर पापण करनेके लिये ही अन्न पकात है, वे तो पापको ही खाते हैं। सम्पूर्ण प्राणी अन्नसे उत्पन्न होते हैं अन्नकी उत्पत्ति वृष्टिमे होती है, वृष्टि यज्ञसे होती हे और यज्ञ विहित कर्मोसे उत्पन्न होनेवाला है। कर्मसमुदायको तू वेदसे उत्पन्न और वेदको अविनाशी परमात्मासे उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञमे प्रतिष्ठित है। हे पार्थ! जो पुरुष इस लोकमे इस प्रकार परम्परासे प्रचलित सृष्टिचक्रके अनुकूल नहीं बरतता अर्थात् अपने कर्तव्यका पालन नहीं करता, वह इन्द्रियाक द्वारा भोगोम रमण करनेवाला पापायु पुरुष व्यर्थ ही जीता है।'

ऊपरके वचनासे यह प्रकट होता है कि (१) यज्ञकी उत्पत्ति मृष्टिके प्रारम्भमे हुई और (२) यज्ञ हमारे अभ्युदय (लौकिक उन्नति) एव नि श्रेयस (परम कल्याण) दोनाका साधन है। यज्ञसे हम जो कुछ चाहे प्राप्त कर सकते हैं। लौकिक सुख-समृद्धि तथा ऐहिक एव पारलौकिक भोग हमे देवताओसे प्राप्त होते हैं। देवता भगवान्‌की ही कलाएँ—भगवान्‌की ही दिव्य चेतन विभूतियाँ हैं, जो मनुष्यो एव मनुष्योसे निम्न स्तरके जीवोकी लौकिक आवश्यकताओको पूर्ण करते हैं—हमारे लिये समयानुसार घाम चाँदनी, वर्षा आदिकी व्यवस्था करके हमारे वनस्पतिवर्गका और उनके द्वारा हमारे जीवनका पोषण करते हैं। वे ही हमे रहनेक लिये पृथ्वी, हमारी प्यास बुझानक लिये जल हमारे भोजनको पकाने तथा हमारा शीतसे त्राण करनेके लिये अग्नि साँस लेनेके लिये वायु तथा इधर-उधर घूमनेके लिये अवकाश प्रदान करत हैं। साराश वे ही इस ससारचक्रकी व्यवस्था करते है जीवाके कर्मोकी देख-रख तथा उनके अनुसार शभाशुभ फलभोगका विधान करते हैं तथा हमारे जीवन-मरणका नियमन करते हैं। इन भगवत्कलाओको प्रसन्न रखने—इनका आशीर्वाद सहानुभूति एव सद्भाव प्राप्त करनेके लिये और आदान-प्रदानके सिद्धान्तको चालू रखनेके लिये जो जगच्चक्रके परिचालनके लिये आवश्यक एव अनिवार्य है—यज्ञानुष्ठानके द्वारा इनकी आराधना करना मनुष्यमात्रका परम कर्तव्य है। जबतक भारतम यज्ञ-यागादिके द्वारा देवताआकी आराधना

होती थी, तबतक यह देश सुखी एव समृद्ध था, समयपर यथेष्ट मात्रामें वर्षा होती थी तथा बाढ भूकम्प, दुष्काल एव महामारी आदि दैवी सकटासे यह प्राय मुक्त था। जबसे यज्ञ यागादिकी प्रथा लुप्तप्राय हो गयी तभीसे यह देश अधिकाधिक दैवी प्रकोपाका शिकार होने लगा है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यज्ञसे अभ्युदय एव नि श्रेयस दोनों सिद्ध होते हैं। ससार-चक्रका परिचालन करनेवाले भगवत्कलारूप देवताओंकी प्रसन्नताद्वारा वह हमारी सुख-समृद्धिका साधन बनता है और निष्कामभावसे केवल कर्तव्यबुद्धिपूर्वक किये जानेपर वह भगवत्प्रीतिका सम्पादन कर भगवत्प्राप्ति अथवा मोक्षरूप जीवनके परम लक्ष्यकी प्राप्तिमे सहायक होता है। यही नहीं, यज्ञ-दान-तपरूप कर्मको भगवान्‌ने अवश्यकर्तव्य अनिवार्य बताया है—'यज्ञदानतप कर्म न त्याज्य कार्यमेव तत्' और यज्ञादिकी परम्पराका विच्छेद करनेवालेको पापी—अघायु कहकर उसकी गर्हणा की है। इस यज्ञचक्रको चलानेके लिये ही वेद अग्नि गौ एव ब्राह्मणाकी सृष्टि हुई है। वेदामे यज्ञानुष्ठानकी विधि बतायी गयी है—'कर्म ब्रह्मोद्भव विद्धि०' एव ब्राह्मणाके द्वारा वह विधि सम्पन्न होती है। अग्निके द्वारा आहुतियाँ देवताआको पहुँचायी जाती हैं—'अग्निमुखा हि देवा भवन्ति' और गौसे हमे देवताआको अर्पण करने योग्य हवि प्राप्त होता है। इसीलिये हमारे शास्त्रामे गौको 'हविर्दुघा' (हवि देनेवाली) कहा गया है। गोघृत देवताआका परम प्रिय हवि है और यज्ञके लिये भूमिको जोतकर तैयार करने एव गेहूँ, चावल, जौ, तिल आदि हविष्यान्न पैदा करनेके लिये गो-सतति—बैलाकी परम आवश्यकता है। यही नहीं, यज्ञभूमिको परिष्कृत एव शुद्ध करनेके लिये उसे गोमूत्रसे छिडका जाता है और गोबरसे लीपा जाता है तथा गोबरके कडोसे यज्ञाग्निको प्रज्वलित किया जाता है। यज्ञानुष्ठानके पूर्व प्रत्येक यजमानको देहशुद्धिके लिये पञ्चगव्यका प्राशन करना होता है और यह गायके दूध, गायके दही गायके घी गोमूत्र एव गायके ही गोबरसे तैयार किया जाता है—इसीलिये इसे 'पञ्चगव्य' कहते हैं। इसके अतिरिक्त गायका दूध और उससे तैयार होनेवाले पदार्थ सबके स्वादिष्ट एव पोषक आहार हैं। दूधमे पकाये हुए चावलको—जिसे आधुनिक भाषामे खीर कहते हैं—सस्कृतमे परमान्न (सर्वश्रेष्ठ भोजन) कहा गया है और घीको हमारे यहाँ सर्वश्रेष्ठ रसायन माना गया है—'आयुर्वै घृतम्।' इतना ही नहीं, घृतरहित अन्नको हमारे शास्त्राम अपवित्र कहा गया है। घी और चीनीसे युक्त खीरका भोजन ब्राह्मणाके लिये विशेष तृप्तिकारक होता है और देवताआको आहुति पहुँचानेके लिये हमारे यहाँ दो ही मार्ग माने गये हैं—अग्नि और ब्राह्मणाका मुख। बल्कि भगवान्‌ने तो कहा है कि मैं अग्निके द्वारा यज्ञमे घीसे चूती हुई आहुतियाका भक्षण करके उतना प्रसन्न नहीं होता, जितना ब्राह्मणाके मुखमे पडी हुई आहुतियासे सतुष्ट होता हूँ—

नाह तथाद्मि यजमानहविर्वितान
श्च्योतद्घृतप्लुतमदन् हुतभुड्मुखन।
यद्ब्राह्मणस्य मुखतश्चरतोऽनुघास
तुष्टस्य मय्यवहितैर्निजकर्मपाकै ॥

(श्रीमद्भा० ३। १६। ८)

तात्पर्य यह कि दोनो प्रकारसे देवताआकी तृप्तिके लिये तथा सर्वोपरि भगवत्प्रीतिके लिये भी गौकी परमोपयोगिता सिद्ध होती है।

भारत-जैसे कृषिप्रधान देशमे आर्थिक दृष्टिसे भी गायका महत्त्व स्पष्ट ही है। जिन लोगाने हमारे ग्रामीण जीवनका विशेष मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया है, उन सबने एक स्वरसे हमारे जीवनके लिये गौकी परमावश्यकता बतायी है। गोधन ही हमारा प्रधान बल है। गोधनकी उपेक्षा करके हम जीवित नहीं रह सकते। अत हमारे गोवशका सख्या एव गुणाकी दृष्टिसे जो भयानक ह्रास हो रहा है, उसका बहुत शीघ्र प्रतीकार करना चाहिये और हमारी गौओंकी दशाको सुधारने उनकी नस्लकी उन्नति करने और उनका दूध बढाने तथा इस प्रकार देशके दुग्धोत्पादनमे वृद्धि करनेका भी पूरा प्रयत्न करना चाहिये। गायो बछडो एव बैलोका वध रोकने तथा उनपर किये जानेवाले अत्याचाराको बद करनेके लिये कानून बनाने होगे और विधर्मियोको भी गौकी परमोपयोगिता बतलाकर गोजातिके प्रति उनकी सहानुभूति एव सद्भावका अर्जन करना चाहिये। जिस देशमे कभी दूध और दहीकी एक प्रकारसे नदियाँ बहती थीं, उस देशमे असली दूध मिलनेमे कठिनता हो रही है—यह कैसी विडम्बना है।

आध्यात्मिक दृष्टिसे भी गायका महत्त्व कम नहीं है। गायके दर्शन एव स्पर्शसे पवित्रता आती है, पापाका नाश

होता है, गायके शरीरमे तैंतीस करोड देवताओका निवास माना गया है। गायके खुरासे उडनेवाली धूलि भी पवित्र मानी गयी है। महाभारतमे महर्षि च्यवन राजा नहुपसे कहते हैं—

मैं इस ससारम गौआके समान दूसरा कोई धन नहीं समझता। गौआके नाम और गुणोका कीर्तन करना-सुनना, गौओका दान देना और उनका दर्शन करना—इनकी शास्त्रोमे बडी प्रशसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण पापाका दूर करके परमकल्याण देनेवाल ह। गौएँ लक्ष्मीकी जड हैं, उनमे पापका लेश भी नहीं है गौएँ ही मनुष्यको अन्न और देवताआको हविष्य देनेवाली है। स्वाहा और वषट्कार सदा गौओम ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएँ ही यज्ञका सचालन करनेवाली और उसका मुख ह। वे विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहनेपर अमृत ही दती हैं। वे अमृतका आधार होती है। ओर सारा ससार उनक सामने मस्तक झुकाता है। इस पृथ्वीपर गौएँ अपने तेज और शरीरम अग्निके समान है। वे महान् तेजकी राशि और समस्त प्राणियोको सुख दनेवाली हैं। गौआका समुदाय जहाँ निर्भयतापूर्वक बैठकर साँम लेता है उस स्थानका श्री बढ जाती हे ओर वहाँका सारा पाप नष्ट हा जाता हे। गौएँ स्वर्गकी सीढी हैं वे स्वर्गमे भी पूजी जाती हैं। गौएँ समस्त कामनाओको पूर्ण करनेवाली देवियाँ हैं, उनसे बढकर दूसरा कोई नहीं है। राजन्! यह मैंने गौका माहात्म्य बतलाया है, इसमें उनके गुणाके एक अशका दिग्दर्शन कराया गया है। गोआके सम्पूर्ण गुणाका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।*

ब्रह्माजी भी इन्द्रसे कहते हैं—

'हे वासव! गौओको यज्ञका अङ्ग आर साक्षात् यज्ञरूप बतलाया गया है। इनके बिना यज्ञ किसी तरह नहीं हो सकता। ये अपने दूध और घीसे प्रजाका पालन-पोषण करती हैं तथा इनके पुत्र (बैल) खेतीके काम आते और तरह-तरहके अन्न एव बीज पैदा करते हैं, जिनसे यज्ञ सम्पन्न होत हैं और हव्य-कव्यका भी काम चलता है, इन्हींसे दूध, दही और घी प्राप्त होत हैं। ये गौएँ बडी पवित्र होती हैं और बैल भूख-प्यासका कष्ट सहकर अनेक प्रकारके बोझ ढोते रहते हैं। इस प्रकार गोजाति अपने कर्मसे ऋषियो तथा प्रजाओंका पालन करती रहती है। उसके व्यवहारमे शठता या माया नहीं होती, वह सदा पवित्र कर्ममे लगी रहती है।'†

इस प्रकार सभी दृष्टियोसे गाय हमारे लिये बडे ही आदर और प्रेमकी वस्तु है, हमे सब प्रकारसे उसकी रक्षा एव उन्नतिके लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिये।
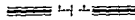
---

*गोभिस्तुल्य न पश्यामि धन किञ्चिदिहाच्युत॥
कीर्तन श्रवण दान दर्शन चापि पार्थिव। गवा प्रशस्यते वीर सर्वपापहर शिवम्॥
गावो लक्ष्म्या सदा मूल गोषु पाप्मा न विद्यते।
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्य प्रतिष्ठितौ। गावा यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखम्॥
अमृत ह्यव्यय दिव्य क्षरन्ति च वहन्ति च। अमृतायतन चैता सर्वलोकनमस्कृता॥
तेजसा वपुषा चैव गावो वह्निसमा भुवि। गावा हि सुमहत्तेज प्राणिना च सुखप्रदा॥
निविष्ट गोकुल यत्र श्वास मुञ्चति निर्भयम्। विराजयति त देश पाप चास्यापकर्षति॥
गाव स्वर्गस्य सोपान गाव स्वर्गेऽपि पूजिता। गाव कामदुहो देव्यो नान्यत् किञ्चित् पर स्मृतम्॥
इत्येतद् गोषु मे प्रोक्त माहात्म्य भरतर्षभ। गुणैकदेशवचन शक्य पारायण न तु॥
(अनुशासन० ५१। २८—३४)

† यज्ञाङ्ग कथिता गावो यज्ञ एव च वासव। एताभिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथचन॥
धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा। एतासा तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च। ततो यज्ञा प्रवर्तन्ते हव्य कव्य च सर्वश॥
पयो दधि घृत चैव पुण्याश्चैता सुराधिप। वहन्ति विविधान् भारान् क्षुत्तृष्णापरिपीडिता॥
मुनींश्च धारयन्तीह प्रजाश्चैवापि कर्मणा। वासवाकूटवाहिन्य कर्मणा सुकृतेन च॥
(अनुशासन० ८३। १७—२१)

गोरक्षा—अलौकिक वस्तु

[महात्मा गाँधीजीके विचार]

हिदुस्थानमे अनगिनत पशुधन हैं, जिनकी तरफ हमने ध्यान न देकर गुनाह किया है। गोरक्षा मुझे मनुष्यके सारे विकास-क्रमम सबसे अलौकिक वस्तु मालूम हुई है। गायका अर्थ मैं मनुष्यसे नीचकी सारी गूँगी दुनिया करता हूँ। इसम गायके बहाने इस तत्त्वके द्वारा मनुष्यको सम्पूर्ण चेतन सृष्टिके साथ आत्मीयताका अनुभव करानेका प्रयत्न है। मुझे तो यह भी स्पष्ट दीखता है कि गायको ही यह भेदभाव क्या प्रदान किया गया होगा। हिदुस्थानम गाय ही मनुष्यका सबसे अच्छा साथी, सबस बडा आधार था। यही हिदुस्थानकी एक कामधेनु थी। वह सिर्फ दूध ही नहीं दती थी, बल्कि सारी खेतीका आधारस्तम्भ भी वही थी। गाय दया-धर्मकी मूर्तिमत कविता है। इस गरीब ओर शरीफ जानवरम हम केवल दया ही उमडती देखते हैं। यह लाखो, करोडा हिदुस्थानियाको पालनवाली माता है। इस गायकी रक्षा करना ईश्वरकी सारी मूक सृष्टिकी रक्षा करना है। जिस अज्ञात ऋषि या द्रष्टाने गोपूजा चलायी उसन गायसे सिर्फ शुरुआत की, इसके सिवा और कोइ ध्येय हा नहीं सकता है। इस पशुसृष्टिकी फरियाद मूक हानेस और भी प्रभावशाली है। गारक्षा हिदू-धर्मकी दुनियाको दी हुई एक कीमती भेट है।

गोमाता जन्म देनेवाला माँसे कहीं बढकर है। माँ ता साल दा साल दूध पिलाकर हमसे फिर जीवनभर सेवाकी आशा रखती है। पर गोमाताका तो सिवा दाने और घासके काई सेवाकी आवश्यकता ही नहीं। माँकी ता हम उसकी बीमारीम सेवा करनी पडती है। परतु गामाता स्वय केवल जीवनपर्यन्त हमारी अटूट सेवा ही नहीं करती बल्कि उसके मरनेके बाद भी हम उसके चर्म, हड्डी, सींग आदिसे अनेक लाभ उठाते हैं यह सब मैं जन्मदात्री माताका दर्जा कम करनको नहीं कहता, बल्कि यह दिखानेके लिये कहता हूँ कि गोमाता हमारे लिये कितनी पूज्य है।

हमारे ढोराकी दुर्दशाके लिये अपनी गरीबीका राग हम नहीं अलाप सकत। यह हमारी निर्दय लापरवाहीके सिवा और किसी भी बातकी सूचक नहीं है। हालाँकि हमारे पिजरापोल हमारी दयावृत्तिपर खडी हुई सस्थाएँ हैं तो भी वे उस वृत्तिका अत्यन्त भद्दा अमल करनेवाली सस्थाएँ ही हैं। वे आदर्श गोशालाआ या डेयरियामे और समृद्ध राष्ट्रिय सस्थाआके रूपमे चलनेके बजाय केवल लूले लँगडे ढोर रखनेके धर्मादा खाते बन गये हैं। गोरक्षाके धर्मका दावा करते हुए भी हमने गाय और उसकी सतानको गुलाम बनाया है और हम खुद भी गुलाम बन गये हैं।

सवाल यह किया जाता है कि जब गाय अपने पालन-पोषणके खर्चेसे भी कम दूध देने लगती है या दूसरी तरहसे नुकसान पहुँचानेवाला बोझ बन जाती है, तब बिना मार उससे कैसे बचा जा सकता है? इस सवालका जवाब थोडेमे इस तरह दिया जा सकता है कि जानवरोके पालन-पोषणका विज्ञान सीखकर गायकी रक्षा की जा सकती है। आज तो इस कामम पूरी अधाधुधी चलती है। हिदू गाय और उसकी सतानकी तरफ अपना फर्ज पूरा करके उसे बचा सकते हैं। अगर वे ऐसा कर तो हमारे जानवर हिदुस्थान और दुनियाके गौरव बन सकते हैं। आज इससे बिलकुल उलटा हो रहा है।

हिदुस्थानके सारे पिजरापोलाका पूरा-पूरा सुधार किया जाना चाहिये। आज तो हर जगह पिजरापोलका इतजाम ऐसे लोग करते हैं जिनके पास न कोई योजना होती है ओर न ये अपने कामकी जानकारी ही रखते हैं।

ऊपर बतायी हुई बाताके पीछे एक खास चीज है। यह है अहिसा जिसे दूसरे शब्दामे प्राणीमात्रपर दया कहा जाता है। अगर इस सबसे बडे महत्त्वकी बातको समझ लिया जाय तो दूसरी सब बात आसान बन जाती हैं। जहाँ अहिसा है वहाँ अपार धीरज भीतरी शान्ति भले-बुरेका ज्ञान आत्मत्याग और सच्ची जानकारी भी है। गोरक्षा कोई आसान काम नहीं है। उसके नामपर देशमे बहुत पैसा बरबाद किया जाता है, फिर भी अहिसाका भान न होनेसे हिदू गायके रक्षकके बजाय उसके नाश करनेवाले बन जाते

हैं। गोरक्षाका काम हिंदुस्थानसे विदेशी हुकूमतको हटानेके कामसे भी ज्यादा कठिन है।

मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हम भैंसके दूध-घीका कितना पक्षपात करते हैं। असलमें हम निकटका स्वार्थ देखते हैं। दूरके लाभका विचार नहीं करते हैं। नहीं तो यह साफ है कि अन्तमें गाय ही ज्यादा उपयोगी है। गायके घी और मक्खनमें एक खास तरहका पीला रंग होता है, जिसमें भैंसके मक्खनसे कहीं अधिक कैरोटिन यानी विटामिन 'ए' रहता है। उसमें एक खास तरहका स्वाद भी है। मुझसे मिलने आनेवाले विदेशी यात्री सेवाग्राममें गायका शुद्ध दूध पीकर खुश हो जाते हैं। और यूरोपमें तो भैंसके घी और मक्खनके बारेमें कोई जानता ही नहीं। हिंदुस्थान ही ऐसा देश है, जहाँ भैंसका दूध, घी इतना पसंद किया जाता है। इससे गायकी बरबादी हुई है। इसीलिये मैं कहता हूँ कि हम सिर्फ गायपर ही जोर न देंगे तो गाय नहीं बच सकेगी।

गोरक्षाके प्रश्नका जैसे-जैसे मैं अधिक अध्ययन करता हूँ, वैसे-वैसे मेरा यह मत दृढ होता जाता है कि गाँवों और उनकी जनताकी रक्षा तभी हो सकती है, जब कि ऊपर बतायी हुई दिशामें निरन्तर प्रयत्न किया जाय।

× × ×

प्रत्येक किसान अपने घरमें गाय बैल रखकर उनका पालन भलीभाँति और शास्त्रीय पद्धतिसे नहीं कर सकता। गोवंशके ह्रासके अनेक कारणोंमें व्यक्तिगत गोपालन भी एक कारण रहा है। यह बोझ व्यक्तिगत किसानकी शक्तिके बिलकुल बाहर है।

हमारी आबादी बढ़ती जा रही है और उसके साथ किसानकी व्यक्तिगत जमीन कम होती जा रही है। नतीजा यह हुआ कि प्रत्येक किसानके पास जितनी चाहिये उतनी जमीन नहीं है। ऐसा किसान अपने घरमें या खेतपर गाय, बैल नहीं रख सकता।

इस हालतमें क्या किया जाय? यही कि जितना प्रयत्न पशुओंको जीवित रखने और उन्हें बोझ न बनने देनेका हो सकता है उतना किया जाय। इस प्रयत्नमें सहयोगका बड़ा महत्त्व है। सहयोग अथवा सामूहिक पशुपालन करनेमें अनेक लाभ हैं। मेरा तो विश्वास है कि हम अपनी जमीनको भी जब सामूहिक पद्धतिसे जोतेंगे तभी उससे पूरा फायदा उठा सकेंगे। गाँवकी खेती अलग-अलग सौ टुकड़ोंमें बँट जाय, इसके बनिस्पत क्या यह बेहतर नहीं होगा कि सौ कुटुंब सारे गाँवकी खेती सहयोगसे करें और उसकी आमदनी आपसमें बाँट लिया करें। और जो खेतीके लिये सच है, वह पशुओंके लिये भी सच है।

यह दूसरी बात है कि आज लोगोंको सहयोगकी पद्धतिपर लानेमें कठिनाई है। कठिनाई तो सभी सच्चे और अच्छे कामोंमें होती है। गोसेवाके सभी अंग कठिन हैं, कठिनाइयाँ दूर करनेसे ही सेवाका मार्ग सुगम बन सकता है। यहाँ तो मुझे इतना ही बताना था कि व्यक्तिगत पद्धति गलत है, सामूहिक सही है। व्यक्ति अपने स्वातन्त्र्यकी रक्षा भी सहयोगको स्वीकार करके ही कर सकता है। अतएव सामूहिक पद्धति अहिंसात्मक है।

[प्रेषक—श्रीरामकुमारजी जालान]
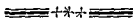
गो-सेवा

जो मनुष्य प्रतिदिन जौ आदिके द्वारा गौकी पूजा करता है, उसके पितृगण और देवता सदा तृप्त होते हैं। जो सदाचारी पुरुष नियमपूर्वक प्रतिदिन गायोंको खिलाता है, वह सच्चे धर्मके बलसे सारे मनोरथोंको प्राप्त करता है। जो व्यक्ति गौओंके शरीरसे गंदगी, मच्छर आदिको हटा देता है, वह तथा उसके पूर्वज लोग कृतार्थ होते हैं। यहाँतक कि 'यह भाग्यशाली संतान हमारा उद्धार कर देगी' ऐसा सोचकर वे उस अत्यन्त उत्सवमय कार्यके लिये आनन्दसे नाचने लगते हैं। इसलिये गौओंको कभी हेय दृष्टिसे नहीं देखना चाहिये, मारना तो बहुत ही कोसों दूर है। (पद्मपु० पाताल० अ० १८)

[प्रेषक—श्रीअरविन्दजी मिश्र]
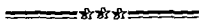
गोरक्षाके उपाय

(नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार)

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नम ॥
नमो गोभ्य श्रीमतीभ्य सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम ॥

गौका महत्त्व

गोरक्षण, गोपालन और गोसवर्धन भारतवर्षके लिये नया नहीं है। यह भारतवर्षका सनातन धर्म है। हमारी आर्य-सस्कृतिके अनुसार अर्थ धर्म, काम और मोक्ष—इन चारो पुरुषार्थोके साधनका मूल हमारी 'सर्वदेवमयी' यह गोमाता है। हमारे अपौरुषेय वेदाने गौकी बडी महिमा गायी है और उसे 'अघ्न्या' (अवध्या) बतलाया है। वैदिक वाङ्मयमे सवा सौसे अधिक बार 'अघ्न्या' पदका प्रयोग हुआ है। अथर्ववेदम तो पूरा 'गोसूक्त' ही है। उपनिषदोम भी 'गोमहिमा' है। महाभारतके अध्याय-के-अध्याय गो-महिमासे भरे पडे हैं। रामायण, इतिहास, पुराण और स्मृतियामे गोमाहात्म्य भरा है। गौके रोम-रोममे देवताआका निवास माना गया है। उसे 'सुरभि' 'कामधेनु', 'अर्च्या' (पूज्या), '*विश्वकी आयु*', '*रुद्रोकी माता*', '*वसुआकी* पुत्री' कहा गया है और 'सर्वदेवपूज्या' माना गया ह। गोपूजा गोभक्ति, गोमन्त्र आदिसे महान् लाभ बतलाये गये हैं। वह यहाँ सर्वप्रकारसे अभ्युदय करती है और परलोकमे वैतरणी पार कराती है। 'वृषोत्सर्ग' का अत्यन्त माहात्म्य है। गोचरभूमि छोडना बडा भारी पुण्य माना गया है। गोका यह आध्यात्मिक तथा धार्मिक महत्त्व चाहे आज किसीकी समझमे न आये, पर है वह निर्विवाद ही। आध्यात्मिक जगत्का यह रहस्य भौतिक साधनासे सबकी समझमे नहीं आ सकता। श्रद्धालु पुरुष शास्त्र-प्रमाणसे तथा अन्तर्दर्शी महात्मा ऋतम्भरा प्रज्ञाक द्वारा अनुभवसे ही इसे जान सकते हैं। ऋषि-मुनियाने उस महत्त्वको समझा था और उसका स्वरूप शास्त्रामे सँवारकर हमारे लिये रख दिया है।

गोसेवा सास्कृतिक और धार्मिक कर्तव्य हे

गोसेवा और गोवशकी उन्नति भारतीय सस्कृतिके अभिन्न अङ्ग है। हिदू, बौद्ध, जैन, सिक्ख सभी धर्मावलम्बियोके लिये गारक्षा धार्मिक दृष्टिसे मुख्य कर्तव्य है। अतएव गारक्षाका आध्यात्मिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण भी बडे महत्त्वका है जो कदापि उपेक्षणीय नहीं है।

इसका सास्कृतिक महत्त्व भी सर्वविदित है। भारतवर्षमे अत्यन्त प्राचीन कालसे ही बडे-बडे महापुरुषाद्वारा गोसेवन और गोपालन होता चला आया है। रघुवशी महाराज दिलीप नन्दिनी गौक लिये अपने प्राण दनेको प्रस्तुत हो गये थे। राजा नृगने असख्य गाये दान दी थीं। भगवान् श्रीरामका अवतार ही 'गोब्राह्मणहितार्थ' हुआ था। उन्होने दस सहस्र करोड गाये विद्वानोको विधिपूर्वक दान की थीं—

'गवा कोट्ययुत दत्त्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वकम्।'
(वा० रा० १। १। ९५)

भगवान् श्रीकृष्णका बाल्यजीवन गोसेवामे बीता। उन्हाने स्वय वनोम घूम-घूमकर गोवत्साको चराया। इसीसे उनका नाम 'गोपाल' पडा। कामधनुने अपने दूधसे तथा देवराज इन्द्रने ऐरावतकी सूँडके द्वारा लाये हुए आकाशगङ्गाक
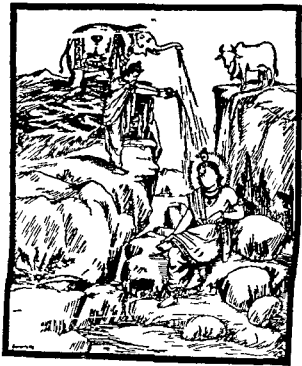
जलसे भगवान् श्रीकृष्णका अभिषक करके उनको 'गोविन्द'

नामसे सम्बोधित किया था। द्वारकामे वे पहले-पहल ब्यायी हुई, दुधार, बछडोवाली, सीधी, शान्त, वस्त्रालङ्कारोसे समलकृत तेरह हजार चारासी गायोका प्रतिदिन दान करते थे। (देखिये श्रीमद्भागवत १०। ७०। ९)

प्राचीन कालकी गोसम्पत्ति

युधिष्ठिरके यहाँ गायाक दस हजार वर्ग थे, जिनमे प्रत्येकमे आठ-आठ लाख गाय थीं। लाख-लाख, दो-दो लाख गायोके तो और भी बहुतसे वर्ग थे।

तस्याष्टशतसाहस्रा गवा वर्गा शत शतम्॥
अपरे शतसाहस्रा द्विस्तावन्तस्तथा परे।

(महा०, विराट० १०। ९-१०)

इस गो-विभागकी सारी व्यवस्थाका भार सहदेवपर था। वे गाविज्ञानके महान् पण्डित थे। नन्द-उपनन्दादिके पास असख्य गौएँ थीं और वे उनका भलीभाँति रक्षण पालन और सवर्धन करते थे। पिछले बोद्धकालीन भारतम कितने व्यापकरूपमे गोपालन होता था इसके लिये यहाँ एक ही प्रमाण पर्याप्त होगा। धनजय सठने अपनी कन्याके विवाहमे कुछ गाय देनकी इच्छासे अपन सेवकासे कहा—'जाओ, छोटा गोकुल खोल दो और एक-एक कोसके अन्तरपर नगारा लिये खडे रहो। एक सौ चालीस हाथकी चौडी जगह बीचमे छोडकर दोना ओर आदमी खडे कर दो, जिसम गाय फैल न सके। जब सब लोग ठीक हो जायँ, तब नगारा बजा देना।' सेवकाने ऐसा ही किया। जब गाये एक कोस पहुँचीं तब नगारा बजा फिर दो कोस पहुँचनेपर फिर बजा तीन कोसकी लबाई और एक सा चालीस हाथकी चौडाईके मैदानम इतनी गाय भर गयी कि वे एक-दूसरेके शरीरको रगडती हुई चलीं। तब धनजयने कहा—'बस दरवाजा बद कर दो।' सेवकाने दरवाजा बद किया परतु बद करते-करते भी ६०,००० गाये ६०,००० बैल और ६०,००० बछडे तो निकल ही गये। अब अनुमान कीजिये इस छोटे गोकुलम कितनी गाये रही हागी। इसी प्रकार गोपालकाका यह पशुधन गोकुलाम लाखा-करोडाकी सख्यामे था। गायाके वड व्यापारी गोतम कहलाते थे जिनके पास लाखाको सख्याम गौआके दल-के-दल हाते थे। यह थी हमारी गोसम्पत्ति और यह था हमारा गोपालन। गायको अब भी गाँवाके लोग 'धन' कहते हैं। बडे ही दु खकी बात है कि उसी गोपालकोके देशमे आज स्वराज्यके बाद भी निर्बाध गोवध जारी है और गोरक्तसे भारतकी पवित्र भूमि लाल हो रही है।

गोवध बद होना ही चाहिये

गायको कसाईके हाथसे बचानेकी बडी आवश्यकता है। कहना न होगा कि गावध दिनोदिन बढता जा रहा है। इसम प्रधान कारण हैं—चमडे, हड्डी, सूखे मास और रक्त तथा आँत-ताँत आदिका व्यापार एव गोमासकी अनिवार्य *और बेहद माँग। चमडेकी रफ्तनी बढती जा रही है।* सन् १९१३-१४ मे जहाँ २९ लाख खाले गयी थीं, वहाँ सन् ३८-३९ म ४८ लाख खाले गयीं (मार्केटिंग ऑफ हाइड्स रिपोर्ट, पृष्ठ ४०)। इसी रिपोर्टमे आगरा बगलोर, बरेली, बबई, कलकत्ता, ढाका दिल्ली जबलपुर, कराची, लाहौर, मद्रास, पेशावर और पूना—इन बड शहराके कसाईखानोमे काटी जानेवाली गाय-भैसोकी सख्याका विवरण देते हुए लिखा है कि सन् १९३२-३३ मे जितने पशु मारे गये थे, सन् १९३७-३८ म उनकी सख्यामे २१ २ प्रतिशतकी वृद्धि हो गयी। यह युद्धपूर्वका वर्णन है। सन् १९४२ मे ६६ लाख *गाय-भैसे सरकारी रिपोर्टके अनुसार काटी गयी थीं।* युद्धकालमे जहाँ जहाजाकी कमीके कारण चमडे आदिकी रफ्तनी घटी, वहाँ फौजाके लिये गोमासकी आवश्यकता अत्यधिक बढ गयी और उसके लिये दूध देनेवाली गाभिन गायो और बछडियाका भी अबाध वध हुआ जो करोडसे भी ऊपर पहुँच गया।। ऐसा विशेषज्ञोका अनुमान है। अन्यत्र प्रकाशित हिसारके जज साहेब श्रीलायक अली महोदयके उस विचित्र फैसलेको देखिये, जिसमे उन्होने बिना परमिटके बेकानूनी तौरपर उपयोगी गाया और बछडियाको फौजके लिये ले जानेवाले अपराधियाको छोडत हुए फौजाक लिये गोमासकी आवश्यकताका बडी ही दर्दभरी भाषाम वर्णन किया है। यह उदाहरण एक दाने चावलस पके भातको परखनेकी तरह पर्याप्त है। इस अबाध गोवधको बद करानेके लिये लोकमतको जाग्रत् करके प्रबल आन्दोलन करनेकी आवश्यकता है। यह आन्दोलन केवल हिन्दुआका ही नहीं रहना चाहिये। मुसलमान ईसाई

तथा अन्य मतावलम्बी सज्जनामे भी सहृदयता तथा प्रेमसे इस बातका प्रचार करना चाहिये कि गौ देशके प्रत्येक मनुष्यके लिये आवश्यक है और गौके न रहनेसे हिन्दू-मुसलमान सभीको समान रूपसे कष्ट हागा, जिससे व भी इस आन्दोलनमे शामिल हों तथा सरकारको कानून बनाकर गोवध रोकनेके लिये बाध्य कर द।

हिन्दुओमे इस बातका खूब प्रचार हो जाना चाहिये कि एक भी गाय कसाईके हाथ जाय नहीं। गाय न मिलेगी तो कसाईखाने आप ही बद हा जायँगे। जबतक हिन्दू गाय बेचते-बिकवाते हैं, तभीतक कसाईखाने चलते हैं।

जिन पशु-मेलोमे कसाइयाको गाये मिलती हैं, उन मेलाको या उनमे गो-विक्रयको कानूनन चेष्टा करके बद कराना चाहिये। लोकमत जाग्रत् करने, जनताको प्रभावपूर्ण रीतिसे समझाने तथा सरकारको बार-बार सुझानेसे ऐसा होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

बलिया जिलके गङ्गातटपर लगनेवाले एक मेलेसे हजारों गाय प्रतिवर्ष कसाइयोके हाथ जाती थीं। श्रीराघवप्रसादजी नामक एक गो-भक्त सज्जनके विशेष उद्योग और उसीमे लग जानेसे वहाँ गौका बिकना कतई बद हो गया। ऐसा और जगह भी हो सकता है। यह प्रयत्न भी होना चाहिये कि मेलाम बिकनेके लिये गौएँ आये ही नहीं।

सरकारने इधर 'भारत-रक्षा-कानून' के अनुसार उपयोगी गायोके मारनेपर कुछ प्रतिबन्ध लगाये हैं। परतु वे अस्थायी हैं। भरपूर चेष्टा करके धारा-सभाआम नये बिल लाकर उन्ह उचित और आवश्यक सशोधनके साथ स्थायी कानून बनवा लेना चाहिये और प्रत्येक प्रान्तम उनपर ठीक-ठीक अमल हाता है या नहीं, इसकी ओर गोसेवको तथा 'गो-रक्षिणी सस्थाओ' को एव म्युनिसिपलिटीके सदस्योको विशेषरूपसे नजर रखना चाहिये। ऐसा पता लगा है कि इस समय प्रतिबन्धाके रहते हुए भी प्रतिबन्धके विरुद्ध गायोकी हत्या होती है। इसमे हमारी अवहेलना और गा-हत्यारोका स्वार्थ ही प्रधान कारण है।

जबतक स्थायी कानून न बने, तबतक भारतके सभी प्रान्तामे वर्तमान कानूनके लागू करानकी और उसपर पूरा-पूरा अमल हो—इसकी सार्वजनिक समितियो, गो-रक्षा-सस्थाआ तथा जिम्मवार पुरुषाको व्यवस्था करनी चाहिये। वर्तमान भारत-रक्षा-कानूनकी धारा ८१ के अनुसार—बबई, मद्रास, बिहार युक्तप्रान्त उडीसा, आसाम, बगाल और सिधमे एक वर्षसे तीन वर्षतकके बछडे-बछडी, पाडे-पाडी, तीनसे दस वर्षतकके काममे आने लायक बैल, गाभिन होने तथा काम देने लायक गाय और सभी आयुकी दुधार और गाभिन गाय (कुछ प्रान्तोमे दो वर्षतककी मादा भेड-बकरी भी) वध नहीं की जा सकती। इनका वध करना, वधमे सहायता पहुँचाना और वधके लिये ले जाना अपराध माना जाता है और इस अपराधके लिये तीन सालतककी सख्त कैद और पशु जब्त करनेकी सजा नियत की गयी है। पजाब तथा सीमाप्रान्तमे भी यह कानून लागू कराना चाहिये और जिन प्रान्ताम लागू है उनमे निम्नलिखित दो काम करने चाहिये। ऐसा किया जायगा तो बहुत-से दुधार उत्तम पशुओके प्राण बच जायँगे और चेष्टा करनेवाल पुण्यके भागी हागे।

(क) जहाँ किसी कसाईखानम इस कानूनके विरुद्ध पशु मार जाते हा, वहाँके इससे सम्बन्धित महकमेके स्थानीय अधिकारियाको सूचना देनी चाहिये और समाचारपत्रोमे घटना ठीक सत्यरूपम जरूर प्रकाशित करानी चाहिये।

(ख) सभा करके इसका शान्तिपूर्ण विरोध करना चाहिय और सरकारके ऊँचे अधिकारियोका भी इसकी तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहिय।

स्थायीरूपसे कानून बनानेके लिये जगह-जगह सभाएँ करनी चाहिय। विभिन्न भाषाओके समाचारपत्रोम लगातार लेख निकालने चाहिये। गोहित-सम्बन्धी स्वतन्त्र समाचार-पत्र भी निकलना चाहिये और लोगाको आवश्यकता पडनेपर गावध बद करानेके लिये आवश्यक त्यागके लिये भी तैयार रहना चाहिये।

न तो पशुओको खाना और न पशुआका शिकार ही करना। यह हमारा जरथुश्ती नेक धर्म है। (फिरदौसी)

अब तो चेते

[आचार्य श्रीविनोबाभावेजीका संदेश]

'हिन्दुस्थान किसानोंका मुल्क है। खेतीका शोध भी हिन्दुस्थानमें ही हुआ है। गाय-बैलोंकी अच्छी हिफाजतपर हिन्दुस्थानकी खेती निर्भर है। हिन्दुस्थानी सभ्यताका नाम ही 'गोसेवा' है, लेकिन आज गायकी हालत हिन्दुस्थानमें उन देशोंसे कहीं अधिक खराब है, जिन्होंने गोसेवाका नाम नहीं लिया था। हमने नाम तो लिया पर काम नहीं किया। जो हुआ सो हुआ। लेकिन अब तो चेते।'
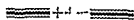
गोरक्षाके लिये क्या करना चाहिये?

[महामना पण्डित श्रीमदनमोहनजी मालवीयका संदेश]

'यदि हम गौओंकी रक्षा करेंगे तो गौएँ भी हमारी रक्षा करेंगी। गाँवकी आवश्यकताके अनुसार प्रत्येक घरमें तथा घरोंके प्रत्येक समूहमें एक गोशाला होनी चाहिये। दूध गरीब-अमीर सबको मिलना चाहिये। गृहस्थोंको पर्याप्त गोचरभूमि मिलनी चाहिये। गायोंको विक्रीके लिये मेलोंमें भेजना बिलकुल बंद कर देना चाहिये, क्योंकि इससे कसाइयोंको गायें खरीदनेमें सुविधा होती है। किसानोंकी स्थितिके सुधारके लिये दिये जानेवाले इन सुझावों तथा अन्य ऐसे सुझावोंको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये ग्राम-पंचायतोंका निर्माण होना चाहिये।'
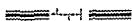
बैलोंके बिना हमारी काश्तकारी नहीं चल सकती

[देशरत्न डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसादजीका संदेश]

देशरत्न डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादजी महान् गोभक्त थे। आपने 'बिहार-प्रान्तीय गोशाला-पिंजरापोल-सम्मेलन'के समय पटनामें कहा था—'मवेशियोंसे हमारा जितनी आमदनी होती है और उनसे जो काम हमको मिलता है उसकी मजदूरी इतनी होती है कि उन सबको जोड़ा जाय तो मालूम होगा कि मुल्कमें इतनी आमदनीका दूसरा कोई जरिया नहीं है जितनी आमदनी हमको मवेशियोंसे होती है।

देशमें जितना चावल होता है उसकी कीमत मवेशियोंसे हुई आमदनीका ½ और गेहूँकी कीमत ⅓ है। इसीसे समझ सकते हैं कि किस तरह देशमें फैले हुए जानवर मेहकी बूँदोंकी भाँति काम कर रहे हैं।

गाय दूध देती है, बैल हल जोतते हैं और बोझा ढोनेका काम करते हैं। दोनों घास आदिका चारा खाते हैं और इस चारे आदिकी कीमत दूध वगैरहके रूपमें वापस देते हैं, मरनेपर कीमती चमड़ा देते हैं और हड्डी आदि सब कुछ फिर जमीनमें खादके रूपमें वापस जाता है। इन सबका रुपयोंमें दाम लगाया गया है। सर आर्थर आलवरने हिसाब लगाकर बतलाया था कि इन सबकी कीमत करीब १९,००,००,००,००० रुपये होती है।'

मवेशियोंकी उपयोगिताका उल्लेख करते हुए आपने अपने भाषणमें एक समय कहा था—'हमारे देशमें गाय ऐसी होनी चाहिये जो अपनी जिंदगीमें काफी दूध दे। खेती और दूसरे कामोंके लिये मजबूत और मेहनती बछड़े दे। अपने मल-मूत्रसे काफी खाद दे और मर जानेपर अपने चमड़े, चर्बी, हड्डी और मांस वगैरहसे ही दूसरी अन्य जरूरी कीमती चीजें दे, तभी गाय ऐसी बन सकती है कि उसका पालन मुनाफेका कारण हो।'

'मरे ढोरोंकी हड्डियाँ जमा करके विदेशोंमें चली जाती हैं जो कि खाद बनकर जमीनकी उर्वरता बढ़ा सकती थीं

उससे देश वञ्चित हो जाता है। मास और हड्डीकी खाद बहुत अच्छी वन सकती ह। चर्बीका इस्तेमाल भी होता है।'

'इस प्रकार यदि हम पूरा हिसाब लगा कर देख और जो कुछ मवेशियोसे उनके जीते रहनेके समय और मर जानेके वाद मिल सकता है उसका ठीक उपयोग कर, तो मवेशी रखनेमे नुकसान नहीं होगा।'

'जहाँ प्राकृतिक सभ्यताम जो हम लेते है उसे किसी-न-किसी रूपम वापस कर देते हैं और फिर उसे पैदा कर लेते हैं, वहाँ आधुनिक सभ्यताम हम सचित द्रव्यको खर्च करते ही चले जाते हैं और उस फिर हम किसी ऐसे रूपमे वापस नहीं करते कि वह फिरस अपने पूर्व-रूपमे हमे मिल सके।'

दूर-दूरसे अच्छी नस्लाके जानवराको लाकर दूसरी जगह पालनेके विपयमे उन्होने यह कहा है कि 'जिस आवोहवा और खुराकमे जो पला है उसीमे वह सबसे ज्यादा तरक्की कर सकता है।'

गोवरकी खादका महत्त्व वताते हुए उनका कहना है कि 'इस बातको भी सभी मानते हैं कि यदि काफी मिकदारम (मात्रामे) गोबर वगैरहसे बनी खाद दी जाय तो रासायनिक खादकी बिलकुल जरूरत नहीं होती है। गोबरकी खादसे नफाके बदले नुकसानका किसी हालतमे डर नहीं है। यह भी देखा गया है कि ऐसी चीज जो इस वक्त बुहारनेमे फक दी जाती हैं, या जो गदगी पैदा करती हैं और सेहतको नुकसान पहुँचाती हैं, उन सबका इस्तेमाल अगर ठीक तरहसे किया जाय तो नुकसानके बदले उनस फायदा उठाया जा सकता है।'

जानवराको खली देनेके सम्बन्धमे आपने एक समय कहा था—'आज खलीका बहुत वडा हिस्सा खादक रूपम खर्च होता है। मैं समझता हूँ यह गलत है, क्याकि अगर उसी खलीको जानवराको दिया जाय तो जानवर ज्यादा स्वस्थ और मजबूत हाग बैल ज्यादा काम कर सकेगे। इसके अलावा उनक पेटोके कारखानोम वह खली फिर खाद बनकर जमीनको भी वापस मिल जायगी।'

नसल-सुधारक सम्बन्धमे आपने कहा है कि 'ऐसी नसल चुनी जाय जा दूध भी दे और अच्छे बछडे भी दे। अग्रेजोको अपनी सेनाक लिये मास तथा व्यापारके लिये चमडा चाहिये। वही प्राप्त करनेके लिये उन्हाने एकाङ्गी (केवल दूध या केवल बछडेवाली) नस्लकी उपयागिताका प्रचार करके हमारे देशके लोगाको भुलावेमे डाला है।'

मोटर ट्रैक्टरा आदि मशीनाके जरियेसे खेती करनेके सम्बन्धमे आपका विचार है—

'मैं समझता हूँ कि जो हालत आजकल हिन्दुस्तानकी है, उसम इस तरहकी कलोसे थोडी दूरतक हम काम चला सकते हैं। मगर बैलोकी जरूरत ता हमेशा रह जायगी। बैलाके बिना हमारी काश्तकारी नहीं चल सकती।'
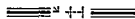
गोवध मनुष्य-वधके समान

[राजर्षि श्रीपुरुषोत्तमदासजी टण्डनके विचार]

२२ जनवरी, सन् १९५६ ई० मे कलकत्तेम आयोजित 'सर्वदलीय गोरक्षा-सम्मेलन' मे राजर्षि श्रीपुरुषात्तमदासजी टण्डनने गोरक्षाके सम्बन्धमे जो विचार व्यक्त किये उसका साराश यहाँ प्रस्तुत है—

राजर्षि टण्डनने शास्त्र, पुराण और हिन्दू धर्मका हवाला देते हुए बताया कि गौ यद्यपि पशु है, किंतु हिन्दू जाति और गौका सम्बन्ध अनादिकालस माता-पुत्रका रहा है।

आज पाश्चात्य सभ्यताम रँग गय मानसकी आलोचना करते हुए आपन दु ख प्रकट किया कि 'हिन्दू जाति अपनी जडपर ही कुठाराघात करनेको आमादा हो गयी है। जो नेता विदेशोके उदाहरण देकर हमे समझाना चाहते ह व अपनी जाति ओर देशके मर्मस्थलपर चाट पहुँचा रहे हैं। कोई भी उदाहरण अथवा तर्क हम अपनी मातृभक्तिसे विलग नहीं कर सकता।'

आपने बिहार उत्तरप्रदेश और पजाब सरकारको

बधाई देते हुए कहा कि कलकत्ता और बम्बईमें अंग्रेजी राज्यकालसे भी अधिक गोवध हो रहा है और गौ-जातिपर अकथनीय अत्याचार हो रहा है। आपने इस बातपर खेद प्रकट किया कि 'केन्द्रीय सरकार संविधानकी दुहाई देकर एक केन्द्रीय अधिनियम बनानेमें असमर्थता प्रकट कर रही है।'

महात्मा गाँधीके वाक्यको दुहराते हुए आपने कहा कि "प्रत्येक भारतीय उनके इस कथनका समर्थन करता है कि 'गोवध मनुष्य-वधके समान है।"

आपने उस व्यापार-नीतिकी भर्त्सना की जिसके द्वारा गौ बछड़ेके चमड़ेसे डालर कमानेकी चेष्टा की जाती है। विदेशियोंको गो-मांस देना जरूरी है इसलिये देशमें गोवधको आवश्यक बतलानेवालोंकी निन्दा की।

आपने कलकत्तेके व्यवसायियोंको भी चेतावनी दी कि वे लोग गौ-बछड़के चमड़ेका निर्यात-व्यवसाय कर पैसेके सामने मनुष्यताको कलंकित कर रहे हैं। हर गोभक्तसे आपने गोचर्मसे बने सामानोंका बहिष्कार करनेकी अपील की। बंगाल सरकारसे जनताके मनोभाव समझकर शीघ्र ही उपयुक्त अधिनियम बनानेकी प्रार्थना की।

बंगालकी गोहत्याका उल्लेख करते हुए श्रीटण्डनजीने कहा कि 'यह पाप यहाँ पराकाष्ठापर पहुँच चुका है और यह देशके लिये महान् कलंक और अभिशाप है। वर्षमें तीन लाखसे अधिक अच्छी-अच्छी गायें यहाँ काट दी जाती है। यही हालत बंबईकी है। यदि यही क्रम जारी रहा इसी तरह गौका ह्रास होता रहा तो देशको अमूल्य निधिसे हाथ धोना पड़ेगा। औरोंके लिये रुपये-पैसे सोना-चाँदीका बहुत मूल्य हो परंतु भारतका तो 'गौ' ही प्रधान धन है। यहाँ तो गोधनका ही माहात्म्य है। लाख-लाख गौओंके दानका प्रकरण शास्त्र एवं पुराणोंमें आता है। गोदान यहाँका प्रधान धार्मिक कर्तव्य है। इस गोधनकी रक्षा सब प्रकारके प्रयत्नसे होनी चाहिये।' चमड़ेके वस्तुओंके बहिष्कारके लिये जोर देते हुए टण्डनजीने इन वस्तुओंके निर्माणमें किस नृशंसता एवं निर्दयताके साथ निरीह गाय तथा उनके गर्भके बछड़े तक मारे जा रहे हैं इसका हृदयद्रावक चित्र खींचा, जिससे उपस्थित लोगोंकी आँखोंमें आँसू आ गये। आपने कहा कि 'फैशनके फेरमें पड़कर जो चमड़ेकी वस्तुएँ ही इस्तेमाल करते हैं वे गोहत्याके उतने ही जिम्मेदार हैं जितने कि गोमांस खानेके।' वस्तुतः अधिकांश गायें इसी चमड़ेकी वस्तुओंके लिये ही काटी जाती हैं। श्रीटण्डनजीने महिलाओंका आह्वान करते हुए जोरदार शब्दोंमें कहा कि 'चमड़ेके बैग बिस्तर-बंद बक्से तथा जूतियोंका पहनना छोड़ दें और अपने पति तथा पुत्रोंको भी इसके लिये तैयार करें।'

[प्रेषक—श्रीशिवकुमारजी गोयल]

परम अध्यात्मकी प्रतीक गौ

[योगिराज श्रीअरविन्दके विचार]

(श्रीदेवदत्तजी)

पृथ्वीपर मूर्तिमन्त गौ जिस परम शक्तिकी प्रतीकस्वरूपा है उसकी व्याख्या वेदोंमें भी साध्य नहीं है। गौ विश्वकी माता है यह पार्थिव जगत्‌में जितना सत्य है उससे भी अधिक इसका महत्त्व आध्यात्मिक दृष्टिसे है। ऋग्वेदके 'गोभिः श्रीणीत मत्सरम्' (९।४६।४) का आशय है कि जो कुछ भी गौमें सम्बन्धित है वह सब कुछ इस परम आनन्दमय सोममें निहित है।

'गौ' वैदिक शब्द है और वेदोंमें निहित परम ज्ञानको अभिव्यंजित करनेकी प्रणालीका अनुसरण करके इसके अर्थकी झलकमात्र पायी जा सकती है। गौके अर्थको समझनेके लिये वेदोंके अर्थको अभिव्यक्त करनेकी प्रणालीका ध्यान रखना होगा। वैसे भी वैखरी वाणीमें वेदार्थको अभिव्यक्त करना और उसका साधारणीकरण एक जटिल प्रक्रिया है। निघण्टुकारने अपना ग्रन्थ 'गौ' शब्दसे ही प्रारम्भ किया है और 'गौ', 'ग्मा' ज्या, 'क्ष्मा', 'क्षोणी', क्षिति आदिको पृथ्वी-नामधेय माना है। पुराणोंके

अनुसार पापका भार बढनेपर पृथ्वी गौका स्वरूप धारण करके भगवान् विष्णुके पास जाकर गुहार लगाती है। यह इसका भी प्रतीक है कि पृथ्वी तत्त्वमयी भूमा गौके रूपमे ही अपनेको पूर्णतया अभिव्यक्त कर सकती है और भगवान् भी गौकी गुहारको परम आदरके साथ सुनते हैं। पृथ्वीकी अभिव्यक्ति-हेतु इला और अदिति देवियोके नाम भी व्यवहृत हैं। 'गौ' शब्द किरण, प्रकाश, इन्द्रियका अर्थ बोध कराता है और परा-पश्यन्ती-वैखरीवाक्‌का वाचक भी है। इस विषयमे अथर्ववेदमे कहा गया है—

नैता ते देवा अददुस्तुभ्यं नृपते अत्तवे।
मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम्॥
(अथर्ववेद ५। १८। १ ब्रह्मगवी सूक्त)

यहाँ राजासे निवेदन किया गया है कि 'हे राजन्! देवताओंद्वारा प्रदत्त ब्राह्मणकी वाणीकी प्रतीक यह गौ खा डालने अर्थात् अवरुद्ध करने-हेतु नहीं है। यह गौ अर्थात् वाणी अनाद्या अर्थात् कभी न खायी जा सकनेवाली है। इसका वह अन्त करनेकी इच्छा न करे।'

गौरूपा वाणीको चतुष्पदा भी कहा जाता है। वह मूलाधारमे परा, नाभिमे पश्यन्ती, हृदयमे मध्यमा और जिह्वासे उच्चरित होकर वैखरी कही जाती है। यह सदा रक्षणीया है। वाणी 'यज्ञाग्नि' और 'अघ्न्या' है। सदा शुद्ध और पालनीया है। भूमि, वाणी, किरण—इन्हे असहाय समझकर नष्ट करनेसे कालकी दुर्गति होती है।

'गौ' अमोघ शक्तिदायिनी हैं, और 'देवजूतै' (अथर्व० ५। १८। ८) यह पद परमात्मामे प्रेरिता सत्यमयी अभिव्यक्तिका बोधक है। इसे ऋत-स्वरूपा कहा गया है। 'सत्य ऋत बृहत्'की अवधारणासे युक्त होनेके कारण प्रतीकार्थमे गौको वेद भी कहा जाता है।

गौ अर्थ, काम धर्म-मोक्षकी धात्री होनेके कारण कामधेनु है। इसका अनिष्ट-चिन्तन ही पराभवका कारण है।

'गु' और 'गाव'—ये दोनो संज्ञाएँ वैदिक मन्त्रोमे 'गो' और 'किरण'—इन दोनो अर्थोंमे प्राप्त होती हैं। भारतीय चिन्तनमे सत्ता और चेतना एक-दूसरेके प्रतिरूप हैं। अदिति वह अनन्त सत्ता है जो सप्त नाम-धामके साथ देवमाताके रूपमे वर्णित की गयी है। वेद अदितिको अनन्त चेतना, आद्या ज्योति और 'गौ' भी मानते हैं।

वैदिक ऋषियोके स्तवनमे उषाकी स्तुतिमे गौका आध्यात्मिक रूप प्रकट होता है। वेदमे गौ इतनी अमूल्य विभूतियोकी धारिका और वाहिका है कि इन्द्र और बृहस्पति भी देवशुनि सरमा और आङ्गिरस आदि ऋषियोकी सहायतासे खोयी हुई गौओको पुन प्राप्त करते हैं। वैदिक मन्त्रद्रष्टा ऋषियोने आध्यात्मिक उषाको 'गोमती' भी अभिहित किया है। वह संसारके लिये ज्योतिकी रचना करती है—

ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रज व्युषा आवर्तम ॥ (ऋग्वेद १। ९२। ४)

आध्यात्मिक ज्योतिर्मयी उषा गौ अर्थात् दिव्य चेतनाकी प्रसारिका किरणोकी माता है। महर्षि वसिष्ठने गौको देवकार्यमे भाग-ग्रहणकारिणी माना है। इससे जहाँ वह अवरुद्ध है वह स्थान खुल जाता है और गौ मनुष्योको दे दी जाती है। गौ अपने आध्यात्मिक वैभवमे इतनी अलंकृत और व्यापक है कि वह वैदिक ऋचाओके बहुत बडे भागको समाहित कर लेती है।

वेदोमे गौओका खोजना और उन्हे पुन प्राप्त करना इन्द्रका कार्य वर्णित किया गया है। यह कार्य आङ्गिरस ऋषियोकी सहायतासे अग्नि और सोमके मन्त्रो तथा यज्ञके द्वारा सम्पन्न होता है। श्रीअरविन्दकृत भाष्यके अनुसार गौ उषाकी छिपी हुई किरण है और अन्धकारसे उनकी मुक्ति अन्धकारमे हुए सूर्यके उदय होनेके कारण होती है। यह उच्चतर ज्योतिर्मय लोक 'स्व' की विजय है। सूर्य प्रतीक है दिव्य ज्योतिदायिनी शक्तिका। स्व दिव्य शक्तिका लोक है। वेद गौको आङ्गिरस ऋषियोके कार्यका, साधनाका फल भी वर्णित करते हैं। इस फलका सम्बन्ध पहाडियोके तोडे जाने और गौकी मुक्तिसे है। 'गौ' आध्यात्मिक उषाकी किरण अर्थात् प्रसारिका शक्ति है।

तद् देवाना देवतमाय कर्त्वमश्रथ्नन् दृळ्हाव्रदन्त वीळिता।
उद् गा आजदभिनद् ब्रह्मणा वलमगूहत् तमो व्यचक्षयत् स्व ॥
(ऋ० २। २४। ३)

उपर्युक्त मन्त्र पणियो (अर्थात् अन्धकारके स्वामियो)-से गौको लाने और समाजके लिये ज्योतिको प्राप्त करनेका कथन करता है। इन्द्र अन्धकारमेसे गौ-रूपी किरणोको

दुहता भी है। वेदका इन्द्रके विषयम कथन है कि—

तवेद विश्वमभित पशव्य यत् पश्यति चक्षसा सूर्यस्य गवामसि गोपतिरेक इन्द्र ॥ (ऋ०७। ९८। ६)

श्रीअरविन्दने अपने वेदार्थम इस प्रमेयको सर्वतोभावेन सिद्ध कर दिया है कि वेदामे वर्णित गौ, पणियाकी गौ परम आध्यात्मिक प्रकाशकी गौ है। वदम परमदेवके लिये जिस 'सत्य ऋतम् बृहत्' तत्त्वकी कल्पना की गयी है उसका आधार गा है। 'गोदा इद् रेवतो मद '—इन्द्र पूर्ण रूपाको बनानेवाला, भरपूर दूध देनेवाली गौके समान, उसका परम आनन्दमय साम रससे प्राप्त आनन्द गौका दाता है (ऋ० १। ४। १ २)। क्योकि गो ज्ञान-स्वरूप है। 'इमा या गाव स जनास इन्द्र ' (ऋ० ६। २८। ५ अथर्व० ४। २१। ५)।

गौ तथा सूर्यकी महिमाको वेदाके मन्त्रद्रष्टा ऋषि एक कथानकके माध्यमसे हम प्रदान करते हैं। उषा वह देवी है जो गौके बाडकी तरह अन्धकारका खोल देती है। देवाका सर्वश्रेष्ठ कार्य वह माना गया जिसन दृढ स्थानाको ढीला किया, कठोरको मृदु किया। फिर बृहस्पति गौका हाँक लाते हैं। अन्धकारको दूर करके 'स्व ' को प्रकाशित कर देते हैं। वेदम इन्द्रको वृषभ भी कहा गया है। जो वज्रको अपना साथी बनाकर ज्योतिके द्वारा अन्धकारमेस किरणाको दुहते हैं। वह वज्र (स्वर्ण अश्मा) है जिसम 'स्व ' की ज्योति रहती है—'युज वज्र वृषभश्चक्र इन्द्रो निर्ज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत्॥' (ऋ० १। ३३। १०)

गौको चुरानेवाले 'पणि' को श्रीअरविन्दके भाष्यमे अन्धकारकी शक्तियाका ही प्रतीक माना गया है। जिसे उषा खोल देती है 'व्रजस्य तमसो द्वारो०' (ऋ० ४। ५१। २)। पणियोकी इस परम गुप्त निधिकी विमुक्ति परम ज्योतिकी मुक्ति है।

भगवान् श्रीकृष्णकी गोचारणलीला

(गोलोकवासी परमभागवत प० श्रीरामचन्द्रडोंगरेजी महाराज)

श्रीकृष्णब्रह्मके गोचारणकी, लोकोत्तर अद्भुत लीलाकी और परमपूज्या गोमाताकी बडी ही दिव्य विलक्षण महिमा है। शास्त्र घोषणा करते हुए कहते हैं—'गावो विश्वस्य मातर ' (विष्णुधर्मोत्तर० २। ४२। २) 'गौ समस्त विश्वकी माता है।'

साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्पर ब्रह्मका उस पूज्या गोमाताकी रक्षा करनेके लिये ही भगवान् श्रीकृष्णके रूपम अवतार हुआ। भगवान् श्रीकृष्णको गोमाता अपने प्राणासे भी प्यारी है। भगवान् श्रीकृष्ण उनके अनन्य भक्त हैं। श्रीकृष्ण जब कुछ बडे हुए तो वे घुटुरुनके बल चलकर गायाकी पूँछ पकडकर खड हाने लगे। एक दिन भगवान् श्रीकृष्णने अपनी मैया श्रीयशोदास इस प्रकार वार्तालाप किया—

श्रीकृष्ण—मैया!

श्रीयशोदा—हाँ बेटा कन्हैया!

श्रीकृष्ण—मैया! मैं तुझे एक बात सुनाता हूँ।

श्रीयशोदा—सुना बेटा! क्या सुनाता है?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं पहले एक बहुत बडा आदमी था।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू बहुत बडा आदमी कब था?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं अपने पहले जन्मम बहुत बडा आदमी था।

श्रीयशोदा—अच्छा बेटा! तू पहल जन्मम कितना बडा आदमी था?

श्रीकृष्ण—हाँ, मैया, मैं बहुत बडा आदमी था और मै एक बहुत बडा राजा था!

श्रीयशोदा—अच्छा बेटा कन्हैया! तो तू पहले जन्ममे कौन-सा बडा राजा था?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं पहले जन्मम एक महाराजा था और मेरा नाम उस समय महाराजा रामचन्द्र था।

श्रीयशोदा—अच्छा कन्हैया बेटा! तो तू ही पहले जन्मम महाराजा रामचन्द्र था? अच्छा तो बतला अब बात क्या है?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं उस समय बहुत बडा राजा

रामचन्द्र था, आर मैं पूज्या गोमाताका बडा भारी भक्त था। उन्हे पालता, उनकी सेवा करता और उनका दान भी करता था। मैंने वन जानेके समय हजारा गौओको त्रिजट ब्राह्मणको दानम दिया था (वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड, सर्ग ३२)। राज्यकालमे भी मैंने खूब गोदान और गोसेवा की, किंतु राजा होनेके कारण मैं अपनी इन पूज्या गोमाताकी पूरी तरहसे सेवा नहीं कर सका ओर इनकी सेवाकी लालसा मुझे लगी ही रह गयी।

श्रीयशोदा—तो बेटा! अब तू क्या करना चाहता है?

श्रीकृष्ण—मैया! अब मैं गायोका ही नौकर बन करके आया हूँ और अब मैं गायोकी खूब सेवा करना चाहता हूँ।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तो अब तू गायाकी खूब सेवा किया कर तुझे गायोकी सेवा करनेसे राकता कौन है?

श्रीकृष्ण—मैया! अब अपनी पूज्या गायाका नौकर बनकर और गायाका सेवक बनकर इन गायोकी खूब जी भर करके सेवा करूँगा।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू इन पूज्या गायोकी और पूज्य ब्राह्मणाकी कृपासे ही तो हमारी इस वृद्धावस्थामे उत्पन्न हुआ है। भला, तुझे इनकी सेवा करनेसे कौन रोक सकता है? बेटा कन्हैया! तू अब इन गायाकी खूब सेवा कर।

श्रीकृष्ण—मैया! अब मैं जगलोमे वनोमे गाय चरानेके लिये जाया करूँगा।

श्रीयशोदा—अच्छा बटा कन्हैया! अपने घरके पुरोहितजी महाराजको बुलाकर और उनसे शुभ मुहूर्त दिखाकर तब तुझे गाय चरानके लिये शीघ्र ही भेजूँगी।

तदनन्तर पुरोहितजी महाराजको नन्दरायके गृहमे बुलाया गया और शुभ मुहूर्त दिखाया गया। जब वह शुभ दिन समीप आ पहुँचा, तब भगवान् श्रीकृष्णने अपनी मैया श्रीयशोदासे कहा—'मैया! मेरे गोचारणका अब शुभ दिन निकट आ गया है और अब मैं गायोको चरानेके लिये जाऊँगा।'

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! यदि तू जगलम वनाम गाय चरानेके लिये जायगा ता बेटा! तेरे इन छोटे-छोटे कोमल पैरोमे जगलोके—वनोके काँटे चुभेगे और उन नुकीले काँटोके चुभनसे तुझे बडा भारी कष्ट होगा, इसलिये कन्हैया बेटा! तेरे लिये इन कोमल पैरोमे काँटे न चुभे, इसके लिये मैं छोटी-छोटी जडीदार जूतियाँ बनवाये देती हूँ। जब वे बनकर आ जायँगी, तब तू उन्हे पहनकर गायोको चरानेके लिये जाया करना।

श्रीकृष्ण—मैया! तू यह क्या कहती है? क्या मैं अपने इन पैरोमे जूते पहनकर तब गायोको चरानेके लिये जाया करूँगा?

श्रीयशोदा—हाँ बेटा कन्हैया! तू जगलमे जूते पहनकर तब गाये चराने जाया करना।

श्रीकृष्ण—ना मैया! मैं अपने इन पैरोमे जूते पहनकर गायोको चरानेके लिये कभी नहीं जाऊँगा।

श्रीयशोदा—बेटा! तो और तू क्या पहनकर जायगा?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं कुछ भी नहीं पहनूँगा! मैं तो नगे पाँव ही जाऊँगा।

श्रीयशोदा—बेटा! तू जूते क्यो नहीं पहनेगा?

श्रीकृष्ण—यदि तू मेरे पैरोके लिये जूते बनवाती है तो तू मेरी इन परमपूज्या गायोके लिये भी जूते बनवा दे।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू बडा भोला है। तू कुछ बावला भी दीखता है। भला कहीं गायोके लिये जूता-जूती बन सकती है?

श्रीकृष्ण—तो मैया! मैं नौकर और गायोका सेवक, तो अपने पैराम सुन्दर जडीदार रेशमी जूते पहनकर जाऊँ और जो पूज्या गौ माता हमारी मालिक और प्रात स्मरणीया परम इष्टदेवी हैं, वे नगे पाँवो जगलोमे जायँगी, क्या ऐसा करना उचित होगा? मैया! भला ऐसा कैसे हो सकता है? यह तो मैया! मर्यादाके सर्वथा विरुद्ध बात होगी।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू तो मनुष्य है और छोटा-सा बालक है और तेरे पैर छोटे-छोटे कोमल-कोमल हैं। तुझे नगे पाँवों जगलामे जानेसे बडा भारी कष्ट होगा और तेरे इन पाँवाम जगला और वनोके नुकीले काँटे चुभेगे। गाय तो पशु हैं। भला ये गाये जूती कैसे पहन सकती हे?

श्रीकृष्ण—मैया! तू मेरी पूजनीया प्रात स्मरणीया

परम इष्टदेवी गौ माताको पशु बताती है? पूजनीया गौ माता कहीं पशु होती है माँ! क्या श्रीतुलसी महारानी सामान्य घास होती हैं? पतितपावनी श्रीगङ्गाजी महारानी क्या कहीं सामान्य जलकी नदी होती हैं? क्या कल्पतरु सामान्य वृक्ष और चिन्तामणि पत्थर है? मैया! तैंने आज हमारी गैया मैयाको पशु कैसे बता दिया? उन्हे पशु कैसे कह दिया?

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! यदि ये गाय पशु नहीं है तो बता फिर वे क्या हैं?

श्रीकृष्ण—मैया! सभी कामनाओंको देनेवाली यह पूज्या गौ माता तो साक्षात् कामधेनु है। यह हमारी परमपूज्या इष्टदेवी है। इसके रोम-रोममें तेतीस करोड देवी-देवताओंका निवास है। इस देवीके मूत्रमे श्रीगङ्गाजीका वास है और गोबरमे श्रीलक्ष्मीजी महारानीका निवास है। शास्त्र गोमाताको समस्त विश्वकी माता बता रहे हैं, '**गावो विश्वस्य मातर**', फिर भला गोमाता पशु कैसे हो सकती है? पूज्या गोमाता तो हमे इस भवसागरसे पार लगानेवाली माता है। इसकी रक्षासे और सेवा करनेसे इसकी कृपा प्राप्त होती है और पूज्या गोमाताकी कृपासे इसके लोक—श्रीगोलोकधामकी प्राप्ति होती है। पूज्या गोमातासे बढकर भला और कौन देवता है?

श्रीयशोदा—अच्छा बेटा कन्हैया! यदि यह बात है तब तो फिर तू अपने नगे पाँवो ही गायोका चरानेके लिये जगलोमे जाया कर। अब मैं तुझे कभी भी मना न करूँगी।

बस अब क्या था? साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक जगन्नियन्ता परब्रह्म परमात्मा नन्दनन्दनके रूपमे—छोटे-से बालकके रूपमे जगलोंमे गाय चरानेके लिये जाने लगे और गायोकी अपनी हाथोसे सेवा करने लगे। श्रीकृष्ण-ब्रह्म गायोको चरानेके लिये जाते समय अपने हाथमे डडे नहीं रखते थे और कोई शस्त्र नहीं रखते थे। वे अपने हाथमे केवल वशी लिये हुए ही गाय चराने जाते थे। इस महान् अद्भुत दृश्यको देखनेके लिये बडे-बडे पूज्य देवी-देवता अपने-अपने लोकोको छोड-छोडकर व्रजमे चले आते और यह अद्भुत दृश्य देखकर आश्चर्य-चकित रह जाते थे। जो परात्पर ब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण वडे-वडे महान् योगियोके समाधि लगानेपर भी ध्यानमे नहीं आते, वे ही साक्षात् परात्पर ब्रह्म श्रीकृष्ण पूज्या गोमाताके पीछे-पीछे नगे पाँवो जगलोमे, वनोमे अपने हाथमे वशी लिये घूम रहे है, इससे बढकर आश्चर्यकी बात भला और क्या होगी? इससे बढकर पूज्या गौ माताकी अद्भुत महत्ताका जीता-जागता ज्वलन्त उदाहरण और प्रत्यक्ष प्रमाण भला और क्या हो सकता है?

समस्त विश्वका पेट भरनेवाला श्रीकृष्णब्रह्म गोमाताके माखनका भूखा

भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक एव परब्रह्म परमात्मा हैं। वे विश्वके कर्ता-पालक एव धारणकर्ता हैं। समस्त जीवोका भरण-पोषण करनेवाले भी वे ही हैं। चींटीसे लेकर हाथीपर्यन्त जीवमात्रको खिलाने-पिलानेवाले वे ही हैं। जो आस्तिक और भक्त हैं, उनके लिये तो वे ही साक्षात् योगक्षेमवाहक है—

अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जना पर्युपासते।
तेषा नित्याभियुक्ताना योगक्षेम वहाम्यहम्॥

(गीता ९। २२)

वे प्रभु ही उन्हे खिलाते-पिलाते हैं और उनका सब प्रकारसे वे प्रभु श्रीकृष्ण योग-क्षेम वहन करते हैं। परतु जो घोर नास्तिक है और जो ईश्वरको नहीं मानते उन घोर नास्तिकोका भी भरण-पोषण करते हे तथा उन्हे भी वे खिलाते-पिलाते हैं और उनका पेट भरते हैं, क्षुधा शान्त करते हैं। समस्त जगत्की क्षुधा शान्त करनेवाले वे ही परात्पर ब्रह्म श्रीकृष्ण अपनी मैया श्रीयशोदाजीसे एक दिन बोले—

श्रीकृष्ण—मैया!

श्रीयशोदा—हाँ बेटा कन्हैया!

श्रीकृष्ण—मैया! आज तो मुझे बडी भूख लग रही है।

श्रीयशोदा—अच्छा कन्हैया बेटा! तुझे भूख लगी है?

श्रीकृष्ण—हाँ मैया! मुझे बडी भूख लगी है।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! यदि तुझे भूख लगी है तो फिर घरमे खाने-पीनेकी कमी क्या है? खूब मेवा-मिष्टान्न और सब प्रकारके बडे-बडे सुस्वादु पदार्थ तैयार हैं जो भी

तेरा जी चाहे वह तू खूब खा। बेटा! तुझे मना कौन करता है?

श्रीकृष्ण—ना मैया, मेरी भूख तर इन मेवा-मिष्टान्न आदिसे शान्त नहीं होगी और नहीं मिटेगी।

श्रीयशोदा—फिर बेटा! तू क्या खाये-पीयेगा? मै वही तुझे मँगाकर खिलाऊँ-पिलाऊँगी।

श्रीकृष्ण—मैया! मैं तो गायोका दूध-दही-माखन-मलाई-मिश्री खाऊँगा तब मरी भूख मिटगी।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तैने यह बात क्या कही? घरम खूब गायोका दूध-दही-माखन-मलाई, मिश्री आदि भरे पडे हैं। चाहे जितना खाओ, तुझे राकता कौन है? फिर तू बाहर क्यो जायगा?

श्रीकृष्ण—ना मैया, मैं अपने घरके दूध-दही-माखन-मलाईसे अपनी भूख नहीं मिटाऊँगा। मैं तो गोपियोके घरपर जाकर उनके घराकी गायाके भी माखन-मलाई-मिश्री खाकर अपनी भूख मिटाऊँगा।

श्रीयशोदा—अच्छा कन्हया बेटा! यदि तू नहीं मानता है तो तू गोपियाके घरोम ही जाकर और उनके घरोकी गायोके दूध-माखन-मलाई-मिश्री खाकर अपनी भृख मिटा ले पर तू बेटा! भूखा मत रह।

बस, फिर क्या था—'अब तो साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्पर ब्रह्म, सबकी भूख मिटानेवाला भगवान् श्रीकृष्ण गोपियोके घरोमे जा-जाकर और उनके घराकी गायोका दूध-दही-माखन-मलाई और मिश्री खा-खाकर अपनी भूख मिटाने लगा।'

परिणाम

और इसी गोदुग्धका पानकर भगवान् श्रीकृष्णने दिव्य गीतामृतका प्रवचन किया—'**दुग्ध गीतामृत महत्।**' गौओने स्वदुग्धसे अभिषिक्तकर उन्हे गोविन्द—गौओका इन्द्र बनाया। उनके ध्यान-स्मरणसे कलियुग समाप्त होकर सतयुग होता है—'**कलौ कृतयुगस्तस्य......हृदये यस्य गोविन्द ।**' '**गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा**' यही उनका सर्वोत्तम मन्त्र है। वस्तुत गो-गोविन्द सदा एक साथ हैं।

जाको ध्यान न पावे जोगी। सो व्रजमे माखन को भोगी॥

कैसी हैं वे महाभागा श्रीगोपिकाएँ, जिनके घरोम जा-जाकर श्रीकृष्णब्रह्म माखन-मिश्री माँग-माँगकर खा रहे हैं। कैसी है वह पूज्या गोमाताआकी अद्भुत विलक्षण महिमा, जिनके माखन-मिश्रीपर, दूध-दहीपर श्रीकृष्णब्रह्म रीझ रहा है और अपनी भूख मिटा रहा है। धन्य हैं ये श्रीगोपिकाएँ और धन्य हैं ये गोमाताएँ!

बोलो गामाताकी जय!

गोपालन, गोपाल और गो-महिमा

(श्रीराधाकृष्णजी श्रोत्रिय साँवरा)

गोकुलेश गोविन्द प्रभु त्रिभुवनके प्रतिपाल। गो-गोवर्धन-हेतु हरि, आपु बने गोपाल॥ १॥
द्वापरमे दुइ काज-हित, लियौ प्रभुहि अवतार। इक गो-सेवा, दूसरौ भूतल कौं उद्धार॥ २॥
गोप-वेश रुचिकर लगत, गो-गोपी गो-बाल। सँग साभित गोधन विपुल, बिहरत वन नँदलाल॥ ३॥
गो-सवर्धन काज-हित, धरि गोवर्धन हाथ। गो-गोपन रक्षा करी, रक्षक गापीनाथ॥ ४॥
जिन चरननकी धूरि कौ, ब्रह्मादिक ललचात। वे ही गउअन सँग फिरे, गो-रज रजित गात॥ ५॥
गउअनके सँग जात जब मधुवन बाल मुकुन्द। गो-वृन्दनके सिन्धु ज्यो, बह्यौ जात गोविन्द॥ ६॥
लीलाधर लीला करन जब गाचारण जात। गो-परिकर गो-गोष्ठकी, गो-रज लिपटत गात॥ ७॥
लीला मात्र न जानिय, है अति मरम विशाल। गो-विभूति गालोककी, गापालक गोपाल॥ ८॥
इष्टदेव प्रभु सबहिके, जिनका गउएँ सेव। तिनकी सवा सौ स्वय, चार पदारथ लेव॥ ९॥
जिनके सवक है स्वय गोकुलेश गोपाल। उनकी सेवासे कहौ, क्यो न कटै भवजाल॥ १०॥

गोसेवा ही सच्ची राष्ट्र-सेवा एवं सर्वोत्तम भगवदाराधना है

(अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निवृत्त शकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज)

भारतीय सस्कृतिकी सच्ची रीढ गो-सस्कृति ही है। स्वतन्त्रताप्राप्तिका मुख्य उद्देश्य भारतीय सस्कृतिकी सारसर्वस्व प्राणभूता गोमाताकी आराधना ही थी। पर स्वतन्त्रता प्राप्त हाते ही राजनीतिके नामपर धर्म और सस्कृतिके सर्वथा विरुद्ध नेताओके मनमे काई एक पाश्चात्य अनुकृतिरूपा पिशाचिनी प्रविष्ट हो गयी जिसका प्रत्यक्ष प्रचण्ड नग्न ताण्डव आज सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। बस केवल लूट-पाट, डाका, हत्या तथा महान् अनर्थकी विभीषिका सर्वत्र व्याप्त है। सुख, शान्ति सद्भावना, परस्पर प्रमका व्यवहार इस राजनीतिके द्वारा सर्वथा लुप्त कर दिया गया। आज सदाचार, सद्विचार, भगवद्भक्ति ज्ञान, वैराग्य सत्सगका प्राय सर्वथा लोप-सा हो रहा है और विश्वके नित्य सच्चे स्वामी भगवान्परसे श्रद्धा, विश्वास, आस्था उठ चुकी है। यहाँतक कि सत, महात्मा भक्त और धर्मात्माआकी भी महान् उपेक्षा एव कभी-कभी हत्या भी कर दी जाती है। भारतमे बृहस्पति, शुक्र कौटिल्य, सोमदेव, चडेश्वर आदिके अनेक धर्म एव ईश्वर-सापेक्ष श्रेष्ठ प्राचीन राजनीति-ग्रन्थ आज भी विद्यमान हैं। रामायण महाभारत मनुस्मृति तथा विष्णुधर्मोत्तर आदि पुराणोम राजनीति और कला-विज्ञान आदिका भडार भरा पड़ा है, जिनके सामन विश्वका सारा नवीन ज्ञान-विज्ञान कौडी-मूल्यका नहीं है। पर दशका दुर्भाग्य है कि देशके कर्णधारोने उनपर किये गये शोधपूर्ण पाश्चात्योके ग्रन्थोपर भी दृष्टिपात नहीं किया। रामचरितमानस-जैसे विश्वके सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थसे भी वे पूर्णरूपसे परिचित नहीं है। अब सोचिये कि ऐसे लोग क्या कर सकते है, जो कर सकते है, वही कर रहे हैं। इन्हे गोमाताका ध्यान कहाँसे होगा?

गोमाता विशुद्ध सत्त्वमयी भगवती पृथ्वीकी प्रतिमूर्ति है समग्र धर्म यज्ञ सत्कर्म और विश्वसचालनका आधार है और सूधेपन तथा वात्सल्यकी ता सीमा ही हे। इसके दर्शन, स्पर्श वन्दन अभिनन्दन आदिसे सारे पाप-तापका शमन हाकर परम कल्याण एव सुख शान्ति, आनन्दका सचार होता है तथा सब प्रकारके मङ्गलमय अभ्युदयका आगमन होता है, यह सबका हृदय जानता हे। इसलिये यह निरन्तर पूजनीय वन्दनीय एव अभिनन्दनीय है। वेदसे लेकर रामचरितमानसतकको प्रत्येक पक्तिम इसीका ही सर्वाधिक महिमा भरी पड़ी है।

आजकल एक बात विशेष ध्यान देनेकी है। एक तो सामान्य जनताकी गोपालनकी प्रवृत्ति कम होती जा रही है तथा जा लोग गोपालन करते हैं वे भी स्वार्थवश दूधके लाभमे [विदेशी] जर्सी गायको रखना चाहते है जो वास्तवमे गाय ही नहीं है। इसका पालन गोसेवा नहीं है। गोबर, गोमूत्र और गायोका आवास स्वास्थ्यप्रद माना जाता है जा विदशी गायामे नहीं है। गा माताके जो लक्षण अपने शास्त्रामे बताये गये हैं वे लक्षण केवल भारतवर्षकी देशी गायोमे ही उपलब्ध हैं। भारतीय गायाका विशिष्ट लक्षण है उनका गलकम्बल और पीठका ककुद् इसलिय गोदान आदिम भी जर्सी गायाको देना धनका अपव्यय मात्र है। गा माताका सेवास जो भी आध्यात्मिक ओर आर्थिक लाभ है, वह देशी गौकी सेवासे ही है। आजकल दूध बढानके लिये देशी गायोका जर्सी आदि विदेशी साँडोसे सम्पर्क कराया जाता है जिसके परिणामस्वरूप देशी गाकी नस्ल ही समाप्त होती जा रही है।

'कल्याण'के प्रस्तुत विशेषाङ्कम हमारे पाठकान गामहिमाकी समग्र बाताको ध्यानसे पढा होगा पढगे। सभी शास्त्रा एव अपने-अपने धर्मग्रन्थाके आकर्षक दिव्य वचन भी प्रमाण-रूपम देखे होगे। यहाँ उस सम्बन्धम अब कुछ भी अधिक लिखना पिष्ट-पेषण-जसा होगा। हम ता यहाँ हिन्दू, मुसलमान जैन बौद्ध ईसाई—सभी भाइयामे यही प्रार्थना करेग कि आपक सभी धर्मग्रन्थाम गामाताका अपार आभार स्वीकार किया गया है। आप सभी लोग गोसवक हैं। अत ताजिया दुर्गापूजा तथा विभिन्न चुनावा आदि-जैस उत्सवाम खर्च हानवाल तीन-चार दिनाके अदर अरबो-खरबा रुपयेमस कुछ या अधिक-स-अधिक कटाती कर प्रत्यक्ष सतस्वरूपा तथा दूध घी आदि प्रदान करनवाली भारतीय गामाता [फ्रिजियन आदि नहीं] का सवाम लगाय।

यह कोई कठिन बात नहीं होगी, प्रत्युत इससे आप अपना एव दूसरोका लोक-परलोक सुधार लेगे।

गोओकी उपेक्षासे आज पृथ्वी नरक बन गयी है। पर पूरा विश्वास कीजिये इन देवता-दवियो और उत्सवाकी जगह सच्ची महामहिमामयी देवी गोमाताकी सेवासे साक्षात् स्वर्ग या गोलोक ही इस भूमण्डलपर उतर जायगा तथा सच्चे सुख, शान्ति आनन्द और कल्याणकी मधुमयी सुधाधारा निरन्तर प्रवाहित होने लगेगी। सब लागोके विचार बदल जायँगे। परस्पर सौहार्दका वातावरण उपस्थित होकर प्रतिक्षण दिव्य ज्ञान-विज्ञान एव भक्तियोग आदिके चमत्कारपूर्ण प्रचार-प्रसार सर्वत्र दीखने लगेगे। सभी प्रकारकी विद्याएँ, विशुद्ध बुद्धि एव धर्म-पुण्यके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रस्फुटित होने लगग। 'वृषो हि भगवान् धर्म ।' जब साक्षात् धर्मरूप वृषभ चतुष्पादसे सम्पन्न होकर पृथ्वीपर विचरण करगा, तब पूर्ण सत्ययुग आ जायगा एव सभी जितेन्द्रिय होकर भक्त, सत, धर्मात्मा महात्मा एव विद्वान् बन जायँग। किसीको किसी वस्तुका स्वप्नम भी अभाव नहीं होगा। परिपूर्ण परमानन्दकी व्याप्ति एव प्राप्ति होने लगगी। इसस अधिक क्या चाहिये। सर्वत्र कृतार्थता और कृतकृत्यता ही दीखेगी। सभीसे करबद्ध प्रार्थना है कि आप हमारी इस अभ्यर्थनाको स्वीकार करे।
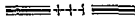
अनाद्या अवध्या गौ

(वीतराग स्वामी श्रीनन्दनन्दनानन्दजी सरस्वती, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, भूतपूर्व ससद् सदस्य)

'मा गामनागामदिति वधिष्ट' (ऋग्वेद)। विश्वक पुस्तकालयमे ऋग्वेद सर्वप्राचीन अथवा सर्वप्रथम ग्रन्थ है। नित्य अपौरुषेय ज्ञान विश्वके जीवमात्रको आदेश देता है कि गौ अदिति तथा अनागा है, इसका वध न करो। 'गो' शब्द वाणी तथा पृथ्वीवाचक भी है और समस्त मौलिक दिव्य तथा पारमार्थिक जगत्का सार है। 'दितिर्वै नाश ' 'दिति'नाम नाशका है, 'अदिति' अविनाशी अमृतत्वका नाम है। गौको अदिति कहकर वेदने अमृतत्वका प्रतीक बताया है। अमृतत्व स्वय अमृत हाकर औरोको अमृत होनका मार्गदर्शक और प्रेरक है। इसकी रक्षा और वृद्धिसे समस्त विश्व सुरक्षित और समृद्ध होगा। इस कारण भारतीय सस्कृतिके प्राचीन चिन्तकाने इसको सदा पूज्य और अपने तथा विश्वके जावनका केन्द्र मानकर इसकी सदा पूजा और रक्षा मातृसदृश की। भारतीय जीवनके सभी विभागाम गोका अनुपम मातृस्थानीय सहयाग है इसलिय 'गावो विश्वस्य मातर ' कहा गया है।

श्रीमद्भगवद्गीताम विष्णु, जीवन और कर्मको यज्ञ-रूप कहा गया है—

एव प्रवर्तित चक्र नानुवर्तयतीह य ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघ पार्थ स जीवति॥

(३। १६)

यज्ञके बिना जीवनको सर्वथा निरर्थक माना गया हे। विश्व-कल्याणका प्रमुख साधन यज्ञ है। गौ और ब्राह्मणको यज्ञका मुख्यतम अङ्ग कहा गया है। दोनाका एक कुल है—'एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति।' यज्ञ मन्त्र (ब्राह्मण) और हवि (गौ) की समष्टि है। इनके विरोधी विश्वके तथा जीवनक शत्रु हैं। सर्वजगन्नियन्ता परमश्वरको भी इसी कारण गा-ब्राह्मणरक्षक कहा गया है। द्वापरान्तमे परब्रह्मके परिपूर्णावतार गोपाल ही थे। वृन्दावन, भाण्डीरवन कामद आदि क्षेत्राम गौआके पीछे सर्वथा निरावरण वनम विचरण करते हुए श्रीभगवान्के मुखसे गौके चरणरजसे पवित्र हानेकी मुक्तकण्ठसे प्रशसा निकली है।

अनुव्रजाम्यह नित्य पूयेयेत्यङ्घ्रिरेणुभि ।

गोचरणरज उड-उडकर परब्रह्मके श्रीअङ्गको पूत करती है जिससे परब्रह्म अपनेका धन्य मानते हैं। इस कारण कोई भी विवेकशील प्राणी गौके द्वारा पवित्र होनेक अतिरिक्त और क्या सौभाग्य समझ सकता है? गोकुल परब्रह्मका घर है। नन्दबाबा वृषभानु आदि दूसरे गोपालधुरन्धर बडी मात्राम गादुग्ध आर मक्खनका प्रसारकर विश्वको हृष्ट-पुष्ट और समृद्धिशाली बनानेमे सहायक थे। श्रीकृष्णद्वारा ११ वर्षकी अवस्थाम मुष्टिक, चाणूर कुवलयापीड हाथी

और कसका वध गोरसके अद्भुत चमत्कारक प्रमाण हैं।

दर्शनशास्त्रमे 'गो' नाम इन्द्रियाका और वासुदेव नाम अन्तरात्माका आश्रयण करता है और भगवान् वासुदेव इन्द्रियाका आप्यायन करते हे, इसीलिये वे वासुदेव कहलाते हैं। वासुदेव परब्रह्म और उसकी शक्तियाँ—ये विश्वके पालक हैं। इनकी रक्षासे धर्मरक्षा और विश्व-रक्षा स्वाभाविक सिद्ध है। महात्माओने धर्मरक्षाको ही समाज, राष्ट्र और विश्वरक्षाका साधन माना है। कुछ लोगोन धर्मरक्षा ओर गोरक्षाको राष्ट्रके लिये अहितकर कहकर इसका कडा विरोध किया, कुछ राजनीतिज्ञ इस्लाम आदि दूसरे मतावलम्बियोको प्रसन्न करनेक लिय गोरक्षाका पूर्ण विरोध कर रहे हैं। गारक्षापर भारतवासियो और हिंदू जातिके किसी पक्षका भी मतभेद न होनेसे सभीने इसका समर्थन किया तब भी देश और हिंदू जातिका विभाजन-दुर्भाग्यका प्रमाण मिला और हिंदू गोरक्षाके मोर्चेपर कितने ही वर्षोसे विफल होता आ रहा है। हिंदू जाति कटी-फटी ओर असहाय सभी मोर्चोपर विफल हो रही है परतु परमपूज्य शकराचार्यक नवावतार अनन्तश्री करपात्री स्वामीजी महाराजने सम्पूर्ण गावध-वदीके लिये सर्वथा शान्त और अहिसक धर्मयुद्धका सूत्रपात किया कितु हिंदू जातिके दुर्भाग्यसे लाखोकी जेलयात्रा ओर प्राण-त्यागके बाद भी तथा अनन्तश्री जगद्गुरु शकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी निरजनदेवतीर्थके ऐतिहासिक अनशन और जलयात्राक बाद भी सरकारने गोरक्षाके राष्ट्रिय कलकको चालू रखा।

सभी राजनीतिक दल हिंदू-जागरण और एकात्मतासे त्रस्त है। गोरक्षामे असफल हिंदू-धर्म सभी मोर्चोंपर अरक्षित सभी राष्ट्रविरोधी, समाज-विरोधी, धर्म-विरोधी व्यक्तियो—गठबन्धना और दानवीय अत्याचारका शिकार बन रहा है। कुछ हिंदू युवकाम जीवन और जागरणके लक्षण दीख रहे हैं। यदि स्वाध्याय और धार्मिक जागरणका वातावरण बना तो सम्भव है, यह अर्धसुप्त जर्जरित हिंदू सिह जग उठे। हिंदू रिजर्व फोर्स अभी मेदानम नहीं आयी। हनुमान्, परशुराम, व्यास आदि महाशक्तियाँ उपयुक्त अवसरकी वैसे ही प्रतीक्षामे हैं, जैसे कि बाबर, अकबर और औरगजेबके शासन-अत्याचारमे समर्थ स्वामी रामदास, वीर मराठा वीर छत्रसाल, महाराणा प्रताप छत्रपति शिवा, राणा लाजमिह आदि मार्चा सँभालने और हिदुओको जीवनदान देनेके लिये पूर्ण दलबलसे प्रकट हुए थे। '*धर्मो जयति नाधर्म*', '*विष्णुर्जयति नासुरा*' का दृढ विश्वास आस्तिक वर्गकी शाश्वत शक्ति और विभूति है। आजका हिंदू उस विभूतिका स्वागत एव प्रयोग करेगा तो उसके जीवित एव विजयी होनेम सदेह नहीं—

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

गौ माताकी जय हो गोपाल कृष्णकी जय हो, बजरगबलीकी जय हो जगदम्बाकी जय हो, धर्मवीरोकी जय हो।

आर्य-साहित्यमे गो-गौरव

(श्रीरामानन्दजी द्विवेदी)

गाकी बड़ी महिमा बताता आर्य-जन-साहित्य है।
गो-रोम-रोम निवास करते देवता सब नित्य है॥
गो-पुच्छ द्वारा झाड़नेस रोग भग जाते सभी।
गो-मूत्र गो-मयक बिना शुचिता नहीं होती कभी॥
तब एक गोका मूल्य-अकन वृहद राज्याधिक्य था।
गा ही नहीं बछड़ वृषभ सबका उचित आतिथ्य था॥

गोके लिये थे गोत्र जिससे श्रेष्ठ गो-रक्षा बने।
कश्यप भरद्वाजादि सब मिल गोत्रके कक्षा बने॥
परम्परास गोत्र अबतक वश-परिचय दे रहा।
गो-एषणा प्राचीन आर्योका सदान्वेषण रहा॥
सब तुच्छ है पुत्रैषणा वित्तैषणा दारैषणा।
सुर-असुर-वन्दित मोक्षदायिनि लोक-ख्यात गवैषणा॥

(गो-भारती)

गोमहिमा

(अनन्तश्रीविभूषित दक्षिणाम्नायस्थ शृगेरी-शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीभारतीतीर्थजी महाराज)

हम सभी भारतीयाके लिये गाय पूजनीय है। उसकी पूजासे अति विशिष्ट फलकी प्राप्ति होती है और उसकी अवमाननासे भारी अनर्थकी प्राप्ति होती है, यह बात भी सर्वसामान्यको अच्छी तरह ज्ञात है।

जैसा कि कहा जाता है कि सतानरहित महाराज दिलीपने पुत्रकी कामनासे भगवान् वसिष्ठकी शरण ली। इसपर भगवान् वसिष्ठने उनसे इस प्रकार कहा—'राजन्! बहुत पहलेकी बात है कि एक बार जब आप इन्द्रकी राजधानीसे उनसे मिलकर पृथ्वीपर लौट रहे थे तो आपको मार्गमे कल्पतरुकी छायामे विश्राम करती हुई कामधेनु मिली। वह प्रदक्षिणाके योग्य थी, किंतु आप उसे बिना नमस्कार किये चले आये। इस अपमानसे दु खी होकर उसने आपको नि सतान रहनेका शाप दे दिया। इसलिये अबतक आपको पुत्रमुख-दर्शनका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। अब तो आप उसकी पुत्री नन्दिनीकी आराधनासे अपना अभीष्ट प्राप्त कर सकते हैं।' तदनन्तर महर्षिकी आज्ञाको शिरोधार्यकर राजा दिलीपने उस नन्दिनीकी भक्तिपूर्वक महान् सेवाकर उसकी कृपासे 'रघु' नामक कुलदीपक पुत्रको प्राप्त किया। इसी कथाका, बडी श्रद्धासे महाकवि कालिदासने अपने रघुवश महाकाव्यमे बडे सुन्दर ढगसे वर्णन किया है।

श्रुति गायको 'अघ्न्या' कहकर श्रद्धेय और अवध्य बताती है। श्रुतिका प्रत्यक्ष वचन है—'मा गामनागामदितिं वधिष्ट।' इस श्रुतिका तात्पर्य यह है कि गाय निरपराधिनी है, निर्दोष है तथा पीडा पहुँचाने योग्य नहीं है और अखण्डनीय है, अत इसकी किसी प्रकार भी हिसा न करो तनिक भी कष्ट न पहुँचाओ। इस श्रुतिसे यह स्पष्ट है कि गाय किसी भी प्रकार दण्ड देने योग्य या पीडा पहुँचाने योग्य नहीं है।

देवीके नामामे 'गोमाता'का भी उल्लेख हुआ है। इसलिये गाय साक्षात् देवी है, यह स्पष्ट प्रतीत होता है।

गौ न केवल अदृष्ट-रूप सौभाग्य-सवर्धनकारिणी होनेके कारण पूजनीय है, प्रत्युत उसके द्वारा प्रत्यक्ष भी हमारे महान् उपकार सम्पन्न होते हैं। जैसे कि हम देवताओकी पूजामे गायके ही दूधका उपयोग करते हैं, अन्य किसी दूसरे प्राणीका नहीं। गोदुग्ध पीनेसे बुद्धिकी भी वृद्धि होती है। यज्ञोमे देवताओकी आहुतियोके लिये प्राय दुग्ध, दधि, घृत आदि गव्य पदार्थोंका प्रयोग होता है। गायका घी, दूध, दही, गोमय तथा गोमूत्रको शास्त्रोक्त विधिसे तैयार कराकर सेवन किया जाय तो वह सभी प्रकारके पापोको नष्ट कर देता है, शास्त्रोमे कहा गया है—

यत्त्वगस्थिगत पाप देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्॥

'जो मेरे शरीरकी हड्डियोमे पाप प्रविष्ट हो गया है, वह सब पञ्चगव्यके पानसे उसी प्रकार नष्ट हो जाय जैसे अग्नि सूखे लकडियोको जलाकर भस्म कर देती है।'

अतएव शास्त्रीय विधानोंके निर्देशक पापोके उपशमनके लिये पञ्चगव्य-पान करनेका विधान बतलाते हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण गौओका पालन करते थे और उनकी पूजा भी करते थे। गायोकी रक्षाके लिये उन्होने गोवर्धन पर्वतको ऊपर उठाकर अपने हाथपर धारण किया था। श्रेष्ठ लोग जो आचरण करते हैं, सामान्य व्यक्तियोके लिये वही आदर्श एव उदाहरण बन जाता है। भगवान् श्रीकृष्णने बडे ही आदर एव प्रीतिसे गायोकी परिपालना एव गोपरिचर्या की थी, अत हमलोगोको भी उनके आदर्शको ध्यानमे रखकर गायोकी सेवा अवश्य करनी चाहिये। इसलिये गायोको किसी भी व्यक्तिको किसी भी समय किसी प्रकारका कष्ट नहीं देना चाहिये।

गौका दान सभी दानोंमे सर्वोत्तम है तथा सर्वोत्कृष्ट फल उत्पन्न करता है, यह सभी शास्त्र बार-बार घोषित करते हैं। गायोकी महिमा अपार है, इसीलिये गोदानकी विशेषता बतलायी गयी है।

इस प्रकार श्रुति-स्मृति, इतिहास तथा पुराणोकी एकवाक्यताके कारण यह निष्कर्ष निकलता है कि गाय सदा पूजनीय है, इसलिये उसका किसी प्रकार कभी भी तनिक भी अनिष्ट नहीं करना चाहिये।

गौ माताकी अपूर्व महिमा

(पद्मश्री डॉ० श्रीकृष्णदत्तजी भारद्वाज)

वैदिक ऋचाओके आविर्भावसे आजतक गौ माताकी महिमाके प्रति स्तवाञ्जलियाँ प्रस्तुत होती रही हैं और उसकी सुरक्षाके प्रति सभी सत्त्व-गुण-सम्पन्न व्यक्ति जागरूक रहते आये हैं—

'मा गामनागामदितिं वधिष्ट'

(ऋक्सहिता ८। १०१। १५)

सृष्टिमें सहस्रो जीव-जन्तु हैं, किंतु जितना आदर-सम्मान गौ माताने पाया है उतना किसी अन्य पशुने नहीं।

गौके उपकारोको मानव कभी भुला नहीं सकता।

गौकी गणना शुद्ध शाकाहारी जीवोमे होती है, क्योकि वह घास-फूस खाकर ही उदर-पूर्ति कर लेती है।

देव-पूजामे जो पञ्चामृत बनाया जाता है, उसमे मधु और मिश्रीके अतिरिक्त दूधक साथ घी और दही गायसे प्राप्त होते हैं। एव अन्य शरीर-शोधक धार्मिक विधियामे जब पञ्चगव्यका प्रयोग किया जाता है तब तो घी, दूध, दहीके साथ गोमय (गाबर) तथा गोमूत्रका भी मिश्रण किया जाता है।

'गो'-शब्दके साथ कई अन्य शब्दोंके व्यवहारसे गायकी महत्ता स्वय सिद्ध है। दिग्दर्शनार्थ गोप=ग्वाला गोपी=ग्वालिन गोकुल=गायोका समूह, गोविन्द=श्रीकृष्ण, गोष्ठी=सभा अथवा वार्तालाप, गव्यूति=दो कोसकी दूरी गवाक्ष=झरोखा गोस्तनी=दाख या मुनक्का गा-ग्रास=अपने भोजनसे पहले गायको दिया जानेवाला भोजन।

यदि प्रचुर जलमे कुछ अशुद्धि हो जाय तो उसकी शुद्धि जाननेके लिये शास्त्रकी आज्ञा है कि 'शुचि गोतृप्तिकृत् पय' अर्थात् यदि वह जल इतना है कि एक गायकी प्यास बुझा सकता है तो वह जल पवित्र माना जायगा।

गौ माता परम आदरणीय है। किसी भी प्रकारसे उसका अनादर निन्दनीय माना गया है। उसका उत्पीडन तो आसुरी अथवा राक्षसी वृत्ति है। कविकुल-गुरु कालिदासने रघुवशमे लिखा है कि एक बार महाराज दिलीप स्वर्लोकमे देवराज इन्द्रके आराधनसे निवृत्त होकर जब भूलोककी ओर आ रहे थे तब वे मार्गमे कल्पवृक्षकी छायामे बैठी कामधेनुका प्रदक्षिणापूर्वक सम्मान करना भूल गये। उनका चित्त अपने हा घरकी बातोमे व्यस्त था। कामधेनुने राजाके इस व्यवहारका अपना अपमान समझा और कहा कि 'मेरी इस अवज्ञाके दुष्प्रभावसे तुम्हारे प्रासादमे राजकुमारका जन्म नहीं होगा। मेरी सतानकी आराधनासे ही यह दोष दूर होगा और तुम्हे पुत्ररत्नकी प्राप्ति हो सकेगी।' महर्षि वसिष्ठने ध्यानस्थ होकर महाराजको लगे शापकी बात जान ली और अपनी नन्दिनी नामकी गौकी सेवा करनेके लिये महाराजको आदेश दिया। महाराज दिलीपने महारानी सुदक्षिणाके साथ २१ दिनतक नन्दिनीकी आराधना करके उससे पुत्र-प्राप्तिका आशीर्वाद प्राप्त किया था। दिलीपके पुत्र-रत्न थे रघु।

गोसेवाका अनन्त फल

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वश । तस्मै तुष्टा प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥
द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्य सुखप्रद । अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥
दान्त प्रीतमना नित्य गवा व्युष्टिं तथाश्नुते। (महा० अनु० ८१। ३३—३५)

जो पुरुष गौओकी सेवा और सब प्रकारसे उनका अनुगमन करता है उसपर सतुष्ट होकर गोएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओके साथ मनसे भी कभी द्रोह न करे, उन्हे सदा सुख पहुँचाये उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदिके द्वारा उनका पूजन करता रहे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौओकी सेवा करता है, वह समृद्धिका भागी होता है।

गावो विश्वस्य मातरः

(अनन्तश्रीविभूषित द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज)

भारतीय संस्कृतिमें यज्ञोंका बहुत महत्त्व है, क्योंकि भारतीय संस्कृतिका दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक है, वह समग्र विश्वको लेकर चलती है, यज्ञ भी कर्ताके साथ-साथ वायुमण्डलको दूर-दूरतक पवित्र एवं आधुनिक भाषामें कीटाणुरहित करते हैं, ऐसे प्रयोग आजके परिप्रेक्ष्यमें और भी सारगर्भित हो गये हैं, आज जबकि पर्यावरणको शुद्ध करने एवं बचानेवाले उपाय स्वयं भी प्रदूषित करते हैं अतः ऐसे मनमानी-रहित शास्त्रीय विधि-विधानोंसे युक्त प्रयोगोंकी नितान्त आवश्यकता है, जो कि शत-प्रतिशत पर्यावरणकी रक्षा करनेमें समर्थ हैं। इनमें गायका स्थान प्रमुखतम है। गायका इतना महत्त्वपूर्ण स्थान इसी बातसे अवगत होता है कि समस्त प्राणियोंको धारण करनेके लिये पृथ्वी गोरूप ही धारण करती है। जब-जब पृथ्वीपर पापी असुरोंका भार बढ़ता है, तब-तब वह देवताओंके साथ श्रीमन्नारायणकी शरणमें गोरूप ही धारण करके जाती है वह यह अनुभव करती है—

गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही। जस मोहि गरुअ एक पर द्रोही॥

उसकी इस व्यथाको जानकर भगवान् उसके भारको दूर करनेके लिये विविध अवतार धारण करते हैं। भगवान् पूर्णब्रह्म मर्यादापुरुषोत्तम रामभद्रका अवतार सूर्यवंशमें, त्रेतायुगमें हुआ था, उनके पूर्वज राजा दिलीपको वंशावरोधका संकट आ पड़ा था। महाकवि कालिदासने अपने रघुवंश महाकाव्यमें राजा दिलीपका वर्णन किया है। देवासुरसंग्राममें देवराज इन्द्रके निमन्त्रणपर राजा दिलीपने देवोंको विजय दिलायी थी। वे जब इस सहयोगसे निवृत्त हुए तब उन्हें स्मरण हुआ कि गृहस्थधर्मके नियमानुसार उन्हें ऋतुस्नाता धर्मपत्नीके सामने जाना चाहिये। राजा दिलीप शीघ्रतासे राजधानी अयोध्याकी ओर आने लगे। रास्तेमें कल्पवृक्षके नीचे खड़ी कामधेनुको न देख पानेसे प्रणाम न कर सके। कामधेनुने कहा 'जिस लिये मेरी अनदेखी कर पूज्य-व्यतिक्रम तुम कर रहे हो उस फलकी प्राप्ति मेरी संततिकी सेवा किये बिना नहीं होगी।' आकाशगङ्गाकी हर-हर ध्वनिके कारण यह भी दिलीप सुन न सके। बहुत दिन व्यतीत हो जानेपर जब चिन्ता हुई, तब उन्होंने अपने कुलगुरु महर्षि वसिष्ठसे, उनके आश्रमपर जाकर निवेदन किया, तब वसिष्ठजीने शापवाली बात बतायी और कहा—'कामधेनु तो इस समय लोकपाल वरुणके यहाँ दीर्घकालीन यज्ञमें गयी है। उसकी कन्या नन्दिनी आश्रममें है उसकी सेवासे तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होगा।'

राजा दिलीपने गुरु वसिष्ठजीके बताये नियमानुसार सेवा की। सेवासे प्रसन्न हुए नन्दिनीसे वर प्राप्त किया फलस्वरूप एक बालक हुआ जिसका नाम 'रघु' रखा। रघुके कारण ही सूर्यवंश 'रघुवंश' नामसे प्रसिद्ध हुआ। यदि दिलीपने गोसेवा न की होती तब वंशावरोध तो हो ही गया था। रघुके बाद अज अजके बाद दशरथ और दशरथके चार पुत्र—राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न हुए।

कृष्णावतारमें कृष्णने इन्द्रकी पूजा न करके गोवर्धनकी पूजा गोपोंसे करवायी तो इन्द्रने क्रोधके वशीभूत होकर प्रलयकालीन मेघोंसे वर्षा करवायी, पर श्रीकृष्णके प्रभावसे यह वर्षा कुछ बिगाड़ न सकी। श्रीकृष्णने गोवर्धनको ही छत्रवत् धारण कर लिया। उस समय कामधेनु आयी। उसने श्रीकृष्णका अपने थनोंसे निकलनेवाली दुग्धधारासे अभिषेक किया और कहा कि 'जिस प्रकार देवोंके राजा देवेन्द्र हैं, उसी प्रकार आप हमारे राजा 'गोविन्द' हैं।'

इन दो पूर्णावतारोंमें गायका सम्बन्ध प्रमुख रूपसे सिद्ध होता है। सनातन धर्मके शास्त्रीय विधानोंमें सर्वत्र गायका प्रथम स्थान है। भूमि पूजनके योग्य तभी मानी जाती है जब वह गोबरसे लीपी गयी हो। यज्ञ-कुण्ड और स्थण्डिल आदि अग्नि-स्थापनके स्थान, पञ्चभू-संस्कारोंसे संस्कृत किये जाते हैं जिनमें 'गोमयेनोपलिप्य' वाक्य आया हुआ है। गौका पञ्चगव्य आयुर्वेदकी दृष्टिसे तथा शास्त्रीय दृष्टिसे अत्यन्त उपयोगी है। रक्षाबन्धनके दिन ब्राह्मणगण श्रावणीकर्म करते हैं, उस दिन हेमाद्रिकृत स्नान-संकल्प करते हैं। उसमें पञ्चगव्य-प्राशन भी अनिवार्य-रूपसे होता है। पञ्चगव्य-प्राशन द्विजातिगण समन्त्रक करते हैं और द्विजातिसे भिन्न लोग अमन्त्रक। आयुर्वेदिक दृष्टिसे शरीर-शोधनमें उदरगत विकारोंके प्रशमनके लिये यह निरापद प्रयोग है। गायका मूत्र ओषधियोंके शोधनमें प्रयुक्त होता

है। गोमूत्रका प्रयोग ग्रामोमे सामान्यजन भी किया करते हैं। लीवर, तिल्ली, पाचन-यन्त्रोमे विकार होनेपर इनके सुधारके लिये गोमूत्रका प्रयोग सफलता देता है। गोबरका प्रयोग भी शोथादि विकारोके शमनके लिये किया जाता है। भगवान् धन्वन्तरि अमृत-कलश हाथमे लिये क्षीर-समुद्रसे निकलकर सारभूत बात कहते हैं—

अच्युतानन्दगोविन्दनामस्मरणभेषजात् ।
नश्यन्ति सकला रोगा सत्य सत्य वदाम्यहम्॥

गायके गोबरकी क्षमता आजके वैज्ञानिकोने भी पहचानी है। गायके गोबरमे आणविक दुष्परिणामोको अवरुद्ध करनेकी शक्ति है। ये दुष्परिणाम गोबरसे लिपे-पुते मकानोमे अन्य स्थानोकी तुलनामे कम प्रतिशतमे होते हैं।

शास्त्रोको देखे तो गायकी महिमाके विषयमे एक पूरा ग्रन्थ ही बन जायगा। अत आवश्यकता है इसके वैज्ञानिक महत्त्वको समझनेकी। इस दिशामे समस्त वैज्ञानिक एकमतेन कहते है कि पर्यावरणके सरक्षणकी दृष्टिसे गायका कोई विकल्प नहीं है। गाय अपने श्वास-प्रश्वासके द्वारा अनगिनत कीटाणुओसे क्षेत्रको शुद्ध करती है। विश्वके प्राय सभी जीवोका मल-मूत्र अत्यन्त विषाक्त होता है। धार्मिक दृष्टिकोणसे भी कई ऐसे उपपातक है जिनके प्रायश्चित्तमे पञ्चगव्य-प्राशनका विधान किया गया है। मन्त्रकी जागृतिके लिये पुरश्चरणके योग्य भूमिमे गोशाला (गोष्ठ) को लिया गया है। अधिक क्या जपसख्याके लिये गायके गोबरमे सिन्दूरादि मिलाकर गोली बनायी जाती है। गौरी भगवती जो सौभाग्यकी अधिष्ठात्री देवी हैं उनकी मूर्ति गोबरकी ही बनती है, चाहे छोटा-से-छोटा पूजन-कार्य हो या बडे-से-बडा यज्ञादि।

गायके प्रति वर्तमानमे जो व्यावसायिक दृष्टिकोण स्थिर किया जा रहा है वह अदूरदर्शितापूर्ण है। पाश्चात्त्य तौर-तरीकोका अन्धानुकरण करके डेयरीफार्म आदिमे अधिक दुग्ध-उत्पादनके व्यामोहमे नित नये प्रयोग गोवशको जो निरन्तर कम होता जा रहा है भविष्यमे उसकी पारम्परिक विभिन्न क्षेत्रोमे होनेवाली नस्लोके रूप क्षमता विशेषता आदि गुणोका विलय करनेवाले होगे। गायोका सकरीकरण उन्हे जरसी बनाना स्थायी लाभदायक नहीं है और भारतीय भावनापर कुठाराघात अत्यन्त ही स्पष्ट है कि हम जन्म देनेवाली माँ जहाँ हम कुछ ही समयतक स्तनपान करानेसे जीवनभरके लिये पूज्या माँ बन जाती है, वहीं जो जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त हमे दूध दे वह माँ न हो सके पशु ही समझी जाय इससे बढकर विडम्बना और क्या हो सकती है। इस स्वतन्त्र भारतमे मनुष्योके लिये बहुत बडा जो कलक बना हुआ है वह है, निरन्तर बढती हुई सख्यामे प्रत्येक सूर्योदयतक गायोका बूचडखानोमे कट जाना। इस कलकको दूर करना नितान्त आवश्यक है। गायसे चारो पुरुषार्थोकी सिद्धि होती है। वह जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त उपयोगी है। मरनेके बाद भी उसका मृत शरीर काम आता है। कैसी भी बूढी गाय क्या न हो वह ईंधन तो देती ही है जो पर्यावरण-शोधनमे काम आता है।

पृथ्वीको धारण करनेवालोमे गायका प्रमुख स्थान माना गया है। राजा पृथुसे, जिनके नामके कारण भूमिका नाम पृथ्वी पडा पृथ्वीने कहा कि 'सभी अपना-अपना वत्स निश्चित करके मुझसे अपना-अपना प्राणधारक दूध ले ले।' तदनन्तर देव-गन्धर्व यक्ष राक्षस दैत्य, दानव पितृगण और मनुष्यादिकोने अपना-अपना वत्स नियुक्त कर पृथ्वीसे अपना-अपना प्राणधारक पय प्राप्त किया।

गायको तृण खिलानेका बहुत ही पुण्य बताया गया है—कहा है—तीर्थस्थानोमे जानेसे ब्राह्मणोको भोजन करानेसे जो पुण्य प्राप्त होता है तथा सभी व्रतो और उपवासोमे एव तपस्याओमे जो पुण्य स्थित है, महादान देनेमे जो पुण्य है, श्रीहरिकी पूजामे जो पुण्य है, पृथ्वीकी परिक्रमामे जो पुण्य है तथा समस्त सत्यवाक्योमे—शास्त्रीय वेद-वाक्योमे जो पुण्य है और मनुष्यको समस्त यज्ञोमे यज्ञ-दीक्षा ग्रहण कर जो पुण्य अर्जित होता है—वे सभी पुण्य केवल गायोको तृण खिलानेभरसे तत्क्षण ही मिल जाते हैं। यथा—

तीर्थस्थानेषु यत्पुण्य यत्पुण्य विप्रभोजने।
सर्वव्रतोपवासेषु सर्वेष्वेव तप सु च॥
यत्पुण्य च महादाने यत्पुण्य हरिसेवने।
भुव पर्यटने यत्तु सत्यवाक्येषु सर्वदा॥
यत्पुण्य सर्वयज्ञेषु दीक्षया च लभेन्नर।
तत्पुण्य लभते सद्यो गोभ्यो दत्त्वा तृणानि च॥

गाय मेरे आगे हो गाय मेरे पीछे हो गाय मेरे हृदयमे स्थित रहे और गायोके बीचमे ही मैं सदा निवास करूँ—

गावो मे ह्यग्रत सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठत।
गावो मे हृदये सन्तु गवा मध्ये वसाम्यहम्॥

गोविन्दकी गाय

(दण्डी स्वामी श्री १०८ विपिनचन्द्रानन्द सरस्वतीजी 'जज स्वामी')

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नम ॥

भगवान् श्रीकृष्णको गौ अत्यन्त प्रिय है। भगवान्ने गिरिराज धारण करके इन्द्रके कोपसे गोप-गोपी एवं गायोंकी रक्षा की। अभिमान भंग होनेपर इन्द्र एवं कामधेनुने भगवान्को उपेन्द्र-पदपर अभिषिक्त किया और भगवान्का 'गोविन्द' नामसे विभूषित किया। गौ, ब्राह्मण तथा धर्मकी रक्षाके लिये ही भगवान् भूतलपर पधारते हैं—

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥
(रा० च० मा० १। १९२)

कृष्णलीलामें कुछ बड़े होते ही भगवान्ने गोवत्स-चारणके लिये यशोदा मैयासे आज्ञा माँगी। मैयाने कहा—'बेटा! अभी तुम छोटे हो पुरोहितजीसे मुहूर्त दिखायेंगे तब तुम जाना।' गोपाष्टमीपर मुहूर्त निकला। मैयाने प्रातःकालसे ही समस्त मङ्गल-कार्य किये और भगवान्को नहला-धुलाकर भलीभाँति सुसज्जित किया। सिरके ऊपर मोर-मुकुट, गलेमें माला तथा पीताम्बर धारण कराया। हाथमें बेत तथा नरसिंहा दिया, फिर जब चरणोंमें छोटी-छोटी जूतियाँ पहनाने लगीं तब ठाकुरजी बोले—'मैया! मैं इनको नहीं पहनूँगा यदि तू मेरी सारी गौओंको जूती पहना दे तो मैं इनको पहन लूँगा जब गैया धरतीपर नंगे पाँव चलेगी तो मैं भी नंगे पाँव जाऊँगा।' समस्त व्रजलीलामें भगवान्ने पदत्राण नहीं पहने, सिले हुए वस्त्र नहीं पहने और न कोई शस्त्र उठाया। फलस्वरूप भूदेवी भगवान्के नंगे पैरोंका निष्कण्टक एवं कोमल स्पर्श ही प्रदान करती थीं और अपनेको सौभाग्यशालिनी मानती थीं।

भगवान्ने गोमाताकी रक्षाके लिये क्या-क्या नहीं किया। उन्हें दावानलसे बचाया, ब्रह्माजीसे छुड़ाकर लाये, इन्द्रके कोपसे रक्षा की। 'गोधनकी सौं' शपथ प्रचलित करायी। 'मणिधर क्वचिदागणयन् गाः' वह अपने गलेमें पहनी हुई मणिमालाके मनकोंसे गायोंकी गिनती करके नन्दग्रामसे गोचारणके लिये चलते थे। वंशीकी ध्वनिसे प्रत्येक गायको नाम ले-लेकर पुकारते थे। समस्त गायें उनसे आत्मतुल्य प्रेम करती थीं।

श्रीमद्भागवतके अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण गायोंके समूहके पीछे-पीछे चलते थे। इस विषयपर हृदय-प्रदेशमें एक नया भाव समुद्भूत हुआ है, जो इस प्रकार है—गायोंसे एक भक्तने बातचीत की—

भक्त—गोमाता! तुम अपने इष्टदेवके आगे-आगे क्यों चलती हो? उनके तो पीछे-पीछे चलनेका विधान है।

गौ—आप भूल करते हैं। अधिष्ठान तो सदा पीछे ही रहता है।

भक्त—यह तो तुमने वेदान्तकी बात कह दी। चर्चा भक्त और भगवान्की है।

गौ—भगवान् मेरे इष्टदेव और संरक्षक हैं। भगवान्के द्वारा सुरक्षित एवं संचालित हम सब अपने गन्तव्य स्थानपर बिना भय और संकोचके शीघ्र पहुँच जाती हैं तो मैया हमारा दूध निकालकर, उबालकर, शीघ्र लालाको पिला देती है। भगवान् यदि हमसे आगे चलेंगे तो हमको अपने विवेक-पुरुषार्थ एवं बलका प्रयोग करके उनका अनुगमन करना पड़ेगा तब भय है कि हम कहीं मार्गमें पानी एवं घास देखकर विचलित हो जायँ, परंतु उनके द्वारा हाँके जानेपर हम निष्कण्टक राजमार्गपर निर्भय चली जाती हैं।

भक्त—यह तो आप ठीक कहती हैं, परंतु आगे-आगे चलनेपर तुम भगवान्के रूप-माधुर्यके दर्शनसे तो वञ्चित रह जाती हो।

गौ—भक्तजी! आप बड़े भोले हैं, भगवान् जब पीछे चलते हैं तो कभी-कभी मेरी पीठपर हाथ लगा देते हैं। कभी बेतसे मधुर स्पर्श कर देते हैं और हम अपना मुँह मोड़कर उनका दर्शन करके परमानन्दमें मग्न हो नेत्र बंद करके चलती रहती हैं। यदि भगवान् आगे चलेंगे तो हम उनके मुखारविन्दके दिव्य दर्शन और स्पर्श-सुखसे वंचित रह जायँगी। यदि भगवान्ने कभी गरदन मोड़कर हमारी

ओर देखा भी तो हमारे इष्ट प्रियतमको इसम कितना श्रम होगा। यह विचारणीय है।

भक्त—तुम्हारे सौभाग्यकी बात ता अलौकिक है, परतु तुम्हारा इस प्रकार चलना धर्म-विरुद्ध है। बडाक आगे नहीं, पीछ चला जाता है।

गो—धर्मशास्त्रक अनुसार मैं मुमूर्षु जीवोको वैतरणी पार करा देती हूँ, वह मेरी पूँछ पकडकर सरलतासे तर जाते है। मुझमे ओर मेरी पूँछमे यह शक्ति भगवान्क स्पर्शसे ही प्राप्त होती है।

भक्त—गोमाता। तुम्हारी बात ता अकाट्य है। फिर भी श्रेष्ठ पुरुषाको अपना पृष्ठ-अङ्ग दिखाते हुए चलना अनुचित है।

गौ—शास्त्रानुसार मेरा गोबर और मूत्र पवित्र हे परतु मेरा मुँह जूठा एव अपवित्र हे। अब बताओ कि मै अपने इष्टकी ओर पवित्र अङ्ग करूँगी अथवा अपवित्र? (यह सुनकर भक्तका सिर श्रद्धासे झुक जाता है।)

भारतवर्षम सनातनधर्मियाका अधिदववाद मोलिक सिद्धान्त है। जल स्थल, नक्षत्र दिशा देश पत्र पुष्प आदि मबम अधिदेवका वास बताया जाता है। वद कहते हैं—

'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।'

भगवान् श्रीकृष्णने गीताके दसव अध्यायमे अपना विभूतियाका सविस्तार वर्णन किया है। अतएव गङ्गा गीता गायत्री गोविन्द एव गौ हमारी सस्कृतिकी आधारशिलाके प्रतीक हैं। इस सम्बन्धम एक यह कथानक ह कि सृष्टि-रचनाके समय जब गौका निर्माण हुआ तब उसे देखकर सब दवता उसके रोम-रामम प्रविष्ट हो गय। लक्ष्मीजीको गौक गुह्य-स्थान आर गोबरम निवास मिला। इससे हमार देशम गासेवा और गादानका विशेष महत्त्व है। राजा दिलीपकी गोसेवा सुप्रसिद्ध हे। सत्यकाम जाबालने गासेवा करक ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त किया था। (छान्दाग्य-उपनिषद्)

एक कथाम वर्णन है कि एक ऋषि जलम डुबकी लगाय समाधिस्थ पड थे। व एक मछुवेक जालम फँस गये। बाहर निकालनेपर उन्ह दख सभी भयभीत हा गय। सूचना मिलनेपर देशका राजा उपस्थित हुआ, उसने ऋषिकी पूजा एव स्तुति की तथा सादर राज्यमे चलनका आग्रह किया। ऋषिने कहा—इस मछुवेका मेरे बराबर तौलकर धन दे दो तब हम चल सकते हैं। यह सुनकर राजाने ऋषिको तराजूके एक पलडेमे बिठाया और दूसरे पलडेम वह प्रचुर धन-धान्य-साना-चाँदी आदि रखता गया, परतु वह मब हलका रहा और ऋषिके भारका पलडा भारी रहा। निराश होकर राजाने ऋषिसे ही समाधानकी प्रार्थना की। ऋषि बोले—यह सब हमारे बराबर नहीं हो सकते। अमूल्य धन होनेस एक गौ अवश्य हमारे समान हो सकती ह। तब राजाने प्रसन्न होकर मछुवेको धन-धान्यसहित एक गो देकर सतुष्ट किया और ऋषिको अत्यन्त आदरपूर्वक अपने राजभवनमे ले गया।

गौके प्रति आध्यात्मिक दृष्टिके अतिरिक्त एक लौकिक एव आर्थिक दृष्टि भी है। भारतवर्ष एक कृषि-प्रधान देश रहा है। यहाँपर बैलासे खेती होती थी ओर गायके दूध, दही घी मक्खन,मट्ठेसे समस्त प्राणियाका पाषण होता था। गोबरमे मिट्टी आदि मिलाकर मकानापर पलस्तर एव फशकी सफाई की जाती थी। गोमूत्रसे सजीवनी-बटी आदि आयुर्वेदिक ओषधियाँ बनायी जाती हैं।

आजकल भारतमे बड़े-बडे उद्याग-धधाका प्रचलन है। अत इस समय तो गायका पालना एव उसक दूध दही घी आदिका प्रयोग करना देशवासियाक लिय अत्यन्त हितकारी तथा आवश्यक है। विदशाम जहाँ गोमास खानकी मामान्य रीति है वहाँ भी गापालन एव उसके दूधके सरक्षणपर स्वास्थ्य आर्थिक एव वैज्ञानिक दृष्टिसे पर्याप्त ध्यान दिया जाता है जबकि अपन दशम उसके आध्यात्मिक दृष्टिकाणका छाड उससे लोकिक लाभ प्राप्त करनकी भा उपक्षा हा रहा ह।

भारतवर्षम नगराम गाय रखना आज सचमुच एक समस्या बन गया है। गायक चार एव भूमिका कमी है। इसकी उचित व्यवस्था हाना आवश्यक है। नगरस बाहर अच्छी-अच्छी गौशालाआकी स्थापनाका प्रबन्ध किया जाना चाहिय। वहाँ अच्छी नस्लकी गाय और बछड पैदा कराये जायँ। गायोका पर्याप्त दाना-चारा मिल। उनकी स्वच्छता

सेवा और चिकित्साकी उचित व्यवस्था हो। नगरके जो लोग गाय पालना चाहे, वे अपनी गाय गौशालामे रख दे और उनके पालनका खर्चा दे। इन दूध देनेवाली गायोंके अतिरिक्त एक ऐसा अन्य विभाग भी होना चाहिये, जहाँ लूली, लँगडी, अपाहिज, बूढी गाय रह सके और उनपर होनेवाला खर्च दानी-मानी सज्जनोसे प्राप्त किया जाय। वर्तमान भारतीय सविधानकी धारा ४८ मे गोसवर्धनकी आज्ञा निर्धारित है। उसका पालन उत्साहपूर्वक किया जाना चाहिये।

दुर्भाग्यकी बात है कि देशवासियोकी कथनी और करनीमे बहुत अन्तर आ गया है। हम 'गोमाताकी जय' के नारे जोरसे लगाते हैं, परतु क्रिया करते समय अपने धर्म, सत्य और कर्तव्यको भूल जाते हैं। एक छोटा-सा उदाहरण देते हैं—

सन् १९८१ मे हमको काशीमे कुछ लबे समयतक रहनेका अवसर मिला। उन दिनो श्रद्धेय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी भूतलपर विराजमान थे। उनके दर्शनके लिये हम रिक्शामे बैठकर केदारघाट जा रहे थे। एक गाय रास्तेमे बैठी थी, जब वह रिक्शाकी घटी बजानेसे नहीं उठी तो रिक्शेवालेने पैरसे मारकर उसे उठा दिया। यह देखकर पासके दूकानदारोने हल्ला किया हाय-हाय गौके लात मारता है। इस घटनासे हमारे चित्तपर बडा प्रभाव पडा कि काशी हिन्दू-सस्कृतिका गढ है, देखो! यहाँ गौका कितना सम्मान है। दो-चार दिन पीछे हमे दशाश्वमेध-घाटकी सब्जी-मडीमे जानेका अवसर मिला तो वहाँ देखा—एक गाय किसी दूकानदारकी गोभीका फूल उठाकर ले जा रही थी तो दूकानदारने लाठी मारकर उससे अपना फूल छीन लिया। यह देखकर हमको विचार हुआ कि लोग समझते हैं कि गायको पैर लगाना पाप है, पर उसे लाठीसे मारना पाप नहीं है। गोवध होना अवश्य आपत्तिजनक है, परतु गायके द्वारा हमारे गोभीके फूलका खाया जाना उससे भी अधिक कष्टदायक है। अतएव हमारी गाये जबतक गली-कूचोमे मल खाती हुई और दूकानदारोद्वारा प्रताडित होकर घूमती हैं, तबतक उनकी केवल जय-जयकार करना निरर्थक है। जो लोग उनके दूधका उपयोग कर उन्हे खानेके लिये सडकपर खुला छोड देते हैं, तो उनकी गोसेवा विडम्बना नहीं तो क्या है!

हमारी सस्कृतिमे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चार पुरुषार्थ हैं। शास्त्रका आदेश है कि पुरुषार्थ काम और अर्थ धर्म-नियन्त्रित हो तथा धर्म मोक्षोन्मुख हो परतु आजकल प्राय अर्थ-नियन्त्रित धर्म तथा कामोन्मुख मोक्ष देखनेमे आता है। अर्थलाभ अथवा यशलाभके लिये धर्म-कार्यमे प्रवृत्ति होती है एव मोक्षके साधन ज्ञान और भक्तिका विनियोग प्राय कामकी पूर्तिमे ही किया जाता है। अतएव गोसेवाका धार्मिक प्रश्न आर्थिक दृष्टिको सम्मुख रखकर हल करना आवश्यक है। उदाहरणार्थ हमारा एक परिचित किसान था। वह बैलसे खेती करता था। उसका एक बैल बूढा हो गया। उस बूढे बैलका मूल्य दूसरा किसान ढाई सौ रुपये देता था, जबकि उसी बैलकी कीमत चार सौ रुपये देकर एक कसाई खरीदना चाहता था। ऐसी परिस्थितिमे उस किसानके सामने बडा धर्मसकट उपस्थित हुआ। बात हमारे पास आयी तो हमने कहा कि तुम वह बैल कसाईको मत बेचो। ढाई सौ रुपयेमे ही दूसरे किसानको दे दो शेष एक सौ पचास रुपये हमसे सहायतारूपमे लेकर अपना धर्म और अर्थ दोनो ही साधो। उसने ऐसा ही किया परतु यह समस्या एक-दो व्यक्तियोकी ही नहीं है सारे देशकी है। जो व्यक्तिगत सद्भावनासे हल नहीं की जा सकती। इस विषयपर गम्भीरतासे विचार करनेकी आवश्यकता है। देशके धर्म और सस्कृतिके सरक्षको मनीषियो एव विशेषकर गोविन्दके भक्तोको विचार करके ऐसा मार्ग प्रशस्त करना चाहिये, ऐसी शुभ योजना बनाकर जनताके सामने रखनी चाहिये, जिससे गोसेवाके लिये उत्साह बढे और उसके द्वारा धर्म और अर्थ दोनो पुरुषार्थोंकी सिद्धि सहजमे ही सुलभ हो सके, तभी गोविन्दकी गायकी सेवा भगवान्‌की प्रसन्नताकी हेतु बन सकेगी।

——॥॥——

गौकी तात्त्विक मीमासा और गो-सरक्षणकी महत्ता

(अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज)

गावो ममाग्रतो नित्य गाव पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवा मध्ये वसाम्यहम्॥

(महाभारत अनुशा० ८०। ३)

'गो' शब्द गाय पृथ्वी, सरस्वती, सूर्य तथा सूर्यरश्मिके अर्थमे प्रयुक्त है।

तुल्यनामानि देयानि त्रीणि तुल्यफलानि च।
सर्वकामफलानीह गाव पृथ्वी सरस्वती॥

(महाभा० अनु० ६९। ४)

'गाय भूमि और सरस्वती—ये तीना समान नामवाली है—इन तीनोका दान करना चाहिये। इन तीनाके दानका फल भी समान ही है। ये तीना वस्तुएँ मनुष्याकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करनेवाली ह।'

प्राप्त्या पुष्ट्या लोकसरक्षणन
गावस्तुल्या सूर्यपादै पृथिव्याम्।
शब्दश्चैक सततिश्चोपभोगा-
स्तस्माद् गोद सूर्य इवावभाति॥

(महाभा० अनु० ७१। ५४)

'प्राप्ति, पुष्टि तथा लोकरक्षा करनेके कारण गौएँ इस पृथ्वीपर सूर्यकी किरणाके समान मानी गयी हैं। एक ही 'गो' शब्द धेनु और सूर्य-किरणोंका बाधक है। गौआसे सतति और उपभोग प्राप्त होते हैं, अत गोदान करनेवाला मनुष्य किरणाका दान करनेवाले सूर्यके ही समान समझा जाता है।'

'गौरिति पृथिव्या नामधेयम्', 'आदित्योऽपि गौरुच्यते'

(निरुक्त २। २)

इसी प्रकार चन्द्र स्वर्ग दिशा जल नव (९) सख्या वृषभ माता और इन्द्रादि चौबीस अर्थोमे 'गा' शब्द प्रयुक्त है। निरुक्त (३। ९) के अनुसार उक्षा (सेक्ता-सींचनेवाला सोम) वशा (आदित्यरश्मियाका प्रकार-विशेष), मही (पृथ्वी) आदि 'गो' शब्दके विविध अर्थ हैं।

'पृथ्वी' सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वरकी सत्प्रधान अभिव्यक्ति है। 'सूर्य' उसकी चित्प्रधान अभिव्यक्ति है। 'चन्द्र' उसकी आनन्दप्रधान अभिव्यक्ति है। गोवशम परमेश्वरकी त्रिविध शक्तियाका सनिवश है। गौ 'स्वर्ग'-तुल्य सुखप्रद है। गारस आदिके द्वारा यह सबको सुख दती है। गोसेवा और गोदानक फलस्वरूप मिलनेवाले आभूत-सम्प्लव जनलोक, तपोलोक सत्यलोक और गोलाकरूप अक्षय्य लोकोकी प्रतिष्ठा गौके राम-रोमम है—

गाव स्वर्गस्य सोपान गाव स्वर्गेऽपि पूजिता।

(महाभा० अनु० ५१। ३३)

रोम्णि रोम्णि महाभाग लोकाश्चास्याऽक्षया स्मृता।

(महाभा० अनु० ७३। ३६)

गो-सेवाके फलस्वरूप प्राची-प्रतीची आदि दसों दिशाओमे गोसेवककी कीर्ति फैलती है तथा दिशाआका आधिपत्य प्राप्त होता है। इसमे परिलक्षित होता है कि गौमे दसा दिशाआकी प्रतिष्ठा है। 'जल' जीवन है। 'जल' रस है। गोमूत्र सर्वजलाम श्रेष्ठ है। गारस सर्वरसामें श्रेष्ठ है। गोरस यज्ञमे प्रयुक्त होकर पर्जन्य बनकर जन-जीवन सिद्ध करता है।

गौएँ ही सर्वोत्तम अन्नकी प्राप्तिमे कारण हैं। व ही देवताओका उत्तम हविष्य प्रदान करती हैं। स्वाहाकार (देवयज्ञ) और वषट्कार (इन्द्रयाग)—य दोनो कर्म सदा गौओपर ही निर्भर हैं।

नि सदेह गौएँ यज्ञफलरूपा हैं। उन्हींमे यज्ञाकी प्रतिष्ठा है। गौएँ ही भूत ओर भविष्य हैं। उन्हींकी रक्षा प्रतिष्ठा ओर सेवाके अनुसार भूत और भविष्यकी सिद्धि है। उन्हींम यज्ञ प्रतिष्ठित है—वे स्वय यज्ञस्वरूपा हैं।

अन्न हि परम गावा देवाना परम हवि।
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्य प्रतिष्ठितौ॥
गावो यज्ञस्य हि फल गोषु यज्ञा प्रतिष्ठिता।
गावो भविष्य भूत च गोषु यज्ञा प्रतिष्ठिता॥

(महाभा० अनुशा० ७८। ७-८)

गोभक्ताको धनदकी नव निधियोका स्वामित्व सुलभ होता है। सेवकके प्रति वात्सल्यसम्पन्न होनेके कारण तथा मातृवत् दुग्धपानसे सुपुष्ट करनेवाली होनेके कारण गौ 'माता' है।

'गो' शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग दोनोमे प्रयुक्त हाता है। 'गा' गायरूपसे विष्णुपत्नी भूदेवीका आधिदैविक रूप

होनेसे प्रतिष्ठा है और माता है। 'गो' वृषभरूपसे धर्मका आधिदैविक रूप होनसे विश्वकी प्रतिष्ठा है और वह सबका पिता है।

मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा ।
वृद्धिमाकाक्षता नित्य गाव कार्या प्रदक्षिणा ॥

(महाभा० अनुशा० ६९। ७)

गौर्मे माता वृषभ पिता मे दिव शर्म जगती मे प्रतिष्ठा।

(महाभा० अनुशा० ७६। ७)

गौएँ सम्पूर्ण प्राणियाकी माता हैं। वे सबको सुख देनेवाली है। जा अपने अभ्युदयकी इच्छा रखता हा, उसे गोआको सदा दाहिने करके चलना चाहिये।

गौएँ मेरी माता हैं। वृषभ (बैल) मरे पिता हैं। वे दोनो मुझ स्वर्गसुख तथा ऐहिक सुख प्रदान करे। गौएँ ही मेरा आधार है।

गो-सेवा और गोरस-सेवनसे प्रज्ञाशक्ति ओर प्राणशक्ति पुष्ट हाती हे। इन्द्रियामे अनुपम बलका सचार होता है। जेसे इन्द्रियोका प्रयोक्ता, प्रेरक और प्रकाशक जीवेश्वरकी अपेक्षा है, वेसे ही गौआको गोपालकी अपेक्षा हे। इन्द्रियासे प्रत्यक, प्रत्यगात्मा और अन्तरात्मा रहते हुए जैसे इन्द्रियोके प्रयोक्ता, प्रेरक और प्रकाशक जीवेश्वर होते हैं, वैसे ही गायाके पीछे रहते हुए गोपाल उनक प्रयोक्ता, प्रेरक और प्रकाशक होते हैं। इन्द्रियाँ जसे अनुग्राहक देवासे अधिष्ठित होनेसे देवमयी होती है, वैसे हा गौएँ प्रत्यङ्गमे प्रतिष्ठित अनुग्राहक देवासे अधिष्ठित होनेसे देवमयी हैं—

शृङ्गमूले स्थितो ब्रह्मा शृङ्गमध्ये तु केशव ।
× × ×
सर्वे देवा स्थिता देह सर्वदेवमयी हि गौ ॥

(बृहत्पराशरस्मृति ३। ३२ ३५)

'गो' पद 'वाक्' आर वाग्दवी सरस्वतीके अर्थम भी विनियुक्त हे। गोघृत आदि गोरससे वागिन्द्रियका पोषण होता है। इस दृष्टिसे गोकी वाग्रूपता सिद्ध है। ब्रह्मविद्याकी अधिष्ठात्री होनसे सरस्वती वाग्देवी हैं। ब्रह्माणी होनेस सरस्वती बुद्धिकी अधिष्ठात्री हैं। गोरस-सेवनस सत्त्वगुण उद्दीप्त हाता है। सत्त्वोद्रेकके कारण बुद्धि विशद होती है। इस दृष्टिस गाकी 'सरस्वती' सज्ञा है।

'गो' पद जहाँ वागर्थमे प्रयुक्त हाता है, वहाँ चन्द्र-अर्थमे भी 'गो' की वाग्रूपता सिद्ध की जा चुकी है। रसात्मक सोमकी ओषधि (अन्न)-रूपता वेद और व्यवहार-सिद्ध है। 'गो' की यज्ञरूपता, यज्ञकी पर्जन्यरूपता और पर्जन्यकी अन्नरूपताके कारण 'गो' की अन्नरूपता है। गोरस साक्षात् सोमरस और अन्न है।

यज्ञैरवाप्यत सोम स च गोषु प्रतिष्ठित ।

(महाभा० अनुशा० ७७। १४)

उक्त रीतिसे 'गो' की अन्नरूपता और चन्द्ररूपता सिद्ध है। वाक्से निष्पन्न पद 'नाम' है। मनके अनुग्राहक देव चन्द्र हे। मनसे निष्पन्न पदार्थ रूप है। नाम और रूप अधिभूत हे। आधिभौतिक रीतिसे जगत् नाम-रूपात्मक है। वाक् और मन—अध्यात्म हैं। आध्यात्मिक रीतिसे जगत् वाङ्मय ओर मनोमय है। वाक्के अनुग्राहक देव अग्नि हे। आधिदैविक रीतिसे जगत् अग्नि-सोमात्मक है। इस प्रकार 'गा' की विश्वरूपता सिद्ध है। इसी अभिप्रायसे 'गो' को विश्वकी प्रतिष्ठा कहा गया है—

'गर्भोऽमृतस्य जगतोऽस्य प्रतिष्ठा।'

(महाभा० अनुशा० ७६। १०)

गाव प्रतिष्ठा भूताना गाव स्वस्त्ययन महत्॥

(महाभा० अनुशा० ७८। ५)

'एतद्वै विश्वरूप सर्वरूप गोरूपम्'

(अथर्व० ९। ७। १। २५)

'गा' शब्द आत्मार्थक भी है। 'दुहन्ति सप्तैकाम्' (ऋग्वेद ८। ७२। ७)। 'आत्मबुद्धिसे गोदान करनेवाला गादानका अक्षय्य फल प्राप्त करता है।'

या वै यूय सोऽहमद्यैव भावो
युष्मान् दत्त्वा चाहमात्मप्रदाता।

(महाभा० अनुशा० ७६। १३)

आत्मा सच्चिदानन्द है। यह अन्नमय, प्राणमय, मनोमय विज्ञानमय और आनन्दमयको सत्ता (अस्तित्व), चित्ता (चतना) और प्रियता (आनन्द) प्रदायक है। अभिप्राय यह है कि अन्नमयादिकोश आत्माकी सत्ता, चित्ता और प्रियताके अभिव्यञ्जक हैं। गौएँ गारसप्रद होकर अन्नमयादिकी पाषक हैं। तैत्तिरीयोपनिषद्मे परोवरीयक्रमसे (उत्तरात्तर उत्कृष्टक्रमसे) अन्नमयादिकी आत्मरूपताका

उल्लेख है। आत्माभिव्यञ्जक अन्नमयादिकी अभिव्यञ्जक होनेसे 'गो' आत्मा है।

'गो' नाम 'ओम्'-तुल्य स्मरण करने योग्य है। दोनोंका अर्थ भी तुल्य ही है। ग्+अ+उ=गो। अ+उ+म्=ओम्। गो और ओम्‌में 'अ', 'उ'के योगसे निष्पन्न ओकी एकरूपता है। ओङ्कारगत 'म्' के स्थानपर गोपदमें गकार है। प्रणवगत 'अ' का अर्थ 'वैश्वानर', 'उ' का अर्थ 'हिरण्यगर्भ' और 'म्' का अर्थ प्राज्ञश्वर है। 'गो' गत 'अ' का अर्थ वैश्वानर और 'उ' का अर्थ हिरण्यगर्भ है। 'ग्' का अर्थ गणेश और शेष रहनेवाला अर्थात् शेष है। प्रलयमें शेष रहनेके कारण उपनिषदोंने गणेशको अव्याकृत-सञ्ज्ञक 'प्राज्ञेश' माना है—

अनिर्वाच्योऽप्रमेयः पुरातनो गणेशो निगद्यते।
स आद्यः सोऽक्षरः सोऽनन्तः सोऽव्ययो महान् पुरुषः॥

(गणेशोत्तरतापिन्युपनिषद् २। ४)

अनिर्वचनीया सैव माया जगद्बीजमित्याह।
सैव प्रकृतिरिति गणेश इति प्रधानमिति च मायाशबलमिति च॥

(गणेशोत्तर० ४। २)

प्रणवगत मकारके स्थानपर गकारका तथा तृतीयत्त्वके स्थानपर प्रथमत्वका व्यत्यास 'गो' नामके सकीर्तन, जप और स्मरणादिकी सर्वसुलभताके अभिप्रायसे है।

गाय सूर्य-चन्द्रके अंशसे प्रादुर्भूत है तथा प्रजापतिकी पुत्री है—'प्राजापत्याः', 'सौर्यास्तथा सौम्याः' (महा०, अनु० ७६। १०-११)। 'सूर्य' अग्निरूपसे भोक्ता है। 'चन्द्र' अन्नरूपसे भोग्य है। 'गो' चेतन होनेसे भोक्ता है और गोरसरूपसे भोग्य है।

'गच्छत्यनेन' के अनुसार 'गो' नाम अन्वर्थक है। गायको घूमना बहुत ही प्रिय है। गोष्ठ गोष्ठी, वात्सल्यादि शब्द गोमहिमाके द्योतक हैं। दृतिकण्ठ और ककुद्पृष्ठ (गलकम्बल-लडली और कूबडसे युक्त) सुपुष्ट गायोंको सुपात्रके प्रति सविधि देनेका अद्भुत माहात्म्य है। मरणासन्न व्यक्तिके निमित्त गोदान उसे वैतरणी (भवसिन्धु) से तारनेवाला माना गया है।

ध्यान रहे विश्वमें परम्परासे गोमांस-सेवन करनेवाली यवनादि जितनी भी जातियाँ हैं उनके पूर्वज श्रीवसिष्ठजीकी नन्दिनी नामक गोके श्रीविग्रहसे विश्वामित्रके चंगुलसे नन्दिनीकी रक्षाके लिये उसके सङ्कल्पसे उत्पन्न किये गये थे।

इस भौतिकवादी युगमें व्यक्तिका माता, पिता गुरु पुत्र और शिष्यादिमें भी सम्बन्ध शिथिल होता जा रहा है। उपयोगिताके आधारपर ही व्यक्ति किसीसे सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। यद्यपि भगवान्‌ने गौको यावज्जीवन और मरणोपरान्त भी उपयोगी बनाकर भेजा है, परंतु यह उपयोगिता भौतिकवादियोंके गले उतरे इसके लिये प्रयास अपेक्षित है। ईश्वरीय मङ्गलमय विधानमें संस्कारसे वस्तु और व्यक्तिकी उपयोगिता बढानेका पथ भी प्रशस्त है। ऐसी स्थितिमें बिहार, बंगाल, उडीसा आदिकी गायोंको देशी उत्तम कोटिके साँडोंके द्वारा उन्नत करना आवश्यक है। ट्रैक्टर भैंसा और ऊँट आदिने बैलोंकी उपयोगिता क्षीण कर दी है। अंडा आदि दूषित पदार्थ जरसी गाय भैंस और बकरी आदिने गायोंकी उपयोगिता क्षीण कर दी है। साथ ही गोचरभूमिकी अल्पता, महँगाईकी प्रबलता और गोभक्षकोंसे प्राप्त प्रलोभनकी प्रचुरता तथा शहरकी स्वच्छता आदिके नामपर एवं गोपालनमें प्रतिबन्धता आदिके कारण भी गोसेवा और रक्षामें न्यूनता छाती जा रही है। ऐसी स्थितिमें प्रत्येक तहसीलमें धनी-मानी गोभक्तोंके सहयोगसे एक गोशाला गोवंशको उन्नत करने तथा यावज्जीवन उनकी उपयोगिता सिद्ध करनेकी भावनासे खोलनेकी आवश्यकता है और दूसरी रुग्ण, घायल अङ्गहीन और वृद्ध होनेके कारण अनुपयोगी समझे जानेवाले गाय, बैल, बछिया बछडे आदिकी सेवाकी दृष्टिसे खोलनेकी आवश्यकता है तथा सुचारुरूपसे इनके संचालनकी आवश्यकता है। अराजक और शोषक तत्त्वोंसे इन गोशालाओंको सुरक्षित रखनेकी आवश्यकता तो है ही। परलोकमें आस्था अभिव्यक्त करनेवाले तथा देहनाशमें आत्माके अनाशको युक्तियुक्त ढंगसे सिद्ध करनेवाले ग्रन्थोंकी रचना और उनके प्रचार-प्रसारकी आवश्यकता है। जिनके अभावमें हर हिंदू नास्तिकताके ताण्डवनृत्यका ग्रास हो रहा है।

भारत स्वतन्त्र है, फिर भी दिन-प्रति-दिन गोहत्या बढ रही है। जब गोवंश ही शेष नहीं रहेगा तब 'गोहत्या बंद हो' यह घोष भी व्यर्थ हो सिद्ध होगा। यदि केवल गोहत्यारे विधर्मियोंका गोहत्यामें हाथ हो तो उन्हें कठोरतम दण्ड दिया जाय। यदि केवल सरकार गोहत्यारी

हो तो उस रसातलमे पहुँचा दिया जाय। यदि गोरक्षक और गोपूजक हिंदू गोहत्यारे हो तो उन्हे भी कठोरतम दण्ड दिया जाय। परतु जब तीना ही गोहत्यारे हा तो कौन किसको दण्ड दे!

ध्यान रहे, विदेशी दुर्नीति, सरकारकी तुष्टीकरणकी रीति और व्यापारियोकी अर्थलोलुपतासे भरी हुई दृष्टि—इन तीना हेतुओसे भारतमे गोहत्या हा रही है। गो, द्विज सुर, सत और भूदेवोका हृदय भारतपर सकटकी स्थिति जिन राजनेताओके द्वारा उत्पन्न की जा रहा है उन्हे सावधान रहना चाहिये, इन्हींकी रक्षाके लिये भगवान् अवतरित होते हैं, ऐसा ध्यान रखना चाहिये।

गाय 'अघ्न्या' है। इसका वध सर्वथा अनुचित है।

अघ्न्या इति गवा नाम क एता हन्तुमर्हति।
महच्चकाराकुशल वृषं गा वाऽऽलभेत् तु य ॥

(महाभा० शान्ति० २६२। ४७)

'श्रुतिमे गौआको अघ्न्या (अवध्य) कहा गया है। ऐसी स्थितिमे कौन उन्हे मारनेका विचार करेगा? जो पुरुष गाय और बैलाको मारता है, वह महान् पाप करता है।'

हिन्दुआके कर्णधार कहे जानेवाले अधिकाश राजनेता ही हिंदुआके सर्वनाशमे और शेष देशका भी खण्ड-खण्ड करनेमे तुले हैं। जब रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं, मार्गदर्शक ही भटक और भटका रहे हैं, तब क्या किया जाय! जब नरहत्या अवैध होनेपर भी नर गाजर-मूलीकी तरह आये दिन काटे जाते हैं, तब आंशिकरूपसे वैध गोवध कैसे बद किया जाय।

इस सदर्भमे यथाशीघ्र प्रभावशाली और सफल कार्यक्रम प्रस्तुत करनेकी आवश्यकता है।

ऊर्जस्विन्य ऊर्जमेधाश्च यज्ञे
गर्भोऽमृतस्य जगतोऽस्य प्रतिष्ठा।
क्षिते रोहे प्रवहे शश्वदेव
प्राजापत्या सर्वमित्यर्थवादा ॥
गावो ममैन प्रणुदन्तु सौर्या-
स्तथा सौम्या स्वर्गयानाय सन्तु।
आत्मानं मे मातृवच्चाश्रयन्तु
तथानुक्ता सन्तु सर्वाशिषो मे॥

(महाभा० अनुशा० ७६। १०-११)

'गौएँ उत्साहसम्पन्न, शक्ति और बुद्धिसे युक्त, यज्ञमे प्रयुक्त होनेवाले अमृत-स्वरूप हविष्यके उत्पत्तिस्थान इस जगत्की प्रतिष्ठा (आश्रय), पृथ्वीपर बैलाके द्वारा खेती उपजानेवाली, ससारके अनादि प्रवाहको प्रवृत्त करनेवाली और प्रजापतिकी पुत्री हैं। यह सब गौआकी प्रशसा है।

सूर्य और चन्द्रमाके अशसे प्रकट हुई वे गौएँ हमारे पापाका नाश करे। हमे स्वर्गादि उत्तम लोकाकी प्राप्तिमे सहायता दे। माताकी भाँति शरण प्रदान करे। जिन इच्छाओका इन मन्त्राद्वारा उल्लेख नहीं हुआ है और जिनका हुआ है, वे सभी गोमाताकी कृपासे पूर्ण हो।'

पूज्या गोमाता साक्षात् श्रीनारायण है

(माध्वगौडेश्वराचार्य गोसेवी श्रीअतुलकृष्णजी महाराज)

पूज्या गोमाता कोई साधारण पशु नहीं है। गोमाताएँ हमारी पूज्या और प्रात स्मरणीया हैं। ये जगदम्बा हैं। श्रीकृष्ण परब्रह्म भी पूज्या गोमाताको अपनी पूज्या माता मानकर अपने हाथासे उनकी सेवा करते हैं पूजा करते हैं, आरती करते हैं और उन्हे अपने प्राणासे भी प्यारी मानते हैं। गोरक्षा करनेके लिये ही निराकार परब्रह्म श्रीकृष्णके रूपमे प्रकट होते हैं। पूज्या गोमाता साक्षात् श्रीनारायण है। इनमे तथा श्रीनारायणमे कोई अन्तर नहीं है। जो श्रीनारायण हैं वही साक्षात् पूज्या गोमाता हैं। आज जो इस ऋषि-मुनियाके देश धर्मप्राण भारतमे नित्यप्रति हजारो-लाखोकी सख्यामे गोमाताएँ धडाधड काटी जा रही हैं, यह एक प्रकारसे बडा भारी घोर पाप किया जा रहा है। इस गोहत्यासे बढकर और कोई दूसरा घोर पाप नहीं है।

याद रखो, यह पूज्या गोमाता जो आज इस धर्मप्राण भारत देशमे धडाधड काटी जा रही हैं यह गोमाता नहीं काटी जा रही हैं अपितु यह तो साक्षात् श्रीनारायणकी

गर्दनपर छुरी चला रही है और एक प्रकारसे यह साक्षात् हमारे श्रीनारायण ही काटे जा रहे हैं। पूज्या गोमाताओंको आर्थिक दृष्टिसे देखना और बूढ़ी लँगडी-लूली अपाहिज तथा अनुपयोगी आदि बताकर इन्हें काटनेकी बात करना और काटनेकी सलाह देना तथा इनके काटनेका किसी भी प्रकारसे समर्थन करना—यह तो एक बड़ा ही घोर पाप है और यह अक्षम्य अपराध है। हमारे पूज्य साक्षात् भगवान् श्रीवेदने पूज्या गोमाताकी बडी भारी स्तुति की है। वेदोंमें इन्हें अघ्न्या बताया गया है—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय
मा गामनागामदितिं वधिष्ट ॥

(ऋ० ८। १०१। १५)

जिस पूज्या गोमाताकी साक्षात् वेद भगवान् स्तुति कर रहे हैं और गुणगान कर रहे हैं तथा जिसे 'अघ्न्या' बता रहे हैं वह पूज्या गाय क्या कोई साधारण पशु है। यदि पूज्या गोमाता साक्षात् श्रीनारायण नहीं होतीं तो क्या हमारे साक्षात् वेद भगवान् कभी गायकी इस प्रकारसे स्तुति करते? हमारे भगवान् श्रीवेदने तो पूज्या गोमाताकी हत्या करनेवाले पापात्माको प्राणदण्ड देनेका आदेश दिया है—

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥

(अथर्ववेद १। १६। ४)

'गोहत्यारेको सीसेकी गोलीसे मार देना चाहिये' ऐसा वेद भगवान्ने आदेश दिया है।

जबतक हमारी पूज्या गोमाताकी इस देशमें हत्या होती रहेगी, तबतक भला इस देशमें सुख-शान्तिकी क्या आशा? जिस देशमें जिस भूमिमें पूज्या गोमाताके रक्तका एक बिन्दु भी गिरता है उस भूमिमें किये गये योग, यज्ञ, जप, तप, दान, पुण्य, भजन-पूजन आदि सब-के-सब शुभ कर्म व्यर्थ हो जाते हैं और निष्फल हो जाते हैं। यदि देशमें सुख-शान्ति चाहते हो तो इस गोहत्याके काले कलङ्कको अविलम्ब बंद करानेका भरसक प्रयत्न करो।

गायकी रक्षाके लिये ही साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परमात्मा गोविन्दके रूपमें प्रकट हुआ करते हैं।

गोदुग्धकी विलक्षण महिमा

याद रखो, पूज्या गोमाताका दुग्ध कोई अन्य पशुओंके दूधकी भाँति साधारण दुग्ध नहीं है। गोदुग्धकी बडी अद्भुत विलक्षण महिमा है। गोदुग्ध साक्षात् अमृत है, इसमें तनिक भी संदेह करनेकी आवश्यकता नहीं है। आप भले ही कितने ही कालतक खूब योग करें, साधना करें और नाना प्रकारकी घोर तपस्या करें, इनमें आपको सफलता मिले या न मिले संदेह हो सकता है, पर यदि आप यह सब योग-साधना, तपस्या आदि कुछ भी न कर बस खाली ६ महीनेतक श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नित्यप्रति पूज्या गोमाताकी अपने हाथोंसे सेवा कर गोमाताका गोदुग्ध-पान करें तो आपकी गोदुग्धके अमृत-पान करनेसे स्वतः ही समाधि लगने लगेगी। यह गोदुग्ध-पान करनेकी अद्भुत विशेषता है। गोदुग्धमें यह दिव्य गुण है और गोदुग्धकी ऐसी अद्भुत विलक्षण महिमा है।

आजके बहुतसे भारतीय हिन्दू अपनी पूज्या प्रातः-स्मरणीया गोमाताकी और उसके दुग्धकी अद्भुत विलक्षण महिमाको भुलाकर, अमृतके समान उस गोदुग्धको छोडकर भैंस-बकरीके दुग्धको महत्त्व दे रहे हैं, पी रहे हैं तथा डिब्बेका दूध पी रहे हैं और चायकी चुसकी ले रहे हैं, यह हमारे घोर अधःपतनका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं तो और क्या है। जिस गोमाताके परम पवित्र अमृतके समान गोदुग्धका पान करनेसे अनेक प्रकारके रोग-शोक स्वतः ही शान्त हो जाते हैं और जिस गोमाताके गोदुग्धके पान करनेसे अनायास ही समाधि लगने लगती है तथा प्राणीकी बुद्धि सात्त्विक और निर्मल होकर प्रभु-भजनमें संलग्न होने लगती है, लोक-परलोक दोनों बन जाते हैं, उसी गोमाताको काटकर आज उनके गोमांसके डिब्बे विदेशोंको भेज-भेजकर डालर कमाये जा रहे हैं और उस रुपयेसे देशोन्नतिका स्वप्न देखा जा रहा है यह कैसे आश्चर्यकी और कैसे घोर दुःखकी बात है?

गोवध-वारण हमारा पवित्र कर्तव्य है

(अनन्तश्रीविभूषित ऊर्ध्वाम्नाय श्रीकाशी-सुमेरुपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीचिन्मयानन्द सरस्वतीजी महाराज)

'गो' का अर्थ गाय, पृथ्वी, इन्द्रिय, किरण तथा रत्न आदि होता है। पृथ्वीको धारण करनेवाली विप्र, वेद, सती आदि सात वस्तुओंमें गौका उल्लेख सर्वप्रथम है। अघ्न्या, रोहिणी, माहेन्द्री, इज्या, कल्याणी, दोग्ध्री, शतौदना, घटोध्नी, पावनी बहुला, भद्रा अदिति, जगती, इन्द्राणी, अर्च्या, ज्योति कामदुघा विश्रुता चन्द्रा, वशा पर्जन्यपत्नी, आतिथेयी यज्ञपदी, विश्वायु सावित्री सरस्वती आदि गौके प्रसिद्ध पर्याय हैं।

'गौ' का यौगिक अर्थ गतिशील है—'गच्छति इति गौ '—जो चलती है—गतिशील है, वह गौ है। सम्पूर्ण संसार गतिशील होनेसे गोरूप है। विश्वकी आध्यात्मिकी और आधिदैविकी अभिव्यक्ति गौ है। इसकी रक्षासे विश्वरक्षा और इसकी हत्यासे विश्वहत्या सुनिश्चित है। गोरस आदिमें विश्वका पोषण करनेवाली गौकी जहाँ लौकिक उपयोगिता है वहाँ गोसेवा गोदान और गोरक्षा आदिके फलस्वरूप गोलोक आदिको देनेवाली गौका पारलौकिक उपयोगिता भी शास्त्रसिद्ध है।

'एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्' (अथर्ववेद, शौनकसंहिता ९। ७। १। २५) के अनुसार गौ विश्वरूप—सर्वरूप है। उपनिषदोंमें त्रिगुणको धेनु गोमयको विद्या, गोमूत्रको उपनिषद् और वत्सको स्मृति माना गया है—

विद्याशक्तिः समस्तानां शक्तिरित्यभिधीयते।
गुणत्रयाश्रया विद्या सा विद्या च तदाश्रया॥
गुणत्रयमिदं धेनुर्विद्याभूद् गोमयं शुभम्।
मूत्रं चोपनिषत्प्रोक्तं कुर्याद् भस्म ततः परम्॥
वत्सस्तु स्मृतयश्चास्य तत्सम्भूतं तु गोमयम्।

(बृहज्जाबालोपनिषद् ३। १—३)

आर्यभूमि, सनातनभूमि, हिन्दुभूमि, वैदिकभूमि, देवभूमि, यज्ञभूमि कर्मभूमि, अवतारभूमि—इस भारतमें गोवंशकी उपेक्षा और हत्या महान् आश्चर्य और अपराध है। यह स्पष्ट ही लोकहत्या है। गोरस यज्ञमें प्रयुक्त होकर सुवृष्टिके द्वारा सर्वोपकारक सिद्ध होता है। विदुरनीतिके अनुसार गोसेवकको दो घडीके पश्चात् गायकी खोज-खबर लेनी ही चाहिये। तभी गौओंकी सेवा और सुरक्षा सम्भव है। साकर्यदोषसे गोवंशको बचानेके लिये जरसी साँडोंके सम्पर्कमें आनेसे देशी गौओंको बचाना बहुत ही आवश्यक है। विदेशी दुरभिसंधि और उसके ग्रास-लाञ्छित राजनेताओंके कारण दिन-प्रति-दिन हिन्दुओंकी मानसिकता विकृत होती जा रही है। जिसके फलस्वरूप देशी गोवंशकी योजनाबद्ध हत्या हो रही है। गोहत्या स्वतन्त्र भारतके लिये दुर्भाग्यपूर्ण अभिशाप है।

समृद्ध गोशालाओंके माध्यमसे गोसेवा और गोसरक्षण जहाँ आवश्यक है, वहाँ बूचडखाने आदिके माध्यमसे होनेवाली गोवंशकी हत्याका पूर्ण निवारण भी आवश्यक है। उशीनर, विष्वगश्व नृग भगीरथ, मान्धाता मुचुकुन्द, भूरिद्युम्न नल सोमक, पुरूरवा, भरत और श्रीरामके राज्यमें पूर्ण पोषण और संरक्षणको सम्प्राप्त गौएँ तथा श्रीकृष्णचन्द्रके द्वारा पालित-पोषित गौएँ आज यान्त्रिकविधाका आलम्बन लेकर प्रतिवर्ष लाखोंकी संख्यामें काटी जा रही हैं, यह जघन्य अपराध है महापाप है। इससे देशको मुक्त करना हमारा पूर्ण कर्तव्य है। गोवंशकी एक इकाईकी हत्या भी हमें असह्य है।

गो-ग्रास-दानकी महिमा

बैलोंको जगत्का पिता समझना चाहिये और गौएँ संसारकी माता हैं। उनकी पूजा करनेसे सम्पूर्ण पितरों और देवताओंकी पूजा हो जाती है। जिनके गोबरसे लीपनेपर सभा-भवन, पौंसले, घर और देवमन्दिर भी शुद्ध हो जाते हैं, उन गौओंसे बढ़कर और कौन प्राणी हो सकता है? जो मनुष्य एक सालतक स्वयं भोजन करनेके पहले प्रतिदिन दूसरेकी गायको मुट्ठी भर घास खिलाया करता है, उसको प्रत्येक समय गौकी सेवा करनेका फल प्राप्त होता है।

(महा०, आश्वमेधिकपर्व, वैष्णवधर्म०)

गोसेवासे ही सुखकी प्राप्ति

(जगद्‌गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीश्यामनारायणाचार्यजी)

आज दश दु खी है—प्रजा दु खी है तथा सत-महात्मासहित सारा चराचर जगत् दु खी ह। इसका एकमात्र कारण है गोमाताका दु खी हाना। जबसे भारत एव अन्यान्य देशोम गोवध होने लगा है तबसे समस्त विश्वकी प्रजा—जीव-जन्तु दु खी रहने लगे हैं। राजाका धर्म होता है प्रजाकी रक्षा करना, परतु आजका शासक प्रजाको दु खी देखकर चुप लगाकर बेठ जाता है, क्याकि शासकमे स्वय दशक प्रति निष्ठा सद्भावना एव समझदारी नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिये क्या नहीं करना चाहिये। गोमाताकी सवा करना तो अलगकी बात है।

गोसेवाकी शिक्षा स्वय श्रीरामजी अयोध्यावासियोको देते हुए कहत हैं—'मं इस रामावतारमे 'गोसवा' नहीं कर सका। लोगान मुझे महाराज श्रीदशरथजीका पुत्र समझकर गोसेवा नहीं करने दिया इसलिये म गासेवाके लिये ही अगला कृष्णावतार धारण करूँगा।' आगे भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाम सबसे अधिक गासेवाका ही वर्णन किया गया है। लाखा सत-महात्माओने गारक्षाके लिये अपने प्राणाकी आहुति दे दी, परतु आजतक 'गोवध' बद नहीं हो सका। लाग कहते हैं—मुसलमान बहुत बुरे ह। गायोका वध करते हे परतु मुसलमानासे कहीं अधिक आज देशका अधिकतर हिन्दू दापी है। अपन घरके माता-पिता जब वृद्धावस्थाको प्राप्त हा जाते है तब उनको घरस बाहर कर देते हैं क्या? भले हो बुरे हो कैसे भी हा, परतु माता-पिताकी सेवा करनी ही पडगी। आज प्राय हर जगह यही हा रहा है। किसीने पाँच हजारकी गो खरीदी, और दा साल बाद दूध कम देनेके कारण उसन गोमाताका तीन हजारम ही बेच दिया। उसी गायका दूसरे साल दूसरे सज्जनने दो हजारमे बेच दिया। इसी प्रकार धीरे-धीरे वह गोमाता ज्या-ज्यो जीर्ण होती गयी, त्यो-त्यो उसे कम दामोमे बेचते हुए एक दिन कसाईक हाथो बेचकर वधका शिकार बना दिया। आज देशका प्रत्येक हिन्दू अपने-अपने घरोमे एक-एक गौ रखनेका तथा किसी भी हालतमे गोको न बेचनेका सकल्प करे तो स्वत ही वह सुखी हो जायगी। गोसेवासे अपुत्री पुत्रको, धनहीन व्यक्ति धनको प्राप्त करता है तथा किसी भी कामनासे गौकी सेवा करनेवाला मनोऽभिलषित फलको प्राप्त करता है। गौ-सेवासे सत्यकाम जाबाल आदिको ब्रह्मज्ञान-प्राप्तिकी बात प्रसिद्ध ही है।

गौसे हमारा आध्यात्मिक सम्बन्ध भी है। मरनेके बाद गौ वैतरणी पार कराती है। इसलिये गौ सदैव पूज्या है। गाका दूध सात्त्विक ह और बुद्धि-बलको बढानेवाला है तथा इसके अलावा सभी जानवराका दूध रजोगुणी है जो मन-बुद्धिम विकार उत्पन्न करता है। परीक्षाकी दृष्टिसे देख तो सैकडो गायाके बीचम आपकी गाय बँधी हो तो उस समय अपने गायके बछडको खाल दीजिये, वह बछडा सेकडो गायाके बीचमे भी अपनी माँको ढूँढ लेगा। भैंसका पाडा दस भेसोके बीचमे बँधी अपनी माँको नहीं ढूँढ पायेगा। गाय भयकर गर्मीमे भी जगलाम चरकर आती है। उसे तनिक भी गर्मी नहीं लगती। भैंस माघक महीनेम भी थोडी-सी गर्मी पडी उसी वक्त चाहे गदा पानी-कीचड क्या न हो उसम जाकर लोटने लगेगी। इस प्रकार हर दृष्टिस गौ माता पूज्या है। गाकी सेवासे ही सुख-शान्ति प्राप्त हो सकता ह।

गौओका दूध जूठा नही होता

गौओका दूध बछड़ाक पीनसे जूठा नहीं होता। जैसे चन्द्रमा अमृतका सग्रह करके फिर उसे बरसा देता है, उसी प्रकार ये रोहिणी गौएँ अमृतस उत्पन्न दूध देती ह। जैस वायु, अग्नि, सुवर्ण, समुद्र और देवताआका पीया हुआ अमृत—ये वस्तुएँ उच्छिष्ट नहीं होतीं उसी प्रकार बछड़ाक पीनपर उन बछड़ाक प्रति स्नेह रखनेवाली गौ भी दूषित या उच्छिष्ट नहीं होती। (तात्पय यह कि दूध पीते समय बछडक मुँहस गिरा हुआ झाग अशुद्ध नहा माना जाता।)

(महाभा० अनु० ७७। २४—२६ई)

गोमहिमा

(अनन्तश्रीविभूषित तमिलनाडुक्षेत्रस्थ काञ्चीकामकोटिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीजयेन्द्र सरस्वताजा महाराज)

सनातन वैदिक धर्म ही हमारा धर्म है। इसका मूल ग्रन्थ है वेद। इसकी घोषणा है 'मातृदवो भव'।

प्रत्येक व्यक्तिक जीवनम चार माताएँ होती हैं—पहली है जन्मदात्री जननी, दूसरी गोमाता तीसरी भूमाता और चौथी है जगन्माता परमेश्वरी।

बच्चाको माताके दूधक स्थानपर विराजता है गोमाताका दूध। यह बालासे लेकर बूढोतक सभीका पूर्णाहार होता है। गायाके शरीरमे चौदह लोक विराजत हैं। 'गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश'—यह स्मृतिवाक्य इसकी उद्घोषणा करता है। सूर्यवशक महाराज दिलीपने भी गोसरक्षण करके ही पुत्रलाभ प्राप्त किया, यह एक पौराणिक कथा है। जब विश्वामित्र महर्षि वसिष्ठके दर्शन करने आये थे तब दैवी गौ कामधेनुने स्वादिष्ट भाजका प्रबन्ध कर दिया।

अत गायाकी महिमा अवर्णनीय होती ह। गाय सभी देवताओका निवास-स्थान है। गायाका शरीर खासकर इसका पृष्ठ-भाग श्रामहालक्ष्मीजीका निवास-स्थान है। श्रीमहालक्ष्मी तो आर्थिक सम्पत्तिकी अधिष्ठात्री देवता हाती हैं। अत गायाकी हिसा होती है तो वह रुष्ट हा उठगी और आर्थिक सम्पत्तिकी हानि कर डालगी।

बूढी माताआके समान ही बूढी गायाकी भी सवा-शुश्रूषा करना हमारा कर्तव्य है। गोहत्या माने मातृहत्या ही है। जबतक गायाके दूध-दही-घीक खाने-पीनेकी रीति थी, तबतक मनुष्यको 'कैन्सर'स पीडा नहीं थी क्याकि गायाकी हर वस्तु कृमिनाशक शक्तिसे भरपूर हाती है। इसीलिय घराक अदर-बाहर भी गोमयसे शुद्धि कर दते थे।

'पञ्चगव्यप्राशन महापातकनाशनम्।' यह है स्मृति-घोषणा। पञ्चगव्य है सर्वपापविनाशक। गायकी खादसे उत्पन्न किये जानेवाले खाद्य भी सात्त्विक थे। अत किसीको भी गायाकी हिसा नहीं करनी है। इस जगत्‌म जैसे शिशुआके अङ्गहीनोके, बूढाके, विधवाआके रक्षणालय होते हैं, वैस ही गायाक भी सरक्षणालय होन चाहिये। अत हर एकको चाहे वह नगरवाला हा या ग्रामवाला हो गायकी महिमा समझा लेना है, समझानेक लिये जहाँ-तहाँ पशु-सरक्षणालयाकी स्थापना अनिवार्य है।

'कल्याण'का 'गोसेवा'-विशेपाङ्क इसकी ओर जनताका ध्यान आकर्षित करनेम सफल विराजे।

नारायणस्मृति ।
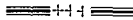
यतो गावस्ततो वयम्

(स्वामी श्रीआकारानन्दजी महाराज सदस्य बदरी-केदार-मन्दिर-समिति)

नि स्वार्थ सवाभावकी चूडान्त आदर्श 'गौ' की सार्वभौमिक उपादेयताको परिभापित करना पुरुपके पौरुपसे परे है क्योकि स्वय अपौरुपेय वद भी जिसका गुणानुवाद गा रहे हैं—

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नम ।
बालेभ्य शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये त नम ॥
यया द्यौर्यया पृथिवी ययापो गुपिता इमा ।
वशा सहस्रधारा ब्रह्मणाच्छावदामसि ॥

(अथर्व० १०। १०। १ ४)

'हे अवध्य गौ। जन्म लेते समय तुम्हारा वन्दन और जन्म हो जानेपर भी तुम्हे प्रणाम। तुम्हारे स्वरूप राम ओर खुरोको भी नमस्कार। जिसने द्युलाक, पृथ्वी और जलाका सुरक्षित रखा ह, उस सहस्रा धाराआसे दूध देनेवाली गौको लक्ष्यम रखकर हम स्तोत्रका पाठ करत हे।'

यूय गावो मेदयथा कृश चिदश्रीर चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्र गृह कृणुथ भद्रवाचा बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥

(अथर्व० ४। २१। ६)

'गौआ। तुम दुर्बल शरीरवाले व्यक्तिको हृष्ट-पुष्ट कर

देती हो एव निस्तेजको देखनेम सुन्दर बना देती हो। इतना ही नहीं, तुम अपने मधुर शब्दसे हमारे घराको मङ्गलमय बना देती हा। इसी कारण सभाओम तुम्हारा यशोगान हाता रहता है।'

भारतीय सस्कृति और दर्शनके केन्द्र-विन्दु उपनिषद्का यह आख्यान जिसमे विश्वजित्-यज्ञम सर्वस्व दान करनेवाले वाजश्रवाके पुत्रने जब अपने पिताको देखा कि वे ब्राह्मणाको दक्षिणाम बूढी गाय दे रहे हैं, तब नचिकेताकी आस्तिक्य-बुद्धि अपन पिताके हितमे जाग्रत् हो जाती है और वह सोचता हे—

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदाहा निरिन्द्रिया ।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥

(कठ० उप० १।३)

'जो जल पी चुकी हैं, घास खा चुकी हैं जिनका दूध भी दुह लिया गया है तथा जिनम बच्चा जन्म देनेकी सामर्थ्य नहीं रही, ऐसी गायाका दान करनेसे वह दाता उस निम्नलोकम जाता हे जा आनन्दसे सर्वथा शून्य है।'

गाके प्रति विचार-मन्थन इस तीव्र अभिव्यक्तिके फलस्वरूप पिताके क्रोधकी परवाह किये विना नचिकेताने पूछ ही लिया—'**कस्मै मा दास्यसीति**' मुझे आप दक्षिणार्थ किसे दगे? और प्रत्युत्तरम पिताने कहा—'मै तुझे मृत्युका दूँगा।' कठोपनिषद्का यह लबा आख्यान और उसके पमुख पात्र नचिकेताका गौ-विषयक चिन्तन गोदान तथा गोसेवाकी महिमाको प्रकट करता है। महाभारतमे भगवान् वदव्यास ता यहाँतक कहते हैं कि—

गोकुलस्य तृषार्तस्य जलान्ते वसुधाधिप।
उत्पादयति या विघ्न तमाहुर्ब्रह्मघातकम्॥

(महा० आश्व० वैष्णव०)

'जो प्यासस व्याकुल गायाको जल पीनेसे राकता है उसे ब्रह्मघातक कहा जाता है।'

'*यद्गृहे दु खिता गाव स याति नरक नर*' की भावनाम श्रद्धा करनेवाली हिन्दू-सस्कृति इस सिद्धान्तपर विश्वाम करती है कि गोरक्षा ही एकमात्र देशोन्नतिका मूल साधन है।

प्राचीन कालम धन ही समृद्धिका सूचक था। जिसके पास जितना अधिक गोधन होता था, वह उतना ही यशस्वी माना जाता था। *श्रीमद्भागवतम कहा गया है—*

धेनूना रुक्मशृङ्गीणा साध्वीना मौक्तिकस्रजाम्।
पयस्विनीना गृष्टीना सवत्साना सुवाससाम्॥
ददौ रूप्यखुराग्राणा क्षौमाजिनतिलै सह।
अलकृतभ्या विप्रेभ्यो बद्व बद्व दिने दिने॥

(१०।७०।८-९)

तात्पर्य यह कि भगवान् श्रीकृष्ण प्रतिदिन सध्या-तर्पण और गुरुजन-पूजनोपरान्त सद्य -प्रसूता दुधारू, बछडोवाली सौम्य, शान्त गौआका दान करते। उस समय उन्हे सुन्दर वस्त्र और मोतियोकी माला पहना दी जाती। सींगमे सोना और खुराम चाँदी मढ दी जाती। वे ब्राह्मणोको वस्त्राभूषणोसे सुसज्जित करके रेशमी वस्त्र, मृगचर्म और तिलके साथ प्रतिदिन तेरह हजार गौएँ इस प्रकार दान करते।

वाल्मीकीय रामायणके अनुसार भगवान् रामने वन जानेके पूर्व विनोदम त्रिजट नामक ब्राह्मणको अपना डडा घुमाकर फके गये हजारो गायाके झुडके मध्य आनेवाली सभी गाय दान कर दी थीं—

स तीर्त्वा सरयूपार दण्डस्तस्य कराच्च्युत ।
गोव्रजे बहुसाहस्रे पपातोक्षणसनिधौ॥

(वा० रा० अयो० ३२। ३८)

महाभारतके विराट-पर्वके आख्यानमे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि धमराज युधिष्ठिर कितने निष्ठावान् गोसेवी थे। अज्ञातवासके उन दिनोमे कीचककी मृत्युके पश्चात् जब दुर्योधन पाण्डवाके अन्वेषणके लिये सम्मति चाहता है तो कौरव-पक्षके वरिष्ठ नायक पितामह भीष्म अपना मन्तव्य स्पष्ट करत हुए कहते हैं—

गावश्च बहुलास्तत्र न कृशा न च दुर्बला ।
पयासि दधिसर्पींषि रसवन्ति हितानि च॥

(महा० विराट० २८। २२)

जिस जनपदमे युधिष्ठिर निवास कर रहे होगे वहाँ गायाकी सख्या बहुत बढी होगी वे गौएँ न तो कमजोर होगी और न दुर्बल बल्कि वे पूर्ण स्वस्थ हागी तथा उनके दुग्धादि पदार्थ भी सुमधुर एव लाभप्रद होगे।

इस संक्षिप्त विवेचनसे ही हम तात्कालिक भारतकी समृद्धिका किंचित् आकलन कर सकते हैं।

परमात्माने मानवको बौद्धिक एवं आत्मिक गुणोंसे सम्पन्न कर धरतीपर इस आशासे भेजा है कि वह सृष्टिको सौन्दर्य प्रदान करनेमें उसकी कल्पनाको साकार बनायेगा पर कैसी विडम्बना है कि अपने स्वार्थ-साधनामें उलझकर अपनी हठ-बुद्धिके कारण वह न केवल संसारको कुरूप बना रहा है वरन् अपनेको अमानवीय घोषित करनेमें गौरवका अनुभव कर रहा है। आज हमने वैदेशिक सभ्यताके अंधानुकरण और अपनी ही दुर्बलताओंके कारण 'मानव-मात्रकी धाय—गाय' को आदर देनेमें कमी कर दी। तभी हम दिग्भ्रान्त पथिककी भाँति इधर-उधर दीख रहे हैं। अपनी संस्कृतिके प्रति निष्ठावान् न होना सत्य-सनातन धर्मके लिये भारी आघात सिद्ध हुआ। हम अपनी ही आस्थासे टूट गये तो संसार पथ-भ्रष्ट क्यों न होगा।

हम भारतीय ही थे जिन्होंने कभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का यह उद्घोष कि 'हम समस्त पृथ्वीको आर्य (सुसंस्कृत) बनायेंगे' कहकर समूचे विश्वको न केवल ज्ञान दिया वरन् संसारमें फैलकर उसे सुसंस्कृत भी बनाया, पर विडम्बना है कि आज हम भारतीय संस्कृतिके सर्वथा प्रतिकूल चलकर स्वयं ही अपने पाँवोंपर कुल्हाडी मारनेकी उक्तिको चरितार्थ कर रहे हैं। गौके सम्मानके आदर्शने ही हमें समस्त मानव-जातिमें गौरवमय स्थानपर प्रतिष्ठित किया था।

इस नश्वर शरीरके प्रति अपनी आस्था एवं स्पृहाकी अवहेलना प्रकट कर सिंहके समक्ष अपने शरीरको मांसके पिण्डकी भाँति पटककर गौकी रक्षा करनेवाले रघुवंश महाकाव्यके महानायक महाराज दिलीपकी भावनामें छिपे रहस्यको हमें समझना होगा।

महाराज जनकका विमान यमराजकी संयमनीपुरीके निकटसे होकर जा रहा था। विमान अभी आगे बढ़नेको ही था कि नरककी यन्त्रणाओंको भोगते हजारों नारकीयोंके करुण स्वर जनकको सुनायी दिये—'राजन्! आप यहाँसे न जायँ, आपके शरीरका स्पर्शकर आनेवाली वायुसे हमें शान्ति मिल रही है।' इस करुण पुकारको सुनकर महाराज जनकने अपने जीवनभरके पुण्य प्रदान कर समस्त नारकीय जीवोंको मुक्त किया। अन्तमें जब जनकने धर्मराजसे पूछा—'मैंने कौन-सा ऐसा पाप किया था जो मुझे नरकद्वारतक लाया गया?'

यमराजने कहा—'राजन्! तुम्हारा तो समस्त जीवन पुण्योंसे भरा पड़ा है, परंतु—

एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्॥

(पद्म० पाता०)

'एक बार तुमने चरती हुई गायके कार्यमें विघ्न डाला था, उसी पापके कारण तुम्हें नरकका द्वार देखना पड़ा।'

इस उपाख्यानसे महर्षि व्यासदेव मानवमात्रको उद्बोधित करना चाहते हैं कि गौकी सेवामें विश्वास न करनेवालोंका इहलोक ही नहीं परलोक भी बिगड़ जाता है।

अपनी जीवन-यात्राके लिये न्यूनतम पदार्थ स्वीकार कर परोपकारके लिये अधिकतम त्याग करनेकी अपरिग्रही भावनाका परम आदर्श है गौ। उसके गोबर, मूत्र सींग, त्वचा, खुर हड्डियाँ, बाल—सभी किसी-न-किसी रूपमें उपयोगी हैं ही। कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें गोपालन और गो-संरक्षणका व्यापक वर्णन मिलता है। गोधनका धार्मिक महत्त्व तो ऋतम्भरा प्रज्ञाद्वारा ही अनुभवगम्य है, पर गोसरक्षण अर्थकी वृद्धिमें प्रमुख भूमिका निभाता है। गोधन 'अर्थ' और 'धर्म' दोनोंका प्रबल पोषक है। अर्थसे 'काम'की सिद्धि होती है और 'धर्म'से मोक्षकी।

गौ, विप्र, वेद, सती, सत्यवादी निर्लोभी और दानी—इन सप्त महाशक्तियोंके बलपर पृथ्वी टिकी है, तब फिर गौके माहात्म्यको कहाँतक समझा जाय। इन सातोंमें भी गौको मुख्य बतलानेके लिये उसका प्रथम परिगणन किया गया है—

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही॥

वेद-शास्त्र-पुराण और महर्षियोंकी ये वाणियाँ—ये वचन हमें गौके सम्मानके प्रति कितना आकृष्ट कर पायेंगे यह कहना तो कठिन कार्य है, क्योंकि हम गौकी प्रतिष्ठामें कहे गये धम्मपद, कुरान बाईबिल और गुरुग्रन्थसाहब

देती हो एव निस्तेजका दखनम सुन्दर बना दती हो। इतना ही नहीं, तुम अपने मधुर शब्दसे हमारे घराको मङ्गलमय बना देती हो। इसी कारण सभाआम तुम्हारा यशोगान होता रहता ह।'

भारतीय सस्कृति और दर्शनके केन्द्र-विन्दु उपनिपद्का यह आख्यान जिसमं विश्वजित्-यज्ञम सर्वस्व दान करनेवाले वाजश्रवाके पुत्रने जब अपने पिताको देखा कि वे ब्राह्मणाको दक्षिणामे बूढी गाय दे रहे हैं, तब नचिकेताकी आस्तिक्य-बुद्धि अपने पिताके हितम जाग्रत् हो जाती है और वह सोचता ह—

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदाहा निरिन्द्रिया ।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥

(कठ० उप० १। ३)

'जो जल पी चुकी हैं, घास खा चुकी हैं, जिनका दूध भी दुह लिया गया है तथा जिनम बच्चा जन्म दनकी सामर्थ्य नहीं रही, ऐसी गायाका दान करनसे वह दाता उस निम्नलाकम जाता ह जो आनन्दसे सर्वथा शून्य है।'

गाके प्रति विचार-मन्थन इस तीव्र अभिव्यक्तिके फलस्वरूप पिताके क्रोधकी परवाह किय बिना नचिकताने पूछ ही लिया—'कस्मै मा दास्यसीति' मुझ आप दक्षिणार्थ किसे दगे? और प्रत्युत्तरम पिताने कहा—'मैं तुझे मृत्युको दूँगा।' कठोपनिषद्का यह लबा आख्यान और उसक प्रमुख पात्र नचिकेताका गौ-विषयक चिन्तन गोदान तथा गोसेवाकी महिमाको प्रकट करता है। महाभारतम भगवान् वेदव्यास तो यहाँतक कहते हैं कि—

गोकुलस्य तृषार्तस्य जलान्ते वसुधाधिप।
उत्पादयति यो विघ्न नमाहुर्ब्रह्मघातकम्॥

(महा० आश्व० वैष्णव०)

'जो प्याससे व्याकुल गायाको जल पीनेसे रोकता है उस ब्रह्मघातक कहा जाता है।'

'यद्गृहे दु खिता गाव स याति नरक नर ' की भावनामे श्रद्धा करनेवाली हिन्दु-सस्कृति इस सिद्धान्तपर विश्वास करती है कि गारक्षा ही एकमात्र दशोनतिका मूल साधन है।

प्राचीन कालम धन ही समृद्धिका सूचक था। जिसके पास जितना अधिक गोधन हाता था, वह उतना ही यशस्वी माना जाता था। श्रीमद्भागवतम कहा गया है—

धेनूना रुक्मशृङ्गीणा साध्वीना मौक्तिकस्रजाम्।
पयस्विनीना गृष्टीना सवत्साना सुवाससाम्॥
ददौ रूप्यखुराग्राणा क्षौमाजिनतिलै सह।
अलकृतभ्या विप्रेभ्यो बद्व बद्व दिने दिने॥

(१०। ७०। ८-९)

तात्पर्य यह कि भगवान् श्रीकृष्ण प्रतिदिन सध्या-तर्पण और गुरुजन-पूजनोपरान्त सद्य-प्रसूता दुधारू, बछडावाली सौम्य, शान्त गौआका दान करते। उस समय उन्हे सुन्दर वस्त्र और मोतियोकी माला पहना दी जाती। सींगम सोना और खुराम चाँदी मढ दी जाती। वे ब्राह्मणोको वस्त्राभूपणासे सुसज्जित करके रेशमी वस्त्र मृगचर्म और तिलके साथ प्रतिदिन तेरह हजार गौएँ इस प्रकार दान करते।

वाल्मीकीय रामायणके अनुसार भगवान् रामने वन जानेके पूर्व विनोदम त्रिजट नामक ब्राह्मणको अपना डडा घुमाकर फके गये हजारो गायोके झुडक मध्य आनेवाली सभी गाय दान कर दी थीं—

स तीर्त्वा सरयूपार दण्डस्तस्य कराच्च्युत ।
गोव्रजे बहुसाहस्त्रे पपातोक्षणसनिधौ॥

(वा० रा० अयो० ३२। ३८)

महाभारतके विराट-पर्वके आख्यानसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि धर्मराज युधिष्ठिर कितने निष्ठावान् गोसेवी थे। अज्ञातवासके उन दिनोम कीचककी मृत्युके पश्चात् जब दुर्योधन पाण्डवोके अन्वेषणके लिये सम्मति चाहता है ता कौरव-पक्षके वरिष्ठ नायक पितामह भीष्म अपना मन्तव्य स्पष्ट करते हुए कहते हैं—

गावश्च बहुलास्तत्र न कृशा न च दुर्बला ।
पयासि दधिसर्पीषि रसवन्ति हितानि च॥

(महा० विराट० २८। २२)

जिस जनपदमे युधिष्ठिर निवास कर रहे होगे वहाँ गायाकी सख्या बहुत बढी होगी, वे गौएँ न तो कमजोर होगी और न दुर्बल बल्कि वे पूर्ण स्वस्थ हागी तथा उनके दुग्धादि पदार्थ भी सुमधुर एव लाभप्रद होगे।

इस सक्षिप्त विवेचनसे ही हम तात्कालिक भारतकी समृद्धिका किंचित् आकलन कर सकते हे।

परमात्मान मानवको बौद्धिक एव आत्मिक गुणोसे सम्पन्न कर धरतीपर इस आशासे भेजा है कि वह सृष्टिको सौन्दर्य प्रदान करनेमे उसकी कल्पनाको साकार बनायेगा, पर कैसी विडम्बना है कि अपने स्वार्थ-साधनाम उलझकर अपनी हठ-बुद्धिके कारण वह न केवल ससारको कुरूप बना रहा है वरन् अपनेको अमानवीय घोषित करनेम गौरवका अनुभव कर रहा है। आज हमने वैदेशिक सभ्यताके अधानुकरण ओर अपनी ही दुर्बलताआके कारण 'मानव-मात्रकी धाय—गाय' को आदर देनेम कमी कर दी। तभी हम दिग्भ्रान्त पथिककी भाँति इधर-उधर दीख रहे ह। अपनी सस्कृतिके प्रति निष्ठावान् न होना सत्य-सनातन धर्मके लिये भारी आघात सिद्ध हुआ। हम अपनी ही आस्थासे टूट गये तो ससार पथ-भ्रष्ट क्या न होगा!

हम भारतीय ही थे, जिन्हाने कभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का यह उद्घाप कि 'हम समस्त पृथ्वीको आर्य (सुसस्कृत) बनायगे' कहकर समूच विश्वको न केवल ज्ञान दिया वरन् ससारम फैलकर उसे सुसस्कृत भी बनाया पर विडम्बना हे कि आज हम भारतीय सस्कृतिक सर्वथा प्रतिकूल चलकर स्वय ही अपने पाँवोपर कुल्हाडी मारनेकी उक्तिको चरितार्थ कर रहे हैं। गोके सम्मानक आदर्शने ही हम समस्त मानव-जातिम गौरवमय स्थानपर प्रतिष्ठित किया था।

इस नश्वर शरीरके प्रति अपनी आस्था एव स्पृहाकी अवहेलना प्रकट कर सिहके समक्ष अपने शरीरको मासके पिण्डकी भाँति पटककर गौकी रक्षा करनेवाले रघुवश महाकाव्यके महानायक महाराज दिलीपकी भावनामे छिप रहस्यको हमे समझना होगा।

महाराज जनकका विमान यमराजकी सयमनीपुरीके निकटसे हाकर जा रहा था। विमान अभी आगे बढनेको ही था कि नरककी यन्त्रणाओको भागत हजारो नारकीयाके करुण स्वर जनकको सुनायी दिये—'राजन्! आप यहाँसे न जायँ आपके शरीरको स्पर्शकर आनवाली वायुसे हम शान्ति मिल रही है।' इस करुण पुकारको सुनकर महाराज जनकने अपने जीवनभरके पुण्य प्रदान कर समस्त नारकीय जीवाको मुक्त किया। अन्तमे जब जनकने धर्मराजसे पूछा—'मेने कोन-सा ऐसा पाप किया था जो मुझे नरकद्वारतक लाया गया?'

यमराजने कहा—'राजन्! तुम्हारा ता समस्त जीवन पुण्यासे भरा पडा है, परतु—

एकदा तु चरन्तीं गा वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्॥
(पद्म० पाता०)

'एक बार तुमने चरती हुई गायके कार्यमे विघ्न डाला था, उसी पापके कारण तुम्ह नरकका द्वार देखना पडा।'

इस उपाख्यानसे महर्षि व्यासदेव मानवमात्रको उद्बोधित करना चाहते हैं कि गौकी सेवामे विश्वास न करनेवालाका इहलाक ही नहा परलाक भी बिगड जाता है।

अपनी जीवन-यात्राके लिये न्यूनतम पदार्थ स्वीकार कर परोपकारके लिये अधिकतम त्याग करनेकी अपरिग्रही भावनाका परम आदर्श है गो। उसके गोबर, मूत्र, सींग, त्वचा, खुर, हड्डियाँ, बाल—सभी किसी-न-किसी रूपमे उपयोगी हैं ही। कौटिल्यके अर्थशास्त्रम गोपालन और गो-सरक्षणका व्यापक वर्णन मिलता है। गोधनका धार्मिक महत्त्व ता ऋतम्भरा प्रज्ञाद्वारा ही अनुभवगम्य है, पर गोसरक्षण अर्थकी वृद्धिमे प्रमुख भूमिका निभाता है। गोधन 'अर्थ' ओर 'धर्म' दानोका प्रबल पोषक है। अर्थसे 'काम'की सिद्धि होती है और 'धर्म'से मोक्षकी।

गो, विप्र वेद, सती सत्यवादी, निर्लोभी और दानी—इन सप्त महाशक्तियोक बलपर पृथ्वी टिकी है, तब फिर गौके माहात्म्यको कहाँतक समझा जाय! इन सातामे भी गोका मुख्य बतलानके लिये उसका प्रथम परिगणन किया गया है—

गोभिर्विप्रैश्च वदैश्च सतीभि सत्यवादिभि ।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यत मही॥

वद-शास्त्र-पुराण और महर्षियाकी ये वाणियाँ—ये वचन हम गोके सम्मानके प्रति कितना आकृष्ट कर पायेगे यह कहना तो कठिन कार्य है, क्याकि हम गौकी प्रतिष्ठाम कह गये धम्मपद, कुरान, बाईबिल और गुरुग्रन्थसाहब

आदि धर्मग्रन्थोकी भाषा सुननेमे आना-कानी कर रहे हे तो राष्ट्रपिताके ये शब्द कि 'गोरक्षा आज जिस ढगसे हा रही है उसे देखकर मेरा हृदय एकान्तमे रोता है' या ये शब्द कि *'गाय कहूँ या तुमको माय?'* ,क्या हमारे लिये मात्र अरण्य-रोदन नहीं होगे?

तथापि निराशावादी दृष्टिकोण मनुकी सतानोको शोभा नहीं देता, अत आइये महर्षि वसिष्ठके शब्दामे अपनी निष्ठा प्रकट करते हुए हम भी कहे—

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृग्य पयोमुच ।
सुरभ्य सौरभेय्यश्च सरित सागर यथा॥
गा वै पश्याम्यह नित्य गाव पश्यन्तु मा सदा।
गावोऽस्माक वय तासा यतो गावस्ततो वयम्॥

'नदियाँ जिस प्रकार समुद्रमे जा मिलती हैं, उसी प्रकार सुनहरी शृगावाली ओर दूध देनेवाली गौएँ मुझे प्राप्त हो। ऐसा हो कि में नित्य गौआको देखूँ और गौएँ मेरी ओर देखे, कारण, गोएँ हमारी हे ओर हम गौओके हे, 'गोएँ हैं, इसीसे हमलोग भी हैं।'
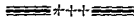
गोमाता भारतकी आत्मा है

(अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रीजी महाराज)

गौ समस्त प्राणियोंकी परम श्रेष्ठ शरण हे, यह सम्पूर्ण विश्वकी माता है—'सर्वेषामव भूताना गाव शरणमुत्तमम्', 'गावो विश्वस्य मातर ।' यह निखिलागमनिगमप्रतिपाद्य सर्ववन्दनीया एव अमितशक्तिप्रदायिनी दिव्यस्वरूपा है। कोटि-कोटि देवताआकी दिव्य अधिष्ठान है। इसकी पूजा समस्त देवताओकी पूजा है। इसका निरादर समस्त देवताओका निरादर है। यह भारतीय सस्कृतिकी प्रतीक-स्वरूपा है। परम दिव्यामृतको देनेवाली सकलहितकारिणी तथा सम्पूर्ण विश्वका पोषण करनेवाली हैं। इसकी आराधनासे सकल देववृन्द एव विश्वनियन्ता भगवान् श्रीसर्वेश्वर अतिशय प्रसन्न होते हैं। तभी तो वे व्रजराजकिशोर 'गोपाल' एव 'गोविन्द' बनकर व्रजके वनोपवनोमे, गिरिराजकी मनोरम घाटियोमे तथा कालिन्दीके कमनीय कूलापर नगे चरणो असख्य गोसमूहोके पीछे-पीछे अनुगमन करते हुए उनकी सेवाम निरत रहा करते थे। अग्निपुराण (२९२। १८) म कहा गया है—

गाव पवित्र परम गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गाव स्वर्गस्य सोपान गावो धन्या सनातना ॥

'गायें परम पवित्र परम मङ्गलमयी स्वर्गकी सापान सनातन एव धन्यस्वरूपा हैं।'

गया हि तीर्थे वसतीह गङ्गा
पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मी करीषे प्रणतौ च धर्म-
स्तासा प्रणाम सतत च कुर्यात्॥
(विष्णुधर्मो० २। ४२। ५८)

'गौ-रूपी तीर्थम गङ्गा आदि सभी नदिया तथा तीर्थोका आवास है, उसकी परम पावन धूलिमे पुष्टि विद्यमान है उसके गोमयम साक्षात् लक्ष्मी हे तथा इन्हे प्रणाम करनेमे धर्म सम्पन्न हो जाता है। अत गोमाता सदा-सर्वदा प्रणाम करन योग्य हे।'

शास्त्रोम स्थल-स्थलपर गौकी गरिमा महिमा एव सर्वोपादेयता निर्दिष्ट की गयी है। गौका दर्शन, स्पर्श आर अर्चन परम पुण्यमय है। गायके स्पर्शमात्रसे आयु बढती है। भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन श्रीश्यामसुन्दरने गाण्डीवधारी अर्जुनको महाभारतके अनुशासन-पर्व (५१। २७। ३२) म इस प्रकार उपदेश किया है—

कीर्तन श्रवण दान दर्शन चापि पार्थिव।
गवा प्रशस्यते वीर सर्वपापहर शिवम्॥
निविष्ट गोकुल यत्र श्वास मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति त देश पाप चास्यापकर्षति॥

'गामाताकी पुण्यमयी महिमाका कीर्तन, श्रवण दर्शन एव उसका दान सम्पूण पापाको दूर करता है। निर्भय हाकर जिस भूमिपर गाय श्वास लेती है वह परम शाभामयी है वहाँसे पाप पलायित हा जाता है।'

भगवान् मनुने गोदानका फल कितना उत्कृष्ट बताया है—

'अनडुह श्रिय पुष्टा गोदो ब्रध्नस्य विष्टपम्'

अर्थात् 'बैलको देनेवाला अतुल सम्पत्ति तथा गायको देनेवाला दिव्यातिदिव्य सूर्यलोकको प्राप्त करता हे।'

जिस भारतके धर्म, सस्कृति और विविध शास्त्र तथा सर्वद्रष्टा तत्त्वज्ञ ऋषि-मुनियो एव आप्त महापुरुषोंके अनेक उपदेश गोमाताकी दिव्य महिमासे ओत-प्रोत हैं, जिस भारतकी पुण्य वसुन्धरा सदा-सवदासे गोके विमल यशसे समग्र विश्वमे अपनी दिव्य धवलिमा आलोकित करती आयी है, जिस भारतमे अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक, सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर भी 'गोपाल' बनकर गोमहिमाकी श्रेष्ठता, सर्वमूर्द्धन्यता बतलाते हैं, उस पवित्र भारतकी दिव्य अवनि गोदुग्ध, गोदधि, गोघृतके स्थानपर गोमाताके रक्तसे रजित की जा रही है। हमारी जनतन्त्र सरकार प्रतिदिन हजारो-हजार गायाको विविध प्रकारसे निर्दयतापूर्वक भीषण यान्त्रिक यातनाओंके द्वारा मौतके घाट उतारती है। कैसा अकल्पनीय घोर अत्याचार है। जहाँ शास्त्र इस प्रकारका सदेश दता है—'अन्तकाय गोघातकम्' अर्थात् गोघातकको प्राणदण्ड दिया जाना चाहिये। और अथर्ववेदका कहना है—

यदि नो गा हसि यद्यश्व यदि पूरुषम्।
त त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥

'यदि तू हमारी गौ, घोडे एव पुरुषोकी हत्या करता है तो हम सीसेकी गोलीसे तुझे बींध देगे, जिससे तू हमार वीरोका वध न कर सके।'

—वहाँ हत्याकी तो बात दूर रही गौकी ताडना, उसे अपशब्द कहना, पैरसे आघात करना, भूखी रखना तथा कठोरतासे हाँकना आदिका भी शास्त्रोमे निषेध किया गया है। इस सम्बन्धम वेदादि निखिल शास्त्रोका एक स्वरसे महान् उद्घोष है, किंतु महाघोर दु खका विषय है कि उसके सर्वथा विपरीत आचरण करनेवाली हमारी सरकार भारतकी सस्कृति आर धर्मको ठुकराकर मदान्धतासे गोहत्याके जघन्यतम कृत्यम सलग्न हे। क्या उसे अतीतका इतिहास स्मरण नहीं है? हिरण्यकशिपु, रावण, कुम्भकर्ण, शिशुपाल तथा कसादिका अभिमान चूर-चूर होकर विनष्ट हो गया। उनके अत्याचारका भीषण परिणाम उन्हे भोगना पडा। अतएव सत्ताके महामदमे आकर सन्मार्गको नहीं छोड बैठना चाहिये।

अहिसाके पोषक भारतके शीर्षस्थ नता लोकमान्य तिलक आर महात्मा गाँधीके उपदेशोको विस्मरण कर सरकारका स्वेच्छाचारिताका अवलम्ब लेना देशकी महान् प्रतिष्ठाको गहरी खाईमें डालना है। भारतकी सम्पूर्ण जनताकी इस पवित्र माँगकी सरकार उपेक्षा करती जा रही है। यह लाकतन्त्रका महान् उपहास और स्वार्थपरताका प्रत्यक्ष उदाहरण है। सरकार नाना प्रकारके तर्कहीन हेतु बता-बताकर भ्रान्त धारणामे डालकर स्वार्थ-सिद्धिके चक्करम है, किंतु यह भारतकी धर्मप्राण जनता धर्मके महत्त्वको भली प्रकार जानती है और अपनी गोमाताकी रक्षाके लिये सर्वस्व बलिदान करनेमें कभी पीछे नहीं रहेगी।

सरकारको अब भी देशकी समृद्धि तथा प्रतिष्ठाको ध्यानम रखते हुए सम्पूर्ण गोवधपर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये। धार्मिक सास्कृतिक एव आर्थिक आदि सभी दृष्टियोसे गामाता परमोपकारिणी है, इसका विनाश राष्ट्रका विनाश है। यह भारतकी अतुलनीय अमूल्य सम्पत्ति है, अत इसकी रक्षा राष्ट्रकी रक्षा है।

गवा सेवा तु कर्तव्या गहस्थै पुण्यलिप्सुभि ।
गवा सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥

अर्थात् प्रत्यक पुण्यकी इच्छा रखनेवाले सद्गृहस्थको गायाकी सेवा अवश्य करनी चाहिये, क्योकि जा नित्य श्रद्धा-भक्तिस गायाकी प्रयत्नपूर्वक सेवा करता हे उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही वृद्धिका प्राप्त होती है और नित्य वर्धमान रहती है।

'मै यह चाहता हूँ कि लोग बलिकी अपेक्षा दयाको अधिक महत्त्व दे तथा यह समझे कि जोशमे आकर बलिदान समर्पण करनेकी अपेक्षा परमात्माका अधिकाधिक ज्ञान ही प्रथम वाञ्छनीय है।'—(हासिया ६। ६)

आदि धर्मग्रन्थोकी भाषा सुननेमे आना-कानी कर रहे है तो राष्ट्रपिताके ये शब्द कि 'गोरक्षा आज जिस ढगसे हो रही है उसे देखकर मेरा हृदय एकान्तमे रोता है' या ये शब्द कि *'गाय कहूँ या तुमको माय?'* क्या हमारे लिये मात्र अरण्य-रोदन नहीं होगे?

तथापि निराशावादी दृष्टिकोण मनुकी सतानाको शोभा नहीं देता, अत आइये महर्षि वसिष्ठके शब्दोमे अपनी निष्ठा प्रकट करते हुए हम भी कहे—

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृग्य पयोमुच ।
सुरभ्य सौरभेय्यश्च सरित सागर यथा॥
गा वै पश्याम्यह नित्य गाव पश्यन्तु मा सदा।
गावोऽस्माक वय तासा यतो गावस्ततो वयम्॥

'नदियाँ जिस प्रकार समुद्रमे जा मिलती हैं, उसी प्रकार सुनहरी शृगोवाली और दूध देनेवाली गौएँ मुझे प्राप्त हो। ऐसा हो कि मैं नित्य गौओको देखूँ और गौएँ मेरी ओर देखे कारण, गौएँ हमारी हैं और हम गौओके हैं, 'गौएँ हैं, इसीसे हमलोग भी हैं।'
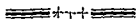
गोमाता भारतकी आत्मा है

(अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रीजी महाराज)

गौ समस्त प्राणियोकी परम श्रेष्ठ शरण है, यह सम्पूर्ण विश्वकी माता है—'सर्वेषामेव भूताना गाव शरणमुत्तमम्', 'गावो विश्वस्य मातर ।' यह निखिलागमनिगमप्रतिपाद्य सर्ववन्दनीया एव अमितशक्तिप्रदायिनी दिव्यस्वरूपा है। कोटि-कोटि देवताओकी दिव्य अधिष्ठान है। इसकी पूजा समस्त देवताओकी पूजा है। इसका निरादर समस्त देवताओका निरादर है। यह भारतीय सस्कृतिकी प्रतीक-स्वरूपा है। परम दिव्यामृतको देनेवाली सकलहितकारिणी तथा सम्पूर्ण विश्वका पोषण करनेवाली है। इसकी आराधनासे सकल देववृन्द एव विश्वनियन्ता भगवान् श्रीसर्वेश्वर अतिशय प्रसन्न होते हैं। तभी तो वे व्रजराजकिशोर 'गोपाल' एव 'गोविन्द' बनकर व्रजके वनोपवनामे, गिरिराजकी मनोरम घाटियामे तथा कालिन्दीके कमनीय कूलापर नगे चरणा असख्य गोसमूहोके पीछे-पीछे अनुगमन करते हुए उनकी सेवामें निरत रहा करते थे। अग्निपुराण (२९२। १८) मे कहा गया है—

गाव पवित्र परम गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गाव स्वर्गस्य सोपान गावो धन्या सनातना ॥

'गायें परम पवित्र परम मङ्गलमयी, स्वर्गकी सोपान सनातन एव धन्यस्वरूपा हैं।'

गवा हि तीर्थे वसतीह गङ्गा
पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मी करीषे प्रणतौ च धर्म-
स्तासा प्रणाम सतत च कुर्यात्॥
(विष्णुधर्मो० २। ४२। ५८)

'गौ-रूपी तीर्थमे गङ्गा आदि सभी नदियो तथा तीर्थोका आवास है, उसकी परम पावन धूलिमे पुष्टि विद्यमान है, उसके गोमयमे साक्षात् लक्ष्मी है तथा इन्हे प्रणाम करनेमे धर्म सम्पन्न हो जाता है। अत गोमाता सदा-सर्वदा प्रणाम करने योग्य है।'

शास्त्रामे स्थल-स्थलपर गौकी गरिमा, महिमा एव सर्वोपादयता निर्दिष्ट की गयी है। गौका दर्शन, स्पर्श और अर्चन परम पुण्यमय है। गायके स्पर्शमात्रसे आयु बढती है। भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन श्रीश्यामसुन्दरने गाण्डीवधारी अर्जुनको महाभारतके अनुशासन-पर्व (५१। २७। ३२) मे इस प्रकार उपदेश किया है—

कीर्तन श्रवण दान दर्शन चापि पार्थिव।
गवा प्रशस्यते वीर सर्वपापहर शिवम्॥
निविष्ट गोकुल यत्र श्वास मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति त देश पाप चास्यापकर्षति॥

'गोमाताकी पुण्यमयी महिमाका कीर्तन श्रवण दर्शन एव उसका दान सम्पूर्ण पापाको दूर करता है। निर्भय होकर जिस भूमिपर गाय श्वास लेती है वह परम शोभामयी है वहाँसे पाप पलायित हो जाता है।'

भगवान् मनुने गोदानका फल कितना उत्कृष्ट बताया है—

'अनडुह श्रिय पुष्ट गोदो ब्रध्नस्य विष्टपम्'

अर्थात् 'बैलको देनेवाला अतुल सम्पत्ति तथा गायको देनेवाला दिव्यातिदिव्य सूर्यलोकको प्राप्त करता है।'

जिस भारतके धर्म, सस्कृति और विविध शास्त्र तथा सर्वद्रष्टा तत्त्वज्ञ ऋषि-मुनियो एव आप्त महापुरुषोंके अनेक उपदेश गोमाताकी दिव्य महिमासे ओत-प्रोत हैं, जिस भारतकी पुण्य वसुन्धरा सदा-सवदासे गौके विमल यशसे समग्र विश्वम अपनी दिव्य धवलिमा आलोकित करती आयी है, जिस भारतम अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक, सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर भी 'गोपाल' बनकर गोमहिमाकी श्रेष्ठता, सर्वमूर्द्धन्यता बतलाते हैं, उस पवित्र भारतकी दिव्य अवनि गोदुग्ध, गोदधि, गोघृतके स्थानपर गोमाताके रक्तसे रजित की जा रही है। हमारी जनतन्त्र सरकार प्रतिदिन हजारो-हजार गायाको विविध प्रकारसे निर्दयतापूर्वक भीषण यान्त्रिक यातनाओके द्वारा मौतके घाट उतारती है। कैसा अकल्पनीय घोर अत्याचार है। जहाँ शास्त्र इस प्रकारका सदेश देता है—'अन्तकाय गोघातकम्' अर्थात् गोघातकको प्राणदण्ड दिया जाना चाहिये। और अथर्ववेदका कहना है—

यदि नो गा हसि यद्यश्व यदि पूरुषम्।
त त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥

'यदि तू हमारी गौ, घोडे एव पुरुषाकी हत्या करता है तो हम सीसेकी गोलीसे तुझे बींध देग, जिससे तू हमारे वीराका वध न कर सके।'

—वहाँ हत्याकी तो बात दूर रही गौकी ताडना उसे अपशब्द कहना, पैरसे आघात करना, भूखी रखना तथा कठोरतासे हाँकना आदिका भी शास्त्रोमे निषेध किया गया है। इस सम्बन्धमे वेदादि निखिल शास्त्राका एक स्वरस महान् उद्घोष है, किंतु महाघोर दु खका विषय है कि उसके सर्वथा विपरीत आचरण करनेवाली हमारी सरकार भारतकी सस्कृति और धर्मको ठुकराकर मदान्धतासे गोहत्याके जघन्यतम कृत्यम सलग्न है। क्या उसे अतीतका इतिहास स्मरण नहीं है? हिरण्यकशिपु, रावण कुम्भकर्ण, शिशुपाल तथा कसादिका अभिमान चूर-चूर होकर विनष्ट हो गया। उनके अत्याचारका भीषण परिणाम उन्हे भोगना पडा। अतएव सत्ताके महामदमे आकर सन्मार्गको नहीं छोड बैठना चाहिये।

अहिसाके पोषक भारतके शीर्षस्थ नेता लोकमान्य तिलक और महात्मा गाँधीके उपदेशाको विस्मरण कर सरकारका स्वच्छाचारिताका अवलम्ब लेना देशकी महान् प्रतिष्ठाको गहरी खाईमे डालना है। भारतकी सम्पूर्ण जनताकी इस पवित्र माँगकी सरकार उपेक्षा करती जा रही है। यह लोकतन्त्रका महान् उपहास और स्वार्थपरताका प्रत्यक्ष उदाहरण है। सरकार नाना प्रकारके तर्कहीन हेतु बता-बताकर भ्रान्त धारणाम डालकर स्वार्थ-सिद्धिके चक्करम है, किंतु यह भारतकी धर्मप्राण जनता धर्मके महत्त्वको भली प्रकार जानती है और अपनी गोमाताकी रक्षाके लिये सर्वस्व बलिदान करनेमें कभी पीछे नही रहेगी।

सरकारको अब भी देशकी समृद्धि तथा प्रतिष्ठाको ध्यानमे रखते हुए सम्पूर्ण गोवधपर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये। धार्मिक सास्कृतिक एव आर्थिक आदि सभी दृष्टियोसे गोमाता परमोपकारिणी है, इसका विनाश राष्ट्रका विनाश है। यह भारतकी अतुलनीय अमूल्य सम्पत्ति है, अत इसकी रक्षा राष्ट्रकी रक्षा है।

गवा सेवा तु कर्तव्या गहस्थै पुण्यलिप्सुभि।
गवा सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥

अर्थात् प्रत्येक पुण्यकी इच्छा रखनेवाले सद्गृहस्थको गायोकी सेवा अवश्य करनी चाहिये, क्योकि जो नित्य श्रद्धा-भक्तिसे गायाकी प्रयत्नपूर्वक सेवा करता है उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही वृद्धिको प्राप्त होती है और नित्य वर्धमान रहती है।

'मै यह चाहता हूँ कि लोग बलिकी अपेक्षा दयाको अधिक महत्त्व द तथा यह समझे कि जोशमे आकर बलिदान समर्पण करनेकी अपेक्षा परमात्माका अधिकाधिक ज्ञान ही प्रथम वाञ्छनीय है।'—(होसिया ६। ६)

गायकी महत्ता और आवश्यकता

(श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)

गाय विश्वकी माता है—'गावो विश्वस्य मातर ।' सूर्य, वरुण, वायु आदि देवताओंको यज्ञ, होममे दी हुई आहुतिसे जो खुराक, पुष्टि मिलती है, वह गायके घीसे ही मिलती है। होममे गायके घीकी ही आहुति दी जाती है, जिससे सूर्यकी किरणे पुष्ट होती हैं। किरणे पुष्ट होनेसे वर्षा होती है और वर्षासे सभी प्रकारके अन्न, पौधे, घास आदि पैदा होते हैं, जिनसे सम्पूर्ण स्थावर-जगम, चर-अचर प्राणियोका भरण-पोषण होता है*।

हिन्दुओके गर्भाधान जन्म, नामकरण आदि जितने सस्कार होते हैं, उन सबमे गायके दूध, घी, गोबर आदिकी मुख्यता होती है। द्विजातियोको जो यज्ञोपवीत दिया जाता है, उसमे गायका पञ्चगव्य (दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र) का सेवन कराया जाता है। यज्ञोपवीत-सस्कार हानेपर वे वेद पढनेके अधिकारी होते हैं। अच्छे ब्राह्मणका लडका भी यज्ञोपवीत-सस्कारके बिना वेद पढनेका अधिकारी नहीं होता। जहाँ विवाह-सस्कार होता है, वहाँ भी गायके गोबरका लेप करके शुद्धि करते हैं। विवाहके समय गोदानका भी बहुत माहात्म्य है। पुराने जमानेम वाग्दान (सगाई) के समय बैल दिया जाता था। जननाशौच और मरणाशौच मिटानेके लिये गायका गाबर और गोमूत्र ही काममें लिया जाता है क्योकि गायके गोबरमे लक्ष्मीका और गोमूत्रमे गङ्गाजीका निवास है।

जब मनुष्य बीमार हो जाता है, तब उसको गायका दूध पीनेके लिये देते हैं, क्योकि गायका दूध तुरत बल, शक्ति देता है। अगर बीमार मनुष्यको अन्न भी न पचे तो उसके पास गायके घी और खाद्य पदार्थोंकी अग्निमे आहुति देनेपर उसके धुएँस उसको खुराक मिलती है। जब मनुष्य मरने लगता है, तब उसके मुखम गङ्गाजल या गायका दही देते हैं। कारण कि कोई मनुष्य यात्राके लिये रवाना होता है तो उस समय गायका दही लेना माङ्गलिक हाता है। जो सदाके लिये यहाँसे रवाना हो रहा है, उसको गायका दही अवश्य देना चाहिये जिससे परलोकमे उसका मङ्गल हो। अन्तकालम मनुष्यका जैसे गङ्गाजल देनेका माहात्म्य है, वैसा ही माहात्म्य गायका दही देनेका है।

वैतरणीसे बचनेके लिये गोदान किया जाता है। श्राद्ध-कर्ममे गायके दूधकी खीर बनायी जाती है, क्योंकि पवित्र होनेसे इस खीरसे पितरोकी बहुत ज्यादा तृप्ति होती है। मनुष्य, देवता, पितर आदि सभीको गायक दूध, घी आदिसे पुष्टि मिलती है। अत गाय विश्वकी माता है।

गायके अङ्गोमे सम्पूर्ण देवताओका निवास बताया गया है। गायकी छाया भी बडी शुभ मानी गयी है। यात्राके समय गाय या साँड दाहिने आ जाय तो शुभ माना जाता है और उसके दर्शनसे यात्रा सफल हो जाती है। गाय महान् पवित्र होती है। उसके शरीरका स्पर्श करनेवाली हवा भी पवित्र होती है। उसके गोबर-गोमूत्र भी पवित्र होते हैं। जहाँ गाय बैठती है, वहाँकी भूमि पवित्र हाती है। गायके चरणोकी रज (धूल) भी पवित्र होती है।

गायसे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—इन चारोकी सिद्धि होती है। गोपालनसे, गायके दूध, घी, गोबर आदिसे धनकी वृद्धि होती है। कोई भी धार्मिक कृत्य गायके बिना नहीं होता। सम्पूर्ण धार्मिक कार्योंमे गायका दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र काममें आते है। कामनापूर्तिके लिये किये जानेवाले यज्ञोमे भी गायका घी आदि कामम आता है। बाजीकरण आदि प्रयोगोमे भी गायके दूध और घीकी मुख्यता रहती है। निष्कामभावसे गायकी सेवा करनेसे मोक्ष होता है। गायकी सेवा करनेमात्रसे अन्त करण निर्मल होता है। भगवान् श्रीकृष्णने भी बिना जूतीके गायाको चराया था जिससे उनका नाम 'गोपाल' पडा। प्राचीन कालमे ऋषिलोग वनम रहते हुए अपने पास गाये रखा करते थे। गायके दूध-घाका सेवन करनेसे उनकी बुद्धि बडी विलक्षण होती थी

* अग्नौ प्रास्ताहुति सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्न तत प्रजा॥ (मनु० ३। ७६)

जिससे वे बडे-बडे ग्रन्थोकी रचना किया करते थे। आजकल तो उन ग्रन्थोको ठीक-ठीक समझनेवाले भी कम हैं। गायके दूध-घीसे वे दीर्घायु होते थे। गायके घीका एक नाम 'आयु' भी है। बडे-बडे राजालोग भी उन ऋषियाके पास आते थे और उनकी सलाहसे राज्य चलाते थे।

गाय इतनी पवित्र है कि देवताओने भी उसको अपना निवास-स्थान बनाया है। जिसका गोबर और गोमूत्र भी इतना पवित्र है, फिर वह स्वय कितनी पवित्र होगी। एक गायका पूजन करनेसे सब देवताओका पूजन हो जाता है, जिससे सव देवताओको पुष्टि मिलती है। पुष्ट हुए देवताओंके द्वारा सम्पूर्ण सृष्टिका सचालन, पालन रक्षण होता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न—आजकल प्राय लोग गायके घीसे यज्ञ, हाम आदि नहीं करते तो भी वर्षा होती ही है—इसका कारण क्या है?

उत्तर—प्राचीन कालसे जो यज्ञ होम होते आये हैं उनका सग्रह अभी बाकी है। उसी सग्रहसे अभी वर्षा हो रही है। परतु अभी यज्ञ आदि न होनेसे वैसी व्यवस्था नहीं रही है, इसलिये कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि हो रही है। वर्षा भी बहुत कम हो रही है।

प्रश्न—वर्षा अग्रिम आहुति दनेसे ही होती है या कर्तव्यका पालन करनेस होती है?

उत्तर—कर्तव्य-पालनके अन्तर्गत यज्ञ, होम दान, तप आदि सब कर्म आ जाते हैं। गीताने भी यज्ञ आदिको कर्तव्य-कर्मके अन्तर्गत ही माना है। अगर मनुष्य अपने कर्तव्यका पालन करेगे तो सूर्य, वरुण, वायु आदि देवता भी अपने कर्तव्यका पालन करेगे और समयपर वर्षा करेगे।

प्रश्न—विदेशोमे यज्ञ आदि नहीं होते, फिर वहाँ देवतालाग वर्षा क्या करत हैं?

उत्तर—जिन देशोम गाये नहीं हैं अथवा जिन देशोके लोग यज्ञ आदि नहीं करते वहाँ भी अपने कर्तव्य-कर्मका पालन तो होता ही है। वहाँके लोग अपने कर्तव्यका पालन करते हैं तो देवता भी अपने कर्तव्यका पालन करते हैं अर्थात् वहाँ वर्षा आदि करते हैं।

प्रश्न—ट्रैक्टर आदि यन्त्रोसे खेती हो जाती है, फिर गाय-बैलकी क्या जरूरत है?

उत्तर—वैज्ञानिकोने कहा है कि अभी जिस रीतिसे तेल खर्च हो रहा है, ऐसे खर्च होता रहा तो लगभग बीस वर्षोंमे ये तेल आदि सब समाप्त हो जायँगे, जमीनम तेल नहीं रहेगा। जब तेल ही नहीं रहेगा, तब यन्त्र कैसे चलगे? उस समय गाय-बैल ही काम आयगे।

प्रश्न—तेल नहीं रहेगा तो उसकी जगह कोई नया आविष्कार हो जायगा फिर गायोकी क्या आवश्यकता?

उत्तर—नया आविष्कार हो अथवा न हो पर जो चीज अभी अपने हाथमे है, उसको क्या नष्ट कर? जो चीज अभी हाथम नहीं है, भविष्यपर निर्भर है उसको लेकर अभीकी चीजको नष्ट करना बुद्धिमानी नहीं है। जैसे, गर्भके बालककी आशासे गोदके बालकको समाप्त करना बुद्धिमानी नहीं है प्रत्युत घोर पाप, अन्याय है। गायाकी परम्परा तो चलती रहेगी, पर आविष्काराकी परम्परा भी चलती रहेगी—इसका क्या भरोसा? अगर विश्वयुद्ध छिड जाय तो क्या आविष्कार सुरक्षित रह सकेग? पीछेको कदम तो उठा लिया और आगे जगह मिली नहीं तो क्या दशा होगी? इसलिये आगे आविष्कार होगा—इस विचारको लेकर गायाका नाश नहीं करना चाहिये, प्रत्युत प्रयत्नपूर्वक उनकी रक्षा करनी चाहिये।

प्रश्न—भैंसे और ऊँटके द्वारा भी खेती हो सकती है, फिर गाय-बैलकी क्या जरूरत?

उत्तर—खेतीमे जितनी प्रधानता बैलाकी है, उतनी प्रधानता अन्य किसीकी भी नहीं है। भैंसेके द्वारा भी खेती की जाती है, पर खेतीमे जितना काम बैल कर सकता है, उतना भैंसा नहीं कर सकता। भैंसा बलवान् तो होता है, पर वह धूप सहन नहीं कर सकता। धूपम चलनेसे वह जीभ निकाल देता है, जबकि बैल धूपम भी चलता रहता है। कारण कि भैंसेम सात्त्विक बल नहीं होता जबकि बैलमे सात्त्विक बल होता है। बैलोकी अपेक्षा भैसे कम भी होते हैं। ऊँटसे भी खेती की जाती है, पर ऊँट भैंसासे भी कम होते है और बहुत महँगे होते हें। खेती करनेवाला हरेक आदमी ऊँट नहीं खरीद सकता। आजकल बडी सख्यामे अच्छे-अच्छे जवान बैल मारे जानेके कारण बेल

भी महँगे हो गये हैं, तो भी वे ऊँट-जितने महँगे नहीं हैं। यदि घरोम गाय रखी जायँ तो बैल घरोमे ही पैदा हो जाते हैं, खरीदने नहीं पडते। विदेशी गायाके जो बैल होते हैं, वे खेतीम काम नहीं आ सकते क्याकि उनके कधे न होनेसे उनपर जुआ नहीं रखा जा सकता। अत अपने देशकी गायोका पालन करना चाहिये, उनकी विशेषरूपसे रक्षा करनी चाहिये।

बैलासे जितनी बढिया खेती हाती है, उतनी ट्रैक्टरोसे नहीं होती। देखनेमे तो ट्रैक्टरोसे और रासायनिक खादसे खेती जल्दी हो जाती है, पर जल्दी होनेपर भी वह बढिया नहीं होती। बैलोसे की गयी खेतीका अनाज बडा पवित्र होता है। गाबर-गोमूत्रकी खादसे जो अन्न पैदा होता है वह बडा पवित्र, शुद्ध, निर्मल होता है।

खेतका और गायका घनिष्ठ सम्बन्ध है। खेतमे पैदा होनेवाले घास आदिसे गायकी पुष्टि होती है और गायके गोबर-मूत्रसे खेतकी पुष्टि हाती है। विदेशी खाद डालनेसे कुछ ही वर्षोमे जमीन खराब हो जाती है अर्थात् उसकी उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है। परतु गोबर-गोमूत्रसे जमीनकी उपजाऊ शक्ति ज्यो-की-त्यो बनी रहती है। विदेशोमे रासायनिक खादसे बहुत-से खेत खराब हो गये हैं जिनको उपजाऊ बनानेके लिय वे गोबर काममे ले रहे हैं।

प्रश्न—गायके दूधकी क्या महिमा है?

उत्तर—गायका दूध जितना सात्त्विक होता है उतना सात्त्विक दूध किसीका भी नहीं हाता। हमारे देशकी गाये सौम्य और सात्त्विक होती हैं इसलिये उनका दूध भी सात्त्विक होता है, जिसको पीनेसे बुद्धि तीक्ष्ण होती है और स्वभाव सौम्य, शान्त होता है। विदेशी गायोका दूध तो ज्यादा होता है, पर उनके दूधमे उतनी सात्त्विकता नहीं होती तथा उनमे गुस्सा भी ज्यादा होता है। अत उनका दूध पीनेसे मनुष्यका स्वभाव भी क्रूर होता है। विदेशी गायाके दूधम घी कम होता है और व खाती भी ज्यादा हैं।

भैंसके दूधमे घी ज्यादा होनेसे वह शरीरको मोटा तो करता है पर वह दूध सात्त्विक नहीं होता। गाडी चलानेवाले जानते ही हैं कि गाडीका हार्न सुनते ही गाये सडकके किनारे हो जाती हैं, जब कि भैंस सडकमे ही खडी रहती है! इसलिये भैंसके दूधसे बुद्धि स्थूल होती है। सैनिकोके घोडोको गायका दूध पिलाया जाता है जिससे वे घोडे बहुत तेज होते हैं। एक बार सैनिकोने परीक्षाके लिये कुछ घोडाको भैंसका दूध पिलाया जिससे घोडे खूब मोटे हो गये। परतु जब नदी पार करनेका काम पडा तब वे घोडे पानीमे बैठ गये। भैंस पानीमें बैठा करती है, इसलिये वही स्वभाव घोडोमे भी आ गया।

ऊँटनीका दूध भी निकलता है, पर उस दूधका दही, मक्खन होता ही नहीं। उसका दूध तामसी होनेसे दुर्गतिमें ले जानेवाला होता है। स्मृतियोम ऊँट, कुत्ते, गधे आदिको अस्पृश्य बताया गया है। बकरीका दूध नीरोग करनेवाला एव पचनेमें हल्का होता है, पर वह गायके दूधकी तरह बुद्धिवर्धक और सात्त्विक बात समझनेके लिये बल देनेवाला नहीं होता।

गायके दूधसे निकला घी 'अमृत' कहलाता है। स्वर्गकी अप्सरा उर्वशी राजा पुरूरवाके पास गयी तो उसने अमृतकी जगह गायका घी पीना ही स्वीकार किया—'घृत मे वीर भक्ष्य स्यात्' (श्रीमद्भा० ९। १४। २२)।

प्रश्न—गायके गोबर और गोमूत्रकी क्या महिमा है?

उत्तर—गायक गोबरमे लक्ष्मीजीका और गोमूत्रमें गङ्गाजीका निवास माना गया है। इसलिये गायके गोबर-गोमूत्र भी बडे पवित्र हैं। गाबरसे लिपे हुए घरोमे प्लेग हैजा आदि भयकर बीमारियाँ नहीं होतीं। इसके सिवाय युद्धके समय गोबरसे लिपे हुए मकानापर बमका उतना असर नहीं होता जितना सीमेट आदिसे बने हुए मकानापर होता है।

गोबरमे जहर खींचनेकी विशेष शक्ति होती है। काशीमे कोई आदमी साँप काटनसे मर गया। लोग उसकी दाह-क्रिया करनेके लिये उसको गङ्गाके किनारे ले गये। वहाँ एक साधु रहता था। उसने पूछा कि इस आदमीको क्या हुआ? लोगोने कहा कि यह साँप काटनेसे मरा है। साधुने कहा कि यह मरा नहीं है, तुमलोग गायका गोबर ले आओ। गोबर लाया गया। साधुने उस आदमीकी नासिकाको छोडकर पूर शरीरमें नीचे-ऊपर गोबरका लेप कर दिया। आँखे मीचकर उनपर कपडा रखकर उसके ऊपर भी गोबर रख दिया। आधे घटेके बाद गोबरका फिर

दूसरा लेप किया। कुछ घटाम उस आदमीके श्वास चलने लगे और वह जी उठा। अगर किसी अङ्गम बिच्छू काट जाय तो जहाँतक विष चढा हुआ है, वहाँतक गोबर लगा दिया जाय तो विष उतर जाता है। हमने सुना है कि शरीरमें कोई भी रोग हो, जमीनम गहरा गड्ढा खोदकर उसमे रोगीका खडा कर दे और उसके गलेतक वह गड्ढा गोबरसे भर दे। लगभग आधे घटेतक अथवा जितनी देरतक रोगी सुगमतापूर्वक सहन कर सके, उतनी देरतक वह गड्ढेम खडा रहे। जबतक रोग शान्त न हो जाय, तबतक प्रतिदिन यह प्रयोग करता रहे।

आजकल गोबरसे गैस पैदा की जाती है। उस गैससे बिजली भी पैदा की जाती है, जिसको कई जगह काममे लिया जाता है। गैस निकलनेके बाद गोबरकी तेजी कम हो जाती है और वह खेताम देनेके लिये बढिया खाद हो जाती है।

सखिया, भिलावा आदि बडे-बडे जहरोकी शुद्धि भी गोमूत्रसे ही होती है। सोना, चाँदी आदि धातुएँ भी गोमूत्रसे शुद्ध की जाती हैं। भस्म बनाते समय उन धातुआको तपाकर तेलमें, गायके दूधकी छाछमे और गोमूत्रमें बुझाकर शुद्ध किया जाता है।

छोटी बछडीका गोमूत्र प्रतिदिन तोला-दो-तोला पीनेसे पेटके रोग दूर होते हैं। यकृत्-पीडामे भी गोमूत्रका सेवन बडा लाभदायक होता है। एक सतको दमारोग था। उन्हाने छोटी बछडीका गोमूत्र प्रात खाली पेट एक तोला प्रतिदिन लेना शुरू किया तो उनका रोग बहुत कम हो गया। छातीम, कलेजमे दर्द होता हो तो एक बर्तनमे गोमूत्र लेकर उसको गरम करे। उस बर्तनपर एक लोहेकी छलनी रखकर उसपर कपडा या पुरानी रुई रख दे। वह कपडा या रुई गरम हो जाय तो उससे छातीपर सेक करता रहे। इससे दर्द दूर हो जाता है। गोमूत्रसे स्नान करनेसे शरीरकी खुजली मिटती है।

—इस प्रकार गोबर और गोमूत्रसे अनेक रोग दूर होते हैं।

प्रश्न—गोरक्षासे क्या लाभ हैं?

उत्तर—गायकी रक्षासे मनुष्य देवता भूत-प्रेत, यक्ष-राक्षस, पशु-पक्षी, वृक्ष-घास आदि सबकी रक्षा होती है। पृथ्वीपर कोई भी ऐसा स्थावर-जगम प्राणी नहीं है, जो गायसे पुष्टि न पाता हो। गाय अर्थ, धर्म काम और मोक्षको सिद्ध करनेवाली, लोक-परलोकमें सहायता करनेवाली और नरकोमे उद्धार करनेवाली है।

गोरक्षाके लिये बलिदान करनेवालोंकी कथाओसे इतिहास, पुराण भरे पडे हैं। बडे भारी दु खकी बात है कि आज हमारे देशमे पैसोंके लोभसे प्रतिदिन हजारोकी सख्यामे गायोकी हत्या की जा रही है। अगर इसी तरह गोहत्या होती रही तो एक समय गोवश समाप्त हो जायगा। जब गायें नहीं रहेगी, तब देशकी क्या दशा होगी, कितनी आफत आयेंगी—इसका अदाजा नहीं लगाया जा सकता। जब गाये खत्म हो जायँगी और जमीनसे तेल निकलना बद हो जायगा, तब खेती कैसे होगी? खेती न होनेसे अन्न तथा वस्त्र (कपास) कैसे मिलेगा? लोगोको शरीर-निर्वाहके लिये अन्न, जल और वस्त्र मिलना भी मुश्किल हो जायगा। राजस्थानके गाँवोमे मैंने देखा है कि पहले वहाँ बैलोंके द्वारा जमीनसे पानी निकाला जाता था। फिर वहाँ बिजली आनसे बिजलीसे पानी निकलने लगा और बैलोको लोगोने बिक्री कर दिया। अब अगर बिजली बद हो जाय तो पानी भी बद हो जाता है और लोग दु ख पाते हैं !

गोरक्षासे सब तरहका लाभ है—इस बातको धर्मप्राण भारतवर्ष ही समझ सकता है, दूसरे देश नहीं समझ सकते, क्योंकि उनके पास गहरी धार्मिक और पारमार्थिक बातोको समझनेके लिये वैसी बुद्धि नहीं है और वैसे शास्त्र भी नहीं हैं। जो लोग विदेशी सस्कृति, सभ्यतासे प्रभावित हैं तथा केवल भौतिक चकाचौंधमे फँसे हुए हैं, वे भी गायका महत्त्व नहीं समझ सकते। वे ऋषि-मुनियोकी बातोको तो मानते नहीं और स्वय जानते नहीं! ऋषि-मुनियोने, राजा-महाराजाओने, धर्मात्माआने गोरक्षाके लिये बडे-बडे कष्ट सहे तो क्या वे सब बेसमझ थे? क्या समझ अब ही आयी है?

प्रश्न—लोगामे गोरक्षाकी भावना कम क्यो हो रही है?

उत्तर—गायके कलेजे, मास खून आदिसे बहुत-सी अँग्रेजी दवाइयाँ बनती हैं। उन दवाइयोका सेवन करनेसे गायके मास, खून आदिका अश लोगोके पेटमे चला गया

है, जिससे उनकी बुद्धि मलिन हो गयी है और उनकी गायके प्रति श्रद्धा भावना नहीं रही है।

लोग पापसे पैसा कमाते हैं और उन्हीं पैसाका अन्न खाते हैं, फिर उनकी बुद्धि शुद्ध कैसे होगी और बुद्धि शुद्ध हुए बिना सच्ची, हितकर बात अच्छी कैसे लगेगी?

स्वार्थबुद्धि अधिक होनेसे मनुष्यकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, बुद्धि तामसी हो जाती है फिर उसको अच्छी बाते भी विपरीत दीखने लगती हैं*। आजकल मनुष्योमे स्वार्थ-भावना बहुत ज्यादा बढ गयी है, जिससे उनमे गोरक्षाकी भावना कम हो रही है।

गायके मास चमडे आदिके व्यापारमे बहुत पैसा आता हुआ दीखता है। मनुष्य लोभके कारण पैसोकी तरफ तो देखता है, पर गोवश नष्ट हो रहा है, परिणाममे हमारी क्या दशा होगी, कितने भयकर नरकामे जाना पडेगा, कितनी यातना भोगनी पडेगी—इस तरफ वह देखता ही नहीं। तात्पर्य है कि तात्कालिक लाभको देखनेसे मनुष्य भविष्यपर विचार नहीं कर सकता, क्याकि लोभके कारण उसकी विचार करनेकी शक्ति कुण्ठित हो जाती है, दब जाती है। लोभके कारण वह अपना वास्तविक हित सोच ही नहीं सकता।

प्रश्न—गायमे सब देवताआका निवास है, फिर वे गायकी हत्या क्यो होने देते हैं?

उत्तर—गायमे देवताआका निवास पवित्रताकी दृष्टिसे कहा गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि दवता गायमे साक्षात् रूपसे निवास करते हें। जेसे दियासलाईमे अग्नि रहती है, पर उसको रुईके भीतर रख दिया जाय तो उससे रुई नहीं जलती क्योकि अग्नि दियासलाईम अप्रकटरूपस, निराकार-रूपसे रहती हैं। परमात्मा सम्पूर्ण प्राणियोके हृदयम रहते है फिर भी प्राणी मरते हैं, क्योकि परमात्मा निर्लिप्तरूपसे अप्रकटरूपसे रहते है। ऐसे ही गायके शरीरमे सम्पूर्ण देवता अप्रकटरूपसे, निर्लिप्तरूपसे रहते है। जैसे परमात्माको सम्पूर्ण प्राणियोके हृदयम विद्यमान कहनेका तात्पर्य है कि हृदय पवित्र और परमात्माका उपलब्धि-स्थान है, ऐसे ही देवताओको गायके शरीरम विद्यमान कहनेका तात्पर्य है कि गाय महान् पवित्र है।

प्रश्न—गोसेवासे क्या लाभ है?

उत्तर—जैसे भगवान्की सेवा करनसे त्रिलाकीकी सेवा होती है, ऐसे ही निष्कामभावसे गायकी सेवा करनेसे विश्वमात्रकी सेवा होती है, क्योकि गाय विश्वकी माता है। गायकी सेवासे लौकिक और पारलौकिक—दोनो तरहके लाभ होते हैं। गायकी सेवासे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—ये चारो पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं। रघुवश भी गायकी सेवासे ही चला था।

प्रश्न—गोरक्षाके लिये क्या करना चाहिये?

उत्तर—गायोकी रक्षाके लिये उनको अपने घराम रखना चाहिये और उनका पालन करना चाहिये। गायके ही दूध-घीका सेवन करना चाहिये, भैंस आदिका नहीं। गायोकी रक्षाके उद्देश्यसे ही गोशालाएँ बनानी चाहिये दूधके उद्देश्यसे नहीं। जितनी गोचर-भूमियाँ हैं, उनकी रक्षा करनी चाहिये तथा सरकारसे और गोचर-भूमियाँ छुडाई जानी चाहिये। सरकारकी गोहत्या-नीतिका कडा विरोध करना चाहिये और वोट उनको ही देना चाहिये, जो पूरे देशमे पूर्णरूपसे गोहत्या बद करनेका वचन दे।

खेती करनेवाले सज्जनोको चाहिये कि वे गाय, बछडा, बैल आदिको बेचे नहीं। गाय और माय बेचनेकी नहीं होती। जबतक गाय दूध ओर बछडा देती है, बैल काम करता है, तबतक उनको रखते हैं। जब वे बूढे हो जाते हैं तब उनको बेच देते हैं—यह कितनी कृतघ्नताकी, पापकी बात है! गाँधीजीने 'नवजीवन' अखबारमे लिखा था कि 'बूढा बैल जितना घास (चारा) खाता है उतना गोबर और गोमूत्र पैदा कर देता है अर्थात् अपना खर्चा आप ही चुका देता है।'

बबईके देवनार-कसाईखानेमें मैने देखा है कि वहाँ अच्छे-अच्छे, जवान-जवान बैल ट्रकामें भरकर लाये जाते हैं और खडे कर दिये जाते हैं। दूरतक सींग-ही-सींग दीखते थे। ऐसे बैलोको मशीनोके द्वारा बडी बुरी तरहसे मारते हैं।

---

*अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता। सर्वार्थान्विपरीताश्च बुद्धि सा पार्थ तामसी॥ (गीता १८। ३२)
तमोगुणसे घिरी हुई जो बुद्धि अधर्मको धर्म और सम्पूर्ण चीजोको उल्टा ही मानती है वह तामसी है।'

जीते-जी उनका चमडा उतारा जाता है, क्योंकि जीते हुएका चमडा उतारा जाय तो वह बहुत नरम होता है। जो गायो और बैलोको बेचते हैं, उनको यह हत्या लगती है। अत अपनी पूरी शक्ति लगाकर हर हालतमे गायोकी रक्षा करना, उनको कत्लखानोमें जानेसे रोकना तथा उनका पालन करना, उनकी वृद्धि करना हमारा परम कर्तव्य है।

उपसहार

स्वराज्य-प्राप्तिसे पहले जितनी गोहत्या होती थी, उससे बहुत गुना अधिक गोहत्या आज होती है। चमडेके निर्यातमें भारतका मुख्य स्थान है। पशुओको निर्दयतापूर्वक बडी तेजीसे नष्ट किया जा रहा है। गायोका ता वश ही नष्ट हो रहा है। पैसोंके लोभसे बडी मात्रामे गोमासका निर्यात किया जा रहा है। रुपयोंके लोभसे बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो गयी है कि पशुओंके विनाशको 'मास-उत्पादन' माना जा रहा है। भेड-बकरिया, मछलियों, मुर्गियो आदिका तो पालन और सवर्धन किया जा रहा है, पर जिनका गोबर-गोमूत्र भी उपयोगी होता है, उन गायोकी हत्या की जा रही है। खुदमे तो अक्ल नहीं और दूसरेकी मानते नहीं—यह दशा हो रही है!

रुपयोसे वस्तुएँ श्रेष्ठ हैं, वस्तुओसे पशु श्रेष्ठ है, पशुओसे मनुष्य श्रेष्ठ हैं, मनुष्याम भी विवेक श्रेष्ठ है और विवेकसे भी सत्-तत्त्व (परमात्मतत्त्व) श्रेष्ठ है। परतु आज सत्-तत्त्वकी उपेक्षा हो रही है, तिरस्कार हो रहा है और असत्-वस्तु रुपयोको बडा महत्त्व दिया जा रहा है। रुपयाके लिये अमूल्य गोधनको नष्ट किया जा रहा है। गायोसे रुपये पैदा किये जा सकते हैं, पर रुपयोसे गाये पैदा नहीं की जा सकतीं। गायोकी परम्परा तो गायोसे ही चलती है। जब गाये नहीं रहेगी, तब रुपयोसे क्या होगा? उल्टे देश निर्बल और पराधीन हो जायगा। रुपये तो गायोके जीवित रहनेसे ही पैदा होंगे। गायोको मारकर रुपये पैदा करना बुद्धिमानी नहीं है। बुद्धिमानी तो इसीमे है कि गायोकी वृद्धि की जाय। गायोकी वृद्धि होनेसे दूध, घी आदिकी वृद्धि होगी, जिनसे मनुष्योका जीवन चलेगा, उनकी बुद्धि बढेगी। बुद्धि बढनेसे विवेकको बल मिलेगा, जिससे सत्-तत्त्वकी प्राप्ति होगी। सत्-तत्त्वकी प्राप्ति होनेपर पूर्णता हो जायगी अर्थात् मनुष्य कृतकृत्य, ज्ञात-ज्ञातव्य और प्राप्त-प्राप्तव्य हो जायगा।

सच्ची गोसेवा स्वर्ग या गोलोकको पृथ्वीपर प्रत्यक्ष उतार लायेगी

(काशी षोडशी (शक्ति) पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु दण्डी स्वामी श्रीलक्ष्मणाचार्यजी महाराज एम० ए०, डी० लिट्०)

भारतीय सिद्धान्त है कि जीवन्मुक्ति प्राप्त किये बिना मृत्यु होनेपर विभिन्न योनियो तथा नरकोमे भटकना पडता है। गौ माता ही एकमात्र इससे त्राण दिलानेवाली शक्ति है। अत जीवनके अन्तिम क्षणोमे गोदानकी परम्परा है। वेद-शास्त्र ही ईश्वरके सविधान या सच्चे कानून हैं और वे ही वास्तवमें सच्ची भारतीयताके मूर्तिमान् रूप हैं। धर्मात्मा लोग काशी, प्रयाग आदि मुक्ति-क्षेत्रोका सदा सेवन करते हैं और मोक्षमे ही सुख देखते हैं, जो गोमाताके ही हाथमे है। इसलिये विचारशील भारतीय बन्धुओको अब भी होशमे आ जाना चाहिये और गोमाताकी महिमाको ध्यानमे रखते हुए, इस विनाशमयी विभीषिका, अभारतीय शिक्षा-दीक्षा तथा विचारमुक्त राजनीतिके ज्ञान आदिसे दूर हटकर गीता, रामायण, भागवत आदिका ही पठन-मनन करना चाहिये और तदनुसार भगवान् राम-कृष्णके समान ही गोमाताकी अहर्निश सेवा करते हुए राम-कृष्ण ही बन जानेका प्रयास करना चाहिये। यही जीवन्मुक्ति है। आपकी सच्ची गोसेवा भगवान् श्रीकृष्णके गोलोकको भगवान् श्रीकृष्णके साथ-साथ इस धराधामपर प्रत्यक्ष उतार लायेगी। आप स्वय श्रीकृष्ण बनकर उनकी गोसेवा और उनके ज्ञानका निरन्तर आनन्द प्राप्त करते रहेगे। यही भगवान्के शाश्वत सविधान वेदके सारभूत भगवान् श्रीकृष्णकी वाणी, भगवती गीता आदिका भी सारभूत-अमृतमय सदेश है—'दुग्ध गीतामृत महत्।'
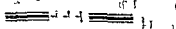
हमारी गोमाता

(गोभक्त-शिरोमणि महाकवि महात्मा श्रीरामचन्द्रजी वीर[1])

सनातन वैदिक धर्मका प्राण गोमाताका वश है। गोमाताकी महिमा वेदो, पुराणो और समस्त धर्मग्रन्थोमे हम पढते हैं। वैष्णव, शैव, शाक्त और बौद्ध, जैन तथा आर्यसमाजमे गोमाताका जय-जयकार किया गया है।

भगवान् कृष्णका परम प्रिय गोकुल और गोवर्धन पर्वत था। भगवान् कृष्णका नाम गोपाल, गोविन्द कहा जाता है। रावणकी लकामे विभीषण तथा उनके अनुयायियोंको छोडकर समस्त राक्षस मासाहारी थे, किंतु लकामे कभी भी गोहत्या नहीं हुई। रावणकी आज्ञासे लकामे गोमाताके वशकी रक्षा की जाती थी।

हमारा आर्यावर्त जिसे भारत और हिन्दुस्थान कहते हैं यहाँ और नेपालमे गोमाताकी पूजा की जाती है।

गोमाताका दूध पीनेसे अनेक रोगोका नाश होता है। गोमाताके दूध-दही-घी और छाछके सेवनसे शरीर स्वस्थ आर सबल होता हे। महामारी प्लेग जब भारतके गाँवोंमे फैलती थी तब हमारे पूर्वज गायके गोबरसे अपने घराके प्राचीरापर चार अगुल चौडी बडी रेखा लीप देते थे।

गोमाताका मूत्र पीनेसे अनेक रोगोका नाश होता है। मैंने अनेक रोगियोको कई मासतक गोमूत्र पिलाकर महारोगसे मुक्त किया है। गोमाताके मूत्रके पीनेसे पाण्डुरोग, पीलिया मिट जाता है, किंतु पद्रह दिनातक प्रतिदिन एक पाव गोमूत्र पीना चाहिये।

गोमाताकी रक्षाके लिये और जरासधसे मथुरा, वृन्दावन तथा गोकुलको बचानेके लिये हमारे भगवान् श्रीकृष्ण द्वारका चले गये थे। भगवान् कृष्णको इसीलिये 'रणछोड' कहा गया।

भगवान् श्रीरामके पूर्वज महाराज दिलीपने गुरुदेव वसिष्ठ महाराजकी गाय नन्दिनीकी रक्षाके लिये अपने-आपको सिहके आगे अर्पित कर दिया था। मुगल-सम्राट् बाबरने मरनेके पूर्व अपने पुत्र हुमायूँको कहा था कि 'गाय और गायके वशकी तुम सदा इज्जत और हिफाजत करना।'

रुस्तम खाँ पठान थे और वे भगवान् कृष्णके भक्त होकर रसखान बन गये। हिन्दी-कविताके इतिहासमे रसखानका नाम अमर रहेगा। रसखान मुसलमान होकर भी गोमाताके भक्त थे। उन्हाने अपने कवित्तमे कहा था—

> जो पसु हौं तौ कहा बसु मेरो
>
> चरौं नित नन्दकी धेनु मँझारन॥

अहा! रसखान धन्य थे, जो नन्द महाराजकी गायाके साथ पशु बनकर घास चरनेकी इच्छा रखते थे।

हिन्दुओके अन्तिम सम्राट् पृथ्वीराज महाराजने मुहम्मद गोरीको अनेक बार पराजित करके भगा दिया था, किंतु देशद्रोही जयचन्दके षड्यन्त्रसे मुहम्मद गोरीने अपनी सेनाके आगे सैकडो गाय खडी करके पृथ्वीराज महाराजको छल-बलसे पकडकर अफगानिस्तान ले जाकर मार डाला था। महाराज पृथ्वीराज गोमाताको मेरा बाण न लग जाय इसी उद्देश्यसे युद्धमे शिथिल हो गये और पकडे गये।

महाराणा प्रताप छत्रपति शिवाजी महाराज महान् गोभक्त थे। शिवाजी महाराजने सोलह वर्षकी किशोरावस्थामे बीजापुरमे एक गोहत्यारे कसाईका सिर काट डाला था और रक्तमे रँगी हुई तलवार लेकर वे बीजापुरके नवाबके सामने जाकर खडे हो गये थे नवाब शिवाजीसे भयभीत हो गया था। सन् १८५७ मे अग्रेजोके विरुद्ध गोभक्त मगल पाण्डेने 'गोमाताकी जय' बोलकर कई अग्रेजोके सिर काट डाले थे।

नामधारी सिक्खोके नेता रामसिहजीने अनेक गोहत्यागृह—कसाईखानाके पास जाकर सैकडा कसाइयोको काट डाला था और वे अग्रेजाद्वारा पकडे जाकर अनेक नामधारी सिक्खोके साथ तोपोके गोलोसे मारे जाकर

१-पिछले वर्षोंमें लेखक महोदयने गोहत्या-बदीके लिये बिहार आदि कितने ही स्थानोमें लबी अवधितक अनशन-व्रत किया जिसके फलस्वरूप कुछ प्रदेशामे आशिक रूपमे गोहत्या बद भी हुई। सन् १९२९ से इनका यह प्रतिज्ञा है कि जबतक सम्पूर्ण भारतमे गोहत्या बद न होगी वे अन्न-लवण ग्रहण नहीं करेंगे।

अमर हो गये। सिक्खोके महान् नेता गुरु गोविन्दसिंह महाराजने कहा था—

नमो उग्रदन्ती जयती सवैया
नमो योग योगेश्वरी योग मैया।
यही देहु आज्ञा तुरुक को खपाऊँ
गौ मातका दुख सदा मैं मिटाऊँ॥

आर्यसमाजके जन्मदाता महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराजने 'गोकरुणानिधि' नामकी पुस्तकम गोमाताकी महिमाका बहुत अधिक वर्णन किया है। सन् १९२२ मे बकराईदके दिन दिल्लीके दस हजार कसाई कुँजडे हाजी काजी एक गायको लेकर दिल्लीके सदर बाजारसे बाजे बजाते हुए कुर्बानी करनेके जोशम उछलते जा रहे थे। तब पहलवान लोटनसिह जाट एक गलीसे निकलकर अपने पैंतीस जाट जवानोके साथ आकर गोहत्यारोको कूट-पीटकर गायको छुडा ले गये।

भारतमे स्वराज्य हुए ४७ वर्ष हो गये, अब भी बबईमे प्रतिदिन दो हजार बैल काटे जाते हैं। कलकत्तेमे गोहत्या चालू है। टगरा और मटियाबुर्जके कसाईखानोमे प्रतिदिन तीन हजारसे अधिक गाय-बैल-बछडे काटे जाते हैं और गोमास अरब आदि देशोको भेजा जाता है।

गोहत्याके महापापके मुख्य कारण हमारे देशके कुछ हिन्दू भाई हैं जो अब बैलोको छोडकर ऊँटो और ट्रैक्टरोसे खेतोको जोतने लगे हैं। गायोको उन्होने बेच डाला है और भैंस रखने लगे हैं, फलस्वरूप गाय-बैलोका सहार बहुत अधिक हो गया और अब वह समय आ गया है कि भारतम गोमाताका वश दिखायी नहीं देगा। विदेशी गायोको जो शुद्ध गाय नहीं है, पालकर हमारे देशवासी भारतकी गोमाताके साथ अन्याय कर रहे हैं। हरियाणा, हासी, हिसारकी गाय बहुत विख्यात थीं। हरियाणाकी लाखो गाये कलकत्ते ले जाकर काट दी गयीं। अब हरियाणाम भैंस-ही-भैंस दिखायी दे रही हैं। राजस्थानके बालोतराके बैल और गाय बहुत प्रसिद्ध थे। सौराष्ट्रकी गिर जातिकी गाये बहुत अधिक दूध देती हैं और वे बडे आकारकी होती हैं। हमे—प्रत्येक हिंदूको—किसानोको इस बातका समझना चाहिये और घर-घरम गाय रखकर उनकी रक्षा करनी चाहिये।
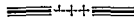
'गो' शब्दके निर्वचन एवं उसके नाना अर्थ

(पूज्य श्रीअनिरुद्धाचार्य वेंकटाचार्यजी महाराज)

'गो' शब्दके नाना निर्वचनो, व्युत्पत्तियो एव उसके नाना अर्थोका रहस्यके साथ प्रतिपादन वेदकी कठ मैत्रायणी आदि शाखाओ एव वेदके ताण्ड्य, जैमिनीय, शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थोम किया गया है। वहाँ 'गम्लृ गतौ' धातु, 'गो-वय तिरोभावे' वैदिक धातु एव 'गै शब्दे' धातुसे 'गो' शब्दका निर्वचन किया गया है। जैसे—

सामवेदके 'ताण्ड्य' ब्राह्मणमे 'गो' शब्दका निर्वचन 'गोवय तिरोभावे' धातुसे इस श्रुतिम किया गया है—

गवा वै देवा असुरान् एभ्यो लोकेभ्योऽनुदन्त। यद्वै तद्देवा असुरान् एभ्यो लोकेभ्यो 'गोवयन्' तद्गोर्गोत्वम्।

अर्थात् देवाने 'गवा'—गो-प्राण एव गो-प्राणी—इन दोनोसे किवा तीना लोकोसे असुरोको भगा दिया। जा उन देवोने गो-प्राण एव गो-प्राणीसे असुरोको 'गोवयन्'-तिरोहित कर दिया, वही 'गो' का गोत्व है। अर्थात् असुरोका विनाश 'गो' का गोत्व है—गोपना है।

'यद्वै तद्देवा असुरान् एभ्यो लोकेभ्यो 'गोवयन्' तद्गोर्गोत्वम्'।

'गो' शब्दके इस निर्वचनके अर्थके रहस्यका आकलन श्रुतिमें निर्दिष्ट देव, असुर एव 'गो'—इन तीनाके स्वरूपके यथार्थ ज्ञान बिना कठिन है, अत यहाँ तीनोके स्वरूपोका प्रतिपादन प्रस्तुत है—

इन तीनामेसे देव एव असुर—इन दोनोका स्वरूप इस प्रकार है—वेदम 'प्राणा वाव देवता' इस श्रुतिके आधारसे (१) ऋषि (२) पितर, (३) देव, (४) असुर, (५) गन्धर्व, (६) मनुष्य एव (७) पशु-भेदसे सात प्रकारके इन प्राणोका देवता कहा गया है। इनके पीत, शुक्ल एव कृष्ण आदि भिन्न-भिन्न रग हैं। इनमे शुक्ल प्राण देव एव कृष्ण

प्राण असुर हैं। देवोंका आवास सूर्यमण्डल है। असुरोका आवास पृथिवी-मण्डल है। देवाकी सख्या तैंतीस एव असुरोकी सख्या निन्यानबे है। सूर्यकी एक-एक शुक्ल रश्मिमे सभी देव एव भूच्छायाकी प्रत्येक कृष्ण रश्मिमे सभी असुर निवास करते हैं।

इन उभय देव एव असुरोसे विश्वके इन सभी उच्चावच पदार्थोंका निर्माण होता है। निर्माणके समय स्व-स्व जागरण एव परस्वापके लिये देवासुर-युद्ध होता है। जिस पदार्थमे देवोकी विजय अर्थात् देवोका जागरण एव असुरोकी पराजय—स्वाप हो जाता है वह पदार्थ देवमय होता है। जिस पदार्थमे असुरोकी विजय अर्थात् जागृति एव देवोकी पराजय—स्वाप हो जाता है, वह पदार्थ असुरमय हो जाता है।

विश्वके पदार्थोंमे देव देवभावोका सचार करते हैं एव असुर असुरभावोका सचार करते हैं।

'सत्य श्रीर्ज्योतिरमृत सुरा ' ये देव-भाव हैं एव 'असत्य पाप्मा तमो मृत्युरसुरा '—ये असुर-भाव हैं। अर्थात् (१) सत्य, (२) श्री, (३) ज्योति, (४) अमृत—ये देव-भाव हैं तथा (१) असत्य, (२) पाप्मा, (३) तम एव (४) मृत्यु—ये असुर-भाव हैं। देवमय पदार्थोंके उपयोगसे हमारे अध्यात्म, शरीर, मन, बुद्धि, प्राण एव आत्मामे देव-भावोका सचार होगा। एव असुरमय पदार्थोंके उपयोगसे हमारे अध्यात्म, शरीर, मन, बुद्धि, प्राण एव आत्माम आसुर भावोका सचार होगा। इसलिये शास्त्रोमे खाद्याखाद्य, पेयापेय एव गम्यागम्य आदि व्यवस्थाएँ हैं।

'गो'-तत्त्व

जिस तत्त्वके द्वारा अर्थात् प्राणके द्वारा देवगण पदार्थोसे असुरोका तिरोभाव कर देते है, वही तत्त्व 'गो' कहलाया है। अर्थात् 'गो' प्राण एव उससे उत्पन्न 'गो'—प्राणी—दोनो 'गो' हैं।

यह 'गो'-प्राण असुरोका प्रबल विरोधी है। कारण कि यह सौर प्राण है। अर्थात् सूर्य-सम्बन्धी प्राण है। 'आदित्या वा गाव ' यह ऐतरेय ब्राह्मणकी श्रुति इसमे प्रमाण है। अर्थात् 'गा'-प्राणीका जन्म आदित्य प्राणसे हुआ है। अत 'गो' आदित्या कहलायी है। इसलिये असुर-विनाशिनी जो शक्ति सूर्यम है, वही शक्ति गो-प्राण एव गो-प्राणीमे भी है, अत गोमाताके श्वास-प्रश्वास, गामूत्र, गोमय, गोदुग्ध, दधि, गोस्पर्श आदिम वे सभी शक्तियाँ सनिहित हैं जो गा—प्राण एव सूर्यम हैं।

'गो' शब्दका 'गम्लृ गतौ' धातुसे निर्वचन शतपथ ब्राह्मणकी कण्डिकार्म इस प्रकार किया गया है—'इमे वै लोका गौ । यद्धि किचन गच्छति इमाल्लोकान् गच्छति।' —इस श्रुतिके आधारसे 'गो' शब्दका निर्वचन 'गच्छति इति गौ ' है। तथा 'गम्यते इति गौ ' इस प्रकार भी अर्थ किया गया है। जो गतिशील है वह 'गो' है। अथवा जो गतिसे प्राप्त किया जाता है वह भी 'गो' है। श्रुति कहती है कि ये तीनो लोक गतिशील होनेसे गो कहलाते हैं। ये गतिसे प्राप्त भी किये जाते हैं, अत 'गो' हैं।

अथर्ववेदकी 'पिप्पलाद' शाखाका प्रतिपादन है कि गतिशील कोई भी पदार्थ 'गो' कहलाता है जैसे 'अथ गोर्वै सार्पराज्ञी' अर्थात् यह 'गा' प्राण एव 'गो' प्राणी—ये दोनो गमनशीलोमे रानी हैं। दोनो अभिन्न हैं। दोना गतिशील हैं, अत दोना 'गो' हैं।

'अथ इय पृथिवी वै सार्पराज्ञी'

अर्थात् यह पृथिवी भी गतिशीलोकी रानी है, अत 'गो' है। पृथिवीकी गतिशीलताका वर्णन खगोलविद् विद्वान् श्रीआर्य भट्टने 'आर्यभट्टि' में इस प्रकार किया है—

अनुलोमगतिर्नौस्थ
पश्यत्यचल विलोमग यद्वत्।
अचलानि भानि तद्वत्
समपश्चिमगानि लकायाम्॥

गतिशील नौकामे बैठा हुआ और सीधा जाता हुआ पुरुष तटस्थ अचल स्थिर वृक्ष आदि वस्तुआको विलोम—पीछे जाती हुई जैसे देखता है, वैसे ही गतिशील पृथिवीपर बैठा हुआ पुरुष अचल भूमण्डल, तारा-मण्डलको लकामे पश्चिम जाता हुआ देखता है। इसलिये यह पृथिवी भी गतिशील होनेके कारण 'गो' है।

'अथ वाग्वै सार्पराज्ञी।' अर्थात् यह 'वाक्' भी गमनशीलोम रानी है। अत वह भी 'गो' है। न्यायदर्शनमें तरग-वीचि-न्यायसे 'वाक्' की गतिशीलताका वर्णन किया

गया है।

'गच्छति इति गौ' इस निर्वचनसे निष्पन्न 'गो' शब्दके 'अनेकार्थ', 'तिलक' आदि कोशोमे दिये गये हैं, वे सभी अर्थ गतिशील होनेसे 'गो' कहलाते हैं।

वज्र (विद्युत्), जल, बैल, धेनु, वाक्, दिक्, बाण, पृथिवी, किरण सुख, स्पर्श, सत्य, वह्नि, अक्षि, अक्षमातृका, स्वर्ग, चन्द्र, लोम—ये सब गतिशील होनेसे 'गो' हैं।

'शाश्वत' कोश कहता है कि नाक स्वर्ग, वृषभ चन्द्र—इनका वाचक 'गो' शब्द पुँल्लिङ्ग है। वाक्, भूमि, दिक् एव धेनु—इनका वाचक 'गो शब्द' स्त्रीलिंग है। रश्मि, चक्षु, बाण, स्वर्ग, वज्र, जल एव लोम—इनका बोधक 'गो' शब्द स्त्रीलिंग एव नपुसक लिंग दानोम है।

'गै शब्दे' धातुसे 'गो' शब्दका निर्वचन 'मैत्रायणी' सहिताके निम्न मन्त्रम इस रूपम उपलब्ध है—

गातुमविदाम इति तद् आसा गोत्वम्।

शब्दोके उच्चारणके लिये जिनसे सामर्थ्य प्राप्त होता है, वही उनका गोत्व है।

'छान्दोग्योपनिषद्' कहता है कि 'अन्नमय हि सौम्य मन, तेजोमयी वाक्, आपोमया प्राणा।' जैसे अन्नसे मनन करनेमे मन समर्थ होता है जैसे जलसे प्राण प्रबल होते हैं, वैसे ही घृतरूप तेजसे 'वाक्' को सामर्थ्य प्राप्त होता है, जिससे वह शब्दोच्चारम समर्थ होती है। यही कारण है कि सामवेदके गानके प्रथम घृतपानका विधान है।
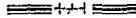
वैदिक आर्योका कृषि-कर्म तथा पशु-पालन

(पद्मभूषण आचार्य श्रीबलदेवजी उपाध्याय)

वैदिक सहिताआ तथा ब्राह्मणोम उस कालके प्राचीन वैदिक आर्योंके आर्थिक जीवनका विशिष्ट वर्णन उपलब्ध होता है। उनके देखनेसे ज्ञात होता है कि वैदिक आर्योंमे कृषि-कर्मका प्रचार तथा प्रसार विशेप रूपसे होता था। ऋग्वेद तथा इतर सहिताआम खेतके लिये 'उर्वर' तथा 'क्षेत्र' शब्द साधारण रूपसे प्रयुक्त किये गये हैं। खेत दोनो प्रकारके होते थे—उपजाऊ (अप्नस्वती) तथा पडती (आर्तना[१])। खेत बिलकुल एक चकला ही नहीं होता था, बल्कि उसे नाप-जोखकर अलग-अलग टुकडोमे बाँट दिया करते थे जो विभिन्न कृपकाकी जोतमे आते थे। खेतपर किसी जातिका अधिकार नहीं होता था, वह वैयक्तिक अधिकारका विपय था। इसकी पुष्टिमे कुछ मन्त्रोका प्रमाण दिया जा सकता है, जिसमे अपालाने अपने पिताके खेतको अपने सिरके समान कोटिमे उल्लिखित किया है[२]। 'राजा ही उस समय खेतका तथा भूमिका एकमात्र स्वामी है'—यह कल्पना वैदिक युगमे प्रबल नहीं जान पडती। वैदिक कालमे कृषि-कर्म आजके समान ही होता था। खेताको हलासे जोतकर बीज बोनेक योग्य बनाया जाता था। हलका साधारण नाम 'लाँगल' या 'सीर' था, जिसके अगले नुकीले भागको फाल कहते थे।

फाल (फार) बडा ही नुकीला तथा चोखा होता था। हलकी मूँठ बडी चिकनी होती थी। इसे 'सामसत्सरु' नामसे अथर्ववेदमे कहा गया है (३। १७। ३)। हल जोतनेवाला हलवाहा 'कीनाश' शब्दके द्वारा निर्दिष्ट है। उसके हाथमे बैलाको हाँकनेके लिये जो पैना होता था उसको 'तोद' या 'तोत्र' नामसे पुकारते थे। शतपथ ब्राह्मणमे चार ही शब्दामे कृषि-कर्मकी पूरी प्रक्रियाका वर्णन कर दिया गया है। ये शब्द हैं—कर्षण (जोतना), वपन (बोना), लवन (काटना) तथा मर्दन (माडना)। मर्दनके बाद चलनी (तितऊ) अथवा सूप (शूर्प) से अनाजको भूसेसे अलग किया जाता था (ऋ० १०। ७१। २)। इसे करनेवाले व्यक्तिको 'धान्यकृत्' कहते थे।

बोये जानेवाले अनाजोके जो नाम मन्त्रोमे मिलते हैं, वे इस प्रकार हैं—व्रीहि (धान), यव (जौ), मुद्‌ग (मूँग),

१-ऋग्वेद १। १२७। ६। २-ऋग्वेद ८। ९१। ५।

गोधूम (गेहूँ), नीवार (जगली धान), मसूर, तिल तथा खीरा (उर्वारु या उर्वारुक)। तैत्तिरीय सहितामे सफेद तथा काले धानमे अन्तर किया गया है। धानके तीन प्रकार मुख्यरूपसे बताये गये हैं—कृष्ण (काला), आशु (जल्दी जमनेवाला) तथा महाव्रीहि (अर्थात् बडे दानावाला धान)। इन वेदोमे 'आशु' 'साठी' नामक धानको लक्षित करता है। क्योकि यह धान साठ ही दिनोमे पककर तैयार हो जाता है। इन धानाके नामसे उस युगके प्राणियोके भोजनोके प्रकारका भी निर्देश हो जाता है।

आजकलकी भाँति उस समय भी किसानोके सामने हानि पहुँचानेवाले कीडोसे खेतीको बचानेकी समस्या उपस्थित थी। अवर्षण तथा अतिवर्षणसे भी खेतीको हानि पहुँचती थी, परतु कीडोसे इनकी अपेक्षा अधिक। अथर्ववेदमे बहुत-से कीडोके नाम दिये गये हैं, उनसे रक्षाके लिय अनेक मन्त्र एव उपाय सुझाये गये हैं। उस समय भी टिड्डियोसे बडी हानि होती थी। टिड्डीका वाचक शब्द है—'मटची'*। कभी-कभी ये पूरा-का-पूरा देश साफ कर डालती थीं। एक बार टिड्डियोके कारण पूरा कुरु-जनपद नष्ट हो गया था, जिस घटनाका उल्लेख छान्दोग्य-उपनिषद्मे मिलता है—'मटचीहतेषु कुरुषु' (छा० १। १०। १)। वैदिक कालीन कृषिके इस सक्षिप्त विवरणसे पता चलता है कि आजकी हमारी कृषि-पद्धति वैदिक ढगपर ही चल रही है।

वैदिक आर्य लोग कृषि-कर्मके लिये वृष्टिपर विशेष अवलम्बित रहते थे। वृष्टिके देवताका इसी कारण वेदमे प्राधान्य माना गया है। ये देवता इन्द्र थे, जो अपने वज्रके द्वारा वृष्टिको रोकनेवाले दैत्यको (जिसका नाम वृत्र था और जो अपनी प्रबल शक्तिके द्वारा मेघोके गर्भमे होनेवाले जलको रोक देता था) वज्रमे मारकर छिपे हुए जलको वर्षा देता था तथा नदियोको प्रगतिशील बनाता था। वैदिक देवता-मण्डलमें इन्द्रकी प्रमुखताका रहस्य आर्योके कृषिजीवी होनेकी घटनामे छिपा हुआ है। उस समय खेताकी सिचाईका भी प्रबन्ध था। एक मन्त्रमे दो प्रकारके जलका नाम निर्दिष्ट है—'खनित्रिमा' (खोदनेसे उत्पन्न होनेवाला) तथा 'स्वयजा' (अपने-आप होनेवाला नदी आदिका जल)।

या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति
खनित्रिमा उत वा या स्वयजा।

(ऋ० ७। ४९। २)

वैदिक आर्योके जीवन-निर्वाहके लिये कृषिका इतना अधिक महत्त्व तथा उपयोग था कि उन्होने 'क्षेत्रपति' नामक एक स्वतन्त्र देवताकी सत्ता मानी है तथा उनसे क्षेत्रोके शस्यसम्पन्न होनेकी प्रार्थना की है। इस प्रकारका एक प्रसिद्ध मन्त्र है जिसमे कहा गया है कि हमारे फार (हलके नुकीले अग्रभाग) सुखपूर्वक पृथ्वीका कर्षण करे। हलवाले (कीनाश) सुखपूर्वक बैलासे खेत जोते। मेघ मधु जलसे हमारे लिये सुख वर्षाएँ तथा इन्द्र भगवान् (शुनासीर) हमलोगोके लिये सुख उत्पन्न करे। यह प्रार्थनावाला मन्त्र इस प्रकार है—

शुन न फाला वि कृषन्तु भूमि शुन कीनाशा अभि यन्तु वाहै।
शुन पर्जन्यो मधुना पयोभि शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्॥

(ऋ० ४। ५७। ८)

पशु-पालन

कृषिके महत्त्वपूर्ण होनेके लिये पशु-पालन वैदिक आर्योके लिये प्रधान साधन था। कृषीबल समाजके लिये पशुओकी और विशेषत गाय-बैलोकी कितनी महत्ता होती है, इसे प्रमाणोसे सिद्ध करनेकी जरूरत नहीं है। हल जोतनेके लिये बैल ही प्रधान साधन है। वही खींचकर हलको आगे बढाता है। आज तो हल खींचनेवाले बैलाकी सख्या दो है, परतु उस युगमे बैलाकी सख्या चार छ आठ बारह अथवा चौबीसतक होती थी जिससे हलके भारी तथा बडा आकार होनेका अनुमान भलीभाँति किया जा सकता है। वैदिक कालमे वैश्य लोग ही अधिकतर खेती किया करते थे क्योकि उनका चिह्न 'अष्ट्रा' बतलाया गया है। अष्ट्रा ताद तथा तोत्र—ये तीनों शब्द हलवाहेके

* शाकरभाष्यमे 'मटची'का अर्थ ओला'तथा'पत्थर' किया गया है परतु लेखकके अनुसार कन्नड भाषामे टिड्डीको 'मेडिची' कहते हैं जो वेदमें प्रयुक्त मटचीका ही अपभ्रंश है। अत लेखक महोदयकी दृष्टिमें भाषाशास्त्रके अनुरूप यही अर्थ समीचीन है।

पैनेके लिये आते हैं और ये तीनो ही वैश्यके चिह्न बतलाये गये हैं। कृषिकर्मके लिये बैलोकी लबी सख्या होती थी, इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि गायोकी बडी सख्या होती थी, जिनका पालन-पोषण वैदिक आर्य बडे प्रेम तथा उत्साहसे करते थे। वैदिक आर्योंमे यज्ञ करनेकी प्रथा थी, जिसके लिये दूधसे बने हुए खीरका हवन किया जाता था। उस युगमे गायका दूध आर्योंके भोजनालयाकी एक प्रधान वस्तु होता था। सोमरसके मिलानेमे दूध काममे आता था तथा खीर बनानेके कामम भी नितान्त उपयोगी था। इससे दही और घी तैयार किया जाता था।

प्राचीन कालमे किसी व्यक्तिकी धन-सम्पत्तिका माप उसके पास होनेवाली गौओकी सख्यासे होता था। यज्ञोंमे ऋत्विजोके लिये दक्षिणा-रूपमे गाय ही देनेका विधान था। यहाँतक कि 'दक्षिणा' शब्द अनेक स्थलोंपर गौका पर्यायवाची बन गया था। राजा लोग प्रसन्न होकर ब्राह्मणोको सौ या हजार गायोंका दान किया करते थे। उस युगमे गायाका उपयोग ऊपर बताये गये प्रकारसे भी अतिरिक्त सिक्केके रूपमे किया जाता था। वैदिक कालमे सिक्कोंका प्रचलन बहुत ही कम था। अत लेन-देन व्यवहार-बट्टा क्रय-विक्रयके कार्यके लिये विनिमयका मुख्य माध्यम गाय ही थी। गायके बदले वस्तुएँ खरीदी जाती थीं। पदार्थोंका मूल्य गायके ही रूपमे विक्रेताको दिया जाता था। इस विषयका उल्लेख ऋग्वेदके अनेक मन्त्राम किया गया है। एक मन्त्र (३। २४। १०) मे वामदेव ऋषिका कथन है कि कौन मनुष्य ऐसा है जो मेर इन्द्रकी इस मूर्तिको दस गायासे खरीद रहा है। अन्य मन्त्रोमे भी सौ, हजार या दस हजार भी गाये इन्द्रको खरीदनेके लिये पर्याप्त नहीं मानी गयी हैं। एक मन्त्र इस प्रकार है—

महे चन त्वामद्रिव परा शुल्काय देयाम्।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ॥

(ऋ० ८। १। ५)

भारतमे ही नहीं, पश्चिमी देशोमे भी प्राचीन कालमे सम्पत्तिकी परम्पराका आधार गाय ही थी। लैटिन भाषाका 'पेकुस' (Pecus) शब्द जिसका अर्थ सम्पत्ति है और जिससे अग्रेजीका 'पैक्यूनियरी' (Pecuniary) शब्द बनता है, भाषा-शास्त्रकी दृष्टिमे सस्कृत पशु (पशुस्) शब्दसे सम्बन्ध रखता है। (सस्कृतमे मुख्य पशु गो ही है)। इस प्रकार खेती, भोजन तथा द्रव्य-विनिमयका मुख्य साधन होनेके कारण वैदिक आर्योंके लिये गाय नितान्त उपादेय तथा आवश्यक वस्तु थी। वैदिक कालमें गायके गौरवका रहस्य इसी सामाजिक अवस्थाकी सत्तामे अन्तर्निहित है। इसी कारण वैदिक आर्यलोग गौको अघ्न्या (न मारने योग्य) नामसे पुकारते थे तथा उसे समधिक श्रद्धा एव आदरकी दृष्टिसे देखते थे।

वैदिक कालमे गाय दिनमे तीन बार दुही जाती थीं—प्रात काल (प्रातर्दोह), दोपहरसे कुछ पहले (सगव) और सायकाल (सायदोह)। तीन बार वे चरनेके लिये चरागाहमे भेजी जाती थीं। वैदिक कालमे गाये भिन्न-भिन्न रगोकी होती थीं—लाल (रोहित), सफेद (शुक्ल), चित्रित (चितकबरी) तथा काली। चरागाहमे वे गोप या गोपालकी देख-रेखमे चरती थीं। गायोके सजग रहनेपर भी वे कभी-कभी सकट तथा विपत्तिमे पड जाती थीं, कभी वे कुओं या गड्ढोमे गिर जातीं तो कभी अङ्ग-भङ्ग हो जाता। कभी वे भूल जाया करतीं और कभी दस्यु या पणि लोग उसे चुरा लिया करते थे। इन विपत्तियोसे पशुआकी रक्षा करनेवाले वैदिक देवताका नाम 'पूषन्' था, जो इसीलिये 'अनष्ट-पशु' (गोरक्षक) विशेषणसे विभूषित किया गया है। उस युगमे गायोकी सख्या इतनी अधिक होती थी कि उनकी पहचानके लिये उनके कानोके ऊपर नाना प्रकारके चिह्न बनाये जाते थे। जिन गायोके कानोके ऊपर ८ (आठ) का चिह्न बना होता था वे अष्टकर्णी कहलाती थीं। मैत्रायणी-सहिताम निर्दिष्ट चिह्न ये हैं—वशी (कर्करिकर्ण्यं), हँसुआ (दात्रकर्ण्य), खम्भा (स्थूणाकर्ण्य)। कभी-सभी गायोके कान छेदे भी जाते थे (छिद्रकर्ण्य)। गायोके कानाको चिह्नित करनेकी यह प्रथा बहुत दिनोतक भारतमे प्रचलित रही क्योकि पाणिनिके सूत्रोम ऐसे चिह्नोका उल्लेख मिलता है (अष्टा० ६। ३। ११५)।

गायोकी भिन्न-भिन्न अवस्थाओके द्योतक अनेक शब्द वैदिक ग्रन्थाम मिलते हैं, जिनसे आर्योंका इस पशुके साथ

गाढ परिचय अभिव्यक्त होता है। सफेद रंगकी गायको 'कर्की' शब्दसे पुकारते थे, बच्चा देनेवाली जवान गायको 'गृष्टि', दूध देनेवाली गायको 'धेना' या 'धेनु', बाँझ गायको 'स्तरी' या धेनुष्टरी, बच्चा देकर बाँझ होनेवाली गायको 'सूतवशा' तथा अकालमे ही गिरकर गर्भ नष्ट होनेवाली गायको 'बेहत्' कहते थे। वह गाय जिसका अपना बच्चा मर जानेस नये बछडाके द्वारा मनानेकी आवश्यकता होती थी, 'निवान्या' या केवल 'वान्या' शब्दस अभिहित की जाती थी। वैदिक ऋषियोको गायका अपने बछडेक लिये रँभाना कानोको इतना सुखद प्रतीत होता था कि व देवताओको बुलानेके लिये प्रयुक्त अपने शोभन गानोकी इससे तुलना करनम कभी तनिक भी नहीं सकुचाते थे—

अभि विप्रा अनूषत गावा वत्स न मातर।
इन्द्र सोमस्य पीतये॥ (ऋ० ९। १२। २)

वैदिक समाजमे बैलोका उपयाग अनेक प्रकारसे किया जाता था। वे हल जोतनेके लिये तथा बोझवाली गाडी खींचनेके लिये नियमत काममे लाय जाते थे। वैदिक ग्रन्थोंमे बैलोकी भिन्न-भिन्न अवस्थाओको सूचित करनेके लिये अनेक शब्द पाये जाते है। बैलके लिये प्रयुक्त साधारण शब्द हैं—उक्षा=सेचनक्षम वृष। ऋषभ= जवान बैल।

शुक्ल यजुर्वेदसहिताके १८ वे अध्यायकी दो कण्डिकाआ (२६ तथा २७) के अन्तर्गत गाय तथा बैलोके विभिन्न नाम निर्दिष्ट किये गये हैं। उनका यहाँ निर्देश किया जा रहा है—षण्मासात्मक कालका वाचक शब्द है 'अवि' और इसी शब्दकी सहायतासे भिन्न-भिन्न अवस्थावाले गाय तथा बैलके शब्द वेदम उपलब्ध होते हैं—

(१) डेढ वर्षके बछडेका नाम—त्र्यवि, डेढ वर्षवाली बछियाका नाम—त्र्यवी।
(२) दो वर्षके बछडेका वाचक शब्द है—दित्यवाट्।
(३) दा सालकी बछियाका नाम है—दित्यौही।
(४) ढाई सालके बछडेका नाम है—पञ्चावि।
(५) ढाई सालकी बछियाका नाम है—पञ्चावी।
(६) तीन सालके वत्सका नाम है—त्रिवत्स।
(७) तीन सालकी बछिया—त्रिवत्सा।
(८) साढे तीन सालका वत्स—तुर्यवाट्।
(९) साढे तीन सालकी बछिया—तुर्यौही।
(१०) चार सालका बछडा—पष्ठवाट्।
(११) चार सालकी गौ—पष्ठौही।

महीधर भाष्यके द्वारा ये शब्द व्याख्यात हैं। इनके द्वारा गायके प्रति अपूर्व प्रेमका परिचय मिलता है। वैदिक युगमे गायाके प्रति जो आदर-बुद्धि चली वह आजतक निर्विघ्न-रूपसे चलती आ रही है। आज भी गाय हमारे लिये सत्कार, आदर तथा पवित्रताकी प्रतीक है।

भरद्वाज ऋषि अपने एक मनोज्ञ मन्त्रमे कहते हैं—गाय भग देवता है, गाय ही मरे लिये इन्द्र है गाय ही सामरसकी पहली घूँट है, ये समग्र गाये इन्द्रकी प्रतिनिधि हैं। मैं हृदयसे, मनसे इसी इन्द्रको चाहता हूँ—

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान्
गाव सोमस्य प्रथमस्य भक्ष।
इमा या गाव स जनास इन्द्र
इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्॥
(ऋग्वेद ६। २८। ५)

गोरक्षाके दस साधन

१-बूचड़खानाको हर तरहके उचित उपाय करके बद करवाना चाहिये। २-गौओकी उत्तम वश-वृद्धिके उपाय करने चाहिये। ३-गौओके लिये पर्याप्त चारे-दानेकी व्यवस्था होनी चाहिये। ४-घासके लहलहाते मैदान गौओके लिये सर्वत्र खुले होने चाहिये। ५-प्रत्येक सद्गृहस्थको अपने घरमे गौ अवश्य रखनी चाहिये और उसका प्रेमके साथ पालन करना चाहिये। ६-कोई भी हानिकारक वस्तु गौओको कभी नहीं खिलानी चाहिये। ७-बैलोके काम और चारे-दानेपर विशेष ध्यान रखना चाहिये। ८-गौओकी तदुरुस्ती और स्वच्छतापर विशेष ध्यान देना चाहिये। ९-उत्सवोपर गौओका विशेष पूजन होना चाहिये। १०-गो जातिके लिये हृदयम अगाध प्रेम होना चाहिये।

गोरक्षा-प्रश्नावली

१-गौको विश्वमाता क्यो कहा जाता है?

२-गौके विश्वरूपमे, शरीरमे, अङ्ग-प्रत्यङ्गमे देवताओका निवास बताया है। इस ढगसे गौके अतिरिक्त अन्य प्राणियोमे वास नहीं है। ऐसा क्यो है? इसका हमारे साथ आध्यात्मिक भावोके अतिरिक्त क्या कोई भौतिक विज्ञान-दृष्टिसे भी सम्बन्ध है या नहीं?

३-'यतो गावस्ततो वयम्' शास्त्रम ऐसा क्यो कहा है?

४-गौके श्वासोमे चारो वेद षडङ्ग-पदक्रमसहित विराजमान बताये गये हैं। उसका क्या श्वासके साथ गान होता है या श्वासके साथ मूर्तिवत् शब्दाक्षर प्रवाहित होते हैं? ऋषि मन्त्रद्रष्टा कहलाते हैं तो वे मन्त्र-दर्शन कहाँ करते थे? गौके श्वासोसे सुखी अवस्थाम वेद प्रस्रवित होता है तो दुखी श्वासोमे क्या प्रस्रवित होता है?

५-छान्दोग्योपनिषद्मे वर्णित सत्यकाम जाबालने गोसेवा करके जो ब्रह्मवेत्तापद प्राप्त किया था, उसके साथ गौके श्वासोमे स्थित वेदोका सम्बन्ध है या नहीं?

६-सायकालमे गौके चरणोसे उठी धूलिके कारण चारो दिशाएँ पवित्र होती हैं, क्या इसलिये गोधूलि-वेला शुभकार्योंमे शुभ मानी जाती है? प्रात काल जब गौ घरसे जगलमे चरने जाती है, उस समयको भी गोधूलि-वेला क्या नहीं माना गया? गोधूलि तो भौतिक वस्तु है, अत क्या भौतिक विज्ञानसे यह बात सिद्ध होती है?

७-क्या सब गोजाति ही कामधेनु है या वह अन्य कोई गौ-विशेष होती है, गौमें कामधेनुत्व हमारी तपस्यासे आता है या नहीं?

८-क्या भारतीय नस्लकी गाये ही वास्तविक गौ हैं? विदेशी नस्लके साँडोसे वर्णसकरीकरण होनेसे क्या भारतीय गायोंकी नस्ल समाप्त नहीं हो रही है?

९-गौके गोबर-मूत्र परम पावन, प्राशनीय और देवपूजन, पितृश्राद्ध, हवनादिमे अनिवार्य आवश्यक हैं। जब कि सभी अन्य प्राणियाके मल-मूत्र धर्मशास्त्रानुसार अपावन हैं, तो ये ही पावन क्यो हैं?

१०-भैंस भी दूध दही, घी, गोबर-मूत्र देती है और भैंसे खेती तथा बोझ ढोनेके लिये हैं। आर्थिक दृष्टिसे, कुछ कम-ज्यादा भले हो, परतु भैंसका महत्त्व भी है। अत इसे गौके सदृश महत्त्व क्यो नहीं दिया गया?

११-यावदस्या गोपतिर्नोपशृणुयादृच स्वयम्।
चरेदस्य तावद् गोषु नास्य श्रुत्वा गृह वसेत्॥
यो अस्या ऋच उपश्रुत्याथ गोष्वचीचरत्।
आयुश्च तस्य भूति च देवा वृश्चन्ति हीडिता ॥
वशा चरन्ती बहुधा देवाना निहितो निधि ।
आविष्कृणुष्व रूपाणि यदा स्थाम जिघासति॥
आविरात्मान कृणुते यदा स्थाम जिघासति।
अथो ह ब्रह्मभ्यो वशा याञ्च्याय कृणुते मन ॥
(अथर्ववेद १२। ४। २७—३०)

क्या उपर्युक्त मन्त्राका सम्बन्ध गौके श्वासमे स्थित वेद-मन्त्रोसे भी है?

१२-गौका आर्थिक महत्त्व रहते हुए भी उसे केवल आर्थिक दृष्टिसे ही देखना क्या पाप नहीं है?

१३-पद्मपुराणमे गौके दूध, दही, घी, गोबर तथा मूत्रका सेवन न करनेवाले मानवको मास-पिण्डवत् कहकर निन्दनीय क्यो ठहराया गया है?

१४-गो-स्पर्श करना एव गो-पुच्छका शरीरपर फेरना लाभकारी क्यो बताया गया है?

१५-गौके मासको मुस्लिम-धर्मम रोग-रूप कहा है। बादशाह हुमायूँ गोमाससे घृणा करते थे, इसका क्या रहस्य है?

१६-सुना है, अमेरिकाने नये अनुसधानद्वारा जिस खेतमे गौ बैठे, चले, फिरे (यानी गोधूलि गोचरण-अङ्ग-स्पर्शसे) और गोबर-मूत्र गिरनेसे खेतीमे उपजे पदार्थोंमे अनेक लाभ माने हैं, जो अन्य खादोमे नहीं, यह कहाँतक सत्य है और क्यो है?

१७-सुना है, जर्मनीके फील्ड मार्शलने कहा कि गौके स्तनोको मुँहमे लेकर दुग्धपान करना विशेष लाभदायक है। गौ शरीरको चाटते हुए प्रेमपूर्वक दूध दे वह और भी लाभदायक है, यह कहाँतक ठीक है और कैसे है?

१८-इसी ढगसे गोवध चालू रहा तो भविष्यम भारतम गोधन कितने वर्षोंतक वना रहेगा? क्या गो-दर्शन दुर्लभ हो जायगा?

१९-जिस सकटमयी स्थितिमे महर्षिगण भगवान्‌म प्रार्थना किया करते थे, क्या वैसी स्थिति आज उपस्थित नहीं है?

२०-कलकत्ताके भूतपूर्व प्रधान न्यायाधीश सर जॉन उडरफने 'तन्त्र-सिद्धान्त'म शास्त्रीय आधारपर लिखा है कि 'जहाँ गोवध हो वहाँ मन्त्र-तन्त्र कैसे सफल हो।' इसका शास्त्रीय प्रमाण कहाँ है तथा बुरा प्रभाव कैसे होता है?

२१-वर्तमान स्थितिमे भगवान्‌का अवतार होकर गोरक्षा करनेक अतिरिक्त अन्य कोई उपाय गोवध-बदीका है क्या? जब कि जनताम मानवताहीन दानवताका प्रसार हो रहा है। कायरता, निराशा और हृदयहीनता घर कर चुकी है।

२२-सन् १८५७ ई० से भारतमं गोवध चालू है। जब गत वर्षोंके राजनैतिक आन्दोलनासे सफलता न मिली, तो अब कैसे मिलेगी? इस प्रकार समय निकल जानेपर क्या गोवशका लोप नहीं हो जायगा?

२३-गौ-सेवासे सतानकी प्राप्ति कैसे होती है? गौको चक्रवर्ती सम्राट् क्या चराते थे?

२४-गौ-द्वारा वैतरणी पार लँघानेका क्या रहस्य है?

२५-'सद्य शक्तिकर पय,' 'भोजनान्ते पिबेत् तक्रम्' का क्या रहस्य है?

२६-'आयुर्वै घृतम्', 'घृत वै अग्नि' का क्या रहस्य है?

२७-और क्या उपर्युक्त प्रश्नापर गो-सम्मेलनोमे विचार होकर जनताका अज्ञान दूर किया जायगा?

गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्

तृणानि खादन्ति वसन्त्यरण्ये पिबन्ति तोयान्यपरिग्रहाणि।
दुह्यन्ति वाह्यन्ति पुनन्ति पाप गवा रसैर्जीवति जीवलोक ॥
तुष्टास्तु गाव शमयन्ति पाप दत्तास्तु गावस्त्रिदिव नयन्ति।
सरक्षिताश्चोपनयन्ति वित्त गोभिर्न तुल्य धनमस्ति किंचित्॥
शष्प समश्नाति ददाति नित्य पापापह मित्रविवर्धन च।
स एव चाऽऽर्य परिभुज्यते च गोभिर्न तुल्य धनमस्ति किंचित्॥
तृणानि शुष्कानि वने चरित्वा पीत्वापि तोयान्यमृत स्रवन्ति।
यद्गोमयाद्याश्च पुनन्ति लोकान् गोभिर्न तुल्य धनमस्ति किंचित्॥

गोएँ जगलम निवास करती है, तृणोका भक्षण करती हैं और बिना किसीके अधिकृत क्षेत्रका जल अथवा गङ्गा, नदी, तालाबका जल पीती है वे दूध देती है, भार वहन करती हैं, पापाको दूर करती हैं, गायोके इस गोरस (दूध-दही)आदिपर सारा विश्व—प्राणिसमुदाय टिका है—जीवनयापन करता चला आ रहा है। प्रसन्न होनेपर गाये सारे पाप-तापको धो डालती है और दान देनेपर गाय सीधे स्वर्गलोकका ले जाती हैं। ये ही विधिपूर्वक पालन करनेपर वैभव-धन या समृद्धिका रूप धारण कर लेता है। ऐसी गायाके समान ससारमे कोई भी सम्पत्ति या समृद्धि नहीं है। गौएँ सामान्य घास चरती है और बदलम दूध-दही गामय आदि निरन्तर कुछ-न-कुछ देती ही रहती हैं, लेती भी कुछ नहीं। ये पापका दूर करती हैं और मित्रोका सवर्धन करता हैं। बैल भी सबस सीधा देवता है और अन्न-उत्पादन कर सबका खिलाता-जिलाता रहता है। उसाके द्वारा जो अन्न उत्पन्न किया जाता है उससे ससार जीता है। गायके तुल्य ही सजातीय गोधन अर्थात् बैलक समकक्ष कोई सम्पत्ति नहीं है। जगलमे रूखे-सूखे तृणोका भक्षणकर साधारण जलका पान कर गौएँ दुग्धरूपी अमृतका क्षरण करती हैं और जिसकी गोबर-गोमूत्र आदि वस्तुएँ ससारको पवित्र कर डालती हैं, ऐसी गौआके समान और अन्य काई सम्पत्ति नहीं है।

गो-जननी आदिगौ 'सुरभी' का आख्यान

[सिद्धिप्रद सुरभि-मन्त्र और स्तोत्र]

एक बार देवर्षि नारदके पूछनेपर भगवान् नारायणने उन्हें बतलाया कि गौओंकी अधिष्ठात्री आदिजननी सुरभी गोलोकमें प्रकट हुई। वह गौओंकी अधिष्ठात्री देवी, गौओंकी आदि, गौओंकी जननी तथा सम्पूर्ण गौओंमें प्रमुख थीं। मुने! समस्त गौओंसे प्रथम वृन्दावनमें उन सुरभीका ही जन्म हुआ है। अतः मैं उनका चरित्र कहता हूँ, सुनो।

एक समयकी बात है—राधापति कौतुकी भगवान् श्रीकृष्ण श्रीराधाके साथ गोपाङ्गनाओंसे घिरे हुए पुण्य वृन्दावनमें गये। कौतूहलवश थक जानेके बहाने सहसा किसी एकान्त स्थानमें बैठ गये और उन स्वेच्छामय प्रभुके मनमें दूध पीनेकी इच्छा हो गयी। उसी क्षण उन्होंने अपने

वामभागसे लीलापूर्वक सुरभी गौको प्रकट कर दिया। उस गौके साथ बछड़ा था। सुरभीके थनोंमें दूध भरा था। उसके बछड़ेका नाम 'मनोरथ' था। उस सवत्सा गौको सामने देखकर श्रीदामाने एक नूतन पात्रमें उसका दूध दुहा। वह दूध जन्म और मृत्युको दूर करनेवाला एक दूसरा अमृत ही था। स्वयं गोपीपति भगवान् श्रीकृष्णने उस स्वादिष्ट दूधको पिया। फिर हाथसे वह भाँड़ गिरकर फूटा और दूध धरतीपर फैल गया। गिरते ही वह दूध सरोवरके रूपमें परिणत हो गया। उसके चारों ओरकी लंबाई और चौड़ाई सौ-सौ योजन थी। वही यह सरोवर गोलोकमें 'क्षीरसरोवर' नामसे प्रसिद्ध है। गोपिकाओं और श्रीराधाजीके लिये वह क्रीडा-सरोवर बन गया। सभी वहाँ मनोरञ्जन करने लगीं। अमूल्य रत्नोंद्वारा उस परिपूर्ण सरोवरके घाट बने थे। भगवान् श्रीकृष्णकी इच्छासे उसी समय अकस्मात् असंख्य कामधेनु गौएँ प्रकट हो गयीं। जितनी वे गौएँ थीं, उतने ही गोप भी उस सुरभी गौके रोमकूपसे निकल आये। फिर उन गौओंसे बहुत-सी संताने हुईं, जिनकी संख्या नहीं की जा सकती। यों उन सुरभी देवीसे गौओंकी सृष्टि कही जाती है, जिससे जगत् व्याप्त है।

मुने! उस समय भगवान् श्रीकृष्णने देवी सुरभीकी पूजा की थी। तत्पश्चात् त्रिलोकीमें उस देवीकी दुर्लभ पूजाका प्रचार हो गया। दीपावलीके दूसरे दिन भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे देवी सुरभीकी पूजा सम्पन्न हुई थी—यह प्रसंग मैं अपने पिता धर्मके मुखसे सुन चुका हूँ। महाभाग! देवी सुरभीका ध्यान, स्तोत्र, मूल मन्त्र तथा पूजाकी विधिका क्रम मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो। '**ॐ सुरभ्यै नमः**' सुरभी देवीका यह षडक्षर मन्त्र है। एक लाख जप करनेपर यह मन्त्र सिद्ध होकर भक्तोंके लिये कल्पवृक्षका काम करता है। ध्यान और पूजन यजुर्वेदमें सम्यक् प्रकारसे वर्णित है। 'जो ऋद्धि, वृद्धि, मुक्ति और सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करनेवाली है, जो *लक्ष्मीस्वरूपा श्रीराधाकी सहचरी* गौओंकी अधिष्ठात्री, गौओंकी आदिजननी पवित्ररूपा, भक्तोंके अखिल मनोरथ सिद्ध करनेवाली हैं तथा जिनसे

यह सारा विश्व पावन बना है, उन भगवती सुरभीकी मैं उपासना करता हूँ। कलशमें तथा गायके मस्तक, गौओंके बाँधनेके स्तम्भ, शालग्रामकी मूर्ति, जल अथवा अग्निमें देवी सुरभीकी भावना करके द्विज इनकी पूजा करें। दीपमालिकाके दूसरे दिन पूर्वाह्णकालमें भक्तिपूर्वक पूजा होनी चाहिये। जो भगवती सुरभीकी पूजा करेगा वह जगत्में पूज्य हो जायगा।'

एक समयकी बात है, वाराहकल्प बीत रहा था। देवी सुरभीने दूध देना बंद कर दिया। उस समय त्रिलोकीमें दूधका अभाव हो गया था। तब देवता अत्यन्त चिन्तित होकर ब्रह्मलोकमें गये और उनकी स्तुति करने लगे। तदनन्तर इन्द्रने ब्रह्माजीकी आज्ञा पाकर देवी सुरभीकी स्तुति आरम्भ की—

इन्द्रने कहा—'देवीको नमस्कार है। महादेवी सुरभीको बार-बार नमस्कार है। जगदम्बिके! तुम गौओंकी आदिकारण हो, तुम्हें नमस्कार है। श्रीराधा-प्रियाको नमस्कार है। देवी पद्मांशाको बार-बार नमस्कार है। श्रीकृष्ण-प्रियाको नमस्कार है। गौओंको उत्पन्न करनेवाली देवीको बार-बार नमस्कार है। सबके लिये जो कल्पवृक्षस्वरूपा हैं तथा क्षीर, धन और बुद्धि प्रदान करनेके लिये सदा तत्पर रहती हैं, उन भगवती सुरभीको बार-बार नमस्कार है। शुभा, सुभद्रा और गोप्रदा नामसे शोभा पानेवाली देवीको बार-बार नमस्कार है। यश, कीर्ति और धर्म प्रदान करनेवाली देवीको बार-बार नमस्कार है*।'

इस प्रकार स्तुति सुनते ही जगज्जननी भगवती सुरभी संतुष्ट और प्रसन्न हो उस ब्रह्मलोकमें ही प्रकट हो गयीं। वह सनातनी देवी देवराज इन्द्रको परम दुर्लभ अभीष्ट वर देकर गोलोकको चली गयीं। देवता भी अपने-अपने स्थानोंको चले गये। नारद! अब विश्व सहसा दूधसे परिपूर्ण हो गया। दूधसे घृत बना और घृतसे यज्ञ सम्पन्न होने लगे तथा उनसे देवता संतुष्ट हुए।

जो मानव इस महान् पवित्र स्तोत्रका भक्तिपूर्वक पाठ करेगा, वह गोधनसे सम्पन्न प्रचुर सम्पत्तिवाला, परम यशस्वी और पुत्रवान् हो जायगा। उसे सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करने तथा अखिल यज्ञोंमें दीक्षित होनेका फल सुलभ होगा। ऐसा पुरुष इस लोकमें सुख भोगकर अन्तमें भगवान् श्रीकृष्णके धामको प्राप्त होता है। वह वहाँ चिरकालतक रहकर भगवान्की सेवा करता रहता है। पुनः इस संसारमें उसे नहीं आना पड़ता। वह ब्रह्मलोकमें ब्रह्माजीका पुत्र होकर वहीं निवास पाता है।† (देवीभागवत)
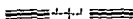
गोदावरीकी उत्पत्ति-कथा

उन दिनोंकी बात है, जब महर्षि गौतम ब्रह्मगिरिके आश्रममें रहते थे। अनावृष्टिके कारण घोर अकाल पड़ा। अन्नके बिना चारों ओर हाहाकार मच गया। उस समय मुनिवर श्रीवसिष्ठजी कुछ मुनियोंके साथ गौतमके आश्रमपर पहुँचे। महर्षि गौतमने उनका सादर अभिनन्दन किया और अन्न देकर उनके प्राणोंकी रक्षा की। वे प्रतिदिन प्रातःकाल अन्नके बीज मैदानमें बो देते। बीज उनके तपके प्रभावसे सन्ध्याके पूर्व ही बढ़कर फल दे देते। अन्न एकत्रित कर लिया जाता। वही ऋषियोंके आहारके काम आता।

बारह वर्षके बाद पुनः वृष्टि हुई। तप्त वसुन्धरा शीतल हो गया। सर्वत्र हरियाली दीखने लगी। उस समय कैलास पर्वतपर महासती श्रीपार्वतीने श्रीशंकरजीसे कहा—'आप

* पुरन्दर उवाच—
नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः । गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके ॥
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः । नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः ॥
कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परे । क्षीरदायै धनदायै बुद्धिदायै नमो नमः ॥
शुभायै च सुभद्रायै गोप्रदायै नमो नमः । यशोदायै कीर्तिदायै धर्मदायै नमो नमः ॥
(देवीभागवत ९। ४९। २४-२७)

† ब्रह्मवैवर्तपुराणके प्रकृतिखण्ड अध्याय ४७ में यही आख्यान प्रायः यथावत् वर्णित है।

गङ्गाजीको सिरपर और मुझ अपने अङ्कमे रखकर मेरा अपमान करते हैं।' परतु श्रीशकरजीन उनकी बातपर कोई ध्यान नहीं दिया।

खिन्न होकर श्रीपार्वतीजीने अपन आज्ञाकारी पुत्र श्रीगणेशजीक पास जाकर अपनी व्यथा-कथा कह सुनायी। माताके दु खसे दुखित होकर श्रीगणेशजी अपने बडे भाई कार्तिकेयके साथ दीन ब्राह्मणके वेशम महर्षि गौतमकी कुटियापर पहुँचे। वहाँपर उन्हाने ऋषियासे कहा—'ऋषियो! दुर्भिक्ष समाप्त हो गया। पृथिवी अन्न-जलमे पूरित हा गयी है। अव आप लोगोका इस आश्रमपर अधिक समयतक ठहरना उचित नहीं है।'

ब्राह्मण-वेषधारी श्रीगणेश और कार्तिकेयकी यह बात ऋषियाके मनम बैठ गयी। वे चलनेके लिय तैयार हो गये। उस समय महर्षि गौतमन कहा—'दुष्कालके समय अन्न देकर मैंने आपलोगोके प्राणाकी रक्षा की हे। अब मरी इच्छाके विपरीत आपलोगोका जाना उत्तम नहीं है। यहाँ कुछ समयतक और रहनेके लिय मैं आपलागासे अनुराध करता हूँ।'

गौतमकी बात सुनकर ऋषियोंने अपने जानेका विचार छोड दिया।

तब श्रीगणेशजीन श्रीकार्तिकयजीसे कहा—'आप गौतम ऋषिके खेतम गायका रूप धारण करके चले जायँ। ऋषिकी दृष्टि पडते ही आप गिर पड जैसे मृत्यु हो गयी हो।' कार्तिकेयने वैसा ही किया। गायके वेषम वे गौतम ऋषिके खेतमे जाकर खेती नष्ट करने लगे। गौतमने इन्हे देखा, बस वे मृत्युतुल्य हो धराशायी हो गय।

यह दृश्य देखते ही ऋषिगण वहाँसे चलनकी तैयारी करने लगे। गौतमके आग्रह करनेपर ऋषियाने कहा—'गायकी मृत्युसे यह पापस्थली हा गयी है। अत नृपश्रेष्ठ भगीरथकी भाँति यदि आप श्रीगङ्गाजीको यहाँ लाकर गायको जीवित और इस स्थानको पवित्र करे ता हमलोग यहाँ रह सकते है।'

ऋषियाकी बात सुनकर महर्षि गौतम श्रीगङ्गाजीको लानेके लिये त्र्यम्बक पर्वतपर जाकर तपस्या करने लगे। अन्तम प्रसन्न हानेपर श्रीशकरजीने उन्हे श्रीगङ्गाजीको देनेका वचन दिया। तब गौतमने पुन कहा—'भगवन्! ये गङ्गाजी गायका उद्धार करके सागरम मिल और मेरे नामको भी प्रसिद्ध कर।' श्रीशकरजीन कहा—'यह गङ्गा गातमी और गोदावरीके नामसे प्रसिद्ध होगी तथा अत्यन्त पुण्य देनेवाली होगी।'

इतना कहकर श्रीशकरजीन श्रीगङ्गाजीको महर्षि गौतमके हाथा दे दिया। गौतम प्रसन्नचित्त हो ब्रह्मगिरि लौट। वहाँपर श्रीगङ्गाजीकी तीन धार हो गयी। एक धार मृत गौको जीवित कर दक्षिणकी आर सागरम मिल गयी।
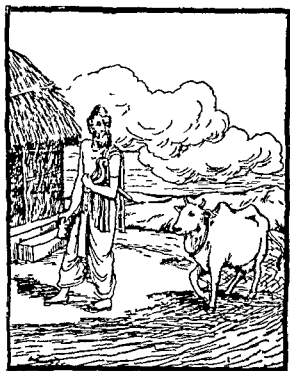
दूसरी धार पृथिवीका वेधकर पातालम और तीसरी आकाश-मार्गसे स्वर्गको चली गयी। दक्षिण सागरमे मिलनेवाली पुण्यतोया गङ्गा गोदावरी और गौतमीके नामसे प्रसिद्ध है।

(ब्रह्मपुराणान्तर्गत गौतमी-माहात्म्य)

गोकृत स्त्रीकृते चैव गुरुविप्रकृतेऽपि वा। हन्यन्ते ये तु राजन्द्र शक्रलोक व्रजन्ति ते॥

गोरक्षा, अबला स्त्राकी रक्षा गुरु और ब्राह्मणकी रक्षाके लिये जो प्राण द देते है राजन्द्र युधिष्ठिर! वे मनुष्य इन्द्रलोक (स्वर्ग) म जात ह। (महा० आश्व० वैष्णव०)

गौका अग्रपूजासे सम्मान

(श्रीजगन्नाथजी वेदालङ्कार)

स्वस्ति प्रजाभ्य परिपालयन्ता
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशा ।
गोब्राह्मणेभ्य शुभमस्तु नित्य
लोका समस्ता सुखिनो भवन्तु॥

इस स्वस्ति-बोधक श्लोकका आशय यह है कि पृथ्वीतलके सभी राजा न्यायपूर्ण मार्गसे सब प्रजाआका पालन करे, गौओ और ब्राह्मणाका सदा-सर्वदा कल्याण हो तथा समस्त प्राणी सुखी रह।

प्राचीन कालम गौआका अग्रपूजासे सम्मान किया जाता था। उन्ह सब प्रकारकी सुख-सुविधा प्रदान की जाती थी।

अथर्ववेदके सूक्त ६।२७।३ से लेकर ६।२८।१-२ तक कहा गया है कि 'शिवो गोभ्य उत पुरुषेभ्यो नो अस्तु।' 'परि गा नयाम ।' 'परीमे गामनेषत ।' अर्थात् मनुष्य अपने लिय ही नहीं गो-देवताआके लिये भी कल्याणकारी बने। वे गौओको चरनेके लिये बाहर ले जायँ जिससे वे सतुष्ट रह चरकर पूर्णतया तृप्त हा जायँ, नीराग रहे। वे मनुष्या और गौओका समानरूपसे सुखी रखे। गायाको सर्वप्रथम मान्यता मिले--इस प्रकारकी बुद्धि हमे प्राप्त हा। गौको अग्रभागमे रखनेका अर्थ उसका मुख्यतया सत्कार करना है। प्राणियाको अग्रपूजाका मान देते हुए सर्वप्रथम मान गौआको दना चाहिये। उन्हे प्रमुख स्थान दे, तभी मानवजातिका कल्याण होगा। सभी प्रकारके धना ओर अन्नामे गोरसका स्थान प्रमुख है। खाने-पीनेम दूध दही घी, छाछ आदि गव्य पदार्थ प्रमुख रहने चाहिये। इसके लिय अग्रपूजाका स्थान गौको देना चाहिये।

गोओके चरनेक लिये गोचरभूमिकी प्रथा अत्यन्त प्राचीन है। अथर्ववेदम कहा गया है—

एता एना व्याकर खिले गा विष्ठिता इव।
रमन्ता पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम्॥
(७।१२०।४)

अर्थात् 'गोचरभूमिपर बैठी हुई गायाके समान इन मनोवृत्तियाको मैं अलग-अलग करता हूँ। जो पुण्यकारक सुविचाररूप लक्ष्मियाँ है वे आनन्दसे मेरे अदर रह। जा पापी वृत्तियाँ है उनका मैं नाश कर चुका हूँ।' इस मन्त्रम गोचरभूमिमे गौआके बैठनेका उल्लेख है। गोचरभूमिमे गौआका रहने देना है और अन्य पशुआको वहाँसे दूर करना है। गोचरभूमिमे केवल गौएँ ही चरती रहे, अन्य पशु वहाँका घास न खाय। गोचरभूमिपर जल-सिचनकी उत्तम व्यवस्था करनी चाहिये। उसपर जल-सिचन करे, जिससे पर्याप्त मात्रामे जल मिलकर उत्तम घास जमे, जो गौआको खानेके लिये मिले। वेद कहता है—गौएँ जौके खेतकी ओर जाती हैं—

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा।
मर्य इव स्व ओक्ये॥ (ऋ० १।९१।१३)

'हे सोमदेव। हमारे अन्त करणमे तू जिस प्रकार गौएँ जौके खेतोम आनन्दपूर्वक सचरण करती हैं और मानव अपने निजी घरमे सुखी होता है, वैसे ही रमण कर।'

इसके अतिरिक्त गायोको घास और पानी शुद्ध मिलना चाहिये। उनके लिये उत्तम प्याऊ बनाने चाहिये।

ऋग्वेद (१।७।३) मे गौओंको चरनेके लिये पहाडापर भेजनेका निर्देश किया गया है। पर्वत भी गोचरभूमि है। पर्वत गायोका सरक्षण करनेवाला है। 'गोभिरद्रिमैरयत् ।' अर्थात् अनेक गौएँ साथ लेकर उन्हें पर्वतपर चरानेके लिये जाना उचित है। पर्वतको गोत्र कहा गया है। वह गौओका सरक्षक है।

हमारी गौएँ जिधर पानी पीती हैं, उन नदियोकी स्तुति की जाती है। गौओके कारण नदियोका महत्त्व बढ जाता है। हमारी गौएँ जहाँ पानी पीती हैं, वे दिव्य जल-प्रवाह पवित्र हो।

'अपो देवीरुप ह्वय यत्र गाव पिबन्ति न ।
सिन्धुभ्य कर्त्वं हवि ।'
(ऋ० १।२३।१८ अथर्व० १।४।३)

'उन नदियोको मैं हविर्भाग देता हूँ। जलके-अदर

अमृत है—'अप्सु अन्त अमृतम्', जलामे ओषधि गुण है—'अप्सु भेषजम्।'

गोमाता पूज्य है

यजुर्वेद (३।२०)में कहा गया है कि 'हे गौओ! तुम पूज्य हो, मैं भी तुम्हारी-जैसी पूज्यता प्राप्त करूँ— महस्थ महो वो भक्षीय यूय मह स्थ पूज्यरूपा स्थ। अतो वो युष्माक पूज्याना प्रसादात् अहमपि महो भक्षीय पूज्यत्व सेवेय।'

पश्वे तोकाय श गवे। (ऋ० ८।५।२०) अर्थात् हमारे पशु, सतान और गौके लिये सब प्रकारकी शान्ति प्राप्त हो।
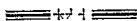
गाय धरतीके लिये वरदान है

(योगिराज श्रीबलिराजसिहजी)

वेदा, पुराणा, स्मृतियो, श्रीमद्भागवत, महाभारत तथा अन्यान्य ग्रन्थोमे गामहिमापर प्रचुर साहित्य उपलब्ध होता है। गोमातामे समस्त देवताओ, ऋषिया, मुनियो और तीर्थोंका निवास बताया गया है। गोरक्षाके लिये ईश्वरको स्वय अवतार लेना पडता है। गाय धरतीके सदृश मानी जाती है। राक्षसाके अत्याचारसे पीडित होकर धरतीद्वारा गायका रूप धारण कर परमात्माकी गुहार लगानेकी घटना धर्मग्रन्थोमे वर्णित है। गोमहिमा अनन्त है, जिसके पीछे परमब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णके स्वरूपमे विचरण करता है।

गोदुग्धसे चमत्कारी उपचार

हमारे यहाँ गायको माता और दुग्धको अमृत माना जाता है और इसका चमत्कारी प्रभाव आज भी दिखायी पडता है। घटना सम्भवत १९४५ के आस-पासकी है। काशीके प्रख्यात वैद्य प० राजेश्वरदत्त शास्त्रीके यहाँ बिहारके एक सम्पन्न जमींदार अत्यन्त क्षीण अवस्थामे अपनी पत्नीको लेकर उपचारके लिये आये। उनकी पत्नी ३० वर्षकी आयुमे ही सूखकर काँटा हो गयी थीं। पूरा शरीर झँवरा गया था और वे भयानक पीडासे बेचैन थीं। जमींदारने बताया कि कई वर्षोसे वे उपचारके लिये चारा ओर दौडकर थक गये, किंतु कोई लाभ नहीं हुआ। किसीको इनके रोगका थाह नहीं लगता। यह सुनकर वैद्यजीने मुस्कराते हुए कहा—'अच्छा अब आप शान्त हो जायँ।' इतना कहकर वैद्यजीने उनकी पत्नीकी नाडी देखी। कुछ देर विचार किया और जमींदारको एकान्तमे बताया कि इन्हे कैसर हुआ है, किंतु घबरानेकी कोई बात नहीं है। भगवान्का नाम लेकर धैर्य और परहेजसे यदि दवा करेंगे तो छ माहमे ठीक हो जायँगी। इनकी दवा और भोजन केवल काली (श्यामा) गायका दूध और काली तुलसीकी पत्ती होगा। अत ये जितना खा-पी सके वही दूध और पत्ती दीजिये। यदि स्वाद बदलनेकी इच्छा हो तो मूँगकी दालका रस और जौकी रोटी दे सकते हैं। साथमे कोई भी दवा लेना गोदुग्ध और तुलसीका अपमान होगा और उससे हानि भी हो सकती है। गाय और तुलसी दोनो हमारी माताएँ हैं। वैद्यजीकी बतायी दवापर पूर्ण विश्वास रखते हुए वे अपनी पत्नीके साथ वापस लौट आये और तदनुसार ही गोदुग्ध और तुलसीका सेवन करने लगे। धीरे-धीरे समय बीतता गया।

छ माह बाद जमींदार अपनी पत्नीके साथ जब वाराणसीमे वैद्यजीके यहाँ आये तो स्वस्थ, सुन्दर एव प्रसन्न महिलाको देखते ही वे पहचान गये और स्वय हर्षित होकर बोल पडे—'देखा न गोदुग्ध और तुलसीका चमत्कार।' जमींदारने बताया—उन्होने काली तुलसीका एक बडा बगीचा ही लगवा दिया था और चार-पाँच काली गाये रख ली थीं। महीनेभर सेवन करते-करते उनकी पत्नी पर्याप्त स्वस्थ हो गयीं। जमींदारने श्रद्धापूर्वक वैद्यजीको बहुत आग्रहपूर्वक कुछ देना चाहा और ग्रहण करनेकी प्रार्थना भी की, किंतु वे बोले—'मैंने अपने औषधालयसे आपको कोई दवा दी नहीं तो पैसे किस बातके लूँ। हाँ, गोमाताने आपपर कृपा की है, अत यह धन किसी गोशालाको दान दे दीजिये।'

वैद्य प० शास्त्रीके दुग्धोपचारकी इस चमत्कारी घटनाकी चर्चा वाराणसीके बुजुर्ग आज भी करते हैं।

कैंसरपर सम्पूर्ण विश्वमे रिसर्च हो रहा है और अभीतक यह रोग असाध्य ही माना जाता है, किंतु शास्त्रीजीने पचासो वर्ष पूर्व गोदुग्धके बलपर सफलता प्राप्त की थी। इसम निश्चित ही गोमहिमाके साथ ही उनकी आस्था एव परोपकारी भावना जुडी हुई थी।

गोघृतके चमत्कार

श्यामा गायके घृतके प्रयोगसे मैंन स्वय अनेक दु खी व्यक्तियोको रोगमुक्त होते देखा है। इससे गठिया, कुष्ठरोग, जल तथा कटे घावके दाग चेहरेकी झाँईं, नेत्र-विकार, जलन, मुँहका फटना आदिपर आश्चर्यजनक लाभ होता है।

इसी प्रकारकी एक घटना और है। कुछ वर्ष पूर्व एक व्यक्तिको गठिया रोग हो गया। रुग्ण व्यक्ति स्वय सम्पन्न थे और उनके यहाँ सौभाग्यसे एक श्यामा गाय भी थी। उस गायको एक माहतक हरे चारेके अतिरिक्त ढाई-ढाई सौ ग्रामकी मात्रामे गेहूँ, गुड, कच्ची गरी, कच्ची मूँगफली, आमा हल्दी, चना, सफेद दूब, बेलकी पत्ती, महुआ सेधा नमक, सफेद नमक तथा अजवाइन और मेथी ५०-५०ग्राम प्रतिदिनके हिसाबसे एक माहतक खिलाया गया। गर्मीका समय था, अत गायको अत्यन्त स्वच्छ वातावरणमे रखकर दोनो समय नहलाया-धुलाया जाता था। प्रात और साय थोडा गुड खिलाकर तीसरे दिनसे निकाले गये उक्त गायके दूधसे ग्रामीण पद्धतिके अनुसार गोहरीकी आँचपर मिट्टीके पात्रमे पकाये गये दूधसे दही तैयार कर उसका घी निकाला गया और इसी घीकी मालिशसे हफ्ते भरम गठिया गायब हो गया। इस घटनासे आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता हुई और उस घीका प्रयोग कई लोगोपर किया गया। जिसमें शत-प्रतिशत सफलता मिली। मेरे एक मित्रकी ऑपरेशनके दौरान नाकम हफ्तो नली पडनेके कारण आवाज चली गयी थी। प्रयास करनेके बावजूद १५-२० दिन बाद भी वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। मजबूर होकर वे अपनी बाते कागजपर लिख देते थे। तीन-चार दिन गलेमें उक्त घीकी मालिश करते ही उनकी आवाज खुलने लगी और ८-१० दिनमें वे पूर्ववत् बोलने लगे।

तीसरी घटना एक युवकसे सम्बन्धित है। प्रिंटिंग मशीनसे दबकर उसके बाये हाथकी हथेली तथा कई अगुलियाँ बुरी तरह फट गयीं। अँगूठा तो कटकर अलग हो गया। तत्परतासे ऑपरेशन एव दवाके बाद दो-ढाई माहमे जब उसका हाथ ठीक हो गया तो चमडेके तनाव और ऑपरेशनके दागसे उसकी अगुलियाँ खुल नहीं पाती थीं और पूरी हथेली बदसूरत लग रही थी। इस घीकी मालिशसे महीने भरमे ही शेष चारा अगुलियाँ और हथेली पूर्ववत् हो गयीं और ऑपरेशनका दाग एक सामान्य रेखाके रूपमे शेष रह गया।

इसी प्रकार एक और घटना है। वाराणसी नगरके एक सम्भ्रान्त परिवारकी सुशील एव सुन्दर कन्याके गलेमे जगह-जगह सफेद दाग हो जानेसे पूरा परिवार चिन्तित था। लडकी स्वय हीन भावनाके कारण उदास दिखायी देती थी। उनके आग्रहपर उस लडकीको श्यामा गायका वही घृत लगानेके लिये दिया गया। महीना बीतते-बीतते सफेद दागके स्थानपर लाली आने लगी और दूसरे माहमे उसकी त्वचा एक रगकी हो गयी। उसे देखकर कोई कह नहीं सकता कि गलेमे कभी कोई दाग था।

इसी प्रकार जोडोमे दर्द, नेत्र-सम्बन्धी विकार, चोट, सूजन, फोडे-फुसी आदि अनेक विकारोसे पीडित अनेक लोगोका उक्त घृतसे उपचार किया गया, जिसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई।

गोमूत्र एव गोमयके दिव्य गुण

आयुर्वेदिक ग्रन्थोमे गायकी बडी महिमा गायी गयी है। धार्मिक अनुष्ठानोंमे पञ्चगव्यका प्रयोग सर्वविदित है। गायका गोबर इतना पवित्र माना जाता है कि उससे लीपे बिना पूजा अथवा यज्ञस्थल पवित्र नहीं होता। गोबरमें रोग-निवारणके आश्चर्यजनक गुण पाये जाते हैं। इसकी गन्धसे हानिकारक विषैले जीव-जन्तु मर जाते है। गोमूत्रके बारेमे 'भावप्रकाश' कहता है कि यह चरपरा, कडुआ, तीक्ष्ण, गर्म, खारा, कसैला, हल्का अग्निप्रदीपक, मेधाके लिये हितकर, कफ वात, शूल, गुल्म, उदर, खजुली, नेत्ररोग मुखरोग, किलास आमवात-रोग बस्तिरोग, कोढ, खाँसी, श्वाँस, सूजन कामला एव पाडुरोग-नाशक है। कानमे डालनेसे कानका दर्द दूर हो जाता है।

अग्रेजी दवाओसे प्रथम चरणमे फाइलेरियाको कुछ दिनोके लिये भले दबा दिया जाय किंतु पतले धागेकी तरह लबे इसके कीडोको केवल गोमूत्रसे ही समाप्त किया जा सकता है। ज्ञातव्य है कि ये कीडे शरीरके

भीतर रातमें डोलकर पीडा पहुँचाते हैं और पीलपाँव आदिको उभारकर शरीरको विकृत तथा स्वास्थ्यको चौपट कर देते हैं। फाइलेरियासे पीडित कइ व्यक्तियोने चालीस दिनतक लगातार गोमूत्र पीकर फाइलेरियासे मुक्ति पायी है, यह मेरा अपना अनुभव है।

यह सत्य है कि गोवशसे सम्पूर्ण भारत उऋण नहीं हो सकता, क्योंकि अनादिकालसे इसपर हमारा भौतिक एव आध्यात्मिक जीवन आधारित रहा है, किंतु इधर कुछ दशकासे वैज्ञानिक प्रयोगोंके कारण कृषिका मशीनीकरण हो गया और बाजारू डिब्बे-बद घृत और दूधसे लोग अब काम चलाने लगे। ऐसी दशामें हमें गोवश अर्थहीन-सा प्रतीत होने लगा।

नास्तिकता, स्वेच्छाचरण एव धर्मदर्शनके प्रति उपेक्षित भाव होनेके कारण गायके धार्मिक एव पारम्परिक मूल्याको लोग भूल गये। यही कारण है कि आज गोवशपर कुठार उठानेमे कोई हिचक और भय नहीं रह गया। गोवशकी रक्षाके लिये आन्दोलन और सत्याग्रह करनेवालाकी भी कमी नहीं है, किंतु इसमे पूर्ण सफलता तभी मिलेगी, जब सम्पूर्ण मानव-समाज गोमहिमाकी जानकारी प्राप्त कर लेगा। प्राणी जब यह जान जायगा कि गाय धरतीके लिये वरदान है तो उसकी रक्षामे वह स्वय तत्पर होगा। किसीके उपदेश, आदेशकी आवश्यकता नहीं होगी।
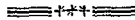
गौ भारतीय संस्कृतिका मेरुदण्ड

(डॉ० श्रीयुद्धसेनजी चतुर्वेदी)

गौ हमारी सस्कृतिका प्राण है। यह गङ्गा गोमती, गायत्री, गीता, गोवर्धन और गोविन्दकी भाँति पवित्र है। गोपालन, गोसेवा, गो-दान हमारी सस्कृतिकी महान् परम्परा रही है। गोसेवा सुख और समृद्धिका मार्ग प्रशस्त करती है। यह लक्ष्मी-प्राप्ति, विद्या-प्राप्ति और पुत्र-प्राप्तिका साधन है। गो-दर्शन, गोस्पर्श, गो-पूजन तथा गो-स्मरणसे मनुष्यके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध गोदधि, गोघृत आदि सभी पदार्थ अति पावन, आरोग्यप्रद, आयुवर्धक और शक्तिवर्धक हैं।

गौके समान इस ससारमें कोई क्षमाशील प्राणी नहीं है। गौ अपने अमृतमय गोरसका पान कराकर इस भौतिक जगत्में हमारा कल्याण करती है और मृत्युके पश्चात् भी हमारे कल्याणका मार्ग प्रशस्त करती है। परलोकगामी गोदायी पथिक गौ माताकी पूँछ पकडकर वैतरणी पार कर लेता है। महाभारतके अनुशासनपर्व (५१। ३३) मे लिखा है—

गाव स्वर्गस्य सोपान गाव स्वर्गेऽपि पूजिता ।
गाव कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् पर स्मृतम्॥

'गौएँ स्वर्गकी सीढी हैं, गौएँ स्वर्गमे भी पूजनीय हैं। गौएँ समस्त मनोवाञ्छित वस्तुओको देनेवाली हैं। अत गौओंसे बढकर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।'

गौसे चारो पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी सिद्धि होती है। गौ सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी है। गोदर्शनसे समस्त देवताओके दर्शन और समस्त तीर्थोंका पुण्य-लाभ प्राप्त होता है। जहाँ गौएँ निवास करती हैं, वहाँ सर्वत्र सुख और शान्तिका वास होता है। गौके शरीरमे ३३ कोटि देवता निवास करते हैं। गौके खुरसे उडनेवाली धूल भी अत्यन्त पवित्र है। श्रीकृष्ण गाय चराकर सध्या-समय जब घर लौटते हैं तो गोरजसे अलकृत उनके मुखकी अलौकिक शोभा देखने योग्य होती है।

गौएँ सर्वदा लक्ष्मीकी मूल हैं। गौमें पापकी स्थिति नहीं होती। गौ और मनुष्यमें परस्पर बन्धुत्वका सम्बन्ध है। गौ-विहीन गृह बन्धुशून्य गृह है—

गावो बन्धुर्मनुष्याणा मनुष्या बान्धवा गवाम्॥
गौश्च यस्मिन् गृहे नास्ति तद् बन्धुरहित गृहम्।

(पद्म० सृष्टि० ५०। १५५-१५६)

समुद्र-मन्थनके समय प्राप्त होनेवाले रत्नामे कामधेनुका भी उल्लेख है, जो गोधनकी श्रेष्ठताको इगित करता है। पुराणामे लिखा है कि सर्वप्रथम वेद, अग्नि, गौ और ब्राह्मणोकी उत्पत्ति यज्ञ-चक्र चलानेके प्रयाजनसे हुई। ब्राह्मणद्वारा यज्ञानुष्ठान सम्पादित किये जाते है। अग्निद्वारा देवताओको आहुतियाँ दी जाती हैं—'अग्निमुखा हि देवा

भवन्ति' तथा गौ ही हमे देवताआको अर्पित करने योग्य हवि प्रदान करती है। गौके घृतसे देवताओको हवि दी जाती है तथा गो-सतति (बैलो) द्वारा भूमिको जोतकर गेहूँ, चावल, जौ, तिल आदि हविष्यान्नका उत्पादन किया जाता है। यज्ञभूमिको गोमूत्रसे शुद्ध करके गोबरके कडोद्वारा यज्ञाग्निको प्रज्वलित किया जाता है। यज्ञ प्रारम्भ करनेसे पूर्व शरीर-शुद्धिके लिये पञ्चगव्य लेना होता है, जा गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र और गोबरसे बनाया जाता है।

अग्निपुराणमे लिखा है कि गायमें सब देवताओका निवास होनेसे इसका दान अत्यन्त पुण्यकारी है। पौराणिक आख्यानो आदिसे स्पष्ट होता है कि प्राचीन कालसे ही सम्माननीय अतिथियोकी गोदानद्वारा अभिनन्दन करनेकी परम्परा प्रतिष्ठित थी। अक्रूरके व्रजमे पहुँचनेपर श्रीकृष्णने उनका मधुपर्क, पवित्र अन्न तथा गो भेट करके अभिनन्दन किया (श्रीमद्भा० १०। ३८। ३८-३९)। इसी प्रकार सुदामाके द्वारकापुरी पहुँचनेपर श्रीकृष्णने उनका स्वागत 'गौ' भेट करके किया। इतना ही नहीं जनकपुरीमे राजा बहुलाश्वने श्रीकृष्णका सम्मान उन्हे मधुपर्कके साथ-साथ गाय और बैल भेट करके किया। हिदू-विवाहमे कन्या-पक्षके लोग वरको कन्यादानके बाद उपहारस्वरूप आज भी गोदान करना अच्छा समझते हैं।

महाभारतमे लिखा है कि अनेक पुण्योके प्रभावसे गोलोककी प्राप्ति होती हे। गोलाकमे न कोई अनिष्ट होता है, न कोई व्याधि होती है आर न किसी प्रकारकी कोई आपत्ति आती हे।

भगवान् श्रीकृष्णने 'गोविन्द' और 'गोपाल' बनकर गावर्धनको धारण किया और गौ-गोपाकी रक्षा की। श्रीकृष्णका गौओके साथ अभिन्न सम्बन्ध है। गौएँ भी अपनेको श्रीकृष्ण-के सम्पर्कम आकर धन्य समझती हैं। वे उन्ह स्नेहमयी दृष्टिसे निहारती हैं। वशीकी टेर सुनकर चाहे वे कितनी भी दूर क्या न हो दौडकर उनके पास पहुँचकर चारो ओरसे उन्हे घेरकर खडी हो जाती हैं। व्रजके भक्त कवियाने लिखा है—

'गोविन्द गिरि चढ़ गाय बुलावत।
गायँ बुलाईं धूमर-धौरी टेरत वेणु बजाय॥

गोविन्दका गायोके बीच रहना ही रुचिकर लगता है। छीतस्वामीने लिखा है—

आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय
गोविन्द को गायन विच रहिबौ ही भावै।
गायन के सग धावै गायन म सचुपावै
गायन की खुर रज अग लपटावै॥
गायन सो बृज छायौ वैकुण्ठ हूँ कौ
सुख बिसराय कै गायन हेतु गिरि कर लै उठावो।
'छीत स्वामी' गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी
गोपन कौ वेष धारें गायन में आवै॥

गौओंके सम्मानकी गाथाएँ हमारे इतिहासमें भी भरी पडी हैं। सम्राट् दिलीपने गौकी रक्षाके लिये अपने प्राणोंकी आहुति देनेमें भी सकोच नहीं किया। महर्षि वसिष्ठ, महर्षि जमदग्नि, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, पजाब-केसरी महाराजा रणजीतसिह—सभी महान् गो-भक्त थे। मुसलमान सेनानायक जब यह अनुभव करते थ कि वे यहाँके वीर राजपूत योद्धाओंसे मोर्चा न ले सकेंगे तो अपनी सेनाके आगे गायें कर देते थे। वीर राजपूत पराधीनता स्वीकार कर लेते थे लेकिन गौओंपर कभी शस्त्र नहीं उठाते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वतीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि गौकी हत्या पूर्णत त्याज्य है क्योकि इससे राजा और प्रजा दोनोका समूल नाश हो जाता है।

उपर्युक्त दृष्टान्तोसे यह स्पष्ट होता है कि गौ हमारी सभ्यता और सस्कृतिकी मेरुदण्ड है। गौविहीन भारतीय सस्कृतिकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। गौ हमारी राष्ट्र-लक्ष्मी है। वह हमारी समृद्धिकी आधारशिला है। गौने हम जीवनदायिनी शक्ति दी है, हम आरोग्य, आनन्द और शान्ति प्रदान की है। गौ हमारी सारी आर्थिक योजनाओ और सारी आध्यात्मिक शक्तियोकी स्रोत है। हम यह नहीं भूलना चाहिये कि गौ तो हमारी कल्याणकारिणी माता है। कैसी विडम्बना है कि जिस गौको हम कामधेनु, अवध्या और वन्दनीया मानते हैं, उसीका वध करनेमें हम आज तनिक भी सकोच नहीं हाता! कितने दु खका विषय है कि आज भौतिकवादी चकाचौंधसे हम इतने भ्रमित हो गये हैं कि हमे अपने कर्तव्याका भी ज्ञान नहीं रहा। हमे यह भलीभाँति समझ लेना चाहिये कि गौके बिना हम शून्य हैं, अत हम उस सदा नमस्कार करना चाहिये सदा उसकी सेवा करनी चाहिये।

भारतीय संस्कृतिकी मूलाधार—गौ

(योगी श्रीआदित्यनाथजी)

गौ प्राचीन कालसे ही भारतीय धर्म और संस्कृति-सभ्यताकी मूलाधार रही है। भारतीय संस्कृतिने प्राचीन कालसे ही गोभक्ति, गोपालनको अपने जीवनका सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य माना है। वेद-शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण तथा इतिहास गौकी उत्कृष्ट महिमाओंसे ओत-प्रोत हैं। स्वयं वेद गायको नमन करता है—

'अघ्न्ये ते रूपाय नमः'।

हे अवध्या गौ! तेरे स्वरूपको प्रणाम है। ऋग्वेदमें कहा गया है कि जिस स्थानपर गाय सुखपूर्वक निवास करती है, वहाँकी रजतक पवित्र हो जाती है, वह स्थान तीर्थ बन जाता है। हमारे जन्मसे मृत्युपर्यन्त सभी संस्कारोंमें पञ्चगव्य और पञ्चामृतकी अनिवार्य अपेक्षा रहती है। गोदानके बिना हमारा कोई भी धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता। गौ अपनी उत्पत्तिके समयसे ही भारतके लिये पूजनीय रही है। उसके दर्शन, पूजन, सेवा-शुश्रूषा आदिमें आस्तिक जन पुण्य मानते हैं। व्रत, जप, उपवास सभीमें गौ और गोप्रदत्त पदार्थ परमावश्यक है। गायका दूध अमृत-तुल्य होता है जो शरीर और मस्तिष्कको पुष्ट करता है। गोमूत्र गङ्गाजलके समान पवित्र माना जाता है और गोबरमें साक्षात् लक्ष्मीका निवास है। शास्त्रोंके अनुसार हमारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग, मांस-मज्जा-चर्म और अस्थिमें स्थित पापोंका विनाश पञ्चगव्य (गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र एवं गोमय) के पानसे होता है। आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञानके अनुसार भी शरीर-स्वास्थ्य एवं रोग-निवृत्तिके लिये गायके दूध दही, मट्ठा, मक्खन, घृत, मूत्र, गोबर आदिका अत्यन्त उपयोग है।

गायके शरीरमें सभी देवताओंका निवास है। अतः गौ सर्वदेवमयी है। पुरातन कालसे ही भारतीय संस्कृतिमें गाय श्रद्धाका पात्र रही है। भगवान् श्रीरामने यौवनमें प्रवेश करते समय अपने जीवनका लक्ष्य 'गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्यास्य सुखाय च' के पवित्र संकल्पकी पूर्तिके लिये ही उद्घोषित किया था। गायके प्रति भारतीय भावना कितनी श्रद्धा और कृतज्ञतासे ओत-प्रोत थी, यह इस श्लोकसे स्पष्ट होता है—

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

पुराणोंमें पद-पदपर गौकी अनन्त महिमा गायी गयी है। भारतीय संस्कृति ही नहीं, अपितु सारे विश्वमें गौका बड़ा सम्मान था। जैसे हम गौकी पूजा करते हैं, उसी प्रकार पारसी लोग साँडकी पूजा करते हैं। मिश्रके प्राचीन सिक्कोंपर बैलोंकी मूर्ति अङ्कित रहती है। ईसासे कई वर्ष पूर्व बने हुए पिरामिडोंमें बैलोंकी मूर्ति अङ्कित है।

भारतीय संस्कृति यज्ञ-प्रधान है। वेद, रामायण, महाभारत आदि धार्मिक तथा ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें यज्ञको ही सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यज्ञ करनेसे पृथिवी, जल, वायु, तेज, आकाश—इन पञ्चभूतोंकी शुद्धि होती है। पञ्चभूतोंके सामञ्जस्यसे मानव-शरीर बना है। अतः शरीरको सुरक्षित रखनेके लिये पञ्चभूतोंका शुद्ध रूपमें उपयोग आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। यज्ञ करनेसे जो परमाणु निकलते हैं, वे बादलोंको अपनी ओर खींचते हैं। जिससे वर्षा होती है। यज्ञमें गायके सूखे गोबरका प्रयोग किया जाता है। इस सूखे गोबरसे एक प्रकारका तेज निकलता है, जिससे लाखों विषैले कीट तत्क्षण ही नष्ट हो जाते हैं। गौके सूखे गोबरको जलानेसे मक्खी-मच्छर आदि मर जाते हैं। गौके दूध, दही और घी आदिमें वे सब पौष्टिक पदार्थ वर्तमान हैं जो अन्य किसी दुग्धादिमें नहीं पाये जाते। गोमूत्रमें कितने ही छोटे तथा बड़े रोगोंको दूर करनेकी शक्ति है, इसके यथाविधि सेवन करनेसे सभी प्रकारके उदर-रोग, नेत्ररोग कर्णरोग आदिको मिटाया जा सकता है। कई संक्रामक रोग तो गौओंके स्पर्श की हुई वायु लगनेसे ही निवृत्त हो जाते हैं। गौके सम्पर्कमें रहनेसे चेचक-जैसे रोग नहीं होते। धर्म और संस्कृतिकी प्रतीक होनेके साथ-साथ गाय भारतकी कृषि-प्रधान अर्थ-व्यवस्थाकी भी रीढ़ है। कौटिल्य-अर्थशास्त्रमें गोपालन और गोरक्षणको बहुत महत्त्व दिया गया है। जिस भूमिमें खेती न होती हो उसे गोचर बनानेका सुझाव अर्थशास्त्रका ही है। गौ धर्म और अर्थकी प्रबल पोषक है। धर्मसे

मोक्षकी प्राप्ति होती है तथा अर्थसे कामनाओकी सिद्धि हाती है। इस प्रकार गोसे धर्म, अर्थ, काम ओर मोक्षकी प्राप्ति होती है। इसीलिये प्राचीन कालसे ही गौका भारतीय जीवनमे इतना ऊँचा महत्त्व है। हमारे देशम गोपालन पश्चिमी देशाकी भाँति केवल दूधके लिये नही होता है, प्रत्युत अमृततुल्य दूधके अतिरिक्त खेत जोतनक लिय एव भार ढोनके लिये बैल तथा भूमिकी उर्वरता बनाये रखनेके लिये उत्तम खाद भी हमे गायसे प्राप्त होती है, जिसके अभावमे हमार राष्ट्रकी अर्थव्यवस्थाका सकट किसी प्रकार दूर नहीं किया जा सकता। हमारे देशमे लाखो एकड भूमि ऐसी है जहाँ ट्रैक्टरोका उपयोग ही नहीं किया जा सकता।

आज गौको व्यावहारिक उपयोगिताकी दृष्टिसे भौतिक तुलापर तोला जा रहा है। हमे याद रखना चाहिये कि आजका भौतिक विज्ञान गौकी इस सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमोत्कृष्ट उपयोगिताका पता ही नहीं लगा सकता, जिसे भारतीय शास्त्रकारोने अपनी दिव्य दृष्टिसे प्रत्यक्ष कर लिया था। गौकी धार्मिक महानता उसमे जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म-रूप तत्त्वोकी प्रखरताके कारण है, उनकी खोज तथा जानकारीके लिये आधुनिक वैज्ञानिकोके भौतिक यन्त्र सदैव स्थूल ही रहगे। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदीकी ओर अग्रसर 'गैढ' विज्ञानवेत्ता भी गोमाताक लोम-लोममें देवताओके निवास-रहस्य और प्रात गोदर्शन, गोपूजन, गोसेवा आदिका वास्तविक तथ्य समझनेमे असफल रहा है। गौका धार्मिक महत्त्व भाव-जगत्से सम्बन्ध रखता है और वह शास्त्र-प्रमाणद्वारा शुद्ध भारतीय सस्कृतिके दृष्टिकोणसे ही जाना जा सकता है। इन सब विशेषताओके कारण गौको भारतीय सस्कृतिका मूलाधार कहा गया है।
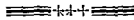
मा हिंस्यात् सर्वाभूतानि

(स्वामी श्रीविज्ञानानन्दजी सरस्वती)

भारतीय सस्कृतिका मूल वेद है, इसलिये विश्वभरकी सस्कृतियोमे वह सर्वप्राचीन सस्कृति है। एकमात्र आर्य सस्कृति ही वेदिक कालसे लेकर आजतक अविच्छिन्न-रूपमे चलती चली आ रही है, यह इसकी विशेषता है। विश्वम कितनी ही नवीन सस्कृतियाँ उत्पन्न हुई तथा धर्म-मजहब उत्पन्न हुए और कालके मुखमे समा गय, इनकी कोई गिनती नहीं है। इस आर्य-हिन्दू-सस्कृतिपर भी समय-समयपर बडी-बडी विपत्तियाँ आती रहीं और उत्थान-पतन भी होता रहा परतु फिर भी वह आजतक जीवित है।

खेदकी बात है कि आज अदूरदर्शी अपने ही लोगोको भारतीय धर्म-सस्कृतिम न्यूनता दृष्टिगोचर होने लगी है और वे अन्य धर्मोंकी ओर आकृष्ट होते देखे जाते हैं। यदि हिन्दूधर्मकी वास्तविकता तथा वैज्ञानिकताका यथार्थ रहस्य ज्ञात हो जाता तो सम्भवत उन्हे ऐसी भ्रान्ति नहीं होती। परतु—'स्वधर्मे निधन श्रेय परधर्मो भयावह।' इस भगवद्वाक्यका हम सदा स्मरण रखना चाहिये तभी हमारा कल्याण हो सकता है, अन्यथा नहीं।

इस सदर्भम हमे पशुहिसाके विषयमे कुछ विचार करना है, जो इस युगके लिये नितान्त आवश्यक है। हिन्दू-सस्कृतिम गौका स्थान बहुत ऊँचा है। वैदिक कालके आर्यलोग मुख्य रूपसे गो-सेवक और गो-भक्त ही थे। गो-दुग्ध ही प्रधान पेय पदार्थके रूपमें आर्योंको अति प्रिय था। दूधसे पर्याप्त मात्रामे घी भी बनाते थे, जो यज्ञादिक कार्योंमे उपयोग करते थे और खानेके काममे भी आता था। गो-पालनसे बैल भी मिल जाते थे जो हल जोतने तथा बोझ ढोनेके लिये गाडीमे जोत दिये जाते थे। आज भी मनुष्य बैलोका ऐसे कार्योंमे उपयोग करते हैं। गो-पालनसे हमे पर्याप्त मात्रामे गोबर भी मिल जाता है जो खेतके खादके रूपमे काम आता है।

गोधन आर्योंका प्रधान धन माना जाता था। वेदमें गायको 'अघ्न्या' नामसे कहा गया है, जिसका अर्थ है अवध्य, अर्थात् जो वधके योग्य नहीं है। बैलको वेदमे 'अघ्न्य' कहा है यथा—'गवा य पतिरघ्न्य' (अथर्व० ९।४।१७)। यहाँ बैलको गायका पति 'अघ्न्य' कहा गया है।

बृहदारण्यकोपनिषद् (६। ४। १८)मे एक प्रसग आया है, जिसमे आर्य लोगोमे बैलका मास खानेका भ्रम उत्पन्न हो जाता है। जो इस प्रकार है—

'अथ य इच्छेत् पुत्रो मे पण्डितो विगीत समितिगम शुश्रूषिता वाच भाषिता जायेत सर्वान् वेदाननुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति माँसौदन पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयाता-मीश्वरौ जनयित वा औक्षेण वार्षभेण वा।'

—इस बृहदारण्यकोपनिषद्के मन्त्रम 'मासौदन' और 'औक्षण' शब्दाको देखकर साधारण व्यक्तियोकी तो बात ही क्या बडे-बडे विद्वानाको भी भ्रम हो जाता है कि प्राचीन कालमे आर्यलोग गो-मासका उपयोग करते थे, जो वस्तुत सरासर भ्रमात्मक है, असत्य है। इस मन्त्रका अर्थ इस प्रकार है कि—'जो पुरुष यह चाहता हो कि मेरा पुत्र जगत्मे विख्यात पण्डित उत्पन्न हो और विद्वानोकी सभाम निर्भीक होकर प्रगल्भतापूर्वक सस्कृत वाणी बोलनेवाला हो, वेद-शास्त्रोको पढनेवाला तथा वेदके रहस्योको जाननेवाला हो, पूर्ण आयु—सौ वर्षतक जीनेवाला हो, ऐसी सतान चाहनेवाले माता-पिताको चाहिये कि 'मास' (ओषधि या फल-विशेषके गूदे) को घृतसिक्त करके गौके दूधसे खीर पकाये और उसक साथ 'उक्षा'—सोम ओषधि और 'ऋषभ'—ऋषभक ओषधिको मिलाकर पकाये और उसका सेवन करे।' ऐसा करनेसे बलवान् तथा मेधावी पुत्र उत्पन्न होता है।

जहाँ वेदमे गायको 'अघ्न्या' और बैलको 'अघ्न्य' अर्थात् अवध्य कहा है, वहाँ बैलके मास खानेका स्वप्न देखना तो असस्कृत मस्तिष्कवालेकी निराली सूझ ही हो सकती है, वैदिकोकी नहीं। वेद-भाष्यकार सायणाचार्यने ऋग्वेदके (१। १६४। ४३) मन्त्रके भाष्यमे 'उक्षा' शब्दका अर्थ 'सोम' नामक ओषधि ही बताया है। यथा—'सोम उक्षाऽभवत्।' सोम-रूप ओषधिका नाम उक्षा है। ऋषभ भी चिकित्सा-शास्त्रका ऋषभक नामक ओषधि ही है। अत उक्त श्रुति-वाक्योमे मास-भक्षणकी गन्धतक नहीं है।

ऋग्वेदमे भी एक मन्त्र आता है, जिसमे लोगोको गो-वधकी बात सूझती है। मन्त्र यह है—

कर्हि स्वित् सा त इन्द्र चेत्यासदघस्य यद्भिनदो रक्ष एषत्। मित्रक्रुवो यच्छसने न गाव पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते॥
(ऋ० १०। ८९। १४)

अर्थात्—'हे इन्द्र! जिस अस्त्र-वज्र या बाणको फककर तुमने पापी राक्षसको मारा था वह कहाँ फकने योग्य है? निश्चय ही जैसे पशुको मारनेवाला पशुको पीडित करके हनन करता है, वैसे ही तुम्हारे इस अस्त्रसे मित्रद्रोही दुष्ट शत्रुआको भी युद्धम पीडित करके सदाके लिये सुला द। क्योकि युद्धम विपक्षी शत्रुओको अस्त्रासे पीडित करके ही मारा जाता हे।'

यहाँ विचारणीय यह है कि मन्त्रम 'न' शब्द आया है, 'न'कार शब्द उपमा वाचक है, उपमासे विधि नहीं बनायी जाती है। अत उक्त मन्त्रम गा-वधका अर्थ निकालना सरासर भ्रम है, अवैदिकता मात्र है। यदि वैसा ही अर्थ होता तो उसी ऋग्वेदमे गामास-भक्षणका निषेध क्यो किया जाता? देखिये वेद-मन्त्र क्या कहता है—

य पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधान ।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषा शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥
(ऋ० १०। ८७। १६)

अर्थात् 'जो सर्वभक्षी दानवीय वृत्तिवाला बनकर मनुष्यका, घोडेका और गायका मास भक्षण करता हो खाता हो तथा दूधकी चोरी करता हो, उसके सिरको कुचल देना चाहिये।' इस प्रमाणसे जब वेदने ही गो, घोडे तथा नर-मास-भक्षणका निषेध किया है तब वही वेद गो-मास-भक्षणका विधान कैसे कर सकता हे। अर्थात् कदापि नहीं कर सकता यह निश्चित है। मनु महाराजने कहा है—

नाकृत्वा प्राणिना हिंसा मासमुत्पद्यते क्वचित्।
न च प्राणिवध स्वर्ग्यस्तस्मान्मास विवर्जयेत्॥
(५। ४८)

इस श्लोकम जीवहत्या तथा मास-भक्षण आदिका जहाँ निषेध किया गया है वहाँ मास-भक्षणके लिये गाय-बैलाको मारना मास-भक्षियोके ललकभरे निकृष्ट विचार नहीं तो और क्या हो सकते हैं? अत वेद तथा स्मृति आदि ग्रन्थामे कहीं भी गाय-बैलाके मास-भक्षणका विधान नहीं है। इस विषयम हमारे वैदिक विद्वानोने खूब विचार-विमर्श किया है और यही निष्कर्ष निकाला है कि प्राचीन वैदिक

कालमे आर्य लोग गो-वध नहीं करते थे और न व उनका मास ही भक्षण करते थे। अत इस विषयमे प्रचलित ये बात अनगल ओर भ्रमात्मक मात्र है, यथाथ नहीं। इसलिय देशभरमे गो-वध-निषेधका आन्दोलन भी चलाया गया था पर भारत सरकार इस ओर कतई ध्यान नहीं देती। इमसे पता चलता है कि देश तो स्वतन्त्र हो गया पर गुलामी अभी नहीं गयी यह बडे आश्चर्यकी बात है। कृषि-प्रधान देशमे गाय-बैलाका उपयोग कितना महत्त्वपूण है, इसका अनुभव सभी कर सकते हैं। अत कहा जा सकता है कि 'मा हिंस्यात् सर्वाभूतानि' यही हिन्दूधर्मका महान् आदर्श है।
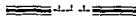
ईश्वरका प्रत्यक्ष स्वरूप—गोमाता

(डॉ० श्रीसत्यस्वरूपजी मिश्र)

गोसेवा ईश्वर-सेवा है। गासेवासे ही ईश्वरसेवाका अभ्यास होता है एव अनुभव हाता है। सनातन आर्य-परम्परामे गायको गोमाता कहा गया है। किसी अन्य प्राणीके लिये इस प्रकारका विशेपण नहीं है। इस तत्त्वका अनुभव करनेके लिये गोसेवा ही माध्यम है। पुराणोमे, शास्त्राम, गोसेवाकी भूयसी प्रशसा है। इसका सम्यक् बाध नहीं होनेसे यह बात अतिशयोक्ति-जैसी प्रतीत होती है, परतु ईश्वरकी कृपासे गामाताके स्वरूपका अनुभव हो जानेसे यह भ्रम चला जाता है। सनातन आर्यलोग यज्ञके सम्यक् विधानक लिये गोमाताकी सेवा करते थे। यजुर्वेदका प्रथम मन्त्र—'इषे त्वोर्जे त्वा ' इत्यादि गोसेवामे ही प्रयुक्त मन्त्र है। ऋग्वेदम गोमाताको अघ्न्या (अवध्या) कहा गया है।

प्राचीन समयमे जव आर्यलाग भारतसे बाहर ईरान तथा विभिन्न यूरोपीय देशोमे गय थे तो गोसेवा भी वैदिक धर्मके साथ वहाँ ले गये थे सस्कृतमे 'गो' शब्दका अर्थ 'गाय' तथा 'पृथ्वी' हे। फारसियाके प्राचीन धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता'म भी गोका रूप 'गाउस' मिलता है जिसका अर्थ 'गाय' तथा 'पृथ्वी' है। यूरोपकी कई भापाओमे गायका प्रतिरूप मिलता है। जो कि तुलनात्मक भाषा-विज्ञानकी दृष्टिमे 'गा' शब्दके साथ सम्पृक्त है। यथा—अग्रेजा काव (Cow) मध्य अग्रेजी कू (cū) तथा काउ (Cou) प्राचीन अग्रजी कू (Cū) प्राचीन आइसलैण्डिक कूइर (Kyr) डच कोए (Koe) स्वीडिश एव डेनिश को (Ko) जर्मन कू (Kuh) प्राचीन आइरिश वो (bo) वेल्श बुव (buw) लैटिन बोस (bos) ग्रीक बाउस (bous) तथा रसियन गाविआदा (govıado)

गोमाताके माहात्म्यके विषयमे अनेक पौराणिक कथाएँ सुप्रसिद्ध हैं, जैसे राजा दिलीपको सुरभिका शाप तथा महर्षि वसिष्ठके आश्रममे सुरभिकी पुत्री नन्दिनीकी सेवासे पुत्र-प्राप्ति तथा रघुवशके प्रतिष्ठाता रघुका जन्म इत्यादि कथाएँ गोमाहात्म्यसे परिपूर्ण हैं। जिसे पढकर-जानकर तथा सुनकर भी सबके मनपर इसका दृढ प्रभाव नहीं होता। कुछ लोग इसका कहानी मानकर इसपर विश्वास नहीं करते हैं। कुछ लोगोके मनपर इसका क्षणिक प्रभाव पडता है। बहुत कम भाग्यवान् पुरुष हे जिनके मनपर इनका दृढ प्रभाव पडता है। मेरे मनपर भी इसका दृढ प्रभाव नहीं था। परतु ईश्वरकी कृपासे दो घटनाआका मुझपर विशेष प्रभाव पडा और गोमाताके स्वरूप तथा माहात्म्यका किंचित् आभास भी मुझे हुआ। उन दोनो घटनाओका उल्लेख यहाँ कर रहा हूँ—

सन् १९८८ के नवम्बर मासकी २१ तारीखकी घटना है। मेरी पत्नी उस समय वाराणसाके एक अस्पतालमे चिकित्सा करा रही थीं, परतु दैवयोगसे दो दिन बाद उन्होंने अपना पार्थिव शरीर छोड दिया। जब मैं उनको दूध पहुँचानेके लिय अपने एक विद्यार्थीके घर गया था तो उनके दरवाजके सामने जब पहुँचा तो दरवाजा बद था तथा उसके सामन एक गाय खडी सूर्य-किरणका सेवन कर रही थी। उसका हटाना मेरे लिये असम्भव था। मैं अपने दुपहिया वाहनसे गया था तथा उसके इतना निकट पहुँच गया था कि उसके हिलनपर मेरे फ्लास्कके टूटने तथा दूधके गिरनेका डर था। मैंने मन-ही-मन सोचा कि गाय तो गामाता है। ईश्वर-स्वरूपिणी है तथा इसके शरीरमें विभिन्न

देवताओका निवास है। अत ये मेरी प्रार्थना सुनेगी एव मेरे लिये रास्ता छोड देगी। ऐसा सोचकर मैंने उसे मन-ही-मन प्रणाम किया और रास्ता छोडनेके लिये प्रार्थना की। कुछ ही क्षणोमे गाय वहाँसे हट गयी। इस घटनाका मेरे मनपर बहुत गम्भीर प्रभाव पडा तथा उसके प्रकृत स्वरूपका मुझे किंचित् बोध भी हुआ।

इसके लगभग दो महीने बाद एक दूसरी घटना घटी। वाराणसीमे गङ्गातटपर अस्सीघाटपर सगमेश्वरजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। मैं गङ्गास्नान करके नित्य उनका दर्शन करता हूँ। कभी-कभी गाये मन्दिरके भीतर प्रवेश कर जाती हैं तथा शिवजीके ऊपर चढाये गये फूल, बेलपत्ती आदि खा जाती हैं। एक दिन एक गाय मन्दिरमे प्रवेश कर फूल-पत्तियाँ आदि खा रही थी। उसका एक पैर शिवलिगके ऊपर था। मुझे अच्छा नहीं लगा। मेरे मुँहसे निकल गया—अरे गोमाता! 'शिवलिङ्ग'से तो पैर हटा लो।' गायने तत्क्षण ही शिवलिङ्गसे अपना पैर हटा लिया। इस घटनासे गोमाताके माहात्म्यमे मेरा विश्वास अधिक दृढ हो गया।

गोमाता ईश्वरका प्रत्यक्ष स्वरूप है। इसका प्रमाण है गोमाताका स्वाभाविक निष्काम भाव, उसके भाजनकी सात्त्विकता तथा सभीके प्रति समदृष्टि। मनुष्य सर्वदा उसके बछडेको दूध पीनेसे रोककर भी उसका दूध दुह लेता है, किंतु गोमाता अपने वत्सकी भी परवा न कर हमे सहज ही दूध उपलब्ध करा देती है। उसका मनुष्य तथा अपने बच्चेके प्रति समभाव ही नही अपितु वह इतनी कल्याणकारिणी और परोपकारी है कि अपने वत्सकी भी उपेक्षा कर देती है। पशुरूपमे शरीर धारण करके भी इसका सहज स्वभाव एक ब्रह्मज्ञानीके तुल्य है। उसके मल-मूत्रको शास्त्रमे पवित्र माना गया है। गोबर तथा गोमूत्र भी मनुष्यके लिये विशेष कल्याणकारी है। इससे स्पष्ट है कि देवमयी गोमाता ईश्वरका ही प्रत्यक्ष स्वरूप है।
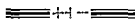
अमृतस्य नाभि

(प्रो० श्रीरामाश्रयप्रसादसिंहजी)

भारतीय सस्कृति मानवेतर प्राणियोमे गायको सर्वाधिक महत्त्व देती है। गाय उसी प्रकार रक्षणीया है, जिस प्रकार हम भूमि और राष्ट्रकी रक्षा करते हैं। भूमि, राष्ट्र तथा गौकी रक्षा आर्यत्वकी रक्षा है, हिन्दुत्वकी रक्षा है और रक्षा है मनुष्यके अदरके शुचित्वकी उसके भीतरके मानुष-भावकी।

गाय, गङ्गा गीता और गायत्री—ये चारो हिन्दू-धर्म-भवनके चार सुदृढ स्तम्भ हैं। इनसे निर्मित हिन्दू-धर्म-भवनके मध्य गोविन्द भगवान् विराजमान हैं। हर आस्तिक हिन्दूकी अन्तिम लालसा होती है कि उसके मरते समय गोदान किया जाय, अन्तिम साँसके निकलनेके पूर्व मुँहमे गङ्गाका ज़ल डाला जाय गीताका पाठ हो और गायत्रीका जाप हो।

गो-दुग्ध अमृत है, गङ्गा-जल पवित्र एव तारक है, गीता निष्कामकर्मद्वारा ब्राह्मी स्थितितक पहुँचा देती है और गायत्री-मन्त्र हमारी बुद्धिको पवित्र एव परिष्कृत करता है, विवेकको पुष्ट करता है तथा परमात्माके पावन प्रकाशमय प्रेमका द्वार खोलता है। अत गाय, गङ्गा, गीता और गायत्री—ये चारो शब्द हिन्दू-सस्कृतिके आधार-स्तम्भ हैं। इनको सबलरूपमे पाकर ही हमारी यह उदार एव उदात्त आर्य-सस्कृति विश्वमे अपना विशिष्ट एव श्रेष्ठ स्थान बनाये हुए है। पर विडम्बना यह है कि आज हमारी ही गलतियोके कारण, अपनी ही भूलोके कारण इन चारोकी बडी दयनीय स्थिति हो गयी है। गङ्गा प्रदूषित हो रही है, गीताका अध्ययन-अध्यापन समाप्तप्राय हो गया है आजके चकाचौंधके वातावरणने गायत्रीके जपको भी भुला दिया है और निरीह एव निर्दोष गाय हमारी असीम अर्थलिप्साका शिकार बनकर कत्लगाहो एव कसाई-घरोकी शोभा बढा रही है। आर्यत्वका हिन्दुत्वका ऐसा अध पतन तो उस समय भी न हुआ था जब हम सदियोतक गुलाम थे।

स्वतन्त्रता-प्राप्तिके पश्चात् हमारी उदात्त सस्कृतिकी यात्राम जो गिरावट आयी है, जो पतन हुआ है, उसे देखकर शर्मसे हमारा माथा झुक जाता है। क्या हो गया है इस राष्ट्रको, क्या हो गया है हमारे सोच और चिन्तनको! गायोका वध जिम रूपमे आज भारतमे हो रहा है, उससे गोवशके सर्वनाशकी तथा राष्ट्रके पतनकी भयकर समस्या उपस्थित हो गयी है। गाय हमारी कृषि-सस्कृतिकी आधारशिला रही है। प्राचीन कालसे ही ऋषि-सस्कृति और कृषि-सस्कृति दोनोकी आधारशिला गाय ही रही है। ऋषियोके आश्रम गायोसे सुशोभित रहते थे। गोसेवा कर गोदुग्धसे अपनी मेधाको पवित्र कर आश्रमो एव गुरुकुलोके छात्र गार्हस्थ्य-जीवनम प्रवेश करते थे और अपने चरित्रकी धवलतासे मानवताके पथका विस्तार करते थे तथा वे 'सर्वे भवन्तु सुखिन ' की भावनाको एव 'सर्वभूतहिते रता ' के भावको विकसित करते थे। गोसेवा हमारे पूर्वज ऋषियोकी सबसे बडी देन है। गोवशके सवर्धन एव सरक्षणके लिये ही हमारे भगवान् श्रीकृष्ण गोकुलम आते हैं और गोसेवा करके अपना 'गोपाल' नाम सार्थक करते हैं। गोवर्धन पर्वतद्वारा व्रजकी रक्षा करके गोसवर्धनका मूलमन्त्र प्रदान करते हैं।

प्राचीन भारत गोसस्कृतिपर आधारित था। ब्राह्ममुहूर्तमें ही नर-नारी जागकर गोवशकी सेवा शुरू करते सानी-पानी देते नारियाँ गोरसमन्थन करतीं, दूध-दहीका वितरण होता। सारा वातावरण गोरसमय हो उठता। जन-समूह गोरसम पवित्र एव पुष्ट होता, प्राण और प्रकाशका नवागमन होता और कृषि-सस्कृतिके लिय सामग्री तैयार होती। गायका बछडा बैल बनकर खेत जोतता गायका गोबर उत्कृष्ट खाद बनकर कृषिको समृद्ध करता गोमूत्र कीटनाशक बनता अनेक बीमारियासे त्राण दिलाता। गायका दूध गायका दही, गायका मक्खन लम्बी आयुके लिये, स्वस्थ जीवनके लिये अमृत है। सभी प्रकारके 'विटामिन' सम्मिलित रूपम भी गो-दुग्धकी बराबरी नहीं कर सकते। गाय दरवाजेकी शोभा ही नहीं, वह श्रीसम्पदा है, लक्ष्मी है, धरतीकी भाँति पूज्या है। जिस वात्सल्य-रसकी इतनी महिमा और चर्चा है वह गायका अपने बछडेके प्रति अहैतुक स्नेहको देखकर ही है। सचमुच गाय हमारी माँ है। वह माँ और मातृभूमिकी भाँति पूज्या और रक्षणीया है। आदरणीया और सम्माननीया है।

ऋग्वेदमे एक मन्त्र मिलता है, जिसमे गायको अमृतकी नाभि और अमरत्वका केन्द्र माना गया है। पूरा मन्त्र इस प्रकार है—

माता रुद्राणा दुहिता वसूना स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि ।
प्र नु वोच चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥

(ऋग्वेद ८। १०१। १५)

इसका तात्पर्य है—प्रत्येक चेतनावाले विचारशील मनुष्यको मैंने यही समझाकर कहा है कि निरपराध अहन्तव्या गौको कभी मत मार, क्योकि वह रुद्र देवोकी माता है, वसुदेवोकी कन्या है और आदित्यदेवोकी बहन तथा घृतरूप अमरत्वका केन्द्र है।

इसीसे मिलता-जुलता एक मन्त्र अथर्ववेदमे भी मिलता है—

मातादित्याना दुहिता वसूना प्राण प्रजानाममृतस्य नाभि ।
हिरण्यवर्णा मधुकशा घृताची महान् भर्गश्चरति मर्त्येषु॥

(अथर्ववेद ९। १। ४)

'गौ आदित्योकी माता वसुओकी बेटी, प्रजाओका प्राण, अमृतकी नाभि, हिरण्यवर्ण घृताक्त मधुकशा है। इसीको पाकर महान् तेज मर्त्योमे, प्राणियोमे विचरण करता है।'

इन दोनो मन्त्रोम गौकी महिमाका उद्घाटन है और बतलाया गया है कि यह अघ्न्या है, अहिसनीया है, मधुकशा है, स्वर्णवर्णवाली एव स्नेहमयी है। प्राणियोमे महान् तेज इसीके दूधके माध्यमसे आता है। गौका अर्थ वाणी और भूमि भी होता है। वाणी और भूमि (राष्ट्रदेवी) की ही भाँति गौ पालनीया एव रक्षणीया है। गायके अदर अग्नि एव वायुके अश हैं। इसलिये गोदुग्ध नियमित रूपसे पीनेवालेम आग्नेयता एव प्राणवत्ता मिलती है। गायका दूध पीनेवाले स्फूर्तिसम्पन्न एव तेजस्वी होते हैं। ऐसी स्फूर्ति भैंस या अन्य पशुओक दूधमें नहीं होती। इसीलिये प्राचीन कालमे ऋषियोके आश्रमोमे गाय होती थीं, उनकी सेवा होती थी। उनके दूधमे ऋषि और ब्रह्मचारी शिष्य अप्रतिम मेधाशक्तिसे युक्त होते थे। वे विप्र बनते थे, प्रकृष्ट प्रज्ञाके

धनी होते थे।

गायको मारनेका अर्थ है अमृतत्वकी समाप्ति, स्फूर्ति, तेज एव प्राणवत्ताकी समाप्ति। यही कारण है कि हमारे पूर्वज ऋषियोने यह नियम बना दिया कि प्रत्येक सद्गृहस्थके घर एक गाय हो और भोजन बननेके पश्चात् गोग्रास निकालकर ही परिवारके सदस्य भोजन कर। गायकी पूजा, गायकी आरती, गोप्रदक्षिणा, गोग्रास देना, गोदान करना तथा गायको धूप-दीप दिखाना इत्यादि हिन्दू-धर्मका अङ्ग बन गया। गायमे तैंतीस करोड देवता निवास करते हैं। गायकी एक परिक्रमा कर देनेसे एक साथ तैंतीस करोड देवताओकी परिक्रमा हो जाती है। ऐसी महिमा है गायकी! ब्राह्मण, गौ और वाणी—इन तीनोमे तेज और ओजकी प्रधानता है। आर्य-सस्कृतिम गायकी जो इतनी महिमा है, वह इसके इन्ही तेजस्वी गुणोके कारण है। इसीलिये प्राचीन भारतमे घर-घर गायकी पूजा होती थी और आज भी कुछ स्थानामे गायकी घर-घरमे पूजा होती है। हमारे पूर्वज ऋषियोने इसीलिये घोषणा की कि गाय अघ्न्या है, इसे नहीं मारना चाहिये। यह धर्म, सस्कृति एव प्राणकी भाँति तथा मातृभूमिकी भाँति रक्षणीया है, वन्दनीया है, सेवनीया है।

किंतु आज भारतमे गोवशकी हत्या जिस रूपमे होती है, उससे लगता है कि हमारे अदर राक्षसत्व प्रविष्ट हो गया है। प्रतिदिन हजारा गाये मारी जा रही है, काटी जा रही हैं और विदेशी मुद्राके लोभमे विदेशोमे गोमास भेजा जा रहा है। यह कृतघ्नता और क्रूरताकी पराकाष्ठा है। क्या अपनी वृद्धा माता या वृद्ध पिताको हम धनके लालचमे बेच सकते हैं, उन्हे कत्लगाहमे कसाईके हाथो वध किये जानेके लिये भेज सकते हैं? गायकी हिसासे गोवशके नाशकी भयकर समस्या उपस्थित हो गयी है। गोबरकी खाद सर्वोत्तम खाद है, बैल और हलसे जोते गये खेतकी उर्वराशक्ति नष्ट नहीं होती। आज डी० ए० पी०, यूरिया आदि रासायनिक खादोने तथा ट्रैक्टरकी गहरी जोताईने हमारे खेतोकी उर्वराशक्ति मिटा दी है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी भारत-भू अन्नपूर्णा बनी रहे, यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी और प्राणवान् बने रहे तो हमे गायोको अच्छी तरहसे पालना होगा उनकी रक्षा करनी होगी, उनकी सेवा करनी होगी और उनकी हत्याको सर्वांशमे रोकना होगा। हम अहिसक तरीकेसे सरकारपर और अपने नेताओपर दबाव डाले कि गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगे। यदि आवश्यकता हो तो सविधानमे भी सशोधन लाकर हम इस अनुचित, पापमय, गोवश-विनाशी गोहत्याके कुकर्मको रोके। ध्यान रहे, अमृतके केन्द्र और मधु प्रदान करनेवाली गायकी हत्या अपनी सस्कृति और अपने धर्मकी हत्या है, अपने आर्यत्व एव अस्तित्वकी हत्या है। जय गोमाता। जय भारत!!

स्वप्नमे गोदर्शनका फल

स्वप्नमे गौ अथवा साँड़के दर्शनसे कल्याण-लाभ एव व्याधि-नाश होता है। इसी प्रकार स्वप्नम गौके थनको चूसना भी श्रेष्ठ माना गया है। स्वप्नमे गौका घरमे ब्याना, बैल अथवा साँड़की सवारी करना, तालाबके बीचमे घृत-मिश्रित खीरका भोजन भी उत्तम माना गया है। इनमेसे घीसहित खीरका भोजन तो राज्य-प्राप्तिका सूचक माना गया है। इसी प्रकार स्वप्नम ताजे दुहे हुए फेनसहित दुग्धका पान करनेवालेको अनेक भोगोकी तथा दहीके देखनेस प्रसन्नताकी प्राप्ति होती है। जो बैल अथवा साँड़से युक्त रथपर स्वप्नमे अकेला सवार होता है और उसी अवस्थामे जाग जाता है, उसे शीघ्र धन मिलता है। स्वप्नमे दही मिलनेसे धनकी, घी मिलनेसे यशकी और दही खानेसे यशकी प्राप्ति निश्चित है। इसी प्रकार यात्रा आरम्भ करते समय दही और दूधका दीखना शुभ शकुन माना गया है। स्वप्नम दही-भातका भोजन करनेसे कार्य-सिद्धि होती है तथा बैलपर चढनेसे द्रव्य-लाभ होता है एव व्याधिसे छुटकारा मिलता है। इसी प्रकार स्वप्नमे साँड़ अथवा गौका दर्शन करनेस कुटुम्बकी वृद्धि होती है। स्वप्नम सभी काली वस्तुओका दर्शन निन्द्य माना गया है, केवल कृष्णा गौका दर्शन शुभ होता है। (पं० श्रीराजेश्वरजी शास्त्री सिद्धान्ती)

ससारकी श्रेष्ठतम पवित्र वस्तु गौ

(श्रीश्यामनारायणजी शास्त्री रामायणी)

भगवान्के अवतारका मूल प्रयोजन गौकी रक्षा हे। लोक-परलोकका सुधार एव स्वार्थ और परमार्थ—इन दोनोकी सिद्धि गौके द्वारा होती हे। भगवान्की स्तुति करते हुए देवताओन प्रथम स्थान गोका ही माना है—

गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिधुसुता प्रिय कता॥

(रा० च० मा० १। १८६ छ०)

पृथ्वी, सत, देव, विप्र—ये सभी इसी गौके पूरक तत्त्व हैं। इनमे मुख्य तत्त्व तो गौ ही है, क्याकि पृथ्वी गोका पोषण करती है एव उसे धारण करती है और पृथ्वीको धर्म-कर्मद्वारा सत पोषण दते है। धर्म-कर्मके समस्त मन्त्र ब्राह्मणाद्वारा प्रयुक्त किये जाते ह और समस्त प्रयोज्य मन्त्रोके लक्ष्य देवगण हैं, जिनसे विश्वके ममस्त प्राणियाका पोषण होता है, वे देवगण मन्त्राक अधीन हैं, मन्त्र ब्राह्मणाके अधीन है आर ब्राह्मणोको भी हव्य-कव्य पञ्चगव्यादि समस्त वस्तुएँ गोके द्वारा ही प्राप्त होती हैं। सक्षेपमे समस्त विश्व देवाधीन समस्त देव मन्त्राधीन, समस्त मन्त्र ब्राह्मणाधीन आर समस्त ब्राह्मण-कर्म गोक अधीन हे इसी कारण ब्राह्मणासे भी बढकर गाकी महिमा निगमागम तथा पुराणादिकोम गायी गयी है। इसीलिये 'गावस्त्रैलोक्यमातर ' कहा गया ह। इतना ही नहीं महाभारतके अनुशासनपर्वम तो यहाँतक मिलता है—

धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविया तथा।
एतासा तनयाश्चापि कृषियोगमुपासत॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च।
ततो यज्ञा प्रवर्तन्ते हव्य कव्य च सर्वश ॥
अमृतायतन चैता सर्वलोकनमस्कृता ।

(८३। १८-१९ ५१। ३०)

य अपन दूध-घीस प्रजाका भी पालन-पाषण करती हैं। इनक पुत्र (बैल) खताक काम आत हैं तथा नाना प्रकारक धान्य एव बाज उत्पन्न करत हैं। उन्हींस यज्ञ सम्पन्न होत हैं और हव्य-कव्यका भी सर्वथा निवाह हाता है। य अमृतकी आधारभूत हैं। सारा ससार इनक सामन नतमस्तक हाता है।

भारत तो कृषि-प्रधान देश है, इसलिये इसके कृषि-कर्मम गो एव गोवत्सका परमोपयोग सहज ही सिद्ध है।

आज धर्म-प्रधान भारतवर्षमे जितनी उपेक्षा एव दुर्दशा गोकी हो रही है, उतनी विश्वभरम और कहीं नहीं है। जबकि लौकिक एव पारलौकिक प्रत्येक दृष्टिकोणसे मानवके जीवनम गोकी परमोपयोगिता है। आज भारतम जितनी गोहत्या हो रही है उतनी अन्यत्र कहीं नहीं। इसी कारण सुमम्पन्न हात हुए भी देशवासियाको नाना प्रकारके कष्ट उठाने पड रहे हैं। इसका मूल कारण गोहत्याका पाप ही है। इसकी सर्वोपयागिता राष्ट्रभरक हितमे कितनी है इसपर कुछ विचार प्रस्तुत किये जा रह हैं—

आयुर्वेदिक दृष्टिकोणसे

गोमे प्राप्त होनेवाले पञ्चगव्य (दुग्ध दधि, घृत, गोमूत्र आर गोबर) की अनन्त महिमा गायी गयी है—

गव्य पवित्र च रसायन च
पथ्य च हृद्य बलबुद्धिद स्यात्।
आयु प्रद रक्तविकारहारि
त्रिदोषहृद्रोगविषापह स्यात्॥

अर्थात् पञ्चगव्य परम पवित्र रसायन है, पथ्य है, हृदयका आनन्द दनेवाला है और बल तथा बुद्धि प्रदान करनेवाला हे। यह आयु प्रदान करनवाला रक्तके समस्त विकाराको दूर करनेवाला कफ, वात तथा पित्तजन्य तीनो दाषा हृदयक रोगा और ताक्ष्ण विषके प्रभावका भी दूर करनेवाला ह।

पञ्चगव्य-पानके बिना यजमानको यज्ञ करनेका अधिकार या यज्ञ-मण्डपम प्रवेश करनका भी अधिकार नहीं प्राप्त हाता। इसस कायिक वाचिक मानसिक पाप-ताप-सताप दूर हा जात हैं। विशेष बात ता यह है कि इसक प्राशन-मात्रस हा शरीरक चर्म एव अस्थिगत सार पाप नष्ट हा जात हैं—

यत्त्वगस्थिगत पाप देह तिष्ठति मामक।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवन्धनम्॥

गाक पञ्चामृत-पानम समस्त वैदिक कर्म सम्पन्न होते

हैं। पञ्चगव्य एव पञ्चामृत-सेवनसे शरीरगत समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। इससे अधिक और क्या कहा जाय?

गोमूत्र—किसी भी औषधका अमृतीकरण गोमूत्रसे किया जाता है। परम विलक्षणता यह है कि कैसा भी विष क्या न हो गोमूत्रमे मात्र तीन दिनतक पडे रहनेपर शुद्ध हो जाता है। आयुर्वेदमे स्पष्ट वर्णन किया गया है कि—

'गोमूत्रे त्रिदिन स्थाप्य विष तेन विशुद्ध्यति।'

(क) गोमूत्रको कानमे डालनेसे समस्त कर्ण-रोग दूर होते हैं।

(ख) प्रात बासी मुख एक तोला गोमूत्र-सेवनसे कैंसरतकका नाश होता है।

(ग) प्रथम ब्यायी गौके प्रथम बार दूध (खील) निकालकर बिना रोक-टोकके पी लेनेपर जीवनभरके लिये दमाका रोग नष्ट हो जाता है।

(घ) गोमूत्रमे छोटी हर्रे २४ घटे भिगोकर छायामे सुखाकर गोघृतमे भूनकर चूर्ण बनाकर दोपहर और सायकाल भोजनके पश्चात् एक-एक तोला लेनेपर समस्त उदर-रोग नष्ट हो जाते हैं।

(ङ) उदरके समस्त विकृत कीटाणुओको नष्ट करनेके लिये सर्वोत्तम औषध गोमूत्र है।

सक्षेपम गोमूत्र कीटाणुनाशक, अग्निदीपक पित्तहारक, बुद्धिवर्धक तथा पाचक है। यह तीक्ष्ण, उष्ण, क्षार, कटु और लघु स्वभाववाला है।

इसकी परम पवित्रता तो इतनेसे ही समझी जा सकती है कि गङ्गाजी जहाँ जग-पावनी कही जाती हैं, वही वे गौ माताके मूत्रमे निवास करती हैं, वे ही क्या **'मूत्रे गङ्गादयो नद्य '** समस्त नदियाँ निवास करती है और तो और फिर भगवान्पर भी सकट आनेपर गोमूत्रसे ही उनकी रक्षा की जाती है। पूतनाद्वारा विषलिप्तस्तन-पान करानेपर कहा गया है—

गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।
रक्षा चक्रुश्च शकृता द्वादशाङ्गेषु नामभि ॥

(श्रीमद्भा० १०। ६। २०)

गोमय (गोबर)—गोमाताका गोबर कीटाणु-नाशक, पोषक, कान्तिप्रद दुर्गन्धिनाशक, शोषक, वीर्यवर्धक रसयुक्त तथा परम पवित्र है।

(क) गौके कडे (गोबर)को सुखा-जलाकर मजन करनेसे समस्त दन्तरोग नष्ट होते है।

(ख) आज यूरोपीय विज्ञानवेत्ता भी मानते है कि गोबरम प्लेग, हैजेके कीटाणुओको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति है।

(ग) भूमिकी उर्वराशक्तिको बढानेके लिये गोबर परम उपयोगी तत्त्व हैं। इससे बढकर ससारमे दूसरी कोई खाद नहीं है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे गौका महत्त्व

विज्ञानकी दृष्टिसे मास मानवके लिये अप्राकृतिक भोजन है। साथ-ही-साथ अनेको रोगोका उत्पादक है। इसका परम प्रमाण है मासाहारी देशोके मानवोमे नाना प्रकारके रोगोकी वृद्धि। मासाहारसे जब शरीर ही रोगी हो जायगा तो उसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म अश मन कैसे स्वस्थ रह सकेगा? गोदुग्ध जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त स्वस्थ एव अस्वस्थ सभीके लिये परम पौष्टिक आहार तथा औषध है। अमेरिकामे अनुसधानद्वारा पता लगाया गया है कि विटामिन 'बी' तो गौके पेटमे सर्वदा ही रहता है। इस कारण उसका दूध ही क्या गोमूत्र तक भी पूर्ण पोषक है।

आधिदैविक दृष्टिकोणसे

एकमात्र गोसेवा करनेसे समस्त देवी-देवता सतुष्ट हो जाते हैं, क्योकि गौके शरीरम सभी देवताओका निवास है। कहा भी गया है—

हरिहर, विधि शशि, सूर्य इन्द्र वसु, साध्य प्रजापति वेद महान्।
गिरा गिरिसुता गगा लक्ष्मी ज्येष्ठा कार्तिकेय भगवान्॥
ऋषि, मुनि ग्रह नक्षत्र तीर्थ यम विश्वेदेव पितर, गन्धर्व।
गो माताके अग अग म, रहे विराज देवता सर्व॥

विचार कीजिय कि जब एकमात्र गौकी सेवासे ही समस्त देवोकी सेवा एव प्रसन्नता हो जाती है तो फिर प्राणीका लोक-परलाक क्या नहीं मिल सकता? कितना सुलभ साधन है।

पृथ्वीधारक शक्तियाम गौका ही प्रथम स्थान है। वे शक्तियाँ सात हैं—

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभि सत्यवादिभि ।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही॥

आर्थिक दृष्टिकोणसे

गाय अपने दूध, दही, घी, मक्खन आदिसे बननेवाले उत्तम एव श्रेष्ठ भोज्य पदार्थोंके रूपमे पूरे राष्ट्रका शक्ति, ऊर्जा तथा जीवनीशक्ति प्रदान करती है। अपनी जननी तो माँके रूपम केवल बाल्यकालमे ही पोषण करती है, किंतु गौ माँ तो जन्मसे मृत्युपर्यन्त हमे दूध पिलाती है, हमारा पोषण करती है। अपने शरीरको निचोडकर अपने बछडे आदिकी भी उपेक्षा कर हमे पौष्टिकता प्रदान करती है। इस प्रकार यह जननीसे बढकर त्याग करती है, यह सर्वथा परोपकारकी मूर्ति है।

आज रासायनिक खादोके द्वारा यद्यपि अधिक अन्न उपजाओकी योजनामे हमारे राष्ट्रको कुछ बाह्य एव स्थूल सफलता दीख रही है, किंतु विचार-दृष्टिसे देखा जाय तो रासायनिक खादोसे खेतोकी पूरी उर्वराशक्ति खींचकर कुछ लाभ अन्नका मिल जाता है, परतु उर्वराशक्तिके शिथिल होते ही खेतीकी सहज उत्पादन-शक्ति कालान्तरमे समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत गौकी खादसे वह शक्ति सदा सुरक्षित रहती है, साथ ही रासायनिक खादोकी अपेक्षा व्यय भी कम होता है। और राष्ट्रमे गोसेवाका पुण्य होनेसे धन, जन सुख, समृद्धि सभी एक साथ बढते हैं। महाभारत (अनु० ५१। २६) मे गौके तुल्य कोई धन ही नहीं माना गया—

गोभिस्तुल्य न पश्यामि धन किंचिदिहाच्युत।

समस्त शास्त्र, पुराण, वेदोपनिषदादि जिसकी अनन्त महिमाका गुणगान करते हैं जो गौ माता धन-सम्पत्तिकी मूल एव परम निष्पाप, हव्य-गव्यकी दाता है, लोक-परलोककी समस्त समस्याओका एक साथ ही समाधान करती हैं, उनके प्रति हमारा कर्तव्य क्या होना चाहिये? इसपर हमे गम्भीरतासे विचार करना चाहिये। आज विश्वमे अमेरिका एव यूरोप समृद्ध माने जाते हैं, ये दोनो राष्ट्र गौकी सेवा पूर्णरूपम करते हुए गौके ऋणी एव कृतज्ञ हैं। किंतु इस दिशाम गौ और गोविन्दके प्रेमी हमारे भारतकी स्थिति गोसेवासे विरत हो जानेसे परम दयनीय हो गयी है।

वर्तमान समयमे गोकी करुणार्द्र पुकार कौन सुनेगा?

गो माताके साथ—गोधनके साथ आज भारतीय शासनका क्या व्यवहार हो रहा है? क्या यह किसीसे छिपा है? स्वतन्त्रता-प्राप्तिक पूर्वसे ही गोवध बराबर होता चला आ रहा है। लाखो सतो, आचार्यों, महापुरुषो विद्वानो, गोभक्तो एव समाज-सेवकोन गोवध-आन्दोलनमें बलिदान किया, जेलोम गये, अनेको यातनाएँ सहीं, किंतु गोहत्याका काला कलक इस देशसे अबतक नहीं मिटाया जा सका। प्रतिदिन कई हजार गोवध सूर्योदयके पूर्व नित्य ही होते जा रहे हैं। क्या गो माताके साथ राष्ट्रका यही कर्तव्य है?

गौ सारी जवानी हमारे घरका थोडा-सा बेकार घास-भूसा खाकर हमें अमृत प्रदान करती अपने बछडोके द्वारा खेती कराती, बैलगाडी-सवारी आदि ढोनेमे रात-दिन अथक परिश्रम करती-कराती है, पर वाह रे गोभक्तो! जब वह बेचारी बूढी हो जाती है और तुम उसके ही दूध-दहीसे हृष्ट-पुष्ट हो जाते हो, जवान हाते हो तब तुम्हारा क्या यही कर्तव्य होता है कि तुम अपनी उस गौ माताको कसाईके हाथम बेच दो? यह कैसी गोभक्ति है? कसाई जब उसे बूचडखानेकी ओर घसीटता है और वह तुम्हारी ओर कातर करुणार्द्र-दृष्टिसे देखती है तथा तुम उसकी सहायता करनेके लिये आगे नहीं बढते, क्या तुम्हारी आत्मा उस समय काँपती नहीं? क्या तुम उस मूक माँकी भाषाको नहीं समझ पाते? वास्तवमे वह चिल्ला-चिल्लाकर यही कह रही है कि हमने तुम्हे तो अपने जीवनका सर्वस्व अपने बछडेसे भी छीनकर खिलाया पिलाया, जिलाया, पुष्ट किया और उस त्याग-तपस्याका बदला तुम हमें यही दे रहे हो? क्या तुम्हारा अपनी गौ माताके साथ यही कर्तव्य है?

आज पर्यावरण-प्रदूषणकी बात बडे जोर-शोरसे चल रही है पर इन महानुभावाने इसपर कभी विचार ही नहीं किया कि विशुद्ध पर्यावरणके मूलम गौका ही अस्तित्व है। गौ घर-घर रहेगी तो उसके गोमूत्र-गोबर मात्रसे ही समस्त राष्ट्रका प्रदूषण दूर किया जा सकता है। इससे उत्तम साधन समस्त राष्ट्रके प्रदूषणको दूर करनेका और क्या हो सकता है?

मत्स्य-पालन मुर्गी-पालन, सूअर-पालन राष्ट्रम किया जा रहा है फिर सर्वोपयोगी गौ-पालन क्यो नहीं हो सकता? गोवध क्यो? इसने किसका क्या बिगाडा है? फिर इसपर ऐसा अत्याचार क्या? क्या यह इस राष्ट्रकी समस्या नहीं है? अगर है तो हमारी आस्थाके साथ इतना अन्याय क्यो? गोरक्षामे समस्त ही राष्ट्रका हित निहित है।

ध्रुव सत्य

जबतक समस्त भारत देशमे जन-जनके मानसमे गोपालन, गोभक्ति पूर्ण रूपसे नहीं जाग्रत् होगी, तबतक इस राष्ट्रका कल्याण सर्वतोभावेन नहीं हो सकता। इसे चाहे अभी समझे या राष्ट्रकी पूरी दुर्दशा हो जानेके बाद ही समझे। आज कितनी दयनीय स्थिति इस देशकी हो रही है? क्या यह किसीसे छिपा है? इतना गिरा हुआ मानवताका आदर्श इस राष्ट्रका कभी नहीं था, जो आज सामने दिखायी दे रहा है। इसका मूल कारण गोमाताकी उपेक्षा ही है। जबतक गोवध बद न होगा देश कभी सुसमृद्ध नही हो सकता चाहे लाखो योजनाएँ बनती रहे। भगवान्से प्रार्थना यही है कि वे हमे सद्बुद्धि प्रदान करे, जिससे क्षुद्र स्वार्थका परित्याग कर गोमाताकी उपयोगिताको समझकर हम सभी राष्ट्रके कल्याणकी ओर अग्रसर हो सके। अन्तमे यही राष्ट्रके लिये मङ्गल-कामना है—

स्वस्ति प्रजाभ्य परिपालयन्ता
न्याय्येन मार्गेण मही महीशा ।
गोब्राह्मणेभ्यो शुभमस्तु नित्य
लोका समस्ता सुखिनो भवन्तु॥
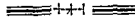
गौ माता

(श्रीमती चन्द्रकला गौर)

गावो ममाग्रतो नित्य गाव पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवा मध्ये वसाम्यहम्॥
(महा० अनु० ८०। ३)

'गाये सदा मेरे आगे रहे, गाये सदा मेरे पीछे रहे, गाये मेरे चारो ओर रहे और मैं गायोके बीचमे ही निवास करूँ।'

पदार्थोंमे माँ वसुन्धराका मानवतामे जननीका, सरिताओमे भागीरथीका देवोमे भगवान् पद्मनाभ विष्णुका, नक्षत्र-मण्डलमे भगवान् बृहस्पतिका, ऋषियोमे अगस्त्यका, देवियोमे भगवती दुर्गाका तथा वृक्षोमे सहकार (आम) का जो स्थान है, वही स्थान पशु-परम्परामे गौ माताका है। भारतीय सस्कृतिमे इस प्राणीको मातृत्वका गौरव प्रदान करके इसका जो माहात्म्य दर्शाया गया है वह उसके सहज औदार्यका अशमात्र है। व्यवहारमे वह मानवकी अर्थसिद्धिका द्वार है। वह सागरके गर्भसे उद्भूत चतुर्दश रत्नोकी शृखलाकी एक विलक्षण कडी है। उसके भौतिक शरीरसे निकलती हुई स्वेदकी एक-एक बूँद तथा मालिन्यका एक-एक कण भी पवित्रताका एक उत्कृष्ट निदर्शन है और आरोग्यताका अप्रतिम मूल मन्त्र है।

वैदिक परम्परासे अद्यावधि-पर्यन्त हम और हमारे पूर्वज प्रत्येक मङ्गलकारी अनुष्ठानमे उपादानके रूपमे गोधनका आश्रय लेते चले आ रहे हैं। इसकी महिमाको सिर झुकाकर राधावल्लभ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र गोपाल कहलाये। महाराज दिलीपने नन्दिनीकी कृपाका प्रसाद पाकर रघुकुलके विस्तारको आगे बढाया। यदि नन्दिनीने महाराज दिलीपपर अनुग्रह न किया होता तो सम्भवत आदित्यवशकी कुल-परम्परा दिलीपतक पहुँचकर विशृखलित हो चुकी होती और भगवान् रामका मर्यादापुरुषोत्तम-रूप सूर्यवशका शृगार न बन पाता। रघुवशका इतिहास ही बदल गया होता और फिर महाकवि कालिदासकी लेखनीको इस सूर्यप्रभववशमे महाकाव्यकी सामग्रीका आकर्षण न दिखायी पडता।

हमारे शास्त्रो एव मनीषियोने जिन वस्तुओ पदार्थों एव प्राणियोको गरिमामण्डित आस्पद प्रदान किया है, उन

सबकी पृष्ठ-भूमिमे विश्व-मङ्गलकी पावन भावना अवश्य निहित रही है। पशुत्वकी जडतासे मातृत्वकी चोटीतक गायको पहुँचानेका श्रेय समाज अथवा शास्त्रोको नहीं अपितु इस भोली-भाली मूर्तिमे पायी जानेवाली अद्भुत गुणसम्पदाको है। साहित्य एव व्यवहारम मनुष्यकी सज्जनताको उपमा गायकी नैसर्गिक सरलतासे दिया जाना एक सामान्य बात है। यह पशु नहीं परोपकारका प्रतिमान है, मानदण्ड है—

'परोपकाराय दुहन्ति गाव ।'

वह करुणाकी प्रतिमूर्ति एव त्यागकी पराकाष्ठा है। वाणीसे विहीन होकर भी अपनी जिस प्राकृतिक वत्सलतासे वह बछडेके लिये अपने हृदयका रक्त उडेलनेको तत्पर रहती है वह वात्सल्य वाग्विलसित, किंतु स्वार्थ-लोलुप मानव-समाजमे अलभ्य नहीं तो दुर्लभ अवश्य है।

तृणोंके आहारपर जीवन धारण कर मानवमात्रके लिये अलौकिक सुधारसका सम्प्रदान करना गौ माताके ही उपयुक्त है। जब हम पशु-समुदायको आहार, निद्रा, भय एव मैथुनका विशेष्य मात्र स्वीकार करते हैं तो हमारे अन्तश्चक्षु सम्भवत इस तथ्यस अनभिज्ञ रह जाते हैं कि जो त्याग एव नि स्वार्थ-सेवनकी भावना मनुष्यमें वर्षोंकी तपस्याके पश्चात् भी बडी कठिनतासे प्रवेश कर पाती है, वही एक माँके रूपमे गाधनमे सहज विद्यमान रहती है। आध्यात्मिक रूपसे एतावता वह हम लुब्ध मानवासे कहीं उच्चतर है।

ज्ञानकी सार्थकता आचरणकी पवित्रतामे है—यदि ज्ञानके पश्चात् भी हमारे आचरणम माधुर्य नहीं तो वह ज्ञान दो कौडीका और यदि ज्ञानके अभावमे भी एक पशुमे त्यागकी विलक्षण महिमा विद्यमान है तो उसके लिये अक्षर-ज्ञानकी आवश्यकता ही क्या?

गौ माताकी महिमाका एक वैज्ञानिक आधार भी है। विज्ञानके प्रयोगोने यह सिद्ध कर दिया है कि गोदुग्धके समस्त तत्त्व मानव माँके दुग्धके तत्त्वोके ठीक समान होते हैं और माँके दुग्धके अभावमें अमृतरूप गो-दुग्धका सेवन मनुष्य सद्योजात अवस्थासे लेकर वार्धक्य अथवा मृत्युके पूर्व क्षणोतक कर सकता है। इस निरीह गौ माताका दूध शिशु-पालन-हेतु दुहते समय हम यह भूल जाते हैं कि इस माँकी अपनी सतति भी परिपालनकी अपेक्षा करती होगी, किंतु करुणामयी, परोपकारकी साक्षात् मूर्ति वह गौ माता अपने वत्सकी उपेक्षा करते हुए भी बिना किसी ननु-नचके अमृतमयी दुग्ध-धारासे हमे पूर्ण आप्लावित कर देती है। दूधसे हमारा पात्र भर देती है। कितना महान् त्याग है। कितना सहज स्वाभाविक परापकारका भाव है। पर गायके प्रति हम कैसा व्यवहार करते हैं? क्या इसपर कभी सोचा है हमने? यदि नहीं तो फिर आज ही सकल्प ले कि 'विश्वजननी गौके पालन-पोषण तथा रक्षणमे चाहे प्राणोकी भी बलि देनी पडे, हम पीछे नहीं हटगे।'
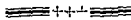
वंशीधरसे

(श्रीनारायणदासजी चतुर्वेदी)

वशीधर! वशीवट बीच निज वशी आप
कहिये बजाने फिर कब जुट जायँगे ?
सार्थक 'गोपाल' नाम कब कीजियेगा नाथ?
गो-विघातकोके दल कब लुट जायँगे ?
होगी धर्म-स्थापना 'नरायण' बताओ कब ?
दीन जन कब दीनतासे छुट जायँगे ?
आँखे खोल निद्रा छाड़ साहसके साथ जरा,
सोते हुए भारतीय कब उठ जायँगे ?
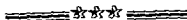
सर्वहितकारी धन—गाय

(स्वामी श्रीअच्युतानन्दजी महाराज)

विश्वके प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेदमे एक मन्त्र आया है—

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूना वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्।
दुहामश्विभ्या पयो अघ्न्येय सा वर्धता महते सौभगाय॥

(ऋ० १। १६४। २७ अथर्व० ९। १०। ५)

पूज्यपाद ब्रह्मलीन महर्षि मेँहीँ परमहसजी महाराज अपने सत्सगमे इस वेद-मन्त्रका पाठ करके लाखो धर्मप्रेमियोको सम्बोधित करते थे और कहा करते थे कि 'गाय अपनी मातासे भी श्रेष्ठ है, माताका दूध बच्चे थोडे दिनतक पीते हैं, परतु गौ माताका दूध जीवनभर पीते हैं। गायके बछडेसे खेतीका काम करते हैं—हलमे जोतते हैं, गाडी चलाते हैं। गायके गोबरसे घरद्वारकी लिपाई करते हैं। खेतमें खादका काम उसके गोबरद्वारा होता है। गोबरके खादसे खेतमें उर्वरा-शक्ति बढती है। परतु आधुनिक कृत्रिम खादसे जमीनकी जीवनी-शक्ति घटती है। इसलिये सबको चाहिये कि गायका पालन अवश्य करे। बूढी गाय और बैलको नहीं बेचना चाहिये। जिस तरह बूढे माता-पिताका पालन करते हैं, उसी प्रकार बूढी गाय और बूढे बैलका भी पालन करना चाहिये।'

गोवश-ह्राससे देशकी आर्थिक समृद्धिमे व्यवधान उत्पन्न होगा। यह ध्रुव निश्चित है कि गरीब-से-गरीब लोग जितनी आसानीसे बैलद्वारा खेती कर सकते हैं, उतनी आसानीसे किसी यन्त्रसे नहीं कर सकते। गोपालनसे यह लाभ है कि खेती करनेके लिये उसके बछडेसे हल चला सकते हैं, उसके दूधसे जीवन-निर्वाह कर सकते हैं। विचार कीजिये कि गाय खाती है घास और देती है अमृततुल्य दूध। इसीलिये गायका पालन सर्वहितकारी जानकर सबोको करना चाहिये।

आजकल ट्रैक्टरद्वारा भी खेतीका काम हो रहा है। परतु वह सर्वसाधारणको सुलभ नहीं है। ट्रैक्टरका दाम बहुत अधिक है। जिसका उपयोग कोई गरीब किसान नहीं कर सकता। परतु यह हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि मजदूर भी गायका पालन घास-भूसा खिलाकर आसानीसे कर लेते हैं और उसके बछडेसे अपनी जमीन नहीं रहनेपर भी बटाई जमीनको जोतकर अन्न उपजाते हैं।

आयुर्वेदमे अनुपानके रूपमे गायके दूध, मक्खन, मूत्र, गोबर, घी, छाछ आदिके प्रयोग निर्दिष्ट हैं। गोमूत्रसे कठिन-से-कठिन उदर-रोगोकी चिकित्सा की जाती है। चर्मरोगामे गोमूत्रका उपयोग किया जाता है। इसलिये स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी गोपालन अति आवश्यक है। भगवान् श्रीकृष्ण गायके महान् रक्षक थे। वे गाय चराते थे। वे गोपालन करके ससारके समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत कर गये हैं। वृन्दावन, गोकुल, व्रज आदि ऐतिहासिक स्थान भी हमलोगोको गोपालनकी स्मृतिका बोध कराते हैं। भगवान् श्रीरामके गुरु महाज्ञानी मुनि वसिष्ठजीकी कामधेनु नन्दिनीकी कथासे हम उपदेश पाते हैं कि प्राचीन कालके ऋषि-मुनि भी गोरक्षक और गोपालक थे। सारे विश्वमे गायके समान उपयोगी जानवर कहीं भी उपलब्ध नहीं है। गोरक्षा-हेतु भारत सरकारको भी चाहिये कि देशके हर क्षेत्रमे गोचरभूमि और गोशालाका प्रबन्ध करे, ताकि साधारण समाजको विशेष लाभ प्राप्त हो। पौराणिक इतिहास बतलाता है कि राजा नृग नित्यप्रति करोडों गाय दान करते थे। उस समय गायका पालन विशेष रूपसे किया जाता था। जो कोई गायका पालन करते हैं वे लक्ष्मीका आदर करते हैं। क्याकि गायके गोबरमे लक्ष्मीका निवास है। गोमूत्रमे गङ्गाका निवास है।

हमारे गुरुदेव मेँहीँ परमहसजी महाराज जीवनभर गायके दूधका ही उपयोग करते रहे। वे गायके पालनपर विशेष ख्याल रखते थे। गायके खानेका प्रबन्ध घास-भूसा-पुआल आदिकी व्यवस्था भरपूर करवाते थे। गङ्गा-तटपर स्थित महर्षि मेँहीँ-आश्रममे अभी भी अच्छी नस्लकी गाये पाली जाती हैं। आश्रममे एक गोशाला भी है। विचार करनेपर यह निश्चित होता है कि आध्यात्मिक आर्थिक और शारीरिक उन्नति एव लाभके लिये गोपालन सभी वर्गोंके लोगोको अवश्य करना चाहिये।

गो-महिमा

(डॉ० श्रीरघुवीरजी आर्य)

अखिल विश्वमे गौके सदृश उपकारी अन्य कोई भी प्राणी नहीं है। यह वह अनुपम विभूति है, जिसकी हमारे वेदोने भूरि-भूरि प्रशसा की है। आर्य हिन्दू-जातिने अनादिकालसे निरन्तर गोभक्ति, गोपालन, गोसेवा, गोपूजा एव गो-सत्कारको अपने जीवनका सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य समझा है। इस जातिके वेद, शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण और इतिहास गौके प्रति उत्कृष्ट भावनाआसे ओत-प्रोत है। आर्योंके पवित्र हृदयामे पापनाशिनी धेनु-माताका माहात्म्य दृढतापूर्वक अङ्कित है, हजारो-लाखाने गोरक्षार्थ अपना सर्वस्व न्योछावर किया है। अपने प्राणोतककी बलि चढायी है, ससारके सब प्रकारके कष्ट-क्लेश, आपद्-विपद् झेलकर भी गोरक्षा की है। राजाआने राज्य त्यागे हैं, योगियाने योगानन्द छोडा है, युग-पुरुषोने नगे पाँव वन-वन घूम-फिरकर गौओको चराया है, गौका अनुसरण करते हुए वे गौके बैठनेपर बैठे हैं, चलनेपर चले हैं, चारा चरनेपर भोजन किया है, पानी पीनेपर पानी पिया है, सोनेपर सोये हैं और जागनेपर जागते रहे हैं। ऐसे महामानवोकी गोभक्ति प्रशसनीय श्लाघनीय एव अनुकरणीय है।

यद्यपि विधर्मियोने आर्य-हिन्दुओकी इन उदात्त भावनाओका कदाचित् दुरुपयोग ही किया है, अनुचित लाभ ही उठाया है, परतु आर्योंने अपने सर्वस्व, राज्य-लक्ष्मी, धन-ऐश्वर्य तथा मान-प्रतिष्ठा आदि सबकी प्रत्यक्ष हानिका समक्ष देखते हुए भी गोमातापर आँच नहीं आने दी। एक समय था जब कि समस्त भू-मण्डलपर आर्योका अखण्ड चक्रवर्ती राज्य था। तब वेदानुकूल निर्मित उनके विधि-विधानके अनुसार सर्वत्र गो-पूजा प्रचलित थी। यदि कोई यातुधान प्रमादवश मर्यादाका उल्लघन करके कहीं गो-घात-जैसा अक्षम्य अपराध कर बैठता तो प्राणदण्ड पाता था।

परतु वर्तमान समयका यह एक भारी अभिशाप है कि पाश्चात्य-पद्धतिसे जो भी व्यक्ति अग्रेजोके चार अक्षर पढ जाता है वह सर्वप्रथम वेदपर ही वार करनेका दुष्प्रयास करना आरम्भ कर देता है। यह भी भाग्यकी विडम्बना ही है कि पाश्चात्य-पद्धतिका अनुसरण करनेवाले हमारे तथाकथित भारतीय विद्वान् प्राय अपनी सम्पूर्ण शक्ति, समग्र तत्त्व-ज्ञान, समूची विद्या तथा समस्त युक्ति-भण्डार, इस प्रयासपर व्यय कर देना ही अपने लिये, अपनी जातिके लिये, अपने धर्मके लिये तथा अपनी सभ्यता-सस्कृति-साहित्य एव परम्पराआके लिये श्रेयस्कर समझने लग जाते हैं कि येनकेनप्रकारेण वेदको हेय, वैदिक ज्ञानको अपरिपूर्ण, वैदिक सभ्यताको अपरिपक्व, वैदिक सस्कृतिको सकुचित, वैदिक साहित्यको अकिचन तथा वैदिक परम्पराओको त्याज्य सिद्ध करना है।

वेद जो (क) अगणित स्थानापर गौको अघ्न्या (न मारने योग्य) और अदिति (न काटने योग्य) के नामोसे पुकारता है,

वेद जो (ख) गोघातकोको प्राणदण्ड देनेकी आज्ञा देता है,

वेद जो (ग) राजाको आदेश देता है कि गोघातकोका अन्न-जल, ओषधि-उपचार बद करके सर्वस्व छीनकर उन्हें देश-निष्कासनका दण्ड दे,

वेद जो (घ) गोघातको मानव-हत्याके समान दण्डनीय अपराध घोषित करता है,

वेद जो (ड) गौके दूधको अमृतके समान और दुर्बल शरीरवाले व्यक्तियाको हृष्ट-पुष्ट बना देनेवाला स्वीकार करता है

वेद जो (च) गौकी महिमाको बडी-बडी सभाओमे गाये जानेका वर्णन करता है,

वेद जो (छ) यातुधाना (गोघातको) के लिये सीसेकी गोलीसे बींध डालनेकी मर्यादा स्थिर करता है,

वेद जो (ज) गौकी कोई उपमा नहीं मानता, 'गोस्तु मात्रा न विद्यते (यजु०२३। ४८) उसका कोई मूल्य कोई मात्रा और कोई परिमाण नहीं मानता अर्थात् गौके समान कोई भी नहीं है ऐसा बताता है

वेद जो (इ) गौको रुद्रोकी माता, वसुओकी पुत्री, आदित्योकी बहिन तथा घी-दूधरूप अमृतका केन्द्र मानता है और उसका वध न करनेकी आज्ञा देता है,

—उसी वेदमे गोवध तथा गोमास-भक्षणकी कल्पना करना कितनी मूर्खता है, कितनी घृणित कल्पना है। वेदके ज्ञानके अभावमे मन्त्रोका मनमाना अर्थ लगानेसे ही गो-हत्याको बल मिला है और सरकारके लिये मार्ग प्रशस्त हो गया है। सरकार कतलखानोमे गाय कटवाकर गोमास और चमडेका विदेशोमे व्यापार कर रही है यह कितनी लज्जाकी बात है।

गोहत्याके इस सुनियोजित षड्यन्त्रको बद करनेके लिये गोभक्तोद्वारा समय-समयपर कितने आन्दोलन हुए, कितने बलिदान हुए, कितने सत-महात्माओका रक्त भूमिपर गिरा यह एक लबा इतिहास है, यह तथ्य किसीसे कैसे छिपा रह सकेगा! कुछ सफलता तो मिली, पर वह नगण्य-सी है, तथापि प्रयत्न तो आज भी दृढ रहना ही चाहिये। यह सत्यका मार्ग है, न्यायका मार्ग है। एक-न-एक दिन पूर्ण सफलता मिलेगी ही। इस कार्यमे गो-गोविन्दकी कृपा अवश्य ही प्राप्त होगी। अत पूर्ण श्रद्धा-भक्तिपूर्वक गोसेवाके कार्यमे जुट जाना चाहिये।
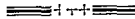
विश्वकी सर्वाधिक कल्याणमयी एवं पवित्रतम वस्तु—गौ

(स्वामी श्रीदत्तात्रेयानन्दजी (योगनाथ स्वामी))

वैदिक धर्म एव सस्कृतिमे गौ (गाय) का अत्यधिक महत्त्व है। ऋग्वेद (८। १०१। १५) मे गौकी इस प्रकार प्रशसा की गयी है—'गौ अमृतकी नाभि है। देवयजनमे गोदुग्ध, गोदधि और गोघृत अतीव आवश्यक है। गौ रुद्रोकी माता, वसुओकी पुत्री तथा आदित्योकी बहिन है।' 'वेदमे गौका वैशिष्ट्य-वर्णन करते हुए कहा गया है कि **'गावो विश्वस्य मातर '**—गाय विश्वकी माता है। ऐसा भी कहा गया है कि 'गायकी पीठमे ब्रह्मा, गलेमे विष्णु, दोनो पार्श्वभागमे समस्त देवगण, मुखमे रुद्र, नेत्रोमे सूर्य-चन्द्र रोमकूपोमे ऋषि-मुनिगण और गोमूत्रमे गङ्गा आदि नदियाँ स्थित हैं।'

श्रुति कहती है कि **'आयुर्वै घृतम्।'** गायका घी आयुकी वृद्धि करनेवाला है, बुद्धिवर्धक है। आगे कहा है कि 'गायका दही स्वादिष्ट एव रुचिवर्धक होता है, गोमूत्र और गोमय अनेक रोगोके जन्तुओकी शक्तिका समूल नाशक है। जहाँ गोशाला होती है, वहाँकी हवा कीटाणुरहित शुद्ध होती है। वह स्थान देवमन्दिर-जैसा है। वैदिक यज्ञ-यागमे, देवपूजनमे, पञ्चामृत एव पञ्चगव्यका उपयोग अवश्य किया जाता है।

गौको त्यागमूर्ति कहा गया है, क्योकि उसके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग दूसरेके उपयोगमे आते हैं। इस महागुणसे गौ 'सर्वोत्तम माता' कही गयी है। 'देवीभागवत' (९। ४९। २४) मे कहा गया है—

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नम ।
गवा बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके ॥

गौ वस्तुत जगन्माता है। महाभारतके अनुशासनपर्वमे भीष्मपितामह महाराज युधिष्ठिरको 'गौका माहात्म्य' सुनाते हुए कहते हैं—'मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा ।' —अर्थात् गौ सभी सुखोको देनेवाली है और वह सभी प्राणियोकी माता है।

महाभारत (अनु० ७४। ३-४)मे आया है कि 'जो उच्छृङ्खलतावश मास बेचनेके लिये गायकी हिसा करते या गोमास खाते हैं तथा जो स्वार्थवश कसाईको गायकी कत्ल करनेकी सलाह देते हैं वे सभी महान् पापके भागी होते हैं। गौकी हत्या करनेवाला गोमास खानेवाला, गोहत्याका अनुमोदन करनेवाला गौके देहमे जितने रोएँ होते हैं, उतने वर्षोतक घोर नरकमे पडा रहता है।'

धर्मग्रन्थोमे स्पष्ट निर्देश है कि—गौको दु ख मत दो। गौको भूखी-प्यासी मत रखो। गौको लकडीसे, पत्थरसे, लातसे—किसी भी प्रकारसे ताडित मत करो। उसे प्रसन्न रखनेपर लक्ष्मीदेवी सरस्वतीदेवी, महाकालीदेवी एव सभी देव-देवियोकी प्रसन्नता प्राप्त होती है।

गोमहिमाको बताते हुए अग्निपुराणमे कहा गया है—

'गाव पवित्रा माङ्गल्या गोषु लोका प्रतिष्ठिता ।'

गौएँ पवित्र और मङ्गलदायिनी हैं और समस्त लोक गौओम ही प्रतिष्ठित हैं।

पारसियाके महान् धर्मगुरु 'जरथुस्त्र' यश्न (४५।२) मे कहते हैं कि 'ईश्वर मनुष्य-जातिके लिये अभ्युदय तथा गौओका हित करनेके लिये आवश्यक बुद्धि, सदाचार तथा दृढता प्रदान करे।' 'बदीदाद' ग्रन्थम गोमहिमा वर्णित है।

इस्लामधर्मके 'हदीस'में कहा गया है कि 'गायके गोश्त (मास) से बीमारियाँ होती हैं तथा गायका दूध दवाई और गायका घी रसायन है।'

पेगम्बर मुहम्मद साहब 'नाशियातहादी' ग्रन्थमे कहते हैं कि 'गायका दूध और घी तुम्हारी तदुरुस्तीके लिये बहुत जरूरी है, किंतु गायका गोश्त (मास) नुकसान करनेवाला है।' ईसाई 'पीटर डी लावेल' सूरत (गुजरात) से अपने पत्रमे लिखता है कि 'खबातके नवाबका आदेश है कि यदि कोई मुसलमान भी गोहत्या करता है, गोमास खाता है तो उसे फाँसीपर चढा दिया जाय।' मुगल शहशाहोके गोहत्या न करनेके सख्त फरमान जाहिर थे।

'स्वामी रामतीर्थ' कहते थे कि 'गोमासाहारी व्यक्ति साक्षात् राक्षस है, मासाहारी व्यक्ति जगम कब्रिस्तान है।'
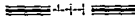
गौ दैवी सम्पदा है

(श्रीबन्दीकृष्णजी त्रिपाठी साहित्यशास्त्री शास्त्ररत्न विधि-वाचस्पति, एडवोकेट)

गौ दैवी सम्पदाकी प्रथम निधि है। यह व्यक्तिको स्वावलम्बन प्रदान करती है। व्यक्तिके पास प्रकृति-प्रदत्त शरीर तो है ही और भूमिपर वह जन्म लेता है, अत व्यक्ति अपने शरीर तथा थोडी-सी भूमिके साथ बस देवविग्रह-स्वरूप एक गौ रख ले तो फिर उसे अपने जीवनयापन—सार्थक जीवनयापन-हेतु किसी अन्य सहारकी आवश्यकता नहीं है। वह अपना सम्पूर्ण जीवन आरामसे परमधर्म 'परोपकार' करते हुए भवबन्धनसे मुक्त रहकर मुक्तिभाक् हो जाता है अर्थात् पूर्णत्व प्राप्त कर लेता है।

गौका गोरस—दूध, दही, मट्ठा, घी, मलाई आदि अनेक पदार्थोंके रूपमे तथा विविध रसोसे व्यक्तिकी क्षुधा शान्त कर सकता है। गोमूत्र उसे आधि-व्याधिसे दूर रख सकता है। गोबर उसे शुचिताके साथ-साथ अग्नि तथा भोज्य पदार्थके पाचनका साधन उसकी भूमिको उर्वराशक्ति प्रदान कर सकता है और उसकी सततियाँ उसके लिये तमाम आवश्यक वस्तुएँ सुलभ करानेमे निरन्तरता प्रदान करनेके साथ-साथ उसके लिये आवश्यक होनेपर वाहनकी व्यवस्था भी प्रदान कर सकती हैं। इस प्रकार गौ सर्वार्थसिद्धिका एक सम्पूर्ण साधन तथा भारतीय सस्कृतिका मूलाधार है, भारतीय दर्शनका आध्यात्मिक मूल है।

गोधनसे धनी व्यक्तिके लिये 'परोपकार' कोई अतिरिक्त साधना नहीं रह जाती है क्योकि एक गाय जितनी सामग्री प्रदान करती है वह व्यक्ति अकेले अपने निजके प्रयोगमे खर्च नहीं कर सकता। वह यदि किसी समष्टिके साथ है तो उसे वह दूसरोको देगा ही—देना ही पडेगा। यही तो परोपकार है। गाय रखने तथा उसकी सेवामात्रसे ही परोपकारकी साधना स्वयमेव सिद्ध हो जाती है। गोमाता व्यक्तिको अपरिग्रही और परोपकारी बना देती है।

जीवके इतने महान् पुरुषार्थकी साधिका होनेके बाद भी गौका स्वरूप स्वयमे कितना शान्त कितना निश्चिन्त, कितना सौम्य तथा कितना प्रसन्न होता है कि उस देखकर ही व्यक्तिका चित्त शान्त और प्रफुल्लित हो उठता है। गौओकी स्वाभाविक चालमे एक अजीब-सा मोहक गाम्भीर्य होता है जो कि हमे बिना आतुर हुए अपने कार्योंको पूर्ण करनेकी प्रेरणा प्रदान करता है।

गौ और पृथ्वी एक-दूसरेके पूरक हैं। पृथ्वी जीवोका आधार है और गौ जीवाका जीवनाधार है। इस प्रकार गौ और पृथ्वीका तादात्म्य है। गौके गोबर तथा मूत्र पृथ्वीकी

उर्वराशक्तिकी अभिवृद्धि करते हैं और यह अभिवृद्धि भी स्वाभाविक होती है। इसमे स्थायित्व एव निरन्तरता होती है। अत यह पृथ्वीको अत्यन्त प्रिय होता है। पुराणो तथा शास्त्रोमे गोको पृथ्वीका जीवन्त रूप माना गया है।

गौकी प्रकृति, उसके द्वारा प्राप्त नैसर्गिक एव स्वाभाविक स्वावलम्बन, उसका पृथ्वीके साथ तादात्म्य तथा उसके सौम्यादि गुणाके खान होनेके कारण ही भारतीय मनीषा, समाज एव सस्कृतिमे गौका इतना महत्त्व है और इसे सभी दृष्टिसे सरक्षणीय तथा अघ्न्य माना गया है। गौकी प्रकृति एव स्वरूपका तात्त्विक विवेचन तथा उसका अनुशीलन हमारे अध्यात्मके रहस्यका भेदन करनेमे सार्थक माध्यम बनता है और हम सृष्टिकी प्रक्रियाका उसकी पूर्णतामे समझ सकनेम सक्षम होते हैं।

अध्यात्मको यदि थोडी देरके लिये छोड भी दे तो भी आर्थिक एव सामाजिक दृष्टिसे गौका हमारे जीवनमे बहुत महत्त्व है। विज्ञानकी चरमोत्कर्षकी अवस्थामे भी व्यक्ति निजम अत्यन्त अपूर्ण होता है, किंतु गौका सानिध्य हमे बरबस पूर्णता प्रदान करता है जो कि सामाजिक दर्शनकी मूलभूत अवधारणा है। व्यष्टिसे समष्टि बनती है, अत व्यष्टिकी आवश्यकतासे समष्टिकी आवश्यकताएँ भिन्न नहीं होतीं। मात्र गोकी सख्याकी वृद्धि समष्टिकी आवश्यकताएँ पूरी करेगी, यह तो सामान्य अङ्कशास्त्रकी बात है।

अत हमे सर्वात्मना सर्वभावेन निरन्तर गौका सानिध्य एव गोसेवाको अपनी दिनचर्याका अङ्ग बनाना चाहिये क्योकि अन्य आसुरी सम्पदाएँ तो हमे अशान्त ही कर सकती हैं।
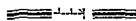
गो-गरिमा

(श्रीमहावीरप्रसादजी 'मधुप)

गो सब जगकी माता है यह निश्चय है।
गो सर्व-विभव-दात्री है, परम सदय है॥
गो-भक्ति पतितको भी पावन कर देती।
गो-सेवा करती पाप-ताप सब क्षय है॥ १॥
गो-पावन-तनमे देव सभी रहते है।
ऐसा सब वेद-पुराण ग्रन्थ कहते है॥
माँके समान करते न समादर गोका।
वे मूढ दुखोकी ज्वालामे दहते हैं॥ २॥
गो घास-फूस तृण-पात स्वय चरती है।
पर दुग्ध अमृत-सा वह प्रदान करती है॥
गो प्राणिमात्रका करती पालन-पोषण।
गो निबलोको कर सबल रोग हरती है॥ ३॥
गो है जिस घरमे, है आराम वहाँपर।
गो है जिस घरम, है सुरधाम वहाँपर॥
गो है जिस घरमे, श्री-सुख-शान्ति वहाँ है।
गो है जिस घरमे, है बस राम वहाँपर॥ ४॥
गोकी सेवासे सुप्त भाग्य जग जाते।
गो-सेवासे सब दैन्य-दु ख भग जाते॥
गोकी सेवासे दनुज देव बन जाता।
गो-सेवासे धन-धान्य ढेर लग जाते॥ ५॥

था समय, मान पाती थी गो भारतमे।
घर-घर पूजी जाती थी गो भारतमे॥
गो-सेवक थे सब भारतके नर-नारी।
सुख-बादल बन बरसी थी गो भारतमे॥ ६॥
गो-वध-कारण गिर रहा, देश दिन-दिन है।
गो-वध-कारण बढ़ रहा क्लेश दिन-दिन है॥
हम दीन-हीन, बल-क्षीण हुए जाते है।
गो-वध-कारण घट रहा शेष दिन-दिन है॥ ७॥
गो-वधिक नहीं कुछ भी विचार करते है।
भारी पातकसे तनिक नहीं डरते है॥
कितना जघन्य अपराध कि जिससे पलते।
उसके गलपर ही हाय छुरी धरते है॥ ८॥
गो-सेवाका फिर भाव जगे जन-मनमे।
गो-प्रेम प्रकट हो फिर मानव-जीवनमें॥
गो-रक्षा-हित तन मन धन भेट चढा कर।
सब जुट जाय दृढतासे गो-पालनम॥ ९॥
फिर तनिक कष्टका नाम न रहने पाये।
फिर नहीं किसीको भी दुख-दैन्य सताये॥
सच कहता हूँ, उपहास न इसे समझना।
यह पिछड़ा भारत फिर ऊँचा उठ जाये॥ १०॥

गोसेवाकी नीति

भारतीय सस्कृतिमे गायका एक विशिष्ट स्थान रहा है। सस्कृतिके मङ्गल-प्रभातसे ही गाय राष्ट्रके जीवनमे महत्त्वपूर्ण हिस्सा लेती रही है। सास्कृतिक और धार्मिक दोना दृष्टियोसे भारतीय समाजम गाय परिवारके एक विशिष्ट सदस्यके रूपमे प्रतिष्ठित रही है। आज देशकी गिरी और बिगडी हुई हालतमे भी गाय अपना वही योगदान दे रही है। गायको हम कैसे सँभालते हैं तथा कैसे उसका सरक्षण और सवर्धन करते हैं, इसपर ही भारतके भावी आर्थिक जीवनका विकास अवलम्बित रहेगा। भारतके आर्थिक ढाँचेम कृषिका जो स्थान है कृषिके विकासमें गायका वही स्थान है।

गाँधीजी आजीवन गायके बारेमे चिन्तित रहे। विनाबाजीकी प्रेरणा मार्गदर्शन एव प्रयाससे 'अखिल भारत कृषि-गोसेवा-सघ' आज इस ओर प्रयत्नशील है कि गायके शास्त्रीय विकास और बुनियादी महत्त्वको लोग ममझे।

१-गोसेवाकी दृष्टि—विनाबाजीने कहा कि 'गोसेवा-सघ'की नीति 'सेवा' शब्दम निहित है। गाय एक उदार प्राणी है वह हमारी सेवा और प्रेमको पहचानती है तथा हमे अधिक-से-अधिक लाभ देनेके लिये तैयार रहती है इसलिये हमे उसकी सेवा करनी है। सेवासे दो बात गृहीत हैं—एक तो हम बिना उपयोगके किसीकी सेवा नहीं कर सकते और दूसरे सेवा किये बिना हम उपयोग लगे तो वह गुनाह होगा और हमे वह गुनाह हरगिज नहीं करना है।

गायकी बछडीका पुरा उपयोग करना है गायकी दूध देनेकी शक्ति बढानी है। मजबूत बछड देनेकी शक्ति बढानी है। उससे जुताईमे भी जितनी मदद मिल सके लेनी है। गोबर और गोमूत्रका खादके रूपम अच्छे-से-अच्छा उपयोग करना है। इसके लिये अधिक-से-अधिक शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करना है तथा प्राप्त ज्ञानका उपयोग करना है। गायका समयपर उचित मात्रामे चारा-दाना देना उसके रहनेकी अच्छी व्यवस्था करना काम लनेम उसपर ज्यादती न करना साफ-सफाई रखना, बीमारीका इलाज करना, उसके सुख-दु खका पूरा ख्याल रखना और बूढी होनेपर ठीकसे उसका भरण-पोषण करना—इतनी बाते सेवामे आती हैं।

ऊपरकी नीतिके अनुसार यह बात स्पष्ट है कि हम गोवशका शास्त्रीय सवर्धन करना चाहते हैं और उसकी हत्या कतई बद करना चाहते हैं। हम यह मानते हैं कि गाय धर्मशास्त्रके साथ-साथ अर्थशास्त्रम भी टिकनी चाहिये और जब अर्थशास्त्रमे भी टिकेगी, तभी उसका पूरा पालन हो सकेगा। इस दृष्टिसे जीवनभर गायको स्वावलम्बी बनानेका हमारा प्रयास रहेगा। शास्त्रीय गोसवर्धन और सम्पूर्ण गोवश-हत्या-बदी ही हमारी नीति रहनी चाहिये। गायसे हमारा मतलब गाय, बैल, बछडे अर्थात् पूरे गोवशसे है।

२-राष्ट्रिय सयोजनमे गायका सर्वोपरि महत्त्व है—भारतक आर्थिक सयोजनमे पिछले अनुभवोक आधारपर अब कृषिको ही सर्वप्रथम स्थान दिया जा रहा है। साथ ही स्थायी कृषि-विकासकी योजनाओम गोपालनको प्रथम स्थान देना जरूरी हो गया है। गायसे ही हमे खेताक लिये अच्छे बैल प्राप्त होते हैं। समाजके स्वास्थ्यको बलवान् बनानेके लिये गोमाता हम शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद दूध प्रदान करती है। गोबरकी खाद खताको अधिक उपजाऊ बनाती है। अब तो गोबर-गैससे बिजली भी पैदा की जा रही है, जो कई तरहकी मशीनोको सचालित कर सकती है। गोमूत्र अद्वितीय खादके रूपमे सिद्ध हुआ है गोमूत्र अमाघ औषध है एव आणविक शक्तिके निर्माणम सहायक हो ऐसा शोध चल रहा है। मृत्युके बाद भी गायकी हड्डी और चमडा स्थानिक ग्रामोद्योगाके लिये इस्तेमाल किया जा सकता है। इस प्रकार हमारे राष्ट्रिय सयोजन विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रोमे गायका सर्वोपरि महत्त्व स्पष्ट है।

३-सम्पूर्ण गोवशकी हत्या बद हो—भारतीय अर्थशास्त्रमे गाय बैल सभी समान-रूपसे उपयोगी हैं एव

भारतीय सस्कृतिमे सबका समान आदर है। अत बैल और साँडसहित पूरे गोवशकी हत्या बद होनी चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि भारतीय सविधानमे सशोधन किया जाय। आजके कानूनमे सुप्रीम कोर्टके निर्णयके अनुसार बूढे बैल या साँडका सरक्षण उपयोगी होनेतक है। बूढे अनुपयोगी बैलके कतलकी इजाजत है। डॉक्टरके झूठे सर्टिफिकेटसे जवान बछडेतक कटते हैं। बैलके नामपर गाये भी कटती हैं। इस छूटके कारण सरक्षणके पूरे कानून बेकार हो रहे हैं। गोवश-हत्या बदीका केन्द्रीय तथा स्टेट कानून बने ऐसी भारत सरकार एव प्रदेश-सरकारोंसे हमारी माँग रही है।

कुछ लोगोका ख्याल है कि 'सेक्युलर स्टेट' मे गोवश-हत्या-बदीका कानून नहीं बन सकता, क्योंकि ऐसा कानून बननेपर गाय और बैलकी हत्या करनेवाले मुसलमान भारतमे कैसे रह सकेगे? ऐसा कहनेवाले, ऐसा समझनेवाले इस्लामका अपमान करते हैं। कुरानमे गोकुशी—गोहत्या करना आवश्यक विधि नहीं है। इतिहास साक्षी है कि अकबर एव अनेक मुगल बादशाहोके राज्योमे गोवशकी हत्या पूर्णत बद थी। बहादुर शाह जफरके राज्यमे तो ईदपर पहरा रहता था ताकि कोई गायका क़तल न कर दे। कश्मीर-जैसे मुस्लिम प्रधान प्रदेशमे भी गोवशकी हत्या पूर्णरूपसे बद है। बगाल-केरल छोडकर प्राय सारे भारतमे कहीं भी ईदपर गोहत्या नहीं होती।

भारतका भी अपना समाजवाद है। भारतके समाजवादमे यह माना गया है कि मानव-वशके अदर गोवशका समावेश कर और जिस गायके दूधपर हमारे बच्चे पलते हैं उसे कृतज्ञताके तौरपर रक्षा दे एव उसका क़तल न करे।

गोरक्षाके सम्बन्धमे गाँधीजीने कहा है कि 'गोरक्षा' भारतकी विश्वको देन है। बापूजीके कहनेका गहराईसे चिन्तन किया जायगा तो ध्यानमे आयेगा कि कितनी बडी नैतिक एव आध्यात्मिक बात बापूजीने कही है। गोरक्षाकी भावनाके पीछे 'कृतज्ञता'-भावनाकी रक्षा है। जीवनभर जिसने सेवा की उसके प्रति अन्तिम दिनोंमें कृतज्ञता रखना ही मानवकी श्रेष्ठ भावना है। जिस समाजमे कृतज्ञताकी जगह 'कृतघ्नता' की भावना बढती है, वह समाज कभी शान्तिसे नहीं रह सकता। 'गोरक्षा' मानवताके रक्षणकी बुनियाद है।

'गोवध चालू रहना या गोवध बद होना' इसपर सारे देशकी गोसवर्धन-नीतिअवलम्बित है। यदि पश्चिमकी भाँति गोवध एव गो-भक्षण चालू रहता है तो सवर्धनमे एकाङ्गी पशुओका विकास अधिक किया जायगा ताकि एक पशु कतलके लिये मिलता रहे। जैसे दूध-प्रधान नसल बढायेगे तो नर पशु कतलके लिये मिलते रहेंगे। परतु सम्पूर्ण गोवश-हत्या-बदी हो जाय तो गोसवर्धनकी नीति आमूल बदलनी होगी। गोवध-बदीके बाद सर्वाङ्गी नसलका ही सवर्धन करना होगा, जिसमे नर और मादा दोनो उपयोगी हो। बछडी अच्छी दुधार हो और बछडा खेतीके जोत-लायक उत्तम बैल बने, ऐसी नसल तैयार करनी होगी। इसे ही सर्वाङ्गी नसल कहते हैं, इसमें नर और मादा दोनोका सरक्षण होता है।

४-खेती और गोपालन अभिन्न है—सही बात तो यह है कि खेती और गाय दानोकी जोडी है। दोनो एक-दूसरेसे अभिन्न है। दोनो एक सिक्केके दो पहलू हैं। दोनो एक-दूसरेके पूरक हैं। खेतीको बैलोकी जोड मिल जानेसे खेतीकी जुताई अच्छी होती है। गोबर और गोमूत्रमे कचरा मिलाकर बडी तादादमे कम्पोस्ट खाद बनायी जा सकती है जिससे खेतीकी उपज बढती है और भूमिकी उपजाऊ-शक्ति कायम रहती है। खेती गायको चारा-दाना देती है। गाय अखाद्य घास-चारा खाकर उत्तम-से-उत्तम दूध देती है। उसमे ऐसा दिव्य गुण है कि वह अखाद्यको खाद्य बना देती है। किसानका ग्रामीण जीवन गाय-बैलोके सहारे ही चलता है। उसे सालभर आमदनीके साधन मिल जाते हैं। उत्तर प्रदेशमे सन् १९४१ से १९४६ तक ६ जिलोमे 'केवल खेती' और 'गोपालनके साथ खेती'—दोनो प्रकारके प्रयोग किये गये थे। उस बारेमे उत्तर प्रदेशकी सरकारने गोपालन और खतीके नामसे एक पर्चा (न० १९९) निकाला था। उसमे बताया गया है कि इस प्रयोगसे ५ वर्ष बाद यह सिद्ध हुआ कि गोपालनके साथ खेती करनेवालोकी आय प्रति एकड रु० ११० ४४ हुई, जबकि बिना गोपालनके केवल खेती करनेवालाकी औसत आय प्रति एकड रु० ५१ ५६ आयी।

कई जगह यह सवाल उठाया जाता है कि हम मनुष्योको खिलाय या गायका खिलाय। ऊपरके प्रयोगासे स्पष्ट होता है कि यह सवाल ही गलत है। हम गायको जा कुछ भी खिलाते हैं वह अपने लिये ही खिलाते हैं, गायपर मेहरबानी नहीं करते। जितना उसे खिलाते हैं उसके मुकाबले

कई गुना अधिक लाभ गायसे मानवको मिलता है। जैसे खेतमे बीज बोनेको धूल-मिट्टीमे अनाज फेकना नहीं कहा जायगा, वैसे ही गायको खिलाना भी बीज बोनेके समान तथा उससे कहीं अधिक लाभदायी है। जैसे गायसे खेतीको लाभ है, वैसे ही गायको भी खेतीसे लाभ है। गाय सुखमय जीवन खेतपर ही बिता सकती है। जहाँ खेती नहीं है, वहाँ चारा-दाना महँगा होगा। वहाँ अच्छी-से-अच्छी गायका भी आजके अर्थशास्त्रमे पालन करना कठिन होता है। वर्धाके आस-पास दो-चार जगहोमे जहाँ खेतीके लिये काफी जमीन थी, परतु जमीने उपजाऊ नहीं थीं वहाँ गोशालाएँ खडी की गयीं। उसका नतीजा यह हुआ कि वहाँकी जमीने उपजाऊ बन गयीं। सघकी निश्चित राय है कि खेती और गोपालन एक-दूसरेके पूरक हैं। वे साथ-साथ चलने चाहिये, यानी हर किसानके पास गाये होनी चाहिये और हर ग्वालेके पास खेतीकी जमीन। इसी अनुभवसे सघने गोपालनके साथ-साथ कृषिका काम भी हाथमे लिया है। और 'गोसेवा-सघका नाम भी 'कृषि-गोसेवा-सघ' कर दिया है। भगवान् श्रीकृष्णने भी गीतामे कृषिके साथ गोसेवाको जोडा है **'कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यम्'**। श्रीकृष्ण गोपालक थे तो भैया बलराम—हलधर किसान।

५-गोसवर्धन-नीति—गोसवर्धनकी आज जो नीति चल रही है, वह केवल दूध बढानेके लक्ष्यको लेकर है। इस कारण बैल-शक्तिकी ओर कोई ध्यान नही दिया जाता। वास्तवमे होना यह चाहिये कि करोडो किसान रख सके, ऐसी सर्वाङ्गी गाये पैदा की जानी चाहिये, जो १००० से २,००० लीटरतक एक बतमे दूध दे और उत्तम बैल दे। सवर्धन-नीतिमे इस बातका भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जो सर्वाङ्गी नसले हैं यानी अधिक दूध और उत्तम बैल दे सकती हैं—जैसे हरियाणा थारपारकर गीर काकरेज कागायम देवनी आदि। इन नसलोको सिलेक्टिव ब्रीडिगसे शुद्ध रूपमें सवर्धन करना चाहिये एव जो कम दूधवाली बिना नसलकी गाय हैं उनको क्रास करके सर्वाङ्गी गाय बनाना चाहिये।

(अ) गोसवर्धनका लक्ष्य सर्वाङ्गी हो—प्रथम यह तय करना आवश्यक है कि भारतमे गोविकासका लक्ष्य क्या हो? विदेशमें दूध और मासका लक्ष्य रखकर गोसवर्धन किया जाता है। भारतको दूध और खेती-जोतकी आवश्यकता है। आज भी हमारी ७५ प्रतिशत खेती बैलोपर निर्भर है। निकट भविष्यमे भी बैलोकी आवश्यकता है। इसलिये हमारे गोसवर्धनका लक्ष्य सर्वाङ्गी नसल तैयार करना होना चाहिये, यानी बछडी अधिक दुधार हो और बछडा खेती-जोतके लायक उत्तम बैल बने।

जो देश गायको कतल करते हैं और उसे खाना जायज मानते हैं, उन देशोमे एकाङ्गी पशु चल सकते हैं। लेकिन भारत-जैसा देश जो गोरक्षाको धर्म मानता है, गायके उपकारोको स्मरण रखते हुए कृतज्ञतापूर्वक गोहत्या-निरोध कानून बनाना चाहता है, उस देशमे नर-मादा दोनो उपयोगी होगे, तभी गोरक्षा हो सकेगी।

(आ) विदेशी रक्त बैल-शक्तिके लिये कम उपयोगी—आज क्रासब्रीडिगके जो प्रयोग चल रहे हैं उनमे ऐसा अनुभव आ रहा है कि बछडियोमे दूध बढ जाता है, पर बछडोमे जोत (ड्राफ्ट) की शक्ति घट जाती है। भारतको दूध भी चाहिये और जोत-शक्ति भी। इसलिये आवश्यक है कि विदेशी रक्तकी अपेक्षा भारतीय रक्त ही दिया जाय जिससे बछडोकी जोत-शक्ति कायम रह सके। किसी भी हालतमे बैल-शक्तिका घटना भारतके लिये अनुकूल नहीं हो सकता है। समतल भूमि और शहरोकी सडकोपर सम्भव है क्रास बैल काम दे सके, पर देहातोमे खेतीमें मुश्किलसे काम देगे ये कड़ी धूपको बरदाश्त भी नहीं करते।

(इ) अपग्रेडिग (भारतीय नसलोसे क्रास करना)—भारतकी आबहवाके अनुकूल नसल तैयार करनी हो तो सिलेक्टिव ब्रीडिग या अपग्रेडिगका सहारा लेना चाहिये। आज भी सर्वाङ्गी नसलोके उत्तम साँड मिल सकते हैं। उनको नजरअदाज नहीं करना चाहिये। उनका सीमेन भी सग्रह करके नसल बढानी चाहिये।

विदेशी नस्लोसे ब्रीडिगको क्रास-ब्रीडिग कहते हैं और भारतीय नस्लोके क्रासको अपग्रेडिग कहते हैं। महाराष्ट्रके सतारा जिलेमे धोकमोड क्षेत्रमे पिछले अनेक वर्षोसे अपग्रेडिगका कार्य होता आया है। इसके बहुत ही अच्छे परिणाम आये हैं। 'खिलार' को 'थारपारकर' से अपग्रेड किया गया। इस अपग्रेड नसलका नाम खिलारधारी रखा। खिलारका दूध ४-५ लीटर था तो खिलारधारीका अधिकतम

१४-१५ लीटर तक बढा है। घृताशका प्रतिशत भी अधिक है, बैल खेतीके लिये उत्तम होते हैं। अत जहाँतक अपग्रेडिगसे काम चलता हो, वहाँ अपग्रेडिग ही किया जाय, क्रास-ब्रीडिग न किया जाय।

(ई) मान्य नसलोपर क्रास-ब्रीडिगको पूर्णतया रोका जाय—भारतमे कुछ नसले प्राचीन समयसे चलती आ रही हैं। हजारो वर्षोके प्रयत्न एव जलवायुके कारण कुछ नसले स्थिर हुई हैं। इनमे कुछ स्थायी गुण देखे गये हैं। इन नसलामे गीर, थारपारकर, हरियाणा, काकरेज, आगोल, कागायम, देवनी आदि प्रमुख हैं। इनमे अधिकाश नसले सर्वाङ्गी हैं। इन मान्य नसलोका विकास भारतीय नसलासे सिलेक्टिव ब्रीडिग या अपग्रेडिगके जरिये किया जाय। इससे उनके स्थायी गुणोको आँच आये बिना दूध और बैलशक्ति दोनोकी वृद्धि हो सकेगी।

आज हमारे पास हरियाणा, थारपारकर, काकरेज, ओगोल आदिकी २,००० से २,५०० लीटरतक प्रति ब्यॉंत दूध देनेवाली और उत्तम बैल देनेवाली गायें मौजूद हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि दो ढाई हजार लीटरतक दूध और उत्तम बैल पैदा करना सम्भव है। विशेषज्ञाको अपनी शक्ति इसमे लगानी चाहिये। मान्य नसलोपर क्रास-ब्रीडिग करके उनके स्थायी गुणोको नष्ट करना गोवश तथा देश दोनोके लिये हानिप्रद है।

६- गाय बनाम भैंस—आज भारतमे गाय और भैंसके सम्बन्धमे दुविधा चल रही है कि किसको तरक्की दी जाय। हम कुछ ऐसे पशोपेशमे पडे हैं कि इधर गायको भी बढावा देते हैं, उधर भैंसको भी बढावा देते हैं। नतीजा यह होता है कि न पूरी तरहसे गाय बढ पाती है न भैंस। एक बात समझ लेनी चाहिये कि भारतमे हमारे पास इतनी जमीन नहीं है कि हम गाय और भैंस दोनाको साथ-साथ पाल सके।

पशुओसे राष्ट्रको दो अपेक्षाएँ हैं। पहली—अन्न-उत्पादन अर्थात् खेती-जोतकी और दूसरी दूधकी। दूधकी आवश्यकता भैंस पूरी कर सकती है, ऐसा थोडी देरके लिये यदि मान लें तो भी सारे देशकी खेती-जोतकी तथा परिवहनकी आवश्यकता भैंससे पूरी नहीं हो सकती यह तथ्य है। हम सोचते हैं कि ट्रैक्टरसे पूरी खेती कर ली जाय तो भी आनेवाली कई पीढियोतक खेतीके लिये बैलाकी आवश्यकता रहेगी ही। अगर तेलके स्रोत कम होते हैं तो बैल ही एकमात्र आधार रहेगा।

बहुत विचार करने तथा अनुभवसे यह सिद्ध हो जाता है कि गोवशसे ये दोनो काम पूरे हो सकते हैं। जहाँतक खेती-जोतका प्रश्न है, बैलसे आज यह आवश्यकता पूरी हो ही रही है। शास्त्रीय सवर्धनसे बैल-शक्ति बढानेकी ओर ध्यान देगे तो जोत-शक्तिमे जो कमी पडती है वह भी पूरी हो सकती है। जहाँतक दूधका सवाल है, यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि भैंसके मुकाबले गायमे दूध देनेकी शक्ति बहुत अधिक है। आजकी गाये दूध कम देती हैं यह सही है। परतु अच्छे सवर्धनके बाद गायोका दूध काफी बढ सकता है। आज प्रत्यक्ष अनुभव भी यही है। गायोमे जो कमी है, वह एक ही बातकी है कि गोदुग्धमे घीका प्रतिशत कम है। भैंसके दूधमे सबसे बडा आकर्षण घृताशका अधिक होना है। जब हम यह मान लेते हैं कि गायमे दूध भैंसके मुकाबले डेढ या दुगुना हो सकता है तो यह भी मान लेना चाहिये कि गायके दूधमे घृताशका प्रतिशत कम होनेपर भी टोटल घी भैंसके मुकाबले कम नहीं रहेगा। सब दृष्टिसे राष्ट्रकी शक्ति गोपालन-गोसवर्धनमे लगेगी तभी देश आगे बढ सकेगा। आज तो गाय-भैंस दोनो ही बेतहाशा कट रहे हैं। बैलोकी सख्या इतनी कम हो गयी है कि दोनोकी आवश्यकता है। 'गोसेवा-सघ' ने गोवशके कतल-बदीकी माँगके साथ ही भैंस-भैंसेके कतल-बदीकी भी माँग की है।

७-अन्त्योदय (किसानकी गायको बढावा देना)—भारतमे दूधकी उपलब्धिका प्रश्न शहरोकी कुछ गायोको तीन-चार हजार लीटरवाली करनेसे हल नहीं होगा। आवश्यकता है करोडो गाये जो प्रति ब्यॉंत ५०० लीटरसे भी कम दूध देनेवाली हैं उनका सवर्धन करके उनमे प्रति ब्यॉंत १,००० से २ ००० लीटर तक दूध बढाया जाय। गोसवर्धनके क्षेत्रमें अन्त्योदयका सिद्धान्त लगाना होगा अर्थात् जो गाये सबसे कम दूध देनेवाली हैं, उनका सवर्धन प्रथम किया जाय। उनका दूध चार गुना बढाना कठिन नहीं है। भारत-जैसे विशाल और देहातोमे बसनेवाले देशके लिये अन्तिम गायको उठाना प्रथम कर्तव्य होना चाहिये।

आज तो सभी क्षेत्रोमे केवल धनी और मध्यम वर्गकी

सेवा चली है। शहरोको दूध-सप्लाई करनेके अलावा गोसवर्धनका कोई लक्ष्य नहीं माना जाता। पशुपालनमे होनेवाला अधिकाश खर्च केवल शहरोकी सेवाके निमित्त हो रहा है। देहातके किसानकी, उसकी खेतीकी उसमे भी अन्तिम किसानकी कहीं कोई पूछ नहीं है। क्या हम आशा करे कि हमारे विशेषज्ञ और राजनेता सही दिशामे सोचना आरम्भ करेगे एव गिरी हुई करोडो गायोको उठायेगे?

८-शहरोसे दुधार पशुओको हटाना—गोवशके पतनके कारणाकी जाँच करनेसे पता चलता है कि उत्तम दुधार नमलोका विनाश बडे-बडे शहरोमे हो रहा है। बडे-बडे शहरोम दूधके लिये लोग अच्छी-से-अच्छी गाये ले जाते हैं और दूध कम होते ही वे गाये कसाईके हाथ बेच दी जाती हैं। इस तरहसे भारतका उत्तम-से-उत्तम गोधन इन शहरोकी बलिवेदीपर नष्ट हो रहा है। 'गोसेवा-सघ' ने राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसादजीकी अध्यक्षतामे सन् १९४९ मे इस विषयकी जाँचके लिये एक समिति नियुक्त की थी। उस समितिने कलकत्ता और बबई दा जगहकी जाँच की। जाँचमे यह पाया गया कि बडे शहरामे गायोकी हालत बहुत बुरी रहती है। न उनके निवासके लिये पूरा स्थान होता है, न दिनमे घूमनेका स्थान होता है। बछडे-बछडियोको मार दिया जाता है क्योकि उन्हे खिला-पिलाकर बडे करनेमे जितना खर्च होता है, उतनी उनकी कीमत नहीं आती। कृत्रिम उपायोसे गायोका इतना दूध निकाला जाता है कि गाय जल्दी गरमाती ही नहीं। अक्सर दूध बद होनेके बाद गाय कसाईके हाथ बेच दी जाती है। सूखी गायको ब्यानेतक पाँच-छ महीने रखने-खिलानेमे जितना खर्च होता है, उससे कम कीमतम नयी गाय खरीद लेते हैं और पुरानी कसाईका बेच देते हैं। इस तरह देशकी उत्तम-से-उत्तम दुधार गाये और उनकी सतान नष्ट कर दी जाती है।

इस विनाशको रोकनेक लिये सघकी स्पष्ट राय है कि बडे शहरोम दुधार पशुओका रखना कतई बद कर देना चाहिये। जिन लोगाके पास बहुत कुछ खुली जमीन हो और जो लोग दूध सूखनेपर भी गायका पालन करनेम समर्थ हो ऐसे कुछ लोगोंको अपवादके तौरपर गाये रखनेकी इजाजत दी जा सकती है। शहरवालोको चाहिय कि शहरोमे पशु रखनेके बदले देहातोसे दूध शहराम लानेका इतजाम कर ले। जैसा आज 'गोसवर्धन-गोरस-भण्डारो'म होता है। मोटर आदिसे सौ-डेढ-सौ किलो मीटर दूरसे दूध लाया जा सकता है। गाय-भैंस तो वहीं रहने चाहिये, जहाँपर खेतीकी जमीन हो और गोबर-गोमूत्रके खादका उपयोग हो सकता हो। जहाँ चारा-पानी सस्ता हो और जहाँ सूखे जानवरको पालनेमें आसानी हो ऐसे स्थानोपर गाय रखनेसे गाय बचेगी, खुली हवामें फिरनेवाली गायका दूध भी स्वास्थ्यकर मिलेगा, खेतीको अच्छी खाद मिलेगी, खेतीकी उन्नति होगी और अनाजकी उपज बढेगी। खेतोमें घूमनेवाली गायोका स्वास्थ्यप्रद दूध भी मिल सकेगा। यही ऐसा तरीका है, जिसमे गाय और शहरवाले, दोनोका लाभ है, दोनो बच सकते हैं। यही 'गोसवर्धन-गोरस-भण्डार-योजना' है।

९-बूढे तथा अनुत्पादक पशु—बूढे पशुओके लिये दूर जगलामे जहाँ पर्याप्त चारा-पानी हो वहाँ गोसदन कायम किये जायँ। वहाँ साँड न रखा जाय। इससे बेकार पशुओकी उत्पत्ति रुक जायगी। गोसदनोपर जो खर्च होगा वह कहाँसे आये यह सवाल रहता है। आज बडे-बडे शहरोमे व्यापारियोंने स्वय प्रेरणासे व्यापारपर धर्मादाके नामसे गोरक्षणके खर्चके लिये लाग-बाग लगा रखी है, उन लाग-बागोको कानूनी बना दिया जाय। जिन शहरोमे ये लागे न हो वहाँ भी लगायी जा सकती हैं। जहाँ स्थानीय 'गोरक्षण-सस्था' चलती हो, वहाँ आधी आमदनी उसे दी जाय तथा आधी गोसदनोके लिये रहे। जहाँ 'गोरक्षण-सस्थान' चलता हो वहाँकी पूरी आमदनी गोसदनोके लिये रहे। इस तरीकेसे काफी हदतक स्थायी व्यवस्था हो सकती है। इस व्यवस्थाके बाद भी सरकारी सहायताकी जरूरत रहेगी तो उतनी सहायता सरकारको देनी होगी। आज कम्पोस्ट जैविक खादोका महत्त्व बढ रहा है। गोबर-गोमूत्रके खादकी पूरी कीमत मिली तो गोसदन स्वावलम्बी हो सकत हैं।

१०-गाँव-गाँव गोसदन—हर प्रकारसे गाँव स्वावलम्बी बने ग्रामसभा सक्षम बने। ग्रामसभा तभी अच्छी बन सकती है जब गाँवका जा उत्तम गोधन है और जिनसे आर्थिक लाभ होता हो ऐसे पशु किसान-गोपालकोके पास रहे और जो गायें बूढी हैं या जवान होनेपर आर्थिक दृष्टिसे कमजोर हो गयी हैं उनकी सँभालका कार्य गाँवके गोसदन करें। गोसदनमें गोबर-गोमूत्रके कम्पोस्ट खादकी उत्तम व्यवस्था हो। इस खादसे खर्चकी कमी पूरी हो सकती है। पूरी कोशिश की

जाय तो गोसदन स्वावलम्बी भी हो सकते हैं। यह सत विनोबाजीका नया सुझाव था। इस योजनाके अनुसार ग्रामसभा गाँवके बेकार पशुओको सँभाल सकेगी। इससे 'गोहत्या-बदी' सफल होगी और 'गोसवर्धन' बढेगा।

११-पशु-खाद्यका निर्यात बद हो—विदेशी मुद्रा आयोजित करनेके लोभमे भारतसे बडी मात्रामे पशु-खाद्योका खासकर खलीका विदेशोमे निर्यात होता है। देशमे जितने पशु हैं, उनके लिये भी पशु-खाद्यकी कमी है, यह निर्विवाद बात है। परतु मनुष्यका स्वार्थ उसे कहाँ-से-कहाँ ले जाता है, इसकी कोई सीमा नहीं। कृषि-मन्त्रालयके एक सचिव कहते हैं कि पशु-खाद्योकी बहुत कमी है, इसलिये निर्यात बद होना चाहिये। उधर प्रोडक्शन सचिव कहते हैं कि खलीका निर्यात जरूरी है, नहीं तो खलीके भाव गिर जायँगे। उसका असर उत्पादकोपर पडेगा और परिणाम-स्वरूप मूँगफली एव तिलहनोका उत्पादन कम हो जायगा। तथाकथित बुद्धिमान् लोग अनुकूल-प्रतिकूल मनमानी दलीले देते रहते हैं। निर्यातसे केवल शहरी व्यापार और कारखानेवालाका स्वार्थ सधता है, ग्रामवासी मरते हैं।

वास्तविक स्थिति यह है कि पशु-खाद्योकी देशमे कमी है, निर्यात बद हुआ तो भारतके पशुओको वह खाद्य मिलेगा। देशकी गायोको खली मिलेगी तो दूध बढेगा, खाद उत्तम मिलेगी, गोबर-गैस बढेगी। कुल मिलाकर निर्यातके मुकाबले अधिक ही लाभ होगा।

१२-चारे-दानेकी प्लानिग हो—गोसवर्धनके लिये उत्तम साँडके उत्तम बीजकी आवश्यकता है ऐसा सभीका मानना है, परतु उससे भी अधिक आवश्यकता पशुके खाद्याके बढानेकी है। यदि खाना पूरा न मिलेगा तो नसल-सुधारका सारा कार्यक्रम व्यर्थ जायगा। बिना खुराकक शरीरम दूध भा नहीं बनता है। आज जो भी गाये जैसी भी हैं उनका नसल-सुधार किये बिना पर्याप्त खाना देगे तो दूध बढ जायगा और बैल-शक्ति भी बढ जायगी। हमारा अनेक वर्षोंका अनुभव है कि खुराक अच्छी मिलनेपर यहाँ 'गोपुरी'मे तीन गुनातक दूध बढा है। चारे-दानेके बढाये बिना गोसवर्धन असम्भव है।

सारे देशमें 'मनुष्य-खाद्यो' के लिये प्लानिग किया जाता है ताकि इसी जमीनमेसे आवश्यक खाद्य-पदार्थ मिल जायँ। उसी प्रकार 'पशु-खाद्यो' यानी चारे-दानेका भी प्लानिग अनाजके प्लानिगके साथ-साथ होना चाहिये। खेतीमे ऐसे ही बीज बोये जायँ जिनसे पशुओके लिये अधिक चारा मिल सके।

१३-गोदुग्धकी खरीद उचित भावमे हो—आज भारतमे खासकर सरकारी-गैरसरकारी एव सहकारी डेयरियोसे घृताशके आधारपर दूध खरीदनेके भाव निश्चित किये जाते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि गोदुग्धको बहुत ही कम भाव मिलता है और भैंसके दूधको गोदुग्धसे ड्योढा भाव मिलता है। परिणाम यह होता है कि गोपालकको गाय छोडकर भैंस पालनी पडती है। आज हम देख रहे हैं कि बबई दिल्ली गुजरात उत्तरप्रदेश आदि जहाँ-जहाँ भी घृताशके आधारपर दूध खरीदनेके भाव रखे गये हैं, वहाँ-वहाँ डेयरियोके आस-पास गाये समाप्त हुई हैं और भैंसे बढी हैं।

घृताशके आधारपर भाव रखनेमे सबसे बडी भूल यह है कि दूधमे घृताशको ही हम सबसे कीमती वस्तु मानते हैं और बाकी तत्त्वो (पाउडर) को गौण। यह शोषणका व्यापारी तरीका है। वास्तविक पोषणकी दृष्टिसे देखा जाय तो घृताशकी कीमत एक तिहाई और बाकीके दूध पाउडर (एस०एन०एफ०) की कीमत दो-तिहाई मानी जायगी। राष्ट्रिय योजनामे राष्ट्रको देशका पोषण देखना चाहिये। इसलिये यह तय करना आवश्यक है कि गोदुग्धको किसी प्रकार भी भैंसके दूधसे कम भाव न मिले। खुशीकी बात है कि इस दृष्टिकोणको महाराष्ट्र सरकारने समझा था। 'भारतीय कृषि उद्योग-सस्थान उरलीकाचन'के सतत प्रयत्नोसे यह काम हुआ। महाराष्ट्र सरकारकी ओरसे साढे चार प्रतिशत घृताश और साढे आठ प्रतिशत एस०एन०एफ० टोटल सॉलीडस १३ प्रतिशतके गोदुग्धको और ७ प्रतिशत घृताश तथा ९ प्रतिशत एस०एन०एफ० कुल सॉलीडस १६% भैंसके दूध दोनोका खरीद-भाव समान देती रही। कई सालोतक यह योजना चली। उसका परिणाम यह हुआ है कि महाराष्ट्रमे काफी मात्रामे गोपालन बढा है। उरलीकाचन-सस्थाके महामन्त्री स्व० मणिभाईका दावा था कि दूध-खरीदीकी यही नीति चलती रही तो दस सालमे सारे महाराष्ट्रमे गोदुग्ध-ही-गोदुग्ध हा जायगा। सर्वत्र गाये फलगी-फूलेगी। श्रीमणिभाईका यह दावा सफल हुआ है। आज वरली डेरीमे ८०% गोदुग्ध आ रहा है।

उचित यही है कि गोदुग्ध और भैंसके दूधके भाव समान हो। उत्पादन-खर्चकी दृष्टिसे यह माना जा सकता है कि गोदुग्धके उत्पादनका खर्च कुछ कम आता है। इसलिये गोदुग्धके भाव भैंसके दूधके मुकाबले दस प्रतिशत तक कम रखे जा सकते हैं। परतु पिछले ४० वर्षोमे गायके साथ भारी अन्याय हुआ है। गोदुग्धको अधिक भाव देने चाहिय यह बात विशेषज्ञ भी कहने लगे हैं। वे समझ गये हैं कि गोदुग्धको अधिक भाव नहीं मिलेगे तो उनके मारे कार्यक्रम असफल हो जायँगे।

खुशीकी बात है कि भैंसके हिमायती, राष्ट्रिय डेरी विकास बोर्डके अध्यक्षने भी इस तथ्यको माना है कि आज दूध-खरीदीकी जो नीति है उसमे गायक प्रति भारी अन्याय हो रहा हैं। इसलिये उन्होने प्रथम कदमके तौरपर यह स्वीकार किया है कि गोदुग्ध और भैंसके दूधके खरीद-भावमें १०-१५ प्रतिशतसे अधिक अन्तर न हो।

१४-गोदुग्ध-प्रसार—दुनियाका यह नियम है कि जिस वस्तुकी माँग बढती है वह दुनियाम अधिक पैदा होने लगती है और जिसकी माँग घटती है उस वस्तुका धीरे-धीरे लोप होता जाता है। यदि हम चाहते हैं कि गायका हमारे परिवारम स्थान हो तो उसे अपने नित्यके जीवनमे स्थान देना चाहिये, यानी अपने घरमे गाय रखकर गोपालन करना चाहिये। ऐसा सम्भव न हा सके तो कम-स-कम इतना आग्रह तो रख ही सकते हें कि अपने घरम केवल गोदुग्धका ही इस्तेमाल करे। बडे शहरोमे गोदुग्ध उपलब्ध होनेमे कठिनाई है फिर भी माँग बढनेपर गोदुग्ध मिलने लगेगा। गोरस-भण्डारामे यह अनुभव आ रहा है कि गोदुग्धकी कमी नहीं है। गोदुग्धके ग्राहक कम होनेसे गोदुग्धका उत्पादन नहीं बढा सकते हैं। 'वाराणसी-मथुरा-गोरस-भण्डारो' का यही अनुभव है।

गायका दूध स्वास्थ्यके लिये सर्वोत्तम है यह निर्विवाद सत्य है। डॉक्टर-वैद्य बीमारोके लिये गोदुग्धका सेवन ही हितकर बताते हैं। बच्चों स्त्रियो और बूढाके लिये तो गोदुग्ध अमृत है। 'अन्तागष्ट्रिय स्वास्थ्य-सस्था'ने भी एक रायसे निर्णय दिया है कि मानव-स्वास्थ्यके लिये गोदुग्ध सर्वोत्तम है। उसमे साढे तीन-चार प्रतिशत घृताशकी मात्रा है और यह मात्रा मानवके लिये पर्याप्त है। उससे अधिक घृताश मानवक लिये हितकारी नहीं है। आज सारी दुनियाकी आर नजर दौडायेगे तो देखेगे कि अमेरिका इग्लैंड, यूरोप एशिया आदि बडे-से-वडे विकसित देशोम केवल गाये ही रखी जाती हैं एव गोदुग्ध-गोघृतका ही इस्तेमाल होता है। विदेशवाले भारतसे गाये और साँड ले गये हैं। वे चाहते तो भैंस भी ले जा सकते थे। परतु उन्होंने मानवके लिये गोदुग्धको ही हितकारी माना। हमलोग दूधके गुणोको न देखकर भैंसके दूधके घृताशपर मोहित हैं। जय-जयकार गोमाताका करते हैं और बढावा भैंसको देते हैं। इस प्रकारकी हमारी ढुलमुल निष्ठा ही गोहत्याको बढा रही है। गोरक्षा चाहनेवाले हर भाई-बहनको इसपर गहराईसे विचार करना चाहिये। १९२४ मे राष्ट्रपिता गाँधीजीने गोरक्षाका काम सँभाला। उसी दिन गोरक्षाकी पहली शर्त रखी थी कि अपने घरमे घी-दूध गायका ही इस्तेमाल करे। आज भी इस शर्तका अमल हो तो देखते-देखते घर-घरमे गाये पलने लगेगी एव मानवका शरीर-स्वास्थ्य सुधरेगा आपसी सद्भाव बढेगा। गोहत्या बद होगी।

गोग्रास—भारतीय सस्कृतिने गायको कामधेनु माना है। मानवके जीवनमे गायसे अधिक सहयोग देनेवाला अन्य कोई प्राणी नहीं है। खेती जोतकर अनाज देती है, उत्तम खाद देती है, गोबर-गैस-प्लान्टसे भोजन पकानेका गैस देती है, गोमूत्रके रूपमं उत्तम औषध देती है। माता सालभर दूध पिलाती है पर गोमाता बच्चेको और माँको भी जीवनभर दूध पिलाती है। सनातन भारतने इस माताके उपकारोको स्मरण करक इसे परिवारमे स्थान दिया अवध्य माना और अपने भोजनसे पहले गोमाताके लिये गोग्रास निकालनेका धर्म प्रचारित किया।

आजकी परिस्थितिमे गोग्रास देनेके लिये हर घरमे गाये मिलना सम्भव नहीं। गोग्रासके लिये यदि गाय न मिले तो गोग्रासके रूपमे हर परिवारको रोजाना कम-से-कम १० नये पैसे निकालना चाहिये और साल भरके बाद जिस गोरक्षण-सस्थामे, आपको गायकी सेवा होती दीखे उसे समर्पित कर देना चाहिये। इसे धर्मका ही रूप गोसेवाका ही रूप और गोरक्षाका ही एक रूप समझना चाहिये। इससे आप गासवर्धन-जैसे पुण्य-कार्यम भागी बन सकेगे।

मन्त्री

—अ०भा० कृषि-गोसेवा-सघ

गो-सेवा-विमर्श

(श्रीशिवनाथजी दुबे, एम्०कॉम्०, एम्०ए०, साहित्यरत्न, धर्मरत्न)

प्रजापति ब्रह्माकी सृष्टिमे 'गौ' एक आदर्श प्राणी है। शास्त्रो एव पुराणोके अनुसार धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—इन चारो पदार्थोंको प्रदान करनेवाली एकमात्र गाय ही है। विश्वमे कलियुगके प्रभावसे प्राय सभी वस्तुओका प्रभाव लुप्त-सा होता जा रहा है, परतु गौ माता एव गो-सेवाका प्रभाव वर्तमान समयमे भी लुप्त नहीं हो सका है। यदि भक्तिपूर्वक गो-सेवा की जाय तो वह अपने भक्तकी सभी इच्छाएँ पूर्ण करनेमे सक्षम है। वेदोमे मानवके लिये यज्ञानुष्ठान बताया गया है। देववृन्दको आहुतियाँ प्राप्त होती हैं अग्निरूपी मुखसे—'अग्निमुखा हि देवा भवन्ति' एव देवगणको अर्पित करने योग्य हवि प्राप्त होता है गायसे। इसीलिये गायको हविको देनेवाली 'हविर्दुघा' कहा गया है।

यज्ञ-वेदीको पवित्र तथा स्वच्छ करनेके लिये गोबरकी आवश्यकता होती है पवित्र यज्ञाग्निको प्रज्वलित करने-हेतु गोबरके उपले (कडे) अपेक्षित होते हैं। यज्ञमे जौ, चावल, तिल इत्यादि जिस हविष्यान्नकी आवश्यकता होती है उसे उत्पन्न करनेके लिये बैल (गौकी सतान) की जरूरत पडती है। यज्ञमे पञ्चगव्यका महत्त्व सर्वविदित ही है।

आध्यात्मिक दृष्टिसे गायका महत्त्व वर्णनातीत है। प्रजापति ब्रह्मा, जगत्-पालक विष्णु एव देवाधिदेव महादेवद्वारा भी गायकी स्तुति की गयी है— हे पापरहिते! तुम सभी देवताओंकी जननी हो। तुम यज्ञकी कारणरूपा हो, तुम समस्त तीर्थोंकी महातीर्थ हो, तुमको सदैव नमस्कार है, यथा—

त्व माता सर्वदेवाना त्व च यज्ञस्य कारणम्।
त्व तीर्थं सर्वतीर्थाना नमस्तेऽस्तु सदानघे॥

(स्कन्द० ब्रह्म० धर्मारण्य० १०।१८)

वेदने तो गायके रूपको अखिल ब्रह्माण्डका रूप बतलाया है, 'एतद् वै विश्वरूप सर्वरूपं गोरूपम्।' गायके विश्वरूपका उल्लेख ब्रह्माण्डपुराण, महाभारत, पद्मपुराण, अथर्ववेद, भविष्यपुराण तथा स्कन्दपुराण आदिमे मिलता है। अथर्ववेदके अनुसार गायके रोम-रोमम देवताओका निवास है।

श्रीमद्भगवद्गीतामे आनन्द-कन्द भगवान् श्रीकृष्णने अपने दिव्य-स्वरूपोका वर्णन करते हुए 'धेनूनामस्मि कामधुक्' कहा है। महाभारतके अनुसार यज्ञके फलाका कारण गाय ही है तथा गायमे ही यज्ञकी प्रतिष्ठा है। यथा—

गावो यज्ञस्य हि फल गोषु यज्ञा प्रतिष्ठिता ।

गो-सेवासे श्रेष्ठतम महान् पुत्रकी प्राप्ति होती है। कुल-गुरु-वसिष्ठद्वारा महाराज दिलीपको सुरभिनन्दिनीकी भक्तियुक्त सेवाका आदेश हुआ। गो-सेवाके परिणामस्वरूप ही राजा दिलीपके पुत्र रघु हुए। महाराज ऋतम्भरने मुनि जाबालिके आदेशानुसार भक्ति-भावनासे गो-सेवा की, परिणास्वरूप सत्यवान् नामक पुत्रकी प्राप्ति हुई।

गोबर-गोमूत्रकी खाद (उर्वरक) से प्रचुर मात्रामे अन्नरूपी लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है। गो-सेवासे लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है—

गवा सेवा तु कर्तव्या गृहस्थै पुण्यलिप्सुभि ।
गवा सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥

स्वप्न-विज्ञानके अनुसार यदि गायका स्वप्नमे दर्शन हो तो वह महान् कल्याणकारी तथा व्याधिनाशक होता है। ज्योतिष विज्ञानके अनुसार यदि यात्राके प्रारम्भम गाय सामने पड जाय अथवा अपने बच्चेको दूध पिलाती हुई गाय सामने आ जाय या दिखायी पड जाय तो यात्रा सफल हाती है। गो-सेवासे व्यायाम भी होता है, जा स्वास्थ्यक लिये लाभदायक है। गृहविज्ञानक अनुसार गाबर स्वच्छता एव पवित्रता प्रदान करनेवाला है। ग्रामवासी वर्तमान समयम भी अपने आवासको गोबरसे लीपकर पवित्र करते हैं।

ऋषिकुला एव गुरुकुलोम ब्रह्मचारियाका गुरु-सेवाके साथ गो-सेवा भी अनिवार्य होती थी। प्रत्येक कुल (आश्रम) की अपनी गाय हुआ करती थीं उनकी सेवा विद्यार्थियोको अनिवार्य-रूपसे करनी होती थी। परिणामस्वरूप वे आभीरकर्म (डेयरी फार्मिंग) मे प्रवीण हो जाते थे।

गो-सवक एव गाभक्त जन आज भी परलोक-साधनके लिय प्रतिदिन नियमित रूपसे दानो समय (सुवह एव शाम) गाग्रास देनेके उपरान्त ही भाजन ग्रहण करते हैं। गोग्रासका फल यह होता है कि मरणोपरान्त जीवको दूसर

लोकमे जाते समय मार्गमे यमदूतोद्वारा होनेवाले आक्रमणसे गाये जीवोकी रक्षा करती हैं, इसलिये गायाको गोग्रास देना चाहिये। प्रात काल उठकर गौ माताको प्रणाम करना चाहिये। इससे अन्नपूर्णा भगवती प्रसन्न होती हैं तथा धन-धान्य-सम्पदा प्राप्त होती है। गोग्रास देनेसे गृहस्थाश्रमी जन आन्तरिक सुखका अनुभव करते हैं। पवित्रतासे बनाया हुआ भोजन गोग्रासके लिये उत्तम होता है। गोग्रासका मन्त्र निम्न प्रकार है—

सौरभेय्य सर्वहिता पवित्रा पुण्यराशय ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रास गावस्त्रैलोक्यमातर ॥

आधुनिक कृषि-यन्त्रोकी अपेक्षा गौकी सतान अर्थात् बैल कृषि-कार्यके लिये अत्यधिक लाभदायक है। कृषि-कार्यकी दृष्टिसे खेत जोतना एव खाद देना—ये दोनो ही महत्त्व रखते हैं। यन्त्रसे खाद नहीं प्राप्त की जा सकती, खेत जोते जा सकते हैं। आधुनिक कृषि-विज्ञानद्वारा प्रस्तुत रासायनिक उर्वरक (खाद) की अपेक्षा गाय एव बैलके गोबरकी खाद उत्कृष्ट है। रासायनिक उर्वरकोकी तुलनामे गाय तथा बैलकी खादसे जो अन्नोत्पादन होता है, वह अधिक सुस्वादु एव पौष्टिक होता है। कृषि-अर्थशास्त्रके अनुसार कृषि-कार्यमे कोई भी कृषि-यन्त्र बैलका स्थान नहीं ग्रहण कर सकता है। भारतकी सभी कृषि-योग्य भूमि ट्रैक्टरोसे जोतने योग्य नहीं है।

आधुनिक कृषि-यन्त्रोसे सर्वाधिक क्षति यह होगी कि कृषि-कार्यमें मशीनयुगके दोषोका प्रवेश हो जायगा और भारतीय कृषक भी उन दोषोसे प्रभावित हो जायगा। बहुतसे मजदूरो एव कृषकोको बेकारीकी समस्याका सामना करना पडेगा।

गायके दूधमे जो पोषक तत्त्व पाये जाते हैं, वे किसी अन्य (भैंस या बकरी) के दूधमे सुलभ नहीं होते। माँके दूधके पश्चात् गो-दुग्धका ही स्थान है। आयुर्वेदमे गो-दुग्ध, गो-दधि एव गो-नवनीतको बालक, युवा, वृद्ध तथा रोगी—सभीके लिये कल्याणकारी और अमृतके सदृश उपयोगी कहा गया है—

जरासमस्तरोगाणा शान्तिकृत् सेविना सदा।
तद्धित बालके वृद्धे विशेषादमृत शिशो ॥

गायको 'माता'का स्थान प्रदान किया गया है। गायके अतिरिक्त किसी भी पालतू जानवरको 'माता' नहीं कहा जाता। गायको माता इसलिये कहा जाता है कि यह जीवित रहनेपर तो सभी प्रकारसे उपकारिणी है ही, मरणोपरान्त भी गायकी हड्डी, चमडा, खुर सींग इत्यादि उपयोगी होते हैं। गौ माता अपनी सभी सतानोका समान-रूपसे हित करती है। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई—किसी भी जाति या सम्प्रदायका व्यक्ति क्यों न हो, गोदुग्ध एव अन्य वस्तुएँ समान-रूपसे तथा बिना किसी भेद-भावके उन्हे सुलभ होती हैं। अस्तु, गाय हमारे देशकी एक अमूल्य सम्पत्ति है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थ गोमहिमासे भरे हुए हैं। अग्नि, भविष्य, मत्स्य पद्म इत्यादि पुराणोमे गायोकी चिकित्सा, गोदुग्धादिकी विशेषताएँ, पञ्चगव्यसे लाभादि स्थान-स्थानपर वर्णित हैं। 'धन च गोधन धान्य स्वर्णादयो वृथैव हि' हमारे अर्थशास्त्रका यही मूलाधार रहा है। अमेरिकाके 'होर्ड्स डेयरीमैन' नामक पत्रके सम्पादककी निम्नाङ्कित पक्तियोंसे गायकी चिरन्तन ज्योतिकी महिमा परिलक्षित होती है—

'गाय हमारे दुग्ध-जगत्की देवी है। वह भूखोको खिलाती है, नग्नोको पहनाती है एव मरीजोको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती है। उसकी ज्योति चिरन्तन है।'

परतु यह एक महान् दुर्भाग्यकी बात है कि आर्यावर्तकी इस पावन धरतीपर पूर्णरूपेण गोवध-निषेध नहीं हो सका। हमारे सनातन धर्म दर्शन, सम्प्रदाय आदि सभीने उच्च-स्वरसे गो-वधका विरोध किया। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि किसीने भी गो-वधका समर्थन नहीं किया। प्रत्येक दृष्टिसे गो-वधपर शत-प्रतिशत नियन्त्रण अनिवार्य है। गो-वध भारतके लिये महान् अपराध, महान् पाप एव महाकलक है। गो-वधसे भारतीय सभ्यता एव सस्कृतिकी छवि धूमिल होती है।

भगवान् श्रीकृष्णका नाम 'गोपाल' है। गायोकी सेवा करना एव वन-वन भ्रमण कर गायोको चराना उनकी दिनचर्याका मुख्य कार्य रहा है।

अस्तु, भारतवर्षके उज्ज्वल भविष्यका पुनर्निर्माण गो-सेवा गोवशकी रक्षा एव गोमाताके आशीर्वादपर ही आधारित है।

भारतीय संस्कृति एव विचारधारामे गोसेवा

(श्रीसुरेशकुमारजी चौरसिया)

भारतीय सस्कृतिका मूलाधार वास्तवमे गौ माता ही है। गौको सर्वदेवमयी बतलाया गया है। अथर्ववेदम उसे रुद्रोकी माता, वसुओकी दुहिता, आदित्याकी स्वसा और अमृतकी नाभि-सज्ञासे विभूषित किया गया है—

माता रुद्राणा दुहिता वसूना
स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभि ।

गोसेवासे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारो तत्त्वोकी प्राप्ति सम्भव है। आज भी गौ माताका दिव्य प्रभाव कहीं-न-कहीं देखने-सुनने-पढनेको अवश्य ही मिल जाता है।

भारतीय शास्त्रोके अनुसार गौमे तैतीस कोटि देवताओका वास है। उसकी पीठमे ब्रह्मा गलेमे विष्णु और मुखमें रुद्र आदि देवाका निवास है। यथा—

पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णुर्मुखे रुद्र प्रतिष्ठित ।

यही कारण है कि सम्पूर्ण देवी-देवताओकी आराधना केवल गौ माताकी सेवासे ही हो जाती है।

गोसेवा भगवत्प्राप्तिके अन्यतम साधनोमेसे एक है। इससे भगवान् शीघ्र प्रसन्न हो जाते है। यह बडी ही विचित्र बात है कि भगवान् जहाँ मनुष्योके इष्टदेव हैं, वहीं गौ उनकी भी इष्टदेवी है। अतएव गोसेवासे लौकिक लाभ तो मिलते ही हैं, पारलौकिक लाभकी प्राप्ति भी हो जाती है।

प्राचीन कालसे ही भारतीय जन-मानस गोमहिमासे प्रभावित रहा है। पद्मपुराणके सृष्टिखण्ड (४५ । १३०) मे उल्लेख है कि ब्रह्माने प्राचीन कालमें बिना किसी भेदभावके सबके पोषणके लिये ही गौको उत्पन्न किया था—

अस्य कायो मया सृष्ट पुरैव पोषण प्रति।

भारतीयोके सम्पूर्ण सस्कार ही गोमय-गामूत्र-गोघृत तथा गोक्षीरद्वारा सम्पन्न किये जाते हैं। गोघृत बिना यज्ञ सम्पन्न हो नहीं सकता। पुराणादि शास्त्रोम गाधनकी महिमापर विशेष बल दिया गया है। गायक गावरम अष्ट ऐश्वर्ययुक्त लक्ष्मी सदा ही निवास करती हैं—

अष्टैश्वर्यमयी लक्ष्मीर्गामये वसते सदा। —

गाये पवित्र, मङ्गलकारक होती हैं। इनमे समस्त लोक प्रतिष्ठित हैं। गाये यज्ञका विस्तार करती हैं। वे समस्त पापोका विनाश करती हैं—

गाव पवित्र माङ्गल्य गोषु लोका प्रतिष्ठिता ।
गावो वितन्वते यज्ञ गाव सर्वाघसूदना ॥

गायोको नियमित ग्रास देनेमात्रसे ही स्वर्गलोककी प्राप्ति हो जाती है। यथा—

गवा ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते॥

अत गो-पालन-रक्षण करना अति आवश्यक है। कहा गया है कि जिस घरमे गाय नहीं है, जहाँ वेद-ध्वनि नहीं होती और जा बालकोसे भरा-पूरा न हो, वह घर घर नहीं हे, अपितु श्मशान है—

यत्र वेदध्वनिध्वान्त न च गोभिरलकृतम्।
यत्र बालै परिवृत श्मशानमिव तद् गृहम्॥
(अत्रिसहिता ३१०)

प्रात काल और यात्रा-समय गोदर्शनसे पुण्य और सफलता मिलती है। गौ मनुष्योको सौभाग्य प्रदान करती है। ऋग्वेदमे गौको अघ्न्या कहा गया है, क्योकि यह प्रजाओको भाग्यवान् और धनवान् बनाती है। महाभारतमे भी कहा गया है कि गौओके दूधसे बढकर कोई पदार्थ नहीं, अत गायका दान सबसे बडा दान है।

शास्त्राम उल्लेख है कि गोसेवासे धन, सतान और दीर्घायुष्य प्राप्त होते हैं। गाय जब तुष्ट होती है तो वह समस्त पाप-तापोका दूर कर देती हैं। दानम दिये जानेपर वह अक्षय स्वर्गलोकका प्राप्त कराती है तथा ठीक प्रकारसे पालन-पोषण किये जानेपर अपार धन-सम्पत्ति प्रदान करती है, अत गायासे बढकर और कोई दूसरा धन नहीं है। गोधन ही वास्तवमे सच्चा धन है—

तुष्टास्तु गाव शमयन्ति पाप
दत्तास्तु गाव त्रिदिव नयन्ति।
सरक्षिताश्चोपनयन्ति वित्त
— गोभिर्न तुल्य धनमस्ति किंचित्॥

गाये जहाँ जलपान करती हैं अथवा जिस जलमे सतरण करती हैं, वहाँ सरस्वती निवास करती है—

यत्र तीर्थे सदा गाव पिबन्ति तृषिता जलम्।
उत्तरन्त्यथवा येन स्थिता तत्र सरस्वती॥

जो भी व्यक्ति गायकी सेवा-शुश्रूषा करता है, वह सभी पापोसे छुटकारा पा जाता है।

यदि हम प्राचीन भारतीय इतिहासके दर्पणमे झाँककर देखे तो पता चलता है कि गोसेवासे ही भगवान् श्रीकृष्णको भगवत्ता, महर्षि गौतम, कपिल, च्यवन, सौभरि तथा आपस्तम्ब आदिको परम सिद्धिकी एव महाराज दिलीपको रघु-जैसे चक्रवर्ती पुत्रकी प्राप्ति हुई थी। महर्षि च्यवन और आपस्तम्बने अपना मूल्य गायसे लगाया था।

गोसवासे ही अहिंसा-धर्मको सिद्ध कर भगवान् महावीर एव गौतम बुद्धने अपन महान् धर्मोको सम्पूर्ण विश्वमे फैलाया था।

वेदोसे लेकर सभी पुराणो तथा अन्यान्य धर्मशास्त्रोमे धर्मका वृषका ही रूप माना गया है। शास्त्राका यह उद्घोष हे कि गाय विशुद्ध एव अक्षय लक्ष्मीको देनेवाली है। गौएँ वेद एव शुद्ध ज्ञान-विज्ञानकी जननी हैं और पवित्रताओकी मूल स्रोत तथा सीमा हैं।

महाभारतकारने कहा है—'गोधन राष्ट्रवर्धनम्।' प्राचीन कालम जिसके पास जितनी अधिक गौएँ होती थीं वह उतना ही अधिक धनी माना जाता था। गोपालचम्पूमे उल्लेख है कि नन्दबाबाके पास नौ लाख गौएँ थीं। महाभारतम भी मत्स्यराज विराटके पास साठ हजार गौएँ होनेका प्रमाण मिलता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन समयमे गोधनका कितना महत्त्व था।

कालिदासने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ रघुवशमे महाराज दिलीप एव सिहके वृत्तान्तमे घडेके समान स्तनवाली करोडो गायोके देनेका उल्लेख किया है—

'गा कोटिश स्पर्शयता घटोघ्नी ।' (२। ४९)

राजा नृगके सम्बन्धम भी आया है कि उन्होंने असख्य गायाका दान दिया था। भगवान् श्रीरामने भी दस सहस्र करोड गायोका दान दिया था। इसी तरह महान् योगीश्वर श्रीकृष्णने भी तेरह हजार चौरासी गौएँ प्रतिदिन दान करनेका नियम बना लिया था।

वस्तुत हमारे राष्ट्रका वैभव-वर्धन तो गोधनके विकास, उसकी रक्षा तथा वृद्धिसे ही जुडा हुआ है।

नि सदेह गोसेवामे सबका हित और कल्याण निहित है। किंतु आज दुर्भाग्य है कि गोवशकी रक्षापर समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। राष्ट्रकविने सखेद एक स्थानपर लिखा है—

है भूमि वन्ध्या हो रही वृष-जाति दिन दिन घट रही
घी दूध दुर्लभ हो रहा, बल वीर्य की जड़ कट रही।
गोवश के उपकार की सब ओर आज पुकार है,
तो भी यहाँ उसका निरतर हो रहा सहार है॥

हमारी इस पवित्र भूमिपर प्रतिवर्ष लाखा-करोडोकी सख्याम गाय और बैल काटे जाते हैं और हम सभी मूकदर्शक बनकर चूँ तक भी आवाज नहीं उठाते। गौके प्रति हमारी आदर-बुद्धि केवल कहने भरके लिय ही मात्र रह गयी है। गो-धन ही हमारा प्रधान बल है। गो-धनकी उपेक्षा करके वस्तुत हम जीवित नहीं रह सकते।

विष्णुधर्मोत्तरपुराणका तो यहाँतक कहना है कि अपनी आत्मासे भी अधिक गायकी रक्षाका ध्यान रखना चाहिये। गायकी श्वास-वायुसे घर पवित्र होता है, गायके स्पर्शसे पाप दूर होते हैं। अत गोसेवामे सबका हित और कल्याण निहित है।

गोसेवाका स्वरूप

(श्रीज्ञानसिहजी चौधरी राज्य-मन्त्री-कृषि एव सिंचित क्षेत्रीय विकास)

भारतीय सस्कृतिका मूलाधार गौ माता ही है और गोसेवासे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूप चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध होते है। भगवत्प्राप्तिके अन्यतम साधनोमेसे गोमाताकी सेवा भी एक साधन है। इस कठिनतम युगमें मानवका गौ माताके प्रति सेवा-भाव अत्यन्त ही पुनीत कार्य होगा। मैं इस विशेषाङ्कके लिये अपनी हार्दिक शुभ कामनाएँ दे रहा हूँ।

भक्ति, मुक्ति और शक्तिका स्रोत गोसेवा

(स्वामी श्रीबजरंगबली ब्रह्मचारी)

वेदोका उद्घोष, पुराणाकी पुकार और स्मृतियोकी ललकारका समवेत स्वर अनादिकालसे गोसेवाका आदेश, उपदेश और सदेश सुनाता चला आ रहा है।

वेद प्रभुसम्मित भाषामे स्मृतियाँ सुहृद्-सम्मित शैलीमे तथा पुराण और काव्यग्रन्थ कान्तासम्मित सरस सुझावके रूपमें गोसेवाकी उपयोगिता तथा आवश्यकताका अनुमोदन करते हैं।

भारतीय जीवनम गोमहिमा इतने भीतरतक समा गयी है कि वेदोके सारभाग उपनिषदाको हम गौकी सज्ञा देते हैं, स्मृतियोको हम गौका दूध मानते है और पुराणो तथा काव्यग्रन्थोको हम गोघृत-जैसा तुष्टि, पुष्टि और सर्वतोमुखी इष्ट-अभीष्टकी सिद्धिका हेतु मानते हैं। तभी तो 'शब्दा धेनव' की सूक्ति-सदुक्ति सर्वत्र प्रचलित है।

आत्मदर्शन (मुक्ति) की प्रेरणा देते हुए बृहदारण्यक-उपनिषद्मे याज्ञवल्क्यने मैत्रेयीसे कहा है—

'आत्मा वा अरे द्रष्टव्य श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य ।'

यद्यपि आत्मसाक्षात्कार जो मानव-जीवनका चरम लक्ष्य है—मुण्डकोपनिषद्ने बलहीनके लिये उसे दुर्लभ बताया है। यथा—

'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य ' (मुण्डक० ३।२।४)

परतु गोसेवासे अर्जित ऊर्जा (शक्ति) इस बलहीनताकी न्यूनताका निवारण सद्य कर देती है, तभी तो छान्दोग्योपनिषद्-के कथनानुसार सत्यकामको केवल गोसेवाके कारण ही विशुद्ध बुद्धिकी प्राप्ति और देव-दुर्लभ आत्मसाक्षात्कारकी उपलब्धि सहज सुलभ हो जाती है।

गोसेवाके प्रभावसे 'सत्यकाम' आप्तकाम पूर्णकाम होकर ओजस्वी-तेजस्वी-स्थिति प्राप्त कर लेता है। केवल गोचारणके द्वारा ही उसे ब्रह्मज्ञान—आत्मज्ञानकी अनुभूति हो जाती है। जिस समय गौओको लकर वह गुरुजीके पास आया, उस समय उसके तेजको देखकर गुरुजीको भी कहना पडा—

'ब्रह्मविदिव वै सोम्य भासि को नु त्वानुशशास'

(छान्दोग्य० ४। ९। २)

हे सोम्य! तू ब्रह्मवेत्ता-सा जान पडता है, तुझे किसने उपदेश दिया है?

भक्तिके क्षेत्रमे भगवान्को गौ, गोप और गोपियाँ सर्वाधिक प्रिय हैं। तभी तो नारदभक्तिसूत्र (२१) मे 'यथा व्रजगोपिकानाम्' का उदाहरण देकर पारस्परिक प्रेमकी सराहना की गयी है।

गोचारणमे सदा सग रहनेके कारण, गोप उनसे अभिन्न-जैसे हो गये थे। एक दिन जब 'तिक्कीघोडा-खेल' म श्रीदामा नामक गोपसे खेलम हारे हुए कृष्ण दाँव देनेमे आनाकानी करते हैं, तब गोसेवक श्रीदामाकी भावभरी धमकीसे भगवान् कृष्ण भी घबरा जाते हैं और उन्ह अपने ऊपर बिठा लेते हैं। यथा—

दूरि करौ गइया श्रीदामा ललकारि कह्यो
हारि गये दाँव तयौ करैं लराइया है।
नाहिन अधीन हम तुम्हरे नंद बाबाके
जाति-पाँति एकै बस ज्यादा दो गइया हैं॥
खट्टू खेल तुमसे सुनिकै घबराय गये,
दाँव देन सखरे केशन कन्हइया है।
जगत के स्वामी आजु स्वय तिक्कीघोड़ा बने
तिक् तिक् चढ़े हाँकि रहे श्रीदामा भइया हैं॥

यह है भगवान्का गौ और गो-भक्तोसे प्रेमका अद्भुत उदाहरण। जिन भगवान्का सस्पर्श बडे-बडे योगियोको दुर्लभ है, गोचारणमे सहयोग करनेवाले गोसेवक श्रीदामाको भगवान् तिक्कीघोडा बनकर अपनी पीठके ऊपर बिठाते हैं, अपने सिरके ऊपर बिठाकर गोसेवकको सर्वोपरि बताते हैं।

कृषि-प्रधान देश भारतमे 'शक्ति' का केन्द्र गायको ही माना जाता है। मालवीयजीसे किसी गोसेवकने पूछा कि दूध सबसे अच्छा किसका होता है? मालवीयजीने कहा कि दूध तो सबसे अच्छा भैंसका होता है। लोगोको आश्चर्य हुआ कि गोभक्त मालवीयजी भैंसक दूधकी प्रशसा करते

हैं। जब लोगाने गायके दूधके विषयमे पूछा तब उन्होने गायके दूधको दूध न मानकर उसे साक्षात् अमृत बताया।

धर्म, अर्थ, काम ओर मोक्ष—इन चारो पुरुषार्थोंकी सिद्धि भी गोसेवासे होती है। 'गो' धर्मका साक्षात् स्वरूप तो है ही, गोसेवासे अर्थलाभकी भी अनेका सूक्तियाँ ग्रामीण अञ्चलोमे आज भी प्रचलित हैं। यथा—

'जो जानौ पिय सपति थोरी राखौ गाय बैल की जोरी

कामकी पूर्तिमे भी गोसेवाका महत्त्व सराहनीय है। गोसेवासे ही महाराज दिलीपको पुत्रप्राप्ति और वसिष्ठजीको अष्टसिद्धियाकी उपलब्धि सुलभ हुई। गोसेवासे ही सत्यकाम जाबालको मोक्षधर्मकी प्राप्ति हुई।

किबहुना 'हिदू' कहलानेका अधिकारी भी वही है, जिसकी श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति-अनुरक्ति गोवशके सरक्षण, सवर्धन और गोसेवामे है।

गो-सेवासे ऐहिक तथा आमुष्मिक कल्याण

(डॉ० स्वामी श्रीमहाचैतन्यजी नैष्ठिक एम्०ए० पी-एच्०डी०, ज्योतिषाचार्य, श्रीगीता-रामायण-विशारद)

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्य शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायता दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायता निकामे-निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय पच्यन्ता योगक्षेमो न कल्पताम्॥

(शुक्ल यजु० २२। २२)

'हे परमात्मदेव! हमलोगोंके राष्ट्रमे यज्ञ-देवोपासनादि-समन्वित उत्तम कर्मशास्त्र, ब्रह्मवर्चस्वी-तेजस्वी ब्राह्मण तथा लक्ष्यवेधक, महारथी और अस्त्र-शस्त्रमे निपुण क्षत्रिय एव राष्ट्रमे प्रभूत दूध दनेवाली गाये, सुपुष्ट कन्धोवाले भार-वहनमे सक्षम बलशाली बैल और वेगवान् अश्व उत्पन्न हो। स्त्रियाँ सुन्दरी, दक्ष, सस्कार-सदाचारसम्पन्न, बुद्धिमती हो तथा इस राष्ट्रमे युवक वीर, जयी, रथी तथा सभाके लिये उपयुक्त सभासद् सिद्ध हा। पर्जन्य (मेघ) यथासमय प्रचुर वृष्टि करें और ओपधियाँ एव फसलें फलवती होकर पके—अन्न और फल पर्याप्त सुलभ हो। हमारे योग-क्षेम चलते रहें—अप्राप्तकी उपलब्धि और उपलब्धकी रक्षा होती रह।'

भारतवर्ष एक धर्मपरायण आध्यात्मिक देश है, जहाँ मानवके जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त समस्त क्रिया-कलापाके मूलमे ऐहिक तथा आमुष्मिक कल्याण-प्राप्तिकी अभिलापा निहित रहती है साथ ही यहाँके जनमानसका विश्वास है कि प्रत्येक वर्ण और समुदायके नर-नारियाको धर्म अर्थ, काम तथा मोक्ष-रूप पुरुषार्थचतुष्टयको सहज ही प्राप्त करा दनेवाली होनेसे गोसेवाका माहात्म्य सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि है। भारतीय धर्मशास्त्रोके पन्ने-पन्ने और पक्ति-पक्तिपर भगवत्सेवा, पूजा-उपासना, व्रत-उपवास, त्याग-तपस्या, दान-दया सत्य-अहिसा, सेवा-सयम, तीर्थ-दर्शन और गङ्गा-स्नान आदिके करने-करानेका माहात्म्य उल्लिखित है और यह भी वर्णित है कि उक्त समस्त कल्याणमूलक क्रिया-कलापोके अनुष्ठानसे जो-जो पुण्य प्राप्त होता है, वह सब पुण्य केवल गोसेवा करनेसे सहज ही उपलब्ध हो जाता है। यथा—

तीर्थस्नानेषु यत्पुण्य यत्पुण्य विप्रभोजने।
यत्पुण्य च महादाने यत्पुण्य हरिसेवने॥
भूमिपर्यटने यत्तु सत्यवाक्येषु यद् भवेत्।
तत्पुण्य प्राप्यते सद्य केवल धेनुसेवया॥

वर्तमान बदलती हुई परिस्थितियोमे भारतवर्षसे भिन्न भौतिक दृष्टिप्रधान पाश्चात्य प्रत्यक्षवादी जो किसी वस्तु, व्यक्ति और जीवका मूल्याङ्कन उसकी उपादेयताके अनुपातसे करते हैं, उन्होने भी व्यापक अध्ययन और विश्लेषणके अनन्तर जो निष्कर्ष दिया है वह धर्मप्राण गोभक्त भारतवर्षके लिय अतिशय गौरवका विषय है। उनका मन्तव्य है कि मानवके स्वच्छन्द भोगवाद, विस्फोटक अस्त्र-शस्त्रोकी होड एव प्राकृतिक असतुलनके रहते मानव-जातिपर चारो आरसे प्रलयकारी घनघार घन घिरते-गहराते जा रहे हैं, एसी घोर सक्रमणकालीन सकटकी घडीमें गोपालन और

गोसरक्षण ही जीवित रहनेका प्रमुख आधार सिद्ध होगा। गायको समूची विश्व-मानव-जातिका सर्वाधिक उपयोगी तथा उपकारी पशु घोषित करते हुए अमेरिका-स्थित 'मिसूरी स्टेट डेयरी' के कमिश्नर ई० जी० बेनेट कहते हैं कि भले ही तूफान, ओला, अनावृष्टि या फिर बाढका प्रकोप कहर ढाये और हमारी फसलोको नष्ट करके हमारी जीवित रहनेकी आशाओपर पानी फेर दे, फिर भी इसके बावजूद जो भी शेष बच रहेगा, उसीसे गाय हमारे लिये जीवनदायिनी पौष्टिक आहार तैयार कर देगी। उन हजारो-हजार बच्चोके लिये तो गाय साक्षात् जीवन ही है, जो दूधरहित वर्तमान नारीत्वकी रेतपर पड हुए हैं। मिस्टर बेनेट आगे कहते हैं कि हमारे ऊपर दुर्भाग्यका हाथ तो होना ही चाहिये, कारण कि हमलोग वर्षोसे अपन धर्म और कर्मसे गिर गये हैं। हम जानते हैं कि गाय हमारे लिये एक मित्रक रूपमे है जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ है आर उसकी कृतज्ञतामे कभी कोई कमी नहीं आयी है। वह हमारी पाई-पाई चुका देती है और हमारी रक्षा करती हे।

भारतीय धर्मशास्त्रोके प्रणेता तप पूत दिव्य-द्रष्टा ऋषियो-महर्षियोने तो सृष्टिके उपाकालमे ही 'सर्वेषामेव भूताना गाव शरणमुत्तमम्', 'गाव प्रतिष्ठा भूतानाम्' कहकर गोसेवा और गोपालनका महत्त्व प्रकट कर दिया था। 'मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा ' कहकर गायको सम्पूर्ण प्राणियाकी माता तथा 'धन च गोधन धान्य स्वर्णादयो वृथैव हि' बताकर गोवशको अर्थशास्त्रका मूलाधार निश्चित किया था। महाभारतके अनुशासनपर्वके अन्तर्गत एक कथा आती है जिसमे महर्षि च्यवन राजा नहुपको उपदेश करते हुए कहते हैं कि—'गोभिस्तुल्य न पश्यामि धन किचिदिहाच्युत' अर्थात् मैं इस ससारम गायके समान कोई दूसरा धन नहीं समझता। इस प्रकार महर्षि च्यवनने राजा नहुपसे अपना मूल्य गायके बराबर स्वीकार करके गायके महत्त्वको राज्य तथा ससारके सभी पदार्थोसे अधिक निरूपित किया था। वस्तुत गाय मानवको सभी प्रकारक मनोऽभिलपित भोग और ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली है। गोसेवासे लक्ष्मीकी तो सहज ही प्राप्ति हो जाती है। यथा—

गवा सेवा तु कर्तव्या गृहस्थै पुण्यलिप्सुभि ।
गवा सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥

ऐहिक कल्याणकी दृष्टिसे गोसेवा करनसे लक्ष्मीकी ही प्राप्ति नहीं होती, अपितु आराग्य और सतानकी सहज ही प्राप्ति हो जाती है। अनेकानक वैज्ञानिक परीक्षणोस अब यह सिद्ध हो गया है कि वाइरसजन्य अनक सक्रामक रोग गायाद्वारा स्पर्श की हुई वायुके लगनेस अनायास ही नष्ट हा जाते हैं। आयुर्वेदम बतलाया गया है कि गोमूत्रका सेवन करनेसे समस्त प्रकारके रक्तदोप, उदर-रोग नेत्रराग और कर्णरोग नष्ट हो जाते हैं। गोमय सारी अपावनता, दुर्गन्ध एव विषाक्त कीटाणुआका नष्ट कर देता है। गोदुग्ध एव गाघृतका सेवन शरीरको न केवल रसायनवत् बलकारक एव पुष्टि-प्रदायक है, बल्कि मानवको विशुद्ध बुद्धि एव मेधासे सयुक्तकर प्रज्ञावान् बना देता है। उसम शुद्ध सत्वका प्रादुर्भाव हो जाता है। धर्मशास्त्राम उल्लेख मिलता है कि पञ्चगव्यका सेवन करनेसे मानवकी समस्त पापराशिका क्षय उसी प्रकार हो जाता ह, जैसे प्रज्वलित अग्निसे ईधन भस्म हा जाता है। यथा—

यत् त्वगस्थिगत पाप देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवन्धनम्॥

महाभारतके अनुशासनपर्वमे उल्लेख मिलता है कि जो एक वर्षतक प्रतिदिन भोजन करनेस पूर्व दूसरेकी गायका एक मुट्ठी घास खिलाता ह उसके इस गासेवाके पुण्य-प्रतापसे उसके समस्त पाप और सताप नष्ट हो जाते हैं, पुत्र, यश, धन, सम्पत्ति यहाँतक कि उसका समस्त मन -कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। कविकुल-गुरु कालिदासके रघुवश महाकाव्यके अध्ययनसे यह तथ्य और भी निश्चित हो जाता है कि पुत्राभिलाषासे गोसेवा करनेपर अवश्य ही पुत्रकी प्राप्ति हो जाती है। महर्षि वसिष्ठद्वारा नि सतान महाराज दिलीपको गोसेवा करनेका परामर्श प्राप्त हुआ था। परिणाम-स्वरूप महाराज दिलीपके यहाँ रघु-जैसे महान् पराक्रमी चक्रवर्ती सम्राट् उत्पन्न हुए। श्रीमद्भागवतमहापुराणमे उल्लेख मिलता है कि 'गोसेवा-प्रधान पयोव्रत करनेसे देवमाता अदितिके उदरसे वामन भगवान् प्रकट हुए थे।' यह व्रत प्रतिवर्ष फाल्गुन मासके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदास लेकर द्वादशीपर्यन्त बारह दिनामे पूर्ण होता है।

आमुष्मिक कल्याणकी दृष्टिसे धर्मग्रन्थामे बताया गया है कि गोसेवा मानवको भयकर वैतरणी नदी और घोर

असिपत्रादि नरकोसे सहज ही पार करा देती है। मार्गशीर्ष मासके शुक्ल पक्षकी एकादशीको मोक्षदा एकादशी तथा वैतरणी-एकादशी कहा जाता है। इस व्रतके दिन गोसेवा और गोपूजनके समय प्रार्थना की जाती है कि 'हे गोमाता। तुम्हारी कृपासे मैं असिपत्रवन आदि घोर नरकोंको तथा वैतरणी नदीको पार कर जाऊँगा, मैं तुम्हें बारबार नमन-वन्दन करता हूँ।' यथा—

असिपत्रादिक घोर नदीं वैतरणीं तथा।
प्रसादात् ते तरिष्यामि गोमातस्ते नमो नम ॥

गोसेवा वैतरणी नदी और घोर नरकोसे तो रक्षा करती ही है वह साक्षात् परब्रह्म परमात्माकी भी सहज ही प्राप्ति करा देती है। प्रत्येक प्राणीके परम प्राप्तव्य, परमाराध्य और परम इष्टदेव तो एकमात्र अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड-नायक परब्रह्म परमेश्वर ही हैं, परतु यह कितने रहस्यकी बात है कि उन्हीं आनन्दकन्द सच्चिदानन्द परमात्माकी आराध्या, सेव्या और पूजनीया गोमाता है। गोसेवाके लिये लालायित परमात्माने सगुण-साकार-रूपमे 'गोविन्द' और 'गोपाल' नाम धारण करते हुए गोसेवा तथा गोपूजा की है। उन्होंने अपने आचरण और उपदेश दोनोके ही द्वारा गोसेवा करनेका अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। पद्मपुराणके अनुसार गोलोकविहारी भगवान् श्रीकृष्ण गायोंके प्रति अपनी भक्ति-भावना व्यक्त करते हुए कहते हैं—

गावो ममाग्रतो नित्य गाव पृष्ठत एव च।
गावश्च सर्वगात्रेषु गवा मध्ये वसाम्यहम्॥

अस्तु, उपर्युक्त विवेचनसे यह बात निष्पन्न हो जाती है कि 'भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव' की भव्य भावनाके अनुरूप गोसवासे ऐहिक और आमुष्मिक कल्याणकी सहज ही उपलब्धि हो जाती है। गोसेवासे जहाँ सर्वदेवमयी गौ माता प्रसन्न होती हैं, वहीं धर्मशास्त्र और भगवदाज्ञाका पालन भी होता है और भगवान्के प्रसन्न होनेपर भला लोक-परलोकका ऐसा कौन-सा सुख है जो गोसेवकको सुलभ न हो सके। 'भुक्ति-मुक्ति' गोसेवक पुरुषके चरणोकी दासी बन जाती है। इस प्रकार गोसेवा पुरुषार्थचतुष्टयकी प्राप्ति करानेमे जितना उपकारक साधन है उतना दूसरा कोई नहीं है। अत हम-आप—सबको तन मन, धनसे गोसेवा और गोरक्षणमे सतत सनद्ध रहना चाहिये

गोसेवाकी महिमा

(श्रीदेवेन्द्रकुमारजी पाठक 'अचल , रामायणी साहित्येन्द्रशेखर, साहित्यप्रभाकर आयुर्वेद विशारद)

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नम ।
गवा बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके॥
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नम ।
नम कृष्णप्रियायै च गवा मात्रे नमो नम ॥
(देवीभा० ९। ४९। २४-२५)

परम दयामयी वात्सल्यमयी सुर-नर-मुनि-सेवित गोमातासे कोई भी उऋण नहीं है। गोमाता करुणावरुणालय है, निर्विकार है, निमद एव निरहकार है। अपने परम प्रिय सेवकको जितना मधुर दूध प्रदान करती है उतना ही मधुर दूध गोभक्षकको भी देती है। जिस गोमातामे प्रतिशोधाङ्कुर लेशमात्र भी अङ्कुरित नहीं होता उस माँके समान प्रात -स्मरणीय और कौन हो सकता है? जननी जन्म देनेके अनन्तर कुछ कालतक ही दुग्धपान कराती है किंतु आदरणीय गोमाता जीवनके अन्तकालतक अमृतमय दुग्ध-पान कराती है। अत ऐसी महिमामयी एव परोपकारिणी गोमाताकी अवश्य सेवा करनी चाहिये। उनकी परिक्रमा करनी चाहिये। वे सदा सबके लिये वन्दनीय हैं। गौएँ मङ्गलका स्थान हैं दिव्य हैं। स्वय ब्रह्माजीने इन्हे दिव्य गुणोसे विभूषित किया है। जिसके गोबरसे घर और देवताओके मन्दिर भी शुद्ध होते हैं, उन गौओसे बढकर अन्य किसे समझा जाय। गौओके मूत्र-गोबर, दूध, घी, दही—ये पाँचो वस्तुएँ परम पवित्र हैं। गौएँ सम्पूर्ण जगत्को पवित्र करती हैं। गोमाताका सेवक कभी दु खी एव दरिद्री नहीं होता। भगवती विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी उस स्थानपर स्वाभाविक रूपसे उपस्थित रहती हैं, जहाँपर गोवंशको सदा सम्मान मिलता है। धन-सम्पत्ति सतति-सुख स्वास्थ्य एव सद्गुण

बिना प्रयासके गोभक्तके साथ रहते हैं।

गोसेवासे गोसेवक निष्पाप हो जाता है। गोखुरसे उडती हुई धूलिसे आच्छादित आकाश पृथ्वीको ऊसर होनेसे बचाता है। गोपालनव्रत स्वार्थ नहीं वरन् परमार्थ है।

भगवती सुरभीके अशसे उत्पन्न गायको पशु कहनेवाला-को पाप घरता है। इनमे देवत्व और मातृत्वका दर्शन करते हुए श्रद्धा समर्पित करनी चाहिये। गौकी सेवासे भगवान् वासुदेव 'गोपाल' कहलाये। आशुतोष शकरने भी सेवा करके गोमाता सुरभीकी अनुकूलता प्राप्तकर वरदान प्राप्त किया।

गोमाता मन-वचन एव कर्मसे सम्माननीय, पूजनीय एव आदरणीय है। इन्हे अपमानित करनेका अर्थ होता है देवताओका कोपभाजन बनना। इनके प्रति अपशब्द कहना और सुनना भी नहीं चाहिये। गोमाताका छोटा-सा अपराध भी वश-विनाशकी शक्ति रखता है। गौओको हाँकते-जोतते पीडित नहीं करना चाहिये। यदि वे भूखी-प्यासी होकर देखती हैं तो उत्पीडकके सम्पूर्ण वशको नष्ट कर देती है—

प्रचारे वा निवाते वा बुधो नोद्वेजयेत गा ।
तृषिता ह्यभिवीक्षन्त्यो नर हन्यु सबान्धवम्॥
(महा० अनु० ६९। १०)

गौके सेवक भी जिस भूमिपर निवास करते हैं, वह भूमि भी समस्त तीर्थोंद्वारा अभिनन्दित होती है। गोमाताकी सेवासे, पञ्चगव्य-प्राशनसे तथा चरणोदकमार्जनसे तीर्थ-स्नानका फल प्राप्त होता है। गाय जहाँपर पानी पीती है अथवा जिस जलसे पार होती है वहाँ सरस्वतीजी विद्यमान होती हैं—

यत्र तीर्थे सदा गाव पिबन्ति तृषिता जलम्।
उत्तरन्त्यथवा येन स्थिता तत्र सरस्वती॥

गोसेवा बडी-से-बडी दुस्तर विपत्तियोसे रक्षा करती है। ज्योतिषशास्त्रमे ग्रहोकी विपरीत अवस्थामे गोसेवा ही प्रमुख उपाय बताया गया है। आजका मानव गौ माताकी जय बोलता हुआ भी कसाइयाके हाथ गौ बेचनेमं लज्जित नहीं होता। लोभ और क्षुद्र लालचमे ग्रस्त होकर वे गोहत्याके हेतु बन जाते हैं। सेवाव्रती स्वप्नमे भी गो-अपराधसे भयभीत रहता है। जो गोमाता पञ्चगव्यसे पाप-ताप हरती, यागादिकोंम दानके द्वारा दानीके यज्ञ-दोष हरती एव अन्तिम अवस्थामे वैतरणीसे उद्धार करती है, ऐसी माताकी तथा उसके सेवाकी यशोगाथाका कौन गान कर सकता है अर्थात् कोई नहीं।

सच्ची सुख-शान्तिका मूल उपाय—गोसेवा

(श्रीबलरामजी सैनी, एम्०कॉम०)

प्राचीन भारतीय इतिहास इस बातका साक्षी है कि अल्पकालिक गोसेवासे ही भगवान् श्रीकृष्णको भगवत्ता, महर्षि गौतम, कपिल, च्यवन, सौभरि तथा महर्षि आपस्तम्ब आदिको परम सिद्धिकी प्राप्ति एव महाराज दिलीपको रघु-जैसे चक्रवर्ती पुत्रकी प्राप्ति हुई थी। इसीके आधारपर सम्पूर्ण विश्वम गोत्रोका चलन भी हुआ। महर्षि च्यवन एव आपस्तम्बने अपना मूल्य लगानेके समय स्वयको सम्पूर्ण पृथ्वी तथा स्वर्गलोकके सम्पूर्ण साम्राज्यसे भी अधिक मूल्यवान् माना किंतु जब तत्कालीन नरेशोद्वारा उनके मूल्यके रूपमे एक गायको उपस्थित किया गया तो वे तत्काल प्रसन्न हो गये। अत गोसेवाका महत्त्व अत्यधिक है।

भगवान् महावीर एव गौतम बुद्धने भी गोसेवासे ही अहिसा-धर्मको सिद्धकर अपने महान् धर्मोको सम्पूर्ण विश्वमे फैलाया था। अहिसाका सीधा सम्बन्ध गोसेवासे ही है। गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीने भी जीवनके अमूल्य लक्ष्योकी प्राप्ति-हेतु गायको सर्वोत्तम साधन बताया है—

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई॥
जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा॥
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥

इसीका घृत स्वर्ग-प्राप्तिका आधार बनता है। समस्त देवताओको तृप्त करनेवाला मन्त्रपूत हविष्य गोदुग्धसे ही तैयार होता है। वस्तुत गाय तीनो लोकाका पवित्र करती है। उसके शरीरमे तीना लोको, दवताआ और ऋषि-मुनियासहित सम्पूर्ण तीर्थोंकी स्थिति है। अत उसकी

सेवास भला ऐसी कौन-सी सिद्धि है, जिसकी प्राप्ति न हो? भाव ही प्रधान कारण है।

बडे खेदकी बात है कि समस्त धर्मों-पुण्यो, सुख-सम्पत्तिके भण्डार एव समस्त फलदायिनी गौ माताका वर्तमानम घोर तिरस्कार हो रहा है। इसके परिणाम-स्वरूप देशम ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्वमे रक्तपात, हिसा और उपद्रव आदिकी भयावह स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

वेदासे लेकर सभी पुराणो तथा अन्यान्य धर्मशास्त्रामे धर्मको वृष (साँड) का ही रूप माना गया है। परतु इसका वर्तमान राजनीतिमे कोई स्थान नहीं हे। जबकि प्राचीन परम्परामे धर्मके बिना राजनीति विधवा मानी गयी है। आज विश्वके समस्त राजनीतिज्ञ धर्मके वास्तविक स्वरूपको न समझकर दिशाविहीन, किकर्तव्यविमूढ, हतप्रभ एव ज्ञान-बुद्धिसे शून्य होकर देश-प्रदेशकी जनभावनाओके साथ जनताका और अपना भी अहित ही कर रहे हें। नि सदेह इसमे विश्वरूप-धर्म और विश्वधारिणी गौ माताकी उपेक्षाके साथ-साथ अनीश्वरवादिता एव देवता आदिके प्रति अश्रद्धाका

समस्त शुभ कर्मोंका फल षड्वर्ग-सयम मन, बुद्धि एव आत्माकी परिशुद्धि तथा नित्य पराशान्तिकी प्राप्ति ही कही गयी है और वह गोसेवासे शीघ्र एव अनायास ही प्राप्त हो जाती है। शास्त्राका यह उद्घोष है कि गाय विशुद्ध एव अक्षय लक्ष्मीको देनेवाली है। उससे विश्व कल्याण-मङ्गलासे सुरक्षित होता है। गौएँ वेद एव शुद्ध ज्ञान-विज्ञानकी जननी हैं और पवित्रताओकी मूल स्रात तथा सीमा हैं।

भारतके ऋषि-मुनि सदासे सभी शास्त्रोमे गोसेवा तथा वृषभस्वरूप भगवान् धर्मका सरक्षण ही सार्वभौम सुख-शान्तिका सर्वाधिक सुगम एव कल्याणकारी उपाय बतलाते रहे हैं। पाठकोसे प्रार्थना है कि वे इस बातको जीवनमे उतारकर गोमती-विद्या, गो-सावित्री-स्तोत्र तथा मानसके ज्ञानदीपक आदि प्रसङ्गोका ध्यानसे पठन-मनन कर स्वल्प गोसेवाद्वारा भी सर्वोत्तम पुरुषार्थ एव मोक्ष-प्राप्ति-हेतु अग्रसर हा।
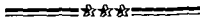
गौके प्रति हमारा कर्तव्य

(श्रीरामनिवासजी लखोटिया)

यह निर्विवाद है कि गौकी महिमाका वर्णन प्राचीनतम कालसे भारतमे रहा है और विभिन्न धार्मिक ग्रन्थो, मनीषियो सतो और चिन्तकाकी वाणी एव साहित्यमे गोरक्षाके लिये बहुत कुछ कहा गया है और लिखा गया है। सविधानम भी गो-हत्यापर प्रतिबन्ध लगानेकी भावना व्यक्त की गयी है। भारतवर्षके अधिकाश व्यक्ति गोमाताकी महिमाके बारेमे सुनते आ रहे है या जानते हैं या विश्वास रखते है। फिर भी यह एक बडा आश्चर्य हे कि अधिकाश गोमाताके प्रेमी हिन्दू, जैन सिख आदि गौकी रक्षाके प्रति अपना कर्तव्य निभानमे उदासीन हैं। यही कारण है कि महात्मा गाँधी, विनोबा भाव और देशके अन्य महान् नेताओके सत्प्रयत्नोके बावजूद अभीतक पूर्णरूपसे भारतवर्षमे गोहत्या बद नहीं हो सकी है। प्रस्तुत लेखमे गौक प्रति हमारे विभिन्न कर्तव्य क्या हैं और क्या हाने चाहिये इसपर सक्षिप्त विवेचन किया है। यदि हम अपन कर्तव्याका पूर्ण निष्ठाक साथ पालन करे तो हम गो-रक्षा करनेमे और उसकी हत्याको रोकनेमे सक्षम हो सकेगे और भारत देशके बारेम यह कहा जा सकेगा कि यहाँ पुन दूधकी नदियाँ बह रही हैं। आज आवश्यकता है हमे जागरूक होनेकी। आजके वर्तमान आर्थिक सकटके समयम गौके प्रति हमारे कर्तव्योका पुन मूल्याङ्कन करना आवश्यक है।

गौकी धार्मिक महिमा

हमारा यह कर्तव्य है कि हम स्वय गौके महत्त्वको समझे और उसे अपने परिवार, स्वजनो एव मित्रोको भी समझाये। ऋग्वेद (८। १०। १५) मे गौके लिये कहा गया है—'गाय रुद्रोकी माता वसुओकी पुत्री और आदित्योकी भगिनी है। गाय अमृततुल्य दूध और घीका एक मात्र स्रोत है।' गो-पालनके कारण ही भगवान् श्रीकृष्णको 'गोपाल' कहते हैं। विद्वानोका यह कहना है कि गोवध नहीं किया जाना चाहिये क्योकि वह मानवकी सेवा करती है। वेदोंने 'गावो विश्वस्य मातर' कहा है अर्थात् गौ सारे विश्वकी माता

है, क्योंकि बिना किसी भेदभावके वह सबका भरण-पोषण करती है। गोमाता हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और अन्य धर्मके माननेवालोका—सबका समान-रूपसे कल्याण करती है।

पशुधनकी उपयोगिता

गौकी सही उपयोगिता हम पूरे गोवशकी उपयोगितासे ही आँक सकते हैं। यह निर्विवाद है कि गायका दूध माँके दूधके जैसा होता है। हजरत मोहम्मद पैगम्बरने भी गायके बारेमे अपने निम्न विचार रखे है—'तुम गायका दूध पीनेके पाबद हो जाओ। गायके दूधमे सभी तरहके पौधोका सत्व है। गायका दूध हमेशा पीये, यह दवा है। उसका घी बीमारी दूर करता है। उसके गोशतसे बचो, चूँकि उसका गोशत बीमारी है।' दूध ही नहीं गायका घी भी स्वास्थ्यवर्धक है। इसमे 'कैरोटीन' बहुत अधिक मात्रामे होता है तथा इसमे अनेक औषधीय तत्त्व हैं। गायका गोबर और दूध भी बहुत गुणकारी है। गायका गोबर शुद्ध, रोगाणुनाशक, ओषधिगुणसम्पन्न है। खाद तथा जैविक गैस और दूषित परमाणुआके प्रभावको रोकनेके लिये इसका प्रयाग किया जा सकता है। इसी प्रकार गायका मूत्र धार्मिक अनुष्ठानामे तो काम आता ही है, उसका ओषधिकी दृष्टिसे महत्त्व भी बहुत है। वह रोगाणुनाशक एव कीटनियन्त्रक है। गायके दूध, दही, घी, मूत्र और गोबरके रसके मिश्रणको आजकी भाषामे स्वास्थ्यप्रद टॉनिक कहते है। धार्मिक कार्योंमे यही 'पञ्चगव्य' की सज्ञासे अभिहित होता है।

इन्हीं गुणोके कारण महात्मा गाँधीने गायके सम्बन्धमे कहा था—'मैं गायको सम्पन्नता और सौभाग्यकी जननी मानता हूँ।' गायसे प्राप्त होनेवाले विभिन्न पदार्थोंका उपयोग हम समझना चाहिये और अन्य व्यक्तियोको भी समय-समयपर समझाना हमारा कर्तव्य है। गोधन हमारी राष्ट्रिय सम्पत्ति है और इसकी सुरक्षा एव सवर्धन हमारा राष्ट्रिय कर्तव्य है। वास्तविक अर्थोमे गोवश आज भी हमारी अर्थव्यवस्थाका मूल आधार है। गोवशसे जहाँ दूध घी, अनाज अन्य खाद्य-सामग्री, खाद ईंधन, सिचाई और यातायातके साधन प्राप्त होते हैं, वहीं पर्यावरणकी भी सुरक्षा होती है। महर्षि दयानन्दके कथनानुसार तो 'गायकी हत्या करके एक समयमे केवल २० व्यक्तियाका ही भोजन दिया जा सकता है, जबकि वही गाय अपने पूरे जीवनकालमे कम-से-कम २०,००० लोगाको अपने दूधस अमृततुल्य तृप्ति प्रदान कर सकती है।'

गोवशकी उपलब्धता

यह एक चिन्ताका विषय है कि आजादीके बाद एक हजार जनसख्याके पीछे गाय और बैलकी सख्या दिन-प्रतिदिन घट रही है। १९५१ मे १,००० की जनसख्याके पीछे ४३० गाय और बैल हुआ करते थे। १९६१ मे यह सख्या घटकर ४०० रह गयी और १९८२ तक यह केवल २७१ हो गयी थी। इसके विपरीत दुनियाके अन्य राष्ट्रोमे जो धार्मिक दृष्टिसे गौको माँ नहीं कहते, वहाँ गायोकी सख्या बहुत है। जैसे अर्जेनटाइनामे १,००० के पीछे २,०८९ गाय और बैल होते हैं, आस्ट्रेलियामे यह सख्या ३६५, कोलम्बियामे ९१९ और ब्राजीलमे ७२८ है। यदि हमने अपने कर्तव्योंका पालन नहीं किया और सरकारको गोवश-रक्षाके बारेमे सचेत नहीं किया तो हमारे देशमें गाय और बैलोकी सख्या दिन-प्रतिदिन और भी कम होती जायगी।

सवैधानिक जानकारी

हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम भारतीय सविधानमे वर्णित दिशा-निर्देशके महत्त्वको समझे। सविधानकी निर्देशात्मक धारा ४८ मे यह स्पष्ट वर्णन है कि सरकारका यह कर्तव्य होगा कि वह देशमे उपयोगी, सक्षम, दुधारू एव भारवाले गोवश-प्राणियोका सरक्षण और सवर्धन करे। कोई भी लोकतान्त्रिक सरकार इसके विरुद्ध आचरण नहीं करेगी। परतु यह दुर्भाग्यका विषय है कि सन् १९५८ मे सर्वोच्च न्यायालयने 'बिहार सरकार बनाम हनीफ-कुरेशी' मुकदमेम अपना निर्णय देते समय सविधानकी धारा ४८ की जा व्याख्या की है, उसमे उन्होंने कहा है कि किसी भी आयुकी गायकी तो हत्या रोकनेका निर्देश है, किंतु बूढे बैलो और साँडोको उसम सरक्षण नहीं दिया गया है। अत सर्वोच्च न्यायालयने कहा है कि जो कानून उनकी हत्यापर कानूनी प्रतिबन्ध लगानेवाले हैं वे भी वैध हैं। आज इस व्याख्याके पुनर्विचारका समय आ गया है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि हम किसी-न-किसी प्रकार सर्वोच्च न्यायालयमें इस मामलेको पुनर्विचारके लिये रखवाय। वस्तुत जिन आधारोंपर वह निर्णय दिया गया था, उसमे गुणात्मक परिवर्तन हो गया है। इसलिये

सर्वोच्च न्यायालयमे पुनर्विचार-हेतु मामलेको लानेके लिये विशेष प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है और इसमे जो व्यक्ति सक्षम हें, उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि वे अपनी तरफसे इस बारेमे पूर्ण चेष्टा करे।

गोरक्षा-हेतु जागरूकता

भारतमे अनुमानत २,५०० गोशालाएँ हैं। इनकी स्थापना तो अहिसा, करुणा, जीवदया और सेवाकी भावनासे ही हुई है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि उनका सचालन भी नैतिक भावनासे हो। हम यह देखें कि गोशालाएँ और गोसदन निष्काम सेवा, अध्ययन और प्रशिक्षणके केन्द्र भी बने। कई बार यह देखनेमे आता है कि कुछ गोशालाओकी भूमि बेचकर वहाँ कालोनी बनाने और दुकान आदि बनानेकी प्रवृत्ति उनके प्रबन्धक कर रहे है। ऐसी प्रवृत्तिको रोकना हमारा कर्तव्य है। गोशालाकी जमीन बेचकर धनके ब्याजसे गोशालाएँ चलाना बिलकुल उचित नहीं है। बल्कि गोशालाओकी जमीनपर फल-फूलके बाग-बगीचे, प्रशिक्षण-केन्द्र, सशोधन-केन्द्र, गोदुग्ध-विक्रीकेन्द्र ओर अन्य सहायक रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलानी चाहिये। गो-सदनोके सचालनके लिये स्वैच्छिक गोसेवकाका विशेष महत्त्व है। इसलिये हम सरकारसे विशेष निवेदन करना चाहिये कि वह स्वैच्छिक गोसेबकोकी 'सलाहकार-समिति' स्थानीय शासनके अन्तर्गत स्थान-स्थानपर कायम करे।

प्रत्येक सपृद्ध उच्चस्तरीय मध्यम वर्गक परिबारके गोप्रेमी व्यक्तिको कम-से-कम एक गायका पालन अवश्य करना चाहिये या जो गाय गोसदन या गोशालामे रहती है उसके भरण-पोषणका बेडा उठाना चाहिये। भारतवर्षम जितने व्यक्ति इस कार्यको करनेके लिये सक्षम हैं, यदि वे अपना कर्तव्य निभा ल तो कोई भी गाय कभी भी कसाईक हाथ नहीं बिक सकती। स्वत ही फिर हम गोवधको रोकनेमे सक्षम हो सकेगे। बडे नगरोमे व्यक्तिगत गाय पालना सम्भव नहीं ह। इसलिये गोशालाओं एव पिजरापोलाके माध्यमसे व्यक्तिगत गाये भी पाली जा सकती हैं।

हम भारत सरकारके केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलके सदस्यो सासदा और सम्बन्धित प्रशासनिक अधिकारियासे सतत सम्पर्क करके जितनी गोसेवी सस्थाएँ हैं, उनकी एक स्थायी समिति कायम करानी चाहिये। इसके कार्योंकी जानकारी सभी जागरूक स्वयसेवी गोसेवकाको दी जानी चाहिये। केन्द्रीय सरकारसे हम यह निवेदन करना चाहिये कि एक 'अखिल भारत-गोसवर्धन आयोग' स्थापित करे और उसके अन्तर्गत गोपालनके लिये सहायता और मार्गदर्शन प्रदान हो, अनुसधान और प्रशिक्षणकी प्रवृत्तिका सचालन हो तथा गोशालाओको नस्ल-सुधार आदिके लिये सहायता प्रदान की जाय। यही नहीं, आयोग पशु-ऊर्जाके उपयोगके लिये समुचित तकनीक आदि विकसित करनेमे शोध-सस्थाओका सहयोग करे।

गोपालन एव आयकर कानून

गोशालाओ और गोसेवाभावी व्यक्तियोंको चाहिये कि निरन्तर पत्र लिखकर सरकारको 'गापालन-उद्योग' अर्थात् 'डेयरी फार्मिंग' के लिये आयकरमे छूटका प्रावधान करनेके लिये कहे। हमे यह जानना चाहिये कि इस प्रकारकी छूट आयकर अधिनियम १९६१ को धारा ८० जेजेके अन्तर्गत ३१-३-८६ तक मिलती रही थी। फिर वित्त-अधिनियम १९८५ के द्वारा १-४-८६ से यह छूट मिलनी बद हो गयी। लेकिन 'मुर्गी-पालन-व्यवसाय'को प्रोत्साहन-हेतु कुल आयमे ⅓ भाग करमुक्त छूट १-४-९० से पुन धारा ८० जेजेके अन्तर्गत मिलती है। इससे 'मुर्गी-पालन-व्यवसाय'को तो प्रोत्साहन मिल रहा हैं, परतु वही छूट जो 'दुग्ध-उद्योग' के लिये भी बराबर मिलती थी वह अब नहीं मिल रही है। इसलिये मुर्गी-पालनको मिलनेवाली छूटके बराबर तो धारा ८० जेजेके अन्तर्गत 'गोदुग्ध-उत्पादन-उद्योग' के लिये भी मिलनी चाहिये।

उपसहार

गायकी धार्मिक महिमा जो वेदो और प्राचीन ग्रन्थोमे है कवल उसीका गुणगान करनेसे हम अपने कर्तव्यका निर्वाह नहीं कर सकेंगे, बल्कि बराबर घटती हुई गोवशकी सख्या और गोहत्याको रोकनेके लिये तथा जीवित गायोके सवर्धन और सरक्षण आदिके लिये यह नितान्त आवश्यक है कि हम स्वय गोके प्रति अपने कर्तव्योके लिये जागरूक बन और गोरक्षा गो-सरक्षण आदिके लिये हम अपने कर्तव्यका निर्वाह करे, तभी सच्चे अर्थोमे हम गोभक्त कहलानेके हकदार हो सकेगे।

जो गोसेवा नहीं करता वह श्रीविहीन हो जाता है

(श्रीमहन्त नारायण गिरिजी)

'गावो विश्वस्य मातर' कहकर वेद विश्व (सब) की माताके रूपमे गौ माताकी वन्दना करता है।

ऋग्वेदके एक मन्त्रमे रुद्राकी माता एव वसुओकी दुहिता, आदित्योकी स्वसा तथा अमृतकी नाभि कहकर गौ माताका स्तवन किया गया है। गौ अमृतकी अग्रजा है। सागर-मन्थनसे सर्वप्रथम पाँच गौएँ प्रादुर्भूत हुईं। क्षीरसागरसे प्राप्त नन्दा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला तथा बहुला नामक इन गौओको लोकमाता कहकर देवताओद्वारा पाँच महर्षियो—जमदग्नि, भरद्वाज, वसिष्ठ असित तथा गौतमको इसीलिये प्रदान कर दिया गया कि ब्राह्मण और गौ एक ही कुलके दो भाग हैं। अत गौएँ महाभाग महर्षियोको दी गयीं।

देव-तृप्ति तथा लोक-पालनके लिये आविर्भूत गौ माताके सींगोके अग्रभागमे समस्त तीर्थों, मध्यमे सभी कारणोके कारण-स्वरूप देवाधिदेव भगवान् सदाशिव तथा सींगाकी जडमे ब्रह्मा-विष्णुका निवास है। गोमाताके नेत्रोमे प्रकाशस्वरूप भगवान् सूर्य, ज्योत्स्नाके अधिष्ठाता देव चन्द्रमाका निवास है और चारो चरणोमे सत्य-अहिसा-दया तथा शान्तिरूप चतुष्पाद धर्मदेवताका अधिष्ठान है। वृषभ ही साक्षात् गोरूपधारी धर्म है।

भगवान् श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिरसे कहते हैं—हे युधिष्ठिर! गोवत्सद्वादशी-व्रतसे कुल तथा गोत्र एव १८ अक्षौहिणी सेनाके विनाशका महापातक नष्ट हो जायगा और गौ माताकी कृपासे हृदयको शान्ति भी मिल जायगी।

गौके इस स्वरूपका ज्ञान होनेसे ही सर्वज्ञ ब्रह्म गोविन्द, गोपाल तथा गोरक्षक बने। भगवान् सदाशिवको प्रसन्न करनेवाला बिल्वपत्र भी गौकी देन है। गोमयसे ही श्रीवृक्ष या बिल्ववृक्षकी उत्पत्ति हुई। उस बिल्ववृक्षमे पद्महस्ता भगवती श्रीकी नित्यस्थिति है।

यज्ञकी हवि और मन्त्र-ऋचाएँ (वद) दोना ही गौके अङ्गोमे अवस्थित हैं। यज्ञकी प्रवृत्ति गौसे ही सरक्षित है, क्योंकि यज्ञमें प्रतिष्ठित ब्रह्म स्वय ही गौमे निवास करते हैं, इसीलिये ऋग्वेदने गौको 'अघ्न्या' कहा है।

गौ सभी देवाकी माता है। यह विश्वधात्री है। हमे गोरस ही नहीं अन्न भी गौसे ही प्राप्त हुआ। पहले खेती गोपुत्रोके सहारे हुई, गोमयसे भूमि उर्वरा बनी। रत्नगर्भा वसुन्धराकी देन अन्न पहले गोग्रास-रूपम गायको अर्पित करनेका यही रहस्य है—

त्वदीय वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।

गोसेवा करके ही गौतम न्यायशास्त्रके प्रवर्तक बने, गोसेवा करके महर्षि जमदग्निको परशुराम-जैसे तजस्वी पुत्रकी प्राप्ति हुई। गोसेवक गुरुवर वसिष्ठने पुत्रहीन महाराज दिलीपको गोसेवासे ही पुत्रवान् बनाया। करोडो गौएँ महाराज दिलीपद्वारा सेवित हुईं। गोसेवक रघुके नामसे रघुवश चला और उनके ही कुलमे भगवान् श्रीराम अवतरित हुए। नन्द बाबाकी गोसेवासे ही भगवान् श्रीकृष्ण उनके पुत्र बने।

गोसेवासे मनुष्यमे प्रजा-पालनके समस्त गुण निवास करते हैं। आचार्य व्याडिके अनुसार सद्धर्म, सद्बुद्धि, सरस्वती, मङ्गल, सौहार्द, सौजन्य, कीर्ति, लज्जा तथा शान्ति श्रीके लक्षण है और गौ श्रीमती है। जो गायकी सेवा नहीं करता वह श्रीविहीन हो जाता है। गौकी उपेक्षास ऐश्वर्यहीनता आती है तो अघ्न्या गौका वध करनेसे विनाश ही सम्भव है।

भारत आज भिखारी बन गया है मात्र इसीलिये कि यहाँ गोवध होने लगा। गौ हिन्दुओमे पूजित है, यही जानकर गौओको सेनाके आगे कर सम्राट् पृथ्वीराज चौहानको पराजित करके भी गोरी उनकी अमरता नहीं छीन सका। आज भी वे अमर हैं। यह भारतका ही कलक है कि परमपूज्या गौआका वध हो रहा है।

जहाँ स्वप्नमे भी गोदर्शनसे वास्तविक जीवनके कष्ट नष्ट हो जाते हैं, वहाँ गोवशकी हत्या राजनीतिका अभिशाप है। बाहरसे आये यवन यहाँ गोभक्षक इसीलिये बन गये ताकि हिन्दू निरन्तर अपनको अपमानित अनुभव करें। और

मुगलकालमे अग्रेज आये तो दोनोको अपमानित करनेके लिये गाय और सूअर दोनोका ही भक्षण करने लगे। गायकी चर्बीयुक्त कारतूस पाकर भारतीय भडक उठे। गाय ही हमारी स्वतन्त्रताकी जननी हैं। वही स्वावलम्बी भारतकी भी जननी बन सकती है। उसी गायकी रक्षाके लिये गुरु गोविन्दसिहने कहा कि—

यही देह आज्ञा तुर्क को खपाऊँ
गौ घातका दुख जगतसे हटाऊँ।
आस पूर्ण करो तुम हमारी
मिटे कष्ट गौअन छुटे खेद भारी॥

आज स्वतन्त्र कहलाकर भी भारत तुष्टीकरणमे गौ माताकी रक्षासे विरत है, यह महान् विडम्बना है। महान् लज्जाका विषय है।

[प्रे०—श्रीशिवकुमारजी गोयल]

गोग्राससे सर्वार्थसिद्धि

(वैद्य श्रीधनाधीशजी गोस्वामी आयुर्वेदाचार्य)

पृथ्वीके सप्त आधारभूत स्तम्भोमे गौ प्रमुख स्तम्भ है। गोसेवा ओर गोवशकी उन्नति भारतीय सस्कृतिके अभिन्न अङ्ग हैं। गोसेवाकी नाना विधाओमे गोग्रासका मुख्य स्थान है। गायके निमित्त श्रद्धा-भक्तिपूर्वक दिया गया खाद्यपदार्थ गोग्रास कहलाता है। गोग्रास ग्रहण करनेके लिये गौ मातासे इस प्रकार प्रार्थना की जाती है—

सौरभेय्य सर्वहिता पवित्रा पुण्यराशय ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रास गावस्त्रैलोक्यमातर ॥
सुरभी वैष्णवी माता नित्य विष्णुपदे स्थिता।
प्रतिगृह्णातु मे ग्रास सुरभी मे प्रसीदतु॥

गोमात्रकी अधिष्ठातृदेवता कामधेनु-स्वरूपा सुरभी गोवशकी जननी मानी गयी है। रूढार्थक कामधेनुका निवास गोलोकमे और यौगिक अर्थपरक कामधेनु शब्द गोमात्रका बोधक है। गोसेवासे श्रेय तथा प्रेय—ये दोनो सिद्ध होकर लोक-परलोक सुधरते हैं। गोरससे राजा, रक स्त्री, पुरुष स्वस्थ, रुग्ण तथा आबाल-वृद्ध सभीका पोषण होता है। गोमाता अपने गोबर और गोमूत्रसे अपवित्रको भी पवित्र करके पर्यावरणको भी शुद्ध बनाती है। पञ्चगव्यका सेवन करनेसे त्वचासे अस्थिपर्यन्त शारीरिक धातुओके रोग तथा विषाणुओका विनाश होकर नवीन जीवनी-शक्ति प्राप्त होती है।

रसायन तथा व्याधिनिवारणार्थ उपयोगमे आनेवाले दोषाविष्ट खनिज धातुओ शृगिक विष धतूरा कुचिला, सखिया भिलावा आदि विषैले पदार्थोंका शोधन गोबर तथा गोमूत्रसे होकर वे अमृततुल्य बनते हैं और कष्टसाध्य रोगोका उपशमन करनेमे सक्षम हो जाते हैं। तीर्थस्नान, दान, वेदाध्ययन, व्रतोपवास, सेवा आदिसे जो-जो पुण्य प्राप्त होते हैं, वे सब गोग्रासरूप सेवासे प्राप्त हो जाते हैं। गायके घृतादिसे सम्पन्न किये गये यज्ञ-यागादिकोसे ऊर्ध्वलोकस्थ देवादिकोकी तृप्ति होती है। दूध, दही, घी आदि गोरससे भूमण्डलके प्राणियोका भरण-पोषण होता है। गोरसो तथा कृषिकर्मके द्वारा अधोलोकके वैभवादिक बढानेसे गाय तीनो लोकोकी माता मानी गयी है, इसीलिये 'गावो विश्वस्य मातर ' कहा गया है। पञ्चमाताओमे गौको प्रधान माता स्वीकार किया गया है। गोग्रासकी परिसीमामे गोसेवाके उन सभी रूपोको समाहित किया जा सकता है, जिनसे गोमाता सतुष्ट हो। यथा—हरा-सूखा चारा-दाना खिलाना, जल पिलाना शरीरका खुजलाना, मक्खी-मच्छर आदिसे रक्षा करना, रुग्णावस्थामे औषधोपचारसे गौकी सेवा करना इत्यादि। गोचारण गोरक्षण, गोचरभूमिकी व्यवस्था करना आदि—ये सभी गोसेवाके ही रूप हैं। इस प्रकारकी गोसेवासे समस्त मनोरथोकी पूर्ति होती है। प्रतिदिन गोग्रास देनेवालेके आँगनमे अष्टसिद्धियाँ तथा नव निधियाँ लोटती रहती हैं।

गृहस्थके घरमे पाँच स्थान हिसाके माने गये हैं—चूल्हा जलाने चक्की पीसने झाड़ू देने धान कूटने तथा जलके स्थानमे प्रतिदिन अनेकश जीव गृहस्थके न चाहते हुए भी मरते हैं, अत शास्त्रोमें इन्हे 'पञ्चसूना' कहा गया

है। हमारे दूरदर्शी कृपालु ऋषियोने इन पापोके निवारणार्थ पञ्चमहायज्ञोका विधान किया है—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और मनुष्ययज्ञ (अतिथि-सत्कार)। इन महायज्ञोके नित्यप्रति करनेसे उपर्युक्त पञ्चसूनाजनित पापोका परिहार हो जाता है। इन पञ्चमहायज्ञोके सम्पादनमे गौकी प्रमुख भूमिका रहती है। गोरसके बिना एक भी यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता तथा मानवको सुसस्कृत बनानेवाले षोडश सस्कार पञ्चगव्य, पञ्चामृत तथा गोदानके बिना पूर्ण नहीं होते, अत गोपालन तथा गोसेवा मानवमात्रके लिये नितान्त आवश्यक है। रामराज्यमे सेवासे प्रसन्न हुई गौएँ अपने सेवकाको आवश्यकतानुसार दूध दिया करती थीं—

मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥

(मानस ७। २३। ५)

श्रीद्वारकाधीशजीकी राजधानी द्वारकामे घर-घर गोसेवाको लोग तन-मन-धनसे किया करते थे। भगवान् श्रीकृष्ण स्वय गौओकी सेवा किया करते थे। और हृष्ट-पुष्ट ब्यायी हुई गायोको सजा-सजाकर प्रतिदिन तेरह हजार चौरासी गाये दानमे दिया करते थे। (श्रीमद्भा० १०। ७०। ८-९)

भगवान् श्यामसुन्दर वनमे गोचारण करते समय हरी-हरी सुकोमल घासके कवल उन्हे दिया करते थे। गाये भी उनके हाथका ग्रास लेनेका लालायित रहती थीं। गाये बहुत समझदार होती हैं, वे सेवकका हाथ पहचानती हैं। सेवककी गध, स्पर्श तथा बोलीसे चित्रलिखित-सी हो जाती है तथा उसके हाथका परोसा चारा बडे चावसे खाती हुई बडे आनन्दका अनुभव करती है। भगवान् श्रीकृष्ण गोसेवासे जितने शीघ्र प्रसन्न होते हैं, उतन अन्य किसी सेवासे नही। यहाँतक कि अपनी सेवासे भी नही।

गौओके शरीरमे खाज आनेपर जबतक वे शान्तिका अनुभव न करे तबतक खुजलाना चाहिये।

हरी-हरी सुकोमल घासके ग्रास तृप्तिपर्यन्त देनेसे सेवकको समस्त सिद्धियाँ स्वत प्राप्त हो जाती हैं। गाकी प्रदक्षिणा करनेसे सभी पापाका विनाश हो जाता है तथा देवगण मनोवाञ्छित सिद्धि प्रदान करते हैं। गोमाताके प्रसन्न होनेपर हृदय पवित्र तथा निर्मल हो जाता है और उसमे भगवान् विराजमान हो जाते हैं।

गोग्रासकी महिमा अतुलनीय है। गोसेवा न करने तथा गोग्रासका पुण्य न लेनेसे अध पतन तथा नरककी प्राप्ति होती है। एक बार स्वर्गमे जाते हुए महाराज मिथिलेशके विमानको नरकके आगेसे ले जाया गया तो कृपालु नरेशने नारकीय पापी जनोका आर्तनाद सुन द्रवित हो अपना समस्त पुण्य उन्हे अर्पण कर दिया और उनको मुक्ति प्रदान करवायी। राजाने धर्मराजसे अपने नरकद्वार-दर्शनका हेतु पूछा—धर्मराजने शकाका समाधान करते हुए बताया—'आपने एक बार एक चरती हुई गायका निवारणकर उसे चरनेसे वञ्चित कर दिया था, अत यहाँ आना पडा। वैसे भगवान्का प्रत्येक विधान मङ्गलमय होता है। यदि आप यहाँ नहीं आते तो कोटि-कोटि नारकीय जीवोका उद्धार कैसे होता?'

इक्ष्वाकुवशके चक्रवर्ती सम्राट् महाराज दिलीपने नन्दिनी गौकी इक्कीस दिनतक छायाकी तरह वनमे गोचारणके द्वारा सेवा करके पुत्र-प्राप्तिका वरदान प्राप्त किया—

आस्वादवद्भि कवलैस्तृणाना
कण्डूयनैर्दंशनिवारणैश्च ।
अव्याहतै स्वैरगतै स तस्या
सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत्॥

(रघुवश २। ५)

भाव यह है कि एकच्छत्र महाराज दिलीप नन्दिनीको मीठी-मीठा कोमल घासके ग्रास देकर, उसके शरीरसे मच्छरो तथा डाँसोका निवारण करके शरीरको खुजलाकर प्यास लगनेपर मधुर शीतल जल पिलाकर, उसकी इच्छाके अनुकूल अनुगमन करते हुए तन-मनसे सेवा करते थे।

अत परम श्रद्धा तथा पूर्ण भक्तिभावसे गोग्रास, गोसेवा तथा गोदान देनसे वैतरणी, असिपत्रादि भीषण यातनागार—नरकोसे मुक्ति तथा समस्त सिद्धियाकी सहज प्राप्ति होती हे। ऐसी सर्वमङ्गला करुणामयी गोमाताको शतश वन्दन।

गोधनका अर्थशास्त्र

(श्रीराधेश्यामजी गोयनका)

किसी भी प्रकारका गोवंश—बूढ़ा, अपंग अनुत्पादक, लूला, लँगड़ा और अंधा देश ओर पालकपर भार-स्वरूप नहीं है। उसे अनुपयोगी कहना ठीक नहीं है। भारतीय पुराणोंमें स्थान-स्थानपर दर्शाया गया है—'लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमङ्गला।' (स्कन्द०, अव०, रेवा० ८३। १०८) अर्थात् गोबरमें परम पवित्र सर्वमङ्गलमयी श्रीलक्ष्मीजीका नित्य निवास है, जिसका अर्थ यही है कि गोबरमें सारी धन-सम्पदा समायी हुई है। इसी विशेषताके कारण गायको कामधेनुकी संज्ञा दी गयी है। भारतमें गोवंश और पशुओंकी निर्मम हत्याएँ प्रतिसूर्योदयके साथ बढ़ती ही जा रही हैं। सरकारद्वारा निर्धारित गरीबीकी रेखासे नीचे लोगोंकी संख्या भी बढ़ती ही जा रही है इससे स्पष्ट है कि यान्त्रिक खेती, रासायनिक खाद और कीटनाशक जहरीली औषधियोंके प्रयोगसे स्वास्थ्य और आर्थिक स्थितिमें कोई सुधार नहीं हो पाया बल्कि हानि ही हुई है और होती ही जा रही है। जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित हो जाता है कि गोवंशकी अवहेलना करके, आधुनिक तकनीकसे कोई लाभ कोई विकास नहीं हो पाया हानि ही हुई है। धरतीके लिये रासायनिक खाद उसका प्राकृतिक आहार नहीं है। इससे शुरूमें तो उत्पादन बढ़ता है, किंतु बादमें चाहे कितनी ही मात्रामें रासायनिक खाद डाले उत्पादन घटता ही जाता है धरतीकी उर्वरा-शक्ति कमजोर होती जाती है। कुछ समय पश्चात् धरती पूर्णतः बंजर हो जाती है। इसके अलावा सभी खाद्य-पदार्थोंमें जहरका समावेश, खेतीकी लागतमें वृद्धि स्वास्थ्यकी हानि, महँगाई-करोंमें वृद्धि और अन्ततः गरीबी—ये हैं रासायनिक खाद और जहरीली कीटनाशक औषधियोंके दुष्परिणाम। रासायनिक और जहरीली कीटनाशक औषधियोंके कारखानोंकी स्थापनामें अरबों रुपयोंकी लागत आती है, जिसका आर्थिक भार भी देशकी जनतापर ही पड़ता है।

यदि गोवंशकी अवहेलना न होती उनकी निर्मम हत्याएँ न की जातीं, उनके गोबर-गोमूत्रका समुचित उपयोग सही और आधुनिक ढंगसे किया जाता, उसके गुणोंके विषयमें शोध की जाती उनके उपयोगके लिये नयी तकनीक विकसित की जाती, तो आज कृषि-उत्पादनकी स्थिति ही बहुत भिन्न होती देशमें महँगाई नहीं बढ़ती, क्योंकि किसान जो साथ-साथ गोपालक भी हैं, उन्हें खेती करनेमें कोई लागत ही नहीं लगानी पड़ती उसका उत्पादन अपने परिश्रम और प्राकृतिक सूत्रोंसे स्वतः ही होता। खेतीमें लागत न आनेके कारण अनाज ओर अन्य उत्पादन महँगे नहीं होते। सरकारको किसी प्रकारकी कोई आर्थिक सहायता, खादपर अथवा अनाजपर नहीं देनी पड़ती, जनतापर करोंका बोझ नहीं पड़ता जिसके परिणामस्वरूप गरीबी और महँगाई दोनों ही नियन्त्रणमें रहते और विकासके साथ-साथ देशमें समृद्धि भी बढ़ती।

गोबरकी खाद धरतीका प्राकृतिक आहार है, इससे धरतीकी उर्वराशक्ति बनी रहती है, यदि गोबरकी कम्पोस्ट खाद तैयार करके उपयोगमें लाया जाय तो उर्वराशक्ति धीरे-धीरे बढ़ती ही रहता है, घटती नहीं, यही कारण है कि लाखों वर्षोंसे भारतकी धरतीकी उर्वराशक्ति अभी भी बनी हुई है जब कि विकसित देशोंमें सिर्फ पिछले ६०-७० वर्षोंमें रासायनिक खादके उपयोगसे लाखों हेक्टेयर भूमि बंजर और अनुत्पादक हो गयी है। वहाँकी सरकार, वहाँके लोग रासायनिक खाद और जहरीली कीटनाशक औषधियोंके प्रयोगके घातक परिणामोंसे अच्छी तरह परिचित हो गये हैं। वे रासायनिक खादका त्याग करके गोबरकी खाद तथा अन्य आर्गेनिक खादका उपयोग कर रहे हैं। हमारे देशमें अभी भी हम रासायनिक खादके प्रभावसे भ्रमित हो रहे हैं।

गोबरकी कम्पोस्ट खादके विषयमें पिछले १०-१२ वर्षोंसे इसके उपयोगके द्वारा बहुत अच्छी तरह प्रमाणित हो चुका है कि यह खाद किसी भी प्रकारसे रासायनिक खादसे कम प्रभावशाली नहीं है। इस खादमें रासायनिक खादकी तुलनामें नाईट्रोजन फास्फोरस और पोटैशियमकी

मात्रा कम नहीं है। नाईट्रोजन ० ५-१ ५ प्रतिशत, फास्फोरस ० ५-० ९ प्रतिशत और पोटैशियम १ २-१ ४ प्रतिशत रहता है। यह अनुपात गाबरकी कम्पोस्ट खादको कई बार प्रसिद्ध शोध-शालाओम शोध कराकर जाँच लिया गया है। इस कम्पोस्ट खादके बनानेकी विधिको नॅडेप खादके नामसे जाना जाता है। इस खादको बनानेकी विधि भी है, जो बहुत ही सरल है। प्रत्येक किसान और गोपालक अपने ही घरपर अथवा खेतमे, इसे बना सकता है, सिवाय परिश्रमके इसम कोई लागत नहीं आती है। इस खादको बनानेके लिये १० फुट लबा, ६ फुट चौडा और ३ फुट ऊँचा एक टकी अथवा हौद बनाना होता है, जिसमे १८० घनफुट गोबरकी कम्पोस्ट खाद तैयार होती है। एक टकी भरनेके लिये सिर्फ १०० किलोग्राम गोबर, लगभग १५०० किलोग्राम खेतके तथा अन्य वानस्पतिक व्यर्थ पदार्थ जैसे सूखे पत्ते, डठल टहनियाँ जड आदि एव खेतके हरे झाड-झखार, खेतीकी या नाले आदिकी सूखी, छनी हुई मिट्टी १७५० किलोग्राम तथा पानी लगभग १५००-२००० लीटर मौसमके अनुसार आवश्यकता होती है। इन पदार्थोंकी कोई भी लागत नहीं आती, यह सब किसानकी खेतीमे ही और पशुआसे उपलब्ध हो जाता है। इस मिश्रणको गोबर मिट्टीसे लेप कर टकीको बद कर दिया जाता है। ९०-१२० दिनतक सामग्री उसी टकीम पडी रहती है और कम्पोस्ट खाद तैयार हो जाती है। खादसे तैयार होनेपर उसे उपयुक्त छलनीसे छाना जाता है, उसका वजन लगभग तीन टन होता है। १०० किलोग्राम गोबरसे तीन टन गोबरकी कम्पोस्ट खाद तैयार होती है। आजके वर्तमान भावोके अनुसार एक बारी यूरिया-खाद ५० किलोकी कीमत लगभग ढाई सौ रुपयेसे भी अधिक है। एक गायके वार्षिक गोबरसे लगभग ८० टन खाद एक वर्षम तैयार हो सकती है, जिसकी कीमत आजके रासायनिक खादके भावोके अनुसार लगभग ४०,००० रुपयेकी होती है। एक गायसे मासिक आय लगभग ३३०० रुपयेकी हो सकती है, सिर्फ उसके गोबरसे।

ऊपरके विवरणसे बहुत स्पष्ट है कि किसी भी प्रकारका निकम्मा कहा जानेवाला गोवश सिर्फ अपने गोबरसे अपने पालकको जो कुछ वह खाता है, उससे अधिक आय दे देता है, यदि उसके गोबरका गोमूत्रका समुचित उपयोग किया जाय। किसी भी गोवशको निकम्मा, अनुपयोगी मानकर उसको मारना अथवा मारनेकी अनुमति दना, देशका आर्थिक व्यवस्थाक लिय कितना हानिकारक है, यह प्रमाणित हो जाता है।

गायके गोबरमे कितनी विलक्षण शक्ति है, इसका अनुसधान रसियामे करके अनुभव किया गया है। गायके गोबरका लेप मकानाके बाहर दीवाला और छतापर कर देनेसे बाहरसे रेडियेशनकी किरणे मकानमे प्रवेश नहीं कर सकतीं। यह अनुसधान किया जा चुका है ओर इसका प्रमाणित वर्णन विश्वकी विख्यात पत्रिका 'रीडर डाइजेस्ट'म बहुत वर्षों पहले एक लेखमे आया था। रसियामे ही गायके घीसे हवन करके उसके बारेमे अनुसधान किया गया था। जहाँ-जहाँ जितनी दूरीमे उस हवनके धुएँका प्रभाव फैला, उतने दायरेम किसी भी प्रकारके कीटाणु अथवा बैक्टीरिया नहीं रहे। वे क्षेत्र कीटाणुओ और बैक्टीरियाके प्रभावसे मुक्त हो गये।

गोमूत्र खेतीके लिये बहुत उपयोगी होता हे, उसमे धरतीको बिना किसी प्रकारकी हानि पहुँचाये बहुत अच्छी कीटाणुनाशक शक्ति होती है। गामूत्रका उपयोग मानवकी कई बीमारियोमे औषधके रूपमे और पेटम कृमि-नाशके लिये किया जाता है। गोमूत्रकी उपयोगिता, यह अनुसधानका एक अच्छा विषय हे।

गोबरसे गैस मुफ्तमे प्राप्त होती है, इसकी जानकारी जन-साधारणको हो चुकी है। गैसका उपयोग ईंधन और रोशनीके लिये किया जाता है। दुर्भाग्यकी बात है कि गोबर-गैसके सयन्त्र गाँव-गाँवमे लग जाने चाहिये थे, अबतक नहीं लग पाये, यदि ऐसा हुआ होता तो गाँवोमे ईंधन ओर रोशनी लोगोंको मुफ्त प्राप्त हुई होती। वनोपर ईंधनके लिये जो इतना भार पडा है वह समाप्त हो गया होता और वन अबतक वापस हरे-भरे हा गये होते। विद्युत्-प्रणालीपर जो इतना दबाव पड रहा है, वह कम होकर उतनी ही विद्युत्, किसी भी औद्योगिक विकासके काममे लायी गयी होती तो देशकी कितनी बडी आर्थिक समृद्धि होती। गाँवके लोगोको बिना धुएँका स्वच्छ ईंधन

मिलता, जिसके कारण उनकी आँखोमें बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं आँख कमजोर हो जाती है, उससे छुटकारा मिलता। गोबरकी कोई लागत नहीं आती, गैससे निकला हुआ गोबर खेतीके लिये ज्यादा प्रभावशाली होता है, क्योकि उसमेसे गैस निकल जानेसे धरतीकी उर्वराशक्ति बढानेमे वह ज्यादा समर्थ हो जाता है।

गोबरका समुचित उपयोग करनेसे जो आय होती है, उससे गाय-बैलके भरण-पोषणका खर्च निकालनेके पश्चात् भी बचत ही रहेगी, ऐसी स्थितिमे गायका दूध और बैलका परिश्रम उसके पालकोको मुफ्तमे प्राप्त होगा, जिससे उनके परिवारोमे समृद्धि आयेगी, उनके रहन-सहनका स्तर ऊँचा होगा उनके बालकोको पीनेके लिये दूध मिलेगा। क्योंकि जब दूधकी लागत नहीं आयेगी तभी भारतके गरीब परिवार दूधका उपयोग कर पायगे। उपर्युक्त विवरणसे बहुत स्पष्ट है कि गोवश किसी भी स्थितिमे अनुपयोगी है ही नहीं, मरनेके पश्चात् भी अपने पालकका बानसके रूपमे चमडा, हड्डी तथा अन्य जन-उपयोगी वस्तु अपने शरीरके द्वारा छोड जाता है, ऐसे पशुकी हत्या अज्ञानता है।

देशके उच्च और उच्चतम न्यायालयोके न्यायाधीशोने गोवशकी हत्या निषेध करनेके विषयमे जो निर्णय दिये हैं उनका प्रमुख आधार यही है कि अनुत्पादक, अनुपयोगी गोवश पालक और देशपर आर्थिक रूपमे भार हैं। इसलिये ऐसी स्थितिमे उनकी हत्या करके उनको उपयोगमे लाना आर्थिक दृष्टिकोणसे उचित है न्यायिक रूपसे मान्य है। ऐसे गलत निर्णय इसलिये हुए हैं कि आजतक गोवशके गोबरकी अर्थनीतिके बारेमे व्यापक और प्रमाणित रूपमे कोई विस्तृत जानकारीकी दलील नहीं दी गयी।

भारत सरकारकी हिंसक नीतिके द्वारा समृद्धि प्राप्त करना विदेशी मुद्रा कमानेकी बडी-बडी योजनाएँ बनाना शेखचिल्लीके कल्पनाओके समान ही है। ऐसी हिंसात्मक योजनाएँ अभीतक सभी पूरी तरह असफल ही नहीं हुई हैं बल्कि उनके घातक परिणाम हुए हैं और हो रहे हैं।

भोले-भाले मेढकोको मार कर उनकी टाँगोको विदेशी मुद्रा प्राप्त करनेके लिये निर्यात करनेका कार्यक्रम बनाया गया था जिसके घातक परिणाम सबके सामने हैं। जहाँ खेतीमे मेढक रहते थे वहाँका सारा पर्यावरण मेढकके न रहनेसे असतुलित हो गया। खतीके लिये जो घातक कीटाणु थे वे मेढकोके आहार थे। मेढकोके न रहनेसे खेतीमे बीज डालनेपर उन कीटाणुओने अकुर ही खा लिये, सारी खती चौपट हो गयी और मजबूर होकर मेढकोको वहाँपर सरक्षण देकर उनका पुन उत्पादन करनेकी व्यवस्था करनी पडी, कई वर्षोंतक उस क्षेत्रमे सामान्य खेती नहीं हो पायी। पर्यावरणका स्वच्छ और सतुलित रखनेके लिये प्रकृतिका अपना नियम होता है, उसमे छेड-छाड करनेसे उसके दुष्परिणाम होते ही हैं, इसी प्रकार कई प्रकारके सरकारके हिंसात्मक परीक्षण विदेशी मुद्रा कमानेके लोभमें बुरी तरह असफल हुए हैं, देशको और जनताको बहुत बडी आर्थिक हानि उठानी पडी है।

प्राचीन भारत, गोवशके कारण कितना समृद्ध था, इसका एक उदाहरण गौतम बुद्धके कालका दिया जा रहा है। उस समय जिसके पास अधिक-से-अधिक सख्यामे गोवश होता था, उसीको नगर-श्रेष्ठी (नगर-सेठ) की उपाधि दी जाती थी। ऐसे ही एक नगर-सेठने पाटलिपुत्र (पटना) में मगध देशके राजा बिबिसारको अपने घरमें भोजनके लिये आमन्त्रित किया। जितने बडे और प्रतिष्ठित व्यक्तिको घरमे भोजन आदिके लिये आमन्त्रित किया जाता है, उसकी प्रतिष्ठाके अनुकूल व्यवस्था भी की जाती है, यह परम्परा सदासे रही है, आज भी है। इसी परम्पराके अनुकूल उस नगर-सेठने अपने घरमे, रात्रिका अधकार दूर करनेके लिये, स्थान-स्थानपर ऐसे रत्न लगा दिये जो कि अँधेरेमे प्रकाशित होते हैं और सम्राट् बिबिसारको रत्नोकी रोशनीमे भोजन कराया। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समयका भारत कितना समृद्ध था। एक-एक श्रेष्ठीकी गौशालामे एक लाखसे भी अधिक गोवश रहता था, यह भी कल्पनाकी बात नहीं है, इतिहासद्वारा प्रमाणित है।

यूरोपके बाजारोमे गोबरके आर्गेनिक खादसे उपजाये गये साग फल, अनाज रासायनिक खादसे उपजाये गये साग फलो और अनाजोसे दुगुनेसे तिगुनी कीमतपर बिक रहे हैं, फिर भी इनकी माँग बढती ही जा रही है। वहाँके किसान तथा अन्य उत्पादक आर्गेनिक खादका

प्रयोग ही बढाते जा रहे है। भारतकी ही एक चाय-उत्पादक कपनीको गोबरकी खादसे चाय-उत्पादन करके देनेके लिये सामान्य कीमतसे ढाई गुनी कीमतपर आर्डर मिला है। अन्य खरीददार बहुत बडे आर्डर देनेको तैयार हैं, परतु गोबरके खादकी उपलब्धि आवश्यक मात्रामे न होनेके कारण यहाँके चाय-उत्पादक गोबरकी खादसे उपजायी गयी चाय अधिक मात्रामे उन्हे बेचनेमे असमर्थ है। गोबर-खादका महत्त्व, उसकी आवश्यकताका प्रत्यक्ष प्रमाण सामने है। इन सब बातोको देखते हुए, समझते हुए हम सभीको विशेषकर किसानाको अपनी मनोवृत्ति एव दृष्टिकोणको बदलना होगा तभी हम गोवशका पूरा लाभ उठा सकेगे और इसी लाभकी पृष्ठभूमिमे अनायास गोसेवाका महत्तम कार्य भी सम्पन्न हो जायगा।
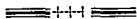
गौसे अनन्त लाभ

(स्वामी श्रीदयानन्दजी सरस्वती)

इन्द्रो विश्वस्य राजति। श नो अस्तु द्विपदे श चतुष्पदे॥
(यजु० ३६। ८)

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरने इस सृष्टिमे जो पदार्थ बनाये हैं, वे निष्प्रयोजन नहीं, किंतु एक-एक वस्तु अनेक-अनेक प्रयोजनोके लिये रची है। इसलिये उनसे वे ही प्रयोजन लेना न्याय है अन्यथा अन्याय। पक्षपात छोडकर देखिये, गाय आदि पशु ओर कृषि आदि कर्मोसे सब ससारको असख्य सुख होते हैं या नहीं?

जो एक गाय न्यून-से-न्यून दो सेर दूध देती हो और दूसरी बीस सेर, तो प्रत्येक गायक ग्यारह सेर दूध होनेमे कुछ भी शका नहीं। इस हिसाबसे एक मासमे सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम-से-कम छ महीने और दूसरी अधिक-से-अधिक अठारह महीनेतक दूध देती है, तो दोनोका मध्यभाग प्रत्येक गायका दूध देनेमे बारह महीने होते हैं। इस हिसाबसे बारह महीनोका दूध ९९ मन होता है। इतने दूधको औटाकर प्रतिसेरमे एक छटाँक चावल और डेढ छटाँक चीनी डालकर खीर बनाकर खाये, तो प्रत्येक पुरुषके लिये दो सेर दूधकी खीर पुष्कल होती है। क्योकि यह भी एक मध्य भागकी गिनती होती है। अर्थात् कोई भी दो सेर दूधकी खीरसे अधिक खाये और कोई न्यून, इस हिसाबसे एक प्रसूता गायके दूधसे एक हजार नौ सौ अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून-से-न्यून ८ और अधिक-से-अधिक १८ बार ब्याती है। इसका मध्यभाग १३ बार आया तो पचीस हजार सात सौ चालीस मनुष्य एक गायके जन्मभरके दूधमात्रसे एक बार तृप्त हो सकते हैं। इस गायकी एक पीढीमे छ बछिया और सात बछडे हुए, इनमेसे एककी मृत्यु रोगादिसे होना सम्भव है। तो भी बारह रहे। उन छ बछियोके दूधमात्रसे उक्त प्रकार एक लाख चौवन हजार चार सौ चालीस मनुष्याका पालन हो सकता है। अब रहे छ बैल, उनमे एक जोडी दोनो साखमे २०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती है इस प्रकार तीन जोडी ६०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती है और उनके कार्यका मध्य भाग आठ वर्ष है। इस हिसाबसे ४,८०० मन अन्न उत्पन्न करनेकी शक्ति एक जन्ममे तीनो जोडीकी है। इतने (४,८०० मन) अन्नसे प्रत्येक मनुष्यको तीन पाव अन्न भोजनमे मिले तो २,५६,००० मनुष्योका एक बारका भोजन होता है। दूध और अनको मिलाकर देखनेसे निश्चय है कि ४,१०,४४० मनुष्योका पालन एक बारके भोजनसे होता है। अब छ गायकी पीढी-पर-पीढियोका हिसाब लगाकर देखा जाय, तो असख्य मनुष्योका पालन हो सकता है। और इसके माससे अनुमान है कि केवल अस्सी मासाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो, तुच्छ लाभके लिये लाखो प्राणियाको मारकर असख्य मनुष्योकी हानि करना महापाप क्यो नहीं? (गो-करुणानिधि)
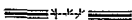
गोसंवर्धन एवं समृद्धि

(श्रीहरिशंकरजी भाभड़ा अध्यक्ष राजस्थान विधान सभा)

भारतम गायकी महत्ताका वर्णन वैदिक कालस चला आ रहा है। गाय भारतीय जीवनका अभिन्न अङ्ग है। इसलिये शास्त्राम गायकी मुक्तकण्ठसे महिमा गायी गयी है—

'मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा ।'

'गावो यज्ञस्य हि फल गोषु यज्ञा प्रतिष्ठिता ।'

'यद्गृहे दु खिता गाव स याति नरक नर ।'

'एतद् वै विश्वरूप सर्वरूप गोरूपम्॥'

'गावो विश्वस्य मातर ।'

—आदि वचनासे गायको जन्मभूमि और जननीके समान स्थान दिया गया है। पृथ्वीको भी गायके रूपम माना गया है। वेदोमे गायके प्रकरणपर विभिन्न प्रसगाम विभिन्न कथाएँ कही गयी हैं। ऋग्वेदमे पणियाद्वारा गायोकी चोरी करनेकी बात आयी है और उनको मुक्त करनेवालेकी स्तुति तथा इन्द्रके द्वारा गायाको राक्षसासे मुक्त करानेकी बार-बार प्रशसा की गयी है। इन वर्णनास यह प्रतिपादित होता है कि गाय हमारे जीवनका आधार है। हर पवित्र कार्य तथा सस्कारके पहले पञ्चगव्य जिसमे गोमूत्र, गोबर गायका दूध घी, दही शामिल होता है, लेना अनिवार्य होता है।

प्राचीन कालमे गाय ही सम्पत्तिका आधार थी। गायको ब्राह्मणके समकक्ष पूजनीय माना गया है। गरुडपुराणम मृत्युके बाद वेतरणी पार करनेका माध्यम गायको ही माना गया है। गायके शरीरमे तैंतीस कोटि दवताओका निवास है, अत वह पूजनीय है। जन्म देनेवाली स्नेह वात्सल्य एव ममतामयी माँ तो कुछ वर्षोतक ही अपनी सतानको दुग्धपान कराती है, परतु प्रकृतिकी साक्षात् सजीव-रूपधारिणी गो माता जीवनभर अपने दुग्धसे हमारे स्वास्थ्यकी रक्षा करती है।

वेद उपनिषद्, पुराण तथा सारे स्मृति-शास्त्रामे गो-रक्षा गो-सेवा एव गोदानको बार-बार निर्देशित किया गया है। आज भी वर्तमानमें अनक समस्याआ—जैसे कृषि उद्योग ऊर्जा पर्यावरण तथा स्वदेशी आदिकी दृष्टिसे भी गायकी उपयोगिता सिद्ध ही है। सदासे ही गायकी उपयोगिता बनी हुई है और सर्वदा उसकी प्रासगिकता भी स्वत सिद्ध है।

भारत एक कृषि-प्रधान देश है, इसलिये भी गायका हमारे देशकी आर्थिक स्थितिको सुदृढ करनम सदैव महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विदेशी शासनके दौरान भी गोवशके सहारे ही इस देशका गरीब कृषक जीवित रहा है। ऐसी स्थितिम भारत-जैसे कृषि-प्रधान देशमे गोमूत्र तथा गोबरकी खाद जहाँ खेतोको उपजाऊ करनेमे एव खाद्यान्नका उत्पादन बढान तथा जमीनकी उर्वराशक्तिको बरकरार रखनेम अत्यन्त उपयोगी है, वहीं दूसरी आर आज जिस विदेशी रासायनिक खाद एव कीटनाशकोका प्रचुर मात्रामें उपयोग किया जा रहा है, इनके उपयोगके परिणामस्वरूप एक कालावधितक तो उत्पादन बढता है, परतु धीरे-धीरे भूमिकी नैसर्गिक उर्वरा-शक्ति नष्ट ही नहीं होती, बल्कि रासायनिक खादसे उत्पादित खाद्यान्नो, फलो और सब्जियोमे कई प्रकारके विषकी मात्रा भी बढती जा रही है, जिससे उनके स्वाद, उपयोग एव सरक्षणमे गिरावटको आम आदमी अनुभव करने लगा है। इस प्रकारके उत्पादोका उपयोग करनेवालाके स्वास्थ्यम गिरावट आ रही है तथा तरह-तरहके रोग पैदा हो रहे हैं। वैज्ञानिक इस सम्बन्धमे बार-बार चेतावनियाँ दे रहे हैं कि रासायनिक खादाका उपयोग सीमित किया जाय। वे गायके गोबर तथा मूत्रकी खादकी उपयोगिताको अधिकृत रूपसे उजागर कर रहे हैं। अत हमे अपनी विदेशी मानसिकताको शीघ्र ही बदलना होगा।

गायके गोबरसे घरोको लीपने-पोतनेसे रोगाणु नष्ट होते है तथा वातावरण स्वच्छ एव स्वास्थ्यप्रद रहता है, आजके विज्ञानने इस तथ्यको स्वीकार कर लिया है। आयुर्वेद-चिकित्सा-शास्त्रमे गोमूत्रको रोगनाशक माना गया है तथा गोमूत्रका उपयोग अनेक आयुर्वेदिक औषधियो-जैसे सजीवनी-वटी आदिमें किया जाता है।

शाकाहारकी उपयोगिताको अब पश्चिमके लोग भी समझ गये हैं। आयुर्वेद-चिकित्सा-पद्धतिमे तो यह सिद्धान्त

पहलेसे ही प्रतिपादित है। ऐलोपैथिक चिकित्सा-विज्ञानने भी अब इसे स्वीकार कर लिया है कि मनुष्य शाकाहार तथा गायका दुग्ध सेवन करके अधिक दिनोतक सुखी एव स्वस्थ-जीवन बिता सकता है। इसलिये पाश्चात्त्य देशोके लोग मासाहारके बजाय शाकाहार अपनानेके लिये स्वत ही आगे आ रहे हैं, इससे गायके दूधकी महत्ता स्वत ही प्रतिपादित होती है।

आजके युगमे आम आदमी मानसिक रूपसे तनावग्रस्त है, लोग मानसिक श्रमकी तुलनामे शारीरिक श्रमसे बचनेकी कोशिश करते हैं, इसीका परिणाम है कि हृदयरोग भीषण रूपसे घर-घरमे फैला हुआ है, लेकिन ऐसे लोगोके लिये गायका दूध तथा घी बहुत उपयोगी है, क्योकि गायके दूधमे विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रामे होता है। इसमे चर्बीकी मात्रा कम होती है। गायका दूध माताके दूधके बाद पूर्णतया सुपाच्य और परिपूर्ण भोजन है। गायके दूधमे अन्य खनिज, विटामिन आदि भी प्रचुर मात्रामे होते हैं, जो भोजनके लिये जरूरी माने जाते हैं। कोई मनुष्य चाहे तो जीवनभर गायके दूधपर निर्भर रहकर अपने-आपको स्वस्थ रख सकता है। इसी प्रकार गायका दूध-दही आदि तथा उससे बने पदार्थ अन्य पशुओके दूध आदिकी तुलनामे अधिक स्वादिष्ट एव स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

आज बढती हुई जनसख्या एव औद्योगीकरणके प्रसारके परिणाम-स्वरूप दिन-प्रति-दिन ऊर्जाका सकट गहराता जा रहा है। लेकिन गायके गोबरसे खाद ही नहीं गैस-प्लाटमे ऊर्जाका उत्पादन भी सस्ता सुलभ तथा दैनिक जीवनके लिये उपयोगी है, गैस-प्लाटमे उपयोग किये गये गोबरकी उर्वरा-शक्ति बढ जाती है। लेकिन यह गोवशकी वृद्धिसे ही सम्भव है। गोबर-गैस-प्लाटका प्रसार होनेसे ही ईंधनके लिये वनोकी कटाईपर नियन्त्रण होने तथा पर्यावरण-सरक्षणकी सम्भावनाएँ हैं। देशमे बिजलीकी कमी है और बडे-बडे विद्युत्-उत्पादन-केन्द्रोकी स्थापनाके पश्चात् भी यह कमी प्रतिवर्ष बनी रहती है। अधिकाधिक गोबर-गैस-प्लाटकी स्थापनासे विद्युत्की कमीकी पूर्ति आसानी तथा सस्तेमे की जा सकती है।

क्या हम यह मान ले कि वेद-शास्त्राने बिना किसी कारणके, केवल भावनावश ही गायका गुणगान किया है अथवा हमारे जीवनमे उसकी किसी सीमातक उपयोगिता भी है? भारतीय सस्कृतिकी यह विशेषता रही है कि प्रकृतिके उन सभी तत्त्वोको देवत्व प्रदान किया गया है, उनकी पूजाका प्रावधान रखा गया है, जिनके आधारपर मनुष्य न केवल अपना शरीर धारण करता है अपितु उनके सहयोगसे जीवनकी रक्षा की जाती है। ये तत्त्व हैं—पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल, वायु और इससे उत्पन्न जीव-जगत्, वनस्पति वृक्ष, नदी, पहाड आदि-आदि, जिनके बिना हमारा जीवन ही सम्भव नहीं है। यह पूजनीय भाव ही प्राकृतिक एव पारिस्थितिक सतुलन रखनेका एक प्रमुख माध्यम है, जिससे सृष्टिके कार्य सुचारु रूपसे चलते रहे और प्राणिजगत्को प्रकृतिके कोपका भाजन नहीं होना पडे। लेकिन आज इस पूजनीय भावके अभाव एव भौतिकताके ऊहापोहमे असतुलित तरीके-से प्रकृतिका स्वार्थवश अति दोहन करनेका ही परिणाम है कि हमारे सामने पर्यावरणम गिरावटकी भीषण समस्या मुँह बाये खडी है। यदि मनुष्य भारतीय सस्कृतिकी मान्यताओके अनुसार सतुलित जीवन जीनेका अभ्यस्त हो जाय एव प्रकृतिसे अनावश्यक छेड-छाड नहीं करे ता उसके जीवनके अस्तित्वको कोई खतरा उत्पन्न नहीं हो सकता। प्राकृतिक सतुलन और पर्यावरणीय सरक्षणकी दृष्टिसे हमारे अस्तित्वको बनाये रखनेके लिये भी जीवनमे गायका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।

गोवशका आर्थिक दृष्टिसे मूल्याङ्कन करे तो निष्कर्ष निकलता है कि जन्मसे मृत्युपर्यन्त, गोवशका कोई भी अङ्ग अथवा कृत्य ऐसा नहीं है जो अनुपयोगी अथवा प्रकृतिके प्रतिकूल हो। इस प्रकार गोवशके शरीरका प्रत्येक अङ्ग आज भी हमारे जीवनके लिये अत्यन्त उपयोगी है। मृत गायके चर्म, सींग तथा खुराका भी उपयोग मानव-उपयागकी अनेक वस्तुआके लिये किया जाता है। चर्मसे निर्मित जूते एव पर्स आदिपर चर्म-उद्योग चलता है। गायकी हड्डियासे भी खाद बनती है जो रासायनिक खादसे अधिक स्थायी उर्वराशक्ति देती है तथा हड्डियाके चूरेका उपयोग अन्य उद्योगाम भी होता है। भारत अपनी आर्थिक स्थिति गोवशकी रक्षासे अधिक सुदृढ कर सकता है, इसमे

कोई सदेहकी गुजाइश नहीं है। खेतीके लिये भी ट्रैक्टरोके अधिक उपयोगसे जो सम्भावित हानियाँ हो रही हैं, उसपर गम्भीर चिन्तनकी आवश्यकता है।

यदि थोडी देरके लिये आध्यात्मिक एव धार्मिक पक्षको छोड भी दे और हम वैज्ञानिक तथा आर्थिक आधाराकी तुलनामे भी तोले तो गोवशका वध तर्कसम्मत तथा वैज्ञानिक नहीं है। यह भी तर्क दिया जाता है कि अनुपयोगी गोवशकी रक्षा करना आर्थिक दृष्टिसे उचित और लाभप्रद नहीं है। लेकिन ये सभी तर्क तथ्योके विपरीत हैं। वेदा, पुराणा, शास्त्रो एव सस्कृतिमे जब गायको माँका स्थान दिया गया है तो उसकी अनुपयोगिताका प्रश्न कोन-सी नैतिकता एव न्याय है। क्या वृद्ध माता-पिताको भी इसी दृष्टिसे देखा जायगा? गाडा, चित्रकूट तथा बनारसकी गोशालाओमे प्रत्यक्ष रूपसे परीक्षण करनेपर यह तथ्य पूरी तौरसे प्रमाणित हुआ है कि गोवश किसी भी दशामे अनुपयोगी नहीं होता। केवल दुधार गाय ही उपयोगी हैं, यह कथन भी सर्वथा सत्य नहीं है। गावशके केवल गोबर एव मूत्र तथा उनके खुरासे रौंदी हुई मिट्टीसे इतनी खाद पैदा की जा सकती है कि उसको व्यापारिक दृष्टिसे बेचकर जो लाभ कमाया जा सकता है उससे गोसरक्षण तथा अपना भरण-पोषण भलीभाँति किया जा सकता है। इस प्रकार यह तथाकथित अनुपयोगी गोवश भी जीवित रहकर आर्थिक लाभमे योगदान कर सकता ह, क्याकि अनुपयागा गोवश प्रत्यक्ष ही नहीं अप्रत्यक्ष-रूपमे लाभ भी पहुँचाता है। गोचरभूमिपर चरनेसे उस भूमिकी उत्पादन-क्षमता बढती है। प्रकृतिम कई प्रकारके ऐसे बीज होते हैं, जिन्‍ उगनके पूर्व उपचारित करनेकी आवश्यकता पडती है, इस प्रकारके बीज फल अथवा फलीके साथ गायके पेटमे जाकर स्वत ही उपचारित होकर गोबरके साथ उसी गोचर-भूमिपर पुन वितरित हो जाते हैं। यह बात वास्तविक परीक्षणोसे सिद्ध की जा चुकी है। ऐसी स्थितिम गोवशकी रक्षा करना न केवल धार्मिक दृष्टिसे अपितु आर्थिक दृष्टिसे भी सर्वथा उचित है। भगवान् कृष्णने भी अपने जीवनम इस बातको सिद्ध कर बताया कि भारतके लोगोका जीवन गोवशसे जुडा हुआ है। गोवश केवल हिन्दुओका ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव-समाजका पोषक है।

आज गायके महत्त्वको समझकर ही हम उसकी प्रतिष्ठाको पुन स्थापित कर यह समयकी माँग है। इसलिये सम्पूर्ण भारतमे गोवध-निषेध लागू कर उसका न केवल सरक्षण और सवर्धन करे, अपितु उससे होनेवाले आर्थिक लाभोसे देशके विकास तथा जन-जनके स्वास्थ्यका भी सरक्षण करे। अन्तमे ऐसी महिमामयी एव सर्वदा सर्वथा उपयोगी गोमाताको प्रणाम कर विराम लिया जाता है—

त्व माता सर्वदेवाना त्व च यज्ञस्य कारणम्।
त्व तीर्थं सर्वतीर्थाना नमस्तेऽस्तु सदानघे॥

'हे निष्पापे गौ! तुम सभी देवताओकी माता हो, यज्ञकी आधारभूता हो और तुम्हीं सभी तीर्थोकी तीर्थरूपा हो अत तुम्हे बार-बार नमस्कार है।'

(प्र०—श्रीजगदीश प्रसादजी शर्मा)

गो-गौरव

(कविसम्राट् प० श्रीअयोध्यासिहजी उपाध्याय हरिऔध)

भारत-अवनी अन्न बहुत-सा है उपजाती।
इसीलिये है कनक-प्रसविनी मानी जाती।
इसी अन्नसे तीस कोटि मानव पलते हैं।
दीन तम-भर सदन मध्य दीपक बलते हैं।
गोसुत-गात-विभूतिस अन्नराशि उद्भूत है।
भारतीय गौरव सकल गो-गौरव-सभूत है॥

गोमाताके अनन्त दिव्य गुण

(श्रीपरमानन्दजी मित्तल, राष्ट्रिय महामन्त्री भारतीय गोवंश-रक्षण-संवर्धन-परिषद्)

बाल्यकालमें मैंने महर्षि च्यवन और महाराज नहुषकी कथा तथा उनके बीच हुआ संवाद पढ़ा था, जो इस प्रकार है—

महर्षि च्यवन अभिमान, क्रोध, हर्ष और शोकका त्याग करके महान् व्रतका दृढतापूर्वक पालन करते हुए एक बार बारह वर्षतक जलके अंदर रहे। जल-जन्तुओंसे उनका बड़ा प्रेम हो गया था और वे उनके आस-पास बड़े सुखसे रहते थे। एक बार कुछ मल्लाहाने गङ्गाजी और यमुनाजीके जलमें जाल बिछाया। जब जाल खींचा गया, तब उसमेंसे जल-जन्तुओंसे घिरे हुए महर्षि च्यवन भी खिंच आये। जालमें महर्षिको देखकर मल्लाह डर गये और उनके चरणोंमें सिर रखकर प्रणाम करने लगे। जालके बाहर खींचनेसे तथा स्थलका स्पर्श होने और त्रास पहुँचनेसे बहुतसे मत्स्य कलपने और मरने लगे। इस प्रकार मत्स्योंका बुरा हाल देखकर महर्षिको बड़ी दया आयी और वे बारबार लंबी साँस लेने लगे। मल्लाहोंके पूछनेपर महर्षिने कहा—'देखो ये मत्स्य जीवित रहेंगे तो मैं भी जीवित रहूँगा। अन्यथा इनके साथ ही मर जाऊँगा मैं इन्हें त्याग नहीं सकता।' मुनिकी बात सुनकर मल्लाह डर गये और उन्होंने काँपते हुए जाकर सारा समाचार महाराज नहुषको सुनाया।

मुनिकी संकटमय स्थिति जानकर राजा नहुष अपने मन्त्री और पुरोहितको साथ लेकर तुरंत वहाँ गये। पवित्र भावसे हाथ जोड़कर उन्होंने मुनिको अपना परिचय दिया और उनकी विधिवत् पूजा करके कहा—'द्विजोत्तम! आज्ञा कीजिये, मैं आपका कौन-सा प्रिय कार्य करूँ?' महर्षि च्यवनने कहा—'राजन्! इन मल्लाहोंने आज बड़ा भारी परिश्रम किया है। अतः आप इनको मेरा और मछलियोंका मूल्य चुका दीजिये।' राजा नहुषने तुरंत ही मल्लाहोंको एक हजार स्वर्णमुद्रा देनेके लिये पुरोहितजीसे कहा। इसपर महर्षि च्यवन बोले कि 'एक हजार स्वर्णमुद्रा उचित मूल्य नहीं है। आप सोचकर इन्हें उचित मूल्य दें।'

इसपर राजाने एक हजार स्वर्णमुद्रासे बढ़ाकर एक लाख तथा एक लाखसे बढ़ाकर एक करोड़ स्वर्णमुद्राएँ, अपना आधा राज्य और अन्तमें समूचा राज्य देनेकी बात कह दी, परंतु च्यवन ऋषि राजी नहीं हुए। उन्होंने कहा "आपका आधा या समूचा राज्य मेरा उचित मूल्य है' ऐसा मैं नहीं समझता। आप ऋषियोंके साथ विचार कीजिये और फिर जो मेरे योग्य हो, वही मूल्य दीजिये।"

महर्षिका वचन सुनकर राजा नहुषको बड़ा खेद हुआ। वे अपने पुरोहित और मन्त्रीसे सलाह करने लगे। इतनेहीमें गायके पेटसे जन्मे हुए एक फलाहारी वनवासी मुनिने राजाके समीप आकर उनसे कहा कि 'महाराज! ये ऋषि जिस उपायसे संतुष्ट होंगे वह मुझे मालूम है।'

राजा नहुषने कहा—'ऋषिवर! आप महर्षि च्यवनका उचित मूल्य बताकर मेरे राज्य और कुलकी रक्षा कीजिये। मैं अगाध समुद्रमें डूबा जा रहा हूँ। आप नौका बनकर मुझे बचायें।'

नहुषकी बात सुनकर मुनिने उन लोगोंको प्रसन्न करते हुए कहा—'महाराज! ब्राह्मण सब वर्णोंमें उत्तम हैं। अतः इनका कोई मूल्य नहीं आँका जा सकता। ठीक इसी प्रकार गौओंका भी कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता। अतः इनकी कीमतमें आप एक गौ दे दीजिये।'

मुनिकी बात सुनकर राजाको बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने उत्तम व्रतका पालन करनेवाले महर्षि च्यवनके पास जाकर कहा—'महर्षे! मैंने एक गौ देकर आपको खरीद लिया है। अब आप उठनेकी कृपा कीजिये। मैंने आपका यही उचित मूल्य समझा है।'

च्यवन ऋषिने कहा—'राजेन्द्र! अब मैं उठता हूँ। आपने मुझे उचित मूल्य देकर खरीद लिया है। मैं इस संसारमें गायोंके समान दूसरा कोई धन नहीं समझता।'

वीरवर! गायोंके नाम और गुणोंका कीर्तन करना सुनना गायोंका दान देना और उनका दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है। ऐसा करनेसे पापोंका नाश और

परम कल्याणकी प्राप्ति होती है। गाय लक्ष्मीकी जड हैं, उनमे पापका लेशमात्र भी नहीं है। वे मनुष्याको अन्न और देवताआको उत्तम हविष्य देती हैं। स्वाहा और वषट्कार नित्य गायाम ही प्रतिष्ठित हैं। गाये ही यज्ञका सचालन करनेवाली और उसकी मुखरूपा हैं। गाय विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती हैं और दुहनेपर अमृत ही प्रदान करती हैं। वे अमृतकी आधार हैं। समस्त लोक उनको नमस्कार करता है। इस पृथ्वीपर गायें अपने तेज और शरीरम अग्निक समान हैं। वे महान् तेजोमयी और समस्त प्राणियाको सुख देनेवाली हैं। गौओका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतासे साँस लेता है वह स्थान चमक उठता है और वहाँका सारा पाप नष्ट हो जाता है। गाय स्वर्गकी सीढी हैं और स्वर्गमे भी उनका पूजन होता है। व समस्त कामनाओको पूर्ण करनेवाली दवियाँ हैं, उनसे बढकर और कोई भी नहीं है। राजन्! यह जा गायाका माहात्म्य कहा है यह तो केवल उनके गुणाक अशका दिग्दर्शनमात्र है। गौओके सम्पूर्ण गुणाका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।'

इस प्रकार एक गायका मूल्य एक कराड स्वर्णमुद्रा तथा समूचे राज्यसे भी अधिक है यह जानकर मुझे तब बहुत आश्चर्य हुआ था। गायके सम्बन्धमे मेरी जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढती गयी और ज्या-ज्यो मैंने गायको निकटसे देखना आरम्भ किया, मैंने गायमें अनेक दिव्य गुणोके दर्शन किये, जिनसे मेरा समाधान हो गया कि गाय वस्तुत अमूल्य है। उसकी तुलना किसीसे नहीं की जा सकती।

गौ जीवनके चरम लक्ष्यकी प्राप्ति करानवाली है— हजारो वर्ष साधना एव गवेषणा करके हमारे आर्ष मनीषियाने यह अनुभव किया कि सभी प्राणियोके जीवनका चरम लक्ष्य परम पिता परमात्माको पाना है। प्राणी जबसे परम पितासे अलग हुआ है और उनको भूला हुआ है तभीसे दु खी है। परम पिताको प्राप्त करानेमे गुरु गाय, गङ्गा गीता एव गायत्री—ये पाँच परम सहायक हैं। प्राचीन कालम ब्रह्मचारी जब गुरुकुलमे प्रवेश पाने आता था तो प्रवेशसे पहले गुरु उसको कुछ माह गाचारण करनेकी आज्ञा देते थे। गायोके सानिध्यमे रहकर ब्रह्मचारीकी चित्तवृत्ति शान्त हो जाती थी और उसे ब्रह्मविद्या ग्रहण करनेकी पात्रता प्राप्त हो जाती थी। जिनके अन्त करण किसी सतकी कृपासे निर्मल हुए हैं, वे जब सेवाभावसे गायक सम्पर्कमें आते हैं तो उनके अन्त करणमे परमात्माक स्मरणका स्फुरण स्वत होने लगता है। यह सम्पूर्ण सृष्टि परमात्माकी रचना है। जिसने परमात्माको पा लिया उसने सब कुछ पा लिया।

गौके राम-रोमस सात्त्विक विकिरण— गाय स्वभावसे सात्त्विक, सौम्य एव सताप करनेवाली होती है। वह सात्त्विक बल, आज एव स्फूर्तिसे परिपूर्ण होती है। गाय स्वभावसे धार एव गम्भीर है। उसका गुण तथा स्वभाव सात्त्विक है। उसक राम-रोमसे सात्त्विक विकिरण होता है। उसके प्रभाव-क्षेत्रम आनेसे मनुष्यकी चित्तवृत्ति शान्त होती है। सात्त्विक मन और बुद्धिसे ही परमात्माकी प्राप्ति की जा सकती है।

गौ यज्ञीय दैवी-सस्कृतिका मूर्तरूप है— लोक-कल्याणके लिये किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञरूप ही है। यज्ञाग्नि अर्पित सामग्रीकी सुगधको सैकडो गुना बढाकर सारे वातावरणमे फैला देती है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण-मुक्त होता है तथा वर्षा पुष्टिकारक हाती है। इस वर्षासे सिंचित खाद्यान्न एव वनस्पति भी पौष्टिक एव आरोग्यकारक होती है। कम ग्रहण करना तथा समाजको अधिक देना इस आचरणको सिखानेवाला हमारा भारतीय सनातन सस्कृतिको दैवी सस्कृति कहा गया है। गाय घास, भूसा, छिलका, चूनी, चोकर तथा खली आदि ऐसी सामान्य वस्तुएँ ग्रहण करती है जो मनुष्यके ग्रहण करनेके योग्य नहीं है और कम मूल्यवान् होता है, किंतु बदलेमे अमृत-जैसा दूध सहोदर-जैसे बैल, अत्यन्त उपयोगी और ओषधिरूप गोमय तथा गोमूत्र देती है।

गायका दूध सात्त्विक एव आरोग्यकारी है— गायके गुण और स्वभावक अनुरूप उसका दूध भी शरीरको स्फूर्ति तेज एव सात्त्विक बलसे परिपूर्ण करनेवाला, बुद्धिको कुशाग्र एव सात्त्विक बनानेवाला तथा हमारे जन-जीवनके आरोग्यका आधार है। परमात्मतत्त्वको प्राप्त करनेकी साधना सात्त्विक मन-बुद्धिसे ही हो सकती है। गायका

दूध, दही, मक्खन, घी तथा छाछ—ये सभी मन और बुद्धिको सात्त्विक बनानेवाले हैं। गायके दूधका कोई विकल्प नहीं है। यह एक दिव्य पदार्थ है।

गौ मन कामनाओको पूर्ण करनेवाली है—भगवान्ने गायको लोक-कल्याणके लिये ही बनाया है। वह सभीका हित चाहती है। भगवान् ऐसे प्राणीको परोपकारके लिये आशीष देनेका सामर्थ्य प्रदान करता है। गायमे भी वह सामर्थ्य है। कुछ वर्ष-पूर्व एक दिन एक सज्जन जो वेशभूषासे मुसलमान दीख रहे थे, 'श्रीगणपति-गगा-गोशाला, बृजघाट'में एक ट्रक भूसा लेकर आये। उन्होने अपनेको एक नवाब खानदानका मुसलमान बताया। उनसे पूछा गया कि 'वे भूसा किस उद्देश्यसे और किसकी प्रेरणासे गोशालामे लाये।' उनके कथनानुसार 'उनकी खानदानी जायदादका एक मुकदमा लबे अरसेसे चल रहा था। जायदादके सम्बन्धमे मुस्लिम कानून बहुत पेचीदा है और उस मुकदमेका उनको अपनी जिदगीमे फैसला होनेकी कोई उम्मीद नहीं थी। बहुत ही परेशान थे। उन्हाने अपने एक हिन्दू मित्रसे अपनी इस परेशानीके हल होनेका उपाय पूछा।' उनके मित्रने उन्हे सलाह दी कि 'वे गोसेवा करे, उसका आशीष ले तो उनका काम बन सकता है।' उन्होने पूछा कि 'सेवा किस तरह करे' तो उनके मित्रने बताया कि 'गायोके लिये भूसा या हरा चारा दे।' उन्होने कहा कि 'यदि उनका मुकदमा उनके हकमे हो जाय तो वे गोशाला जाकर गायोको एक ट्रक भूसा दगे। उनका कहना था कि जिस दिनसे उन्हाने यह इरादा किया, मुकदमा उनके हकमे जाने लगा और उनके हकमे फैसला हो गया। इसलिय अपना इरादा पूरा करनेके वास्ते वे यह भूसा लेकर आये हैं।'

इस प्रकारकी अन्य भी अनेक घटनाएँ घटी हैं। इस घटनासे केवल यह ही पता नहीं चलता कि गोसेवाका इरादा करनेमात्रसे मनुष्यकी मन कामना पूर्ण होती है, बल्कि यह भी पता चलता है कि गाय आशीष देनेमे अथवा मन कामना पूर्ण करनेमे हिन्दू, मुस्लिम अथवा ईसाईम कोई भेद नहीं करती। लौकिक कामनाओकी पूर्ति तो साधारण बात है। सच्ची गोसेवासे तो ब्रह्मज्ञान तथा भगवत्प्राप्ति भी सहज हो जाती है।

गौ प्रेम और त्यागकी मूर्ति—गाय जिस परिवारमे रहती है, उस परिवारसे अत्यन्त प्रेम करती है। परिवारके प्रत्येक सुख-दु खका अनुभव करती है। मेरे एक पडोसी रेलवेमे एक बडे पदपर कार्यरत थे। काफी बडा आवास मिला हुआ था। गाय रखे हुए थे। बडे प्रेम और श्रद्धाभावसे उसकी सेवा करते थ। उनका युवा पुत्र बीमार पड गया। उसके स्वास्थ्यमे कोई सुधार नहीं हो रहा था, अत उसे अस्पतालमे भर्ती कराना पडा। जबसे वह लडका बीमार पडा था, गाय सुस्त रहती थी। जिस दिन उसे अस्पताल ले जाया गया गायने ठीकसे चारा खाना छोड दिया। कई दिन बाद जब वह अस्पतालसे स्वस्थ होकर वापस घर आया तो गायने उसक कधेपर अपना मुँह रखकर उसे प्यार किया और उसके पश्चात् ही फिर ठीकसे चारा खाना आरम्भ किया।

मनकी बात या तो भगवान् जानते है या गाय जानती है—एक सतने अपने प्रवचनमे शास्त्रासे उद्धरण देकर बताया कि मनकी बात दो ही जानते हैं, भगवान् और गाय। मुझे मेरे एक परिचित महानुभावकी एक आपबीती घटनाकी याद आ रही है। वे अपने माता-पिताके साथ एक गाँवमे रहते थे। वे तथा उनके भाई नौकरीके लिये बाहर चले गये। माता-पिता वृद्ध हो गये थे। गायका पालन उनके लिये कठिन हो गया था। एक दिन उन्होने अपनी गायको नित्यकी भाँति चारा खिलाकर और पानी पिलाकर हाथ जोडकर मन-ही-मन कहा—'अब हम वृद्ध हो गये हैं, तुम्हारी सेवा करने योग्य नहीं रहे, अत अब तुम कहीं चली जाओ।' और गायको खोल दिया। गाय सायकालतक घूमघाम कर घर तो आ गयी, किंतु बडे सकोचके साथ। अगले दिन वृद्ध दम्पतिने पुन वही किया। अबकी बार गाय घर वापस नहीं आयी।

गौको सकट अथवा अनिष्टका पूर्वाभास रहता है—सन् १९६६ की घटना है, उन दिना हमारे घरम दो गाय रहती थीं। अगस्त १९६६ ई० के आरम्भसे ही दोनाकी आँखासे अश्रुधारा बहती थी। वे चारा बहुत ही कम ग्रहण करने लगी थीं। पानी भी कम ही पीती थीं। मुझे लगा

शायद वे बीमार हैं। पशु-चिकित्सकको दिखाया। देखकर वे बोले कि कोई बीमारी नहीं है। हमलोगोको समझमे ही नहीं आ रहा था कि क्या बात है, किंतु गौ माता तो आगन्तुक घटनाकी विभीषिकासे शोकग्रस्त थी। मेरा भाई देश-सेवाके कार्यमे दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमे उसका देहावसान हो गया। गौ माताको इस घटनाका पहले ही आभास हो गया था, इसीलिये वे दु खी रहती थीं और उनकी आँखासे आँसू झरते रहते थे। हम सभी इस घटनाके सम्बन्धमे पहले कुछ भी नहीं जान सके, किंतु गौ माताको भूत-भविष्यकी सभी बाताकी जानकारी रहती है।

गाय रक्षा करनेवालेकी रक्षा करती है—प्रेम, दया, करुणा सहनशीलता-जैसे दिव्य गुणोकी अधिष्ठात्री गौ माता ठीक माँकी तरह है। वह स्वभावसे अति कोमल है। उसकी रक्षा करनेका दायित्व शासन एव समाजका है। जो व्यक्ति उसकी रक्षा करता है, उसके उपकारको वह कभी भूलती नहीं। जब कभी रक्षा करनेवालेके प्राण सकटमे होते हैं, वह अपने सूक्ष्म और दिव्य शरीरसे उसके पास उपस्थित होकर उसकी रक्षा करती है। राजस्थानमे एक व्यक्ति कुआँ खोदनेका कार्य करता था। कुआँ खोदकर जलके स्रोतसे जल निकालकर देनेका काम वह ठेकेपर करता था। एक बार उसे कुआँ खोदनेका एक ठेका मिला। खुदाईका सामान लेकर वह कुआँ खादने जा रहा था। मार्गमे उसने देखा कि एक गाय भूखी, प्यासी और बेहाल पडी हुई है। उसको दया आयी, वह वहाँ रुक गया और खुदाईका सामान गायके पास रखकर उसने पासके कुएँसे पानी लाकर उस गायको पिलाया। उसके बाद कुछ दूर जाकर वह गायके लिये चारा लाया और उसको खिलाया। गायकी दशामे सुधार हुआ और वह खडी हो गयी तथा वहाँसे चली गयी।

कुआँ खोदनेवाला नियत स्थानपर पहुँचकर कुआँ खोदने लगा। २ दिनके बाद जब वह कुआँ खोद रहा था और कुएँके लगभग मध्यमे उतरा हुआ था कि बहुत जोरका अधड आया और कुएँके आस-पास रखी सारी मिट्टी कुएँमे गिर गयी। कुआँ ऊपरसे पट गया किंतु उसके द्वारा की गयी गोमाताकी सेवाका ऐसा चमत्कार हुआ कि कुआँ मिट्टीसे पट जानेपर भी वह व्यक्ति जीवित बचा रहा। बादम लोगाद्वारा उसे निकाल लिया गया।

इसी प्रकारकी अन्य अनेक सत्य घटनाएँ सुनने और पढनेमे आती हैं, जिनसे गायके दिव्य गुणोका पता चलता है। आधुनिक विज्ञानके लिये गायकी इस दिव्य शक्ति एव गुणका रहस्य बना हुआ है।

गाय वैतरणी पार करानेवाली है—मेरी माताजी गत वर्ष बहुत बीमार हुईं। वे अत्यन्त कष्टम थीं। रात्रिमे वे कह रही थीं, अब मेरे जानेका समय आ गया है। मेरे मुँहमे गङ्गाजल डाल दो, उस समय मुझे ध्यान आया कि उनसे गोदानका सकल्प करा लिया जाय, क्योंकि उनकी इच्छा थी कि वे गोदान करे। मैंने उनसे गोदानका सकल्प कराया और उनके हाथोसे गौका दान करवाया। मैंने देखा उसके पश्चात् धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा और वे स्वस्थ हो गयीं। मृत्युके अनन्तर गोदानके प्रतिफलमे गाय किस प्रकार उस व्यक्तिको वैतरणी पार करा देती है यह लोकम विश्रुत ही है। शास्त्रोमे इसका विशेष माहात्म्य निरूपित है।

गायका गोबर मल नहीं मलशोधक है—जगत्के प्राणियामे गाय ही एक ऐसा प्राणी है, जिसका उच्छिष्ट मल नहीं, अपितु मलशोधक है। जिन खेतोमे गायके गोबरकी खादका प्रयोग होता है, उनमे उगी फसलोपर विनाशकारी कीटोका आक्रमण नहीं होता। अत वहाँ कीटनाशकोके छिडकावकी आवश्यकता नहीं। यज्ञकी वेदीको पवित्र करनेके लिये तथा आवास-गृहोको सभी प्रकारके प्रदूषणोसे मुक्त करनेके लिये हजारो वर्षोसे हमारे देशमे गायके गोबरसे उन्हे लीपा जाता हैं। गायके गोबरका लेप केवल प्रदूषणसे ही नहीं अपितु आणविक विकिरणसे भी रक्षा करता है। इसकी खाद श्रेष्ठतम उर्वरक है। प्रदूषणरहित ईंधनके रूपमे भी इसका प्रयोग किया जाता है। गोबर-गैस सयन्त्रके माध्यमसे प्रदूषणरहित खाना पकानेकी गैस प्राप्त होती है तथा उस गैससे जेनेरेटर सैट चलाकर विद्युत् भी उत्पन्न होती है। ईंधनके रूपमे जलनेके पश्चात् जो राख बचती है वह भी एक श्रेष्ठ मलशोधक है। मलकी दुर्गन्ध दूर करनेके लिये शौचालयों तथा कूडेके ढेरोपर उसका

छिडकाव किया जाता है। बर्तनोकी सफाईके लिये वह प्रदूषणरहित क्लीनिग पाउडर है। किसान भाई राखका प्रयोग खेतोमे खाद और कीटनाशकके रूपमें करते हैं।

गोमूत्र एक अद्भुत औषध है—आयुर्वेद अनेक रोगोमे गोमूत्रको औषधके रूपमे प्रयोग करनेका विधान करता है। जिगर, पीलिया, रक्तचाप, मधुमेहमे यह विशेष उपयोगी है। कुछ लोग गोमूत्र-मिश्रित गोलियाँ बनाकर अनेक रोगोमे उसका सेवन करते हैं।

गौ माताके अनन्त दिव्य गुणोमेसे कुछ गुणोकी चर्चा ऊपर की गयी है। मैं यहाँ यह बताना उपयुक्त समझता हूँ कि उपर्युक्त गुणाका दर्शन मैंने शुद्ध भारतीय प्रजातिकी गायोमे किया है। विदेशी प्रजाति—जैसे आस्ट्रियन, जर्सी, फ्रिजियन अथवा इन नस्लाके साथ वर्णसकर हुई भारतीय प्रजातिकी गायाम ये गुण उस मात्रामे नहीं पाये जाते।

═══+++═══
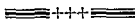
आर्थिक समृद्धिका प्राण गोधन

(गोलोकवासी श्रीविश्वम्भरप्रसादजी शर्मा)

'गावो विश्वस्य मातर '—गायको विश्वकी माता कहकर सम्मानित किया गया है। गोवश न केवल धार्मिक दृष्टिसे भारतमे पूजनीय है, अपितु आर्थिक दृष्टिसे भी वह हमारी आर्थिक समृद्धिका मुख्य स्रोत है। दशकी लगभग ८० प्रतिशत जनता कृषिजीवी है और कृषि पूर्णतया गोवशपर अवलम्बित है। पाश्चात्त्य विचारधाराके कारण भ्रमित लोग यह समझते हैं कि भारतमे जो करीब १९ करोड गोवश है वह निकम्मा और देशके ऊपर भाररूप है। इस तथ्यसे इनकार नहीं किया जा सकता कि इन पशुओकी दूध देनेकी और भार ढोनेकी क्षमता विश्वमे सबसे कम है। शताब्दियोके उपेक्षापूर्ण व्यवहारके कारण भारतीय गोवश इस स्थितिको पहुँचा है। लेकिन वैज्ञानिक अनुसधानोंसे पता चलता है कि भारतीय गोवशमे उत्पादनकी क्षमता है और समुचित सेवा-शुश्रूषासे इसे बढाया जा सकता है। वर्तमान हीन अवस्थामें भी गोवशका हमारी आर्थिक समृद्धिमे उल्लेखनीय योगदान है। भारत सरकारने कुछ वर्षो-पूर्व अधिक क्षमताशील गोवशके पशुओकी रक्षाके लिय जो विशेष समिति गठित की थी, उसकी रिपोर्टमें इस प्रकारका उल्लेख है—

'प्राचीन कालसे गोवश हमारे देशकी अर्थव्यवस्थाम विशेष योगदान देता आ रहा है। उनसे जमीन जोत कर तैयार करनेमे, कुओसे पानी खींचनेमे, ग्रामीण क्षेत्रकी परिवहन-सम्बन्धी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेमे और अन्य प्रयोजनाके लिये चालन-शक्ति (मोटिव पावर) मिलती रही है, उन्हाने मनुष्योको पोषण—आहारके लिये दूध एव दूधसे तैयार अन्य सामग्री तथा जमीनोके लिये खाद प्रदान की है। अत हमारे देशकी अर्थव्यवस्थामे गोवशका सबसे अधिक महत्त्व रहा हे।'

भारतके सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री और महात्मा गाधीजी-के अनन्य भक्त श्रीसतीशचन्द्रदास गुप्तने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतम गाय' मे अपने पुष्ट तर्कोंद्वारा बडे-बडे विद्वानोके इस मतको निर्मूल कर दिया कि 'भारतका गोवश पृथ्वीपर एक बोझ है तथा भूमि-उपजमे मनुष्योके भोजनमे हिस्सा बँटाता है जो मनुष्योके लिये हानिकारक है।'

उक्त पुस्तकमें पूर्व जर्मनीम बाल्टिक समुद्रके निकट एक रेतीली बजरभूमिको अनुपयोगी गोवशके सहयोगसे ऐसा चमत्कार करके दिखाया गया कि वह भूमि भी पूर्ण उपजाऊ बन गयी तथा उसपर रहनेवाले बीमार अपग पशु भी स्वस्थ और उत्पादक बन गये। उस जमीनमे पहले हरा चारा पैदा किया गया, जिसे खाकर पशु स्वस्थ हुए और कृषिका उत्पादन बढा तथा पशुओकी नसलका भी सुधार हुआ।

स्पष्ट है कि गोवशकी रक्षा करने और उनकी हत्यापर प्रतिबन्ध लगानेका प्रश्न धार्मिक और सास्कृतिक होनेकी अपेक्षा आर्थिक महत्त्व अधिक रखता है।

गोहत्या-बदीके लिये जब कभी माँग की जाती है तब यह कहा जाता है कि देशमे अनुपयोगी गायोकी बहुत बडी सख्या है और देश उनका भार उठानेमे असमर्थ है। गाँधीजीके सामने भी यह प्रश्न था। परतु उन्होने स्पष्ट-रूपमे इन पशुओकी रक्षाका दायित्व सरकारका माना। जो गाय-बैल जीवनभर हमारी सेवा करते हैं और देशको अपने श्रम तथा तपश्चर्यासे समृद्ध बनाते हैं, उन्हे अनुपयोगी हो जानेपर कसाइयोके हाथ बेच देना कितना बडा अन्याय है।

गोमूत्र और गोबरके वैज्ञानिक गुण भी उल्लेखनीय हैं। इनसे अनेक रोगोका शमन होता है। Beast and men in India नामक पुस्तकमे लिखा है—बहुत-से देशोके देहाती औषधालय गोबरका पुलटिसके रूपमे महत्त्व जानते हैं, किंतु भारतमे गौकी पवित्रताके कारण गोबरका प्रयोग शुद्धिके लिये भी बताया जाता है। इसके प्रयोगमें प्रतिष्ठा भी है एव इसमे फोडे आदिके ऊपर बाँधनेके पुलटिसके रूपमे आकर्षण है।

गौसे चिकित्सा

आर्य-चिकित्सा-विभागमे गोबरका महत्त्वपूर्ण योग है। गायका गोबर चर्मके ऐसे हिस्सेपर, जिसमे सूजन आ गयी हो या बदरंग हो गया हो लगाया जाता है। यह खिलाया भी जाता है। गोमूत्रके प्रयोगके लाभपर देश और विदेशमे काफी शोध हुआ है। मानवके अनेक रोगोका गोमूत्रद्वारा शमन होता है। गोमूत्रमे जीवाणुओका नाश करनेकी अद्भुत शक्ति है। अमेरिकाके डॉक्टरोकी वैज्ञानिक शोधके अनुसार हृदयकी गति बद होनेवाले रोगोंमे गोमूत्रका प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है। लेकिन हमारे ऋषि-मुनि तो सब प्रकारके रोगोका शमन करनेके लिये पञ्चगव्य (जिसमे दूध, दही, गोमूत्र, गोबर और घृत होता है) का उपयोग बताते हैं।

हमारे देशकी गरीबीको दूर करने और लाखो बेरोजगारोको काम दिलानेकी दृष्टिसे भी गोपालनका भारी महत्त्व है। देशमें यदि गोवशकी हत्या पूर्णतया बद हो जाय तथा गोसवर्धनका कार्यक्रम विधिवत् चलाया जाय तो नि सदेह लाखो लोगोको काम मिल सकेगा और गोपालनकी रुचि बढेगी। दुग्ध-व्यवसायकी यह विशेषता है कि इससे छोटे किसानोको जल्दी आय होने लगती है। गायका दूध हाथो-हाथ बिक जाता है। गोदुग्ध सर्वश्रेष्ठ पौष्टिक आहार है। गोदुग्धमे सबसे अधिक विटामिन होते हैं। गोदुग्धके उपयोगसे मनुष्यका शरीर और मस्तिष्क दोनो बलवान् बनते हैं। ससारके प्राय सभी वैज्ञानिकोने गोदुग्धको गुणकारी माना है और उसके उपयोगपर बल दिया है।

महर्षि स्वामी दयानन्दजीने गोवशके आर्थिक महत्त्वको अपनी 'गोकरुणा-निधि' पुस्तकमे प्रदर्शित करते हुए लिखा है कि 'एक गोवशके दुग्ध तथा अन्नसे असख्य मनुष्योका पालन हो सकता है और इसके माससे अनुमान है कि केवल ८० मासाहारी मनुष्य एक बारमे तृप्त हो सकते है।' उन्होने दु खके साथ लिखा—'देखो, तुच्छ लाभके लिये लाखो प्राणियोको मार असख्य मनुष्योकी हानि करना महापाप क्यो नहीं?' गोहत्याको राष्ट्रिय अभिशाप मानते हुए उन्होने लिखा कि 'गौ आदि पशुओंके नाशसे राजा और प्रजा दोनोका विनाश हो जाता है।'

स्वतन्त्र भारतमे गोहत्या क्यो?

गोवशके राष्ट्रिय और आर्थिक महत्त्वको देखते हुए मुसलमान बादशाहोने अपने शासनकालमे सैकडों वर्षतक कानूनसे गोहत्या बद रखी। खेद है कि स्वतन्त्र भारतमें अभीतक गोहत्या जारी है। यद्यपि सविधानमे गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगाना राज्यका कर्तव्य निर्देशित किया गया है, परतु इस निर्देशका देशमे सर्वत्र पालन नहीं हुआ।

कानूनद्वारा गोहत्या बद हो जानेसे भी गोरक्षाका उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। जो गाय और बैल बूढ़े तथा अनुपयोगी हैं, उनके भरण-पोषणका उत्तरदायित्व जनताको भी उठाना होगा। उनके लिये जगह-जगह गोसदन स्थापित करने होंगे। गोशालाओको इस दिशामे विशेष रूपसे सक्रिय बनाना होगा। गोरक्षणके साथ गोसवर्धनपर भी योजनाबद्ध रूपसे अमल करना होगा ताकि देशमे दुग्धका उत्पादन बढे और खेतीके लिये उत्तम बैल तथा दुधारू गौएँ उपलब्ध हो सके। जनता और सरकार दोनोके सयुक्त प्रयासके बिना राष्ट्रकी इस महान् समस्याको नहीं सुलझाया जा सकता है।

एक बडे दुर्भाग्यकी बात यह है कि अनेक राज्योंमें

गोहत्या-बदी कानून होनेपर भी उनका पालन नहीं हो रहा है। जिन राज्यामे गोवध-बदी कानून है, वहाँके पशु दूसरे राज्योम ले जाये जाकर कत्ल कर दिये जाते हैं। अनुमान है कि देशमे प्रतिदिन ४० हजार गोवश कट जाता है।

केरल और बगाल सरकारोकी ज़िद

भारतके प्राय सभी प्रमुख राज्यामे गोहत्या-बदी कानून हैं। केरल और प० बगाल अपनी जिदपर अडे हैं। उन्होने न तो भारत सरकारका आग्रह माना न विनोबाजीके आमरण अनशनकी परवाह की। प० बगाल तो गाहत्याका सबसे बडा केन्द्र है। हरियानाकी दुधार गौएँ, बछडे और बछडियाँ लाखोकी सख्याम टेगरा कसाईखानेमे कटते रहे हैं।

गोहत्या-वदीके प्रश्नको शासक-दलने राजनीतिका रग दे दिया है। अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थके लिये शासनारूढ दल भारतके व्यापक हितकी अवहेलना कर रहा है। देशके मतदाता भोले हैं, राजनीतिज्ञाके कुचक्रम फँस जाते हैं। जबतक जनता गोहत्याके समर्थकाको मत देना बद नहीं करेगी, तबतक गोहत्या बद न होगी। अत चुनावके समय गोभक्त जनताको सगठित होकर गोहत्याके समर्थकोके खिलाफ मतदान करना चाहिये।

सरकारकी दुर्नीतिके कारण आज गायका हमारे जीवनमे कोई लगाव नहीं रह गया है। सरकारने गोचर-भूमियाँ तुडवा दीं, पशु-खाद्यका निर्यात जारी कर दिया है, गोशालाओके ऊपर तरह-तरहके टैक्स लगा दिये हैं। सरकारी डेयरियोमे गायका दूध नहीं लिया जाता, भैसका लिया जाता है। इस कारण देशमे गोपालन अनार्थिक बनता जा रहा है। सरकारने अब विदेशी साँडोसे देशी गायोका प्रजनन कराना शुरू कर दिया है। पहले ग्रामामे बलिष्ठ साँड (विजार) रहते थे। उनसे गाये फलती थीं। आज गायोको कृत्रिम रेतन-केन्द्रामे ले जाना पडता है। जहाँ प्राय जर्सी आदि विदेशी साँडोके वीर्यकी पिचकारी देकर गायोको गाभिन किया जाता है। विदेशी नस्लकी गाये भले ही थोडा दूध अधिक द, परतु न तो वह दूध भारतकी गायाके दूधके समान उपयोगी एव पौष्टिक होता है और न उसके बछडे खेतीके काम आते हैं। लेकिन सरकार देशम दूधका उत्पादन बढानेके लिये क्रास ब्रीडिग (सकर प्रजनन) पर सारी शक्ति लगा रही है। इस कारण देशमे खेतीके लिये बैलकी कमी होती जा रही है। उनकी कीमत बढ गयी है और इन गायोका सारा दूध शहरोम सरकारी डेयरियोद्वारा ले जाया जाता है। अत क्रास ब्रीडिग हानिकारक है और इसके विरुद्ध जनमत जाग्रत् होना चाहिये। हमे अपनी देशी गायोकी ही नस्लको सुधारना चाहिये। उनसे हमे उत्तम दूध भी मिलता है और उनके बछडे भी बढिया बैल होते हैं।
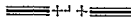
गोग्रास-दानका अनन्त फल

योऽग्र भक्त किंचिदप्राश्य दद्याद् गोभ्यो नित्य गोव्रती सत्यवादी।
शान्तोऽलुब्धो गोसहस्रस्य पुण्य सवत्सरेणाप्नुयात् सत्यशील ॥
यदेकभक्तमश्नीयाद् दद्यादेक गवा च यत्। दशवर्षाण्यनन्तानि गोव्रती गोऽनुकम्पक ॥

(महाभा० अनुशा० ७३। ३०-३१)

जो गोसेवाका व्रत लेकर प्रतिदिन भोजनसे पहले गौओको गोग्रास अर्पण करता है तथा शान्त एव निर्लोभ होकर सदा सत्यका पालन करता रहता है, वह सत्यशील पुरुष प्रतिवर्ष एक सहस्र गोदान करनेके पुण्यका भागी होता है। जो गोसेवाका व्रत लेनेवाला पुरुष गौओपर दया करता और प्रतिदिन एक समय भाजन करके एक समयका अपना भोजन गौओको दे देता है इस प्रकार दस वर्षोतक गोसेवाम तत्पर रहनेवाल पुरुषको अनन्त सुख प्राप्त होते हैं।

गोबर एक जीवनोपयोगी वस्तु

(श्रीपुरुषोत्तमदासजी झुनझुनवाला अध्यक्ष—भारतीय गोवश-रक्षण-सवर्धन परिषद्)

परमात्माने अपने ही अश हम जीवधारियोंके लिये कई अमूल्य एव जीवनोपयोगी वस्तुएँ दी है, जैसे—जल, वायु, मिट्टी, अग्नि तथा प्रकाश आदि। गायके माध्यमसे प्राप्त गोबर भी उन अमूल्य वस्तुओमेसे एक है।

गोबर मल नहीं है, मलशोधक है—सभी प्राणधारियोंके उच्छिष्टोमेसे गोबर ही एक ऐसा विशिष्ट पदार्थ है जो मल नहीं है, अपितु मलशोधक है। ऐश्वर्यकी देवी लक्ष्मीको पवित्रता पसद है और गोबर शुचिताकारक है। गोबरके बिना भूमि पवित्र नहीं होती। भूमिको गोबरके लेपसे पवित्र करके ही देवी लक्ष्मीका आह्वान किया जाता है। गोबरसे पवित्र की गयी भूमिपर देवी लक्ष्मीका प्राकट्य होता है।

गोबर पञ्चगव्यका अश है—शरीर, मन, बुद्धि और अन्त करणकी शुद्धिके लिये आयुर्वेदमे पञ्चगव्यका बडा महत्त्व बतलाया गया है। पञ्चगव्य गायके दूध, दही, घृत, गोमूत्र तथा गोबरसे तैयार किया जाता है। शास्त्रोक्त विधिसे बनाये गये पञ्चगव्यके सेवन करनेसे शरीर, मन, बुद्धि और अन्त करणके विकार समाप्त हो जाते हैं।

कूड़े-कचरेको शोधकर खाद बनानेकी गोबरमे क्षमता— गोबरमे ऐसी क्षमता है कि यदि कूडे-कचरेके ढेरपर गोबरका घोल बनाकर डाला जाय तो वह कूडा-कचरा तीन-चार माहमें उपयोगी खाद बन जाता है। गोवर्धन केन्द्र पुसद (यवतमाल) मे इसका सफल प्रयोग करनेसे ज्ञात हुआ कि एक किलोग्राम गोबरसे तीस किलोग्राम उपयोगी खाद तैयार हुई। इसका सफल प्रयोग अन्य स्थानोपर भी किया गया है।

प्रदूषण एव आणविक विकिरणसे बचावके लिये गोबर रक्षा-कवच है—हमारे देशमे हजारों वर्षोसे यज्ञकी वेदी तथा आवास-गृहको गोबर एव पीली मिट्टीसे लीपनेकी परम्परा रही है। गोबरके लीपनेसे सभी हानिकारक कीटाणु-विषाणु नष्ट हो जाते हैं। वायु-प्रदूषण एव आणविक विकिरणसे रक्षा होता है। जापानमें नागासाकी तथा हिरोशिमामे अणुबमके विस्फोटके बाद जो आणविक विकिरण हुआ उसके कारण हजारो लोग अपग हो गये तथा उनकी सतति भी अपग होने लगी। आणविक विकिरणसे बचनेके लिये जापानमे गोबरके महत्त्वको समझा गया। यहाँतक कि वहाँपर अनेक लोग अपने ओढनेकी चादरको गोबरके घोलको छानकर उसके पानीमे भिगोनेके पश्चात् सुखाकर ओढते है।

सूखे तेलके कुओमे पुन तेल लाने तथा समुद्रमे जहाजसे रिसे तेलको जज्ब करनेकी क्षमता गोबरमें है—अमेरिकाके वैज्ञानिकोने दुधारु गायके गोबर, खमीर और समुद्रके पानीको मिलाकर एक ऐसा उत्प्रेरक पदार्थ बनाया है जो केवल बजरभूमिको ही हरा-भरा नहीं कर देता, बल्कि सूखे तेलके कुओमे उसे डालनेसे पुन तेल आना आरम्भ हो जाता है। समुद्रमे जहाजामे रिसे तेलको वह अपनेमे जज्ब कर लेता है, जिससे समुद्रका जल प्रदूषणरहित हो जाता है।

गोबरकी राखसे मलकी दुर्गन्ध समाप्त—गोबरकी राखका कोई विकल्प नहीं—गोबरके कडो (उपलो) को ईधनके रूपमे जलानेके पश्चात् जो राख शेष रह जाती है वह भी अपनेमे एक उत्कृष्ट मलशोधक है। गाँवोमे जहाँ फ्लशके शौचालय नहीं हैं, करोडो लोग अपने परम्परागत शौचालयोमे मलकी दुर्गन्ध समाप्त करनेके लिये मलपर इस राखका छिडकाव करते हैं। छिडकाव होते ही मलकी दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है और कालान्तरमे यह मल भी खादके रूपमे परिवर्तित हो जाता है।

गोबरकी राखसे बर्तनोकी सफाई—करोड़ों रुपयेकी बचत—भारतके गाँवो, कस्बो तथा शहरोमे रहनेवाले करोडो लोग भी अपने बर्तनोकी सफाई गोबरकी राखसे करते हैं। यदि यह सफाई किसी क्लीनिंग-पाउडरसे की जाय तो लाखो टन पाउडर लगेगा जिसका मूल्य करोडो रुपये होगा। क्लीनिंग-पाउडरसे की गयी सफाईमे सफाई

करनेवालेके हाथोमे चर्मरोग होनेका अदेशा रहता है। इसके अलावा थोडी मात्रामे जो पाउडर बर्तनोमे लगा रह जाता है, वह मनुष्यके शरीरमे जाकर नुकसान पहुँचाता है, साथ ही इससे पवित्रता नहीं आती। गोबरकी राख बिना मूल्यके लोगाको मिल जाती है और किसी प्रकारसे हानिकारक भी नहीं है। यह अत्यन्त पवित्र मानी जाती है॥

गोबरकी राख खाद तथा कीटनाशकके रूपमे—गोबरकी राखका उपयोग हमारे किसान भाई अपने खेतामे खाद और कीटनाशकके रूपमे भी अनेक वर्षोंसे करते आये हैं। खेतमे राख पडनेसे दीमक आदि कीडे नहीं पनपते तथा फसल अच्छी होती है।

गोबर एक सस्ता एव श्रेष्ठ उर्वरक—सन् १९०४ मे भारतकी उन्नत कृषि-पद्धतिका अध्ययन करने ब्रिटेनसे भारत आये कृषि-वैज्ञानिक सर एलबर्ट होवर्डने अपने शोध-ग्रन्थ 'एन एग्रीकल्चरल टेस्टामन्ट' मे लिखा है कि पूसा (बिहार) के आस-पासके गाँवामे उपजनेवाली फसल सभी प्रकारके कीटोसे गजबकी मुक्त थीं। किसानाकी अपनी परम्परागत कृषि-पद्धतिमे कीटनाशक-जैसी चीजोंके लिये कोई स्थान था ही नहीं। भारतीय कृषि-पद्धतिका ज्ञान और उसमे मेरी दक्षता ज्यो-ज्या बढती गयी, मेरी फसलोमे भी त्यो-त्यो रोग कम होते चले गये। मुझे दो प्रोफेसर मिले थे। एक थे वे अनपढ किसान और दूसरे थे स्वय पोधाके महामारी रोग। इन नये प्रोफेसरासे पाँच सालतक ट्यूशन पढनेके बाद मैंने जान लिया कि उन सभी पौधोपर जिनकी जडाके लिये वहाँकी मिट्टी अनुकूल है, कीडे आदिका आक्रमण नगण्य होता है। नुकसान पहुँचानेवाले कीट बैक्टीरिया तथा महामारी रोग उन्हीं पौधापर जाकर लगते हैं जिनकी मिट्टी रुग्ण है। स्वस्थ भूमिमे उगनेवाले पोधापर ये फटकते भी नहीं। जाहिर है कि पौधाकी रुग्णता भूमिकी रुग्णताका ही परिणाम है। भूमिकी रुग्णता क्या चीज है? यह उसकी उर्वराशक्तिका ह्रास है जो उसे उसके वाजिब हिस्सेसे वञ्चित रखनेके कारण हुआ है। भूमिका वह वाजिब हिस्सा क्या है? गोबर, वनस्पति तथा प्राणियोके अवशेष जो गोबरकी खादमे होते है, वही उसका वाजिब हिस्सा है। यह उसे मिलना चाहिये, तभी भूमि स्वस्थ रह सकती है। जिससे पौधे स्वस्थ होगे तथा प्राणी भी स्वस्थ रहेगे।

अगस्त-सितम्बर सन् १९९३ मे भारत सरकारकी ओरसे देशमे जैविक खादसे खेतीका जायजा लेनेके लिये ६ व्यक्तियोकी एक समितिका गठन किया गया। समितिके लोग कानपुर, नागपुर, वर्धा भोपाल, इन्दौर, बबई पाँडिचेरी, मद्रास आदि स्थानामे गये और उन्होने जाँच करनेके बाद पाया कि इन सभी स्थानोपर जो किसान रासायनिक उर्वरकोके बजाय जैविक खादका प्रयोग कर रहे हैं, खेतीमे उनकी लागत कम, फसल नीरोग और अच्छी है। कीडाका प्रकोप नहींके बराबर है। कहीं इधर-उधरसे थोडे-बहुत कीडे आ भी गये तो नीम या गोमूत्रका घोल बनाकर फसलोपर छिडकाव करके उससे छुटकारा पा लिया गया।

गोबरकी खादका प्रयोग कीजिये—अन्न, जल तथा वायुको विषैला होनेसे बचाइये—गोबर तथा गोमूत्रसे भूमिकी उर्वरा-शक्ति बढती है। फसल सशक्त होती है, उसे कीटनाशकाकी आवश्यकता नहीं पडती। विदेशाके प्रभाव, निहित स्वार्थोंके दबाव तथा गोबर और गोमूत्रके अभावके कारण हमारे देशमे कृत्रिम रासायनिक खाद तथा कीटनाशकाका प्रयोग किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न फल और सब्जियाकी पौष्टिकतामे कमी आयी है तथा वह विषैली हो गयी है। उनकी उत्पादन-लागतमे भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। विश्व-स्वास्थ्य-सगठनकी रिपोर्टके अनुसार भारतीय माताआके स्तनाके दूधमे अन्ताराष्ट्रिय मानकसे २१ गुना विष पाया गया है। कीटनाशकोका विष भूमिमे व्याप्त होकर अपना प्रभाव आनेवाले कई वर्षोंतक रखता है। यह विष पानीके साथ मिलकर पृथ्वीके तलके नीचे जलके स्रोततक पहुँच जाता है। फलस्वरूप हमको पेयजल भी जहरीला मिल रहा है। जल-ससाधन-मन्त्रालयने १९८६ ई० के अपने परीक्षणमे बताया कि लगभग सभी प्रान्तोमे पानीमे नाइटेट नाइट्राइटकी मात्रा इतनी बढ गयी है कि पानी पशुओके पीने योग्य भी नहीं रहा है। जलप्रदूषणकी यह चेतावनी इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनियाने भी दी है। रासायनिक खाद तथा कीटनाशकोके प्रयोगसे

भूमिकी उर्वराशक्तिका लगातार ह्रास हो रहा है। परिणाममे प्रतिवर्ष इन दोनो वस्तुओकी प्रति एकड मात्रा बढानी पडती है, जबकि उत्पादन उस अनुपातमे नहीं बढता है। तुलनात्मक ऑकडे इस प्रकार हैं—

वर्ष	एक हैक्टेयरमे रासायनिक खादकी प्रयोग-मात्रा	उत्पादन-वृद्धिका प्रतिशत
१९६०-६१	१ ९ किलोग्राम	६१ ३७
१९८७-८८	५१ २० किलोग्राम	८ ३०

भारतीय कृषि-अनुसधान-परिषद्द्वारा किये गये परीक्षणोसे ज्ञात हुआ हे कि रासायनिक खादके प्रयोग करनेसे भूमिकी उर्वराशक्ति २०-२५ वर्षोमें समाप्तप्राय हो जाती है। रासायनिक खाद तथा कीटनाशकोके प्रयोगस मिट्टीके सूक्ष्म जीवाणु दिनोंदिन कम होते जाते हैं। मिट्टीकी नमी—आर्द्रता-क्षमता घटती जाती हे। मिट्टीका स्वभाव बदल जाता हे। एक मद्यसवीकी भाँति उसे दिनादिन अधिक पानी ओर अधिक खुराक चाहिये। पजाब कृषि-विश्वविद्यालयके एक अध्ययन-दलन पाया है कि रासायनिक खादके इस्तेमालके परिणामस्वरूप पजाबम पानीका अकाल पडनेकी सम्भावना गहरी होती जा रही है। भारत-सरकारके कृषि-अनुसधान-परिषद्के सेवा-निवृत्त महानिदेशकने चेतावनी दी है कि यदि रासायनिक खादपर आधारित कृषि-पद्धति ही चलती रही तो कुछ वर्षोमे ही पजाबका क्षेत्र मरुस्थल हो जायगा।

वर्ष १९५१-५२ से १९९१-९२ तक हमारा दश विदेशासे १८१०९ कराड रुपयेकी रासायनिक खादका आयात कर चुका है। वर्ष १९९४-९५ म यह आयात लगभग ३४०० करोड रुपयका हागा। १९९२-९३ म रासायनिक खादपर ६५७७ करोड रुपयकी सब्सीडी दी गयी थी।

रासायनिक खाद तथा कीटनाशकाक उत्पादन एव प्रयोग-प्रक्रिया—इन दोनाम वायु एव जलका भारी प्रदूषण होता है। यदि हम अन्न जल एव वायुक प्रदूषणस बचना है ता रासायनिक खाद एव कीटनाशकाका प्रयाग धीरे-धीरे कम करके गोबरकी जैविक खादका प्रयोग बढाना होगा।

पैंतीस ग्राम गोबरसे एक एकड़ भूमि उपजाऊ बनी—कुछ समय पूर्व न्यूजीलैंडके कृषि तथा पशु-वैज्ञानिक पीटर प्रोक्टर भारत आये और उन्होने एक आश्चर्यजनक प्रयोग किया। उन्हान दुधार गायके गोबरको मृत गायके सींगम भरकर सर्दीसे पूर्व जमीनमे गाड दिया। पाँच-छ माह बाद निकालकर उसे हवा-बद डिब्बेमे रख दिया। उसमेसे ३५ ग्राम गोबरको निकालकर १० लीटर पानीमे मथनीसे खूब मिलाया और उसका छिडकाव एक एकड भूमिपर कराया, जिससे वह भूमि उपजाऊ और हरी-भरी हो गयी। आप भी यह प्रयोग करके देखिये।

गोबरसे बिजली, ईंधन तथा प्रकाश

गोबर-गैस सयन्त्रसे वायो-गैस, बिजली और खाद—अरबो रुपयेका उत्पादन—जहाँपर गोबरकी जिस मात्राम उपलब्धता हो, उसीके अनुसार छोटे अथवा बड 'गोबर-गैस सयन्त्र' लगाय जा सकत हैं। गोबर-गैस सयन्त्रसे ईंधनके रूपमे प्रयोग करन योग्य गोबर-गैस प्राप्त होती है। विशेष रूपसे गोबर-गैसके प्रयोगके लिये बनाये गये चूल्हके माध्यमसे ईंधनके रूपमे गोबर-गैसका प्रयोग होता है। प्रकाशक लिये गोबर-गैसके हडे पेट्रोलियम गैसके हडाकी तरह बिजलीके बल्ब-जैसा ही प्रकाश देते हैं। बड गोबर-गैस-सयन्त्रक साथ विशेष रूपसे गोबर-गैसको प्रयोगम लानेवाल बिजली जनरटर सेट भी लगाये जा सकते हैं जो गाबर-गैसस ही चलते हैं। उसम मात्र २०% डीजलका उपयाग हाता है। यह साधारण जनरेटर सेट जिनम कवल डीजलका ही प्रयाग हाता है बहुत ही कम प्रदूषणकारी है। जबकि गोबरसे चलनेवाले जनरटर सटम प्रदूषण नहींके बराबर है। जनरेटर सेटसे उत्पन्न हुई बिजलीस बिजलीद्वारा चलाय जानेवाल मोटर तथा पख आदि चलाये जा सकते हैं। गोबर-गैस-सयन्त्रस बनी खाद गुणवत्ताकी दृष्टिस भी श्रेष्ठतर होती है।

गोबरक कडे-ईंधनके रूपम अरबों रुपयेका बचत, प्रदूषणस मुक्ति—ग्रामो और छोटे कस्बाम निवास करनवाले भाई और बहन दूध उबालने तथा खाना बनानेक लिये आज भी कडाका उपयाग करत हैं। जा गोबर सूख जाता है वह

जलानेके काम आता है। कडाकी आग मदी एव प्रदूषणरहित होती है। उससे निकलनेवाला धुआँ हानिकारक नहीं होता, जब कि कोयलेका धुआँ प्रदूषणकारी होता है। जर्मनीके कृषि-पशु-वैज्ञानिक भारतम आये और तीन माहतक गाँवोमे रहे। इसके पश्चात् उन्होने एक पुस्तक लिखी—'भारतमे गाय क्यो पूजनीय है?' इस पुस्तकम गायके महत्त्वको बताते हुए उन्हाने गोबरके महत्त्वका भी एक पक्ष उजागर किया है। उन्होने लिखा ह कि 'गोबरके बदले कोयला अथवा लकडी जलाना पडे तो हमे क्रमश साढे तीन करोड टन कोयला अथवा छ करोड अस्सी लाख टन लकडीकी आवश्यकता होगी, जो कई अरब रुपये मूल्यका होगा। पर्यावरणकी चिन्ता करनेवाले लोगोका यह भी विचार करना चाहिय कि साढे तीन करोड टन कोयला फूँकनेसे पर्यावरणपर उसका कैसा प्रभाव पडेगा और ६ करोड ८० लाख टन लकडीके लिये पेडोको काटे जानेसे हमारे पर्यावरणकी रक्षा किस प्रकार हो सकती है?

गोबरसे त्वचा-रक्षक साबुन, शुद्ध धूपबत्ती तथा शीत-ताप-अवरोधक प्लास्टरका उत्पादन—श्रीनारायणराव देवराव पढरी पाण्ड उपनाम नॅडेप काकाने गोबरसे न केवल कम्पोस्ट खाद बनानेकी नवीन पद्धतिका आविष्कार किया है बल्कि गोबरसे एक ऐसा अगराग भी तैयार किया जो साबुनकी टिकियाके रूपमे है ओर त्वचाके रोगोमे ओषधिका काम करता है। उन्होने गोबरसे धूपबत्ती तैयार की है। इसे जलानेसे वातावरण शुद्ध हो जाता है। गोबरसे ही एक प्लास्टर भी तैयार किया है, जिसे छत तथा दीवारोपर लगानेसे शीत और तापका प्रभाव कम हो जाता है।

श्रीवेणीशकर एन० वसुने अपनी पुस्तक 'डग इज गोल्ड माईन' मे लिखा है कि गोबरसे हमे सस्ता और श्रेष्ठ जैविक खाद तथा जैविक खादसे पौष्टिक एव स्वादिष्ट खाद्यान्न, सब्जियाँ और फल कम लागतपर मिलते है। हमारी भूमिकी उर्वराशक्ति बराबर बनी रहती है। सस्ता ईंधन मिलता है। मुफ्तमे उपयोगी राख मिलती है। यदि हम गोबरकी उपयोगिताको समझ ले तो हमारे देशसे बीमारी, गरीबी तथा बेरोजगारी स्वय समाप्त हो जायगी। आयुर्वेदमे तो अनेक मूल्यवान् भस्मो तथा औषधोका निर्माण केवल गोबरके कडोकी मदी एव प्रदूषण-रहित आगसे ही किया जाता है। प्रसूतिका स्त्रियोके शरीरकी सेकाई भी मद-मद प्रदूषण-रहित गोबरके कडोकी आगसे ही की जाती है। किंतु दुर्भाग्य है कि आज गायके दूध तथा घीकी तरह गायका गोबर भी दुर्लभ होता जा रहा है। हमारा देश रासायनिक खाद और कीटनाशकोके फेरमे जबसे पडा है, गरीब और कर्जदार होता जा रहा है। भाग्यकी कैसी विडम्बना है और बुद्धिका कैसा दिवालियापन है कि मास-निर्यातके लिये दूध, ऊर्जा तथा गोबरके स्रोत गोवशकी हत्या करवायी जा रही है और निर्यातसे अर्जित विदेशी मुद्रासे रासायनिक खाद एव कीटनाशकोका आयात किया जा रहा है। हम गोबरमे वास करनेवाली लक्ष्मीको पहचाने और प्रकट करे। इससे सभी कामनाओको पूर्ण करनेवाली गोमाताकी प्रतिष्ठा फिरसे स्थापित होगी तथा गोवशकी रक्षा हो सकेगी। उसकी दुआओसे तथा गोवश-आधारित कृषि-पद्धतिसे हम और हमारा देश फिरसे समृद्ध बनेगा। हम आरोग्यवान् होगे और बलवान् होगे।

गावो मे मातर सर्वा पितरश्चैव गोवृषा । ग्रासमुष्टिं मया दत्त प्रतिगृह्णीत मातर ॥
इत्युक्त्वानेन मन्त्रेण गायत्र्या वा समाहित । अभिमन्त्र्य ग्रासमुष्टिं तस्य पुण्यफल शृणु॥
यत् कृत दुष्कृत तेन ज्ञानतोऽज्ञानतोऽपि वा । तस्य नश्यति तत् सर्वं दु स्वप्न च विनश्यति॥

[गोमाताके सामने घास रखकर इस प्रकार कहना चाहिये—] 'ससारकी समस्त गौएँ मेरी माताएँ और सम्पूर्ण वृषभ मेरे पिता हैं। गोमाताओ! मैंने तुम्हारी सेवामे यह घासकी मुट्ठी अर्पण की है इसे स्वीकार करो।' यह मन्त्र पढकर अथवा गायत्रीका उच्चारण करके एकाग्रचित्तसे घासको अभिमन्त्रित करके गौको खिला दे। ऐसा करनेसे जिस पुण्यफलकी प्राप्ति होती है, उसे सुनो। उस पुरुषने जान-बूझकर या अनजानमे जो-जो पाप किये होते हैं, वह सब नष्ट हो जाते हैं तथा उसको कभी बुरे स्वप्न नहीं दिखायी देते। (महाभा० आश्वमेधिकपर्व वैष्णवधर्म०)

राष्ट्र-विकासमें गोवंशका महत्त्वपूर्ण योगदान

(श्रीशरदकुमारजी साधक)

भारतकी गाय केवल दुधार पशु नहीं है अपितु यह लौकिक एव पारलौकिक सारी कामनाएँ पूरी करनेवाली कामधेनु ह। इससे लाखा परिवाराका पालन-पोषण होता है। 'डेयरी इडिया १९८७' की रिपोर्टके अनुसार देशके ४९ हजार 'ग्रामीण दुग्ध-उत्पादन-सहकारी-सगठनो'के लगभग पचास लाखसे ज्यादा ग्वाला-परिवार प्रतिदिन ८० लाख टन दूध बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं। सन् १९८७ मे दुग्ध-उत्पादन चार करोड टनके आस पास रहा, जो बढकर लगभग पाँच करोड ४९ लाख टन हो गया है। दुग्ध-उत्पादनमे ग्वाला-परिवारके अलावा सरकारी और निजी डेयरियाँ तथा गोभक्ताकी बडी जमात सक्रिय है। भारतीय अर्थव्यवस्थाम पशुधनका १५ हजार करोड रुपयका योगदान माना जाता ह। उसम ७० प्रतिशत दूध तथा उसके उत्पादोका हिस्सा है। पशुधनकी अपेक्षित साज-सँभाल हो तो गोरस-उत्पादाम भारी वृद्धिकी सम्भावना है। समुचित साज-सँभाल तथा सतुलित दाना-पानी देनेकी व्यवस्था कर वाराणसी-स्थित 'रामेश्वर गोशाला' तथा इस प्रकारक अन्य सस्थानाने सिद्ध कर दिखाया है कि १ लीटर ८०० ग्राम दूध देनेवाली गाये ४ लीटरतक दूध दने लगीं। उनकी बछिया ७ लीटर तथा उसकी भी बछिया ११ लीटर दूध देनवाली हुई। जहाँ औसत भारतीयके लिये १०० ग्राम दूध दुर्लभ है, वहाँ ५०० ग्राम तक दूध सहज सुलभ हो सकता है तथा दुग्ध-उत्पादाम लगकर लाखा परिवार अपनी रोजी-रोटा चला सकते ह।

माना जाता है कि देशमे ४ करोड ६ लाख ७० हजार हल तथा १ कराड ३० लाख बैलगाडियाँ हैं और उनसे जुडे तीन करोड लोगोका जीवनयापन होता है। यदि हलाकी जगह ट्रैक्टर ले ल ता उसके लिये २ लाख ८ हजार कराड रुपयाकी पूँजी अपेक्षित होगी जो कर्जमे आकण्ठ डूब हमार देशके लिये जुटा पाना मुश्किल है। इस समय ट्रैक्टरास जितनी जुताई होती है उतनी ता भैंसे कर लेते हैं। बैल उनसे ८ गुना अधिक जुताई कर रहे हैं। खेतीम लगभग ५ करोड रुपयेकी पशु-शक्ति लगती है। इसी तरह ट्रक और मालगाडियाँ जितना माल ढोती हैं, उससे अधिक ही बैलगाडियोसे ढुलाई होती है। वे ऊबड-खाबड रास्तापर जाती हैं और घरके दरवाजेतक माल पहुँचाती हैं। ढुलाईम पशु-शक्तिका उपयोग होनेसे २५ अरब रुपयकी डीजलकी बचत होती है।

दुनियाकी २५ प्रतिशत जमीन भारतके पास है, किंतु पशु १६ प्रतिशत हैं। उनकी शक्तिका पूरा-पूरा उपयोग हो तो बेरोजगारी दूर करनेम भारी मदद मिल सकती है। दुनियाकी १२ प्रतिशत कृषिभूमि भारतम है और उसमे भी १८ प्रतिशत भूमि कृषि-योग्य है। जो किसान केवल खेतिहर हैं और उर्वरकोका इस्तेमाल कर मालामाल होनेकी कोशिशम हैं, उनपर *'चार दिनोकी चाँदनी फिर वही अँधेरी रात'* की कहावत चरितार्थ होती है। जिन किसानोके पास गोवश है और उनके गोबर-गोमूत्रका उपयोग खादमे हो रहा है, उनकी आमदनी तथाकथित उन्नत कृषि करनेवाले किसानोसे डेढ गुनी होती है। प्रसिद्ध भू-रसायन-विशेषज्ञ डॉ० एच०एच० काडने कहा भी है कि आधुनिक कृषिसे रोग तथा कीटाणु बढते हैं, क्योंकि उर्वरकाका इस्तेमाल बढा है, वहीं परम्परागत कृषिसे जमीनकी उर्वराशक्ति कायम रहती है। उपज स्वादिष्ट होती है और पशु तथा मानवकी क्षमताका पूरा उपयोग होता है। किंतु आज वैसा नहीं होनेके कारण भारतकी करोडो-करोडकी आबादीमे अधिकाश लोग गरीब हैं और उनम भी आधे लोग दरिद्र-रेखासे नीचे हैं। बडे उद्योगोके भरोसे गरीब परिवारोका जीवन-स्तर ऊँचा उठेगा यह कहना कठिन ही नहीं असम्भव-सा ही लगता है। किंतु गोपालनकी मिक्स फार्मिंगसे तत्काल उन्हे लाभ पहुँचानेकी गारटी दी जा सकती है। योजना-आयोगको इस बारेमे गम्भीरतासे सोचना चाहिये।

'केन्द्रीय यान्त्रिकी अनुसधान भोपाल'ने बैलोकी उत्पादकता बढाने तथा किसानाका श्रम कम करने-हेतु एक पशु-चालित ट्रैक्टर बनाया है। वह हलके मुकाबले ३-४

गुना अधिक कार्य करता है। इसी तरह पक्वररहित बैलगाडियाँ निर्मित हुई हैं, जिससे बैलोपर भार कम पडता है और परिवहनकी क्षमता बढी है। 'नेशनल इस्टीट्यूट फार ट्रेनिग इन इडस्ट्रीयल इजीनियरिंग (नाईटी) बबई'ने ऐसा उपकरण बनाया है, जिससे रहँटके साथ बैलके घूमनेपर विद्युत्-धारा उत्पादित होती है। उस उपकरणके सहारे दो बैल एक हार्सपावर अर्थात् ७८६ वाट बिजली पैदा कर सकते हैं। भारतके नेताओने स्वय नैरोबीके ऊर्जा-सम्मेलनमे स्वीकार किया था कि 'भारतमे हमारे सभी बिजलीघरो, जिनकी अधिष्ठापित क्षमता २२ हजार मेगावॉट है, से अधिक शक्ति पशु प्रदान करते हैं। यदि उनको हटा दिया जाय तो बिजली-उत्पादनपर और २,५४० अरब डालरकी पूँजी-निवेश करनेके अतिरिक्त कृषि-अर्थ-व्यवस्थाको खाद और सस्ते ईंधनकी हानि होगी।' गोबर-गैस, नॅडेप खाद, चारा काटनेकी बैल-चालित मशीनसे मिलनेवाले लाभाको कौन नही जानता? विभिन्न रूपोमे पशुओसे ४० हजार मेगावॉटके बराबर निष्पन्न ऊर्जासे देशको २७ हजार करोड रुपयेका लाभ है। आधे टन वजनकी गाय दिन-रातमे १२०० वॉट गर्मी देती है। जर्मनीके विद्युत्-अभियन्ता-सघने २० गायोसे एक बडा मकान गर्म रखनेका प्रयोग किया और उससे वर्षमे ३ हजार लीटरसे अधिक तेलकी बचत की।

विदेशोमे जहाँ इस तरह ऊर्जा-स्रोतके रूपमे गायाको बढावा मिल रहा है, वहाँ गोभक्त कहलानेवाले भारतदेशमें गोहत्या बढ रही है, यह कितने दु खकी बात है। 'भारतीय चमडा-अनुसधान-सस्थान' के अनुसार एक करोड आठ लाख गोवशका वध १९८७मे हुआ। १९९३ तक उसमे और वृद्धि ही हुई होगी, क्योकि ८वीं पञ्चवर्षीय योजनाकी पुस्तकके अनुसार देशमे ३,६०० कतलखाने हैं। नये आधुनिकतम कतलखानोको भी लाइसस दिये जा रहे हैं। सरकार इस योजनावधिमे ५०० करोड रुपयेका मास निर्यात करना चाहती है, यह कितनी बडी त्रासदी है। इसे देखकर रघुवशकी वह उक्ति याद आती है, जिसमे गायकी रक्षाके लिये अपने-आपको समर्पित करनेवाले राजा दिलीपसे सिहने कहा—

'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढ प्रतिभासि मे त्वम्॥'

अर्थात् 'हे राजन्! तुम मुझे बडे ही मूर्ख मालूम पडते हो, क्योकि बहुत थोडी-सी नगण्य चीजके लिये तुम बहुत बडी चीजको छोड दे रहे हो। छोटी-सी चीजके लिये बहुत लुटा देनेवाले तुम विचारमूढ नहीं तो और क्या हो।' वास्तवमे यह विचारमूढता ही है, जो बृहद् बबई नगरपालिकाद्वारा सचालित देवनार-कतलखानेमे प्रतिवर्ष १८० करोड रुपये मूल्यका पशुधन काटा जा रहा है। यदि वह कटना बद हो जाय तो ३ लाख ७० हजार टन अनाज, १० लाख टन चारा, ३० लाख टन खाद, २० करोड ५८ लाख ५७ हजार टन दूध और ९ लाख ८० हजार लोगोको रोजगार मिल सकता है। अत ग्राम एव राष्ट्रविकासके लिये अधिष्ठान-रूप गोवशका सार्थक उपयोग करे, ताकि कुपोषण रुके, पौष्टिक अनाज प्राप्त हो सके, स्वस्थ पर्यावरण उपलब्ध हो सके, स्थानीय उद्योग बढे और चतुर्विध पुरुषार्थ-रूप सम्पत्ति प्राप्त हो सके।
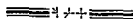
रात हो या दिन, अच्छा समय हो या बुरा, कितना ही बडा भय क्यो न उपस्थित हुआ हो, यदि मनुष्य निम्नाङ्कित श्लोकोका कीर्तन करता है तो वह सब प्रकारके भयसे मुक्त हो जाता है—

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृङ्ग्य पयोमुच ।सुरभ्य सौरभेय्यश्च सरित सागर यथा॥
गा वै पश्याम्यह नित्य गाव पश्यन्तु मा सदा।गावोऽस्माक वय तासा यतो गावस्ततो वयम्॥

'जैसे नदियाँ समुद्रके पास जाती हैं, उसी तरह सोनेसे मढे हुए सींगोवाली दुग्धवती, सुरभि और सौरभेयी गौएँ मेरे निकट आवे। मैं सदा गौओका दर्शन करूँ और गौएँ मुझपर कृपादृष्टि करे। गौएँ मेरी हैं और मैं गौओका हूँ, जहाँ गौएँ रहे, वहाँ मैं भी रहूँ।' (महा० अनु० ७८। २३-२४)

गोवंशकी उपेक्षा क्यो ?

(श्रीलक्ष्मीनारायणजी मोदी, प्रबन्धन्यासी भारतीय गोवंश-संवर्धन प्रतिष्ठान)

गोवश-सवर्धन क्या साम्प्रदायिक है?

जब कोई गोवशकी बात करता है तो भारत सरकारकी एक ही मन स्थिति बनती है कि 'यह तो साम्प्रदायिक प्रश्न है।' आइये, विचार करे कि 'यह विज्ञानका विषय है या आर्थिक एव सामाजिक उन्नतिका केन्द्र-बिन्दु है या सकीर्ण साम्प्रदायिकताका ?'

इस सदर्भमे श्रीअब्दुल गफ्फारकी कविताके कुछ अश उद्धृत किये जा रहे हैं—

गायने मानव-जीवनको भव-रूप प्रदान किया है
इसीलिये ऋषियोने इसको 'माँ' का नाम दिया है॥
आर्य सस्कृतिका गौरव हम नहीं सिमटने दगे
शीश भले कट जाये लेकिन गाय नहीं कटने दगे॥
मेहनत-कश किसानके मनमे खुशियाँ यह भर देती,
श्रमके साथी बैलोको भी यही जन्म है देती॥
किसी जातिका नहीं धर्मका नहीं यह हर घरका है,
गौ-हत्याका प्रश्न समूची मानवता भरका है॥
गौ-हत्या करनेवाला सभ्यता उचाट रहा है
गाय काटनेवाला अपनी माँको काट रहा है॥
माँके हत्यारोको खुलकर दड दिलाना होगा
इसकी रक्षाका घर-घरमे अलख जगाना होगा॥
वसुधाके वैभवका दर्शन नहीं घटकने दगे
शीश भले कट जाये लेकिन गाय नहीं कटने देगे॥
जिस आँगनमे गाय नहीं अपशकुन माना जाता
गोदान तो भारत-भूमिपर महादान कहलाता॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख सभी अब आगे बढकर आओ
भाल भारतीसे कलकका ये टीका हटवाओ॥

गाँवमे जो खेती करते हैं या गाडी चलाते हैं वे सभी धर्मोके व्यक्ति हैं और वे अपने पशुधनको अच्छी तरहसे पालते हैं। मुझे एक बार भोपालके पास गाँवामे जानेका अवसर मिला और वहाँ कई मुसलमान किसानासे मुलाकात हुई उनके विचार गोसवर्धनसे जुडे थे और एक भी व्यक्ति नहीं चाहता था कि उनका पशुधन बूचडखानोमे पहुँचे।

गोवशका योगदान

गोवशका योगदान मुख्यत चार प्रकारका है—(१) पशुशक्ति, (२) गोमूत्र-गोबर, (३) दूध और (४) मरणोपरान्त चमडा तथा अन्य अवयवोका उपयोग।

भारत-जैसे कृषि-प्रधान देशके लिये गोवश आर्थिक एव सामाजिक व्यवस्थाका केन्द्र-बिन्दु रहा है और इसीलिये भारतको 'सोनेकी चिडिया' की सज्ञा दी गयी थी। जबसे गोवशका ह्रास प्रारम्भ हुआ तबसे आर्थिक दशा बिगडने लगी और भारत विदेशी तथा अपने घरेलू ऋण-चक्रमे फँस गया है। अब भी हमारी बहुत-सी समस्याओका समाधान गोवशके उचित उपयोगसे सम्भव है।

पशु-शक्ति या यान्त्रिकी उपकरण

खेतीके कार्य—जुताई, निराई बुवाई, कटाई, पानी खींचनेके लिये, वाहन एव ग्रामोद्योगके लिय बैल न केवल व्यावहारिक है बल्कि सामयिक भी है और रहेगा भी। प्रश्न यह उठता है कि किस प्रकार किसानोको जिन्हे कडी मेहनत करनी पडती है उससे बचाया जा सके और बैलोका उपयोग भी बढे?

जब किसानोका अपने खेत जिसकी लबाई-चौडाई १०० मीटर हो तो उसे नगे पाँव कडी धूपमे करीब ६५ कि० मी० एक जुताईके लिये चलना पडता है और जब वह तीन-चार बार जुताई कर लेता है तब कहीं खेत बोनेके लिये तैयार होता है। इस मेहनतसे बचनेके लिये 'केन्द्रीय कृषि-यान्त्रिकी अनुसधान-सस्थान भोपाल'ने एक तिपहिया सयन्त्र बनाया है जिसकी उपयोगिता यह है कि किसान ट्रैक्टरकी भाँति उसपर बैठकर अपने बैलोद्वारा खेतीके सभी कार्य एव खेतकी जुताई निराई और बुवाईतकके कार्य कर सकेगा। इस सयन्त्रको मैने स्वय भोपाल जाकर देखा है और जब इस सयन्त्रका खेतमे व्यवहारके लिये बैलोकी जोडी लगायी गया तभी हरियाणाके दो किसान वहाँ सौभाग्यवश आ गये। दोनोने बारी-बारीसे मेरे सामने ही खेतकी जुताई कर बडे स्पष्ट रूपसे कहा कि यह सयन्त्र बहुत उपयोगी है।

बडे दु खकी बात है कि एक ओर भारत सरकार ट्रैक्टराके प्रचारके लिये हजारो रुपयेका अनुदान देती है, पर इस पशुचालित सयन्त्रके प्रचार-प्रसारके लिये उसने कोई योजना नहीं चनायी है।

'इस्टीट्यूट ऑफ इक्नोमिक ग्रोथ दिल्ली'ने एक विशेष अध्ययनसे पाया है कि दशमे करीब ८ करोड बैल खेतीके कार्योंमे लगे हैं उनके बदले हम २ करोडसे अधिक ट्रैक्टरोकी आवश्यकता होगी। २ करोड ट्रैक्टरोकी लागतका अनुमान ४० खरब रुपये है। ८ वीं पञ्चवर्षीय योजना कुल ८० खरब रुपयाकी है फिर इतनी बडी धनराशि कहाँसे उपलब्ध होगी?

२ करोड ट्रैक्टरोके लिये पेट्रोलियम पदार्थ आयात भी करना होगा उसका मूल्य २० अरब अमेरिकन डालरके लगभग होगा जबकि आज भारत केवल छ अरब डालरका पैट्रोलियम पदार्थ आयात करता है। विदेशी ऋण भी करीब ९१ अरब डालरका पहले ही चढा हुआ है। फिर यदि हम चाहे तब भी देशके पास इतनी विदेशी मुद्रा नहीं होगी और न ही प्रत्येक वर्ष पेट्रोलियम पदार्थ आयात करनेके लिये ऋण मिल सकेगा।

भारतमे पेट्रोलियम पदार्थका भूमिगत एव सागरके नीचेका भण्डार केवल २५-२६ वर्षोके लिये पर्याप्त है। जैसा कि आजकी खपतके हिसाबसे बताया जाता है। अत आनेवाले युगमे भी पशु-शक्तिका व्यवहार हितकर रहेगा।

जहाँतक बैलगाडियोका प्रश्न है कुछ वर्षोतक सरकारी आँकडेसे जानकारी मिलती थी कि देशम डेढ करोड बैलगाडियाँ हैं, लेकिन ५ मार्च, १९९४ को हुए एक सम्मेलनम भारत सरकारके एक उच्च अधिकारीने जानकारी दी कि बैलगाडियोकी सख्या बढकर ढाई करोड हो गयी है। इससे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान यन्त्रीकरणके युगम भी बैलगाडियोकी उपयोगिता तेजीसे बढ रही है।

सरकारी आँकडोके अनुसार बैलाका उपयोग वर्षम ५० से १०० दिनका ही हो पाता है। इस उपयोगको बढानेके लिये भोपाल-स्थित अनुसधानशालाने एक ऐसा उपकरण बनाया है जिसके द्वारा बैलोको एक ही स्थानपर घुमाकर ८०० से १००० चक्करकी गति मिल जाती है। इस गति और शक्तिके माध्यमसे नाना प्रकारके ग्रामीण उद्योग बिना बिजली, बिना डीजल खर्च किये सम्भव कर दिखाया है। मुख्यत कार्य—चारा काटना, अन्न निकालना, आटा-चक्की, दाल-चक्की, खराद, चारेके गट्ठर बाँधना आदि है।

बैलचालित तेलघानीका प्रचार तो बहुत पहलेसे ही था और इसका सबसे बडा लाभ होता था गाँवमे ही तेल निकलना। खलीका व्यवहार पशुआके आहारकी पौष्टिकता बढानेमे सहायक भी होता था।

गोबर एव गोमूत्रके उपयोग अभीतक खाद या उपले बनाकर जलाने और कभी-कभी गोबरका लेप करनेतक ही सीमित रहा। यद्यपि ऋषियोने बहुत स्पष्ट रूपसे सकेत दिया था कि 'ऐश्वर्यकी देवी महालक्ष्मीजीका वास गोबरमे हैं,' लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे वैज्ञानिकोने इसे ढकोसला ही समझा।

अमेरिकाके जेम्स मार्टिनने दुधार गायका गोबर, खमीर और समुद्रके पानीको मिलाकर एक ऐसा उत्प्रेरक बनाया है, जिसके व्यवहारसे बजरभूमि हरी-भरी, सूखे तेलके कुओमे दुबारा तेल तथा समुद्रकी सतहपर बिखरे तेलको सोखा जा सकेगा।

यह निश्चित बात है कि यदि भारतमे भी गोबरके उपयोगके लिये अनुसधान होगा तो बहुत-सी आश्चर्यजनक जानकारियाँ प्राप्त होगी।

केनियासे एक पुस्तिका आयी है, जिससे जानकारी मिलती है कि 'गोबरसे तरल खाद बनाकर उसका व्यवहार करनेसे पौधोको बहुत लाभ मिलता है। इस विधिमे गोबरको किसी मोटे कपडेमे बाँधकर पानीके ड्रममे लटका देते हैं। १५-२० दिनोंमें गोबरके तत्त्व पानीमे आ जाते हैं और इस पानीका व्यवहार कई गुना अधिक लाभदायक पाया गया है। इसी प्रकार हरी पत्तियोको भी पानीमे डुबोकर २०-२५ दिन रखनेपर एक काला-सा द्रव तैयार होता है जिसका व्यवहार भी अत्यन्त लाभदायक है।'

सेन्द्रिय खाद अथवा रासायनिक उर्वरक एव कीटनाशक

जहाँतक सेन्द्रिय खाद बनानेका विषय है इस कार्यमे श्रीनारायण देवराव पाढरी पाडेका २५ वर्षका श्रम बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्हाने नॅडेप-विधिकी खोजकर वैज्ञानिको एव किसानोको चकित कर दिया है कि किस प्रकार केवल एक किलो गोबरसे ३० किलो अच्छा किस्मकी खाद बनती है। यदि इस विधिका पूरे देशमे प्रयोग किया जाय तो हमे

रासायनिक उर्वरकोंकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

रासायनिक उर्वरकोंके व्यवहारसे किसानोंकी भूमि एक शराबीकी तरह हो जाती है। उसे हर वर्ष अधिक मात्रामें उर्वरक चाहिये और उर्वरकके व्यवहारसे फसलमें कीट भी अधिक लगते हैं। इन कीटोंको नष्ट करनेके लिये कीटनाशक दवाओंका व्यवहार भी बढ़ता जा रहा है। उर्वरकका कुछ हिस्सा पानीमें मिलकर भूमिगत जलको प्रदूषित करता है और कुछ हिस्सा हवामें उड़कर ओजोनकी परतको खराब करता है। भारत सरकारके डॉ० बी०के० हाडाने परीक्षण कर पाया है कि देशमें करीब-करीब सभी प्रान्तोंमें भूमिगत जल इतना प्रदूषित हो गया है कि मनुष्यों एवं पशुओंके लिये भी उपयुक्त नहीं रहा। कीटनाशकोंका दुष्प्रभाव यह भी हो रहा है कि साढ़े तीन सौसे अधिक कीट ऐसे उत्पन्न हो गये हैं जिनपर इन दवाओंका कोई असर नहीं होता। कीटनाशक मानवों एवं पशुओंके शरीरमें जमते जाते हैं और वे मल-मूत्रके द्वारा बहुत कम मात्रामें बाहर निकलते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्योंमें नपुंसकता बढ़ रही है और भावी संतानके लिये बड़ी संख्यामें विकलाङ्ग होनेका खतरा भी मँडराने लगा है।

दीपावलीके बाद करीब-करीब सभी घरोंमें गोबरधनकी पूजा की जाती है। दीपावलीका पर्व महालक्ष्मीजीकी आराधनाके लिये पूरे देशमें बड़ी धूमधामके साथ मनाया जाता है और तुरंत बाद गोबरधनकी पूजा की जाती है। जरा-सा पदच्छेद कर देखें तो यह 'गोबर' एवं 'धन' दो शब्दोंका एकीकरण है।

इस पूजाके द्वारा भी प्रतिवर्ष एक संकेत दिया जाता है कि गोबरमें धन है ऐश्वर्यकी देवी महालक्ष्मीजीका वास है गोबरमें, इसे ढूँढो और समृद्धि पाओ लेकिन अधिकतर लोग पूजा तो कर लेते हैं परंतु कभी यह नहीं सोचते कि इस पूजाका असली संकेत क्या है और इसके लिये कुछ करना है। इसी प्रकार दशहरेके अवसरपर भी गोबरका एक आकार बनाकर पूजा की जाती है। एक तरफ रुपया और दूसरी तरफ चावल आदि रखे जाते हैं। बच्चोंसे कहा जाता है कि रुपया ढूँढो। जिस बच्चेको रुपया मिलता है वह बड़ा प्रसन्न होता है। यह पूजा इस बातकी प्रतीक है कि गोबरमें अपरम्पार धन है इसे ढूँढो इसका उचित व्यवहार करो।

अफ्रीकामें गोबरका प्रयोग मरुस्थलके रोकनेमें भी किया गया है। थोड़ी-थोड़ी दूरपर छोटे-छोटे गड्ढे खोदकर उनमें गोबर भर देते हैं ताकि वहाँ सूक्ष्म कीटाणु पनप सकें और भूमिकी उर्वरा-शक्ति अच्छी हो तथा मरुस्थलका बढ़ना रुक सके।

कलकत्तेके एक सज्जनने गोमूत्रको कड़ाहीमें उबालकर जो बचा द्रव्य है उसकी गोली बनायी है और उन्हें इसका लाभ मधुमेहसे पीड़ित व्यक्तियोंको मिला है।

रासायनिक उर्वरक

रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओंका अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्यों-ज्यों उर्वरककी मात्रा बढ़ाते हैं, त्यों-त्यों फसलों एवं फलोंमें कीड़े अधिक लगते हैं और इस प्रकार इन जहरीली दवाओंका अंश हमारे शरीरमें जमता रहता है।

उर्वरकोंकी खपत १९८०-८१ में केवल ५५ लाख टन थी जो १९९१-९२ में बढ़कर लगभग १ करोड़ २५ लाख टन हुई। इसी दौरान गेहूँका उत्पादन ५ करोड़ ३० लाख टनसे बढ़कर ७ करोड़ ४० लाख टन हुआ। अर्थात् उर्वरकोंकी खपत बढ़ी ढाई गुना पर गेहूँका उत्पादन केवल ५० प्रतिशत ही बढ़ा। इसी प्रकार कीटनाशकोंके व्यवहारमें भी भारी वृद्धि हुई है। किंतु कीटनाशकोंकी खपत बढ़ानेपर भी खाद्यान्नको कीटोंद्वारा जो नुकसान होता था उसमें कमी नहीं हुई।

उर्वरक एवं कीटनाशक कारखानोंसे भीषण प्रदूषण होता है। इस संदर्भमें पर्यावरण-मन्त्रालयकी नीतिका पैरा ८ ३ काफी महत्त्वपूर्ण है, जिसे उद्धृत किया जा रहा है—

जबकि कस्बों और उद्योगोंसहित विशिष्ट स्रोतोंसे होनेवाले प्रदूषणकी ओर ध्यान दिया गया है, लेकिन कीटनाशकों नाशीकीटों उर्वरक आदि-जैसे कृषि-निवेशोंसे होनेवाले गैर स्थानाय प्रदूषणकी ओर ध्यान नहीं दिया गया। यह स्थिति दिनों-दिन बिगड़ती जा रही है और इससे न केवल हमारे जल-निकाय प्रदूषित हो रहे हैं, बल्कि उपमृदा जल-संस्थान भी प्रदूषित हो रहे हैं और इससे मानव-जातिका स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा। कीटनाशकोंके प्रयोगसे सम्बन्धित एक दीर्घावधि-नीति सम्बन्धित मन्त्रालयके सहयोगसे तैयार की जायगी जिसमें पर्यावरण-रूपसे स्वीकार्य कीटनाशकों विशेषकर जैव कीटनाशकों और गैर स्थायी जैव भवक्रमणीय कीटनाशकोंके प्रयोगसे तथा हानिकारक विपाक्त और स्थायी कीटनाशकोंको धीरे-धीरे समाप्त करना शामिल है और इस

नीतिके प्रभाव कार्यान्वयनके लिये सम्बन्धित मन्त्रालयके सहयागसे आधारभूत समझकर उपलब्ध कराया जायगा। उर्वरकाके प्रयोगके बारेम भी इस तरहकी नीति बनाये जानेकी आवश्यकता है।

उर्वरकाके व्यवहारसे खेताकी उत्पादकता २० वर्षोम नगण्य हो जाती है, इसका प्रमाण भी भारतीय कृषि-अनुसधान परिषद्को अपने परीक्षणसे मिला है, जिसकी तालिका निम्न है—

मक्काका प्रति उत्पादन कुतलम

(लाल एव माथुर—१९८८)

वर्ष	१—१२	१३—१८	१९—२४	२५—२८
एनपीके	३१७	३२३	८२	१२
कपोस्ट	२२७	२५९	२७५	२५९

उर्वरको एव कीटनाशकोके व्यवहारसे मिट्टीके सूक्ष्म जीवाणु भी दिनादिन कम होते हैं। इन जीवाणुआके बिना किसी प्रकारकी उपज कर पाना असम्भव है। उर्वरकोके व्यवहारसे भूमिकी आर्द्रता कम होती जाती है जिस प्रकार शराबाका थाडे-थोडे दिनामे मदिराकी मात्रा बढानी पडती है उसी प्रकार मिट्टीका स्वभाव भी शराबीके जैसा हो जाता है। उर्वरकाकी मात्रा बढानेपर भी उत्पादकताम सुधार नहीं होता। जबकि सेन्द्रिय खादके द्वारा उत्पादकता बढती जाती है या उच्च स्तरपर स्थिर रहती है। प्रारम्भम जब उर्वरकोका व्यवहार किया गया था तो एक किलो उर्वरक डालनेपर १५ किलो अन्न मिलता था पर अब यह घटकर केवल ६ किलो रह गया है और यह अनुपात तेजीसे घट रहा है।

खर-पतवार-नाशक दवाके व्यवहारके कारण एक ऐसा पौधा पनप रहा है जो देखनेम गेहूँ-जैसा लगता है पर उसम कोई दाना नहीं पडता। यह पौधा आस्ट्रेलिया मैक्सिको तथा अन्य देशाम भी उत्पन्न हो गया है, जिसके कारण वहाँ बडी चिन्ता है। उर्वरकाके व्यवहारसे खाद्यान्नम प्रोटीनकी मात्रा कम हो जाती है स्वाद बिगड जाता है तथा मानव एव पशुओ—सभीको पौष्टिक तत्त्व कम मिलते हैं। उर्वरकोक कारण खेताम पानीकी खपत कई गुना अधिक बढानी पडी जिसके कारण नयी-नयी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। विशेषकर भूमिगत जलका स्तर दिनादिन कम हो रहा है।

उर्वरक कीटनाशक एव खर-पतवार-नाशक दवाआके बदले जब सेन्द्रिय खादके आधारपर खेती करते हैं तो निम्न लाभ मिलते हैं—

(१) भूमिका प्राकृतिक रूप बना रहता है।
(२) भूमिके सूक्ष्म जीवाणु बढते हैं।
(३) सिचाईके लिये पानी बहुत कम लगाना पडता है।
(४) खेत एव गाँवके कूडे-कचरेका भी उपयोग हाता है।
(५) किसानों और बैलाको अधिक काम मिलता है।
(६) पर्यावरणम सुधार होता है, खाद्यान्न पौष्टिक एव सुस्वादु होता है।
(७) कीटनाशकाके जहरका अश हमारे शरीरम नहीं जमता।
(८) गाँवका धन एव ससाधन गाँवम रहता है।
(९) ग्रामीणोको रोजगार मिलता है।
(१०) विदेशी मुद्राकी बचत हाती है।
(११) देश सम्पन्नताकी ओर बढता ह।

दूध-शाकाहार एव मासाहार

गायके दूधकी तुलना माँके दूधक समान आजके वैज्ञानिक भी मानते हैं।

वर्तमानम मासका निर्यात करीब साढे तीन अरब रुपयोका हो रहा है, जिसे बढाकर १० अरब करनकी याजना चल रही है। आर्थिक दृष्टिसे भी यदि जाँचे तो यह अनुमान किया गया है कि जब १ करोडकी विदेशी मुद्रा मिलता है ता देशको १५ करोडका नुकसान उठाना पडता ह। पर न ता सरकार इस प्रकारके हानवाले घाटेकी जाँच करवाती है और न ही ध्यान देती है।

डॉक्टर एव आहार-विशेषज्ञ दुनियामे पुकार-पुकार कर कह रहे ह कि भाजनम रेशाको बढाओ जा कि शाकाहारके द्वारा ही सम्भव हे। चूँकि मास आर अडामे तो रेशा होता ही नही। अमेरिकाम जॉन रोबिन्सने एक पुस्तिका 'डायट फॉर ए न्यू अमरिका' लिखी ह। इस पुस्तिकाकी न जाने कितनी लाख प्रतियाँ बिक चुकी है और कम-से-कम १० लाखसे अधिक व्यक्ति इस पुस्तिकाको पढकर शाकाहारी हो गये है।

मासाहारके विषयमे जॉन रोबिन्सने बडे महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर किये हैं, जिनमेसे कुछ निम्न हे—

(१) विश्वम यदि सभी मासाहारी हा जायँ ता

विश्वका पेट्रोलियम पदार्थका भडार कवल १३ वर्षोक लिये पयाप्त हागा और यदि सभी शाकाहारी हा जायँ तो यह भण्डार २६० वर्षोके लिये उपलब्ध रहेगा।

(२) एक किलो गेहूँके उत्पादनम करीब २४० लीटर पानी लगता है जबकि एक किलो मासक उत्पादनम २४ ००० लीटर पानी लगता है।

(३) गेहूँमे एक किलो प्रोटीनके लिये करीब साढे तीन डॉलर (११५ रुपये) खर्च हाते हैं और इतना ही प्रोटीन माससे प्राप्त करनेके लिय तीस डॉलर अथात् १० गुणा अधिक खर्च हाता है।

(४) मास-आधारित आहारम कीटनाशक दवाआके अश ५५% पाये गये है जबकि सब्जियाम केवल ६% रहते है।

विश्व-स्वास्थ्य-सगठनने जा जानकारी दी है उनक आधारपर मासके खानेसे कैंसर, हृदय-रोग गठिया आदि राग होते है।

चारा

भारत सरकारकी अनक समितियान यह जानकारी दी है कि देशम पशुधनकी सख्या अधिक होनेक कारण जो चारा उपलब्ध है वह आवश्यकताके अनुपातम बहुत कम है। पर दुर्भाग्य है कि जा चारेके साधन दशम उपलब्ध ह उनका प्रबन्धन भी नही किया जाता। जिसका ब्योरा निम्न हैं—

चीनी मिलोम जितना गन्ना-पिराई हाता है उसका एक तिहाई भाग खोईके रूपम निकलता हे। इस खोईको भापके द्वारा हल्का बनाकर पशुओके लिय चारा बना दिया जाता है। इस विधिका बडे पैमानेपर मैक्सिको एव क्यूबामे भी व्यवहार होता हे लेकिन उल्टी दिशामे काम करनेकी प्रक्रियाके अनुसार भारत सरकार इस खोईको जलाकर बिजली पैदा करनेके लिये अनेको सुविधाएँ द रही है, पर चारा बनानेके लिये कोई बात भी नहा करता।

पहले गाँवमे तेलकी घानी हुआ करती था, जो खली बचती था उस पशुआका खिलाते थे। अब तेलकी घानियाँ प्राय समाप्त हो गया ह और तेल निकालनेके लिये बडे-बडे कारखाने लग गय हे। इन कारखानोम जो खली निकलती है उसका निर्यात कर दिया जाता हे जिसकी मात्रा २५ लाख टनतक पहुँच गयी है। खलीके निर्यातस दशको करीब ६१० करोड रुपयेकी विदशी मुद्रा मिलती है पर यदि यही खली हमारी गायाको खिलायी गयी हाती तो अतिरिक्त दूध हमें प्राप्त होता उसका मूल्य ५ रुपये प्रति लीटरके हिसाबसे करीब ७५ अरब मिलता और यदि इस दूधके पदार्थ बनाकर निर्यात किय जात ता हम डढ खरब रुपयक बराबर विदेशी मुद्रा मिलती।

खाद्यान्नकी कटाईके लिये एसे यान्त्रिकी उपकरण विदेशास मँगाये गय, जिनके द्वारा ऊपरकी बालियाँ तो काट ली जाती हैं, पर भूसा खतम छोड देते हैं। यह भूसा पशुआक लिये अति आवश्यक आहार है पर करोडा टन या तो जला दत है या फिर खताम ही सडनेके लिये छोड देत हैं।

सामाजिक वनाकरणक कार्यक्रमम भी ऐसे वृक्षोको सम्मिलित नहीं किया गया जिनसे हरा चारा भी मिल सके।

कैसी विडम्बना है कि इग्लैंडमे गायाकी हड्डीका चूरा तथा मासक कुछ पदार्थ दूध बढाने एव शरीरका माटा करनेके लिये खिलाय गये जिसके कारण बहुत-सी गायाम 'पागलपन' का राग हा गया।

हैदराबादमे इस प्रकारके मिश्रण बनानेकी एक योजना चल रही है जिसका प्रतिकार *न्यायमूर्ति* श्रीलोढाजीने मुख्य मन्त्रीको पत्र लिखकर किया है।

गोशालाओका दायित्व

अभीतक गोशालाओके कार्यक्रममे यही रहा है कि वे दूध देती तथा बूढी गायाका अपने यहाँ पाल सक लेकिन उन्होने शायद ही एसा कोई कार्य किया हा जिसके द्वारा बैलाकी उपयोगिता बढ सके। अत किसी भी गोशालाको ट्रैक्टरका व्यवहार नहीं करना चाहिये बल्कि उसकी जगह बैलोकी शक्तिका ही व्यवहार कर किसानाका भी प्रेरणा देनी होगी कि वे भी बैलाका अधिकाधिक उपयोग करे। आज सबसे बडी विडम्बना यह है कि भैंसका दूध महँगा बिकता है और गायका दूध सस्ता। जबकि होना यह चाहिये था कि गायका दूध महँगा होता और भैंसका दूध सस्ता।

गोशालाआम गाबर और गोमूत्र निकलता है, उसका व्यवहार नॅडेप-पद्धतिके आधारपर सेन्द्रिय खाद बनाकर किसानाम जागरूकता पैदा करे।

गोबरकी तरल खादका परीक्षण एव व्यवहार खासकर चारे तथा पेडोके लिये दिखाय। पञ्चगव्य बनाकर अपने कर्मचारियो एव अतिथियाको द ताकि सभी नीरोग रहे। गोमूत्रका व्यवहार कीट-नियन्त्रणक लिय किसानाको दिखाये। दूधसे बने उत्तम व्यञ्जन, दहीसे मक्खन एव घीकी जानकारी दे। जो मक्खन दहीके बिलोनेसे निकलता है उसम कुछ ऐसे सूक्ष्म जीवाणु होते हैं जो न केवल पाचनशक्तिको बढाते हे बल्कि उनका व्यवहार कैसर-जैसे रोगोस भी बचा सकता है। इसी प्रकार तक्र (मट्ठा) के गुणाका भी प्रचार कर और हो सके तो बिक्रीकी भी व्यवस्था की जाय।

अपनी आवश्यकताओके लिये भारवाहनका कार्य बलगाडियाके प्रयोगस करे एव खेती तथा चारेके उत्पादनके लिये बैलचालित सुधरे उपकरणोका व्यवहार कर। साथ-साथ जल-सिचाईके लिये भी बैलचालित रहँट या अन्य उपकरणोंका व्यवहार दिखाय। बैलाकी शक्तिका व्यवहार चारा काटने आटा-चक्की तथा अन्य ग्रामीण उद्योगाके लिय प्रदर्शन कराय ओर जहाँ आवश्यकता हो वहाँ इन उपकरणोकी उपलब्धि करायी जाय।

गोशालाआमे तलघानी लगाकर शुद्ध तेल ग्राहकाको दे एव खलीका व्यवहार पशुओके लिय करे। ताकि उनकी भी पौष्टिक तत्त्वोकी आवश्यकता पूर्ण हो सके।

गोशालाओमे भारतीय प्रजातियाके गाय, बैल साँड रखे जायँ, सकर कदापि नहीं। क्याकि सकर गायोके बछडे न तो खेतीके लिये और न ही भार-वहनक लिये उपयुक्त होते है।

खेतीमे रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकाके बदले सेन्द्रिय खाद नीम एव गोमूत्रका व्यवहार करे।

जब फसलकी कटायी होती है उस समय चारा सस्ता मिलता है परतु चारेको रखनेम भण्डारणकी कमीके कारण रख नहीं पाते। गट्ठर बाँधनेकी मशीन बन गयी है, जिसके व्यवहारसे भडारम स्थानकी आवश्यकता एक तिहाईसे भी कम हो जाती है और इस प्रकार अधिकाधिक चारा रखा जा सकता है।

घासके बीज बहुत हल्क होते हे और उन्हे बोनेमे काफी कठिनाई होती है। बहुत बडा भाग हवामे उडकर बेकार हा जाता है। मिट्टी और गोबरके साथ मिलाकर गोलियाँ बनानेका एक बहुत सहज उपाय 'भारतीय चरागाह-अनुसधान-सस्थान, झाँसी' ने बताया है उसका प्रयोग करे ओर साथ-साथ किसानोका भी ये गोलियाँ उपलब्ध कराय ताकि परती भूमिका भी व्यवहार किया जा सके।

भू-जलका स्तर दिनादिन कम होता जा रहा है, जिसके कारण गहरे नलकूप लगानेकी योजनाएँ बन रही हैं। 'कृषि-विश्वविद्यालय इदौर' ने एक बडी सरल विधि बनायी है, जिसके उपयोगसे हर खेतकी मिट्टी और वर्षाके जलका सरक्षण सम्भव है ओर इसका सबसे बडा लाभ है कि कुओ और नलकूपोका जल-स्तर बना रहता है। इस विधिको अपनाकर किसानोको भी दिखाय।

गाय-बैलाको जब कोई बीमारी होती है तो उन्हे पाश्चात्य दवाएँ अधिक दी जाने लगी हैं किंतु मनुष्य ओर मुर्गियामे तो इन दवाआका इतना कुप्रभाव हो गया है कि उनका कोई असर नहीं होता ओर छोटी-सी बीमारी भी घातक सिद्ध होने लगी है। वह दिन दूर नहीं जब पशुआमे भी इन दवाआका असर नगण्य हो जाय। अत यह आवश्यक है कि आयुर्वेदिक एव देशी औषधियाका व्यवहार अधिकाधिक किया जाय।

गोशालाआको पर्याप्त रूपसे मासाहार तथा अडाके दुष्परिणामका साहित्य रखकर बाँटना चाहिये और साथम दूध और दूधके पदार्थोंके लाभाका विवरण भी रखना चाहिये ताकि लाग मासाहार और अडाका व्यवहार न कर और दूध एव दूधक पदार्थोका व्यवहार बढाये।

यदि गोशालाआमे भी भारतीय नस्लाकी गाय नहीं रखी गयी विदेशी साँडोके द्वारा प्रजनन कराया गया तो भारतीय नस्ल समाप्त हा जायँगी और फिर पाश्चात्य पद्धतिका अपनाना पडेगा जिसके अन्तर्गत गोमासका उत्पादन बढेगा और जो गाय थाडा भी कम दूध देगी व भा बूचडखाने जायँगी जहाँतक बछडाका प्रश्न है वे तो कुछ ही सप्ताहम बूचडखानोम अपना जीवन समाप्त करग ताकि लोगोंको मुलायम मास जिसे 'व्हील' (Veal) कहते हैं बडी मात्रामे उपलब्ध हो।

गोधन (बैल) बनाम ट्रैक्टर

[एक अमरीकीका दृष्टिकोण]

(श्रीवल्लभद्रदास और छायादवा दासा)

[प्रस्तुत लेख अमेरिकासे, The International Society for Cow protection के प्रबन्ध-निदेशकद्वारा प्राप्त हुआ है जिसमे कृषि-क्षेत्रमे ट्रैक्टर और बैलाकी तुलनात्मक उपयागिताका विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा प्रयोगों एव अनुभवद्वारा यह सिद्ध किया गया है कि विदेशामे भी ट्रक्टरकी अपक्षा बैलोद्वारा की गयी खेती ही कृषिभूमिके लिये सर्वोत्तम है, अत इस लेखमें कृषिभूमिकी उर्वरता बनाय रखनेके लिये बैलोद्वारा खेती करनेपर जार दिया गया है।-सम्पादक]

क्या आपने कभी इसपर विचार किया है कि एक छाट-स ट्रैक्टरके निर्माणम आपको कितनी खनन-प्रक्रियाएँ करानी पडती है? और लोहा कायला चूना-पत्थर, मैगनीज निकल, ताँबा वाक्साइड, टीन तथा जस्ते-जैसी कितनी ही वहुमूल्य धातुआका ट्रैक्टरके बनानेमे उपयोग करना पडता है? ये धातुएँ धरतीमे प्राप्त हाती हैं। इन्ह प्राप्त करनेके लिय धरता मालाका खादना पडता है। इस खनन-प्रक्रियाम धरती माताको आपद्वारा किये-कराये गये कितने अन्याचार सहन करने पडते हैं, क्या इसपर कभी आपका ध्यान गया? इन खानामे काम करनेवाले हजारा मजदूरो कामगारा तथा कारीगराके लिये स्वयमेव नारकीय परिस्थितिका निर्माण हा जाता है और इसके जिम्मेदार भी आप ही है। यह तो हुआ ट्रैक्टर-निर्माणका पहला कदम।

इसके पश्चात् क्रम आता है इन धातुआका गलानेवाले सयन्त्राका जहाँ इन कच्ची धातुआको तोडा पीसा और खौलाया जाता है। इन विशालकाय कारखाना और फक्टरियोमे महान् नारकीय दृश्य तथा वडे पैमानेपर गदगी-ही-गदगी दृष्टिगोचर हाती है। इसस वडी मात्राम प्रदूषण फैलता है। गलानेवाल सयन्त्राक पश्चात् हम उन फक्टरियाको दखते हैं जहाँ ट्रैक्टर्सक एक-एक पुर्जेका जोडकर ट्रैक्टर वनाय जात है। यहाँकी कार्य-पणाली तो आर भी अधिक गदगी फैलानेवाली होती है।

जब ट्रेक्टर जुट-जुटाकर तैयार कर लिया गया तथा पार्किंग-स्थलपर वगैर टायराक तैयार खडा हो गया तो अब प्रश्न उठता है कि इन टायराको बनानेवाला पदार्थ आया कहाँसे? पता चला कि लाग उष्ण कटिबन्धीय देशाम पहुँचे और उन्होंने कामगाराको कुछ थाडस पैस दकर रबरक सुन्दर वृक्षापर कुल्हाडियाँ चलवा दीं, परिणामस्वरूप लेटेक्सके रूपम उन सुन्दर वृक्षोका वनस्पति-क्षीर उनके रक्तके समान वह निकला और फिर उसीसे टायर बनाया गया।

अब हमारा ट्रैक्टर पार्किंग-स्थलपर अपने टायरोंपर खडा है। अब हम सोचे कि यह चलेगा किससे? इसे चलानके लिये तो आपको पट्रोल अथवा डीजल ही लेना पडेगा और वह वस्तु इतनी कठिन होती जा रही है कि शायद इसकी प्राप्तिके लिये तो युद्धतक करना पड जाय। जहाज आपका पेट्रोल समुद्र पार करके लायेगा तो वह आधा पेट्रोल समुद्रम छलका भी सकता है।

आज अमेरिकामे अन्य उद्योगोकी अपक्षा कृषि-उद्योगमे ही अधिक पट्रोल काममे लिया जाता है, वह भी उसका फार्म मशीनरीपर जो कि सम्पूर्ण ऊर्जा-उपयोगका लगभग $\frac{3}{4}$ हिस्सा है।

जा तेल बचता है वह रिफाइनरी अर्थात् परिष्करण-शालाका भज दिया जाता है। यदि आपने कभी किसी ऐसे नगरक मध्यसे यात्रा की है जिसम रिफाइनरी है तो आप वहाँकी बदबूभरी हवासे भी परिचित हाग, वहाँका तो पानी भी इतना अधिक गदा हो जाता है कि आप उसे कभी भी पाना पसद नहीं करग।

अब हमार कृषकके पास उसका ट्रैक्टर स्टील बेल्टेड रेडियल टायर्स तथा पट्रोलके साथ तैयार है। वह अपना इजन चालू करता है और सोचता है कि इस ट्रैक्टरसे मैं ५० बैलाक बराबर काम कर लूँगा तब वह अपने बैलाकी तरफ दखता है और कहता है कि 'अब मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है मेरे पास मेरा ट्रैक्टर है मेरा पेट्रोल है, अब तुम्हारा स्थान कसाइखाना है।' इस प्रकार, जब आप

ट्रैक्टरको जन्म देते हैं तो उसका सीधा मतलब हुआ गाय-बैलोको कसाईखाने भेजना और तब आप अपनेको गाय-बैलोकी हत्याके पापका भागी बनाते हैं।

जो लोग कसाईखानेमे काम करते हैं, उनकी हालत बहुत खराब होती है। अमेरिकी सरकार भी स्वीकार करती है कि कसाईखानोका काम कारखाना या खदानाके कामसे भी अधिक भयकर और नैतिक पतन करनेवाला है।

कितु अमेरिकाका किसान यह सब कहाँ सोचता है, वह तो सोचता है कि अब मुझे उन बैलोको कुछ भी खिलाना नहीं पडेगा, अब उनकी खुराकका हिस्सा मेरी बचत होगी। और यह सोचकर वह अपने बैल कसाईखानेको बेच देता है।

तब वह अपने हरवाहाकी ओर देखता है, जो पहले उसके बैल हाँकते थे तथा फल-सब्जियाँ और अन्न उगाते थे, अब वह उनसे कहता है—'भाई! अब तो मैं अपने बैल बेच चुका हूँ, उन्हे मरवा चुका हूँ। अब मेरे पास मरा ट्रैक्टर है, इसलिये मेरे पास तुम्हारे लिय कोई काम ही नहीं है अब तुम जाओ, फेक्टरियोमे अपने लिये काम ढूँढो, मशीने बनाओ।'

अब कृपक अपने ट्रैक्टरको खेत जोतनेके लिये निकालता है और उसका पेट्रोलभक्षक एजिन चालू होकर वायुमण्डलको प्रदूषित करने लगता है। उसके भारीभरकम स्टीलबेल्टेड टायर धरतीको दबाने लगते है, जिससे पौधोकी जडोको बढने-फैलनेम कठिनाई होती है। अब उसके पास इस वसुधरा—धरतीको उर्वर बनानेवाली गोबरकी खाद भी नहीं है, इसलिये मजबूरीमे वह महँगे रासायनिक उर्वरकोका उपयोग करता है जो प्राकृतिक गैसकी बडी लागतसे बनाये जाते हैं। ऐसी फसलोके उगाये जानसे धरतीका जैविक पदार्थ अपने-आप कम हो जाता है जो नमीका भण्डार होता है। ऊपर-ऊपरकी मिट्टी पानीके बहावके द्वारा नदियाम बह जाती है और जो कमजोर मिट्टी रह जाती है, वह कमजोर पौधे ही उगाती है, इसलिय इनमे खर-पतवार उग आते हैं, साथ ही कीडे तथा बीमारियाँ भी लग जाती हैं। इसलिये किसानका कीटनाशकाका उपयोग करना पडता है जो धरतीसे नीचे उतरकर पानीकी अन्तर्धाराओको प्रदूषित कर देते हैं।

सारे ससारमे उर्वरक खादोका उपयोग जो १९५० म केवल १४ मिलियन टन था वह १९८९ म १४३ मिलियन टन तक पहुँच चुका है अर्थात् सीधा दस गुनेसे भी अधिक। सम्पूर्ण भूमण्डलपर नाइट्रस आक्साइडकी मात्रा बढ जानसे ६ प्रतिशत ऊष्मा बढ चुकी है। तो फिर इसका विकल्प क्या है? गाय अपने सम्पूर्ण प्रजननकालम ५० प्रतिशत अर्थात् आधे तो नर-बछडाको ही जन्म देती है। गौ-सरक्षणके लिये, जबतक हम बैलोको काम नहीं दगे कि हम उनसे कौन-सा और कैसा काम ले, हम उन्हे कतलसे नहीं बचा पायेंगे। पशुआके प्रति केवल दया-भाव बतलानेसे काम नहीं चलेगा।

गौ माताके उदरकी फैक्ट्रीसे उत्पन्न होनेवाले हमारे बैल भगवान् कृष्णद्वारा बतलाये और दिये गये हमारे ट्रैक्टर्स हैं। इस फैक्ट्री अर्थात् गायद्वारा न तो किसी प्रकारका प्रदूषण होता है और न ही काम करनेकी नारकीय स्थितियाँ बनती हैं इनका सारा कार्यकलाप प्रकृतिके नियमोके अनुसार चलता है, जिसकी व्यवस्था स्वय भगवान् कृष्णने की है।

बैल तो सदाचारके सिद्धान्तोका प्रतीक है तथा गाय माँ वसुधरा—धरतीकी प्रतिनिधि है। जब भी गाय और बैल प्रसन्नता तथा प्रफुल्लताकी मुद्राम दिखायी द तो समझ लो कि सम्पूर्ण विश्वके मानवमात्र भी उसी परिपूर्ण प्रसन्न-मुद्रामे हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि कृषि-क्षेत्रमे बैल ही अन्नोत्पादनम सहायता करता है और गाय अमृतके समान दूध देती है जो कि ससारकी समस्त भाज्य-सामग्रीमे एक करामाती चमत्कार है। मानवसमाज भी इन दो प्रमुख पशुआका लालन-पालन पूरी सावधानीके साथ करता है, जिससे कि वे सर्वत्र प्रसन्नतापूर्वक विचरण कर सके।

इस बैलरूपी ट्रैक्टरसे कहीं भी रचमात्र प्रदूषणका भय नहीं है क्याकि य स्वय अपनी भाजनरूपी ऊर्जाका भण्डार यानी जौ जई और घास खुद पैदा कर सकते हैं तथा इनक लिये हमार द्वारा दिया गया दाना भूसा छिलका खली भी उपयोगी है क्याकि यही सब गोबर-गामूत्रक रूपमे प्राप्त होता है। गोबर-गोमूत्र हमारे लिये कितने उपयोगी हैं यह बात छिपा नहीं है। गाबरसे ता बायागैस भी निकाली जा सकती है, जो एक स्वच्छ एव साफ ईंधन

है। बायोगैस निकल जानेके बादका अवशेष पदार्थ तो सर्वश्रेष्ठ उर्वरक तथा धरतीको सँवारनेवाली वस्तु है। वधगृहोंसे निकलनेवाले उपोत्पादनोंका जैविक पदार्थोंके बनाने-हेतु उपयोगमें लेनेकी कोई जरूरत नहीं है।

हर एकको किसी दूसरेपर निर्भर होना पड़ता है। किंतु हम किसपर निर्भर रहते हैं, इसीपर हमारे जीवनकी गुणवत्ता निर्भर करती है। श्रीमद्भगवद्गीतामें भगवान् कृष्णने कहा है—'अपने हर क्रियाकलापमें केवल मुझपर ही निर्भर रहो और हमेशा मेरे संरक्षणमें अपना हर कार्य करो। इस प्रकारकी भक्तिमय सेवामें मेरे प्रति अपनी कर्तव्यनिष्ठ चेतना सदा बनाये रखो।'

चूँकि हम सब अपने गोसंरक्षण अन्तारार्ष्ट्रिय संघके अन्तर्गत किसान हैं, हम अपने आपसे ही पूछते हैं कि हम अपनी सम्पूर्ण निर्भरता कृष्णपर कैसे रख सकते हैं? यदि हम ट्रक्टरपर निर्भर होते हैं तो इसका अर्थ होगा कि हम मानव-निर्मित व्यवस्थापर निर्भर होते हैं। ट्रैक्टरको बनानेके लिये ही तो खदानों, गलानेवाले संयन्त्रों, फैक्टरियों, रिफाइनरीज तेल-कूपों आदिका सहारा लिया जाता है जो कि अनर्थकारी तथा अनुचित लाभ उठानेवाले घोरतम शोषणकारी उद्योग हैं।

ऊर्जाके हमारे दोनों प्रमुख स्रोत प्राकृतिक गैस और तेल हैं एवं हम अपनी तकनीकी-प्रगतिके लिये भी इन दोनोंपर ही पूरी तरह निर्भर हैं। न्यू हैम्पशायर विश्वविद्यालयके काम्प्लेक्स सिस्टम्सके अनुसंधान-केन्द्रपर किये गये वैज्ञानिक अध्ययनसे यही निष्कर्ष निकला है कि सन् २०२० तक तेल और प्राकृतिक गैसके भण्डार जो हमारी घरेलू आवश्यकताओंकी पूर्ति करते हैं लगभग समाप्त हो जायँगे। यदि कृषि-तकनीकीके आधार बदले नहीं गये तो तेल-भण्डारका १० प्रतिशत और प्राकृतिक गैसका ६० प्रतिशत जो संयुक्तराज्य अमरिकामें खर्च किया जाता है, उसे खाद्य-उत्पादनके काममें लेना पड़ेगा। समस्याकी जटिलता इसीलिये बढ़ गयी है क्योंकि कृषि-तकनीकीका आधार ही प्राकृतिक गैस तथा तेल है और इनका स्थान कोयला ले नहीं सकता है और ईंधन तथा ऊर्जाका विकल्प तेल और गैसके स्थानपर कोयलेको ही माना जाता है।

एक ऐसी कृषि-पद्धति जो भूमिगत ईंधनपर इस प्रकारसे निर्भर है, वह हमेशाके लिये क्या कुछ लंबे समयतकके लिये भी चल नहीं पायेगी।

हर समाजमें जीवन-यापनकी समस्याएँ प्रायः एक समान ही हैं—भोजन कहाँसे मिले? रहनेके लिये घर कैसे मिले? मैं अपना निर्वाह किस प्रकारसे करूँ? इन आवश्यकताओंकी पूर्ति किस प्रकारसे की जाती है, बस यही सब निर्धारित करता है किसी भी समाजकी जीवन-शैलीको।

अतः यदि हम अपने जीवनकी आवश्यकताओंकी पूर्ति बैलोंकी शक्तिका उपयोग करते हुए धरतीसे सहयोग बनाये रखकर करते हैं तथा ट्रैक्टरद्वारा धरतीका शोषण नहीं करते हैं तो तभी हम सद्भावनापूर्वक शान्तिमय जीवन जी सकते हैं। परिणामस्वरूप तभी यह धरती विपुल उत्पादन भी देगी और यदि हम धरतीके स्रोतोंपर वर्तमान-जैसा बलात्कार तथा लूट-खसोट करते रहे और अपनी जरूरी तथा गैरजरूरी आवश्यकताओंका दोहन करते रहे—अविवेकपूर्ण दोहन करते रहे तो हमें हर प्रकारके दुःख झेलने पड़ेंगे चाहे वह हवाका प्रदूषण हो अथवा पीनेके पानीका या भूक्षरण अथवा रेगिस्तानीकरणका हो अथवा अनेकों जीव-जन्तुओं तथा पशु-पक्षियोंके विलोपी-करणका ही क्यों न हो।

किंतु यदि हमने बैलोंपर निर्भर रहते हुए उन्हें काममें लेना जारी रखा तो इसका अर्थ होगा कि हम धरतीके साथ सहयोग कर रहे हैं और परिणामस्वरूप हम भगवान् कृष्णद्वारा दी गयी व्यवस्थापर चल रहे हैं। हम यह सोचकर संतुष्ट भी हो सकते हैं कि कृष्ण हमारा ध्यान रखते हुए हमारी रक्षा भी कर रहे हैं। इसके अलावा हमारी आध्यात्मिक प्रगतिके लिये भी हमारे इस प्रकारके अच्छे सम्बन्ध निहायत जरूरी हैं। किसी ट्रैक्टरके साथ तो किसी भी प्रकारके जीवन्त-सम्बन्धका विकसित करना कठिन ही नहीं असम्भव भी है।

गोसंरक्षण-हेतु बनाये गये 'अन्तारार्ष्ट्रिय गोरक्षण-संघ' के प्रबन्ध-निदेशकका तो यहाँतक कहना है कि 'मैंने स्वयं ट्रैक्टरोंद्वारा खेती की है, इसके एंजिनसे उठनेवाली हृदयविदारक गर्जना तो मेरे कान ही फोड़ देती थी, डीजलसे छोड़ी गयी बदबू भी दम घोंटती थी। वास्तविकता

तो अब यह है कि ट्रैक्टरका विचार आते ही मेरा सिर दर्दसे फटने लगता है। इन सब विकारोंके अलावा ट्रैक्टरमे जो सबसे बुरी बात है, वह है उसपर घटो बैठे रहकर अपनी हड्डी-हड्डीको चकनाचूर कर लेना, मेरे लिये यह सब मन, मस्तिष्क, आत्मा तथा शरीरको भारी कष्ट देनेवाला अनुभव है। मेरा तो यह साफ-साफ कहना है कि ट्रैक्टरका उपयोग करना यानी सारे शरीर और मन तथा आत्माको ही चकनाचूर कर लेना है। दिनभर कार्य करनेके बाद जब मैं ट्रैक्टरकी सीटपरसे उतरता था तो मुझे लगता था कि जैसे मैं किसी लोहेके जानवरके ऊपर बैठकर अब नीचे उतर रहा हूँ।'

'ट्रैक्टरकी निर्भरता कोई ऐसी निर्भरता नहीं है जिससे किसी प्रकारका आध्यात्मिक लाभ मिले। इसलिये अब तो मैं केवल गीता और व्रज नामवाले दो बैलोपर निर्भर हूँ। ये दो सशक्त तथा चुस्त-दुरुस्त भूरे रगके स्विस बैल ही मेरे सहारे है और ये दो जीवित हस्तियाँ कृष्णके ही अङ्ग-प्रत्यङ्ग रूप हैं। स्वामी महाराज श्रीभक्तिवेदान्त, जो हमारे आध्यात्मिक गुरु तथा इस्कान (अन्ताराष्ट्रिय कृष्ण-चेतना) नामक अन्ताराष्ट्रिय सगठनके सस्थापक हैं, उन्होने तो हमे यहाँतक कहा है कि बैल तो मानवमात्रका पिता है, क्योकि वह मानवमात्र तथा अपने साथी पशुओके लिये भी खेतोसे अन्नोत्पादन करता है—उसका अपना वही तरीका है जैसा कि एक पिताका अपने बच्चोके प्रति है।'

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि क्या आजकल ट्रैक्टरोकी अपेक्षा बैलोसे खेती करना अकुशलताका प्रमाण नहीं है? तो उत्तरमे कहना है कि नहीं भाई—बिलकुल नहीं। सत्य तो यह है कि ट्रैक्टर बनाम बैलोद्वारा खेती किये जानेपर जितने भी अध्ययन आजतक किये गये हैं, उन्होने यही सिद्ध किया है कि फसलोकी हर इकाईपर आनेवाली कीमतोके आधारपर तो पशुओद्वारा खेती करना ही फायदेमद पडता है विशेष कर भारतमे।

यह ठीक है कि एक ३५ हार्सपावरका ट्रैक्टर एक बैलकी जोडीकी अपेक्षा दस गुनी जुताई कर सकता है, किंतु ट्रैक्टरके खरीदनेमे बैलोकी अपेक्षा बीस गुना धन अधिक लगाना पडेगा। यदि ट्रैक्टरको एक वर्षमे ९०० घटोसे अधिक नहीं चलाया गया तो ट्रैक्टरपर प्रतिघटेका खर्च बैलोकी अपेक्षा काफी अधिक आयेगा। इसका अर्थ यही हुआ कि ट्रैक्टर केवल बहुत बडे-बडे खेतोपर ही बैलोकी अपेक्षा बेहतर कार्य कर सकता है।

आजकी ट्रैक्टर-तकनीकीके द्वारा काम तेजीसे तो किया जा सकता है, परतु कृषि-भूमिके लिये इसके परिणाम सुखद नहीं हैं। बैल जो धरतीके साथ सामञ्जस्यपूर्वक कार्य करता है, वह धीरे-धीरे कार्य करता है, किंतु उसके परिणाम आगे चलकर बेहतर सिद्ध होते हैं। बैलकी गति धीमी होनेसे धरतीकी जोती हुई जमीन तथा उसके अन्य प्रतिभाशाली गुण, जो सबके लिये मुफ्तमे प्राप्त होनेवाले वरदान हैं, सभीको मुफ्तमे मिलते रहते हैं। इससे जीवनमे सादगी आती है, मनको शान्ति मिलती है, अत मनुष्य आध्यात्मिक चिन्तनकी ओर अपना मन अवस्थित कर सकता है।

हर समाजको इस प्रकारकी स्वतन्त्रता है कि वह अपने जीवनकी आवश्यकताओकी पूर्ति किस प्रकारसे करे। ट्रैक्टरका उपयोग करनेसे तत्कालका समाधान तो मिल सकता है, जिसे प्रेयस् कहते हैं, किंतु इसके लबे समयके परिणामो यानी श्रेयस्के बारेमे गम्भीरतासे विचार किया जाना चाहिये। क्या हम यह पसद करेगे कि भावी पीढियोके लिये हम सारे पर्यावरणको ही प्रदूषित करके रख दे? क्या हम धरतीके सतुलनको ही नष्ट करना चाहते हैं? क्या हम यही चाहते हैं कि गायोके सुन्दर-सुन्दर बछडे-बछडियाँ कतलघरोमे कतल-हेतु भेजे जाते रहे, क्योंकि उनके लिये हमारे पास कोई काम ही नहीं है? क्या हम यह पसद करेगे कि जो लोग अच्छे सात्त्विक माध्यमोसे अपनी रोजी-रोटी कमा लेते थे अब वे नारकीय परिस्थितियोकी अनर्थकारी फैक्टरियोमे भेज दिये जायँ। और वह भी केवल इसीलिये कि अब बैलोकी जगह ट्रैक्टर्स आ गये हैं। जरा इस परिस्थितिपर गहनतासे सोचिये और विचार कीजिये कि हम क्या चाहते हैं— बैल या ट्रैक्टर।

[अनु०, वी० आर० ठाकुर, एडवोकेट]

हमारा गोधन

(श्रीपरिपूर्णानन्दजी वर्मा)

जिसमे लेशमात्र भी हिदुत्व हे वह अपने देश ही नहीं, ससार भरकी गोमाता तथा गोवशको पूजनीय, उपासनीय तथा रक्षणीय मानेगा, पर आजकलके युगमे जब धर्म भी आर्थिक तराजूपर तौला जा रहा है, गोभक्त भारतके नये विचारवाले इसका आर्थिक पहलू भी जानना चाहेगे। हम हिन्दुओमे कितना पतन होता जा रहा है इसकी प्रत्यक्ष मिसाल तो हिन्दू-मन्दिराम पूजित मूर्तियोका हिन्दूद्वारा ही चारी आर चुपचाप, चोरीसे विदेशी बाजारम गैर हिन्दुआके हाथ बेच देना भी है। हमने स्वय अपनी विदेश-यात्राआमे हिन्दू युवकोको विदेशोम गो-मास खाते देखा है और जब मने ऐसोस पूछा कि 'इतना अनुचित कार्य क्यो करते हो? तो उत्तर मिला कि 'देशी गाय मना हे, विदेशी नहीं।' मैं सर पटककर भी उन्हे समझा न सका। वैसे ही जैसे लन्दनमे एक मुस्लिम भाजनालयमे हमने शुक्रवारके दिन सूअरका मास बिकते देखकर पूछा कि 'अपने धर्मके विरुद्ध यह निकृष्ट काम क्यो कर रहे हो' ता उत्तर मिला—'यह तो व्यापार हे। हम खाते नहीं, खिलाते हैं।' जब मनोवृत्ति इतनी गिर जाय तो आस्था और विश्वास कहाँतक टिक सकेगे।

भारतमे सभी प्रदशोमें गोवधपर प्रतिबन्ध नही है। उत्तरप्रदेशम १९५५ से ही इसकी कानूनन सख्त मनाही है, पर पडासी पश्चिम बगाल हा या सुदूर केरल, वहाँ यह जघन्य प्रथा अभी भी चालू है। उत्तरप्रदेशके बिहारसे सटे नोबतपुर आदि सरहदापर नित्य हजारोकी सख्याम गाय-बछडे बैल छिपकर पश्चिमी बगाल और फिर उधरसे बागलादेश तथा पाकिस्तान भेजे जाते ह। इन सरहदोपर ऐसे केन्द्र बन गय है जहाँ चुपचाप गोहत्या कर मासके पैकेट भी बाहर जाने लगे हैं। बिहार तथा उत्तरप्रदेशके कई पशु-मेले ऐसे व्यापारके केन्द्र बन रहे हें। इन मेलाम देशी गाय ८००-१००० रुपयेम बिकती हैं तथा विदेशी बाजारमे ३० ००० से ३५ ००० रुपयेतक एकका दाम लगता है। शासनकी सख्तीके बावजूद यह व्यापार चल रहा है। हमार गोधनका कितना ह्रास हो रहा है इसका हम अभी अनुमान भी नहीं है।

केन्द्रीय तथा कम-से-कम ६ प्रादेशिक सरकारें गोवशकी वृद्धि तथा उनकी नस्लमे सुधारके लिये प्रयत्नशील हैं। १९९०-९१ म देशमे ऐसे १७८ केन्द्र थे, और भी बढ रहे हैं, जिनमे गोवशका कटना मना होनेपर भी चोरी-छिपे गोवध हानेकी भी शिकायत है। पशुधनकी रक्षाके लिये भारतमे १९८४-८५ मे १४,१०० पशु-चिकित्सालय थे, १९९१-९२ मे इनकी सख्या २०,३१० हो गयी थी। पशु-रक्षणके लिये चल-चिकित्सालयोकी सख्या भी इसी अवधिमें १८,४०० से बढकर १९,३२० हो गयी थी। यद्यपि यह आवश्यकतासे कम सख्या है तथा अनेक प्रदेश पशु-सरक्षणमे जितनी रुचि लेनी चाहिये नहीं ले रहे हैं। फिर भी इस प्रकारके प्रबन्धसे किसानाको काफी लाभ पहुँच रहा है।

दुग्ध-उत्पादनमे वृद्धिके लिये १९९४ के वर्षमे ही २०० से अधिक दुग्ध-विकास डेयरी सहकारी सस्थाएँ हैं, जो वैज्ञानिक-आधुनिक ढगसे काम कर रही हैं तथा इनका मिलाकर ३१ दिसम्बर, १९९१ को देशमे दुग्ध-उत्पादन (गोधन) के लिये ६४ २०० सहकारी दुग्ध-विकास केन्द्र थे, जिनके द्वारा देशके ७९ लाख फार्मके किसान-परिवार लाभ उठा रहे थे—जबतक इनकी सख्या ८ गुनी अधिक न हो जायगी, समूचे कृपक-वर्गको लाभ नहीं होगा।

गोधन

१९८७ तकके आँकडे जो १९९३ मे मईके महीनेमे प्रकाशित हुए थे, उसके अनुसार देशम १९ करोड ९७ लाख गाय-बैलकी सख्या थी, भैंसे ७ करोड ७० लाख थीं। इस सख्यासे एक बात प्रकट है—१९५१-१९६१ के बीचम दूध देनेवाली भैंसाकी सख्या गौसे अधिक हो रही थी जिसमे अब रुकावट आयी है तथा गावश बढ रहा है। उदाहरणके लिये उत्तरप्रदेशके तीन जिलोकी मिसाल है—सरकारी आँकडेके अनुसार १९६१ म आगरामे २,७४ १४४ गायें तथा ९ १०,२६८ भैंस थीं, उसी वर्ष

मेरठमे ५,५५,६३७ गौएँ तथा ८,४४,८१० भैसे तथा लखनऊमे ६,३०,३२८ गौएँ तथा ६,५६,०६७ भैस थीं। धीरे-धीरे गोवशकी वृद्धि होती गयी है। १९८७ मे देशमे ४ करोड ५७ लाख भेडें तथा ११ करोड २ लाख बकरियाँ थी। इस सख्यासे प्रकट है कि देशके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये तथा पोषणके लिये असली आधार गौ ही है। भारतमे सबसे अधिक गौ तथा गोवश उत्तरप्रदेशमे है। १९७८ मे कुल पशु-धन ५,२३,४५ ००० था तथा १९८८ म ६,००,७५,००० था, जिसमे गोवशकी स्थिति इस प्रकार थी—

	१९७८	१९८८
गोजातीय	२,५७ ५३,०००	२,६३,२३,०००
दूध दे रही गौ	६५,७५,०००	६८,३०,०००
दूध न दे रही	२९,८२,०००	२५ ८४,०००

—इसी अवधिमे दूध देनेवाली भैंसाकी सख्या ७२,१७,००० से बढकर ८९,५७,००० हो गयी थी। इस सख्यासे प्रकट है कि हमारे प्रदेशमे, जैसा अन्य प्रदेशामें है, गोवश महिष-कुलसे कहीं कम है। १९८८ मे महिष-कुलकी सख्या १,८२,३९,००० थी। इस अवधिके बादके सरकारी आँकडे अभी प्राप्त नहीं हैं। पर हमे चिन्ता होनी चाहिये कि हमारा गोवश अभी भी महिष-वशसे कम क्या है? दूध देनेवाली भैंसोकी सख्या १९७८ म ३९,६७,००० तथा १९८८ में ५४ २६,००० थी। गौके दूधसे बढकर पोषक तथा पवित्र और कोई दूध नहीं है, यह तो विज्ञानसे सिद्ध है। अत गोवशकी विना आशातीत वृद्धि किये न तो प्रदेशका स्वास्थ्य सुधरेगा, न मस्तिष्कको वह रस मिलेगा जिससे उसकी असली पुष्टि होती है।

गो-रक्षक

गो-रक्षा तथा सेवा आध्यात्मिक विषयसे उठकर शासकीय विषय कौटिल्यके अर्थशास्त्रम मिलता है, जिसमे 'गो-घातक' को दण्डनीय कहा गया है। सम्राट् अशोकने पशु-हत्याके साथ ही गो-हत्याकी सख्त मनाही की थी। गोवशकी प्रतिष्ठा तो भारतमे यूनानी नरेश सेल्यूकसने (ईसवी-पूर्व ३००-२८१) भी की थी। उसने अपने सिक्कोपर सींगवाला बैल बनवा रखा था। गो-रक्षाको देशव्यापी अभियान बनानेका कार्य तो मौर्य साम्राज्यके पतनके बाद शुग ब्राह्मण शासकोने अपने ३५ वर्षके शासनमें किया था। पर, नीतिशास्त्रमे भी इसे सम्मिलित करनेका कार्य सातवीं सदीमे शुक्रने शुक्रनीतिमे किया था। भारतम एकमात्र अकबर महान् ऐसा नरश था (सन् १५४२-१६०५) जिसने गो-हत्या करनेवालोको प्राणदण्डकी सजा घोषित कर दी थी और कई लोग इस अपराधमे मारे गये थे। अकबरके हिन्दू राजपूत-पत्नी जोधाबाईक पुत्र तथा दो हिन्दू-क्षत्रियाणियाके पति जहाँगीरन इस आदेशको रद्द किया था। वह कट्टर हिन्दू-विरोधी था।

राजस्थानके मरुप्रदेशकी अर्थव्यवस्थाका मूलाधार—गाय

(श्रीभँवरलालजी कोठारी)

अनेक विविधताआको अपनेमे समेटे हुए मरुप्रदेश राजस्थानका अपना एक विशिष्ट स्थान है। यहाँ एक आर अरावलीकी पहाडियाँ हैं, चम्बलकी घाटियाँ हैं, वन हैं और बीहड हैं तो दूसरी ओर थार मरुस्थलका वीरान क्षेत्र है, रेतीले धोरोकी धरती है, लूणी-जैसी सूखी नदियाँ हैं, पानीको तरसते पेड-पौधे है। पर इस बाह्य विषमतामे भी यहाँ एक आन्तरिक समता व्याप्त है। मरु-क्षेत्रमे पानीका अभाव है, पर यहाँकी दूध-घीकी मन्दाकिनीका अजस्र प्रवाह अनेक कस्बा नगरो और महानगराको भी आप्लावित करता है। अक्सर बरसात नहीं हाती पर मामूली बूँदा-बाँदीसे ही शुष्क रेतीली धरतीम 'मतीरे'-जैसा मिसरी-घुला हुआ पौष्टिक पानीदार फल उपजता है। 'सेवण' 'धामण'-जैसा पौष्टिक चारा 'खेजडी' 'बोरटी'-जैसे सर्वोपयोगी कल्पतरु-सदृश चारा-वृक्ष और 'राठी' 'थारपारकर' नागौरी-

जैसी दुधार कामधेनुके समान उत्कृष्ट गौकी नस्ले इस प्रदेशको प्रकृतिकी अनूठी देन हैं।

'गोधन' आज भी हमारे गाँव और गरीबका जीवनाधार है। यह ऊर्जा, रासायनिक उर्वरक, जहरीले कीटनाशक तथा पर्यावरण-प्रदूषणके विश्वव्यापी सकटसे मुक्ति दिलानेवाला अमोघ उपाय है और स्वावलम्बन, स्वदेशी और विकेन्द्रित अर्थव्यवस्थाकी कुजी है। ग्रामोदय तथा सर्वोदयकी लक्ष्य-प्राप्ति एव ग्राम-राज एव राम-राजकी स्थापनाके स्वप्नको साकार करनेवाली सजीवनी-शक्ति 'गोधन' ही है।

इस यथार्थको व्यवहारमे बदलनेके लिये 'गो-ग्राम-विकास-योजना' के कुछ बिन्दु कार्य-योजनाके रूपमे यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

१-गोहत्या-बदी प्रभावी कानूनके साथ-साथ गोपालन एव गोसवर्धन-हेतु प्रत्येक ग्राम-पचायत, तहसील, जिला और प्रान्त-स्तरपर चार-पाँच सौ एकडसे लेकर चार-पाँच हजार हैक्टेयरतकके गोसदन जलस्रोतोके निकट सक्रिय गोशालाओ एव 'गो-ग्राम-विकास-परिषदा' की देख-रेखमे सस्थापित तथा सचारित किये जायँ जिनमे—

(१) पचायत, तहसील जिला, प्रान्त अथवा क्षेत्रके बूढे, बीमार गोवशके सरक्षण एव प्रजनन-योग्य गोवशके सवर्धनके अलग-अलग नस्लोके अनुसार विभाग हो।

(२) चरागाहोका विकास चारा-वृक्षारोपण एव हरे चारेका उत्पादन, भण्डारण तथा सुलभ मूल्योपर गोपालकोका वितरणकी समुचित व्यवस्था हो।

(३) आस-पासके कस्बा नगरोमे गोरस-भडारोके मार्फत दूध-वितरणकी और घी मक्खन पनीर आदि गोरस-निर्मित पदार्थोके विकेन्द्रित स्तरपर उत्पादन-वितरणका अनुकूल सुविधाएँ हो।

(४) गोबर-गोमूत्रसे बायोगेस ऊर्जा जैविक उर्वरक रासायनिक विषाक्ततासे मुक्त कीटनाशक तथा शुद्ध आयुर्वेदिक ओषधियाँ बीजाको उपचारित और सस्कारित करनेकी विधिया आदिपर वैज्ञानिक पद्धतिसे कार्य शोध अनुसधान-प्रयोग परीक्षण आदि कृषि-विश्वविद्यालया तथा पशुपालन महाविद्यालयोको साथ जोडकर प्रोत्साहित करनेका विभिन्न स्तरापर उपक्रम हो।

२-राज्य-स्तरपर भारतीय देशी अच्छी नस्लके बछडे, बछडियाँ, साँड, गाये, बैल आदिकी उपलब्धि सुलभ कराने तथा नस्ल बिगाडनेवाले नकारा, वृद्ध बीमार साँडोको प्रजनन-कार्यसे हटानेकी व्यवस्था की जाय।

३-गायके अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एव ग्राम-आधारित विकन्द्रित स्वरोजगार-मूलक स्वावलम्बी व्यवस्थापर महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोमे अध्ययन अध्यापन तथा शोध-अनुसधानका समुचित प्रबन्ध कराया जाय।

४-साथ ही पश्चिमी राजस्थानके थार मरुस्थलीय जैसलमेर जिलेके सीमाञ्चल-क्षेत्रमे सेवण-जैसी पौष्टिक घासके हजारा किलोमीटरमे फैले प्रकृति-प्रदत्त चरागाहमे ४-५ हजार हैक्टेयर भूमि राज्य-सरकारसे प्राप्त कर वहाँ उपलब्ध राजस्थान नहरके जलसे छिडकाव-पद्धतिद्वारा सेवण-चरागाहका विकास किया जाय। चारा-वृक्षोका व्यापक वृक्षारोपण चारा-भण्डारण सुलभ मूल्योमे चारा-उपलब्धि एव गोपालन गो-सवर्धनकी आधुनिकतम सुविधाओसे युक्त गो-बस्तियाँ बसायी जायँ।

इस हेतु प्रान्तीय स्तरपर 'गो-रक्षण-सवर्धन-बोर्ड' अथवा 'गो-ग्राम-विकास-परिषद्' या निगमका गठन अत्यावश्यक है। जिसमे सरकारी अधिकारियाके साथ गोसेवा, विकास शोध, अनुसधान आदि कार्योमे सलग्न स्वयसेवी सस्थाआके प्रतिनिधिया अथवा विशेषज्ञोको प्रमुखतासे स्थान दिया जाय।

यह एक व्यापक प्रयोगात्मक कार्य होगा। इससे हजारो गायोके लिये गोसदनाकी एव नस्ल सुधारनेकी समुचित व्यवस्था हो सकेगी। गोरस-गोमयके अधिकतम उपयोगसे गोधनपर आधारित प्रदूषण-मुक्त, स्वावलम्बी स्वदेशी अर्थव्यवस्थाको मूर्तरूप देने और गोपालनको लाभकारी उद्योग बनाकर, बिना अधिक लागतके लाखो लोगोको गोबर-गोमूत्रके आधारपर स्वरोजगार रासायनिक विषाक्ततासे युक्त प्रदूषणसे मुक्ति मिलेगी और गौपर आधारित सात्त्विक सस्कृतिकी पुन स्थापना की जा सकेगी। साथ ही थार मरु-क्षेत्रका रूपान्तर कर सीमाञ्चलकी सुरक्षा भी की जा सकेगी।

——॥-——

गाय एवं गोवंश

(श्रीदीनानाथजी झुनझुनवाला)

यह हार्दिक प्रसन्नताकी बात है कि गीताप्रेसद्वारा वर्ष १९९५ई० मे 'गोसेवा-अङ्क'का प्रकाशन किया जा रहा है। प्रसन्नता इसलिये है कि आज हमारे देशम गोसेवा, गोपूजा, गारक्षा आदिपर पुनर्विचार करनेकी आवश्यकता है। आज गाय, गोवश एव गोदुग्ध-उत्पादन-लाभ आदिपर भारतमे ही नहीं अपितु विश्वमे इतने शोध-कार्य हो रहे हैं कि इसके महत्त्वका प्रकाशन आवश्यक हो गया है।

गाय, गङ्गा, गीता एव गायत्री हमारे देशमे प्राचीन कालसे ही सभ्यता एव सस्कृतिके प्रतीक रहे है। ये चारो चीजे हमारे तन-मनमे बसी हैं। गायका दूध हमारे तन-मनको पुष्ट करता है, गङ्गा हमारे तन-मनको निर्मल करती है, गीता हमे सोद्देश्य एव सार्थक जीवन जीनेकी कला बताती है, गायत्री-मन्त्र सूर्यकी उपासनाका मन्त्र है और भगवान् भास्कर ही जीवमात्रके जीवनके स्रोत हैं।

हमारे देशकी सभ्यता एव सस्कृतिसे गाय क्यों जुडी है इसपर विचार करनेकी आवश्यकता है। आजके शिक्षित वर्गको केवल श्रद्धा-विश्वासकी बात समझम नही आती। उसे तार्किक ढगसे गायकी उपयागिता बतानेसे समझमे आयेगी। हमारे शास्त्रकारोने हर उपयोगी चीजको धार्मिक कहा है। तार्किक दृष्टिसे गायके महत्त्वको समझनेके लिये हमे देखना है कि समाजमे गायका योगदान क्या है? गाय क्या खाकर हमे क्या देती है।

दुनियामे गाय ही एक ऐसा प्राणी है जिसकी सभी चीज उपयोगी हैं। गायका दूध गोबर मूत्र सभी लाभकारी हैं। ये उपयोगी चीजे हमे तब सुलभ होती हैं जब गाय उन चीजोको खाती है जिनका उपयाग मनुष्य नहीं करता। जैसे चावल गेहूँ इसान खाता है, परतु गाय उसका भूसा खाती है। इसान तेलका सेवन करता हे, जबकि गाय खली खाती है। मनुष्य दाल खाता है, परतु दालका छिलका एव चूनी गाय खाती है। इस प्रकार तार्किक दृष्टिसे देखे तो समाजमे वही आदमी महान् होता है जा समाजसे लेता कम तथा देता ज्यादा है। ठीक इसी प्रकारसे गाय उन चीजाको ग्रहण करती है जो मनुष्यके लिये सेवन योग्य नहीं है और बदलेम अमृत-तुल्य दूध देती हे। गायको माताकी श्रेणीमे इसलिये भी रखा गया कि माँका दूध तो मनुष्य एक-दो वर्ष ही पी सकता है, जबकि गायके दूधका सेवन जीवनपर्यन्त करता है।

आज विज्ञानकी उपलब्धि आश्चर्यजनक है। नित्य नय आविष्कार हो रहे हैं। विज्ञानने हमे बहुतसे भौतिक साधन सुलभ कराये हैं। यदि विज्ञान ऐसा यन्त्र बना देता जिसमे एक ओरसे भूसा-खली डाली जाती और दूसरी ओरसे दूध निकलता तो गायका महत्त्व कम हो जाता। क्या विज्ञान ऐसा कर सकता है? ईश्वरने कैसी आश्चर्यजनक अनुकम्पा मनुष्य-मात्रपर कर रखी है कि लोक-कल्याणके लिये ऐसा जीव हमे दिया जो बेकार एव अनुपयोगी पदार्थका सेवन कर सबसे उत्तम अमृत-तुल्य पदार्थ—दूध हमे सुलभ कराता है।

विज्ञानने हमे रासायनिक खाद दी। इस रासायनिक खादके कारण जमीनकी उर्वरा-शक्ति कमजोर होने लगी एव ऊसर होनेके स्पष्ट प्रमाण मिलने लगे। अब वैज्ञानिकोको गोबरकी खादकी याद आयी। आज विज्ञान भी इस बातको स्वीकार करता है कि गोबरकी खादका प्रयोग जमीनकी उर्वराशक्तिको बनाये रखता है तथा जिस जमीनमे ऊसर होनेके सकेत दीख रहे हो उन्हे भी उर्वर बनाये रखनेके लिये गोबरकी खाद ही सर्वोत्तम है।

गायका गोबर हमे पवित्रता प्रदान करता है। आयुर्वेदमें पञ्चगव्यका माहात्म्य दिया गया है। हर प्रकारके प्रायश्चित्तमें पञ्चगव्यक सेवनका विधान है तथा धार्मिक कृत्यमे पञ्चामृतका प्रयोग होता है। आयुर्वेदके अनुसार पञ्चगव्यके नियमित सेवनस शरीरमे व्याप्त मन्द विपका प्रभाव, विपैली आपधियाके प्रयोगके कारण गिरता हुआ स्वास्थ्य निश्चित रूपसे ठीक हो जाता है। आयुर्वेदके अनुसार पञ्चामृतके नियमित और नियमपूर्वक सेवनसे कम या अधिक रक्तचापकी बीमारी नहीं होती। हृदय ठीक गतिसे कार्य करता है एव

पाचन-शक्ति ठीक रहती है। स्नायु-दौर्बल्य तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग नहीं होते। सक्रामक रोगोसे भी रक्षा करनेकी इसमे असाधारण क्षमता है। शरीरकी रोग-प्रतिरोधक शक्तिका बढाकर यह मनुष्यको स्वस्थ रखनेम पूर्ण सक्षम है।

पूजा-स्थलको गोबरसे लीपनेका विधान है। विज्ञानने यह प्रमाणित किया है कि गोबर-लेपनके उपरान्त वह स्थल पवित्र हो गया और भूमिके विकार नष्ट हो गये। ऐमे भी प्रमाण मिले हैं कि गोमूत्रके प्रयोगसे शाक-सब्जीमे कीडे-मकोडे नहीं लगते और गोमूत्रके प्रयोगसे उत्पादित शाक-सब्जी किसी भी प्रकारसे हानिकारक नहीं हाती। कारण, रासायनिक दवाओके प्रयोगसे शाक-सब्जीके स्वास्थ्यपर हानिकारक असर होनेके स्पष्ट प्रमाण मिले हैं। यही कारण है कि विदेशोमे शाक-सब्जीका विक्रय जहाँ भी होता है, वहाँ स्पष्ट अक्षरोमे लिखा हाता है कि इसमे रासायनिक दवाओका प्रयोग किया गया है। बिना रासायनिक दवाओके प्रयोगवाली सब्जी कम-से-कम डेढे दाममे ऊँचे भावसे बिकती है।

आजका शिक्षित समाज भले ही धार्मिक मान्यताओको पूरी तरह स्वीकार न करे परतु उसके व्यावहारिक पक्षको तो उसे स्वीकार करना ही होगा। गाय न केवल जीवित अवस्थामे ही वरन् मरनके बाद भी उसके हर अङ्ग उपयोगी हैं। चमडेसे जूते, सींगसे कई प्रकारके खिलौने, हड्डीसे खाद आदि कई उपयागी चीज बनती हैं।

गायका बछडा हमारी कृपिका प्रमुख अङ्ग है। आज भी हल-बैलसे खेती होती है। खेतकी जुताईसे लेकर बैलका गोवर एव मूत्रतक खेतीक काम आता है। इस प्रकार गायकी महान् उपयोगिताके कारण ही वह हमारे देशमें हमारी सभ्यता एव सस्कृतिकी प्रतीक हो गयी। आज आवश्यकता है गोशालाआके सुचारु रूपसे सचालनकी, गोरक्षा करनेकी और गोहत्या बद करनेकी। इस पुनीत कार्यके लिये समाजके स्वयसेवी आगे आय और सभ्यता एव सस्कृतिके प्रतीक गाय एव गोवशकी रक्षा करे।

गोशालाएँ जितनी ही समृद्ध हागी मनुष्य भी उतना ही पुष्ट होगा। गाय एव गोशालासे मनुष्यकी पुष्टता जुडी है। बच्चोको कुपोपणसे बचानेके लिये एव नीरोग तथा बलिष्ठ मनुष्य तैयार करनेके लिये गोसेवाकी सबसे अधिक आवश्यकता है।
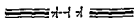
गोमय पदार्थोका आधुनिक उपयोग और उसकी सुरक्षा

(डॉ० श्रीराज गोस्वामी डी०लिट्०)

भारतमे ८९% गाय एव ६९% भैंसका उपयोग दूधके लिये होता है। पर पर्याप्त सरक्षणके अभावमे ५८% गाय ही दूध देती हैं। देखा गया है कि गायके दूध एव घीम जीवनके सभी आवश्यक खाद्य तत्त्व पाये जाते हैं। रूसके विश्वविख्यात शिरोविचके शोधासे यह निष्कर्ष निकला है कि गायके दूधमे रेडियो-विकिरणसे सुरक्षाकी सर्वाधिक क्षमता है। जिन घराम गायके गोबरसे लीपा जाता है उनपर रेडियो-विकिरणका प्रभाव नही होता। यदि घरकी छतपर गायका गोबर लीप दिया जाय ता घरके अदर रेडिएशन (विकिरण) का घुसना कठिन हो जाता है। यदि बिजली चमक कर गोबरमे गिर जाय तो उसका दूपित प्रभाव वहींपर समाप्त हो जाता है। यही नहीं यदि गोघृत आगमे डालकर धुआँ किया जाय तो वायुमण्डलमे रेडिएशनका प्रभाव बहुत कम हो जायगा। गोघृतका हवन किया जाय तो कार्बनडाईऑक्साइडके बढते खतरेसे बचा जा सकता है।

कृषि भारतीय जीवनकी रीढ है और कृषिकी रीढ है वृषभ। विडम्बना यह है कि यह रीढ आज बडी मात्रामे अपने मूलके साथ कट रही है। भूमाताके लिये यदि गोमाताकी रक्षा नहीं हुई तो हमारी कृषि नष्ट हो जायगी, जिससे भारतवर्षकी मूल व्यवस्था एव समाज-रचना बिखर जायगी। 'वृक्ष लगाओ' आन्दोलनको आज प्रोत्साहन मिला है। भूमिके सरक्षणम वृक्षोकी महत्ता तो आजके लोगोकी

समझमे आ रही है, किंतु गाय और उससे प्राप्त होनेवाले पदार्थोंके अप्रतिम लाभकी ठीक जानकारी न होनेके कारण आज उसकी सर्वथा उपेक्षा हो रही है। यदि केवल खादको ही लीजिये तो रासायनिक खादोसे किस प्रकार भूमिकी उर्वराशक्ति समाप्त होती जा रही है, इसपर लोगोका ध्यान नहीं है।

पौधोको एक यूनिट नाइट्रोजनके स्थानपर ५०% यूनिट कार्बनकी आवश्यकता है। रासायनिक खादकी अपेक्षा सेन्द्रिय खादके उपयोगसे दो गुनासे भी अधिक कार्बन उपलब्ध होता है। यदि ठीक पद्धतिसे कम्पोस्ट खाद तैयार की जाय तो भारतके खाद्यकी समीक्षा हल हो सकती है। इस तरह खादके लिये जो पैसे विदेशाको भेजने पडते हैं, वह नहीं भेजने पडेगे। नॅडेप कम्पोस्ट-पद्धतिसे विकसित सेन्द्रिय खाद चार गुना प्रभावशाली है। यह कृषि-भूमिको सभी पोषक तत्त्व देकर उर्वरता और उत्पादन बनाये रखती है।

गोवर-गैस प्लाटकी योजना बडे रूपसे हाथमे ले तो ईंधनके लिये जो पेट्रोलियम पदार्थ विदेशोसे आयात करने पडते हैं, वह नहीं करने होगे। इससे देशको करोडो रुपयेकी बचत होगी। गाँवामे रोजगार प्राप्त होगा, जिससे अभावग्रस्त लाखो भारतीयोको नवजीवन प्राप्त होगा।

देशकी कुल ६०% करोड एकड कृषि-भूमिको प्रतिवर्ष २५० करोड टन सेन्द्रिय खादकी आवश्यकता है। देशमे प्रतिवर्ष ५० करोड टन गोबर निर्यात होता है, जिसमे ४०% यानी १५ करोड टनसे जो खाद बनती है, उससे शहरी कम्पोस्टको छोडकर ८७ करोड टन खाद तैयार होती है। यह हमारी आवश्यकताकी केवल ३७% है। दूसरी ओर रासायनिक फर्टिलाइजरोपर आज अरबो रुपया व्यय हो रहा है, इसीके साथ भूमिकी उर्वरा-शक्ति नष्ट होनेका सकट भी बना हुआ है।

डॉ० अग्रवालका कहना है कि पीले रगका कैरोटीन नामक द्रव्य केवल गायके घीमे है। कैरोटीन तत्त्वकी कमीसे ही मनुष्योको मुँह, फेफडो, मूत्राशयोकी झिल्लीमे और अन्य प्रकारके कैंसर हो जाते हैं। कैरोटीन तत्त्व शरीरमे पहुँचकर विटामिन 'ए' तैयार करता है। यह त्वचा और आँखोके लिये आवश्यक है। इससे रतौंधी रोग दूर होता है। यदि गायके चारेम अधिक हरा चारा दिया जाय तो बहुत अधिक मात्रामे विटामिन 'ए' प्राप्त किया जा सकता है।

गायका गोबर एव गोमूत्र, खुजली एव दाद आदि त्वचा-रोगोसे बचाता है। गोबरसे लीपे स्थानपर मक्खी नहीं आती। गामूत्र औषध है। जिगर तथा तिल्ली आदि रोगोके निदानमे भी साधक है। गोमूत्र कीटनाशक होनेके कारण फसलपर लगे कीटाको भी छिडकाव करनेपर नष्ट कर देता है। वस्तुत गो अमृतकुण्ड है। पञ्चगव्य-सेवनसे मनुष्य सदैव निरोगी जीवन व्यतीत कर सकता है। रक्तके विषाणुओपर पञ्चगव्यके प्रयोगसे विजय प्राप्त की जा सकती है। साराश यह है कि गौ, गङ्गा, गायत्री एव गोपालके चार 'ग' कारसे युक्त सिद्ध मन्त्र सब मनोरथोको सिद्ध करनेवाला है।

रासायनिक खाद एव कीटनाशक पेस्टीसाइडकी बुराइयाँ सामने आयी हैं, जमीने खराब होने लगी हैं, खाद्यान्न विषाक्त होने लगे हैं प्रदूषण बढ रहा हे, मानव-जीवन खतरेमे आ गया है। किसान एव देशके हितचिन्तक चिन्तित हैं। ऐसे समयमे तारणहार केवल सेन्द्रिय खाद ही है। गैस प्लाटके शोधके कारण गोबरसे खाद भी मिल जाता है और खाना भी पक जाता है। कुल मिलाकर गोबरकी उपयोगिता और उसका मूल्य इतना बढ गया है कि बूढा पशु भी भार-रूप नहीं रहा। जितना चारा खाता है, उससे अधिक मूल्यका खाद दे देता है। आर्थिक-सामाजिक एव सास्कृतिक सभी दृष्टियोसे गाय, बैल उपयोगी ही नहीं अनिवार्य हो गये हैं।

ब्राह्मणकी गौ चुरानेवाले, बाँझ गायको हलमे जोतनके लिये नाथनेवाले और पशुआका हरण करनेवालेके लिये राजाको चाहिये कि उसका आधा पैर कटवा दे। (मनु० ८। ३२५)

गोबरमें लक्ष्मीजीका निवास

एक बार मनोहर रूपधारिणी लक्ष्मीजीने गौओके समूहमे प्रवेश किया। उनके सोन्दर्यको देखकर गौओंको बडा आश्चर्य हुआ और उन्होने उनका परिचय पूछा।

लक्ष्मीजीने कहा—'गौओ! तुम्हारा कल्याण हो। इस जगत्मे सब लोग मुझ लक्ष्मी कहते ह। सारा जगत् मुझे चाहता है। मैंने दैत्याको छोड दिया, इससे वे नष्ट हो गये। इन्द्र आदि देवताआका आश्रय दिया, तो वे सुख भोग रहे हैं। देवताओ और ऋषियोको मेरी ही शरणमे आनेसे सिद्धि मिलती है। जिसके शरीरमे मैं प्रवेश नहीं करती, उसका नाश हो जाता है। धर्म, अर्थ ओर काम—ये मेरे ही सहयोगसे सुख देनेवाले हा सकते हैं। मेरा एसा प्रभाव है। अब मैं तुम्हारे शरीरमे सदा निवास करना चाहती हूँ। इसके लिये स्वय तुम्हारे पास आकर प्रार्थना करती हूँ। तुमलोग मेरा आश्रय ग्रहण करो और श्रीसम्पन्न हो जाओ।'

गौआने कहा—'देवि! बात तो ठीक है, पर तुम बडी चञ्चला हो। कहीं भी जमकर रहती नहीं। फिर तुम्हारा सम्बन्ध भी बहुतोके साथ हे। इसलिये हमको तुम्हारी इच्छा नहीं है। तुम्हारा कल्याण हो। हमारा शरीर तो स्वभावसे ही हृष्ट-पुष्ट ओर सुन्दर है। हम तुमसे कोई काम नहीं है। तुम जहाँ इच्छा हो जा सकती हो। तुमने हमस बातचीत की, इसीसे हम अपनेको कृतार्थ मानती है।'

लक्ष्मीजीने कहा—'गौआ! तुम यह कह क्या रही हो? मैं बडी दुर्लभ हूँ और परम सती हूँ, पर तुम मुझे स्वीकार नहीं करतीं। आज मुझ यह पता लगा कि 'बिना बुलाये किसीके पास जानेसे अनादर होता है'—यह कहावत सत्य है। उत्तम व्रतचारिणी धेनुओ! देवता, दानव, गन्धर्व, पिशाच, नाग, मनुष्य और राक्षस बडी उग्र तपस्या करनेपर कहीं मेरी सेवाका सौभाग्य प्राप्त करते हैं। तुम मेरे इस प्रभावपर ध्यान दो और मुझे स्वीकार करो। देखो, इस चराचर जगत्मे मेरा अपमान कोई भी नहीं करता।'

गौओने कहा—'देवि! हम तुम्हारा अपमान नहीं करतीं। हम तो केवल त्याग कर रही हैं, सो भी इसलिये कि तुम्हारा चित्त चञ्चल है। तुम कहीं स्थिर होकर रहती नहीं। फिर हमलोगोका शरीर तो स्वभावसे सुन्दर है। अतएव तुम जहाँ जाना चाहो, चली जाओ।'

लक्ष्मीजीने कहा—'गौओ! तुम दूसराको आदर देनेवाली हो। मुझको यो त्याग दोगी, तो फिर ससारमे सर्वत्र मेरा अनादर होने लगेगा। मै तुम्हारी शरणमे आयी हूँ, निर्दोष हूँ और तुम्हारी सेविका हूँ। यह जानकर मेरी रक्षा करो। मुझे अपनाओ। तुम महान् सौभाग्यशालिनी, सदा मबका कल्याण करनेवाली, सबको शरण देनेवाली, पुण्यमयी, पवित्र और सौभाग्यवती हो। मुझे बतलाओ मैं तुम्हार शरीरके किस भागम रहूँ?'

गौओन कहा—'यशस्विनी! हमे तुम्हारा सम्मान अवश्य करना चाहिये। अच्छा तुम हमारे गोबर और मूत्रमे निवास करो। हमारी ये दोनो चीजे बडी पवित्र हैं।'

लक्ष्मीजीने कहा—'सुखदायिनी गौओ! तुमलोगोने मुझपर बडा अनुग्रह किया। मेरा मान रख लिया। तुम्हारा कल्याण हो। मैं ऐसा ही करूँगी।' गौओंके साथ इस प्रकार प्रतिज्ञा करक देखते-ही-देखत लक्ष्मीजी वहाँसे अन्तर्धान हो गयीं (महा० अनु०, अध्याय ८२)।

मांस-भक्षणके दोष

(१) मासभक्षण भगवत्प्राप्तिमे बाधक है, (२) मासभक्षणसे ईश्वरकी अप्रसन्नता होती है, (३) मासभक्षण महापाप है, (४) मासभक्षणसे परलोकमे दु ख प्राप्त होता है, (५) मासभक्षण मनुष्यके लिये प्रकृतिविरुद्ध है, (६) मासभक्षणसे मनुष्य पशुत्वको प्राप्त हाता है, (७) मासभक्षण मनुष्यकी अनधिकार चेष्टा है, (८) मासभक्षण घोर निर्दयता है, (९) मासभक्षणसे स्वास्थ्यका नाश होता है और (१०) मासभक्षण शास्त्र-निन्दित है।

(श्रीजयदयालजी गोयन्दका)

आयुर्वेदशास्त्रमें गौद्वारा चिकित्साकी महत्त्वपूर्ण बाते

(डॉ० श्रीअखिलानन्दजी पाण्डेय आयुर्वेदाचार्य)

आयुर्वेद अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है। विशेषकर यह अथर्ववेदमे विस्तारसे वर्णित है। आयुर्वेद शाश्वत एव अनादि है।

आयुर्वेदकी दृष्टिसे गौ हमारी माता है। भारतीय सस्कृतिकी रीढ है। इसका स्थान सर्वोपरि है। सृष्टिकालसे ही गोमहिमा सुविख्यात है।

अथर्ववेदमे गौमे देवताओका निवास माना गया है। वेदने गायके रूपको सम्पूर्ण विश्व-ब्रह्माण्डका रूप माना है—

एतद् वै विश्वरूप सर्वरूप गोरूपम्।

पुराकालमे ऋषिकुल और गुरुकुलके आश्रममे गाये होती थीं। ब्रह्मचारियोको गोमाताकी सेवामे कठोर परिश्रम करना पडता था। गौ माताकी सेवामे उन्हे व्यायामसे अधिक परिश्रम पडता था। जिससे स्वास्थ्य बहुत ही उत्तम होता था। किसी प्रकारकी व्याधि नहीं होने पाती थी। शरीर पूर्णरूपसे नीरोग रहता था।

गोदुग्ध—विश्वमे गोदुग्धके सदृश पौष्टिक आहार अन्य कोई है ही नहीं, इसे अमृत कहा गया है। बाल्यावस्थामे दुग्ध तीन सालतक बाल्यजीवनका मुख्य आधार है। मातृविहीन बालक दुग्धपानसे जीवित रहता है। जन्मसे मृत्युपर्यन्त किसी भी अवस्थामे दुग्ध निषिद्ध नहीं है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे दुग्धको पूर्णाहार माना गया है। शरीर-सवर्धन-हेतु इसमे प्रत्येक तत्त्व विद्यमान हैं। मानवकी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक शक्ति बढानेवाला गोदुग्ध ही है। प्राचीन कालमे ऋषि-मुनि गोदुग्ध पीकर तृप्त होते, तपस्या करते तथा गोसेवामे रत रहते थे। सुश्रुतसहितामे दुग्धको सभी प्राणियाका आहार बताया गया है। चरक-सहितामे गोदुग्धका जीवनी-शक्तियोम सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा गया है—

प्रवर जीवनीयाना क्षीरमुक्त रसायनम्॥

सुश्रुतने भी गोदुग्धको जीवनीय कहा है। (सुश्रुत०, अ० ४५)

गोदुग्ध जीवनके लिये उपयोगी, जराव्याधिनाशक रसायन, रोग और वृद्धावस्थाको नष्ट करनेवाला, क्षतक्षीण-रोगियोके लिये लाभकर, बुद्धिवर्धक, बलवर्धक, दुग्धवर्धक तथा किंचित् दस्तावर है और क्लम (थकावट), चक्कर आना, मद, अलक्ष्मी, श्वास, कास (खाँसी), अधिक प्यास लगना, भूख, पुराना ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त—इन रोगोको नष्ट करता है। दुग्ध आयु स्थिर रखता है, आयुको बढाता है।

गोदधि—यह उत्तम, बलकारक, पाकमे स्वादिष्ट, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पौष्टिक और वातनाशक है। सब प्रकारके दहियोमे गोदधि अधिक गुणदायक है—

उक्त दध्नामशेषाणा मध्ये गव्य गुणाधिकम्॥

(भावप्र०, पूर्व० १५। १०)

गोतक्र—गायका मट्ठा—यह त्रिदोषनाशक, पथ्योमे उत्तम, दीपन, रुचिकारक, बुद्धिजनक, बवासीर और उदर-विकारनाशक है।

गायका मक्खन—यह हितकारी, वृष्य वर्णकारक, बलकारक, अग्निदीपक, ग्राही, वात-पित्त-रक्तविकार, क्षय, बवासीर, अर्दित और कासको नष्ट करता है। बालकोके लिये अमृततुल्य लाभकारी है।

गोघृत—यह कान्ति और स्मृतिदायक, बलकारक, मेध्य, पुष्टिकारक, वात-कफ-नाशक, श्रमनिवारक, पित्तनाशक, हृद्य, अग्निदीपक, पाकमे मधुर, वृष्य, शरीरको स्थिर रखनेवाला, हव्यतम, बहुत गुणोवाला है और भाग्यसे ही इसकी प्राप्ति होती है।

गोमूत्र एव गोमय—यह कटु तीक्ष्ण और उष्ण होता है तथा क्षारयुक्त होनेसे वातवर्धक नहीं होता। यह लघु,

अग्निदीपक, मेध्य, पित्तजनक तथा कफ-वात-नाशक होता है। शूल, गुल्म, उदररोग, आनाह, विरेचन-कर्म, आस्थापन, वस्ति आदि व्याधियामे गोमूत्रका प्रयोग करना चाहिये।

आयुर्वेदशास्त्रानुसार सम्यक्-रूपसे गोमूत्र-सेवनसे कुष्ठादि अन्य चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। गोमयको स्वच्छता प्रदान करनेवाला पवित्र माना गया है। अधिकाश भारतीय जन अपन घरोको गोबरसे लीपकर शुद्ध करते हैं। गोबर कीटाणुनाशक होता है। शरीर-शुद्धिकरण-हेतु पञ्चगव्यका प्रयोग होता है।

आयुर्वेदकी दृष्टिसे गौ तथा गव्य पदार्थोंकी अद्वितीय महिमा है। गोसेवासे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। गोसेवासे समस्त पुण्य अविलम्ब प्राप्त होते हैं। आयुर्वेदके उत्थानके लिये गोरक्षण अति आवश्यक है। इससे पीडित रोगियोके रोगका निवारण होगा, भारतीय सस्कृतिका पुनरुत्थान होगा और जनता स्वास्थ्य-लाभ कर सकेगी।
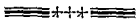
गोषडङ्गका चिकित्सामे उपयोग

(डॉ० श्रीसीतारामजी जायसवाल आयुर्वेद-शास्त्री)

गायके दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्रका एक निश्चित अनुपातमे मिश्रण पञ्चगव्य कहलाता है। ये पाँचों तथा गायसे प्राप्त होनेवाली गोरोचना—ये छ पदार्थ गोषडङ्ग कहलाते हैं। आयुर्वेदिक ग्रन्थोमे इनके कोटिश उपयोग निर्दिष्ट हैं। यहाँ सक्षेपमे कुछका निर्देश किया जाता है—

(१) गो-दधिका उपयोग

दधि (दही) उष्ण, अग्निको प्रदीप्त करनेवाला, स्निग्ध, कुछ कषाय, गुरु तथा विपाकमे अम्ल होता है। मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, विषमज्वर, अतिसार अरुचि तथा कृशतामे इसका उपयोग प्रशस्त है। यह बल एव शुक्रको बढाता है (भावप्रकाश पूर्व० १५। १-२)।

१-लघु गङ्गाधर चूर्ण—नागरमोथा इन्द्रजौ, बेलकी मज्जा (गूदी), लोध्र मोचरस एव धायका फूल—इन छ द्रव्योका चूर्ण बनाकर दधिके साथ गुड मिलाकर पीनेसे यह सभी प्रकारके अतिसार एव प्रवाहिकाको रोकनेमे सर्वोत्तम है। (आरोग्य-प्रकाश)

२-अजमोदादिचूर्ण—अजमोदा मोचरस शुण्ठी, धायका पुष्प—इन चार द्रव्योको पीसकर चूर्ण बनाकर गौके दहामे चूर्णको अच्छी तरह फटकर सेवन करनसे वह गङ्गाकी धाराके समान प्रवाहित अतिसारको भी रोकनेमे समर्थ है। (शार्ङ्गधरसहिता)

३-तक्रारिष्ट—अजवाइन आमला काली मिर्च—प्रत्येक १२-१२ तोला, पाँचो नमक—प्रत्येक ४ तोला इनका चूर्ण बनाकर मिट्टीके एक प्यालेमे डालकर उसम तक्र ६ सेर ६ छटाँक २ तोला डाल दे और पात्रका मुख बद कर सधानके निमित्त एक माहके लिये रख दे। बादमे छानकर सेवन करे।

मात्रा और अनुपात—डेढ तोलासे ढाई तोला प्रात -साय जल मिलाकर ल।

गुण और उपयोग—यह उत्तम दीपन तथा पाचन करनेवाला है तथा शोथ गुल्म अर्श, कृमि, प्रमेह, अतिसार और उदर-रोगको नष्ट करता है। (भावप्रकाश)

(२) गो-दुग्धकी विशेषताएँ

अन्य दुग्धोकी अपेक्षा गौका दूध विशेष रूपसे रस एव विपाकम मधुर शीतल, दुग्धको बढानेवाला, स्निग्ध वात-पित्तनाशक तथा रक्तविकारनाशक, गुरु और बुढापेके समस्त रोगोका शामक है, यह सर्वदा सेवन-योग्य है। काली गौका दुग्ध वात-नाशक तथा अधिक गुणवान् होता है। पीली (लाल) गौका दुग्ध वात तथा पित्त-शामक होता है। श्वेत गौका दूध कफकारक तथा गुरु होता है और लाल एव चितकबरी गौका दूध वातनाशक होता है।

गौका धारोष्ण दुग्ध बलकारक, लघु, शीत अमृतके समान, अग्निदीपक त्रिदोषशामक होता है। प्रात काल पिया हुआ दूध वृष्य बृहण तथा अग्निदीपक होता है, दोपहरमे

पिया हुआ दूध बलवर्धक, कफनाशक, पित्तनाशक होता है और रात्रिमे पिया हुआ दूध बालकके शरीरको बढाता है, क्षयका नाश करता है, बूढोके शरीरमे तेज उत्पन्न करता है। पथ्य है, अनेक विकारोको शान्त करता है। इसलिये दूध प्रतिदिन पीना चाहिये। (भावप्रकाश, पूर्वखण्ड १४)

पञ्चमूली पय—छोटी कटेरी, बडी कटेरी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, गोखरू—इन क्षुद्रपञ्चमूलसे यथाविधि साधित दूधको पीनेसे ज्वरका रोगी, कास, श्वास, शिर शूल, पार्श्वशूल, प्रतिश्याय (जुकाम)—इनसे छूट जाता है। क्षीरपाकका विधान यह है—

यदि प्रमाणका निर्देशन न हो तो सामान्यत औषधसे आठ गुना दूध और दूधसे चार गुना जल डालकर पकाना चाहिये। जब जल उड जाय और दूध रह जाय तो उतार ले और छान ले। यह दूधको सिद्ध करनेकी विधि है। इस परिभाषाके अनुसार क्षुद्रपञ्चमूल २ तोला, दूध १६ तोला, जल ६४ तोला लेकर पकावे। सस्कृत होनेपर छान ले। वात-पित्तका नाशक होनेसे यहाँ स्वल्प पञ्चमूल लिया है। (चरकसहिता)

त्रिकण्टकादिपय—गोखरू, बलामूल, छोटी कटेरी, गुड, सोठ—इनसे साधित गौका दूध मलबन्ध और मूत्रबन्धको नष्ट करता है। शोथ और ज्वरको हरता है। इसमे गुडको छोडकर शेष द्रव्योके कल्कसे यथाविधि दूधको सिद्ध करना चाहिये, पश्चात् वस्त्रसे छानकर गुड डालकर रोगी पीवे। (चरकसहिता)

(३) गौका घृत

गौका घृत विशेष रूपसे नेत्रके लिये उपयोगी है। यह वृष्य अग्निदीपक, रस एव विपाकमे मधुर, शीत तथा तीनो दोषोका शामक है और मेधा, लावण्य, कान्ति, ओज तथा तेजकी वृद्धि करनेवाला, अलक्ष्मी, पाप तथा भूतबाधा-नाशक है। गुरु, बलवर्धक, पवित्र, आयु बढानेवाला, कल्याणकारक, रसायन, उत्तम गधवाला, देखनेमे मनोहर तथा सब घृतोमे अधिक बलवान् है। (भावप्रकाश, पूर्व० १८। ४-६)

हिंग्वादि घृत—हींग, सरसो, बालवच, सोठ, मरीच एव पीपल २-२ कर्ष गोघृत १ प्रस्थ तथा गोमूत्र ४ प्रस्थ मिलाकर घृत सिद्ध करे। इसका पान, नस्य एव अभ्यङ्ग करनेसे देवग्रहसे मुक्ति प्राप्त होती है। (अष्टाङ्ग-हृदय अ० ५)

पञ्चगव्य घृत—गोबरका स्वरस, गोदुग्ध, गौका दही, गोमूत्र तथा गोघृतको मिलाकर सिद्ध करे। यह घृत अपस्मार, ज्वर, उन्माद तथा कामलाको शान्त करता है।

पञ्चकोलादि घृत—पीपल, पिपलामूल, चव्य, चित्ता (चित्रकमूल) तथा सोठ और जौखार १-१ पल गोघृत १ प्रस्थ (सेर) तथा गोदुग्ध एक सेर मन्द अग्निपर पका ले और फिर छान ले। यह घृत रसवाही स्रोतोको शुद्ध करता है और गुल्म-ज्वर, उदर-रोग, ग्रहणी-रोग, पीनस, श्वास-कास, मन्दाग्नि, शोथ तथा उद्गारको नष्ट करता है। इस घृतका नाम 'षट्पल घृत' भी है। (अष्टाङ्ग-हृदय राजयक्ष्मादि चिकित्सा)

(४) गोमय (पुरीष)

सामान्यतया गोमय कटु उष्ण, वीर्यवर्धक, त्रिदोष-शामक तथा कुष्ठघ्न, छर्दिनिग्रहण, रक्तशोधक श्वासघ्न और विषघ्न है।

उपयोगिता—विषोमे गोमय-स्वरसका लेप एव अजन किया जाता है। गायका गोबर तिमिर-रोगमे नस्य-रूपमे प्रयुक्त होता है। बिजौरा नीबूकी जड, घी और मन शिलाको गौके गोबरके रसमे पीसकर लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढती है तथा पिटिका (बालतोड) और व्यङ्गकी बढती कालिमापर इसका लेप करनेसे लाभ होता है।

(५) गोमूत्र

गौका मूत्र कटु तीक्ष्ण, उष्ण, खारा, तिक्त, कषाय, लघु, अग्निदीपक बुद्धिवर्धक, पित्तकारक तथा वात-कफ-नाशक है और शूल गुल्म, उदररोग, आनाह, कण्डु नेत्र-रोग, मुख-रोग, किलास, वातरोग, वस्तिरोग कुष्ठ, कास श्वास, शोथ कामला तथा पाण्डुरोगको नष्ट करता है। केवल गोमूत्र पीनेसे कण्डु किलासरोग (श्वित्र), शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, अतिसार वातव्याधि मूत्राघात, कास, कुष्ठ, उदररोग, कृमिरोग तथा पाण्डुरोगका नाश हो जाता है। यह विशेष रूपसे प्लीहोदर श्वास, कास, शोथ, मलरोध, शूल, गुल्म आनाह, कामला तथा पाण्डुरोगको नष्ट करता है। यह कषाय तथा तीक्ष्ण है, कानमे डालनेसे कर्ण-शूलको नष्ट करता है। (भावप्रकाश, पूर्व० १९। १-६)

गोमूत्रासव—गौका मूत्र १६ सेर, चित्तामूल, सोठ, मरिच, पीपलका चूर्ण, मूत्रका दशमाश तथा मधु १ तोला मिलाकर घृतस्निग्ध भाण्डमे धर दे, १५ दिन पश्चात् सधान हो जानेपर श्वित्ररोगी पीये और सब आहार-विहार आदि कुष्ठ रोगीके समान करे।

हरताल १ शाण (२४ रत्ती), बाकुचीके बीज ४ शाण (१२ माशा) को गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे श्वेत कुष्ठ नष्ट होता है। (बृहन्निघण्टुरत्नाकर)

प्रबोधाञ्जन—शिरीषके बीज, पिप्पली, कृष्णमरिच, सधा नमक, लहसुन, मन शिला और वच—इन द्रव्याको समान मात्राम लेकर गोमूत्रमे पीस ले और वर्तिका बना ले। इस वर्तिकाको पानीमे घिसकर नत्राम अञ्जन करनेसे बेहोशीका रोग नष्ट होता है। खदिरकी छाल नीम और जामुनकी छाल अथवा कुरैयाकी छाल तथा सैन्धवका गोमूत्रमे पीसकर लेप करनेसे अरुषिका (सिरका छाजन) रोग नष्ट होता है। (शार्ङ्गधरसहिता)

(६) गोरोचना

गोरोचना रसम तिक्त वीर्यम शीत, मङ्गलकारी, कान्तिकारक और विष, निर्धनता (दारिद्र्य), ग्रहदोष उन्माद गर्भस्राव-दोष तथा रक्त-रोग इत्यादिका नाशक है।

गोरोचना गौ तथा बैलके पित्ताशयके पित्त नामक द्रव्य पदार्थका सुखाया हुआ द्रव्य है। यह बालकामे श्वास या हब्बा-डब्बा या पसली चलना नामक रोगकी परमौषध है। मात्रा आधामे एक रत्ती दूध आदिम घोलकर पिलाया जाता है।

स्वर्णक्षीरा (सत्यानासी—भडभाँड) की जड, कासीस वायविडङ्ग, मैनसिल, गोरोचना और सैन्धव—इन छ द्रव्याको समान मात्राम लकर जलमे पीसकर लेप करनेसे श्वित्र (श्वेतकुष्ठ-फुलवहरी) (White leprosy Leucoderma) रोग नष्ट होता है। (वृन्दमाधव एव चक्रदत्त)

मैनसिल, भुना तूतिया, कस्तूरी, जटामासी श्वेत चन्दन तथा गोरोचना १-१ तोला और सबसे दशमाश कर्पूर मिलाकर पीसा गया अञ्जन 'अशीति गुण' कहलाता है अर्थात् इस अञ्जनम ८० गुण हैं। (अष्टाङ्ग-हृदय नेत्र-रोग)

इस प्रकार गोदुग्ध तथा गोमय आदि पदार्थोंके बहुतसे उपयोग हैं। किन्हीं योग्य वैद्य आदिके उचित परामर्शपूर्वक इनका यथोचित सवन तथा पथ्य-सेवनसे अवश्य ही विलक्षण लाभ होता है। न केवल काय-चिकित्सा अपितु अनेकों मन-बुद्धि-सम्बन्धी रोगोके भी ये परमौषध हैं।

छुई-मुई काया—दूधकी माया

(श्रीमती सुनीता मुखर्जी)

भारतवासियाको इस बातका सबक सीखना चाहिये कि विदेशोमे सभी जगह गोदुग्धकी डयरीका विकास हुआ है परतु हमारे यहाँ गाय बेचकर भैंस खरीदी जा रही है जिसके असरसे नयी पीढी आलसी और मद-बुद्धि होती जा रही है। गायका ता मूत्र भी अमृत-समान है। शरीर सुडौल सुन्दर और चुस्त बनाना हो तो गायका दूध ही पीये। यहाँ सक्षेपम दुग्ध-चिकित्साके कुछ प्रयोग दिये जा रहे है।

जिगरमें विकार—पाचन-सस्थानके सभी दोष गादुग्धस दूर किये जा सकत है। भारतकी देखा-देखी रूसने दूध-चिकित्सा करके सारे यूरोपमे इसका प्रचार किया है। 'कुछ मत खाइये और कवल दूध पीते रहिय। शहदका जी भरके प्रयोग कर। जिगर तिल्ली, गुर्दे आदि सही काम करने लगगे।'

जुकाम—कुछ डॉक्टर जुकाम-नजलामे दूधकी मनाही कर देते हैं, जबकि जुकामम पेटको स्वच्छ रखनेका काम दूध आसानीसे कर देता है। जुकामम दूषित पानी नाकसे बहने द और दूधमे शहद घोलकर पीते रहे। भोजन सादा करे आँतो और नस-नाडियाकी पूरी सफाई कर डाले। तीसरे दिनसे सब विकार अपने-आप दूर होने लगेगे। गोलियाँ खाकर जुकाम हर्गिज न रोके नहीं तो दूषित पानी नाकसे बहनेकी बजाय खूनमे जहरकी तरह घुल जायगा। बुखार अलग तडपायेगा।

डिप्थीरिया—आम बोलीमें इसे पसली चलना या हब्बा-डब्बा भी कहा जाता है। बच्चोंका यह रोग जानलेवा भी होता है। इससे बच्चेका दम घुटता रहता है और आँखें बाहर निकल आती हैं। बुखार जोराका रहता है। २ चम्मच गुनगुने दूधमें ½ चम्मच घी और एक चम्मच शहद मिलाकर बच्चेको चटाना शुरू कर दें। गले और सीनेकी सफाई होते ही बच्चा सुखकी साँस लेने लगेगा। घीसे दुगुनी मात्रामें शहद डालें। गायका गुनगुना घी बच्चेके सीने और गलेपर भी मलें। इससे कफ पिघलकर हट जायगी और श्वास-नली सहज हो जायगी।

तपेदिक—जो लोग तपेदिकके रोगीको दूध पीनेसे रोकते हैं वास्तवमें वे दूधकी शक्तिको नहीं पहचानते। यूनान, रूस, फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन अरब और स्विटजरलैंडके विख्यात डॉक्टराने प्रयोगोंके बाद साबित कर दिया है कि दूधसे तपेदिकका भी सही इलाज किया जा सकता है। ५० ग्राम मिश्री और १० ग्राम पिपली पीस-छानकर २५० ग्राम दूधमें उतना ही पानी मिलाकर काढ़ा तैयार कर ले। दूध बच जानेपर इसे उतार ले और १०-१५ ग्राम गोघृतमें २०-२५ ग्राम शहद घोल ले। इसे इतना फेंटे कि दूधपर झाग पैदा हो जाय। इसको चूसते रहें और मनमें विश्वास पैदा करें कि आप अब स्वस्थ होनेकी राहपर चल पड़े हैं। फेफड़ोंमें छेद भी होंगे तो धीरे-धीरे भरने लगेंगे।

थकावट—चाहे कोई ५० कोस पैदल चलकर आया हो और उसका रोम-रोम दुख रहा हो तो उसके गाढ़े दूधमें ढेर सारी मलाई डालकर पीनेको दें। इसके साथ ही परातमें गुनगुना पानी डालकर २ चम्मच नमक डालें। इस पानीमें घुटनोंतक पाँव और टाँगें मल-मलकर धोयें। सारी थकान निकल जायगी।

धतूरेका विष—गायके दूधमें गायका ही घी मिलाकर पिलाते रहें। गोघृत-जैसा विषनाशक अमृत शायद ही कोई दूसरा हो।

नकसीर—एक कप उबले दूधमें पुराने-से-पुराना घी डालें और कुछ पल नसवारकी तरह सूँघें। जब दूध गुनगुना रह जाय तो मिश्री घोलकर पियें। इससे रक्तका उबाल शान्त रहेगा और नकसीर भी नहीं फूटेगी। यदि एक मूली निराहार पेट खाते रहें और दूधमें गाजरका रस पीते रहें तो नकसीर फूटनेकी नौबत नहीं आयेगी।

नाभि फूलना—बच्चेकी नाभि फूलने लगे तो हर कोई गोघृत ही चुपड़ा करता है। आप गर्म घीमें हल्दीकी चुटकी भुरककर रूईका फाहा तह कर लें और सुहाता गर्म रह जानेपर नाभिपर रखकर ऊपरसे पट्टी लपेट दें। नाभि सिकुड़कर सहज-रूपमें आ जायगी।

नासूर—यह हड्डीतक पहुँच जानेवाला फोड़ा है। जिसके मवादकी बदबूसे डॉक्टर और सगे-सम्बन्धी भी रोगीसे दूर रहना चाहते हैं। पुराने गायके घीद्वारा नासूर जल्द सूखेगा। पहले नीम-पत्तोंके काढ़ेसे फोड़ा साफ करें। उसके बाद कपड़ेकी बत्ती बनाकर गोघृतमें तर करके नासूरमें डाल दें। दिनमें ३ बार नहीं तो २ बार बत्ती बदल दें। डेढ़-दो महीनोंमें फोड़ेकी जड़ें सूख जायँगी और घाव भरने लगेगा। दूधमें घी डालकर पिलाते भी रहें, ताकि शरीर निर्विष रहे।

पेटमें कीड़े—कड़वी कसैली दवाएँ खानेके बजाय दूधमें शहद मिलाकर पीना शुरू कर दें। इससे धीरे-धीरे पुराने कीड़े मर जायँगे नये पैदा नहीं होंगे।

छाले फूलना—छाले चाहे गर्मीके उबालसे पड़े हों या आगसे जलनेपर—दोनों स्थितिमें गो-दुग्धकी मलाई या घी लेप दीजिये, जलन भी शान्त होगी, छाले बैठनेपर घाव भी भर जायँगे।

एक कप पानीमें २ चम्मच दूध डालकर रोज चेहरेपर मल लिया करें, मुखड़ेपरसे छावँ हट जायगी और चेहरा भी दमकने लगेगा। दूधकी मलाई लगानेसे ओठ या गाल फटनेकी नौबत ही नहीं आयेगी। तेज बुखारमें पुराने घीकी मालिश करनेसे भी शरीर स्वस्थ रहता है।

आज भारतका मुख्य प्रश्न है पर्याप्त परिमाणमें दूधका मिलना और गो-वंशको सुधारना। —कर्नल मैक-कैरिसन

गोमूत्र तथा गोबरसे रोग-निवारण

(वैद्य श्रीबालकृष्णजी गोस्वामी आयुर्वेदाचार्य)

सनातन धर्ममे गायको माताके समान सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। गाय सदैव कल्याणकारिणी तथा पुरुषार्थ-चतुष्टयकी सिद्धि प्रदान करनेवाली है। मानवजातिकी समृद्धि गायकी समृद्धिके साथ जुडी हुई है। गोमाताका हमारे उत्तम स्वास्थ्यसे गहरा सम्बन्ध है। गाय आधिदैविक, आधिदैहिक एव आधिभौतिक तीनो तापोका नाश करनेमे सक्षम है। इसी कारण अमृततुल्य दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमय तथा गोरोचना—जैसी अमूल्य वस्तुएँ प्रदान करनेवाली गायको शास्त्रोमे सर्वसुखप्रदा कहा गया है।

गोमूत्र

गोमूत्र मनुष्यजाति तथा वनस्पति-जगत्को प्राप्त होनेवाला दुर्लभ वरदान है। यह धर्मानुमोदित, प्राकृतिक, सहज प्राप्य, हानिरहित, कल्याणकारी एव आरोग्यरक्षक रसायन है। स्वस्थ व्यक्तिके स्वास्थ्यरक्षण तथा आतुरके विकार-प्रशमन-हेतु आयुर्वेदमे गोमूत्रको दिव्यौषधि माना गया है। आयुर्वेदाचार्योंके मतसे गोमूत्र कटु-तिक्त तथा कषाय-रसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण क्षार, लघु, अग्निदीपक, मेधाके लिये हितकर, पित्तकारक तथा कफ और वात-नाशक है। यह शूल, गुल्म, उदररोग, अफरा खुजली नेत्ररोग, मुखरोग, कुष्ठ, वात, आम मूत्राशयके रोग, खाँसी श्वास शोथ कामला तथा पाण्डुरोगको नष्ट करनेवाला होता है। सभी मूत्रोंमे गोमूत्र श्रेष्ठ है। आयुर्वेदमे जहाँ 'मूत्र' शब्दका उल्लेख है वहाँ गोमूत्र ही ग्राह्य है।

स्वर्ण लौह आदि धातुओ तथा वत्सनाभ, धतूर तथा कुचला-जैसे विषद्रव्योको गोमूत्रसे शुद्ध करनेका विधान है। गोमूत्रद्वारा शुद्धीकरण होनेपर द्रव्य दोषरहित होकर अधिक गुणशाली तथा शरीरके अनुकूल हो जाता है।

आधुनिक दृष्टिसे गोमूत्रमें पोटेशियम कैल्शियम, मैग्नेशियम क्लोराइड यूरिया, फास्फेट, अमोनिया, क्रिएटिनिन आदि विभिन्न पोषक क्षार विद्यमान रहते हैं।

रोग-निवारण-हेतु विभिन्न विधियाद्वारा गोमूत्रका सेवन किया जाता है जिनम पान करना मालिश पट्टी रखना नस्य, एनिमा और गर्म सेक करना प्रमुख है। पीने-हेतु ताजा तथा मालिश-हेतु २ से ७ दिन पुराना गोमूत्र उत्तम रहता है। बच्चोको ५-५ ग्राम तथा बडाको रोगानुसार १० से ३० ग्रामतककी मात्रामे दिनमे दो बार गोमूत्रका पान करना चाहिये। इसके सेवनकालमे मिर्च-मसाले, गरिष्ठ भोजन, तबाकू तथा मादक पदार्थोंका त्याग करना आवश्यक है। व्याधिविनाशार्थ गोमूत्रका प्रयोग निम्न रोगोमे विशेष उल्लेखनीय है—

(१) यकृत्के रोग—जिगरका बढना, यकृत्की सूजन तथा तिल्लीके रोगोमे गोमूत्रका सेवन अमोघ ओषधि है। पुनर्नवाके क्वाथमे समान भाग गोमूत्र मिलाकर पीनेसे यकृत्की शोथ तथा विकृतिका शमन होता है। इस अवस्थामे गोमूत्रका सेक भी लाभप्रद है। गर्म गोमूत्रमे कपडा भिगोकर प्रभावित स्थानपर सेक करना चाहिये।

(२) विबध—जीर्ण विबध या कब्ज होनेपर गोमूत्रका पान करना चाहिये। प्रात -साय ३-३ ग्राम हरडके चूर्णके साथ इसका सेवन करनेसे पुराना कब्ज नष्ट हो जाता है।

(३) बवासीर—अर्श अत्यन्त कष्टदायक तथा कृच्छ्रसाध्य रोग है। गोमूत्रमे कलमीशोरा २-२ ग्राम मिलाकर पीनेसे बवासीरम बहुत लाभ होता है। गर्म गोमूत्रका स्थानीय सेक भी फायदा पहुँचाता है।

(४) जलोदर—पेटमे पानी भर जानेपर गोमूत्रका सेवन हितकारी है। ५०-५० ग्राम गोमूत्रमे दो-दो ग्राम यवक्षार मिलाकर पीते रहनेसे कुछ सप्ताहोमे पेटका पानी कम हो जाता है। जलोदरके रोगीको गोदुग्धका ही पान करवाना चाहिये।

(५) उदावर्त—उदरमे वायु अधिक बननेसे यह विकार उत्पन्न होता है। प्रात काल आधा कप गोमूत्रमे काला नमक तथा नीबूका रस मिलाकर पीनेसे गैसरोगसे कुछ दिनोमे ही छुटकारा मिल जाता है। इस व्याधिमें गोमूत्रको पकाकर प्राप्त किया गया क्षार भी गुणकारी है। भोजनके प्रथम ग्रासम आधा चम्मच गोमूत्र-क्षार तथा एक

चम्मच गोघृतको मिलाकर भक्षण करनेसे वायु नहीं बनती।

(६) मोटापा—यह शरीरके लिये अति कष्टदायक तथा बहुतसे रोगोको आमन्त्रित करनेवाला विकार है। स्थूलतासे मुक्ति पाने-हेतु आधा गिलास ताजा पानीमे चार चम्मच गोमूत्र, दो चम्मच शहद तथा एक चम्मच नीबूका रस मिलाकर नित्य पीना चाहिये। इससे शरीरकी अतिरिक्त चर्बी समाप्त होकर देह-सौन्दर्य बना रहता है।

(७) चर्मरोग—खाज, खुजली, कुष्ठ आदि विभिन्न चर्मरोगोके निवारणहेतु गोमूत्र रामबाण ओषधि है। नीम-गिलोयके क्वाथके साथ दोनो समय गोमूत्रका सेवन करनेसे रक्तदोष-जन्य चर्मरोग नष्ट होते हैं। जीरेको महीन पीसकर गोमूत्रसे सयुक्त कर लेप करने या गोमूत्रकी मालिश करनेसे चमडी सुवर्ण तथा रोगरहित हो जाती हे।

(८) पुराना जुकाम—विजातीय तत्त्वोके प्रति असहिष्णुतासे बार-बार जुकाम होता रहता है। नासारन्ध्रामे सूजन स्थायी हो जानेसे पीनस बन जाता है। इस अवस्थामे गोमूत्रका मुखद्वारा सेवन तथा नस्य लेनेसे रोगमुक्ति हो जाती है। फूली हुई फिटकरीका चौथाई चम्मच चूर्ण आधा कप गोमूत्रम मिलाकर पीनेसे जुकाम ठीक हो जाता है। यह प्रयोग श्वास रोगको भी नष्ट करनेमे समर्थ है।

(९) शोथ—शरीरकी धातुपात-क्रियामे विषमता होनेसे शोथ उत्पन्न होता है। पुनर्नवाष्टक क्वाथके साथ गोमूत्रका सेवन शोथको दूर करता है। इस रागमे घी तथा नमकका प्रयोग नहीं करना चाहिये। शोथपर गोमूत्रका मर्दन भी लाभकारी सिद्ध हुआ है।

(१०) उदरम कृमि—इस रोगके होनेपर आधा चम्मच अजवायनके चूर्णके साथ चार चम्मच गोमूत्रका एक सप्ताहतक सेवन करना चाहिये। बच्चाको इसकी आधी मात्रा पर्याप्त है।

(११) सधिवात—जोडोका नया तथा पुराना दर्द बहुत कष्टकारक होता है। महारास्नादि क्वाथके साथ गोमूत्र मिलाकर पीनेसे यह रोग नष्ट हो जाता है। सर्दियोमे सोठके १-१ ग्राम चूर्णसे भी इसका सेवन किया जा सकता है। दर्दके स्थानपर गर्म गोमूत्रका सेक भी करना चाहिये।

(१२) हृदयरोग—गोमूत्रमे स्थित विभिन्न खनिज पदार्थ हृदयहेतु रसायनका कार्य करते है। इसके सेवनसे रक्तका प्रवाह नियमित तथा पर्याप्त मात्रामे होता रहता है। गोमूत्रका नित्य सेवन हृदयाघातसे शरीरकी रक्षा करता है।

(१३) कफ-वृद्धि—सीमासे अधिक बढे हुए कफका नाश करने-हतु गोमूत्र प्रभावशाली ओषधि है। इसका सेवन करनेसे विभिन्न कफज-विकार यथा—तन्द्रा, आलस्य, शरीर-गौरव, मुखका मीठा प्रतीत होना, मुखस्राव, अजीर्ण तथा गलेमे कफका लेप रहना आदि नष्ट होते हैं।

(१४) नासूर—इसे नाडीव्रण भी कहते हैं। इस रागकी जड गहरी होती है तथा शल्यक्रिया करनी पडती है। गोमूत्रका सेवन इस व्याधिको समूल नष्ट करनेकी क्षमता रखता है। प्रात -साय ४-४ चम्मच गोमूत्रके पीने तथा प्रभावित स्थलपर गोमूत्रकी पट्टी रखनेसे एक-दो माहम रोग-मुक्ति हो जाती है।

(१५) कोलस्टेरोलका बढना—कोलस्टेरोल एक वसामय द्रव्य है, जिसकी रक्तम सामान्यसे अधिक मात्रा होनेपर विभिन्न विकाराकी उत्पत्ति होती है। गोमूत्रका २-२ चम्मचकी मात्रामे सुबह-शाम सेवन करनेसे बढा हुआ कोलस्टेरोल कम हो जाता है।

इस प्रकार गोमूत्रका सेवन बहुत-सी व्याधियोका प्रशमन करता है। स्वस्थ व्यक्तिका स्वास्थ्य-रक्षण करने तथा उसे रोगोसे बचाने-हेतु भी इसका सेवन किया जाता है। राम-वनवासके समय भरत १४ वर्षतक इसी कारण स्वस्थ रहकर आध्यात्मिक उन्नति करते रहे, क्योकि वे अन्नके साथ गोमूत्रका सेवन करते थे—

गोमूत्रयावक श्रुत्वा भ्रातर वल्कलाम्बरम्॥

(श्रीमद्भा० ९। १०। ३४)

गोबर

भारतीय सस्कृतिमे पवित्रीकरण-हेतु विभिन्न अवसरोपर गोबरकी उपयोगिता प्रतिपादित की गयी है। सिरसे पाँवतक गोबर लगाकर स्नान करते समय इस मन्त्रके बोलनेका विधान है—

अग्रमग्र चरन्तीनामोषधीना वने वने।
तासामृषभपत्नीना पवित्र कायशोधनम्॥
तन्मे रोगाश्च शोकाश्च नुद गोमय सर्वदा।

गोबर पोषक, शोधक, दुर्गन्धनाशक, सारक, शोषक, वलवर्धक तथा कान्तिदायक है। अमरीकी डॉ० मैकफर्सनके अनुसार गोबरके समान सुलभ कीटाणुनाशक द्रव्य दूसरा नहीं है। रूसी वैज्ञानिकोके अनुसार आणविक विकिरणका प्रतिकार करनेम गोबरसे पुती दीवारे पूर्ण सक्षम हैं। भोजनका आवश्यक तत्त्व विटामिन बी-१२ शाकाहारी भोजनमे नहीके बराबर होता है। गायकी बडी आँतमे इसकी उत्पत्ति प्रचुर मात्रामे होती है पर वहाँ इसका आचूषण नहीं हो पाता, अत यह विटामिन गोबरके साथ बाहर निकल जाता है। प्राचीन ऋषि-मुनि गोबरके सेवनसे पर्याप्त विटामिन बी-१२ प्राप्तकर स्वास्थ्य तथा दीर्घायु प्राप्त करते थे।

गोबरके मुखद्वारा सेवन तथा लेपनसे निम्न व्याधियाँ नष्ट होती हैं—

(१) हैजा—कीटाणु-विशेषके द्वारा यह रोग जनपदोद्ध्वसके रूपमे फैलता है। शुद्ध पानीमे गोबर घोलकर पीनसे इस रोगसे बचाव होता हे। मद्रासके डॉ० किगने गोबरकी, हैजेके कीटाणुआको मारनेकी शक्ति देखकर दूषित जलको गोबर मिलाकर शुद्ध करनकी सलाह दी है।

(२) मलेरिया—गोबरका सेवन करनेसे शरीरमे प्रविष्ट हुए मलेरियाके कीटाणुआका नाश हो जाता है। इटलीके वैज्ञानिक जी० ई० बिगेंडने सिद्ध किया है कि गोबरसे मलेरियाके कीटाणु मरते हैं।

(३) खुजली—खाज, खुजली तथा दादका निवारण करने-हेतु गोबरका प्रयोग भारतम आदिकालसे किया जा रहा है। जलम घोलकर गोबर पीने तथा गोबरको प्रभावित भागपर मर्दन कर गर्म पानीसे स्नान करनेसे बहुतसे चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं।

(४) अग्निदग्ध—आगसे जल जानेपर गोबरका लपन रामबाण औषध है। ताजा गोबरका बार-बार लेप करते हुए उसे ठडे पानीसे धोते रहना चाहिये। यह व्रणरोपण तथा कीटाणुनाशक है।

(५) सर्पदश—विषधर साँप, बिच्छू या अन्य जीवक काटनेपर रोगीको गोबर पिलाने तथा शरीरपर गोबरका लेप करनेसे विष नष्ट हो जाता है। अति विषाक्तताकी अवस्थामे गोबरका सवन मस्तिष्क तथा हृदयको सुरक्षित रखता है।

(६) दन्तरोग—गोबरके उपलेको जलाकर पानी डालकर ठडा कर। तदनन्तर उसे सुखाकर बारीक पीसकर शीशीम रखे। इस गोबरकी राखका मजन करनेपर पायरिया, मसूडोसे खून गिरना, दन्तकृमि तथा दाँतोके अन्य रोगोका भी क्षय होता है।

आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें वर्णित पञ्चगव्य-घृतका चिकित्साकी दृष्टिसे बहुत महत्त्व है। इसके निर्माणमे ताजा गाबरका रस तथा गायका ही मूत्र, दूध, दही और घी प्रयुक्त होता है। पञ्चगव्य-घृतके सेवनसे उन्माद, अपस्मार शोथ, उदररोग, बवासीर भगदर कामला विषमज्वर तथा गुल्मका निवारण होता है। सर्पदशके विषको नष्ट करने-हेतु यह उत्तम औषध है। चिन्ता विषाद आदि मनोविकारोको दूर कर पञ्चगव्य-घृत स्नायुतन्त्रको परिपुष्ट बनाता है।

मांसका त्याग श्रेयस्कर है

'हमें उन यस्तुआका अनुसरण करना चाहिये, जिनसे हमे शान्ति मिल सकती हो और जिनसे हम दूसरोकी उन्नति कर सकत हा।'

मासके लिये ईश्वरकी बनायी हुई सृष्टिका सहार नहीं करना चाहिये।

मास खाना, मदिरा पीना या अन्य मानवताकी अवनति, अपमान और निर्बलतामें सहायक होनेवाली चीजोको सर्वथा त्यागना ही श्रेयस्कर है। (रोमान्स १६। १९—२१)

गो-मूत्रकी तुलनामे कोई महौषधि नही

(श्रीरामेश्वरजी पोद्दार)

वर्तमान समयम करोडा रुपये दवाओ, डॉक्टरा और अस्पतालोमे खर्च हो रहे हैं, फिर भी रोग और रोगियोकी सख्या बराबर बढ रही है। मानव-समाज शारीरिक व्याधियोसे ऊब गया है। बहुतसे गरीब परिवार दवा और डॉक्टरोके पीछे अपना धन भी खो चुके हैं, परतु शरीरसे नीरोग नहीं हुए। गाँवोंकी गरीब जनता धनहीनताके कारण चिकित्सा करानेमे असमर्थ है।

हमारा प्राचीन साहित्य गो-महिमासे भरा हुआ है। विज्ञान गोमूत्र और गोबरके गुणोको अब समझने लगा है। जबकि हमारे देशवासी इनका प्रयोग हजारा वर्षसे करते आ रहे हैं।

आयुर्वेदमें अनेक रोगापर गामूत्र और गोबरके प्रयोगका उल्लेख है। धर्मग्रन्थोमे गायको कामधेनु कहा गया है तथा उसकी पाँचो चीज—दूध, दही, घृत, मूत्र और गोबरको बहुत पवित्र और गुणकारी बताया गया है।

गोमूत्र सर्वरोग-नाशक होनेके कारण इसके सेवन-कालमे शरीरका राग ढीला होकर, आँता (मल-मार्गो)से निकलने लगता है। इसलिये आवश्यक परहेजके साथ चिकित्सा चलानेपर किसी एक रोगका नहीं, बल्कि सारे शरीरका इलाज हो जाता है। इसकी विधि अत्यन्त सरल एव शीघ्र लाभ पहुँचानेवाली है।

आयुर्वेदके प्राचीन आचार्योने गोमूत्र और गोबरका उपयोग औषधिके रूपमे किया था और इसे बहुत लाभदायक पाया था। शरीरकी रक्षाके लिये आवश्यक क्षार-लवणादिकी कमीसे होनेवाले जितने भी रोग हैं गोमूत्रके सेवनसे दूर हो जाते हैं।

सभी प्रकारके मूत्रामे गोमूत्र ही अधिक गुणयुक्त माना गया है। गोमूत्रके प्रयोगसे सूजन शीघ्र ही नष्ट होती है। कुष्ठ-निवारणके लिये गोमूत्र परम औषध है। गोमूत्र पीनेपर उदरके सभी रोग नष्ट होते हैं। यकृत् और प्लीहाके बढनेपर गोमूत्र पीने और सेंकनेसे लाभ होता है। ओकोदशालिका (स्नान-गृह) मे चालनीके नीचे बालकको बैठाकर चालनीक छिद्रासे गोमूत्र डालकर तथा मिट्टी और राखद्वारा रगडकर स्नान करानेसे बालकके चर्मरोग आदि नष्ट हो जाते हैं। गोमूत्रके साथ पुराना गुड और हल्दी-चूर्ण पीनेसे श्लीपद् (हाथी-पाँव), दाद और कुष्ठ आदि नष्ट होते हैं। एक मासतक गोमूत्रके साथ एरड-तेल पीनेपर सन्धि-पीडा और वातव्याधि नष्ट होती है।

गायके मूत्रमे कारबोलिक एसिड होनेसे उसकी स्वच्छता और पवित्रता बढ जाती है। वैज्ञानिक रीतिसे गोमूत्रम फॉसफेट, पोटाश, लवण, नाइट्रोजन, यूरिया, यूरिक-एसिड होते हैं, जिन महीनोमे गाय दूध देती है, उसके मूत्रमे लेक्टोज विद्यमान रहता है, जो हृदय और मस्तिष्कके रोगोमे बहुत लाभदायक होता है। आठ मासकी गर्भवती गायके मूत्रमे पाचक रस (हार्मोन्स) अधिक होते हैं।

गायका दूध २ तोला, गायका मूत्र ५ तोला, गायका दही सवा तोला, गायका घी १० माशा, गायके गोबरका रस ढाई तोला और शहद ४ माशा—इन सबको काँच या मिट्टीके बरतनमे डालकर एक-रस कर ले। स्नान करके सूर्योदयके समय सूर्यकी ओर मुँह करके इसे पीना चाहिये। दो-तीन महीनेतक यह क्रम चलाया जा सकता है। इससे अनेको रोग नष्ट होते हैं।

अमेरिकाके डॉ० क्राफोड हेमिल्टन तथा मेकिन्तोशने बहुत पहिले ही यह सिद्ध कर दिया था कि गोमूत्रके प्रयोगसे हृदय-रोग दूर होता है और मूत्र खुलकर आता है।

जरथुश्ती धर्मका एक अत्यन्त महान् और पवित्र उत्सव 'निरग दीन' है। उसमे बैलके मूत्रको इकट्ठा किया जाता है और अभिमन्त्रित करके सँभाल कर रख दिया जाता है। सारे शुद्धि-करणात्मक अवसरोपर इस मूत्रका उपयोग आवश्यक है। इसका पान किया जाता है तथा इसको शरीरपर भी मला जाता है। जैसे हिन्दूधर्ममे गायके प्रति श्रद्धा या मान्यता है वैसे ही पारसी धर्ममे बैल श्रद्धाका पात्र है।

बेलफास्टके प्रो० सिमर्स तथा अल्स्टरके प्रो० कर्कने

गोमूत्रके महत्त्वके विषयमे अनेको प्रयोग किये है और उनका कहना है कि गोमूत्र रक्तमे रहनेवाले दूषित कीटाणुओका नाशक होता है। सजीव मास-पेशीके लिये यह हानि नहीं पहुँचाता, घावोकी विषाक्तताको दूर करता है और पुराने दोषसे रक्तद्वारा सक्रान्त घावमे बढते हुए पीबको रोकता है। मलहम-पट्टीकी प्रारम्भिक चिकित्सामे इसके प्रयोगसे बहुत ही आश्चर्यजनक परिणाम देखनेमे आते हैं।

जिगर और प्लीहाके बढनेसे उदर-रोग हो गया हो तो पुनर्नवाके काढेमे आधा गोमूत्र मिलाकर पिलाया जाय। इसमे उदर-रोग अच्छा हो जायगा। इस सम्बन्धमे अक्कलकोटके डॉ० चाटी अपना अनुभव इस प्रकार बतलाते हैं—

चालीस वर्षकी अपनी नौकरीमे मैंने कितने ही जलोदर-रोगियाका इलाज किया और पेट चीरकर २-३-४ बार भी पेटका पानी निकाल दिया, किंतु उनमेसे अधिकाश रोगियाकी मृत्यु हो गयी। मैंने सुना और आयुर्वेदिक ग्रन्थोमे पढा भी था कि इस रोगपर गोमूत्रका उपयोग बहुत लाभकारी होता है, फिर भी मुझे विश्वास नहीं हाता था। एक बार एक साधु महात्माने गोमूत्रके गुणाका बहुत वर्णन कर कहा कि इसका जलोदरपर बहुत ही अच्छा उपयोग होता है। मैंने गोमूत्रका प्रयोग करके देखा ता विलक्षण लाभ हुआ।

जलोदरमे गुर्दे काम नहीं करते, अतएव मूत्र खुलकर नहीं होता। गोमूत्र पीनेसे गुर्देके विकारको निकलनेमे सहायता मिलती है। मूत्र खुलकर साफ होने लगता है, जिससे रोग दूर हो जाता है। इस विषयमे निम्नलिखित घटना बडी ही उद्बोधक है—

बरेलीमे एक भिखारी भीख माँगकर निर्वाह किया करता था। एक बार उसे जलोदर रोग हो गया। पेट फूलकर घडे-जैसा हो गया, भिखारी सूखकर अस्थि-चर्म मात्र रह गया। वह वहाँके सिविल अस्पतालमे पहुँचा। कम्पाउडर उसे सिविल सर्जनके पास ले गया। सिविल सर्जनने देखकर कहा—'इसकी चिकित्सा यहाँ नहीं हा सकती। यह तो ऑपरेशन करते-करते ही मर जायगा।' बेचारा निराश होकर नगरके बाहर साधुआकी एक टोलीमे जा बैठा, एक साधुने उससे पूछा—'क्या? कैसे आया?' भिखारीने कहा—'ऐसा कोई उपाय बताये, जिससे यह रोग दूर हो जाय'। साधुने कहा—'एक छटाँक गोमूत्र प्रात और एक छटाँक सायकाल प्रतिदिन एक वर्षतक पीओ, खानेके लिये जो मिल जाय वही खाओ।' भिखारीने एक वर्षतक गोमूत्रका सेवन किया। एक वर्ष पश्चात् फिर वह उसी अस्पतालमे पहुँचा। कम्पाउडरने उसे पहचाना और वह उसे उसी सिविल सर्जनके पास ले गया।

डॉक्टरको बताया गया कि यह वही मनुष्य है जो पिछले वर्ष आया था। डॉक्टर देखकर आश्चर्यमे पड गया और उससे पूछने लगा—'बताओ, तुम कैसे अच्छे हुए?' भिखारीने उत्तर दिया—'गोमूत्रने मेरी जान बचा ली।'

देहलीके किशनगज स्टेशनके गुड्स क्लर्कने अपनी बीती बाते सुनायीं। उनकी धर्मपत्नीकी टाँग और पैरोमे एग्जिमा रोग भयकर रूपमे था। एलोपैथिक, आयुर्वेदिक आदि अनेक प्रकारकी चिकित्साएँ की गयीं। पर लाभ नहीं पहुँचा। अकस्मात् एक महात्माका उनके पास आगमन हुआ। उन्होने बताया कि 'गोमूत्रसे पैरोको प्रतिदिन भिगोते रहो, उससे यह रोग दूर हो जायगा।' उन्होने तीन मासतक वैसा ही किया और वह रोग दूर हो गया। उसके पश्चात् वह फिर कभी नहीं हुआ।

एक महात्माने ज्ञान-तन्तुओके रोगो—अपीलत्सी, मिर्गी, हिस्टीरिया तथा पागलपनमे गोमूत्रको बहुत ही उपयोगी माना है।

गोमूत्रमे पुरुषो तथा गर्भवती स्त्रियोके गुप्त रोगोका निवारण करनेकी शक्ति विद्यमान है। खुजली, दाद, एग्जिमा तथा अन्य त्वचा-रोगोमे रोगीको गोमूत्र पीनेसे एव गोबर तथा गोमूत्रका लेप करनेसे शीघ्र लाभ होता है, शरीरकी गर्मी (ज्वर आदि) और भारीपनमे गोमूत्र लाभप्रद है।

यदि किसी मनुष्यको क्षय हो तो उसे गौके उस बच्चेका मूत्र, जा केवल दूधपर ही रहता है देनेसे रोग दूर होता है।

खूनी बवासीरमे गोमूत्रका एनिमा बहुत लाभप्रद है। कुछ समयतक प्रतिदिन यह एनिमा लेते रहनेसे मस्से सर्वथा सिकुड जाते हैं।

गोमूत्र सौम्य और रेचक है। कब्ज हो, पेट फूल गया

हो, डकारे आती हो और जी मिचलता हो तो तीन तोला स्वच्छ और ताजा गोमूत्र छानकर आधा माशा सेधा नमक मिलाकर पी जाना चाहिये। थोडी ही देरमे टट्टी होकर पेट उतर जाता है और आराम मालूम होता है।

छोटे बच्चोका पेट फूलनेपर उन्ह गोमूत्र पिलाया जाता है। उमके अनुसार साधारणतया एक वर्पके बच्चेको एक चम्मच गोमूत्र नमक मिलाकर पिला देना चाहिये, तुरत पेट उतर जाता है। बालकोंके डब्बेका रोग, श्वास खाँसी तथा लीवर प्लीहादिके अनेको रोग गोमूत्रके सेवनसे जाते रहते हैं। (डब्बा रोगम बच्चेका पेट फूल जाता है, नाभि ऊपर आ जाती है और श्वास तीव्र गतिसे चलने लगती है।)

पेटके कृमियोका मिटानेके लिये तो गोमूत्रसे बढकर दूसरी औषधि है ही नहीं। चमुने (गुदाके कृमि)के निकलनेमे गोमूत्रम कुछ चिकनाई मिला दी जाती है।

बच्चेको सूखा रोग हो जाय तो गोमूत्रम केसर मिलाकर कम-से-कम एक महीनेतक पिलाय, यह औषधि दिनमे दो बार दी जाय, आयुके अनुसार मात्रा एक ड्रामसे चार ड्रामतककी हो।

पेटकी व्याधि विशेषत यकृत् और प्लीहा बढ रही हो तो पाँच तोला गोमूत्रमे नमक मिलाकर प्रतिदिन पिलाया जाय, थोडे ही दिनोम आराम हो जाता है।

यकृत् एव प्लीहा रोग होनेपर तथा पेट फूलनेपर दर्दके स्थानपर गोमूत्रकी सेक भी की जाती है। एक अच्छी ईंटको गरम करके उसपर चिथडा लपेट कर गोमूत्र डालकर उसका सेक तथा भाप दी जा सकती है।

शरीरम खाज अधिक आती हो ता गोमूत्रमे नीमके पत्ते डालकर उसका लेप भी किया जा सकता है।

जीर्ण-ज्वरक रोगीको दिनमे दा बार गोमूत्र पिलाते रहनेसे सात-आठ दिनोमे बुखार जाता रहेगा।

आँखोमे दाह, शरीरमे सुस्ती हो और अरुचि हो तो गोमूत्रम गुड या शक्कर मिलाकर पीना चाहिये।

आध पाव गोमूत्र कपडेसे छानकर पिलानेसे दस्त हो जाता है।

शक्ति और उम्रके अनुसार नित्य सबेरे ताजा गोमूत्र २१ या ४१ दिनोतक पिलानेसे कामला (पीलिया—जॉन्डिस्) रोगमे निश्चय ही आराम हो जाता है।

आँख और कानकी बीमारीमे गोमूत्र डाला जाता है तथा उसकी सेक और भाप भी दी जाती है। गोमूत्रमे रहनेवाला यूरिया कृमिनाशक कार्य करता है।

गोमूत्र शरीरके तन्तुओके लिये हानिकारक नहीं है। घावोपर यह अविषाक्त पदार्थके रूपम प्रयुक्त किया जाता है। इसके प्रयोगसे दूसरे प्रकारकी चिकित्सामे लगनेवाले परिश्रम, खर्च और समयकी बचत होती है।

इसस बीमारीके ठीक होनेकी प्रक्रियामे तनिक भी बाधा नहीं पहुँचती है। तात्कालिक चिकित्साके रूपमे इसका प्रयोग बहुत ही अपूर्व सिद्ध होगा। यह घावमे पुराने रक्त-सक्रमणसे उत्पन्न होनेवाले पीबको रोकता है।

गायके मूत्रको गुन-गुना करके कानम डालनेसे कर्ण-शूल—कानका दर्द दूर होता है।

कान पकनेपर गोमूत्रको बोतलमे भर ले, निथर जानेपर छानकर शीशीमे अच्छा कार्क लगाकर रख दे, रोगीका कान साफ कर ३-४ बूँद कानमे टपका दे। बगला कहावत है—

जे खाय गोरूरचोना तार देह होय सोना।

अर्थात् जो गोमूत्र पीता है उसकी देह सोनेकी जैमी (नीरोग) हो जाती है।

गोमूत्रका आन्तरिक प्रयाग आमाशय तथा यकृत्पर बडा लाभ करता है, उसकी मात्रा पाँच तोलातक है। गोमूत्र मृदु, रेचक तथा मूत्रल है। ज्वर आदिमे इसका प्रयोग घरेलू दवाकी तरह किया जाता है। कुछ दिनका रखा हुआ गोमूत्र धातुके बरतनाको साफ करनेमे काम आता है।

कुछ दिन गामूत्रके सेवनसे धमनियाँ प्रसारित होती ह, जिससे रक्तका दबाव स्वाभाविक होन लगता है। गोमूत्रसे भूख बढती है, शोथ आदि कम होती है। यह पुराने वृक्कशोथके लिये उत्तम ओषधि है। गोमूत्र-गोमयकी जितनी प्रशसा की जाय उतनी थोडी है।

[प्रेषक—श्रीशिवकुमारजी गायल]

वेद-शास्त्रोमे गौ

इस ससारमे 'गौ' एक महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद पशु है। गौकी महिमाका उल्लेख वेदादि सभी शास्त्रोमे मिलता हैं। गौ भगवान् सूर्यदेवकी एक प्रधान किरणका नाम है। सूर्यभगवान्के उदय हानेपर उनकी ज्योति आयु और गौ—ये तीनो किरणे स्थावर-जङ्गम समस्त प्राणियोमे यथासम्भव न्यूनाधिक्यरूपमे प्रविष्ट होती हैं, परतु इनमे सूर्यभगवान्की 'गो' नामकी किरण केवल गो-पशुमे ही अधिक मात्रामे समाविष्ट होती है। अतएव आर्यजाति इस पशुको 'गौ' नामसे पुकारती है।

'गो' नामक सूर्य-किरणकी पृथ्वी स्थावरमूर्ति और गो-पशु जङ्गममूर्ति है। शास्त्रामे दोनाको 'गा' शब्दसे व्यवहृत किया गया है। ये दोनो ही अनन्तगुणसम्पन्न भगवान् विराट्के स्वरूप हैं। शुक्ल यजुर्वेदमे गौ और पृथ्वी—इन दोनोके सम्बन्धमें प्रश्न किया गया है कि 'कस्य मात्रा न विद्यते?' (किसका परिमाण (उपमा) नहीं है?) [शु० य० २३। ४७]। इसका उत्तर दिया गया है—'गोस्तु मात्रा न विद्यते' (गौका परिमाण (उपमा) नहीं है) [शु० य० २३। ४८]।

गौ[१] और पृथ्वी—ये दोनो गौके ही दो स्वरूप हैं। इनमे कोई भेद नहीं है। गौ और पृथ्वी—इन दानामे अभिन्नता है। ये दानो ही परस्पर एक-दूसरीकी सहायिका और सहचरी हैं। मृत्युलोकको आधारशक्ति 'पृथ्वी' है और देवलोककी आधारशक्ति 'गौ' है। पृथ्वीको 'भूलोक' कहते हैं और गौको 'गोलाक' कहते हैं। भूलाक अधोलोक (नीचे)-म है और गोलाक ऊर्ध्वलोक (ऊपर)-मे है। भूलोककी तरह गोलोकमे भी श्रेष्ठ भूमि है।

जिम प्रकार पृथ्वीपर रहते हुए मनुष्योके मल-मूत्रादिके त्याग आदिके कुत्सित आचरणोको पृथ्वीमाता सप्रेम सहन करती है उसी प्रकार गो-माता भी मनुष्योके जीवनका आधार होती हुई मनुष्याके वाहन निरोध एव ताडन आदि कुत्सित आचरणोको सहन करती है। इसीलिये वेदोंमे पृथ्वी और गौको 'मही' शब्दसे व्यवहृत किया गया है। मनुष्योमें भी जो सहनशील अर्थात् क्षमी होते हैं वे महान् माने जाते हैं। ससारमें पृथ्वी और गौसे अधिक क्षमावान् और कोई नहीं है। अत ये दोनों ही महान् हैं।

शास्त्राम गौ[२]को सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी[३] कहा गया है। अत गौके दर्शनसे समस्त देवताओके दर्शन और समस्त तीर्थोकी यात्रा करनेका पुण्य प्राप्त हाता है। जहाँ गौका निवास होता है, वहाँ सर्वदा सुख-शान्तिका पूर्ण साम्राज्य उपस्थित रहता है। गो-दर्शन गोस्पर्श गोपूजन, गोस्मरण, गोगुणानुकीर्तन और गोदान करनेसे मनुष्य सर्वविध पापोसे मुक्त होकर अक्षय स्वर्गका भोग प्राप्त करता है[४]। गौओंको परिक्रमा करनेसे ही बृहस्पति सबके वन्दनीय माधव (विष्णु) सबके पूज्य और इन्द्र ऐश्वर्यवान् हो गये।

गौके गोबर गोमूत्र गोदुग्ध, गोघृत और गोदधि आदि सभी पदार्थ परम पावन आरोग्यप्रद तेजप्रद आयुवर्द्धक तथा बलवर्द्धक माने जाते हैं। यही कारण है कि आर्यजातिके

१-(क) गोशब्देनोदिता पृथ्वी सा हि माता शरीरिणाम्। शैशवे जननी माता पश्चात् पृथ्वी हि शस्यते॥

'गो' शब्द पृथ्वीका द्योतक है। वह समस्त देहधारियोकी माता है। बाल्यावस्थामें अपनी माता जन्म देने तथा दुग्ध पिलानेके कारण 'माता' कही जाती है पश्चात् पृथ्वी जीवनपर्यन्त अन्न आदि विविध पदार्थ देनेके कारण 'पृथ्वी माता' कही जाती है।'

(ख) 'गोरिति पृथिव्या नामधेयम्।' (निरुक्त २। १। १) गौ यह पृथ्वीका वाचक है।

२-(क) सर्वे देवा स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ (बृहत्पाराशरस्मृति ३। ३३)

(ख) वैश्वदेवी वै गौ 'यद् गा ददाति विश्वेषामेतद् देवाना तेन प्रिय धाम उपैति। (गोपथब्राह्मण ३। ३। १९)

(ग) अथर्ववेद ९। ७। १—२६।

३-स्कन्दपुराण आवन्त्यखण्ड रेवाखण्ड ८३। १०४—११२।

४-पद्मपुराण सृष्टिखण्ड ४८। १४५-१४६।

प्रत्येक श्रौत-स्मार्त शुभ-कर्ममें पञ्चगव्य और पञ्चामृतका विधान अनादिकालसे प्रचलित और मान्य है।

गौके जब बछडी-बछडे पैदा होते हैं, तब सर्वप्रथम वे केवल अपनी माताके दुग्धका पान करके ही तत्क्षण वायुके वेगके सदृश दौडने लगते हैं। संसारमें गोवत्सके अतिरिक्त अन्य किसी भी मनुष्यसे लेकर कीट-पतङ्गादितकके प्राणीके नवजात शिशुमें इस प्रकारकी विचित्र शक्ति और स्फूर्ति नहीं पायी जाती, जो कि 'गोवत्स'की तरह उत्पन्न होते ही इतस्ततः दौडने लग जाय। इसीलिये मानवजातिमें जब बालक पैदा होते हैं, तब उन्हें सर्वप्रथम मेधाजननके लिये **'मधुघृते प्राशयति घृतं वा'** (पार० गृ०, सूत्र १। १६। ४)। इस सूत्रके अनुसार मधु और गोघृतमें सुवर्ण घिसकर अथवा केवल गोघृतमें सुवर्ण घिसकर वह पदार्थ बालकको चटाया जाता है। पश्चात् उसे गौका दुग्ध पिलाया जाता है। अतएव गौको 'माता' कहा जाता है।

हमारी माताएँ हमें बाल्यावस्थामें ही अधिक-से-अधिक दो-ढाई सालतक अपना दुग्ध पिलाकर हमारा इहलोकमें ही कल्याण करती हैं, किंतु गोमाता हमें आजीवन अपना अमृतमय दुग्ध पिलाकर हमारा इहलोकमें पालन-पोषण करती है और हमारी मृत्युके बाद वह हमें स्वर्ग पहुँचाती है जैसा कि अथर्ववेद (१८। ३। ४) में भी कहा है—

'अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधिरोहयैनम्।'

'धनं च गोधनं प्राहुः' के अनुसार विद्वानोंने 'गौ' को ही असली धन कहा है। महाभारतमें लिखा है—

'गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत॥'

(अनुशासनपर्व ५१। २६)

'हे अच्युत! मैं इस संसारमें गो-धनके सदृश और कोई धन नहीं देखता हूँ।'

हिंदीके एक पद्यद्वारा सांसारिक समस्त वस्तुओंकी अपेक्षा 'गोधन'को ही सर्वश्रेष्ठ धन बतलाया गया है—

सोना-चाँदी और रत्न-मणि, सब धन है केवल नामका।
यदि है कोई धन जगतमें, गो-धन है बस कामका॥

गौ स्वर्ग और मोक्षकी सीढी है। यह परम पावन और सबकी कामना पूर्ण करनेवाली मङ्गलदायिनी देवी है। गोमाताकी सेवासे पुरुषार्थ-चतुष्टयकी प्राप्ति और ऐहिक-आमुष्मिक कल्याणकी प्राप्ति होती है। गोसेवासे मनुष्यके अगणित कुलोंका उद्धार और उनकी यम-यातनासे मुक्ति होती है। गोसेवासे पुत्रप्राप्ति, लक्ष्मीप्राप्ति, विद्याप्राप्ति, यशप्राप्ति, ज्ञानप्राप्ति, बलप्राप्ति और दीर्घायुकी प्राप्ति होती है। गोमातामें अनन्तानन्त गुण विद्यमान हैं, तभी तो शास्त्रकारोंने—

गावः प्रतिष्ठा भूतानाम्। (अग्निपुराण २९२। १५)
गावः प्रतिष्ठा भूतानाम्। (महा०, अनु० ७८। ५)
गावः शरण्या भूतानाम्। (महा० अनु० ६६। ५०)
गावस्तेजो महद्दिव्यम्। (महा० अनु० ८१। १७)
गावो हि सुमहत्तेजः। (महा० अनु० ५१। ३१)
मातरः सर्वभूतानाम्। (महा० अनु० ६९। ७)
गावो बन्धुर्मनुष्याणाम्। (पद्म०, सृष्टि० ५०। १५५)
गावः प्रतिष्ठा सचराचरस्य।
गावो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा।

—इत्यादि कहकर गौकी महत्ताको स्वीकार किया है और भी देखिये—

गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।

(महा० अनु० ५१। २८)

'गौएँ सर्वदा लक्ष्मीकी मूल हैं। गौओंमें पापकी स्थिति नहीं होती है।'

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत्किञ्चित्परं स्मृतम्॥

(महा० अनु० ५१। ३३)

'गौएँ स्वर्गकी सीढी हैं, गौओंकी स्वर्गमें भी पूजा होती है। गौएँ समस्त अभिलषित वस्तुओंको देनेवाली हैं, अतः गौओंसे बढकर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।'

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।

(महा० अनु० ६९। ७)

'गौएँ समस्त प्राणियोंको माताके सदृश सर्वविध सुखोंको देनेवाली हैं।'

'ईश्वरः स गवां मध्ये।' (महा० अनु० ७७। २९)
'गौओंके मध्यमें ईश्वरकी स्थिति होती है।'

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥

(महा० अनु० ७८। ५)

'गौएँ मानवोंके जीवनका प्रतिष्ठारूपी परम धन हैं और गौएँ कल्याणकी परम निधान हैं।'

गावो महार्थाः पुण्याश्च तारयन्ति च मानवान्।
धारयन्ति प्रजाश्चेमा हविषा पयसा तथा॥
न हि पुण्यतमं किञ्चिद् गोभ्यो भरतसत्तम।
एताः पुण्याः पवित्राश्च त्रिषु लोकेषु सत्तमाः॥

(महा० अनु० ८१। २-३)

'गौएँ महान् अर्थको और पुण्यको देनेवाली हैं। गौएँ मनुष्योका उद्धार करती हैं। गौएँ घृत और दुग्धसे प्रजाका पालन-पोषण करती हैं। अत हे युधिष्ठिर! गौओसे बढकर और कोई पुण्यतम वस्तु नहीं है। गौएँ तीनो लोकोंमे पुण्य और पवित्र कही गयी हैं।'

गाव प्रतिष्ठा भूताना तथा गाव परायणम्।
गाव पुण्या पवित्राश्च गोधन पावन तथा॥

(महा० अनु० ८१। १२)

'गौएँ समस्त प्राणियाकी प्रतिष्ठा और सबकी आश्रय (रक्षक) हैं। गौएँ पुण्यप्रद और पवित्र हैं। अत गोधनको पावन कहा गया है।'

गाव श्रेष्ठा पवित्राश्च पावन ह्येतदुत्तमम्॥

(महा० अनु० ८३। ३)

'गौएँ सर्वश्रेष्ठ तथा पवित्र पूजन करने योग्य और ससारमे सबसे उत्तम हैं।'

गावस्तेज पर प्रोक्तमिहलोके परत्र च।
न गोभ्य परम किञ्चित् पवित्र भरतर्षभ॥

(महा० अनु० ८३। ५)

'इस लोक और परलोकमे गौएँ परम तेज स्वरूप है। हे भरतर्षभ! गौआसे बढकर और कोई वस्तु परम पवित्र नहीं है।'

यज्ञाङ्ग कथिता गावो यज्ञ एव च वासव।
एताभिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथचन॥

(महा० अनु० ८३। १७)

'गौआको यज्ञका अङ्ग और साक्षात् यज्ञरूप कहा गया है। गौआके विना यज्ञ कथमपि नहीं हो सकते।'

गावो बन्धुर्मनुष्याणा मनुष्या बान्धवा गवाम्।
गौश्च यस्मिन् गृहे नास्ति तद् बन्धुरहित गृहम्॥

(पद्म० सृष्टि० ५०। १५५-१५६)

'गौएँ मनुष्याकी बन्धु हैं और मनुष्य गौआके बन्धु हैं। जिस घरमे गौ नहीं है वह घर बन्धुशून्य है।'

गा च स्पृशति यो नित्य स्नातो भवति नित्यश ।
अतो मर्त्य प्रपुष्टैस्तु सर्वपापै प्रमुच्यते॥
गवां रज खुरोद्धूतं शिरसा यस्तु धारयेत्।
स च तीर्थजले स्नात सर्वपापै प्रमुच्यते॥

(पद्म० सृष्टि० ५०। १६५-१६६)

'जो मनुष्य प्रतिदिन गौका स्पर्श करता है वह प्रतिदिन तीर्थजलमे स्नान करनेका फल प्राप्त करता है। गौके द्वारा मनुष्य सर्वविध घोर पापासे मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य गौके खुरसे उडी हुई धूलिको अपने मस्तकपर धारण करता है, वह समस्त तीर्थोंके जलमे स्नान करनेका फल प्राप्त करता है और समस्त पापोसे छुटकारा पा जाता है।'

गाव पवित्रा माङ्गल्या गोषु लोका प्रतिष्ठिता ।

(अग्निपुराण २९२। १)

'गौएँ पवित्र और मङ्गलदायिनी हैं। गौओमे समस्त लोक प्रतिष्ठित है।'

गवा श्वासात् पवित्रा भू स्पर्शनात् किल्बिषक्षय ।

'गौआके श्वास-प्रश्वाससे भूमि पवित्र होती है और गौआके स्पर्श करनेसे मनुष्यके पापोका नाश होता है।'

गावः प्रतिष्ठा भूताना गाव स्वस्त्ययन परम्।
अन्नमेव पर गावो देवाना हविरुत्तमम्॥
पावन सर्वभूताना क्षरन्ति च वहन्ति च।
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि॥
ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमेषु योजिता ।
सर्वेषामेव भूताना गाव शरणमुत्तमम्॥
गाव पवित्र परम गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गाव स्वर्गस्य सोपान गावो धन्या सनातना ॥

(अग्निपुराण २९२। १५—१८)

'गौएँ प्राणियोंके जीवनकी प्रतिष्ठा हैं और गौएँ कल्याणका महान् निधान हैं। गौएँ ही अन्नका परम साधन हैं, गौएँ ही देवताओका उत्तम घृत हैं। गौएँ समस्त प्राणियाको पवित्र करनेवाले दुग्धको देती हैं और गोवत्स भार वहन करते हैं। गौएँ स्वर्गमे ऋषियाके मन्त्रपूत घृतसे देवताओंको तृप्त करती हैं। अत गौएँ हवनमे प्रतिष्ठित हैं। गौएँ समस्त प्राणियाकी उत्तम शरण (आश्रय) हैं। गौएँ परम पवित्र और मङ्गलदायिनी हैं। गौएँ स्वर्गकी सीढी हैं और गौएँ धन्य और सत्य-सनातन हैं।'

सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषु च।
तद्गुह्येषु स्वय लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पित ॥
गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलक कुरुते नर ।
तीर्थस्नातो भवेत् सद्यो जयस्तस्य पदे पदे॥
गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम्।
प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम्॥

(ब्रह्मवैवर्त० श्रीकृष्णजन्म० २१। ९१—९३)

'गौके शरीरमे समस्त देवगण निवास करते है और गौके पैरामे समस्त तीर्थ निवास करते हैं। गौके गुह्यभागमे लक्ष्मी सदा रहती है। गौके पैरोमे लगी हुई मिट्टीका तिलक जो मनुष्य अपने मस्तकमे लगाता है, वह तत्काल तीर्थजलमे स्नान करनेका पुण्य प्राप्त करता है और उसकी पद-पदपर विजय होती है। जहाँपर गौएँ रहती हे उस स्थानको तीर्थभूमि कहा गया है। ऐसी भूमिमे जिस मनुष्यकी मृत्यु होती है, वह तत्काल मुक्त हो जाता है, यह निश्चित है।

वेदोमे भी गोमहिमापरक अनेक मन्त्र उपलब्ध है, जिनमेसे कुछ मन्त्र उद्धृत किये जात हैं—

ता वा वास्तून्युश्मसि गमध्यै
यत्र गावा भूरिशृङ्गा अयास ।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्ण
परम पदमव भाति भूरि॥

(ऋग्वेद १। १५४। ६)

'गोभक्तगण अश्विनीकुमारसे प्रार्थना करते हैं कि—'हे अश्विनीकुमार! हम आपके उस गोलोकरूप निवासस्थानम जाना चाहते हैं, जहाँ बडी-बडी सीगवाली सर्वत्र जानेवाली गौएँ निवास करती हैं। वहींपर सर्वव्यापक विष्णु भगवान्का परम पद वैकुण्ठ प्रकाशित हो रहा है।'

माता रुद्राणा दुहिता वसूना
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि ।

(ऋग्वेद ८। १०१। १५)

गौ एकादश रुद्राकी माता अष्ट वसुओकी कन्या और द्वादश आदित्याकी बहन है, जो कि अमृतरूप दुग्धका देनेवाली है।

देवो व सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भाग प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात॥

(शुक्लयजुर्वेद १। १)

'हे गौओ! प्राणियोको तत्तत्कार्योंमे प्रविष्ट करानेवाले सवितादेव तुम्हे हरित-शस्य-परिपूर्ण विस्तृत क्षेत्र (गोचरभूमि) मे चरनेके लिये ले जायँ क्योकि तुम्हारे द्वारा श्रेष्ठ कर्मोंका अनुष्ठान होता है। हे गौओ! तुम इन्द्रदेवके क्षीरमूलक भागको बढाओ अर्थात् तुम अधिक दुग्ध देनेवाली हो। तुम्हारी कोई चोरी न कर सके तुम्हे व्याघ्रादि हिंसक जीव-जन्तु न मार सके क्योकि तुम तमोगुणी दुष्टाद्वारा मारे जाने योग्य नहीं हो। तुम बहुत सतति उत्पन्न करनेवाली हो, तुम्हारी सततियामे ससारका बहुत बडा कल्याण होता है। तुम जहाँ रहती हो, वहाँपर किसी प्रकारकी आधि-व्याधि नही आने पाती। यहाँतक कि यक्ष्मा (तपेदिक) आदि राजरोग भी तुम्हारे पास नही आ सकते। अत तुम सर्वदा यजमानके घरमे सुखपूर्वक निवास करो।'

सा विश्वायु सा विश्वकर्मा सा विश्वधाया ।

(शुक्लयजुर्वेद १। ४)

'वह गो यज्ञसम्बन्धी समस्त ऋत्विजोकी तथा यजमानकी आयुको बढानेवाली है। वह गौ यज्ञक समस्त कार्योका सम्पादन करनेवाली है। वह गो यज्ञके समस्त देवताओको पोषण करनवाली है अर्थात् दुग्धादि हवि पदार्थ देनवाली है।'

अन्ध स्थान्धो वो भक्षीय मह स्थ महो वो भक्षीयोर्ज स्थोर्ज वो भक्षीय रायस्पोष स्थ रायस्पोष वो भक्षीय॥

(शुक्लयजुर्वेद ३। २०)

'हे गौओ! तुम अन्नरूप हो अर्थात् तुम दुग्ध-घृतादिरूप अन्नको देनेवाली हो अत तुम्हारी कृपासे हमे भी दुग्ध-घृतादिरूप अन्न प्राप्त हो। तुम पूजनीय हो, अत तुम्हार सेवन (आश्रय) से हम श्रेष्ठता प्राप्त करे। तुम बलस्वरूप हो अत तुम्हारी कृपासे हम भा बल प्राप्त करे। तुम धनको बढानेवाली हो अत हम भी धनकी वृद्धि प्राप्त करे।'

सꣳहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन।

(शुक्लयजुर्वेद ३। २२)

'हे गाओ! तुम विश्वरूपवाली दुग्ध-घृतरूप हवि प्रदान करनेके लिये यज्ञकर्मम सगतिवाली हो। तुम अपन दुग्धादि रसोको प्रदान कर हमारा गास्वामित्व सर्वदा सुस्थिर रखो।'

इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि व कामधरण भूयात्॥

(शुक्लयजुर्वेद ३। २७)

'हे पृथ्वारूप गा! तुम इस स्थानपर आओ। घृतद्वारा दवताओको अदितिके सदृश पालन करनेवाली अदितिरूप गौ! तुम इस स्थानपर आओ। हे गौ! तुम समस्त साधनाका दनवाली होनेके कारण सभीकी आदरणीया हो। हे गौ! तुम इस स्थानपर आओ। तुमने हम दनके लिये जा अपेक्षित फल धारण किया है वह तुम्हारा कृपास हम प्राप्त हो। तुम्हारा प्रसन्नतासे हम अभाष्ट फलाको धारण करनवाल बन।'

वीर विदय तव देवि सन्दृशि।

(शुक्लयजुर्वेद ४। २३)

'हे मन्त्रपूत दिव्य गौ! तुम्हारे सुन्दर दर्शनके महत्त्वसे मैं बलवान् पुत्रको प्राप्त करूँ।'

या ते धामान्युश्मसि गमध्यै
यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयास ।
अत्राह तदुरुगायस्य विष्णो
परम पदमव भारि भूरि॥
(शुक्लयजुर्वेद ६। ३)

'मैं तुम्हारे उन लोकोमे जाना चाहता हूँ, जहाँ बडी-बडी सींगवाली बहुत-सा गोएँ रहती है। जहाँपर गौएँ रहती हैं, वहाँ विष्णु भगवान्का परम प्रकाश प्रकाशित रहता है।'

राया वय ँसस्वा ँसो मदेम
हव्येन देवा यवसेन गाव ।
ता धेनु मित्रावरुणा युव नो
विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्॥
(शुक्लयजुर्वेद ७। १०)

'जिस प्रकार देवगण गौके हव्य-पदार्थकी प्राप्तिसे और गौ घास आदि खाद्य-पदार्थकी प्राप्तिसे प्रसन्न होती है, उसी प्रकार हम भी बहुत दुग्ध देनेवाली गोको प्राप्त कर प्रसन होते हैं। गौके घरम रहनसे हम धनादिसे परिपूर्ण होकर समस्त कार्योको करनेम समर्थ हो सकते हैं। अत हे देवताओ! तुम सर्वदा हमारी गौकी रक्षा करो जिससे हमारी गौ अन्यत्र न जाने पावे।'

क्षुमन्त वाज ँसहस्रिण मक्षु गोमन्तमीमहे।
(सामवेद उत्तरार्चिक १। ३)

'हम पुत्र-पात्रादिसहित सैकडा-हजारोकी सख्यावाले धनोकी और गौ आदिसे युक्त अन्नकी शीघ्र याचना करते हैं।'

धनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते।
गामश्व पिप्युषी दुहे।
(सामवेद उत्तरार्चिक २०। ७)

'हे इन्द्र! तुम्हारी स्तुतिरूपा सत्य वाणी गौरूप होकर यजमानकी वृद्धिकी इच्छा करती हुई यजमानके लिये गौ घोडे आदि समस्त अभिलषित वस्तुओका दोहन करती (दुहती) है।'

इमा या गाव स जनास इन्द्र ॥
(अथर्ववद ४। २१। ५)

'जिसके पास गौएँ रहती हैं वह तो एक प्रकारसे इन्द्र ही है।'

यूय गावो मेदयथा कृश चिदश्रीर
चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्र गृह कृणुथ भद्रवाचो
बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥
(अथर्ववेद ४। २१। ६)

'हे गौओ! तुम अपने दुग्ध-घृतादिद्वारा दुर्बल मनुष्योको हृष्ट-पुष्ट करती हो और निस्तेजाको तेजस्वी बनाती हो। तुम अपने मङ्गलमय शब्दोच्चारणसे हमारे घरोको मङ्गलमय बनाती हो। इसलिये सभाओम तुम्हारी कीर्तिका वर्णन होता रहता है।'

वशा देवा उप जीवन्ति वशा मनुष्या उत।
वशेद सर्वमभवद् यावत् सूर्यो विपश्यति॥
(अथर्ववेद १०। १०। ३४)

'वशा (वशम रहनेवाली) गौके द्वारा प्राप्त गो-दुग्धादि पदार्थोसे देवगण और मनुष्यगण जीवन प्राप्त करते हैं। जहाँतक सूर्यदेवका प्रकाश होता है वहाँतक गौ ही व्याप्त है अर्थात् यह समस्त ब्रह्माण्ड गौके आधारपर ही स्थित है।'

धेनु सदन रयीणाम्। (अथर्ववेद ११। १। ३४)

'गौ सम्पत्तिका घर है।'

महाँस्त्वेव गोर्महिमा।
(शतपथब्राह्मण ३। ३। ३। १)

'गौकी महिमा महान् है।'

इस प्रकार वेदोसे लेकर समस्त धार्मिक ग्रन्थोमे और समस्त सम्प्रदायवादियोके धर्मग्रन्थोमे एव प्राचीन-अर्वाचीन ऋषि-महर्षि आचार्य विद्वानोसे लेकर आधुनिक विद्वानोतक सभीकी सम्मतिम गोमाताका स्थान सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य है।

गौ एक अमूल्य स्वर्गीय ज्योति है, जिसका निर्माण भगवान्ने मनुष्योके कल्याणार्थ आशीर्वाद-रूपम पृथ्वीलोकम किया है। अत इस पृथ्वीम गोमाता मनुष्योके लिये भगवान्का प्रसाद है। भगवान्के प्रसादस्वरूप अमृतरूपी गोदुग्धका पान कर मानवगण ही नही किंतु देवगण भी तृप्त और सतुष्ट होते है। इसीलिये गोदुग्धको 'अमृत' कहा जाता है। यह अमृतमय गोदुग्ध देवताओके लिये भोज्य-पदार्थ कहा गया है। अत समस्त देवगण गोमाताके अमृतरूपी गोदुग्धके पान करनेके लिये गोमाताके शरीरम सर्वदा निवास करते हैं।

शतपथब्राह्मण (३। ३। ३। २) मे लिखा है कि गोमाता मानवजातिका बहुत ही उपकार करती है—

'गौर्वै प्रतिधुक्। तस्यै शृत तस्यै शरस्तस्यै दधि तस्यै मस्तु तस्याऽआतञ्चन तस्यै नवनीत तस्यै घृत तस्याऽआमिक्षा तस्यै वाजिनम्॥'

गोमाता हमे प्रतिधुक् (ताजा दुग्ध), शृत (गरम दुग्ध) शर (मक्खन निकाला हुआ दुग्ध), दही, मट्ठा, घृत, खीस वाजिन (खीसका पानी), नवनीत और मक्खन—ये दस प्रकारके अमृतमय भोजनीय पदार्थ देती है जिनको खा-पीकर हम आरोग्यता बल बुद्धि एव ओज आदि शारीरिक बल प्राप्त करते हैं और गौके दुग्धादि पदार्थोंके व्यापारद्वारा तथा गौके बछडा-बछडी एव गाबरद्वारा हम प्रचुरमात्रामे विविध प्रकारके अन्न पैदाकर धनवान् बन जाते हैं। अत गोमाता हमे बल अन्न और धन प्रदान कर हमारा अनन्त उपकार करती है। अत मानवजातिके लिये गौसे बढकर उपकार करनेवाला और कोई शरीरधारी प्राणी नहीं है। इसीलिये हिदूजातिने गौको देवताके सदृश समझकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करना अपना परम धर्म समझा है।

प्राचीन इतिहासाके अवलोकनसे स्पष्ट विदित होता है कि गोजातिके रक्षार्थ समय-समयपर बडे-बडे शक्तिशाली ऋषि-मुनियोने और राजा-महाराजाआने अपन प्राणोतककी भी परवा न कर गोजातिकी रक्षा की है। राजा दिलीप छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप आदिकी गोरक्षार्थ आत्मसमर्पणकी पवित्र गाथाएँ विश्वविदित ही है। अत हमारा भी परम कर्तव्य है कि हम गोजातिकी सर्वात्मना रक्षा करे। जो गौ हमारा सब प्रकारसे कल्याण करे जो गौ हमारा सर्वविध दु ख दूर करे ओर जो गौ हमारी समस्त आवश्यकताओंकी पूर्ति करे उस गोमाताका हमारे समक्ष दुर्दशा हो और हमारी जानकारीमे निरपराध अगणित गौओका वध हो यह हम भारतवासी समस्त हिदू-समाजक लिये बडी लज्जा और दु खकी बात है। जो मनुष्य आलस्य प्रमाद लोभ अथवा स्वार्थके वशीभूत होकर गौआक रक्षार्थ प्रयत्न नहा करत उन्ह शास्त्रोमे आततायी महापापी ओर अहिदू कहा गया है। अत समस्त हिंदुआको अपने हिदुत्वकी रक्षाके लिये *सर्वात्मना गोरक्षार्थ पूर्ण प्रयत्न करना* चाहिये।

आज हमारा देश स्वतन्त्र हा चुका है और हम भी स्वतन्त्र कहलाते हैं फिर भी हमार पवित्र भारतम गोवशकी रक्षा न होकर उसका उत्तरोत्तर ह्रास होता जा रहा है। हजारो-लाखोकी सख्यामे निरपराध गोएँ प्रतिदिन इसी स्वतन्त्र भारतमे मारी जाती हैं। जबसे भारतभूमिमे गोसहार होने लगा है, तभीसे हम भारतीय नाना प्रकारके रोग-शोकादि विविध कष्टासे पीडित हो रहे हैं। हमे ठीक समयपर वर्षाद्वारा न जल प्राप्त हाता है और न पृथ्वीमाताद्वारा उचितरूपमे अन्न ही प्राप्त होता है। गाधन भारतीय सस्कृति और सभ्यताका अन्यतम रक्षक है। अत गोजातिका ह्रास हिदूजाति और हिदूधर्मका ह्रास है। इसलिये सभी दृष्टिसे गावशकी रक्षा परमावश्यक है। हमे चाहिये हम सगठितरूपसे समस्त भारतवर्षमे गोरक्षार्थ रचनात्मक दृढ आन्दालन उपस्थित कर और प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारसे भी गोरक्षार्थ प्रार्थना करे।

शास्त्रोमे गारक्षार्थ 'गा-यज्ञ' भी एक मुख्य साधन कहा गया है। वदिककालम बडे-बडे 'गा-यज्ञ' और 'गो-महोत्सव' हुआ करत थे। भगवान् श्रीकृष्णने भी गोवर्द्धन-पूजनके अवसरपर 'गा-यज्ञ' कराया था। गो-यज्ञमे वेदोक्त गोसूक्तासे गापुष्ट्यर्थ ओर गारक्षार्थ हवन, गोपूजन, वृषभ-पूजन आदि कार्य किय जाते हैं, जिनसे गोसरक्षण गोसवर्द्धन गोवशरक्षण, गोवशवर्द्धन गोमहत्त्व-प्रख्यापन और गो-सङ्गतिकरण आदिम विशेष लाभ हाता है। आज वर्तमान समयकी विकट परिस्थिति देखत हुए गो-प्रधान भारतभूमिमे *सर्वत्र गो-यज्ञकी अथवा गोरक्षा-महायज्ञकी विशेष आवश्यकता* है। अत गोवर्द्धनधारी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रसे प्रार्थना है कि व भारतवासी धर्मप्रेमी हिदुआके हृदयाम गोरक्षार्थ 'गो-यज्ञ' करनेकी प्रेरणा कर जिससे भारतवर्षक काने-कोनेम उत्साहके साथ अगणित 'गो-यज्ञ' हा ओर उन गा-यज्ञाके फलस्वरूप प्रत्येक हिदूभाईकी जिह्वामे—

गा वै पश्याम्यह नित्य गाव पश्यन्तु मा सदा।
गावाऽस्माक वय तासा यतो गावस्ततो वयम्॥

(महा० अनु० ७८। २४)

गावा ममाग्रतो नित्य गाव पृष्ठत एव च।
गावा मे सर्वतश्चैव गवा मध्ये वसाम्यहम्॥

(महा० अनु० ८०। ३)

—इन महाभारतोक्त पुण्यमय श्लोकद्वयकी मधुर ध्वनि सर्वदा नि सृत हाती रह जिसस देश और समाजका कल्याण हा।

वल्लभ-सम्प्रदायमे गोसेवाका स्वरूप

(श्रीप्रभुदासजी वैरागी एम्० ए०, बी० एड्० साहित्यालकार)

श्रीकृष्णभक्तिके विभिन्न सम्प्रदायोम वल्लभ-सम्प्रदायका भी विशेष महत्त्व हे। इसम श्रीकृष्णचन्द्रक स्वरूप प्रभु श्रीनाथजीकी जिस प्रकार सेवा-आराधना की जाती है ऐसी कदाचित् ही कहीं की जाती हागी। प्रात -कालसे लेकर रात्रिपर्यन्त प्रभुकी सेवाआम अनेक विविधता और श्रेष्ठ सेवा-भावनाएँ विद्यमान है। जिस प्रकार एक माता अपने बालकको प्रात काल जगनेसे लेकर रात्रि-शयनपर्यन्त उसके दैनन्दिन-क्रमके प्रति सजग रहकर उसे जो अपना स्नेह और सेवाएँ देती है, उसी प्रकारकी सेवाएँ यशोदोत्सगलालित बालभावसे सेवा स्वीकार करनेवाले वल्लभाधीश प्रभु श्रीनाथजीमे ज्या-की-त्या की जाती हैं। व्रजमण्डलम गिरि-गावर्धनपर प्यार श्रीकृष्णचन्द्रके श्रीविग्रहके रूपम आपका प्राकट्य है अत गो और गापालका विरला ही समन्वय इस सम्प्रदायम दृष्टिगोचर होता है।

सम्प्रदायके ग्रन्थाका अवलोकन करनेसे ज्ञात होता है कि प्रभु श्रीनाथजीका प्राकट्य ही गौ माताक कारण है। एक गो माता नित्य गिरि-गोवर्धनके ऊपर बने एक टीलेपर जाकर अपने दूधका स्राव करती ओर वह दूध टीलेके विवरम प्रविष्ट होकर प्रभुके श्रीविग्रहके ऊपर सीधा ही अभिपक करता। घर पहुँचनेपर उस गौ माताके स्तनमे दूध नहीं मिलनेपर ग्वालेद्वारा उसके दूधकी वास्तविकताका पता करते समय उसे श्यामसुन्दर प्रभु श्रीनाथजीके इस दिव्य श्रीविग्रहके शुभ दर्शन हुए। ऐसी गोके द्वारा इस भारत-भूतलपर अवतीर्ण हुए वेष्णवाक परमाराध्य प्रभु श्रीनाथजीकी सेवामे आज भी गासेवाकी प्रधानता है। यहाँकी गोसेवा देखकर अच्छे-अच्छ गाभक्त आश्चर्यचकित हा जाते हैं ओर नाथद्वारा आनपर प्रभु श्रीनाथजीके दशनोक साथ-साथ यहाँकी भारतविश्रुत गाशालाम गो माताआके दर्शन अवश्य करत ह।

वि०स० १५३५ वेशाख मासके कृष्णपक्षकी एकादशीका मध्यप्रदेशक अन्तर्गत चम्पारणम सम्प्रदायाचार्य महाप्रभु श्रीमद्वल्लभजीका प्रादुर्भाव हुआ उसी समय उत्तरप्रदेशाक मथुरा जिलान्तर्गत गिरि-गोवर्धनपर प्रभु श्रीनाथजीका मुखारविन्द गिरिगुहासे बाहर आया। प्रारम्भम व्रजक नर-नारी इन्हे कोई देवता मानकर इनकी आराधना करते और गाय आदिके गुम हो जानेपर इनसे प्रार्थना करते तथा अनुनय-विनय करनेपर व्रजवासियाकी मन कामनाएँ पूर्ण हो जातीं और उनकी गुम हुई गाय मिल जाती। इस कारण व्रजके लोग इन्हे प्रेमसे 'गापालजी' ऐसा कहकर सम्बोधित करने लगे। शनै -शनै समग्र व्रजमण्डलमे इन भगवान्‌के चमत्काराकी धूम मच गयी और लोग इनके दर्शनार्थ दौड-दौडकर गिरि-गोवर्धन आने लगे। इसी समय नरो नामकी एक व्रजभक्तासे इन भगवान्‌ने दूध माँगकर नित्य आरागना आरम्भ कर दिया। कुछ ही समयमे इन गोपाल भगवान्‌के आस-पास एक गाँव बस गया और गोपालजीके नामपर ही उस गाँवका नाम गोपालपुर पड गया।

आचार्यचरण श्रीमद्वल्लभाचार्यजी भारत-परिक्रमा करते समय चम्पारण पधारे। उस समय उस पुण्यभूमिपर इन्हीं गोपाल-स्वरूप प्रभु श्रीनाथजीने आज्ञा देकर श्रीमहाप्रभुजीको गिरिगोवर्धन बुलवाया। भगवदाज्ञा शिराधार्य कर श्रीमद्वल्लभ मथुरा आये और वहाँसे गिरिगोवर्धन जाकर व्रजभक्त सद्दू पाडेक घर रुके। रात्रि भर दोनामे प्रभुके अद्भुत प्राकट्य ओर उनके अलौकिक चमत्कारोकी चर्चाएँ चलती रहीं। भारमे श्रीमहाप्रभुजीके गिरि-गोवर्धन पहुँचनेपर कन्दरासे स्वय बाहर आकर साक्षात् प्रभु श्रीनाथजीने महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यजीको अपने गले लगाया तथा अपनी सेवा-व्यवस्थाएँ सँभालनेकी आज्ञा दी। इसी समय आचार्यचरण महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यजीको 'गर्गसहिता' मे उल्लिखित महर्षि श्रीगर्गाचार्यजीकी भविष्यवाणी याद आयी—

गोवर्धनगिरौ राजन् सदा लीला करोति य ।
श्रीनाथ देवदमन त वदिष्यन्ति सज्जना ॥
(७। ३०। ३१)

तदनुसार श्रीमद्वल्लभाचार्यजीने वहाँ समस्त व्रजवासियाको इन गोपालजाका वास्तविक नाम 'श्रीनाथजी' बतलाया। अब ता प्रभु-आज्ञानुसार आचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजी वहीं रह गय और नन्दनन्दन प्रभु श्रीनाथजीको शुद्ध स्नानादि

कराकर वस्त्र अङ्गीकार कराये तथा प्रथम बार अन्नका नैवेद्य अरोगाया। प्रभु श्रीनाथजीको गौ माता बहुत प्यारी लगती है, अत आपने सद्दू पाडेको अपनी सोनेकी अँगूठी देकर उसकी गौ माताओमेसे द्वापरयुगसे श्रीनन्दरायजीके समयसे चले आ रहे गोवशकी एक 'घूमर' नामवाली गौ माता खरीदी और उसे प्रभु श्रीनाथजीकी सेवामे रखा।

इसी सेवाक्रममे श्रीमहाप्रभुजीने पूरणमल खत्रीको आज्ञा देकर गिरि गोवर्धनपर मन्दिर बनवाया तथा प्रभु श्रीनाथजीके श्रीविग्रहको उसमे पधराया। सेवा-व्यवस्था आगे बढी। सूरदास प्रभृति चार गायक भक्त कवियोको सेवाम नियुक्त किया गया तथा प्रभुकी सेवाके लिये आनेवाली गौ माताओके लिये गोशाला निश्चित की गयी। आगे चलकर श्रीमहाप्रभुजीके यशस्वी सुपुत्र गुँसाईजी श्रीविट्ठलनाथजीने अपनी ओरस चार गायक भक्त कवियोको और एकत्रित कर अष्टछापकी स्थापना की। आज अष्टछापके अन्तर्गत प्रभु-लीलाके कई प्रसगोमे गोरस-लीला-माध्यमसे अनेको स्थलोपर गो-प्रियताका प्रशस्ति-गान किया गया है। कुछ पदोकी एक-आध पक्तियाँ इस प्रकार हैं—

'धेनु दुहत देखत हरि ग्वाल'
दे मैया री दोहनी दुहि लाऊँ गैया,
धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी
'मैया! मै नहीं माखन खायो

(सूरदास)

'ब्याई गाय बछरुआ चाटत, हौं पीवत हो प्रतिखन चैया।
याही देखी धोरी खिझकानी, मारन को दौरि मोहि गैया।

(परमानन्ददास)

अरी हम दान लैहे रस गोरस को, यही हमारो काज,
'मथनियाँ आन उतार धरी

(कुम्भनदास)

'सात दिवस सुरपति पचि हार्‌यो गोसुत सींग न भीनो

(कृष्णदास)

भाजन फोरि ढोरि सब गोरस लै माखन दधि खात

(चतुर्भुजदास)

'कोऊ दह्यो कोऊ मह्यो कोऊ माखन, जोरि जोरि आछौ अछूतो ही लाई।

(नददास)

परमानन्ददास और छीतस्वामीने तो विलक्षण उद्‌गार प्रकट किय हैं—

गोधन पूजे गोधन गावे।
गोधन के सेवक सतत हम गोधन ही को माथो नावें॥
गोधन मात-पिता गुरु गोधन देव जानि नित ध्यावे।
गोधन कामधेनु कल्पतरु गोधन पै माँगे सोई पावे॥
गोधन खिरक खारि गिरि गहवर रखवारो घर वन जहँ छावे।
परमानन्द भावतो गोधन गोधन को हमहूँ पुनि भावे॥

आगें गाइ पाछे गाइ, इत गाइ, उत गाइ
गोविद को गाइनि मे बसिवोई भावै।
गाइनि के सग धावै गाइनि मे सचु पावै
गाइनि की खुर-रज अग लपटावै॥
गाइनि सो व्रज छायौ वैकुठ बिसरायौ,
गाइनि के हित गिरि कर लै उठावै।
छीत-स्वामी' गिरिधारी विट्ठलेस वपु-धारी
ग्वारिया कौ भेषु धरै गाइनि मे आवै॥

अष्ट सखाआम श्रीकुभनदासके लडके कृष्णदासने तो प्रभु श्रीनाथजीकी गायाकी रक्षाके लिये स्वय सिहसे लडकर अपने प्राणतक न्योछावर कर दिय।

व्रजमण्डलमे जैसे-जैसे प्रभु श्रीनाथजीके चमत्कार बढे और श्रीगुँसाईजीका प्रभाव बढा, वैसे-वेसे प्रभु श्रीनाथजीकी सेवामे वृद्धि हुई। प्रभुकी गोशालामे गौ माताओकी सख्या बढन लगी। श्रीगुँसाईजीने व्रजमण्डलमे यत्र-तत्र प्रभु श्रीनाथजीकी गोशालाआकी स्थापनाएँ कीं तथा तत्कालान मुगल सम्राट् अकबर जहाँगीर और शाहजहाँसे प्रभु श्रीनाथजीकी गो माताओके चरने-हेतु असख्य एकड गोचर-भूमियाँ भटम लीं। आज भी उन भूमियोपर दिये गये पट्टे स्थानीय प्रभु-मन्दिरक श्रीकृष्ण-भण्डारम अवलोकनीय हैं।

मुगल सम्राट् ओरगजबके समय वि० स० १७२८ मे प्रभु श्रीनाथजी गिरिगोवर्धन छोडकर मवाड पधारे और इस वीहडमे अपना वास-स्थान बनाया। जा आज श्रीनाथजीके नामपर ही 'नाथद्वारा' नगरके नामसे प्रसिद्ध है। प्रभु श्रीनाथजा व्रजसे चले ता श्रीमहाप्रभुजीके वशज तिलकायित श्रीदाऊजी महाराजके साथ सेवावाले व्रजवासी और

नदरायजीक घर गावशकी घूमर गायके वशकी कतिपय गौ माताएँ भी व्रजमण्डलसे साथ आयीं। पराक्रमी मेवाड-महाराणा राजसिहकी भक्तिसे तिलकायित श्रीदाऊजी महाराजकी भावनाके अनुसार श्रीहरिराय महाप्रभुकी देख-रेखमे मन्दिर सिद्ध हुआ तो साथ-ही-साथ गोशाला भी नियुक्त हुई। मवाडम विराजमान होनसे समग्र भारतके वल्लभ-सम्प्रदायी वैष्णव नाथद्वारा आने लगे। प्रभु-सेवामे प्रभुता बढन लगी। असख्य गौ माताएँ भटम आने लगीं, अत नगरसे तीन किलोमीटर दूर नाथूवास नामक स्थलपर एक विराट् गोशालाका निमाण किया गया। प्रभु श्रानाथजीकी अनगिनत गौ माताएँ अब यहाँ रहने लगी। यहाँपर भी गौ माताआक वासस्थानकी सकुचितताका देखकर तिलकायित श्रीमानाने नाथद्वाराक आस-पास बारह गाशालाएँ और बनवा दीं। समयकी अनुकूलता और गाचारणकी सुविधास सभी गोशालाआमे गौ माताएँ वास करने लगीं। परतु मुख्य गोशाला नाथूवासकी ही निश्चित रही।

बीचम ऐतिहासिक क्लेश आ जानेपर प्रभु श्रीनाथजीको उदयपुर और फिर घस्यार जाना पडा तो प्रभुक साथ गो माताएँ भी वहाँ गयीं। आज भी वहाँ गोशाला बनी हुई है और गौ माताएँ निवास करती हैं।

घस्यारस पुन प्रभुक नाथद्वारा पधारनपर मेदपाटेश्वर महाराणाओने श्रीनाथजीकी गौ माताआके चरने-हेतु कई एकड गोचर-भूमि भेट की वे आज भी बडा बीडा और छोटा बीडाके नामसे प्रसिद्ध है। जिसम पुष्कल घास उत्पन्न होती है और वर्षभर उसी घासका खाकर गौ माताएँ पवित्र दूध दुहाकर आनन्दकन्द प्रभु श्रीनाथजीमे अपनी सेवाएँ पहुँचाती हैं। प्रभु श्रीनाथजीकी अष्टयाम-सेवाम दूधकी प्रचुरता तो है ही लेकिन सभी भोगामे गोरसकी प्रधानता रहती है। प्रभुके आरोगनेके सभी कच्च तथा पक्क पक्वान्न ता शुद्ध गायक घीमे ही निमित हाते है। आज भी प्रभुकी नित्यकी सेवा, मनोरथ, अन्नकूट और छप्पन भोगम हजारा मन शुद्ध घा अरागाया जाता है।

आजके युगमे द्वापरकी छटाको देखना हा तो इस गोशालामे हमे देखनेको मिलेगी। विविध-रगा, जाति-जातिकी भिन्न-भिन्न प्रकारके स्वभाववाली नूपुर-घुँघरुआ तथा गलेमे बँधी घटियासे सुसज्जित असख्य पयस्विनी गौ माताएँ यहाँ विराजती हैं। गौआको यहाँ बाँधा नहीं जाता है। वे अपने-अपने अहातेमे स्वतन्त्र रूपस विचरण करती हैं। प्रत्येक अहातेमे पर्याप्त घास तथा बाहर निर्मल जलका कुँडियाँ भरी रहती हैं। गौ माताएँ जितना चाह उतना घास खाये और जितना जल पीना चाहे उतना पीय—उन्ह पूरी छूट है। दुहारीके समय ग्वाला बछडोके निवास-स्थानसे बछडा लाकर उसकी माताका नाम लेकर पुकारता है जैसे घूमर, महावन जमना काजल, कस्तूरी और नखराली आदि-आदि, तो नाम सुनकर समूहमेसे वही गाय ग्वालेके पास आती है और अपन वत्सको दूध पिलाकर दुहारी करा करके पुन अपन समूहमे चली जाती है। इस प्रकार इस गोशालाम चार बार गो-दोहन होता है एव समस्त दूध सेवकाद्वारा घडाम भरकर प्रभु श्रीनाथजीके मन्दिरम पहुँचा दिया जाता है। कातिक मासकी गोपाष्टमीपर इस गोशालामे गो-दर्शन मेला लगता है। भारतमे शायद ही कहीं गौ माताओके नामपर ऐसा मेला लगता हो। सारे नगरके स्त्री-पुरुष सज-धजकर सध्या-समय इस गोशालामे जाते हैं और ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओ गवाक्षा, बरामदो तथा चबूतरोपर खडे होकर गोक्रीडाका आनन्द लते हैं। इस समय यहाँ खलनवाली गौ माताआको ग्वालबाल चर्मकुप्पी बजा-बजाकर खेलाते हे और सबके बाद प्रभु श्रीनाथजीको ओरसे समस्त गौ माताओको गुड तथा घीसे बनी थूली खिलायी जाती है। जिस समय गा माताएँ 'चर' म थूली खाती है, उस समय कइ नर-नारी उन गौ माताओकी परिक्रमा कर अपने-आपको धन्य-धन्य मानते हैं। इस अवसरपर श्रानन्दरायजीके गोवशकी गौ माताके दर्शन भी अत्यन्त आह्लादकारी होते हैं। भावुक भक्त आज भा इस वशकी गो माताके चरण-स्पर्शकर इसक नाचेसे निकलकर एव इसकी पूँछका सिरपर फिराकर प्रमुदित होते रहते हैं। ऐसा भी सुना जाता है कि कई श्रद्धावान् गोपभक्तोको रात्रिके समयमे गोशालामे बछडोक साथ खेलते हुए प्रभु श्रीनाथजीके दर्शन हुए हैं।

यहाँकी दीपावली और अन्नकूट विश्व-विख्यात है। तीन किलोमीटर दूरस चलकर गा माताएँ प्रभु श्रीनाथजीम होनेवाली गोवर्धन-पूजाके लिये नाथद्वारा आती हैं। रग-महावरसे सजी-धजी पीतल तथा चाँदीसे सुशोभित-शृग,

पाँवोमे पायजेव और घुँघरू, गलेमें घटिका, सिरपर मोरपखका किरीट पहिने ये गौ माताएँ नगरम आती हैं, उस समय नर-नारियोका झुड दर्शनके लिये मार्गोमे उमड पडता है। दीपावलीके दिन सध्या-समय कान्ह-जगाईके अवसरपर य गौ माताएँ मन्दिरमार्गको अपनी क्रीडाओसे प्रतिध्वनित करती हुई प्रभु श्रीनाथजीके मन्दिरमे प्रवेश करती हैं। उस समयका नयनाभिराम दृश्य देखते ही बनता है। मन्दिर-प्रवेशके पश्चात् वाद्य-यन्त्रोद्वारा गौ माताआका अभिनन्दन किया जाता है तथा प्रभु श्रीनवनीतप्रियजीके समक्ष तिलकायित श्रीमान् श्रीनन्दरायके गोवशकी गायको आगे बुलाते हैं और कान्ह-जगाई करते हैं। कान्ह-जगाईका अभिप्राय होता है गोवर्धन-पूजा-हेतु सपरिवार पधारनेके लिये गौ माताके कानम दिया हुआ निमन्त्रण। दूसरे दिन दोपहरमे वे ही सब गौ माताएँ बाजारोमे खेलती हुई मुख्य मन्दिरमे प्रवेश करती हैं। उस समय दर्शनार्थियोकी भीडसे बाजार खचाखच भर जाते हैं। मन्दिरके अदर प्रभुके समक्ष तिलकायित श्रीमान् गोमयसे बने गोवर्धनकी पूजा करते हैं। तदनन्तर उस पवित्र वशकी गौकी पूजा-तिलककर उसे गोवर्धनपर चढाया जाता है। इसीके साथ समूह-के-समूह गौ माताएँ प्रभु श्रीनाथजीके मन्दिरसे निकलकर मुख्य बाजारसे सभीसे अभिवन्दित हाती हुई तीन किलोमीटर स्थित अपनी मुख्य गोशालामे पहुँच जाती हैं। इस प्रकार सुरभि और श्रीनाथका यह मिलन सर्वत्र सराहा जाता है।

प्रभु श्रीनाथजीके सम्मुख किये जानेवाले दानोमे गोदानका सबसे बडा महत्त्व है। प्रत्येक सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहणपर ग्वाले लोग गौ माताको प्रभु श्रीनाथजीके सामने ऊपर मन्दिरकी डोल तिबारीमे लात हैं और वहाँ मन्त्रोच्चारणके साथ विधिपूर्वक वह गौ माता मन्दिरके कुलपुरोहितको दान कर दी जाती है। ग्रहणम प्रभु श्रीनाथजीके राजभागका सकडी महाप्रसाद पूरा-का-पूरा गो माताओको खिला दिया जाता है।

नन्दराजकुमार प्रभु श्रीनाथजीको वस्त्रालकरणसे शृगारित कर देनेके बाद उनक दोना ओर चित्रकारीकी पिछवाई लगायी जाती है। पिछवाइयामे प्रभु श्रीनाथजीका गोप्रेम स्पष्ट झलकता प्रतीत होता है। उन पिछवाइयाम गोपूजन, गोधूलि-वेला, सध्या-आरती, वत्स-द्वादशीपर बछडा ले जाने, गो-चारण, गोवर्धनपर दुग्धस्राव, गोवर्धन-धारण तथा गोशाला आदिकी गो-प्रधान चित्रयुक्त अनेको पिछवाइयाँ हैं, उनमेसे छप्पन भोग तथा गोपाष्टमीपर आनेवाली तो पूरी-की-पूरी गौ माताओकी पिछवाइयाँ हैं। इन पिछवाइयोंके द्वारा गाय और गिरधरके अद्वितीय प्रेमका पता चलता है। वर्षम एक-दो बार प्रभु श्रीनाथजी अपने श्रीमस्तकपर गोकर्ण भी धारण करते हैं और गोपाष्टमीपर गो-सचालनके भावसे लकुट भी धराते हैं। चाँदीके वडे-बडे गोपुर और कपाटयुक्त सगमरमरी फर्शवाले इस मन्दिरम दीपावली-पर्वपर गौ माताआके पधारते समय उनके पापपद्मोमे कोई पीडा नहीं पहुँचे इसलिये मन्दिरके गोवर्धन-पूजा-चौकके प्राङ्गणको बिलकुल कच्चा रखा गया है।

पञ्चामृत और प्रसादमे गोरसकी प्रमुखता रखनेवाले प्रभु श्रीनाथजीके राजभोगके दर्शनाम उनके सामने चाँदी और काष्ठकी परम सुसज्जित गौ माताआको रखा जाता है। मङ्गलभावन प्रभु श्रीनाथजी उनके सम्मुख रखी हुई गौ माताओंको निरखते-परखते ससारको अपने शुभ दर्शन देते रहते हैं। इस प्रकार वैष्णवाको गौ तथा गोविन्दके एक साथ दर्शन करनेका अनायास लाभ मिलता रहता है। सम्प्रदायके परमाराध्य प्रभु श्रीनाथजीके समान ही पुष्टिमार्गके सात घरो तथा अन्य मन्दिरोंमे विराजमान होनेवाले प्रभु-विग्रहोकी सेवाम भी गोसेवाका प्राधान्य बना हुआ है।

यह वल्लभसम्प्रदाय गोपाल, गोस्वामी गौ ओर ग्वालबाल-प्रधान सम्प्रदाय हे। जो वैष्णव प्रभु श्रीनाथजीकी सेवाएँ करते हैं उन्ह गौ माताओंकी सेवा करनेका स्वत हा सौभाग्य प्राप्त हो जाता हे। प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथजी अपनी गोप्रियताके कारण ही '*श्रीगुसाँईजी*' की पदवीसे विभूषित हुए थे और आगे चलकर इसी गोसवाक कारण उनके वशज 'गोस्वामी' नामसे पुकारे जाने लगे जिन्ह आज इस सम्प्रदायमे पूज्यपाद, धर्मगुरु, आचार्य माना जाता है। शताब्दियोसे गाविन्दके साथ गो माताकी सेवासे हा गोस्वामीवर्ग सर्वकालपूजनीय तथा अभिनन्दनीय बना हुआ है।

'स्वामिनारायण'-सम्प्रदायमे गोसेवा और गोसम्बन्धी व्रत

(श्रीहरिजीवनजी शास्त्री)

आदिकालसे गौ गङ्गा और गीता भारतीय सस्कृतिके तीन आधार-स्तम्भ रहे हैं। सारे विश्वम धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रामे गाकी महिमा स्पष्ट है। आज सारी दुनियाका डयरी-उद्योग प्राय गायपर ही निर्भर है। गायका दूध, दही, घी आदिका उपयोग केवल भोजनके रूपमे ही नहीं, अपितु आयुर्वेदिक दवाइया एव यज्ञ-याग, अभिषेक-जेसे शुभ कार्योमे भी किया जाता है। पञ्चगव्य एव पञ्चामृतकी महिमा सुविदित ही हे। यात्राके अवसरपर घरसे बाहर निकलते समय गोका दर्शन महान् सगुन माना गया हे। गोखुरसे उडी हुई पवित्र धूलिराशिके स्पर्शसे भूत-प्रेतादिजन्य बाधाओसे मुक्ति होती है। इस प्रकार गायका सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एव आध्यात्मिक सभी क्षेत्रामे विशिष्ट यागदान है। वेदादि शास्त्रो तथा सभी धर्म-मम्प्रदाया आदिमे उसकी महिमा गायी गयी है ओर उसकी सेवा करनेका विशिष्ट निर्देश भी दिया गया है।

स्वामिनारायण-सम्प्रदायम भी गोसेवा, गोमहिमा, गोव्रत-विधान आदिका महत्त्वपूर्ण स्थान है। सम्प्रदायके धर्मग्रन्थ—'सत्सगी जीवन' के पञ्चम प्रकरणमे भगवान् स्वामिनारायणन स्वय गायका बहुलक्षी महत्त्व समझाया है। जब यन्त्रयुगका आगमन हा नहीं हुआ था, तबसे लेकर आजतक गायसे पैदा किये गये बैलसे ही सारे विश्वमे खेतीका कर्म होता रहा हे। खेतमे उपयोग किये जानेवाले बेलकी चाकरी या सँभाल किस तरह करनी चाहिये उसका निर्देश भी इसम अच्छी तरह किया गया हे। जैसे कि अपग, दुर्बल, थके हुए, रागी, भूखे ओर अधे बैलको कभी भी खेतमे नहीं जोतना चाहिये। जो हृष्ट-पुष्ट हो नीरोग हो बलवान् और भूख-प्यासरहित हा उसीको खेतमे जोतना चाहिये। कभी भी निर्दय हाकर बेलको लकडी या चाबुकसे नहीं मारना चाहिये।

वनम रूखा-सूखा घास खाकर गाय हम अमृत-जैसा दूध देती हैं। जिसके दूध और घीसे यज्ञम आहुतियाँ देनेसे देवगण प्रसन्न होत हैं। गायक सभा अङ्गोम देवताका वास है इसलिये गायकी पूजा करना चाहिय और अनिष्ट तत्त्वासे उसकी रक्षा भी करनी चाहिये। गाय और बैलकी रक्षाहेतु स्वामिनारायण भगवान्ने यहाँतक बताया हे कि गाय और बैलके बाँधनेके स्थानपर हमेशा एक तेज हँसिया रखना चाहिये, क्योकि रस्सीसे बँधे हुए पशुओके सींग कभी-कभी एक-दूसरकी रासम फँस जाते हैं, जिससे उन्हे बहुत ही पीडा होती है। यदि समयपर उन्ह छुडाया न जाय तो वे कभी मर भी जाते हैं। इसलिय उनकी रक्षा-हेतु गौशालामे एक हँसिया रखना चाहिये।

लोकमे गृहस्थाश्रमियोका गृहस्थ आश्रम गाय और बैलोसे शोभा देता है, क्योकि उन्हींसे हव्य और गव्यकी निष्पत्ति होती है। इसलिये गृहस्थोको चाहिये कि वे गौओं और बैलोका प्रयत्नसे परिपालन करे।

स्वामिनारायण भगवान् कहते हैं कि 'जब बछडा हाजिर न हो या किसी कारणवश गायका गर्भस्राव हो गया हो, वह रोगग्रस्त हो प्रसूता हा या दो बछडेवाली हो तब गायको दूहना नहीं चाहिये।'

जो गृहस्थ बहुत ही भक्तिभावसे गौ माताकी पूजा-वन्दन और पोषण करता है, उसे अश्वमेधादि यज्ञफलकी शीघ्र ही प्राप्ति होती है। इसके विरुद्ध जो पापी पुरुष गायको दुहते समय डडो आदिसे मारता है या गालियाँ देता है वह पापी कोटि वर्षतक नरककी अग्निमे जलता हे।

गोपालनमे जो पुण्य है उससे दस गुना पुण्य वृषभके पालन करनेमे है। वृषभाकी महिमा गाते हुए स्वामिनारायण भगवान् कहते हैं कि 'धान, गेहूँ इत्यादि नाना प्रकारके अन्नाका उत्पादन बैल करता है और अन्नको अपनी खुरसे रौंदता हे तथा अन्नसे भरी हुई बेलगाडी खींचकर घरपर या बाजारमे ले जाता है। इस प्रकार किसानोको एव सभी प्रजाआको सुख प्रदान करनेसे बैल भी हमारे लिये पूज्य है।

वृषभाके बारेम हमदर्दी प्रदर्शित करना हमारा परम कर्तव्य है। क्याकि वे सारा दिन कितना सामान ढोते हैं, थक जाते हैं, दु खी हो जाते हैं, फिर भी अपने दु खको मजबूरीको अपने स्वामीके पास नहीं बता सकते हैं। वे लाचार और बेबस हैं। भगवान्ने उन्ह बोलनेकी शक्ति नहीं

दी है। फिर भी वे रूखा-सूखा घास खाकर प्रसन्न होकर मनुष्योसे भी अच्छी तरह ईमानदारीसे अपना कर्तव्य समझकर सेवाभावसे अपने कार्यमे प्रेमसे जुटे रहते हैं। इसीलिये हम भी चाहिये कि हम उन्हे पूरा आराम दे, उनका अच्छी तरहसे पोषण करे, समय-समयपर उनकी चिकित्सा करवाये। जो गृहस्थ घरके आँगनमे बँधे हुए गाय और बैलका तृण और जलसे समय-समयपर पोषण नहीं करता, वह रौरव-नरकमे जा गिरता है।

यदि आपकी स्थिति अच्छी न हो तो पशु-पालनकी शक्तिके अभावमे क्या करना चाहिये? इस सम्बन्धमे भगवान् स्वामिनारायणने शिक्षापत्रीमे बताया है कि पशुपालनमे अशक्त गृहस्थोको चाहिये कि वे अपने गाय आदि पशुओको जो पशु-पालनमे शक्तिमान् हो, उसे सुपुर्द कर देना ही इष्ट है अथवा गृहस्थोको चाहिये कि वह गाय आदि पशुओका घास, पानी आदिसे अच्छी तरहसे पालन न कर सके तो उससे बहतर है कि पशुओको घरमे रखना ही नही चाहिये। यहाँतक कहा गया है कि अपनी सतानसे भी अधिक गौको महत्त्व देते हुए तथा पुत्रादिकी अपेक्षा प्रथम गाय और बैलको चारा देना चाहिये। वही किसान सुखी होता है जो गौ आदि पशुओकी सम्भावना पुत्रकी तरह करता है। किंतु जिसके घरके आँगनमे भूखे-प्यासे पशु बँधे रहते हो, उसे मच्छर काटते हो तो वह गृहस्थ पशुओकी हायसे दरिद्र बन जाता है और उसके किये पुण्योका नाश हो जाता है—

तृषिता पशवो बद्धा कन्या चापि रजस्वला।
देवताश्च सनिर्माल्या घ्नन्ति पुण्य पुराकृतम्॥

वृषभोको खेतीके कर्ममे जोतनेसे पहले उसकी पूजा करनेकी 'सत्सगी जीवन' मे आज्ञा दी गयी है। वृषभोके सींगको सिदूर आदि रगसे रँगकर तथा कुकुम और अक्षतसे उसकी पूजा करनेके बाद ही उसको खेतमे जोतना चाहिये। गाय आदि पशुओके लिये अन्न-सग्रहपर भी जोर देते हुए शिक्षापत्री (१४१) मे बताया है—

'यथाशक्ति यथाकाल सग्रहोऽन्नधनस्य च।
यावद् व्यय च कर्तव्य पशुमद्भिस्तृणस्य च॥'

'गृहस्थको अपनी सामर्थ्यके अनुसार अन्न और धनका सग्रह अवश्य करना चाहिये। साथ-साथ गाय आदि पालतू पशुओके लिये अपनी शक्तिके अनुसार घास-पातका भी सग्रह करना आवश्यक है। कम-से-कम दो सालतक जितने घास-पातका उपयोग किया जा सके, उतने घास-पातका सग्रह जरूरी है। क्योकि वर्षाऋतु, दुष्काल आदिके पहले घास-पातका सग्रह न करनेवालेको दु ख उठाना पडता है।

हिन्दू सस्कृतिमे गोदानका महत्त्व भी कम नहीं है। प्राचीन कालसे हमारे यहाँ शुभ अवसरपर गोदान करनेकी रीति है। इसीका समर्थन करते हुए 'सत्सगी जीवन' में भी शुभ अवसरपर गादान करनेका उल्लेख मिलता है। स्वय भगवान् श्रीस्वामिनारायणने भी समझाया है कि विद्यार्थी एव कथाकाराके लिये, मेधाशक्ति और स्वास्थ्यके हेतु गायका दूध सर्वोत्तम है।

अहिसा-प्रेमी भगवान् स्वामिनारायण और उनके अनुयायियोने आजसे लगभग दो सौ साल पहले गुजरातमे प्रचण्ड अहिसक गोरक्षा-आन्दोलन भी छेडा था। अहिसाका झडा लेकर भगवान् स्वामिनारायण और सताने सर्वत्र गोहत्या और हिसायुक्त यज्ञके विरुद्ध प्रचण्ड आवाज उठायी। साथ-साथ राजकोटके अग्रेज गवर्नर सर मालकमको इस सम्बन्धमे चेतावनी भी दी। तब अग्रेज अधिकारीने इस बातको स्वीकृत किया और गोहत्या बद करनेका वचन दिया। सम्प्रदायके धर्मशास्त्र 'सत्सगी जीवन' के पञ्चम प्रकरणके पैंतालीसवे अध्यायमे गोवधका प्रायश्चित्त इस प्रकार बताया गया है—

'जो मनुष्य अज्ञानसे लकडी या पत्थरसे दुर्बल गायको मारे और वह गाय मर जाय तो गोवध करनेवाला अन्नका आहार छोडकर एक मासतक गोसवामे लगा रहे, जब गाय वनमे घास चरने जाय तो वह भी उसके पीछे-पीछे जाय। गाय जहाँ कहीं भी जाय वह भी उस गौके पीछे-पीछे बिना जूता पहने फिरता रहे। गौ खडी रहे तो खडा रहे, गौ चले तो चले बैठे तब बैठे धूप, ठड और वायुको भी सहे इस प्रकार तपस्या करता रहे ब्रह्मचर्यका पालन करे। गायके सो जानेपर उसीके सम्मुख बिना चादर बिछाये वह सोवे। चारोसे हिसक पशुओसे, रोगकी पीडासे, गड्ढे आदिमे गिर जानेसे गायकी रक्षा अपने प्राणकी बाजी

लगाकर भी करता रहे। अपने या दूसरेके खेत या खलिहानमे चरती गायको देखकर भी खेतके मालिकको जानकारी न दे। गायके स्तनको पीते हुए बछडेको भी कुछ न कहे।

इस प्रकार एक मासतक व्रत पूरा करनेके बाद शास्त्रविधिके अनुसार सुपात्र ब्राह्मणको सुवर्ण-सींगवाली कास्यपात्र-निर्मित दोहनपात्रके साथ बछडेसहित सुन्दर स्वभाववाली बहुत दूध देनवाली गायको वस्त्र और रत्नसहित दान दे। गोदानके पश्चात् मुक्त-मनसे दक्षिणा देनेके बाद वधकर्ता गोवधके पापसे मुक्त होता है।'

गोव्रत—सम्प्रदायके शास्त्रमे गो-प्रायश्चित्त-सम्बन्धी अनेक व्रत बताये गये हैं—यथा—सोमायनव्रत, सातपनव्रत, महासातपनव्रत, यतिसातपनव्रत आदि। इसी प्रकार गायके गोबरके साथ निकले हुए जवसे एक मास जीवनयापन करे तो यह उत्तम याचकव्रत कहा गया है। गोमूत्रसे स्नान, गायके गोबरका भक्षण, गौके मध्यमे निवास, गायके गोबरमे शयन, गौके खाने-पीनेपर ही खाना-पीना, गौके बैठने और खडे रहनेपर बैठना या खडे रहना—इस प्रकारका एक मासका व्रत 'गोव्रत' कहा गया है।

इन सभी गोसम्बन्धी व्रताके करनेवालोको यमपुरीमे जाना नहीं पडता। लक्ष्मीकी कामनावाला, पुष्टिकी इच्छावाला और हरि-प्रसन्नताकी अभिलाषावाला कोई भी भक्त अपनी भक्ति और शक्तिके अनुसार इनमसे कोई भी व्रत करे तो उसकी मन-कामनाएँ गो माता अवश्य पूर्ण करती हैं। अत विश्वम गोहत्या बद करके ऐसी महिमामयी गौका पालन, गासेवा और गोभक्तिको बढाना चाहिये।
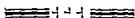
रामस्नेहि-संत-साहित्यमे गायकी महत्ता एव बहुला गौका आख्यान

(खेड़ापा पीठाधीश्वर श्री १००८ श्रीपुरुषोत्तमदासजी महाराज रामस्नेही)

वैसे तो रामस्नेही-पद्धतिम प्राणिमात्रकी भगवद्भावस सेवा करनेकी प्ररणा दी जाती है, किंतु मोक्षदायिनी गायके प्रति श्रद्धा विलक्षण ही प्रतीत होती है। इस विषयमे श्रीदयालुदासजी महाराजद्वारा अपनी वाणीम वर्णित गायकी ओरसे किये जानेवाले भगवन्निवेदनमे गायको मोक्षदायिनी मानते हुए प्रकट किये गय उद्गार कितने प्रेरणादायक हैं—

गौ पुकार इम करत जाय साहिब के आगे।
पशू जूण हम पाय जीव किरतब फल लागे।
हिन्दू मूसलमान दुग्ध सबही कू देऊं।
मेरा जाया वाय खेत निपजै अन सेऊँ।
कूप पयाल रसाल जल रस सुख सब कू देत है।
जनरामा मृतलोक मे घिरत सुधा मुख लेत है॥
गौ मुत उत्तम लेत धवल चौके उतमाई।
दोय राह बिन नाय हमै सब कू सुखदाई।
पृथमी गऊ सरूप धवल शिर धरा सुधारी।
खानपान पहरान सरब रचना सुखकारी।
जीया जुगत मूवो मुगत पद उपान रिच्छ्या करै।
रामा हिन्दू पूज है मुसलमान दण्ड क्यू धरै॥
(श्रीदयालु बाणी भाग ६)

इन्हीं श्रीदयालुदासजी महाराजने अपने ग्रन्थ 'ग्रन्थश्री गुरुप्रकरण' (दयालु बाणी भाग २) मे बहुला नामक गायके उपाख्यानके माध्यमसे गायकी सत्यनिष्ठाको बडे विलक्षण-रूपमे उजागर किया है। गुरुवाणीमें वर्णित यह बहुला गौका प्राचीन आख्यान साररूपमे इस प्रकार है—

पूर्वकालमे एक हरिभक्तके यहाँ एक सत्यवादिनी तथा गुरुभक्तिपरायणा बहुला नामक गाय थी। सामान्य गायोके समान वह भी गायोके समूहके साथ घास चरने वनमे जाया-आया करती थी। एक दिन बहुला गाय अन्य गायोसे बिछुडकर वनम बहुत आगे निकल गयी। वहाँ उसे एक सिंह मिल गया। सिहको देखकर ठिठककर बहुला जहाँ-की-तहाँ खडा हो गयी। उसे अपने मरनेका तो कोई भय नहीं था किंतु उसे अपने असहाय बन जानेवाले बछडेकी चिन्ता हा रही थी। इसके निवारणार्थ धैर्य रखते हुए बहुला गायने सिंहसे कहा—

'हे वनराज! मेरी एक प्रार्थना सुनिये। आप आज मुझ मत मारे। मैं सत्यतापूर्वक आपको वचन दे रही हूँ कि 'अपने बछडेसे एक बार मिलकर तथा उसे दूसरोको सुपुर्द कर कल प्रात मैं यहींपर आपके पास लौट आऊँगी। तब

आप मुझे आरामसे खा जाना।' यह सुनकर वनराज बोला—'तुम तो मेरी शिकार हो। तुम्हारी बातका कैसे भरोसा किया जाय?' इसपर बहुलाने कहा—

दरशण भग साध अपराधक। लेत दीक्षा कर मनै असाधक।
सो पातक भुगतू वनराई। जो पै बहुरि पास तुम नाऽऽई॥

अर्थात् 'हे वनराज! यदि मैं दिये वचनानुसार आपके पास लौटकर न आऊँ तो मुझे वह अपराध लगे जो कि सत और भगवान्‌के दर्शनमे विक्षेप करनेवाले पुरुषको तथा गुरु-दीक्षा लेकर भगवान्‌के सम्मुख होनेवालेको मना करनेवाले दुष्ट पुरुषको हुआ करता है।'

सत्यताकी परीक्षाके लिये सिंहने इस बातको मान लिया और बहुलाको छोडकर उसके पुन लौट आनेकी प्रतीक्षामे वह वहीं बैठ गया। कुछ रात होते-होते बहुला अपने घर पहुँची। उसने बछडेसे कहा—'बेटा! आज भरपेट आखिरी बार दूध पी ले।' घबडाया हुआ बछडा बोला—'माँ! तुम मुझे क्यो छोड देना चाहती हो?' बहुलाने कहा—'वनमे मुझे खानेको उद्यत सिंहका पुन खाद्य बनने-हेतु उसके पास लौट आनेका वचन देकर मैं केवल तुमसे मिलने आयी हूँ। अत आज तृप्त होकर दूध पी लो। अब तुमसे वियोग होना अवश्यम्भावी है।'

बछडा बोला—'हे माता! यहाँ तुम्हारे सिवाय मेरा कौन आधार है?' बहुलाने कहा—'*सब प्रतिपालक समरथ नियरो*'—बेटा! 'सबके रक्षक परमात्मा सबके साथ रहा करते हैं। उनके रहते हुए किसीको किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। इसपर भी यदि सतोष न हो तो चल मेरी माँके पास चल। मैं उन्हे तुम्हारी सार-सँभाल सम्हला कर आरामसे वनमे चली जाऊँगी।'

ऐसा कह अपने बछडेके साथ बहुला अपनी माँके पास पहुँचकर बोली—'माँजी! अबसे इस बच्चेकी सार-सँभाल आपके सुपुर्द है।' बहुलाकी माताने कहा—'क्या! तुम कहाँ जा रही हो?' बहुलाने कहा—'वनम मुझे खानेको उद्यत सिंहके पास लौट आनेका वचन देकर अपने बच्चेसे मिलने आयी हूँ। अत मुझे जल्दी ही वहाँ लौटना है।'

बहुलाकी माताने कहा—'तूने ऐसी क्या शपथ उठायी है? क्या वचन दिया है?' बहुला बोली '

जन अपराध पाप गत स्याला॥
दीक्षा लेत मने कर कोई।
फिर नाऽऽऊँ तो अकृत मोई॥

अर्थात् 'गुरु-दीक्षा लेकर भगवत्सम्मुख होनेमे तथा सत-दर्शनमे बाधा देनेमे जो अपराध बनता है—यदि लौटकर न आऊँ तो मुझे वह दोष लगे' मैंने शपथपूर्वक वनराजको यह वचन दिया है।

बहुलाकी माताने कहा—सुनो पुत्री!—

एती ठौड़ कूड़ नहि दोषण। कहूँ धिया सत वचन जु मो सुन॥
साम काप पितुमाता कारण। गुरुसेव परपीर निवारण॥
सज्जन हित कै प्राणहि जावत। पुनि शिशु हेत दोष नहि लावत॥
सत्यवातमे कूड़ न पातक। महत पुरुष बरणै सुण जातक॥

माताके इस प्रकारके लुभावने तथा नीतियुक्त वचन सुनकर भी सत्य प्रतिज्ञावाली बहुला अपने निश्चयसे नहीं डिगी। वह बोली—

बहुला वचन मातु सुन लीजै। एह बन्धन जग फन्द पड़ीजै॥
झूठ पाप सम पाप न माता। जनम जनम लग थभ न ताता॥
दीनी शपथ इसी मैं केहर। चूका ठौड़ नरक नहिं है हर॥
प्रिय एकोत्तर जन्तु हजारा। प्राणी भुगते जन अहकारा॥
सुगरा होय नुगरता करही। पाप अघार कहो कद टरही॥
झूठ बोलिये एकहि थानक। गुरुधुम हेत बचै पर प्राणक॥

यह सुनकर माता और बछडेने कहा—'यदि उस सिंहको खुराक ही देनी है तो (तुम-जैसी परम उपयोगी साध्वी गौकी रक्षाके लिये (हम) (माता और बछडा) अपना देह उस सिंहको दे देते हैं।' यह सुनकर बहुला बोली—'जो वचन दे उसे ही अपना देह सौंपना चाहिये। ऐसा न होनेपर महान् असत्यताका दोष लग जाता है।' ऐसा कहकर बहुला तत्काल वनकी ओर दौड चली। माता और बछडा विलाप करते पीछे रह गये। गायका स्वामी भी इससे बहुत उदास हो गया।

बहुत शीघ्र बहुला उसकी प्रतीक्षामे बैठे सिंहके पास पहुँच गयी और बोली!—'हे वनराज! आप कितने महान् हैं? जिन्होने कि अपनी भक्ष्यभूता मेरा विश्वास कर लिया। आपने मेरे लिये प्रतीक्षा करके महान् कष्ट उठाया। इसके लिय मैं आपसे क्षमा चाहती हूँ। अब आप यथेच्छ मेरा भक्षण कर ले।' ऐसा कहते हुए बहुला वहीं नतमस्तक

होकर बैठ गयी। यह सब असम्भव किंतु प्रत्यक्षमें सत्यरूपेण घटित देखकर सिंह बडे असमजसमे पड गया। वह सोचने लगा—'पशु यह भी है और पशु मैं भी हूँ ? मेरा तो कितना दूषित विचार है और इस गायका विचार कितना महान् है ? यदि ऐसी दिव्यात्मा गायको मारा या पीडित किया तो मेरी कहीं गति होनेवाली नहीं है।'

फिर कुछ समयतक सोच-विचार करते हुए अन्तर्यामी परमात्माकी प्रेरणासे प्रेरित हो वह सिंह बोला—'हे बहुला! तुम मेरी परम हितैषिणी और आदरणीया माता तथा गुरु हो। अब मैं तुम्हे मार नहीं सकता। मैं अपने सदेह-निवारणार्थ तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। मुझे यह बताकर मेरा समाधान करो कि—'तुमने मेरे समक्ष जो शपथ ली और जिसके भयसे तुमने मरनेके लिये अपनी प्यारी देह भी मेरे सामने रख दी—उसके भग हो जानेमे क्या हानि होती है ?' बहुला बोली—

बहुला कहत सुणो वनराई। कलप अनेक नरक दु खदाई॥
जामण मरण चौरासी जीवा। भरमत नरदेह कदेक सींवा॥
मौसर पाय मिनख अवतारा। गुरुगम शब्द मिलूँ करतारा॥
एह चूका कहुँ ठाहर नाँई। हरि वेमुख रिपु ताय सदाई॥
तिणचर जलचर अनचर पाहन। पोषण भरण अदेवत कोहन॥
सार सभार करै सबकरी। तास विसार कहा गत हैरी॥

अर्थात् ऐसा हो जानेसे (वचन-भग करनेसे) प्राणी पहले तो अनेक कल्पोतक नरकमे दु ख भोगता है। फिर जन्म-मरणके चक्करमे पडकर चौरासी लाख योनियोमे भटकता रहता है। भटकते-भटकते उसे चौरासीके अन्तमे आत्मोद्धारका द्वारात्मक मानव-देह प्राप्त होता है। साक्षात् भगवदवतारभूत मानव-तन पाकर जो प्राणी गुरुकृपासे भगवान्के सम्मुख हो मोक्षपद पा लेता है, उसका जीवन सार्थक हो जाता है। जो कल्याणका ऐसा अवसर पाकर भी चूक जाता है अर्थात् मानव-तन पाकर भी हरिसे विमुख बना रह जाता है वह सदैव जन्म-मरण और कालके चक्करमे पडा रहता है। प्राणी व्यर्थमे ही अपने भरण-पोषणकी चिन्ता किया करता है। उसे सोचना चाहिये कि जो परमात्मा जलचर, अन्नचर तृणचर (पशु), पाहनचर आदि समस्त प्राणियोका प्रतिपाल करते रहते हैं, क्या वे मेरा प्रतिपाल नहीं करेगे? जो ऐसे कृपालु परमात्माको भुला देता है, उसकी आगे क्या दशा होगी ?

मैंने सत्पुरुषोके सगसे यही शिक्षा पायी है कि प्राणीको कभी झूठ नहीं बोलना चाहिये। सत्यानुशीलनसे पशु भी चौरासीके चक्करसे निकलकर सीधा मानव-तन प्राप्त कर लेता है। मैं अपने सत्य वचनकी पालना करते हुए मानव-तन पाकर आत्मोद्धार करना चाहती हूँ। इसलिये अपने वचनकी पालना करने-हेतु मैं आपके सम्मुख लौट आयी हूँ।'

गायके मुखसे सत्यानुशीलनकी तथा मानव-तनकी महत्ता सुनकर उस सिंहके मनमे विचार आया—'यदि परमात्मा मुझे भी मनुष्य बना दे तो मैं भी इस गायके समान सदाचारी बनकर भगवद्भक्तिका परम आनन्द प्राप्त कर लूँ। गायरूपी सत्पुरुषके सगसे सिंहके मनमे उत्पन्न हुए इन सद्विचारोको स्वीकार करते हुए करुणावरुणालय भगवान्ने तत्काल ही उस सिंहकी आयु पूर्ण कर दी। सिंह मृत्युको प्राप्त हो गया। बहुला लौटकर अपने घर आ गयी। बहुलाकी माँ, बछडे तथा उसके स्वामीके हृदयमे इससे अपार आनन्द छा गया।

सत्सगके प्रभावसे वही सिंह अगले जन्ममे बहुलाके वशमें (गायके रूपमें) आ गया। अब वह भी पूर्णतया बहुलाके समान सद्गुणी बन गया था। यहाँ दोनों बहुत समयतक साथ-साथ रहे। देहावसान होनेपर उस बहुला तथा गोभूत सिंह दोनोने अगले जन्ममें मनुष्य-तन प्राप्त कर लिया। यहाँ दोनो गुरुमुखी तथा भगवान्के सम्मुख होकर रामभक्तिमे लग गये। अन्तमे दोनो साथ-साथ भगवद्धामको प्राप्त हो गये।

सतवाणीमे उपलब्ध यह बहुला गौका आख्यान केवल एक आख्यानमात्र नहीं है, अपितु यह आख्यान गायकी सत्यनिष्ठा परोपकारिता, स्वकर्मपरायणता, परम उदारता, परमनिर्भीकता परगुणग्राहकता आदि अनेक मानवीय सद्गुणोको प्रकट करनेवाली खान (खदान) है। वर्तमान युगके दिग्भ्रान्त लोगोको इस आख्यानसे सन्मार्गालोक प्राप्त हो सकता है।

——

प्राणी, पशु और गाय—जैन-दृष्टि

(अणुव्रत-अनुशास्ता राष्ट्रसत आचार्य श्रीतुलसीजी)

प्राणी दो प्रकारके होते हैं—सिद्ध और ससारी। सिद्ध वे होते हैं, जो जन्म-मरणकी परम्पराको तोडकर मुक्त हो जाते हैं। उनका इस ससारसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता। दूसरे ससारमे रहनेवाले ससारी प्राणी अनेक प्रकारके होते हैं।

शाश्वत धर्मका सदेश

ससारमे जितने प्राणी हैं, सबका अपना-अपना महत्त्व है। प्रत्येक प्राणीको जीनेका अधिकार है। जैन-दर्शनकी दृष्टिसे ससारका कोई भी प्राणी वध्य नहीं है। सनातन धर्मकी परिभाषा करते हुए जैन तीर्थंकरोने कहा—सव्वे पाणा ण हतव्वा—एस धम्मे धुवे णिइए सासए।' ध्रुव, नित्य और शाश्वत धर्म यही है कि ससारके किसी भी प्राणीका वध न किया जाय। इसी अवधारणाके आधारपर जैन मुनि प्राणिमात्रकी हिसासे विरत रहते हैं। जैन श्रावक गृहस्थ होते हैं। वे पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रिय दायित्वोसे बँधे हुए रहते हैं। चाहते हुए भी वे हिसासे सर्वथा उपरत नहीं हो सकते। पृथ्वी, पानी आदि सूक्ष्म जीवोकी हिसासे वचना उनके लिये सम्भव नहीं है, फिर भी वे अनावश्यकसे बचनेके लिये जागरूक रहते हैं। चलने-फिरनेवाले निरपराध त्रसकाय-जीवोकी सकल्पपूर्वक हत्या उनके लिये सर्वथा वर्जित मानी गयी है। मासाहार उनके लिये पूर्णरूपसे त्याज्य है। मास तो क्या वे अडेके मिश्रणसे बने खाद्य पदार्थोंको भी अभक्ष्य मानते हैं। इस दृष्टिसे कहा जा सकता है कि जैन श्रावक प्राणि-जगत्के प्रति बहुत ही करुणाशील और सवेदनशील रहते है।

एक चर्चित और अर्चित पशु

तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय जीवोमे एक बहुत बडा जगत् है पशुओका। पशु-जगत्मे गाय एक ऐसा प्राणी है जा बहुचर्चित भी है और बहु अर्चित भी। भारतमें गायका माताके रूपमे देखा जाता है। माँ जितनी पूजार्ह होती है, गायको भी उतना ही पूजार्ह माना जाता है। पशुको पूज्य माननेके भाव केवल भारतमे ही है, ऐसी बात नहीं है। गाय और भैसके मिश्रण-जैमे रूपवाला एक पशु है 'याक'। तिब्बतमे याकको उतना ही पूज्य माना जाता है जितना भारतवर्षमे गायको। गायका पूज्य माननेके पीछे दो दृष्टिकोण हो सकते हैं—उसके प्रति माँ-जैसी भावना ओर उसकी उपयोगिता। गाय एक उपयोगी प्राणी है, इसम कोई सदेह नहीं है। मनुष्य हो या पशु, उपयोगिताके आधारपर उसके आकर्षणम वृद्धि सम्भव है। सासारिक सम्बन्धोमे माँका सम्बन्ध सर्वाधिक पवित्र और विशिष्ट है। जब गायमे माँकी बुद्धिका अध्यारोपण हो जाता है तो उसके प्रति सम्मान और सुरक्षाकी बात सहज प्राप्त है।

प्रश्न एक ही है कि गायको माता माननेकी बात शाश्वत सचाई है या मनुष्यकी स्वार्थी मनोवृत्ति? यदि यह शाश्वत सचाई होती तो गायोके प्रति भेदभावका व्यवहार नहीं होता। एक आदमी अपनी गायको चारा-पानी देता है, नहलाता है, सहलाता है, उसका सब प्रकारसे ध्यान रखता है, कितु कोई दूसरी गाय जाकर उसके घरका चारा चरने लगे तो लाठीसे निर्मम प्रहार करनेमे भी सकोच नहीं करता। क्या कोई व्यक्ति अपनी माँको इस प्रकार पीट सकता है? दूसरी गायकी तो बात ही छोडे, अपनी गाय भी जब बूढी हो जाती है, दूध देनेमे अक्षम हो जाती है, तब उसकी सेवा कौन करता है? गो-सेवाके नामपर आन्दोलन चलाना और नि स्वार्थ भावस गौकी सेवा करना—ये दो अलग-अलग बाते हैं। इनके अन्तरको समझनेके लिये निष्पक्ष दृष्टिकोणकी अपेक्षा है।

जैन-श्रावक और गोकुल

वर्तमान व्यवस्थामे गायोकी सेवा और सुरक्षाके लिये गोशालाएँ बनायी जाती हैं। ये व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोना प्रकारकी होती हैं। प्राचीन कालमे जैन-श्रावक बहुत बडे गोकुल रखते थे। भगवान् महावीरके प्रमुख श्रावकोमे आनन्द कामदेव, चूलनीपिता, चूल्लशतक कुडकौलिक, सुरादेव, महाशतक आदिके नाम प्रसिद्ध हैं।'जैन आगम-उपासक-दशा'मे इनके बारेम विस्तृत वर्णन मिलता है। इनकी समृद्धिकी आँकडोमे प्रस्तुति दी गयी है। वहाँ यह

बताया गया है कि इनके गोकुलामे हजारा-हजारो गाये थीं। जैन श्रावक सामान्यत खेती करते थे। खेतीकी दृष्टिसे बैल उनके लिये बहुत उपयोगी थे। पशुपालन उनकी जीवनशैलीका अभिन्न अङ्ग था। पशुओको पीटना, उनपर अतिभार लादना, उनके खान-पानमे कमी करना उनको क्रूरतासे बाँधना, उनका अग-भग करना आदि कार्य उनके लिये धार्मिक दृष्टिसे निषिद्ध माने गये हैं। इस कारण वे अपने आश्रित पशुओके प्रति पूरे जागरूक रहते थे। धार्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक सभी दृष्टियोसे श्रावकाके गोकुलोमे गायोंकी पूरी देखभाल होती थी।

साहित्यमे कामधेनु

जैन आगमोमे कामधेनुका भी उल्लेख मिलता है। प्रसिद्धि है कि कामधेनु व्यक्तिकी हर इच्छा पूरी कर देती है। सम्भवत इसी कारण इसकी पूजा करनेकी परम्परा रही है। यह भी माना जाता हे कि कामधेनु स्वर्गकी गाय है। रघुवशका राजा दिलीप एक बार कामधेनुके निकटसे निकला। शीघ्रताके कारण वह उसके विनयोपचारमे स्खलित हो गया। फलत उसे कामधेनुकी नाराजगी झेलनी पडी। कालान्तरमे उसे अपने प्रमादका बाध हुआ। कामधेनुका प्रसन्न करनेके लिये राजाने उसकी पुत्री नन्दिनीकी अभूतपूर्व सेवा की। महाकवि कालिदासने उस सेवाका वर्णन करते हुए लिखा हे—

स्थित स्थितामुच्चलित प्रयाता
निषेदुषीमासनबन्धधीर ।
जलाभिलाषी जलमाददाना
छायेव ता भूपतिरन्वगच्छत्॥

राजा दिलीप नन्दिनी गायकी सेवा कर रहे थे। वह खडी रहती तो राजा खडा हो जाता। वह गमन करती तो राजा चलता। वह बैठती तो राजा बैठता और वह पानी पीती तभी वह पानी पीनेकी इच्छा करता। जिस प्रकार छाया व्यक्तिका अनुगमन करती है उसी प्रकार राजा दिलीपने नन्दिनी गायका अनुगमन किया।

गायके प्रति राजाकी भक्ति औपचारिक है या वास्तविक? यह जाननेके लिये कामधेनुने राजाकी परीक्षा ली। जगलमे भ्रमण कर रही नन्दिनीपर अचानक सिहका आक्रमण होता है। राजा अपने प्राणोकी बाजी लगाकर नन्दिनीको बचानेका प्रयास करता है। सिह राजासे कहता है—

एकातपत्र जगत प्रभुत्व
नव वय कान्तमिद वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढ प्रतिभासि मे त्वम्॥

'राजन्! जगत्का एकच्छत्र साम्राज्य यह युवावस्था और यह सुन्दर शरीर। तू एक गायक लिये इतना सब कुछ खोन जा रहा है। लगता है तू दिङ्मूढ हो गया है।'

सिहद्वारा ऐसा कहनेपर भी राजा नन्दिनीको बचानेके लिये डटा रहा। उसकी दृढता और सेवासे कामधेनु प्रसन्न भी हो गयी। यह एक पौराणिक घटना है। इसके आधारपर गौ-जातिके प्रति मनुष्यके दृष्टिकोणका बोध किया जा सकता है।

जैनदृष्टिकोण

जैन धर्मका जहाँतक प्रश्न है यह छाटे-बडे सभी पशुओको अवध्य मानता है। जैन-आगमोमे लिखा है—

जे केइ खुड्डगा पाणा अदुवा सति महल्लगा।
सरिस तेहि वेर ति असरिस ति य णो वए॥

जो कोई छोटे प्राणी हैं अथवा बडे प्राणी हैं उनको मारनेसे कर्मका बन्ध सदृश होता है या असदृश होता है ऐसा नहीं कहना चाहिये। क्योकि जीवत्वकी दृष्टिसे सब जीव समान है। कर्मबन्धनका अन्तर आसक्तिके आधारपर होता है। आसक्ति जितनी सघन होगी कर्मका बन्धन उतना ही प्रगाढ होगा। निष्कर्षकी भाषामे यह माना जा सकता है कि धार्मिक दृष्टिसे प्राणिमात्र अवध्य है। सामाजिक दृष्टिसे उपयोगी पशुओके सरक्षणमे जैनधर्मकी असहमति नहीं है। मनुष्यका दायित्व है कि वह धार्मिक, सामाजिक और पर्यावरणकी दृष्टिसे अपनी जीवनशैलीमें अहिसाको स्थान दे और गोहत्या-जैसे प्राणिवधके पापस बचे।

जैनधर्म और गोरक्षा

जैनधर्ममे जैन साधुओके पञ्च महाव्रतोमे अहिसाव्रत आद्य माना गया है और उसका पूर्णरूपसे आचरण करानेके

लिये अनेक व्रत और नियम बताये गये हैं। जैन तीर्थङ्कर, सूरी, जैन-मतावलम्बी धनिक और अधिकारी लोग अहिसा-धर्मके पालनमे बहुत ही आगे बढे हुए हैं। इनके प्रयत्नोसे मुसलमान बादशाहाने इनके तीर्थस्थानोम प्राणि-हत्या न होने देनेके आदेश जारी किये। इन प्रयत्न करनेवालोमे अकबरकालीन हीरविजय सूरिका नाम बहुत ही विख्यात है। बादशाह अकबरपर इनका बडा प्रभाव था। शत्रुञ्जय पर्वतपर आदिनाथके मन्दिरके द्वारपर सन् १५९३ मे जो सस्कृत शिलालेख बैठाया गया हैं, वह इस विषयका साक्षी है। विजयसेनने भी गौ, बैल और भैंसकी हत्याके विरुद्ध अकबरसे आदेश जारी कराये हैं। इन लोगोने इस सम्बन्धम मुगल बादशाहासे जो फरमान प्राप्त किये, उनका विवरण आगे दिया जाता है—

(१) ता० १५ जून १५८४ को हीरविजयजीको दिये हुए अकबरके फरमानमे यह लिखा है कि गुजरातमे रहनेवाले हीरविजयजी और उनके शिष्योकी अलौकिक पवित्रता और उग्र तपकी ख्याति सुनकर बादशाहने उन्हे दरबारमे बुलाया था। विदा होते समय उन्हाने बादशाहसे जो विनती की थी, उसके अनुसार यह ताकीद की जाती है कि पर्यूषण-उत्सव (भाद्रपद मासमे होनेवाले) के १२ दिनोमें जैन आबादीक किसी शहरमे किसी भी पशुकी हत्या न की जाय।

(२) सन् १५९२ मे हीरविजयजीको दिये गये दूसरे फरमानमे यह लिखा है कि आचार्यजीने यह विनती की है कि मुगल साम्राज्यमें श्वेताम्बर-पन्थियोके जो तीर्थस्थान हैं वे सब जैनोके सुपुर्द किय जायँ ताकि वहाँ किसी प्राणीकी हत्या न हो। आचार्यजीकी यह विनती न्याय्य, उचित और इसलामके अविरुद्ध होनेसे ये सब स्थान हीरविजयजीको दिये जाते हैं।

(३) खास-खास दिनोमे प्राणिहत्या न होने देनेके लिये एक फरमान सन् १६०८ मे बादशाह जहाँगीरसे पण्डित विवेकहर्षने प्राप्त किया।

(४) सन् १६१० मे पण्डित विवेकहर्षने बादशाह जहाँगीरसे पर्यूषण-उत्सवके दिनोमे प्राणिहत्याकी मनाईका फरमान प्राप्त किया।

शान्तिदासने अहमदाबादमे चिन्तामणि पार्श्वनाथका एक बहुत बडा मन्दिर बनवाया था। सन् १६४५ मे औरगजेबने उसे तोड-फोडकर मसजिद बना लिया। उस समय वहाँ एक गौ मारी गयी, इसलिये कि कोई हिंदू यहाँ पूजा करने न आवे। सन् १६४८ मे शान्तिदासने शाहजहाँसे प्रार्थना कर वह मन्दिर लौटा लिया। पर भ्रष्ट होनेके कारण वह मन्दिर न रहा।

आये दिन काठियावाड और गुजरातके बहुत बडे हिस्सेमे प्राणिहत्या जो नहीं होती और लोग प्राय मासाहार नहीं करते, इसका बहुत कुछ यश जैनोकी शिक्षाको है। 'अहिंसा परमो धर्म ' का व्रत लोग बडी निष्ठासे पालन करने लगे। सच्ची गा-पूजा गुजरातमे ही दीख पडती है।

जैन-गोधन

पहले जैनलोग अपनी सम्पत्तिकी गणना गौओकी सख्यासे करते थे। 'व्रज' और 'गोकुल' उसके माप थे। एक व्रज या गोकुल १० हजार गौओका होता था। विपुल गोधनके धनी दस बडे व्यापारियोंमे राजगृहीके महाशतक और काशीके चूलनिपिता गिने जाते थे। इनमेसे हर एकके पास आठ-आठ गोकुल अर्थात् अस्सी-अस्सी हजार गौएँ थीं। चम्पाके कामदेव वाराणसीके सूरदेव, काम्पिल्यके कुण्डकोलिक और आलम्भीयके चूलशतकके पास छ -छ गोकुल अर्थात् साठ-साठ हजार गौएँ थीं। वाजिया ग्रामके आनन्द, श्रावस्तीके नन्दिनीपिता और शालिनीपिताके पास चार-चार गोकुल (चालीस-चालीस हजार गौएँ) थे। इनमे सबसे गरीब पोलासपुरके शकडालपुत्र थे, जिनके पास एक ही गोकुल यानी दस हजार गौएँ थीं।

महाशतककी पत्नी रेवतीके लिये उसके पतिको ८ गोकुल (८० हजार गौएँ) दहेजमे मिला था। आनन्दने महावीर स्वामीसे जब श्रावक व्रत लिया तब ८ गोकुल पालनेकी शपथ की थी।

[प्रस्तुति—श्रीकमलेशजी चतुर्वेदी]।

सिक्ख-पंथ और गोभक्ति

(श्रीदशमेशसिंहजी)

एक बार जब दशमेश गुरु गोविन्दसिंहजी पुष्कर-तीर्थकी यात्रापर गये थे तो वहाँ पण्डित पृथ्वीराजने उनसे पूछा था कि उनके जीवनका ध्येय क्या है और वह खालसा पंथ क्यों चला रहे हैं?

इसपर गुरु महाराजने उत्तर दिया था—'पण्डितजी! यह खालसा पंथ आर्यधर्म, गौ-ब्राह्मण, साधु-गरीब तथा दीन-दुखियोंकी रक्षाके लिये है। यही सेवा मैं कर रहा हूँ और मेरा खालसा सदा करता रहेगा। (जन्मसाखी)

दशमेशजीके हृदयमें गो-रक्षाके लिये कैसे भाव थे यह उपर्युक्त वार्तासे स्पष्ट है। इसके अलावा नीचे लिखी पंक्तियाँ भी इस विषयमें द्रष्टव्य हैं।

मार्कण्डेयपुराणके देवीमाहात्म्य दुर्गासप्तशतीके आधारपर गुरुजीने 'चण्डी दी वार' की रचना की है। वीररससे भरपूर इस रचनामें अनेकों जगह आपने माता दुर्गा भवानीसे गोरक्षाकी माँग की है—

यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊं।
गऊ घातका दोष जग सिउ मिटाऊं॥
सकल हिन्द सिउ तुर्क दुष्टा विदारहु।
धरम की ध्वजा कउ जगत् में झुला रहु॥
सकल जगत महि खालसा पंथ गाजै।
जगै धर्म हिन्दुन सकल धुध भाजै॥

दशमेशने देश, धर्म और जातिकी रक्षाके लिये कोटनयना देवीके पर्वतपर संवत् १७५६ वि० में काशीके पण्डित केशवदत्त नामक पुरोहितकी देख-रेखमें महाचण्डी-यज्ञ किया था। यह यज्ञ एक वर्षतक चला। महान् सिक्ख इतिहासकार महाकवि भाई संतोखसिंह चूडामणिने अपनी बृहत्काय कृति 'सूरजप्रकाश' के पृष्ठ ४९६० पर लिखा है कि श्रीरामनवमीके दिन रविवारको जबकि डेढ़ पहर दिन बाकी था आठ भुजाओंवाली माँ दुर्गा भवानीने प्रकट होकर गुरुजीसे कहा—'पुत्र! मैं तुम्हारी श्रद्धा-भक्तिसे प्रसन्न हूँ। तुम अपना मनचाहा वर माँगो।'

तब गुरुजी हाथ जोडकर खडे हो गये और बोले—

देओ वर माता पथ उपावहु।
तुर्क-राजको तेज खपावहु॥
हिन्दूधर्म नित हो रहा विनाशा।
जेह बचाए पुन करू प्रकाशा॥

सारांश कि गुरुजीने मुसलमानोंसे हिन्दू-धर्मको बचानेके लिये खालसा पंथको आशीर्वाद देनेकी प्रार्थना की। माता दुर्गाजीने अपने हाथसे गुरुजीको एक तलवार भेंट की।

तत्पश्चात् लंकुडिये (हनुमान्‌जी) ने दशमेशजीको कच्छा भेंट किया तथा कहा कि इसे वह अपने सिंहोंको दे देवें जिसे वे युद्धके समय धारण करें। वह (हनुमान्‌जी) पंथके बलमें वृद्धि करते रहेंगे तथा युद्ध-क्षेत्रमें उनकी सहायताके लिये सदा उपस्थित रहेंगे। (सूरजप्रकाश-१९६५ का संस्करण)।

महाचण्डी-यज्ञके बाद इसी वर्ष वैशाखीके दिन गुरु गोविन्दसिंहजीने खालसा पंथका सृजन किया था। इन्हीं केशधारी वीरोंने बादमें गो-रक्षाके लिये अनगिनत बलिदान दिये। इसी शृंखलामें सन् १८७१ ई० के नामधारी वीरोंका गौरक्षार्थ बलिदान क्या कभी भुलाया जा सकता है? इन कूका वीरों (नामधारियोंका ही एक अन्य नाम) ने पंजाबमें अनेकों जगह अंग्रेजोंके सहपर स्थापित बूचडखानोंको तोडकर गोहत्यारोंको मार डाला था। इस मामलेमें अंग्रेजोंने ६५ नामधारी वीरोंको तोपोंसे उडवा दिया था। अनेकोंको काले पानीकी सजा दी तथा नामधारी पंथके गुरु सतगुरु रामसिंहजीको रंगून निर्वासित कर दिया, जहाँ बादमें उनका निधन हुआ। जब आर्यसमाजने गोरक्षाका आन्दोलन छेडा तो सिक्खोंने बहुत अधिक उत्साह दिखाया था। सरदार इन्द्रसिंह अमृतसरवालेने घोषणा की थी कि गो-रक्षा-आन्दोलनमें हिन्दुओंको जरा भी खतरा महसूस हुआ तो दस लाख सिक्ख अपनी कुर्बानी देनेको तैयार खडे हैं। (बाबा बन्दाबहादुरजीका जीवन-चरित्र पृ० १९)

गुरु गोविन्दसिंहजीके पूर्वके गुरुगण न केवल गौ अपितु सभी जीवोंकी हत्याके खिलाफ थे—

मास मास सब एक हैं, मुर्गी हिरणी, गाय।
आँखि देखी नर खात हैं ते भर नरक हीं जाय॥
क्या बकरी क्या गाय है क्या अपनो जाया।
सबको लहू एक है, यह साहब फरमाया॥
पीर-पैगम्बर औलिया सब मरने आया।
नाहक जीव न मारिये, पोषण को काया॥
जो रत लागे कापड़े, जामा होए पलीत।
जे रत पीवे मानुखा, तिन क्यो निर्मल चित॥
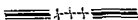
बौद्ध-साहित्यमे गौका स्थान

(श्रीजयमगलरायजी सन्यासी)

भगवान् बुद्ध करुणाके अवतार थे। उनके मनमे ससारके समस्त प्राणियाके लिये समान दया थी। वे किसी भी प्राणीके कष्टको देखकर चुप नहीं बैठ सकते थे। उनका स्नेह सीमाबद्ध नहीं था, फिर गाय-जैसे उपयोगी और मानवमात्रको बिना किसी भेद-भावके एक-समान सुख देनेवाले प्राणीकी वे कैसे उपेक्षा कर सकते थे? उनकी बहुत-सी बातोमेसे मुख्य बात थी गोमास-भक्षण न करनेकी। बुद्धन जनताको गोकी और गोवशकी उपयोगिता बतलाकर गोवध न करनेकी शिक्षा दी। भगवान् बुद्ध गायकी उपयोगिताको सर्वोपरि स्थान देते थे।

इसलिये माता-पिताके समान उन्होने पूज्य मानकर गौका सत्कार किया। उन्होने गायको माता-पिताके समान उपकारी बतलाया। वे गायको सुखका मूल स्रोत समझते थे—

यथा माता पिता भाता, अञ्ञे वापि च ञातका।
गावो नो परमा मित्ता, यासु जायन्ति ओसधा॥
अन्नदा बलदा चेता, वण्णदा सुखदा तथा।
एतमत्थवस ञत्वा नास्सु गावो हनि सु ते॥

जैसे माता-पिता, भाई कुटुम्ब-परिवारके लोग हैं वैसे ही गाय भी हमारी परम मित्र परम हितकारिणी हैं। जिनके दूधसे दवा बनती है। गाय अन्न, बल, रूप-सौन्दर्य तथा सुखको देनेवाली है। इन बाताको जानकर ही पहलेके लोग गौकी रक्षा करते थे। गायके प्रति भगवान् बुद्धकी ऐसी उदात्त एव पवित्र भावना देखकर उनके अनुयायियामे भी गायकी बडी कदर रही। इसी प्रकार बैल भी सब गृहस्थाके लिये पोषणदायक है। इसलिये गाय-बैलका अपने माता-पिताकी तरह आदर करना चाहिये।

विदेशाम आज जो सर्व-भक्षक बौद्धधर्मावलम्बी लोग दीख पडते हैं, उन्हे देखकर हमलोग यह समझ लेते हैं कि बौद्धधर्मावलम्बी लोग पहलेसे ही गो-मास-भक्षक रहे हागे। परतु यह कल्पना सही नहीं है। इतिहासप्रसिद्ध बौद्धसम्राट् अशोकके शिलालेखोमें गाय-बैल आदि प्राणियोकी हत्या न होने देनेकी आज्ञाएँ मिलती हैं। उत्तर ब्रह्मदेश (बर्मा) के अन्तर्गत विजयपुरमें सन् १३५० के लगभग सीहसूर नामक राजा राज्य करते थे। उनके प्रधान मन्त्री महाचतुरगबलका बनाया हुआ 'लोकनीति' नामक ग्रन्थ है, इसम कहा है—

गोणाहि सब्ब गिहीन, पोसका भोगदायका।
तस्मा हि माता पितू व, मानये सक्करेय्य च॥१४॥
ये च खादन्ति गोमस, मातुमस व खादये॥१५॥

(लोकनीति ७)

सब गृहस्थाको भोग (योग्य पदार्थ) देनेवाले और पोसनेवाले गौ-बैल ही हैं। इसलिये माता-पिताके समान उन्हे पूज्य माने और उनका सत्कार करे। जो गोमास खाते हैं वे अपनी माताका मास खाते हैं।

भगवान् बुद्धके एक शिष्य थे धनजय सेठ। उन्होने अपनी कन्याके विवाहोपलक्ष्यम इतनी गौएँ दहेजमे दीं कि उन गौआके खडे हानेके लिय लगभग डेढ सौ हाथ चौडे और तीन कास लबे मेदानकी आवश्यकता हुई।

प्रख्यात चीनी यात्री हुएनसागने ईसाकी ८ वीं शताब्दीमे होनेवाल सम्राट् हर्षवर्धनके सम्बन्धम लिखा है—

'उनके राज्यम प्राणिहिसा करनवालेक लिये कठोर दण्ड था। उन्हाने अपने राज्यम मास-भक्षण ही बद कर दिया था।' गो-हत्या और गा-मास-भक्षणकी तो बात ही क्या।

भारतीय गायोकी विभिन्न नस्ले*

भारत देशकी भारतीय गाय यहाँके निवासियाकी नित्य और चिर-सहचर हैं। *जिस समयतकका भारतवासियाका* इतिहास पाया जाता है, उसी समयतक भारतीय गोगणका भी इतिहास पाया जाता है। आरम्भसे ही ये गाये मनुष्याद्वारा पालित हैं। अन्य देशाकी गायोकी भाँति वहुत समयतक जगलामे हिसक पशुके रूपम घूमत रहनके वाद य मनुष्योके घरमे आकर नहीं पलीं। भारतीय गायाका विशिष्ट लक्षण है ठनका गलकम्बल आर पीठका ककुद्। प्राणितत्त्वविदाके मतसे ककुद्युक्त *गाय* जेवू (*Zebu*) श्रणीक *अन्तर्गत* है।

आकृति-प्रकृति, गुण दोप एव रूप-रगका ध्यानम रखते हुए विभिन्न गोजातियाका वर्गीकरण विद्वानाने किया है। गायके समान ही वल भी तरह-तरहकी जातिके होते हैं। किसीमे कोई गुण विशेष होते ह ता किसीम अन्य कोई विशेषता होती है। भिन्न-भिन्न जलवायु आर लालन-पालनका गो और उसकी सतान दोनापर ही प्रभाव पडता है। एक ही जातिमे अच्छे ओर बुरे दाना तरहक पशुआका हाना सम्भव है कितु आमतौरपर जा विशपताएँ उनम मुख्य रूपस देखी जाती है उन्हासे जाति-भेदकी पहचान होती है।

यद्यपि एक ही जातिकी कई गायाकी शक्ति अलग-अलग किस्मकी होती है तथापि उनके दूध देनेकी शक्ति आर उनके बछडे-बछियाक गुणापर जातीय प्रभाव पाया जाता है—

१-जा गाये दूध खूब ज्यादा दती ह, कितु जिनक बछडे खेती तथा गाडाके काममे विशप उपयोगी नही हाते उन्हे 'दुग्ध-प्रधान एकाङ्गी-नस्ल' कहत हैं।

२-जा गाय दूध कम देती हैं कितु जिनके बछडे खेती या गाडी आदिके लिये विशप उपयोगी हाते हैं वे 'वत्स-प्रधान एकाङ्गी-नस्ल' कही जाती हैं।

३-जिन *गायाका* दूध *भी अधिक और बछडे भी* वलवान् तथा उपयोगी होते हैं, वे 'सर्वाङ्गी नस्ल' कहलाती हैं।

विभिन विद्वानोका वर्गीकरणमे कुछ मतभेद हो सकता है तथापि स्थूल दृष्टिसे यहाँ विभाजन किया जा रहा है—

दुग्ध-प्रधान एकाङ्गी	वत्स-प्रधान एकाङ्गी	सर्वाङ्गी
साहीवाल या मान्ट-गुमरी लाल-सिन्धी।	पँवार खैरीगन नागौरी अगोल अमृतमहाल मालवी नीमारी दज्जल भगनाडी धन्नी मेवाती डाँगी खिल्लारी बछौर आलमबादी बारगुर हल्लीकर।	हाँसी-हिसार, हरियाना थारपर-कर काँकरेज देवनी गावलाव, कृष्णवल्ली राठ लोहानी सीरी कगायम गीर।

सर आर्थर आलवरने भारतकी गोजातिको कई वर्गों या भागामे बाँटा है। यह विभाजन नस्लोके जन्म-स्थानके आधारपर किया गया है। मुख्य गो-नस्ल इस प्रकार है—

१-मैसूरकी लबे सागोवाली गौ।

२-काठियावाडकी गीर जातिकी गौ।

३-उत्तरकी सफद रगकी बडी रासकी गौ।

४-पजाबकी मिल हुए सफेद और लाल रगकी मटगुमरी या साहीवाल जातिकी गौ।

५-धन्नी जातिकी गौ।

६-छाटी रासकी और छाटे सिरवाली पहाडी गौ।

आजकल भारतमे गौआकी जितनी नस्ले पायी जाती

---

* इस विषयपर एक लख हम राष्ट्रिय डयरी अनुसधान करनालसे श्री आर० पी० सिहजीद्वारा भी प्राप्त हुआ है। जिसके कुछ अश इस लखम समाहित कर लिये गय हैं।
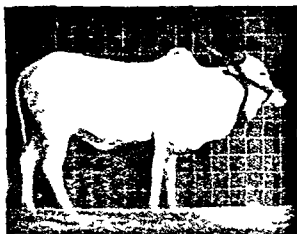
अमृतमहाल गौ
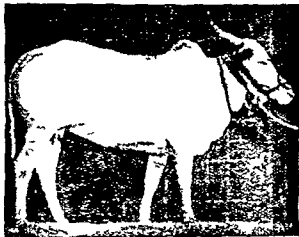
हल्लीकर गौ

गीर साँड
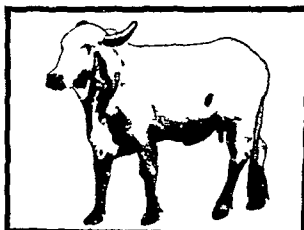
गीर गाय

दवनी साँड़
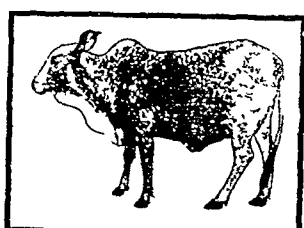
दवनी गाय

हैं, प्राय वे सब इन्हीं वर्गोके अदर आ जाती हैं। यहाँ सक्षेपमे इनका वर्णन किया जा रहा है—

(१) लबे सीगोकी मैसूरी गो

मैसूरी गोएँ अपनी तेजी और श्रम-सहिष्णुताके लिये विशेष प्रसिद्ध ह। इस जातिकी गायामे प्राय दूध कम हाता है। इनका सिर काफी लबा मुँह और नथुने कम चौडे और ललाट काफी उभरा हुआ होता है। इस जातिके पशु प्राय छोटी रासके होते हें। कुछ मुख्य नस्ल इस प्रकार है--

१-अमृतमहाल नस्ल—यह नस्ल मैसूर राज्यमे पायी जाती है। इस जातिके पशुआका रग खाकी तथा मस्तक, गला आर थूहा काले रगके होत हैं। इस नस्लक बैल मध्यम कदके और फुर्तीले होते हे।

२-हल्लीकर नस्ल—इस नस्लके पशु मैसूर राज्यभरमे पाये जाते हैं। यह एक स्वतन्त्र नस्ल है। इनका ललाट उभरा हुआ और बीचमे चिरा हुआ-सा होता है। इस नस्लकी गौएँ अमृतमहाल जातिकी गौओकी अपेक्षा अधिक दुधार होती हैं। इनक सींग लबे और नुकीले तथा कान छोटे होते है।

३-कगायम नस्ल—इस नस्लके पशु कोयम्बटूरके दक्षिणी एव दक्षिण-पूर्वक तालुकामे पाये जाते हैं। इनमे बहुधा दूध कम होता है। कहत हैं, इस जातिकी गोएँ १० से १२ सालतक दूध देती रहती हैं। इनके कान छोटे, मस्तक मध्यम परिमाणका गर्दन ओछी तथा पूँछ काफी लबी होती है। यह नस्ल सर्वाङ्गी मानी गयी है।

४-खिल्लारी नस्ल--इस नस्लके पशुओका रग खाकी सिर बडा सींग लबे ओर पूँछ छाटी होता है। इनका गलकबल काफी बडा होता है।

५-कृष्णातटकी कृष्णावेली गौएँ--इस जातिके पशु बबई प्रान्तक दक्षिणी भाग एव हैदराबाद राज्यम कृष्णा नदीके तटपर पाये जाते हैं। इस नस्लकी गौएँ काफी दूध देती हैं। यह नस्ल कई जातियोके मिश्रणसे बनी है। इनका थूहा काफी बडा सींग और पूँछ छोट तथा गलकबल काफी वडा होता है।

६-बरगूर नस्ल—इस नस्लकी गौएँ मद्रासके कोयम्बटूरम बरगूर नामक पहाडपर बहुतायतसे मिलती हैं। इस नस्लक पशु बडे दुर्दमनीय होते हैं। सहनशक्ति एव तेज चालम कहते हे ये अद्वितीय हात है। इन गौओमे दूध बहुत कम हाता है। इनका सिर लबा, ललाट कुछ उभरा हुआ और पूँछ छोटी होती है।

७-आलमबादी नस्ल--इस नस्लका मैसूरकी हल्लीकर नस्लकी शाखा मानना चाहिये। इस नस्लके बैल बडे परिश्रमी और तेज होते हैं तथा थोडी खुराकपर ही निर्वाह कर सकते है। गौओके दूध कम होता है। इनका ललाट उभरा हुआ और मुँह लबा तथा सँकरा हाता है एव सींग लबे होते हैं।

(२) काठियावाडके जगलोकी लबे कानोवाली गीर नस्ल

यह नस्ल काठियावाडके दक्षिणम गीर नामक जगलमे पायी जाती है। इनका ललाट विशेष उभरा हुआ आर चौडा होता है, कान लबे और लटके हुए होते हैं तथा सींग छोटे होते है। गीर नस्लकी गौआका रग विशष प्रकारका होता है। इनका मूल रग सफेद हाता है और उसपर विविध रगोके धब्बे होते हैं जो सारे शरीरपर फैले रहते हैं। ये धब्बे कई गौआमे बडे-बडे ओर कई गौओम अत्यन्त छोटे होते हैं। इस जातिके पशु मैसूरके पशुओकी अपेक्षा आकारमे बडे हाते हैं। कुछ नस्लाका विवरण इस प्रकार है—

१-गीर नस्ल--इस नस्लके पशुआकी पीठ मजबूत, सीधी और समचौरस होती है। कूल्हेकी हड्डियाँ प्राय अधिक उभरी हुई होती हैं। पूँछ लबी हाती है। शुद्ध गीर नस्लकी गाय प्राय एक रगकी नहीं होतीं। वे काफी दूध दती हैं। इस जातिक बैल मजबूत हाते हैं यद्यपि ये मैसूरके बैलाकी अपेक्षा कुछ सुस्त और धीमे हाते है। उनसे बहुधा गाडी खींचनेका काम लिया जाता है। गीर नस्लकी गाय बच्चे नियत समयपर दती हैं।

२-देवनी नस्ल--यह नस्ल बबई प्रान्तकी डाँगी नस्लसे मिलता-जुलती है। इसम गीर नस्लसे भी काफी समानता है। इस नस्लके पशुआके सिर और सींग गीर नस्लक-से ही होते हैं। ये अनेक रगक होते हैं, पर मुख्यत सफद और काले तथा सफद और लाल रगके अधिक हाते हैं। इस नस्लक बैल खतीम अच्छा काम देत हैं तथा गौएँ

निजाम राज्यकी अन्य नस्लोकी तुलनाम काफी दूध देती हैं।

३-डाँगी नस्ल—इस नस्लके पशु मूलत बबई प्रान्तके अहमदनगर और नासिक जिलो तथा बासदा, धर्मपुर, जौहर तथा डाग्स क्षेत्रोमे पाये जाते है। वे बडे परिश्रमी होते हैं और धानके खेतोमे लगातार काम करनेसे इनके स्वास्थ्यपर कोई अवाञ्छनीय प्रभाव नहीं पडता। इस नस्लकी गौएँ दूध कम देती हे। इन गौआका रग लाल और सफेद अथवा काला और सफेद होता है। इनकी चमडीम तेलकी बहुत अधिक मात्रा रहती है, जो इनकी वर्षासे रक्षा करती है। इनके खुर विशेषरूपसे कडे, काले रगके और चकमक पत्थरकी आकृतिके होते हैं।

४-मेवाती नस्ल—इस नस्लके पशु बहुत सीधे होते हैं और भारी हला एव छकडोम जोते जाते हैं। गौएँ काफी दुधार होती हैं। उनमे गीर जातिक लक्षण पाये जाते हे तथा कुछ बाताम ये हरियाना नस्लके पशुओसे भी मिलते है, जिससे यह पता चलता है कि यह एक मिश्रित जाति है। इनका रग सफेद और मस्तक काले रगका होता है तथा कुछ पशुआम गीर जातिका रग भी पाया जाता है। इनकी टाँगे कुछ ऊँची होती हैं। इनके कान, ललाट और सँकरा मुँह गीर जातिके द्योतक हे।

५-नीमाड़ी नस्ल—इस नस्लके जानवर बहुत फुर्तीले होते हैं। इनका रग तथा मुँहकी बनावट गीर जातिकी-सी होती है। इनके कान मध्यम परिमाणक होते हैं। सामान्य तौरपर इनका रग लाल होता है, जिसपर जगह-जगह सफेद धब्बे भी होते है। इस जातिकी गौएँ काफी दूध देती हैं।

(३) क—उत्तरीय भारतकी चौडे मुँह तथा मुडे हुए सीगोवाली बडे रासकी गौ

गुजरातकी काँकरेज नस्ल इस जातिकी प्रधान नस्ल है। इस नस्लके पशुआका मुँह छोटा किंतु चौडा हाता हे। राजपूतानेकी मालवी नस्ल काँकरेज नस्लसे बहुत मिलती-जुलती है।

१-काँकरेज नस्ल—इस जातिके पशु भारतभरमे विशेष मूल्यवान् समझे जाते है। राधनपुर राज्यमे इसका नाम बढियार नस्ल है। यह नस्ल काठियावाड बडौदा राज्य एव सूरततक फैली हुई है। इस नस्लके पशु चलने और गाडी आदि खींचनेम बहुत तज होते हैं।

काँकरेज जातिकी गौआकी छाती चौडी, शरीर सबल, ललाट चौडा ओर सीग मुडे हुए होते हैं। इनके कान लबे और झुके हुए होते है। इनकी चमडी भारी और गलकबल साधारण परिमाणका होता हे। पूँछ अपेक्षाकृत छोटी होती है।

२-मालवी नस्ल—इस जातिकी गौओको प्राकृतिक गोचरभूमियोम पाला जाता है ओर साथ-साथ उन्हे अनाजकी भूसी आदि भी दी जाती है। सडकापर हल्की गाडियोको खींचनेमे तथा खतीम इनका विशेष उपयोग होता है। इनका रग खाकी ओर गर्दन काले रगकी होती है, परतु बुढापेमे इनका रग बिलकुल सफेद हो जाता है।

मालवी नस्लके दो अवान्तर भेद होते है—(अ) ग्वालियर राज्यके दक्षिण-पश्चिमी भागके बडी रासके पशु, (ब) इसी भागके दक्षिण-पश्चिममे पाये जानेवाले छोटी रासके पशु। इस नस्लकी गौएँ दूध कम देती ह।

३-नागौरी नस्ल—इस नस्लके पशु जोधपुर (मारवाड) के उत्तर-पूर्वी भागम पाये जाते हैं। इस जातिके बैल आकारम बडे होते हैं और तेज चालके लिये प्रसिद्ध हैं। इनका मुँह अपेक्षाकृत सँकरा एव लबा होता है तथा ललाट चपटा। इनकी चमडी पतली, गलकबल छोटा और पूँछ भी छोटी हाती हे। इस नस्लकी गोएँ दूध कम देती हैं।

४-थारपरकर नस्ल—कच्छ, जोधपुर एव जैसलमेर राज्योमे इस जातिके पशु बडी सख्यामे पाले जाते हैं। इस भू-भागम बालूके ऊँचे-ऊँचे टीले बहुत पाये जाते हैं और वर्षा कम होती है। ये वहाँके अपर्याप्त घास एव झाडियोपर निर्वाह करते हे और साथ-साथ इन्ह गवाँर तथा अन्नकी भूसी आदि भी दी जाती हे।

इस जातिक पशु बडे परिश्रमी और खाकी रगके होते ह। इस नस्लकी गौएँ भारतवर्षकी सर्वश्रेष्ठ दुधार गायोमे गिनी जाती ह। बैल मध्यम परिमाणके होते है, अतएव खेती एव गाडियाम जुतनेके काम आते हैं। इनमे कई ऐसे गुण हैं, जिनके कारण इनकी बहुत कदर की जाती है। गाये दूध अधिक देती हैं, बैल परिश्रम अधिक कर सकते हैं आर थाडी खुराकपर निर्वाह कर सकते हैं। इनका मुँह काफी लबा ललाट कुछ उभरा हुआ और थूहा मध्यम परिमाणका होता है।

काँकरेज साँड़

काँकरेज गाय

थारपारकर साँड़
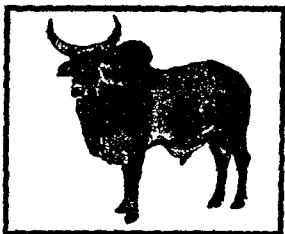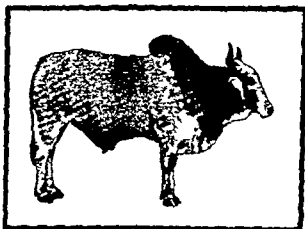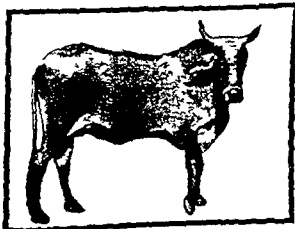
थारपारकर गाय
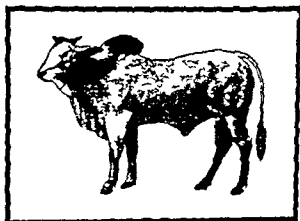
हरियाना साँड़
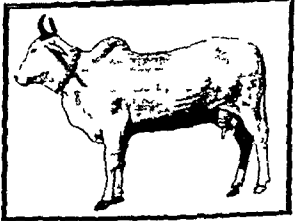
हरियाना गाय

५-बचौर नस्ल—इस नस्लके पशु बिहार प्रान्तके अन्तर्गत सीतामढी जिलेके बचौर एव कोइलपुर परगनोम पाये जाते हैं। इस जातिके बैल काम करनेमे अच्छे होते हैं। इनका रग खाकी, ललाट चौडा, आँखे बडी-बडी और कान लटकते हुए होते हैं।

६-पँवार नस्ल—यह सयुक्तप्रान्तके पीलीभीत जिलेकी पटनपुर तहसीलमे और खेरीके उत्तर-पश्चिमी भागमें पायी जाती है। शुद्ध पँवार नस्लके गाय-बैलोका मुँह सँकरा तथा सींग लबे और सीधे होते हैं। इनके सींगोकी लबाई १२ से १८ इचतक होती है। इनका रग प्राय काला और सफेद होता है। इनकी पूँछ लबी होती है और ये बडे फुर्तीले तथा क्रोधी होते हैं। ये मैदानम स्वच्छन्दरूपसे चरना पसद करते हैं। गौएँ दूध कम देती हैं।

(३) ख—उत्तर एव मध्य भारतकी सँकरे मुँह एव छोटे सींगवाली सफेद गौ

इस जातिके अन्तर्गत मुख्य ६ नस्ले हैं—

१-भगनारी नस्ल—नारी नदीके तटवर्ती 'भाग' नामक इलाकेमे पाये जानेके कारण इस नस्लको 'भगनारी' कहते हैं। इस नस्लके पशु अपना निर्वाह नदी-तटपर उगनेवाले घास तथा अनाजकी भूसी आदिपर करते हैं।

इस नस्लमे भी दो प्रकारके पशु होते हैं—(१) छोटी रासके तथा (२) बडी रासके। इन पशुओकी गठन अच्छी तथा कद लबा होता है। इस जातिकी गौएँ अधिक दूध देनेके कारण प्रसिद्ध हैं।

दज्जल नस्ल—भगनारी नस्लका ही यह दूसरा नाम है, इस नस्लके पशु पजाबके 'देरागाजीखाँ' जिलेमे बडी सख्यामे पाले जाते है। कहते है कि लगभग बहुत वर्षों पूर्व इस जिलेम कुछ भगनारी साँड खास तौरपर नस्लके लिये भेजे गये थे। यही कारण है कि 'देरागाजीखाँ'मे इस नस्लके काफी पशु हैं, यहींसे वे पजाबके अन्य भागाम भेजे जाते हैं।

२-गावलाव नस्ल—यह नस्ल मध्यप्रान्तकी सर्वश्रेष्ठ नस्ल है। इस जातिके सर्वोत्तम पशु सतपुडाकी तराईके वर्धा जिलेमे, ससार तहसीलमे एव कुरई परगनेमे, सिवनी तहसीलके दक्षिणी भागमे नागपुर जिलेके कुछ भागोमे और बइहर तहसीलम पाये जाते हैं। ये प्राय मध्यम कदके होते हैं। गौओंका रग प्राय निरा सफेद होता है और बैलोका सिर खाकी रगका होता है। इनका सिर काफी लबा और सँकरा, सींग छोटे और गलकबल बडा होता है। खिल्लारी जातिके बैलोकी भाँति ये भी समान चालसे लबी यात्रा कर सकते हैं। गावलाव जातिकी गौएँ दुधार मानी जाती हैं, परतु वर्धाके पास बहुत-से गाँव ऐसे हैं, जिनमे इस जातिकी गौएँ बहुत थोडा दूध देती हैं। खिलाने-पिलानेकी समुचित व्यवस्था एव सँभालसे इनका दूध बढाया जा सकता है।

३-हरियाना नस्ल—इस जातिकी गौएँ बडी सख्यामे दूध देनेके लिये प्रतिवर्ष कलकत्ते आदि बडे नगरोमे भेजी जाती हैं। इस नस्लके पशु एक विशाल भू-भागमे पाये जाते हैं। जिसमे सयुक्तप्रान्त एव राजपूतानेके भरतपुर और अलवर राज्य भी सम्मिलित हैं। हरियाना जातिके बैल सफेद अथवा खाकी रगके होते हैं। ये चलनेमे तेज और हल जोतनेम अच्छे होते हैं। कलकत्तेमे बरसातके पूर्व इनका खाकी रग प्राय सफेद हो जाता है। बैलोकी गर्दन और थूहे काले होते हैं। गौओ और साँडोके सींग छोटे और मोटे होते हैं, परतु बैलोके सींग प्राय मुडे हुए होते हैं।

४-हाँसी-हिसार नस्ल—पजाबके हिसार जिलेमें हाँसी नदीके आस-पास यह नस्ल पायी जाती है, इसीसे इसका नाम 'हाँसी-हिसार' पड गया। इस नस्लके पशु हरियाना नस्ल-जैसे ही होते हैं, परतु उनकी अपेक्षा अधिक मजबूत होते हैं। इनका रग सफेद और खाकी होता है। इस जातिके बैल यद्यपि परिश्रमी होते हैं, पर गौएँ हरियाना नस्लकी खूबीको नहीं पा सकी हैं।

५-अगाल नस्ल—मद्रास प्रान्तका अगोल नामका इलाका पशुआके लिये प्रसिद्ध है। गतूर जिलेके किसान लोग प्राय इन पशुओको पालते हैं। इस जातिके पशु प्राय सीधे और बैल बडे बलवान् होते हैं, परतु अधिक भारी होनेके कारण वे तेज चलनेमे उपयोगी नहीं होते। इस जातिके पशु बहुत वडी सख्यामे अमेरिकन नस्लको सुधारनेके लिये अमेरिका भेजे जाते थे। ये थोडा-सा सूखा चारा खाकर निर्वाह कर सकते हैं। इनके शरीर अपेक्षाकृत लबे और गर्दन छोटी हाती है। ये अपने डील-डौल तथा शरीरकी गठनके लिये प्रसिद्ध हैं।
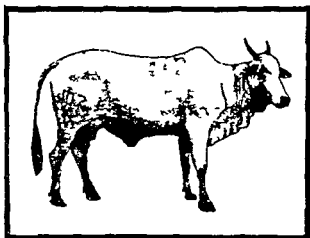
अगोल गाय

साहीवाल गाय

सिंधी साँड़

सिंधी गाय

थन्नी साँड़

थन्नी गाय
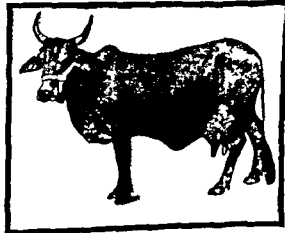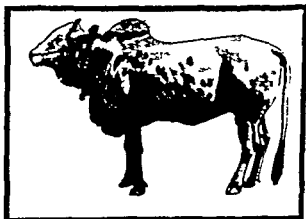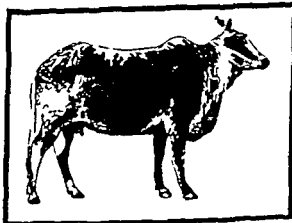
६-राठ नस्ल—ये मध्यम परिमाणके पशु होते हैं। ये बहुत फुर्तीले और मध्यम परिमाणके हल चलाने एव सडकपर चलनेमे उपयोगी होते हैं। इनकी गाये भी दुधार होती हैं। इन तीन गुणोके कारण ये निर्धन लोगोके पशु माने जाते हैं, जब कि नागौरी पशु धनवानोके पशु समझे जाते हैं।

३ (क) ओर (ख) के मिश्रणसे उत्पन्न हुई जाति

इस जातिके अन्तर्गत दो प्रसिद्ध नस्ल हैं—

१-केनवारिया नस्ल—यह बुदेलखडकी प्रसिद्ध नस्ल है और सयुक्तप्रान्तके बाँदा जिलेमे केन नदीके तटपर पायी जाती है। इस जातिकी गोएँ दूध कम देती है। इनका रग खाकी होता है।

इनका मस्तक ओछा कितु चाडा और सीग मजबूत एव तीखे होते हैं। इनके सींगा तथा शरीरकी बनावटसे ऐसा प्रतीत होता है कि यह जाति ३ (क) और (ख) जातियोके मिश्रणसे बनी है। इनके सीग काँकरेज जातिके पशुओके-से होते हैं और दूसरे अङ्ग ३ (ख) वाली जातिके-से।

२-खेरीगढ नस्ल—यह नस्ल सयुक्तप्रान्तके खेरीगढ क्षेत्रमे पायी जाती है। ये पशु प्राय सफेद रगके तथा छोटे, सँकरे मुँहके होते है। इनके सींग बडे और १२ से १८ इचतक लबे हाते है, वे केनवारिया नस्लके सींगासे बहुत मिलते होते है। इनके सभी लक्षण प्राय केनवारिया नस्लसे मिलते हैं। ये क्रोधी और फुर्तीले होते हैं तथा मैदानोमे स्वच्छन्दरूपसे चरनेसे स्वस्थ एव प्रसन्न रहते हैं। इनकी गाये दूध कम देती हैं। ये तराई प्रदेशके उपयुक्त होते हैं।

(४) साहीवाल जाति (जो अफगान-जाति तथा उत्तर भारतकी गौओके मिश्रणसे बनी है)

इस जातिके पशु अफगानिस्तानके पशुआसे बहुत मिलते हैं। ये बादामी रगके अथवा चितकबरे होते हैं। और इनकी गणना भारतकी श्रेष्ठ गायोम है। यह प्रसिद्ध है कि किसी समय राजपूतानेसे बहुत-से लोग अपने पशुओको साथ लेकर मटगुमरी आय थे आर ऐसा माना जाता है कि यह नस्ल गीर नस्लके सम्मिश्रणसे बनी है। इनका रग अफगान-जातिकी गौओसे तथा गीर-जातिकी गौओसे भी मिलता है।

लोगोका अनुमान है कि लाल रगकी सिधी गाय भी इन्हीं दो जातियोके मिश्रणसे बनी है। इस जातिमे बलूचिस्तानके लास बेला प्रान्तकी नस्लके सम्मिश्रणका भी अनुमान किया जाता है।

१-साहीवाल नस्ल—ये मुख्यतया दूध देनेवाले पशु होते हैं, जो प्राचीन कालमे पजाबके मध्य एव दक्षिणी भागामे बहुत बडी सख्याम पाले जाते थे। इस जातिके पशु भगनारी हरियाना, नागौरी एव धन्नी आदि जातियोसे सर्वथा भिन्न होत हैं। दुधार होनेके कारण इस जातिकी गौएँ बडी सख्यामे शहरोमे ले जायी जाती हैं। उनके दुग्धोत्पादनके परिमाणसे पता लगता है कि उचित सँभाल रखनेपर वे कहीं भी रह सकती है।

२-लाल रगकी सिधी नस्ल—यह नस्ल मूलत कराचीके आस-पास ओर उसके उत्तर-पूर्वके प्रान्तमे पायी जाती है। बलूचिस्तानके लास बेला इलाकेमे शुद्ध सिधी जातिके पशु पाले जाते हैं। इस जातिमे अफगान-नस्ल एव गीर-नस्लका सम्मिश्रण पाया जाता है। लाल सिधी गौओकी गणना भारतकी सबसे अधिक दूध देनेवाली गौओमे है। ये आकारमे छोटी होती हैं, कितु इनमे दूध दनेकी क्षमता अधिक होती है। ये चाहे जहाँ पल सकती हैं। ये लाल रगकी होती हैं और मुँहपर एव गलकबलमे कुछ सफेद धब्बे बहुधा रहते हैं। इनके कान मध्यम परिमाणके होते हैं।

इस नस्लके पालनेवाले इसकी भूरि-भूरि प्रशसा करते हैं। उनका कहना है—'छोटे दुग्ध-व्यवसायीके लिये सिधी गाय सर्वश्रेष्ठ गायामेसे है। इसका आकार बडा नहीं होता और यह अगोल, साहीवाल आदि बडे आकारकी गौओकी अपेक्षा कम खाती है, इसकी खुराकम खर्चा कम पडता है और थाडी खुराकमे भी यह अपना स्वास्थ्य अच्छा रख लेती है।'

(५) धन्नी नस्ल

सर आर्थर आलवरके मतानुसार पजाबकी धन्नी नस्लको स्वतन्त्र जाति मानना चाहिय। इस जातिके पशु मध्यम परिमाणके तथा बहुत फुर्तीले होते हैं। इनका रग

एक विचित्र प्रकारका होता है और ये पजाबके अटक, रावलपिडी एव झेलम इलाकोमे तथा उत्तर-पश्चिमी सीमा-प्रान्तोमे प्रचुर सख्यामे पाले जाते हे। इस जातिकी गौएँ दुधार नहीं होतीं, इसका कारण कदाचित् यह हो सकता है कि लोग इनकी अधिक सँभाल नहीं रखते। यही कारण है कि उनकी दुग्धोत्पादन-क्षमताको विकासके लिये अवसर ही नहीं मिलता।

(६) प्राचीन भारतकी पहाडी गौ

समूचे भारतमे, विशेषकर हिमालय प्रदेश एव बलूचिस्तानके पर्वतीय प्रदेशमे एक छोटे रासकी गो-जाति पायी जाती है, जिसका रग, बनावट ओर सामान्य लक्षणोको देखनेसे इस विषयमे सदेह नहीं रह जाता कि यह जाति प्राग्-ऐतिहासिक युगसे भारतवर्षम पायी जाती है। इस जातिक पशुओके ललाट और गलकबलमे बहुधा सफेद धब्बा होता है और पूँछका सिरा तथा अन्य अवयवोंके अन्तिम भाग भी सफेद होते हैं। ये छोटे जानवर ऐसे स्थानामे भी सुखी और स्वस्थ रहते हैं, जहाँ बडे और अधिक मूल्यवान् पशु जीवित नहीं रह सकते और दूध देकर तथा पहाडोमे काम करके मनुष्यकी बहुत उपयोगी सेवा कर सकते हैं। इस जातिके पशु उत्तरम लुडीकोटल तथा दक्षिणमे कन्याकुमारीतक, पश्चिममें बलूचिस्तान और पूर्वम आसामतक तथा भारतके विभिन्न भागोमे स्थित जगली एव पहाडी प्रदेशोमे भी पाये जाते है। पूर्व एव पश्चिमके समुद्रतट कुग प्रदेशमे, नीलगिरिके पर्वतोपर तथा राजपूताना एव मध्यभारतके जगलो एव पहाडी प्रदेशोमे भी इनके दर्शन होते हैं। यदि इन्हे अच्छी तरह खिलाया-पिलाया जाय तो ये पशु वास्तवमे मूल्यवान् सिद्ध हाते हैं। ये बहुत परिश्रमी फुर्तीले एव कामके होते हैं और अपने आकारके अनुसार दूध भी पर्याप्तमात्रामे देते हैं। इनके शरीरमे कोई ऐसी विशेषता नहीं होती, जिनके द्वारा इनकी जल्दी पहचान हो सके, एक बात अवश्य होती है कि इनका सिर शरीरके अनुपातसे बहुत छोटा होता है। हिमालय पहाडकी बहुत ऊँचाईपर जो बहुत छोटी रासके पशु मिलते हैं, उनके सींग बहुधा बिलकुल छोटे होते हैं, परतु उनसे नीचेके भागोमें, जहाँ उन्हे अधिक पोषण मिल सकता है, वे काफी लबे होते है। जहाँ उन्हे काफी अच्छा पोषण मिल जाता है, वहाँ इस जातिकी गौएँ अपने आकारके अनुपातसे काफी दूध भी देती हैं।

१-सीरी नस्ल—इस जातिके पशु दार्जिलिगके पर्वतीय प्रदेशमे तथा सिक्किम एव भूटानमें पाये जाते हैं। इनका मूलस्थान भूटान ही माना जाता है और भूटानसे ही इस जातिके सर्वोत्तम पशु दार्जिलिग लाये जाते हैं। ये प्राय काले और सफेद अथवा लाल और सफद रगके होते हैं। इनके शरीर बारहो महीने घने बालोसे ढके रहते हैं, जो इन पर्वतीय प्रदेशोमे उनकी कडाकेकी सर्दी एव मूसलाधार वर्षासे रक्षा करते हैं।

सीरी जातिका पशु देखनेमें भारी होता है। उसका मस्तक चौकोर और छोटा, किंतु सुडौल होता है। ललाट चौडा और चपटा होता है। थूहा काफी आगे निकला हुआ और कान बहुधा छोटे होते हैं। इस जातिके बैलोकी बडी कदर होती है।

२-लोहानी नस्ल—इस नस्लका मूलस्थान बलूचिस्तानकी लोरालाई एजेसी है। जगली जातियोके इलाकोमे भी ये काफी फैली हुई है, वहाँ इन्हे 'अच्छाई' जातिके पशु कहते हैं।

लोहानी जातिके पशु आकारमें बहुत छोटे होते हैं, जवान पशु ४०से ४४ इचतक ऊँचे होते है। इनका रग लाल होता है, जिसपर सफेद धब्बे होते हैं, यद्यपि ऐसे पशु भी कम नहीं होत जिनका रग निरा लाल होता है। इस जातिके बैल हल चलाने तथा बोझा ढोनेमे, विशेषकर पर्वतीय प्रदेशोमे बहुत उपयोगी होते हैं। वे कडी सर्दी और गर्मी सह सकते हैं।*

गा पङ्काद् ब्राह्मणीं दास्यात् साधून् स्तेनाद्द्विज वधात्। मोचयन्ति च ये राजन् न ते नरकगामिन ॥

जो गायको कीचडसे ब्राह्मणीको दासत्वसे साधुको चोरसे और ब्राह्मणको वधसे छुडाते हैं, वे कभी नरकमें नहीं जाते।

---

*गायोके कुछ चित्र चन्द्रावती राधारमणद्वारा लिखित सतुलित गोपालन पुस्तकसे साभार उद्धृत हैं।

समांसमीना गौः

(चक्रवर्ती डॉ० श्रीरामाधीनजी चतुर्वेदी)

गायके विशेष नामोका इतिहास बहुत प्राचीन है। जिनका उल्लेख महर्षि पाणिनिके अष्टाध्यायी ग्रन्थमे हुआ है। उनका विवरण इस प्रकार है—

जो गाय प्रतिवर्ष ब्याती है उसे सस्कृत भाषामे 'समासमीना' कहते हैं। जिसे लोकभाषामे 'धेनुपुरही' गाय कहा जाता है। इसका तात्पर्य है कि जिस गायके थनमे दूसरा बच्चा पैदा करने-समयतक दूध रहता है, कभी सूखता नहीं, वही 'पूर्णधेनु' (धेनुपुरही) है। पाणिनिने 'समासमीना' पदका विवरण 'समासमा विजायते'[1] सूत्रसे किया है। अर्थात् 'समाया समाया—वर्षे वर्षे विजायते प्रसूयते' इस निर्वचनसे यह पद निष्पन्न होता है। प्रतिवर्ष बच्चा पैदा करनेवाली गाये बहुत कम होती हैं। ये बहुत सीधी होती हैं, जब जो चाहे तब दूह ले। इसीलिये इस प्रकारकी गायको लोग 'कामधेनु' भी कहते हैं।

महर्षि पतञ्जलिने 'समासमीना गौ ' मे भी विशेष गुणकी प्रशसा करते हुए कहा है—'गौरिय या समा समा विजायते गोतरेय या समा समा विजायते स्त्री वत्सा च'[2] अर्थात् प्रत्येक वर्ष ब्यानेवाली गाय यदि प्रत्येक बार बछिया पैदा करे तो उसे 'समासमीना गोतरा' कहते हैं। यहाँ तरप् प्रत्यय उसके विशेष गुणका बोधक है। वस्तुत बछडेकी अपेक्षा बछिया पैदा करनेवाली गाय विशेष लक्षणवती होती है, क्योकि उससे गोधनकी वृद्धि होती रहती है।

इसी प्रकार गायके लिये—गृष्टि, धेनु, वशा, वेहत्, वष्कयणी—इन पदोंका भी उल्लेख 'पोटायुवतिस्तोककतिपय-गृष्टिधेनुवशावेहद्वष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जाति'[3] इस सूत्रमे है। इनमे 'गृष्टि' वह गाय है जो पहले-पहल ब्यायी हो। जिसे 'प्रष्ठौही' भी कहते हैं। 'प्रष्ठौही' का ही विकसित रूप लोकभाषामे 'पहिलौंठी' है। एक-दो महीनेकी ब्यायी हुई गायकी सज्ञा 'धेनु' है। 'धेट्' धातुसे 'धेनु' पद निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है पिलानेवाली। जिसका बच्चा जबतक दूधपर ही निर्भर रहता है, घास नहीं खाता, तबतक वह गाय धेनु कही जाती है। 'वशा' पद वन्ध्या गायका बोधक है, जो कभी ब्यायी नहीं वह बाँझ गाय ही 'वशा' है तथा जिसके गर्भ कुछ दिनके बाद गिर जाते हैं, कभी पूरे समयतक ठहरते नहीं, वह 'वेहत्' कहलाती है, जिसे गर्भघातिनी भी कहते हैं।

'वष्कयणी' गाय वह है, जिसका बछडा बडा हो जाता है। सात-आठ महीनेतक जो गाय दूध देती रहती है, वही 'वष्कयणी' है। जिसे दूसरे शब्दोमे 'तरुण-वत्सा' गौ कहते हैं। लोकभाषामे 'बकेन' गायके नामसे प्रसिद्धि है। जो 'वष्कयणी' का परिवर्तित रूप है। बकेन गायका दूध गाढा होनेसे विशेष लाभप्रद होता है।

गायोके लिये इन अवान्तर नामोसे ज्ञात होता है कि आजसे करीब तीन-चार हजार वर्ष-पूर्व समाजका गायोंके साथ कितना सम्बन्ध था जो कि उनकी प्रत्येक अवस्थाओके लिये अलग-अलग व्यवहार नियत थे। उस समय गोधन ही मुख्य था। मानव-जीवनका प्रधान साधन गाये थीं। गौके पालन-पोषणसे समाज सुखी था, वह स्वास्थ्य और शान्तिका अनुभव करता था। यदि आज भी गोमाताकी सेवा होने लगे तो भारत पुन शान्ति और समृद्धिका अनुभव करता हुआ वस्तुत भारत हो जाय।

यथा गौश्च तथा विप्रो यथा विप्रस्तथा हरि । हरिर्यथा तथा गङ्गा एते न ह्यवृषा स्मृता ॥

जैसे गाय है वैसे ही ब्राह्मण है, जैसे ब्राह्मण है वैसे ही भगवान् श्रीहरि हैं और जैसे हरि हैं वैसे ही गङ्गाजी भी है। अतएव ये सब पापनाशक हैं। (पद्म०, सृष्टि० ४८। १५५)

---

(१) अष्टाध्यायी ५। २। १२ (२) महाभाष्य ५। ३। ५५ (३) अष्टाध्यायी २। १। ६५।

उत्तम गायके अवयवोकी व्याख्या

गायकी पहचान उसके अवयवोको देखकर करनी चाहिये।

(१) रग—सर्वाङ्ग-काली श्यामा एव कपिला गाय सर्वोत्तम मानी जाती है। लाल, बादामी या चितकबरे रगवाली गाय भी श्रेष्ठ मानी गयी है। सफेद-मोतिया या भूरे आदि रगकी भी गाये अच्छी होती है।

(२) चर्म—पतला, चिकना और रेशम-से नर्म बालोदार हो।

(३) ऊँचाई—जातिके अनुसार काफी बडे कदकी हो।

(४) लबाई—शरीर लबा और छाती चौडी होनी चाहिये।

(५) सिर—छोटा, मस्तक चौडा और गर्दन लबी तथा पतली हो, किंतु साहीवाल आदि जातियाके पशु भारी और छोटी गर्दनवाले होते है।

(६) सास्ना—भारी तथा झालरदार और ठाटी खूब विकसित हो।

(७) सींग—छोटे और चिकने तथा जातिके अनुसार आकारवाले हो। कपिला गायके सींग हिलते या नीचेकी ओर झुके हुए और चपटे होत हैं।

(८) कान—उभरे हुए और बडे हों उनके भीतरकी चमडी मुलायम तथा पीले रगकी हो।

(९) आँखें—साफ, बडी, ममतामयी एव स्निग्ध हो।

(१०) नाक—साफ हा और उससे पानी न बहता हो।

(११) ओठ—कामल सटे हुए एव ताँबेके-से लाल रगके हो।

(१२) दाँत—सफेद मजबूत एव कीडे-रहित हो।

(१३) जीभ—साधारण लबी कुछ लाल-सी मुलायम और काँटेरहित हो।

(१४) गला—साफ सुरीला और ऊँच स्वरवाला हो।

(१५) पूँछ—पतली, काली चौंरीवाली और जातिके अनुसार लबी एव जमीनको छूती हुई हो। सफेद चौंरीवाला लक्षण किसी नस्लमे ही अच्छा किंतु अधिकतरम दोष माना जाता है।

(१६) पुट्ठे—चौडे खुले हुए, स्थूल और ऊँचे हा।

(१७) धुन्नी—(पेटक नीचेकी चमडी) बडी, फैली हुई और मुलायम हो।

(१८) जाँघे—चौडी और फासलेपर हो।

(१९) पैर—सुडोल, मजबूत एव लबे हा, किंतु चलते समय आपसमे न लगते हो।

(२०) खुर—सटे हुए, गाल एव मजबूत हो और इनके भीतरकी चमडी पीली एव मुलायम हो।

(२१) ऐन—खुला, चौकोर, चौडा तथा बडा हो। अगले पैरोकी तरफसे उभरी हुई रस्सीके आकारकी दूधकी नसे ऐनकी तरफको आती दिखायी पडती हो।

(२२) थन—लबे मुलायम और दूर-दूर हो। चारो स्तन एक-से और बडे हा।

(२३) शरीर—नीरोग और भरा हुआ, किंतु मोटा न हो। मोटी गायमे केवल मास ही ज्यादा बढ जाता है, जिससे उसकी दूध देनेकी शक्ति कम हो जाती है।

(२४) पसमाव—(दूधका बहाव) एक-सा और मोटी धारका हो और बरतनसे टकराकर घर-घरकी-सी गम्भीर ध्वनि करनेवाला हो।

(२५) दूध—पीली झलकवाला और गाढा हो।

(२६) स्वभाव—गम्भीर, सीधा प्रेममय एव उत्तेजना-रहित हो। वह ऐनके छूनेपर क्रोध न करनेवाली और सबसे सरलतापूर्वक दुहा लेनेवाली हो।

(२७) चाल—मन्द ओर सीधी हो।

(२८) ज्ञातवशज—दुधार गायो तथा बलिष्ठ साँडोके कुलकी हा।

(२९) गुण—जातीय नस्लके सभी गुण शुद्ध एव पूरे हा।

(३०) रुचि—सभा किस्मके अच्छे चारे-दानेको

रुचिपूर्वक खानेवाली हो।

(३१) गर्भ—वह श्रेष्ठ साँडसे गाभिन हुई हो।

उदर, कुक्षि, कूल्हे दोऊ, माथा, छाती, पीठ।
ऊँचे उभरे अंग छै, यह शुभ लच्छन दीठ॥

युगल नेत्र अरु कर्ण हो, विस्तृत और समान।
मस्तक ऊँचो लेखिये, सब विधि उत्तम जान॥

गल-कम्बल गर्दन तथा, पूँछ रु थन दोउ रान।
लम्बे चौड़े अङ्ग लखि, उत्तम कहत सुजान॥
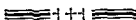
दुधार गौकी परीक्षा

हमलोगोमेसे बहुतोको इसका अनुभव हुआ होगा कि गौ रखनेकी इच्छा होनेपर भी अच्छी गौ न मिलनेसे जैसी-तैसी गौ रखकर पीछे कष्ट ही होता है और यही कहना पडता है कि बाज आये इस झगडेसे। पर ऐसा इसीलिये होता है कि हम गौ खरीदते समय यह देख नहीं लेते कि गौ दुधार है या नहीं। इस विषयकी कोई जानकारी ही नही होती। ग्वाले जानते हैं, परखते हैं, पर खुलकर सब भेद नहीं बतलाते। इसलिये जरूरी है कि हमलोग इसकी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर ले। जानकार लागोने दुधार गौकी पहचानोका सग्रह किया है। विशेषज्ञोको अवश्य इसमे कोई नया विशेष ज्ञान नहीं मिलेगा, पर सर्वसाधारणके लिये ये पहचाने उपयोगी होगी, इसलिये यहाँ दी जाती हैं।

गौके बगलमे खडे होकर देखना

गौके बगलम खडे होकर देखनेसे पहले उसका आकार दीख पडेगा। कधोंसे लेकर पूँछतक उसकी लबाई काफी होनी चाहिये। पीठ लचकी हुई न हो, मेरुदण्ड ऊपर उठा हुआ हो और उसके मनके अलग-अलग दिखायी दे। पेटका घेरा जितना ही बडा हागा, उतना ही वह अधिक खानेवाली होगी और उतना ही दूध भी अधिक देगी। यह ध्यानमे रहे कि कम खाकर अधिक दूध देनेवाली गौकी सृष्टि अभीतक नहीं हुई है। पेटकी पसलियाँ जब उठी हुई और फैली हुई होती हैं, तब पेटमे चारा-पानीके लिये अधिक अवकाश होता है। दूध देनेवाली गौके शरीरपर मास अधिक नहीं होता, क्योकि वह जो कुछ खाती है, उससे दूध ही अधिक निर्माण होता है। हाँ, गाभिन होनेपर पौष्टिक पदार्थ खानेको मिले तो वह अवश्य ही पुष्ट होती है। गौके बदनपर हाथ फेरकर देख लेना चाहिये। यदि खाल मुलायम और पतली हो तो यह अच्छा लक्षण है, यदि खाल मोटी हो तो यह समझना चाहिये कि रक्ताभिसरण ठीक नहीं हा रहा है। ओर रोएँ घने हा तो समझना चाहिये कि इसकी परवरिश ठीक तरहसे नहीं हो रही है और इसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।

पीठके पीछे खडे होकर देखना

पीठके पीछे खडे होकर गौकी ओर दखनेसे पेटका भराव दीख पडता है। पुट्ठों और नितम्बाकी चौडाई सामने आ जाती है। पुट्ठोका चौडा होना यह सूचित करता है कि गर्भाशयमे अर्भकका पोषण ठीक तरहसे हाता है। गौके थनका पिछला भाग और चूँचियाँ भी यहाँसे दीख पडते हैं। गौकी जाँघ भरी हुई और दोना जाँघोंके बीच काफी अन्तर होना चाहिये जिसम थनके समानेके लिये पूरा अवकाश हो।

पेटके नीचेसे देखना

गौके पेटपर 'दूधवाली शिरा' होती है। वह थनकी ओर रक्त पहुँचानेवाली रक्तवाहिनी है। यह जितनी लबी और बडी होगी, थन उतना ही अधिक पोसा जायगा और उतना ही उसमें दूध उत्पन्न होगा। इसीलिये इस रक्तवाहिनीको 'दूधवाली शिरा' कहते हैं। यह पेटके नीचे जितनी ही स्पष्ट दीख पडे और थनके ऊपरकी नस भी जितनी स्पष्ट लक्षित हा, उतना ही यह समझना चाहिये कि गौ दुधार है। थनका अगला भाग भी यहाँसे देख लेना चाहिये। थन बडा और पेटके बराबरम हो। लटक आया हुआ या मासल न हो और उसपरकी नसे साफ दीख पडे। आगे ओर पीछे दोना ओर थन पेटसे सटा हुआ हो। चारो चूँचियाँ बराबर फासलेपर और एक-सी बढी और भरी हुई हो। बहुत पतली

चूँचियोसे, जो अँगुलियोमें भी न आये, दूध भी कितना निकलेगा। अन्य सब लक्षणाकी अपेक्षा थन और चूँचियांकी परखमे ही अधिक ध्यान देना चाहिये।

गौके सामने खडे होकर देखना

सामनेसे गौका मुँह दीख पडता है। उसका जबडा और नथुने चौडे हो, आँखे पानीदार हो, गौ सीधी है या नहीं, यह उसका मुँह देखनसे पता चलता है। दाँतासे उसकी उम्रका अनुमान होता है। गायक नीचवाले जबडेम ८ [दूधिया] दाँत होते हैं। दो वर्ष बाद बीचके दो [दूधिया] दाँत गिर जाते और उनके स्थानमे दो बडे [स्थायी] दाँत निकलते हैं। इस तरह हर साल दो-दो बडे दाँत निकलते और पाँच वर्षमे आठो बडे [स्थायी] दाँत पूरे हो जाते है। पाँच-छ वर्षके बाद ज्यो-ज्यो गौ ढलने लगती है, त्यो-त्यो उसके दाँत भी घिसते जाते हैं और खूँटी-सरीखे होने लगते है। गायके ऊपरके जबडेम दाँत नहीं होते। इन नीचेके दाँतासे घास-चारा काटकर वह पटमे उतारती है और पीछे दोनो जबडोके किनारेकी मजबूत दाढोसे चबाकर (जुगाली करके) निगल जाती है।

गौके कानोम यदि कुछ पीली-सी चमक दिखायी दे तो समझना चाहिये कि गो दुधार है और उसके दूधमे मक्खनका अश अधिक है। गौका गलकबल पतला होना चाहिये, इससे यथेष्ट वायु अदर खींचनेमें उसे सुविधा होती है और वह नीरोग रहती है। पेटका घेरा भी सामनेसे दीख पडता है। पिछले पैरोकी तरह अगले पैर भी दूर-दूर हो।

पीठपरसे देखना

पीठपरसे नीचे देखनेसे भी पेटका आकार और पुट्ठे दीख पडते हैं। पुट्ठा एकदम उतारदार न हो। यदि दुहती गाय खरीदी जाय तो बिना अन्तर दिये तीन-चार बार स्वय दूध निकालकर देख लेना चाहिये। दूध निकालते समय पात्रम धार गिरनेका जो शब्द होता है, उसके द्वारा भी गाय दुधार है या नहीं, इसकी परीक्षा होती है। थनम यदि दूध अधिक होगा तो पात्रमे धारक गिरते समय जोरसे शब्द होगा। यदि दूध अधिक न हुआ तो धार पतली होगी और शब्द भी धीमा ही होगा। पाश्चात्य पद्धतिसे गौकी परीक्षा करनेकी एक और रीति है। जैसे—

१-पीठपरसे देखनेपर गायका शरीर गलेसे पीछेकी ओर दोना तरफ चौडा होता चला गया हो तो यह लक्षण अच्छा है। ऐसी गायके उदर तथा पाकाशयका पूर्ण विकास हुआ समझा जाता है। वह भरपूर खा सकती है और पचा भी सकती है।

२-बगलसे देखनेपर गायके गलेसे पूँछतकका भाग चढता और गलकबलसे थनतकका भाग उतरता हुआ चला गया हो। ऐसी गायका थन बडा होता है और उसमे दूध भी भरपूर होता है। उसी प्रकार गर्भाशयमें गर्भके विकासके लिये पर्याप्त स्थान मिल जाता है और उससे बच्चा बलिष्ठ होता है।

३-सामनेसे देखनेपर दोनो तरफ गौका शरीर ऊपरसे नीचेकी ओर चौडा होता हुआ दीख पडे। इससे गौका फुफ्फुस और हृदय पूर्ण विकसित तथा बलिष्ठ हुआ समझना चाहिये।

साराश यह कि ऊपरसे, बगलसे अथवा सामनेसे किसी ओरसे भी देखनेपर गौका शरीर सब ओरसे तिहरे पच्चर (Triple Wedge) की तरह (एक ओरसे दूसरी ओर बारीक होता हुआ) दिखायी देना चाहिये। उसका यह आकार जितना पूर्ण होगा, उतनी ही वह अधिक दुधार होगी।

(गो-ज्ञान-कोश)

गोबरसे प्रार्थना

अग्रमग्र चरन्तीनामोषधीना रस वने। तासामृषभपत्नीना पवित्र कायशोधनम्।
यन्मे रोगाश्च शोकाश्च पाप मे हर गोमय॥

वनमें अनेको ओषधियोंके रसको चरनेवाली वृषभपत्नी (गाया)के पवित्र और कायाकी शुद्धि करनेवाले हे गोबर! तू मेरे रोग शोक और पापाका नाश कर।

साँड़ोके लक्षण और उनकी परिचर्या

चुनाव—गोशालाके लिये श्रेष्ठ, मूल्यवान् एव सर्वगुण-सम्पन्न साँडके चुनावमे अत्यन्त सावधानी और सतर्कता रखनी चाहिये। साँड ही शालाका प्राण एव भविष्य है। साँडपर ही गायोके दूध देनेकी शक्ति और आगे आनेवाली नस्ल निर्भर रहती है। एक ही साँड अनेक बछडे और बछियाका पिता बनता है और इस दृष्टिसे वही शालाका प्रधान पशु है। साधारण गायकी नस्ल भी बढिया साँडके सयोगसे सुधारी जा सकती है।

शालामे एक उत्तम साँड अवश्य होना चाहिये। साँडके न होनेसे गायोका सोया मारा जाता है। बार-बार गरम होनेपर भी गाय यदि बर्धायी न जाय, तो वह निर्बल या मासल हो जायगी और उसे फिरसे गरम होनेमे समय भी लगेगा। शालामे साँडके न होनेसे गाय और पालक दोनोकी हानि हागी। पालकके पास केवल एक-दो गाये हो, तो भी किसी अच्छी गोशालाके सुपालित साँडसे ही उनको हरी करना चाहिये। इधर-उधर घूमते हुए, अज्ञात जाति एव कुलवाले, रोगी, बुड्ढे और रक्षकरहित साँडसे अपनी गायको कदापि हरी न कराये। साँडका लालन-पालन अन्य सब पशुओसे बढकर होना चाहिये। उत्तम साँडसे गाभिन होनेपर गायमे दूध देनेकी शक्ति बढ जायगी।

यदि साँड बढिया न हो तो बढिया नस्लकी दुधार गाय भी हर-ब्याँतमे कम दूध देने लगेगी और उसके बछडे-बछिया उससे निर्बल हागे।

साधारणतया यदि काफी दूध चाहिये और साथ ही अच्छे बैल भी चाहिये तो सर्वाङ्गी नस्लोके साँड तथा स्थानीय नस्लकी गाये सबसे ज्यादा उपयोगी होगी।

अपनी आवश्यकता तथा प्रान्तकी जलवायु और नस्लका ख्याल करके उत्कृष्ट-जातीय गुणवाले देशी साँडको दूर-देशसे भी मँगाकर नस्ल सुधारी जा सकती है। स्थानीय पशु बढिया हो तो उनमेसे ही श्रेष्ठ लक्षणोवाले, ज्ञात-वशज, और यदि सम्भव हा तो ज्ञात-शक्तिवाले साँडको छाँटकर उसस गो-वशको सुधारना चाहिये। हर हालतमे साँडको गायसे बलवान्, ऊँचे आकारका और भारी हाना चाहिये। आगेके लिये गो-जन्म-पत्र जरूर बना लेना चाहिये।

श्रेष्ठ साँड़के लक्षण—

(१) ज्ञात-वशज—साँड दुधार गायो तथा उत्तम साँडोंके कुलका हो। जिस साँडकी माता, दादी, नानी भी दुधार गाये रही हो और जिसके पिता, दादा एव नाना सद्गुणी साँड सिद्ध हो चुके हा, वही साँड सर्वश्रेष्ठ होता है। कम-से-कम साँडके माता-पिताको तो सद्गुणी होना ही चाहिये।

ऐसे बढिया साँडसे गाभिन हुई गाय अधिक दूध देगी और उसकी बछिया दुधार गाय एव बछडा साँड बनेगा।

जहाँतक सम्भव हो, साँडके माता-पिताके गुण, दोष, जाति और शक्तिका पता लगाकर शालाके जन्मपत्रमे उनके पूरे इतिहासको लिख ले। इससे आगामी नस्लको सुधारने तथा किसी विशेष शक्तिको बढानेमे सहायता मिलेगी।

(२) शुद्ध नस्ल—साँड अपनी जातिके शुद्ध गुण एव कुलवाला होना चाहिये। विभिन्न जातिके मिलानसे पैदा सकर नस्लवाले पशुके शरीरमे नाना प्रकारके गुणोवाले क्रोमोसोम्स (Chromosomes) का समावेश हो जाता है। गर्भाधानके समय उसमें जो गुण प्रभावशाली होगे, वे ही उसकी सततिमें आ जायँगे। किंतु असली नस्लवाले साँडमें अधिकतर जाति-विशेषके ही गुण जाग्रत् और प्रभावशाली रहेगे। अत अधिकाशमे वह उन्हीं गुणोका सचार अपनी सततिमे करेगा। इसलिये वह उत्तम और उपयोगी है।

(३) आयु—साँडकी उम्र ३ वर्षसे कम और ९-१० वर्षसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये। पूर्ण युवा साँडके चार पक्के दाँत होते हैं। कच्ची उमरवाले साँडको सावधानीसे पालना और गायके सम्पर्कसे बचाना चाहिये, अन्यथा बढिया होनेवाला साँड भी क्षीण हो जायगा।

(४) अवधि—४ वर्षसे अधिक समयतक एक साँडका उसी गोशालामे रहना अच्छा नहीं है। चार वर्षके भीतर इस साँडसे उत्पन्न बछिया तीन वर्षकी होकर गर्भ धारण करने योग्य हो जायगी। अत इसी साँडके सयोगसे उसे बचाना चाहिये। साधारण गो-पालकके लिये हर-पीढीमे नये खूनका सचार ही वाञ्छनीय रहेगा।

(५) सयोग—एक साँडसे सप्ताहमे एक बार एक

गायसे अधिक गाये हरी नहीं करानी चाहिये, नहीं तो वह कमजोर हो जायगा। रोगी गायके सम्पर्कसे भी उसे बचाना चाहिये। शालाकी हर ४०-५० गायोंके पीछे एक साँडका होना जरूरी है।

(६) परिचर्या—गायसे सयोग करानेक बाद साँडको पौष्टिक चारा, दाना तथा गुड जरूर खिलाना चाहिये। ऋतुके अनुसार साँडको स्नान कराना और उसपर ब्रुश फेरना चाहिये। गर्मीके मौसमम उसे रोज ही नदी, तालाब या शालाम नहलाना चाहिये। जाडोमे कभी-कभी धूपमे नहलाकर पोछ देना ठीक रहता है। उसका सारा शरीर खूब सुखा देना चाहिये। साँडको सर्वदा स्वच्छ एव नीरोग रखना चाहिये, उसके शरीरपर किलनी, बग्घी आदि जन्तु कतई न रहने पाये।

(७) व्यवहार—साँडको छेडना तथा चिढाना नही चाहिये, वह स्वतन्त्रजीवी है और स्वच्छन्दताको पसद करता है। अपनी गोशालासे बाहर जानेपर वह स्वत ही लौट आयेगा।

(८) परिश्रम—साँडको हमेशा बद रखकर ज्यादा भारी, मोटा और आलसी नहीं बनाना चाहिये। उसके लिये भी घूमना-फिरना और स्वतन्त्र होकर घास चरना बहुत जरूरी है।

शरीरके अवयव

रग—जातिके अनुसार काला, लाल चितकबरा या सफेद और सुन्दर हो।

चर्म—पतला, चिकना और रेशम-से नरम वालो-वाला हो।

कद—ऊँचा, लबा सुगठित और भारी हो।

सिर—लबा माथा चौडा और गर्दन भारी हो।

झूल—मोटी एव भारी झालरदार सींग छोटे और गुट्ठल तथा कान बडे हो।

दृष्टि—तेज आँख लाल रगकी और दाँत तीखे तथा मजबूत हो।

ठाटी—ऊँची भारी एव चलते समय हिलनवाली तथा सीना चौडा हो।

कंधे—ऊँचे पुट्ठे चौड और पीठ सीधी हो।

पूँछ—सीधी, मोटी, घनी-चौंरीदार और जमीनको छूती हुई लबी हो।

पैर—गठीले तथा मजबूत, नाभि लबी और मुतान लटकता हुआ किंतु ढीला न हो।

रँभाना—मेघके समान गम्भीर और स्वभाव शान्त किंतु स्वतन्त्र हो। वह छोटे बछडे-बछियोसे चिढनेवाला न हो।

शेष अवयव उत्तम गायके समान हो।

साँडोकी जाति-व्याख्या

१-श्रेष्ठ—वह है, जिसके सींगोके आगेका भाग और नेत्र तो लाल रगके हो, किंतु शेष शरीर सफेद रगका, खुर चिकने तथा कोमल, मस्तक चौडा तथा गर्दन ऊँची हो। रोकनेपर वह दाहिनी ओर घूम जानेवाला हो।

२-विचित्र-सिद्धिदायक—जो ध्वजा पताका एव शक्तिके चिह्नोवाला हो।

३-भाग्यवर्धक—जिसमे कमलकी आकृतिके चिह्न या धब्बे हो।

४-नील-वृषभ—जिसकी टाँगे, मुँह और पूँछ सफेद रगके, किंतु शेष शरीर लाखके रगका हो और आगेका धड उभरा हुआ तथा पूँछ मोटी एव जमीनको छूती हुई हो। ऐसे लक्षणावाले साँडको छोडनेसे पितरोको विशेष तृप्ति होती है, ऐसा माना जाता है।

५-नन्दी-मुख—जिसका कानोतक मुँह सफेद रगका हो और शेष शरीर लाल रगका हो।

६-समुद्रक—जिसकी केवल पीठ या पेट ही सफेद रगका हो और शेष शरीर काले, पीले या लाल रगका हो।

७-धन्य—जो चितकबरा हो।

८-करट—जिसके दो या सभी पैर सफेद हो और शेष शरीर पीले रगका हो।

९-निकृष्ट—वह है, जिसके तालु, ओठ एव मुँह काले रगके हो, सींग और खुर खुरदरे हो। कद नाटा और ठिगना हो रग गीधका-सा भूरा या कौएका-सा काला हो। आँख कानी भडी या चचल हो। जो रोगी निर्बल या बूढा हो जिसके पैर बराबर न पडते हो, जो अज्ञात जाति और वशका हो तथा सरक्षक न हो ऐसे दोषयुक्त साँडको गोशालाके पास भी नहीं आने देना चाहिये।

पाश्चात्त्य-देशीय गाये

ससार भरके सभी देश-देशान्तरामे दूधके लिये ही गाय पाली जाती है, जबकि भारतमे गोसेवा दूधके साथ-साथ भावनात्मक भी है। भारतीय गाये मनुष्यकी नित्य सहचरी हैं। प्रारम्भसे ही इन गायोको मनुष्यका स्नेह एव प्रेम प्राप्त हुआ। जबकि अन्य देशोकी गायोका इतिहास यह है कि वे बहुत समयतक जगलोमे हिंसक पशुके रूपमे घूमते रहनेके बाद मनुष्योके घरमे आकर पाली गयीं। भारतीय गायोका विशिष्ट लक्षण है उनका गलकबल और पीठपर ककुद्। प्राणितत्त्वविदोके मतसे ककुद्युक्त गाय जेबू (Zebu) श्रेणीके अन्तर्गत है। भारतीय जेबू गाय अफगानिस्तान, फारस तथा अफ्रीकाके किसी-किसी भागमे पायी जाती है। इसके अतिरिक्त और कहीं भी ये गायें नहीं हैं।

यदि भारत तथा फारस अफगानिस्तान और अफ्रीकाके कुछ स्थानोको छोडकर और कहीं गाये नहीं पायी जातीं तो इग्लैंड, अमेरिका आदिकी २५-३० सेरतक दूध देनेवाली गाये क्या है? अवश्य ही वे असली गाये नही हैं, वर गायके समान दूध देनेवाले पशु-विशेष है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है उनके गलकबलका न होना और ककुद्का भी नहीके बराबर-सा ही होना। उनकी आकृति गायकी आकृतिसे मिलती है इसीमे वहाँकी काउ (Cow)को भ्रमसे भारतीय गायके तुल्य ही समझते है। आकृतिकी सादृश्यतासे जातिकी एकता सिद्ध नहीं होती। कुछ जातिके हिरन भैस गाय और बैलामे इतनी सादृश्यता रहती है कि एक जातिको देखकर दूसरी जातिका भ्रम होता है। इलाड हिरन (Eland), नू (Gnu) कुडू (Koondo) गायके साथ एव चिलिघम कैटिल् (Chillingham Cattle) गायके साथ बहुत मिलते-जुलते है। स्काट्लैडके हाईलैंड कैटिल् (Highland Cattle) और भैंसकी बाहरी आकृति प्राय एक समान है। एनो (Anoa) नामक हिरन (Antelope) और भैंसमे बहुत थोडा अन्तर है। जावा, बालाद्वीप, मलक्का एव बोर्नियो टापू आदिमे वेंटेग नामक एक पशु है जो गायसे विशेष मिलता है। यह वेंटेग बर्मामे भी है पर वहाँ इसे सिन (Tsiue) कहते हैं। अपने भारतकी नील गायको ही देखिये वह गायसे कितनी मिलती-जुलती है पर गाय नहीं है, एक प्रकारका हिरन है। अत यह स्पष्ट है कि अन्य देशोकी गाये असली गोजातिकी नहीं हैं।

पाश्चात्त्य देशोके दूध देनेवाले इन पशुओको गाय न कहकर 'गवय' कह सकते हैं क्योकि इनकी आकृति बहुत कुछ गायसे मिलती है, 'गोसदृश गवय'। वहाँकी गायोका पूर्वज यूरास् (जर्मनमे यूरच्) नामक जगली और हिंसक पशु है। यह सिह, बाघ, गैडा और भालूकी भाँति जगलोमे घूमता था। यह सात फुटसे अधिक ऊँचा होता था एव इसके सींग तीन फुट लबे होते थे। जूलियस सीजरने इसका उल्लेख किया है और इसे हाथीसे कुछ छोटा बताया है। इसके शरीरके रोएँ काले अथवा भूरे थे। अब भी इग्लैंडके किसी-किसी रक्षित बागकी जगली गाये इसी आकृतिके काले बच्चे उत्पन्न करती हैं। इस यूरास् पशुको लोग जगलोसे लाकर पालने लगे और वहाँके विज्ञानविद् एव चिरअध्यवसायी अधिवासियोके विशेष यत्न और चेष्टासे यह पशु ही धीरे-धीरे ऐसे दूध देनेवाले पशुके रूपमे परिणत हो गया। इस सिद्धान्तकी कुछ पुष्टि इस बातसे भी होती है कि विलायती गाये भारतीय गायोकी तरह सीधी नहीं होतीं। भूगर्भखननसे इस बातका प्रमाण मिलता है कि यूरास्-जातीय पशु ही योरोपका गृहपालित पशु हुआ। इग्लैंडके वारहिल, न्यूस्टेड आदि रोमन स्टेशनामे ऐसी गायोके ककाल दिखायी देते है। इन सब बातोसे पता चलता है कि विलायती गाय जगली हिंस्र एव मनुष्याके भीषण शत्रुरूप पशुसे उत्पन्न होकर केवल मनुष्याके यत्न और चेष्टासे वर्तमान पालतू और दूध देनेवाला पशु बन गया है। इसके लिये पाश्चात्त्य मनुष्यका अध्यवसाय और यत्न अवश्य ही अभिनन्दनीय है। इसीका फल है कि ये गवय महिष बाइसन चमरी नीलगाय गौर वेंटेग इलाड नू, कुडू और यूरोपीय बोस्टोरस-जातीय पशु दूध देते तथा कृषिकार्यमे गाय-बैलकी भाँति व्यवहृत होते हैं।

विदेशी गाय ओर भारतीय गायमे अन्तर

विदेशी गोजाति और भारतीय गायकी आकृति तथा स्वभावमे भिन्नता होती है। सक्षेपमे कुछ अन्तर इस प्रकार हैं—

विदेशी गाय	भारतीय गाय
१-पीठ सीधी होती है।	१-भारतीय गायकी पीठ कुछ गोलाकार होती है तथा पीठपर कधेका हिस्सा गोलाई लिये होता है, जिसे ककुद्, कुहान या ठाटी कहते हैं, बैला तथा साँडामें तो यह विशेष रूपसे बडा होता है।
२-लबाई तथा आकार भी बडा होता है।	२-दोनों चीजे साधारण होती हैं।
३-सींग छोटे होते है।	३-सींग प्राय बडे होते हैं।
४-ऐन बडा तथा घुटनातक होता है।	४-ऐन साधारण होता है।
५-दूध अधिक देती हैं।	५-दूध साधारण देती हैं।
६-बैल परिश्रमी नहीं होते।	६-बैल परिश्रमी और उपयोगी होते हैं।
७-बहुत सीधी नहीं होतीं।	७-प्राय सीधी होती हैं।
८-रँभानेका स्वर दबा हुआ होता है।	८-रँभानेका स्वर ऊँचा होता है।

आगे विदेशोकी गाजातिका सक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है—

(१) इग्लैडकी गोजाति

इग्लेड तथा वहाँकि द्वीपसमूहोमे मुख्यरूपसे (१) शाटहार्न (छोटे सींगवाली) (२) लिकनशायर (छोटे सींगकी लाल गाय) (३) हेराफोर्ट शायर (सफेद मुँह और शरीर लाल) (४) नार्थ डिवन (उज्ज्वल शरीरवाली), (५) लोग हार्न (लबे सींगवाली) (६) रेड पोल्ड (लाल रगकी शृगहीना) (७) डरहम (छोटे सींगवाली) (८) वेल्स (काली गाय), (९) एवार्डिन एगास (१०) आयरशायर (११) गैलवे (१२) करी (१३) जर्सी तथा गर्नसी आदि गाजातियाँ पायी जाती हैं। इनम जर्सी गर्नसा आयरशायर, शाटहार्न तथा केरी आदि नस्ले विशेष दुधार हाती हैं। इग्लिश चनल द्वीपाम जर्सी नामका एक द्वीप है। वहाँकी गाये जर्सी नामसे विख्यात हैं। इस जातिकी गाये दूधके लिये विश्वम प्रसिद्ध हैं और इनमे मक्खन भी अधिक निकलता है। ये प्राय २-३ वर्षकी उम्रमे ही बच्चा दे देती हैं। इनका रग प्राय शुभ्र ओर धूसर होता है।
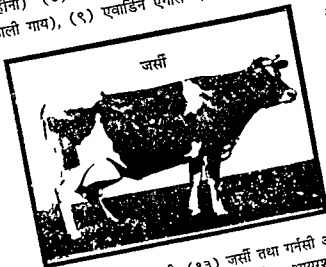
जर्सी

समय-समयपर भारतवर्षसे नाना जातिकी गाये इग्लैंड जाती रही हैं। उसको वे लोग ईस्ट इण्डियन गाय कहते हैं।

(२) हालेडकी गाये

गुजरातकी भाँति हालैंड समुद्रके किनारे-किनारे बसा है। यह कृषि-प्रधान देश है। यहाँ गाय बहुतायतसे पाली जाती हैं। यहाँकी गायाके बराबर पृथ्वीकी किसी जातिकी गाय दूध नहीं देती। यहाँकी गाये बडे आकारकी शान्त, धीर और सुन्दर होती हैं। इस देशम मुख्यत २ श्रेणीकी गाये हैं—
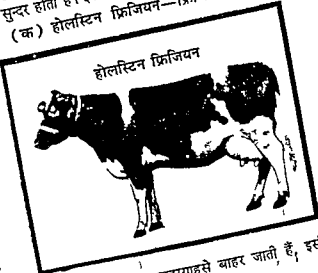
(क) होलस्टिन फ्रिजियन—फ्रिजिया प्रदेशकी ये

गाये जर्मनीके होलस्टिन बदरगाहसे बाहर जाती हैं, इसीसे

अमेरिकावाले इन्हे होलस्टिन फ्रिजियन कहते हैं। फ्रिजियाका अधिकाश भाग नीचा होनेके कारण यहाँ घास खूब होती है। यहाँके गाय-बैल घास खाकर खूब लबे-चौडे तथा बलिष्ठ हो जाते हैं। यहाँके गो-स्वामी गो-पालनके सिवा और कोई काम नहीं करते। इसीसे उनका पूरा ध्यान गायोपर रहता है। बहुतसे इन्हे इग्लैंडकी छोटे सींगवाली गायोका आदि बीज मानते हैं। ये दूध खूब देती हैं।

(ख) लेकेन फील्ड या डचबेल्ट—इस जातिकी गायोका आदि निवासस्थान हालैंड देश है। ये इग्लैंडकी गैलवे गायकी भाँति होती हैं, पर इनके सींग नहीं होते। यूरोपम इन्हे डचबेल्ट और हालैंडमे लेकेन फील्ड कहते हैं, जिसका अर्थ है वस्त्रावृत। इनका अगला-पिछला भाग घोर काला और बीचका खूब सफेद होता है जिससे ऐसा मालूम पडता है कि एक सफेद कबल बीचम लपेट दिया गया है इसीसे इसका नाम लेकेन फील्ड पडा। ये हालस्टिन गायोसे छोटी होती हैं। गाय केवल दूधके लिये पाली जाती हैं। इग्लैंड मेक्सिको कनाडा तथा अमेरिकामे भी इस जातिकी गाय हैं, किंतु इनकी सख्या कम है।

बेल्जियमकी गाये—इस देशकी गाये अनेक अशोमे हालैंडकी गायाकी भाँति होती हैं।

स्विटजरलैडकी गाये—स्विटजरलैंडमे दूधका खूब विस्तृत व्यवसाय होता है। इस देशको पृथ्वीका 'गो-गृह' कहते है। यह राज्य ही एक गोचरभूमि है। सन् १९०१ मे यहाँ केवल १ ३४० गाये थी किंतु १९०६ मे १४९९ ८०४ गाये हो गयीं। गर्मीके दिनोमे ये गाये पहाडीपर घास चरती हैं और जाडेमे घर रहती है। इनमे एक विशेष जातिकी गाये है जो अधिक दूध देती है। खूब मोटी होनेसे ये नाटी मालूम पडती है। इनका थन सुगठित होता है और दूधकी शिराएँ स्पष्ट दिखायी देती है। ये बडी आसानीसे पहाडपर चढ-उतर सकती हैं। देखनेमे भी ये गाये सुन्दर दीखती हैं।

डेन्मार्ककी गाये—यहाँ आल्डेनवर्ग तथा रेड डेनिस नामक दो जातियोंका उत्कृष्ट गो-परिवार है। एक समय यह समस्त यूरोपका गोगृह था और यहाँसे खोवा मक्खन पनीर और दूध यूरोपमे जाता था। आज भी यह देश दूध-मक्खनके लिये प्रसिद्ध है।

नार्वे और स्वीडनकी गाये—डेन्मार्ककी भाँति इन दोनो देशोम भी अधिक दूध देनेवाली गाये होती हैं। ये और डेन्मार्ककी गाये प्राय एक ही जातिकी हैं। इस देशका अधिक भूभाग शीतकालमे बर्फसे ढका रहनेके कारण यहाँ घास कम होती है, किंतु गो-पालकोके सुन्दर प्रबन्धके कारण घासका जरा भी अपव्यय नहीं होता, इसीसे विशेष कमी नहीं पडने पाती। यहाँवाले गायोकी सेवा खूब करते है। गोशालाओको खूब साफ-सुथरा रखते हैं और गायोको अलग-अलग बडे घरोमे रखते हैं। एक स्त्री बीस-पचीस गायोकी सेवा करती है।

इटलीकी गाये—इस देशमे अच्छी गाये नहीं हैं और न गो-जातिकी उन्नतिके लिये कोई चेष्टा ही होती है। यहाँकी गायोंके सींग बडे होते हैं। ये दूध देनेवाली नहीं होतीं। कहीं-कहीं अच्छी गाये भी पायी जाती हैं।

फ्रासकी गाये—फ्रासके उत्तर भागमे राइन नदीके किनारेके सिवा सब जगह नार्मन गो-जाति दिखायी पडती है। इनकी देहका रग लाल और जहाँ-तहाँ सफेद दाग होते हैं। इनके छोटे सींग सिरसे ऊपरकी ओर उठकर झुक जाते हैं और उनका अगला भाग काला होता है। पैर पतले और सुन्दर होते हैं। नार्मंडीमे गोचर-भूमि अधिक है। वहाँकी गाये स्थूलकाय एव अधिक दूध देनेवाली होती हैं। इग्लिश चैनलकी गाय उन्हींकी एक जातिमेस हैं।

अमेरिकाकी गाये—अमेरिकाकी कोई अपनी गो-जाति नहीं है। उत्तर अमेरिकामे यूरोपसे तथा दक्षिण अमेरिकाम भारतसे गाये आयी है। वर्तमान समयमे इग्लैंड तथा यूरोपकी प्राय सभी जातियोकी गाये अमेरिकामे हैं। इस देशके धनी गोपालक प्रदर्शनीमे पुरस्कृत उत्तम गायो तथा साँडोको बहुत बडी रकम देकर खरीद लेते हैं और इस प्रकार अपने देशके गो-समुदाय तथा दुग्ध-व्यवसायकी उन्नति करते है। यहाँ गोचारणके लिये बहुत बडे-बडे मैदान हैं। यहाँकी गाये अल्पाहारी तथा अधिक दूध देनेवाली होती है।

कनाडाकी गाये—यहाँ घास बहुत होती है, इसलिये गायोके पालनेमे सुविधा है। इस द्वीपमे बहुत-सी गाये हैं।

प्रतिवर्ष यहाँसे स्थूलकाय बैल विभिन्न देशोको जाते हैं। यहाँकी गाय इग्लैंडकी गो-जातिसे उत्पन्न हुई है। जर्सी-गर्नसी आदि गायोका यहाँ विशेष आदर है।

एरीजोनाकी गाय—सयुक्तराज्य अमेरिकाके दक्षिण-पश्चिम भागमे स्थित मेक्सिको और कैलीफार्निया एरीजोना नामक प्रदेशमे उत्तम गोखाद्य तथा गोचारणके लिय बडे-बडे अनेक मैदान हैं।

अर्जेन्टाइनाकी गायें—यहाँ गायोके खाने लायक घास तथा गोचरभूमि बहुत अधिक है। थाडे ही दिनामे यहाँ गो-जातिकी अच्छी उन्नति हुई है। पहले यहाँ स्पेन देशकी बडे सींगावाली मामूली गाय थीं किंतु क्रमश डरहम छोटे सींगावाली और हेरीफोर्ड जातिकी गाय आ गयी। अब तो होलस्टिन फ्रीजियन, जर्सी तथा अन्य जातिकी गाये लाकर इस देशम मक्खन ओर पनीरका बडा व्यवसाय चल रहा है।

आस्ट्रेलियाकी गाय—गत शताब्दीके आरम्भमे यहाँ एक भी गाय नहीं थी किंतु सन् १९०६ मे ८,१७,८०० गाये हो गयीं। भिन्न-भिन्न जातिकी श्रेष्ठ गाये ऊँचे दामापर लाकर इतनी उन्नति की गयी है। डचबल्ट गोजातिके साथ जर्सी ओर आयरशायर गोजातिके सम्मिश्रणसे अत्यन्त दुग्धवती सकर जातिकी गाये यहाँ उत्पन्न की गयी है। यहाँ गोचर-भूमि यथेष्ट है। आजकल यहाँ जर्सी, आयरशायर, डिवनशायर ससेक्स, एवार्डिन एगास आदि गाये पायी जाती हैं।

न्यूजीलैंडकी गाय—यहाँकी नदियो और झरनोमे सदा पानी भरा रहनेसे घास सदा प्रचुर मात्राम रहती है। यहाँ बहुत-सी स्थायी गोचर-भूमि है। यहाँ चारेका कभी अभाव नहीं होता। सन् १९०६ मे यहाँ १८ ५१ ७५३ गाय थीं जिनमे ५ ९३,९२७ गाये दूध देनेवाली थीं। यहाँ दूध सूखा दूध तथा पनीरके व्यवसायकी बडी उन्नति हा रही है।

अफ्रीकाकी गो-जाति

(क) मिस्रकी गाय—भारतीय गायाकी भाँति यहाँकी गायाके ककुद् तथा गलकबल होता है। वर्षाकालमें ये घास खाती हैं और जब अधिक वर्षासे घासके स्थान जलमे डूब जाते हैं तब सूखी घास खाकर जीती हैं। अमृतमहाल गायाके बिकनेके समय इजिप्टके खदीव और पाशा मद्राससे बहुत-सी गाये खरीदकर ले गये थे। इस देशमे गो-जातिकी उन्नतिके लिये कोई विशेष चेष्टा नहीं की जाती।

(ख) दक्षिण अफ्रीकाकी गाये—दक्षिण अफ्रीका या केप कालोनी प्रदेशमे हालैंडदशीय और इग्लिश चैनलकी जर्सी जातिकी दुधार गाय हैं। ये गाय बोस्टोरस जातिकी हैं, किंतु केप कालोनी तथा मेडागास्कर द्वीपोमे जेबू श्रेणीकी गायें होती हैं। कुछ लोगोके मतसे ये गाये अफ्रीका-प्रवासी भारतीयोद्वारा लायी गयी है।

(ग) कविरैडोकी गाये—यह अफ्रीकाके पूर्व भागमे है। यहाँके लोग गोपालक हैं। यहाँ साँडोकी दौड होती है। जिसके पास दौडनेवाला साँड होता है, वह देशका प्रधान व्यक्ति समझा जाता है। एक दौडनेवाले साँडका मूल्य एक हजार गायाके मूल्यके बराबर होता है।

(घ) आइलैंड-गोजाति—अफ्रीकाके जगलोमे एक प्रकारकी जगली गाये या मृग होते हैं। इग्लेडमे इन्हे आइलैंड गाय या विदेशी गाय कहते हैं। यद्यपि ये गाय कहलाती है, किंतु वास्तवम गाय नहीं वर गो-सदृश मृग हैं। जहाँ गर्मी-सर्दी अधिक नहा पडती वहीं ये रहती हैं। ये कृष्णसार जातिकी हैं और उन्हींकी भाँति होती भी हैं। ये अधिक दूध नहीं देतीं।

चामरी गो (Yak)

हिमालय पर्वतके उत्तरी भागाम चामरी जातिकी गाये होती हैं। ये जगली और पालतू दोना हाती हैं। इनका शरीर घने और लबे रोआसे ढका रहता है। बर्फीले प्रदेशम रहनेके कारण ही प्रकृतिने शायद इनके शरीरको बालास ढक दिया है। इनकी गर्दन और पीठ बराबर मुँह नीचे और पैर छोटे-छोटे होते है। सींग पीठकी ओर झुके हुए होते हैं।

जगली गायाका रग काला तथा पालतू गायाका काला एव सफद मिला हुआ हाता है। सफेद रगकी चामरी गायकी पूँछका चमर बनता है। पालतू गायाके सींग नहीं हाते।

श्राद्धका फल

जिस व्यक्तिके पास श्राद्धके लिय कुछ भी न हो वह यदि पितराका ध्यान करके गोमाताको श्रद्धापूर्वक घास खिला दे तो उसको श्राद्धका फल मिल जाता है—'तृणानि वा गवे दद्यात्।' (निर्णयसिंधु)

गोपालन

चरती गायको रोकनेसे नरक-दर्शन

प्राचीन कालकी बात है। राजा जनकने ज्यो ही योगबलसे शरीरका त्याग किया त्यो ही एक सुन्दर सजा हुआ विमान आ गया और राजा दिव्य-देहधारी सेवकोके साथ उसपर चढकर चले। विमान यमराजकी सयमनीपुरीके निकटवर्ती मार्गसे जा रहा था। ज्यो ही विमान वहाँसे आगे बढने लगा त्यो ही बडे ऊँचे स्वरसे राजाको हजारो मुखोसे निकली हुई करुण-ध्वनि सुनायी पडी—'पुण्यात्मा राजन्! आप यहाँसे जाइये नहीं, आपके शरीरको छूकर आनेवाली वायुका स्पर्श पाकर हम यातनाओसे पीडित नरकके प्राणियाको बडा ही सुख मिल रहा है।' धार्मिक और दयालु राजाने दुखी जीवाकी करुण पुकार सुनकर दयार्द्र होकर निश्चय किया कि 'जब मेरे यहाँ रहनेसे इन्हे सुख मिलता है तो बस मैं यहीं रहूँगा। मेरे लिये यही सुन्दर स्वर्ग है।' राजा वहीं ठहर गये। तब यमराजने उनसे कहा—'यह स्थान तो दुष्ट हत्यारे पापियाके लिये है। हिंसक, दूसरोपर कलक लगानेवाले, लुटेरे पतिपरायणा पत्नीका त्याग करनेवाले, मित्राको धोखा देनेवाले दम्भी, द्वेष और उपहास करके मन-वाणी-शरीरसे कभी भगवान्का स्मरण न करनेवाले जीव यहाँ आते हैं और उन्हे नरकोमे डालकर मैं भयकर यातना दिया करता हूँ। तुम तो पुण्यात्मा हा यहाँसे अपने प्राप्य दिव्यलोकमे जाओ।' जनकने कहा—'मेरे शरीरसे स्पर्श की हुई वायु इन्हे सुख पहुँचा रही है तब मैं कैसे जाऊँ? आप इन्ह इस दु खसे मुक्त कर दे तो मैं भी सुखपूर्वक स्वर्गमे चला जाऊँगा।'

यमराजने [पापियोकी आर इशारा करके] कहा—'ये कैसे मुक्त हा सकते है? इन्होने बडे-बडे पाप किये हैं। इस पापीने अपनेपर विश्वास करनेवाली मित्रपत्नीपर बलात्कार किया था इसलिये इसको मैंने लाहशकु नामक नरकम डालकर दस हजार वर्षोंतक पकाया है। अब इसे पहले सूअरकी और फिर मनुष्यकी योनि प्राप्त होगी और वहाँ यह नपुसक होगा। यह दूसरा बलपूर्वक व्यभिचारमे प्रवृत्त था। सौ वर्षोंतक रौरवनरकम पीडा भोगेगा। इस तीसरेने पराया धन चुराकर भोगा था, इसलिये दोनो हाथ काटकर इसे पूय-शोणित नामक नरकमे डाला जायगा। इस प्रकार य सभी पापी नरकके अधिकारी हैं। तुम यदि इन्हे छुडाना चाहते हो तो अपना पुण्य अर्पण करो। एक दिन प्रात काल शुद्ध मनसे तुमने मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरघुनाथजीका ध्यान किया था और अकस्मात् रामनामका उच्चारण किया था बस वही पुण्य इन्ह दे दो। उससे इनका उद्धार हो जायगा।'

राजाने तुरत अपने जीवनभरका पुण्य दे दिया और इसके प्रभावसे नरकके सारे प्राणी नरक-यन्त्रणासे तत्काल छूट गये तथा दयाके समुद्र महाराज जनकका गुण गाते हुए दिव्य लोकको चले गये।

तब राजाने धर्मराजसे पूछा कि 'जब धार्मिक पुरुषोका यहाँ आना ही नहीं होता तब फिर मुझे यहाँ क्यों लाया गया।' इसपर धर्मराजने कहा—'राजन्! तुम्हारा जीवन ता पुण्यासे भरा है, पर एक दिन तुमने छोटा-सा पाप किया था—

एकदा तु चरन्तीं गा वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्॥

तुमने चरती हुई गायको रोक दिया था। उसी पापके कारण तुम्हे नरकका दरवाजा देखना पडा। अब तुम उस पापसे मुक्त हो गये और इस पुण्यदानसे तुम्हारा पुण्य और भी बढ गया। तुम यदि इस मार्गसे न आते तो इन बेचाराका यन्त्रणामय नरकसे कैसे उद्धार हाता? तुम-जैसे दूसराके दु खसे दुखी हानेवाले दया-धाम महात्मा दुखी प्राणियोका दु ख हरनेमे ही लगे रहते है। भगवान् कृपासागर हैं। पापका फल भुगतानेके बहाने इन दुखी जीवाका दु ख दूर करनेके लिये ही इस सयमनीके मार्गसे उन्हाने तुमका यहाँ भेज दिया है।' तदनन्तर राजा धर्मराजका प्रणाम करके परम धामका चले गये।

(पद्म०, पाताल० अध्याय १८-१९)

गो-संवर्धन एवं गोरक्षाके लिये क्या-क्या करना चाहिये?

(१) गोवध भारतका कलङ्क है, अतएव गोवध-बंदीका कानून सब जगह बन जाय, इसके लिये सतत और सबल प्रयत्न करना चाहिये। जबतक सर्वथा गोवध-बंदीका कानून सब राज्योंमे न बन जाय, तबतक शान्तिपूर्ण आन्दोलनको शिथिल न होने दिया जाय।

(२) बूढ़ी, बेकाम गायोंके लिये गोसदनोंकी स्थापना करना-कराना, जिनमे गायके अपनी मौत मरनेके समयतक उसके लिये आवश्यक चारे-पानी और चिकित्साकी सुव्यवस्था हो। नस्ल न बिगडे, इस दृष्टिसे वहाँ गायोको बरदाया न जाय।

(३) गायकी नस्ल-सुधारका प्रयत्न करना, जिससे गाये प्रचुर दूध देनेवाली हो, बैल मजबूत हो और मरे हुए गाय-बैलोकी अपेक्षा जीवित गाय-बैलोका मूल्य बढ जाय। इस प्रकार गायको आर्थिक स्वावलम्बी बनाना।

(४) केरल-कलकत्ता आदि शहरोंमें—जहाँ गायके रखनेके लिये पर्याप्त स्थान नहीं है जहाँ कृत्रिम और निर्दय उपायोसे दूध निकाला जाता है, बछडे मरने दिये जाते हैं, दूध सूखते ही गाय कसाईके हाथ बेच दी जाती है कानूनी प्रतिबन्ध होनेपर म्युनिसिपलिटीकी सीमासे बाहर ले जाकर गाय मार दी जाती है वहाँ जबतक ये बाते दूर न हो, तबतक गायोको बाहर कतई न जाने दिया जाय। स्थानकी सुविधा कराना तथा सरकारके द्वारा ऐसी व्यवस्था कराना, जिसमे गायोको दिये जानेवाले ये सब कष्ट दूर हो।

(५) गायको भरपेट चारा-दाना मिले—इसके लिये व्यवस्था करना। गोचरभूमि छोडना एव छुडवाना। नये-नये चारेकी खेती कराना।

(६) वर्तमान पिंजरापोल गोशालाओंका सुधार करना। और जो पिंजरापोल गोशाला दयाभावसे केवल बूढ़ी अपंग गायोके लिये खोले गये हैं उन्हे डेरी फार्म न बनाकर उसी कामके लिये रहने देना।

(७) गायोका गर्भाधान विशेष दूध देनेवाली गौके पुत्र बलवान् तथा श्रेष्ठ जातिके देशी साँडसे ही कराना। अच्छी नस्लके देशी साँडोका निर्माण तथा विस्तार करना बूढे साँडोसे तथा जर्सी साँडोसे गर्भाधानका काम कतई न लिया जाना।

(८) कसाईखानोंमें मारी हुई गायोके चमडे इत्यादिसे बनी हुई वस्तुएँ—जूते, बटुए, कमरपट्टे, बिस्तरबंद, घडीके फीते, चश्मेके घर, पेटियाँ, हैंडबेग आदिका व्यवहार न करनेकी शपथ करना-कराना।

(९) गोवधमे सहायक चमडे, मास आदिका व्यापार, जिससे गोवध होता है—बिलकुल न करना।

(१०) गोसदनोंमे, पिंजरापोलोंमे और सर्वसाधारणके द्वारा भी मरे हुए पशुओंके चमडे, हड्डी, सींग, केश आदिसे अर्थ उत्पन्न करना और उसे बूढ़ी अपंग गायोकी सेवामे लगाना।

(११) ट्रैक्टरोका व्यवहार न करके या कम-से-कम करके, हल जोतनेका काम केवल बैलोसे ही लेना तथा रासायनिक खादका उपयोग न करके गोबर गोमूत्रकी खादसे ही काम लेना और इनकी उपयोगिताका प्रतिपादन करना।

(१२) जमाये तेलके घीमे मिलावट न हो, इसके लिये उसे अवश्य रंग देनेकी व्यवस्था सरकारसे कराना जिससे शुद्ध घीका महत्त्व अक्षुण्ण रह सके।

(१३) चमडा चर्बी, रक्त, हड्डी आदि जिन-जिन वस्तुओंके लिये गाय मारी जाती है तथा जिन कार्यों, कारखानो, मोटर-गाडी आदि वाहनोंमे ये चीजे बरती जाती है, उनका पता लगाकर कारखानेवालोसे तथा उससे सम्बन्ध रखनेवाले अन्य लोगोसे प्रार्थना करना कि वे इन चीजोंको काममे न लावे।

(१४) यथासाध्य गायके ही दूध दही, घीका व्यवहार करना और कम-से-कम एक गायका पालन करना।

(१५) इन कार्योकी सम्पन्नताके लिये 'गोरक्षिणी-समितियो' का सर्वत्र संगठन करना।

(१६) गोरक्षाके लिये सभी लोग प्रतिदिन अपने-अपने इष्टदेव भगवान्से आर्त प्रार्थना करे।

गो-प्रतिपालन-विधि

देख-रेख—गोजातिमे भाँति-भाँतिकी नस्ल, शक्ति, लक्षण एव गुण हाते हैं। इनका साधारण ज्ञान पालकको अवश्य होना चाहिये। गो-पालनमे स्वत के देख-रेखकी उतनी ही आवश्यकता हे, जितनी कि गृहस्थीके अन्य विशेष कार्योमे। यदि विश्वसनीय तथा चतुर ग्वाले मिल जायँ तो भी सचालककी दिलचस्पी रहनी चाहिये क्योकि स्वत की देख-रेखपर गोशालाका भविष्य निर्भर रहता है। यदि पालक स्वत गासेवा-प्रेमी होगा तो अन्य सेवक भी सेवा करनेमे विशेष रुचि रखेगे। अत प्रत्येक पालकका कर्तव्य है कि वह अपनी गोशालाकी व्यवस्था एव दिनचर्यासे भली-भाँति परिचित रहे और अपनी शालाके पशुओको पहचाने। उनके चारे-दाने ओर पानीकी उचित व्यवस्था एव शालाकी स्वच्छतापर ध्यान देता रहे। इससे सेवकामे सदा तत्परता बनी रहेगी और काम सुचारु रूपसे चलेगा।

सेवकोपर गोशालाका पूरा भार डालकर स्वय निश्चिन्त हो बैठ रहना ठीक नहीं है। ऐसा देखा गया है कि गोसेवासे उदासीन होनेसे गौकी नस्ल दिन-पर-दिन हीन हाती जाती है और शनै -शनै हर ब्याँतम दूध कम होता जाता है।

सुव्यवस्थित गोशालामे चार वर्षके भीतर ही काफी उन्नति दिखायी देगी, क्योकि तबतक गायके बछडे-बछिया पूरे गाय तथा बैल हो जायँग। साँडका चुनाव सतर्कतासे होना चाहिये जिससे शालाकी होनेवाली नस्ल सुधरती जाय। साँडका सुप्रबन्ध करनेपर गोवश अवश्य तरक्की करेगा।

गृहिणी अपने बच्चा तथा परिवारकी जिस तत्परतासे सेवा करती है, उसे उसी तत्परतासे जावनके मूल पोपक तत्त्वाका दनेवाली गौकी भी सेवा करनी चाहिये। चाहे जितना भी श्रीसम्पन्न घर क्या न हा दूध, दही, घी और मट्ठेके विना वह अपूर्ण-सा ही रहगा।

सवा-पद्धति—गोशालाका प्रवन्ध भारतीय पद्धतिसे ही हाना चाहिय। दशी दवाएँ सस्ती, सुलभ और फायदेमन्द होती हैं। अग्रजी और रासायनिक दवाका प्रयाग करनेके पहले उसका भलीभाँति पूरा ज्ञान होना चाहिये, अन्यथा जरा-सी भी कमी-वेशीसे हानि होनेकी सम्भावना रहती है। बिना समझे विदेशी प्रणाली और साहित्यपर ही निर्भर रहकर गोशालाका प्रबन्ध नहीं करना चाहिये, तथापि आधुनिक विज्ञानसे उचित एव आवश्यक लाभ भी उठाना चाहिये।

'यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्ज तस्यौषध हितम्'

(चरकसहिता)

'जो जीव जिस देशमे पैदा होता है, उसी देशमे पैदा हुई ओपधि उसका हित करती है।'

जलवायुकी विभिन्नताका प्रभाव गोपर पडता है, अतएव सुदूर प्रान्तकी गायको मँगानेके पहले अपने देशकी जलवायु और उपजका ख्याल कर लेना चाहिये। नस्ल-सुधारनेके लिये यदि दूर-देशोकी गायोको रखनेका शौक हो, तो उनके लिये यथासम्भव वे ही चारे-दाने प्रस्तुत करने चाहिये, जिनपर वे वहाँ पाली गयी थीं। उनके बर्धानेके लिये उसी देशका उत्तम साँड भी होना चाहिये।

स्थान—स्थान और शालाके बार-बार परिवर्तनसे कुछ दिनोके लिये गाय बिदक जाती है और दूध भी कुछ कम हो जाता है। भलीभाँति परिचित न होनेसे वह मौका पाकर अपनी पूर्व-परिचित शालाको भाग जाती है। अतएव जब नये स्थानपर गाय लायी जाय तो उसे कम-से-कम ५ या ७ दिनतक बाँधकर ही रखना चाहिये और भलीभाँति खिला-पिलाकर प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिये, ताकि वह अपनी नयी शालासे भलीभाँति हिल-मिल जाय।

सेवक—गोसेवाके लिये गो-प्रेमी मनुष्य रखना चाहिये। ग्वाला शान्त-स्वभाव, स्वच्छ आदतोका, ईमानदार, परिश्रमी और अनुभवी होना चाहिये। नित्य नये सेवकोसे गाय सुगमतापूर्वक दूध नहीं दुहाती और न पूरा दूध ही देती है। इसलिये सेवकोको बार-बार नहीं बदलना चाहिये। गायासे दुर्व्यवहार करनेवाले सेवकको रखना ठीक नहीं है।

प्रतिपालन-विधि—भारत-भूमि उर्वरा है। इस कारण यहाँ चार-दानेकी कमी नहीं होनी चाहिये। खाद्य पदार्थोंमें दूध परमावश्यक है। खेतीमे वैल उपयोगी हैं। अतएव यहाँ

गोपालनमे सफलता अवश्य होगी। गो-पालन-विधिकी सभी प्रधान बातोका साधारणतया वर्णन नीचे किया जाता है।

(१) नये खूनका आयुप्राप्त साँड, जो ३ वर्षसे ८ वर्षतकका हो, शालामे अवश्य रखना चाहिये। गोशालाम साँडक न होनेसे गायका सोया[१] मारा जाता है। अत इससे बडी हानि होती है।

(२) बछिया अपने जनक (साँड) के रूप, गुण एव जातिके अनुरूप होती है। उपयुक्त साँडकी उपस्थितिसे शालाकी होनेवाली नस्ल तरक्की करती जायगी।

(३) साँडको सानी (चारा-दाना) से पूर्ण सतुष्ट एव नीरोग रखना चाहिये।

(४) हीन, पगु, अनिश्चित जातिवाले और रक्षकरहित साँडको गोशालाके आस-पास नहीं आने देना चाहिये। ऐसे साँडका न होना ही अच्छा है।

(५) गाय अपनी तथा साँडकी गुण-जाति एव शक्तिके अनुसार बच्चा देती है। बच्चोपर गाय और साँड दोनोका ही असर पडता है। ज्ञातशक्ति साँड और दुधार गायकी बछिया दुधार गाय बनेगी और उसका बछडा बलवान् साँड बनेगा।

(६) स्थानीय गायको सुधारनेके लिये गायकी जातिस उन्नत जाति और गुणावाला देशी साँड मँगाये और गाभिन होनेपर गायको पुष्टिकारक सानी खिलाये इस भाँति उत्पन्न बछडे-बछिया अपनी माताकी जातिसे अधिक उन्नत होगे।

(७) कभी-कभी साधारण गायसे उत्तम बच्चा और उत्तम गायसे साधारण बच्चेका होना भी सम्भव है। साँड और पोषणका सुप्रबन्ध या कुप्रबन्ध ओर वश-परम्परा उपर्युक्त अपवादके मुख्य कारण है।

(८) दाने-चारका ऋतुपर खरीद करके सचित कर रखना चाहिये। हरे चारेके निरन्तर मिलते रहनेके लिये ३ मास पहलेसे ही उसका प्रबन्ध करता रहे। गायके चारक लिय खेती करना फायदेमन्द होगा क्योकि—

[१] वर्षभर निरन्तर हरा चारा मिलता रहेगा।

[२] खरीदे हुए चारसे यह सस्ता पडेगा।

[३] अपनी आवश्यकताके अनुसार गोपालक भाँति-भाँतिके चारे उपजा सकेगा।

[४] गायोके गोबरकी खादसे खेत अधिक उर्वर बनाया जा सकेगा ओर ज्यादा उपज होनेके कारण फसल सस्ती पडेगी।

(९) गायके लिये भिन्न-भिन्न ऋतुओके अनुकूल चारे-दानेका प्रबन्ध करना चाहिये। हमेशा एक-सा चारा-दाना खानेसे वे ऊब जाती हैं।

(१०) गायके स्वभाव, जाति तथा दूध देनेकी शक्तिके हिसाबसे उसके चारे-दानेकी मात्रा नियत करनी चाहिये।

(११) गाय और ओसर-बछिया ठीक समयपर गाभिन हो, इसका ध्यान रखना चाहिये। दो या ढाई वर्षकी बछियाको और ब्यानेके २ से ४ महीनेके बाद गायको गाभिन हो जाना चाहिये। ब्याँतका ठीक तौरसे नियन्त्रण होनेपर गाय निरन्तर दूध देती रहेगी। गोशालामे कभी बहुत अधिक और कभी बिलकुल कम दूध नहीं होना चाहिय।

(१२) ब्यानेके समय गायका विशेष ध्यान रखना चाहिये। ब्यानेके १० दिन बादतक भी गायको विशेष सेवाकी आवश्यकता होती है, या तो वह २१ दिनतक प्रसूता ही रहती हे।

(१३) गायोको सद्व्यवहारसे सदा प्रसन्न एव सतुष्ट रखना चाहिये। उन्हे किसी भाँतिमे चिढाना और क्रोध करनेका अवसर देना ठीक नहीं है। नम्र व्यवहारसे गाये ममतामयी स्नहमयी एव शान्त रहती हैं। ऐसी अवस्थामे वे सुगमतासे ओर पूर्ण रूपसे दूध दुहाती हैं।

(१४) कभी-कभी गाय पर्याप्त चारा-दाना खानेपर भी दूध नहीं देती इसके कारणको यत्नपूर्वक ढूँढकर उसका विधिवत् उपचार करना चाहिये। यदि कोई लाभ होनेकी सम्भावना न हो तो उसे शालासे अलग करके केवल चराईपर रहनेवाले पिजरापोलके पशुओके साथ छोड दे।

(१५) रोगी पशुको शालाके अन्य पशुओसे बचाकर

१-गायके ऋतुम आनेको सोया कहते हैं। ऐसे समयम ही पशु गर्भाधानके योग्य होता है अन्यथा नहीं।

रखना चाहिये आर उसको चारा-दाना भी अलग ही खिलाना चाहिये।

(१६) बूढी आर दूधसे सूखी हुई गायको निकटवर्ती गोचर-भूमिवाले स्थानोमे भेज देना चाहिय। ऐस स्थानोपर गायोंके चरनेके लिये काफी अच्छी व्यवस्था रखनी चाहिये।

गौका इतिहास—सुव्यवस्थित गोशालामे गाय और साँडका जन्मपत्र रखना जरूरी है। गायकी नस्ल वैज्ञानिक रीतिसे सुधारने और नयी-नयी किस्मे चलानेके लिये गायका पूरा परिचय एव बछडे-बछियोका पूरा ब्यारा एक पुस्तकम लिखा रहना चाहिये। यह पुस्तक 'गो-जन्मपत्र' भी कही जा सकती है। इसमे गायकी जाति, मूल्य, खरीदकी तारीख, रूप-रग तथा आयु और नबर लिखा हाना चाहिये। इस परिचयके नीचे कोष्ठक बनाकर गौके ब्याँतकी सख्या गर्भाधान-तिथि साँड-परिचय, सतान-परिचय, जन्मतिथि, इस ब्याँतका त्रैमासिक एव मम्पूर्ण दूध और रोग-व्याधि तथा उपचार आदिका विवरण क्रमश अङ्कित होना चाहिये।

जन्मपत्रसे पालकको बडी सहायता मिलती हे। हर बातको याददाश्तके ऊपर छोडना उचित नहीं है। प्रत्येक साँडका पूर्ण परिचय ज्ञात होनेसे चुनावमे मुविधा रहेगी और कुछ वर्ष बाद यह लेखा गौका पूरा इतिहास बतानेमे सहायक रहेगा।

निश्चित रूपसे यह ज्ञात हो सकेगा कि किस साँडसे ब्यायी हुई गायको दूध देनेकी शक्ति कैसी रही। गायको कब हरी होना चाहिये इसका नियन्त्रण सम्भव होगा तथा गायको समयपर हरी करानेका ध्यान रहेगा। गायकी गर्भाधान-तिथि ज्ञात होनेसे ब्यानेके समयके आस-पास उसकी भलीभाँति परिचर्या हो सकेगी। बछडे-बछियाके माता-पिताकी जाति, शक्ति और उमरका परिचय होनेसे उनके लालन-पालनपर यथोचित ध्यान दिया जा सकेगा। और किस दवाने किस रोगपर कितना लाभ किया, यह भी निश्चित रूपसे विदित हो सकेगा।

दूध दुहना

आमतौरसे गायोके थनोमे १२ घटोके बाद फिरसे दूध भर आता है। कोई-कोई अच्छी नस्लकी गाये दिनमे ३ बार तक दुही जाती हैं। विदेशोंमें गायोके दुहनेमे अक्सर मशीनोका प्रयोग होता है। भारतम भी कुछ सम्पन्न गोशालावालोने इसे मँगाया है, किंतु जनसाधारण इसका व्यवहार नहीं कर सकते। ये मशीन काफी कीमती होती हैं और साधारण गायाको दुहनेके लिये इनकी जरूरत भी नहीं पडती, क्योकि उनका दूध इतना अधिक नहीं होता कि एक आदमी उन्हे दुहते-दुहते थक जाय। जानकारी रखनेवालोको ही ऐसी मशीनोंका सचालन करना चाहिये, क्योंकि कम या ज्यादा दबाव पडनेपर इस मशीनसे दूध ठीक तौरसे नहीं दुहा जा सकता। इन मशीनोका उपयोग विशेष परिस्थितिमे ही किया जा सकता है।

दूध दुहते समय निम्नलिखित बातापर ध्यान रखना चाहिये—

(१) गायसे सदैव प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिये। दुलारसे पाली गयी गाय शान्त प्रकृतिकी और क्रोध-रहित होगी। क्रोधमे रहनेसे उसका दूध कम हो जायगा। साथ ही दूधमे मक्खनकी मात्रा भी कम हो जायगी। गाय स्वभावसे ही वात्सल्यमयी है, अतएव गायसे हर समय और खास तौरपर दुहते समय अच्छा व्यवहार करना चाहिये।

(२) दूध दुहनेसे पहले हाथोको खूब साफ कर लेना चाहिये। यदि हाथोम किसी भी प्रकारकी गध लगी होगी तो दूधपर उसका असर जरूर पडेगा। नाखून जरूर साफ होने चाहिये। पोटेशियम-परमैगनेटको पानीमे घोलकर या नीमके पत्ते उबाले हुए पानीसे हाथ धो लेना चाहिये। दूध छाननेका कपडा साफ और धुला हुआ होना चाहिये।

(३) आजकल दूध दुहनके लिये एक खास तरहकी बाल्टी बनायी जाती है। इस बाल्टीपर एक तरफसे खुला हुआ तिरछा ढक्कन लगा होता है, जिससे धूल और गदका बचाव हो जाता है। खुले हुए भागसे दूध बाल्टीमें [illegible] रहता है।

(४) गायके शरीर भरमे ऐन और थन स्वभावसे ही कोमल स्थान हैं। इसलिये इनपर चोट नहीं पहुँचनी चाहिये। वह दूध दुहाना पसद करती है क्योंकि [illegible] भरा हुआ ऐन खाली हो जाता है और [illegible] है। शीघ्रतापूर्वक एक-सी गतिसे [illegible] दूध [illegible]

पहुँचाकर दूध दुहना चाहिये। दुहते समय थनोंपर आवश्यकतासे अधिक दबाव नहीं डालना चाहिये।

(५) गायके बछडे या बछियाको पहले दूध पीनेके लिये छोड दे। असलमे दूध तो बच्चेके पालनके लिये ही बनता है। बच्चेको देखकर ही गाय स्नेहवश दूध प्रवाहित करती है। ऐनमे दूधके भर आनेपर गाय प्राय गोबर या मूत्र करती है। कुछ देर दूध पी लेनेके बाद बच्चेको गायके पास ही बाँध देना चाहिये, ताकि वह उसे चाटती और दुलार करती रहे। बच्चेको उसके पाससे हटा देनेपर वह दुखी हो जाती है। दूध दुह लेनेपर बच्चेको फिर छोड दे, ताकि वह रहा-सहा दूध पी सके और कुछ देर अपनी माँके साथ रहकर उसे आनन्द दे सके। यदि बच्चेको अधिक देरतक छोड दिया जायगा तो थनोंके कटनेका अदेशा रहेगा।

(६) गाय व्यवस्थाप्रिय जीव है। वह पहचानी हुई जगहपर एक ही व्यक्तिसे सुगमतापूर्वक दुही जानी चाहिये। नित्य नये ग्वालोंके बदलनेसे गाय सकुचित हो जाती है और पूरा दूध नहीं देती।

(७) प्रतिदिन एक नियमित समयपर, ठीक १२ घटेके बाद, गाय दुही जानी चाहिये। ज्यादातर लोग सूरज उगनेके पहले और दिन छिपनेके लगभग गायको दुहते हैं। अपनी जरूरत देखकर गाय दुहनेका समय बाँध लेना चाहिये। कभी जल्दी और कभी देरमे न दुहे। सभी गाये एक दिनमें दो बार, सुबह और शामको दुही जाती हैं। परतु कुछ गाये, जो बहुत अधिक दूध देती हैं, वे २४ घटेके अदर तीन बारतक दुही जाती हैं।

गर्मियामे सूरज उगनेके समय गायको दुहना चाहिये और शामके समय सूर्यास्तसे पहले ही दूध दुह ले। दुहनेके समयमे १२ घटोका फरक होना चाहिये। दूध बेचनेवाली गोशालाओंमे ३ बजे तडके और ३ बजे शामको ही गायको दुह लेते हैं, क्योंकि उन्हे ग्राहकोंके यहाँ दूध समयपर पहुँचाना होता है।

(८) दुहनेके पूर्व थनोंको ऋतुके अनुकूल ठडे अथवा गरम पानीसे जरूर धो लेना चाहिये। दुहनेके बाद जाडामे कभी-कभी थनोंपर घी और नमक तथा गर्मियोंमें मक्खन मल देना चाहिये। खासकर ओसर गायके थन बडे नाजुक होते हैं, इसलिये इस प्रकारकी गायके थनोंमे दोनो समय मक्खन और नमक मिलाकर लगा दे। थनोंमे दूधका अश बाकी नहीं रहने देना चाहिये, क्योंकि वहाँ एकत्रित होनेपर वह जम जाता है और रोगको उत्पन्न करता है।

(९) कम-से-कम एक मासतक बच्चेको भर पेट दूध अवश्य पिलाना चाहिये क्योंकि इससे पहले बच्चा घास वगैरह नहीं खा सकता। महीने भर बाद बच्चेके आगे हरी घास रखने लगे। इससे वह जल्दी घास खाना सीख जायगा।

(१०) अच्छा दूध गाढा होता है और दुहते समय उसकी धार सीधी, मोटी एव बराबर बँधी रहती है। खुराकका असर दूधके गुणोंपर पडता है। हल्के दूधमे नीली-सी झलक होती है। बढिया दूधमे पीली झलक होगी। दुहते समय दूधकी धार बर्तनसे टकरा कर एक विशेष प्रकारकी ध्वनि करती है। अच्छे दूधकी ध्वनि गम्भीर और सुरीली होती है, किंतु हल्के दूधकी आवाज बहुत कम और धीमी होती है। यह फरक अनुभव करनेपर ही जाना जा सकता है।

(११) दूध दुहनेके पहले गायको सानी खिला देनी चाहिये और उसके लिये पानी पीनेकी भी सुविधा रखनी चाहिये। गाये काफी पानी पीती हैं, अत पानीका प्रबन्ध अच्छा होना जरूरी है।

(१२) शान्त प्रकृतिकी उत्तम गायको पिछले दोनो पैरामे बन्धन लगाकर नही दुहना चाहिये। अच्छी जातिकी गाय दुहनेपर लात नहीं चलातीं, इसलिये बन्धनकी कुटव उन्हे न डाले, वरना वे लात चलाने लगेगी। लात मारनेवाली गायको ही दौना लगाना चाहिये प्रेमपूर्वक पाली गयी सूधी गायके दौना बिना लगाये भी दुहा जा सकता है।

(१३) दूधको सीधे अँगूठेसे दुहना चाहिये, ताकि गायको कष्ट न हो। दूध दुहनेके दो तरीके हैं—

क—थनको मुट्ठीमे पकडकर और अँगूठेको ऊपरकी ओर रखकर एक समान दबाव और गतिसे जल्दी-जल्दी खींचे और छोडे। किंतु यदि ओसर गायके थन छोटे हो तो तर्जनी और मध्यमा—इन दो अँगुलियो एव अँगूठेकी पहली पोरसे उनको पकडकर चूँचीकी पूरी लबाईतक खींचे। दुहनेकी यही विधि अच्छी है।

ख—गायके थनको चार अँगुलियोसे पकडकर एव अँगूठेको हथेलीके भीतर मोडकर थनको खींचते हुए दुहनेमे यदि जरा-सी भी असावधानी होगी तो थनपर दबाव नहीं पडेगा, बल्कि उसके ऊपरी हिस्सेपर दबाव पडेगा। इससे थनके निकटवाली दूधकी नसोमे गाँठोके पडनेका अदेशा रहता है। यही तरीका अधिक प्रचलित है, परतु अच्छा नहीं है।

(१४) दूध दुहनेक समय, पहले हर एक थनकी दो-चार बूँदे दुहकर जमीनपर गिरा दे। इससे चूँचीके छिद्रम बैठे हुए कीटाणु निकल जायँगे।

दूधको बढानेकी रीति—*उचित सेवा और व्यवहार* पाकर गाय सदैव शक्ति भर दूध देगी। दूध बढानेके कृत्रिम उपायोसे गायकी पाचनक्रियापर प्रभाव पडता है, जिससे शरीरके भीतरी अवयवोपर विशेष जोर पडता है। उसकी प्रजनन-शक्ति भी क्षीण पड जाती है। गाय दूध देना कम कर दे, तो कारणकी खोज करनी चाहिये। यदि कोई खराबी मिले तो उसका उपचार, उचित ओपधिके द्वारा करना चाहिये। दवाओके जरिये दूधको बढानेकी कोशिश करते रहनेसे गायका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। एक बार दूधके बढ जानेपर भी कमजोर पड जानेके कारण भविष्यम गाय कम दूध देगी।

गायोकी खुराकका समुचित विश्लेषण करके उसमे आवश्यक परिवर्तन करनेसे दूधकी मात्रा अच्छी तरह बढायी जा सकती है। सतुलित चारे-दानेसे यथेष्ट दूध बढनेके साथ-ही-साथ गायकी शारीरिक शक्ति भी खुलेगी।

नीचे लिखी बातोका ख्याल रखना चाहिये—

१-सबसे बढिया तो यह है कि गाय उस साँडसे बर्धायी[१] जाय, जिसकी माँ बहुत दूध देनेवाली हो एव जिसकी कुल-परम्परा (Pedigree) ज्ञात हो।

२-यदि गायने चौंकने, घबराने या स्थान-परिवर्तनके कारण दूध देना कम कर दिया हो तो उसे पुचकारकर तथा रुचिकर सानी खिलाकर शारीरिक एव मानसिक शान्ति देनी चाहिये। इस तरहसे वह फिर पहले-जैसा दूध देने लगेगी।

३-गायको दुहते समय सगीत या मधुर वचन सुनानेसे वह प्रसन्न होकर अपनी शक्तिभर पूरा दूध देती है। यह प्राचीन तथा अर्वाचीन दोना ही समयके विद्वानोने माना है। भगवान् कृष्णकी मोहनी मुरलीमे गायोंके लिये कितना आकर्पण भरा रहता था, यह सभी जानते हैं। अमेरिका आदि देशाकी वैभवशाली गोशालाओमे तो सगीतका प्रबन्ध रहता है।

४-गेहूँ या जौका पतला दलिया राँधकर और उसमें गुड मिलाकर मासमके माफिक गुनगुना या ठडा खिलानेसे दूध *बढ जाता है, क्योकि इससे गायकी ताकत बढती है।*

५-दूब, सेऊँ, ग्वार, सरसों, मटर और शलजम आदिका हरा चारा समयानुसार गायोको देना चाहिये। नेपियर और हलीम घास भी बढिया नीरन[२] हैं। जाडोमें लूसर्न घास गरम तासीरके कारण लाभदायी होती है। बरसीम घास आश्विनसे चैत्रतक खिलानी चाहिये।

६-गाजरको उबालकर और उसम गुड मिला करके खिलानेसे गायोका दूध खूब बढ जाता है।

७-ज्वारकी हरी चरी यदि पूरी तादादम दी जाय तो अन्य चारे-दानेकी आवश्यकता नहीं रहती।

८-मसूर या अरहरकी दालको उबालकर उसमे शीरा या गुड मिलाकर *१० या १५ दिनतक खिलाये तो गायको* पर्याप्त प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट मिलेगे और दूध बढ जायगा।

९-गर्मियामे दूध दुहनेके पहले गायको ठडे पानीसे नहला दे। इससे गाय प्रसन्न हो जाती है और शीतलता पाकर पूरा दूध देती है।

१०-यदि अजीर्णसे दूध कम हो गया हो तो पपीतेके एक कच्चे फल तथा २ पत्तोकी चटनी पीसकर उसमे थोडा-सा गुड या शीरा और गेहूँका आटा मिलाकर लुगदीके रूपमे प्रतिदिन एक बार छ या सात दिनतक लगातार खिलाये। इससे दूधकी मात्राम वृद्धि होगी।

१-गाभिन करना। २-चारा या कुट्टी।

गौके साथ व्यवहार और गोपरिचर्या

गौएँ समस्त प्राणियोकी माता हैं और सारे सुखोको देनेवाली हैं, इसलिये कल्याण चाहनेवाले मनुष्य सदा गोओकी प्रदक्षिणा करे। गौओको लात न मारे। गौओके बीचसे होकर न निकले। मङ्गलकी आधारभूता गो-देवियोकी सदा पूजा करे। (महा०, अनु० ६९। ७-८)

जब गौएँ चर रही हो या एकान्तमे बैठी हो, तब उन्हे तग न करे। प्याससे पीडित होकर जब गो क्रोधसे अपने स्वामीकी ओर देखती है तो उसका बन्धु-बान्धवासहित नाश हो जाता है।

राजाओको चाहिये कि गोपालन और गोरक्षण करे। उतनी ही सख्यामे गाय रखे जितनीका अच्छी तरह भरण-पोषण हो सके। गाय कभी भी भूखसे पीडित न रहे, इस बातपर विशेष ध्यान रखना चाहिये। जिसके घरमे गाय भूखसे व्याकुल होकर रोती है वह निश्चय ही नरकमे जाता है। जो पुरुष गायोके घरमें सर्दी न पहुँचनेका और जलके बर्तनको शुद्ध जलसे भर रखनेका प्रबन्ध कर देता है, वह ब्रह्मलोकमे आनन्द भोग करता है।

जो मनुष्य सिह, बाघ अथवा और किसी भयसे डरी हुई, कीचडमे धँसी हुई या जलमे डूबती हुई गायको बचाता है वह एक कल्पतक स्वर्ग-सुखका भोग करता है। गायकी रक्षा पूजा और पालन अपनी सगी माताके समान करना चाहिये। जो मनुष्य गायोको ताडना देता है, उसे रौरव नरककी प्राप्ति होती है। (हेमाद्रि)

गोबर और गोमूत्रसे अलक्ष्मीका नाश होता है, इसलिये उनसे कभी घृणा न करे।

जिसके घरमे प्यासी गाय बँधी रहती है, रजस्वला कन्या अविवाहिता रहती है और देवता बिना पूजनके रहते हैं, उसके पूर्वकृत सारे पुण्य नष्ट हो जाते हैं। गाये जब इच्छानुसार चरती होती हैं, उस समय जो मनुष्य उन्हे रोकता है, उसके पूर्व-पितृगण पतनोन्मुख होकर काँप उठते हैं। जो मनुष्य मूर्खतावश गायोको लाठीसे मारते हैं उनको बिना हाथके होकर यमपुरीमे जाना पडता है। (पद्म०, पाताल० अ० १८)

गायको यथायोग्य नमक खिलानेसे पवित्र लोककी प्राप्ति होती है और जो अपने भोजनसे पहले गायको घास-चारा खिलाकर तृप्त करता है, उसे सहस्र गोदानका फल मिलता है। (आदित्यपुराण)

अपने माता-पिताकी भाँति श्रद्धापूर्वक गायोका पालन करना चाहिये। हलचल, दुर्दिन और विप्लवके अवसरपर गायोको घास और शीतल जल मिलता रहे इस बातका प्रबन्ध करते रहना चाहिये। (ब्रह्मपुराण)

गौको प्रसवकालसे दो मासतक बछडेके लिये छोड देना चाहिये। तीसरे महीनेमे दो थन दुहने चाहिये और दो बच्चेके लिये छोड देने चाहिये। चौथे महीनेमे तीन थन दुहने चाहिये। दुहते समय गायको कष्ट होता हो तो दुहनेका हठ नहीं करना चाहिये। आषाढ, आश्विन और पौषकी पूर्णिमाको गाय दुहना निषिद्ध माना गया है। (ब्रह्मपुराण)

युगके आदि युगके अन्त, विषुवत्, सक्रान्ति, उत्तरायण और दक्षिणायन लगनेके दिन चन्द्र और सूर्यग्रहण, पूर्णिमा, अमावस्या चतुर्दशी द्वादशी और अष्टमी—इन दिनोमे गौकी पूजा करनी चाहिये और उसे क्रमसे एकसे दुगुना नमक घी, दूध और ठडा जल पिलाना चाहिये। (ब्रह्मपुराण)

गोपालसे गुहार

आगे चलै उछरै बछरा, अरु पीछे सखा करताल बजावै।
गाइ हुँकारत सग चलै, मुख नैन दिये थन धार बहावै॥
आजु जनी बछरी लिये गोदमे धूरि सनी अलकै गृहआवै।
सोइ गुपाल गुहार लगै, अपनो यह गोधन आइ बचावै॥

—सुदर्शन

गोचारण और गौकी देख-रेख

व्यायाम—हर एक प्राणीकी तरह गायको भी कुछ शारीरिक परिश्रम अवश्य ही करने देना चाहिये। शरीरके संचालनसे उसके प्रत्येक अवयव भलीभाँति काम करते रहेंगे। गाय स्वस्थ रहेगी तो उसका दूध भी अच्छा होगा और बच्चे भी अच्छे होंगे। एक गायको ४-५ मील प्रतिदिन घूम-फिर लेना चाहिये। साँड तथा बछड़े-बछियोंको भी घूमना-फिरना इतना ही आवश्यक है। घूमनेसे वे पुष्ट एवं स्वस्थ बने रहते हैं।

बंद शालामें निरन्तर बँधी रहनेसे गायकी पाचनशक्ति क्षीण हो जाती है, इस कारण वह दूध कम देने लगती है। पाचन-शक्तिके ठीक न होनेसे कई तरहके रोगोंके होनेकी भी सम्भावना हो जाती है। बँधी हुई गाय प्रसन्न नहीं रहती।

स्वतन्त्रतापूर्वक धीमी-धीमी गतिसे अपनी रुचिके अनुसार घूम-घूमकर चरनेसे गाय प्रसन्न रहती है। निरन्तर बँधी रहनेसे वह संकुचित हो जाती है। शालाके बाहर घूमनेसे गायको खुली और साफ हवा मिलती है। यदि गोचरभूमि नदीके किनारे हो तो बहुत अच्छा है, क्योंकि वह प्यास लगनेपर बहता हुआ साफ पानी भरपेट पी सकेगी। बहते हुए निर्मल जलमें खनिज-लवण काफी होते हैं।

सूर्यकी किरणें गायको स्वस्थ रखने और उसकी दूध देनेकी शक्तिको विकसित करनेके लिये बहुत जरूरी हैं। इनसे विटामिन 'डी' का संचार होता है।

गाय धीमी-धीमी गतिसे चलनेवाला एक शान्तिप्रिय जीव है, अतएव उसे भगाना और मोटर गाड़ियोंसे चौंकने देना ठीक नहीं है।

एक बार नियमित रूपसे समय और स्थानकी आदत पड़ जानेपर वह शालासे निकलकर स्वतः ही वहाँसे चली जायगी और शामको उसी तरह लौट भी आयेगी। किंतु गायोंके साथ एक चरवाहा जरूर रहना चाहिये ताकि वे इधर-उधर भटक न जायँ।

गायोंकी सामूहिक चेतना बहुत होती है, जिस तरफ एक गाय जाने लगेगी, बाकी सब गाय भी उधर ही चल देंगी।

बैलको खेती या गाड़ीका काम करनेमें ही काफी परिश्रम पड़ जाता है। इसलिये उसे शालामें बैठकर आराम करने देना चाहिये। जिन दिनों उससे काम न लिया जाय, उन दिनों उसे भी घुमा-फिरा लेना चाहिये।

सारांश यह है कि शालाके सभी पशुओंको नित्य ही टहलाना चाहिये। प्रचण्ड गर्मी, जोरदार बरसात और कड़ाकेके जाड़ेसे पशुओंको बचाना बहुत जरूरी है। परंतु साधारणतया सभी मौसमोंमें सुबहसे शामतक उन्हें शालासे बाहर खूब घूमने दें।

स्नान—गाय, बैल तथा साँडको बहती हुई नदीके पानीमें नहलाना बहुत अच्छा है। गर्मीके दिनोंमें उन्हें रोज नहलाना चाहिये।

उनके शरीरको साफ रखनेसे वे प्रसन्न रहते हैं। कभी-कभी उनपर नारियलकी सींकोंके बने हुए ब्रुश फेर देनेसे उनका चमड़ा साफ रहता है तथा रक्त-संचालन भी अच्छी तरह हो जाता है।

रीठोंको उबालकर उनके झागको मलनेसे गायका सारा शरीर खूब साफ हो जाता है। नीम या भट्टके पत्ते डालकर उबाले हुए पानीसे नहलानेसे गायके शरीरपर लगे कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। यदि रीठों या नीम आदिके पानीसे गायको १०-१५ दिन बाद नहला दिया जाय, तो किलनी आदि कीटाणु नहीं हो पायेंगे। जाड़ोंमें भी गायको धूपमें खड़ा करके ताजे या गुनगुने पानीसे नहलाना चाहिये।

जो उच्छृङ्खलतावश मांस बेचनेके लिये गौकी हिंसा करते या गो-मांस खाते हैं तथा जो स्वार्थवश कसाईको गाय मारनेकी सलाह देते हैं, वे सब महान् पापके भागी होते हैं। गौको मारनेवाले, उसका मांस खानेवाले तथा उसकी हत्याका अनुमोदन करनेवाले पुरुष गौके शरीरमें जितने रोएँ होते हैं, उतने वर्षोंतक नरकमें पड़े रहते हैं। (महा०, अनु० ७४। ३-४)

प्राचीन गोशालाएँ तथा गोपालनकी शास्त्रीय विधि

गोगृह

गोशालाओकी व्यवस्था कैसी होनी चाहिये, इसका अपने यहाँ प्राचीन ग्रन्थोमे पूरा विवरण मिलता है। 'स्कन्दपुराण'मे बतलाया गया है कि गोगृह सुदृढ, विस्तीर्ण तथा समान स्थलवाला होना चाहिये। उसमे ठडी, तेज हवा और धूपकी पूरी रुकावट होनी चाहिये और बालूसे उसकी भूमि कोमल बना देनी चाहिये। शरीरकी खुजलाहट मिटानेके लिये उसमे बहुतसे स्तम्भ होने चाहिये। चारा डालनेके लिये उसमे बडी-बडी नाँदे होनी चाहिये[1]। खूँटोका ऊपरी भाग नुकीला न होना चाहिये जिससे उनके स्पर्शसे क्लेश न हो और उनमे मुलायम रस्सियाँ लगी रहनी चाहिये। मच्छर आदि हटानेके लिये धुएँका प्रबन्ध रहना चाहिये ओर बैठनेके लिये पर्याप्त स्थान होना चाहिये। पानी पीनेके लिये कुएँ, कुड, जलाशय आदि रहने चाहिये। कूडा साफ करनेके लिये नौकरोका प्रबन्ध रहना चाहिये और उनके निर्वाहयोग्य वृत्तिकी भी व्यवस्था होनी चाहिये। पर्दे, छाया, चारा, पानी आदिका प्रबन्ध रहना चाहिये। सुन्दर प्राकार तथा द्वारोसे वह सुशोभित होना चाहिये। इस तरहके गोगृह बनवाकर जो किसी अच्छे पर्वपर दान करता है, वह भाग्यवान्, नीरोग और सम्राट् होता है।

एवविधे महारम्य प्राकारद्वारभूषितम्॥
कृत्वा गृह गवामर्थे य पर्वणि निवेदयेत्।
स राजराजो भवति भाग्यारोग्यसमन्वित ॥

महामुनि पराशरकृत 'कृषि-सग्रह' मे भी बतलाया गया है कि जिसकी गोशाला सुदृढ, साफ-सुथरी, गोबरसे रहित होती है, उसके पशु अच्छा भोजन न मिलनेपर भी बढते रहते हैं। जिस स्थानसे प्रतिदिन बैल गोबर और मूत्रसे सने हुए निकलते हैं, वहाँ अच्छा चारा दनेसे भी क्या लाभ? 'वृष-आय'[2]वाली शाला गौको बढानेवाली होती है। 'सिह-आय'वाले स्थानमें गोनाश अवश्य होता है। चावलका पानी, गरम माँड, बिनौले, भूसी आदि उस स्थानपर पडे रहनेसे गोनाश होता है। झाडू, मूसल, जूठन आदि वहाँ इधर-उधर पडे-रखने तथा बकरियाके बाँधनेसे भी हानि होती है। जहाँ गोमूत्र भरा रहता है और कूडा फैला रहता है, वहाँ उनका निवास कैसे हो सकता है? जहाँ थूक, खखार मूत्र, पुरीष, कीचड, मिट्टी नहीं गिरते, वहाँ लक्ष्मी स्थिर होती है। जिसमे सध्यासमय दीपक नहीं जलाया जाता, उस स्थानको लक्ष्मीरहित देखकर गागण रोते हैं—

गोशाला सुदृढा यस्य शुचिर्गोमयवर्जिता।
तस्य वाहा विवर्धन्ते पोषणैरपि वर्जिता ॥
शकृन्मूत्रविलिप्ताङ्गा वाहा यत्र दिने दिने।
नि सरन्ति गवा स्थानात् तत्र कि पोषणादिभि ॥

१- चरही' का परिमाण इस प्रकार बतलाया गया है—

स्वामिहस्तप्रमाणेन दैर्घ्यविस्तारसयुतौ। वसुभिश्च हरेद्भाग शेषाङ्के फलमादिशेत्॥
पशुहानि पशोर्नाश पशुलाभ पशुक्षय। पशुरोग पशोर्वृद्धि पशुभेदो बहुप्रद ॥
पशु-मालिकके हाथ नपाई। लबाई चवडई मिलाई॥
आठ भाग दे जो बचि रहै। भिन्न भिन्न फल ताके कहै॥
एक बचे पशु-हानि करावे। दुइके बचे नाश फल पावे॥
तीन बचे पशु-लाभ कराई। चारि बचे तो भय होइ जाई॥
पाँच बचे पशु-रोग बढावै। छ के बचे वृद्धि उपजावै॥
सात बचे पशुभेदै जानौ। आठ बचे बहु वृद्धि बखानौ॥
(वृषकल्पद्रुम)

२-इष्ट स्थानकी लबाईको चौडाईसे गुणा करके गुणनफलमे आठसे भाग देनेपर एक आदि सख्या शेष रहनेपर क्रमश १ ध्वज २ धूम ३ सिह ४ श्वान ५ वृष ६ स्वर ७ गज और ८ उष्ट्र—ये आय होते हैं।

× × ×

सध्याकाले च गास्थाने दीपो यत्र न दीयते।
स्थान तत्कमलाहीन वीक्ष्य क्रन्दन्ति गोगणा ॥[१]

गो-परिचर्या

पूर्वोक्त गो-गृहोमे गायोको रखकर उनकी बराबर परिचर्या करनी चाहिये। गोष्ठमे रहकर जो गोपाल धुआँ नहीं करता, उसे मक्खियासे भरे हुए नरकम मक्खियाँ खाती हैं—

गोपालको गवा गोष्ठे यस्तु धूम न कारयेत्।
मक्षिकालीननरके मक्षिकाभि स भक्ष्यते॥

(देवापुराण)

दुहनेमे भी बडी सावधानी रखनी चाहिये। दो मासतक तो बछडेको पिलाना चाहिये। फिर तीसरेसे केवल दो थन और चौथेसे तीन थन दुहने चाहिए—

द्वौ मासौ पाययेद्वत्स तृतीये द्विस्तन दुहेत्।
चतुर्थे त्रिस्तन चैव यथान्याय यथाबलम्॥

(हारीत)

जो मृतवत्सा गायको उसके बछडेकी खालम भूसा भरकर या गायका ताडन करके बराबर दुहता है, वह सदा क्षुधार्त रहता है—

मृतवत्सा तु गा यस्तु दमित्वा पिबते नर ।
वाहिताऽस्याश्चिर तिष्ठेत् क्षुधार्तो वै नराधम ॥

(देवीपुराण)

अनाथ गायोके लिये शिशिर ऋतुम यत्नपूर्वक मठ बनवाने चाहिये और उनम घास पानी तथा ईंधन देना चाहिये—

अनाथाना गवा यत्नात् कार्यस्तु शिशिरे मठ ।
पुण्यार्थं यत्र दीयन्ते तृणतोयेन्धनानि च॥

(ब्रह्मपुराण)

क्रमानुसार प्रत्येक मासमे उनका उपचार करना चाहिये। ४ पल लवण, ८ पल घी और दूसरी गायका १६ पल दूध उनको देना चाहिये। ३२ पल शीतल जल और बलानुसार दूधका सेवन कराना चाहिये। प्रतिदिन सवेरे उन्हे लवण और जल देना चाहिये, फिर घास तथा मासवर्जित भोजन कराना चाहिये। रातमे दीपक अवश्य जलाना चाहिये तथा उन्हे वीणा आदि मधुर वाद्य और पुराणोकी दिव्य कथा सुनानी चाहिये।[२] ऐसा करनेसे पृथ्वीभर रत्न देनेका फल प्राप्त होता है। जो पुण्य गोदानसे होता हे, वही गो-सरक्षणसे प्राप्त होता है। तृण और जलसे मनुष्योको सदा उनका पालन करना चाहिये। व सदा देने योग्य, पूज्या, पोष्या तथा पालनीया हैं—

निशि दीप सतन्त्रीको दिव्या पौराणिकी कथा॥
एव कृते महीं पूर्णां रत्नैर्दत्त्वा भवेत् फलम्।
गोप्रदानाय यत्पुण्य गवा सरक्षणाद्भवेत्॥
मनुष्यैस्तृणतोयाद्यैर्गाव पाल्या प्रयत्नत ।
देया पूज्याश्च पोष्याश्च प्रतिपाल्याश्च सर्वदा॥

(ब्रह्मपुराण)

भीतरसे सतुष्ट होकर इनकी परिचर्या करनी चाहिये। स्वप्नम भी उनके ताडने या उनके प्रति क्रोध दिखाने या खेद

१-गोगृह कैसा होना चाहिय इस सम्बन्धमें निम्नलिखित एक हिदीका पद भी प्रसिद्ध है—

शीत उष्ण अरु वायु बचावै गृहकी रचना कीजै।
जामें रोग निकट नहि आवै सो प्रकार लखि लीजै॥
चारो दिशा दिवाल अनूपम खिरकी बहुत रखावै।
शीतल मन्द समीर वायु जहँ सुख पशुको पहुँचावै॥
ओस नीर आतपहि बचावै छाया पुष्टि करीजै।
एक झरोखा ऊपर राखै तेहि दुर्गन्ध हरीजै॥
मल अरु मूत्र साफ बहु राखै तहाँ रोग नहि आव।
वा विधि पशुको रक्षा कीजै सफल सुक्ख उपजावै॥

(वृषकल्पद्रुम)

२-आजकल यह बात खोजकर निकाली गयी है कि दुहते समय गायोको मधुर सगीत सुनानेसे दूध अधिक निकलता है इसीलिये विदेशोकी गोशालाओमे 'रेडियो' लगाये जाते हैं। परतु हमारे यहाँकी यह पुरानी बात है।

करनेका भाव न होना चाहिये। उनके मूत्र-पुरीषसे किसी प्रकारका उद्वेग ठीक नहीं है। उनके रहनेके स्थानको शुष्क क्षारसे बराबर साफ करते रहना चाहिये। गर्मियोंमें वृक्षोंकी सघन छाया तथा शीतल जलवाला, वर्षामें कीचडसे रहित और शिशिरमें वातवर्जित एवं सुख देनेवाला गरम स्थान देना चाहिये। वहाँ कूडा फेंकना, थूकना, मूत्र-पुरीष डालना कभी ठीक नहीं। रजस्वला, अन्त्यज या पुंश्चलीका भी प्रवेश उनके पास न होने देना चाहिये। बछियाको लाँघना नहीं चाहिये और न गोष्ठके समीप खेल-कूदकर उनको तंग करना चाहिये। जूता या पादुका पहनकर उनके पास जाना उचित नहीं है। रोगी या दुबली-पतली गायोंका माता-पिताकी तरह पालन करना चाहिये—

अन्तस्तुष्टैर्यथाशक्त्या परिचर्या यथाक्रमम्।
ताडनाक्रोशखेदाश्च स्वप्नेऽपि न कदाचन॥
तासां मूत्रपुरीषे तु नोद्वेगः क्रियते क्वचित्।
शोधनीयश्च गोवाटः शुष्कक्षारादिकैः सदा॥
ग्रीष्मे वृक्षाकुले वेश्म शीततोये विकर्दमे।
वर्षासु चाथ शिशिरे सुखोष्णे वातवर्जिते॥
उच्छिष्टं मूत्रविट्श्लेष्ममलं जह्यात्र तत्र च।
रजस्वला न प्रवेश्या नान्त्यजातिर्न पुंश्चली॥
न लङ्घयेद्वत्सतरीं न क्रीडेद्गोष्ठसंनिधौ।
न गन्तव्यं गवां मध्ये सोपानत्कैः सपादुकैः॥
गावः कृशतराः पाल्याः श्रद्धया पितृमातृवत्।

(ब्रह्मपुराण)

गोबरको खादके काममें लाना चाहिये। इसके लिये माघमें गोबरका ढेर लगाकर श्रद्धापूर्वक उसका पूजन करना चाहिये और फिर किसी शुभ दिनमें उसको कुदालसे गोडना चाहिये। फिर उसको सुखाकर गुण्डक (गोला) बनवाकर फाल्गुनमें गड्ढेमें गाड देना चाहिये और बीज बोनेके समय उसकी खाद निकालनी चाहिये। बिना खादका अन्न बढकर भी फलता नहीं—

माघे गोमयकूटं तु सम्पूज्य श्रद्धयान्वितः।
खादं शुभदिनं प्राप्य कुद्दालैस्तोलयेत्ततः॥
रौद्रे संशोष्य तत्सर्वं कृत्वा गुण्डकरूपिणम्।
फाल्गुने प्रतिकेदारे गर्तं कृत्वा विधापयेत्॥
ततो वपनकाले तु कुर्यात् सारविमोचनम्।
विना सारेण यद्धान्यं वर्धते न फलत्यपि॥

(कृषिसंग्रह)

जो पुरुष गायोंको शीतसे बचानेके लिये छाया डालता है और पीनेके लिये प्याऊ बनवाता है, वह वरुणलोकमें जाकर अप्सराओंके साथ क्रीडा करता है। उन्हें लवण देनेसे बडा सौभाग्य एवं रूप-लावण्य प्राप्त होता है। औषध देनेसे रोग नहीं होता। उन्हें औषध, लवण, जल तथा आहार बराबर देना चाहिये। उनको खुजलानेसे 'गोप्रदान' का फल होता है और भय-रोगादिसे रक्षा करनेमें 'गोशत-दान' के समान फल प्राप्त होता है—

शीतत्राणं गवां कृत्वा गृहे पुरुषसत्तम॥
वारुणं लोकमाप्नोति क्रीडत्यप्सरसां गणैः।
गवां पानप्रवृत्तानां यस्तु विघ्नं समाचरेत्॥
ब्रह्महत्या कृता तेन घोरा भवति भार्गव।
गवां लवणदानेन रूपवानभिजायते।
सौभाग्यं महदाप्नोति लावण्यं च द्विजोत्तम॥
औषधं च तथा दत्त्वा विरोगस्त्वभिजायते।
औषधं लवणं तोयमाहारं च प्रयच्छति॥
गवां कण्डूयनं धन्यं गोप्रदानफलप्रदम्।
तुल्यं गोशतदानस्य भयरोगादिपालनम्॥

(विष्णुधर्मोत्तर०)

आदर्श तो यह है कि तृणोदकसे पूर्ण वनोंमें बछडों एवं साँडोंसहित मतवाली गायें खेल-कूद रही हों। शीत, धूप व्याधि, भयसे विमुक्त हों और दूध देती हुई सुखसे सोती रहें—

तृणोदकाढ्येषु वनेषु मत्ता
क्रीडन्तु गावः सवृषाः सवत्साः।
क्षीरं प्रमुञ्चन्तु सुखं स्वपन्तु
शीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः॥

(ब्रह्मपुराण)

गो-चिकित्सा

अपने यहाँ सभी कार्योंके लिये दो उपाय बतलाये गये हैं—एक दैवी और दूसरा लौकिक। रोगनिवृत्तिमें भी इन दोनोंसे काम लिया जाता है। चिकित्साके साथ ही देव-

पूजन, हवन, अनुष्ठानादि भी चलते रहते हैं। गो-चिकित्सामे भी इन दोना उपायोंका विधान मिलता है। 'गोभिलीय गृह्यसूत्र' मे इसके लिये कई कर्म बतलाये गये हैं। गो-पुष्टिके लिये नान्दीमुख-श्राद्ध तथा तीन दिनका उपवास करके प्रात गायको घरसे अरण्यमे जाते तथा आते समय उनका 'अनुमन्त्रण' करना चाहिये। इसमे बडे भावपूर्ण मन्त्राका प्रयोग होता है। अरण्यमे प्रात गायोके जाते समय प्रार्थना की जाती है—'हे सबसे अधिक पराक्रमशाली भव और इन्द्र! आपलोग मेरी इन गायोकी रक्षा करना। हे पूषा! आप इन्हे सुखपूर्वक लौटा लाना बिना किसी क्षतिके ये मेरे घरमे लौट आये।'

इमा मे विश्वतोवीर्यो भव इन्द्रश्च रक्षतम्।
पूष ँस्त्व पर्यावर्त्तयानष्टा आयन्तु नो गृहान्॥

सध्याको लोटते समय प्रार्थना की जाती है—'मेरे लिये मधुर पदार्थ देनेवाली ये गाये दूधसहित बिना किसी क्षतिके लौट आये। मेरे यहाँ य घृतकी माताएँ बहुत हा—

इमा मे मधुमतीर्मह्यमनष्टा पयसा सह।
गाव आज्यस्य मातर इहेमा सन्तु भूयसी ॥

प्रसवकी रात्रिमे गोपुष्ट्यर्थ 'विलयनहोम' का विधान है। इसमे जिस मन्त्रसे हवन किया जाता है, उसका भाव है—'हे सग्रहण नामक देव! मेरे यहाँ जो पशु उत्पन्न हुए है, उनकी रक्षाके लिये आप उनको स्वीकार करे। पूषा देवता इन्हे एसा कल्याण प्रदान करे, जिससे ये बिना नष्ट हुए जीवित रहे'—

सग्रहण सगृहाण ये जाता पशवो मम।
पूषैषा ँशर्म यच्छत यथा जीवन्तो अप्ययात् स्वाहा॥

'गो-यज्ञ' का भी एक प्रयोग बतलाया गया है, जिसमे गो-पुष्ट्यर्थ हवन वृषभ-पूजन, ब्राह्मण-भोजन आदिका विधान है[१]। गायको धूप या लू लग जानेसे उसकी शान्तिके लिये लोहचूर्ण अन्न और घृत मिलाकर 'चीवरहोम' करना चाहिये। 'अग्निपुराण' के गोशान्ति-प्रकरणमे भी ऐसे कई प्रयोग बतलाये गये हैं। लौकिक उपायोमे सफाई तथा स्वास्थ्यप्रद साधनोका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। 'अग्निपुराण' (अ० २९२) म विभिन्न रोगाकी भी चिकित्सा बतलायी गयी है। यथा—

गायोंके सींगोमे रोग होनेसे सेधा नमक, सोठ, बला एव जटामासीके काढेमे पकाया हुआ तेल शहद मिलाकर लगाना चाहिये। सब प्रकारके कर्णशूलोमे मजीठ हींग एव सेधा नमकके साथ पकाया हुआ तेल अथवा उनके रसका उपयोग करना चाहिये। दाँतोकी पीडामे बेलकी जड, चिचडा, धव, पाटला और कौरैयाका दाँतोपर लेप करना चाहिये। 'दन्तशूलहर' पूर्वोक्त दिव्य ओषधियोंके साथ पकाया हुआ घृत भी मुखरोगका नाशक है। जिह्वा-रोगमे सेधा नमक देना चाहिये। गलेके रोगमे सोठ, दानो हल्दी और त्रिफलाका प्रयोग करना चाहिये। हृच्छूल, वस्तिशूल, वातरोग तथा क्षय-रोग होनेपर त्रिफला घीमे मिलाकर पिलाना चाहिये। अतिसारमे दोनो हल्दी और सोनापाठा देने चाहिये। सभी प्रकारके उदररोग तथा शाखारोगामे और कास-श्वासमे साठ एव भारगी हितकर हैं। टूटे अङ्ग जोडनेके लिये सेधा नमक और ककुनी देना चाहिये। मुलेठीके साथ पकाया हुआ तैल पित्तरोगमे तथा अकेला तेल वातरोगमे लाभदायक हे। कफरोगमे व्योष (पीपल, मिर्च तथा सोठ) शहदके साथ देना चाहिये। चोट लगनेपर तेल, घी और हरताल गर्म करके लगाना चाहिये। उर्द तिल, गेहूँ, दूध और घीके लड्डू खिलानेसे बछडे पुष्ट होते हैं।

इसी तरह अन्य पुराणो तथा आयुर्वेद-ग्रन्थोमे गो-चिकित्साके अनेक नुस्खे बतलाय गये हैं।

प्राचीन समयमे पशुआके चिकित्सालय थे। महाराज अशोकके 'गिरनार-शिलालेख' मे कहा गया है कि 'सर्वत्र राज्यमे, सीमाप्रदेशोमे और पडोसके राज्योमे दो प्रकारकी चिकित्साओका प्रबन्ध होना चाहिये—एक तो मनुष्याकी और दूसरी पशुओकी। जडी-बूटियाँ तथा ओषधियाँ जहाँ नहीं होतीं, वहाँ दूसरी जगहोसे लाकर लगायी जायँ।

अहीरों तथा वृद्धलोगोको कितने ही नुस्खे मालूम हैं जो बडे उपयोगी हैं। यदि उनका सग्रह करके प्रायोगिक अनुसन्धान किया जाय तो उससे बडा लाभ हो सकता है।

सरकारी व्यवस्था

'कौटिलीय अर्थशास्त्र' के 'गोऽध्यक्ष-प्रकरण' मे

१-कहा जाता है कि गोवर्धन-पूजनके अवसरपर भगवान् श्रीकृष्णने यह 'गो-यज्ञ' भी कराया था।

गोपालन तथा गोरक्षाकी सरकारी व्यवस्था बतलायी गयी है। उसके अनुसार आठ उपाय निश्चित किये गये हे। गोपालक, पिण्डारक (भैसाको पालनेवाले), दोहक (दुहनेवाले), मन्थक (दही आदि मथनवाले) और लुब्धक (जगलामे हिसक प्राणियासे रक्षा करनेवाले)—ये पाँच-पाँच आदमी मिलकर सो-सौ गायोका पालन करे। इनका वेतन नकद या अन्न-वस्त्रादिके रूपमे दिया जाय। दूध-दही-घृतादिम इनका कोई हिस्सा न रहे, क्योकि ऐसा होनेसे लालचमे पडकर व लोग बछडोको भूखो मार डालगे। इसको 'वेतनोपग्राहिक' कहते हैं, क्याकि इसमे केवल सूखा वेतन दिया जाता है—

गोपालकपिण्डारकदोहकमन्थकलुब्धका शत शत धेनूना हिरण्यभृता पालयेयु । क्षीरघृतभृता हि वत्सानुपहन्युरिति वेतनापग्राहिकम्॥

बूढी, दूध देनेवाली, गाभिन, पठोरी (पहल ब्यानकी), वत्सतरी (जिसने हालमे ही दूध चोखना छोडा हो)—इन पाँच प्रकारकी गायोको बराबर-बराबर मिलाकर अर्थात् प्रत्येक २०-२० लेकर पूरा सो कर दिया जाय और उनका किसी एकको ठेका दे दिया जाय। वह उनके मालिकको प्रतिवर्ष आठ वारक (प्राचीन तौल) घी, प्रत्येक पशुक लिय एक पण और सरकारी मुद्रासे मुद्रित मरे हुए पशुका चमडा देता रहे। (सरकारी मुहर इसलिये कि पशु मरा हुआ है, मारा हुआ नहीं) यह उपाय 'करप्रतिकर' कहलाता है—

जरद्धुधेनुगर्भिणीपष्ठौहीवत्सतरीणा समविभाग रूपशतमेक पालयेत्। घृतस्याष्टौ वारकान् पणिक पुच्छमङ्कचर्म च वार्षिक दद्यादिति करप्रतिकर ॥

बीमार, अङ्ग-भङ्ग, एक ही आदमीका छोडकर अन्य किसीसे न दुही जानेवाली, मुश्किलसे दुही जानेवाली ओर जिनका बछडा मर गया हो—ऐसी गायोका भी पहलेकी तरह प्रबन्ध कर दिया जाय। परतु इसम पूर्वोक्त घीका आधा या तिहाई मालिकको और उतना ही राजकीय अश देना होता है। इसको 'भग्नोत्सृष्टक' कहते हैं—

व्याधितान्यङ्गानन्यदोहीदुर्दोहापुत्रघ्नीना च समविभाग रूपशत पालयन्तस्तज्जातिक भाग दद्युरिति भग्नोत्सृष्टकम्॥

शत्रुआके छल या जगली पुरुषाके भयसे जब गोपालक अपनी गायोका सरकारी बाडम भरती कर द, तो आयका दसवाँ हिस्सा सरकारको दिया जाय। इस उपायको 'भागानुप्रविष्टक' कहत हे—

परचक्राटवीभयादनुप्रविष्टाना पशूना पालनधर्मेण दशभाग दद्युरिति भागानुप्रविष्टकम्॥

छोटी तथा बडी बछडी, पठोरी, गाभिन, दूध देनेवाली अधेड उम्रकी ओर बाँझ—ये सात प्रकारकी गाये होती हैं। उनके महीने या दो महीनेके बछडा-बछडी लोहे आदिके छल्लेसे चिह्नित कर दिये जायँ। जो गायें सरकारी चरागाहाम महीने-दो-महीने रहें, उन्ह भी अङ्कित कर दिया जाय। इनका अङ्कित चिह्न, रङ्ग, सींग आदि पूरा हुलिया सरकारी रजिस्टरोमे दर्ज रखा जाय। यह उपाय 'व्रजपर्यग्र' कहलाता है—

वत्सिकावत्सतरीपष्ठौहीगर्भिणीधेनुश्चाप्रजातावन्ध्याश्च गावो महिष्यश्च, मासद्विमासजातास्तासामुपजा वत्सा वत्सिकाश्च, मासद्विमासजातानङ्कयेत्। मासद्विमास-पर्युषितमङ्कयेत्। अङ्क चिह्नवर्ण शृङ्गान्तर च लक्षणमेवमुपजा निबन्धयेदिति व्रजपर्यग्रम्॥

चोरोसे अपहरण किया हुआ, दूसरे गिरोहम मिल गया हुआ या जगलम अपन गिरोहसे भटका हुआ 'नष्ट' गोधन कहलाता है और कीचडमे फँसने, गढेम गिरने, बीमारी, बुढापा जल-प्रवाहम बह जाने, ऊपर वृक्ष गिर जाने करारके खिसक जाने, भारी शहतीर—शिला आदिमे दब जाने, बिजली गिरने, हिसक व्याघ्र, साँप, नाक आदिसे काटे जाने या जगलकी आगसे गाय नष्ट हो तो उसे 'विनष्ट' कहते हैं। यदि ऐसी हानि ग्वालाकी असावधानीसे हो तो वे उसको पूरा करे—

चौरहृतमन्ययूथप्रविष्टमवलीन वा नष्टम्। पङ्कविषम-व्याधिजरातोयाधारावसन्न वृक्षतटकाष्ठशिलाभिहतमीशान-व्यालसर्पग्राहदावाग्निविपन्न विनष्ट प्रमादादभ्यावहेयु । एव रूपाग्र विद्यात्॥

आठवाँ उपाय 'क्षीरघृतसजात' है जिसका निरूपण किसी एक सूत्रम नहीं किया गया है। परतु यह बतलाया गया है कि एक द्रोण गायक दूधमेसे एक प्रस्थ घी निकलता है। वस्तुत दहीको मथकर घी निकालनपर ही

घीके ठीक परिमाणका निश्चय होता है। इसलिये यह परिमाण प्रायिक ही समझना चाहिये। विशेष भूमियो, विशेष प्रकारकी घास या पानी खिलाने-पिलानेसे दूध और घीकी वृद्धि होती है—

क्षीरद्रोणे गवा घृतप्रस्थ । मन्थो वा सर्वेषा प्रमाणम्। भूमितृणोदकविशेषाद्धि क्षीरघृतवृद्धिर्भवति॥

वर्षा, शरद् और हेमन्त ऋतुआम गायोको प्रात -साय दोनों समय दुहा जाय और शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्ममें केवल एक ही समय। इन दिनो जो दो बार दुहे, उसका अँगूठा काट दिया जाय। दुहनेवाला यदि ठीक समयपर न दुहे तो उसे उस दिनका वेतन न दिया जाय—

वर्षाशरद्धेमन्तानुभयत काल दुह्यु । शिशिरवसन्तग्रीष्मानेककालम्। द्वितीयकाल दोग्धुरङ्गुष्ठच्छेदो दण्ड । दोहकालमतिक्रामतस्तत्फलहान दण्ड ॥

जो ग्वाला स्वय गायको मारे या किसीसे मरवाये स्वय हरण करे या किसीसे हरण कराये, उसे प्राणदण्ड दिया जाय। चोरासे अपहरण की हुई अपने ही देशकी गाय जो लावे, उसे एक पण इनाम दिया जाय और परदेशके पशुओको चोरोंसे छुडाकर लाने या छुडानेवाला आधा हिस्सा ले सकता है। गापालोको चाहिये कि छोटे बछडे, बीमार और बूढे पशुओकी विपत्तिका बराबर प्रतीकार करते रहे अर्थात् उन्ह सब कष्टासे बचाते रहे—

स्वय हन्ता घातयिता हर्ता हारयिता च वध्य । स्वदेशीयाना चोरहृत प्रत्यानीय पणिक रूप हरेत्। परदेशीयाना मोक्षयितार्धं हरेत्। बालवृद्धव्याधिताना गोपालका प्रतिकुर्यु ॥

शिकारियो तथा कुत्ताको रखनेवाले बहेलियाद्वारा चोर, हिसक प्राणी तथा शत्रुकी ओरसे होनेवाली बाधाओके भयको सर्वथा दूर करके ऋतुके अनुसार सुरक्षित जगलोंम ही सब गोपाल अपनी-अपनी गायोको चराये। साँप और हिस्र प्राणियोको डरानेके लिये, चरनकी जगह पहचाननेके लिये, शब्द सुनकर घबरा जानेवाले पशुआके गलेम एक लोहेका घट बाँध देना चाहिये। यदि पशुआको कहीं पानी पीने और नहाने आदिके लिये पानीमे उतारना हो तो ऐसे ही स्थानपर उतारे जहाँ बराबर तथा चोडे घाट बने हो दलदल न हो, नाक आदिका भय न हो। जबतक पशु पानी पियें या नहायें तबतक वहाँपर गोपाल उनकी सावधानतापूर्वक रक्षा करता रहे। चोर, व्याघ्र, साँप, नाक आदिसे पकडे हुए पशु तथा बीमार और बुढापेके कारण मरे हुए पशुकी तत्काल सूचना देनी चाहिये, नहीं तो गोपालको नष्ट हुए प्रत्येक पशुका पूरा दाम देना होगा। वर्णके अनुसार दस-दस गाय आदिकी गणनासे सौ गायोके झुडकी रक्षा की जाय। सौ गायोके गोलके पीछे चार साँड रखने चाहिये। गायाके जगलामे रहने और चरनेके लिये नियमित स्थानोकी व्यवस्था, उनके चरनेके सुभीते, उनके गोलकी तादाद और उनकी रक्षाके सौकर्यको देखकर ही होनी चाहिये—

लुब्धकश्वगणिभिरपास्तस्तेनव्यालपरबाधभयमृतुविभक्तमरण्य चारयेयु । सर्पव्यालत्रासनार्थं गोचरानुपातज्ञानार्थं च त्रस्नूना घण्टातूर्यं च बध्नीयु । समव्यूढतीर्थमकर्दमग्राहमुदकमवतारयेयु पालयेयुश्च। स्तेनव्याघ्रसर्पग्राहगृहीत व्याधिजरावसन्न चावेदयेयुरन्यथा रूपमूल्य भजेरन्। वर्णावरोधेन दशती रक्षा॥ शत गोयूथ कुर्याच्चतुर्वृषम्। उपनिवेशदिग्विभागे गोप्रचारान् बलान्वयता वा गवा रक्षासामर्थ्याच्च॥

इन सब नियमोका यथावत् रीतिसे पालन होता है या नहीं, इसको देखनेके लिये राज्यकी ओरसे एक बडा अफसर रहता था, जो 'गोऽध्यक्ष' कहलाता था।

हमारा औदासीन्य

इस तरह प्राचीन गोपालन-व्यवस्थाका सर्वाङ्गीण चित्र हमे अपने यहाँके साहित्यमे मिलता है। खेद है कि हमारे यहाँके नवयुवक 'डेयरी सिस्टम' सीखनेके लिये अमेरिका, डेन्मार्क इग्लैंड तथा अन्य देशामे भेजे जाते है, पर अपने यहाँकी प्राचीन व्यवस्थाकी ओर ध्यान ही नही जाता। हमारे यहाँकी व्यवस्थाएँ देश-कालके अनुरूप, कम खर्चकी सुगम तथा कहीं अधिक लाभप्रद हैं। जितना धन जितना समय, जितना परिश्रम हम विदेशी बातोको सीखनेम खर्च करते है, यदि उतना ही हम अपने यहाँक भूले हुए प्रकारोको ढूँढ निकालने, उनके अध्ययन करने और उन्हे प्रयोगमे लानेपर खर्च करे तो हम ऐसा 'गोपालन-विज्ञान' प्रस्तुत कर सकते है, जिसको देखकर ससार चकित रह जायगा। भगवान् हमे सुबुद्धि दे।

गोपालन, गोसंवर्धन एवं गोसंरक्षण

(महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीयोगेश्वर विदेही हरिजी महाराज)

जबतक सम्पूर्ण गोवश-हत्या बद नहीं होती, तथा सरकारी कुनीतियाँ सुनीतियोमे परिवर्तित नहीं होतीं,तबतक गोपालन एव सवर्धनका पावन कार्य अत्यन्त कठिन है।

मछलीपालन मुर्गीपालन तथा वृक्षारोपण आदिके लिये सरकार अनेक प्रोत्साहन दे रही है, किंतु गोपालन, गोसर्वधन एव गासरक्षणके लिये शासन एव योजना-आयोगकी कोई ठोस योजना नहीं। हमे मिलकर देशकी सुरक्षा एव समृद्धिके लिये गोपालनके पुनीत कार्यको आगे बढाना होगा। स्वय तत्पर होकर सरकारपर भी प्रभाव डालना होगा ताकि निम्नाङ्कित सहयोग मिले—

१-जिन राज्योने पूर्णतया 'गोवश-हत्या-निरोध' कानून बनाये हैं वह गोपालन एव गोसवर्धनके लिये भी सुनीतियाँ निर्माण कर सहयोग करे। अन्य राज्य भी उनका अनुकरण करे।

२-वनाम गोचारणके लिये नि शुल्क अथवा कम-से-कम शुल्क लेकर गोपालकोको लाइसेस दिये जायँ। ऐसे ही नहर, रोड एव रेलवे-सडको आदिके किनारे खाली भूमिमे भी गोचारण घास काटने एव बेकार जा रहे वृक्षोके पत्त एकत्रित करनेकी सुविधा दी जाय।

३-गरीब गोपालकोको शासन एक-एक देशी गाय तथा उसकी सेवाके लिये आर्थिक सहायताका अनुदान दे तथा अधिक गोपालनकर्ता उचित गोसवर्धनकर्ता तथा गोदुग्ध एव गोबर-गोमूत्रके अधिक प्रयोगकर्ताको ओर बैलासे कृषि करनेवालोको पुरस्कार एव वृत्तियो आदिसे प्रोत्साहित किया जाय।

४-इन सब कार्योका प्रचार-प्रसार सरकारद्वारा सचारके माध्यमासे तथा अन्य माध्यमोसे योजनाबद्ध ढगसे कराया जाय।

५-गौ-सेवी धनी एव दानी सज्जन इन कार्योमे हर भाँतिसे सहयोग करे।

६-धार्मिक एव सामाजिक सस्थाएँ भी इस ओर उचित ध्यान दे। विदेशी वश-सकरण (क्रासब्रीडिग) पूर्णतया बद कर स्वदेशी विशेष वशोसे सकर (अपग्रेडिग) पद्धतिको अपनाय।

सकर-कार्यक्रम

स्वदेशी वश पोषण-रहित आहारसे भी उपयोगी सिद्ध हुआ है। आज भारतके प्रसिद्ध २६ वशोमेसे अधिकतर समाप्तिके कगारपर हैं। सर्वश्रेष्ठ थारपारकर-वशको भी सकरित कर समाप्तिकी ओर धकेला जा रहा है। स्वदेशी वशपालकोके विश्वासपर कुठाराघातके अनेक कुप्रयास हो रहे हैं। क्रासब्रीडिग गायोका दूध रोग-युक्त, शक्तिहीन एव कम घृतवाला होता है तथा बैल कृषिकार्यके अयोग्य उत्पन्न होते हैं। यदि स्वदेशी 'राठी' आदि उन्नत वशोसे कम दुग्ध देनेवाली गायोका मेल कराया जाय तो दूध पद्रह किलो दैनिकतक देने लगती हैं, बैल भी कृषि-योग्य देती हैं। यह स्वदेशी वश अकालमे कम आहारसे भी जीवित एव उपयोगी बना रहता है जबकि विदेशी वश मृत्युको प्राप्त होता है।

ऐतिहासिक निर्णय

गत कुम्भ-मेला उज्जैनमे गोभक्त-समूहा सस्थाओ साधु-सम्प्रदायो एव सामाजिक सस्थाओके प्रतिनिधियो तथा अधिकारियोकी गोष्ठीने सुझाव दिया था कि स्वदेशी गोवशसे कृषि, खाद्य, ऊर्जा परिवहन, खाद औषधियाँ आदि अनेक लाभ एक साथ प्राप्त होते है, जबकि इतने लाभ अरबो रुपया लगाकर अन्य उद्योगोसे सम्भव नहीं। गोवश भारतीय सभ्यता एव सस्कृतिका मूल स्रोत है। उसकी हत्या देशकी अस्मितापर प्रहार है तथा आर्थिक नैतिक एव आध्यात्मिक पतनके लिये उत्तरदायी है।

गोवशकी हत्या कर मास चर्म, रक्त एव अस्थियो आदिका निर्यात राष्ट्रिय अपराध है। स्वदेशी गो-वशका पालन, सवर्धन एव सरक्षण राष्ट्रिय समरसता एकता तथा अन्य कार्योके लिये श्रेयस्कर है। राज्य-सरकारे सविधान, न्यायपालिका तथा भारतीय सम्मानकी सुरक्षाके लिये इस पावन कार्यको अपनाये। जनता ग्राम-ग्राम तथा प्रत्यक

नगरम गोपालन एव गोसरक्षणके कार्यम जुटे।

महान्यायवादियोके तर्क

उच्चतम एव उच्चन्यायालय जबलपुरमें सरकारी अधिवक्ताआने अपने तर्कोंम समस्त गोवशको न केवल बहुत उपयागी खाद देनवाला अपितु इसके द्वारा महान् ऊर्जा भी प्राप्त होना सिद्ध किया है। इससे वायोगैस-उत्पादनका बढना भी प्रमाणित किया। सन् १९८९ की अ० भा० साख्यिकीके अनुसार रासायनिक खादसे भूमिकी उर्वरा-शक्ति घटी तथा पानी एव खादकी खपत बढ रही है। इस कारण अनेको सकट उत्पन्न हो रहे हैं। रासायनिक खाद एव औपधियोके निमित्त बन रहे कारखानोद्वारा प्रदूपण बढ रहा है तथा भोपाल-जैसी त्रासदीका सकट छाया रहता है। जबकि गोबर-गोमूत्रकी खादसे भूमिकी उर्वरा-शक्ति बढती है एव पानी तथा खादकी खपत कम होती है। भारतको मरुस्थल बननेसे रोकनेके लिये इसी खादका प्रयोग बढाना आवश्यक है। नये-नये वैज्ञानिक-अध्ययन तथा आविष्काराने प्रमाणित किया है कि पर्यावरण-सतुलन रखने तथा हजारो-हजार करोडकी विदेशी मुद्रा वार्पिक बाहर जानके प्रवाहको रोकने आदिके लिये न्यायपालिकाने सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-निरोध' कानूनको आवश्यक बताते हुए गोपालन एव गोसवर्धनका मार्ग प्रशस्त किया है।

आँकड़े

२ एकड भूमिसे कम जोतवाले ९० प्रतिशत तथा प्रतिव्यक्ति आधा एकडसे भी कम भूमि भारतमें है। बैल केवल ३ करोड शेप हैं जबकि कृपि, खाद परिवहन, खरास काल्हू एव रहट आदि कार्योंके लिय २१ कराडकी आवश्यकता है। ब्यायी गाय एक करोडसे कम होनेसे जीवन एव शक्तिदाता घृत, दूध, दही एव मट्ठा (छाछ) आदिक प्राय अकालसे घातक रोगाके निवारणार्थ डॉक्टरो, औपधिया एव यन्त्रापर अरबो रुपया व्यय होनेके उपरान्त भी महँगे उपचारकी क्षमता न होनेसे गरीब मृत्युके मुखम प्रवेश कर रहे हैं।

गोघृत मक्खन, दूध दही एव छाछ तथा गोबर-मूत्रसे अनका असाध्य रोगाका उपचार सहजम हाता है। गोबर-मूत्रकी खादस उत्पन्न अन्न साग-सब्जी एव चारा नीरोग तथा शक्तिशाली होता है। जबकि रसायन-खादसे शक्तिहीन एव रोग-उत्पादक होनेसे पशु और मनुष्योकी मृत्यु हो जाती है। इन वस्तुओपर अधिक अनुसधानसे अन्य अनेक और लाभ भारत एव मानव-समाजको मिल सकते हैं। रासायनिक खाद एव यन्त्री कृपिसे अनेक भयकर हानियाँ तथा गोबर-मूत्रकी खाद एव बैलोकी कृपिसे अनेक महत्त्वपूर्ण लाभ होते हैं।

महँगे ट्रैक्टर, पुर्जे, डीजल, रासायनिक खाद एव औपधियाँ आदि क्रय करना गरीब किसानक वशकी बात नहीं, इसलिये बेकारी बढती है। यदि आवश्यक सुधार न हुए तो भारतका महान् कृपि-उद्योग शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। क्याकि स्वदेशी गावशको समाप्त कर पेट्रोल, डीजल एव आवश्यक यन्त्रो तथा रासायनिक खाद औपधियो आदिकी सप्लाई बदकर भारतका पगु बनानेका यह विदेशी षड्यन्त्र है। इसका समाधान गोपालन, गोसेवा, गोसवर्धन एव गोसरक्षण ही है।

विडम्बना

जिस गोवशकी सेवा-सुरक्षा महर्पिया, अवतारा एव वीराने अनेक कष्ट सहन कर की, आज उसी गोवशकी दैनिक ५० हजार हत्याएँ केवल अनुचित मत-प्राप्तिकी लालसाम कराकर भारतको गढेमे धकेला जा रहा है तथा गोपालन, गोसवर्धनके कार्योंम बाधा उपस्थित की जा रही है। यह कैसी विडम्बना है।

समयकी पुकार

अनेक अडचनासे सामना करते हुए भगवान् श्रीकृष्णके 'क्षुद्र हृदयदौर्बल्य त्यक्त्वोत्तिष्ठ परतप' घोपको स्मरण कर गोपालन-गासवर्धन एव गोसरक्षण-कार्यम तत्पर होकर मानव समाज एव भारतके कल्याणके लिये उद्यत हा। देश, समाज-सवा एव धर्म आदिके नामपर चल रही सभी सस्थाएँ, आश्रमधारी एव अन्य सभी पूज्य साधु-समाज १९६६ की भाँति जनता-जनार्दनका जाग्रत् करनक लिये गोपालन-गासवर्धन एव गोसरक्षणक पावन कर्मम जुटकर उच्च स्वरसे पुन घाप कर—

दश-धर्मका नाता है—गौ हमारी माता है।
श्रीगगा, गीता गोमाता—मानवताका निर्माता।
भारत एव विश्वका सचालन—गासरक्षण गापालन।

गौशालाके प्रति समाजकी दृष्टि

(श्रीसूर्यकान्तजी जालान)

गौशालाके सम्बन्धमे जिनको जिज्ञासा होती है, वे प्राय निम्नलिखित प्रश्न पूछते हैं—

(१) गौशालामे कुल कितनी गाय हैं?

(२) गौशालामे कितना दूध-उत्पादन होता है?

(३) गौशालाके पास कुल कितनी भूमि है?

(४) गौशालाके आयका साधन क्या है?

यदि समाज इन प्रश्नोकी अपेक्षा गौशालाके प्रति अपनी जिज्ञासाको थोडा विकसित कर ले तो गौशालाकी स्थितिमे स्वत परिवर्तन आने लग जायगा। जैसे गौशालामे गाये कितनी हैं? इस प्रश्नके साथ ही गायोमे दुधार गाय, बिना दूधकी गाय, साँडोकी सख्या तथा नस्ल एव उनका रिकार्ड, बछियोकी सख्या इत्यादिकी पूरी जानकारी करे तो यह प्रश्न पूर्ण होगा। क्योकि गौशालामे न केवल दुधार गाये रहती हैं, बल्कि बैल, बाछे-बाछी तथाकथित अनुपयोगी—सेवा-योग्य गाय—इस प्रकार सम्पूर्ण गोधन रहता है।

इसी प्रकार गौशालाम दूध पूछते समय दुधार गायाके साथ दूध दे सकनेवाली गायोका पूरा औसत कितना है, यह जानकारी करनसे तुलनात्मक अध्ययन स्वत हो जाता है।

तीसरा प्रश्न पूछा जाता है गौशालाके पास अपनी भूमिके सम्बन्धमे। उस विषयमे यह कहना है कि सम्पूर्ण भूमिके सम्बन्धमे जिज्ञासा होनी चाहिये, जैसे कृषियोग्य भूमि, वन वृक्षारोपण-सम्बन्धी भूमि, सिचित-असिचित भूमि। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि कितनी भूमिका उपयोग गायोक लिये चारा लगानेपर हो रहा है, वह पर्याप्त है या अपर्याप्त? यह जानकारी करनेसे ही गौशालाकी भूमिका पूर्ण विवरण ध्यानम आयेगा।

गौशालाकी आयका स्रोत जाननेके लिये पुरुषार्थसे हुई आय या स्वाभाविक क्रमसे आया दान सरकार एव सस्थाआस मिला अनुदान या पूर्वजाके द्वारा सचित निधिसे विना परिश्रमके मिलनेवाला ब्याज और भाडेकी आय—इन सभीकी जानकारी आवश्यक है।

इस प्रकार समाज गौशालाको देखनेकी दृष्टि सूक्ष्म कर ले और गौशालाके प्रति अपने दृष्टिकोणमे परिवर्तन कर ले तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि गौशालाओका ह्रास हो।

गौशालाओके विषयमे पिछले कुछ वर्षोमे कार्य एव अध्ययन करनेसे बहुत अच्छे अनुभव सामने आये हैं। अपने ऋषि-मुनियो, महापुरुषो एव सतोकी कही हुई बात अक्षरश सत्य है कि गौशालाआमे सच्चे मनसे काम करनेपर सासारिक बाधाएँ, साधनोका अभाव रह ही नहीं सकता। गौशालाम कार्य करनेके पूर्व सर्वप्रथम विचारपूर्वक योजना बनानी चाहिये कि हमे क्या करना है और कैसे करना है?

गौशालाका कार्य अत्यन्त आवश्यक एव लाभकारी है। यह प्रत्यक्ष देवताकी पूजा है। विज्ञानके इतने आविष्कार होनेके पश्चात् भी आजतक ऐसी कोई तकनीक विकसित नहीं हुई और न हो सकनेकी सम्भावना ही है कि वह घास-फूसको अमृत-जैसे दूधमे परिवर्तित कर सके। जो हमलोग नहीं खाते हैं, उसे खाकर गाय माँके समान या उससे भी अच्छा पूर्ण आहार—दूध-जैसा पदार्थ देती है। माँका दूध तो केवल कुछ महीनेतक प्राप्त होता है, परतु गायका दूध तो हमें जीवनभर मिलता रहता है। अत गायका दर्जा माँसे भी ऊपर है। इसीलिये गौ पूजनीय तथा वन्दनीय भी है। परतु देश,काल एव परिस्थितियोके अनुसार केवल पूजा करना सार्थक नहीं होगा, बल्कि हमें पूजाके साथ-साथ अपने कर्तव्यो एव दायित्वोका भी पूरा निर्वाह करना चाहिये।

देशमे समृद्धि लानेके लिये 'पूर्ण गोहत्या-बदी'का केन्द्रीय कानून बनना आवश्यक है। देशम पूर्ण गोहत्या-बदीके साथ-साथ गोसवर्धन और गोपालनपर भी विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

गोसवर्धनका दायित्व गौशालाकी ओर आता है। देशम लगभग ५०० जनपद हैं, लेकिन गौशालाएँ २८०० से भी अधिक हैं। एक-एक गौशाला एक-एक जिलेके

सवर्धित करनका सकल्प ले तो कुछ ही वर्षोंमे दिखायी देने लग जायँगे और दस-पद्रह वर्षों बाद दूध-दहीकी नदी बहनेवाली कहावत चरितार्थ ो है। इसलिये समाजके लोगोको गौशालाओके ा व्यवस्थापर पुनर्विचार करके उनको विकसित हिये, ताकि गौशालाएँ अपने दायित्वोका निर्वाह । गोसवर्धनके साथ गौशालाके कार्यकर्ताओको इस ूरा जोर देना चाहिये कि हमारे जिलेसे एक भी ने-हेतु नहीं जायगी और जो भी व्यक्ति उन्ह उन रोकी हुई गायोको गौशाला स्वय सँभालेगी। पालन एव गौशालाकी एक सीमा है। उससे गाय गौशाला नहीं रख सकती। इस समय देशमे आँकडोके अनुसार १९ करोड गोवश हैं। देशभरकी पूर्ण क्षमताके साथ गायोको रखना चाहे तो भी ्से ज्यादा गोवश रखना सम्भव नहीं है। अत किसान गाय नहीं पालेगा, तबतक वे पूर्ण सुरक्षित र्धित नहीं हो सकतीं। आज भी भारत भाग्यशाली सकी ७२% जनसख्या गाँवोमे रहती है। गायोको गाँवाको खुशहाल बनाया जा सकता है। इससे ुई नगरीय व्यवस्थामे हम मददगार होगे तथा बढ रहे असतुलनका सतुलित करनेमे गोवश भी होगा।

ाशीकी 'जीवदया-विस्तारिणी गोशाला' के अन्तर्गत र गोशाला'मे हुए कार्योके आधारपर यह सिद्ध हो कि प्रयत्न करनेके पश्चात् भी गोशालाम सेवायोग्य तथाकथित अनुपयोगी गायो) की सख्या ५०० भी ा सकी। जबकि यह गोशाला गोरक्षासे पकडी हुई ० से भी अधिक गायोको सरक्षण दे चुकी है। ामे आयी हुई गायोकी समुचित व्यवस्था करनेके उसमेसे दूध देनेवाली या दे सकनेवाली गाय, ग्य बैल बाछा-बाछी एव साँडोका किसानोमे ा कर दिया जाता है। जिस गोवशको किसान ोगी मानकर लेनेसे इनकार कर देते हैं वैसे गोवश ाम रह जाते हैं। इतना सब कुछ होनेके बावजूद भी स गोशालाके पास ५०० सेवा-योग्य गाये नहीं हो सकीं तो पूरे देशमे यदि गायाकी सम्पूर्ण देख-रेख हो तो ५ लाखसे अधिक सेवा-योग्य अथवा तथाकथित अनुपयोगी कही जानेवाली गाये नहीं होगी। वैसे यहाँपर यह भी प्रयोग सिद्ध हो चुका है कि कोई भी गाय जबतक गोबर-गोमूत्र देती है, तबतक अनुपयोगी नहीं हो सकती। एक वृद्ध गाय लगभग ३-४ किलो भूसा खाती है और १० किलो गोबर एव औसतन १७ लीटर गोमूत्र देती है। एक गायके गाबरसे लगभग दो रुपये प्रतिदिनकी गोबर-गैससे ऊर्जा, १०-१२ किलो खाद ओर गोमूत्रसे मिलनेवाली यूरिया खाद या कीटनाशक दवाकी कीमत गायके भोजनके मूल्यसे कई गुना अधिक है। इसलिय गाय आर्थिक दृष्टिसे बहुत लाभदायक है। केवल उसकी सार-सँभाल ठीक ढगसे की जाय।

पाश्चात्त्य सस्कृतिके प्रभावमे आकर हमारी सरकार एव तथाकथित वैज्ञानिको तथा डॉक्टरोने खूब जोर लगाकर यह भ्रामक प्रचार किया कि देशमे दुग्धकी आपूर्ति विदेशी गायो (जरसी, होलेस्टीन, फ्रीजियन एव डेविड ब्राउन) को रखनेसे ही हो सकती है, परतु सरकारने भी कई दशक भटकनके बाद अब यह जान लिया है कि हमारी परिस्थितिमे भारतीय नस्लकी गाये ही ज्यादा उपयोगी है। इस कार्यके लिये गुजरात प्रदेशकी सरकारकी सराहना करनी पडेगी कि उसने इतने दबावके बावजूद भी अपने यहाँके गीर-नस्लपर निरन्तर काम किया, जिसके परिणाम-स्वरूप गुजरातम अनेक स्थानोपर ४० लीटर दूध देनेवाली भारतीय गाय सुलभ हैं। भारतीय गायोपर विदेशोमे भी शोध चल रहा है और इजराइलने गीर-नस्लकी गायसे १२० लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन करके दुनियाको दिखला दिया कि भारतीय गाय आज दूधकी सर्वश्रेष्ठ गाय है। हरियाणा, शाहीवाल, गगातीरी गायापर भी विदेशोमे काफी कार्य हुआ है ओर उसके परिणाम बहुत अच्छे आये हैं। पूरे देशकी आवश्यकता, मानसिकता एव सुलभ साधनाके आधारपर हमारे दशक लिये औसतन १० लीटर दूध देनेवाली गाय सर्वाधिक उपयोगी प्रतीत होती है क्योंकि इतना दूध देनेवाली गायोके बछडे कृषि-कार्यके लिये बहुत उपयोगी हैं। २० लीटरसे अधिक दूध देनेवाली गायोके बछडे सुस्त होते हैं, जो किसानोके लिये बहुत उपयोगी नहीं होते।

इसलिये गोसेवाकी दृष्टिसे राष्ट्रिय सोच एव परिवेशमे हमारा अनुरोध है कि अपनेको २० लीटरसे ऊपर दूध देनेवाली गायाके बारेमे विचार नहीं करना चाहिये।

देशमे बैलोको बचानेकी एक विकट समस्या है। कृषिके क्षेत्रमे आज यान्त्रिक दखल बढनेसे देशमे बैलाके काम घट रहे हैं। बैलाके विकल्पके रूपमे आज ट्रैक्टरका उपयोग होता है। जबकि ट्रैक्टर तेल खाता है और धुआँ छोडता है। तेल हमको विदेशसे आयात करना पडता है और उससे निकला हुआ धुआँ पूरे वायुमण्डलको दूषित करता है। इसके विपरीत बैल घास खाता है और गोबर तथा मूत्र देता है, जिसकी हमारे खेतोको नितान्त आवश्यकता है। इसलिये ट्रैक्टरकी तुलना बैलोसे किसी भी प्रकार नही की जा सकती।

गोवशको समाप्त करनेकी दिशामे सरकारने एक नया कुचक्र रचा है। देशमे जगह-जगह यान्त्रिक कतलखाने खोल रही है, जिसमे विदेशी मुद्रा कमानेकी दुहाई देते हुए वह गोवश कटवा रही है और दूसरी तरफ विदेशी दबावमे आकर गोबरका आयात कर रही है।

कृषि-मन्त्रालयकी एक विज्ञप्तिके अनुसार देशमे १२ करोड ९५ लाख ८० हजार हेक्टेयर भूमि ऊसर हो गयी है। इसको सुधारनेका एकमात्र उपाय गोबर है। कृषि-वैज्ञानिकोने यह सस्तुति भी दी है कि देशमे गोवशकी सख्या बढायी जाय और इनका वध नियन्त्रित किया जाय। पूर्वमे भी जो कानून बने हैं वे कहीं भी उपयोगी गोवशका वध करनेकी इजाजत नहीं देते, परतु देशमे बिगडी हुई व्यवस्थामे अनुपयोगीके नामपर उपयोगी गोवश ही ज्यादे काटे जा रहे हैं। इसमे एक विडम्बना यह भी है कि प्राय बीमार, बूढे जानवराका भक्षण स्वास्थ्य-विभागके अनुसार वर्जित है और उपयोगी गोवश कट नहीं सकते। फिर भी देशमे सरकारी आँकडोंके अनुसार २९,२०० गोवश प्रतिदिन काटे जा रहे हैं। जबकि गोसेवामे लगे कार्यकर्ताओके अनुसार यह सख्या दुगुनी है।

'सुरभि-शोध-संस्थान'का यह निश्चित मत है कि इस देशमें गोवशको बचाकर उसे विकसित किया जाय और उसमें दसगुनी वृद्धि कर दी जाय तो इस देशका स्वरूप आर्थिक स्थिति एव वातावरण निश्चित बदल सकता है।

देशमे गायको बचाने और उसको बचाकर उससे देशकी परिस्थिति बदलनेके लिये एक ठोस कार्य-योजना इस सस्थानने बनायी है, जिसका सक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है—

सम्पूर्ण देशको ५-१० अञ्चलामे बाँटकर हर अञ्चलमें एक बडा प्रयोग तथा प्रशिक्षणका महत्त्वपूर्ण केन्द्र स्थापित करना। फिर उस केन्द्रके माध्यमसे सभी मण्डलामे एक-एक गोशाला तैयार करना। मण्डलके बाद इस स्थितिको जिला तथा खण्ड-स्तरातक ले जानेपर ही यह योजना सफल हो पायेगी।

देशमे बढ रहे वायु एव जलके प्रदूषणके कारण गायोमे बीमारियाँ बढ रही हैं। यह देखनेमे आया है कि गायाको बीमार करनेमे सर्वाधिक योगदान विदेशी गायाका है। आजकल होनेवाली प्रचलित बीमारियामे ८० प्रतिशत बीमारियाँ उन्हींके द्वारा फैल रही हैं। ऐसी स्थितिमे गायाकी चिकित्साके लिये हमको एलोपैथिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेदिक एव घरेलू उपचार—इन चारो पद्धतियोंका विकसित करना चाहिये। सरकार पाश्चात्य प्रभावके कारण अपनी पूरी शक्तिसे ऐलोपैथिक उपचारके विस्तारमे लगी है यह अव्यावहारिक और त्रुटिपूर्ण सोच है। आज ऐलोपैथिक डॉक्टरोकी जितनी आवश्यकता है, वह आनेवाले दस वर्षोंमे भी पूरी नहीं हो सकती और यदि पूरी हो भी जाय तो उनका शुल्क और उनकी महँगी-व्यवस्था हमारे साधारण किसाना एव गोपालकाके लिये सम्भव नहीं है। इसलिये देशके समाजसेवी सगठना एव सामाजिक सस्थाओसे यह अनुरोध है कि वे इनकी और विधियापर भी निरन्तर शोध-कार्य करत रह तथा सफल प्रयोगोके प्रचार-प्रसारपर ध्यान द।

देशमे खादकी आपूर्तिके लिये बहुत बडी पूँजी लगाकर बडे-बडे कारखाने खोले गये। फिर भी आज बहुत बडी मात्रामे खाद विदेशासे आयात करनी पड रही है। यदि इसकी जगह गोमूत्रका प्रयोग यूरिया खादके रूपमे किया जाय तो विदेशी मुद्रा भी बचेगी और लाभ भी होगा। गाय जहाँपर खडी होती है वहाँपर जो गोमूत्र गिरता है उस

जगहकी मिट्टीको खेतोमे यूरियाकी तरह छींटनेस वह यूरिया खादका एक बहुत अच्छा और सफल विकल्प है। कीटनाशक दवाओसे स्वास्थ्यपर पडनेवाले विपरीत प्रभावसे पूरा विश्व चिन्तित है। इसलिये अनेक देशोने इसपर पाबदी लगा रखी है, परतु भारतमे गोवशकी हो रही उपेक्षाके कारण सरकार यह हिम्मत नहीं जुटा पा रही है। गोमूत्रमे बराबरका पानी मिलाकर पेड-पौधोपर छिडकाव किया जाय तो वहाँपर कीडोसे होनेवाले नुकसानसे बचाव हो सकता है।

भारतीय गायके गोमूत्रसे कामधेनु-वटी बनाकर १११ रोगोपर सफलतापूर्वक इलाज किया गया है। यह प्रयोग हमलोग भी अपने स्तरपर कर रहे हैं, जिससे काफी लाभ हो रहा है। नगरमे बढते हुए कूडेकी समस्याका भी गायका गोबर सफल निदान है। कूडेके ढेरपर गायके गोबरको पानीमे घोलकर छिडकाव कर देनेसे उसकी दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है। उसमे पलनेवाले हानिकारक कीडोकी जगह लाभदायक कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं और यह कूडा कुछ ही दिनोमे एक सफल खाद बन जाता है।

देशमे ऊसर भूमिको सुधारनेकी एक विकट समस्या है। इतने बडे पैमानेपर ऊसर भूमि और बढते हुए ऊसर दोनोको ठीक एव नियन्त्रित करनेका एकमात्र उपाय गोवशकी रक्षा है। ऊसर भूमिमे गायाको बाँधकर उसके कच्चे गोबर-गोमूत्रकी पर्याप्त मात्रा देनेसे भूमिका ऊसरपन बहुत शीघ्र ही ठीक होने लगता है। इसलिये हमारे ऋषि-मुनियोने किसी भी परिस्थितिमे गायके वधका निषेध किया है।

गरीब किसानोकी आर्थिक स्थिति ठीक करनेका एकमात्र उपाय गाय है। किसानोको गोपालनके बारेम ठीक प्रकारसे बताया जाय और वह उस गायकी ठीकसे सेवा करे तो एक लीटर दूध देनेवाली गाय भी उसकी आर्थिक स्थितिको परिवर्तित कर सकती है। अपने घरमे बने चावलसे निकले माड, सब्जीके छिलके एव घास-फूस आदिसे भी उस गायका पोषण हो जाता है। उस गायसे प्राप्त दूधसे उसका भोजन बन जाता है, गायका बछडा बच्चोका खिलौना होता है। इस प्रकार वह गाय उसके परिवारका अविभाज्य अङ्ग बन जाती है और हर डेढ वर्षमे गायसे मिलनेवाला बच्चा उसकी पूँजीगत आय होती है।

गायके दूधमे एक अद्भुत औषधीय गुण है। गायके दूधसे बनी छाछ किसी भी प्रकारके नशे जेसे—गाँजा भाँग, चिलम, तबाकू, शराब, हीरोईन, स्मैग इत्यादिसे होनेवाले प्रभावको ही कम नहीं करती, अपितु इसके नियमित सेवनसे नशेका सेवन करनेकी इच्छा भी धीरे-धीरे कम हो जाती है। गायके दूधमे स्वर्ण-तत्त्व पाये जाते हैं। यह तत्त्व माँके दूधके अतिरिक्त दुनियामे अन्य किसी भी पदार्थमे नही मिलता। यह बुद्धिवर्धक, बलवर्धक एव स्वास्थ्यवर्धक भी है। इस प्रकार गाय तथा गोवश हमारे लिय हर दृष्टिसे उपयोगी हैं। आज इसके व्यावहारिक रूपको समझनेकी विशेष आवश्यकता है।
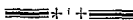
मानव और गाय

अपनेका अनेक प्रकारसे कष्ट देनेवाले एक मानवसे गाय प्रश्न करती है—'अरे मानव! तुम मुझे क्यो इतना कष्ट देते हो? आखिर तुमसे समाजका क्या प्रयोजन सिद्ध होता है? देखो, मेरे गोबरसे उपले बनते हैं। गोबरसे उपज बढती है। गोबर ईंधनके काममे उपयोगी होता है। ईधनमे उपल भी उपयोगी होते है। मेरे चमड़ेसे 'भेरी' इत्यादि वाद्य बनाये जाते हैं, लोग पादत्राण बनाते है। मेरी सींगोसे तरह-तरहकी उपयोगी वस्तुएँ बनती है। फिर मेरे मूत्र, गोमय, दूध, घी और दहीसे पञ्चगव्य बनाकर उसे पीकर लोग अपनी देह और मन शुद्ध करते है। मेरा दूध सबको प्रिय है। आरोग्यवर्धक है। हवन इत्यादि देवकार्योंके लिये घी अनिवार्य है। एक नहीं, दो नहीं अपना वर्णन करती जाऊँ तो उसका पार नहीं होगा। मै जीवित रहूँ या मरूँ सब रीतिसे उपयोगी हूँ, तू बोल, तू किस कामका है?'

—डॉ० (श्रीमती) रुक्मिणा गिरिमाजी

गोपालनकी समस्याएँ और समाधान

(श्रीरामप्रसादजी अवस्थी, एम्०ए०, शास्त्री साहित्यरत्न, सगीतरत्न मानस-तत्त्वान्वेषक भागवतरत्न)

नमो गोभ्य श्रीमतीभ्य सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम ॥

गोरक्षा हमारे राष्ट्रका सर्वोत्कृष्ट अङ्ग माना गया है। प्रत्येक धर्मपरायण व्यक्ति इसे माताके नामसे पुकारता है और सम्मानकी भावनासे इसकी पूजा करता है। स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद गोमाताकी जितनी उपेक्षा हुई, वह सबके सामने है। हृदयम रचमात्र भी इसके प्रति करुणाका स्थान नहीं रहा, इससे बढकर और लज्जाकी बात क्या हो सकती है। कितने सघर्षोके उपरान्त महात्मा गाँधीने विदेशियोके अत्याचारासे अहिसावृत्तिकी कठिनतम साधनासे और भक्तराज नरसीजीकी प्रार्थना—'*वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे*' स प्रेरणा लेकर और श्रीगीताजीमे भगवान् श्रीकृष्णके वचन—'**धेनूनामस्मि कामधुक्**'को जीवनमें क्रियात्मक-स्वरूपमे उतारकर कई भाषणोमे यह कहा था कि 'स्वतन्त्रता प्राप्त होनेपर प्रथम यह कार्य होगा कि 'गोवध' सदाके लिये भारतभूमिसे बिदा हो जायगा और गोवधको मैं अपना ही वध समझूँगा' इत्यादि। किंतु स्वतन्त्रताप्राप्तिके ४७ वर्ष बाद भी अभीतक इस दिशामे रचमात्र भी किसी प्रकारका आशाजनक कार्य नहीं हुआ। ९ करोड रु० लगाकर एक अरब विदेशीद्वारा मेढाक नगर आन्ध्र प्रदेशमे वैज्ञानिक ढगकी वधशाला खाली गयी है, जिसमे प्रतिदिन ३० हजारकी सख्यामे गोवध होता है।

अभी कुछ दिनाकी घटना है राजस्थानमे अकाल पडा था। लाखाकी सख्यामे गाये लकर वधिक वधशालामे झुड-के-झुड लेकर पहुँच जाते थे। मैने स्वय जब हजारोकी सख्यामे इन गोमाताओको जाते देखा तो मेरा हृदय द्रवित हो गया। कई दूध देनेवाली गोमाताओकी टाँगें तोडकर उन्हे अनुपयोगी सिद्ध किया गया था। स्थानीय आर्यसमाजके व्यक्तियाने इनको मुक्त करानेकी योजना बनायी और सघर्ष लेनेके बाद मुक्त भी कराया। बादमे उसमसे ९०% गोमाताएँ प्रसूता हुईं गोमाताओके भक्त कहे जानेवालासे मेरा निवेदन है कि इसपर गम्भीरतासे विचारकर इन गौ माताओपर हृदयसे करुणा करे। बडे-बडे नगरोमे ग्रीष्ममे सैकडो गोमाताएँ और गोवशज भूखे-प्यासे धूपमें बैठे रहते हैं। नालियाका पानीतक सूख जाता है। उन गोभक्तोका यह सब देखनेपर भी इनके प्रति रचमात्र दयाका हृदयमे सचार नहीं होता। जल पीनेके लिये पहले भक्तलोग जल पीनेका प्रबन्ध करते थे। कैसी विचित्र विडम्बना है कि गोभक्त कहे जानेवाले दूकानोपर फ्रीजका ठडा पानी पी रहे हैं और उनकी गौ माताएँ सडकोपर पानीके बिना प्याससे तडप रही हैं। गगनचुबी भव्य अट्टालिकाओमे शीतकालमे हीटरका प्रयोगकर चैनकी नींद ले रहे हैं और गोमाताएँ सडकोपर बैठे हुए शीतसे ठिठुर रही हैं। गोपालकोके पास नगरोमे स्वय रहनेका स्थान तक नहीं है हिन्दूकी आज यह विवशता है। जबकि हिन्दूके लिये कहा जाता है—'**गोषु भक्तिर्भवेद्यस्य प्रणवे च दृढा मति**' जिस प्रत्येक हिन्दूके घरमे गोमाता, भगवान्‌की प्रतिमा, तुलसीवृक्ष न हो वह हिन्दूकी सज्ञामे कैसे आ सकता है? चरागाह पिंजरापोल तो दूर रहे, गायोको कहीं खडे होनेतकका स्थान नहीं है।

जिस राष्ट्रकी भौतिक स्वतन्त्रताके साथ मनोमय-विज्ञानमय शरीरकी स्वतन्त्रताका पलायन हो जाता है, जिस राष्ट्रकी अस्मिता गौरव, सभ्यता एव सस्कृतिके सरक्षक शास्त्रा एव पूर्वजाके इतिहासापर अनादर एव उपेक्षाका भाव हो जाता है, उस राष्ट्रकी आत्मा मृतप्राय हो जाती है। आज हमारा सनातन गौरवशाली भारत देश इसी सक्रामक स्थितिसे गुजर रहा है। यह धर्म-निरपेक्षताकी देन है। अपने देशमे जब धर्म राष्ट्रकी आदर-दृष्टिका केन्द्रबिन्दु था तब उसके अपमानित होनेपर प्रत्येक श्रेणीके स्त्री-पुरुषका रक्त खौल उठता था और एकजुट होकर सब लोग अनादर करनेवालोको मुँहतोड उत्तर दे देते थे, पर विडम्बना है कि आज ऐसा नहीं हो पा रहा है। हमारे राष्ट्रमे आज भयावह परिस्थिति है। इस विषम परिस्थितिमे गोपालन किस प्रकार हो स्वय एक जटिल समस्या है। शादी-विवाहमे लाखों रुपयेका सडकोपर अपव्यय करके हम अपना बडप्पन

प्रदर्शन करनेमे नहीं हिचकिचाते, क्या यही द्रव्य एकत्र कर गोमाताओके लिये गोशालाएँ नहीं खोली जा सकतीं? आज व्याख्यानो, सम्मेलना, समाचार-पत्रोमे केवल गोमाताकी महिमागान करनेसे कुछ भी प्राप्त होनेवाला नहीं है। इसके लिये गोभक्त महानुभावाको ठोस कदम उठाने होगे। द्रव्यको अपव्ययसे बचाकर गोशालाकी स्थापनाके हेतु लगाया जाय। कर्मठ सच्चरित्र व्यक्ति जो आस्थावान् हैं, जिनका गोमाताके प्रति सेवा-भाव है, उनको सेवाम रखा जाय। गोचारणके लिये धनी-मानी श्रेष्ठ महानुभावाको चाहिये कि वे भूमिदान कर इनकी रक्षाकी व्यवस्था करे। बडे कष्टके साथ लिखना पड रहा है कि कुछ गोशालाआका नाम 'आदर्श गोशाला' ता है, किंतु उन्हीं गोशालाओसे हजारोकी सख्यामे गाय कलकत्ते आदि स्थानोको भेजी जाती हैं। अभी भी ऐसे जीवत मूर्तिमान् गोभक्त हैं, जिन्हाने अपनी जमीन बेचकर गोमाताआको वधिकोसे मुक्त कराया। अनेको सतोने इन गोमाताओका दर्शन कर बडी प्रसन्नताका अनुभव किया। कई गोशालाओके पास गाचरभूमि नहीं है। गोभक्तासे निवेदन है कि ऐसे भयावह समयम जहाँ महँगाई अपने ताण्डवपर है, अपनी उदारतासे मुक्तहस्त होकर नगर-नगरमे गोशालाएँ और उनके रख-रखावके लिये चरागाह, पीनेके लिये पानीकी व्यवस्था हो तो इन गोमाताआके आशीर्वादसे हम सशक्त मेधावी राष्ट्रके सच्चे सपूत कहला सकते हैं। गोमाताकी महिमाका वर्णन करनेमे वर्णमालाके अक्षर समाप्त हो जाते हैं।

अभी कुछ समय पूर्व एक पुस्तक अमेरिकाके कृषि-विभागद्वारा प्रकाशित हुई थी—'The cow is a wonderful laboratary (गोमाता एक आश्चर्यजनक रसायनशाला है)। समस्त दुग्धधारी चतुष्पाद जीवामे गोमाता ही, एक ऐसी है, जिसकी आँत १८० फुट लबी होती है। इसकी विशेषता यह है कि जो चारा चबाती है, उससे जो दुग्धका निर्माण होता है, वह माताके दूधसे भी बढकर है।

जननी जनकर दूध पिलाती केवल साल छमाहीभर।
गोमाता पय सुधा पिलाती रक्षा करती जीवनभर॥

मैनपुरी नगरमे एक डॉ० कपूर थे। उन्होने ९० वर्षकी आयुमे पार्थिव शरीर छोडा। इस अवस्थामे भी उनका एक बाल भी श्वेत नहीं हुआ था। वे नित्य बालोमे गो-दुग्धके फनका प्रयोग करते थे। उन्होने भी एक गोशाला नगरमे स्थापित की थी, जिसकी आज केवल भग्न इमारत शेष बची है। मधुमेहके अनेको रागी उन्होने गोमूत्रके प्रयोगसे शत-प्रतिशत आरोग्य किये थे।

गोवत्स सहस्रा गायाके बीचमे अपनी माताको ढूँढकर दुग्धपान करता है, जबकि भैंसका बच्चा अपनी माँको ढूँढ नहीं पाता। गोमाताके दुग्धमे कैरोटीन नामक पदार्थ भैंसके दूधसे दस गुना अधिक है। भैंसका दुग्ध गर्म करनेपर उसक पोषक तत्त्व मर जाते हैं और गायके दुग्धको गरम करनेपर पोषक तत्त्व वैसे ही विद्यमान रहते हैं। अधिक दुग्ध देनेवाली गायाम राठी, साचेर, शाहीवाल, गीर सिंही इत्यादि अन्तर्जातियाँ हैं। केवल घास खाकर ये प्राय २० लीटर दूध देती हैं।

अभी कुछ प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुए हैं। गोदोहन-वेलाके पूर्व प्रात काल वशीकी ध्वनिमे राग ललित, राग विभास, भैरवी, आसावरीके स्वर निकालनेपर अल्प समयमे अतिशीघ्र दुग्ध निकल आता है। कुछ गोमाताएँ दुहाते समय नेत्र बद कर लेती हैं। इससे यह मालूम होता है कि नन्दनन्दन श्यामसुन्दरकी वशीसे गोमाताका घनिष्ठ सम्बन्ध है। भैरवी और आसावरीके स्वराम मैंने स्वय प्रत्यक्ष देखा और दिखाया है। उत्तर काशीके निकट एक ग्राम है, जहाँ वर्षभर गोमाताओका गोमूत्र सचित कर पाण्डु मृत्तिका मिलाकर घरोकी पुताई होती है, जिसका प्रभाव तत्क्षण देखनम यह आया है कि उस स्थानपर छिपकली मच्छर मक्खी इत्यादि विषधारी जन्तु प्रवेश नहीं करते।

अत मेरी गोमाता-प्रेमियोसे प्रार्थना है कि अर्थका व्यामोह त्यागकर सभी प्रकारसे कटिबद्ध होकर इनकी रक्षा-सेवा की जाय। इसीमे भारत देशकी अखण्डता निहित है।
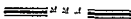
गोसंवर्धनके नामपर पूज्या गोमाताकी नसलका सहार

(गोलोकवासी भक्त श्रीरामशरणदासजी)

आजकल जहाँ इस धर्मप्राण भारतम नित्यप्रति हजारो प्रात स्मरणीया गोमाताआका बडे-बडे महान् कष्टा-पर-कष्ट दे-देकर, उन्ह बडी-बडी घोर अमानुषिक यातनाएँ दे-देकर, उन्ह तडपा-तडपाकर मारा जा रहा है, उनकी बोटी-बोटी काटकर उनके मासको डिब्बाम भर-भरकर विदेशाम भेजा जा रहा है आर बदलेम पेसा कमाया जा रहा है तथा ऐसी निकृष्टतम कमाइके बलबूतेपर देशान्नतिके स्वप्न देखे जा रहे हैं, वहीं आज कुछ पाखण्डी गोभक्त बनानेका पाखण्ड रचकर, भोली-भाली हिन्दू जनताकी आँखामे धूल झाककर अपनको गोमाताका परमभक्त सिद्ध कर और मगरमच्छक आँसू बहाकर गोसवर्धन करनेके नामपर जा पूज्या गोमाताकी असली नसलका सहार करने जा रह है—यह देखकर जो घोर दु ख हाता है वह वणनातीत है। आजकल दशम गासवर्धन करनेक नामपर ओर गोनसल-सुधार करनेके नामपर इग्लैंड अमरिका आदि विदेशाके साँडोका वीर्य मँगाकर कृत्रिम गर्भाधानके द्वारा वीर्यको मुर्गीके अडाका तरल उसम मिलाकर जो पूज्या गोमाताके गर्भम प्रविष्ट कराया जाता हे, इन अनर्थपूर्ण बातोस जहाँ पूज्या गोमाताको असह्य आर महान् अपार कष्ट होता है, वहाँ साथ ही भारतकी असली पूज्या गामाताकी नसलका भी महार हाता है। कारण कि इग्लैड अमेरिका आदि विदेशाम जिस प्रकार कुतिया और भेडियेको मिलाकर तीसरी नसल तैयार की गयी है और जिस प्रकार गधे या घोडेको मिलाकर तीसरी नसल खच्चर तैयार की गयी है इसी प्रकार वहाँपर गाय और भैंसको मिलाकर तीसरी नसल तयार की गयी है जा देखनम तो भल ही गाय-जैसी प्रतीत होती हे, पर वह वास्तवम मूलत गाय नहीं है। इग्लैड अमरिकाके इन नकली वर्णसकर साँडोके वीर्यका भारतकी असली गो माताक गर्भम प्रविष्ट कराकर कृत्रिम गर्भाधानद्वारा गौ माताका नसलका समाप्त करना यह कोई बुद्धिमानाका कार्य नहीं है। यह महान् घार भयकर पाप है और अक्षम्य अपराध है।

जिस प्रात स्मरणीया गोमाताकी रक्षाके लिय अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्परब्रह्म अर्थात् भगवान् श्रीरामका आर भगवान् श्रीकृष्णब्रह्मका अवतार हाता है, जिस पूज्या गोमाताके परम पवित्र शरीरम ३३ करोड देवी-देवताआका वास है, वह बस एकमात्र भारतीय नसलकी गोमाता ही है अन्य और कोई नहीं है। जिस प्रकार विदेशोमे भी नदियाँ तो बहुत मिलगी, पर उनम भवसागरसे पार लगानेकी तनिक भी सामर्थ्य नहीं है, यह अद्भुत विशेषता तो बस एकमात्र हमारे दशकी पवित्र नदी श्रीगङ्गा और श्रीयमुना आदि परम पवित्र नदियोमे ही है, जिनके हजारा कोसकी दूरीपर भी नाम लेनेमात्रसे अनन्त जन्मोके पाप-ताप भस्मीभूत हो जात हे। आजकी इन वर्णसकर नकली गायोका वह अद्भुत महत्त्व कदापि नहीं हो सकता है और इनमे वह अद्भुत विशेषता भी नहीं हो सकती और न वे उस पदके कदापि योग्य ही हा सकती हैं जो भारतकी असली गोमाताम हुआ करती है।

मृत्युके समय इस भवसागरस पार लगानवाली भी हमारी एकमात्र माता गोमाता यह भारतकी असली गोमाता ही है यह आजकी नकली वर्णसकर गाये कदापि नहीं हैं। यदि इसी प्रकारसे विदेशी साँडाके वीर्यद्वारा कृत्रिम गर्भाधान कर भारतकी असली गायाकी नसलको ही समाप्त कर डाला गया ता फिर गोरक्षा-आन्दालन करना ही व्यर्थ हो जायगा। जिस प्रकार मनुष्योम पूज्य भूदेव ब्राह्मणाकी अद्भुत विशेषता मानी गयी है इसी प्रकार पशुओम पूज्या गामाताकी अद्भुत विलक्षण विशेषता मानी गयी है। कहा भी गया ह—

तुलसी वृक्ष न मानिय गाय न मानिये ढोर।
ब्राह्मण मनुज न मानिये तानो नन्दकिशोर॥

इसीलिये प्रत्येक भारताय हिन्दूमात्रका यह एक परम कर्तव्य है कि वे भूलकर भी कभी न तो स्वय अपनी गायोको कृत्रिम गर्भाधान कराये और इसे कराना बडा घोर पाप समझ तथा न दूसराको यह घार पाप करनेकी सलाह

दे, और जो करते हैं उन्हें भी ऐसा घोर पाप करनेसे रोकें। और जो सरकारकी ओरसे इस प्रकार कृत्रिम गर्भाधानके द्वारा पूज्या गोमाताको कष्ट दिया जा रहा है और गोसवर्धन करनेके नामपर गोमाताओंकी शुद्ध नसलका संहार किया जा रहा है तथा समाप्त किया जा रहा है, इसका भी घोर विरोध कर अविलम्ब इस महान् घोर भयंकर पापका रुकवानेका भरसक प्रयत्न करें।

यह स्मरण रहे कि यदि हम आज कुम्भकर्णी निद्रामें निमग्न रहे ओर इस ओर हमने तनिक भी ध्यान नहीं दिया तो इस धर्मप्राण भारत देशसे जिस प्रकार असली गोघृतका दर्शन भी महान् दुर्लभ हो गया है ओर उसकी जगह नकली टी०बी० पैदा करनेवाला घी दिखायी पड रहा है, इसी प्रकार भारतकी असली गोमाताकी नसल भी जडमूलसे समाप्त हो जायगी और फिर यह खाली दूध देनेवाला एक नकली गाय नामका वर्णसकर पशु तो अवश्य दिखलायी देगा, पर पूजने योग्य और भवसागरसे पार लगानेवाली पूज्या गोमाताका दर्शन करना भी महान् दुर्लभ हो जायगा। भारतकी अद्भुत विशेषता-पूज्य गौ-ब्राह्मण इस धर्मप्राण भारत देशसे सदा-सर्वदाके लिये बिदा हो जायँगे। जब इस भारत देशसे पूज्या गोमाता और पूज्य भूदेव ब्राह्मण -ये दोनो अद्भुत रत्न ही मिट जायँगे तो इनके लिये परब्रह्म परमात्मा जो निराकारसे साकार होकर—*'बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार'* भगवान् श्रीराम-कृष्णके रूपमें आते और श्रीकृष्ण ब्रह्म नगे पाँवो जगल-जगल गाय चराने जाते हे और अपना गोपाल नाम रखते हैं वह फिर किसलिये आयगे। भगवान् श्रीकृष्ण गोपाल हैं। वह भैंसपाल बकरीपाल सूकरीपाल नहीं हैं।

जिस पूज्या गोमाताकी रक्षाके लिये निरन्तर हजारों वर्षसे गोरक्षकों और गोभक्तोंद्वारा बराबर युद्ध होता रहा और जिस पूज्या गोमाताकी रक्षाके लिये हजारों-लाखों धर्मवीर क्षत्रियोंने हँसते-हँसते अपने प्राण तक न्यौछावर कर डाले एवं गोमाताके प्राण बचाये, आज उसी पूज्या गोमाताको स्वतन्त्र भारतमें लाखोंकी संख्यामें धडाधड काटा जा रहा है और नित्यप्रति बडी बेरहमीसे मारा जा रहा है तथा कृत्रिम गर्भाधानके द्वारा गोसवर्धन करने और नसल सुधार करनेके नामपर जडमूलसे समाप्त किया जा रहा है। क्या यह हिन्दुओंके लिये डूब मरनेकी बात नहीं है? क्या यह अपने पैरापर अपने-आप ही कुल्हाडा चलाकर अपना सर्वनाश कर डालना नहीं है? क्या यह हमारी मूर्खताकी पराकाष्ठा नहीं है? आज गायोंको कृत्रिम गर्भाधान करा-कराकर अपनी पूज्या गोमाताके भी आप ही परम शत्रु बन रहे हैं और गोरक्षकसे गोहत्यारे बन रहे हैं यह कितने घोर दुःखकी बात है? यह कितनी लज्जाकी बात है? गोमाताकी असली नसल समाप्त होनेपर जहाँ हम असली गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि आदि अमृत पदार्थोंसे एकदमसे सदा-सर्वदाके लिये वञ्चित हो जाना पडेगा वहाँ हम मरनेके समय पापी-से-पापी मनुष्यको भी गोदान करनेपर भवसागरसे पार होनेका अनायास सुअवसर प्राप्त हो जाता था, उस अद्भुत लाभसे भी हाथ धोना पड जायगा ओर हमारे परलोकका अन्तिम सहारा भी टूट जायगा। परलोकमें हमारी गोमाताकी उपेक्षाकर इनकी जगह पाले गये कुत्ते कदापि सहायता नहीं करेंगे। यदि लोक-परलोककी एकमात्र कोई सहायक है तो वह बस एकमात्र पूज्या गोमाता ही है। इसलिये प्रत्येक भारतीय हिन्दूका गोमाताकी सेवा करना, गोमाताकी रक्षा करना परम कर्तव्य है।

गो-गुहार।

मातु समान अपान बिसारि सदा दधि-दूधकी धार धरी है।
हाय गरीब अबालन पै असि काढि कसाइन काट करी है॥
दीन दहारत आरत है, तऊ 'प्रेम' अवाज न कानपरी है।
कोसत भारतवासिन कौं, तबही तौ इतै यह गाज गिरी है॥

—प्रेमनारायण त्रिपाठी 'प्रेम'

गोचरभूमिकी महत्ता

(श्रीगौरीशंकरजी गुप्त)

वह भी एक युग था जब हमारे भारतवर्षमे गोचरभूमिकी प्रचुरता थी और निर्धन-से-निर्धन व्यक्ति भी गाय पाल सकता था। गोचरभूमिमे चरनेवाली गाये हरी घास या वनस्पतिके प्रभावसे नीरोग और हृष्ट-पुष्ट रहती और उनका दूध सुपाच्य तथा पुष्टिकारक होता था। उन गायोका मूत्र सर्व रोगो—विशेषकर उदर, नेत्र तथा कर्ण-रोगोको समूल नष्ट करनेकी क्षमता रखता था। आज गोदुग्ध-गोमूत्रादिमे वैसा चमत्कार न दीखनेका यही मुख्य कारण है कि हमारे देशमे गोचरभूमिकी समुचित व्यवस्था नहीं है। पर, वैदिक युगमे गोचर-भूमिका बडा महत्त्व था। ऋग्वेद (१। २५। १६) मे एक मन्त्र है—

परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु। इच्छन्तीरुरुचक्षसम्॥

इसका भाव है कि गाये जिस तरह गोचरभूमिकी ओर जाती हैं, उसी तरह उस महान् तेजस्वी परमात्माको प्राप्तिकी कामना करती हुई बुद्धि उसीकी ओर दौडती रहे। ईश्वरकी ओर बुद्धि लगी रहे, यह भाव व्यक्त करनेके लिये गायोके गोचरभूमिकी ओर जानेका दृष्टान्त दिया गया है। इसी प्रकार ऋग्वेद (१। ७। ३) मे एक दूसरा मन्त्र है—

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत्॥

भाव यह है कि सुरपति इन्द्रने दूरसे प्रकाश दीख पडे, इस हेतु सूर्यको द्युलोकमे रखा और स्वय गायोके सग पर्वतकी ओर प्रस्थान किया। दूसरे शब्दोमे—गायोको चरनेके लिये पर्वतोपर भेजना चाहिये। पर्वत भी गोचरभूमिकी श्रेणीमे आते है। पर्वतका पर्याय गोत्र है, जिसका एक अर्थ गायोको त्राण देनेवाला भी होता है। पर्वतोपर गोओको पर्याप्त चारा और जल तो सुलभ रहता ही है, उन्हे शुद्ध वायु और व्यायामलाभ भी हो जाता है।

पद्मपुराण मनु, याज्ञवल्क्य तथा नारदादि स्मृतियोमे भी गोचरभूमिका वर्णन मिलता है। उन सबका साराश सक्षेपमे यही है कि यथाशक्ति गोचरभूमि छोडनेवालेको नित्य-प्रति सौसे अधिक ब्राह्मणभोजन करानेका पुण्य मिलता है और वह स्वर्गका अधिकारी होता है, नरकमे नहीं जाता। गोचरभूमिको रोकने या बाधा पहुँचानेवाले तथा वृक्षोको नष्ट करनेवाले इक्कीस पीढीतक रौरव नरकमे पडे रहते हैं। चरती हुई गौओको बाधा पहुँचानेवालोको समर्थ ग्रामरक्षक दण्ड दे, ऐसा पद्मपुराणमे कहा गया है।

पद्मपुराणमे वर्णित एक प्रसगके अनुसार चरती हुई गायको रोकनेसे नरकमे जाना पडता है। स्वय महाराज जनकको चरती हुई गायको रोकनेके फलस्वरूप नरकका द्वार देखना पडा था। सावधान रहकर आत्मरक्षा करना कर्तव्य है, पर चरती गायका ही क्या, आहार करते समय जीवमात्रको रोकना या मारना मनुष्यता नहीं है। धार्मिक दृष्टिसे भी ऐसा करना अनुचित है।

पहले कहा गया है कि हमारे देशमे गोचरभूमिकी प्रचुरता थी। इतना ही नहीं अपितु राजवर्ग तथा प्रजावर्ग दोनोकी ओरसे गोचरभूमि छोडी जाती थी। पुण्यलाभकी दृष्टिसे धर्मशाला पाठशाला कूप और तालाब आदि बनवानेकी प्रथाकी भाँति गोचरभूमि खरीदकर कृष्णार्पण करनेकी उस युगमें प्रथा थी। आज भी वे गोचरभूमियाँ विद्यमान हैं और उनके दानपत्रोमे स्पष्ट अङ्कित है—'इस गोचरभूमिको नष्ट करनेवाले यावच्चन्द्रदिवाकर नरकवास करेगे।'

गाँवके निकट चारो ओर चार सौ हाथ यानी तीन बार फेकनेसे लकडी जहाँ जाकर गिरे वहाँतककी भूमि और नगरके निकट चारो ओर इससे तिगुनी भूमि यानी बारह सौ हाथ भूमि गोचारणके लिये छोडनेका आदेश देते हुए मनुजी कहते हैं कि यदि उतनी भूमिके अदरकी किसी ऐसी कृषिको जिसके चारो ओर बाड न लगे हो, ग्रामके पशु नष्ट कर दे तो यह उनका अपराध नहीं और इसके लिये उनको राजदण्ड नहीं मिलना चाहिये। (मनुस्मृति८। २३७-२३८)

महर्षि याज्ञवल्क्यका भी यही मत है। उन्होने पर्वतकी तराईके गाँवोके निकट आठ सौ हाथ तथा नगरके निकट सोलह सौ हाथ गोचरभूमि छोडनेकी व्यवस्था दी है। लिखा है—

धनु शत परीणाहो ग्रामे क्षेत्रान्तर भवेत्।
द्वे शते खर्वटस्य स्यान्नगरस्य चतु शतम्॥

(याज्ञवल्क्यस्मृति २। १५७)

यह भी आदेश है कि खेत गाँव तथा शहरसे दूर हा और खेतोमे बाड घनी हो। बाडकी ऊँचाई इतनी हो कि कृपितक ऊँटकी दृष्टि भी न पहुँच सके ओर न कुत्ते, सूअर आदि ही उसके छिद्रोसे किसी प्रकार अदरकी ओर प्रवेश कर सक। 'नारदस्मृति' के अनुसार बाड न लगानेक कारण खेतीको यदि पशु चर जायँ या खेतमे घुसे तो राजा पशुओको दण्ड नहीं दे सकता, वह उन्ह हँकवा सकता है। बाड ताडकर यदि पशु कृषिको नष्ट कर तो वे दण्डके अधिकारी होगे।

मनुका भी यह कथन है कि राहके निकट या गाँवके पडोसके बाड लगे खेतोमे यदि पशु किसी प्रकार पहुँचकर अनाज खा जायँ तो राजा पशुपालकपर सौ पण दण्ड लगाये, किंतु यदि पशु बिना रखवालेका हो तो उसे सिर्फ हँकवा दे—

पथि क्षेत्रे परिवृते ग्रामान्तीयेऽथवा पुन ।
सपाल शतदण्डार्हो विपालान् वारयेत् पशून्॥

(मनुस्मृति ८। २४०)

महर्षि याज्ञवल्क्यके वचनानुसार राह, ग्राम और गोचरभूमिके निकटके खेतको यदि रखवालेकी अज्ञातावस्थामे पशु नष्ट कर दे तो वह दोषी नहीं होगा। हाँ, यदि खेतको रखवाला जान-बूझकर चरा दे तो वह अपराधी है और चोरकी भाँति उस दण्ड मिलना चाहिये—

पथि ग्रामविवीतान्ते क्षेत्रे दोषो न विद्यते।
अकामत कामचारे चौरवद् दण्डमर्हति॥

(यानवल्क्यस्मृति २। १६२)

अन्तमे एक अत्यन्त रोचक ओर तथ्यपूर्ण प्रसग उल्लेख्य है, जिससे गोचरभूमि हडपनेवाले नराधमोंके पापकी भयकरतापर प्रकाश पडता है। एक बार एक चाण्डालकी पत्नी चिताग्निम नर-कपाल रखकर उसम कौवेका मास पका रही थी और उसको उसने कुत्तेके चमडेसे ढँक रखा था। एक व्यक्तिको यह देखकर स्वभावत कौतूहल हुआ और उसने चाण्डालिनीसे पूछा—'तूने ऐसी घृणित चीजको भी क्यो ढँक रखा है?' उसने कितना मार्मिक उत्तर दिया था—'मैंने इसे इस भयसे ढँक रखा है कि मेरा यह स्थान खेताके समीप हे। यदि किसी ऐसे महापापी व्यक्तिकी, जिसने गोचरभूमिका अपने खेतमे मिला लिया हे, दृष्टि पड जायगी तो मरा यह आहार ग्रहण करने लायक नहीं रह जायगा।'

नृकपाले तु चाण्डाली काकमास श्वचर्मणा।
चच्छाद गोचरक्षोणीकृषिकृद्दृष्टिभीतित ॥

इस प्रकार हम देखते है कि गोचरभूमि छोडना महान् पुण्य और उस नष्ट करना या हडपना महापाप हे। हमारे देशम गोवधकी भाँति गोचरभूमि भी एक समस्याके रूपमे उपस्थित है। गोचरभूमिका हमारे यहाँ बडा अभाव-सा है और उसकी बडी दुर्व्यवस्था हे।
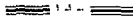
गोपालनका आधार सतुलित आहार एवं समुचित चिकित्सा

(डॉ० श्रीवारेन्द्रदत्तजी मुद्गल)

ऋग्वेदक अनुसार कृपि एव पशुपालनक क्षेत्रमें भारत प्राचीन कालसे ही विशष सचेष्ट था। ऋग्वेदम अनकानक ऐसे सदर्भ मिलते हैं, जिनम कृषिके साथ-साथ पशुपालन एव गौआका विशेष उल्लेख मिलता है। गौआके रख-रखाव एव उनक स्वास्थ्यका वर्णन भी प्राप्त होता है। ऋग्वेदके प्रसिद्ध गोसूक्त (६। २८) के अनुसार उस कालम गाये हा कृषि एव अर्थव्यवस्थाका मूल आधार थीं।

गोस्वामी श्रीतुलसादासजीने श्रीरामचरितमानसमे स्पष्ट-रूपसे लिखा है कि त्रतायुगमे गौएँ मनचाहा दूध देती थीं—

लता बिटप मागे मधु चवहीं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥
ससि सपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी॥

(रा०च०मा०७। २३। ५-६)

किंतु आज स्थिति सर्वथा भिन्न-सी दीखती है। गौआकी सख्यामें कमी हा जाने तथा ठीकसे गोसवा न होनेके कारण और भलीभाँति गायाकी देखभाल एव चार-दानेकी कमीके कारण आज गायक दूधका उत्पादन बहुत कम हो गया हे।

गौआद्वारा मनचाहा दूध लेना तभी सम्भव है, जव

उन्हे भरपट सतुलित आहार मिले। आज देशमे पशुओके लिय आहार-सामग्रीकी भारी कमी है। गोचर-भूमिका क्षेत्रफल सीमित हो गया है। ऐसी स्थितिमे पशुओके लिये चारे-दानकी कमी होना स्वाभाविक ह। यह एक मुख्य कारण हे कि हमारा गोधन दुग्ध-उत्पादनम पिछडा हुआ है। यदि इसके खानपानपर ध्यान दिया जाय तो निश्चित रूपसे गौएँ अधिक दूध दगी ओर हम स्वस्थ रहेगे।

पशु-आहार

पशु-आहारम सबसे पहला स्थान स्वच्छ जलका आता है। जल पशुओके आहारका चत्रान, पाचन-क्रिया एव अवशोषणमे सहायक हानेके अतिरिक्त पचे हुए आहारको शरीरके भिन्न-भिन्न भागाम ले जानेमे सहायक हाता हे। इसलिये पशुओको स्वच्छ जल प्रचुर मात्राम मिलना आवश्यक हे। दूषित जल पिलानेसे पशुओम बीमारी फैलती हे। इसलिये यह बात ध्यान देनेकी है कि गायको स्वच्छ जल ही पीनेको दिया जाय।

यह सर्वविदित ह कि दुधार गायका दुग्ध-उत्पादन बहुत कुछ उसके खान-पानपर भी निर्भर करता है। विशेष कर गर्मीक मौसमम पशुपालक या तो सूखा चारा खिलात हैं या फिर बजर भूमिपर चरने भेज देते हैं। इससे उन्हे पूर पोषक तत्त्व प्राप्त नहीं हा पाते जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्यपर तथा दुग्ध-उत्पादनपर निश्चित रूपसे पडता हे।

वास्तवमे हरा चारा ही गायके लिये समुचित भोजन है। पहले समयमे ग्रामोक आसपास गोचरभूमि छोडी जाती थी, गोचर-भूमि छाडनक धार्मिक महत्त्वका विश्वास भी लोगाके मस्तिष्कमे था। गाय तथा अन्य पशु उस भूमिपर अपने मुँहसे हरी-हरी घास चरते थे और स्वच्छन्द विचरण करनसे उनका व्यायाम भी हो जाता था। स्वच्छन्द विचरण कर अपन मुँहस अपनी इच्छासे चरनेवाली गौस आजकी बँधी हुई गायकी कोई तुलना ही नहीं है। दूधकी मात्रा तथा उसकी गुणात्मकताम भी दोनाम बहुत अन्तर है।

हरे चारक पाषक तत्त्व सुपाच्य हात हैं जो गायाको आसानीस प्राप्त हा जाते हैं। इनम विटामिन तथा खनिजाकी प्रचुर मात्रा हाती है और स्वादिष्ट हानेक कारण पशु भी चावस खात हैं।

सूखा चारा तथा हरा चारा मिला-जुलाकर खिलानेसे भी भाजनक तत्त्व भली प्रकार पच जात हैं, बरसातके मौसममे हरा मक्का और लोबियाके चारे उत्तम होते हैं। इनका मिला-जुला हरा चारा ४० किलोग्राम और उसमे ४-५ किलो सूखा चारा देनेसे ५ लीटरतक दूध देनेवाली एक गायका सतुलित आहार प्राप्त हो जाता है। सर्दीके मौसममे बरसीम, जई तथा लूसर्न सर्वोत्तम चारे हैं। ३०-३५ किलो बरसीम-लूसर्नका चारा तथा ४-५ किलो सूखा चारा देनेसे ६ लीटरतक दूध देनेवाली गौको सभी तत्त्व प्राप्त हो जाते हैं। बरसीम तथा लूसर्नमे प्रोटीन एव कैलशियमकी प्रचुर मात्रा विद्यमान होती हे। चारेकी बरबादी रोकने तथा सदुपयोग करनेके लिये कुट्टी बनाकर खिलाना चाहिये।

अनुभवक आधारपर यह माना गया है कि दूध निकालते समय २५० ग्राम दाना चारेपर डालनसे गाय दूधका आसानीसे अयनमे उतार देती है। इस प्रकार प्रतिदिन ५०० ग्राम दाना देना लाभदायक रहता है। बरसातम ५ लीटर तथा सर्दीमे ६ लीटरसे अधिक दूध देनेपर १ किलोग्राम दाना प्रति ३ लीटर दुग्ध-उत्पादनपर गायोको देना ठीक होगा। अर्थात् ८ लीटर दूध देनेवाली गायको १$\frac{१}{२}$ किलो दाना प्रतिदिन देना चाहिये।

दानेका मिश्रण तयार करनेके लिये उसम काम आनेवाली स्थानीय वस्तुओका ध्यान रखना आवश्यक है। आर्थिक दृष्टिसे भी यह उचित हे कि दानेका मिश्रण तैयार करनके लिये उन्हीं वस्तुओको काममे लाया जाय जो कि आसपासक इलाकेमे मिलती हो। उदाहरणके लिये गेहूँकी भूसी ३० प्रतिशत, चूनी १२ प्रतिशत नमक २ प्रतिशत तथा खनिज मिश्रण १ प्रतिशत मिलानेस अच्छा दाना तैयार हो जायगा। दूध देनेवाली गायाके लिये नमक तथा खनिज मिश्रणका विशेष महत्त्व है। एक बारमे कम-से-कम १५-२० दिनके लिये दानेका मिश्रण बनाकर रख लेना चाहिये। दानेके मिश्रणम जल्दी-जल्दी बदलाव करनेसे दुग्ध-उत्पादनपर विपरीत प्रभाव पडनेकी आशका रहती है।

पशु-चिकित्सा

दुधार गायोको कुछ ऐसी बीमारियाँ लग जाती हैं, जो सक्रामक होती हैं और एक पशुसे दूसरे पशुको शीघ्रतासे लग जाती हैं। इन बीमारियाको छूतकी बीमारी भी कहते हैं। इनके टीके समय-समयपर डॉक्टरकी सलाहसे लगवाते रहना चाहिये। खुरपका मुँहपका एक ऐसी ही छूतकी बीमारी है, जिसस प्राय पशुकी मृत्यु हो जाती है। यदि वह

जीवित भी रहे तो उसकी दूध देनेकी क्षमता बुरी तरह प्रभावित हो जाती है। प्रतिवर्ष इस बीमारीसे देशको करोडो रुपयाकी हानि होती है। यदि सावधानी बरती जाय और समयसे इसका रोधक टीका लगवा दिया जाय तो बहुमूल्य गायोका बचाव हो सकता है।

खुरपका, मुँहपकाकी बीमारीसे ग्रसित होनेपर गाय सुस्त हो जाती है, बुखार तेज हा जाता है और जीभ, होठ, मसूडा तथा खुरोके बीच छाले निकल आते हैं। मुँहसे झागदार लार लगातार अधिक मात्रामे निकलती है तथा वह होठोको बराबर चलाती रहती है। गाय चारा तथा दाना खाना छोड देती हे और धीरे-धीरे लँगडाना आरम्भ कर देती है। यह बीमारी काफी दिनोतक रहती है, इसलिये दुधार गाय काफी कमजोर हो जाती है और उसका दूध देना एकदम कम हो जाता है।

अब यह प्रश्न उठता हे कि यदि रोग फैल ही जाय तो क्या करे? बीमारीकी आशका होते ही गायको अन्य पशुओसे अलग कर द और उसकी देख-भाल किसी दूसरे सदस्यसे कराय। साथ ही निकटके पशु-चिकित्सा-केन्द्रसे सम्पर्क करके सहायता प्राप्त करे। सभी स्वस्थ पशुओको बीमारीका टीका लगवा द। इलाजकी अपेक्षा बचाव कहीं अधिक लाभदायक रहता है। मुँहपका खुरपका बीमारीका टीका मार्च-अप्रैलमे प्रतिवर्ष लगवा दे। सबसे पहला टीका लगभग तीन माहकी आयुमे और उसके बाद प्रतिवर्ष लगवाय। इसी प्रकार गलघोटूका टीका मई-जूनम वर्षा आरम्भ होनसे पहले लगवाय। सबसे पहला टीका ६ माहकी आयुमे और उसके बाद प्रतिवर्ष लगवाये। जहरबाद बीमारीका टीका भी मई तथा जूनम ही लगवाय। इसके लिये भी पहला टीका ६ माहकी उम्रमे ओर उसके पश्चात् प्रतिवर्ष लगवाना चाहिये।

गोशालाकी सफाईपर भी विशप ध्यान देनेकी आवश्यकता है। चूनेसे छता तथा दीवारोकी समय-समयपर पुताई और काटनाशक दवाआका छिडकाव लगातार कराना चाहिये। पशुशालाक दरवाजापर फिनाइल तथा मैलाथियॉनका घाल छिडकना चाहिय। ध्यान रहे कि झाड़ू तथा यह छिडकाव और सफाई दूध दुहनेसे कम-से-कम १½ घटा पहले या बादम कर। अन्यथा धूल आदिके कण दूधम गिरकर उसे दूषित करेगे और कीटाणु-नाशक घोलकी दुर्गन्ध दूधमे समा सकती है। यदि दूध निकालनेवाली स्त्री या पुरुष एक ही है तो पहले स्वस्थ पशुकी खिलायी-पिलायी करनेके बाद ही अस्वस्थ पशुकी देखभाल करे और स्वस्थ पशुके समीप आनेसे पूर्व अपने हाथ-पैर साफ करके पोटेशियम परमेगनेटके घोलम डुबोकर स्वच्छ कर ल।

गायम सूखा काल इसलिये आता है कि वह जितनी शक्ति पिछले ब्यॉंतम नष्ट कर चुकी है उसे पूरा कर ले और आगे आनेवाले ब्यॉंतके लिये पूरी तैयारी कर ले। यदि गाय ब्यानेसे पूर्व अच्छी हालतमे नहीं होगी तो उसका बुरा प्रभाव आनेवाले नवजात तथा दुग्ध-उत्पादनपर निश्चित रूपसे पडेगा। गाभिन गायको ब्यानेसे दो माह पूर्वसे एक किलो अतिरिक्त दानेका मिश्रण, हरा चारा या साइलेज, नमक तथा खनिज मिश्रणकी विशेष मात्रा देनी चाहिये। ऐसा देखा गया है कि वर्षके काफी भागमे गाभिन गायोको हरा चारा प्राप्त नहीं होता। विशेष रूपसे गरमीके मौसमम यह समस्या और भी विकट हो जाती है ओर बरसातके मौसममे यानी अगस्त या सितम्बरम जब वह ब्याती है तो उसके दूधम विटामिन 'ए' की भारी कमीके कारण नवजातोको आवश्यकतानुसार विटामिन 'ए' नहीं मिल पाता, जिसके कारण वे बीमारियासे रक्षा करनेमे असमर्थ रहते हैं। इसलिये गरमीके मौसमम गायको विटामिन 'ए' की पूर्तिके लिये थोडा-बहुत हरा चारा अवश्य मिलना चाहिये। एक किलो लहलहाते हरे चारेमे लगभग १५०० अन्ताराष्ट्रिय यूनिट विटामिन 'ए' पाया जाता है। यदि गाभिन-अवस्थाम गायको प्रतिदिन ३ किलोग्राम हरी घास या हरा चारा मिलता रहे तो उनके विटामिन 'ए' की मात्राकी पूर्ति हो सकेगी। यदि हरा चारा नहीं है तो हरी पत्तियाँ भी वही काम करेगी। अन्यथा विटामिन 'ए' बाजारमे भी उपलब्ध होता हे। उससे प्रतिदिनकी पूर्ति की जा सकती है।

इस प्रकार एक सतुलित आहार आर उचित देख-रेख तथा चिकित्सा पानवाली गाय भरपूर दूध देगी और हम अमूल्य भोजनके साथ स्वास्थ्य तथा खुशहाली भी प्रदान करेगी। तभी हमारी गोमाताका दिव्य प्रभाव अक्षुण्ण रहेगा। अत गोआकी दख-रेखमे विशेष सावधानी बरतनी चाहिये।

गायोके खुराककी विवेचना

खुराक—

१-चारे-दाने भाँति-भाँतिके होने चाहिये। एक ही प्रकारका चारा-दाना खाते-खाते गाय ऊब जायगी और उसकी रुचि कम हो जायगी। गायके लिये सानी मौसमके अनुकूल बदल-बदलकर करना चाहिये इससे वह खुश और तदुरुस्त रहेगी।

२-चारे-दानेके मेल करनेमे पशुकी आदतका भी ध्यान रखना चाहिये। हर एक पशु एक ही प्रकारकी सानी नहीं खा पाते। कोई-कोई पशु-जाति किसी विशेष चीजको पसद करती है।

३-यदि उन्हे नयी तरहकी खुराक खिलानी हो, तो धीरे-धीरे और थोडी-थोडी मात्रामे खिलाकर आदत डालनी चाहिये। साइलेज-कूपके चारे पहले-पहल जानवर नहीं खाते, परतु एक बार आदत पडनेपर वे उसे रुचिसे खाने लगते हैं।

४-चारे-दानेकी प्रत्येक खुराकमे नमक और पानीका मिलाना जरूरी है, क्योकि इस प्रकारकी मिलायी हुई सानी सरलतासे पच जाती है। कितु कई स्थानोमे सूखे दाने और खलीक देनेकी भी प्रथा है।

५-जाडोमे दाना देरमे फूलता है, इसलिये छ -सात घटेतक उसे भिगोना चाहिये। रातमे नमक और खली मिलाकर दाना भिगो दे और इससे सुबहकी सानी करे। सुबहको भिगोया हुआ दाना-खली शामकी सानीके काममे लाये। ठडके दिनोमे गायको बिनौला उबालकर और उसमे गुड मिलाकर खिलाये। इससे दूधमे मक्खन तथा मिठासका अश बढ जायगा।

६-गर्मीके दिनोमे अधिक देरतक भिगोनेसे दाने और खलीमे खटास आ जाती है इसलिये सानी करनेके केवल तीन-चार घटे पहले ही इन्हे भिगोये।

इस मौसमम गायको बिनौला खिलाना ठीक नहीं है। कितु यदि थोडा-सा बिनौला ठडे पानीमे चार-पाँच घटोतक भिगोकर, जौके दलियेके साथ दिया जाय तो हानि नहीं करेगा।

७-चारेमे भीगा हुआ दाना-खली-नमक मिलाकर सानीको खूब पलट देना चाहिये, ताकि सभी चीज भलीभाँति मिल जायँ।

८-चारा अच्छी तरह बारीक कटा होना चाहिये। महीन कटा हुआ चारा जल्दी पचता है और सानी करनेपर वह अच्छी तरह मिल जाता है। मोटा-कटा हुआ चारा इधर-उधर बिखर कर बेकार और खराब हो जाता है।

९-सूखे चारेके बजाय हरा चारा रसीला होनेके कारण जल्दी पचता है और जायकेदार भी होता है। हरे चारेमे विटामिन 'ए' खूब होता है, कितु सूखे चारेमे यह नहीं होता। इस विटामिनकी कमीका पशुपर बहुत बुरा असर पडता है। इससे उसकी रोग-निवारक-शक्ति, आगामी नस्ल और आँख कमजोर हो जाती हैं। लूसर्न, बरसीम और दूब आदिकी हरी घासामे यह विटामिन खूब होता है।

१०-चारेको ठीक समयपर जब कि पौधोमे दूध-भरे बीज भर आय, कितु पककर सूखनेके पहले ही काट ले और अच्छी तरहसे सुखाकर साफ-सुथरे और ऊँचे स्थानपर रखे। जरा-सा भी गीला रहने या सीलन-भरे स्थानोमे रखनेसे चारा सड जायगा। ध्यान रहे कि चारा कहीं बहुत ज्यादा न सूख जाय, क्योकि ऐसे चारेमे अधिकाश विटामिन बहुत कम रह जाते हैं और वह साररहित हो जाता है।

११-हरे चारेको सचित कर रखनेकी उपयोगी विधि साइलेज-कूपकी है। इस विधिसे सचित चारा हरा बना रहनेके कारण पोषक तत्त्वोवाला होता है। इसका खिलानेके बाद दाना देनेकी खास जरूरत नहीं पडती।

१२-बीजरहित सूखे चारेमे पोषक तत्त्व तथा विटामिन 'ए' नहीं होते, इसलिये केवल भूसेपर ही रखी गयी गायका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। कितु आम तौरपर खुराकमे चारेका थोडा-सा सूखा अश भी रहना चाहिये।

१३-खुराककी चीज अच्छी और बढिया किस्मकी हो। पशुओको सडा-गला दाना-चारा और खराब रोटी कभी न खिलाये। बढिया किस्मका दाना-चारा लाभदायी होनेके कारण ज्यादा महँगा न पडेगा।

१४-पशुको बहुत ज्यादा दाना खिलाना भी ठीक

नहीं, क्योकि इससे उसकी पाचनशक्तिपर जरूरतसे ज्यादा भार पड जाता है, इस कारण पशुका गोबर और मूत्र दूषित हो जाता है।

१५-आवश्यकतासे अधिक दाना तथा खली खिलानेसे गायकी केवल चर्बी ही विशेष बढ जायगी, इस कारण वह दूध देना कम कर देगी। मोटी और मासल गाय जल्दी गाभिन भी नहीं हो पाती, क्योकि उसके शरीरम हारमोन्स अच्छी तरह विकसित नहीं होते, इसी कारण ऋतुके लक्षण प्रकट होनेमे देर लगती है। ऐसी मोटी गायको मीठी—जैसे गुड, शीरा और कार्बोहाइड्रेटवाली चीज—नहीं देनी चाहिये। अधिक मात्राम मीठी चीजोके खानेसे प्रजनन-शक्तिपर बुरा असर पडता है।

१६-कम खुराक पानेके कारण दुबले तथा कमजोर हुए जानवरकी भी दूध देने, प्रजनन तथा काम करनेकी शक्ति कम हो जायगी। कमजोर गाय देरमे गाभिन होगी और उसका बच्चा भी पूर्ण बलवान् न होगा। ऐसे पशुको पौष्टिक चारा-दाना खिलाकर उसकी हालत सुधारनी चाहिये।

१७-गायको ऐसा चारा-दाना देना चाहिये, जिसे वह सहजहीम लौटा कर जुगाली कर सके। अच्छी तरह जुगाली न की जा सकनेवाली खुराक पचने नहीं पाती।

१८-गायकी खुराक 'चारा-दाना, खली-नमक' की कीमत देश-काल तथा स्थितिके अनुसार कम-ज्यादा होती रहती है, किंतु साधारणतया खुराककी कीमत गायके दूधकी कीमतके $\frac{3}{4}$ या $\frac{2}{3}$ के अनुपातमे होनी चाहिये।

१९-पशुको चरनेके लिय अवश्य भेजना चाहिये। जाडा, गर्मी तथा बरसात आदि सभी ऋतुओमे अपनी रुचिके अनुसार हरियाली चरते हुए पशुका शरीर-सचालन भलीभाँति हो जाता है और इस प्रकार वह स्वस्थ एव प्रसन्न रहता है।

२०-दुहनेके पहले गायको भर-पेट खुराक जरूर ही खिला देनी चाहिये। खाली पेट दूध दुहनेसे गायके अवयवोपर बहुत जोर पडता है।

२१-गाय एक स्वच्छताप्रिय जीव है। इसकी नाँद तथा खुराककी चीजे दोनो ही साफ होनी चाहिये। मिट्टी, गोबर या अन्य अशुद्धियाँ मिल जायँ तो वह ऐसी सानी नहीं खायगी।

२२-कुत्त सूअर, बकरी और मुर्गी आदि जानवराको चारा-दानावाले स्थानके निकट नहीं जाने देना चाहिये, क्योकि वे मुँह डालकर उसे गदा कर दगे और बीमारी फैलायेगे।

दूध देनेवाले पशुओको खिलाने-योग्य चारे—

१-ज्वारकी चरी—यह चारोम मुख्य है, क्याकि इसे हरी, सूखी या साइलेज-कूपमे भर कर सभी तरहसे खिलाते हैं। किंतु हरी चरी ही उत्तम चारा है।

२-सरसोकी चरी—हरी नरम और सिगरीदार सरसो दूसरे चारोके साथ मिलाकर खिलानी चाहिये। यह दूध बढानेवाली और गर्म-तासीरकी होती है।

३-जौ तथा जई (सेऊँ)-की चरी—ये पोधे दूधर-दानोके भर आनेपर हरे-हरे खिलाये जाते हैं। ये दुग्ध-वर्धक हैं। जौका तो सूखा भूसा भी खिलाया जा सकता है, किंतु जई (सेऊँ)-का भूसा बेकार होता है।

४-मटरका पौधा—नर्म फलियाके भर आनेपर इसे खिलाये। इसमे सडनेवाले कार्बोहाइड्रेट बहुत होते हैं, अतएव इसे जौ आदिके चारे या भूसेके साथमे मिलाकर ही खिलाना चाहिये।

५-हरे मक्केकी करबी—पानीका प्रबन्ध करके मक्काको चैत्रमे बो दे और ज्येष्ठसे भाद्रपदतक ग्वार और लोबियाके पौधोके साथ मिलाकर इसकी हरी करबी खिलाये। गर्मीके दिनामे—साइलेजके अतिरिक्त यही एक (करबीकी) हरियाली मिल सकती है।

६-हरी ग्वार और लोबियाकी करबी—चैतसे भादोतक बोये और मक्केकी चरीके साथ खिलाये।

७-उर्द तथा मूँगका हरा पौधा—इसे भादासे कार्तिकतक बोये और नरम फली-सहित अन्य चाराके साथ खिलाये। उपर्युक्त दालके पौधोके चारामे प्रोटीनके तत्त्व खूब होते हैं।

८-गेहूँका हरा पौधा—यह दूधर-दानो-सहित खिलाया जाय, तो बहुत लाभकारी होगा। गेहूँ निकालकर इन पौधोका सूखा भूसा ही प्राय खिलाया जाता है, किंतु यह भूसा पोषक नहीं होता।

९-चना और मसूरका पौधा—चनेके पौधेम भी क्षार बहुत अधिक होता है, इसलिये इसे भी दूसरे चारोके साथ मिलाकर ही खिलाये।

१०-लूसर्न और बरसीम—ये दोनो तरहकी घास बहुत पोषक हैं। यदि काफी तादादम दी जायँ तो पशुको

दाना देनेकी जरूरत नहीं पडती।

११-दूब हलीम और झरुआ आदि तरह-तरहकी घास अच्छी होती हैं। इनम दूब सर्वश्रेष्ठ है। झरुआ भी एक अच्छी आर दानेदार घास है। इसे भरपेट देनेपर दानेकी जरूरत नहीं पडती।

१२-गाजर और मैंगोल्डकी कद पाचक और दूध बढानेवाली होती है।

१३-मोठका पौधा बहुत गर्म होता है, अत इसे ऽ२ या ऽ२॥ से ज्यादा न दे और सदा दूसरे चारेके साथ मिलाकर ही खिलाय। ये सभी चारे बैल और साँडको भी खिलाये जाते हैं। आवश्यकता पडनेपर बैलोंको तो बाजरेकी हरी चरी या गन्नेके अगौले भी खिलाये जा सकते हैं, परतु गायाको नहीं।

दूध देनेवाले पशुओको खिलाने योग्य दाने—

१-गेहूँका दलिया और चोकर बहुत बढिया होता है।

२-चनेका दाना और चूनी मिली हुई भूसी।
३-अरहरकी चूनी-भूसी।
४-मूँगकी चूनी-भूसी।
५-मसूरकी चूनी-भूसी।
] इन दानोंमें प्रोटीन-प्रधान तत्त्व बहुत होते हैं और भूसीमें फासफोरसका काफी अश होता है अत इनका खिलाना अच्छा है।

६-जौका दलिया। यह भी बहुत अच्छी चीज है।

७-बिनौले उचित मात्राम तथा ऋतुका ख्याल करके उबालकर या भिगोकर दे।

८-खली सरसो और लाहा, तिल मूँगफली, अलसी तथा बिनाल आदिकी खिलाय।

९-ग्वारका चना दलकर और उबालकर या भिगोकर दे। यह ज्यादा देनेपर कब्ज करता है।

१०-गुड आर शीरा थोडा-सा खिलाये।

११-राँधी हुई चीजे जैसे—दालका पानी, चावलका माँड रोटी आर थाडा-सा दलिया दिया जा सकता है।

ऊपर लिखी हुई चीज साँडो तथा बैलाको भी हितकारी है। उन्हे उर्दकी चूनी-भूसी भी खिलायी जा सकती है। ज्वारका दाना भी उनक लिये बलवर्धक खुराक है। साँडको अकुर आये हुए चनाम नमक मिलाकर खिलाना गुणकारी है।

दूध देनेवाले पशुओको न खिलाने योग्य चारे—

१-मक्केकी सूखी चरी।
२-बाजरकी हरी तथा सूखी चरी।
३-गन्नेकी पत्तियाँ (अगौले)।
४-चनेक पौधाका भूसा।
५-ग्वारकी सूखी लकडीका भूसा।
६-चना और कँगनीकी सूखी पुराली।
७-धानका सूखा हुआ पुआल।
८-हरी या सूखी सनकी पत्ती, जो बहुत गर्म होती है। यह केवल दवाके कामम आती है।
९-ऐसी फसलें जो केवल मात्र शहरके गदे नालोंके पानीसे सींचकर तैयार की गयी हो। ये नाइट्रोजनकी अधिकताके कारण ऊपरसे सुन्दर और पुष्ट दिखायी देती हैं, कितु पौष्टिक तत्त्वरहित होती हैं और कभी-कभी रोगका कारण भी बन जाती हैं।

उपर्युक्त चीजे बैलोको भी नहीं खिलानी चाहिये, कितु उन्हे गन्नेके अगौले और बाजरेकी हरी चरी दी जा सकती है।

दूध देनेवाले पशुओको न खिलाने-योग्य दाने—

१-उरदकी दाल तथा चूनी और भूसी खिलानेसे यद्यपि एक बार गायका दूध बढ जाता है, तथापि दुग्धवाहिनी नाडियापर विशेष दबाव पड जानेके कारण भविष्यम उसका दूध कम हो जाता है।

२-चनेकी निरी भूसी, जिसम चूनी या दालका काफी अश न हो, नहीं खिलानी चाहिये। अधिक फासफोरसके कारण यह दूध और खूनको सुखा देती है।

३-मटरका दाना बहुत बादी तथा वायु बढानेवाला होता है। अन्य दानोके साथमे मिलाकर देनेसे यह हानि नहीं करता।

४-बाजरेका दाना गर्म और दूधको सुखा देनेवाला होता है।

५-ज्वारका दाना विशेष गर्म और दूधको सुखानेवाला होता है, कितु यह बैलाके लिये बलवर्धक है।

६-सूखी रोटी, सडी दाल गदी जूठन आदि वस्तुएँ भी कभी न खिलाये।

गो-चिकित्सा

गो-चिकित्सा पुण्य है

आज भारत-जैसे निर्धन एव पिछडे हुए देशमे, जहाँ लाखो-करोडा मनुष्योके स्वास्थ्यकी किसीको चिन्ता नहीं, मूक पशुओकी चिकित्साके विषयम सोचना कुछ व्यक्तियोकी दृष्टिम एक हास्यजनक बात होगी। किंतु विचार करके देख तो बात ऐसी नहीं है। पशुआके स्वास्थ्यपर ही मनुष्योका स्वास्थ्य निर्भर करता है। कुछ लोग तो ऐसे हैं, जो पशुआके स्वास्थ्यको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते हैं, परतु अधिकाश व्यक्ति ऐस हैं, जो आकाक्षा रहनपर भी पशुओंके बीमार होनेपर या किसी दूसरे समय उन्हे कौन-सी दवा अथवा पथ्य देना चाहिये किन-किन कारणोसे उनम भाँति-भाँतिके रोग आते हैं और किस प्रकार वे पूर्ण स्वस्थ रह सकते हैं—यह नहीं जानते।

प्राचीन भारतमे तो पालकाप्य-जैसे महर्षि तथा ऋतुपर्ण नल एव नकुल-जेसे महाराज गो-चिकित्सक एव पशु-चिकित्सक थे। अग्निपुराण और गरुडपुराण बृहत्सहिता एव सुश्रुतके चिकित्सा-ग्रन्थोमे गो-चिकित्सापर बहुत कुछ लिखा गया है। परतु आजकी स्थिति बडी विकट है। कुछ भोले धर्मभीरु भाइयाकी तो यह धारणा हो गयी है कि देवी-तुल्य गोमाताके शरीरम अस्त्र-प्रयोग करना सबसे बडा पाप है। वैसे चाहे वह सड-गलकर तडफती रहे और अपने इस भौतिक शरीरको छोड भा दे। दूसरे यह भी एक भय है कि ओषधि करत हुए यदि दुर्भाग्यवश यथायोग्य ओषधि न दी जा सके और कुचिकित्साके कारण गायके प्राण चले जायँ तो चिकित्सकको गो-हत्याका महान् पाप लगेगा। तीसरे, गो-चिकित्साद्वारा अर्थ उपार्जन करना पाप है पर बिना कुछ लिये चिकित्सा करनेको न तो समय है और न मन ही। इन्हीं भ्रान्त शास्त्र-असम्मत एव घातक धारणाओके पीछे पडकर कोई भी भला मनुष्य गो-चिकित्साके क्षेत्रमे प्रवेश नहीं करना चाहता अतएव गो-चिकित्साका यत्किंचित् भार मूर्खोके हाथमे भी पडा हुआ है।

उपर्युक्त विषयापर पूर्णरूपसे विचार करनेपर ज्ञात होता है कि गो-चिकित्साके विषयमे लोगामे फैली हुई यह धारणा न ता शास्त्रसम्मत है न नीतिसम्मत और न यह बुद्धिवादकी दृष्टिसे ही ठीक है। भला जरा साचं तो सही—जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त ही नहीं मृत्युके पश्चात् भी हमारी सब प्रकारसे सवा करनेवाली माता गौके बीमार हानेपर या आहत होनेपर उसकी चिकित्सा करना पापकी श्रेणीमे गिना जायगा कि महान् पुण्यमे? हमारे विचारसे ता ऐसी गायोकी चिकित्सा, सेवा एव शुश्रूषा करनेसे पाप होना तो दूर रहा, कर्ताके जन्म-जन्मान्तरके अनेका पाप नष्ट हो जाते हैं।

आपस्तम्ब और सवर्त आदि स्मृतियाके वचनोसे यह बात और भी पुष्ट हो जाती है कि उपकारकी दृष्टिसे गो-चिकित्सा करते समय यदि कुछ हानि भी हा जाय तो उसमे भली नीयतसे काम करनेवालेको कोई अपराध नहीं लगता—

यन्त्रणे गोचिकित्सार्थे मृतगर्भविमोचने।
यत्ने कृते विपत्तिश्चेत् प्रायश्चित्त न विद्यते॥

(आपस्तम्ब० १। ३१-३२)

औषध स्नेहमाहार ददद् गोब्राह्मणेषु च।
दीयमाने विपत्ति स्यात् पुण्यमेव न पातकम्॥

(सवर्त० श्लोक १३८)

अर्थात् यत्नपूर्वक गो-चिकित्सा करने अथवा गर्भसे मरा हुआ बच्चा निकालनमे यदि गायपर कोई विपत्ति भी आ जाय तो प्रायश्चित्त करनेकी आवश्यकता नहीं है। यदि गौ और ब्राह्मणको उनके लाभके लिये कोई औषध तैल, आहार आदि दिया जाय और उससे उनपर कोई विपत्ति आ जाय तो भी पाप नहीं होता वर पुण्य ही होता है।

शास्त्रोंके वचनोसे ज्ञात होता है कि पाप और पुण्य मनुष्यकी भावनापर निर्भर है। हम गुस्सेम आकर किसीके शरीरपर साधारण-सी चोट लगा देते हैं तो पाप हो जाता है, किंतु डॉक्टर लोग बडे-बडे ऑपरेशन कर डालते हैं और कइयोंके अङ्ग भी काट डालते हैं फिर भी वे पुण्यात्मा समझे जाते हैं इसका कारण यही है कि हमारा कृत्य हिंसा द्वेष एव परपीडनकी भावनासे भरा होता है और डॉक्टरका काम देखनेम अत्यन्त दोषपूर्ण होते हुए भी प्रेम, उपकार एव हितकी पवित्र भावनासे प्रेरित है। वस्तुत क्रियाका महत्त्व भावनाके सामने बिलकुल गौण है। बस गो-चिकित्साके विषयम हमे इस सिद्धान्तको सामने रखकर बिना किसी प्रकारके सकोचके कार्य करना चाहिये। जिस प्रकार मनुष्यकी डॉक्टरी चिकित्साम काटना चीरना आदि आवश्यक हानेके कारण किसीको उसम घृणा नहीं है और सभी तरहके लोग नि सकोच भावसे यह कार्य करते हैं उसी प्रकार गो-चिकित्साके विषयमें सभी तरहके सुयोग्य पुरुषाको पूरे उत्साहके साथ भाग लेना चाहिये। ऐसा करनेसे ही हम अपने कर्तव्यका पालन कर सकेंगे।

गायोके रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

पशुओको भी रोग उतना ही कष्ट देते हैं, जितना कि मनुष्योको। अन्तर इतना ही है कि हम मनुष्य विवेक-साधन तथा उपायोद्वारा किसी सीमातक रोग दूर करके कष्टका निवारण कर लेते हैं किंतु बेचारे मूक असहाय, विवश तथा केवल पूँछ हिलानेतकका उपाय कर सकनेवाले पशु रोगग्रसित होकर कष्टोको सहते रहते हैं। पर मनुष्य-जातिकी शोभा इसमें नहीं है। जिसने अपनी बुद्धि तथा सामर्थ्यका उपयोग अपने ही लिये किया, उसने क्या किया? मनुष्यका यह कर्तव्य है कि परिवारके प्राणीके समान एक ही घरमें रहनेवाले अपने पशुओंके भी दु खको दूर करनेके लिये कुछ उठा न रखे। सोचा जाय तो ऐसा करनेमे वह पशुओके ऊपर कोई एहसान नहीं करेगा, यह उसका धर्म है क्योकि मनुष्यने ही तो उन्हे प्रकृतिकी गोदीसे छीनकर अपने कामके लिये अपने घरम बाँध रखा है। जगली पशुओकी दवा करने कौन जाता है? प्रकृति माता स्वय उनकी देख-भाल करती है। अत यदि मनुष्य प्रकृति माताके इन पशुओके दु ख-सुखकी परवा नहीं करता तो यह उसकी कृतघ्नता है। और वह प्रकृतिदेवीका कोप-भाजन बनकर दण्डका भागी होगा।

हमारे शास्त्रोंमें कहा हुआ है कि जबतक रोगिणी, भयभीत, (चकित) बाघ अथवा चोर आदिसे सतायी हुई, ऊँचे स्थानसे गिरी हुई दलदलमे फँसी हुई सर्दी-गर्मीसे पीडित तथा अन्य किसी प्रकारसे दु खित गौका उद्धार न कर ले तबतक आर्यसतान कोई दूसरा कार्य न करे यथा—

आतुरा मार्गत्रस्ता वा चौरव्याघ्रादिभिर्भयै ।
पतिता पङ्कलग्ना वा सर्वोपायैर्विमोचयेत्॥
ऊष्मे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्।
न कुर्वीतात्मनस्त्राण गोरकृत्वा तु शक्तित ॥

तात्पर्य यह कि जिस प्रकार अपने किसी घरवालेको खाँसी-बुखार हो जानेपर हम वैद्यके पास दौडने लगते हैं उसी प्रकार अपन पालित पशुओके रोगाको दूर करनेके लिये भी हमे सचेष्ट होना चाहिये।

पशुओकी रोगावस्थामे पशुशालाका प्रबन्ध

किसी पशुके रोग-ग्रस्त हो जानेपर उसे पशुशालासे हटाकर किसी अलग स्थानम रखना चाहिये। इस प्रकार दूसरे नीरोग पशुओकी रक्षा होगी। यदि छूतकी बीमारी न हो तो भी रोगी पशुको अलग हटा देना ही ठीक है क्योंकि प्रेम द्वेष तथा सहानुभूतिका भाव पशुआम भी होता है। जब अन्य पशु अपने किसी साथीको दुखी या उदास देखगे तो वे भी उदास होकर खाना-पीना छोड सकते हैं। रोगी पशुका दाना-पानी दूसरे पशुओके दाना-पानीम न मिलने पाय।

रोगी पशुकी देख-भाल

रोगी पशुकी देख-भाल बडी सावधानीसे करनी चाहिये। उसको ऐसे स्थानपर रखना चाहिये, जहाँ हवा और प्रकाश अच्छी तरह आये-जाये किंतु पशुके ऊपर न हवाका झोंका सीधा लगे न तो धूप लगे। मक्खी-मच्छरोसे बचानेके लिये गूगल गन्धककी धूप या साधारण धुआँ कर देना चाहिये। पशुको दवा आदि पिलाते समय उसके साथ बहुत जबर्दस्ती करके उसे अधिक कष्ट न दिया जाय। यदि पशु एक दिनसे अधिक एक करवट पडा रहे तो उसे करवट बदलानेकी चेष्टा करनी चाहिये। रोगकी पहचान या निदान जल्दबाजीमे नहीं वर ठीकसे किसी चतुर व्यक्ति या चिकित्सकसे कराना चाहिये। अच्छे हो जानेपर उस अन्य पशुओके साथ मिलानेमे बहुत जल्दी करना ठीक नहीं। कोई तेज या जहरीली दवा लगानी हो तो ध्यान रखना चाहिये कि इधर-उधर न लग जाय। मालिकको ऐसे पशु कवल नौकरोके भरोसेपर ही न छोडकर स्वय भी देखने चाहिये।

रोग होनेके सामान्य कारण

१-चारा-दाना आवश्यकतासे कम मिलना २-खुराकम आवश्यक पौष्टिक तत्त्वोका मेल न होना ३-सडा-गला दाना-चारा खाना तथा गदा पानी पीना ४-गदे स्थान, अधिक सर्दी-गर्मी और वर्षासे बचनेका प्रबन्ध न होना तथा ५-छूतकी बीमारियासे स्वस्थ पशुओको बचानेके विषयमे गोपालककी अनभिज्ञता।

रोगी पशुके लक्षण

१-दूध कम देना या न देना २-उदास रहना ३-झुडसे अलग रहनेकी इच्छा ४-चारे-दानेका त्याग ५-जुगाली न करना ६-गोबर न करना या पतला करना ७-बार-बार उठना-बैठना ८-आँखोका लाल हो जाना ९-जल्दी-जल्दी साँस लेना १०-मुख सूखना और ११-मुख तथा नाकसे पानी गिरना।

स्वस्थ गाय बैल और भैंसका तापमान प्राय १०१° से १०४° तक होता है नाडीकी गति प्रतिमिनट ४५ से ५ बारतक है और साँस प्रतिमिनटम १०-१२ बार आती है। इस विपरीत हो तो पशुको रोगी समझना चाहिये।

दवाकी मात्रा

रोगी पशुओके लिये आगे जा दवाओकी मात्रा लिखी गयी है, वह पूरे प्रौढ पशुके लिये है, जिसका वजन १० मनके लगभग हो। अवस्था तथा वजनके अनुसार इस मात्रामे अन्तर पडेगा।

		मात्रा
जन्मसे १ मासतक		$\frac{1}{16}$
२ माससे ४ मासतक		$\frac{1}{8}$
४	६	$\frac{1}{4}$
६	१२	$\frac{1}{3}$ या $\frac{1}{2}$
१ सालसे २ सालतक		$\frac{1}{2}$ या $\frac{3}{4}$
२ सालसे ऊपर		पूरी मात्रा

एक रोगकी कई-कई दवाइयाँ आगे दी गयी हैं, उनमेसे कोई एक करनी चाहिये। एक लाभ न करे ता दूसरीका प्रयोग करना चाहिये।

छोटे बच्चोके रोग और उनकी चिकित्सा

मनुष्यके बच्चाकी भाँति गाय-भैंसके बच्चे भी मिट्टी चाटनेम बडे हातिम होते हैं। कभी-कभी वे इतनी मिट्टी चाट जाते हैं कि वह उनके पेटम सड जाती है और कीडे पड जाते हैं। कीडे पडते ही बच्चा निर्बल होकर प्राय मर जाता है। पहली रोक तो यह है कि बच्चाके मुँहमे मुसका (जाली) चढा दे जिससे वे मिट्टी न चाट सक और यदि कीडे पड गये हो तो आधी छटाँक कबीला पीसकर आध पाव दहीम मिलाकर देनेसे लाभ होता है।

कभी-कभी बच्चाके पेटम दूध जम जाता है जिससे पाचनशक्ति मारी जाती है। इस रोगमे मट्ठा एक पाव सरसाका तेल आध पाव तथा नमक आधी छटाँक मिलाकर बच्चेको पिलाना चाहिये। इसमे एक छटाँक अमकलीको पानीमें भिगोकर और आध पाव सरसोंके तेलम मिलाकर दना भी लाभकारी है।

यदि सडा-गला दाना-चारा खा लेनेसे अथवा गर्म और गदा पानी पी लेनेसे बच्चेको पेचिश हो गयी हो और गोबरके साथ खून आता हो तो आध पाव लिसाढाके पत्तोको पानीम पीस-छानकर पिलाना चाहिये अथवा आधी छटाँक ईसबगोल एक छटाँक आँवलेके पानीमे दनेस बहुत लाभ हाता है।

जब बच्चेका खाँसी हा जाय तो केलेके सूख पत्ताकी राख बना ले और एक पैसेस दो पैसे भरतक इस राखको आधी छटाँक घीमे मिलाकर एक पाव कच्च दूधक साथ बच्चेको पिलाना चाहिये।

मूत्रके साथ खून आनेपर कलमी शोरा चौथाई छटाँकसे आधी छटाँकतक एक पाव कच्चे दूध और इतने ही पानीके साथ पिला देना चाहिये।

पेटमे दर्द हा ता चौथाईस आधी छटाँकतक पीनेका तमाकू-पानीम घोल-छानकर पिलाना ठीक है।

खुजलीकी भयकर बीमारी भी बच्चोको प्राय हो जाती है। इसके लिये निम्नलिखित पाँच प्रकारका दवाइयाँ हैं—

१-छटाँकभर लहसुनको आध पाव चने या जौके आटेमे मिलाकर पाँच दिनतक खिलाये।

२-सूखे नीमके पत्तोका चूरा नमकमे डालकर चने या जौके आटेके साथ मिलाकर देना चाहिय।

३-मसूरकी दाल तथा सुपारी दोनाको जलाकर इनकी राखको नीमके तेलम डालकर शरीरम लेप करे।

४-पीली सरसोको कपड धानेवाले साबुनमे मिलाकर शरीरमे लेप कर दे और ४-६ घट-पीछे फिनाइलके पानीसे नहला देना चाहिय।

५-एक पाव कडुवे तेलम एक छटाँक गन्धक मिलाकर रख ले और शरीरपर लेप करता रहे।

यदि बच्चेके मसूढ फूल गये हो और उनमे घाव हो गये हो तो उन्हे माँसे अलग करके नीचे लिखी दवा करनी चाहिये—

एक पाव घी और एक छटाँक एप्सम साल्ट मिलाकर पिलाना चाहिये। घी न मिल सके तो कोई दूसरी जुलाबकी दवा दे देनी चाहिये। बच्चके मुँहको फिटकिरीके पानीसे भलीभाँति दिनमें चार बार धोना चाहिये।

राग साधारणत तीन प्रकारके हाते हैं—(१) छूतवाले, (२) बिना छूतवाल साधारण और (३) शरीरक ऊपरके साधारण रोग।

छूतके रोग

छूतवाले राग बडे भयकर और बडी जल्दी फैलनेवाले होते हैं। इनसे अपने पशुआकी सदा रक्षा करते रहना चाहिय। इन रोगास पशुआको बचानक लिय नाचे लिखे उपाय करने चाहिये।

१-जिस इलाकम छूतका बामारी हो गया हा वहाँ अपने पशु न जान द, न वहाँके पशु अपन गाँवम आन द।

२-अपन पशुआकी दख-भाल ठाकम करे तथा उन्हें सडा-गला चारा-दाना न खिलाय।

३-जहाँ सब पशु पानी पीते हो उस तालाव या नदीमें पानी न पिलाकर अपने पशुआको कुएँसे पानी खींचकर पिलाये।

४-छूतकी बीमारीसे मरे हुए पशुको गाड देना चाहिये।

५-पशु-डॉक्टरसे अपने पशुओको टीका लगवा ले।

१-माता (Rinderpest)

इसके कई नाम हैं, पर इसके मुख्य लक्षण हैं—आँखोसे पानी ओर मुँहसे लार गिरना, शरीर काँपना कमरका टेढी हो जाना, मुँहमे छाले पडना और अत्यन्त बदबूदार पतला गोबर होना तथा उसमे कुछ खून आना।

इसकी सर्वश्रेष्ठ दवा टीका लगवाना है। अच्छे जानवरोको 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड' (Goat virus or serum simultaneous method) स रिंडरपेस्टका टीका लगवा देनेपर फिर यह बीमारी नहीं आती। राग हो गया हो तो उसकी दवाइयाँ ये हैं—

१-रातका मिट्टीके बर्तनम एक पाव आँवला भिगोकर सबेरे छान ले फिर उस पानीम एक पाव दही, एक छटाँक ईसबगोल और आध पाव शक्कर डालकर दिनमे दो बार खिलाये। आँवला न मिले तो धनियाका पानी काममे लाये।

२-बाँसी घासके बीज १ सेर बारीक पिसवाकर रख ले और आधा पाव सबेर तथा आधा पाव शामको दही या मट्ठाके साथ देनेसे बडा लाभ होता है।

२-जहरी बुखार अथवा गडी वा सूत

(Anthrax)

यह रोग रक्तके विकारसे होता है। पशुका बेचैनी होती है आँख बाहर निकल-सी पडती हैं, ज्वर बहुत हो जाता है ओर गोबर काल रक्तसे सना हुआ होता है। रोग होनेपर पशुचिकित्सकको शीघ्र बुलाना चाहिये और तबतक नीचे लिखी दवाइयामेंसे कोई पिलानी चाहिये—

१-तारपीनका तेल आधी छटाँक।

२-फिनाइल आधी छटाँक।

३-अलसीका तेल आधी छटाँक।

४-गरम पानी आध सेर।

३-गलघोटू (Haemorrhagic Septicaemia)

यह राग क्या है माना मृत्युकी सूचना है। इससे गलमे सृजन हो जाती है और पशुका गला घुटने लगता है। प्राय यह आश्विनके महीनेमे होता है। यह रोग रक्त-दोपसे होता है। नाक-मुँहसे लार टपकती है। मुँहमे दुर्गन्ध और जीभपर घाव हो जाता है। गोवर-मूत्र बद हो जाता है। इसकी दो-तीन दवाइयाँ हैं, सम्भव है लाभ कर जायँ।

१-दो सेर घी १ सेर एप्सम साल्ट १ पाव काली मिर्च और १ पाव काला जीरा मिलाकर पिला दे।

२-जमालगोटेका तेल ३० बूँद मीठा तेल ५ छटाँक और अलसीका तेल ५ छटाँक पिलाये तथा फिटकिरीके पानीसे मुँह धोये।

३-गन्धकका चूर्ण २ तोले तथा सोठका चूर्ण १ तोल आध सेर भातके या तीसीके माँड के साथ मिलाकर खिलाना चाहिये। इससे दस्त होकर रोग मिट जाता है।

४-फेफडेका बुखार या छूतका निमोनिया

(Contagious pleuro pneumonia)

यह रोग रोगी पशुसे छू जाने, उसके फोडा-फुसीकी मवाद लगने या उसके मुँहके सामने साँस लेनेसे होता है। इससे फेफडेपर असर होता है। पशुकी भूख कम हो जाती है, दूध घट जाता है, हल्का ज्वर सदा बना रहता है। धीरे-धीरे पशु अशक्त होकर पैर पीटने लगता है।

बुखारकी दवा ही इसम देनी चाहिये। नीम सफेदा, मरुआके पत्ते या तारपीनका तेल पानीमें डालकर उबालिये और उसकी भापमे पशुको साँस लेने दीजिये। १ हिस्सा तारपीनका तेल १० हिस्सा तिलके तेलमे मिलाकर छातीपर मालिश करनी चाहिये।

ऐसे रोगी पशुका दूध नहीं पीना चाहिये। बहुत लाचारी हो तो खूब उबाल लेना चाहिये।

५-खुर तथा मुँहका पकना

(Foot and mouth disease)

इस रोगम पशुके मुँह तथा खुरमे घाव हो जाते हैं जिससे पशु चारा-पानी छोड देता है ओर निर्बल हो जाता है। यह रोग हवाके द्वारा भी फैलता है। एक पशुको होते ही बहुतोंको हो जाता है। ऐसी स्थितिमे निम्नलिखित उपायोसे लाभ होता है।

१-अमकली आधा पाव कटेली पीलीका फूल १ छटाँक—इन दोनोंको औटाकर काढा बनाकर पिलाये।

२-पुराना गुड १ सेर तथा सौंफ १ पाव १ सेर पानी औटाकर पिलाये।

---

* पाँच सेर जलमे डेढ पाव तीसी डालकर नरम आँचसे घटा भर उबाले। उबालते समय बराबर हिलाते रहना चाहिये नहीं जल जायगो। फिर पतले कपडेसे छान ले। बस यही तीसीका माँड है।

खिलाना चाहिये।

१०-गजचर्म (Mange)

यह एक प्रकारकी भयकर खुजली है जो पहले थुई और पूँछपर होती है फिर धीरे-धीरे सार शरीरमे फैल जाती है। पशु खुजलाते-खुजलाते घाव कर लेता है चमडी माटी पड जाती है।

जहाँपर खाज हो, वहाँके वाल काटकर गरम पानी और साबुनसे साफ कर देना चाहिये फिर गाबर और सरसोका तेल मिलाकर तथा पशुको धूपमे खडा करके १०-१५ मिनटतक मालिश करनी चाहिये। मालिशका तेल इस प्रकार बना ले तो और भी अच्छा है। गन्धक १ भाग घी या तिलका तेल ८ भाग और नीमका तेल चौथाई भाग। गन्धकको महीन पीसकर सब चीजे मिला लीजिये ओर आगम भलीभाँति गरम करके मालिश कीजिये। खानेकी दवा भी दनेसे जल्दी लाभ होगा।

खानेका नमक १ छटाँक महीन पिसी हुई गन्धक आधा तोला आध सेर पानीमे घोलकर पिला देना चाहिये या रोटीम रखकर खिला देना चाहिये।

खुजली ओर दाद भी ऐसे ही रोग हैं, पर गजचर्मसे कम भयकर हें। इनकी भी दवा प्राय वही है।

११-कीडोमे दुवल या मनिया फूटना (Warble Flies)

जिन पशुओको खरहरा नहीं होता या मल-मलकर जो नहलाये नहीं जाते उनको यह राग हो जाता है। वर्षाक अन्तमें इस रोगके कीड शरीरपर आ जाते है और गर्मीके आरम्भमे अच्छी तरह बढ जाते हैं। इस रोगसे पशुको कोई विशप कष्ट ता नहीं होता किंतु उसकी खाल रद्दी हो जाती है। अत इस रोगसे पशुकी रक्षा करनी चाहिये।

चूने और तमाकूक गर्म पानीसे पहले पीडित स्थानको धा देना चाहिये फिर ढाई सेर पानीम एक छटाँक ताजा चूना मिलाकर उसम एक पाव महीन पीसा हुई तमाकू खूब मिलाकर घोल लना चाहिय। २४ घटे रखनके वाद पतल कपडेस छान लेना चाहिये और तव चूना पातनेवाली मूँजकी कूँचा बनाकर उससे यह दवा अच्छी तरह उस स्थानपर लगानी चाहिय। ध्यान रखना चाहिय कि दवा छेदास भातर पहुँच जाय। यह दवा तैयार न हो ता नीमका तेल लगा देना चाहिये। २ ताला खारा नमक और आधा तोला गन्धक एक पाव गुनगुन पानाम घालकर पशुका एक सप्ताहतक पिलाना चाहिय। कब्ज करनवाला खुराक कम देनी चाहिये।

१२-जूँ (Lice)

यह रोग भी स्पर्शमात्रसे एक पशुसे दूसरे पशुको लग जाता है किंतु यह उतना हानिकारक नहीं होता। यह प्राय बच्चोको होता है। १ भाग तमाकू और २ भाग हाथ-मुँह धोनेका साबुन ४० भाग पानीमे डालकर उबाल ल फिर ठडा हो जानेपर १ भाग मिट्टीका तेल मिलाकर मालिश करे।

१३-किलनी (Ticks) लग जाना

थन पूँछ कान तथा अन्य स्थानाम किलनी चिपट जानेसे पशुको बडा कष्ट होता है और उसका दूध कम हो जाता है। पशुआको किलनियोके कष्टसे बचाना आवश्यक है।

१-एक भाग नील, २ भाग गन्धक या वैसलीन या कडुआ तेल ८ भाग मिलाकर लगानेसे किलनी मर जाती है।

२-नमक ४ भाग मिट्टीका तेल १ भाग और कडुआ तेल ४ भाग मिलाकर लगानेसे भी किलनियाका नाश होता है।

बिना छूतके साधारण रोग

यद्यपि बिना छूतके राग उतने भयकर नहीं होते जितने कि छूतवाले फिर भी इनमसे कोई-कोई ऐसा हो जाता है, जो आगे चलकर बढ जाता है ओर पशुको उससे बचाना कठिन हो जाता है। रोगके समय दवाकी अपेक्षा पशुके रहन-सहन तथा खाने-पीनकी सुन्दर व्यवस्था होनी चाहिये। दवा तो केवल रोगको थामने अथवा पशुको असली हालतमें जल्दी लानेमे सहायक मात्र है, वास्तवमे उचित देखभालसे ही अधिकाश रोग नष्ट हो जात हैं। पशुके रहनेका स्थान साफ रखना उसे हल्का, सहजम पच जानेवाला और स्वादिष्ट भोजन तथा कुएँका स्वच्छ जल पीनेको देना एव उसे अलग रखकर अधिक सर्दी-गर्मीसे बचाना ही उसकी दखभाल करना है। यह जानवर है इसका रोग या ही अच्छा हो जायगा—ऐसा न सोचकर उसके रोगकी उचित चिकित्सा करनी चाहिये।

१-अपच

कभी सर्दी-गर्मी लगनेसे या कम-ज्यादा खा लेनेसे पशुको अपच हो जाता है। ऐसी दशामे पशु पूरा खाना नहीं खाता ठीकस जुगाली नहीं करता और सुस्त रहता है। ऐसी स्थितिम—

खारा नमक आध सर और २ तोला साठको कूट-पीसकर आध सर गुनगुने पानीम घालकर पिला दना चाहिये। इससे दस्त होन लगगे। दस्त न हा तो आधी खुराक फिर देनी चाहिये।

पिला देना चाहिये।

७-पित्ती उछलना

मनुष्योंकी भाँति पशुओंको भी कभी-कभी पित्ती उछल आती है। शरीरमें बड़े-बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं और खाज होने लगती है। ऐसे पशुको जुलाबकी दवाई देकर कम्बल या झूल उढ़ा देना चाहिये फिर नीचे लिखेमेंसे कोई एक दवा पिलानी चाहिये।

१-आध पाव गरू और आध पाव शहद पाव भर गरम पानीके साथ पिलाये।

२-नीमके पत्ते ३ तोला, अडूसा (वासा)के पत्ते ३ तोला शीशमके पत्ते ३ तोला—इन सबको आध सेर पानीमें उबाल ले जब डेढ़ पाव रह जाय तब ठंडा करके पिला दे।

८-खाँसी (Bronchitis)

पशुओंके समस्त रोगोंमें यह बहुत बुरा रोग है। इस रोगके अधिक बढ़ जानेसे गाभिन पशु कभी-कभी बच्चा फेंक देता है। इस रोगकी चिकित्सा तुरंत करनी चाहिये—

१-नौसादर सोंठ तथा अजवाइन एक-एक तोला लेकर पावभर गरम पानीके साथ पिलाने चाहिये।

२-एक छटाँक नमककी डली लेकर कुछ आकके पत्तोंमें लपेटकर रातमें भून लीजिये। सबेरे नमकको पावभर गरम पानीके साथ लगातार ३ दिनतक पिलाइये।

३-एक छटाँक सूखे अनारके छिलकेको पीसकर एक छटाँक मक्खनके साथ खिलाइये।

४-केलेके सूखे पत्तोंकी राख २ तोला मक्खन ४ तोला तथा कच्चा दूध १० तोला ३ दिनतक दीजिये।

५-आध सेर अलसीके तेलके साथ १ तोला तारपीनका तेल पिलाना भी लाभदायक है।

६-कपूर छः माशा कलमी शोरा एक तोला, अजवाइन २ तोला, सोंठ २ तोला नौसादर १ तोला, अलसी पीसी हुई १ छटाँक—इन सबको कूट-पीसकर गुड़के साथ दिनमें तीन बार खिलाना चाहिये।

९-निमोनिया (Pneumonia)

बहुधा यह रोग शीतकालमें होता है। सर्दी लग जानेसे पशुको ज्वर आ जाता है। नाकसे पानी बहता है और खाँसी भी कुछ-कुछ आने लगती है। इस स्थितिमें पशुको गरम स्थानमें रखना चाहिये और पीठपर कम्बल या झूल डाल देना चाहिये। ओषधियाँ नीचे लिखी हैं—

१-सोंठ २ छटाँक अजवाइन २ छटाँक तथा चायकी पत्ती आधी छटाँक, मेथी २ छटाँक तथा गुड़ या शीरा आध सेर औटाकर दिनमें २ बार पिलाना चाहिये।

२-आध सेर पीसा हुआ नमक और एक छटाँक अजवाइन लेकर दो बलवान् पुरुषोंसे मालिश करा दे।

३-कपूर ४ माशा तथा लहसुन एक पाव—दानोंको मिलाकर खिला दीजिये।

४-खानेको प्याज दे और उसका पानी निकालकर तथा नमक डालकर पिलाये।

५-आध सेर अलसी और एक सेर चावल दोनोंको उबालकर गरम पानीमें मिलाकर खिलाये।

१०-पेशाबमें खून आना

बीमारी चोट लगने या अधिक गर्मीसे यह रोग हो जाता है। इस रोगमें बबूलके पत्ते ४ छटाँक और हल्दी २ तोला पीसकर सुबह-शाम पिलाये अथवा आध सेर दूधमें बारीक पीसी हुई फिटकिरी १ तोला मिलाकर कई दिनतक पिलाये।

११-पेशाब न होना

यह रोग पुट्ठेकी कमजोरी या पथरी हो जानेसे होता है। सूखा चारा खिलाने और कम पानी पिलानेके कारण भी हो जाता है। इसमें शोरा १ तोला धनिया २ तोला और कपूर ३ माशा घोट-पीसकर ठंडे पानीमें घोलकर पिलाना चाहिये। नीमके पत्ते उबालकर और नमक मिलाकर मूत्र-स्थानपर लगाइये।

१२-पेशाब टपकते रहना

यह रोग भी प्रायः पथरी हो जानेसे होता है। अतः पशुओंके डॉक्टरसे ऑपरेशनद्वारा पथरी निकलवा डालनी चाहिये। दवा नीचे लिखी है—

१-मक्काकी बाल २ छटाँक तथा काली मिर्च एक तोला पीसकर सबेरे-शाम पिलाइये।

२-मक्काकी बाल न मिले तो खरबूजेके छिलके एक पाव एक तोला काली मिर्चके साथ पीसकर पिलाइये।

१३-फोतोंका सूजना

कभी चोटसे कभी बादीसे या कभी इस रोगके कीटाणुओंसे फोते सूज जाते हैं। पशुको बड़ा कष्ट होता है वह पिछले पैर फैलाकर चलता है। निम्न उपचार करने चाहिये—

१-गीले कपड़ेसे बार-बार ठंडा पानी फोतोंपर डालकर ठंडक पहुँचाइये।

२-हल्दी, चूना फिटकिरी—सबको बारीक पीसकर कड़ुआ तेलमें मिलाकर गरम कर ले और फोतोंपर सुहाता हुआ लेप करे।

३-इमलीके पत्ते और नमक पीसकर गरम कर ले और फातापर लगा दे।

यदि बादीसे सूज गये हों तो रेंडीका तेल ३ छटाँक और त्रिफलाका पानी पावभर मिलाकर पिलाइये तथा तमाकूके पत्ते गरम करके बाँधिये।

१४-मिरगी (Apoplexy)

यह रोग प्रायः बच्चोंको होता है या किसी कारणसे सिरकी ओर रक्तका बहाव हो जानेसे बड़े पशुओंको भी हो जाता है। पशु सहसा काँपने लगता है, गिर जाता है, नेत्र लाल हो जाते हैं। इसके लिये—

रोगीको दिनमें चार बार ठंडे जलसे स्नान कराना चाहिये। दवाएँ नीचे लिखी हैं—

१-बबूल और बरके आध-आध पाव कोमल पत्ते पीसकर आध सेर ठंडे पानीमें पिलाइये।

२-ढाकके बीज एक तोला, अनारकी छाल एक तोला, सौंफ एक तोला, अमलतास १ तोला—इन सबको आध सेर पानीमें पकाये, जब पानी पावभर रह जाय तब गुनगुना पानी पिला देना चाहिये। इसके बाद मीठा, सरसों या अलसीका आध सेर तेल तथा आधी छटाँक तारपीनका तेल पिलाये। बेहोशीकी दशामें रीठेका छिलका पीसकर सुँघावे या कंडेकी राखमें आकका दूध मिलाकर सुँघाये।

१५-ज्वर (Fever)

खाने-पीनेकी गड़बड़ीसे, मौसम बदलनेसे या मच्छर काटनेसे पशुको ज्वर हो जाता है। इसमें निम्न उपचार करे—

१-आठ औंस एप्सम साल्टमें ४ माशा कुनैन मिलाकर गरम पानीमें घोल ले, फिर ४ माशा कपूर और ८ माशा शोरा मिलाकर दिनमें ३ बार पिलाये।

२-गामा घासके फूल एक छटाँक और काली मिर्च एक तोला आध सेर पानीमें गरम करके पिलाये।

३-शोरा सवा तोला, नमक ढाई तोला तथा चिरायता ढाई तोला आध पाव राब या गुड़में मिलाकर खिला दीजिये।

१६-बिल्ल या सफेद झागवाला कीड़ा

घासमें एक प्रकारका कीड़ा होता है, जिसको खा जानेसे पशुका शरीर अकड़ जाता है, हाथ-पैर न हिलाकर वह चुपचाप पड़ा रहता है। ऐसी दशामें उसे आरामसे पड़े रहने देना चाहिये। उसके ऊपर कम्बल डालकर ऊपर छाया भी कर देनी चाहिये। इसके लिये निम्न उपचारका प्रयोग कर सकते हैं।

१-एक सेर प्याज खिलाकर थोड़ी देरके लिये उसका मुँह बाँध दीजिये।

२-आध पाव सज्जी पानीमें घोलकर पिलाइये।

३-एक तोला पिसी हुई काली मिर्च पावभर घीमें मिलाकर और गरम करके पिला दीजिये।

१७-ताव या घामड़ा (Sunstroke)

कड़ी गरमीमें लू लगनेसे या धूपमें अधिक समयतक काम करनेसे यह रोग हो जाता है। पशु छाया या पानीमें बार-बार बैठता है, कम खाता है और दुबला होता जाता है। इसके लिये नीचे लिखे उपचारका प्रयोग करे।

१-कच्चे आमका पना सबेरे-शाम पिलाइये।

२-पावभर सफेद तिल रातको भिगो दीजिये और सबेरे पीसकर सात दिनतक पिलाइये।

३-शीतकालमें यह रोग हुआ हो तो पुरानी मूँज १ पाव काटकर उसे एक सेर गुड़में डालकर अच्छी तरह औटाना चाहिये और दिनमें दो बार ४ दिनतक देना चाहिये या पशुकी पूँछमें थोड़ा नश्तर लगाकर २ रत्ती अफीम भर दे और पट्टी बाँध दे।

४-यदि ग्रीष्म-ऋतु हो तो आध सेर मसूरकी दाल उबालकर और ४ तोला नमक डालकर ४ दिनतक खिलाये।

५-शीशम, लिसोड़ा और बबूल—तीनोंकी आध-आध पाव पत्तियाँ लेकर २४ घंटे पानीमें पड़ी रहने दे, फिर निकालकर आध पाव सूखे आँवले और एक पाव कच्ची खाँड डालकर पिला दे।

६-पशुकी साँस तेज चलती हो तो थोड़ी-सी कपास कड़वे तेलमें भिगोकर खिलाना लाभदायक है।

१८-विष खा जाना (Poisoning)

कभी-कभी कोई पशु चारेके साथ कोई घोर विषैला कीड़ा खा जाता है या कोई दुष्ट मनुष्य विष खिला देता है, ऐसी दशामें नीचे लिखी दवाइयाँ करनी चाहिये—

१-डेढ़ सेर घीमें एक सेर एप्सम साल्ट मिलाकर पिलाना चाहिये।

२-कोई जुलाबकी दवा दे देनी चाहिये।

३-एक सेर गरम दूधमें आधी छटाँक तारपीनका तेल अच्छी तरह मिलाकर पिलाइये और फिर केलेकी जड़का रस एक पाव तथा एक तोला कपूर मिलाकर पिलाना चाहिये।

१९-चरीद्वारा विष खा जाना (Corn-Stalk)

वर्षाके दिनोंमें जब पानी पड़ना बंद हो जाता है और चरी छोटी हो जाती है, तब उसमें एक प्रकारका विष उत्पन्न हो

जाता है वही चरी खा लनसे पशुको विष चढ जाता है और वह तत्काल गिर पडता है। दाँत-जीभ काले पड जाते हैं। इस स्थितिमे—

पशुका शीघ्र किसी तालाब या नदीमे डाल दे। यह सम्भव न हो तो उसके ऊपर खूब पानी छोडे। गीली जगहस काचड लेकर सारे शरीरपर पात द। जुलाबकी कोई औषधि दे।

१-आध सर सज्जी २ सेर पानीमे घालकर पिलाये।

२-एक सेर कड़ुआ तेल पिलाये या एक सेर चूल्हेकी (लकडीकी) राख पानीमे घालकर पिलाये।

३-आध सेर घी और दो सेर दूध पिलाये या आध पाव कत्था एक सेर ठडे पानीमे घोलकर पिलाये।

४-काली मिर्च १ताला हींग १ तोला, सोठ १ तोला, अजवाइन १तोला, काला नमक २ ताला—सबको महीन पीसकर आध सेर गुनगुने पानीमे मिलाकर पिलाना चाहिय।

२०-लकवा (Paralysis)

इस रोगमे पशुका आधा या सारा अङ्ग निर्जीव हो जाता है। उस स्थानपर सुई चुभोनेसे दर्द नहीं होता। इसके लिये निम्न उपचारोको काममे लाना चाहिये—

१-शरीरको गरम रखना और लकवा मारे हुए अङ्गपर कपूर तथा मीठे तेलकी मालिश करना।

२-कुचला ४ माशा सोठ ६ माशा, हीरा कसीस ६ माशा, नमक आधी छटाँक—सबको कूट-पीसकर आध सेर गरम पानीमे घोलकर पिलाइये।

३-आधी छटाँक सरसो पीसकर पानीम लप बना लाजिये और लकवेके स्थानपर लगाइये।

२१-गठिया या जोड़का दर्द (Rheumatism)

सर्दीसे, वर्षाम भीगनेसे या रक्त-विकारसे यह राग हो जाता है। पैरोके जोडोपर सूजन आ जाती है। इसम निम्न उपचाराका प्रयाग कर सकते हैं—

१-दो सेर सूखी या ३ सेर हरी गोमाबूटी (मलडोडा) को कतारकर ५ सेर पानामे औटाये १ सेर रह जानेपर बूटी निकालकर फक दे। दो छटाँक पिसी हुई काली मिर्च और एक पाव काला नमक डालकर ७-८ दिनतक पिलाये।

२-एक सेर कडुई तरोई ५ सर पानीमे उबाले जब पानी एक सेर रह जाय तब उसे छानकर आध पाव काली मिर्च तथा पावभर काला नमक डालकर दा भाग कर ले और सबेरे-शाम पिलाये।

३-एक सर पिसा हुई मेथाम आध सर गुड और एक छटाँक अजवाइन मिलाकर १५ दिनतक खिलाये।

४-दो घुँघची (सोना तौलनेवाली रत्ती) पीसकर आध सेर गुडमे ४ दिनतक खिलाना चाहिये।

५-एक तोला कपूर, एक छटाँक तारपीनका तेल तथा एक पाव तिलके तेलको खूब मिलाकर मालिश करना चाहिये।

६-एक पाव लहसुन कुचलकर आध सेर तिलके तेलमे पकाये और फिर तेल छानकर मालिश करे।

२२-प्रसूतका ज्वर

यह राग प्रसूतक दु ख-दर्दसे बच्चेकी उतरी हुई झिल्ली भीतर रहकर सड जानेसे अथवा ब्याते समय ग्वालेके मैले-कुचैले हाथ लगकर नाखूनोका विष चढनेसे हा जाता है। इस स्थितिमे पहले घी-मिली हुई दस्तावर दवा देनी चाहिये, फिर थोडी गिल्सरीन और जरा-सा कार्बोलिक एसिड पानीमे डालकर पिलाना चाहिये।

सोठ अलसी तथा काली मिर्च एक-एक तोला एव नौसादर आधा तोला कूट-पीसकर एक पाव गुडम खिलाइय।

पानक लिये एक तोला कलमी शोरा मिलाकर गुनगुना पानी दीजिये।

२३-थन सूजना (Udder Inflammation)

कभी-कभी बच्चक जारसे मुँह मार देनेसे, दूसरे पशुके सींग मार देनेसे या दूधका अत्यधिक जोर होनेपर थन सूजकर कडे हो जाते हैं। इसमे—

१-एक छटाँक कलमी शोरा आध सेर गरम पानीमे मिलाकर तीन दिनतक पिलाना चाहिय।

२-नीमके पत्तोके उबले हुए पानीसे सेक करनेके बाद गेरू और अजवाइन पानीम मिलाकर पकाये और फिर लेप कर दे।

२४-योनिम कीड़े पडना

नीमके पते पानीमे उबालकर उससे पिचकारीद्वारा धोइये फिर तारपीनका तेल और मीठा तेल मिलाकर रुईके फाहे डुबोकर चिमटीसे अदर कर दीजिये। इस प्रकार सबेरे-शाम कई दिनातक दवा लगानी चाहिये।

२५-बच्चेदानीका बाहर निकलना

बुढापे या कमजारीक कारण या जेर गिराते समय जोर लगानेक कारण बच्चादानी बाहर निकल आती है। जब ऐसा अवसर आये तब उसे फिटकिराके पानासे अच्छी तरह धोकर भातर दबा दे और उस स्थानपर एक मुसका चढा दे। साथ ही निम्न उपाय करे—

१-आध पाव फिटकिरी पानीम घोलकर पशुको पिलाये।

२-एक पाव सूखा कतीरा गाद सवेरे-शाम खिलाकर आधी छटाँक रसौत २ सेर पानीमे घालकर पिलाये।

३-आधा तोला साठ आर एक ताला कालीमिर्च पावभर गरम घीम मिलाकर ३-४ दिनतक पिलाय। बच्चेदानीको भीतर करके पशुको ऐसा खडा करे कि पिछला भाग ऊँचा रहे।

२६-साडू रोग (Garget or Mammitis)

दूधवाले पशुआके लिय यह बहुत बुरा रोग है। इसम थन सूज जाते हैं। पशु थनामें हाथ नहीं लगाने देता। यह रोग कुसमयपर या बार-बार दूध निकालनेसे थनाम चोट लगनेसे गोबर करते समय पिछले पुट्ठापर लाठी मारनेसे, दुहते समय थन जोरसे खींचनेसे या धानका छिलका खा जानसे होता है। इसम—

१-रडीका तल गरम करक थनोपर मले।

२-पास्ताके एक डाडेका तथा नामके पत्ताका सेरभर पानीम डालकर भापसे सक करे।

३-आध सेर दही और पावभर माठा तल ३ दिनतक शामको देना चाहिये।

४-आध सेर सहजनकी पत्ती घाट-छानकर आधी छटाँक काली मिर्च और एक छटाँक नमक मिलाकर ३ दिनतक देना चाहिये।

५-आध सेर घी, एक छटाँक काली मिर्च ओर आध पाव नीबूका रस ३ दिनतक पिलाये।

६-जाडेकी ऋतु हो ता नमक, तेल और अजवाइन डालकर काँसीके बर्तनसे पुट्ठेपर मालिश करे।

७-बीमारी अधिक बढ गयी हो तो १ सेर घा ४ सेर गुड या शीरा आध सेर काला जीरा तथा आध सेर कालीमिर्च डालकर पिलाना चाहिये।

८-दूध निकालकर फक दना चाहिये। पीब पड गयी हो तो चिरवाना ठीक है।

२७-मुँहसडी या अँगियारी

यह भी थनाका रोग हे और इसक भी व ही कारण हैं जो साडू रोगके हैं। थनके सोतक ऊपर एक छोटी पीली-सी पपडी जम जाती हे और फिर फुसीकी तरह हा जाती है। इसक लिये—

१-रडीके तेलमे थोडा नमक डालकर गर्म करे और दिनमे ४-५ बार मालिश करे।

२-नीमके पत्ते गरम करके भापसे सके।

३-एक सेर पानीम एक पाव कत्था घोल-छानकर पिलाना चाहिये।

२८-चन्द्री

यह बहुत बुरा ओर हानिकारक राग है। पहले थनक ऊपर छोटा-सी एक गिल्टा हाती है फिर थन सूजकर उसम पीब पड जाती है। गिल्टी फूटकर थनम छेद हा जाय तो नाचे लिखी दवाइयाँ भर देनी चाहिये—

१-आकका दूध, साँपकी कचुल और लहसुन—इनको बराबर पीसकर घावक ऊपर लगा दे और सावधानीसे पट्टी बाँध दे।

२-नीमकी कापलाका पीसकर एक टिकिया बनाय उसे गायके घीमे लाल करे। फिर टिकिया फककर उस घीको घावम दिनम ४-५ बार लगाये।

२९-थनका मारा जाना (Blind Teats)

थनकी किसी बीमारीसे थन मारा जाता है और दूध नहीं निकलता। यह राग हे तो असाध्य किंतु सम्भव है नीचे लिखी दवाइयाँ लाभ कर जायँ।

जब थन मारी हुई गाय गाभिन हो जाय तब एक पाव सरसोका तल प्रत्यक शुक्ल पक्षकी दूजको बच्चा देनेतक बराबर देते रहना चाहिये। बच्चा देनेक कुछ घटे पहले आधी छटाँक हींग चने या जोकी रोटीम खिला दे।

यदि किसी पशुका थन जल्दी ही दो-चार दिनसे बद हुआ हो तो आध पाव काली जीरी आर आध पाव काली मिर्च पीसकर आध सेर गरम पानीमे मिलाकर दिनमे दो बार ३ दिनतक दना चाहिये। अथवा ४-५ कागजी-नीबुआका रस एक पाव घीम मिलाकर दाना समय दाजिय।

३०-थनाका कट जाना (Sore Teats)

दूध पाते समय बच्चेका दाँत लगनेसे या ऊपरी चोट लगनेस थनपर घाव हो जाता ह, इसकी दवा शीघ्र कर लेनी चाहिये—

१-तवा गर्म करक थनके नाचे रख ओर दूधकी धार छोडे। उसके भापसे लाभ हागा।

२-थाडा मक्खन या घी लकर पिसी हुई हल्दी और थोडा नमक डालकर दूध दुहनेक पाछे घावके ऊपर लगा दे।

३१-बच्चा देनेक पीछे दूध न उतरना या थोडा उतरना

गाभिन हानेपर काई-काई लोग पशुको दुहना एकदम बद कर दत हैं जिसस थनाम दूध सूख जाना है आर रोग हो जाता ह। अत धीरे-धीरे दूध सुखाना चाहिये। साथ ही—

१-गरम घी और नमकसे थना और हवानेपर मालिश करना चाहिये तथा दूध थाडा-बहुत अवश्य निकालना चाहिये।

२-एक सेर सनके बीजका आटा १ सेर शीरेमे मिलाकर ३ भाग करे और दिनमे ३ बार आठ रोजतक दे तो पूरा दूध उतर आता है।

३-गायका दूध २ सेर गुड या शारा १ सेर, गेहूँका दलिया १ सेर, माटा चावल १ सेर—इन सबको २ सेर पानीमे औटाकर आधा सवेरे ओर आधा शामको देनेसे अच्छी जातिके पशुका दूध अवश्य बढ जाता है।

३२-बाँझपन (Barrenness)

पैदा होते ही पूरा दूध न पानेपर अच्छी खुराक न मिलनेपर समयपर साँड न मिलनेपर या जुडवाँ बच्चामसे एक नर तथा एक मादा होनेपर उस मादाको प्राय बाँझपनका रोग हाता है। इसमे—

१-आधी छटाँक फास्फेट सोडा गरम पानीमे डालकर योनिको बराबर धाते रहना।

२-किसी निपुण चिकित्सकसे गर्भाशयका मुह खुलवा देना।

३-गायको बराबर साँडके साथ रखना।

४-दो सेर सनके हरे पत्ते रोज खिलाना।

५-एक सेर सनके बीजका आटा आध सेर गुड़मे मिलाकर १५ दिनतक खिलाना।

६-सात छुहाराकी गुठली बासी जोकी रोटीमे रखकर सात दिनतक खिलाना।

७-दो सेर अङ्कुर निकले हुए गेहूँ या जौ १५ दिनतक खिलाना।

८-ढाई पाव मेथी महीन पीसकर पानीमे लुगदी बनाकर ३-४ दिनतक सवेर देना।

३३-गायका बार-बार गर्भस्राव होना

यह राग गरम खुराक या गायकी गर्भ-धारणकी शक्ति कम हो जानेसे हाता है। गर्भ दूर करनेके लिये गायका ठडी खुराक देना चाहिये। एक बार गाभिन हाते ही पावभर घीमे आधा तोला पिसा हुई काली मिर्च मिलाकर दाजिये। इसके बाद नीचेकी दवा दे।

१-गाभिन हानेके बाद दो सेर लिसोडके हरे पत्ते खिला दीजिये। जिस दिन गाभिन हो उस दिन खाना न दीजिये और दे तो कम तथा ठडा।

२-गाभिन होनेके २-१ दिन पहले अङ्कुर निकले हुए ४ सेर गेहूँ या जौ खिला दीजिये। इसे ४-५ दिनतक खिलाइये।

३-पावभर सफेद तिल रातमे भिगो दे, सबेरे घोट-पीसकर गाभिन होनेके दिन और २ दिन बादतक पिला दे। सर्दीके दिनोंमे इसे नहीं देना चाहिये।

३४-सर्पका काटना

सर्पके काटनेका विश्वास हो जानेपर ५ भाग परामाग्नेट् पोटाश ९५ भाग पानीमे मिलाकर काटी जगहके भीतर पिचकारीसे भर दे और काटी जगहके ऊपर रस्सीसे कसकर बाँध दे।

३५-कुत्तेका काटना

पशुको कुत्तेके काटनेसे जो घाव हो जाय, उसको कास्टिक पोटाशसे जला देना चाहिये। यह दवा न मिले तो लाल मिर्चके बीज घावमे भर देना चाहिये।

शरीरके ऊपरके साधारण रोग

पशु परस्पर लडते-भिडते रहते हैं जिससे उनके किसी अङ्गपर चोट आ जाती है। चोट आदि न लगनेपर भी कभी-कभी आँख, कान आदिमे कोई विकार हो जाता है। रक्तके विकारसे भी कहींपर सूजन हो जाती है। इन सब रोगोंको साधारण समझकर उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। इनका अच्छा कर डालना ही ठीक है, नहीं तो आगे चलकर पशुको भारी कष्ट हो सकता है।

१-सूजन और दर्द

चोट सर्दी, गर्मी या रक्तके विकारसे शरीरके किसी भागपर सूजन आ जाती है। चोटकी सूजन हो तो नीमके पत्ते उबालकर उस पानीसे सकना चाहिये फिर सुहागा तवेपर फुलाकर तिल, घी, वैसलीन या मक्खनके साथ सूजनकी जगहपर चुपड देना चाहिये।

यदि रक्त-विकारसे सूजन हो गयी हो तो नीमके पत्ते उबालकर सेंके। फिर १ तोला गेरू, २ तोला मकोयके रसमें मिलाकर लेप कर दे या हल्दी-चूना मिलाकर लेप करे।

भीतरके किसी भागमे दर्द हो तो पद्रह मिनटसे आधे घटेतक फलालेन या कम्बलको गरम जलमें डुबाकर निचोड़कर उसका सेक करना चाहिये। फिर सूखे कपडेसे भलीभाँति पोछकर सरसोका तेल ४ भाग और तारपीनका तेल २ भाग खूब मिलाकर मालिश करनी चाहिये।

२-रसौली और मस्सा

कई बार खालके नीचेसे गद-सी बनकर सूजती या मढ़ती चली जाती है या काले-काले मस्से निकल आते हैं। इनसे

पशुको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं होता, पर उसकी खाल बिगड जाती है। इसस इनको हटाना चाहिये।

रसौलीमे सूजनकी भाँति सेक करना चाहिये। इससे न दबे तो ३ हिस्सा पानी और १ हिस्सा कच्चे पपीतेका दूध मिलाकर रख लीजिये और रुईके फाहेसे दिनमे कई बार लगाइये।

मस्सेपर नाइट्रिक एसिड, पपीतेके दूधम मिला हुआ पानी या चूना-सज्जीमे थोडा पानी डालकर दिनमे कई बार लगाइये। चूना-सज्जी किसी काँचके बर्तनमे या सीपियामें रखे।

३-फोडा-फुसी और घाव (Abscess)

किसी पशुको फोडा हो जाय तो उसे अच्छी तरह पक जाने दीजिये। फिर चीरकर उसकी पीब निकाल देना चाहिये। इसके बाद नीमके पत्तोको पानीमे उबालकर उस पानीसे घावको धोइये और नीमका तेल लगा दीजिये अथवा सरसोका तेल, तारपीनका तेल और कपूर एक-एक छटाँक लेकर और उसम चौथाई छटाँक फिनाइल डालकर घावपर लगाते रहिये। अथवा पत्थरका कोयला खडिया मिट्टी, फिटकिरी और नीलाथोथा—चारोका बराबर लेकर उनका चूर्ण करके लगाइये। घाव बडा हो तो नीमका तेल और मोम मिलाकर लगाना चाहिये।

घावको कभी खुला नहीं छोडना चाहिये नहीं तो स्याई नामकी मक्खी उसपर बैठती है और घावमे कीडे पड जाते हैं। यदि कीडे पड गये हो तो आडू या मरुएके पत्तोको पीसकर उसकी टिकिया घावपर रख दीजिये और मुल्तानी मिट्टीसे घावके ऊपर लीप दीजिये जिससे घावको हवा न लगे ऐसा करनेसे कीड मर जायँगे, तब पीछे घावको अच्छा कर लीजिये। गहरे घावम कपूर एक भाग, इसका चतुर्थांश तारपीनका तेल और इतना ही तीसीका तेल खूब मिलाकर लगाना चाहिये।

४-हड्डी-पसलीकी चोट

बहुधा लडने-भिडनेसे हड्डीमें चोट पहुँच जाती है या हड्डी टूट जाती है। हड्डी टूट गयी हो या उतर गयी हो तो किसी जानकारस या पशुओके डॉक्टरस उस ठीक कराना चाहिये। किसी जानकार आदमीके मिलनेके पहले नीचे लिखी दवाइयाँ करे—

१-पीपलकी हरी छाल ५ सर पानीमे उबाले जब पानी २ सेर रह जाय तो चोटपर सेक करे।

२-भेडके दूधमे पीली कटेरियाँ औटावे और चोटकी जगहपर सेक करे तथा लेप कर दे।

३-एक छटाँक फिटकिरी, आधी छटाँक हल्दी तथा १ सेर दूध पशुको तुरत पिला देना चाहिये।

५-खुरम कील-काँटोका चुभना

यदि खुरमे कील-काँटा या कोई नुकीली चीज चुभ गयी हो, तो उसे निकालकर कपूर और तारपीन-मिले हुए तिलके तेलमें रुईका फाहा भिगोकर सावधानीसे भीतर कर देना चाहिये और आस-पास भी तेल चुपड देना चाहिये। दो-चार रोज करनेसे आराम हो जायगा।

६-सींग टूटना या सड़ना

लडने-भिडनेसे या लाठीकी चोटसे सींग टूट जाते हैं। सींग दो प्रकारसे टूटते हैं—एक तो जडसे निकल जाते हैं, दूसरे सींगके ऊपरका केवल खोल निकल जाता है।

जडसे टूटनेपर छोटी बेरीके पत्ते पीसकर घावमे भर दीजिये और ऊपरसे कपडा बाँधकर नीमका तेल डालते रहिये। यदि खोल उतर गया हो तो उडदकी पीठीमें आदमीके सिरके बाल सानकर सींगके ऊपर थोप दीजिये और कपडा बाँधकर नीमका तेल डालते रहिये। अथवा मुल्तानी मिट्टीको सींगपर लपेटकर ऊपरसे बाल लपेट दे या सीमेंट अथवा चूना घावमे भरकर कपडा बाँध दे और नीमका तेल डालता रहे।

सींग टूटनेसे घाव सड गया हो या कीडे पड गये हों तो नीमके पानीसे धोकर तारपीनके तेलमें रुईका फाहा दिनमे दो-तीन बार रखना चाहिये।

७-कानमे मवाद पड़ना या घाव होना

कानमें घाव हो गया हो तो उसे नीमके पानीसे धोकर १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा सुहागा (भुना हुआ) और २० हिस्सा सरसोका तेल मिलाकर घावपर लगाना चाहिये। अथवा आकका तेल घावपर लगाकर २-४ बूँदे कानमे भी छोड दे।

८-आँखका रोग (Sore Eyes)

आँखका रोग बहुधा किसी जगली जडी-बूटीके लगनेसे या लडने-भिडनेसे होता है। आँखके रोगमे आँखोसे पानी और कीचड बहता है। इसके लिये निम्न उपचार करे—

१-फिटकिरी पीसकर पानीमे घोल-छान ले और इससे आँख धोये।

२-नमक और सहजनके पत्ते रातमे भिगो दे। सबेरे घोट-छानकर उस पानीसे धोये।

३-सहजनके बाजका रगडकर पानीम डाल और आँख धोये। कुछ दिन राशनीसे बचाये।

९-बैलका कधा आना या फार लगना

कधा आ जानेपर नमक-मिले गरम पानीसे सक करना चाहिये।

हल जोतते समय बेलके उछलनेसे यदि फार लग जाय तो घावपर तुरत मूत्र लगा देना चाहिये। ३-४ दिन करनेसे अच्छा हो जायगा।

१०-आगसे जल जाना

पशुक जल जानेपर तुरत चूना या चूनेके पानीको वेसलानम मिलाकर लगाना चाहिये। १०० बार फटा हुआ गायका घी भी बहुत लाभ करता है। चूनेके पानीमे तिल रडी या नारियलका तल मिलाकर फटनसे एक मलहम बन जायगा उसके लगानेमे भी अच्छा होता है।

११-बावनी अथात् पूँछका घाव

पहले पूँछकी चोंरीके बाल खुजलासे उडत हैं और धीरे-धीरे घाव होकर पूँछ गलने लगता है। इसके लिये सल्फ्यूरिक एसिडको चोडे मुँहकी बोतलमे भरकर घाववाले सिरको ५ मिनटतक उसम डाले रह और फिर कपडा बाँध द।

इस प्रकार अपने पशुआकी यथासम्भव चिकित्सा करनी चाहिये। किसी योग्य अनुभवी चिकित्सकका परामर्श अवश्य लेना चाहिये। कभी-कभी ठीक अनुपात एव प्रयोगका ज्ञान न होनेसे लाभके बदले हानि हानेकी भी आशका रहती है। गोशालाम यथासम्भव साधारण उपयोगमे आनेवाली ओषधियाँ बराबर रखनी चाहिये ताकि तात्कालिक चिकित्सा की जा सके। पशुआके प्रति प्रेम-भाव रखते हुए उनके दु ख-दर्दकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

आयु

गाय और बैलकी अधिक-से-अधिक आयु प्राय २५ वर्षकी होती है। जलवायु, लालन-पालन तथा परिश्रम आदिके कारण इसम कमी-बेशी भी हो सकती है। आमतौरपर इनकी औसतन आयु १२ वर्षके लगभग होती है। एक बछिया ३ वर्षकी उम्रके आस-पास बिया जायगी। कोई-कोई गाये १२-१४ महीने बाद दुबारा बिया जाती हैं। कम-से-कम गायको १८-२० महीने बाद दुबारा जरूर बिया जाना चाहिये।

१०-१२ वर्षकी उम्रतक गाय ५-७ अच्छे बछडे-बछिया द देती है। कोई-कोई गाय १०-१२ बच्चे भी जनती है, परतु प्राय १५-१६ वर्षकी उम्रके बाद वह बच्चे देना बद कर देती है।

दाँत और सींगोके द्वारा इनकी उम्र पहचानी जाती है।

नये बच्चेके दूधके २ दाँत होते हैं।

१५ से २१ दिनतकके बच्चेके दूधके ४ दाँत होते हैं।

एक महीनेके बच्चेके दूधके ८ दाँत होते है।

तीन-चार महीनेके बाद ये दाँत पुष्ट होने लगते हैं और १५ से १८ महीनेकी उम्रतक सब पुष्ट हो जाते हैं। फिर उम्र पाकर ये उखड जाते हैं और इनके स्थानपर असली पक्के दाँत निकल आते हैं।

दो-ढाई वर्षकी उम्रमे २ पक्के दाँत आ जाते हैं।

तीन-साढे तीन वर्षकी उम्रमे ४ पक्के दाँत आ जाते हैं। (इस समय पशु पूर्ण युवा हो जाता है।)

चार-पाँच वर्षकी उम्रमे ६ पक्के दाँत आ जाते हैं।

पाँच-छ वर्षकी उम्रमे ८ पक्के दाँत आ जाते हैं।

इस प्रकार मुँहमे काफी समयतक रहनेवाले आठो दाँत पूरे हो जाते हैं। यदि इनमसे कोई दाँत टूट जायगा तो वह दुबारा नहीं निकलेगा, इसीसे ये स्थायी या पक्के कहलाते हैं।

गाय-बैलोंके निचले जबडेमे दाँत होते हैं और ऊपरके जबडेमे खाली कडी हड्डी होती है। वे नीचके दाँतोसे चारा कुतर-कुतर कर पहले जल्दी-जल्दी अपना पेट भर लेते हैं। फिर आरामसे बैठनेपर उस खाये हुए चारेको मुँहमे वापिस लाकर दोनो जबडोके किनारेवाली मजबूत दाढोसे महीन जुगाली करके आमाशयमे पहुँचाते हैं।

दस-बारह वर्षकी उम्रके बाद जैसे-जैसे गाय ढलने लगती है, वैसे-वैसे उसके दाँत भी घिसकर ठुण्टी-सरीखे हो जाते हैं।

गौके प्रमुख रोग और उनकी चिकित्सा[1]

(डॉ० श्रीराजकुमारजी शर्मा 'दीक्षित' रिटायर्ड पशु-चिकित्सक)

[क]

गौके रोगोकी होम्योपैथिक चिकित्सा

गाय एक मूक प्राणी है। वह अपने दु खकी व्यथा कह नहीं सकती। किंतु उसका दु ख-दर्द आपको समझना होगा। वह निरीह प्राणी है, अपनी व्यथा कैसे बतायेगी। उसे तो दर्द सहन करनेकी असीम शक्ति प्राप्त है। पर आपको तो कुछ अवश्य ही करना चाहिये। इसी दृष्टिसे यहाँ जनकल्याणके लिये गोधनके कुछ रोगोकी औषधियोको दिया जा रहा है। किसी योग्य चिकित्सकका परामर्श लेकर इनका प्रयोग करनेसे अवश्य लाभ होगा ऐसा हमारा व्यक्तिगत अनुभव है। जहाँ दवाईके सम्मुख उसकी शक्ति लिख दी गयी है उसे ही प्रयोग करे, जहाँ शक्ति नहीं लिखी है ३०या २००शक्तिका जर्मनीका १० एम० एल० सील बद डायलूशन लेकर एक या दो छोटे बताशे या खाँड-बूरा आदि प्लेटमे रखकर १०से १५ बूँद उसपर डालकर गायको दिनमे एक बार चटा दे। यह ध्यान रख गायके मुँहम खाद्य पदार्थ पहलेसे न हो और बताशा भूमिपर न गिर जाय।

(१) भूख न लगना—(Anorexia) (नक्स १×+) कार्बोवेज १×+ पेप्सिन १× मिलाकर दिनमे ३ बार दे।

(२) मुँहके छाले (Thrush)—घाव जीभपर गालाके अदर हो तो बोरेक्स दें, लारके साथ घावकी स्थितिमे मर्क्युरियस द।

(३) कब्ज (Canstipation)—हाइड्रास्ट २× दे।

(४) अतिसार (Diarrhqea) नय रोगम चाइना ओर जीर्ण रोगमे फॉस दे।

(५) रक्तमय अतिसार (Dysentery)—नक्स २००की एक मात्रा देकर मर्क्युरियस कारोसाइवस दें।

(६) कमजोरी (Weakness)—एल्फाएल्फा क्यू एव फोस-एसिड एक दिनके अन्तरसे अलग-अलग दें।

(७) अफारा (Tympenitis)—वायुसचयपर एसाफिटेडा कब्ज भी हो तो कार्बोवेज और दर्दमे कोलोफाई दे।

(८) खाँसी (Cough)—ड्रासेरा २००की केवल एक ही मात्रा, यदि दोहरानी पड तो ४-५ दिन पश्चात् दे।

(९) ज्वर (Fever)—अचानक हुआ हो तो एकोनाइट और धीरे-धीरे हुआ हो तो जेल्सियम देना चाहिये।

(१०) सूखा रोग (Marasmas)—छोटी बछिया खाती तो यथेष्ट है, पर सूखती जाती है, ऐसी स्थितिमे एब्रोटेनम देना चाहिये।

(११) बाल झड़ना—(शरीरम मिनरलकी कमीसे) फ्लोरिक एसिड द।

(१२) गायका दूध कम हो जाना (Agalactia)—अचानक कम होना या पवास न आना (दूध न उतरना)—एग्नस, सद्य प्रसूताके थनोमें दूध न आनेपर अर्टिका क्यू दिनम तीन बार दे।

(१३) बछड़-बछियाओके गर्मीके दस्त (Calvis cholera) आर्स दे।

(१४) गायका दुर्बल होना या रक्ताल्पता होना (Anemia)—फेरम-मेट दे।

(१५) गायके मूत्रम रक्तका आ जाना—प्यासमे—आर्स, मूत्रके साथ जलन हो, जोर लगाकर कूँथ रही हो तो कैन्थेरिस देना चाहिये।

(१६) गायके मूत्राशयम जलन (Irritation in bladder)—सासापरिला एव इक्युयर्क एक दिन छोडकर अलग-अलग दिनमे एक बार दे।

(१७) मूत्र कष्टसे आना (Dysuria)—एपिस अथवा कैन्थरिस दे।

(१८) जल जाना, छाला-फफोला पड़ जानेसे पूर्व और पश्चात् (Burns)—कैन्थरिस द।

---

[1] १-यदि कोई सज्जन इस सम्बन्धमे परामर्शके इच्छुक हो तो डॉ० श्रीराजकुमारजी शर्मा, रिटायर्ड पशु-चिकित्सक एव होम्योपैथ ॐश्रीहरि धाम, ४३/१ पुरानी मोहनपुरी, मेरठ-२५०००१ (उ० प्र०)-के पतेपर सम्पर्क कर सकते हैं।

(१९) गायके शरीरमे पानी भर जानेसे सूजन (Dropsy)—एपिस अथवा आर्स दे।

(२०) स्तन (थन) की सूजन (Mastitis)—लाल सूजनमे 'एपिसबलाडोना' दे। पत्थर-जैसी कडी सूजनमें कोनियम, जब पस पडनेवाली हो तो बेलाडोनाके पश्चात् ब्रायोनिया दे।

(२१) स्तनोका तरेड़ जाना (Nipples cracked)—ऐसी स्थितिमे रेटेन्हिया दे।

(२२) गर्भपात होनेकी आशका (Abortion)—कोला फाइलम दे।

(२३) प्रसव/प्रसवोत्तरपीड़ा (After Pains)—कोला फाइलम दे।

(२४) गोबरके साथ मलाशय बाहर निकल जाना (Paralapsis)—एलाय एव फोडा फाइलम पर्याय-क्रमसे दिनमे एक बार देना चाहिये।

(२५) गर्भाशय-भ्रश (Paralapsus uteri)—सीपिया दे।

(२६) बाँझपन (Sterility)—दुर्बल गाय या बछियाको ब्राइटाकाब तथा स्वस्थको एग्रस दे।

(२७) पेटके कीड (Worms)—गोल और सूत्र-कृमियाँ आदि समस्त कृमिके लिये चेलोन मूल अर्ककी १०मे १५ बूँद ५ दिनतक क्रमश दे।

(२८) चोट (Injuries)—गुम चोटमे अर्निका तथा घाववाली चोटमे हाइपेरिकम दे।

(२९) खून बहनेवाला घाव—कैलेण्डूला मूल अर्क, यह रक्त बहनेको रोक देगा, खानेको भी दे घावपर भी लगाये।

(३०) टेटनस—होम्योपैथीमे टेटनसका टीका देनेकी जगह लाइमकी एक खुराक पिला दी जाती है।

(३१) घाव भरनेमे (Wounds)—हैक्ला लावा ६ एक्समें तथा घाव सुखाने-हेतु साइलीशिया एक हजारकी एक मात्रा दे।

(३२) बारम्बार गर्भपात होना (Miscarriage Repeated)—सिफिलिनम १ एम + बसालिनम १ एम की एक खुराक दे।

(३३) बछिया या गायका गर्भ न होना (Menstruation)—'जैनोसिया अशोका मूल अर्क' एक सप्ताहतक दिनमे तीन बार दे।

(३४) खुजली (Mamze)—एन्टीपाइरीन २ एक्स दे।

(३५) कानमे मिट्टी-धूल पड़नेसे पीब आना (Ear Discharge)—हीपर अथवा पल्स दे।

[ख]

पशु-चिकित्सकका सिर दर्द—दुधार गायमे कैन्सर

आजकल गायके थनका कार्सिनोमा पशु-चिकित्सकके लिये एक कठिन प्रश्न बन गया है। शोथयुक्त कार्सिनोमा (Inflammatory Carcinoma) गर्भवती या दुधार गायके थनमे तीव्र गतिसे बढनेवाला कैन्सर है जिसका प्रारम्भ एक पिण्डके रूपमे होता है। स्तनके उपरिस्थ उत्तक शोथयुक्त हो जाते है और वह सूज जाता है तथा तीव्र स्तनशोथके समान दिखायी देता है। कितनी ही बार अन्य थन यहाँतक कि पूरा अयन (बाँक-Udder) भी रोग-ग्रस्त हो जाता है। शोथयुक्त कार्सिनोमाकी अभीतक कोई विशेष उपयोगी चिकित्सा ज्ञात नहीं हुई है। निर्मूलक स्तनोच्छेदनसे कोई लाभ नहीं होता और न उसका परामर्श ही दिया जाता है। महिलाओमे शमनकारी (Palliative) एक्सरे चिकित्सा की जा सकती है और हार्मोन रोध्य उपायोसे उसमे सहायता मिल सकती है, किंतु मूक गौ माताके समक्ष एलोपैथी चिकित्सा भी मूकदर्शक मात्र रह गयी। बेचारी गौ माताका दुःख समझते हुए भी पशु-चिकित्सक अपना समस्त ज्ञान एव सेवा देकर भी कुछ नहीं कर पाता। मुझे इन क्षणोका प्रत्यक्ष अनुभव है क्योकि गत चालीस वर्षोसे भी अधिक समयसे मुझे गौ माताकी चिकित्सा करनेका अवसर मिला है। होम्योपैथी चिकित्सासे मुझे इस दिशामे पर्याप्त सफलता मिली है।

स्तन जब दूध-भरे हो गायके बैठते समय या बच्चेके दूध पीते समय थन या बाँक (Udder) मे उसका सिर या थूथनके प्रहारसे हल्की-सी चोट आ जानेसे या मौसमके प्रभावसे भी हल्की-सी सूजन आ जानेपर यदि उसकी चिकित्सा कर दी गयी तो केवल एकोनाइट या अर्निकाकी

एक मात्रासे ही सब ठीक हो जाता है। हाँ, देर हो जानेपर अन्य ओषधियोंका सहारा लेना पडता है। इसके लिये किसी सुयोग्य चिकित्सकका परामर्श लेना आवश्यक है।

होम्योपैथीकी दवाई बूँदोंमें दी जाती है। १०-१५ बूँद किसी माध्यमसे गायकी जिह्वापर छू जाय बस दवाई कार्य कर जायगी। गाय सीधी है तो एक चम्मच पानीमें दी जा सकती है, प्लेटम बताशा, बूरा (खाँड) आटेकी हल्की-सी परतपर दवाई टपकाकर चटाई जा सकती है। मठरी-जितनी मोटी रोटी बनाकर ऊपरका पतला पापड हटाकर मोटे भागपर दवाई टपकाकर, दवाईवाला भाग भूमिकी ओरकर गायको देनेसे उसकी जीभपर दवाई छू जायगी। महकवाली वस्तु हाथोंके छू जानेसे दवाईका प्रभाव नहीं होता, अत दवाई देनेसे पूर्व हाथ भी साफ कर ले।

गायको अचानक शीतका अनुभव हुआ हो, ज्वर हो, तीव्र स्तनपर प्रदाह (सूजन)-सी दिखायी दे तो 'एकोनाइट' २०० की एक मात्रा दे दी जाय।

यदि थन या बाँक (Udder)-में किसी चोटके लग जानेका ज्ञान हो चर्मपर हल्का बैंगनी चोटका चिह्न भी हो, सूजन हो या न हो तो अर्निकाकी एक या दो मात्रा भी यथेष्ट होगी। यदि छिल गया है तो 'कैलेण्डुला' मूल अर्कको वहाँ चुपड देनेमात्रसे घाव ठीक हो जायगा। दवाई पिलाई भी जाय तो और लाभ मिलेगा।

यदि सूजन बढती दिखायी दे तो ब्रायोनियाँ दे। लाल धारियाँ-सी, सूजनपर दिखायी दे तो 'बेलाडोना' उसके लिये पर्याप्त होगा। किसी प्रकार भी बेलाडोनासे लाभ न हो रहा हो तो 'मर्क्युरिस' दे, यह उस समय दी जाती है जब लाल-लाल सूजन बडी तेजीसे बढती जा रही हो। दवाईसे तुरत ही घटनी प्रारम्भ हो जाती है।

यदि लाली नहीं है और सूजन तेजीसे बढ रही हो तो केवल 'कैल्केरिया फ्लु आरिका' देनेसे कडापन समाप्त हो जायगा बढना बंद हो जायगा। यदि ट्यूमर बन गया हो, दर्द होता हो तो उसे 'म्यूरेक्स' ही शान्त कर देता है।

गायकी आँखोमें चमक न हो, कीचड या पानी आता हो और दूधकी अनुपस्थिति हो या दूधका प्रवाह कम हो गया हो तो उसे 'पल्साटिला' से लाभ हो जायगा। यदि सूजनके साथ मवाद (पस) आने लगे तो, 'हीपर' उस कडपनको घोलकर, मवाद-रूपमें बाहर निकाल देगा। यदि मवाद नहीं और चिपचिपा शहद-सा घावसे आता हो, थन फटकर घाव-सा हो गया हो तो 'ग्रेफाइटिस' देना लाभकारी है।

स्तनोमें जलन-सी प्रतीति हो, पस पडनेवाली हो तो 'कार्बोवेज' का भी प्रयोग किया जा सकता है। घावको सुखानेके लिये अन्तमें 'साइलीशिया' एक हजारकी एक-एक सप्ताह पश्चात् मात्रा दी जाय।

पत्थरकी भाँति कठोर, चुभनेवाले दर्दयुक्त ट्यूमरमें जब जरा-सी सर्दीसे ग्रन्थियाँ प्रवाहित हो जाती हो और तीव्र खुजली भी हो तो 'कोनियम' ३० वी शक्तिमें दिनमें एक बार ठीक होनेतक दी जाय।

यदि इनमें अभीतक किसी भी उपचारसे लाभ न दिखायी दिया हो तो 'कोनियम' एक हजारमें पहले दिन दे पहली मात्रा, दूसरी १५ दिन पश्चात् दस हजारकी शक्तिका मात्रा दे फिर १५ दिन पश्चात् 'कार्सिनोसिन' की दस हजार शक्तिकी एक खुराक दे।

यदि कैन्सरका ट्यूमर घूमता हुआ प्रतीत हो तो उसके लिये 'कैल्केरिया फ्लोर' एक हजारकी पहले दिन एक मात्रा दे, दस दिन बाद दूसरी मात्रा दे, १० दिन बाद फिर १० हजार शक्तिकी एक मात्रा दे। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि इन दवाओंके प्रयोगसे रोग-ग्रस्त गौओंको लाभ होगा।

[ग]

आक्सीटोसिन (पवासके इजेक्शन) से गायको बाँझ न बनाये

गायके बाँक (Udder) में दूध भरा रहता है, जब उसके बच्चेको दूध पिलानेके लिये छोडते हैं तब बच्चा स्तनोंमें जा लगता है। आपने देखा होगा कि गाय उसे चाटती है और चूमती है। उस समय उसका ममत्व जाग उठता है। बच्चेके स्तन-चूषणद्वारा प्राकृतिक दुग्ध-निष्कासन-प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

कुछ गायें अधिक चतुर एवं संवेदनशील होती हैं, उनका दूध पीता हुआ बच्चा हटाकर दुग्ध-दोहन करनेपर वे उत्तेजित हो जाती हैं, जिससे दूधका निकलना ९

है। गायके स्तनमे अवरोधिनी मासपेशी होती है जिससे गाय अपनी इच्छानुसार दूधका बाहर आना रोक लेती है। जिस 'गायने दूध चढा लिया' ऐसा कहा जाता है। बच्चेको दूसरी बार छाडनेपर वह पुन पवास (पेन्हा) जाती है (थनमें दूध उतर आता है)।

आक्सीटोसिन एक दूध-उत्क्षेपक हार्मोन है और बच्चा न रहनेपर गायका ममत्व नहीं जागता, जिससे वह दूध नहीं उतार पाती। इसक लिय कुछ लोग आक्सीटोसिन हार्मोनका इजेक्शन क्रयकर गायके शरीरमे प्रविष्टकर दूध निकाल लेते है।

पाठकासे मेरा सानुरोध निवेदन है कि गायको दूध पवासने (दूध उतारने) के लिये इस हार्मोनका इजक्शन कदापि न लगाय और अन्यको भी न लगानेक लिय प्रोत्साहित करे। यह स्तनोसे ही दूध नहीं उतारता, अपितु गर्भाशयपर भी, बच्चे होने जेर डालने आदिम उत्प्रेरकका कार्य करता है। शरीरमे इसकी अनावश्यक मात्रा पहुँचानेसे यह स्तन और गर्भाशयकी प्राकृतिक प्रक्रियाको नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। सगर्भाका गर्भ गिर जाता है। डिम्ब अपरिपक्व-अवस्थामे टूटकर नष्ट होते-होते गाय बाँझ हा जाती है। ऐसा दूध पीनसे अतिरिक्त हार्मोनमय दूध पीनेवाले व्यक्तिके शरीरपर भी कुप्रभाव पडता है। उसका मानसिक सतुलन बिगड जाता है, क्रोध-आवेशका सहज ही आना इसका प्रमाण है। अन्य हार्मोन ग्रन्थियापर भी इसका प्रभाव पडता है, क्याकि एक हार्मोनकी अन्य हार्मोनापर सहज ही क्रिया होती रहती है।

बहुत सस्ते दामोमे आनेवाला यह इजेक्शन प्राय सब जगह मिल जाता है। दूध बेचनेवाले पशुपालक धडल्लेसे इसका खुलेआम नित्य प्रयोग कर रहे हैं। नवजात गाय-भैंसक बच्चाको भूखा मारकर मरने दिया जाता है और उसके हिस्सेका भी दूध ले लिया जाता है। उन्हे तो बच्चा नहीं इस हार्मोनकी आवश्यकता है। ताकि दूध अधिक मिले। कृपया उन्हे समझाइये, गौ माताको बाँझ होनेसे बचाइये।

यदि उनके समक्ष किसी कारणवश ऐसी समस्या आ खडी हुई कि गाय दूध नहीं उतार रही है तो होम्योपैथिक दवाई 'एग्नस कैक्टस' ६ शक्तिकी सुबह-शाम १०-१५ बूँद एक चम्मच पानी या बताशेपर डालकर देते रहनेसे उन्हे फिर कभी आक्सीटोसिनका इजेक्शन नहीं लगाना पडेगा वह स्वय ही दुहते समय दूध उतारती रहेगी।

गोवध बंद हो

(डॉ० श्रीगणेशदत्तजी सारस्वत)

(१)

लोक समस्तकी है हितकारिणी, सिद्धि-समृद्धिकी सुन्दर नींव है।
पावन है शुचि पावन नाम-सी, है सुरभी सुर शान्त अतीव है॥
सेवा अशेषकी साध विशेष ले, ससृतिमे प्रकटी नतग्रीव है।
है वसुधा पै सुधाकी विधायिनी, मूर्तिमती ममता ही सजीव है॥

(२)

है पशु, किंतु न है पशुता, शुचिताका मनोरम भाव लिये है।
अन्तसका रस बाँट रही जग, जाग्रत् जीवन-चाव लिये है॥
मुक्त सभीके लिये उर है, न किसीके लिये भी दुराव लिये है।
गौरी-गिराकी उपासना-सी शुभ, पुण्यदा पुण्य प्रभाव लिये है॥

(३)

दूध पिलाती जिलाती है जीव जो, साथ नहीं उसके छल-छद हो।
है जिसकी हर श्वास परार्थ, न दे दुख कोई उसे मतिमद हो॥
पूज्य है जो जननीके समान, नहीं उसके हित घातक फद हो।
देशकी है ये पुकार अमन्द कि गोवध बद हो, गोवध बद हो॥

गोशाला-गोसदन एवं पिंजरापोल

[प्राचीन कालसे भारतमे गोपालनकी दृष्टिसे गोशाला-गोसदन एव पिजरापोल आदि सस्थाएँ स्थापित की जाती रही हैं, जिनमे अपग-बूढी तथा दूध न देनेवाली गायाका भरण-पोषण तो होता ही है साथ ही साधनरूपमे दूध देनेवाली स्वस्थ और सुन्दर गायाका भी सवर्धन किया जाता है। वर्तमान समयमे देशमे कितनी गोशालाएँ हे यह ठीक-ठीक नही कहा जा सकता, परतु सरकारी अनुमानके अनुसार तीन हजार गोशाला-पिजरापोल भारतमे बताये जाते हे, देशकी कुछ प्रमुख गोशालाके विवरण जो हम उपलब्ध हा सके, उन्हे हम यहाँ पाठकोकी जानकारीके लिये प्रस्तुत कर रहे है। इसके साथ ही भारतवर्षके गोशाला एव पिजरापोलाकी एक प्राचीन तालिका जो अभी उपलब्ध है, उसे भी यहाँ दिया जा रहा है—]

गोशाला और पिजरापोलकी आवश्यक बाते

परे वा बन्धुवर्गे वा मित्रे द्वेष्टरि वा सदा।
आपन्ने रक्षितव्य तु दयैपा परिकीर्तिता॥

(अत्रिसहिता ४१)

'अपना पराया मित्र, द्वेपी और वैरी काई भी हो, विपत्तिमे पडे हुएकी सदा रक्षा करनेको ही दया कहा जाता है।'

दया उपयोगिताकी अपेक्षा नहीं करती। वह तो मानव-स्वभावका एक सात्त्विक गुण है जा बिना किसी भेदभावक पीडित प्राणिमात्रकी पीडा दूर करनेके लिये मानव-हृदयमे सहानुभूति, परदु खकातरता, सात्त्विक उत्साह और उत्तेजन तथा उत्कृष्ट उत्सर्गकी भावना उत्पन्न करता ह और मनुष्यको दुखियोके दु ख दूर करनेके पवित्र कार्यम बरबस लगा देता है। फिर, असहाय और अशक्त गायका पालन-पोषण करने और उसे सुख पहुँचानेकी चेष्टा करनेमे तो दयाका प्रश्न ही नही ह। इसम तो कृतज्ञताजनित विशुद्ध कर्तव्यपालन ह। जिस गामाताने अपनी अच्छी हालतम हमारी अपार सवा की जिसका जन्म ही हमारी भलाईके लिये हुआ और जिसकी उदारतापर ही हमारा जीवन निर्भर रहता हे, जिसने हम अमृत-सा दूध दिया खेतीके लिये बैल दिये खेतक लिये खाद दी ओर अब भी दे रही हे, उसका दूध सूख जानपर या उसके लूली-लँगडी बीमार और असहाय हो जानेपर उसका पालन-पोषण करनेसे मुँह मोड लेना तो एक प्रकारकी घोर कृतघ्नता और कर्तव्यसे विच्युति है।

आजकल उपयागितावादकी लहर बह रही है इस कारण महत्त्वपूर्ण दयावृत्ति और कर्तव्य-पालनक प्रति लोगाकी उपेक्षा होने लगी है। वे कहते हैं—'जा प्राणी हमारे किसी उपयोगम नही आते, जा न दूध दे सकते है और न खेती-बारीके ही काम आते हं ऐस निकम्मे पशुआके पेटका गड्ढा भरते रहना मूर्खता नहीं तो और क्या है? प्रकृति स्वय निरुपयोगी बनाकर जिनका अन्त कर देना चाहती है, उनको बचानम अपनी शक्ति, समय और धनका उपयोग करना उनका दुरुपयोग ही तो हे।' मतलब यह कि आजके इस जडयुगमे मनुष्यकी दृष्टि सब ओरसे हटकर केवल अर्थपर ही आकर टिक गयी है। इसीसे प्रत्येक काममे उसके सामने केवल उपयागिताका प्रश्न रहता हे ओर इसीसे वह आज अपने वृद्ध आर बीमार सगे माता-पिता एव आत्मीय स्वजनाकी भी उपेक्षा—उनसे घृणा करने लगा है आर उनके भरण-पोषणमे समय शक्ति और अर्थका अपव्यय मानकर उससे अपनेका बचाने लगा हे। अर्थपरायणताने उपयोगिताके नामपर आज मनुष्यको केवल देवत्वकी ओर जानसे ही नही राक दिया है वर मानवतासे भी उतारकर उस दयाशून्य असुर बना दिया हे। इसीस आज वह सहानुभूति सेवा और दूसराके सुख-शान्तिकी कुछ भी परवा न करके अपनी पवित्र सात्त्विकी वृत्तियाको मारकर केवल अर्थक पीछे उन्मत्त हो रहा है और उन्नतिके नामपर दिनादिन पतनके गहरे गड्ढेम गिरता जा रहा हे। मनुष्यके जीवनका ध्यय जब एकमात्र धन ही बन जाता है, तब उसमे एक एसा मोह पदा होता है जो उसे अपने सुख-शान्तिक साधनास भी विमुख कर दता है,

यहाँ तक कि उससे वह ऐसे कर्म करवाता है जिनसे उसके अपने ही ऐहलौकिक और पारलौकिक जीवनकी सुख-शान्तिका स्रोत भी चिरकालके लिये सूख जाता है। और जब मनुष्य अपने सुख-शान्तिको ही नहीं देखता, तब दूसरेकी सुख-शान्तिकी चिन्ता तो उसे क्या होने लगी?

यही कारण है कि आजके धनकामी लोग 'व्यर्थ अर्थनाश' बताकर असहाय पशुओंका भरण-पोषण करनेवाली उपयोगी संस्थाओंकी ओरसे उदासीन होते चले जा रहे हैं और उनका विरोध करनेमें ही अपने कर्तव्यका पालन समझते हैं। दुःख तो इस बातका है कि केवल आर्थिक दृष्टिकोणसे गो-पालन करनेवाले पाश्चात्त्य देशोंकी पद्धतिपर मुग्ध होकर हमारे सम्मान्य अर्थशास्त्री विद्वान् भी आज वृद्ध और अपंग पशुओंको पृथ्वीका भार बताकर उन्हें न पालनेकी सलाह देने और प्रकारान्तरसे उनका कत्ल कर डालनेके लिये प्रोत्साहित करने लगे हैं। ऐसी हालतमें इस प्रकारके विचारवाले लोगोंके द्वारा पिंजरापोल और गोशालाओंकी अनुपयोगिता दिखलाया जाना कुछ भी आश्चर्यकी बात नहीं है। अवश्य ही ऐसी संस्थाओंका विरोध मनुष्यकी एक पवित्र, कोमल और मधुर वृत्तिको मारना ही है।

पिंजरापोलोंकी स्थापना वस्तुतः उन सहृदय पुरुषोंकी विशुद्ध धार्मिक भावनासे हुई थी जिनके हृदयमें बड़ी सुकोमल-सुमधुर दयाकी वृत्ति थी और जो वृद्ध माँ-बापकी सेवा करनेकी भाँति ही बूढ़ी गोमाताकी सेवाको भी अपना परम कर्तव्य मानते थे। पिंजरापोल नयी संस्था नहीं है। जैन और बौद्धोंके समयमें भी ऐसी संस्थाएँ थीं। मुसल्मानी कालमें भी थीं और उनमें केवल गायोंका ही नहीं बीमार और असहाय अन्यान्य पशु-पक्षियोंका भी इलाज और भरण-पोषण किया जाता था। यह एक ऐसा पवित्र धर्म समझा जाता रहा है कि सारा समाज इसमें हाथ बँटाता है और व्यापारी लोग अपने व्यापारपर 'लाग' लगाकर इस कार्यमें सहायता करते हैं। अपंग प्राणीकी सेवामें एक परम पुण्यकी और पवित्र कर्तव्य-पालनकी श्रद्धा थी और वह सच्ची थी। इसीसे लोग अपने-अपने घरोंमें भी अशक्त प्राणियोंकी सेवा अपने हाथों करते थे। जब कोई गृहस्थ ऐसी परिस्थितिमें पड़ जाता कि खुद तन और धनसे सेवा नहीं कर सकता था तब उसके पशुको सँभालना पिंजरापोलका काम था। इस प्रकार पिंजरापोल न केवल पशु-पीड़ाका निवारण करता था वरं धार्मिक भावसम्पन्न असमर्थ गृहस्थका बोझ भी हलका करके उसे इस योग्य बना देता था कि वह नया उपयोगी पशु लाकर उससे लाभ उठा सके।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विभिन्न कारणोंसे आज सभी पिंजरापोलोंकी दशा संतोषजनक नहीं है और यह भी सत्य है कि युगपरिवर्तनके साथ-साथ पिंजरापोलोंकी कार्य-पद्धतिमें भी उचित परिवर्तनकी आवश्यकता हो गयी है। पर यह कहना सर्वथा असंगत है कि पिंजरापोल और गोशालाएँ सर्वथा व्यर्थ और हानिकारक संस्थाएँ हैं। हाँ, मूल उद्देश्यकी रक्षा करते हुए उनको आर्थिक दृष्टिसे भी जितना उपयोगी और जितना स्वावलम्बी बनाया जा सके, उतना बनाना चाहिये। सुधारके लिये सदा ही तैयार रहना चाहिये, परंतु सुधारके नामपर संहार न हो जाय, इसकी सावधानी रखनी चाहिये। अवश्य ही, नवीनताके मोह-मदमें अंधे होकर प्राचीनता मात्रकी जड़ उखाड़ने जाना जैसे बड़ी भूल है, वैसे ही प्राचीनताके नामपर अड़कर धर्मसे अविरुद्ध नवीन उपयोगी पद्धतिको स्वीकार न करना भी कम भूल नहीं है।

भारतवर्षमें विद्यमान पिंजरापोलों और गोशालाओंको मुख्यतः तीन श्रेणियोंमें विभक्त किया जा सकता है—१-जिनके पास पर्याप्त संगृहीत धन और काफी आमदनी है, जिनका संचालन नियमितरूपसे सम्भ्रान्त सज्जनोंकी कमेटीद्वारा होता है और जिनमें कुछका रजिस्ट्रेशन भी हो चुका है, २-जो आरम्भमें कुछ लोगोंके उत्साहसे स्थापित हो चुकी हैं, पर जिनके पास न तो धन है, न काफी आय है और न उत्तरदायी कार्यकर्ता ही हैं और ३-जिनकी पेशेवर लोगोंके द्वारा पैसा कमानेके साधनके रूपमें स्थापना हुई है और इसी उद्देश्यमें जिनका येनकेनप्रकारेण संचालन भी हो रहा है।

इनमें तीसरी श्रेणीकी संस्थाएँ (?) तो सभी दृष्टियोंसे सर्वथा अनुपयोगी और हानिकारक हैं। दूसरी श्रेणीकी संस्थाओंके लिये कहा जा सकता है कि सुयोग्य कार्यकर्ता मिलें और आमदनी हो तो उनका सुधार हो सकता है। वर्तमान स्थितिमें तो वे बहुत उपयोगी नहीं हैं। ऐसी संस्थाओंमें इस प्रकारकी हालत देखी जाती है कि जिस समय किसी अच्छे कार्यकर्ताके हाथमें काम हो और व्यापारी वर्गकी स्थिति अच्छी हो, उस समय तो काम ठीक-ठीक चलता है, पर जिन दिनों अच्छे कार्यकर्ता नहीं होते या व्यापार मंदा होता है और आवश्यक चंदा नहीं हो पाता, उन दिनों इनके पशु या तो भूखों मरते हैं या आधे पेट रहते हैं। पिछले अकालके समय कितनी ही गोशालाओंकी ऐसी दशा देखनेमें आयी थी।

परंतु पहली श्रेणीकी संस्थाओंके लिये भी यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें सभीका काम सुचारुरूपसे संचालित होता है। लोग पैसा तो दे देते हैं, पर समय नहीं दे पाते। जो सभापति, मन्त्री और कार्य-कारिणीके सदस्य होते हैं, वे प्रायः केवल नामके ही होते हैं। समयके अभाव, दिलचस्पी न होने तथा गोपालनकी पद्धतिके अज्ञानसे वे कुछ भी नहीं कर पाते। बहुत-से तो जाते ही नहीं। जिनके जिम्मे प्रबन्धका भार रहता है, वे भी न तो अनुभवी होते हैं न क्रियाशील। इससे प्रबन्धमें त्रुटियाँ बनी ही रहती हैं। नयी उन्नतिकी बात तो सोचे ही कौन। पर्याप्त वेतन देकर सुयोग्य अनुभवी पुरुषोंको प्रायः नियुक्त किया नहीं जाता और कोई करना भी चाहते हैं तो सुयोग्य सेवाभावी व्यक्ति मिलते नहीं। कहीं कोई अनुभवी पुरुष रखे भी जाते हैं तो उनके समक्ष कार्य करनेमें कई प्रकारकी संस्थागत कठिनाइयाँ आती हैं। नियम तथा प्रणालीमें भी समय तथा पशुपालन-विज्ञानकी जानकारीके अभावसे कोई खास सुधार नहीं किया जाता। ऐसी और भी कई बातें होती हैं, जिनके कारण व्यवस्था ठीक नहीं हो पाती और जितना लाभ होना चाहिये, उतना नहीं होता।

कसाइयोंके हाथोंसे गोवंश बचाना, अपंग और असहाय गायोंके जीवन-निर्वाहकी सुन्दर सुव्यवस्था करना और गायोंकी हत्या रोकनेके लिये सब प्रकारके उचित प्रयास करना आदि सभी आवश्यक कार्य हैं और धर्म हैं। परंतु सार्वजनिक रूपमें गोशालाकी उन्नतिके लिये यह भी आवश्यक है कि गौका दूध पर्याप्त मात्रामें बढ़ जाय और गौमें बहुत मजबूत और बलवान् बछड़ा पैदा करनेकी शक्ति आ जाय। पिंजरापोल और गोशालाएँ—इस दिशामें भी बहुत कुछ कार्य कर सकती हैं। पिंजरापोलों और गोशालाओंको अपनी-अपनी परिस्थितिके अनुसार नीचे लिखे कार्य करनेका प्रयत्न करना चाहिये—

(१) वृद्ध, अपंग, बीमार, दुर्बल और ठाँठ गाय, असहाय बैल और ऐसे ही बछड़े-बछड़ी आदिके पालन-पोषणकी पूरी व्यवस्था हो, जिसमें वे जीवनके अन्तिम श्वासतक सुखपूर्वक खा-पीकर रह सकें। गोजातिका ऋण तो उतर ही नहीं सकता, परंतु सच्ची कृतज्ञता प्रकट करने और मानव-हृदयकी बड़ी कोमल दयावृत्तिकी रक्षा करनेके लिये इसकी बड़ी आवश्यकता है।

(२) अच्छी जातिकी ऐसी गायोंको, जो चारे-दानेकी कमी और देख-रेखके अभावसे कमजोर होकर बिसुक गयी हों, चुनकर और अलग रखकर उन्हें अच्छी तरह खिलाया-पिलाया जाय और उनकी पूरी-पूरी देख-भाल की जाय, जिससे वे बहुत उपयोगी और बड़े परिमाणमें दूध देनेवाली बन सकें। आज भी कई गायें जो कसाईखानामें ले जानेके लिये कम खिलाकर कमजोर कर दी जाती हैं और वे बिसुक जाती हैं, उन्हें पकड़ लेनेपर तथा अच्छी तरह खिलाने-पिलाने और सार-सँभाल करनेपर प्रतिदिन १२ से १५ लीटर दूध देनेवाली बन जाती हैं। ऐसी कई घटनाएँ निरन्तर सामने आ रही हैं।

(३) एक अलग दुग्धालय-विभाग हो, जिसमें अच्छी जातिकी दुधारू गायोंका—अपनी गायोंमें चुनकर, खरीदकर, बछड़ियोंको उत्तम गाय बनाकर संग्रह किया जाय। घास-चारे और हवा-पानीके उचित उपयोग तथा अच्छे बलवान् देशी साँड़ोंके संयोगसे उनमें और उनकी संततिमें दूध बढ़ानेका प्रयत्न किया जाय। वैज्ञानिक रीतिसे दूधके दुहनेसे लेकर उसके रूपान्तर करनेतक सावधानी रखी जाय। इन गायोंका दूध जनताको—खास करके बीमारों और बच्चोंके लिये उचित मूल्यपर बेचा जाय।

(४) विश्वासी सद्गृहस्थोंको बैल बनानेके लिये बछड़े देकर बदलेमें बछड़ियाँ ले ली जायँ और उन्हें अच्छी दुधारू गाय बनाया जाय।

(५) पिंजरापोलों और गोशालाओंमें अच्छी-बुरी सभी जातियोंके मजबूत और कमजोर गाय, बछड़े और साँड आदि प्रायः साथ-साथ रहा करते हैं। इससे बिलकुल कमजोर और असमर्थ गायें भी बरधायी जाती हैं और बहुत कमजोर निकम्मे साँड बरधानेका काम करते हैं। इसका फल यह होता है कि उनके बछड़े और बछड़ी बहुत ही कमजोर पैदा होते हैं। जो अच्छा चारा-दाना मिलनेपर भी रज-वीर्यके दोषके कारण अपनी हालत नहीं सुधार सकते। ऐसी बछड़ियाँ बहुत देरसे गाभिन होती हैं और ब्यानेपर थोड़े-से दिनोंतक बहुत थोड़ा दूध देती हैं तथा बछड़े इतने दुर्बल होते हैं कि वे साँड बनने योग्य तो रहते ही नहीं, अच्छे बैल भी नहीं बन सकते। इस प्रकार दोनों गृहस्थके लिये भाररूप होकर जीते हैं और दुःख भोगते हैं। ऐसे कमजोर गाय-बैलोंसे दूधके उत्पादनकी शक्ति घटती है और तमाम संतति खराब हो जाती है। इसलिये ऐसी गायोंका और साँड़ोंका संयोग कभी हो ही नहीं—इस बातका पूरा ख्याल रखना चाहिये।

(६) देशमें अच्छे साँड़ोंकी बहुत कमी हो गयी है। आजकल दूधके लोभमें विदेशी (जर्सी) गायोंका प्रचलन

बढता जा रहा है। जर्सी साँडके द्वारा देशी गायाको बरधानेसे सकरीकरणके द्वारा जर्सी बाछ-बाछी होते हे, जो वास्तवम भारतीय दृष्टिसे गोवश ही नहीं ह तथा व यहाँकी जलवायुके पूर्णत अनुकूल नहीं होते। इनके बाछे तो खेतीके लिये अनुपयोगी होते ही ह दूध भी देशी गायाके मुकाबले पौष्टिक नहीं होता तथा शास्त्रीय दृष्टिसे गाका जो लक्षण होना चाहिये उसका इनमे अभाव होनेके कारण इनकी गणना शुद्ध गारूपमे नहीं होती। ये वर्णसकर पशु होते हैं। इसलिये अच्छे-से-अच्छे देशी सॉड बनाये जायँ और पाल जायँ। उनमसे कुछका अपने इलाककी अच्छी गायाके बरधानक लिय सुरक्षित रखा जाय जिसस उनका नस्लम सुधार हा। यदि प्रत्येक पिजरापोल दस-बीस अच्छे-से-अच्छे साँड बनाकर जनताके उपयोगके लिये तैयार कर दे तो गोजातिकी बहुत बडी सेवा हो सकती है। अन्यथा भारतीय नस्लकी गाय ही समाप्त हो जायँगी जो दशका दुर्भाग्य होगा।

(७) ऐसे असमर्थ सद्‌गृहस्थोकी अच्छी जातिकी गाभिन गाय, जिन्हाने दूध देना बद कर दिया है पालन करनेके लिये कम खर्चपर पिजरापोलाम ले ली जायँ और ब्यानेके बाद उन्हे वापस दे दिया जाय। इसी प्रकार असमर्थ गृहस्थाके छाटे बछडे-बछडियाका भी पालन किया जाय। ऐसे गाय-बछडोको काई मालिक वेचना चाहे तो उन्हे पिजरापोल अच्छी दुधार गाय और मजबूत बल बनानेके लिये खरीद ले।

(८) पिजरापालाके पास प्राय जमीन होती ही हे। नही तो जमीनका प्रवन्ध किया जाय और उसम उपयोगी घास-चारेकी खेती की जाय और प्रचुर मात्राम घास-चारा उपजाया जाय।

(९) गोचरभूमिमे सामान्य-कृषिके आधारपर अन्नादि उपजानेका प्रयास नही करना चाहिये कारण गोशालाकी भूमिम गायका खाद्य या चारा उपजाना ही उचित ह। पर्याप्त चारा हो जानेपर अतिरिक्त भूमिमे कृषि भी की जा सकती हे।

(१०) प्रतिवर्ष हरे घास-चारेको ठीक पद्धतिके अनुसार गड्ढामे दबाकर या कुप्पाम भरकर रखा जाय-Silage बनाय जायँ, जिनसे सूखे मौसमम पशुआका पुष्टिकर चीज खानका मिल सके।

(११) सूखे और हरे चारेका स्टाक किया जाय तथा काफी स्टाक होनेपर कम-से-कम दा वर्षक लिय अपनी आवश्यकताका सामान रखकर शेष उचित मूल्यपर गृहस्थाको वेचा जाय।

(१२) पर्याप्त गोचरभूमि हो, जिसम सस्थाकी गाय तो चर ही, उचित कीमतपर दूसरे लोगाकी भी विसुकी हुई गाय और बछडी-बछडे वहाँ चर सक।

(१३) गायरको जलानेके कामम न लेकर वैज्ञानिक रीतिसे उसकी खाद बनायी जाय। इसी प्रकार गामूत्रका भी खादक कामम उपयोग किया जाय। पिजरापोलकी परती जमीनम इस खादसे बहुमूल्य घास-चारा पेदा हो सकता है।

(१४) कृषि-सुधारके आवश्यक और सुविधासे कामम लेने लायक तरीकासे फल-फूल और साग भी उपजाया जाय और उसे बेचा जाय। गोबर-गोमूत्रकी खादसे इस खेतीम भी बहुत लाभ हो सकता हे।

(१५) पशुओकी सफाई तथा स्वास्थ्यका उनके शरीरपर किलनी-जूँ आदि कीड घर न कर सक इसका पूरा ध्यान रखा जाय। अङ्गहीन, बीमार निर्बल बलवान् पशुआक लिये रहने और चरनेके अलग-अलग स्थान हो। ताकि न तो परस्पर राग सक्रमण कर सक न बलवान् पशुकी मारके डरसे निर्बल पशु भूखा रहकर मृत्युकी आर अग्रसर हो। उन्हे धोने नहलाने पाछने उनमे जानवर न पेदा होने दने इत्यादिकी पूरी व्यवस्था रहनी चाहिये। इमारते मकान इस ढगके बनाने चाहिये जिनम हवा और प्रकाश आता हो तथा जिनकी अच्छी तरह सफाई की जा सकती हो। कुएँ तथा सिचाई आदिकी व्यवस्था वैज्ञानिक ढगसे हो।

(१६) अच्छे गोचिकित्सक (Veterinary Doctor) को रखा जाय और साथ ही एक अस्पताल या दवाखाना रहे। बीमार पशुआका सावधानासे इलाज हो जिस समय पशुओमे कोई सक्रामक रोग फेलने लगे। उस समय यदि उन्ह दवाके जलसे नहलाने प्रतिषधक दवा या इजेक्शन दनेकी पूरी व्यवस्था हा तो रोगका विस्तार सहज ही रुक जाय और बहुत-से पशुआके प्राण अनायास ही बच जायँ।

कोई खास सक्रामक रोगसे पीडित गाय पिजरापालम आवे तो उसे अलग रखकर इलाज करना चाहिये जिससे दूसरी गायापर उसका असर न हो। गायाको भर्ती करते समय यदि गाशालाके डॉक्टर गायका परीक्षा कर लिया कर ता सर्वोत्तम ह।

(१७) प्रत्यक सस्थाम पशु-पालन-विनानम पारगत जिम्मवार वेतनिक पुरुष रहने चाहिये। पशुआकी पहचान

उनके रखने और खिलाने-पिलानेकी व्यवस्था सफल खेतीका प्रबन्ध, घास-चारेका सग्रह, हरे चारेके साइलेज (Silage) बनानेकी व्यवस्था, स्वच्छता और सफाईका प्रबन्ध सब चीजोका अलग-अलग हिसाब और रजिस्टर रखने आदि सारे काम उन्हींके नियन्त्रण और देख-रेखमे होने चाहिये। वे पशु-चिकित्सामे भी दक्ष हो तो सबसे अच्छी बात है। वैसी हालतमे पशुचिकित्साके लिये अलग डॉक्टर न रखकर एक सुयोग्य सहकारी रखनेसे भी काम चल सकता है।

(१८) पशु, घास-चारा, दुग्धालय, पशुओकी जाति और उनके माता-पिता, पशुओके जन्मपत्र और सस्थाके आय-व्यय आदिका ब्योरेवार विवरण रखना चाहिये।

(१९) नये पिजरापोल गोशालाएँ बनाये जायँ तो उनको शहरोमे न बनाकर ऐसे स्थानोमे बनाना चाहिये जहाँ खुली जगह हो। चारो ओर विस्तृत खेत हो। नदी-तट हो तो बहुत अच्छा है, नहीं तो, जलका पूरा प्रबन्ध तो अवश्य हो।

—राधेश्याम खेमका
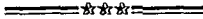
गोशाला कैसी हो?

जो लोग गौओको सर्दी और वर्षासे बचानेके लिये घर बनवाते हैं उनके सात कुल तर जाते हैं। (महा०, अनु०, अ० ६६)

गोष्ठ च कारयेत्तस्य किञ्चिद् विघ्नविवर्जितम्।
सदा गोमयमूत्राभ्या विघसैश्च विवर्जितम्॥
न मल निक्षिपद्गोष्ठे सर्वदेवनिकेतने।
आत्मन शयनीयस्य सदृश कारयद्बुध ॥
सम निर्वापयेद् यत्नाच्छीतवातरजस्तथा।
प्राणस्य सदृश पश्येद् गा च सामान्यविग्रहम्॥

(पद्म० सृष्टि० ४८। १११—११३)

'गौओके लिये एक ऐसा गोष्ठ बनाना चाहिये जिसम कुत्ते, मक्खी, मच्छर, डाँस, चोर आदिका कोई भी विघ्न न हो। गोबर, गोमूत्र तथा बचे-खुचे घास-चारेका कूडा पडा न रह जाय। गौओका गोष्ठ सारे देवताओका निवास-स्थान है। उसम मल नहीं डालना चाहिये। समझदार आदमीको चाहिये कि गोष्ठको अपने शयन करनेके कमरेकी तरह साफ-सुथरा रखे। इसे सर्दी, वायु और धूलसे समान भावसे प्रयत्नपूर्वक बचाये रखना चाहिये। गौ सामान्य प्राणी होनेपर भी उसे अपने प्राणोके समान देखना चाहिये।'

गोशालामे मक्खी, मच्छर और डाँस इत्यादि न होने पाय, इसलिये रोज सुगन्धित धूनी देनी चाहिये। जो गोपालक गोशालामे इस प्रकार धूनी-नहीं देता, वह मक्षिकालीन नरकमे जाता है और नरककी भयानक मक्खियाँ उसके चमडेको फाडकर उसका रक्त-पान करती हैं। (देवीपुराण)

गोबर और गोमूत्रसे कभी घृणा न करे। सूखे चूनेसे गोशालाको सदा साफ रखे। गर्मियोम ठडे पेडोकी छायामे, वर्षा और शिशिर-कालम थोडे गरम और जोरकी हवा न आनेवाले घरोमें तथा जाडेमें गर्म और बिना कीचडके घरम गायोको रखे। जूठन, कफ, थूक, मूत्र, विष्ठा आदि किसी प्रकारके भी मलको गोशालामे न छोडे। बछडेको कभी लाँघके न जाय। कुलटा स्त्री और नीच मनुष्योको गोशालामे न जाने दे। जूता पहनकर अथवा हाथी, घोडा, गाडी या पालकीपर सवार होकर गायोके बीचम न जाय। (ब्रह्मपुराण)

प्रात काल नमक, इसके बाद जल और घास खानेको देना चाहिये। रातके समय गोशालामे दीपक जलाना चाहिये और बाजे तथा पौराणिक कथाकी व्यवस्था करनी चाहिये। उठते-बैठते, खाते-पीते सब समय मनम नीचे लिखे मन्त्रका ध्यान करना चाहिये। ऐसा विचार करना चाहिये कि गाये ताजे घास-चारे और जलको खा-पीकर अपने बछडोके साथ आनन्द कर। सुखपूर्वक दूध दे। गर्मी-सर्दी-रोगके भयसे विमुक्त होकर आरामसे सोये—

तृणोदकाढ्येषु वनेषु मत्ता क्रीडन्तु गाव सवृषा सवत्सा।
क्षीर प्रमुञ्चन्तु सुख स्वपन्तु शीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ता॥

(ब्रह्मपुराण)
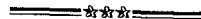
श्रीगोरक्षण-संस्था, अमरावती (महाराष्ट्र)

(अॅड० श्री आर० एम्०, मुँधड़ा, सचिव)

श्रीगोरक्षण-सस्था, अमरावती भारतकी प्राचीनतम गोशालाआममे एक है। इसकी स्थापना हुए आज सौ वर्षसे भी अधिक हो गये हैं। सन् १८९१ ई०मे राष्ट्रनेता श्रीदादासाहेब खापर्डेके सत्प्रयत्नासे अमरावतीमे इस गोरक्षण-सस्थाकी स्थापना हुई। तबसे निरन्तर यह सस्था गोरक्षण, गोपालन तथा गोसवर्धनके कार्योंमे लगी हुई है और यहाँका कार्य एव प्रगति भी सतोषजनक है। इस सस्थाकी स्थापनाका मुख्य उद्देश्य भाकडी गोधनका सरक्षण है। दुधार गौ अथवा जोतके लिये समर्थ बैलको तो प्राय सभी रखना चाहते हैं, किंतु गोधन जब बूढा हो जाता है, अशक्त हो जाता है, उसकी कोई प्रत्यक्ष उपयोगिता नहीं दीखती, ऐसी स्थितिमे वह गोधन असहाय, अनाथ एव असुरक्षित हो जाता है। ऐसे गोधनको प्राय गोपालक अपने पास नहीं रखते, अत ऐसे गोधनके पालन-पोषणके लिये ही मुख्यत इस सस्थाकी स्थापना हुई। ऐसे गोधनकी सुरक्षा तथा उचित मूल्यपर आवश्यक व्यक्तिके लिये शुद्ध दुग्ध उपलब्ध कराना—यह इस सस्थाका मुख्य उद्देश्य है। यहाँ वर्तमानमे गाय, बैल आदिकी कुल सख्या ३०५ है, जिसका विवरण इस प्रकार है—

गाय, बैल, सॉड तथा बछडे-बछडियोकी सख्याका विवरण—

	गाये	बछडे	बछडियाँ	सॉड	बैल	कुल
दुग्धालय-विभाग	५८	३९	५०	६	०	१५३
गोसदन-विभाग	३१	१२	१२	१	९	६५
काँजी-हाऊस	५७	३०	०	०	०	८७
	१४६	८१	६२	७	९	३०५

विभिन्न नस्लकी गायोका विवरण—

जर्सी	हाल्स्टेन	थारपारकर	हरियानगीर	गीर	हरियाना	देशी
२७	१०	१०	५	२	२	९०
						कुल—१४६

सस्थामे जानवरोकी देखभाल करनेके लिये कर्मचारी है तथा पशुचिकित्सा डॉक्टरद्वारा करायी जाती है। दुग्धालय-विभाग और गोसदन-विभागमे २५-३० कर्मचारी काम करते हैं। सभी जानवरोके लिये कडबा, कुट्टीकी पर्याप्त मात्रामे व्यवस्था की गयी है। सस्थामे पानीकी व्यवस्थाके लिये बावडियोपर इलेक्ट्रिक मोटरपप लगाये गये हैं। जानवरोके पीनेके लिये पानीके टाँके बनाये गये हैं।

सस्थाके पास ३२० एकड २ गुठा जमीन है, इसमे २१९ एकड १९ गुठा चराई योग्य पहाड है। घास चारा पैदा करने-हेतु सस्थाके पास दस्तूरनगरपर जो जमीन है उसमे विभिन्न प्रकारका मक्का, ज्वार, प्यारा घास, एन०बी० २१का हरा घास पैदा किया जाता है।

सस्थाका हमेशा यह प्रयास रहा है कि शुद्ध निर्मल गायका दूध जनताको प्राप्त हो। सस्थाद्वारा अपग, छोटे बच्चोको तथा धार्मिक कार्योमे एव मन्दिरोमे नि शुल्क दूध दिया जाता है। गोबरको इकट्ठा करनेके लिये पक्के टाँके बनाये हैं, जहाँ गोबर एकत्र किया जाता है। यहाँपर ४५ घनमीटर गोबर-गैस प्लाट बनाया गया है। इसका तैयार किया हुआ खाद काश्तकारोको रियायती दरोपर दिया जाता है। नँडेप-पद्धतिसे भी खाद तैयार होती है।

हमारी दृष्टिमे आदर्श गोशालाका स्वरूप

गाय तथा बछडोको रखनेके लिये पर्याप्त मात्रामे जगह हो तथा उनको रखनेके लिये पर्याप्त मात्रामे काठे हों। उन्हे अच्छा खाद्य मिले, गायो तथा बछडोकी ठीक तरहसे देखभाल हो। गाय-बछडोको चरानेके लिये पर्याप्त मात्रामे जमीन हो तभी अच्छी गौशाला बन सकती है। व्यवस्थापनका यह कर्तव्य है कि गायोका दूध उचित मूल्यपर जनताको उपलब्ध कराये, उसी प्रकार किसानोको उचित मूल्यपर खाद दे और जितना बन सके उतना अनाथ अपग व्यक्तियोको बिना मूल्य दूध वितरण करे। किसानोको गाय-बछडे उचित मूल्यपर दे तथा समय-समयपर शिविर लगाकर पशुपालन-हेतु लोगोमे जागृति-निर्माण करे और सबसे बडे परिमाणमे आज जो हजारो गाय-बछडे कसाईखानेमे जाते हैं उन्हे रोके तथा पशुवध गोहत्या न हो इसलिये

भरसक प्रयत्न हो। अमरावती गोरक्षण-सस्थाद्वारा इन सभी कार्योंको यथासम्भव विशेष प्रयत्नपूर्वक किया जा रहा है।

गोपालन तथा गोसवर्धन-हेतु आज किन्हीं कारणोवश जा गोशालाएँ बद है, उन्ह पुनर्जीवित करना बहुत जरूरी है। यह देशव्यापी कार्य है। इसी हेतु 'अमरावती गोरक्षण-सस्था'ने 'विदर्भ गोशाला-पिजरापोल' नामक एक सघ स्थापित किया है। विदर्भम ५३ गोशालाएँ हैं। ये सभी गोशालाएँ इस सघस सलग्र हैं।

इस सस्थाने गोमूत्र नालीद्वारा इकट्ठा करनेके लिये टाँके बनवाये हैं। यहाँ गोमूत्र-चिकित्साद्वारा बीमारोका इलाज भी किया जाता है। गोमूत्रसे अर्क, वटी आर आसव तैयार किया जाता है तथा ये दवाइयाँ बिना मूल्य बीमारोको दी जाती हैं। इस हेतु आनेवाला सारा खर्च सस्थाद्वारा किया जाता है। सस्थाके आयके स्रोतोमे दुकानोसे प्राप्त होनेवाला किराया, दूध-बिक्री, खाद-विक्री तथा सहयोग-राशि मुख्य है। इसीके साथ ही सस्थाने 'कार्पस फड' की एक योजना भी चलायी है, इस योजनामे जो व्यक्ति २,५०० रु० देता है वह राशि भारतीय स्टेट बैंकम फिक्स डिपॉजिटमे रखी जाती है और उसके ब्याजसे चारा आदि खरीदा जाता है। सस्थाने गायाक तथा बछडे-बछडियाक लिये विभिन्न कक्ष तथा अपग गायाका अलग कक्ष बनाया है। जो लोग भाकड जानवरोका पालन-पोषण नहीं करते, ऐसे जानवरोको सस्था स्वीकार करके उनका पालन-पोषण करती है।

'श्रीविदर्भ-गोशाला-पिजरापोल-सघ, अमरावती' की जो गोशालाएँ सदस्यरूपमे हैं उनकी एक सूची भी नीचे दी जा रही है—

'श्रीविदर्भ-गोशाला-पिजरापोल-सघ, अमरावती' के सदस्य-गोशालाओकी सूची

अनुक्रमाङ्क	गोशालाका नाम	स्थान	जिला
१	श्रीगोरक्षण-सस्था	अमरावती	अमरावती
२	” ”	धामणगाँव रेल्वे	”
३	” ”	वनासा	”
४	” ”	मोर्शी	”
५	श्रीगुरुदेव-सेवाश्रम-गोशाला	गुरुकुज मोझरी	”
६	श्रीगापाल-गोरक्षण-सस्था	अजनगाँव सुर्जी	”
७	श्रीविरबाई-गोशाला	अमरावती	”
८	श्रीश्रीराम-गोशाला	अचलपुर	”
९	श्रीगोरक्षण-सस्था	रीद्धपुर	”
१०	” ”	अकोला	अकाला
११	” ”	रीसोड	”
१२	” ”	मुर्तीजापुर	”
१३	श्रापिजरापाल गोशाला	कारजालाड	”
१४	श्रीगारभ्रण-सस्था	वाशीम	”
१५	श्रासखाराममहाराज-सस्थान	लोणी	”
१६	श्रागारक्षण-सस्था	रागाँव	”
१७	” ”	बालापूर	”
१८	” ”	दगाँव	”
१९	श्रीगारक्षण-ट्रस्ट	भरतपुर	”

'श्रीविदर्भ-गोशाला-पिंजरापोल-संघ, अमरावती' के सदस्य-गोशालाओंकी सूची			
अनुक्रमाङ्क	गोशालाका नाम	स्थान	जिला
२०	श्रीगोरक्षण-संस्था	मेहा	अकोला
२१	,, ,,	,,	,,
२२	,, ,,	किनखडपुर्णा	,,
२३	,, ,,	उकलीबाजार	,,
२४	,, ,,	कुरुम	,,
२५	,, ,,	यवतमाल	यवतमाल
२६	श्रीगोरक्षण-संस्था	वणी	,,
२७	,, ,,	उमरखेड	,,
२८	श्रीग्रामसेवामंडल-गोशाला	गोपुरी	वर्धा
२९	श्रीगोरक्षण-संस्था	आर्वी	,,
३०	श्रीनयीतालीम-समिति-सेवा-ग्राम-गोशाला	सेवाग्राम	,,
३१	श्रीसर्वसेवासंघ-गोशाला	पीपरी	,,
३२	श्रीगोपुरी-संस्थान	नालवाडी	,,
३३	श्रीगोरक्षण-संस्था	हिंगणघाट	,,
३४	श्रीगोरक्षण-संस्था आनन्दवन	वरोरा	चंद्रपूर
३५	श्रीगोरक्षण-संस्था	नागपूर	नागपूर
३६	श्रीनागपुरव्यापारी-गोरक्षण-संघ	,,	,,
३७	श्रीगोरक्षण-संस्था	काटोल	,,
३८	श्रीबुलढाणा-गोरक्षण-ट्रस्ट	बुलढाणा	बुलढाणा
३९	श्रीगोपालकृष्ण-गोरक्षण-संस्था	जळगाँव जामोद	,,
४०	श्रीगोरक्षण-संस्था	खामगाँव	,,
४१	श्रीवर्धमान-गोरक्षण-संस्था	लोणार	,,
४२	श्रीगोरक्षण-संस्था	मल्कापूर	,,
४३	श्रीश्रीकृष्ण-गोरक्षण-सभा	गोंदिया	भंडारा
४४	श्रीगोरक्षण-संस्था	भंडारा	,,
४५	श्रीश्रीकृष्ण-गोशाला	तुमसर	,,
४६	श्रीगोरक्षण-संस्था	तिरोडा	,,
४७	श्रीदिलीपबाबा व्यसनमुक्त संस्थान व गोशाला	लाडी	अकोला
४८	श्रीगोरक्षण-संस्था	माधवनगर	,,

श्री श्री श्री

श्रीकाशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

'श्रीकाशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एव पशुशाला, वाराणसी' की स्थापना सन् १८८८ म प० मदनमोहन मालवीयजीकी प्रेरणासे हुई थी। जीवमात्रके प्रति दया ओर उसकी रक्षा इस गोशालाका मुख्य उद्देश्य हे। अपने सुदीर्घ-कालीन इतिहासमे इस गोशालाका धीरे-धीरे बहुत विस्तार हुआ ओर गोरक्षा तथा गोसवर्धन-सम्बन्धी अनेक सरचनात्मक तथा प्रायोगिक कार्य इस गोशाला तथा इसकी शाखाआके माध्यमसे होत आ रहे हैं। गोशालाके पास विभिन्न क्षेत्रोमे विशाल भूखण्ड तथा अपनी गोशालाएँ भी हैं, जिनका सक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

(१) **बावन बीघा**—आजमगढके मुख्य मार्गपर नगरस लगभग ८ कि०मी० की दूरीपर १०० बीघेका भूखण्ड है, जो 'बावन बीघा' के नामसे जाना जाता है।

(२) **रामेश्वर गोशाला**—काशाकी पचक्रोशी यात्रा-मार्गमे स्थित *'रामेश्वर गोशाला' अपनी सक्रियताके कारण* आज एक चर्चित गोशाला है। यद्यपि बीचमे इसकी कार्य-शैली कुछ शिथिल-सी हो गयी थी किंतु १९८६के बाद इसे पुन प्रतिष्ठित कर बहुत विस्तृत किया गया है। गोशालाके कार्यकर्ताआने यह सकल्प लिया है कि '*कसाइयोसे छुडायी गयी या सडकापर उपेक्षित घूमती* अथवा किसानाद्वारा बोझ समझी जानेवाली कोई भी गाय या गोवश (गाय बैल, बाछा, वाछी, साँड) इत्यादि गोशालाम आयेगे तो उन्हे सरक्षण दिया जायगा।' इस सकल्पके बाद १९८६से अबतक लगभग ५०,००० से भी अधिक गोवश बचाये गये उनमसे उत्पादक गोवशको गाँववालाको पालनके लिये वितरित कर दिया गया। जिन गायाको ग्रामीणो तथा किसानाने अनुपयोगी मानकर नहीं लिया, वैसे १४०० से अधिक गोवश इस समय गोशालाम हैं। उन गायाकी समुचित देखभाल हुई, जिससे ८५० लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित हो रहा है। यह गोशाला भिन्न-भिन्न खण्डामे विभाजित हे। कुल लगभग २५० एकड भूमि इस शाखाके पास है। क्षेत्र तथा कार्य-सुविधाकी दृष्टिस इसकी विभिन्न उपशाखाएँ हैं—

(क) **मुख्य भवन**—रामेश्वर बाजारम गोशालाका मुख्य भवन हे। यहाँ अधिकतर दुधार एव प्रजननयोग्य गोवश रखे जाते ह।

(ख) **पचशिवाला**—मुख्य भवनसे एक किलामीटरकी दूरीपर पचशिवालाम चारे आदिका उत्पादन होता हे तथा अतिरिक्त गोवशके लिये खटाल हे।

(ग) **मधुवन**—मुख्य भवनसे लगभग ३ कि०मी० दूर मधुवनमे कसाइयासे पकडे गये दुधार गोवश रखे जाते हैं, जिनमे कुछ गाये समुचित देखभालके बाद दूध देने लगती हैं।

(घ) **वृन्दावन**—यह मधुवनके निकट हे। यहाँ अधिकतर तथाकथित अनुपयोगी गोवश रखे जाते ह।

(३) **सदर**—नगरमे दुलहिनजी रोड गोलघरम *गोशालाका प्रधान कार्यालय है, यहाँ लगभग ८० दुधार गाय* हैं, यहाँ बाछीको प्रजनन याग्य बनानेका भी केन्द्र हे।

(४) **सारग**—पहडिया सारगपर गाशालाकी ३ ११ एकड भूमि मुख्य मार्गपर ह। यहाँ एक आदर्श डेयरी स्थापित करनेकी योजना है।

इस प्रकार '*काशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला*' अपने अनेक रूपाम अनेक स्थानोपर गोवशके रक्षण एव सवर्धनके अनक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही ह। गोबर तथा गोमूत्रके अनेक उपयागाके साथ ही इनके द्वारा ऊसर भूमिको उपजाऊ बनानेका कार्य चल रहा हे। गोबर-गैसका प्रयोग ऊर्जाके रूपम तथा नॅडेप-पद्धतिसे सेन्द्रिय खादका प्रयोग भी व्यापक स्तरपर हो रहा है। विशुद्ध दूधकी उपलब्धताम भी इस गाशाला तथा इसकी शाखाआका विशेष यागदान हे। गारक्षण, गासवर्धन तथा गोपालनक साथ ही हमारा मुख्य उद्देश्य है अपन सर्वाङ्गीण विकासम गाय-वलक योगदानकी उपयोगिताको समझते हुए आध्यात्मिक उन्नतिकी ओर अग्रसर हाना आर जीवमात्रके प्रति दया एव करुणाका भाव रखना। —श्रीअशोककुमारजी सराफ (प्रधान मन्त्री)

[स्थानाभावके कारण अन्य गोशालाआका विवरण सलग्न परिशिष्टाङ्कम दिया गया है।]

गोरक्षा-अभियान

[भारतवर्ष एक अध्यात्मप्रधान दश है। पाश्चात्य देशोके कार्य-कलाप और वहाँकी नीतियाँ स्वार्थसे प्रेरित होती हैं, जबकि भारतमे परमार्थकी प्रधानता है। अपने तुच्छ स्वार्थकी सिद्धिके लिये किसी भी प्राणीको कष्ट देना अथवा उसकी हत्या करना अधर्म माना गया है। भारतीय सस्कृतिने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। जहाँतक गायका प्रश्न है, प्रारम्भस ही हमारे ऋषि-महर्षि और मनीषियोने गायको ससारका सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना और इसे विश्वकी माता कहकर सम्बोधित किया।

अनादिकालस वेदाम गायको 'अघ्न्या' कहकर यह दर्शाया गया है कि गाय अवध्य है अर्थात् किसी भी स्थितिम गायका वध नहीं किया जा सकता। 'अघ्न्या' का अर्थ है जो न तो स्वय किसीको कष्ट पहुँचाये और न अन्य किसीके द्वारा मारी-पीटी और क्लेश पहुँचायी जाय। इसीलिये प्रारम्भसे ही भारतीय शासकोने गोवशको राज्यका सरक्षण प्रदान किया और इसे अवध्य माना अर्थात् उन दिनो गोवध करनेवालेको प्राणदण्ड दिया जाता था। हिन्दू सम्राटोके समय तो गोवधपर पूर्ण प्रतिबन्ध रहा ही, मुगल बादशाहोके शासनकालमे भी समझदार शासकोने अपनी दूरदर्शिताके आधारपर प्रजामे परस्पर सौमनस्यता रखनेकी दृष्टिसे गोवधपर पूर्ण प्रतिबन्ध रखा। पर बादके दिनोमे विदेशियोके शासनकालमे इस प्रतिबन्धपर शिथिलता आने लगी और गोहत्याका पाप प्रारम्भ हो गया जो आजतक हो रहा है। देशमे गोहत्याके कलकको मिटानेके लिये ही स्वतन्त्रता-सग्रामकी शुरुआत हुई। स्वतन्त्रता-सग्रामके प्रमुख कर्णधारोने यह घोषणा की कि 'स्वराज्य प्राप्त होते ही गोहत्याका काला कलक सबसे पहले मिटेगा', जबकि आज स्वराज्य प्राप्त किये ४७ वर्ष बीत गये और राम-कृष्ण, बुद्ध तथा गाँधीकी इस पवित्र भूमिपर अभीतक गोरक्त गिरना बद नहीं हुआ—गोहत्या पूरी बद नहीं हो सकी।

स्वराज्य-प्राप्तिके बाद गोहत्या-बदी कानून बननेकी आशा क्षीण होनेपर यहाँकी जनता, बुद्धिजीवियो और सत-महात्माओने गोवध-बदीके लिये अहिसात्मक आन्दोलन, सत्याग्रह किये जेलकी यातनाएँ सहीं बलिदान और कुर्बानियाँ दी जो इस देशका एक इतिहास बन गया। गोरक्षाके प्रयत्नकी इस ऐतिहासिक परम्पराका दिग्दर्शन यहाँ सक्षेपमे प्रस्तुत किया जा रहा है, जो गोभक्तोके लिये विशेष प्रेरणादायक है। आशा है इस देशके कर्णधार शीघ्र ही गोवशकी हत्या-बदीका केन्द्रीय कानून बनाकर देशको पतनके गर्तमे जानेसे बचायेंगे और भारतीय सस्कृतिकी रक्षा करेंगे।]—सम्पादक

भारतमे गोरक्षाकी ऐतिहासिक परम्परा

(प० श्रीजानकीनाथजी शर्मा)

सुदर्शना एव सुमङ्गला गायका वेदाम मुख्य नाम 'अघ्न्या' आता है—

'अघ्न्याना न पोषे कृणातु' (अथर्व० शौ० ९।४।२ पैप्पलाद० १६।२४।२।६, यजु० १२।७३ मैत्रायणी २।५।१० तैत्ति०स० ३।३।९।२) इत्यादि। 'अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।' (ऋग्वेद १।१६४।४०) 'नहि मे अस्त्यघ्न्या' (ऋग्वेद ८।१०२।१९) इत्यादि। श्रीअमरसिहने भी (अमर०२।९।६६-६७ मे) कहा है—

माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी॥
अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यादुत्तमा गापु नैचिकी।

—इस श्लोकमे उन्होने माता अघ्न्या, रोहिणी,

सौरभेयी आदि गायके नाम बतलाये हैं तथा रत्नमाला, वैजयन्ती, त्रिकाण्डशेष आदि कोषोके कर्ताआने भी गायके धेनु, सुदर्शना, माहेयी इज्या, कल्याणी, भद्रा, अनड्वाही, पावनी आदि और भी अनेको नाम दिये हैं।

अघ्न्याकी व्याख्या—जो न तो स्वय किसीको कष्ट पहुँचाती है और न जो अन्य किसीके द्वारा कभी मारी-पीटी या क्लेश पहुँचायी जाने योग्य है अर्थात् पूज्या, वन्द्या और श्रद्धेया है—इस अर्थमे उज्ज्वलदत्त आदिने 'न हन्यते कैर्वापि', 'न वा हन्ति दातारम्', 'ग्रहीतार वा' इस व्युत्पत्तिद्वारा 'अघ्न्यादयश्च' (उणादि ४। ११२) सूत्रकी व्याख्यामे यक् प्रत्ययसे इस 'अघ्न्या' पदकी साधुता स्वीकार की है। —'यक कित्वात्', 'गमहन०' इत्युपधालोपे 'हो हन्ते ' इति कुत्वेन हस्य घ ।

'निरुक्त'मे भी श्रीयास्कने (११। ४३ मे) स्वय ही 'अहन्तव्या भवतीत्यघ्नीति वा अघ्न्या' कहकर इसकी व्याख्या लिखी है। निरुक्त निघण्टु २। ११। १ की व्याख्यामे देवराज यज्वाने आगे लिखा है—

'अघस्य दुर्भिक्षादेर्हन्त्री वा अहन्तव्या वेति अघ्न्या'

महाभारत, शान्तिपर्व (२६२। ४७) म भी तुलाधार तथा भीष्मने सुस्पष्ट रूपसे इसकी व्युत्पत्ति करते हुए कहा था—श्रुतिमे गोओको अघ्न्या (अवध्य) कहा गया है, फिर कौन उन्हे मारनेका विचार करेगा ? जो पुरुष गाय और बैलोको मारता है वह महान् पाप करता है—

अघ्न्या इति गवा नाम क एता हन्तुमर्हति।
महच्चकाराकुशल वृष गा वाऽऽलभेत् तु य ॥

ये अघ्न्या, माता, अर्जुनी, सुरभी, माहेयी, अदिति, इज्या, कल्याणी तथा भद्रा आदि शब्द—गायके नाम ही गोरक्षाकी ऐतिहासिकताका साक्ष्य दे रहे ह। आजकल अनीश्वरवादकी तरह भारतम 'गोमास' की बात कहनेका फैशन चल पडा है, इसका कारण मध्यकालान कवियोका धार्मिक विनोद है। जैसे हठयोगके ग्रन्थाम कहा गया है—

गोशब्दनोदिता जिह्वा तत्प्रवेशो हि तालुनि।
गोमासभक्षण तत्तु महापातकनाशनम्॥
(हठयोग-प्रदी० ३। ४८)

'यहाँ खचरी-मुद्राको ही गामास-भक्षण कहा गया है। 'गो'शब्दका अर्थ है जिह्वा और तालु-विवरम उसका प्रवश ही मांस-भक्षण ह। यही खेचरी-मुद्रा हे।

बी०ए०स्मिथने अपनी प्रसिद्ध प्राचीन इतिहासकी पुस्तकके 'फण्डामेण्टल यूनिटी ऑफ हिन्दूइज्म' नामके प्रकरणमे लिखा है—*Nearly all Hindu reverance* Brahmnas and all may be said to venerate cow P 7

कौटिल्यने अपने अर्थशास्त्रके २। २६ म गोरक्षापर राजाको पूर्ण ध्यान देनेके लिये आदेश दिया है। अशोकके शिलालेखोमे गोहत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध दृष्ट है। इसी प्रकार नूनिजने विजयनगरके राजाओके विषयमे स्पष्ट लिखा है कि वे गोमाताकी पूजा करते थे और उनके यहाँ मास-भक्षणपर सर्वथा निषेध था। (Vijaya Nagar P 315)

बदाउनीने लिखा है कि हिन्दुओ तथा जैनियाके प्रभावसे अकबरके राज्यम कोई भी गोवध नहीं कर सकता था—stringent ristrictions on the eat of flesh, meat imposed by a series of enactments seem to have been mainly due to own influence though the idea of Hindu ascetis may also have played *a part, as Badauny suggests (ibid P 350)*

बी०ए० स्मिथने अपने इतिहास १०१ पर जहाँगीरके विषयम यहाँतक लिखा है कि वह जान या अनजानमे भी गोहत्यारोको फाँसीपर लटकानेम नहीं हिचकता था—Jahangir in the 17th century did not hesitate to kill or mutilate some unlucky men, who had accidently spoiled short at a blue bull

सुप्रीम कोर्टके एक फैसलेसे इन सभीका सग्रह करते हुए 'ट्रुथ' २०-१-७३ की सम्पादकीय टिप्पणीम ठीक ही लिखा है—'In the 15th century the question was so acute that a ruler like Baber had to enjoy on his successors the duty to stop cowkilling so as not to hurt the feelings of his Hindu subjects As late as the 18th century Hyder Ali the most *powerful ruler of Mysore issued a firman that* anybody discovered killing a cow would have his hands cut off '

(Quoted in the Supreme Court Judgement *of 1958)*

काँग्रेसक प्रसिडन्सियल भाषणाम भी इसी प्रकारके

हो मुख्यांश-युक्त भाषण संगृहीत हैं।

स्वामी दयानन्द, महात्मा गाँधी, जमनालाल बजाज, स्वामी करपात्रीजी, ला०हरदेवसहायजी, श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी एवं श्रीभाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारने भी इसी परम्पराका पूर्णतया पालन करते हुए गोरक्षार्थ अनेक तप एवं उत्सर्ग किये। वस्तुतः शुद्ध गोरक्षा-गोसेवा आदिके बिना देशमें आचार, श्री, ऐश्वर्य और शान्ति-स्थापन सम्भव नहीं है। अपितु जैसा कि देखा जा रहा है—निरन्तर अन्न-वस्त्रका अभाव, चोरी, डाँका, हत्या-लूट आदि उपद्रव और सभी प्रकारकी अशान्ति, दुःख तथा क्लेशोंकी परम्परा ही पनपती जा रही है एवं व्याप्त होती चली जा रही है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि जहाँ गायोंको तनिक भी क्लेश होता है वहाँ जप-पूजा-पाठ, यज्ञ, तप आदिमें भी सिद्धि नहीं मिलती, पूर्ण फलकी प्राप्तिकी कल्पना ही दुर्घट है।

ऐसी दशामें सुख-शान्ति, राजनीतिक सफलता, व्यावहारिक सौहार्द और सब प्रकारके कल्याणके लिये एकमात्र उपाय है सच्ची भावनासे गोसेवा-गोपालन और गोपूजा। जबतक भारतमें इसकी परम्परा थी, दूध-दहीकी नदियाँ बहती थीं तबतक शान्ति थी और देवता भी यहाँ जन्म लेनेके लिये तरसते थे। उर्वशी अप्सरा तो केवल घृत-पान करनेके लिये पुरूरवाके साथ भारतमें बहुत दिनोंतक रही। ऐसे और अनेक उदाहरण हैं। राजा मरुत्के यज्ञमें तो मरुद्गण नामक देवगण भी भोजन परोसनेका काम करते थे और विश्वेदेवगण सदा उनके सभासदके रूपमें विराजते थे—

मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वदेवाः सभासदः ॥

यह परिस्थिति आज भी अभी ही लौट सकती है, यदि हम पूर्ण श्रद्धासे भगवती गौकी अर्चना करनेके लिये तत्पर हो जायँ—प्रवृत्त हो जायँ।

गोरक्षाकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

(ब्रह्मलीन अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्रीपरमानन्द सारस्वतीजी महाराज)

प्राचीनतम कालसे लेकर ईसवी-पूर्व पाँचवीं शताब्दीतक भारतमें वैदिक संस्कृतिका ही प्राधान्य रहा। फिर धार्मिक स्पर्धाका एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। यह था बौद्धधर्मके उद्भवका इतिहास। वैदिक संस्कृतिसे अनुप्राणित सभी हिन्दू सम्राटोंके शासनमें गोवंशको राज्यका संरक्षण प्राप्त रहा। गोवध करनेवालेको प्राण-दण्ड दिया जाता था। गोमेध-यज्ञका नाम लेकर जो प्राचीन भारतमें गोवध और गोमांस-भक्षण सिद्ध करनेका कुप्रयास करते हैं वे गोमेधके स्वरूपको नहीं जानते, ऐसे ही शास्त्रोंमें नरमेधकी भी बात आयी है। हो सकता है कि इसे लेकर कोई ज्ञान-लव-दुर्विदग्ध यह सिद्ध करने चले कि प्राचीन भारतमें नरवध होता था और हिन्दू लोग नर-मांस-भक्षी थे किंतु ऐसी बात है नहीं। गाय यथार्थ भारतमें सदा ही 'अवध्य' माना गया है और भारतवासीने उसका वध कभी सहन नहीं किया।

प्राचीन भारतके सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य (३२३ से ३२८ ई० पूर्व) के शासनकालमें गोवंशका वध दण्डनीय अपराध था। चन्द्रगुप्तके महामात्य आचार्य चाणक्यकृत कौटिलीय अर्थशास्त्र (२। २६। ८३) में समस्त गोवंशको 'अवध्य' कहा गया है। 'वत्सो वृषो धेनुश्चैषामवध्याः। घ्नतः पञ्चाशत्को दण्डः।' राज्यके विविध कर्तव्योंमें गोवंशकी रक्षा और पालन एक प्रमुख कर्तव्य था। राज्य गो-संवर्धनके लिये भी सचेष्ट रहता था और इसके लिये राज्यकी ओरसे 'गो-अध्यक्ष' की नियुक्ति होती थी। गो-अध्यक्षके कर्तव्य विस्तारसे कौटिलीय अर्थशास्त्रमें वर्णित हैं।

बौद्धधर्म तो पूर्णरूपमें अहिंसा-धर्मपर ही निर्भर रहा है। भगवान् बुद्ध करुणाके ही अवतार कहे जाते हैं। बौद्धधर्मके 'कुलवग्गसुत्त' नामक ग्रन्थमें जीवोंको क्षति पहुँचाना, हिंसा करना, काटना, चोरी करना, झूठ बोलना, छल-कपट करना, असद्-ग्रन्थोंको पढ़ना और परस्त्रीगमन करना—ये निषिद्ध कर्म बताये गये हैं। सभी जीवोंको

हिसाका निषेध करनेवाले बौद्धधर्ममे गोवशके वधका प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिये बौद्धधर्म स्वीकार करनेवाले सम्राट् अशोक (३०४ से २३२ ई० पूर्व) ने उसी धर्म-भावनासे प्रेरित होकर अपने राज्यमे पशुवधको कानूनन बद कर दिया। इसी प्रकार मौर्य शासन और उससे पूर्व भी गोवशक वधपर पूर्ण प्रतिबन्ध था।

भारतीय सनातन सस्कृतिके नियामक शास्त्र मानवधर्म-शास्त्र अथवा मनुस्मृतिमे महर्षि मनुने मासके व्यवहारको प्रशस्त नहीं माना, विहित-अविहित सभी प्रकारके मासाके परित्यागको ही उत्तम बताया है और भगवत्प्राप्तिके साधनामे पूर्ण अहिसा-व्रतको मुख्य माना है। '**अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते॥**' (मनु० ६। ६०) तीसरी शताब्दीमे विष्णु-भक्तिके प्रचारने विशेष रूपसे अहिसा-धर्मको अधिक बल दिया।

दसवीं शताब्दीतक भारत गोवशके लिये स्वर्गभूमिकी भाँति था। महमूद गजनवीके आक्रमण (९९८ से १०३० ई०) से पूर्व मुसलमान सूफी सत भारतमे आकर साधना करने लगे थे। पर वे सब गायको आदरकी दृष्टिसे देखते थे। मुसलमान आक्रान्ताओंने विजयके गर्वमे गोवध आरम्भ किया। यह सत्य है कि इस्लाम गोभक्तिका पाठ नहीं पढाता, पर यह भी सत्य है कि इस्लाम धर्मके लिये गोहत्या करना अनिवार्य नहीं। मुसलमानाके आगमनसे पूर्व भारतमे पारसी लोग आ चुके थ। वे गायका आदर करते हैं। गायके गोबर और मूत्रसे पवित्रता प्राप्त होनेमे विश्वास करते हैं। जैन और बौद्ध भी गायका आदर करते हैं। अत राजा लोग चाहे हिन्दू-धर्मके प्रभावमे रहे हो चाहे जैन बौद्धधर्मके प्रभावमे—भारतमे गोवशके वधपर प्रतिबन्ध ही रहा। मुसलमान शासकाने स्पर्धावश गोवध आरम्भ किया। युगासे चली आयी गोभक्तिका समाजपर प्रभाव यह हुआ था कि गोघातक और गोमास-भक्षी हिन्दू ही नहीं माना जाता था। गोभक्षकसे हिन्दूको स्वाभाविक घृणा होती थी। बाबर (१५२६ से १५३०ई०) की दूरदर्शिताने बहुसख्यक समाजकी इस बद्धमूल भावनाको परखा और इस्लामका भी इसमं कोई विरोध न देखकर फरमानद्वारा गोहत्या बद कर दी। इससे हिन्दू और मुसलमानाम सौमनस्य स्थापित होने लगा। अकबर (१५४२—१६०५ ई०) ने भी इस नीतिकी दूरदर्शिताको परखा और गोवधको कानूनन बद कर हिन्दूका स्नेह प्राप्त किया। हिन्दू और मुसलमान सौहार्दपूर्वक समान नागरिकोकी भाँति जीवन व्यतीत करने लग। यह सौहार्द अधिक कालतक स्थायी न रह सका। राजपूत और मराठा याद्धाओने मुस्लिम शासनका अन्त करनक लिये शस्त्र ग्रहण किया। प्रतिक्रियामे मुस्लिम शासकोका हिन्दू-विरोधी रवैया और उग्र हो गया। पर इस सघर्षम मुस्लिम शक्ति उत्तरोत्तर क्षीण होती गयी। यहाँ तक कि अन्तिम मुगल बादशाह नाममात्रका शासक रह गया था। विजयके परिणाम-स्वरूप हिन्दू-राज्य पुन जहाँ-जहाँ स्थापित हुए, वहाँ गोवध पूर्णरूपसे कानूनन बद कर दिया गया। गोवशका पुन उद्धार-सा हुआ। कुछ राज्याने ता अपने सिक्कापर गायका चित्र देना आरम्भ कर दिया।

भारतम यूरोपियनक आनेसे इतिहासका एक और नया पृष्ठ आरम्भ हुआ। वैस ता यूरापियनोका भारतम आगमन १७वीं शताब्दीमे ही आरम्भ हो गया था, पर १८वीं शताब्दीक उत्तरार्धमे राजनैतिक सत्ता भी उनके हाथमे आने लगी थी। १८५७ के अनन्तर तो भारतका समग्र मानचित्र गुलाबी रगका हो गया। हिन्दू और मुसलमान दोनाके ऊपर अग्रजाका आधिपत्य स्थापित हो गया। य ईसाई धर्मको माननेवाले थे। यद्यपि ईसाई धर्ममे अहिसा, प्रम और भ्रातृत्वकी ही प्रधानता है, पर व्यवहारमे यूराप जैसा ईसाई होनेसे पूर्व मास-भक्षी था वैसा ही ईसाई होनेके अनन्तर भी बना रहा। १९वीं शताब्दीम विज्ञानके उद्भवने तो मास-भक्षणको एक प्रकारका बौद्धिक आधार समर्पण कर स्थायित्व प्रदान कर दिया। विज्ञानस प्रभावित यूरोप मास-भक्षणको मनुष्य-जीवनके लिये अनिवार्य ओर भूत-हिसाको स्वाभाविक मानने लगा। अग्रेज गोमास-भक्षी थे। अत गारे सैनिक ओर शासकाके लिये गोमासकी व्यवस्था की जाने लगी। यह सब इस ढगसे चला कि सर्वसाधारण जनताकी दृष्टिमे नहीं आने पाया। सन् १८५७ की क्रान्तिम अग्रज यह अनुभव कर चुके थे कि भारतीय जनता गायके नामपर विद्रोहके लिये शीघ्र ही सगठित ओर खडी की जा सकती है।

भारतको अपने हिताके अनुकूल ढालनेका चिन्ता अग्रेज शासकाको हान लगी। उसके लिये विविध उपाय किय गय। स्थितिकी स्पष्टताके लिये भारतपर अग्रजी राज्यके उन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परिणामापर दृष्टिपात कर लेना उपयोगी होगा, जिनका दुष्परिणाम हम आज भी भोग रहे हैं। अग्रेजाने जितने अधिक कालतक भारतके जिस भागपर राज्य किया वह उतना ही अधिक गराव आर पिछडा भाग है।

गावशकी दृष्टिसे इसक घातक परिणाम हुए। गाचरभूमियाँ ताडकर खत वनाये जाने लगे। गोपालनकी व्यवस्था जो महाभारतकाल और मोर्य-शासनकालम वैज्ञानिक रूप धारण कर चुकी थी, स्वाभाविक ही गडबडाने लगी। खेतीके लिये वेलाकी माँग वढी। उपलब्ध वैलापर ही बढे हुए कामका बोझ डाला गया। गोचरभूमियाकी उत्तरोत्तर कमीसे गाय और वैलाकी चराईका स्तर गिर गया। परिणाम यह हुआ कि एक ओर आवश्यकताके दवावमे पशुआकी सख्या बढायी गयी और दूसरी ओर चराईका स्तर गिर जानेसे पशुआकी नस्लका ह्रास होने लगा। अग्रेजाद्वारा भारतके शोषणका यह अनिवार्य परिणाम हुआ।

इधर शिक्षाम भी उन बाताका समावेश किया गया, जिससे गोभक्तिकी भावना समाप्त हो। कृषि-आयोगकी नियुक्ति की गयी जिसने अपनी यह रिपार्ट प्रस्तुत की कि पशुओका सख्या अधिक और पालनके साधन कम हैं। यदि बकार पशुओ (दूध न देनेवाली गाय और बोझा न ढानवाले बल) का सख्या कम न की गयी ता कामक गाय-वैलाकी भी हालत बुरा हा जायगा। गावशके विनाशके लिये यह बुद्धिवादका आधार प्रस्तुत किया गया। चारेकी वृद्धि अशक्य तो नहीं थी पर शायद उसके उपायोको विचारना और प्रस्तुत करना आयोगकी विचारसामासे बाहर था या उनको दृष्टिमे अनावश्यक था।

सवसाधारण भारतीय जनताकी भावनाएँ गायके प्रति फिर भी वही रहीं। अग्रेजाने अमृतसरम बूचडखाना खोलनेका जव प्रयास किया तो उसका भयकर विरोध किया गया। यही हाल लाहौरमे हुआ। सन् १९०५म जवस राष्ट्रिय आन्दोलन अपने पैरापर खडा हुआ—गारक्षाका प्रश्न राष्ट्रिय प्रश्न वना लिया गया और अग्रेजाके विरुद्ध जनताको यही कहकर खडा किया गया कि 'अग्रेज गोमास-भक्षा ह, इन्हे निकाल दनेपर गारक्षा अपने-आप हो जायगी।' गाँधीजीने यहाँतक कहा कि 'हम स्वतन्त्रताके लिये कुछ समयतक रुक भी सकते ह, पर गोहत्या होना हमे एक दिन भी सहन नहीं।' गाँधीजीने इन शब्दोम बहुसख्यक भारतीयाके हृदयकी आवाज उठायी थी। ईसाई धर्म गोहत्याको पुण्य नही बताता। गोरक्षा होना इस्लामके भी विरुद्ध नही। शेष सभी धर्मावलम्बी हिन्दू, बौद्ध, जैन, पारसी, सिक्ख—सभी गोरक्षाकी माँग करते है। इस सास्कृतिक पृष्ठभूमिमे सहज ही समझा जा सकता है कि गोरक्षाका प्रश्न विविध धर्मों और सम्प्रदायोके इस देशम राष्ट्रिय एकता और साम्प्रदायिक सौमनस्य सम्पादित करनेका ठोस आधार है।

स्वतन्त्रता-प्राप्तितक सारे प्रयत्न देशसे अग्रेजाको निकालनेके लिये ही किये गये और यह आशा का गयी कि स्वतन्त्रता मिलते ही भारतमे गोवधपर प्रतिबन्ध लगा दिया जायगा, किंतु स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद भी जब यह आशा मूर्तरूप धारण करता नहा दिखायी दा तो भारतीयोंने विविध सस्थाआके नेतृत्वम इसके लिये आवाज उठायी और आन्दालन आरम्भ किय। अव भी यह समझनेके लिय समय है कि गोरक्षाक बिना भारतकी आत्माको सतोष नहीं हागा। राष्ट्रिय एकता दृढ होनेके स्थानपर साम्प्रदायिक विद्वेष बढगा, जिसके अवान्तर परिणाम भारतकी प्रगतिमे महान् बाधक होगे।

एक दृष्टिसे देखा जाय तो गाय उपकारकताकी प्रतीक है। उपकारकके प्रति किसा अवस्थामे नृशस होना कृतघ्नता आर असुरता है। लाभका लोभ देकर मनुष्यको कृतघ्न और नृशस बनानेका पाठ पढाना मोहक हो सकता है, पर मङ्गलदायक नहीं।

स्वाधीनता-संग्राम और गोरक्षा

(श्रीशिवकुमारजी गोयल)

भारत धर्मप्राण ऋषि-मुनियाका देश होनेक कारण गामाताके प्रति अनादिकालसे असीम श्रद्धा-भक्ति रखता रहा है। भारतम गाय तथा गोवशको अवध्य माना जाता रहा है। भारतम विदेशी-विधर्मी मुसलमानाके आधिपत्य जमानेके बाद यहाँ गोहत्याका कलक जारी हुआ। मुस्लिम शासनकालम छत्रपति शिवाजी, महाराणाप्रताप, गुरु गाविन्दसिह आदि राष्ट्रवीराने गाहत्याके कलकके विरुद्ध निरन्तर सघर्ष किया। शिवाजीने तो बाल्यावस्थाम ही एक गाहत्यारे कसाईका वध कर, गायको मुक्त कर अपनी गोभक्तिका परिचय दिया था।

गुरु गोविन्दसिहजी महाराजने तो सिख-पथकी स्थापना ही गोघात (हत्या) का कलक मिटानके उद्देश्यसे की थी। उन्हाने अपनी इष्टदेवी नैनादवीसे वर माँगा था—'*गोघातका दु ख जगतसे मिटाऊँ*'। गुरु तेगबहादुर गुरु अर्जुनदेव आदि सिख गुरुआके वलिदान हिन्दूधर्म तथा गौमाताकी रक्षाके लिये ही हुए थे।

महाराजा रणजीतसिहने शासनकी बागडोर सँभालते ही राज्यम गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगानेका पहला कार्य किया था। महाराजा रणजीतसिहन जब अपनी फोजमे कुछ यूरोपियन जनरलाकी नियुक्ति की थी तो सबसे पहली शर्त यहा थी कि वे धर्मप्राण भारतके उनके राज्यम गोमासका सेवन कदापि नहीं कर पायगे।

१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य-समर गोमाताकी हत्यासे उत्पन्न आक्राशका ही परिणाम था। जब अग्रेज सरकारने कारतूसाम गायकी चर्बीका प्रयोग शुरू किया तो गोभक्त भारतीय सनिक यह सहन नहीं कर पाये कि विदेशी विधर्मी अग्रेज सरकार गायकी चर्बीके माध्यमसे उनका धर्म भ्रष्ट कर। वीर मगल पाण्डने वेरकपुर छावनीमे गायकी चर्बीसे अपवित्र कारतूसाका छूनेसे इनकार करके खुला विद्रोह किया था। इस विद्रोहकी सजा उस गोभक्त, धर्मप्रेमी ब्राह्मण सैनिकको फाँसीके रूपम दी गयी थी। स्वातन्त्र्य-वीर सावरकरने अपने '१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य-समर' नामक ग्रन्थम अनक तथ्य प्रस्तुत कर यह स्पष्ट किया है कि हिन्दू सेनिक सब कुछ सहनको तैयार थे, किंतु गायकी चर्बीसे युक्त कारतूसाको उन्होने छूनेसे स्पष्ट इनकार कर विद्रोह कर डाला था।

१८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य-समरके पीछे जहाँ विदेशी शासनको हटानेकी भावना थी, वहीं विदशी सरकारद्वारा धर्मपर प्रहार किये जानेके कारण भी अदर-ही-अदर क्षाभ बढता गया था। अग्रेज पादरी हिन्दुस्तानी सिपाहियापर हिन्दूधर्म त्यागकर ईसाई-धर्म स्वीकार करनेपर जोर डालने लगे थे। कई जगह गाँवोमे यह भावना फैली कि अपने बेटाको सेनामे भर्ती करानेका परिणाम उनका ईसाई बनना होगा।

इसी दोरान अग्रेज शासकाने बदूकाके नये कारतूस निकाल, जिन्हे चिकना करनेके लिये गायकी चर्बीका उपयोग किया जाता था। उन कारतूसाको दाँतसे काटकर खालना पडता था।

सर्वप्रथम बैरकपुर (बगाल) छावनीकी १९ वी पल्टनको २९ मार्च, १८५७ को गायकी चर्बीसे युक्त कारतूस प्रयोगके लिये दिये गये। उससे पहले ही छावनियोमे यह समाचार फैल चुका था कि विदेशी विधर्मी अग्रेज हिन्दुस्तानियाको ईसाई बनाने, उन्हे अपने धर्मसे भ्रष्ट करनेके लिये गौमाताकी चर्बी-लगे कारतूस मुँहसे खोलनेको बाध्य करनेवाले हैं। बैरकपुर छावनीमे जैसे ही सैनिकाको चर्बीयुक्त कारतूस दिये गये कि गोभक्त सैनिक मगल पाण्डे खुली परेडम बदूक लेकर गरज पडे—'हम गौमाताके भक्त सनातनधर्मी हैं। चर्बी-लगे अपवित्र कारतूसोको छूकर अपना धर्म भ्रष्ट कदापि नहीं करेगे।'

अग्रेज सार्जेन्ट मेजर हूसनने मगल पाण्डेको गिरफ्तार करनेका आदेश दिया। कोई भी हिन्दुस्तानी सैनिक इसके लिये तेयार नहीं हुआ। इसी बीच मगल पाण्डेने अग्रेज अफसरपर गोली दागकर उसे मार डाला। गोलीकी आवाज सुनकर लेफ्टिनेन्ट बाम सामने आया तो गोभक्त मगल पाण्डेने उसे भी गोलियोसे भून डाला।

परिणामतः अन्तमें मंगल पाण्डेको ८ अप्रैल, १८५७ को फाँसीपर लटका दिया गया। देश और धर्मके लिये, गो-प्रेमके लिये वीर मंगल पाण्डेकी यह १८५७ के स्वातन्त्र्य-समरकी पहली आहुति थी।

मंगल पाण्डेके बलिदानके बाद पूरे देशकी सैनिक छावनियोंमें यह बात फैल चुकी थी कि नये कारतूसोंमें गाय तथा सूअरकी चर्बी लगवाकर अंग्रेज हिन्दुस्तानियोंका धर्म भ्रष्ट करनेपर उतर आये हैं। मेरठमें १० मई १८५७ को 'सैनिक क्रान्ति' का विस्फोट हुआ था। मेरठ छावनीमें स्थित 'काली पलटनका शिव-मन्दिर (जिसे अब बाबा औघड़नाथका मन्दिर कहते हैं) उन दिनों एक राष्ट्रभक्त गोप्रेमी साधुका गुप्त अड्डा बना हुआ था। यह साधुवेशधारी गोभक्त पुजारी भीषण गर्मीमें ठंडा पानी पीनेके लिये आनेवाले हिन्दू सैनिकोंको तरह-तरहसे गोद्रोही अंग्रेज सरकारके विरुद्ध जाग्रत् करता था।

एक दिन मईकी भीषण गर्मीमें जब कुछ सैनिक पानी पीनेके लिये काली पलटनके मन्दिरपर पहुँचे तो उस तेजस्वी पुजारीने सैनिकोंको लोटेसे पानी पिलानेसे इनकार कर दिया और बोला—'मैं गौमाताकी चर्बी-लगे अपवित्र कारतूसको अपने मुँहसे खोलनेवाले धर्मभ्रष्ट हुए तुमलोगोंको मन्दिरके पवित्र लोटेसे पानी कैसे पिला सकता हूँ।' सैनिकोंमें जिज्ञासा बढ़ी तथा उनकी गोभक्तिकी भावनाको आघात भी लगा। उन्होंने छावनीमें पहुँचकर अपने अन्य साथियोंको यह बताया कि 'विधर्मी अंग्रेज हमें गोमाताकी चर्बी-लगे कारतूस देकर हमारा धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं।' अंदर-ही-अंदर गोभक्त हिन्दू सैनिकोंमें विद्रोही भावना फैलती गयी। मुस्लिम सैनिकोंको संदेह हुआ कि जब अंग्रेज हिन्दुओंको गायकी चर्बीके कारतूस दे सकते हैं तो वे मुसलमानोंका धर्म भ्रष्ट करनेके लिये सूअरकी चर्बीका भी प्रयोग कर सकते हैं।

अंग्रेजोंने मंगल पाण्डेके विद्रोहको मामूली समझा तथा ६ मईको मेरठ छावनीमें ९० हिन्दुस्तानी घुड़सवार सिपाहियोंको चर्बीयुक्त नये कारतूस दिये गये। ८५ सिपाहियोंने इन्हें छूनेसे भी इनकार कर खुला विद्रोह कर दिया। ९मईको इन ८५ सिपाहियोंका कोर्ट मार्शल कर दस-दस वर्षकी सजा देकर जेल भेज दिया गया।

अगले दिन १० मईको छावनीके सभी हिन्दुस्तानी सैनिकोंने खुला विद्रोह कर डाला। देखते-ही-देखते सैनिक अंग्रेजोंपर टूट पड़े। पूरा मेरठ आगकी लपटोंमें झुलस गया। उन्होंने एक दिन पहले गिरफ्तार किये गये ८५ सैनिकोंको जेलसे छुड़ा लिया। एक दर्जनसे ज्यादा अंग्रेज अफसरोंको मौतके घाट उतार दिया गया।

इस विद्रोहके बाद जब मेरठ जनपदके राजपूत-बहुल क्षेत्र धौलाना, पिलखुवा, डूहरी, मुकीमपुर आदि गाँवोंमें बैठकें हुईं तो उनमें भी यही कहा गया—'विदेशी विधर्मी अंग्रेज हमारे देशपर राज्यकर उसे लूटनेके बाद, हमें गुलाम बनानेके बाद अब गोहत्या कराकर, गायकी चर्बी कारतूसोंमें लगाकर हमारे धर्म तथा गोभक्तिको चुनौती दे रहे हैं। हमें इन गोभक्षक अंग्रेजोंसे अब जूझना ही होगा।'

धौलानामें पुलिस-थाना जलाने तथा विद्रोह करनेके आरोपमें जब तेरह राजपूतों तथा एक वैश्य (अग्रवाल) लाला झनकूमल सिंहलको पकड़कर पीपलके पेड़पर फाँसीपर लटकाया गया था, तब बलिदान देनेसे पूर्व उन्होंने यही कहा था—'गोमाताकी हत्याके कारण गोभक्त ग्रामीण जनतामें ब्रिटिश शासनके विरुद्ध अंदर-ही-अंदर क्षोभ फैल रहा था। उसीका परिणाम इस खुली बगावतके रूपमें सामने आया है।'

१८५७ की इस क्रान्तिके दौरान पिलखुवा (गाजियाबाद) के गढ़ीवाले प्राचीन मन्दिरपर रहनेवाले एक गोभक्त नागा बाबाने एक गोरे सैनिकद्वारा गायपर गोली चलाते ही अपनी छाती बंदूकके सामने तान दी थी तथा गायके साथ ही गोभक्त नागा बाबा शहीद हो गये थे।

बिहारमें 'बिहार-केसरी' वीर कुँवरसिंह १८५७ के महान् स्वातन्त्र्य-सेनानी थे। वे जगदीशपुर (शाहाबाद) के राजा थे। वीर कुँवरसिंहने विदेशी-विधर्मी अंग्रेजोंसे डटकर टक्कर ली थी। अतरौलियाके जंगलमें वीर कुँवरसिंहका सेनापति डगलुसनकी सेनासे मुकाबला हुआ था। बलियाके निकट शिवपुरमें कुँवरसिंह अपने सैनिकोंके साथ नौकाओंसे गङ्गापार कर रहे थे कि अंग्रेज सैनिकोंने उनपर गोलियाँ बरसायीं। एक गोली कुँवरसिंहकी दाहिनी कलाईमें घुस

गयी। कुँवरसिहने अपनी तलवार निकाली आर घायल हुई दाहिनी भुजाको काटकर गङ्गा माँको समर्पित करते हुए कहा था—'माँ गङ्गे! गौमाताकी चर्बीसे युक्त अग्रेजोकी अपवित्र गोलीने मेरी भुजाको अपवित्र कर दिया हे, इसे मैं तुझे समर्पित करता हूँ, जिससे यह पावन हो सके।'

१८५७ की सशस्त्र क्रान्तिके पीछे निश्चय ही अन्य मुद्दाके साथ-साथ गोमाताकी हत्या, गोमाताकी चर्बीका कारतूसोम प्रयोग किया जाना भी था। भले ही अग्रजाने बादम इस तथ्यपर लीपापोती करने तथा इतिहासमे इसे नकारनेका प्रयास किया।

वीर सावरकरने '१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य-समर' ग्रन्थमे लिखा है—'अग्रेजोने कितना ही स्पष्टीकरण दिया कि कारतूसाम गाय और सूअरकी चर्बी नहीं लगायी जाती थी, किंतु 'इडियन म्यूटनी' के प्रथम खण्डके पृष्ठ ३८१ म लिखा हुआ है—'कारतूसाम लगायी जानेवाली चर्बीको उपलब्ध करानेवाले ठेकेदारके साथ हुए इकरारनामेसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि कारतूसाम लगायी जानेवाली चर्बीम गायकी चर्बी होती थी, इसम तनिक भी सदेहकी गुजाइश नहीं है।'

स्वातन्त्र्य-सग्रामके पुरोधा तथा इतिहासकार वीर सावरकर लिखते हे—'अग्रेजाद्वारा जिस प्रकार अनेक बार भारतीयाके साथ कपटपूर्ण व्यवहार किये गये उन्हे सुनकर आज भी रक्तका प्रत्येक बिन्दु खौल उठता है। कारतूसामे गाय ओर सूअरकी चर्बी लगायी जा रही है—इसका हिन्दुस्तानी सैनिकोंने तुरत विश्वास कर लिया। कारतूसाको लेकर उमडते असतोषको दबानेके लिये अग्रेज सरकारने झूठका सहारा भी लिया तथा लिखा कि कारतूसोमे अब भेडकी चर्बी प्रयोग की जाने लगी हे। किंतु वे सचाईपर पर्दा नहीं डाल सके।'

मेरठके बाबा ओघडनाथ मन्दिरपर पानी पिलानवाले पुजारीने जिस प्रकार हिन्दुस्तानी सैनिकाको लाटेसे पानी पिलानेसे इनकार कर उन्हे चर्बीयुक्त कारतूसाको मुँह लगाकर धर्मभ्रष्ट करनेके लिये धिक्कारा था उसी प्रकार देशके अन्य भागामे स्थित छावनियोम भी हुआ था। वीर सावरकर '१८५७ का स्वातन्त्र्य-समर' नामक ग्रन्थम लिखते हे—'दमदम (कलकत्ता) छावनीका ब्राह्मण सैनिक जब एक व्यक्तिको लोटेसे पानी पिलानेसे इनकार कर देता है तो वह जवाब देता है—'किस मुँहसे धर्मभ्रष्ट होनेकी बात करते हो महाराज! आपका धर्म उस समय भ्रष्ट नहीं होता जब आपके सैनिक साथी चर्बी-लगे कारतूसाको मुँहसे खालते हे।'

इन तथ्यासे यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य-समरके पीछे निश्चय ही गोभक्तिकी भावना थी।

प्रख्यात स्वाधीनता-सेनानी और पत्रकार पण्डित सुन्दरलालने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ—'भारतम अग्रेजी राज्य' म लिखा है—'धर्मान्ध या अदूरदर्शी ओरगजेबके राज्यमे भी गोहत्या नहीं हुई। जनता गोहत्यासे घृणा करती थी। अग्रेजाने गोरी फौजका पट भरनेके लिये दोआबके इलाकेम विशेषतया हिन्दुआके पवित्र तीर्थस्थान मथुरामे गौआका काटना प्रारम्भ कर दिया। इससे अग्रजाके विरुद्ध घृणा ओर असतोष उत्पन्न होना स्वाभाविक था। जब हिन्दू और मुसलमान सैनिकोको मालूम हुआ कि नये कारतूसाम गाय और सूअरकी चर्बी लगी है और ये कारतूस मुँहसे खोलने पडगे, तब असतोषने क्रान्तिका रूप धारण कर लिया। देशकी साधारण जनता, भारतीय सैनिक राजा नवाब—सबने अग्रेजी राज्यको बदलनेके लिय क्रान्तिमें भाग लिया। जगह-जगह 'स्वधर्मकी रक्षाके लिये अग्रेजासे जूझ पडो' के लगाये गये उद्घोष इसी धर्म-भावना एव गोभक्तिके परिचायक थे। भारतीय किसानो, सिपाहियो तथा प्रत्येक वर्गके लोगामे यह भावना पैदा हो चुकी थी कि विदेशी विधर्मी अग्रेज सरकार हमारे धर्म, हमारी सस्कृतिकी प्रतीक गोमातापर आघात कर हमे धर्मभ्रष्ट करनेपर उतारू है। तभी विद्रोहाग्नि चरम सीमापर पहुँच पायी थी।

गोहत्याके विरोधमे कूका-विद्रोह

कूका नामधारी सिख-सम्प्रदायने भी स्वाधीनता-आन्दोलनमे सक्रिय भाग लिया था। नामधारी सिख-सम्प्रदायके सद्गुरु रामसिहजी महान् स्वाधीनता-सेनानी थे। उन्होने अपने शिष्याको स्वदेशीका सकल्प दिलाया था। भैणी साहब सद्गुरु रामसिहजी महाराजने अपने शिष्याके

बीच प्रवचन करते हुए स्पष्ट कहा था—'विदेशी विधर्मी अंग्रेजी सत्ता पूरे देशमें विदेशी परम्पराएँ लागू कर रही है। हमें अपने धर्म तथा संस्कृति और राष्ट्रियताकी रक्षाका व्रत लेना है।' उन्होंने गोरक्षाको नामधारी सम्प्रदायका प्रमुख सूत्र बताया। इस बीच अंग्रेजोंने 'फूट डालो और राज्य करो' नीतिके अन्तर्गत अमृतसर-जैसे पावन नगरमें, जो सिख-तीर्थ है, गोहत्याकी छूट दे दी। गोभक्त हिन्दुओं (केशधारी सिखोंसमेत) में गोहत्यासे रोष व्याप्त हो गया। गोभक्त नामधारी सिख इस कलंकको सहन नहीं कर सके। १४ जून १८७१ के दिन नामधारी वीरोंकी एक टोलीने बूचडखानेपर आक्रमण कर अनेक कसाइयोंको मौतके घाट उतार डाला। अंग्रेजोंके शासनने लहनासिंह, हाकिमसिंह, बोहलसिंह तथा फतहसिंह 'माटरन' नामक चार गोभक्त नामधारियोंको फाँसी तथा लालसिंह और लहनासिंहको आजीवन कारावासकी सजा दे दी। इसके बाद गोहत्यारोंके हौसले बढ गये। अमृतसरमें जगह-जगह गोहत्या की जाने लगी।

१५ जुलाई १८७१ को नामधारी गोभक्तोंने कस्बा रामकोटके गुरु गोविन्दसिंह गुरुद्वारेके पास स्थित बूचडखानेपर हमला कर दो गोहत्यारे कसाइयोंको मौतके घाट उतार डाला तथा गायोंको मुक्त कराया। अंग्रेज कमिश्नरके आदेशपर मंगलसिंह, गुरुमुखसिंह तथा मस्तानसिंह नामक तीन गोभक्तोंको ५ अगस्त १८७१ को रामकोटके बूचडखानेके पास सरेआम फाँसीपर लटका दिया गया।

पंजाबके मलेरकोटला स्थानपर भी अंग्रेज गोहत्या कराते थे। १५ जनवरी १८७२ को नामधारी गोभक्तोंकी टोलीने मलेरकोटलाके बूचडखानेपर धावा बोलकर उसे तहस-नहस कर डाला तथा कई गोहत्यारोंकी हत्या कर दी।

अंग्रेज कमिश्नरने ४९ नामधारियोंको पकडवाकर १७ जनवरी १८७२ को मलेरकोटलाके मैदानमें सरेआम तोपोंसे उडवा दिया। अगले दिन १८ जनवरीको १६ गोभक्त नामधारियोंको तोपोंसे उड़ाया गया। कुछको कालापानी भेजा गया।

सद्गुरु रामसिंहजी महाराजको उनके सहयोगियोंके साथ पकडकर जलावतन कर दिया गया। इस प्रकार स्वाधीनता-संग्राम-सेनानी सद्गुरु रामसिंहजी तथा उनके नामधारी सम्प्रदायने गोरक्षार्थ अविस्मरणीय बलिदान दिये।

१८५७ की क्रान्तिके बाद महात्मा गाँधी, महामना प० मदनमोहन मालवीयजी महाराज, लोकमान्य तिलक, स्वामी श्रद्धानन्द आदिने स्वाधीनता-आन्दोलनको सक्रिय किया था। इन सभी नेताओंने स्वाधीन भारतमें गोहत्याका कलंक पूरी तरह मिटानेका संकल्प लिया था।

सन् १९२१ में असहयोग आन्दोलनके दौरान गोपाष्टमीके पावन पर्वपर दिल्लीके 'पटौदी हाउस' में महात्मा गाँधीकी उपस्थितिमें हुए एक सम्मेलनमें सर्वसम्मतिसे पारित प्रस्तावमें कहा गया था—'अंग्रेजी राज्यमें गोहत्या होती है, अतः इस राज्यसे सहयोग नहीं किया जाय।' इस ऐतिहासिक सम्मेलनके स्वागताध्यक्ष हकीम अजमलखाँ थे तथा अध्यक्षता लाला लाजपतरायने की थी।

महामना पण्डित मदनमोहन मालवीयजी महाराजने देशके कई स्थानोंपर आयोजित सभाओंमें घोषणा की थी कि 'देशके स्वाधीन होते ही गोहत्याका कलंक मिटाया जायगा।' महात्मा गाँधीने अपने 'नवजीवन' पत्रके २५ फरवरी १९२५ के अङ्कमें लिखा था—'गोरक्षाका प्रश्न स्वराज्यके प्रश्नसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।'

महान् स्वाधीनता-सेनानी लाला हरदेवसहायने तो देशके स्वाधीन होनेके बाद भी गोहत्याका कलंक जारी रहते देखकर कांग्रेससे त्यागपत्र देकर अपना जीवन गोहत्या-बंदीके पावन उद्देश्यके लिये समर्पित कर दिया था। इसी तरह प्रख्यात स्वाधीनता-सेनानी तथा साहित्यसेवी सेठ गोविन्ददासने संसद्में हमेशा गोहत्या-बंदीका मामला उठाया तथा कांग्रेसके अनुशासनकी भी उन्होंने कभी चिन्ता नहीं की।

इस प्रकार भारतीय स्वाधीनता-संग्रामके पीछे गोभक्ति तथा गौरक्षाकी भावनाका बहुत बडा योगदान रहा।

गोरक्षा एवं गो-सवर्धनके विविध प्रयास

(श्रीराधाकृष्णजी बजाज)

गोसेवा-सघके प्रयासाका इतिहास १८ दिसम्बर, १९२४ से आरम्भ होता हे। उस दिन महाराष्ट्रक सत गोभक्त चौडे महाराजके प्रयाससे बेलगाँवम गोरक्षा-परिपदका अध्यक्ष-पद महात्मा गाँधीजीने सँभाला था। महात्माजीको गोसेवाका काम अत्यन्त प्रिय था। उन्ह लगता था कि जबतक गोहत्या होती हे, तबतक मानो उन्हाकी हत्या होती है। गाँधीजी मानते थे कि गोरक्षा हिदू-धर्मकी मानव-समाजके लिये सवसे वडी देन है। गाँधीजीने अध्यक्षाय भापणम कहा था कि 'गोरक्षाका कार्य स्वराज्यसे भी कठिन लग रहा हे।' उन्होने कहा—'आजतक स्वराज्यके किसी कार्यका आरम्भ करते समय उनके चित्तम कोई हिचक नही हुई। गोरक्षाका काम आरम्भ करते हुए आज दिल हिचक रहा है, पता नहीं इसमे कहाँतक सफलता हो पायेगी।'

२८ अप्रल, १९२५ को अ०भा० गारक्षा-मण्डलकी स्थापना 'माधव-बाग बबई'म हुई। इस मण्डलका विसर्जन होकर दिनाङ्क २५ जुलाई, १९२८ का साबरमतीम अ० भा० गोसेवा-सघकी स्थापना की गयी, जिसक अध्यक्ष स्वय गाँधीजी थे। गारक्षाकी प्रथम शुरुआत गाँधीजीने गोव्रतसे की। गाँधीजीने सदस्याक लिये 'गोव्रत' रखना आवश्यक रखा था। गोव्रत यानी दूध, दही आर घी आदि तथा सभी पदार्थ गौके दूधके ही इस्तेमाल किये जायँ। गादुग्धके पदार्थ इस्तेमाल होगे तो हमारे घरका चारा-दाना गायको मिलगा, गायकी सेवा होगी। सदस्याके लिये 'गोव्रत' रखना आवश्यक था। उन दिनो आचार्य काका साहेब कालेलकर सत विनाबाजी, श्रीबालजीभाई देसाई माता जानकीदवी बजाज आदि अनेक सदस्य बनाये गये थे। इस सघकी ओरसे साबरमतीम गाशाला ओर चर्मालय भी आरम्भ किये गये थे। परतु गाँधीजीको उतनेसे कार्यसे पूरा सताप नहीं था।

गोरक्षामे पूरी शक्ति लगे इसके लिये गाँधीजीने सेठ जमनालालजी बजाजको कहा कि 'मेरे दो काम अत्यन्त प्रिय हैं हरिजन-सेवा ओर गोसेवा।' हरिजन-सेवाके लिये ठक्कर वाप्पा-जैस समर्थ सेवक मिल गये हें। गासेवाका कार्य आप उठा सक तो मुझे सतोष होगा। जमनालालजीने तुरत ही बापूजीकी आज्ञा शिरोधार्य की। ३० सितम्बर, १९४१ विजयादशमीको गोसवा-सघकी स्थापना 'ग्रामसेवा-मण्डल नालवाडी-वर्धा'की नयी वसाहतके प्राङ्गणमे हुई। अनेक राष्ट्र-नेता उपस्थित थे। चक्रवर्ति राजगोपालाचार्य-जीके सुझावपर नालवाडीकी नयी वसाहतका नाम गोपुरी रखा गया।

गासेवा-सघकी अध्यक्षताकी जिम्मेवारी श्रीजमनालालजी बजाजपर आयी। सेठजी किसी कामको लेते थे ता रात-दिन उनका चिन्तन चलता था। उस चिन्तनके फलस्वरूप पहली फरवरी १९४२ को गोसेवा-सघका अ०भा० सम्मेलन वजाजवाडी वर्धाम हुआ। इस सम्मेलनकी अध्यक्षता महामना मालवीयजी करनेवाले थे। समयपर वे नहीं आ सके, इसलिये सम्मेलनकी अध्यक्षता सत विनोबाजीने की। उद्घाटन स्वय गाँधीजीने किया। गोरक्षाके लिये इस सम्मेलनम अष्टविध कार्यक्रम तय किया गया—(१) एक हजार गोव्रतधारी सदस्य बनाना, (२) पूरे वर्धा शहरको गोदुग्ध देना, (३) दूर देहाताम गोदुग्ध सग्रह करके गोघृत तैयार करना (४) गोशालाओका सुधार करना, (५) गोप-विद्यालय चलाना, (६) स्थानीय गो-नसलाका सुधार करना, (७) हरे चारेका प्रसार करना और (८) चर्मालय स्थापित करना।

विधिका विधान अलग ही था। सम्मेलनके आठ दिन बाद ही ११ फरवरी १९४२ को ब्लडप्रेशरकी अधिकतासे जमनालालजी बजाजका स्वर्गवास हो गया। उनके सारे अरमान अधूरे ही रह गये।

सेठजीके जानेका बापूजीको गहरा धक्का लगा। उन्हाने महीने भर बाद ही सेठजीके हितैषियोको इकट्ठा करके मार्च १९४२ म गोसेवा-सघका पुनर्गठन किया गया। माता जानकीदेवी वजाजका अध्यक्ष बनाया गया। सत विनोवाजी ओर सेठ घनश्यामदासजी बिडला उपाध्यक्ष बनाये गये। गोपुरीमे गाशाला चलती ही थी, उसके दूधकी बिक्रीके लिये वर्धामे गोरस-भडारकी स्थापना की गयी।

गोसेवाकी दृष्टिसे गोसेवा-सघका प्रथम प्रयास गोदुग्धको बढावा देनका रहा। भावना यह थी कि भैंसके

अक्रमणसे गायको बचाया जाय। सभी जगह भैसका दूध बढने लगा था और गौका दूध घटता जा रहा था, गोदुग्धकी बिक्री भी कम थी और भाव भी कम था। गोसेवा-सघकी नीति थी कि खेता-जोतके लिये बल-शक्ति और दुग्ध-शक्ति एक ही पशुमे मिले ताकि दो पशुका भार न रहे। दोना शक्तियाँ सर्वाङ्गी गो-नसलमे थी। सर्वाङ्गी या‍ाी जिसकी बछडी अच्छी दुधार हो ओर जिसका नर खेती-जोतक लिये सक्षम हो। भारतम सर्वाङ्गी नसल थारपारकर हरियाना, काँक्रेज गीर, मेवाती गगातीरी, देवनी, कागायम आदि थी, जिनका दूध भा काफी बढ सकता था और नर भी उत्तम बेल बन सकते थे। इसलिय प्रथम प्रयास इन नसलोके अच्छ साँड तेयार करके नसल-सुधारका काम किया जाय ऐसा तय रहा, बिडला-परिवारकी ओरसे जमनालालजीकी स्मृतिम १०८ उत्तम सॉड तैयार करके गोशालाओको दनेका सकल्प था, उसके अनुमार सॉड तयार करके बॉटे गय थे।

नसल-सुधारकी दृष्टिसे गोपुरीम स्थानीय गवलाऊ-नसलके सुधारका प्रयोग किया गया। १० सालके प्रयासम गवलाऊ-नसलकी गाय जो दिनभरम २-३ लीटरसे अधिक दूध नहीं देती थीं, वे गाय और उनकी बछडियाँ ८—१० लीटर दूध देनेवाली हो गयीं। बछड भी बढियॉ बैल निकले। यह सारा सुधार सिलेक्टिव्ह ब्रीडिग-शुद्ध नसल-सुधारके द्वारा किया गया था। महाराष्ट्र सरकारकी ओरसे चलाये जानेवाले गवलाऊके फार्मसे भा गापुरीके परिणाम अच्छे थे। भारत सरकारकी टीम भी आयी थी, उसने भी यहॉके सिलेक्टिव्ह ब्रीडक कार्यक्रमको बहुत ही सराहा था। बादमे परिस्थिति बदली, व्यवस्था भी बदली यह प्रयाग समाप्त हो गया। बीचम क्रॉस ब्रीडिगने जोर मारा सस्थाने क्रॉस ब्रीडिगको पूरी तरहस हटाकर शुद्ध गीर-नसलका सवर्धन चलाया।

गोसवर्धन—गोरस-भडार

गोसवर्धनके लिये गाशालाआका आजतक उपयोग हुआ। परतु आजकी स्थितिम गाशालाएँ चलाना बहुत ही कठिन हो गया है। पिछले ५० सालके अनुभवसे देखा गया है कि गोसवर्धन—गोरस-भडारकी योजना बहुत ही सफल रही है। सर्वप्रथम वर्धामे 'गारस-भडार' शुरू किया गया। एक लाखस भी कम आबादीका वर्धा एक छोटा-सा शहर है। यहाँ सर्वत्र भैसके दूधका बोलबाला रहा है। यहाँ शुरूम दस लीटर गायका शुद्ध दूध गॉधी-विनाबाके आश्रमाके लिये मिलना मुश्किल था। उस वर्धामे आज करीब ४०००-४,५०० लीटर दूध रोजाना आ रहा है, यह 'गोरस-भडार-योजना'का एक परिणाम ही है।

गारस-भडारक ग्राहकाक बीच एक बार सर्वे किया गया तो अधिकाश बहनाने बताया कि जबसे 'गोरस-भडार'का दूध लेने लगे हैं, तबसे बाल-बच्चाका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा है। एक बहनने तो भरी सभाम कहा—'मेरे बच्चेको जो इनाम दिया जा रहा है, वह 'गोरस-भडार'को दिया जाना चाहिय। वर्धाम 'गारस-भडार'का दूध पीता है ता बच्चा स्वस्थ रहता है और छुट्टियाम बाहर जानेपर वह कमजोर हो जाता है।'

'गोरस-भडार'का दूसरा प्रयोग राजस्थान 'गासेवा-सघ'ने जयपुरम किया। इस क्षेत्रमे ७५ प्रतिशत भैंस और २५ प्रतिशत गाय थी। आज इस क्षेत्रमे ७५ प्रतिशत हरियाना गाय हो गयी है और भैस कम बची हैं। इस क्षेत्रमे अच्छे-से-अच्छ सॉड रखकर गो-नसलाका सुधार भी हुआ है, हरे चारेकी खती भी बढी है। यहॉके किसान इस योजनासे प्रसन्न हैं। रोजाना लगभग ५ हजार लीटर दूध 'जयपुर-भडार' म आता है।

—ये दोनो *'गोरस-भडार'* काफी पुराने ३०—४० सालसे भी पुराने हैं। हालहीम ३ साल पहले 'रामेश्वर-गोशाला-वाराणसी'क सहयोगसे आर 'कृषि-गासेवा-सघ'की प्रेरणासे 'सुरभि-शाध-सस्थान-वाराणसी'ने 'गोरस-भडार'की याजना शुरू की। इस समय प्रतिदिन तीन हजार लीटर दूध 'गोरस-भडार'मे आ रहा है। १६५ गापालक हैं एव लगभग १,३०० गायाका पालन-पोषण होता है। दूध देनेवाले गोपालक खुश हैं। यदि काशी नगरीम गाके दूधकी मॉग बढे तो प्रतिदिन १० हजार लीटर गोदुग्ध आसानीसे उपलब्ध कराया जा सकता है। काशी-क्षेत्रमे सताको ओर गोप्रमियाको सोचना है कि अपने घराम, मठ-मन्दिराम गोदुग्ध ही ल। काशी-क्षेत्रम गोदुग्धकी खपत बढी तो काशीक चारा ओर गाकुल-ही-गोकुल खडे हो सकते हैं।

'गोरस-भडार'की विशषता इतनी हा है कि ग्राहकसे जिस भावके पेसे मिल, उनमेसे भडारका खर्च कम-से-कम लकर अधिक-स-अधिक भाव गोपालकाको दिया

जाय। गोपालकोसे दूध व्यापारी भी खरीदते है और शहरम बेचते ह। सरकारी डेयरी भी खरीदती है और बेचती है, परतु ये दोनो एजेन्सियाँ व्यवस्था-खर्च बहुत अधिक रख लेती हैं, ग्वालाको कम-से-कम दाम मिलते हैं। गोपालकोको अधिक-से-अधिक देना एव व्यवस्था-खर्च कम-से-कम रखना यही सच्ची सेवा है। गोशालाओके मुकाबले ग्वालाके पास गाये अच्छी हालतमे रहती हैं। गायोकी देखभाल घरवाले प्रेमसे करते हैं। गाँवोमे गाये कम खर्चमे पलती हैं। धूपमे घूमनेवाली गाँवकी गायोका दूध भी स्वास्थ्यकर होता है। उनके गोबर-गोमूत्रका उपयोग खेतीम खादके रूपमे उत्तम होता है। कुल मिलाकर भारतमे गोसवर्धन गोपालनके लिये 'गोरस-भडार'की योजना ही आजके समयम सर्वोत्तम है, बशर्ते कि 'गोरस-भडार' चलानेवाले सेवाभावी हो और व्यवस्था-खर्च कम-से-कम ले।

इदोर कस्तूरबा ग्रामकी गोशाला नमूनेकी गोशाला है। वहाँ गीर-नसलकी गायोपर नसल-सुधारका काम हुआ है। यहाँका अनुभव है कि गीर-नसल भारतके लिये सर्वोत्तम नसल है। इसम क्रॉस-ब्रीडके मुकाबले दूध देनेकी शक्ति कम नहीं बल्कि अधिक ही है। इसके बैल भी उत्तम होते हैं। दूध भी अच्छा होता है। इसमे क्रॉस-ब्रीडकी तरह बीमारियाँ भी नहीं होतीं। क्रॉस-ब्रीडके बैल कडी धूपमे काम नहीं कर सकते, गीरके बैल कडी धूपम भी काम कर सकते हैं। सब दृष्टिसे गीर-नसल उत्तम है। वहाँ गोबर-गैस-प्लाटका सफल प्रयोग चला है।

गोसदन-पिजरापोल

अनुभवसे यह देखा गया है कि आजके समयमे दूधके लिये गोशाला चलाना व्यावहारिक नहीं है। व्यवस्था-खर्च, सेवकोका खर्च भारी पड जाता है। दूधके लिये गाये उसीको रखनी चाहिये जो स्वय भी सेवा करे और उसके घरवाले भी सेवा कर सके। सेवकोके भरोसे गोसेवा सम्भव नहीं। गोशालाओका जन्म दूधकी पूर्तिके लिये नहीं हुआ है। दूधके लिये तो घर-घरम गाय रखनेका रिवाज था। दूध न देनेवाली या लूली-लँगडी जिनको कोई न सँभाले, ऐसी असहाय गायोके लिये गोशालाओ-पिजरापोलोकी स्थापना हुई थी। आज भी गोशालाओकी आवश्यकता गोसदनकी गायोके लिये ही है। गोरक्षाके निमित्त शहरोम 'लागबाग-बित्ती' आदिके रूपमे व्यापारपर जो धर्मादा निकाला जाता था, उसीपर गोशाला-पिजरापोल चलते थे। इन पिजरापोलोके कारण शहरम आवारा गायोका घूमना बद हो जाता था। आज पिजरापोलोकी शक्ति बहुत कम रह गयी है। असहाय गायोको सँभालना उनके बूतेके बाहर है।

बिना दूधवाली लूली, लँगडी, बूढी और असहाय गायोको बचानेकी बहुत बडी समस्या थी, उसको हल करनेका उपाय भगवान्‌ने सुझाया। रासायनिक खाद एव कीटनाशकोसे भूमिकी उपजाऊ शक्ति खराब होने लगी, अनाज, साग-सब्जी आदि खाद्य-पदार्थोमे जहर आने लगा, इस बातको गवेषकोने उजागर किया, तब गोबर-गोमूत्रके कम्पोस्ट खादकी ओर देशका ध्यान जाने लगा। यवतमाल पुसदके श्रीपाँढरी पाडेने नेडपके नामसे गोबरके कम्पोस्ट खादका बहुत बडा सफल प्रयोग किया है। अन्यत्र भी गोबर-गोमूत्रके खादके प्रयोग चालू हो गये हैं। दिन-दिन स्पष्ट होता जा रहा है कि गोबर-गोमूत्रका मूल्य गायकी खुराकसे बहुत अधिक है। इससे असहाय गायोकी रक्षाका बहुत बडा रास्ता मिल रहा है। शास्त्रोमे गोबरमे लक्ष्मीका वास बतलाया गया है, यह बात अब प्रयोगोसे स्पष्ट होने लगी है। आज गवेषक कहने लगे हैं कि दूधसे भी अधिक मूल्य गोबर-गोमूत्रका है। इस तथ्यको जब किसान अच्छी तरह समझेगा और अपनी भूमिकी उपजाऊ शक्तिको बचानेके लिये कम्पोस्ट खादका उपयोग करेगा तो उस समय उसकी बूढी गाय भी उपयोगी हो जायँगी। तब फिर कोई गाय असहाय नहीं रहेगी।

पर्यावरण-विशेषज्ञोने भी रासायनिक खाद एव कीटनाशकोका पूरा विरोध किया है। इससे भूमिमे विष जाता है और वह फसलमे आता है। पानीमे विष मिल जाता है, वह भूमिमे भी जाता है और नदियोम भी जाता है। इस विषके कारण चारो ओर जहर-ही-जहर फैल रहा है, मनुष्य-जीवन खतरेमे आ गया है। पर्यावरण-शुद्धिके लिये भी गोबर-गोमूत्र अत्यन्त लाभदायी माने गये हैं।

एक्सल इडस्ट्रीने बबईके कचरेके ढेरको कम्पोस्ट खादके रूपमे बदलनेका भारी पराक्रम किया है। कचरेका ढेर जो सड रहा था, उसपर पाइपसे गोबरका पानी छिडककर सडनेवाले ढेरोको कम्पोस्ट खाद बना दिया, उनकी सारी सडान चली गयी। बबईम रोजाना १०० टन कम्पोस्ट खाद

यात्रा' भी की गयी।

'गोवश-हत्या-बदी'का केन्द्रीय कानून बने इसके प्रयास बराबर चालू रहे हैं। इस सम्बन्धम तत्कालीन सरकारका भी पूरा सहयोग रहा। फलस्वरूप मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और उत्तरप्रदेश—इन चारो प्रदेशोम 'गोवश-हत्या-बदी'के कानून बना दिये गये थे, कितु उत्तरप्रदेशके 'गोवश-हत्या-बदी कानून' पर राष्ट्रपतिके हस्ताक्षर नहीं हुए, इस कारण वह निरस्त हो गया। लगभग यही स्थिति आज भी है।

गुजरात सरकारने हिम्मतसे 'गोवश-हत्या' बद कर दी, उसपर अमल भी कर रही है कितु महाराष्ट्र सरकार बद करेगी ऐसी कम उम्मीद हे। आज १२ सालसे बबईके 'देवनार क़तल खाने'पर अखण्ड सत्याग्रह चल रहा है। महाराष्ट्र सरकारका कानून है उपयागी बैलाका कतल न हो, इसके बावजूद ७५-८० प्रतिशत उपयोगी बेल कट रहे हैं। सरकारके नीचेसे ऊपरतकक सभी अधिकारी और मन्त्री इस बातसे परिचित हैं कि उपयोगी बैल कट रहे हैं। परतु नीयत साफ नहीं है। सारे महाराष्ट्रमे गायाकी बेकानूनी कतल चालू है। नीयत साफ होती तो बेकानूनी कतल बद हो ही सकती थी।

अभीतकके सारे प्रयास 'गावश-हत्या-बदी'का केन्द्रीय कानून बने इसके लिये किये गये 'रोको भाई रोको' आन्दोलन भी गाय-बैलाको कतलसे बचानेके लिये ही किया गया। परतु अनुभवने बताया कि कतलसे बचायी गयी गायाको कहाँ रख, यह सवाल रहा। मालेगाँवके आसपासके किसानोमे 'गोसेवा-सघ'के प्रयाससे काफी गाये बाँटी गयीं। जैन-समाजम जेन-मुनियाने इस कामम दिल खालकर मदद दी इस कारण अनेक स्थानापर क़तलसे बचायी गयी गायाको रखा गया।

क़तलके लिये कलकत्ता जानेवाली गायोका रोकनेका बहुत बडा प्रयास मुगलसराय स्टेशनपर 'कृपि-गोसवा-सघ'की ओरसे किया गया। कई गोभक्तोने बहुत मेहनत करके गायासे लदी अनेक गाडियाँ रोकीं। गायाको कहाँ रखा जाय यह सवाल था। वाराणसीकी 'रामश्वर-गोशाला'ने क़तलसे बचायी गयी गायाको 'रामेश्वर-गोशाला'म रखना शुरू किया। उस क्षेत्रम २०-२५ हजार गायाको किसानाम बाँटा होगा। आज भी लगभग १,००० गाय गोशालाके पास होगी। इन्ही गायाके सवर्धनसे इस गोशालाम प्रतिदिन ७०० लीटर दूध हो रहा है। नसल-सुधारका काम हुआ है, खेती-सुधारका काम हुआ है, स्थानीय लागाक प्रयाससे यह एक आदर्श नमूनेकी गाशाला हो गयी है।

रोजी-रोटी-अभियान

अनुभवने सिखाया कि कतलसे बचायी हुई गायाको गाँवोम ही किसानाके पास रखनका प्रयास होगा, तभी गाय बचगी। किसानको लगना चाहिये कि गाय-बैल बाझ नहीं हैं बल्कि आमदनीक—राजी-राटीके साधन हैं। गाँवाकी अर्थव्यवस्था गाय-बेलपर आधारित है। ट्रेक्टरक इस युगम भी ७५ प्रतिशत खेती बेलासे होती हे कितु विडम्बना हे कि विदेशी ट्रैक्टर-क्रान्तिक कारण जा बैल किसानके लिये जीवनदाता थे वे ही अब भाररूप बन रहे हैं। गाँवामे बेलोके पास ४-६ महीनसे अधिक काम नहीं होता। ६ महीने बेकार बैलको खिलाना सम्भव नहीं, इसलिये किसान बेच दता है। गायाकी भी यही हालत है। परतु गाबर-गोमूत्रके कम्पोस्ट खादका महत्त्व ज्या-ज्या बढेगा, त्या-त्या बूढी असहाय गायाका प्रश्न हल हो जायगा। दूधवाली गायाका प्रश्न 'गोरस-भडार'की योजनासे एव ग्राम-स्वावलम्बनसे हल हो सकता है।

पुन यह विचार स्थिर हुआ कि 'गावश-हत्या-बदी'का केन्द्रीय कानून अवश्य बने। रासायनिक खादापर सब्सीडी बद हो, दशी खादाका प्रचार हो गाँववाले गाय-बेलाको रखनेके लिये तेयार हा, परतु गाँवके लोग बेल आदिको तभी रखेगे जब वर्षभर उनसे लाभ मिलता रहे जब बैलाको सालभर काम नहीं मिलेगा तो किसान बैल नहीं रख सकेगा। आज ३० कोटि जनता गरीबीकी रेखासे नीचे है, उसे भी तबतक राजी-रोटी नहीं मिलेगी, जबतक गाँवामे ग्रामोद्याग-रोजगारके अवसर खडे न हाग।

गारक्षा और मानव-रक्षा—इन दोनाकी दृष्टिसे हम तो आजकी परिस्थितिम यही एक मार्ग दीख रहा है—खादी ग्रामोद्योग और कृषि-गोपालन। इनपर राष्ट्र पूरी शक्ति लगायेगा तो हर हाथको काम हर पेटको राटी अवश्य मिलेगी। पर्यावरण-शुद्धिका भी बडा प्रश्न ह वह भी ग्रामाम ग्रामोद्याग बढनेस ही ठीक होगा।

गोरक्षा-आन्दोलनका संक्षिप्त इतिहास

(प्रो० श्रीबिहारीलालजी टाँटिया एम्०ए०)

गोवंश सदैवसे भारतीय धर्म, कर्म एवं संस्कृति-सभ्यताका मूलाधार रहा है। कृषि-प्रधान देश होनेसे गोवंश भारतीय अर्थ-व्यवस्थाका भी स्रोत रहा है। भारतीय स्वतन्त्रता-संग्रामके अमर सेनानियों—लोकमान्य बालगंगाधरजी तिलक, महामना मालवीय, गोखले प्रभृतिने यह स्पष्ट घोषणा की थी कि 'स्वराज्य मिलते ही गोवध तुरंत बंद कर दिया जायगा।'

उपर्युक्त नेताओंकी घोषणाओंको ध्यानमें रखते हुए भारतीय जनताको आशा थी कि अंग्रेजी शासन चले जानेके साथ-ही-साथ गोहत्याका घोर कलंक भी इस देशसे मिट जायगा, किंतु वह आशा फलीभूत नहीं हुई। इसे राष्ट्रका दुर्भाग्य ही कहा जायगा।

गोरक्षार्थ धर्मयुद्धका सूत्रपात

धर्मप्राण भारतके हृदय-सम्राट् ब्रह्मलीन अनन्तश्री स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजद्वारा संवत् २००१ में संस्थापित 'अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ'ने अपने जन्मकालसे ही माँ भारतीके प्रतीक गोवंशकी रक्षा, पालन, पूजा एवं संवर्धनको अपने प्रमुख उद्देश्यमें स्थान दिया था।

सन् १९४६ मे देशमें कांग्रेसकी अन्तरिम सरकार बनी। भारतीय जनताने अपनी सरकारसे गोहत्याके कलंकको देशके मस्तकसे मिटानेकी माँग की। किंतु सत्ताधारी नेताओंने पूर्व घोषणाओंकी उपेक्षा कर धर्मप्राण भारतकी इस माँगको ठुकरा दिया।

सरकारकी इस उपेक्षा-वृत्तिसे देशके गोभक्त नेता एवं जागरूक जनता चिन्तित हो उठी। उन्हें इसमें गहरा आघात लगा। सन् १९४६ के दिसम्बर मासमें देशके प्रमुख नगर बंबईमें 'श्रीलक्षचण्डी-महायज्ञ' के साथ ही 'अखिल भारतीय धर्मसंघ'के तत्त्वावधानमें आयोजित 'विराट् गोरक्षा-सम्मेलन' में स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने राष्ट्रके धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक नेताओं एवं धर्मप्राण जनताका आह्वान किया। देशके सर्वोच्च धर्मपीठोंके जगद्गुरु शंकराचार्य, संत-महात्मा, विद्वान्, राजा-महाराजा एवं सद्गृहस्थोंने राष्ट्रके समक्ष उपस्थित इस समस्यापर गम्भीर विचार-मन्थन किया। और सम्मेलनके सर्वसम्मत निश्चयकी घोषणा की गयी—'सरकारसे यह सम्मेलन अनुरोध करता है कि राष्ट्रके सर्वविध कल्याणको ध्यानमें रखते हुए भारतीय धर्म और संस्कृतिके प्रतीक गोवंशकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगा दे। कदाचित् सरकारने अक्षय तृतीया २००३ तदनुसार २८ अप्रैल १९४७ तक सम्मेलनके अनुरोधपर ध्यान नहीं दिया तो 'अखिल भारतीय धर्मसंघ' देशकी राजधानी दिल्लीमें सम्पूर्ण गोहत्या-बंदीके लिये अहिंसात्मक सत्याग्रह प्रारम्भ कर देगा।'

उक्त घोषणाके पश्चात् शिष्टमण्डलों, गोरक्षा-सम्मेलनों, जन-सभाओं, हस्ताक्षर-आन्दोलनों एवं स्मरण-पत्रोंद्वारा सरकारके कर्णधारोंको गोहत्या-बंदीकी माँगका औचित्य एवं अनिवार्यता समझानेकी भरसक चेष्टा की गयी, किंतु सरकारके कानपर जूँ तक नहीं रेंगी।

धर्मसंघद्वारा गोरक्षार्थ धर्मयुद्धका शंखनाद

२८ अप्रैल १९४७ का दिन समीप आ पहुँचा। देशके गोभक्त नेता भारतकी राजधानी दिल्लीमें पुनः एकत्रित हुए। गम्भीर विचार-विमर्शके पश्चात् सर्वसम्मतिसे देशसे गोहत्याके कलंकको मिटानेके लिये अहिंसात्मक सत्याग्रहके श्रीगणेशका निश्चय हुआ। परम पूज्य श्रीस्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज (ब्रह्मलीन ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराज) को धर्मयुद्धका संचालन-सूत्र सौंपा गया। 'कल्याण' के सम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारने अर्थ-व्यवस्थाका भार सँभाला। धर्मसंघ-विद्यालय-निगम बोध घाट दिल्लीमें आन्दोलनको सफल बनानेके लिये देशके विभिन्न अञ्चलोंसे आये हुए विद्वानोंद्वारा लक्षचण्डी-यज्ञ सम्पन्न हुआ।

अक्षय तृतीयाके पावन पर्वपर प्रातःकाल ही अनन्तश्री स्वामी करपात्रीजी महाराजके नेतृत्वमें गोभक्त धर्मवीरोंने संविधान-निर्मातृ-परिषद्के भवनके समक्ष 'गोहत्या बंद हो' के गगन-भेदी नारोंके साथ सत्याग्रह किया। सरकारने सभी गोभक्त सत्याग्रहियोंसहित श्रीस्वामीजी महाराजको बंदी बनाकर पहले दिल्ली-जेल और पश्चात् केन्द्रीय जेल लाहौरमें स्थानान्तरित कर दिया। धार्मिक जगत्में एक हलचल-सी मच गयी। देशके कोने-कोनेसे धर्मवीरोंके जत्थे आने लगे और सत्याग्रह तीव्र गतिमें चल पड़ा।

देश-प्रसिद्ध विद्वान् महामहोपाध्याय पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, शास्त्रार्थ-महारथी पं० श्रीमाधवाचार्यजी शास्त्री

प० श्रीचन्द्रशेखरजी शास्त्री (पुरीपाठाधीश्वर जगद्गुरु निवृत्त-शकराचार्य, स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराज), श्री प० नन्दलालजी शास्त्री प० श्रीसूर्यनाथजी पाण्डय, श्रीसत्यव्रतजी ब्रह्मचारी श्रीस्वामी आत्मदेवाश्रमजी महाराज, भक्त रामशरणदास पिलखुवा प्रभृति विद्वाना एव महात्माआक अतिरिक्त विभिन्न सम्प्रदायोक आचार्यों साधु-सता एव सद्गृहस्थ महानुभावाने लगभग ५-६ सहस्रकी सख्याम जेल-यात्रा की। प० श्रीश्यामलालजी आचार्य प० श्राहीरालालजी शास्त्री प्रसिद्ध आर्यसमाजी नता ला० रामगापाल शालवाले एव हिन्दुसभाई नता प्रो० रामसिहन आन्दालनम सक्रिय याग दिया।

महात्माआका बलिदान

पूज्य श्रीस्वामी मुकुन्दाश्रमजी महाराज, श्रास्वामी कृष्णानन्द तीर्थजी महाराज एव गास्वामी लक्ष्मणाचार्यजी ता गारक्षार्थ अपने भौतिक शरीराका बलिदान कर गोलाकवासी हुए।

मथुराम सत्याग्रहका श्रीगणेश

दिल्लीम आन्दोलन तीव्र गतिसे चल रहा था देशके विभिन भागास गाभक्त धर्मवाराके जत्थे राजधानाम गिरफ्तार हो रह थे। इसी बीच भारत-विभाजनक फलस्वरूप दशमे साम्प्रदायिक विद्वषाग्नि भडक उठी। नित्य नये राष्ट्रघातक षड्यन्त्राका विस्फाट हाने लगा। राजधानी दिल्ली भी इन षड्यन्त्राका केन्द्र बन गयी। राष्ट्रिय सकटको दृष्टिम रखते हुए धर्मयुद्धके सचालकाने दिल्लाम आन्दालनका अस्थायी रूपस स्थगित कर गापाल कृष्णकी पवित्र भूमि व्रजम आन्दालनका चालू रखनेका निश्चय किया।

मथुराम धर्मयुद्धका शख बज उठा। निश्चित तिथिस पूर्व ही श्रास्वामी करपात्रीजी महाराज—जा अबतक लाहार-जलस मुक्त हो चुक थ—का बदी बनाकर पहल मथुरा जेल और तदनन्तर आगरा जलमे बद कर दिया गया। सत्याग्रह तीव्र गतिसे चलता रहा। मथुरा नगर-परिषद्ने अपनी सीमामे 'गाहत्या-बदी का प्रस्ताव पारित किया। फिर ता एकक बाद एक अनक नगर-पालिकाआ नगर-परिषदा नगर-निगमा एव जिला-परिषदाने 'गाहत्या-बदी' के प्रस्ताव पारित किय। फलस्वरूप व्रजभूमिके चौदह बूचडखान बद हा गये।

मथुरा आदालनम चित्रकूटक पूज्य स्वामी अखण्डानन्दजी महाराजके शिष्या एव हाँसी-निवासी प० चेतन्यदवजी शास्त्रीका सतत यागदान विशेष रूपसे उल्लेखनाय है।

इन आन्दालनास राष्ट्र-व्यापी जन-जागरण हुआ। दशक कान-कानस 'गाहत्या-बदी'की माँग उठने लगी। सरकारसे बराबर पत्रा तारा प्रस्तावा, जन-सभाआ एव शिष्ट मण्डलाद्वारा अनुराध किया जाता रहा कि यह जनताकी भावनाआका सम्मान करते हुए भारत राष्ट्रकी प्रतीक गौ माताकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगाये। फलस्वरूप सविधान-निर्मातृ-परिषद्ने भारतीय सविधानके अध्याय ४ अनुच्छेद ४८ मे 'आधुनिक एव वैज्ञानिक पद्धतिपर कृषि एव पशु-धनकी व्यवस्थाके लिये प्रयत्न करने, विशेषत पशु-धनकी नस्लाकी रक्षा और सुधारके लिये पग उठाने तथा गौआ बछडे-बछडियाँ एव अन्य दुधारु पशुआकी हत्यापर कानूनी प्रतिबन्ध लगानेका भारत सरकारके प्रति नाति-निर्देश (Directive Principle) सर्वसम्मतिसे स्वीकार किया।'

१९ नवम्बर १९४७ को भारत सरकारने गारक्षण और गापालनके सम्बन्धमे विचार कर अपनी सम्मति देनेके लिये सरदार दातारसिहकी अध्यक्षताम एक 'पशुरक्षण और सवर्धन कमेटी' बनायी। समितिने ६ नवम्बर १९४९ को अपनी रिपार्ट सरकारके समक्ष प्रस्तुत की। रिपार्टमे गोहत्या-बदी एव गौ-सरक्षणके सम्बन्धमे कतिपय महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये गये थे किंतु सरकारने कमेटीके सुझावाको आशिक रूपमे ही स्वीकार किया और उन्हे भी पूर्ण रूपसे कार्यान्वित नहीं किया।

इसी बीच हमारे पडोसी देशा—लका और बर्माकी सरकाराने अपने यहाँ गाहत्यापर प्रतिबन्ध लगाये। पाकिस्तानमे भी कराचाम दूध देनेवाले पशुआकी हत्यापर रोक लगायी गयी।

'अखिल भारतीय रामराज्य-परिषद्' द्वारा आन्दोलन

सन् १९४९-५०मे 'अखिल भारतीय रामराज्य-परिषद् ने दिल्लाम गाहत्याके कलकको मिटानेके लिये सक्रिय सत्याग्रह-आन्दालन किया। श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराजके नतृत्वमे राजस्थानके वीर राजपूतोने लगभग बीस सहस्रकी सख्यामे जल-यात्रा की। राजा दुर्जनसिह जावली ठाकुर मदनसिह दाता श्रीमाहनसिह भाटी श्रीरघुवीरसिह जावलीने आन्दोलनके सचालनमे प्रमुख रूपसे भाग लिया। आन्दोलनको सफल बनानेमे सर्वश्री प० नन्दलालजी शास्त्री प० चन्द्रशेखरजी शास्त्री एव प्रसिद्ध हिन्दू-नेता सेठ सीतारामजी खेमकाने भी महत्त्वपूर्ण यागदान किया।

'राष्ट्रिय स्वय सेवक-सघ' द्वारा हस्ताक्षर-आन्दोलन

सन् १९५२ मे राष्ट्रिय स्वय सेवक सघ'ने देशके लगभग दा कराड लोगाके हस्ताक्षर कराकर देशमे सम्पूर्ण गौ-वशकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगानेकी माँग की। सघके

सरसंघचालक श्रीमाधवराव सदाशिव गोलवलकरजी (गुरुजी)ने स्वयं इन हस्ताक्षरोंके साथ आवेदन-पत्र राष्ट्रपति डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसादजीको भेंट किया। परंतु प्रधान मन्त्रीजीने इसकी कोई परवाह नहीं की।

प्रयागमें गोरक्षा-सम्मेलन

सन् १९५४ में प्रयाग-कुम्भके पावन पर्वपर एक विराट् 'गोरक्षा-सम्मेलन'का आयोजन किया गया। इस सम्मेलनमें पूज्य श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीसहित लाला हरदेवसहायजी भी उपस्थित थे। इससे पूर्व लालाजी एवं बाबा राघवदास प्रभृति महानुभाव गोरक्षार्थ सक्रिय आन्दोलनको अनावश्यक मानते थे। उनकी धारणा थी कि कांग्रेस सरकार स्वयमेव अथवा समझाने-बुझानेसे राष्ट्रके इस कलंकको दूर कर देगी, किंतु इस सम्मेलनके मंचसे प्रथम बार उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि 'सरकारसे बातचीतद्वारा गोरक्षाकी माँग मनवानेमें मैं पूर्णतया निराश हो चुका हूँ। अब मुझे निश्चित विश्वास हो गया है कि मैं अबतक भ्रममें था। कांग्रेस सरकार बिना राष्ट्रव्यापी उग्र आन्दोलनके गोहत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध नहीं लगायेगी।' आपने विशाल जन-समूहके समक्ष अपने सिरसे पगडी उतारकर फेंक दी थी और शपथ ली कि 'जबतक देशसे गोहत्याका पाप नहीं मिटेगा मैं पुनः पगडी धारण नहीं करूँगा।' आपने आजीवन इस शपथका निर्वाह किया।

'गोहत्या-निरोध-समिति'का संगठन एवं आन्दोलन

पूज्य ब्रह्मचारी श्रीप्रभुदत्तजीके सहयोगसे लाला हरदेव-सहायजीने प्रयागमें ही 'गोरक्षा-सम्मेलन'का आयोजन किया, जिसमें देशमें 'गोहत्या-निषेध'के लिये आन्दोलन चलाने-हेतु 'गोहत्या-निरोध-समिति'का गठन किया गया। लाला हरदेवसहायजी इस समितिके प्रधान मन्त्री तथा श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी अध्यक्ष चुने गये।

समितिके निश्चयानुसार दोनों नेताओंने पटना और लखनऊमें गोरक्षार्थ सत्याग्रह किये। बिहार सरकारने 'गोहत्या-बंदी कानून' बनाना स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात् लखनऊमें भी सत्याग्रह आरम्भ किया गया। पूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज भी इस अवसरपर आन्दोलनमें सक्रिय भाग लेने पहुँचे। सरकारने आपको बंदी नहीं बनाया। स्व० श्रीगोविन्दवल्लभ पन्तने राज्य-मन्त्रिमण्डलकी ओरसे आपको सादर आमन्त्रित किया और आश्वासन दिया कि डॉ० सीतारामकी अध्यक्षतामें नियुक्त कमेटीकी रिपोर्ट मिलते ही उत्तरप्रदेशमें 'गोहत्या-बंदी कानून' बना दिया जायगा। इस प्रकार उत्तरप्रदेश और बिहारमें 'गोहत्याबंदी-कानून' बने।

भारत-गोसेवक-समाजद्वारा प्रयास

सन् १९४८ में 'बंबई जीवदया-मण्डल' के प्रयत्नसे स्थापित 'भारत-गोसेवक-समाज' ने गोहत्या-निषेधके लिये विशेष प्रयास किया। सेठ गोविन्ददासजी इसके अध्यक्ष एवं लाला हरदेवसहायजी तथा श्रीजयन्तीलाल मान्कर दोनों मन्त्री थे।

गोहत्या-बंदीके लिये राष्ट्रव्यापी आन्दोलन

सन् १९५४-५५ में देशकी गोभक्त-संस्थाओं एवं नेताओंके सहयोगसे गोरक्षार्थ राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलानेके लिये भगवती भागीरथीके अंचल कानपुरमें 'धर्म-संघ' और 'ब्रह्ममण्डल' की ओरसे लक्षचण्डी-यज्ञका आयोजन हुआ। दक्षिणा-निरपेक्ष होकर विद्वान् ब्राह्मण उस यज्ञमें सम्मिलित हुए और 'अखिल भारतीय गोरक्षार्थ अहिंसात्मक धर्म-युद्ध-समिति' का गठन किया गया। प्रसिद्ध गोभक्त सेठ चिरंजीलालजी लोयलका इसके अध्यक्ष एवं देशविख्यात हिन्दू-नेता सेठ सीतारामजी खेमका प्रधान मन्त्री चुने गये।

देशके चार प्रमुख नगरों—कलकत्ता, बंबई, अहमदाबाद एवं राजधानी दिल्लीमें उक्त समितिके आह्वानपर 'गोहत्या-बंदी' की माँगको लेकर जोरदार आन्दोलन चलाये गये। चारों स्थानोंपर लगभग ६० हजारसे अधिक गोभक्त धर्मवीरों एवं वीराङ्गनाओंने जेल-यात्रा की।

कलकत्तेके मोर्चेपर परमपूज्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्दजी सरस्वती, गोभक्त सर्वश्री सेठ सोहनलालजी दुग्गड समितिके प्रधान एवं पं० सूर्यनाथजी पाण्डेय मन्त्री और सेठ सीतारामजी खेमका आदि प्रमुख संचालकोंमें थे। आन्दोलन इतना तीव्र हुआ कि जब सेठ सोहनलालजी दुग्गडके नेतृत्वमें सत्याग्रही वीरोंका जत्था विधान-सभा-भवनकी ओर जा रहा था तो जनताकी अपार भीडने उनका अनुगमन किया। सरकारने शान्तिमय धर्मवीरोंकी भीडको रोकनेके लिये जनतापर घुडसवार पुलिसको आगे बढनेका आदेश दिया। फलस्वरूप घोडोंके टापोंके नीचे आकर अनेक धर्मवीर आहत हो गये और धर्मवीर श्रीजसकरण भूराका बलिदान हुआ।

आन्दोलनका उग्र रूप देखकर पश्चिम बंगालकी सरकारने सत्याग्रहमें भाग लेनेवाले प्रायः सभी गोभक्तोंको चुन-चुनकर गिरफ्तार कर लिया तथा आन्दोलनके कार्यालय और अन्य स्थानोंपर छापे डाले गये एवं सम्पूर्ण कागजातोंको जब्त कर लिया गया। स्वामी श्रीकरपात्रीजी तथा अन्य सभी नेता जेलमें

कर दिये गये। समितिके प्रधान मन्त्री श्रीसीतारामजी खेमकाको सत्याग्रह-समितिने यह संदेश भेजा कि 'वे भूमिगत होकर आन्दोलनका संचालन करें अन्यथा गिरफ्तार हो जानेपर आन्दोलनको क्षति पहुँचनेकी आशंका है।' वे तत्काल साधुवेषमें भूमिगत हो गये और छः माहतक भूमिगत रहकर आन्दोलनका संचालन किया। इस बीच बंगालकी सरकारने उन्हें गिरफ्तार करनेका भरपूर प्रयत्न किया, पर वह सफल नहीं हो सकी।

आन्दोलनमें 'अखिल भारतीय हिन्दू महासभा' ने सक्रिय सहयोग दिया एवं प्रसिद्ध गोभक्त हिन्दू नेता श्रीरामचन्द्र वीरने ... दिनका अनशन-व्रत कर आन्दोलनको शक्ति प्रदान की।

बंबईका मोर्चा

यहाँका मोर्चा समितिके अध्यक्ष सर्वश्री सेठ चिरंजीलालजी बगलका बालाचार्य बरखंडकर मुकुन्दलालजी पित्ती एवं सन्त श्रीदीनबन्धुदासजीके नेतृत्वमें सफलतापूर्वक चला। स्थानीय 'महिला-संघ' की सदस्याओंने बड़ी संख्यामें सत्याग्रहमें भाग लेकर आन्दोलनको विशेष बल प्रदान किया। सभी वर्गोंके सहस्रों धर्मवीरोंने गोरक्षार्थ जेल-यात्राकर पुण्य-लाभ किया।

अहमदाबादमें जोरदार आन्दोलन

गुजरातके प्रसिद्ध कथाकार श्रीशम्भुजी महाराजने धर्मयुद्धका सफलतापूर्वक संचालन किया। गोभक्तोंके प्रबल उत्साहके कारण आन्दोलनने इतना प्रचण्ड रूप धारण किया कि गुजरात सरकारको बाध्य होकर 'गोहत्या-बंदी-कानून' बनाना पड़ा।

राजधानी दिल्लीका मोर्चा

राजधानी दिल्लीमें धर्मयुद्धका संचालन-सूत्र तरुण तपस्वी पूज्य स्वामी श्रीपरमानन्द सरस्वतीजी एम्०ए० महाराजको सौंपा गया। आपके संचालनमें धर्मयुद्ध तीव्रगतिसे चला। इस मोर्चेपर भी सहस्रोंकी संख्यामें गोभक्त स्त्री-पुरुषोंने गोमाताकी रक्षाके लिये हँसते-हँसते जेलकी यातनाएँ सहन कीं।

चारों ही मोर्चोंपर समय-समयपर पहुँचकर परमपूज्य स्वामी करपात्रीजी महाराज एवं समितिके प्रधान मन्त्री सेठ सीतारामजी खेमकाने स्वयंको भी गिरफ्तारीके लिये समर्पित किया। यह राष्ट्रव्यापी आन्दोलन लगातार पौने दो वर्षतक चलता रहा। इतनी लम्बी अवधिमें एक भी दिन ऐसा नहीं गया जबकि चारोंमेंसे किसी भी मोर्चेपर सत्याग्रहके लिये धर्मवीरोंके जत्थोंने गिरफ्तारीके लिये समर्पण न किया हो।

इस राष्ट्रव्यापी आन्दोलनसे बाध्य होकर यद्यपि विभिन्न प्रदेशोंकी सरकारोंने अपने यहाँ 'गोहत्या-बंदी'-कानून बनाये, किंतु ये सभी अधूरे थे। अतः इनसे अभीष्ट लक्ष्यकी प्राप्ति नहीं हो सकी।

भारत सरकारके कतिपय कर्णधारोंकी भावना शुद्ध न होनेके कारण गोहत्याका घोर कलंक भारत देशमें बना ही नहीं रहा, प्रत्युत विदेशी शासन-कालकी अपेक्षा कई गुना अधिक बढ़ गया। मजहबी पर्वों, औषध-निर्माण और चिकित्साके नामपर गोहत्या चालू रखनेका दुराग्रह किया गया। तदनन्तर अन्नकी कमीकी पूर्तिके नामपर जनतामें मांस-भक्षणकी प्रवृत्ति बढ़ाने तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त करनेके लिये गोमांस, चर्म, अस्थि, आन्त्र, चर्बीके निर्यातकी वृद्धि करनेके लिये भारतके चार प्रमुख नगरों—बंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्लीमें विशाल यान्त्रिक बूचड़खाने खोलनेका निश्चय कांग्रेस सरकारने किया। एतदर्थ बंबई एवं कलकत्तामें तो विशाल भूभाग भी सरकारद्वारा अधिकृत किये गये। कलकत्तामें गोभक्तोंके प्रयाससे, कृषकों एवं जनसामान्यके विरोधपर कलकत्ता उच्च न्यायालयने सरकारद्वारा भूमि-अधिकरणको इस तर्कके आधारपर अवैध घोषित कर दिया कि गोमांस, अस्थि आदि विक्रय जनसामान्य-हितका कार्य नहीं है। अतः सरकारद्वारा व्यक्तिगत भूमि हस्तगत नहीं की जा सकती। परंतु बंबईमें देवनार नामके स्थानपर वृहद् भूभाग अधिकृत करके एक वृहद् यान्त्रिक बूचड़खानेके निर्माणकी योजना बनी।

'अखिल भारतीय गोरक्षा-अभियान' का सूत्रपात

भारत सरकारकी उपर्युक्त गोहत्याको निरन्तर प्रोत्साहन देनेकी प्रवृत्तिको दृष्टिगत रखते हुए पूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने एक बार पुनः संवत् २०१९ अप्रैल सन् १९६२ में हरिद्वार कुम्भके पावन पर्वपर देशके गोभक्त नेताओं एवं जनसाधारणका आह्वान किया। 'अखिल भारतीय धर्मसंघ' के तत्त्वावधानमें एक विशाल 'गोरक्षा-सम्मेलन' हुआ। समस्त भारतके प्रतिष्ठित आचार्य, महात्मा, विद्वान् तथा सद्गृहस्थोंकी उपस्थितिमें सम्पूर्ण देशसे गोहत्याके घोर कलंकको मिटानेके संकल्पसे श्रीस्वामीजी महाराजने 'अखिल भारतीय गोरक्षा-अभियान'का सूत्रपात किया। प्रसिद्ध गोभक्त स्व० लाला हरदेवसहायजीने सर्वप्रथम अभियानमें सम्मिलित होनेकी घोषणा की। 'हिन्दू महासभा' के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत प० रामनाथजी कालियाको उक्त अभियानका संविधान बनानेका भार सौंपा गया। ११ मई १९६२ को अभियानके व्यवस्थित संचालनके लिये एक 'केन्द्रीय संयोजन-समिति' का गठन किया गया जिसमें प्रसिद्ध गोभक्त श्रीसीतारामजी खेमकाको अभियान-

समितिका प्रधान मन्त्री नियुक्त किया गया। समितिने विजयादशमीसे समस्त भारतमे जनजागरणके लिये अभियान प्रारम्भ करनेका निश्चय किया।

विजयादशमी १८ अक्टूबर १९६२ को उक्त निश्चयानुसार विदर्भके प्रमुख नगर आकोलासे विधिवत् गोपूजनके पश्चात् अपार जनसमूहके गगनभेदी जयघोषो एव हरिसकीर्तनके बीच 'गोरक्षा-अभियान' ने बबईमे बनने जा रहे देवनारके विशाल बूचडखानेको रोकनेके लिये प्रस्थान किया।

मार्गके नगरो एव गाँवोमे जन-जागरण करता हुआ अभियान २३ अक्टूबर १९६२ को बबई पहुँचा। नगरके विभिन्न भागोमे जोरदार जनसभाएँ करके उक्त बूचडखानेकी योजनाको रद्द करवानेके लिये जनमत जाग्रत् किया जाने लगा। दुर्भाग्यवश इसी समय चीनी सेनाओंने देशकी उत्तरी सीमापर आक्रमण कर दिया। भारतके स्वाभिमानपर यह दुःखद आघात था। गोरक्षा-अभियानको अब राष्ट्र-रक्षा-अभियानके रूपमें परिवर्तित करना अनिवार्य हो गया। यह विचार कर कि भारतीय नेताओसे तो देर-सबेर गोरक्षाकी आशा की जा सकती है, किंतु यदि दुर्भाग्यसे देश पुनः ऐसे विदेशियोके हाथो पड गया तो गोरक्षा एक स्वप्न बनकर रह जायगा। अतः पं० नेहरूकी अपीलपर गोरक्षा-अभियानको स्थगित कर राष्ट्र-रक्षार्थ जन-जागरणका कार्य प्रारम्भ किया गया।

वृन्दावनमे गोरक्षा-सम्मेलन

श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीके सबल सहयोगसे 'भारत गोसेवक-समाज' ने अगस्त १९६४ मे 'अखिल भारतीय गोरक्षा-सम्मेलन' का वृन्दावनमे आयोजन किया। सेठ गजाधरजी सोमानी सम्मेलनके सभापति थे। सम्मेलनका उद्घाटन 'राष्ट्रिय स्वय सेवक सघ'के (गुरुजी) श्रीगोलवलकरजीने किया। इस सम्मेलनने सरकारको चेतावनी दी कि यदि गोपाष्टमी सवत् २०२२ तक देशमे सम्पूर्ण गोवशकी हत्या बद न की गयी तो इसके लिये शान्तिमय आन्दोलन किया जायगा।

एक उच्चस्तरीय शिष्टमण्डलने २२ फरवरी १९६५ को उक्त माँग सरकारके समक्ष रखी। शिष्टमण्डलने प्रधान मन्त्री स्व० लालबहादुरजी शास्त्रीसे भेट की। राष्ट्रपति तथा खाद्यमन्त्रीसे भी भेट की गयी, किंतु कोई ठोस परिणाम नहीं निकला।

स्व० लालबहादुरजी शास्त्रीसे जगद्गुरु शकराचार्योकी भेट

'अखिल भारतीय धर्मसघ' के मेरठ महाधिवेशनके अवसरपर आयोजित 'गोरक्षा-सम्मेलन' के निश्चयानुसार २४ मार्च १९६५ को जगद्गुरु शकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज एव गोवर्धनपीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी निरजनदेव तीर्थके नेतृत्वमे एक सम्भ्रान्त शिष्टमण्डल प्रधान मन्त्री स्व० लालबहादुर शास्त्रीसे मिला। शिष्टमण्डलने सम्पूर्ण भारतमे अविलम्ब 'गोवश-वध-निषेध'के कानूनकी माँग करते हुए, विशेषतः बबईके देवनार और कलकत्ताके दानकुनी बूचडखानाके निर्माणको अविलम्ब रोकनेके लिये आग्रह किया।

शिष्टमण्डलने आवश्यकता पडनेपर 'गोहत्या-बदी' से होनेवाली सरकारकी आर्थिक क्षतिकी पूर्ति करनेके लिये गोरक्षा-कर अथवा अन्य प्रकारसे सहायता देनेके लिये जनताको प्रेरित करनेके लिये अपना सहयोग प्रस्तुत किया।

प्रधान मन्त्रीने शिष्टमण्डलसे सहानुभूतिपूर्वक बातचीत की और उक्त दोनो बूचडखानो (कलकत्ता एव बबई) के निर्माणको तुरत रोक देनेका स्पष्ट आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त गोवशके उत्तरोत्तर तीव्र गतिसे हो रहे ह्रासको पूर्णतया कानूनके द्वारा बद करनेका प्रयास करनेका वचन भी दिया। इस अवसरपर गृहमन्त्री श्रीनन्दाजी उपस्थित थे।'

इसी बीच भारत-पाक-सघर्षका सकट राष्ट्रपर आया और समस्त देश एव सरकार सब कुछ भूलकर राष्ट्र-रक्षाके कार्यमे सलग्न हो गये। भगवत्कृपासे सघर्षमे हमारा राष्ट्र विजयी रहा, किंतु ताशकन्दमे श्रीशास्त्रीजीके आकस्मिक निधनके पश्चात् उनके द्वारा प्रदत्त आश्वासनोको सरकारने क्रियान्वित नहीं किया।

गोरक्षार्थ बलिदानी वीरोका आह्वान

सन् १९६६ में प्रयागमे माघमेलेके अवसरपर 'अखिल भारतीय धर्मसघ-शिविर' के विशाल प्राङ्गणमे 'गोरक्षा-सम्मेलन' का आयोजन किया गया। सम्मेलनमे जगद्गुरु शकराचार्य अनन्तश्री स्वामी निरजनदेव तीर्थजी महाराजने गोरक्षार्थ सत-महात्माओ एव धर्मप्राण जनताका आह्वान करते हुए कहा—'यदि हम वास्तवमे राम-कृष्णके सच्चे भक्त हैं और सच्चे साधु-महात्मा हैं तो हमे बडे-से-बडा बलिदान करके भी गोमाताकी रक्षा करनी चाहिये। *आपने स्पष्ट शब्दोमे कहा कि* '*सरकारके कर्णधारोसे* अनेक बार पत्र-व्यवहार करके तथा साक्षात् भेट करके हम इस परिणामपर पहुँचे हैं कि वर्तमान सरकार प्रस्तावोसे, भाषण देनेसे अथवा शिष्टमण्डलोद्वारा समझाने-बुझानेसे कदापि गोहत्या बद नहीं करेगी। गोमाताकी रक्षा तभी होगी जब हम लोग सच्चे

हृदयसे अपने प्राणाकी बाजी लगानका तैयार हाग। अन्तम आपन घाषणा की कि यदि बलिदानका अवसर आया ता गारक्षार्थ सर्वप्रथम हम अपना बलिदान दगे।'

ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य अनन्तश्री स्वामी कृष्णबाधाश्रमजी महाराजने भी गोरक्षाकी माँगक प्रति सरकारकी निरन्तर उपेक्षापर गहरा खेद प्रकट करते हुए जनताको एतदर्थ बलिदानके लिये तैयार हो जानको प्रेरित किया। इस प्रकार 'गारक्षा-आन्दोलन' को उग्र रूप देनेक सर्वसम्मत प्रस्तावक साथ गोभक्त नेताओने देशव्यापी प्रचार-यात्राके लिय प्रस्थान किया।

दिल्लीमे महात्माओद्वारा आन्दोलन

२८ मार्च १९६६ का महात्मा सियाराम श्रारामुनि तथा अन्य महात्माआने दिल्लीम ससद्-भवन तथा गृहमन्त्रीकी काठीपर गोरक्षार्थ अनशन आरम्भ किया आर २२ महात्मा गिरफ्तार कर लिय गये। जलम भी इन महात्माआने अनशन जारी रखा। इसक बाद एकक बाद एक साधुआके जत्थे अनशन आर धरना दत हुए गिरफ्तार होने लगे।

स्वामी ब्रह्मानन्दजी (राठवाला) ने १४ मईसे ५ सितम्बरतक गृहमन्त्री श्रीनन्दाजीकी काठीपर धरना दिया। आपके साथ ओर भी अनेक महात्मा धरना दते थे। धूप हवा लू ओर वर्षाकी चिन्ता किये बिना आपने धरना जारी रखा। ५ सितम्बरको १०० साधुओक साथ प्रधान मन्त्राकी काठीपर धरना देते हुए आपको बदी बना लिया गया आर १५ दिनका कारावास-दण्ड दिया गया।

२५ जुलाईसे स्वामी गवानन्द हरिने ३१ अन्य साधुओसहित लाकसभा-भवनपर धरना आरम्भ किया। २७ जुलाईको स्वामी ब्रह्मानन्दजीके शिष्य स्वामी निजानन्दजी त्यागी तथा स्वामी गुप्तानन्दजीके नतृत्वम करीब ५२ साधुआने प्रधान मन्त्रीकी कोठीपर धरना आरम्भ किया। स्वामी गवानन्द हरि अपने साथियासहित ३ अगस्तको गिरफ्तार कर लिय गय।

'सवदलीय गोरक्षा-महाभियान' का सूत्रपात

साधु-महात्माआने गारक्षार्थ आन्दालन प्रारम्भ कर दिया था। नित्य अनेक साधु-महात्मा बदी बनाय जा रहे थे। दशम जन-जागरण हा रहा था। विशपकर दिल्लीक गाभक्त कार्यकर्ता एव सस्थाएँ आन्दालनको व्यवस्थित सगठित एव प्रभावशाली रूप दनक प्रयासम सलग्न थी।

जेन मुनि श्रीसुशालकुमारजाक प्रात्साहनसे एक बैठक हुई जिसम श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी भारत-साधु-समाजक मन्त्री स्वामी आनन्द, सठ गाविन्ददास हिन्दू महासभाके नेता प्रो० रामसिह, आर्यसमाजा नेता ला० रामगापाल शालवाले, श्राविश्वम्भर प्रसाद शर्मा, प० मोलीचन्द्र शामा, स्वामा गवानन्द हरि आदि महानुभाव उपस्थित थे। सभाम निश्चय किया गया कि आन्दालनका प्रभावशाला रूप दनक लिय सभी गासेवी सस्थाआका एक सयुक्त मच स्थापित किया जाय। एतदर्थ श्रीप्रेमचन्द्रजी गुप्त सयाजक मनानीत किये गये। बैठकमें जगद्गुरुजी महाराजने स्पष्ट शब्दाम अपना निश्चय व्यक्त करते हुए कहा कि—

'यदि हम वास्तवम सच्चे हृदयसे गोहत्याका सकट मिटाना चाहते हैं ता सबस पहले आप स्वय ही 'गाहत्या' बद करानके लिये मदानम आओ। गोहत्या बद करानक लिये हम समस्त देशमसे कुल ५-६ व्यक्ति चाहिये और यदि व मैदानम आ जायँ आर गाहत्या बद करानके लिय उद्यत हो जायँ तो इसम तनिक भी सदेह नहीं कि गाहत्या निश्चय ही बद हो जायगी। इन ५-६ व्यक्तियाम हैं—एक जगद्गुरु शकराचार्य स्वामा श्रीकरपात्रीजी महाराज, राष्ट्रिय स्वय सेवक-सघके गुरु श्रीगालवलकरजी सनातन धर्म-प्रतिनिधि सभाक श्रीस्वामी गणेशानन्दजी महाराज, ब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी जैन-मुनि सुशालकुमारजी एव सत कृपालसिहजी। सबसे पहले मैं शकराचार्य स्वय अपना नाम देता हूँ। में सबसे पहले गोहत्या बद करानक लिये अपना बलिदान दूँगा और अपने प्राणात्सर्ग करूँगा ।' आपने आगे कहा कि 'यह बडी प्रसन्नताकी बात ह कि दो-तीन ऐसे महापुरुष हमारे साथी हम मिल गये हैं जो हमारे साथ गोहत्या बद करानेके लिये अपने प्राणोकी बाजी लगानेको तेयार हे। हम उन सबका नाम नहा बताना चाहते उनमेसे केवल एक महापुरुषका नाम बताते हैं वे हैं पूज्यपाद जगद्गुरु शकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्त श्रीस्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज।'

कुछ समय पश्चात् अनन्तश्री स्वामी श्रीकरपात्राजी महाराज हरिद्वार जाते हुए दिल्लीम रुके। 'गारक्षा-आन्दालन'-क सचालनम सलग्न कार्यकर्तागणा एव गासेवी सज्जनाने श्रीस्वामीजी महाराजसे 'गारक्षा-आन्दालन' का प्रबल बनानेक लिये मार्गदर्शनकी प्रार्थना की। महाराजश्रीने कहा कि 'यदि सभी गासेवी सस्थाएँ मिलकर प्रयत्नशील हा तो सफलताकी आशा हो सकती हे। एतदर्थ प्रयत्न होना चाहिये।' इसके पश्चात् श्रीस्वामीजी महाराज पूर्वकार्य-क्रमानुसार ऋषिकेश चले गये।

श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार एवं पूज्य ब्रह्मचारीजीको साथ लेकर कुछ प्रमुख गोसेवक श्रीकरपात्रीजी महाराजकी सेवामें ऋषिकेश पहुँचे। कोयल घाटी-स्थित श्रीमहाराजजीके शिविरमें बैठक हुई। विचार-विमर्शके पश्चात् श्रीस्वामीजी महाराजने निम्नलिखित आशयका एक शपथ-पत्र तैयार किया—

'मैं शपथपूर्वक 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान' को आश्वासन देता हूँ कि मनसा वाचा कर्मणा अपनी पूर्ण शक्तिसे 'गोहत्या-बंदी' के लिये जो भी आवश्यक होगा सब कुछ करूँगा।'

उक्त शपथ-पत्रपर सर्वप्रथम स्वयं श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराजने हस्ताक्षर किये तदनन्तर श्रीब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी महाराज, ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्तश्री स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज, गोवर्धनपीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी निरंजनदेवतीर्थजी महाराज, राष्ट्रिय स्वयं सेवक-संघके गुरु गोलवलकरजी, श्रीस्वामी गणेशानन्दजी, सद्गुरु जगजीतसिंहजी, भारत साधु-समाजके स्वामी गुरुचरणदासजी, श्रीस्वामी आनन्दजी जैन मुनि सुशीलकुमारजी, हिन्दू महासभाई नेता महन्त दिग्विजयनाथजी, संत फतहसिंहजी, श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार प्रभृति लगभग ४० गोसेवी नेताओंने हस्ताक्षर किये।

अपने-अपने विश्वासानुसार यहींपर गोरक्षार्थ धार्मिक अनुष्ठानादि करनेके लिये सभी सम्प्रदायोंके गोभक्तोंको प्रेरित करनेके लिये एक वक्तव्य तैयार किया गया जो अविकल-रूपमें 'कल्याण' तथा देशके अनेक पत्र-पत्रिकाओंमें प्रकाशित हुआ।

श्रीस्वामीजी ऋषिकेशसे पुनः दिल्ली पधारे और आपने अन्य गोभक्त नेताओं एवं कार्यकर्ताओंके सहयोगसे 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान'की रूपरेखा तैयार की। तदनन्तर चातुर्मास्यव्रतके लिये श्रीमहाराजजी वाराणसी चले गये तथा 'गोहत्या-बंदी' के लिये वहाँ गभस्तीश्वरमें विद्वान् वैदिक ब्राह्मणोंने ११ दिनका अखण्ड रुद्राभिषेक सम्पादित किया।

वाराणसीमें पुनः सभी सम्बन्धित लोगोंकी उपस्थितिमें बैठक हुई और परस्पर विचार-विमर्शके पश्चात् संविधानमें अपेक्षित संशोधन किये गये। सर्वोच्च समिति, कार्य-समिति, संरक्षक-मण्डल एवं महाभियान-समितिके सदस्योंको मनोनीत किया गया।

१४ सितम्बर १९६६ को 'भारत गोसेवक-समाज' के कार्यालय ३ सदर थाना रोड दिल्लीमें शपथ-पत्रपर हस्ताक्षर करनेवाले 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियानसमिति' के सदस्योंकी एक बैठक हुई। इस सभामें 'महाभियान-समिति' के पदाधिकारियोंका निर्वाचन किया गया तथा समितिके पदाधिकारियोंका चुनाव हुआ। महाभियानके संचालन और नीति-निर्धारणका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सर्वोच्च समितिको सौंपा गया। निम्नलिखित महानुभाव सर्वोच्च समितिके सदस्य बनाये गये—

(१) जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्तश्री स्वामी श्रीनिरंजनदेव-तीर्थजी महाराज गोवर्धनपीठाधीश्वर (पुरी)।
(२) अनन्तश्री स्वामी करपात्रीजी महाराज।
(३) श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी।
(४) स्वामी गुरुचरणदासजी।
(५) मुनि श्रीसुशीलकुमारजी।
(६) श्रीमाधवराव सदाशिव गोलवलकरजी।
(७) श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार।

स्वामी रामचन्द्र वीरका आमरण अनशन-व्रत

१० अगस्त १९६६ को मध्य प्रदेशके सागर नगरमें महान् तपस्वी प्रसिद्ध गोभक्त हिन्दू-सभाई नेता महात्मा रामचन्द्र वीर, जिन्होंने गोहत्याके कलंकके निवारणार्थ अनेक बार अनशन-व्रत किये, ने घोषणा की कि यदि भारत सरकारने २० अगस्तसे पूर्व गोहत्या-बंदीका केन्द्रीय कानून नहीं बनाया तो वे २० अगस्त १९६६ से भारतकी राजधानी दिल्लीमें अपना अन्तिम आमरण अनशन प्रारम्भ कर देंगे।

२० अगस्त १९६६ को प्रातः ७ बजे 'हिन्दू महासभा-भवन, मन्दिर-मार्ग नई दिल्ली' में वेदमन्त्रोंके उच्चारण एवं प्रो० रामसिंह आदि गण्यमान्य हिन्दू नेताओंकी उपस्थितिमें स्वामी रामचन्द्रजी वीरने अपना कठिन संकल्प प्रारम्भ किया। ३२ दिन तक 'हिन्दू महासभा-भवन' संकीर्तन भगवत्-स्तुतिसे गुंजायमान होता रहा। छोटे-बड़े सभी गोभक्त नेताओं, कार्यकर्ताओंने हिन्दू-भवनमें पहुँचकर वीरजीके अनशनके प्रति शुभ कामनाएँ प्रकट कीं। स्वामीजीका शरीर उत्तरोत्तर क्षीण होता गया। २० सितम्बरकी संध्याको पुलिस आयी और उन्हें आत्महत्याके तथाकथित अपराधमें गिरफ्तार करके ले गयी। महात्मा रामचन्द्र वीरने जेलमें भी अपना अनशन-व्रत जारी रखा। ७ नवम्बर १९६६ को एक बंदीके रूपमें 'गोविन्दवल्लभपंत अस्पताल नयी दिल्ली' में उनके अनशन-व्रतका ८० वाँ दिन था।

५ सितम्बरका अभूतपूर्व प्रदर्शन

५ सितम्बर १९६६ को दिल्लीमे सम्पूर्ण 'गोहत्या-बदी' के लिये ससद्भवनपर एक विराट् प्रदर्शन हुआ। इस प्रदर्शनका आयोजन सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियानपर हस्ताक्षर करनेवाले सभी नेताओके सहयोगसे सनातन धर्म-प्रतिनिधि-सभाके प्रधान मन्त्री स्वामी गणेशानन्दजी महाराजके सयोजकत्वमे हुआ था। लगभग डेढसे दो लाख गोभक्त इसमे सम्मिलित हुए। गोरक्षाके लिये किये गये आजतकके प्रदर्शनोमे यह अभूतपूर्व था।

राजधानीके विभिन्न मार्गोसे होता हुआ यह जुलूस करीब सवा दो बजे ससद्-भवन पहुँचा। इसके बाद सेठ गोविन्ददासके साथ स्वामी गणेशानन्दजी स्वामी गुरुचरणदासजी और जैन मुनि सुशीलकुमारजीने 'गोहत्या' बद करनेके सम्बन्धमे एक आवेदन-पत्र गृहमन्त्री श्रीगुलजारीलाल नन्दाको ससद्-भवनके द्वारपर दिया।

सत्याग्रहका शङ्खनाद

[७ नवम्बरका गोकुम्भ]

श्रीरामनवमीसे साधु-सतोद्वारा गोरक्षार्थ आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान-समिति' के तत्त्वावधानमे ७ नवम्बर १९६६ को दिल्लीमे ससद्भवनपर गोभक्तोका विराट् प्रदर्शन हुआ। इस विराट् प्रदर्शनमे सम्मिलित होनेके लिये देशके कोने-कोनेसे आबाल-वृद्ध नर-नारी, सन्यासी ब्रह्मचारी, सद्गृहस्थ, नेता तथा कार्यकर्ता लाखोकी सख्यामे कई दिन पहलेसे ही दिल्ली पहुँचने लगे। विभिन्न स्थानोपर 'गोरक्षा-आन्दोलन' की सफलताहेतु धार्मिक अनुष्ठान पूजा-पाठ तथा लक्षचण्डी महायज्ञ भी प्रारम्भ कर दिये गये। ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज पुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराज धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा अन्य सत-महात्माओने रात-दिन नगर-नगर डगर-डगर और ग्राम-ग्राममे घूमकर देशभरमे गोरक्षाके लिये इतना व्यापक प्रचार किया कि ७ नवम्बर १९६६ के इस गोकुम्भ-महापर्वपर सम्पूर्ण भारतकी आत्मा एक-रूप होकर गोहत्याके काले कलकको देशके मस्तकसे मिटानेके लिये ससद्भवनपर दृष्टिगोचर हुई। हिन्दू, मुसलमान सिख ईसाई पारसी सभी जातियो समुदायो और वर्गोके स्त्री-पुरुष बाल-वृद्ध युवक-युवती अपने-अपने नेताओ तथा धर्मगुरुओके आह्वानपर दिल्ली पधारे थे और गोमाताके प्राणोकी रक्षाके लिये बडे उत्साहसे 'गोहत्या बद हो' के नारे लगाते हुए पूर्ण अहिसक-भावसे ससद्भवनकी ओर प्रेमपूर्वक इस विश्वासके साथ बढते जा रहे थे कि आज गोरक्षा-कानून बनानेकी सरकारसे घोषणा करवाकर ही वापिस लौटेंगे। इस दिन दिल्लीमे चारो ओर मनुष्य-ही-मनुष्य दिखलायी पड रहे थे। समाचारपत्रोके अनुसार इस प्रदर्शनमे लगभग पद्रह-बीस लाख लोगोने सम्मिलित होकर 'गोकुम्भ-महापर्व' का ऐसा दृश्य उपस्थित किया था जिसके विषयमे 'न भूतो न भविष्यति' कहना ही पर्याप्त होगा। देशकी एकात्मकताका यह दिन कितना महान् था? इसका मूल्याङ्कन तो भावी इतिहास ही करेगा।

इस ऐतिहासिक प्रदर्शनके अवसरपर ससद्भवनके सामने बडे विशाल मचपर विराजमान महान् विभूतियोमे उल्लेखनीय नाम हैं—सर्वश्रीज्योतिष्पीठके जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज, पुरीपीठके जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराज, धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज, सत प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, जैन मुनि सुशीलकुमारजी स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दजी, भाई श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार अटलविहारीजी बाजपेयी प्रकाशवीर शास्त्री तथा सेठ गोविन्ददास आदि। इन महानुभावोके मचसे स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने घोषणा की कि 'हमारा किसी दल-विशेषसे द्वेष नहीं है। हम किसी राजनीतिक माँगको लेकर नहीं आये हैं। इस समय जो शासनारूढ हैं वे हमारे ही घरके लोग हैं, हम इन सबका कल्याण चाहते हैं। हम तो यहाँ केवल गोरक्षाकी माँग रखने आये हैं।' इसी प्रकार अन्य नेताओके उद्बोधन चल रहे थे कि उस समयकी काग्रेसी सरकारने इस महान् ऐतिहासिक प्रदर्शनको असफल करनेके लिये अपने गुडोद्वारा उपद्रव कराकर प्रदर्शनकारियोपर लाठी प्रहार प्रारम्भ करवा दिया जिससे भगदड मच गयी और चारो ओर अव्यवस्था मच गयी, सरकारके पूर्वनियोजित षड्यन्त्रका शिकार होनेसे यह विराट् प्रदर्शन असफल हो गया। सरकारको बहाना मिल गया। अहिसक और निहत्थे लोगोपर आँसू गैसके गोले और राइफलोकी गोलियोकी बौछार करके असख्य गोभक्तोको पुलिसने जिस क्रूरतासे मारा उसकी मिसाल मिलना सम्भव नहीं। 'जलियाँवाला बाग' का हत्याकाण्ड भी इसके सामने फीका पड गया। ससद्-भवनकी सडके क्षत-विक्षत शवो तथा रक्तपातसे पट गयीं। सरकारने अपना पाप छिपानेके लिये कर्फ्यू लगाकर सारे शवोको विद्युत्-भट्ठीमे जला दिया। अनेक नेताओको बदी बना लिया। पूरे नगरमे भीषण आतक व्याप्त हो गया।

स्वामी श्रीकरपात्रीजीद्वारा सत्याग्रह

सरकारी दमनचक्रसे सम्पूर्ण दिल्लीमे भय और आतकका वातावरण बन गया था। 'गोरक्षा-आन्दोलन' रुकता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था। देशभरसे आये हुए लाखो गोभक्त किंकर्तव्यविमूढ हो रहे थे। हजारो गोभक्तोके बलिदानसे सर्वत्र शोक और भय व्याप्त हो जानेके कारण किसीको भी सत्याग्रहके लिये सामने आनेका साहस नहीं हो रहा था। ऐसी विकट स्थितिमे ८ नवम्बर १९६६ को प्रात काल ही अपने प्रात कृत्यासे निवृत्त होकर धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज राजधानी दिल्लीकी सडकोपर सत्याग्रहके लिये निकल पडे फिर क्या था, अनेक गोभक्त धर्मवीर उनके पीछे हो लिये। सरकारके दमनचक्रसे उत्पन्न आतकका छिन्न-भिन्न करते हुए श्रीस्वामीजीने एक बार पुन 'गोरक्षा-आन्दोलन'को नवजीवन प्रदान किया। अपनी गिरफ्तारीके समय भी श्रीस्वामीजीने कहा कि 'अहिसात्मक और शान्तिपूर्ण ढगस 'गोरक्षा-आन्दोलन' चलाते रहना चाहिये।' उनके निर्देशानुसार आन्दोलन चलता रहा। प्रतिदिन हजारों गोभक्त बदी बनाये जाते रहे। अनेक धर्मवीरोने अनशनव्रतमे प्राणोत्सर्ग किये। तिहाड जेलम बद स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजपर घातक प्रहार हुआ जबकि वे गोभक्तोको भजनोपदेश कर रहे थे। इस प्राणघातक आक्रमणमे श्रीस्वामीजीका सिर फूट गया पूरे शरीरपर नीले निशान पड गये तथा वे बेहोश हो गये। एक आँखकी ज्योति भी प्राय जाती रही। यदि एक वीतराग महात्मा (स्वामी शिवानन्दजी महाराज) ने स्वामीजीके ऊपर लेटकर स्वय उन नम्बरी कैदियोद्वारा लोहेके डडासे किये गये प्रहाराको अपने शरीरपर सहन न कर लिया होता तो श्रीस्वामीजीका उसी समय वहीपर प्राणान्त हो जाता। इतना सब होनेपर भी सत-महात्माआ एव सद्गृहस्थ गोभक्ताके जेल जानेका क्रम बराबर चलता रहा, किंतु सरकारकी कुम्भकर्णी निद्रा नहीं टूटी।

पुरीके शकराचार्यका अनशनव्रत

सरकारकी दमनकारी नीति और 'गोहत्या-बदी कानून' न बनानेकी हठधर्मीके विरोधमे गोवर्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराजने २० नवम्बर १९६६ को गोपाष्टमीके पावन पर्वपर अपना ७३ दिवसीय अनशनव्रत प्रारम्भ किया। उनके साथ ही सत प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, गोभक्त शम्भूजी महाराज, स्वामी श्रीवीर रामचन्द्रजी महाराज आदि अनेक महापुरुषोने गोरक्षार्थ अनशनव्रत किये। इन महात्माओकी सहानुभूतिमे देशके लाखो गोभक्त महापुरुषो तथा भक्तिमती माताओने भी गोरक्षाकी पुनीत भावनासे प्ररित हाकर उपवास रखे। गोरक्षा-सत्याग्रह बराबर चलता रहा। आन्दालनम एक लाखसे अधिक गाभक्ताने जेल-यात्राकी।

अन्ततोगत्वा सरकारने जनताकी इस प्रबल माँगके समक्ष झुकनेका नाटक रचा। गोहत्या-बदीकी माँगको सिद्धान्तत स्वीकार करनेकी घाषणा की गयी। आश्वासन दिया गया कि तीन महीनेके भीतर 'गोहत्या-बदी कानून बना दिया जायगा। पुरीपीठके शकराचार्यने अपने अनशनव्रतके ७३ व दिन अपनी इस कठार तपस्याको विराम दिया। 'गारक्षा-आन्दोलन' भी स्थगित कर दिया गया। सरकारने 'गारक्षा-समिति' बना दी, जिससे छ महीनेमे अपनी रिपोर्ट देनेको कहा गया, किंतु यह सब सरकारका नाटक ही था जो उसने आन्दोलन तथा अनशन समाप्त करानके लिये रचा था।

आज धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एव परम वीतराग स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज ब्रह्मलीन है। धर्मसघको स्थापित हुए ५३ वर्ष हो चुके हैं। इस सुदीर्घकालम उक्त महान् विभूतियाके नेतृत्वमे धर्मसघने गारक्षाके लिये केन्द्रीय कानून बनवानके हेतु जितना प्रबल प्रयास किया है वह भारतीय इतिहासक पृष्ठाम स्वर्णाक्षरोम अङ्कित रहेगा। इसे समयकी विपरीतता ही कहा जायगा कि इतना प्रबल प्रयास होनपर भी देशके मस्तकसे गाहत्याका काला कलक नहीं मिट सका। पर निराश होनेकी आवश्यकता नही ह। श्रीमन्नारायणकी कृपासे एक दिन अवश्य ही गोहत्या-बदाका स्वप्न साकार होगा आर भारतमाताके मस्तकसे गाहत्याका काला कलक सदाके लिये मिट जायगा।

' ......गोरक्षा इस देशके नर-नारी, सबके लिये बड़ा भारी कर्तव्य है। दूध-घीपर ही भारतवासियोका जीवन निर्भर है। जबसे गाय-बैल बड़ी निष्ठुरतासे मारे जाने लगे हैं, तबसे हमे चिन्ता हुई है कि हमारे बच्चे कैसे जीयेगे?'

—लाला लाजपतराय

गोहत्या-बंदी-सत्याग्रह

(श्रीनरेन्द्रजी दुबे)

जिस प्रकार वैज्ञानिक मनीषियोंने सृष्टिके रहस्योंकी खोजकर आधुनिक विज्ञानका विकास किया है उसी प्रकार भारतीय आध्यात्मिक मनीषियोंने जीवनके और सृष्टिके रहस्योंकी खोजकर 'गो-विज्ञान'का विकास किया। वस्तुतः गो-विज्ञान सारी दुनियाको भारतकी अनुपम देन है। सारी दुनियामें गो-विज्ञानका प्रचार-प्रसार भारतसे हुआ। संस्कृतमें गायको 'गौ' कहते हैं तो अंग्रेजीमें 'काऊ' जो गऊका ही अपभ्रंश है और जापानीमें गायको 'ग्यू' कहते हैं जो 'गौ' का ही अपभ्रंश है।

भारतीय मनीषियोंने सम्पूर्ण गोवंशको मानवके अस्तित्व रक्षण पोषण, विकास और संवर्धनके लिये अनिवार्य बना दिया था। इसीलिये भारतमें गो-दुग्धने जन-समाजको विशिष्ट शक्ति, बल एवं विशुद्ध बुद्धि प्रदान की। गोबर-गोमूत्रने खेतीको पोषण दिया बैल-ऊर्जाने कृषि भारवहन, परिवहन तथा ग्रामोद्योगोंके लिये सम्पूर्ण टेक्नॉलोजी विकसित करनेमें मदद की और मृत चर्मने चर्मोद्योग-सहित अनेक हस्तोद्योगोंका विकास किया। इस प्रकार गोधन भारतकी समृद्धिका आधार बन गया।

जब भारतमें इस्लामका प्रभाव बढ़ना शुरू हुआ तब गोरक्षाका प्रश्न भी सामने आया। यद्यपि हजरत पैगम्बर मोहम्मद साहबने फरमाया है कि 'गायका दूध अमृत हैं और गोश्त बीमारी इसलिये गोश्तसे बचो' तथापि ईदपर गाय-बैलकी कुर्बानी देनेकी प्रथा चल पड़ी जिसके कारण हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य भी बढ़ा। इसे मुस्लिम शासकोंने विशेषतः सभी मुगल शासकोंने समझा तब उन्होंने फरमान जारी करके गाय-बैलोंका क़तल बंद किया था। जम्मू-कश्मीरमें लगभग पाँच सौ वर्षोंसे बडशाहके समयसे ही गाय-बैलका कतल बंद है। इस्लाम-धर्मके उलेमाओंने भी इसका समर्थन किया और कहा कि गाय-बैलोंका कुर्बानी फर्ज नहीं है।

दुर्भाग्यसे अंग्रेजी राज्यमें गाय-बैलका कतल शुरू हुआ जिसने एक धंधेका रूप ले लिया। अंग्रेजी फौजोंकी गोमांसकी पूर्तिके लिये गौ-बैलोंका क़तल प्रारम्भ हुआ और मुस्लिम कसाइयोंको क़तलके धंधेपर लगाया गया। इससे एक ओर हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य बढ़ा तो दूसरी ओर पश्चिमी संस्कृतिके यन्त्रीकृत जीवन-पद्धतिका प्रभाव बढ़ा। जैसे-जैसे विश्वभरमें औद्योगिक संस्कृतिका प्रचार-प्रसार बढ़ता गया दुनियाभरमें साम्राज्यवादका भी विस्तार होता गया और अनेक देश गुलाम होते गये। भारत भी गुलाम बना और सतत बढ़ते हुए यन्त्रीकरणने हमारे गाँवोंको भी गरीब और गुलाम बना दिया। वस्तुतः हमारी गुलामीका बड़ा कारण गो-हत्या और ग्रामोद्योगोंका विनाश था।

इसीलिये जब स्वराज्यका आन्दोलन शुरू हुआ तब हमारा मुख्य उद्देश्य 'गोहत्या-बंदी' था। सन् १८५७का सैनिक विद्रोह भी गोरक्षाके महान् उद्देश्यसे प्रेरित था। भारतके सभी धर्म-पुरुषों और राजनेताओंने स्वतन्त्रता-संग्राममें गोरक्षाको मुख्य प्रश्न माना था और जनताको वचन दिया था कि 'स्वराज्य मिलते ही कानूनसे गोहत्या बंद कर दी जायगी।' महर्षि दयानन्दने 'गोकरुणानिधि' नामसे पुस्तक लिखी और 'गोहत्या-बंदी' के लिये लाखों हस्ताक्षर कराकर महारानी विक्टोरियाको भेज थे। लोकमान्य तिलकने कहा था कि 'स्वराज्य मिलते ही कलमकी नोकसे भारतभरमें गोहत्या बंद कर दी जायगी।' महात्मा गाँधीने कहा था—'भारतमें गाय बचेगी तो ही मनुष्य बचेगा। गाय आज तो मृत्युके किनारे खड़ी है। यह नष्ट हो गयी तो उसके साथ हम भी यानी हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जायगी। मेरा मतलब हमारी अहिंसा-प्रधान ग्रामीण संस्कृतिसे है।'

भारतमें वैज्ञानिक दृष्टिसे गोसेवा हो इसके लिये गाँधीजीने 'गोसेवा-संघ' स्थापित किया था और अपने निकटस्थ साथी श्रीजमनालालजी बजाजको इसका उत्तरदायित्व सौंपा था। 'गोसेवा-संघ'ने गोपालन गोसंवर्धन गोरक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रोंमें उल्लेखनीय कार्य किया। गाँधीजीने सन् १९४२के 'भारत छोड़ो' प्रस्तावमें भी गोसेवाका उल्लेख किया था। तत्कालीन मैसूर राज्यके प्रधान मन्त्री मिर्जा इस्माइलने राज्यमें 'गोहत्या-बंदी' कानून बनानेके लिये गाँधीजीसे सलाह माँगी थी और गाँधीजीने उसको पूरा समर्थन दिया था। भारतके लगभग सभी देशी राज्योंमें सम्पूर्ण 'गोवंश-हत्या' बंद थी। केवल अंग्रेजी राज्यके क्षेत्रमें ही गोहत्या होती थी। इस प्रकार स्वराज्यके आन्दोलनके समयसे ही 'गोहत्या-बंदी'के लिये राष्ट्र वचनबद्ध रहा है। खिलाफतके आन्दोलनमें भी मुस्लिम नेताओंने 'गोहत्या-बंदी' को अपना समर्थन दिया था। कांग्रेसने भी डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादकी अध्यक्षतामें एक समिति गठित की थी, जिसने

विस्तृत अध्ययन कर 'गोहत्या-बदी' के लिये अपनी रिपोर्ट दी थी।

स्वराज्य मिलनेके पश्चात् जब देशका सविधान बना तब सविधान-सभामें 'गोहत्या-बदी' के प्रश्नपर विचार किया गया। सविधान-सभामें सभी धर्मों, जातिया, पक्षा और विचारोके लोग थे। सभीने सर्वसम्मतिसे सविधानकी धारा ४८म इसे राज्याके नीति-निर्देशक सिद्धान्तामें स्थान दिया।

सन् १९४७ म ही भारत सरकारने सर दातारसिहकी अध्यक्षतामे पशु-रक्षण एव सवर्धनके विशेषज्ञाकी एक समिति नियुक्त की थी। इस समितिने पूरे देशम दो वर्षोमे सम्पूर्ण 'गोहत्या-बदी' की सिफारिश की थी।

सविधानके निर्देशानुसार और समितिकी सिफारिशाको ध्यानमे रखकर उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश राजस्थान और बिहारमे 'गोवश-हत्या-बदी' कानून बनाये गय लकिन अन्य राज्य सरकारोने इस दिशामे कोई पहल नहीं की। इसका एक कारण यह भी था कि यह विषय राज्यक नीति-निर्देशक सिद्धान्ताम है, जिन्ह लागू करनेकी कोई समय-सीमा सविधानने निर्धारित नहीं की है और किसी राज्य सरकारको इन्हे लागू करनेके लिये कानूनन बाध्य नहीं किया जा सकता। अत गोरक्षामे श्रद्धा रखनेवालोके सामने आन्दालन करनेके अलावा कोई विकल्प नहीं रहा। सन् १९५१मे भारत सरकारने प्रथम पञ्चवर्षीय योजना बनायी और उसपर चर्चाके लिये विनोबाजीको निमन्त्रित किया। विनाबाजीने अत्यन्त आग्रहपूर्वक 'गोहत्या-बदी' कानून बनानेकी बात रखी।

सन् १९५२मे गोप्रमी श्रीवीर रामचन्द्र शर्माने आमरण अनशन किया जो विनोबाजीके प्रयाससे छूटा। उस समय विनोबाजी बिहारमे भूदान-यज्ञके निमित्तसे पदयात्रा कर रहे थे। बिहारके तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्रीकृष्णसिहजीने बिहारम 'गोवशहत्या-बदी' का कानून बनाया।

पटना उच्च न्यायालयमे कसाइयाके प्रतिनिधियोने इस कानूनको चुनौती दी। लेकिन उनकी अपील खारिज कर दी गयी और बिहार सरकारद्वारा पारित कानूनको वैध मान्य किया गया। लेकिन कसाइयोने इस निर्णयके खिलाफ सर्वोच्च न्यायालयम अपील की। सन् १९५८मे सर्वोच्च न्यायालयन सविधानके ४८व अनुच्छेदकी व्याख्या करते हुए निम्नाङ्कित निर्णय दिया—

(अ) 'गायाका क़तल नहीं किया जा सकता। अगर बूढी, बेकाम गायाके क़तलकी छूट दी जाय तो अच्छी गायाको भी नहीं बचाया जा सकता।' गायकी अवध्यताके लिये सर्वोच्च न्यायालयने आर्थिक कारणोका विश्लेषण प्रस्तुत किया।

(आ) बछडे-बछडियाका भी कतल नहीं किया जा सकता।

(इ) जवान और काम करने लायक बैला, साँडा और दूध देनेवाला भैसाका भी कतल नहीं किया जा सकता।

(ई) बूढे, बेकाम बैला साँडो और बूढी भैंसाका क़तल किया जा सकता है।

अन्तिम आशिक छूटका यह नतीजा आया कि अनेक प्रदेशामे सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून अर्थहीन और निकम्मे हो गये तथा बूढे, बेकामके नामसे स्वस्थ जवान और सर्वात्तम बलाका कतल शुरू हो गया। इस निर्णयका यह भी परिणाम हुआ कि उत्तरप्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेशम जहाँ सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून बने थे वहाँ उनमे सशोधन करके आशिक कानून बनाने पडे। यहाँतक कि मैसूरमे जहाँ गाँधीजीकी अनुमतिसे मिर्जा इस्माइलने सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी कानून' बनाया था, वहाँ भी फरक करना पडा। केवल जम्मू-कश्मीर राज्यम धारा ३७०के कारण सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून लागू रहा। वहाँ गाय-बैलके क़तलके लिये दस सालकी सजाका प्रावधान है।

सर्वोच्च न्यायालयका यह फैसला विनोबाजीसहित दशके सभी गोप्रेमियाको ठीक नहीं लगा।

सन् १९५९ मे राजस्थानम विनोबाजीके सानिध्यम विशेषज्ञाकी बैठक हुई। इसम भारत सरकारके कृषि-पशुपालन-मन्त्री, सरकारी विशषज्ञ और देशके प्रमुख गो-सेवक शरीक हुए थे। इसमे विनोबाजीने पुन सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून बनानेकी माँग की थी।

सन् १९६२के चीनके हमलेके पश्चात् देशम आर्थिक सकट शुरू हुआ। उस समय विदेशी मुद्रा कमानेके हेतु सुझाव देनेके लिये एक सरकारी समिति बनायी गयी। इस समितिने यह रिपोर्ट दी कि मास-निर्यातसे विदेशी मुद्रा कमायी जा सकती है। परतु तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीलालबहादुर शास्त्रीने इसे अस्वीकार कर दिया।

सन् १९६९ से [जो गाँधी-जन्म शताब्दी वर्ष भी था] भारतसे मासका निर्यात शुरू हुआ। धीरे-धीरे विदेशी मुद्राका लोभ बढता गया और दशमे क़तलके लिये नये-नये आधुनिक क़तलखाने बनने लगे। गाय-बैलका कतल जोरासे चलन लगा। दिन-प्रति-दिन यह पैमाना बढता ही गया।

सन् १९६६म 'राष्ट्रिय स्वय सेवक सघ' ने देशभरमें

'गोहत्या-बंदी' के लिये जनसमर्थन व्यक्त करनेके वास्ते हस्ताक्षर-अभियान चलाया और लगभग एक करोड हस्ताक्षर सरकारके सिपुर्द किये।

सन् १९६७मे पुरीके शकराचार्य श्रीनिरजनदेवतीर्थजीने आमरण उपवासकी घोषणा की और दिल्लीमे साधु-सतोने प्रदर्शन किया। उस समय विनोबाजीने पूज्य श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारको निम्नाङ्कित पत्र लिखा—

'भारतमे गोवशकी पूरी रक्षा हो इस उद्देश्यसे श्रीशकराचार्यजी और प्रभुदत्तजी महाव्रत कर रहे हैं, उससे मैं बहुत चिन्तित हूँ। उनके इस पवित्र उद्देश्यसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है। मृत्यु जब होती है तभी होती है। खाता-पीता आदमी भी मर जाता है। ये लोग पवित्र उद्देश्यसे मरने जा रहे हैं। अतएव उनके मरनेकी चिन्ता नहीं है। मुझे दु ख सरकारके रवैयेपर है। मेरा प्रार्थनापर विश्वास है। मैं प्रार्थना कर रहा हूँ, देखें भगवान् कैसी सुबुद्धि देते हैं।'

श्रीजयप्रकाशजीने भी रास्ता निकालनेका प्रयास किया। श्रीशकराचार्यजीके उपवासके ७२वे दिन भारत सरकारने 'गोहत्या-बंदी' लागू करनेकी पद्धतिपर विचार करनेके लिये विशेषज्ञोकी एक समिति बनायी और इस कमेटीकी सिफारिशे माननेका वचन दिया। तब श्रीशकराचार्यजीने अपना अनशन समाप्त किया।

माँग थी सम्पूर्ण गोवशकी हत्या बद करनेकी परतु उक्त समितिने अपने अन्तरिम प्रतिवेदनमे लिखा कि सारे देशमे सर्वोच्च न्यायालयके निर्णयकी मर्यादामे तुरत गोरक्षा-कानून बनाना चाहिये। परतु सरकारने अपने वचनका पालन नहीं किया और कमेटीकी इस अन्तरिम सिफारिशको भी लागू नहीं किया। यद्यपि भारत सरकारने ५-१-६७को तथा बादमे १२-३-७०को ससद्मे समितिकी सिफारिश लागू करनेका अभिवचन भी दोहराया था।

सन् १९७८ मे जब प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी विनोबाजीसे पवनार आश्रममे मिलीं तब विनोबाजीने उनके समक्ष 'गोहत्या-बंदी' की बात रखी।

विनोबाने उपवासकी घोषणा की—प्रतिज्ञा और दिये गये वचनसे सरकार न केवल पीछे हटती गयी, वरन् गोहत्याकी दिशामे आगे बढती गयी। तब मई १९७६मे विनोबाजीने जाहिर किया कि 'देशके सभी राज्योमे सर्वोच्च न्यायालयके निर्णयकी मर्यादामे गोरक्षा-कानून नहीं बन जाते हैं तो वे स्वय ११ सितम्बर १९७६से आमरण उपवास करेगे।' तब प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधीने वचन दिया कि ३१ दिसम्बर १९७६ तक केरल तथा पश्चिम बगालको छोडकर सारे देशमे 'गोरक्षा-कानून' बना दिये जायँगे। केरल तथा बगालके लिये उन्होने एक वर्षकी अवधि माँगी। इन शब्दोपर विश्वास रखकर विनोबाजीने उपवासके निर्णयको रोका।

दिये गये वचनके अनुसार दो राज्योको छोडकर सभी राज्योमे सर्वोच्च न्यायालयके निर्णयकी मर्यादामे गोरक्षा-कानून बना दिये गये।

परतु बगाल तथा केरलमे कानून न बननेसे सारे देशका गोधन इन प्रदेशोमे जाकर कटने लगा। दोनो प्रदेशोने अपना वचन नहीं निभाया और आशिक कानून भी नहीं बनाये। जब बहुत प्रयास करनेपर भी दोनों प्रदेशोने कानून नहीं बनाये तब विनोबाजीने सन् १९७९मे जाहिर किया कि वे २२ अप्रैलसे आमरण उपवास करेंगे।

भारत सरकारने वचन दिया—

२२ अप्रेल १९७९ से विनोबाजीका अनशन शुरू हुआ। यह अनशन पाँच दिन चला। पाँचवे दिन प्रधान मन्त्रीजीने ससद्मे घोषणा की कि 'सविधान सशोधन कर इस विषयको समवर्ती सूचीमे ले लिया जायगा और गोरक्षाका केन्द्रीय कानून बना दिया जायगा।'

इसपर विनोबाजीने अनशन छोडा। तदनुसार ससद्मे सविधान-सशोधन-विधेयक प्रस्तुत किया गया। परतु उसी सत्रमें अविश्वास प्रस्तावके कारण सरकारमे परिवर्तन हो गया और लोकसभा भग हो जानेसे सशोधन-विधेयक भी पास नहीं हो सका।

सन् १९८० मे श्रीमती इन्दिरा गाधीके नेतृत्वमे कांग्रेस सरकार बनी। उनसे अनेको बार सम्पर्क किया गया और सरकारके वचनकी याद दिलायी परतु उन्होने पहल नहीं की।

अन्तत सन् १९८० मे श्रीनानचन्द्रजी महाराजने दिल्लीमें उपवास-शृखला चलायी और आमरण उपवास शुरू किया, तब सरकारने उन्हे जबरन् आहार देनेका उपक्रम किया। विनोबाजीकी सूचनाके अनुसार उन्होने अपना उपवास छोडा।

देवनार-गोरक्षा-सत्याग्रह

दिसम्बर १९८१मे पवनारमे 'अखिल भारतीय गोरक्षा-सम्मेलन' आयोजित किया गया था। उसमें देशभरसे गोप्रेमी और गोसेवक आये थे। सम्मेलनके पश्चात् गोरक्षा-कार्यमें लगे हुए कुछ सेवकोने विनोबाजीसे चर्चा की। चर्चाके उपरान्त १ जनवरी १९८२को विनोबाजीने लिखा—'किसी भी उम्रकी गाय

ओर बेल इस देशम न कट इस हतु बबईमें सत्याग्रह करो। इसका प्रारम्भ शान्ति सैनिक कर।'

विनोबाजीने अपने आश्रमके अन्तेवासी तथा भारतीय शान्ति-सनाके सयोजक श्रीअच्युत भाई देशपाण्डेको देशके १७ सेवकाके साथ बबईमे सत्याग्रह करनेका आदेश दिया।

इस प्रकार ११जनवरी १९८२से बबईम दवनार-स्थित एशियाक सबसे विशाल कतलखानेपर गोरक्षा-सत्याग्रह शुरू हुआ।

विनोबाजीके निर्देशानुसार यह सत्याग्रह सत्य, प्रेम, करुणाकी मर्यादामे अहिसक असाम्प्रदायिक और अराजनैतिक दृष्टिसे आज भी चलाया जा रहा है।

दवनार गारक्षा-सत्याग्रहकी दो माँग है—

(१) कृषि-प्रधान भारतम किसी भी उम्रके गाय-बैलके कतलपर कानूनी रोक लगायी जाय। इसके लिये केन्द्रीय कानून बने। तथा—

(२) भारतसे विदशाम भेजे जानेवाले सभी प्रकारके मासका निर्यात बद हो।

देवनार कतलखाना

देवनार कतलखाना एशियाका सबसे बडा क़तलखाना है। यह विशाल क्षेत्रम फेला आधुनिक यन्त्रासे सज्जित सार्वजनिक क्षत्रका कतलखाना है। इसम प्रतिदिन ग्यारह हजार प्राणी काटनेकी क्षमता ह। इसम आठ हजार भेड बकरे एक हजार सूअर दो हजार बेल ओर भैंस-भैंसे काटनेकी क्षमता है। इसका निर्माण चौथी पञ्चवर्षीय योजनाके समय हुआ। इसका सचालन बबई महानगरपालिका करती है। इसमे लगभग तीन हजार कर्मचारी काम करते हैं। कतलखानेके अहातेमे ही पशु-बाजार लगता हे जहाँ देशभरसे पशु लाये जाते हैं। मास-चमडेके व्यापारी उन्ह खरीदकर कतलखानेम कटवा कर उनका मास-चमडा विदशाम ओर दशम बेचते हैं। कारखानेमे ही शीतीकरण वाहनाकी भी व्यवस्था हे। हर रोज काटा हुआ ताजा मास विशेष मालवाहक हवाई जहाजोसे विदशाम भी यहाँसे भेजा जाता ह।

महाराष्ट्रम 'पशु-परिरक्षण' कानून है। यहाँ पशु- चिकित्सक नियुक्त हैं। वे यह जाचकर प्रमाणपत्र देते हैं कि अमुक पशु कतल-याग्य हे। कानूनम भारवहन प्रजनन, खेती और दूधके अनुपयुक्त पशुआका ही कतल किया जा सकता है। परतु इस कानूनका परिपालन बिलकुल नहीं होता है। इसके कारण भ्रष्टाचार भी बहुत होता हे।

जब देवनार क़तलखाना बन रहा था, तब बबईके नागरिकाने इसका कडा विरोध किया था। तब उन्हे यह वचन दिया गया था कि 'यहाँ केवल स्थानीय आपूर्तिके लिये ही कतल किया जायगा।' परतु इस वचनका भी कभी पालन नहीं किया गया। यहाँतक कि बबई महानगरपालिकाने भी इसके लिये प्रस्ताव किया, परतु कानूनमें महापालिका कमिश्नरको, चुने हुए प्रतिनिधियोसे भी ज्यादा अधिकार प्राप्त है और सरकारके सीधे निर्देशाके कारण उन्होने महापालिकाका प्रस्ताव भी लागू नहीं किया। आयुक्त महोदयने यह जवाब दिया कि 'देवनार क़तलखानेमें यदि निर्यातके लिये कतल नहीं होगा तो क़तलखानेका घाटा बहुत बढ जायगा, इसलिये निर्यातके लिये क़तल बद नहीं किया जा सकता।'

देवनार सत्याग्रहका स्वरूप—देवनार गोरक्षा-सत्याग्रह ११जनवरी १९८२से लगातार अखण्ड अनवरत चौबीसो घटे चल रहा है। इसके साथ ही बान्द्रा रेलवे स्टेशनपर और सहार हवाई अड्डेपर भी लबे अर्सेतक सत्याग्रह चला। सत्याग्रहका स्वरूप ऐसा है कि सख्याके अनुसार टोली कतलखानेके उस दरवाजेपर धरना देने जाती है जहासे बेल कतलखानेम भेजे जाते हैं। यह टोली बैलाको क़तलखानेमे ले जानेसे रोकती है। इससे कसाइयाके काममे बाधा पहुँचती है। उनकी सहायतामे पुलिस आकर सत्याग्रहियाको गिरफ्तार करती है और उन्ह पुलिस थानेमे ले जाया जाता है। तब बैल क़तलखानेक भीतर भेज दिये जाते हैं।

जब महिला सत्याग्रहियाने सत्याग्रह किया तब महिला पुलिसने उन्ह गिरफ्तार किया।

कभी-कभी बबईके हजारा लोगोने एक साथ प्रदर्शन किया। देशभरसे आये सैकडो लोगोने एक साथ सत्याग्रह किया। बडी सख्याम आये पुलिस बलने उन्ह गिरफ्तार किया।

इस प्रकार गत १२ वर्षोंमे सारे देशसे लगभग तीन लाख लोगाने सत्याग्रहमे भाग लिया। सभी धर्मों, पथों, जातिया भाषाआ और प्रान्तोके लोगोने सत्याग्रहमे भाग लिया।

सत्याग्रहकी उपलब्धियाँ—यद्यपि १२ वर्षके अखण्ड प्रयासक बावजूद 'गोहत्या-बदी'के लिये केन्द्रीय कानून बनानेका मुख्य लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सका है, तथापि सत्याग्रहकी अनेक उपलब्धियाँ हैं।

गत वर्षोम अनेक राज्य सरकारोने अपने प्रदेशोके गोरक्षा-सम्बन्धी कानूनोमे सुधार-सशोधन किये हैं। मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश गुजरात और दिल्लीम सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी'

कानून बने हैं। उत्तरप्रदेशमे विधानसभाम कानून पारित हो गया है, परतु अभीतक उसे राष्ट्रपतिकी सम्मति नहीं मिली हे इसलिये कानून लागू नहीं हुआ हे। इस समय दशक नौ राज्य—जम्मू-कश्मीर, हिमाचल हरियाणा, पजाब, राजस्थान मध्यप्रदेश दिल्ली गुजरात तथा उत्तरप्रदेशमे सम्पूर्ण गावशके क़तल रोकनेके कानून बने हैं। मध्यप्रदेशके कानूनके विरोधमे कसाइयाने जबलपुर उच्च न्यायालयमे अपील की थी परतु मध्यप्रदेश, उच्च न्यायालयने उनकी अपील खारिज कर सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानूनको सविधान-सम्मत मान्य किया हे। उच्च न्यायालयने अपने निर्णयम कहा है कि बैलकी उपयोगिताके सम्बन्धम पुरानी धारणामे बुनियादी अन्तर हा गया है। अब सेन्द्रिय खादका महत्त्व अत्यधिक बढ गया है क्याकि यह सिद्ध हो गया हे कि रासायनिक खादसे भूमिकी उर्वरा-शक्तिको क्षति पहुँचती है। रासायनिक कीटनाशकासे भूमि, जल और खाद्य पदार्थ प्रदूषित होते हैं। गोबर-गोमूत्रसे प्राप्त खाद और कीटनाशकाका महत्त्व दिन-प्रति-दिन ध्यानमे आ रहा है और बैल अपने जीवनके आखिरी समयतक गोबर-गोमूत्र देते रहते हैं जो खेतीके लिये अनिवार्य है और भूमिकी उर्वरा-शक्ति कायम रखनेके लिये भी जरूरी है।

अब यह सिद्ध हो गया है कि देशसे गाय-बैलके मासका और कतली चमडेका निर्यात कर जितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती हे उससे कहीं ज्यादा विदेशी मुद्रा उन वस्तुआके आयातपर खर्च करनी पड रही है जो गाय-बैलाको जीवित रखकर कमायी जा सकती है।

गोरक्षा-सत्याग्रहने देशकी जनताको अहिसक सत्याग्रहकी पद्धतिम शिक्षित करनेका भी कार्य किया हे।

वस्तुत जितनी सज्जनता शालीनता सौम्यता और सातत्य समर्पणसे देवनारका गोरक्षा-सत्याग्रह चल रहा है वह बेमिसाल है। इसीका यह परिणाम है कि आज भी सभी सत्याग्रही इस बातपर दृढ हैं कि जबतक सारे देशमे 'गोवश-हत्या-बदी' का कानून नहीं बनता यह सत्याग्रह चलता ही रहेगा। [प्रे०-गारक्षा-सत्याग्रह-सचालन-समिति]

आधुनिक यान्त्रिक गोवध-केन्द्र—'अल-कबीर'

भगवान् श्रीरामचन्द्र ओर श्रीकृष्णचन्द्रसे लेकर अनेकानेक ऋषि-मुनियाकी परम्परामे होते हुए दीर्घकालके इतिहासम महावीर स्वामी महात्मा बुद्ध जगद्गुरु शकराचार्य ओर अनेक उच्चकोटिके धर्माचार्योसे लेकर महामना पडित मदमोहनजी मालवीय महात्मा गाँधी इत्यादि विभूतियोने हमारे भारतवर्षमे अवतार और जन्म लेकर गऊ-सेवा गऊ-पालन गऊ-सरक्षणका आदर्श स्थापित किया है। हमारे भारतमे दूधकी नदियाँ बहती थीं। अलाउद्दीन खिलजीके शासनकालमे एक रुपयेका डेढ मन मक्खन उपलब्ध हानेके आँकडे विदशी पर्यटकाने गवेषणा करके लिखे हैं ओर घाषित किया है कि उस समयतक दूध दही आर मक्खन कहींपर भी देशम विका नहा करता था। आज अपने स्वराज्य प्राप्त किये हुए स्वतन्त्र भारतम इसकी क्या दुर्दशा है यह बात भी किसीसे छिपी नहीं है।

अत इस विभाषिकासे समाजका बचानेके लिये हम सभी सगठित हाकर प्रयास कर। हमारे दशकी आर्थिक धामिक सामाजिक विभाषिकाका एक खुली चुनौती है उसका एक दृश्य है 'अल-कबीर क़त्लखाना जिला मडक हैदराबाद।

दुबईके गुलाम मुहम्मद शेखने भारत सरकारका ४०० करोड रुपयेकी सहायतासे इस 'अल-कबीर गऊ-वधशाला'की स्थापना की। इस 'अल-कबीर वधशाला'म नित्य लगभग ६ हजार गाय बहुत ही निर्ममतापूर्वक काटी जाती हैं। काटनेसे पूर्व उन्हे ४ दिनतक भूखा रखकर उनपर गर्म पानी डाला जाता है जिससे कि उनका हीमोग्लोबिन पिघल जाय। इस प्रक्रियासे गऊका मास लाल हो जाता है जिसकी कीमत २५० रुपये प्रतिकिलो हो जाती है जबकि सफेद मास १२० रुपये प्रतिकिलाके हिसाबसे बिकता है। अधिक मुनाफा कमानेके लिये गायाको इतनी निर्ममतासे मारा जाता है ओर अल-कबीर'के मालिक एक गायसे हजारो रुपये कमाई कर लेते हैं। अभी यह विभीषिका और अधिक बढ सकनेकी बात है। २१ जून १९९४ के एक दैनिक समाचार-पत्रम यह भी छपा है कि ऐसी ७ ओर गऊ-वधशालाओ'की स्थापनाका प्रस्ताव है।

अल-कबीर कत्लखानेका एक दृश्य

(१) इस आधुनिक यान्त्रिक-क़त्लखानेम ६ हजार गाय प्रतिदिन बलि हाती हैं।

(२) २० हजार टन मास-नियातका अनुबन्ध ईरान और कुवैतसे हुआ है।

(३) १०,००० लीटर खून प्रतिदिन एकत्रित होता है, जिससे प्लाज्मा, प्राटीन्स, हीमोग्लोबिन टॉनिक बनता है।

(४) ३०० एकड भूमिमे फैला हुआ है, यह कत्लखाना।

(५) एक गायपर ५०,००० रु० का लाभ होता है, इस कत्लखानेके मालिकाको (चमडा, हड्डी, मास, खून और चर्बीके विक्रयसे)।

(६) मासका निर्यात विदेशी मुद्रा प्राप्त करनेके लिये किया जाता है।

पशु-वध करनेकी विधि

स्वस्थ गोवशको लाये गये ट्रकासे बाहर लाया जाता है। क़त्लगाहमे एक हजार पशु रह सके, ऐसे मौतके कुएँ बने हैं। वहाँ ४ (चार) दिनोतक पशुआको बिना चारे-पानीके रखा जाता है। इसके बाद पशु अशक्त होकर गिर जाता है। गिरनेपर पशुको घसीटकर मशीनाके पास ले जाया जाता है। उसे पीट-पीटकर खडा किया जाता है। मशीनकी एक पुली पशुके पिछले पैरको जकड लेती है। पश्चात् २०० डिग्री सेटीग्रेटका गरम पानी ५ मिनट तक गिराया जाता है। मशीनकी पुली पिछले पैरको ऊपर उठाती है। पशु एक पैरपर उल्टा लटका दिया जाता है। फिर पशुकी आधी गर्दन काट दी जाती हे ताकि खून बाहर आ जाय और पशु मरे नहीं। खूनकी धाराएँ बह निकलती हैं। तत्काल पशुके पेटमें एक छेद कर हवा भरी जाती है जिससे पशु फूल जाता है। तत्काल चमडा उतारनेका कार्य होता है। पशु अभी मरा नहीं, मरनेसे पशुका चमडा मोटा हो जाता है। अत उसकी कीमत घट जाती है। जीवित पशुका चमडा पतला और कोमल होनेसे अधिक मूल्यका होता है। चमडा उतरते ही पशुके चार टुकडे किये जाते हे—गर्दन पैर धड और हड्डियाँ।

तत्काल मासके डिब्बे बनकर कारखानेसे बाहर आने प्रारम्भ हो जाते हैं। बछडोका मास तथा चमडा ज्यादा कीमती होता है।

गर्भवती पशु अधिक लाभदायक होते हैं, कसाइयाके लिये।

दुबईमें अमेरिकन मास १५ रियाल यानी लगभग १२०(एक सौ बीस) रुपये प्रतिकिलो और भारताय मास ३० से ३२ रियाल यानी लगभग २४० रु० प्रतिकिलो विकता हे।

अमेरिकन मास सफेद होता है और भारतीय मास लाल क्योंकि इसमे होमोग्लाबीन घुला होनेसे अधिक मूल्यवान् हैं।

विचारणीय बिन्दु

१-आज देशमे ३,६०० क़त्लखाने हैं जिसमे १० बडे यान्त्रिक (मशीनीयुक्त) कत्लखाने हैं, जो प्रतिदिन २ ५०,००० (दो लाख पचास हजार) पशु-धन काटते हे।

२-५०,००० (पचास हजार) गोवश हैं, जो इसमे कटता हे, प्रतिदिन।

३-सन् १९८१ मे लगभग ४०० टन मास अवैधानिक रूपसे विदेशोमे जाता था। १९९१-९२ से ६० हजार टन मास प्रतिवर्ष वैधानिक तौरपर निर्यात होता है।

४-सन् १९५१ मे १००० व्यक्तियोपर ४२६ पशु थे (चालीस वर्ष बाद) सन् १९९१ मे १००० व्यक्तियोपर २१६ पशु रह गये (दो वर्ष पश्चात्) सन् १९९३ मे १००० व्यक्तियोपर १७६ पशु रह गये। यही क्रम रहा तो सन् २००० मे भारत पशुविहीन विशेषकर गोधन-विहीन हो जायगा।

पशु-धनके नष्ट होनेसे देशकी आर्थिक स्थितिपर प्रभाव

१-दूधके पाउडरका आयात १९८४ मे ३ ८७९ टन था।

२-रासायनिक खादका आयात १९९१-९२ मे २३,५२० टन रहा।

३-भारत सरकारको रासायनिक खादपर आयात तथा निर्यातमे १९९१-९२मे ६२, १९० मिलियन रुपये सब्सिडी देनी पडी है। अर्थात् (२ अरब ३९ करोड ३९ लाख) रासायनिक खादसे भूमिकी ऊर्जा निरन्तर कम होती जा रही है।

४-ऊनका आयात सन् १९९१-९२मे २३ ९३७ लाख रुपयेका था।

एक निवेदन

बबईके पास कुख्यात देवनारके महान् गोवध-केन्द्रमे आचार्य विनोबाका चलाया गया सत्याग्रह अब भी चल रहा है।

महात्मा गाँधाजी और आचार्य विनोबाभावेद्वारा सस्थापित 'अखिल भारत कृषि-गो-सेवासघ गोपुरी वर्धा'की बरेली शाखाद्वारा सुनियोजित 'गऊ-ग्रास-योजना'-अनुसार अपनी रुचि और श्रद्धाके अनुसार कम-से-कम १० पैसे या अधिक प्रतिव्यक्ति प्रतिदिनके हिसाबसे कसाइयासे बचायी गयी गाया—गोधनके चारेकी सेवाके लिये इस गोरक्षाके महायज्ञमे आप भी तन-मन-धनसे सहयोग करे और पुण्यके भागी बने।

[प्रेषक—श्रीरामकुमारजी खडलवाल]

गोवशपर अत्याचार—जिम्मेदार कौन?

(श्रीकशरीचदजी मेहता)

भारतीय सविधानकी धारा ४८ म गोवशको सरक्षण दिया गया है। परतु सरकार स्वय सविधानका उल्लघन कर रही है। जब भारत गुलामीकी जजीरोम जकडा हुआ था, तब लोकमान्य तिलकने कहा कि 'भारत स्वतन्त्र होते ही कलमकी एक नोकसे गो-हत्या बद करवा दी जायगी।' महात्मा गाँधी कहते थे—'गोहत्याको देखकर मुझे ऐसा लगता है कि मेरी आत्माकी हत्या की जा रही है।' उन महान् पुरुषाके सपने आजतक पूर्ण नहीं हो पाये और आज सपनाके पूरा होनेकी बात तो दूर रही उलटे प्रतिवर्ष नये-नये कत्लखाने खुलवाकर गोवशको कटवाकर उसके चमडे तथा मासका निर्यात हो रहा है। आज देशमे हिसाका ताण्डव नृत्य चल रहा है। जनताकी ओरसे गोवश-रक्षा-हेतु अनशन, मोर्चे, सम्मेलन आये दिन होते रहते हैं परतु कोई सुननेवाला नहीं। सरकारी नीतिके कारण कत्लखानामे और घरामे गोवशकी अवैध कत्ल बहुत बडी मात्रामे हो रही है।

ससारकी कोई भी डिक्शनरी देखी जा सकती है जहाँ गायकी परिभाषा 'गाय' तथा उसके वशका एक ही माना गया है, किंतु दुर्भाग्यसे भारतमे गायकी परिभाषाम गाय तथा गोवशको अलग-अलग कर दिया गया है। किसी भी प्राणीके वधपर प्रतिबन्ध लगाया जाता है तो नर तथा मादा प्रतिबन्धित हो जाते हैं जैसे शेरपर प्रतिबन्ध लगाया तो शेरनीपर प्रतिबन्ध हो ही जाता है। मोरपर प्रतिबन्ध लगाया तो मोरनी प्रतिबन्धित हो ही जाती है किंतु भारतके अलग-अलग राज्याने गायकी परिभाषा अलग-अलग प्रकारसे की है जैसे राजस्थान जम्मू-कश्मीर हिमाचल-प्रदेश, पजाब हरियाणा—इन प्रदेशाम बहुत पूर्व ही गायको गोवश-सहित माना है और उनके कानूनोमे गायके साथ गोवशपर कानूनी बदी लगायी हुई है। अभी-अभी मध्यप्रदेश तथा गुजरात राज्यने भी अपने कानूनम सशोधन करके गोवध-प्रतिबन्ध किया है। इन राज्याने गौकी परिभाषामे गोवशको भी माना है किंतु महाराष्ट्रम बिलकुल इसके विपरीत है। महाराष्ट्रमे गायके क़तलपर पूर्णतया बदी है, परतु गायके बछडको काटनेपर छूट रखी है और बैल तो सरेआम पूरे प्रदेशम क़तलखानाम तथा घराम काटे जा रहे हैं। महाराष्ट्र सरकारने बछडेकी व्याख्या इस प्रकारकी है—'बछडा' एक वर्ष-उम्रतक बछडा माना जाता है उसके पश्चात् उस बैलोकी श्रेणीम माना गया है।' ताकि बैलाके साथ बछडेको भी आसानीसे काटा जा सके और उसके मुलायम चमडे तथा माससे भरपूर नफा कमाया जा सके। इस प्रकार देशम कतलखानाका जाल बिछा दिया गया है।

इस अवैध धधेद्वारा लोग लाखा जीवाको कटवाकर करोडा रुपया कमा रहे हैं, जिससे देशका पशुधन बहुत तेजीसे घटता जा रहा है और गोवशकी सख्या दिनादिन घटती जा रही है, किंतु सम्बन्धित अधिकारी यह सब देखकर भी अनदेखी कर रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर, हिमाचलप्रदेश राजस्थान, पजाब हरियाणा मध्यप्रदेश तथा गुजरात—इन सात राज्याने गायकी व्याख्यामे गाय, बैल बछडे बछडी साँड यानी गायके वशको मानकर उनकी कतलपर रोक लगायी है, किंतु अन्य राज्यामे राज्य सरकाराद्वारा गोहत्या-सम्बन्धी अलग-अलग नियम बनाये गये हैं—

किन्हीं राज्यामे गायकी उम्र १० से १४ वर्षसे ऊपर हो जानेपर काटनेका प्रावधान रखा है। कहीं अनुपयोगी गायको काटनेका प्रावधान रखा है और कहीं असाधारण बीमारी हो जानेपर उसे मार डालनेका प्रावधान भी रखा है तमिलनाडु उडीसा केरल वस्ट बगाल, इसके अलावा अरुणाचल प्रदेश आसाम गोवा मणिपुर मेघालय मिजोरम नागालैंड, सिक्किम त्रिपुरा—इन राज्यामे गायाका वध खुले-आम होता है।

जैसा कानून बना हो उसकी परिपालना करवानेकी जिम्मेवारी सरकारपर है उस कानूनके अन्तर्गत जो भी मान्य किया गया हो तदनुसार उन प्राणियाके प्राण बचानेका कार्य सरकारका है परतु किसी भी प्रदेशकी सरकार इस कायदेका पालन करवा रही हो ऐसा दिखायी नहीं देता कारण अवैध व्यापार इतना अधिक बढ चुका है कि या तो उसे रोकनेकी शक्ति सरकारके पास है ही नहीं अथवा सरकार अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिये अनदेखी करके मौन स्वीकृति दे रही है। उदाहरणके लिये कुछ राज्याकी स्थितिको वर्णित किया जा रहा है—

राजस्थान प्रदेशम १९५० से 'दि राजस्थान प्रिजर्वेशन ऑफ सरटन एनिमल एक्ट १९५०' बना हुआ है, इस एक्टके

अनुसार राजस्थान प्रदेशमें सम्पूर्ण गोवंश-हत्या-बंदी कानून लागू है, परंतु इस एक्टका भंग हो ही रहा है। कुछ माह-पूर्व राजस्थानके सरहदी गाँवोंमें जिंदा गायोंकी खाल उतार ली गयी, वह भी १०—१२ गायकी नहीं एक साथ १६९ गायोंकी। शक्तिशाली असामाजिक तत्त्वोंपर सरकारका नियन्त्रण नहीं है। राजस्थानमें पशु-मेले लगते हैं। उन मेलोंमें एक-एक मेलेमें ५०—६० लाखसे ज्यादा कीमतके पशुओंकी खरीद-बिक्री होती है। जो पशु बिक्री होते हैं, उन्हें अधिकांश दूसरे राज्योंके पशु-व्यापारी खरीदते हैं और उन मवेशियोंको खेतीके नामपर पशु-चिकित्सा-अधिकारी प्रमाण-पत्र दे देता है। ये पशु-व्यापारी उन मवेशियोंको ट्रकोंसे तथा ट्रेनोंसे दूसरे प्रदेशोंमें बुक करवाकर कतलवाले व्यापारियोंको दे देते हैं। उदाहरणके तौरपर अजमेर, जयपुर, स्वरूपगंज—इन रेलवे स्टेशनोंसे निकलकर खेतीके नामपर खरीदे गये ये बैल देवनार-कत्लखानेमें लाखोंकी संख्यामें जाकर कटते रहे। इसी प्रकार पशु-मेलोंसे ट्रकोंमें ठूँसकर बैल-बछड़े-गाय बाहरके प्रदेशोंमें आज भी जा रहे हैं। राजस्थान प्रदेशसे आज भी गोवंशको दूसरे प्रदेशोंमें ले जाकर कसाइयोंको बेचा जाता है, जिसका जीता-जागता प्रमाण है, राजस्थानका गोवंश प्रतिदिन नीचम मध्यप्रदेशमें जाकर पशुहाटमें बिकता है, जबकि प्रदेशसे बाहर ले जानेपर प्रतिबन्ध है उसके लिये कलेक्टरकी स्वीकृति चाहिये। ये मवेशी राजस्थानी बनजारे ग्रामीण भागसे तथा अकालग्रस्त भागसे रास्तेमें भटकनेवाले गोवंशको झुंडके रूपमें एकत्रित कर अन्य प्रान्तोंमें ले जाते हैं। 'जुने रेकार्ड'के अनुसार १९८०-८१-८२ के वर्षोंमें ये राजस्थानी बनजारे राजस्थानसे प्रतिदिन १,५००—२,००० गायोंको धुलिया महाराष्ट्रकी कृषि-उत्पन्न बाजार-समितिमें कटू गाईके बाजारमें लाकर बेचा करते थे, उसी तरह ये बनजारे गुजरातके बडोदा, भरूच, दाहोद, गोधरा जहाँ प्रतिदिन गाय काटी जाती थीं, वहाँ झुंड-के-झुंड लाकर बेच जाते थे, इन बनजारोंने लाखों गायोंको कसाइयोंके हाथ पहुँचाया।

महाराष्ट्रमें मालेगाँव, धुलिया, औरंगाबाद, जालना, परभणी, उस्मानाबाद, नाँदेड, अकोला, हिंवरखेड, परतवाडा, अमरावती, नागपुर आदि स्थानोंपर गोवंशकी खरीद केवल कतल-हेतु होती आयी है। जिसपर किसीका नियन्त्रण नहीं।

प्राणियोंकी रक्षा-हेतु कानून बने हुए हैं। परंतु कानूनकी परिपालना करनेवाले गोभक्त जबतक घरको छोड़कर बाहर नहीं आयेंगे, समय नहीं देंगे तो गायकी रक्षा कैसे होगी? आपको यदि गायें वध-हेतु ले जाते हुए मिलें और आप उन्हें कसाईके हाथसे बचाना चाहते हों तो उसके लिये आपको जिस राज्यमें गोवंशको बचाना हो उस स्टेटके कानूनको समझना होगा।

सेंट्रल गवर्नमेंटद्वारा पारित एक कानून है, जिसे 'प्राणी-क्रूरता-निवारण अधिनियम १९६०' कहते हैं। कसाइयोंसे जप्त करनेके पश्चात् गोधनको उनके रख-रखाव-हेतु आपको किसी नजदीकी गोसदन-गोशाला या पिंजरापोलके अधीन कर देना चाहिये। आवश्यकतानुसार चारे-पानीकी व्यवस्था वह संस्था करे। यदि संस्था छोटी हो तो आर्थिक मददकी जरूरत पड़े तो दूसरे कई ट्रस्ट, संस्था, व्यक्ति हैं जो जरूरतमंदोंको मदद करते हैं।

एक बार १९९० में मैं मुंबई गया हुआ था। उसी दिन मुंबईके स्व० बदरीनारायणजी गाडोदियाका रातको फोन आया। वे वयोवृद्ध सर्वोदयी कार्यकर्ता थे तथा उन्होंने दिल्लीमें 'गोवंश-हत्या-बंदी-हेतु' ६८ दिन उपवास किया था मैंने उनसे पूछा—क्या बात है? उन्होंने कहा कि वसई रोड रेलवे स्टेशनपर बैलोंकी भरी हुई वैगनोंकी पूरी ट्रेन आयी है। वे बैल देवनार कत्लखानेपर कटने चले जायँगे। उनको रोकने-हेतु कोई कानूनी प्रयास करना चाहिये। मुझे मालेगाँव जाना था, परंतु इस महत्त्वपूर्ण कार्यको देखकर मैं रात्रिको मुंबईमें रुक गया और दूसरे दिन प्रातःकाल वसई रोड स्टेशनपर पहुँचा तो वे भी वहाँ आ गये थे। स्टेशन-मास्टरसे पूछताछ करनेपर पता चला कि ये सब बैल राजस्थानसे आये हैं। मुझे मालूम था कि राजस्थानसे बैल कत्ल-हेतु बाहर नहीं जा सकते। तलाश करनेपर पता चला कि बिल्टीपर 'एग्रीकल्चर परपज्' अर्थात् खेतीके लिये बैल मुंबई बुक किये गये हैं, ऐसा लिखा है। जब-कि मुंबईमें खेती होती नहीं तथा वसई रोडपर 'कृषि-उत्पन्न-बाजार-समिति' भी नहीं, जहाँ उनकी बिक्री होती। जहाँ मुंबईमें मनुष्यको खड़े रहनेके लिये जगह नहीं मिलती वहाँ हजारों बैलोंको कहाँ खड़ा करेंगे। इस प्रकार उनका उद्देश्य और उनकी नीति स्पष्ट थी कि बैलोंको ट्रेनसे उतारना और ट्रकमें भरकर देवनार-कत्लखाना ले जाना। यह कोई प्रथम बारका मामला नहीं था। वहाँ इसी प्रकार प्रतिवर्ष हजारों बैल आते थे और कत्लखाने जाते थे। क्योंकि देवनारमें प्रतिदिन ४०० से ज्यादा बैल काटे जाते हैं जो प्रायः राजस्थान और गुजरातसे ही आते हैं। गुजरात राज्यसे भी कटने-हेतु बैल नहीं लाये जा सकते, परंतु आज भी गुजरात राज्यसे चोरी-छिपे ट्रकोंसे प्रतिदिन

३००-४०० बैल कटने-हेतु देवनार-कत्लखान आ ही जाते हैं। अत रलवेके पुलिस-अधीक्षक, निरीक्षकसे मिलकर वसई रोड पुलिस-स्टेशनपर लिखित शिकायत की गयी तथा उन बैलाको जप्त करनेका निर्णय लिया गया। एक ट्रेन आयी उसमसे कुछ बैल रातको ही देवनार चले गये, उसमे १५५ बैल जप्त किये गये। दूसरी ट्रेन आयी उसमे ६१६ बैल जप्त किये गये, इस प्रकार ७७१ बैल कोर्टद्वारा 'अ० भा० कृ० गोसेवा-सघ'के सुपुर्द किये गय। तीसरी ट्रेनके बैल अहमदाबाद फोन करक उनको वहीं रोकनेको कहा गया क्याकि इतन बैल रखनेके लिये स्थान आदिकी व्यवस्था चाहिय थी। अत अहमदाबादके गोप्रेमियोने तीसरी ट्रेनक बैल वहीं उतार लिये। इस प्रकार १ ००० स ज्यादा बैलाको अभयदान मिला। उन बैलाको ट्रेनसे उतारनके लिये वसई रोडपर बडी समस्या उठ खडी हुई। बैल बडी साइजके वजन ५०० के० जी० के थे। उनके सींग बहुत बड-बडे थे और उनका शरीर भी विशाल था—खूब लबे-चोडे। देखते ही भय लगता था। ऐसे बैलाको ट्रेनसे कैसे उतारा जाय? कहीं मार द तो जान भी जा सकती है, किंतु ऐसी स्थितिम 'वर्धमान-सस्कृति-धाम' के ५० वीर सैनिकोने इन सारे बैलोको वैगनोसे बाहर निकाला उन सबको पानी पिलाया। चारा-भूसी खिलाया। 'वर्धमान-जीवदया-केन्द्र लुणी' तथा 'वीरमडल' क लोगोने बादमे उनको बाजरीकी रोटी, गुड तथा चारा आदि देकर उनकी व्यवस्था की। कई लोगोने सहकार्य किया। इस तरह यह प्राणि-रक्षाका सुन्दर कार्य सम्पन्न हुआ।

भारतके कई प्रदशोम 'गोवश-हत्याबदी' का कानून तो बनाया गया है, परतु उस कानूनकी परिपालना कभी नहीं होनेसे कानूनमे क्या कमियाँ ह किसीको पता ही नहीं। सबसे बडी कमी यह है कि किसी भी राज्यने इस कानूनके अन्तर्गत 'जबतक केस चलेगा तबतक कसाईसे जप्त गोवशको कहाँ रखा जाय उसके चारे-पानीकी व्यवस्था कौन करेगा खर्चा कौन देगा आदि'—इन बाताकी कानूनमे कोई व्यवस्था नहीं है। इस कारणसे जप्त पशु ४५१ सीआरपीसीके अनुसार उस व्यक्तिको देना चाहिये जिससे जप्त किया गया हो क्योकि मालिक वही है खरीदीकी पावती उसके नामकी है। वह सँभालनके लिये अर्जी देता है और कोर्टम लिखकर भी देता है कि जब भी कोर्ट कहेगा मैं हाजिर करूँगा। ऐसी स्थितिमे यदि जप्त पशु उसके ताबेमे चले जायँ तो कसाई उसको जिंदा रखकर क्यों चारा खिलवायेगा। जानवरकी कीमत २००-४००- ५०० रुपये और एक जानवरका खर्च सालभरका ३,००० से भी अधिक है तो कौन पागल है जो खर्च करेगा। उसके ताबेमे जाते ही वह उस रातको काट डालेगा। एक-एक केसके हल होनेमे कई साल लग जाते हैं, फिर ५—७ साल बाद कौन-सा जानवर था क्या पता चलेगा?

इस कानूनके विरोधमे बडे प्रयत्नाके बाद कई बार सेशन कोर्ट कई बार उच्च न्यायालय, कई बार सर्वोच्च न्यायालय जाकर इस ४५१ सीआरपी-सक्सनपर प्राणीको उसके मालिकको न दिया जाय और गोरक्षण-सस्था सेवाभावी सस्थाके पास रखा जाय—ऐसा डायरक्शन प्राप्त किया गया। परिणामत एक लाखसे ज्यादा गोवशको हत्यारासे छुडाया गया—बचाया गया। इन कानूनामे जो त्रुटियाँ हैं उनको निकालने-हेतु तथा नये सशोधन करवाने-हेतु विशेष प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है।

राजस्थान मध्यप्रदेश, गुजरात राज्यम 'गोवश-हत्या-बदी' कानून तो बन चुके हैं, परतु उपर्युक्त कस्टडी बाबत अभीतक सशोधन नहीं होनेसे परेशानियाँ उठानी पड रही हैं। इसी प्रकार महाराष्ट्र गुजरात राजस्थान प्रदेशके एक्टम अभीतक यह व्यवस्था भी नहीं हुई कि अपराध करते समय या करनेको हालतमे किसीको पशुके साथमे पकड ले तो उसक साबित करनेकी जिम्मेवारी सरकारपर है अपराधीपर नहीं। यह साबित सरकारको करना है कि ये पशु क़त्लको ले जाये जा रहे थे। ऐसा साबित करना बहुत ही कठिन है, क्याकि पशु रास्तेमे जप्त किये जाते हैं। मध्यप्रदेश तथा पजाब सरकारने यह साबित करनेकी जिम्मेवारी अपराधीगणपर रखी है, उसको साबित करना है कि 'वह उस पशुका कत्ल-हेतु नहीं ले जा रहा था।'

कानूनमे यह कहीं व्यवस्था नहीं है कि केसके निर्णयतक जिसमे चार-चार पाँच-पाँच वर्ष कोर्टोंमे लग जाते हैं, उस समय चारेका खर्च करनेकी जिम्मेवारी किसपर है? गोशाला, पिंजरापोलवाले कोर्टसे जिन जानवरोको ताबेमे लेते हैं उस दिनसे गोशालावाले चारे-पानीकी व्यवस्था करते हैं। पशु-मालिक एक दिन भी चारा नहीं डलवाता जबकि पशु-मालिक स्वयको पशुका मालिक बतलाकर कोर्टमे लडता है। इसलिये चारेके खर्चेकी जिम्मेवारी उस समयतक पशु-मालिकपर होनी

चाहिये। इस प्रकारका जजमट उच्च न्यायालय मुबई हैदराबादसे मिला हुआ है। एक केसम सर्वोच्च न्यायालयतक जाना पडा। वह केस अभी भी सुप्रिम कोर्टमे लबित हैं। गोशाला, पिजरापोलवाले पशुआका रक्षण करते हैं, वे उसके विश्वस्त हैं, मालिक नहीं। कानूनमे पैसे किससे लेना है? इसकी कोई व्यवस्था नहीं है, इसलिये सशोधन करना चाहिये। अभीतक गोवशकी रक्षा इस आधारपर की गयी कि जबतक गोवश गोशाला तथा पिजरापोलम हैं उनके चारे-पानीका खर्चा सस्था करती रहे, परतु कभी सयोगसे किसी कोर्टने पशु वापस देनेका आर्डर कर दिया तो चारेका खर्च वसूल करनेका उस सस्थाको पूर्ण अधिकार है। इसलिये अभीतक एक लाखसे ज्यादा गोवशको इसी आधारपर क़तलसे बचा लिया गया और पशु वापस अपराधीके हाथमे नहीं गये।

गाय, बैल बचाने हैं तो उसके दो ही रास्ते हैं—एक तो किसानोंको गाय-बैलसे प्राप्त होनेवाले गोबर, गोमूत्र एव गोबर-खादकी उपयोगिता बतानी होगी और रासायनिक खादके दुष्परिणाम बतलाने होगे। दूसरा रास्ता यह है कि जहाँ-कहीं गोवशकी खरीदी-विक्री होकर गोवश क़तल-हेतु ले जाये जाते हो चाहे पैदल हो या ट्रकमे हा या रेलम हो उनको कानूनके अन्तर्गत रोकनेका काम करनेवाले व्यक्तियोकी गाँव-गाँवमे समितियाँ बनानी होगी। इस ओर ध्यान दिये बिना गोवश कतलसे नहीं बच सकेगा। इन दोनो माध्यमोका प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। कर्मठ व्यक्तियोकी जरूरत है, जिसे कानूनी जानकारी देकर प्रशिक्षित किया जा सके, तभी गोवशकी रक्षा हो सकेगी। अन्यथा दिन दुगुनी रात चौगुनी गावशकी कतल बढती ही रहेगी।

भारतके इतिहासमे १९५८ का वर्ष गोवशके लिये काला दिन माना जायगा, जब सुप्रिम कोर्टने बूढे-अनुपयोगी बैलोकी कत्लको मान्यता दे दी। परिणामत तबसे बूढे बैलोंकी जगह अच्छे सुदृढ बैल भी कटने लगे तथा गाय भी कटने लगीं और देशका गोवश बडी मात्रामे कत्लखाने पहुँचने लगा।

वर्तमान भारतमे अधिकृत ३,६०० क़त्लखाने सरकारकी स्वीकृतिसे खुल चुके हैं और प्रतिदिन उन क़त्लखानाम ४० ००० से ५०,००० के लगभग गोवश कट रहा है। भारतके आजादीके समय प्रति एक हजार व्यक्तिके पीछे ४५३ गोवश और भैंस-वश भारतम था जो घटते-घटते अभी २३० के भी लगभग नहीं रहा। जबकि दुनियाके अलग-अलग देशोमे एक हजार व्यक्तिके पीछे अर्जेटीनामे २०८९ आस्ट्रेलियामे १ ३६५ कोलम्बियामे ९१९, ब्राजीलम ७२६ है। इससे स्पष्ट है कि भारत-जैसा कृषि-प्रधान देश आज पशुधनम सबसे पीछे हे।

आज गोवशकी रक्षा करना अति कठिनतम कार्य बन गया है। सरकार कत्लखानोके निर्माणम प्रोत्साहन दे रही है मास तथा चमडेके निर्यातमे वृद्धि कर रही है तो गोवश कैसे बचेगा? इस देशम घी-दूध-दहीकी नदियाँ बहती थीं, जहाँ दूध बेचना पूत बेचनेके समान माना जाता था, वहीं आज पशुओके खून तथा मासकी नदियामे बाढ आ रही है।

दुग्ध-वृद्धिके नामपर देशकी उनत जातिकी गायाका सकरित कर उस जातिका नष्ट करनेका अभियान जारापर है। पश्चिमी देशासे साँडाका वीर्य मँगवाकर गायाको गर्भ धारण करवाया जा रहा हे। देशम साँड कहाँसे तैयार होग जबकि छोटे-छोटे बछडोको ही काट डाला जाता है। गाय तथा साँडके नेसर्गिक-मिलनकी योजना ही नष्ट की जा रही है। गायाके साथ जो अन्याय हो रहा है, वह देशकी बरबादीका कारण बनेगा। इसे इतिहास कभी माफ नहीं करगा। वर्तमान नीतियोको देखते हुए लगता है कि सरकारने 'पशुरक्षण-एक्ट' मानो पशुवधको प्रात्साहन-हेतु ही बनाया हे। बगालमे बकरीदके अवसरपर तीन दिनके लिये हर उम्रकी गाय, बछडे, बैल खुलेआम धर्मके नामपर काटे जाते हैं, उसपर प्रतिबन्ध लगे इसलिये सुप्रिम कोर्टमे केस १२ वर्षसे लम्बित पडे हे और गाये बे-रोक-टोक काटी जा रही हैं।

गोवशको रेलवेद्वारा कलकत्ता खेतीके नामपर ले जाया जाता था। उन बैलाको रेलवेसे ले जानेपर प्रतिबन्ध लगाया गया, किंतु कसाई, पशु-व्यापारी इसका पूर्ववत् रेलवेसे ले जाना चाहते हैं। दिल्ली हाईकोर्टमे कस चल रहा हे।

'अखिल भारत कृषि-गोसवा-सघ' भारतके अलग-अलग राज्योके उच्च न्यायालयामे तथा दिल्लीके सर्वोच्च न्यायालयमे 'गोवश-रक्षण-हेतु' रात-दिन प्रयत्नशील हे और भगवान्‌ने चाहा तो इस कार्यम सफलता भी मिलेगी। अत सभी लोगोको इस पुण्य कार्यम अपने-अपने स्तरस अवश्य कार्य करना चाहिये।

जब मालवीयजीने त्रिवेणीका जल लेकर गोरक्षाकी प्रतिज्ञा की

महामना पण्डित मदनमोहनजी मालवीय महाराज गोसेवाकी साकार प्रतिमा थे। जनवरी सन् १९२८ मे प्रयागमे त्रिवेणीके पावन तटपर 'अखिल भारतवर्षीय सनातन धर्मसभा'का अधिवेशन था। व्याख्यान-वाचस्पति प० दीनदयालजी शर्मा शास्त्री भी अधिवेशनमे महामनाके साथ उपस्थित थे।

महान् गोभक्त हासानन्दजी वर्मा गोहत्याके विरोधमे काला कपडा पहने तथा मुँहपर कालिख पोते हुए अधिवेशनमे उपस्थित हुए।

मालवीयजी महाराजको सम्बोधित कर गोभक्त हासानन्दजीने कहा—'गऊ माता भारत तथा हिन्दुत्वका मूल है। आप 'गोहत्या-बंदीके' लिये कोई ठोस योजना बनाइये।'

इसपर महामना बोल उठे—'हासानन्द! तुम मुखमे कालिख लगाकर फिर मेरे सामने आ गये। अरे गोहत्याके कारण केवल तुम्हारा मुँह ही काला नहीं हो रहा है, हम सब भारतवासियोके मुखपर कालिख है। आओ, गोरक्षाके भीम! गङ्गाजलसे तुम्हारे मुखकी कालिमाको धो दूँ।' महामनाने त्रिवेणीके पावन जलसे गोभक्त हासानन्दजीके मुँहकी कालिख धो डाली तथा उसी समय त्रिवेणीका पावन गङ्गाजल हाथमे लेकर प्रतिज्ञा की 'हम जीवनभर गोरक्षा तथा गोसेवाके लिये प्रयासरत रहेगे।'

इसी समय पण्डित दीनदयालजीने 'गो-सप्ताह' मनानेका प्रस्ताव रखा तथा 'अखिल भारतीय गोरक्षा-कोष'की स्थापनाकी घोषणा की गयी।

महामना मालवीयजी महाराजने सन् १९२८ में कलकत्तामे हुए कांग्रेसके अधिवेशनमे स्पष्ट कहा था—'गौ माता भारतवर्षका प्राण है। उसकी हत्या धर्मप्राण भारतमें सहन नहीं की जानी चाहिये।'
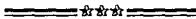
गोरक्षाका सर्वोत्तम साधन—भगवत्प्रार्थना

भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल॥

गोसाधुदेवताविप्रवेदाना रक्षणाय वै।
तनु धत्ते हरि साक्षाद् भगवानात्मलीलया॥

'गोसेवा-अङ्क' मे गौकी दुर्दशा और इस दुर्दशासे गौको उबारनेके साधनोपर विशिष्ट विद्वानो और सूक्ष्मदर्शी विशेषज्ञद्वारा भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणसे बहुत विचार किया गया है और अपने-अपने स्थानमे वे सभी विचार महत्त्वपूर्ण हैं और उनसे यथायोग्य लाभ उठानेकी बडी आवश्यकता है। आशा है कि गो-प्रेमी तथा देशप्रेमी पुरुष भलीभाँति मनन करके उनको यथायोग्य काममे लायगे। एक साधन और भी है, और वह है—भगवान्से कातर प्रार्थना। जब-जब पृथ्वीपर सकट आया (पृथ्वीपर सकट आनेका अर्थ ही है—गो-ब्राह्मणपर सकट आना), तभी तब ऋषि-देवताओने गोरूपधारिणी या गोरूपा पृथ्वीके पीछे-पीछे जाकर भगवान्से करुण प्रार्थना की, भगवान्को पुकारा और फलत उनका सकट टला। भगवान् अवतीर्ण हुए। *'बिप्र धेनु सुर सत हित लीन्ह मनुज अवतार।'*

भगवान्की कृपा और भगवान्के बलसे असम्भव भी सम्भव हो जाता है। अत गौकी रक्षाके लिये सबसे बढकर साधन है—हृदयकी सच्ची, अनन्य, करुण प्रार्थना। अतएव सबसे आवश्यक है—भगवान्के मङ्गलमय विधानकी मङ्गलमय व्यवस्थाके नीचे आना, अपनेको भगवान्के कल्याणमय चरणामे पूर्णतया समर्पित कर देना। जिनका भगवत्प्रार्थनामे विश्वास है उनको चाहिये कि वे श्रद्धापूर्वक नित्य भगवान्से कातर प्रार्थना किया करे। यदि प्रार्थना सत्य होगी और हृदयसे होगी तो ऐसे सयोग अपने-आप बनेगे जिनसे गोरक्षाका मार्ग सुगम हो जायगा।
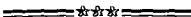
'गोवध-बंदी' के लिये महापुरुषों एव गोभक्तोकी वाणी

(श्रीश्रीकिसन काबरा)

गोवशकी रक्षाम देशकी रक्षा समायी हुई है। —महामना मालवीयजी

गोवशकी रक्षा ईश्वरकी सारी मूक सृष्टिकी रक्षा करना है। भारतकी सुख-समृद्धि गौके साथ जुड़ी हुई है।

—महात्मा गाँधीजी

समस्त गोवशकी हत्या कानूनन बद होनी चाहिये। —गोप्राण स्वामी करपात्रीजी महाराज

गोका समस्त जीवन देश-हितार्थ समर्पित है। अत भारतमे गोवध नहीं होना चाहिये। —गोधामवासिनी माता आनन्दमयी माँ

मैं हिन्दू और मुसलमानसे इस्तदुआ करता हूँ कि यह सबका फर्ज है कि इस हमारी माँ गायकी हिफाजत करें। खुदा बरकत करेगा।

—शेख खुद्दीन शाह

यही आस पूरन करो तुम हमारी,
मिटे कष्ट गौअन, छुटै खेद भारी। —गोभक्त गुरुगोविन्दसिहजी

जैसे कोई अपनी मातापर किये गये अत्याचारको सहन नहीं करेगा, उसी प्रकार गोमाताकी हत्याको सहन नहीं करेगा।

—गोलोकवासी श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका

कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाका दारोमदार गोवशपर निर्भर है। जो लोग यन्त्रीकृत 'फार्मों' के और तथाकथित वैज्ञानिक पद्धतियाके सपने देखते है, वे एक अवास्तविक ससारमे रहते है। हमारे लिये गोहत्या-बदी अनिवार्य है।

—स्व० जयप्रकाशनारायणजी

भारतम गोवशके प्रति करोड़ो लोगोम आस्था है, उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये।

—भू०पू० प्रधान मन्त्री स्व० लालबहादुरजी शास्त्री

सम्पूर्ण गोवश परम उपकारी है। सबका कर्तव्य है कि तन-मन-धन लगाकर गोहत्या पूर्णरूपसे बद करावे।

—गोप्रेमी स्व० सेठ जुगलकिशोरजी बिडला

गोवशके तीन बड़े दुश्मनाको दूर भगाओ-१-ट्रैक्टर, २-बछड़े-बछियाको मारकर निकाला गया कॉफ लेदर और ३-गोमासके व्यापारीको। —काशीनिवासी श्रीअब्दुल रज्जाक

जबतक भारतकी भूमिपर गोरक्त गिरगा, तबतक देश सुख-शान्ति और धन-धान्यसे वञ्चित रहेगा।

—गोप्राण हनुमानप्रसादजी पोद्दार

कृषि-प्रधान भारतम किसी भी उम्रके गाय-बैलोकी हत्या कानूनन नहीं होनी चाहिये। गोहत्या मातृहत्या है। सविधानमें आवश्यक सशोधन किया जाकर सम्पूर्ण गोवश-हत्या-बदीका केन्द्रीय कानून बने। उसमे कोई अपवाद न हो। एक भी अपवाद रहा तो पूरा गोवश कटेगा। गोवशक मासका निर्यात पूर्णत बद हो। इसके लिये सत्याग्रह करना पड़े तो सत्याग्रह करो।

—सत विनोबाजी

सम्पूर्ण गोवश-हत्या बद करके राष्ट्रकी उन्नतिके लिये 'गौ' को 'राष्ट्र-पशु' घोषित कर भारत-सरकार यशोभागी बने।

—जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज

आज गोवशका हनन हो रहा है। गोरक्षण आजका सर्वोत्त राष्ट्रहित है। —स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी सरस्वती

गोरक्षासे बढकर कोई धर्म नहीं है और गोहत्यासे बढकर कोई पाप नहीं है। —स्वामी श्रीसीतारामशरणजी अयोध्या

गोवध-बदी-हेतु प्रत्यक व्यक्ति नित्य एक हजार मधुसूदन-नामका जाप करे। —स्वामी श्रीसीतारामदास आकारनाथजी

'गौ' के बिना भारत-भूमिकी सत्ता अक्षुण्ण नहीं रह सकती। —श्रीशरद्वल्लभा 'बेटी जी'

***

महर्षि आपस्तम्बकी गो-भक्ति और उनका गो-प्रेम

(श्रीखेमचन्द्रजी सैनी)

पूर्वकालमे आपस्तम्ब नामसे प्रसिद्ध एक महर्षि हो गये है, जो ब्राह्मणोमे श्रेष्ठ एव उपवास-व्रतम तत्पर रहनेवाले थे। उन्होने काम, क्रोध लोभ और मोहको सदाके लिये त्यागकर नर्मदा और मत्स्याके सगमके जलमे प्रवेश किया था। जलके भँवरम बैठे हुए महातपस्वी आपस्तम्बको मल्लाहोने मछलियोसहित जाल उठाते समय जलके बाहर खींच लिया। उन्हे इस दशामे देखकर वे निषाद भयसे व्याकुल हो उठे और मुनिके चरणामे प्रणाम करके इस प्रकार बोले—'ब्रह्मन्! हमने अनजानमे बडा भारी अपराध कर डाला है, आप क्षमा करे। इसके सिवा इस समय आपका प्रिय कार्य क्या है, उसके लिये आज्ञा द।'

मुनिने देखा कि इन मल्लाहाद्वारा यहाँकी मछलियोका बडा सहार हो रहा है। यह देखकर उनका हृदय करुणासे भर आया। वे दु खी होकर बोले—'भेददृष्टि रखनेवाले जीवोके द्वारा दु खमे डाले हुए प्राणियोकी ओर जो अपने सुखकी इच्छासे ध्यान नही देता उससे बढकर क्रूर इस ससारमे दूसरा कौन हे। अहो! स्वस्थ प्राणियोके प्रति यह निर्दयतापूर्ण अत्याचार तथा स्वार्थके लिये उनका व्यर्थ बलिदान कैस आश्चर्यकी बात है? ज्ञानियोमे भी जो केवल अपने ही हितम तत्पर है, वह श्रेष्ठ नहीं है, क्याकि यदि ज्ञानी पुरुष भी अपने स्वार्थका आश्रय लेकर ज्ञानम स्थित होते हैं तो इस जगत्के दु खातुर प्राणी किसकी शरणम जायँगे। जो मनुष्य स्वय अकेला सुख भोगना चाहता है उसे मुमुक्षु पुरुष पापीसे भी महापापी बताते हैं। मेरे लिये वह कौन-सा उपाय है, जिससे में दु खी चित्तवाले सम्पूर्ण जीवाके भीतर प्रवेश करके अकेला ही सबके दु खाको भोगता रहूँ। मेरे पास जो कुछ भी पुण्य है वह सभी दीन-दुखियाके पास चला जाय और उन्होने जो कुछ पाप किया हो, वह सब मेरे पास आ जाय। इन दरिद्र, विकलाङ्ग तथा रोगी प्राणियाको देखकर जिसके हृदयम दया उत्पन्न नहीं होती, वह मेरे विचारसे मनुष्य नहीं राक्षस है। जा समर्थ होकर भी प्राण-सकटमे पडे हुए भयविह्वल प्राणियाकी रक्षा नहीं करता, वह उसके पापको भोगता है। अत मैं इन दीन-दु खी मछलियाके दु खसे मुक्त करनेका कार्य छोडकर मुक्तिको भी वरण करना नहीं चाहता, फिर स्वर्गलोककी तो बात ही क्या है?'

मुनिका यह वचन सुनकर मल्लाह लोग बहुत घबराये। उन्होने महाराज नाभागके पास जाकर सारी बाते यथार्थरूपसे बतलायीं। नाभाग भी वह वृत्तान्त सुनकर अपने मन्त्रियो तथा पुरोहितोके साथ मुनिका दर्शन करनेके लिये वहाँ आये और बोले—'भगवन्! आज्ञा दीजिये, में आपकी कौन-सी सेवा करूँ?'

आपस्तम्ब बोले—राजन्! ये मल्लाह बडे दु खसे जीविका-निर्वाह करते हैं। इन्होने मुझे जलसे बाहर निकालकर बडा भारी परिश्रम किया है। अत तुम मेरा जो उचित मूल्य समझो वह इन्हे दे दो।

नाभाग बोले—भगवन्! मैं इन निषादाको आपके बदलेमे एक लाख स्वर्ण-मुद्रा देता हूँ।

आपस्तम्बने कहा—राजन्! मेरा मूल्य एक लाख ही नियत करना उचित नहीं है। मेरे योग्य जो मूल्य हो वह इन्ह अर्पण करो। इस सम्बन्धमे अपने मन्त्रियोके साथ विचार कर लो।

नाभाग बोले—द्विजश्रेष्ठ! यदि पूर्वोक्त मूल्य उचित नहीं है तो इन निषादाको एक करोड दे दिया जाय और यदि यह भी आपके योग्य न हो तो आज्ञा होनेपर और

अधिक भी दिया जा सकता है।

आपस्तम्ब बोले—राजन्! मैं एक करोड या इससे अधिक मूल्यके योग्य नहीं हूँ। मेरे योग्य मूल्य चुकाओ। ब्राह्मणोंसे सलाह ले लो।

नाभागने कहा—यदि ऐसी बात है तो मेरा आधा या पूरा राज्य इन निषादोंको दे दिया जाय। मेरे मतमें यह मूल्य आपके योग्य होगा, किंतु आप किस मूल्यको पर्याप्त मानते हैं, यह स्वयं बतानेकी कृपा करें।

आपस्तम्ब बोले—राजन्! तुम्हारा आधा या पूरा राज्य भी मेरे लिये उचित मूल्य नहीं है। मूल्य वह दो जो मेरे योग्य हो। समझमें न आता हो तो ऋषियोंके साथ विचार कर लो।

महर्षिका यह वचन सुनकर मन्त्रियों और पुरोहितोंके साथ विचार-विमर्श करते हुए धर्मात्मा राजा नाभाग बडी चिन्तामें पड गये। इसी समय महातपस्वी लोमश ऋषि वहाँ आ गये, उन्होंने नाभागसे कहा—'राजन्! भय न करो। मैं मुनिको संतुष्ट कर लूँगा।'

राजा बोले—'महाभाग! आप ही इनका मूल्य बता दें अन्यथा ये महर्षि क्रोधमें आकर मेरे कुटुम्ब, कुल, बन्धु-बान्धव तथा समस्त चराचर त्रिलोकीको भस्म कर सकते हैं फिर मुझ-जैसे अत्यन्त तुच्छ, दीन और विषयी मनुष्यकी तो बात ही क्या है?'

लोमशने कहा—'महाराज! तुम उनका मूल्य देनेमें समर्थ हो। श्रेष्ठ द्विज जगत्‌के लिये पूजनीय हैं और गौएँ भी दिव्य एवं पूजनीय मानी गयी हैं। अतः तुम उनके लिये मूल्यके रूपमें 'गौ' ही दो।'

लोमशजीका यह वचन सुनकर राजा नाभाग मन्त्री और पुरोहितोंके साथ बहुत प्रसन्न हुए और हर्षमें भरकर बोले—भगवन्! उठिये-उठिये! मुनिश्रेष्ठ! यह आपके लिये योग्यतम मूल्य प्रस्तुत कर दिया गया है।

आपस्तम्बने कहा—अब मैं प्रसन्नतापूर्वक उठता हूँ। राजन्! तुमने उचित मूल्य देकर मुझे खरीदा है। मैं गौओंसे बढकर दूसरा मूल्य कोई ऐसा नहीं देखता जो परम पवित्र एवं पापोंका नाश करनेवाला हो। गौओंकी परिक्रमा करनी चाहिये। वे सदा सबके लिये वन्दनीय हैं। गाएँ मङ्गलका स्थान हैं, दिव्य हैं। स्वयं ब्रह्माजीने इन्हें दिव्यगुणोंसे विभूषित बनाया है। जिनके गोबरसे ब्राह्मणोंके घर और देवताओंके मन्दिर भी शुद्ध होते हैं, उन गौओंसे बढकर अन्य किसको बतायें। गौओंके मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी—ये पाँचों वस्तुएँ पवित्र हैं और सम्पूर्ण जगत्‌को पवित्र करती हैं। गायें मेरे आगे रहें, गायें मेरे पीछे रहें, गायें मेरे हृदयमें रहें और मैं गौओंके मध्यमें निवास करूँ—

गावः प्रदक्षिणीकार्या वन्दनीया हि नित्यशः।
मङ्गलायतनं दिव्याः सृष्टास्त्वेताः स्वयम्भुवा॥
अप्यागाराणि विप्राणां देवतायतनानि च।
यद्गोमयेन शुद्ध्यन्ति किं ब्रूमो ह्यधिकं ततः॥
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिस्तथैव च।
गवां पञ्च पवित्राणि पुनन्ति सकलं जगत्॥
गावो मे चाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे हृदये चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

(स्कन्द आ० रेवा० १३। ६२—६५)

जो प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओंके समय नियम-परायण एवं पवित्र होकर 'गावो मे चाग्रतो नित्य०' इत्यादि श्लोकका पाठ करता है, वह सब पापोंसे मुक्त होकर स्वर्गलोकमें जाता है। प्रतिदिन भक्तिभावसे गौओंको गोग्रास देनेमें श्रद्धा रखनी चाहिये। जो प्रतिदिन गोग्रास अर्पण करता है उसने अग्निहोत्र कर लिया, पितरोंको तृप्त कर दिया और देवताओंकी पूजा भी सम्पन्न कर ली—

तेनाग्नयो हुताः सम्यक् पितरश्चापि तर्पिताः।
देवाश्च पूजितास्तेन यो ददाति गवाह्निकम्॥

(स्कन्द० आ० रेवा० १३। ६८)

गोग्रास देते समय प्रतिदिन इस मन्त्रार्थका चिन्तन करे। सुरभिकी पुत्री गोजाति सम्पूर्ण जगत्‌के लिये पूज्य है, वह सदा विष्णुपदमें स्थित है और सर्वदेवमयी है। मेरे दिये हुए इस ग्रासको गौ माता देखें और ग्रहण करें—

सौरभेयी जगत्पूज्या नित्यं विष्णुपदे स्थिता।
सर्वदेवमयी ग्रासं मया दत्तं प्रतीक्षताम्॥

(स्कन्द० आ० रेवा० १३। ६९)

ब्राह्मणोंकी रक्षा करने, गौओंको खुजलाने और

सहलाने तथा दीन-दुर्बल-दु खी प्राणियाका पालन करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकम प्रतिष्ठित होता है। यज्ञका आदि-अन्त और मध्य गोआको ही बताया गया है। वे दूध घी और अमृत सब कुछ देती ह। इसलिये गोआका दान करना चाहिये और उनकी प्रतिदिन पूजा करनी चाहिये। ये गोएँ स्वर्गलोकमे जानेके लिये सीढी बनायी गयी ह।

गोओके इस उत्तम माहात्म्यको सुनकर निषादाने महाभाग आपस्तम्बजीको प्रणाम करके कहा—'प्रभो! हमने सुना है कि साधु पुरुषाके सम्भाषण, दर्शन स्पर्श, श्रवण और कीर्तन सभी पवित्र करनेवाले हैं। हमने यहाँ आप-जैसे महात्माके साथ वार्तालाप किया और आपका दर्शन भी कर लिया। अब हम आपकी शरणम आये हैं, आप हमारे ऊपर अनुग्रह कीजिये।' आपस्तम्बजी बोले—'इस गोको तुमलाग ग्रहण करो। इससे तुम सब लोग पापमुक्त हो जाओगे। निषाद निन्दित कर्मसे युक्त होनेपर भी प्राणियाके मनमे प्रीति उत्पन्न करके इन जलचारी मत्स्याके साथ स्वर्गलोकम जायँ। मैं नरकको देखूँ या स्वर्गमे निवास करूँ, किंतु मेरे द्वारा मन, वाणी, शरीर और क्रियासे जो कुछ भी पुण्यकर्म बना हो, उससे ये सभी दु खार्त प्राणी शुभ गतिको प्राप्त हो।'

तदनन्तर शुद्ध चित्तवाले गोप्रेमी महर्षि आपस्तम्बकी सत्यवाणीके प्रभावसे वे सभी मल्लाह मछलियाके साथ स्वर्गलोकम चले गये।
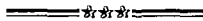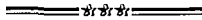
गुजरातके गौरवशाली गो-सेवक—दाना भगत

(डॉ० श्रीकमलजी पुजाणी)

सोराष्ट्र—गुजरातके सुविश्रुत गो-सेवकाम दाना भगतका नाम विशेष स्मरणीय है। वे जीवनभर गायाका झुड लेकर सोराष्ट्रक गॉव-गॉव घूमते रह आर गोमाताकी जय-जयकार करत रहे। लाग उन्ह 'घुमक्कड गोभगत' कहते थे।

दाना भगतका जन्म विक्रम-सवत् १७८४ म सौराष्ट्रक अमरली जिलेक चलाला नामक गाँवम हुआ था। वे जन्मसे अधे थे। प्रकृतिने उन्ह सुमधुर कण्ठ दिया था। उनके पिता गापालनका व्यवसाय करते थे। बचपनम वे अपने पिताक साथ गायाको चरान जाते और पेडके नीचे बैठकर भजन-कीर्तन किया करते। कभी-कभी दोपहरके समय गाय भी उनके आस-पास आकर बैठ जातीं और भजन-कीर्तन सुनता।

कहते हैं कि एक बार किसी सत पुरुषने बालक दानाको गायाक बीच कीर्तन करते देखा। वे कुछ समय वहाँ रुक गये आर भजन सुनने लगे। जब उन्ह पता चला कि बालक देख नहीं पाता तब वे दयार्द्र हो गय। उन्हाने बालकक पिताका अपने पास बुलाया और एक गायकी आर सकत करत हुए उस दुह लानका आदश दिया। फिर महात्माजी उस दूधसे बालक दानाकी आँख धोने लगे। कुछ ही क्षणामे बालक चिल्ला उठा—'मैं देख सकता हूँ। मुझे सब कुछ दिखायी देता है।'

बस, उस दिनसे दानाने अपना जीवन गो-सेवाके लिये समर्पित कर दिया। गो-चारण-व्रत उनके जीवनका मुख्य ध्येय बन गया। गौ माताकी सतत सेवा और गो-दुग्धके सतत सवनसे उन्हे अलौकिक सिद्धि प्राप्त होने लगी। गायोको लेकर वे सौराष्ट्र—गुजरातम घूमने लगे।

एक बार दाना भगत गायाके साथ गिरनार पर्वतके आस-पास घूम रहे थे। गाये चरती-चरती ऐसे स्थलपर पहुँच गयीं, जहाँ पानीका नितान्त अभाव था। दाना भगत पानीकी खाजम भटकने लगे। कुछ लोगाने बताया—'भगतजी! यहाँ पानी मिलना कठिन है, आप गायाको लेकर शीघ्र ही पर्वतीय प्रदेशके बाहर निकल जाइये, नहीं तो ये प्यासस मर जायँगी।'

भगतजीने लोगाकी बातापर ध्यान न दिया। वे पानीकी खोज करते रहे। लोग भी कुतूहलवश उनके साथ चलने लगे।

कुछ देर बाद भगतजी एक बडे पत्थरके पास आकर रुक गये ओर लोगासे कहने लगे—'आप लोग 'गोमाताकी जय' बोलकर यह पत्थर हटा द। इसक नीचे पानीका सोता छिपा हुआ है।'

लागोने पत्थर हटाया तो उस गड्ढेमे धीरे-धीरे पानी ऊपर आने लगा। कुछ ही देरम पूरा गड्ढा पानीसे भर गया। लाग हर्ष-विभोर होकर गोमाताकी जय-जयकार करने लगे। भगतजीने गायोको पानी पिलाया ओर दूसरे गॉवकी ओर चल पडे। गिरनार पर्वतके जगलामे आज भी वह सोता पानीसे भरा पडा है और दाना भगतकी गोसेवाकी साक्षी दे रहा है।

गोसेवासे इन्हे कई प्रकारकी सिद्धियाँ प्राप्त थीं और अनेको चमत्कारकी घटनाएँ इनके जीवनसे जुडी थी। सौराष्ट्रम आज भी गोसेवक दाना भगतका नाम बडी ही श्रद्धासे लिया जाता है।

कुछ बलिदानी गोभक्त

(श्रीशिवकुमारजी गोयल)

(१)

कटारपुरके गोभक्त शहीद

गाय अनादिकालसे हिन्दुत्वका मानबिन्दु रही है। मुसलमानाके आक्रमण तथा देशके पराधीन होनेसे पूर्व गोरक्तकी एक बूँद भी पृथ्वीपर नहीं गिरती थी किंतु मुसलमानाद्वारा देशको पराधीन किये जानेके बाद गोहत्याका कलक चालू हो गया।

आज 'गोहत्या-बदी-आन्दोलन' करनेवालाको यह दलील दी जाती हे कि मुसलमाना तथा अग्रेजाक समय गोभक्त कहाँ थ? किंतु अपने ही गौरवमय इतिहाससे सर्वथा अनभिज्ञ तथाकथित राजनेतागण यह भी नहीं जानत कि भारतका इतिहास इस बातका साक्षी है कि हिन्दूने कभी भी गोहत्याके कलकको सहन नहीं किया। छत्रपति शिवाजीने अल्प आयुमे ही गोहत्यारेको मौतके घाट उतारा और आजन्म गोभक्षकोको मिटाकर 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापनाके लिये ओरगजेबसे टक्कर लेते रहे। महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिह, बन्दा वीर वैरागी, गुरु तेगबहादुर आदिने गोहत्याका कलक मिटानेके लिये जीवनभर सघर्ष किया तथा अपने प्राणोकी आहुति दी। मुगलकालमे एक नहीं हजारो व्यक्तियोने गोरक्षार्थ अपना जीवन होम दिया।

अग्रेजाके शासनकालम भी हिन्दू जनता गोहत्याके विरुद्ध समय-समयपर सघर्ष करती रही। १८५७ मे वीर मगल पाडे आदिने गोहत्याके कलकके विरुद्ध ही बदूक उठायी थी।

मगल पाडे

सन् १९१८ की बात हे। हरिद्वारके निकट कटारपुर नामक ग्रामम बकरीदके दिन मुसलमानाने गोहत्या करनकी घोषणा की।

इस क्षेत्रक हिन्दुआने एक स्वरसे निश्चय किया कि

सहलाने तथा दीन-दुर्वल-दु खी प्राणियाका पालन करनसे मनुष्य स्वर्गलोकम प्रतिष्ठित हाता है। यज्ञका आदि-अन्त ओर मध्य गोआको ही वताया गया हे। वे दूध घी ओर अमृत सव कुछ दती ह। इसलिये गोआका दान करना चाहिये ओर उनकी प्रतिदिन पूजा करनी चाहिये। ये गाएँ स्वर्गलोकम जानेके लिये सीढी वनायी गयी हें।

गोआके इस उत्तम माहात्म्यको सुनकर निषादाने महाभाग आपस्तम्बजीका प्रणाम करके कहा—'प्रभो! हमने सुना हे कि साधु पुरुषाके सम्भाषण, दर्शन, स्पर्श, श्रवण और कीर्तन सभी पवित्र करनवाल हैं। हमने यहाँ आप-जेसे महात्माक साथ वार्तालाप किया और आपका दर्शन भी कर लिया। अव हम आपकी शरणम आय हैं, आप हमार ऊपर अनुग्रह काजिय।' आपस्तम्वजी वोल—'इस गौका तुमलाग ग्रहण करो। इसस तुम सव लाग पापमुक्त हा जाओगे। निषाद निन्दित कर्मसे युक्त होनपर भी प्राणियाके मनम प्रीति उत्पन्न करक इन जलचारी मत्स्याक साथ स्वर्गलोकम जायँ। में नरकको दखूँ या स्वर्गम निवास करूँ, किंतु मर द्वारा मन, वाणी, शरीर और क्रियास जो कुछ भी पुण्यकर्म वना हो उससे ये सभी दु खार्त प्राणी शुभ गतिको प्राप्त हा।'

तदनन्तर शुद्ध चित्तवाल गाप्रमी महर्षि आपस्तम्वकी सत्यवाणीक प्रभावसे व सभी मल्लाह मछलियाक साथ स्वर्गलोकम चल गये।

गुजरातके गौरवशाली गो-सेवक—दाना भगत

(डॉ० श्रीकमलजी पुजाणी)

साराष्ट्र—गुजरातके सुविश्रुत गो-सेवकाम दाना भगतका नाम विशेष स्मरणीय हे। वे जीवनभर गायाका झुड लेकर साराष्ट्रके गाँव-गाँव घूमते रह ओर गोमाताकी जय-जयकार करते रहे। लोग उन्ह 'घुमक्कड गोभगत' कहते थे।

दाना भगतका जन्म विक्रम-सवत् १७८४ म सौराष्ट्रके अमरेली जिलेके चलाला नामक गाँवम हुआ था। वे जन्मसे अधे थे। प्रकृतिने उन्ह सुमधुर कण्ठ दिया था। उनके पिता गापालनका व्यवसाय करते थे। बचपनम वे अपने पिताके साथ गायाको चराने जाते ओर पेडके नीचे वैठकर भजन-कीर्तन किया करते। कभी-कभी दोपहरके समय गाये भी उनके आस-पास आकर बैठ जातीं और भजन-कीर्तन सुनतीं।

कहते ह कि एक बार किसी सत पुरुषने बालक दानाको गायाक वीच कीर्तन करते देखा। वे कुछ समय वहाँ रुक गये आर भजन सुनने लगे। जब उन्हं पता चला कि वालक देख नहीं पाता तब वे दयार्द्र हो गये। उन्हाने वालकके पिताका अपने पास बुलाया आर एक गायकी आर सकत करते हुए उसे दुह लानका आदेश दिया। फिर महात्माजी उस दूधसे वालक दानाकी आँख धोने लगे। कुछ ही क्षणामें बालक चिल्ला उठा—'में देख सकता हूँ। मुझे सब कुछ दिखायी देता है।'

वस उस दिनसे दानाने अपना जीवन गो-सेवाके लिये समर्पित कर दिया। गो-चारण-व्रत उनके जीवनका मुख्य ध्येय बन गया। गौ माताकी सतत सेवा आर गो-दुग्धके सतत सेवनस उन्ह अलोकिक सिद्धि प्राप्त होने लगी। गायाको लेकर वे सोराष्ट्र—गुजरातमे घूमने लगे।

एक बार दाना भगत गायोके साथ गिरनार पर्वतके आस-पास घूम रहे थे। गाय चरती-चरती ऐसे स्थलपर पहुँच गयीं जहाँ पानीका नितान्त अभाव था। दाना भगत पानीकी खाजमे भटकने लगे। कुछ लोगाने बताया—'भगतजी! यहाँ पानी मिलना कठिन है, आप गायाको लेकर शीघ्र ही पर्वतीय प्रदेशके बाहर निकल जाइये नहीं ता ये प्याससे मर जायँगी।'

भगतजीने लागोकी वातापर ध्यान न दिया। वे पानीकी खोज करते रहे। लोग भी कुतूहलवश उनके साथ चलने लगे।

कुछ देर बाद भगतजी एक बडे पत्थरके पास आकर रुक गये और लोगोसे कहने लग—'आप लोग 'गोमाताकी जय' बोलकर यह पत्थर हटा द। इसके नीचे पानीका सोता छिपा हुआ है।'

लोगाने पत्थर हटाया तो उस गड्ढेमे धीरे-धीरे पानी ऊपर आने लगा। कुछ ही देरमे पूरा गड्ढा पानीसे भर गया। लोग हर्ष-विभोर होकर गोमाताकी जय-जयकार करने लगे। भगतजीने गायाको पानी पिलाया और दूसरे गॉवकी ओर चल पडे। गिरनार पर्वतके जगलोमे आज भी वह सोता पानीसे भरा पडा है और दाना भगतकी गोसेवाकी साक्षी दे रहा है।

गोसेवासे इन्हे कई प्रकारकी सिद्धियाँ प्राप्त थीं और अनेका चमत्कारकी घटनाएँ इनके जीवनसे जुडी थीं। सौराष्ट्रम आज भी गोसेवक दाना भगतका नाम बडी ही श्रद्धासे लिया जाता है।

कुछ बलिदानी गोभक्त

(श्रीशिवकुमारजी गोयल)

(१)

कटारपुरके गोभक्त शहीद

गाय अनादिकालसे हिन्दुत्वका मानबिन्दु रही है। मुसलमानोके आक्रमण तथा देशके पराधीन होनेसे पूर्व गारक्तकी एक बूँद भी पृथ्वीपर नहीं गिरती थी, कितु मुसलमानाद्वारा देशको पराधीन किये जानेके बाद गाहत्याका कलक चालू हो गया।

आज 'गोहत्या-बदी-आन्दोलन' करनेवालोको यह दलील दी जाती है कि मुसलमाना तथा अग्रेजोके समय गोभक्त कहाँ थे? कितु अपने ही गौरवमय इतिहाससे सर्वथा अनभिज्ञ तथाकथित राजनेतागण यह भी नहीं जानते कि भारतका इतिहास इस बातका साक्षी है कि हिन्दूने कभी भी गोहत्याके कलकको सहन नहीं किया। छत्रपति शिवाजीने अल्प आयुमे ही गोहत्यारेको मातके घाट उतारा और आजन्म गोभक्षकोको मिटाकर 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापनाके लिय औरगजेबसे टक्कर लेते रहे। महाराणा प्रताप, गुरु गाविन्दसिह, वन्दा वीर वैरागी, गुरु तेगबहादुर आदिने गाहत्याका कलक मिटानेके लिये जीवनभर सघर्ष किया तथा अपने प्राणाकी आहुति दी। मुगलकालमे एक नहीं हजारा व्यक्तियाने गोरक्षार्थ अपना जीवन होम दिया।

अग्रेजाके शासनकालमे भी हिन्दू जनता गाहत्याके विरुद्ध समय-समयपर सघर्ष करती रही। १८५७ मे वीर मगल पाडे आदिने गोहत्याके कलकके विरुद्ध ही बदूक उठायी थी।

मगल पाडे

सन् १९१८ की बात है। हरिद्वारके निकट कटारपुर नामक ग्रामम बकरीदके दिन मुसलमानाने गाहत्या करनेकी घोषणा की।

इस क्षेत्रके हिन्दुओने एक स्वरसे निश्चय किया कि

'हमार जीवित रहत इस पावन तीर्थकी भूमिपर गोमाताके रक्तकी एक बूँद भी नहीं गिरन दी जायगी।' उन दिना ज्वालापुरम थानेदार मुसलमान था। उसके सकतपर मुसलमानान १८ सितम्बरको गायाका कत्ल करनेके लिये सजाकर जुलूस निकाला। हनुमान्-मन्दिरके महन्त रामपुरीजीके नेतृत्वम हिन्दुआने डटकर गोहत्याराका प्रतिराध किया। कसाई जिस गायका हत्याके लिये सजा कर ल जा रह थे, महात्मा रामपुरीजीन झपटकर रस्सा काटकर उस गायका मुक्त करा लिया। गोमाता भाग गयी तथा मुक्त हा गयी। गोहत्यार महात्मा रामपुरीजीपर टूट पड। उनके शरीरपर जगह-जगह छुराक ४८ घाव लग। इससे हिन्दू जनता गाहत्याराघर टूट पडी। परिणामस्वरूप अनक गाहत्याराको प्राणासे हाथ धाना पडा। हिन्दू जनताने प्राणापर खलकर कालक गालम जानवाली गायाको बचा लिया।

अग्रज मुसलमानाके साथ षड्यन्त्र करक हिन्दुआका दमन करना चाहत थे अत अग्रज अधिकारियाने कटारपुरके हिन्दुआपर अमानुषिक अत्याचार एव अधाधुध गिरफ्तारियाँ प्रारम्भ कर दीं। १७२ हिन्दुआका गिरफ्तार कर लिया गया।

अदालतम मुकद्दमका नाटक रचा गया आर ८ अगस्त १९१९ का अग्रज जजाक ट्रिब्यूनलन महन्त ब्रह्मदास उदासान चा० जानकादास डॉ० पूणप्रसाद तथा श्रीमुखा चाहानको फाँसी और १३५ गाभक्ताको काला पानाका दण्ड दिया। हरिद्वारक थानेदार श्रीशिवदयालसिहका भी आजन्म कारावासका दण्ड दिया गया।

महामना प० मदनमाहन मालवायजान गाभक्ताकी मुक्तिक लिय भारा प्रयास किया किंतु अग्रज सरकारक कानपर जूँ नहीं रगी।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुरक छात्राका भी इस काण्डमें फँसानका प्रयास किया गया। गुरुकुल महाविद्यालयक आचाय तथा प्रख्यात विद्वान् आचाय नरदव शास्त्रा वदतीर्थ उन दिना अमृतसरम हा रह काग्रस अधिवशनम पहुँचकर महात्मा गाँधाका कटारपुर-काण्डका घटनास अवगत कराया था तथा गाभक्ताका बचानक लिय आवाज उठानका कहा था।

अग्रज सरकार गाभक्ताका फाँसापर लटकानपर तुली हुई थी। अन्तम गाभक्त महन्त ब्रह्मदास (आयु ४५ वर्ष) एव चोधरी जानकीदास (आयु ६० वर्ष) का फाल्गुन सुदी २, सन् १९२० का इलाहाबाद जेलमे फाँसीपर लटका दिया गया। दाना गोभक्त हुतात्मा हँसते-हँसते तथा 'गामाताकी जय' का उद्घोष करते हुए फाँसीपर झूल गये। उस दिन इलाहाबाद नगरम पूर्ण हडताल रही। डॉ० पूर्णप्रसाद (आयु ४८ वर्ष) को लखनऊम तथा कटारपुरके श्रीमुखा चौहान (आयु ३२ वर्ष) को बनारस जलम फाँसीपर लटकाया गया।

गाभक्त शहीद महन्त ब्रह्मदासजी पचायती उदासीन

अखाडके महन्त थे। वे अत्यन्त निर्भीक गोभक्त थे। उदासान सम्प्रदायक हजारा लाग उनक शिष्य थे।

दजना गाभक्ताने इस काण्डम कालापानाम अमानवाय यातनाएँ सहन कीं। सरदार जगदत्त श्रीनन्दा लाला खूबचन्द पसारी, प० आसाराम श्रालक्ष्मीनारायण भक्त लाला दालतराम लाला दवाचन्द प० नारायणदत्त चौ० रघुवारसिह चौ० फतहसिह प० माखनलाल लाला प्यारलाल श्रासादो आदि अन्यान्य गाभक्तान कालापाना (अडमान)म गारक्षार्थ यातनाएँ सहन कीं।

कटारपुरम अब भा प्रतिवष बलिदानियाका पावन स्मृति मनाया जाता ह। गारक्षा-आदालनक प्रणता लाला हरदवसहायजाका प्रबल इच्छा थी कि कटारपुरम उन गाभक्त बलिदानियाका स्मृतिमें एक विशाल सस्मरण बनाया

जाय। कटारपुरकी पावन भूमि आज भी हमे गोरक्षाकी प्रेरणा देती है।

(२)

अनशन करते हुए दो गोभक्त बलिदानी

[क] श्रीऋषिस्वरूप ब्रह्मचारी

सन् १९६६मे गोहत्याके कलकका मिटानेके लिये पूज्य सत श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी महाराज तथा पुरीके जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराजने क्रमश वृन्दावन तथा पुरीम अनशन किया था।

श्रीऋषिस्वरूप ब्रह्मचारी धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा शकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजके अनन्य भक्त थे। वे धर्मसघके एक सक्रिय कार्यकर्ता तथा गोसेवक प्रचारक थे। जगह-जगह हाथम झडा लेकर पहुँच जाते तथा नगर या कस्बेका 'गोमाताकी जय हो' 'गोहत्या बद हो'के नारास गुँजा डालते थे। उन्हाने दिल्लीके यमुना-तटपर स्थित 'धर्मसघ-भवन'म २० नवम्बर, १९६६को गोहत्या-बदीकी मॉगका लेकर अनशन किया तथा १० दिन बाद ३० नवम्बरको गो माताकी रक्षाके लिये बलिदान दे दिया।

[ख] श्रीमेहरचन्द पाहूजा

उधर वृन्दावनमे पूज्य प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीके साथ गोभक्त मेहरचन्द पाहूजा भी २० नवम्बर १९६६को अनशनपर बैठे। जब उनकी शारीरिक स्थिति बहुत कमजोर हो गयी तो अनेक गोभक्त सताने उनसे अनशन त्यागनेकी अपील की, किंतु उन्हाने उत्तर दिया—'गो माताके लिये प्राणोत्सर्गसे बढकर मैं दूसरा धर्म नहा मानता।' अन्तमे ३१ दिसम्बरको उन्होने अपने प्राणाका उत्सर्ग कर दिया।

गौ माताकी रक्षाक लिये अनशन करत हुए बलिदान देनेवाले ये दोनो महान् गोभक्त 'गोरक्षा-आन्दोलन'के इतिहासमे अविस्मरणीय रहेगे।

(३)

गोभक्त लाला हरदेवसहायजी

परम गोभक्त लाला हरदेवसहायजी 'गोरक्षा-आन्दोलन'के अग्रणी सूत्रधारामेसे थ। गोवशकी रक्षा तथा गासवर्धनके लिये उन्हाने अपना जीवन ही समर्पित कर दिया था। उन्होने राष्ट्रकी स्वाधीनतासे लेकर राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचार तथा राष्ट्रमाता गायकी रक्षाके लिये जो कार्य किया वह अविस्मरणीय रहेगा।

लालाजीका जन्म सवत् १९४९, मार्गशीर्ष मासके पञ्चमी तिथिको हरियाणाके हिसार जिलेके सातरोड गाँवमे लाला मुसद्दीलालजीके घर हुआ था। लालाजी बचपनसे ही राष्ट्रभक्तिके रगम रँग गये थे। उन्ह देववाणी-सस्कृत भाषासे विशेष प्रेम था तथा इसीलिये वेदा, उपनिषदा आर पुराणाके प्रति उनके मनम बचपनसे ही अनन्य श्रद्धा थी। स्वदेशी वस्तुआके प्रति निष्ठा होनेके कारण उन्हाने विदेशी कपडेकी जगह हाथसे बुन सूतके कपडे पहननेका सकल्प ले लिया था।

उन्ह लाला लाजपतराय, महामना मालवीयजी तथा लोकमान्य तिलकने विशेष प्रभावित किया था। लालाजी अग्रेजी शिक्षाकी जगह हिदी तथा सस्कृतमे शिक्षा दिये जानेके प्रबल समर्थक थे। उन्हाने हरियाणाके ६५ गाँवामे विद्यालय खुलवाकर हिदी तथा सस्कृतका प्रचार किया।

लालाजीने 'स्वाधीनता-सग्राम' म सक्रिय भाग लिया। सन् १९२१ तथा १९४२ क 'भारत छोडो' आन्दोलनमे वे सत्याग्रह करते हुए जेल गये थे। सन् १९२१मे निमावली (पजाब) की जेलमे वे स्वामी श्रद्धानन्दजीके साथ रहे। स्वामी श्रद्धानन्दजी गीताके प्रति अनन्य निष्ठा रखते थे। लालाजीको गीताके प्रति लगाव स्वामीजाके प्रवचनको सुनकर ही हुआ था।

सन् १९३९ म हिसार जिलेम भीषण अकाल पडा तथा गोवश भूखा मरने लगा तो लालाजीने प्रख्यात गोभक्त ज० ना० मानकरजीके साथ मिलकर गोवशकी सेवाके लिये अपनेको समर्पित कर दिया। उन्हाने गॉव-गॉव जाकर गायोके लिये चारा इकट्ठा किया तथा दुर्भिक्ष-पीडित महिलाआके लिय 'सूत-कताई-केन्द्र' भी स्थापित किया।

लालाजाका सपना था कि देश स्वाधीन होते ही गोवशकी हत्याका कलक तुरत दूर कर दिया जायगा किंतु जब उन्होन देखा कि स्वाधीनताक बाद गाहत्याको और ज्यादा प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा नये-नये बूचडखाने खालकर गोमासका निर्यात तक शुरू कर दिया गया ह तो उनकी आत्मा कराह उठी। उन्हाने प्रधान मन्त्री नेहरूजी, राष्ट्रपति डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसाद आदिसे मिलकर तथा पत्र-व्यवहार कर गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगानकी माँग की। किंतु

प्रधान मन्त्रीके हठके कारण गोहत्यापर प्रतिबन्ध नहा लगाया जा सका।

लालाजी 'भारत-सेवक-ममाज' तथा सरकारी सस्थानोके माध्यमस गोरक्षाका कार्य करते थे। सन् १९५४ मे वे महान् सत स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा सत श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीके सम्पर्कमे आये। ब्रह्मचारीजीके साथ मिलकर उन्होने कलकत्ता हत्याके लिये जानेवाली गायाको बचाया। इसके बाद उन्होने ४ फरवरी १९५४ को प्रयाग-कुम्भपर 'गाहत्या-निरोध-समिति' की स्थापना की। मत प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजीके साथ मिलकर उन्हाने मथुराके कसाईखानेपर सत्याग्रह किया। धर्मसघके तत्त्वावधानम स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने पावन व्रजभूमिको गोहत्याके कलकसे मुक्त करानेके लिये आन्दोलन चलाया तो लालाजीका उन्हे सक्रिय सहयाग मिला। पूज्य ब्रह्मचाराजीक साथ लालाजीने लखनऊमे विधान-सभाके सामने सत्याग्रह कर उत्तरप्रदेशमे 'गोहत्या-बदी'की माँग की। यह आन्दोलन तबतक जारी रहा, जबतक 'गोहत्या-बदी'का कानून [भले ही वह आगे चलकर लचर सिद्ध हुआ] बन नहीं गया। इसी तरह सन् १९५५म बिहारमे 'गोहत्या-बदी'की माँगको लेकर चलाये आन्दोलनम लालाजी ब्रह्मचारीजीके साथ बॉकीपुर जेलम रख गये। बिहारक जेलस ये दोनो तभी मुक्त हुए जब 'गोहत्या-बदी कानून' बना दिया गया।

लालाजीने प्रतिज्ञा की थी कि 'जबतक पूरे देशमे गोहत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगेगा मैं न पगडी पहनूँगा न चारपाईपर साऊँगा' इस प्रतिज्ञाका उन्हाने जीवनपर्यन्त पालन किया।

लालाजीने 'गाय ही क्या' तथा गोसम्बन्धी दर्जना पुस्तक लिखी थीं। 'गाय ही क्या' पुस्तकको भूमिका तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसादजीने लिखी थी। उन्होने स्वीकार किया था कि 'गोवशके बारेम लालाजीका ज्ञान अगाध है।'

लालाजी धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा शकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजके प्रति अनन्य श्रद्धा रखते थे। उधर 'राष्ट्रिय स्वय सेवक सघ' के सरसघचालक श्रीमाधवराव सदाशिवराव गालवलकर (श्रीगुरुजी) के प्रति भी उनकी श्रद्धा-भावना थी। श्रीगुरुजी भी लालाजीकी गोसेवासे बहुत प्रभावित थे।

लालाजी 'कल्याण'-सम्पादक पूज्य भाईजी (श्री-हनुमानप्रसादजी पोद्दार) के प्रति अनन्य श्रद्धा-भावना रखते थे। उन्होने कई बार कहा था कि 'श्रीभाईजी तथा 'कल्याण' न गोरक्षाकी भावना पैदा करनेमे अविस्मरणीय योगदान किया है।'

लालाजी जीवनभर गोरक्षा तथा गोसेवाका प्रचार करते रहे। उनके अथक प्रयासासे कई राज्यामे 'गोहत्या-बदी कानून' भी बने।
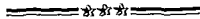
लाला लाजपतरायजीकी गोसेवा

(श्रीफतहचदजी शर्मा आराधक)

पजाब-केसरी लाला लाजपतराय आज हमारे बीचमे नहा ह किंतु जिस दिन २८ जनवरीकी पुण्य तिथि आती है तब हमारे सामने एक एसी विराट् आत्माका चित्र सामने आ जाता ह, जिसने साते हुए पजाब तथा देशको अपने त्यागस जगा दिया था। वे केवल यहीं नहीं वल्कि सुदूर अमरिकाम भी वेठकर भारतीय चिन्तन करते रहे। अमरिकाके प्रवासम उन्हान दु खी भारतकी जा करुणा-पूर्ण कहानी लिखी थी वह भारतकी एक मूल्यवान् सम्पत्ति है।

लालाजी केवल साधारण व्यक्ति नहीं थे वरन् वे देशकी उन महान् शक्तियोमसे एक हैं जिन्हाने देशको आगे बढाने, दासतासे मुक्ति दिलाने और देशकी आवाज सारे दशमे गुँजानेके लिये शखनाद किया था और उनका अन्त भी 'साइमन कमीशन लौट जाओ' के नारे लगाते हुए हुआ। इस प्रकार लालाजीका सारा जीवन देशपर मर-मिटनेकी चाह रखनवाला इतिहास है। जब उनक सिरपर 'साइमन कमीशन' का विरोध करते समय पुलिसकी लाठी लगी,

तब उनके मुँहसे निकला था कि 'मेरे सिरपर पडी-पडी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्यके कफनमे कीलका काम देगी।' लालाजीकी भविष्य-वाणी सत्य हुई। देश स्वतन्त्र हुआ, उनके बलिदानका फल देशके पुत्राने भोगा, किंतु लालाजी केवल देशको सूखी हड्डियाका ढेर ही नहीं देखना चाहते थे, उनका यह दृष्टिकोण था कि बिना हृष्ट-पुष्ट हुए देशकी रक्षा नहीं हो सकती। इसीलिये उन्हाने भारतवासियाको अपना जीवन शुद्ध दूध-घीपर बितानेके लिये जोर दिया था। व बडे चिन्तित थे कि हमारे देशमे अग्रेजशाही जो भीषण गोवध करा रही है, उससे भय है कि देशकी भावी पीढी किस प्रकार जीवन प्राप्त कर सकेगी। एक प्रकारसे लालाजीकी देशभक्ति आजके नेताओंको यह चेतावनी दे रही है कि डिब्बाके अदर बद हुआ दूध पीनेसे देशके लोग जिंदा नहीं रह सकते, इसलिये इस देशमे सरकारको गाय-बैलाके कतल रोकने उनके सरक्षण और सवर्धन करनेका काम करना चाहिये।

लालाजी केवल कहनेवाले ही नहीं थे, करके दिखलानेवाले भी थे। दिल्लीके शहीदी हालमे सन् १९२१ मे एकता स्थापित करनेके लिये जो हिन्दू-मुसलमानोका सयुक्त गोरक्षा-सम्मेलन हुआ था, उसमे लालाजीका सबसे बडा हाथ था। वे स्वय उस सम्मेलनके अध्यक्ष थे और उन्हाने जोरदार शब्दामे इस बातको कहा था कि 'अग्रेजी-राज्यमे गोवध होता है और गाय सबको घी-दूध देकर बलवान् बनाती है, इसलिये हम सब लोगाको जो अपने देशको स्वतन्त्र करानेके लिये तैयार हैं और अग्रेजाको यहाँसे खदेडना चाहते हैं उन्हे अग्रेजासे असहयोग करना चाहिये।' इस दृष्टिसे यह विचारणीय प्रश्न है कि लालाजी यदि आज जीवित होते तब वर्तमान सरकारके प्रति उनका क्या रुख होता? इसका निर्णय पाठकोको स्वय विचारना चाहिये।

गोभक्त देवसिह हाडा

(श्रीकान्तिचन्द्रजी भारद्वाज)

राजस्थानमे हाडा राज्यके सस्थापक देवसिह हाडाकी २२वीं पीढीमे राजा रघुवीरसिह हाडा गद्दीपर बैठे। इनका शासनकाल ईसवी सन् १८८९ से १९२७ रहा। राजा रघुवीरसिह हाडा न्यायप्रिय कुशल प्रशासक थे। धर्म तथा सत्यमे निष्ठा रखनेवाले थे। राजा रघुवीरसिह महान् गोभक्त थे। वे जगलमे जाकर गायाको चराते थे। स्वय अपने हाथो गोसेवा करते थे। उनके राज्यमे प्रतिवर्ष एक दिन बडे ही हर्ष-उल्लासके साथ गो-महोत्सव मनाया जाता था। यह उत्सव वनमे होता था तथा सभी गायोको वनमे ले जाकर चराया जाता था और गायाकी पूजा होती था। राजाज्ञा थी कि 'उस दिन कोई भी नगरमे धुआँ नहीं करेगा तथा घरमे भोजन भी नहीं करेगा। सभीको गोचारण-महोत्सवमे उपस्थित होना अनिवार्य है।'

राजाज्ञाके अनुसार सभी नागरिक जगलमे जाकर अपने-अपने समूहमे भोजन बनाते थे। गरीबाके लिये और राजपरिवारके सदस्याके लिये भोजन-व्यवस्था राजाकी ओरसे होती थी। राजाजी जगलमे लाठी लेकर गायोको चराते थे, दोपहरमे महारानी अपने सिरपर जुवारकी रोटी, छाछ, सब्जी, गुड आदि लेकर राजाके पास पहुँचती, राजा-रानी इन्द्र देवताकी पूजा करते तथा साथ बैठकर छाछ-रोटी खाते। ऐसा विश्वास था कि इस गोचारण तथा वन-महोत्सव एव इन्द्रपूजनसे अनावृष्टि दूर होकर निश्चित रूपसे भारी वर्षा होती है। इस उत्सवमे रुद्राभिषेक करवाया जाता तथा ब्राह्मण-भोजन और गायाको घास खिलाया जाता था और उनकी पूजा होती थी।

हाडा राज्यका यह वन-महोत्सव व्रजमे नन्दराय आदि गोपाद्वारा वृष्टिके लिये की गयी इन्द्रपूजा तथा पुन भगवान् श्रीकृष्णद्वारा किये गये गोवर्धन-पूजन, गोपूजन तथा गोमहोत्सवका ही प्रतिरूप जान पडता है।

'व्रज'मे गो-सेवा

(श्रीअनुरागजी कपिध्वज)

ब्रह्ममयी व्रजभूमिमे भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाएँ सदा होती रहती हैं। कृष्णकी प्रिय वस्तु, जिनके साथ वे क्रीडा करते ह मुख्यत तीन हे—गौएँ, गापियाँ और ग्वाल-वाल। 'व्रज' म भगवान् कृष्ण अपने साथी ग्वाल-वालाक साथ गो-सेवा कर गापियाका आनन्दित करते रहते हैं। गाय श्रीकृष्णकी प्रिय निधि हैं। गो-सेवाकी प्रमुखताके कारण ही उनका लाक 'गालोक' कहलाता है। गोलोककी लीला प्रभुकी वास्तविक लीला है, जिसम गाएँ, गोपियाँ एव ग्वाल-वाल सब सच्चिदानन्दरूप हाकर विहार करते हैं।

मानवकी तो वात ही क्या? दवराजकी समझम भी भगवान् कृष्णकी व्यावहारिक एव वास्तविक लीला नहीं आ पाती। वे भी जव गो-सवासे वञ्चित करनेके लिये ग्वाल-वालाका भ्रमित करनेका प्रयास करते हैं तो उन्ह अपनी पराजय स्वाकार करना पडती है। इसी प्रकार गाचारणकी वास्तविक आर व्यावहारिक लीलाको समझनका प्रयास जव ब्रह्माजीक द्वारा होता है, तब भगवान् कृष्ण अपनी वास्तविक लीलाका रहस्य उनक सामने प्रकट कर उन्ह आश्चर्यचकित कर दते हैं। ब्रह्माजी गाएँ आर ग्वाल-वालाको कृष्णरूपम दखकर व्रजभूमिम जन्म लनकी कामना करत हैं, जिसस कि गाएँ और उनकी सवा करनवाल ग्वाल-वालाकी चरण-रज उन्ह मिल सके। भगवान् कृष्णकी गा-सवा मनका माहित कर उनकी व्यावहारिक लालाका समझनम सहायक होता है।

भगवान् कृष्ण स्वय अपनका गा-रूपम परिणत कर अपनी हा सवा अपन गारूपमे करत हैं। जिस तरह वालक अपनी हा परछाइस क्राडा करता है उसा तरह स्वरूप-स्थित भगवान् कृष्ण स्वयमे हा निर्लिप्त-भावस रमण करत हैं। गो-महिमाकी वास्तविकताका प्रत्यक्ष दर्शन हम उस समय हाता है, जब पूतना-मोक्षके वाद गोप-कन्याएँ गायकी पूँछस कृष्णजीका मार्जन करती हे। भगवान् गौ एव विप्रकी-रक्षाके हेतु अवतार धारण करते हैं। भगवान्के अवतरणकी क्रिया तीन प्रकारके भक्ताके द्वारा पूर्ण होती हे—एक वे भक्त हैं, जिनका कृष्णसे कभी वियोग नहीं होता, वे अन्तरङ्ग पार्षद कहे जाते हैं तथा जिनका गोचारण-लीलाको समझने ओर पूर्ण करनम विशेष सहयोग रहता है। दूसरे वे भक्त हैं जो प्रभुके साथ सदैव रहने एव उनकी गोचारण-लीलाके दर्शनक इच्छुक हैं। भगवान् कृष्ण जब गौआको लेकर गोवर्धन पर्वतपर जाते ह, विशष नामोके द्वारा उन्ह पुकारते हैं तथा व चरना छोडकर उनके पास आती हैं—इस लीलाको देख ये भक्त प्रभुकी अन्तरङ्ग-लीलाम प्रवश पानेके लिये लालायित होते हैं। तीसरे वे भक्त हैं जिनकी प्रार्थनासे भगवान् पृथिवीपर अवतार लेत हैं। वे गौक प्रत्यक अङ्ग आर उसके राम-रोमम दवताओका निवास होनेक कारण गो-सवाक रूपम भगवान्की भक्ति करते हैं।

'गो' शब्दका एक अर्थ इन्द्रिय भी हाता ह। कृष्णका सच्चा सवक जव भगवान्क नामका अधिक-से-अधिक जप करता है, तव इस जपका प्रभाव भक्तक मानस-पटलपर स्थायी आर सुदृढ हा जाता है। एसी स्थितिम भक्त जाने-अनजान 'कृष्ण-कृष्ण' पुकारने लगता है। उसके मनका स्वरूप सत्त्व हा जाता ह। समस्त इन्द्रियाँ मनके अधान हैं, अत मनक सत्त्व-रूपमे परिणत हात ही इन्द्रियाँ भगवद्रूप हा जाता ह। व विषयाका भगवत्प्रसाद मानकर ग्रहण करता हैं। वह समझता ह कि तीनों लोकोंमे यथार्थ आत्म-दर्शन इतना ही है कि 'यह सब जगत् परमात्मा ही है।' यह निश्चय कर भक्त पूर्णताको प्राप्त हो जाता है। भक्त अपने-आप निर्विकल्प हो जाता है, क्योंकि मनको प्रभुके

रूपमे मानना ही निर्विकल्पता है। भक्त सदा-सर्वदा सब नाम-रूपाम कृष्णको देखनेका अभ्यासी हो जाता है। उसके अन्त करणमे छाये ब्रह्मप्रकाशके अन्तर्गत कृष्ण प्रकट हो उसे आनन्दित करने लगते हैं। सवत्र सब समय उसकी वृत्तियाँ 'गोपी' बनकर और उनके भाव 'ग्वाल-बाल' बनकर शुद्ध हृदय-पटलपर कृष्ण-सेवाम तत्पर हो जाते हैं। सर्वात्मभावकी भावनासे प्रकृतिक प्रत्यक क्रिया-कलापमे उसे कृष्णके दर्शन होते रहत हैं।

प्रभुकी वास्तविक लीलाके बिना व्यावहारिक लीला नहीं हो सकती और व्यावहारिक लीलाका वास्तविक लीलाम कोई स्थान नही है। अनेक जन्माकी साधनाके पश्चात् साधकके हृदयाकाशमे कृष्ण-तत्त्वपर पडा मायाका पर्दा जब दूर होता है, तब वट समझता है कि गौआको चराकर वनसे जब श्रीकृष्ण लौटते ह, उस समय व्रजकी गोपियाँ गो-रजसे रँगे हुए कृष्णके मुखको देखकर किस सुखका अनुभव करती ह। भागवतधर्मके पालनके बाद 'कृष्ण-कृष्ण' की रट लगाकर अपन हृदयमे प्रसरित ब्रह्मप्रकाशम जब साधक कृष्णके अतीव सुकोमल, सौन्दर्यमण्डित श्यामल चरणोको देख उन्ह हृदयसे लगानेक लिये दौडता है और लाल-लाल तलवाको जब नेत्रोसे लगा कृष्णको अपनी ओर मुस्कुराते हुए दखता है, तब व्रजमे गा-सवाकी वास्तविकता समझम आती है।

बुंदेलखंडका 'गोचारण-महोत्सव'

(आचार्य श्रीबलरामजी शास्त्री)

बुदेलखड वीरोकी भूमि है। वीरता-प्रदर्शनक अतिरिक्त बुदेलोकी अनेको विशेषताएँ हैं। कार्तिकक महीनेमे बुदेलखडम अनेको प्रकारके सास्कृतिक, धार्मिक आर पारम्परिक उत्सव मनाये जाते हैं। बुदेलखडीय उत्सव बहुत प्राचीन कालसे अपने परम्परागत रूपम उसी प्रकार मनाये जाते आ रहे हैं जैसे भगवान् श्रीकृष्णके समयम मनाये जाते थे। स्थानीय लोगाका विश्वास है कि ये उत्सव भगवान् श्रीकृष्णके समयसे ही मनाये जा रहे है ओर आज भी उसी हर्ष, उल्लासक साथ मनाये जाते हैं। बुदेलखडका 'गोचारण-महोत्सव' भगवान् श्रीकृष्णद्वारा गोचारण-परम्पराका प्रतिरूप ही है। इसी प्रकार यहाँका 'दीपावला-महात्सव' भी कसादि दुष्टाके विरुद्ध सघर्ष करनेके नामपर गोकुलके ग्वाल-बालाको सघटित करनके लिये बालक कृष्णके द्वारा सचालित परम्पराका रूप ह। भगवान् श्रीकृष्णकी गोवत्स-चारणलीला तो प्रसिद्ध ही ह। भगवान् जब ग्वाल-बालाके साथ वत्सोको चराकर लाते थे तो गौएँ अपने वत्सासे मिलने दौड पडती थी। ऐसी ही कुछ लीलाएँ बुदेलखडम भी प्रचलित हैं। यहाँ सक्षेपमें कुछ उत्सवाका परिचय दिया जा रहा है—

बुदेलखडीय गोचारण-महोत्सव

बुदेलखडका 'गाचारण महात्सव' कार्तिक मासके शुक्ल पक्षकी देवोत्थान एकादशीको मनाया जाता है। 'गोचारण-उत्सव' मनानेकी तेयारी पहले दिनसे ही हाने लगती हे। शुक्ल पक्ष प्रारम्भ होते ही गोचारक प्रात अपन-अपने हरे-भरे खेताम या चरागाहोम गायाको ले जाकर चराते ह। कार्तिकके शुक्ल पक्षके गोचारणम कोई चरवाहा लाठी या पनसे किसी गायको नहा हॉकता। गाय अगर समूहसे विछुडकर किसी भी कृपकक हर-भरे खताम चली जाती ह या चरन लगती है तो वह किसान या काई भी दर्शक जाकर बिना किसी लाठी-डडके सहारे ही गायको खेतसे दूर कर देता हे या कर सकता है। चाट नही पहुँचा सकता।

देवोत्थान-एकादशीके दिन गाचारक निर्जल-व्रत रहता है। प्रात स्नान करके नया वस्त्र धारण करता हे आर एक हाथम मारपख तथा एक हाथमे बॉसुरी लेकर गोशालाम जाता हे। गायाकी पूजा करता है आर सभी गाँवक गोचारक एक साथ गायोको छोडकर उनक पाछे-पीछ चलते ह। सजी-धजी गायाका त्रडा भारी जुलूस निकल पडता ह। गोचारक उस दिन निर्जल-व्रत रहकर मौनव्रत भी करता है। सभी गोचारक मान रहकर आपसम सकतस ही बातचीत करते ह। मोरपखस ही गायाको हॉकत हैं। समस्त कृपक एकादशीके दिनका गायाके चरनक लिये अपने-

अपने हरे-भरे खेतोका कुछ भाग उसी दिनके लिये छोडे रहते हे और मोनव्रती गोचारक मोरपखोसे गायाको हॉकते हुए उसी सुरक्षित खेतम ले जाते हैं। गाय वहाँ पहुँचकर सुखपूर्वक चरने लगती है। सुरक्षित खेततक पहुँचनेके पूर्व यदि गाय किसी भी किसानके हरे-भरे खतम चरने लगगी तो उस खेतका स्वामी कुछ भी नही बोल सकता। मोनव्रती गोचारक मोरपखेके सहारे गोमाताको हॉकते हुए अपने पूर्व निर्धारित खेतपर ले जाता है। ऐसी परम्परा गाँवाके अतिरिक्त उपनगराम भी प्रचलित हे। इस गोचारण-महोत्सवको दखकर भगवान् श्रीकृष्णकी गोचारण-लीलाका स्मरण हो उठता हे। श्रीकृष्णचन्द्र गायाको आगे करके स्वय मध्यमे हो जाते थे। उनके पीछे गायाका दल हो जाता था। वे लोग खलते-कूदते ओर वशी बजाते चलते थे। श्रीमद्भागवतम यही प्रसग निम्न प्रकारसे आया है—

तन्माधवो वेणुमुदीरयन् वृतो
गोपैर्गृणद्भि स्वयशो बलान्वित ।
पशून् पुरस्कृत्य पशव्यमाविशद्
विहर्तुकाम कुसुमाकर वनम्॥
(श्रीमद्भा० १०। १५। २)

'यह वन गौओके लिये हरी-हरी घाससे युक्त एव रग-बिरग पुष्पाकी खान हा रहा था। आगे-आगे गौएँ, उनके पीछे-पीछे बाँसुरी बजाते हुए श्यामसुन्दर, तदनन्तर बलराम ओर फिर श्रीकृष्णके यशका गान करत हुए ग्वाल-वाल—इस प्रकार विहार करनके लिये उन्होने उस वनम प्रवश किया।'

बुदेलखडाय गोचारक हाथम वशा अवश्य रखते हैं किंतु सभी गोचारक बाँसुरी नही बजा पाते। श्रीकृष्णके मस्तकपर मोरपख रहता था। बुदेलखडक गोचारक अपने हाथाम ही मारपख रखते हे। उसस गायाका झाडते रहते ह। मानव्रती हानके कारण गाचारक बालकर किसा गायको अन्य किसानाक खताम चरनस रोक नहीं पाता।

इस प्रकार हर्षोल्लासपूर्वक दिनभर गाचारक गाय चरात हैं। यदि किसी गोचारकका प्यास लग जाती ह आर प्यास सहन नहीं हा पाती ता वह गाचारक हाथस या किसी पात्रसे जलपान नहीं कर सकता। प्यासा गाचारक जमानपर लेट जाता है ओर जैसे गाये पानी पीती हैं, वैसे ही तालाबमे मुँहसे ही पानी पीता है। व्रती गोचारक यदि सयोगसे बोल देता है, अर्थात् उसका मौन-भग हो जाता है तो उसे प्रायश्चित्तमें दूसरे (आगामी) वर्षम पूर्वविधिसे गोचारण करना पडता है। कितनी अटूट श्रद्धा रहती है। कितना अटूट विश्वास सँजोये रहते ह ये गोचारक।

जब गाये चरने लगती हैं तब गोचारक एक स्थानपर बैठ जाते हैं। गाय निर्बाधरूपसे हरी-भरी फसले चरने लगती ह। गोचारक जब यह समझ लेता है कि गायाको प्यास लग गयी होगी तब प्यासी गायाको मोरपखक सहारे किसी सरोवरके पास ले जाते हैं, वहाँ प्यासी गाये पानी पीती हैं। पानी पीनेके बाद गाय कुछ विश्राम भी करती हैं। गोचारक उस समय गायोके आस-पास ही बेठ जाते हैं। विश्रामके बाद गाय पुन चरने लगती हैं आर सायकाल सूर्यास्तसे पूर्व ही अपने आवासकी आर चल देती हैं। गोचारक गायाके पीछे-पीछे एक हाथम वशी ओर दूसरे हाथमे मोरपख लिये चलते ह।

गायो और गोचारकोका स्वागत

गायोके गाशालामे पहुँचनेक पूर्व गाँवक सभी लोग—स्त्री-पुरुष, बच्चे एक नियत स्थल या मुख्य मार्गपर एकत्रित रहते हैं। स्त्रियाँ हाथोम थालीम सजायी पूजन-सामग्रीके साथ आगे बढती हैं। गायाकी आरती उतारी जाती है। मालाएँ पहनायी जाती ह आर इसके बाद सूखे मेवेका प्रसाद वितरित किया जाता हे। प्रसाद ग्रहण करक गोचारक अपना मौन-भग कर सकता है। मोनव्रत-भग गोचारक अपने बड-बूढाका पॉव छूकर अभिवादन हैं। गोचारकाका यह गाचारण-व्रत बारह वर्षोतक है। रात्रिम गोचारक व्यक्तिगत या सामूहिक रूपम बनी खीर बडे-बूढा या ब्राह्मणाका खिलाते ह। वापस होनपर गायाक स्वामी अपनी-अपनी ले-लकर पुकारत ह। गाय तुरत ही उनके ह आर तब वे अपना-अपनी गाशालाआम ले सुरक्षित कर दत ह। जिनक घर गाय नहीं रहतीं दूसराकी गाय ही चरात हैं। अपनी-अपनी हें। यहाँके लागाका विश्वास ह कि इस

तथा गोचारण-व्रतसे सभी अभिलषित पदार्थ प्राप्त हो जाते हे और जीवनम सुख-शान्ति रहती ह। गोचारण-समाप्तिके समय सायकाल वापसीके बाद गोचारक और नर्तक मिलकर गाते हे, नाचते ह। वाजा भी बजता रहता हे। कुछ गीताकी पक्तियाँ इस प्रकार हैं—

कातिक मास धरम के मास
दिया जरै सारी रात।
कैऽजरै तुलसी के घड़ा,
कैऽपण्डन की चौपाल॥
चलो सखी! वहाँ चलै
जहाँ बसै 'बृजराज'।
दधि बेचै दरशन करै
एक पन्थ दो काज॥

वृन्दाबन बसिबो बुरो,
होन लगी अनरीत।
तनिक दही के कारनै,
बहियाँ गह अहीर॥

इस लोकगीतमे भगवान् श्रीकृष्णकी रास-लीलाका कुछ भाव स्पष्ट प्रतीत होता है। *'एक पन्थ दो काज'* मे दही बेचना ओर भगवान् कृष्णके दर्शनकी बात भी स्पष्ट होती है। एक दूसरा पद्य भी गाया जाता है, इसमे गायोके गोशालाम जानेका सकेत है—

गइयाँ (गायें) गईं गगवारे (गोशाला)
भैसे गईं बड़ी दूर।
अहीर के बालक ने लाठी मारी
झरै कमल के फूल॥

प्राचीन महाराष्ट्रकी गो-सेवा

(डॉ० श्रीभीमाशकरजी देशपाडे एम्० ए० पी-एच्०डी०, एल्-एल्० बी०)

महाराष्ट्रके प्राचीन कालका इतिहास गो-सेवाके विषयमे महत्त्वपूर्ण हे। सत नामदेव, ज्ञानेश्वर, सत एकनाथजी, रामदासजी तथा अन्य सताने गोसेवाका कार्य महत्त्वपूर्ण माना है। भागवतधर्मम इस सेवाका विशेष स्थान है। सत एकनाथजी अपने भावार्थ रामायणम कहते ह—

गाई ब्राह्मण करावया घातु।
स्वप्नी नुपजे मनोरथु॥
त्यावरी उचली शरु हातु।
ऐसा सूर्य वशात शूर नाही॥८२॥
गाई ब्राह्मणापुढे।
आमुचे शौर्य बापुडे॥

गौ-ब्राह्मणका घात करनेका साहस हमार सूर्यवशम किसीने नहीं किया। गौ और ब्राह्मणक सम्मुख हमारा शोर्य नष्ट प्रतीत होता है।

भगवान् परशुरामसे भट होते ही प्रभु रामचन्द्रका यह वचन नाथजी सुनाते हैं। वे और भी कहते हैं—

जो राजा गो-ब्राह्मणकी सहायता करता हे, उसका गुणगान स्वर्गमे भी होता है।

समर्थ रामदासजीके मार्गदर्शनसे ही छत्रपति शिवाजी महाराजने हिदूराज्यकी स्थापना की। यावनी आक्रमण-कालमे देशम धर्मभावना जाग्रत् की। गुरुकी कृपासे ही उन्हे 'गोब्राह्मण-प्रतिपालक'की उपाधि प्राप्त हुई। शिवाजी महाराजको लिखे हुए पत्रमे रामदासजी कहते हैं—

सकल तीर्थे मोडिली।
ब्राह्मण स्थाने भ्रष्ट झाली।
सकल पृथ्वि आदोळली।
धर्म गेला॥७॥
देवधर्म गो ब्राह्मण।
करावयासि सरक्षण॥
हृदयस्थ झाला नारायण।
प्ररणा केली॥८॥

सभी तीर्थोका नाश हुआ। ब्राह्मण-स्थानाको नष्ट किया गया। सम्पूर्ण पृथ्वी अस्थिर बन गयी ओर धर्मका विनाश हुआ। देव, धर्म और गौ-ब्राह्मणकी रक्षा करने-हेतु हृदयमे स्वय नारायण ही प्रकट हुए हैं। उनकी ही प्रेरणा हुई। इस धर्मस्थापना-कार्यको तुम्हे सँभालना है।

रामदास आदि सताके गो माताके लिये जावनदान दने तथा भक्तोपर कृपा करनेके अनक प्रसग प्राप्त होते ह। समर्थजीके मठ दक्षिण प्रदेशाम यवन-व्याप्त क्षेत्राम ही अकसर पाये जाते ह। धर्म-प्रसारम उनकी वट यातना थी। इस विभागके अपचद मठम दो सो धेनु-सम्पदा थी। वहाँ आनेवाले भक्ताको छाँछ ओर जवारी भूनकर बनाये आटेका प्रसाद मिलता था। व एक कुशल सघटक सत थे। उनके आदशास बने हुए श्रीशिवा छत्रपतिक हिन्दूराज्य आनन्दभवनम गामाताका आदर था। शिवा छत्रपतिजाक राज्यकी यह अवस्था कवि भूषणकी रचना श्रीशिवराजभूषणम भा ज्ञात होती ह। दक्षिण भारतका यह भूप्रदश सनातन कालसे ही गा-सवाम यागदान देता आया हे।

'कुमाऊँ' की गोपालन-परम्परा

(डॉ० श्रीयसन्तवल्लभजी भट्ट एम० ए०, पी एच० डी०)

हिमालय प्रदेशका एक पर्वतीय भाग-विशेष कूर्माचल अथवा कुमाऊँके नामसे जाना जाता है। इसीका पाराणिक नाम मानस-खण्ड किवा उत्तर कुरुदश भी है। वर्तमानम कुमाऊँसे अल्मोडा, पिथौरागढ तथा नैनीताल—इन तीन जनपदोका बोध हाता हे। अपनी प्राकृतिक सान्दर्य-रचनाके लिये यह विख्यात ह। हरे-भरे वन-प्रदशा तथा सुरम्य हरी-भरी घाटियोके लिये यह क्षेत्र अत्यन्त प्रसिद्ध है। यहाँका प्राकृतिक जीवन अत्यन्त सोम्य, शान्त एव सादगीपूर्ण है। प्रकृतिका अत्यन्त सानिध्य हानेसे यहाँके प्राणिजगत्-जीवजगत्में भी अत्यन्त सहजता एव स्वाभाविकता है। प्रस्तुतम ता केवल गायकी वात करनी है। अस्तु, हरे-भरे जगल तथा विस्तृत घास-भरे चरागाह यहाँके गावशके लिय प्रकृति-प्रदत्त वरदान हे। पहाडाकी तलहटीम बसे यहाँके ग्राम्य-जीवनका मुख्य आधार गौ ही है। जगलके बाहुल्यसे हरा चारा वर्षभर विद्यमान रहता है। प्रात ही दूध दुहनेक बाद गोष्ठसे निकालकर गौआको कुछ दूर जगलकी ओर चरने छोड दिया जाता है। और शामको स्वत गाय चरकर लौट आती हैं। प्रत्येक घरसे निकला हुई पृथक्-पृथक् गौएँ आगे चलकर एक विस्तृत समूहके रूपमे हो जाती हैं और समूहके रूपम ही चरनेके लिये जाती हैं।

प्रत्येक गाँवके आस-पास विस्तृत गाचर-भूमि रहती है, जहाँ गौएँ स्वच्छन्द-रूपसे हरी-हरी घास चरती हैं ओर प्राकृतिक झरना तथा नदी-नालाका जल पीती हैं। शामको लौटनेपर फिर उन्ह चारेकी विशेष अपेक्षा नहीं रहती। केवल थोडा-सा चारा दे दिया जाता है। वर्षम प्राय ९-१० महीने हरा चारा उपलब्ध रहता हे, केवल गर्मीके कुछ दिनाके लिय सूख चारका प्रबन्ध रहता है। खेतीसे प्राप्त धानके पुआल (फसल लेनेक बाद बचा पाधा)-को सुखाकर सुरक्षित रख लिया जाता हे, यह चारेका मुख्य साधन हे। मेदानी भागाकी तरह यहाँ चारा काटकर नहीं खिलाया जाता, अपितु समूचा ही गायक सामने रख दिया जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँके पहाडाम एक 'गाज्यो' नामकी घास स्वत उगती है, जो लगभग ३-४ फुट लबी होती हे। जब यह घास लगभग डेढ फुटकी होती है तो 'दाब्' कहलाती है। यह हरे चारेके रूपमे इस क्षेत्रमे प्रचुरतासे प्राप्त होती हे जो गायाको अत्यन्त ही प्रिय है। गायको जगलमे इधर-उधर विचरण करते हुए 'दाब्'का चरना अत्यन्त ही भाता है। लबी होनेपर इसी घासको काटकर सुखाकर सुरक्षित कर लिया जाता ह ओर गर्मीके दिनामे गौआको खानेक लिये दिया जाता है। इस घासको अपने-अपन घराके आस-पास सूखी जमीनपर अथवा आस-पासके पेडापर गुम्बदक रूपमे एकत्रकर एक विशेष तरीकेसे सुरक्षित किया जाता हे। इस ढेरको यहाँकी भाषामे 'लुट्' कहा जाता है। आज भी इन्ह वहाँ दखा जा सकता है। इसी प्रकार विस्तृत वन-प्रदशाम बाँझ नामक एक ईंधनकी लकडी यहाँ विपुलतासे प्राप्त होती हे। यह एक सघन पत्तावाला वृक्ष है, जा शीत प्रदेशका प्रमुख वृक्ष हैं। इसकी कामल-कोमल पत्तियाँ गायाका बहुत ही प्रिय हैं तथा दुग्धवर्धक भी ह ग्रामीण स्त्रियाँ इन्ह जगलसे काटकर लाती हैं और गायाको खिलाती हैं। ये कोमल पत्ते 'पालौ'

(पल्लव) कहलाते हैं। इसी प्रकार 'भेकुल' नामक एक पेड भी यहाँ बहुतायतसे होता है। उसकी पत्तियाँ भी गायोका मुख्य आहार है, यह भी दुग्धवर्धक है।

यहाँ सिसुण या 'सिन्' नामक एक काँटेदार पत्तियोवाला छोटा पौधा होता है, जो कदाचित् छू जाय तो पूरे शरीरमे झनझनाहट पैदा कर देता है इसीलिये यहाँकी माताएँ उनके बच्चे जब शैतानी करते हैं तो सिसुण घास छुआनेका भय दिखलाती है बच्चे डरकर शैतानी छोड देते हैं। यह सिसुण बडा ही दुग्धवर्धक है। जब यह मुलायम रहता है तो इसे किसी कपडे या लकडीके सहारे तोडकर एकत्र कर लिया जाता है और ओखलीमे कूटकर किसी बडे बर्तनमे पानी छोडकर पका लिया जाता है। उसमे कुछ आटा तथा हलका नमक छोड दिया जाता है। वह गाढ़ा-गाढ़ा पेय पदार्थ स्थानीय भाषामे 'दो' कहलाता है जो गौओके लिये बडा ही प्रिय और पुष्टिकारक भी होता है। इससे दूध भी बढता है।

इस प्रकार यहाँ प्राकृतिक चारा पर्याप्त मात्रामे होता है, अत दाना खली-भूसा आदि देनेकी कोई परम्परा नहीं है और न उपलब्ध चारेको काटकर ही खिलाया जाता है, जैसा उत्पन्न होता है वैसा ही गाय-बैलोके सामने सायकाल दूध दुहनेके पश्चात् डाल दिया जाता है। गाय यथेच्छ उसे ग्रहण करती है और फिर फैलकर वही गायका गुदगुदा बिछाना भी हो जाता है। बरसातके दिनोमे जमीनकी नमीसे बचानेके लिये 'रणेल' नामक एक हरे पौधे-विशेषकी पत्तियोको गोठ (गोष्ठ) मे बिछा दिया जाता है और प्रात -काल गायोके चरने जानेके पश्चात् एकत्र कर लिया जाता है। गोमूत्र-गोबरके सयोगसे वह बहुत अच्छी खादका रूप धारण कर लेता है। प्रात नित्य गोष्ठकी सफाई की जाती है और उसे एक स्थानपर एकत्र कर लिया जाता है, वही खाद बन जाती है। बादमे उसे खेतोमे छोडा जाता है।

गाभिन गाय तथा गायके छोटे बछडे घरमे रहते हैं। शेष गाय-बैल प्राय नित्य ही चरने जगलमे जाते हैं। प्रत्येक ग्रामके पास अपनी गोचरभूमि है, जहाँ वर्षभर प्राय हरी-हरी घास उपलब्ध रहती है। ब्यायी हुई गायका विशेष ख्याल रखा जाता है। प्राय १० दिनतक उसका दूध आशौचजन्य मानकर प्रयोगमे नहीं लिया जाता। कोई-कोई लोग २२ दिनतक प्रयोगमे नहीं लेते। बछडसे बचे उस दूधसे घी बनाकर नैवेद्य बनाया जाता है फिर उसी नैवेद्यसे भगवान्‌का भोग लगाया जाता है। तब फिर ग्रहण करते हैं। ग्यारहवे दिन बछडे-बछियोका नामकरण-सस्कार करनेकी परम्परा है। प्राय रगके आधारपर नाम रखा जाता है जैसे काले रगकी गाय 'काली' लाल रगकी गाय 'रतुला', धूमर रगकी गाय 'धुमरि'। इसी प्रकार अत्यन्त सीधी एव दुधार गायको लछिमी (लक्ष्मी) नाम दिया जाता है। बैलोको भी 'कल्वा', 'लहार' आदि नाम दिये जाते हैं। नाम सुनते-सुनते गाय-बैल भी अभ्यस्त हो जाते हैं और पुकारनेपर पास चले आते हैं।

गायोके प्रति यहाँ अत्यन्त ही आदर एव पूज्य-भाव है। गोग्रासकी सुदीर्घ परम्परा है। प्राय प्रत्येक दिन घरकी स्त्रियाँ प्रात नहा-धोकर गेहूँ अथवा जौके आटेके चार ग्रास बनाकर रोली-चन्दन तथा जलका लोटा लेकर गोष्ठमे पहुँच जाती हैं। गायके चरण पखारती हैं, मुँह धोती हैं, टीका लगाती हैं और गोग्रास खिलाकर परिक्रमा करके घरमे आती हैं और अपना गृहकार्य प्रारम्भ करती हैं। सद्‌गृहिणियोके दैनिक जीवनका प्रारम्भ गोग्राससे ही होता है। विशेष तिथि-उत्सवो एव पर्वोपर तो और भी उत्साह एव श्रद्धासे गाय-बैलोकी पूजा तथा शृगार किया जाता है। श्राद्धके दिन पितरोको परोसा गया अन्न गोमाताको ही दिया जाता है।

जगलोमे पानीकी नमीवाली जगहोमे जोक नामक एक काला कीडा यहाँ बहुत मिलता है, जिसे यहाँके लोग 'जुग्' कहते हैं। गाये जब चरनेके लिये मुँह नीचे करती हैं तो यह उनके नाकमे चला जाता है और धीरे-धीरे खून चूसता रहता है। गायें दुर्बल हो जाती हैं। इससे गायोको बडा कष्ट होता है। बादमे गाय जब घरमे पानी पीनेके लिये बर्तनमे मुँह डालती हैं तो यह भी नाकसे थोडा बाहर निकलता है। इसकी पकड बडी मजबूत होती है। उस समय कोई व्यक्ति कपडेके सहारे इसे खींच लेता है या किसी तरह नाकमे नमक इत्यादि छोडकर इसे छुडाया जाता है। इसी प्रकार खुरोमे भी कभी-कभी बीमारी हो जाती है। खुर पक जाते हैं, इसे 'खुर्‌याँत' कहते हैं, यह सक्रामक रोग है। कुछ घरेलू औषधियोद्वारा इसका उपचार किया जाता है।

प्राकृतिक चारेका सेवन करनेसे यहाँकी गायोका दूध बडा ही स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। उसमे एक विलक्षण

स्वाभाविक मिठास होती हे। ऐसे ही गायके घीको यहाँ सभी रोगाकी दवा माना जाता है। कुछ भी शारीरिक या मानसिक रोग हो 'गायका घी दो' यही कहा जाता है। छोटे बच्चा तथा रोगियो एव दुर्बल व्यक्तियाको धाराष्ण दूध पिलाया जाता है। दही कच्चे दूधका जमाया जाता हे। उसे एक विशेष प्रकारकी लकडीके बर्तनमे ही जमाया जाता है। जिसमे दही जमाया जाता है वह बर्तन छोटे-बडे नापका होता है, जो यहाँकी भापामे 'ठेकी' कहलाता है। दहीको कुमाऊँमे सगुनका सर्वोत्तम एव सर्वश्रेष्ठ पदार्थ माना जाता है। शादीम बरातके आगे-आगे एक व्यक्ति 'दहीकी ठेकी' या 'सगुनकी ठेकी' लेकर चलता है। मट्ठेके लिये जिस लकडीके बडे बर्तनमे दही जमाया जाता है, वह बर्तन 'विडा' कहलाता हे ओर नौनी (नवनीत-मक्खन) जिस लकडीके बर्तनम रखा जाता है उसे 'फरुवा' कहते हें तथा जिसम बिलोकर घी रखा जाता है उस लकडीके बर्तनको 'हडपी' कहा जाता है। दूध-दहीका गिर जाना अशुभ माना जाता है।

सामान्यत यहाँकी गायाका जीवन १०-१२ वर्षका होता है। बेलाकी भी प्राय यही आयु रहती है। २-३ सालकी बछिया ब्याने योग्य हा जाती है। गाय दूध तो कम दती ह, पर दूध बडा ही मधुर एव स्वादिष्ट होता है। दूध देनेवाली गाय 'धिनुवा' (धेनु) कहलाती है तथा जब गायका दूध छूटने लगता है या वह एक ब्याँतम ८-९ महीने दूध दे चुकी होती है तो बाखडी (वाष्कयिणी) कहलाती है। ऐसी गायका दूध बडा ही गाढा ओर मीठा होता है। सामान्यत गायको 'गोरु' और बैलको 'बल्द' कहा जाता है।

प्राय प्रत्यक घरम एक-दो गाय तथा एक बेल या बैलकी जोडी रहती है। बैलासे खेती की जाती है। गाय-बैलसे घरकी समृद्धिका अनुमान लगाया जाता है और गायोका पालना शुभ माना जाता है। लोग आपसमे जब कुशल-क्षेमका समाचार पूछते हें तो उसी क्रममे 'धिनालि कतुक् छ' अर्थात् दूध देनेवाली गाये कितनी है?—यह प्रश्न अवश्य पूछा जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्यक घरम गाय अवश्य रखी जाती हे। शामको जगलस गाय जब समूहम घर लौटती हैं, उस समयका दृश्य बडा ही मनोरम दीखता हे। गाय अपना-अपना घर पहचानती हैं। गाइर्मे भी अपने ही स्थानपर जाकर खडी हो जाती हैं। ब्यायी हुई गाय रँभाती हुई, दौडती हुई आती हैं आर अपने बछडको चाटती हुई अपना वात्सल्य-स्नेह प्रकट करती हें।

यहाँके लागाका विश्वास है कि भसके दूधसे बुद्धि भैंस-जेसी ही मोटी हो जाती हे। गायाम एक दिव्य ज्ञानशक्ति होती है। जब वे घनघार जगलाम चरने जाती हैं तो कभी-कभी बाघकी शिकार भी बन जाती ह। कहीं आस-पास बाघ हो तो गायाको पता नहीं किस शक्तिसे उसका भान हा जाता हे। सब गाय रँभाती हुई एक समूहम एकत्र हो जाती हें, उनके कान खड हो जाते हैं। समूहम बाघ आक्रमण नहीं कर पाता, किंतु एक-दाको अकले पाकर मार देता है।

यद्यपि यहाँ काई बडी गोशाला नहीं तथापि यहाँका प्रत्येक घर गोशाला है। प्रत्येक गाष्ठ पूजास्थल है, तीर्थ है। फिर भी कहीं-कहीं गायाकी बडी दुर्दशा भी दीखती हे। मुख्य समस्या उनके निवासस्थान गोष्ठकी है। कुमाऊँक ग्रामीण अचलाम प्राय पत्थरके तीन मजिले ढालूदार छतवाले मकान बनते हैं। जिसके मध्यभागम लोग रहते हें ऊपरकी मजिलमे रसोई इत्यादिका कार्य होता है तथा निचली मजिलम गायाका स्थान रहता है। जो यहाँकी भापामे गोठ (गोष्ठ) कहलाता है। इसमें प्रकाशका अभाव रहता है तथा इसकी ऊँचाई भी बहुत अधिक नहीं रहती। प्राय बरसातमे सीलन भी रहती हे। कोई-काई लोग अलगसे एक दुमजिला मकान बना लेते है जो यहाकी भापामे 'छान्' कहलाता है। ऊपरके मजिलम गायोका सूखा चारा रहता है ओर नीचे गाय रहती हं।

देशके मैदानी भागोकी तरह अभी यहाँ कसाइयाका आतक नहीं है। किसी गायका वध हुआ या गाय वधके लिये बेच दी गयी कहीं भी ऐसा नहीं सुना जाता। इसका मुख्य कारण यहाँकी भौगालिक एव प्राकृतिक स्थिति है, जा गायाको सुरक्षित रखती है। यहाँका जो भी गोवश है वह अपना स्वाभाविक आयु स्वाभाविक ढगसे पूर्ण करता हे। यहाँका गोवश पूर्ण सुरक्षित है। यहाँके सीधे-साधे ग्रामीण गोचारक 'गायका वध किया जाता है' इस बातको कोई कितना ही जोर देकर कहे, किसी भी तरह विश्वास

नहीं कर सकते, न ऐसी कल्पना ही कर सकते हैं। गौके प्रति इतनी अटूट धार्मिक आस्था, इतना आस्तिक भाव उनके रोम-राममे प्रविष्ट है कि वे इस बातको सुनकर ही काँप उठते हैं।

पञ्चगव्य तथा पञ्चामृतका यहाँके धार्मिक जीवनम तो जो स्थान है, सो तो है ही, अभी कुछ दिना पूर्वतककी बात है, प्रत्येक घरके आँगनम एक सुरक्षित स्थानमे एक बर्तनमे गोमूत्र रखा रहता था। कहीं बाहरसे घरमे प्रवेश करनेसे पूर्व गोमूत्र छिडकना तथा उसका पान करना बहुत ही आवश्यक समझा जाता था। सारा घर गोबर-मिट्टीसे ही लीपा जाता था। प्रत्येक शुभ पर्व एव उत्सवापर घरकी देहलीको अनिवार्य-रूपसे गोबरसे लीपा जाता था। ऐसा न करनेपर बडा ही अमगल तथा अशुभ समझा जाता था। जननाशौच, मरणाशौच आदिम भी गोमूत्र-गोबरक छिडकाव एव पञ्चगव्यके पानके बिना शुद्धि नहीं समझी जाती। धार्मिक अवसरो तथा विवाहित उत्सवाम गोदान तथा बछियाके दानकी परम्परा है। यहाँकी धार्मिक आस्थामे बछियाके दानको विशष प्रशस्त माना गया है। दोषकारक नक्षत्रोमे उत्पन्न शिशुके तथा माता-पिताके अरिष्ट-निवारणके लिये गोमुख-प्रसव-शान्ति की जाती है। जिसमे उत्पन्न शिशुको एक नवीन शूर्पमे रक्त वस्त्र बिछाकर उसमे तिलोके ऊपर लिटाकर पुन रक्त सूत्रसे लपेटकर उसे आचार्यद्वारा गौके मुखके समीप ले जाया जाता है और गोके शरीरमे स्पर्श कराकर गौके पृष्ठभागम बैठी माताको दे दिया जाता है। इससे उस बालकको गोमुखसे उत्पन्न समझा जाता है और उसके सारे दोष-पापोकी शान्ति भी समझी जाती है। इस प्रकार कुमाऊँके पर्वतीय प्रदेशम गौ जन-जनके जीवनमे अनुस्यूत-सी है।

विदेशोमे गाय

विदेशोंमें गायका महत्त्व—कुछ सस्मरण

(श्रीलल्लनप्रसादजी व्यास)

गोदुग्ध-पान और गोमास-भक्षणके बारेमे भारत और विदेशाके चिन्तन तथा व्यवहारमे विचित्र विडम्बना या विरोधाभास दिखायी पडता हे। भारत आदिकालसे गोपूजक देश रहा है। जहाँ *'बिप्र धेनु सुर सत हित'* भगवान्का अवतार हुआ तथा जहाँ दूधके उत्पादनम अधिकता होनेसे ऐसा माना जाता रहा कि कभी यहाँ दूधकी नदियाँ वहती थीं, वहीं इस देशम आज स्थिति यह हो गयी है कि धडल्लेसे गाये कटती हैं और गोवध बद करानेके लिये गोभक्तोद्वारा आन्दोलन तथा आमरण अनशन होते हैं। जहाँतक गोदुग्धका प्रश्न है, कुछ क्षेत्राको छोडकर अधिकाशम गोदुग्ध एक दुर्लभ वस्तु हो गयी है। गौके दूधका स्थान भैंसके दूधने ले लिया है। फलस्वरूप गापालक भारत देशम गोवशका दिन-प्रति-दिन ह्रास हो रहा है। दूसरी ओर विदेशाम चाहे व पश्चिमके देश हो या पूर्वके, दूधकी बहुतायत हे और कुछ देशामे गौके दूधका उत्पादन वहाँके प्रमुख उत्पादनम-से है और वे दश गोके दूधकी बनी वस्तुएँ ससारभरको निर्यात करते हैं, जबकि इन सभी देशोमे गोमास-भक्षण भोजनकी एक आम आदत है। इन देशामे दूधका मतलब गौका दूध ही माना जाता हे, भैंसका दूध नहीं। कुछ देशाम तो भैंस अजायबघरमे रहनेवाले पशुके समान है।

कई वर्ष पूर्वकी बात है, फारमोसा (तैवान) की यात्राके दौरान रास्तेम पडनेवाले गाँवमे कहीं-कहीं भैंस दिखायी पडी तो एक अधिकारीसे पूछा गया कि इसके दूधका आपके देशमे क्या उपयोग है? तो उन्हाने सहज भावसे उत्तर दिया कि 'इसका बच्चा पीता है।' इसके आगे कोई प्रश्न करनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई, कितु मनमे यह प्रश्न कौंधता रहा कि क्या यहाँ भैंसके दूधका उसके बच्चेके पीनेके अलावा और कोई उपयोग नहीं है? कुछ समय बाद जब पुन उस देशकी यात्राका सयोग उपस्थित हुआ ओर उसी प्रकार फिर ग्रामीण क्षेत्रोसे गुजरते हुए भैंसे दीख पडीं तो पूछनेपर पता चला कि भैसके दूधका उपयोग 'केवल इसके बच्चेके पीनेके लिये होता है।' दोनो बार एसा उत्तर सुनकर इसी निष्कर्षपर पहुँचना पडा कि यहाँ कोई मनुष्य भैंसका दूध पीता हो नहीं है। कोई भैंसके दूधको पिये, इसकी कल्पना ही नहीं उठती।

कुछ वर्ष पूर्वतक थाईलेडमे भी यही स्थिति थी, किंतु वहाँ पूर्वी भारतीय लोगाने पहुँचकर गायके बजाय भैस पालना शुरू किया और भैसके दूधका प्रचार किया।

इस प्रकार गायके दूधका मानव-जीवनमे अनिवार्य उपयोग होनेके बावजूद भी गाय अधिकाश देशामे पूजनीय नहीं हे और गोमास-भक्षणका व्यापक प्रचार है। विदेशामें कोई गावध-निषेधका प्रश्न भी नहीं उठाता। उन्ह अभी यह ज्ञान प्राप्त होना है कि गाय और अन्य पशुओम बडा अन्तर है तथा गायका दूध ही मनुष्यका स्वास्थ्य बढाता हे, उसका मास मानव-स्वास्थ्यका सबसे बडा शत्रु है तथा अनेक रोगोको जन्म देता है। पश्चिमी देशोकी अनेक बीमारियाके मूलमे यदि खोज की जाय तो अत्यधिक मात्रामे गोमास-भक्षण ही कारण दिखायी पडेगा। इधर कुछ वर्षामे विभिन्न कारणासे विदेशियोम शाकाहार बढनकी प्रवृत्तिको देखते हुए नये अनुसधान किये जा रहे हैं और यह निष्कर्ष निकाले जा रहे हैं कि शाकाहार मनुष्यके स्वास्थ्य और दीर्घ जीवनके लिये बहुत जरूरी हे।

बालीमे गोमास-भक्षण-सम्बन्धी विडम्बना सबसे अधिक विचित्र है। यह इडोनशियाका हिन्दू-बहुल द्वीप है। यहाँकी ९० प्रतिशतसे अधिक जनसख्या हिन्दू हे। वे अपनेको हिन्दू कहनेमे गौरवका अनुभव करते हैं। साथ ही वहाँ वर्ण-व्यवस्था भी विद्यमान हे और इसक लिये भी उन्ह गारवका बोध होता है। किंतु यह जानकर बडा कष्ट हुआ कि वहाँके हिन्दू केवल मासभक्षी ही नही अपितु गोमासभक्षी भी हैं। वहाँ अधिकतर श्यामा गाय होती हैं जिनका कद छाटा होता हे और मुख तथा आँखे हिरनी-जैसी हाती हैं, वे बडी मुन्दर दिखायी पडती हैं। वहाँके जीवनम गौका इतना महत्त्व हे कि मृत्युके बाद शवको एक कागजकी गाय बनाकर उसम रखकर अग्निको समर्पित किया जाता हे, ताकि गायकी सहायतासे स्वर्गम जाना सम्भव हो सकेगा।

इधर कुछ वर्षोम वालाक कुछ विद्वान् हिन्दी, सस्कृत एव हिन्दू शास्त्राका अध्ययन करनेके लिय भारत आय और उन्ह प्रेरणा हुई कि बालीम हिन्दुआको सही अर्थामे हिन्दू बनानेक लिय गोमास-भक्षण छाड दना चाहिय और उन्हाने वहाँकी भाषाम इसक बारेम पुस्तक लिखकर यह प्रचार करनका प्रयास किया है कि गामास-भक्षण हिन्दू-धमक विरुद्ध आचरण है। इसका असर धीरे-धारे हो रहा हे।

ऐसे ही विद्वानोसे कुछ अन्य तथ्याकी जानकारी मिली है, जिसके मुख्य विवरण इस प्रकार हैं—

१-बालीम एकमात्र क्षत्र 'तरो' है, जहाँ सफेद गाय मिलती हे। इस गायको 'लम्बू' कहते हैं ओर लोग इसकी पूजा करते हे।

२-भारतकी तरह बालीके श्रद्धालु भी गोबर और गायका मूत्र पूजनम शुद्धिके रूपमे इस्तेमाल करते हैं।

३-बालीकी राजधानी देनपसारम एक छोटा-सा द्वीप है जिसका नाम 'नूसापनिदा' है। प्राचीन कालमे यह वैष्णव-क्षेत्र था, यहाँके लोग गोमास नहीं खाते थे। यदि कोई खाता था तो उसे गाँवसे निकाल दिया जाता था या जा परिवार गोमास-भक्षी थे वे गाँवम नही, अपितु वनमे जाकर खाते थ।

४-बालीम जो लोग अज्ञानवश गोमास खात थे या गाय मारनेवाले कसाईखानेसे होकर गुजरते थे तो उन्हे नदीम स्नान करके गाँवम प्रवेश मिलता था। इसके बाद माता या वृद्ध लोग गङ्गा-जलका आवाहन करके उसके मुँहपर छींटे मारते थे।

५-बालीके वृद्ध लोग कहते है कि प्राचीन कालमे जो लोग गोमास खात थे, उन्हे कुत्तसे ज्यादा नीच समझा जाता था।

६-बालीके प्राचीन ग्रन्थाम कुछ श्लोक और दूसरे ऐसे उल्लख मिलते हैं, जिनम पञ्चगव्यक महत्त्वक बारेमे बताया गया है। इसका उपयोग वे पूजामे और प्रायश्चित्तके समय भी करते थे।

७-इडोनेशियाकी प्रसिद्ध रामायण 'काकविन' के महाकवि यागेश्वरने गायका महत्त्व दिग्दर्शित करनेवाले कई श्लोकाका उल्लेख किया है। इन श्लोकाके माध्यमसे महाकविने बताया है कि ससारम पशुकी स्थिति बहुत दयनीय है और उसमे भी गायकी आर भी अधिक। महाकविने अच्छे और बुरे व्यक्तियाकी यह पहचान भी बतायी है कि बुर व्यक्ति गायपर अधिक सामान लाद देते हैं आर ऊपरसे मारते भी हैं तथा उसके शरीरका केवल भक्षण करनवाले मासके रूपम दखते हैं किंतु अच्छे लाग गायक प्रति करुणाका भाव रखत हैं आर गायको कोई कष्ट नहीं दत।

८-बालीमे मनुष्याकी तरह गायका भी दाह-सस्कार होता है। वह भी श्मशानपर नहीं बल्कि बाग-बगीचे-जैसे पवित्र स्थानपर।

थाईलैंडमे तो गायके महत्त्वको देखकर बडी प्रसन्नता हुई। यहाँके अनेक बौद्ध-मन्दिरोमे गायकी मूर्तियाँ मिलती हैं। बैंकाकके ससार-प्रसिद्ध बुद्ध-मन्दिरमे, जिसम नीलमकी बुद्धमूर्ति रखी है, गायकी प्रतिमा भी स्थापित है और यह अत्यन्त प्रमुख स्थानपर है, जहाँ सभीकी दृष्टि जाती है। इसी मन्दिरके बगलम एक और बुद्ध-मन्दिर है जिसके अदर शिवलिग और नदी दोनो बने हैं।

कम्बोडियाके अगकोर नामकी अनेक भग्न प्रतिमाओमे भी गऊकी प्रतिमा विद्यमान है। दो मन्दिर क्रमश भगवान् विष्णु ओर शिवजीको समर्पित हैं तथा इनकी दीवालापर रामायण ओर महाभारतके अनेक प्रसग उत्कीर्ण हैं। न केवल वियतनाम, थाईलैड आर कम्बोडिया अपितु अन्य अनेक देशाने भी गौको पर्याप्त महत्त्व दिया है। ईसा पशुवधक विरोधी थे। बाइबिलमे वृषभको देवता माना गया है। फिलस्तीनम खुदाईके उपरान्त गौकी मिट्टीकी कुछ मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई थीं। यहूदी लोगामे गौका बडा आदर था। उनकी कुछ कथाआके पढनेसे ज्ञात होता है कि वे बहुत ही निपुण गोपालक थे। यहूदियोके धर्मशास्त्रकी आज्ञा थी कि दवाई करते समय बैलके मुँहमे जाली मत लगाओ। यहूदी भक्ताकी धारणा थी कि याकूबने एक बछडेको मारकर उसकी माता गोको दु ख पहुँचाया था, इसलिये उसका बेटा यूसुफ मर गया।

मेसोपोटामियाँम सुमेरियन नामके लोग रहते थे। गौके लिये सुमेरियन भाषाका शब्द 'गु' है। उनके प्राचीन सिक्कोपर भी गौके चिह्न अङ्कित रहते थे। कुछ वर्ष पूर्व सुमेरियाम खाजका कार्य हुआ था। तेलेलओबीद मन्दिरकी दीवालपर गाय-बैल ओर ग्वालाके कई चित्र मिलते हैं, जिनम कहीं गोदोहन हो रहा है तो कहीं दूध बह रहा है आदि। एक चित्रमे बैलाका जुलूस हे। इन चित्रासे यह अनुमान किया जा सकता ह कि सुमरियन लोग गोका कितना आदर करते थ। सुमेरी और बबीलान प्रदशाम कुछ वर्ष पूर्व गोवध-विराधी कानून बना दिया गया था।

मिस्रम भी गाय-बैलोकी पूजा होती थी। उनकी हथोर नामक देवी गौ ही है। हथोरके समान आपिस वृषभकी भी उपासना की जाती है। पिरामिड और खुदाईसे प्राप्त मन्दिरा और शिला-लखोसे यह ज्ञात होता है कि प्राचीन मिस्रकी सस्कृतिम गाय ओर बैलकी उपासना होती थी, मिस्रम गोहत्या नहीं होती थी। गोहत्या करनेवालेको प्राणदण्ड मिलता था। जिस प्रकार हिन्दू वैतरणी पार करनेके लिये गायकी पूँछ पकडते हे, उसी प्रकार मिस्रवासी गायकी पूँछ पकडकर नील नदी पार करते हे।

यूनानियाक गौ-प्रेमके बारेमे कहा जाता हे कि जब सिकन्दर भारतसे लौटकर यूनान जाने लगा था तो वह अपने साथ एक लाख उत्तम जातिकी गौएँ यहाँसे ले गया था।

पूर्वी देशा, विशेष रूपसे जापानमे मानव-स्वास्थ्यको लेकर जो नयी-नयी जागरूकता पैदा हो रही है, उसमे गौके दूधका सेवन व्यापक रूपसे बढ रहा हे। जिस तरहसे अनक देशामे जगह-जगह मशीनाके माध्यमसे सिक्के डालकर शीतल पेय प्राप्त किये जा सकते हैं, वेस वहाँ मशीनाके माध्यमसे जगह-जगह दूधकी व्यवस्था उपलब्ध हे।

हालड, जर्मनी, बेल्जियम, डेन्मार्क आस्ट्रेलिया आदि देश गौके दूधके उत्पादनम इतने आगे बढ गये है कि इनमेसे कुछ देशाम यदि यह कहा जाय कि यहाँ दूधकी नहर बहती ह तो कोई अतिशयाक्ति नहीं होगी। वर्तमान युगमे यह कैसी विडम्बना उभर कर सामने आयी है कि गा-भक्षक देश गायके दूधके उत्पादन ओर उपयोगका महत्त्व दे रहे ह ओर गोपूजक दश गोके दूध ओर उसकी बनी हुई वस्तुआकी अनिवार्यता समाप्त करके गोवशक ह्रासको जान-बूझकर प्रश्रय दे रहे हैं, भारतक लिये ता यह बहुत लज्जाजनक बात है। यदि गाके दूधकी माँग और खपत नहीं हागी और कृषिके लिये बैलाकी जरूरत महसूस नहीं हागी तो गोवशकी वृद्धि किस सम्भावनाक आधारपर होगी?

अत आज सभीको गारक्षण और गासवधनकी आर विशष सचेष्ट रहत हुए गोहत्या बद करानक महदुद्द्यम प्राणपणस जुट जाना चाहिये।

गाय और इस्लाम

देशमे विद्वेषपूर्ण और भ्रामक प्रचार किया जाता रहा है कि इस्लाम गोवधकी इजाजत देता है। निम्नलिखित उद्धरणो और तथ्यासे यह स्पष्ट है कि इस्लाम और उसके पैगम्बर तथा प्रतिष्ठित नेता गायको सदा आदरकी दृष्टिसे देखते आये हैं।

[१] 'गायका दूध ओर घी तुम्हारी तदुरुस्तीके लिये बहुत जरूरी है। उसका गोश्त नुकसानदेह ओर बीमारी पैदा करता है, जबकि उसका दूध भी दवा है।'—हजरत मुहम्मद (नासिहाते हादी)

[२] 'गायका दूध बदनकी खूबसूरती और तदुरुस्ती बढानेका बडा जरिया है।'—हजरत मुहम्मद (बेगम हजरत आयशासे)

[३] 'बिला शक तुम्हारे लिये चोपायोमे भी सीख है। उनके (गायके) पेटकी चीजामसे गोबर और खूनके बीचमसे साफ दूध, जो पीनेवालाके लिये स्वादवाला है, हम तुम्हे पिलाते हैं।'—कुरानशरीफ १६-६६

[४] 'अच्छी तरह पली हुई ९० गाय १६ वर्षोंम न सिर्फ ४५० गायें ओर पैदा करती हैं, बल्कि उनसे हजारो रुपयेका दूध ओर खाद भी मिलते हैं। गाय दोलतकी रानी है।—हजरत मुहम्मद (मौला फारुखीद्वारा सकलित, 'बरकत' और सरक्रतमे)

इन राजाओ और बुजुर्गोने गोहत्या बद करवायी थी—

[५] मुगल बादशाह बहादुरशाहके खास पीर मौलवी कुतुबुद्दीन साहबने फतवा दिया था कि 'हदीस'मे कहा है कि जाबेहउलबकर (गायकी हत्या करनेवाला) कभी नहीं बख्शा जाना चाहिये।

—इस फतवेपर इन बुजुर्गवारोके दस्तखत हैं—

मुहम्मद शाह गाजी शाह आलम बादशाह।

सैयद उताउल्लाखान फिदवी।

पीर मौलवी कुतुबुद्दीन।

काजी मियाँ असगर हुसैन दस्तखत खास वल्द मुन्शी इलाही खान।

दरोगा आतिशखान हुजूरपुरनूर।

[६] बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, मुहम्मदशाह आलम-जैसे शासकाके अलावा अब्दुलमुल्क इब्ने मरदान सूबेदार ईराक, वाली हुकुमत अफगानिस्तानने सौसे ज्यादा उलेमा अहले सुन्नतके फतवाके मुताबिक गायकी कुर्बानी बद करायी।

[७] ब्रिटिश-कालम जिन मुसलमान शासकोने अपनी इन रियासतामे गोहत्याको बद कराया था, वे थे—नवाब रावनपुर, नवाब मगरौल, नवाब दुजाना (करनाल), नवाब गुडगाँव और नवाब मुर्शिदाबाद।

[८] मौलाना फरुखी लिखित 'खैर व बरकत' से पता चलता है कि शरीफ मक्काने भी गोहत्यापर पाबदी लगवायी थी।

[९] लखनऊके छह उलमाएँ सुन्नतने गोहत्या-बदीका फतवा दिया था।

[१०] इमाम जाफर साहबने इरशाद फरमाया था, 'गायका दूध दवा है, इसके मक्खनम शिफा (तदुरुस्ती) है और मासम बीमारी।'

[११] 'मुसलमानको गाय नहीं मारना चाहिये। ऐसा करना हदीसक खिलाफ है।' (मौलाना हयात साहब खानखाना हाली समद साहब)

[१२] 'गायकी बुजुर्गी इहतराम किया करो, क्योकि वह तमाम चौपायाकी सरदार है।' (तफसीर दर मन्सूर)

आधुनिक इस्लामी नेताओकी दृष्टिमे गाय

[१३] भारतीय स्वातन्त्र्य सग्रामके प्रसिद्ध सेनानी हकीम अजमलखानका कहना है 'न तो कुरान और न अरबकी प्रथा ही गायकी कुर्बानीकी इजाजत देती है।'

[१४] जब १९२२ में मौलाना अब्दुलबारी साहब मरहूम फिरगी महलीने जब गायकी कुर्बानीको बद करनेके लिये फतवा शाया किया था तो महात्मा गाँधीने उनका शुक्रिया अदा किया था। [प्रेषक—श्रीपीला रामकृष्णजी]

भारतीय सिक्कोपर गाय और वृषभ

(डॉ० मेजर श्रीमहेशकुमारजी गुप्ता)

प्राचीन कालसे ही भारतीय समाजमे गायको गोमाताके नामसे ही सम्बोधित किया जाता है। भारत मूलतः कृषि-प्रधान देश है और गाय एवं बैल (वृषभ) का कृषिमे प्रमुख स्थान है। छठी सदी ईस्वी-पूर्वसे भारतके स्वतन्त्र होनेतक गो तथा वृषभको प्रायः अधिकांश शासकोद्वारा सिक्कोपर स्थान मिला है, जो इनकी महत्ता एवं उपयोगिताको दर्शाता है। गायका सबसे अच्छा अङ्कन प्राचीन भारतके लिच्छवी गणराज्यके शासक अंशुवर्माके सिक्कोपर मिलता है। वृषभका अङ्कन पञ्चमार्क, एरण औदुम्बर, अयोध्या कोशाम्बी, सातवाहन उज्जयिनी, क्षत्रप, योधेय, कृष्णराज (कलचुरी), सामन्तदेव, जहाँगीर, इन्दौर रियासत तथा स्वतन्त्र भारतके प्रथम सिक्कोपर मिलता है। यहाँ तत्तत् कालोमे मान्य उन सिक्कोका संक्षेपमे विवरण दिया जा रहा है।

(१) लिच्छवी गणराज्य—प्राचीन भारतका प्रमुख गणराज्य लिच्छवी गणराज्य था, जो अब नेपाल कहलाता है। जिस प्रकार भारतवर्षमे चन्द्रगुप्त मौर्यके कालको प्रामाणिक मानते है, उसी प्रकार नेपालके इतिहासकार अंशुवर्माके कालको आधार मानकर चलते हैं। वह सिंहके समान बलवान् था। राजा अंशुवर्माने जो सिक्का प्रचलित किया वह उन्हींके नामसे प्रसिद्ध हुआ, इसका विवरण इस प्रकार है—

धातु—ताँबा वजन ११.५ ग्राम, आकार २ से०मी०, काल ५०० ई०।

अग्रभाग—गाय खडी है उसके गलेमे घंटी बँधी है। बछडा गायका दूध पी रहा है तथा ऊपर ब्राह्मी लिपिमे लेख है 'का म देहि' (कामधेनु)। चारो तरफ बिन्दु बने है।

पृष्ठभाग—गर्वीला सिंह अगला पंजा उठाये खडा है। उसके पंख लगे हैं, ऊपर ब्राह्मीमे 'अंशुवर्मा' लिखा है।

(२) गुहिला शासक बप्पा (मेवाड़)—मेवाडके गुहिला शासकोमे बप्पा प्रमुख थे। उनके अभीतक कुल तीन सिक्के ही मिले हैं।

धातु—सोना वजन ७.५ ग्राम, आकार २.४ से०मी०, समय २००ई०।

अग्रभाग—सिक्केके अग्रभागमे बिन्दु, छतरी तथा गायका दूध पीते हुए बछडा बना है और नीचे मछली बनी हुई है।

पृष्ठभाग—सिक्केके पृष्ठभागमे शिवलिंगके सामने बैठा हुआ नन्दी, नीचे लेटा हुआ मनुष्य और ऊपर 'श्रीबप्पा' लिखा हुआ है।

(३) पञ्चमार्क—ईसा-पूर्व छठी सदीसे दूसरी सदीतक सारे भारतवर्षमे पञ्चमार्क सिक्के चलते थे। इनपर किसी राजाका नाम नहीं पाया जाता, केवल पाँच अलग-अलग चिह्न पाये जाते हैं। इन सिक्कोपर अभीतक ५०० से अधिक प्रकारके चिह्न पहचाने जा चुके है। विवरण इस प्रकार है—

धातु—चाँदी, वजन ३.२ ग्राम, आकार २.० से०मी०, समय ६ ई०पूर्व।

अग्रभाग—खडा हुआ वृषभ, सूर्य, हाथी, डमरू दोनो तरफ 'मकार' बना है।

पृष्ठभाग—मेरु पर्वत दिखाया गया है।

(४) एरण—मध्यप्रदेशमे सागर-बीना रेलवे लाइनपर एरण नामका एक नगर स्थित है। प्राचीन कालमे यह एक प्रमुख नगर था। यहाँके सिक्के बहुत ही अच्छे माने जाते हैं। विदिशा, अवन्ती तथा एरणके सिक्कोमे काफी समानता है जिससे मालूम पडता है कि इनमे राजनैतिक सम्बन्ध था। इनका समय ३०० ई० पू० से १५० ई०पूर्व है।

धातु—ताँबा, वजन ७.५ ग्राम, आकार चौकोर १.६ से०मी०, समय ३०० ई०पूर्व।

अग्रभाग—पाँच चिह्न ऊपर, दाये वृषभ, बाये शेर, नीचे दाये हाथी, बाये चिह्न। मध्यमे नदी। पृष्ठभागमे ऊपर बायीं ओर कोनेमे चिह्न बना है।

(५) औदुम्बर—पाणिनिके गणपाठ-प्रकरणके अन्तर्गत उल्लिखित राजन्यसमूहमे उदुम्बर नामका उल्लेख है। इनके वंशजोको औदुम्बर कहा जाता है। महाभारतमे जितने गणोका वर्णन मिलता है, उनमे औदुम्बरका भी नाम आया है। विष्णुपुराणमे कुणिन्द जातिके साथ इसका नाम आता है। यह जाति काँगडा और अम्बाला प्रान्तमे निवास करती थी उन्हींके वंशज गुजरातमे ओदुम्बर ब्राह्मण (गुजराती) के नामसे विख्यात है। ओदुम्बरके सिक्कोपर खरोष्ठीमे भी मुद्रा-लेख है। यह मुद्रा रुद्रवर्माकी है।

धातु—ताँबा, वजन ६० ग्राम, आकार २ से०मी०, समय २००-१०० ई०पूर्व।

अग्रभाग—दाहिनी ओर मुँह किये वृषभ खडा है, कमलका फूल बना है तथा खरोष्ठीमे लेख है—'रानो वामासिका रुद्रवर्मासा विजियता।'

पृष्ठभाग—हाथी, त्रिशूल तथा ब्राह्मीमे खरोष्ठीवाला लेख ही अङ्कित है।

(६) अयोध्या—प्राचीन कोसल राज्य वर्तमानकालम अवधके नामसे विख्यात है। सरयू नदीके किनारे इसकी राजधानी अयोध्या साकेतके नामसे प्रसिद्ध थी। अयोध्याके सिक्क सर्वथा भारतीय शैलीके हैं। मित्रवशके दस राजाआके सिक्के मिले हैं। चित्रमे प्रदर्शित सिक्का आर्य मितासाका है।

धातु—ताँबा, वजन ७०० ग्राम आकार १८ से०मी०, समय २०० ई० पू०।

अग्रभाग—खडा हुआ नन्दी, नीचे ब्राह्मीम लिखा हुआ—'आर्य मितासा'।

पृष्ठभाग—ताडका वृक्ष तथा वृक्षको देखता हुआ मोर अङ्कित हे।

(७) कौशाम्बी—आधुनिक इलाहाबादस ३७ कि०मी० दक्षिण-पश्चिम यमुनाके समीप वत्स नामक जनपद था जिसका उल्लेख बौद्ध-ग्रन्थाम भी मिलता है। वर्तमान कोसाम (कोशाम्बी) उस राज्यकी राजधानी थी। यह प्रधान सैनिक केन्द्र था तथा यहाँ व्यापारिक मार्ग पश्चिमकी ओर जाता था। शुग-कालके बाद यहाँके राजा अपने नामका स्वतन्त्र रूपसे सिक्का चलाने लगे। बृहस्पति मित्रके सिक्क अधिक मिले ह।

धातु—ताँबा, वजन ६५ ग्राम, आकार गाल २५ से०मी० समय ३०० ई०पूर्व।

अग्रभाग—बार्यी ओर मुँह किये वृषभ खडा हे। ध्वज-दड तथा अन्य चिह्न अङ्कित है।

पृष्ठभाग—घेरेमे वृक्ष, स्वस्तिक, चक्र, मेरु पर्वत आदि चिह्न वने हैं।

(८) सातवाहन—मार्य साम्राज्यके पतनक बाद भारतम अनक राज्याका उदय हुआ। दक्षिण भारतम मार्योके उत्तराधिकारी सातवाहन नरेश माने जात हैं। इनका नाम पुराणाम आन्ध्रजातीयके रूपम उल्लिखित है। इस वशका अभिलेखाम सातवाहन-कुलक नामसे वर्णित किया गया है। सातवाहन सिक्केका विवरण इस प्रकार है—

धातु—लड (सीसा), वजन १०५ ग्राम, आकार गोल २ से०मी०, समय १६० ई०पू०।

अग्रभाग—दाय मुँह किये खडा हुआ वृषभ, पीठके ऊपर मेरु पर्वत, ब्राह्मीम 'रानो सरासात वाहन सा' अग्रभागम लिखा हुआ है।

पृष्ठभाग—पाँच शाखाआवाला पेड, श्रीवत्स तथा मकार बना हुआ है।

(९) आन्ध्र—सातवाहन शासकाका आन्ध्रप्रदेशम राज्य विस्तृत होनेपर ही पुराणोम इस वशको आन्ध्रजातीय कहा गया। प्राचीन हैदराबाद (वर्तमान आन्ध्र प्रदेश) रियासतके कोडपुर नामक स्थानसे ताँबे तथा सीसेके अनेक सिक्के उपलब्ध हुए हैं।

धातु—सीसा, वजन १३ ग्राम, आकार गाल १२ से०मी०, समय १५० ई० पू०।

अग्रभाग—अग्रभागम दायी ओर मुँह किये वृषभ खडा है।

पृष्ठभाग—शाखाओवाला वृक्ष पृष्ठभागम बना है।

(१०) विदिशा—बसननगर (विदिशा भिलसा) मुख्य राजकीय मार्ग मथुरासे उज्जनपर स्थित है। अशोक महान्‌की ससुराल विदिशा थी। मोर्य शासन-कालसे ही यह महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँके सिक्कापर उज्जैन एरणके सिक्काका प्रभाव दीखता है।

धातु—ताँबा, वजन ६५ ग्राम, आकार चोकोर २ से०मी० समय २०० ई०पू०।

अग्रभाग—दाये मुँह किये वृषभ खडा ह, सामने चैत्यम वृक्ष बना हे।

पृष्ठभाग—विदिशाका चिह्न अङ्कित ह।

(११) उज्जयिनी—आधुनिक मालवाका नाम अवन्ति (उज्जयिनी) था। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। यह स्थान मोर्यकालसे ही महत्त्वपूण रहा है। यहाँके सिक्कापर एक विशेष चिह्न मिलता ह जिसे उज्जयिनी-चिह्न कहते हैं। कुछ सिक्कापर उज्जयिनी भी लिखा मिला है।

धातु—ताँया वजन ७० ग्राम आकार गोल २ से०मी०, समय २०० ई०पू०।

अग्रभाग—दाहिने मुँह किय हुए वृभक सामने वृषभ खडा हे तथा खड हुए पुरुषकी आकृति बनी ह।

अग्रभाग
पृष्ठभाग
अग्रभाग
पृष्ठभाग
अग्रभाग
पृष्ठभाग
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
आधा
आना
२०
२१

पृष्ठभाग—उज्जयिनीका चिह्न अङ्कित है।

(१२) क्षत्रप—पहले कुषाण साम्राज्य कई प्रान्तोमे बँटा था और प्रान्तीय शासकाको 'क्षत्रप' कहा जाता था। क्षत्रप युगका अधिकाश इतिहास सिक्कोपर लेखद्वारा ही जाना गया हे। क्षत्रपाकी पॉच शाखाएँ थीं—(१)तक्षिला पाटिक नामका शासक, (२) मथुरा रजुबाल नामका शासक, (३) वाराणसी खरपासलाना, (४) मालवा क्षहरातवशी नहापना, (५) सौराष्ट्र चेष्टन। मालवा-उज्जैनमे पश्चिम क्षत्रपोने चाँदी, ताँबा, पोटिनके सिक्के निकलवाये। इन सिक्कोपर एक तरफ राजाकी मुखाकृति रहती है। यह सिक्का वृषभवाला है, जो महाक्षत्रप रुद्र दमनका हे। इस सिक्केका विवरण इस प्रकार है—

धातु—पोटिन, वजन २ २ ग्राम, आकार गोल १ ५ से०मी०, समय १३० ई०।

अग्रभाग—इस सिक्केक अग्रभागमे दाहिने मुँह किये खडा वृषभ तथा खरोष्ठी लिपिमे चारा तरफ 'महाक्षत्रप रुद्र दमन' लिखा हुआ हे।

पृष्ठभाग—बायॉ आर चाँद दायीं आर सूर्य, ब्राह्मीमे वही अग्रभागका लेख तथा बीचमे मेरु पर्वत बना है।

(१३) विष्णु कुण्डी (पल्लव)—इन शासकाकी अभीतक पूर्ण जानकारी नही मिली है क्याकि इनपर कोई लेख नहीं है। ये सिक्क आन्ध्रप्रदेश तथा दक्षिणम काफी मिले हैं। इनम शर आर वृषभ दो प्रकारके सिक्के पाय जाते हैं। इनका समय ३२० से ७०० ईस्वीतक माना जाता है।

धातु—हल्की चाँदी, वजन ९ ५ ग्राम आकार गोल १ ८ से०मी०, समय ३२०-७०० ई०।

अग्रभाग—दाय मुँह किये खडा हुआ वृषभ बना है।

पृष्ठभाग—स्टडपर रखा हुआ घडा बना है तथा दोना तरफ त्रिशूल अङ्कित है।

(१४) नरवरके नाग—विष्णुपुराणम नो नाग-राजाआका वर्णन है, जिनका पद्मावती-मथुरातक राज्य था। ग्वालियरके पास नरवर नामक स्थानपर इनकी राजधानी थी।

धातु—ताँवा वजन २ ५ ग्राम, आकार ० ५ से०मी०, समय २००-४०० ई०।

अग्रभाग—मध्यम बायीं आर मुँह किये वृषभ खडा है।

पृष्ठभाग—पीछे ब्राह्मीमे 'महाराज श्री वृषभ' अङ्कित है।

(१५) यौधेय—बहुत प्राचीन समयसे यौधेय जाति व्यास नदीके पार भारतके उत्तर-पश्चिमी प्रान्तमे रहती थी। इस जातिका प्रधान कार्य युद्ध करना था। इनका अस्तित्व मोर्य-शासन, क्षत्र तथा कुषाण-कालमे ज्या-का-त्यो बना रहा। दूसरी सदीम यौधेय जाति उन्नतिके शिखरपर थी। मोर्य-शासनकी समाप्तिपर उन्हाने अपना सिक्का निकाला। वर्तमान समयम यह प्रान्त रोहतक नामसे प्रसिद्ध है, आठ सौ वर्षोतक यौधेय शासकोका शासन स्थिर रहा। प्राप्त सिक्केका विवरण इस प्रकार है—

धातु—ताँबा, वजन ६ ० ग्राम, आकार गोल २ से०मी०, समय ३०० ईस्वी।

अग्रभाग—चेत्यमे वृक्ष बना है तथा वृक्षकी ओर मुँह किये वृषभ खडा हे, ब्राह्मीम 'बहुधान्यक/भूमि धनुष' लिखा है।

पृष्ठभाग—हाथी तथा नन्दीका पाद-चिह्न बना है।

(१६) कृष्णराज (कलचुरी)—कलचुरी-वशके शुरूमे चाँदीके सिक्के निकले हैं, जो गुप्त सम्राट् स्कन्दगुप्तके चाँदीके सिक्काके अनुकरण हैं। इन सिक्कापर कृष्णराजका नाम पढा है। सिक्केपर क्षत्रपाके समान ही मूँछ-सहित राजाकी आकृति है तथा गुप्तलिपिमे मुद्रालेख लिखा है।

धातु—चाँदी, वजन ३ ५ ग्राम आकार गोल १ ५ से०मी० समय ५५० ईस्वी।

अग्रभाग—मध्यमे वृषभ तथा चारो ओर मुद्रालेखम 'परम माहेश्वर मातृ-पितृ-पादानुध्याती कृष्ण राज' लिखा हुआ है।

पृष्ठभाग—राजाका सिर ओर मूँछे दिखायी पडती हैं।

(१७) सामन्तदेव—प्राचीन समयम काबुलका भूभाग ईरानी राजाओके अधिकारम था। सातवीं सदीके बाद उस क्षेत्रके शासकको शाहकी पदवी प्राप्त थी। वे क्षत्रिय थे, परतु बौद्ध मतानुयायी थे। चीनी यात्री ह्वेनसाग (६३० ई०) ने लिखा है कि काबुलका राजा शाह कहा जाता था। ७ वींसे ११वीं सदीतक काबुल शाहने शासन किया और सिक्के प्रचलित किये। अरब-आक्रमणके बाद काबुल इस्लामक अधिकारम चला गया और अरबके खलीफाको कर दने लगा। काबुलके क्षत्रिय शाही नरेशाके स्थानको

ब्राह्मण ललिलयने ग्रहण किया, जो पिछले शाही वशका सस्थापक था। इन राजाआके सिक्कोमे एक तरफ नन्दी तथा दूसरी तरफ घुडसवार अङ्कित है।

धातु—चाँदी, ताँबा, वजन ३ ५ ग्राम, आकार गोल १ ५ से०मी०, समय ७-११ वीं सदी।

अग्रभाग—बाय मुँह किये बैठा हुआ वृषभ तथा ऊपर 'श्री सामन्त देव' लिखा है।

पृष्ठभाग—घोडेपर बैठा हुआ राजा हाथमे भाला लिये है।

(१८) कौथकुल—कौथकुल शासकोका कुषाण नरेशासे कुछ सम्बन्ध जरूर रहा है, क्योकि इन्होने सिक्केके अग्रभागपर कुषाण शासकोकी तरह शिव तथा नन्दीको मुद्रित किया। ये सिक्के हरियाणा सुनेतमे या तो वासुदेव सिक्कोके साथ मिले हैं या यौधेयके साथ। इनका समय २-३ सदी है। सिक्कासे शैव धर्मका असर उस भू-भागमे मालूम पडता है।

धातु—ताँबा, वजन ५ ०० ग्राम, आकार गोल १ ७ से०मी०, समय २००-३०० ईस्वी।

अग्रभाग—दो भुजाधारी खडे हुए शिव हैं, हाथमे त्रिशूल हे, पीछे खडा हुआ नन्दी बना है।

पृष्ठभाग—त्रिशूल तथा चारा तरफ बिन्दु बने हैं। बीचमे चिह्न है (कुछ विद्वानाने इसे 'कोट' पढा है)।

(१९) जहाँगीर—मुगल बादशाह जहाँगीर, जो मुगल पिता अकबर तथा हिन्दू माता जोधाबाईका पुत्र था, ने अपने शासनकालमे बारह राशियाके सिक्के चलाये, जो सोने तथा चाँदीमें बनाये गये। चित्रमे प्रदर्शित सिक्का वृषभ राशिका है। शाहजहाँके शासनकालमे यह फरमान जारी किया गया कि जिस किसीके पास इस राशिके सिक्के हो उन्हे खजानेमे जमा कर दे, अन्यथा ऐसा सिक्का रखनेपर मृत्यु-दण्ड दिया जायगा। अत ये सभी सिक्के चलनसे बाहर कर दिये गये। इसलिये आजके सग्रहकर्ताआके लिये ये सिक्के दुर्लभ हैं। यह सिक्का आगरा टकसालका है।

धातु—चाँदी, वजन ११ ५ ग्राम, आकार गोल २ से०मी०, समय १०२७ हिजरी, १६१७ ईस्वी।

अग्रभाग—वाय मुँह खडा हुआ वृषभ तथा पीछे सूर्य अङ्कित है।

पृष्ठभाग—पृष्ठभागमे 'अकबर शाह अज जहाँगीर शॉह सने जुलूस बाफत दर आगरा'—लिखा हुआ है।

(२०) इन्दौर रियासत (तुकोजीराव द्वितीय)—मराठा राज्य मल्हार राव होल्करद्वारा स्थापित किया गया। पेशवाद्वारा मल्हाररावको उनकी सेवाआसे खुश होकर १२ परगना नर्मदाके उत्तरम दिये गये, जो बादमे इन्दोर रियासत बनी। इन्दौरको अहिल्याबाईके शासनकालमे राजधानी बनाया गया। अहिल्याबाईके शासन-कालसे ही इन्दौर तथा महेश्वर टकसालसे सिक्के निकलने शुरू हो गये थे। तुकोजीराव द्वितीयद्वारा शिवलिग तथा नन्दीवाला ताँबेका सिक्का निकाला गया।

धातु—ताँबा, वजन १२ ग्राम, आकार गोल १ ७ से०मी०, समय १८४४ ई०।

अग्रभाग—सिक्केके अग्रभागमें शिवलिगके सामने बाये मुँह किये बैठा हुआ नन्दी है तथा शिवलिगके ऊपर सर्प बना है।

पृष्ठभाग—सिक्केके पृष्ठभागमे हिन्दीम 'आधा आना' लिखा हुआ है। ऊपर उर्दूमे 'शाह आलम', नीचे 'बेलपत्र' अङ्कित है।

(२१) भारत सरकार—भारत १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हुआ, परतु १९५० ई० तक भारत सरकारने कोई नये सिक्के नहीं ढलवाये और वह पुरानी ब्रिटिश मुद्राको ही चलनमे लाती रही। बबई, कलकत्ता टकसालके साथ ही तीसरी टकसाल हैदराबाद भी १९५० के बाद शामिल हो गयी।

स्वतन्त्र भारतके सबसे पहले सिक्कामे सारनाथका शेर (अशोकको लाट), वृषभ और घोडा अङ्कित किये गये।

धातु—क्यूपोनिकल, वजन ५ ८ ग्राम, आकार चौकोर २ ३ से०मी०, समय १९५४ ई०।

अग्रभाग—बाये मुँह किये खडा हुआ वृषभ बना है। एक तरफ अग्रेजीमे 'टू आनाज' तथा दूसरी तरफ हिन्दीमे 'दो आना' लिखा है तथा नीचे १९५४ ई० सन् पडा है।

पृष्ठभाग—अशोक-स्तम्भमे तीन शेर सामने तथा चारा तरफ अग्रेजीम 'गवर्नमेन्ट ऑफ इडिया' लिखा है तथा नीचे तारा अङ्कित है।

गौसे प्रेय और श्रेयकी प्राप्ति

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत-
स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीर ।

(कठोपनिषद् १। २। २)

आधुनिक जगत्‌म लौकिक सुखाकी सर्वथा उपेक्षा कर केवल परमार्थक पथपर विचरण करनेवाले मनुष्य विरले ही हैं। अधिकाश लोगाकी महत्त्वाकाक्षा और प्रयत्न सासारिक सुख-सुविधाआतक ही सीमित हैं। जिनके मनम श्रेयके प्रति महत्त्वबुद्धि है, व भी प्रेयको छोडना नहीं चाहते। प्रेय और श्रेय दोनाको हस्तगत करना चाहते हैं। उनके मनम लोक और परलोक दोनाके लाभ उठानेकी इच्छा है। वे '**भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव**' कर देनेवाला उपाय ढूँढते हं। क्या ऐसा होना सम्भव है? क्या ऐसा कोई साधन है, जिससे स्वार्थ ओर परमार्थ दोना सधे? प्रेय और श्रेय—भोग और मोक्ष दाना प्राप्त हो सके? उत्तरम निवेदन है—हाँ, ऐसा होनेके लिये दो साधन हैं—'भगवान्‌का भजन ओर गोआकी सेवा।' गोआसे प्रेय और श्रेयकी प्राप्तिम किस प्रकार सहायता मिलती है, यही यहाँ विचारणीय विषय है।

श्रीमद्भगवद्गीताम बतलाया गया हे कि लोकपितामह ब्रह्माजोने जव आदिकालम समस्त प्रजाआको उत्पन्न किया, तब उनक सामन यज्ञका आदर्श रखा और कहा—इसके द्वारा तुम सब लाग अपनी-अपनी उन्नति करो। यह तुम्ह अभीष्ट कामनाआ—मनोवाञ्छित भोगाको देनवाला होगा। इससे तुम्ह 'इष्ट काम' अर्थात् प्रयकी प्राप्ति हागी—'**अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।**' (गीता ३। १०) इतना ही नहीं तुम लाग इस यज्ञक द्वारा देवताआको उन्नति करा और देवता भी तुम्ह उन्नत अवस्थाम पहुँचाव। इस प्रकार स्वार्थ छोडकर एक-दूसरकी उन्नतिके लिय प्रयत्न करते हुए तुम सब लाग परम श्रेय (माक्ष) का प्राप्त हाआगे—

परस्पर भावयन्त श्रेय परमवाप्स्यथ॥

(गीता ३। ११)

इस प्रकार यज्ञको प्रेय और श्रेय दोनाकी प्राप्तिका साधन बताया गया है। यज्ञके दो स्वरूप हैं—एक तो भगवत्प्रीत्यर्थ किये जानेवाले सभी कर्मोको यज्ञ कहते हैं और दूसरा वेदोक्त विधिके अनुसार किया जानेवाला यजनरूप कर्म भी यज्ञ कहलाता हे। यहाँ 'यज्ञ' शब्दसे दोनो ही प्रकारके कर्म अभीष्ट हैं। गोमाताकी सहायतासे हम दोनो ही प्रकारके यज्ञ करनेमे सफल हो प्रेय आर श्रेयके अधिकारी वन सकते हैं।

ब्राह्मण और गौ दोना ब्रह्माजीकी सतान हैं। ब्रह्माजीकी सतति होनसे ही उनकी 'ब्राह्मण' सज्ञा हुई है। इसी प्रकार गौएँ भी ब्रह्माजीकी ही पुत्री हैं। इसीलिये शास्त्रामे 'नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च' कहकर उनकी वन्दना की गयी है। इन दानाके सहयोगसे वेदिक यज्ञकी सिद्धि होती है। ब्राह्मणोम वेदमन्त्र प्रतिष्ठित हैं और गोआम हविष्यकी स्थिति है[1]।

यहाँ '*गौ*' *कहनेसे गोमाताका ग्रहण तो होता ही है,* धरती माताका भी ग्रहण होता है। ये दोना ही गोशब्दके वाच्यार्थ हैं। इसक सिवा धरती भी ब्रह्माजीकी हो पुत्री है आर इसका आधिदैविक रूप भी गो ही हे। राजा पृथुने गोरूपमे ही पृथ्वीका दोहन किया था। असुरभावापन्न राजाआके भारसे पीडित हाकर पृथ्वीने गोरूपसे ही भगवान्‌का पुकारा था ओर महाराज पराक्षित्‌ने दिग्विजयक समय गारूपम ही पृथ्वाका दर्शन किया था। वस्तुत धेनु आर धरताम कोई भेद नहीं है। इन दोना रूपाम प्रतिष्ठित *हुई गौस हविष्य (हवनीय पदार्थ) की उत्पत्ति हाती ह।* धनुस दूध आर धरतास अन्न होता हं। यो दोना हवि हैं। अन्नका सस्कार करक नाना भौतिक हवनोपयागी पदार्थ तैयार किये जात हैं। इसी प्रकार दूधस भी दही, घी आदि

१-ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधाकृतम्। एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति॥

अनेक प्रकारके हविष्य बनते हैं। ब्राह्मणोद्वारा उच्चारित वेदमन्त्रसे गोके द्वारा प्रस्तुत किये हुए हवनीय पदार्थोंकी जा अग्निमे आहुति दी जाती है, उससे भाँति-भाँतिके विभिन्न यज्ञ सम्पन्न होते है। इस यज्ञरूप धर्मके दो फल हे—अभ्युदय ओर नि श्रेयस। दूसरे शब्दोमे प्रेय ओर श्रेय। गीता तो इसका समर्थन करती ही है, वैशेषिक दर्शनम भी धर्मके ये ही दो फल माने गये हैं। इन्हींम अन्य सारे फलाका समावेश हो जाता हे। इन्हीं दो फलाके आधारपर धर्मकी परिभाषा निश्चित की गयी है—'**यतोऽभ्युदय-नि श्रेयससिद्धि स धर्म ।**' अभ्युदय अथवा प्रेय लौकिक सुखका नाम है। इसम राज्य, धन, स्त्री, पुत्र, गृह, परिवार, दास, दासी, शय्या, वाहन तथा वस्त्राभूषण आदि सभी वस्तुओका अन्तर्भाव है। नि श्रेयस या श्रेय भगवत्प्राप्ति और मोक्षके ही नामान्तर हैं। यही मानव-जीवनका चरम एव परम पुरुषार्थ है। इसे पाकर फिर और कुछ पाना शेष नहीं रहता।

गोदान तथा गोपूजन

(क) गोदानकी सामान्य बाते

गोदान एव गोपूजनका फल

गौएँ प्राणियाको दूध पिलानेके कारण प्राण कहलाती हैं। इसलिये जो दूध देनेवाली गौका दान दता है, वह मानो प्राण-दान करता हे। वेदक विद्वान् कहते हे कि गौएँ समस्त प्राणियाको शरण दनेवाली हे इसलिये जो धेनुदान करता है, वह सबको शरण देनेवाला हे।[१]

गोदान करनेसे मनुष्य अपनी सात पीढी पहलके पितरोका और सात पीढी आनेवाली सतानाका उद्धार करता है। (महा० अनु० ७४। ८)

जो एक गाय और एक बैल दान करता ह, उस वदाध्ययनके फलकी प्राप्ति हाती है तथा जो विधिपूर्वक गोआका दान करता है उस उत्तम लाक मिलते हैं। (महा० अनु० ७६। २०)

न्यायसे प्राप्त की हुई एक भी कपिला गौका दान दनेसे पुरुष पापोसे छूट जाता है। (महा० अनु० ७१। ५१)

वात्सल्य-गुणसे युक्त एव उत्तम लक्षणावाली जवान गाको वस्त्र ओढाकर ब्राह्मणको दान करनेसे मनुष्य सम्पूर्ण पापासे मुक्त हो जाता है ओर उसे असुर्य नामक अन्धकारमय लोका (नरको) म नहीं जाना पडता। (महा० अनु० ७७। ४-५)

जो मनुष्य प्रतिदिन जौ आदिके द्वारा गाकी पूजा करता है उसके पितृगण आर देवता सदा तृप्त होते हैं। जा सदाचारी पुरुष नियमपूर्वक प्रतिदिन गायाको खिलाता है, वह सच्चे धमक बलसे सारे मनोरथाको प्राप्त करता है। जो व्यक्ति गौआके शरीरसे गदगी मच्छर आदि हटा देता है उसके पूर्वज कृतार्थ होते हैं। यहाँतक कि 'यह भाग्यवान् सतान हमारा उद्धार कर देगा' यह सोचकर वे उस अत्यन्त उत्सवमय कार्यके लिये आनन्दसे नाचने लगते है। (पद्म० पाताल० अ० १८)

जा मनुष्य सबेरे उठकर हाथम जलका पात्र लेकर गौआमे जाता है, उनके सींगाको सींचता है ओर फिर उस जलको अपने मस्तकपर धारण करके उस दिन उपवास करता है उसे बहुत पुण्य होता है। तीना लोकामे सिद्ध चारण और महर्षियाके द्वारा सेवित जितने तीर्थ हैं गौआके सींग-जलका अभिषेक उन सब तार्थोमे स्नान करनेके समान है। (पद्म० सृष्टि० अ० ४८)

दानके योग्य गा

दुग्धवती खरादी हुई विद्याके प्रभावस पायी हुई प्राणाकी भी अपक्षा न कर पराक्रमसे पायी हुई विवाहमे ससुर आदिसे मिली हुई दु खसे छुडायी हुई आर अपन पापणके लिये आयी हुई गो प्रशसनीय मानी जाती हे। बलवती, शीलसम्पन्न तथा तरुण आर उत्तम गन्धवाली सभी गौएँ प्रशसनीय मानी जाती हैं परतु जैसे नदियामे गङ्गा नदी श्रेष्ठ मानी जाती है इसा प्रकार गौआम कपिला गा उत्तम मानी जाती हे। (महा० अनु० ७३। ४१-४२)

जो गौ सीधा-सूधी हा दुहत समय तग न करती हो,

१-प्राणा वै प्राणिनामेते प्राच्यन्ते भरतर्षभ। तस्माद् ददाति यो धेनु प्राणानेष प्रयच्छति॥
गाव शरण्या भूतानामिति वेदविदो विदु। तस्माद् ददाति या धेनु शरण सम्प्रयच्छति॥ (महा० अनु० ६६। ४९-५०)

जिसका बछडा सुन्दर हो जो बन्धन तोडकर भागती न हो—ऐसी गौका दान करनेसे उसके शरीरमे जितने रोएँ होते हैं, उतने वर्षोतक दाता परलोकमे सुख भोगता है।[१]

सुन्दर स्वभाववाली, घास आदि चरनेमे अभ्यस्त, जवान, बछडेवाली, न्यायसे प्राप्त की हुई, दुधार गाय ब्राह्मणको देनी चाहिये। (स्कन्दपु० प्रभासखण्डक्षेत्रमा० २०८)

जिसके बछडेका मुख बाहर न आया हो, केवल दो पैर बाहर निकले हो इस प्रकारकी अवस्थामे गाय पृथ्वीरूपा होती है। ऐसी गायको जो मनुष्य सोनेके सींग चाँदीके खुर, ताँबेकी पीठ, काँसीका दुहनेका बर्तन और गहन-कपडोसे सजाकर तथा गन्ध-पुष्पादिसे पूजकर वेदज्ञ ब्राह्मणको दान करता है वह नित्य विष्णुलोकमे निवास करता है। (पद्मपु० सृष्टि० ४८। १७३-१७५)

ऐसे ही वचन याज्ञवल्क्यस्मृति अत्रिस्मृति सवर्तस्मृति, बृहस्पतिस्मृति, मत्स्यपुराण स्कन्दपुराण महाभारत तथा अन्यान्य स्मृतिया और पुराणोमे बहुत जगह मिलते हैं।

दानके अयोग्य गो

बिना सींगकी तथा बूढी गौका दान करनेसे दाताके भाग नष्ट होते हैं। लँगडी लूली और कानी गौका दान करनेसे दाताका अध पतन होता है और हानि होती है। अत्यन्त दुबली गौका दान करनेसे घर-बार नष्ट हो जाते हैं। (अथर्ववेद १२। ४। ३)

जो गौएँ पानी नहीं पी सकतीं घास-चारा नही खा सकतीं जिनकी इन्द्रियाँ क्षीण हो चुकी हैं, जो दूध नहीं दे सकतीं ऐसी गौओका दान करनेवाला पुरुष सुखहीन लोकोको प्राप्त होता है।[२]

जिसका घास खाना और पानी पीना समाप्त हो चुका हो जिसका दूध नष्ट हो गया हो, जिसकी इन्द्रियाँ काम न दे सकती हो अर्थात् जो बूढी और रोगिणी होनेके कारण जीर्ण-शीर्ण शरीरवाली हो गयी हो ऐसी गौका दान करनेवाला मनुष्य ब्राह्मणको व्यर्थ कष्टमे डालता है और स्वय भी घोर नरकमे पडता है। क्रोध करनेवाली मरकही रुग्णा दुबली-पतली तथा जिसका दाम न चुकाया गया हो ऐसी गौका दान करना कदापि उचित नहीं है। (महा० अनु० ७७। ५-७)

बाँझ बीमार अङ्गहीन, दुष्ट स्वभाववाली बूढी, जिसकी सतान मर गयी हो तथा अन्यायसे प्राप्त की हुई गायका दान नहीं करना चाहिये। जो मनुष्य देवताके लिये ऐसी गायका दान करता है, वह उलटा बहुत-से क्लेशोको भोगकर नीची गतिको प्राप्त होता है। भडकी हुई, क्लेश भोगती हुई, कमजोर और रोगिणी तथा जिसका मूल्य नहीं चुकाया गया है, ऐसी गायका दान नहीं करना चाहिये। जिस गायसे लेनेवाले ब्राह्मणको क्लेश हो, वैसी गाय दाताके सभी लोकोको विफल कर देती है, वह किसी भी उत्तम लोकमे नहीं जा सकता। (स्कन्द० प्रभासक्षेत्रमा० २७८। २३-२५)

जो दुबली हो, जिसका बछडा मर गया हो तथा जो ठाँठ, रोगिणी अङ्गहीन और बूढी हो, ऐसी गौ ब्राह्मणको नहीं देनी चाहिये। (महा० अनु० ६६। ५३)

इसी प्रकारके वचन अधिकाश पुराणो और स्मृतियोंमें भी मिलते हैं।

गोदानके पात्र और अपात्र

जिसके बहुत-सी सतान हो ऐसे याचक, श्रोत्रिय तथा अग्निहोत्री ब्राह्मणको दस गौ दान करनेसे दाताको अत्यन्त उत्तम लोकोकी प्राप्ति होती है। (महा० अनु० ६९। १६)

जो स्वाध्यायसम्पन्न शुद्धयोनि (कुलीन) शान्तचित्त, यज्ञपरायण, पापसे डरनेवाला, बहुज्ञ गौओपर क्षमाका भाव रखनेवाला मृदुलस्वभाव, शरणागतवत्सल और जीविकाहीन हो, ऐसे ब्राह्मणको गो-दानका उत्तम पात्र बताया गया है। जो जीविकाके बिना बहुत कष्ट पा रहा हो तथा जिसको खेती या यज्ञ-होम करने प्रसूता स्त्रीको दूध पिलाने तथा गुरु-सेवा अथवा बालकका लालन-पालन करनेके लिये गौकी आवश्यकता हो उसको साधारण देश-कालमे भी दूध देनेवाली गौका दान करना चाहिये।[३]

गौ भूमि तिल सोना आदि जो कुछ भी दान देने हों वह सुपात्र ब्राह्मणको दे कुपात्रको नहीं। (याज्ञवल्क्य-स्मृति)

पास रहनेवाले मूर्ख ब्राह्मणको छोडकर दूर रहनेवाले वेदज्ञ ब्राह्मणको बुलाकर दान देना चाहिये। (कात्यायन-स्मृति)

१-दत्त्वा धेनु सुव्रता साधुदोहा कल्याणवत्सामपलायिनीं च। यावन्ति रोमाणि भवन्ति तस्यास्तावन्ति वर्षाणि भवन्त्यमुत्र॥ (महा० अनु० ७३। ४४)

२-पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रिया । अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥ (कठ० १। १। ३)

३-स्वाध्यायाढ्य शुद्धयोनि प्रशान्त वैतानस्थ पापभीरु बहुज्ञम्। गोषु क्षान्त नातितीक्ष्ण शरण्य वृत्तिग्लान तादृश पात्रमाहु ॥ वृत्तिग्लाने सीदति चातिमात्र कृष्यर्थे वा होम्यहेतो प्रसूते । गुर्वर्थं वा बालसवृद्धये वा धेनु दद्याद् देशकालेऽविशिष्टे॥ (महा० अनु० ७३। ३९-४०)

गाभिल, व्यास, शातातप, बृहस्पति और वसिष्ठादि स्मृतियामे ो ऐसे ही वचन मिलते हैं।

जो ब्राह्मण स्वाध्यायपरायण, कुलीन, प्रशान्त, अग्निहोत्री, ापसे डरनेवाला, बहुत विषयोका जानकार, स्त्रियामे क्षमाशील, र्मात्मा, गो-सेवाम तत्पर और व्रतोका पालन करते-करते थक ाया है, उसीको सुपात्र कहते हैं। (वसिष्ठस्मृति)

दुराचारी, पापी लोभी असत्यवादी तथा देवयज्ञ और ाद्धकर्म न करनेवाले ब्राह्मणको किसी तरह गौ नहीं देनी ाहिये। (महा०, अनु० ६९। १५)

जो मनुष्य वध करनके लिये गौ माँग रहा हो उसको और ास्तिकको तथा कसाई ओर गौसे जीविका चलानेवालेको भी ौ नहीं देनी चाहिये। वैसे पापियोको देनेवाला पुरुष अक्षय रकम पडता है। (महा० अनु० ६६। ५१-५२)

जैसे कच्चे मिट्टीके बर्तनम रखनेसे दूध, दही, घी और ाधु पात्रकी दुर्बलतासे नष्ट हो जाते हैं और साथ ही वह पात्र ी नष्ट हो जाता है वैसे ही गौ, स्वर्ण वस्त्र अन्न आदिका ान लेनेस मूर्ख ब्राह्मण और दानका फल—ये दोनो नष्ट हो जाते ैं। (बृहस्पतिस्मृति)

ऐसे ही वचन वसिष्ठस्मृति याज्ञवल्क्यस्मृति, बृहत्-पराशरस्मृति और मनुस्मृति आदिमे मिलते हैं।

तप और वेदाध्ययनसे रहित ब्राह्मण दान लेनेपर पत्थरका नाव जैसे चढनेवालेको साथ लेकर डूब जाती है, वैसे ही दाताको साथ लेकर डूब जाता है।

गोदानसे कौन-कौन लोग श्रेष्ठ लोकोको प्राप्त हुए ?

उशीनरो विष्वगश्वो नृगश्च भगीरथो विश्रुतो यावनाश्व ।
मान्धाता वै मुचुकुन्दश्च राजा भूरिद्युम्नो नैषध सोमकश्च॥
पुरूरवो भरतश्चक्रवर्ती यस्यान्ववाये भरता सर्व एव।
तथा वीरो दाशरथिश्च रामो ये चाप्यन्ये विश्रुता कीर्तिमन्त ॥
तथा राजा पृथुकर्मा दिलीपो दिव प्राप्तो गोप्रदानैर्विधिज्ञ ।
(महा० अनु० ७६। २५—२७)

उशीनर, विष्वगश्व, नृग, भगीरथ, प्रसिद्ध योवनाश्व-मान्धाता, मुचुकुन्द, भूरिद्युम्न नैषध, सोमक, पुरूरवा, चक्रवर्ती भरत जिसके वशके सभी राजा भारत कहलाये, शूरवीर दशरथपुत्र रामचन्द्र, प्रसिद्ध कोर्तिवाले अन्य नरेन्द्र और विशालकर्मा राजा दिलीप—ये सभी गोदान करके दिव्य लाकाको प्राप्त हुए।

(ख) गोदानके लिये गौओके भेद

जन्म, विवाह और मृत्यु तथा अन्य विभिन्न शुभ अवसरोपर तथा प्रायश्चित्तक लिये गोदानकी विशष रूपसे महिमा बतायी गयी है। शास्त्रोमे गौके कई प्रकारके भेद बताये गय हैं। विभिन्न कामनाआसे विभिन्न प्रकारका गायोके दानका वर्णन है।

मरणासन्न-अवस्थामे अथवा इससे पहले किसी भी समय निम्नलिखित पाँच प्रकारकी धेनुआका दान करना चाहिये—(१) ऋणधेनु, (२) पापापनोदनधेनु, (३) वैतरणीधेनु, (४) मोक्षधेनु ओर (५) उत्क्रान्तिधनु।

यदि पाँच प्रत्यक्ष गौ दनेकी सामर्थ्य न हो तो कम-से-कम एक गौ प्रत्यक्ष रूपम दते हुए अन्य गौआके लिये अपनी सामर्थ्यानुसार निष्क्रयीभूत द्रव्यका सकल्प कर दान करना चाहिये।[१]

प्रत्येक गौके दानके समय निम्न प्रकारसे प्रार्थना करनी चाहिये—

(१) ऋणधेनु-दान

अनेक जन्मोके ऋणके नाशके लिये ऋणधेनुका दान किया जाता है। इससे देव, ऋषि पितृ, मनुष्य तथा अन्य सभी सामान्य ऋणासे मुक्ति हो जाती हे और उसपर कोई ऋण शेष नहीं रह जाता।

ऐहिकामुष्मिक यच्च सप्तजन्मार्जित त्वृणम्।
तत्सर्वं शुद्धिमायातु गामेता ददतो मम॥

ऐहलाकिक तथा पारलोकिक सात जन्मोमे अर्जित मुझपर जो ऋण है वह सब इस ऋणधेनुके दानसे दूर हा जाय और में ऋणमुक्त होकर शुद्ध हो जाऊँ।

(२) पापापनोदनधेनु-दान

अनेक जन्मोपार्जित ज्ञाताज्ञात, कायिक वाचिक मानसिक तथा साकल्पिक पापकी निवृत्तिके लिये पापापनोदनधनुका दान किया जाता है।

आजन्मोपार्जित पाप मनोवाक्कायसम्भवम्।
तत्सर्व नाशमायातु गोप्रदानन केशव॥

हे केशव! जन्म-जन्मान्तराका दुष्कर्मरूप जो पाप मेरे मन वाणी तथा शरीरसे हो गया है वह सब इस पापापनोदन-

---

१-प्रत्यक्ष गौके उपलब्ध न होनेपर तन्निमित्तक निष्क्रयभूत द्रव्य भी दिया जा सकता है। इस अवस्थामें *अक्षतपुञ्जस्थ पूगीफल* (सुपारी)-पर गौका आवाहन कर पूजन करना चाहिये।

धेनुक दानसे नष्ट हो जाय।

(३) मोक्षधेनु-दान

जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त होकर भगवत्सायुज्य प्राप्त करना ही मोक्ष है अत मोक्ष-प्राप्तिके लिये मोक्षधेनुका दान किया जाता है।

मोक्ष देहि हृषीकेश मोक्ष देहि जनार्दन।
मोक्षधेनुप्रदानेन मुकुन्द प्रीयता मम॥

हे हृषीकेश! हे जनार्दन! मुझे आप जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्तकर मोक्ष प्रदान करें। इस मोक्षधेनुके दानसे भगवान् मुकुन्द मुझपर प्रसन्न हो जायँ।

(४) वैतरणीधेनु-दान

यमद्वारस्थित महाभयकर वैतरणी नदीके सुखपूर्वक सतरणकी कामनासे कृष्णवर्णकी वैतरणीधेनुका दान किया जाता है।

धेनुके त्व प्रतीक्षस्व यमद्वारे महाभये।
उत्तितीर्षुरह देवि वैतरण्ये नमोऽस्तु ते॥
यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी।
ता तर्तुकामो यच्छामि कृष्णा वैतरणीं तु गाम्॥
या सा वैतरणी प्रोक्ता पूयशोणितवाहिनी।
हलया तर्तुकामस्ता कृष्णा गा विधिवद्ददे॥

हे वैतरणी गौ! महाभयकर यमद्वारपर तुम मेरी प्रतीक्षा करना। हे देवि! मैं वैतरणीको पार करना चाहता हूँ, तुम्हे नमस्कार है। इसी उद्देश्यसे मैं कृष्णा वैतरणी-रूप धेनुका दान करता हूँ। वह वैतरणी नदी पीव एव खूनसे भरी हुई है, अत मैं उसे सुखपूर्वक पार करनेके लिये इस कृष्णा गौका विधिवत् दान करता हूँ।

(५) उत्क्रान्तिधेनु-दान

प्राण निकलते समय बहुत कष्ट होता है। कभी-कभी कई दिनतक प्राण अटके रह जाते हैं इसमे कारणरूप जो प्रतिबन्धक बनता है उस प्रतिबन्धककी निवृत्तिके लिये उत्क्रान्तिधेनुका दान किया जाता है।

अप्युत्क्रान्तौ प्रवृत्तस्य सुखोत्क्रमणसिद्धये।
तुभ्यमना सम्प्रददे धेनुमुत्क्रान्तिसञ्ज्ञिकाम्॥

मरणासन्न-अवस्थामे सुखपूर्वक एव शीघ्र प्राण निकल जायँ, इस उद्देश्यसे हे उत्क्रान्तिधेनु! मैं तुम्हे दानमे देता हूँ।

विभिन्न रगोकी गायोके दानका फल

गोदानके प्रकरणमे विभिन्न रगोकी गौओके दानका विभिन्न फल बताया गया है। कृष्ण वर्णकी गाय स्वर्गको प्राप्त कराती है, श्वेत गौ कुलकी वृद्धि करती है। रक्त गौ सुन्दर रूप प्रदान करती है और पीत वर्णकी गौ दु ख-दारिद्र्यका नाश करती है। कृष्णसारा (सफेद तथा कृष्णवर्ण-मिश्रित) गौका दान पुत्रकी प्राप्ति कराता है, नील वर्णकी गौ धर्मकी अभिवृद्धि करती है। कपिला गौ सभी पापोका नाश करती है और अनेक रगोवाली गौ मोक्षको प्राप्त कराती है।[१]

उभयमुखीधेनु-दान

उभयमुखी गौके दानका शास्त्रोमे बडा महत्त्व बताया गया है और उसका फल भी अनन्त बताया गया है। ब्याती हुई गौ ही 'उभयमुखी गौ' कहलाती है। जबतक बछडा योनिके भीतर रहता है एव जबतक गर्भ नहीं छोडता अर्थात् योनिसे बछडेका कोई भी किंचित् भी अङ्ग बाहर दिखलायी पडता है उस समय वह गोमाता उभयमुखी कहलाती है। उस समय उस गौको पृथ्वीका रूप कहा गया है। उस समय ऐसी गौका जो दान करता है, उसे सम्पूर्ण पृथ्वीके दानका फल प्राप्त होता है और उस बछडेके तथा गौके शरीरमें जितने रोएँ होते हैं उतने युगोतक दाता देवलोकमें पूजित होता है और अपने पितरोका उद्धार कर देता है। उसे गोलोक और ब्रह्मलोक सुलभ हो जाते हैं।[२]

उभयमुखी गोदानमें सभी सामग्रियाँ पहलेसे तैयार रहनी चाहिये और ज्यो ही वत्सका किंचित् भी अङ्ग बाहर दिखलायी दे, बिना गौको स्पर्श किये ब्राह्मणको दानका सकल्प दे

१-कृष्णा स्वर्गप्रदा ज्ञेया गौरी च कुलवर्धिनी । रक्ता रूपप्रदा ज्ञेया पीता दारिद्र्यघातिनी॥
पुत्रप्रदा कृष्णसारा नीला धर्मविवर्धिनी । कपिला सर्वपापघ्नी नानावर्णा च मोक्षदा॥ (ब्रह्मपुराण)

२-प्रसूयमाना गा दत्त्वा महत्पुण्यफल लभेत् । यावद्वत्सो योनिगतो यावद्गर्भं न मुञ्चति॥
तावद् वै पृथिवी ज्ञेया सशैलवनकानना । प्रसूयमाना यो दद्याद् धेनु द्रविणसयुताम्॥
ससमुद्रगुहा तेन सशैलवनकानना । चतुरन्ता भवेद् दत्ता पृथिवी नात्र सशय ॥
यावन्ति धेनुरोमाणि वत्सस्य च नराधिप । तावत्सख्य युगगण देवलोके महीयते॥
पितॄन् पितामहाश्चैव तथैव प्रपितामहान् । उद्धरिष्यत्यसन्देह नरकाद् भूरिदक्षिण ॥
गोलोक सुलभस्तस्य ब्रह्मलोकश्च पार्थिव॥ (मत्स्यपुराण अ० २०५)

देना चाहिये।

दशधेनु-दान

शास्त्रामे प्रत्यक्ष धेनु अथवा स्वरूपधेनुके अतिरिक्त निम्नलिखित द्रव्य-निर्मित धेनुओके दान और उसके विशिष्ट फलका भी वर्णन मिलता है—

(१) गुडधेनु, (२) घृतधेनु, (३) तिलधेनु, (४) जलधेनु, (५) क्षीरधेनु, (६) मधुधेनु, (७) शर्कराधेनु, (८) दधिधेनु, (९) रसधेनु और (१०) प्रत्यक्ष धेनु (स्वरूपधेनु)। द्रव (बहनेवाले पदार्थो) से बननेवाली गौओका स्वरूप घट है और अद्रव पदार्थोसे बननेवाली गौओका स्वरूप उन-उन पदार्थोकी राशि है*। यथाविधि इन वस्तुओके द्वारा गो-आकृति बनाकर उनमे धेनुकी भावना करते हुए आवाहन-पूजन करना चाहिये। श्रद्धापूर्वक इन गौओके दानसे सभी भोग और मोक्षरूप फलकी प्राप्ति होती है।

उपर्युक्त दश धेनुओके अतिरिक्त रत्नधेनु, सुवर्णधेनु, कार्पासधेनु, लवणधेनु, कर्पूरधेनु, सप्तव्रीहिधेनु तथा गोसहस्रदान आदिका भी विवरण प्राप्त होता है।

यहाँ सर्वसाधारणके लिये गोदानकी सामान्य विधि प्रस्तुत की जा रही है—

गोदान-विधि

गोदानकर्ता स्नानादिसे निवृत्त होकर शुभासनपर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठे और तिलक लगाकर आचमन तथा पवित्रीकरणसे शुद्ध होकर माङ्गलिक स्वस्ति-पाठ कर तथा दाये हाथमे जल कुश अक्षतादि ग्रहणकर निम्नलिखित सकल्प पढे—

सकल्प—ॐ विष्णवे नम , ॐ विष्णवे नम , ॐ विष्णवे नम । ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे.. क्षेत्रे[१] नगरे/ ग्रामे... नामसवत्सरे[२]... मासे[३] [शुक्ल/ कृष्ण] पक्षे .. तिथौ[४] .. वासरे[५] ..गोत्र[६] .. शर्मा/ वर्मा/ गुप्तोऽहम्[७] ममात्मना सह एकविशतिपुरुषोत्तारणपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीतिकामो गोदान करिष्ये। तदङ्ग ब्राह्मणवरण तत्पूजन गोपूजन च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपत्यादीन् पूजयिष्ये।

सकल्पके अनन्तर गोपूजनसे पूर्व कार्यकी निर्विघ्नतापूर्वक सिद्धिके लिये श्रीमहागणपति गौरी नवग्रह आदि पञ्चाङ्ग-पूजन करे। अनन्तर गोदान ग्रहण करनेवाले सपत्नीक ब्राह्मणका वरण-पूजन करे और फिर उत्तम लक्षणासे युक्त, सुशील सवत्सा गौका निम्न मन्त्रसे जल छिडककर प्रोक्षण करे—

गौका प्रोक्षण—

इरावती धेनुमती हि भूत्ँसूयवसिनी मनवे दशस्या।
व्यस्कभ्रा रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखै स्वाहा॥

(यजु० ५। १६)

प्रोक्षणके अनन्तर निम्न मन्त्रसे पुष्प लकर गौ माताका ध्यान कर—

---

*प्रथमा गुडधनु स्याद् घृतधेनुस्तथापरा । तिलधेनुस्तृतीया तु चतुर्थी जलसज्ञिता॥
क्षीरधेनुश्च विख्याता मधुधेनुस्तथापरा । सप्तमी शर्कराधेनुर्दधिधेनुस्तथाष्टमी॥
रसधेनुश्च नवमी दशमी स्यात् स्वरूपत ॥
कुम्भा स्युर्द्रवधेनूनामितरासा तु राशय । यथाश्रद्ध प्रदातव्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ (मत्स्यपुराण अ० ८२)

१-यदि किसी तीर्थमे गोदान कर रहे हो तो उस रिक्त स्थानमे तीर्थका नाम नगरमे हो तो उस नगरका नाम और गाँवमे हो तो उस गाँवका नाम जोड दे।

२-पञ्चाङ्गोमें पहले पृष्ठपर ही सवत्सरका नाम लिखा रहता है। रिक्त स्थानमे सवत्सरका वह नाम जोड दे। वर्षके आरम्भवाला सवत्सर ही सकल्पादिमे जोडा जाता है बादवाला नहीं।

३-चैत्र वैशाख ज्येष्ठ आषाढ श्रावण भाद्रपद आश्विन कार्तिक मार्गशीर्ष पौष माघ और फाल्गुन—इन शब्दोको आवश्यकतानुसार रिक्त स्थानमें जोड दे।

४-प्रतिपद्, द्वितीया तृतीया चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी, सप्तमी अष्टमी नवमी दशमी एकादशी द्वादशी त्रयोदशी चतुर्दशी अमावास्या या पूर्णिमा—इन शब्दोको तिथिके पहले रिक्त स्थानमें जोड दे।

५-रवि सोम मगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि—इन दिनोमेसे एकको दिनके अनुसार रिक्त स्थानमे जोड दे।

६-कश्यप भरद्वाज आदि अपना गोत्र रिक्त स्थानमे जोड दे।

७-ब्राह्मण अपने नामके अन्तमे शर्मा क्षत्रिय अपने नामके अन्तमे वर्मा और वैश्य अपने नामके अन्तमे गुप्त रिक्त स्थानमे जोड दे।

ध्यान-मन्त्र—

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

ॐ सुरभ्यै नमः, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (ऐसा कहकर गौके चरणोंमें पुष्प चढ़ा दे।)

श्रीमती गौओंको नमस्कार, कामधेनुकी संतानोंको नमस्कार, ब्रह्माजीकी पुत्रियोंको नमस्कार और पावन करनेवाली गौओंको नमस्कार। गौओंके अङ्गोंमें चौदहों भुवन स्थित हैं अतः मेरा इस लोकमें एवं परलोकमें भी कल्याण हो।

फिर नीचेके मन्त्रसे सर्वदेवमयी गौका तथा गौके अङ्गोंमें स्थित देवताओंका अक्षत छोड़ते हुए आवाहन करे—

आवाहन—

आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्यमातरम्।
यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापप्रणाशनम्॥
त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गङ्गा त्वं च सरस्वती॥
आगच्छ देवि कल्याणि शुभां पूजां गृहाण च।
वत्सेन सहितां त्वाहं देवीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ सुरभ्यै नमः, सुरभीमावाहयामि। आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत छोड़े।)

जिस गौ माताके स्मरण करनेमात्रसे सम्पूर्ण पापोंका नाश हो जाता है ऐसी तीनों लोकोंकी माता हे गौ देवि! मैं तुम्हारा आवाहन करता हूँ। हे देवि! तुम संसारकी माता हो, तुम्हीं वसुन्धरा गायत्री सावित्री गङ्गा तथा सरस्वती हो। हे कल्याणमयी देवि! तुम आकर मेरी शुभ पूजाको ग्रहण करो। बछड़के सहित देवीस्वरूपा तुम्हारा मैं आवाहन करता हूँ।

इसी प्रकार गौके अङ्गोंमें स्थित सभी देवताओंका भी आवाहन करे—

[१] शृङ्गमूलयोर्ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः, ब्रह्मविष्णू आवाहयामि।

(गौ माताके सींगके मूलमें स्थित ब्रह्मा विष्णुको नमस्कार है मैं ब्रह्मा और विष्णुका आवाहन करता हूँ।)

[२] शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः सर्वतीर्थानावाहयामि।

(सींगके अग्रभागमें स्थित समस्त तीर्थोंको नमस्कार है मैं समस्त तीर्थोंका आवाहन करता हूँ।)

[३] शिरोमध्ये महादेवाय नमः, महादेवमावाहयामि।

(सिरके मध्य-भागमें स्थित महादेव भगवान् शंकरको नमस्कार है मैं भगवान् महादेवका आवाहन करता हूँ।)

[४] ललाटाग्रे गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि।

(ललाटके अग्रभागमें स्थित भगवती गौरीको नमस्कार है मैं भगवती गौरीका आवाहन करता हूँ।)

[५] नासावंशे षण्मुखाय नमः, षण्मुखमावाहयामि।

(नासावंशमें स्थित भगवान् कार्तिकेयको नमस्कार है, मैं कार्तिकेयका आवाहन करता हूँ।)

[६] नासापुटयोः कम्बलाश्वतराभ्यां नमः, कम्बलाश्वतरौ आवाहयामि।

(नासापुटोंमें स्थित कम्बल एवं अश्वतर नागोंको नमस्कार है, मैं इनका आवाहन करता हूँ।)

[७] कर्णयोरश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि।

(दोनों कानोंमें स्थित अश्विनीकुमारको नमस्कार है, मैं अश्विनीकुमारोंका आवाहन करता हूँ।)

[८] नेत्रयोः शशिभास्कराभ्यां नमः, शशिभास्करौ आवाहयामि।

(गौके दोनों नेत्रोंमें स्थित सूर्य और चन्द्रमाको नमस्कार है मैं सूर्य और चन्द्रमाका आवाहन करता हूँ।)

[९] दन्तेषु सर्ववायवे नमः, वायुमावाहयामि।

(दाँतोंमें स्थित सम्पूर्ण वायुओंको नमस्कार है, मैं वायुदेवताओंका आवाहन करता हूँ।)

[१०] जिह्वायां वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि।

(जिह्वामें स्थित वरुणदेवको नमस्कार है, मैं वरुणदेवका आवाहन करता हूँ।)

[११] हुंकारे सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि।

(गौके हुंकारमें स्थित सरस्वतीको नमस्कार है मैं भगवती सरस्वतीका आवाहन करता हूँ।)

[१२] गण्डयोर्मासपक्षाभ्यां नमः, मासपक्षौ आवाहयामि।

(दोनों गण्डस्थलोंमें स्थित मास और दोनों पक्षोंको नमस्कार है, मैं मास और पक्षोंका आवाहन करता हूँ।)

[१३] ओष्ठयोः संध्याद्वयाय नमः, संध्याद्वयम् आवाहयामि।

(दोनों ओठोंमें स्थित दोनों संध्याओंको नमस्कार है मैं दोनों संध्याओंका आवाहन करता हूँ।)

[१४] ग्रीवायामिन्द्राय नम , इन्द्रम् आवाहयामि।

(ग्रीवामे अवस्थित इन्द्रको नमस्कार है मैं इन्द्रदेवताका आवाहन करता हूँ।)

[१५] गलकम्बल रक्षोभ्यो नम , रक्षासि आवाहयामि।

(गलकम्बलमे अवस्थित रक्षोगणोको नमस्कार है, मैं नका आवाहन करता हूँ।)

[१६] उरसि साध्येभ्यो नम , साध्यान् आवाहयामि।

(वक्ष स्थलमे स्थित साध्यदेवगणोको नमस्कार हे, मैं ाध्याका आवाहन करता हूँ।)

[१७] जघयोर्धर्माय नम , धर्मम् आवाहयामि।

(दोना जघाआमे स्थित धर्मको नमस्कार है, मैं धर्मदेवताका ावाहन करता हूँ।)

[१८] खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नम , गन्धर्वम् आवाहयामि।

(गाके खुराके बीचमे विराजमान गन्धर्वोका नमस्कार है, मैं गन्धर्वोका आवाहन करता हूँ।)

[१९] खुराग्रेषु पन्नगेभ्या नम , पन्नगान् आवाहयामि।

(खुरोके अग्रभागम स्थित पन्नगाको नमस्कार हे, मैं न्नगोका आवाहन करता हूँ।)

[२०] खुरपार्श्वे अप्सरोगणेभ्यो नम , अप्सरोगणान् आवाहयामि।

(खुराके पार्श्वभागम स्थित अप्सरागणाको नमस्कार हे, मैं अप्सरागणाका आवाहन करता हूँ।)

[२१] पृष्ठ एकादशरुद्रेभ्यो नम , एकादशरुद्रान् आवाहयामि।

(गौके पीठमे स्थित ग्यारह रुद्राका नमस्कार है, मैं ग्यारह रुद्राका आवाहन करता हूँ।)

[२२] सर्वसन्धिषु वसुभ्यो नम , वसून् आवाहयामि।

(समस्त जोडाम स्थित वसु नामक देवताओको नमस्कार है मैं वसुदेवताआका आवाहन करता हूँ।)

[२३] श्रोणीतटे पितृभ्यो नम , पितॄन् आवाहयामि।

(श्रोणीतट (नाभिके अगल-बगल कटि-भाग) मे स्थित पितरोंको नमस्कार है, मैं पितराका आवाहन करता हूँ।)

[२४] पुच्छे सोमाय नम , सोमम् आवाहयामि।

(पूँछम स्थित सोमदवताको नमस्कार है, मैं सोमदेवका आवाहन करता हूँ।)

[२५] अधोगात्रेषु द्वादशादित्येभ्यो नम , द्वादशादित्यान् आवाहयामि।

(गौ माताके शरीरके निचले भागाम स्थित द्वादश आदित्योको नमस्कार है, मैं द्वादश आदित्याका आवाहन करता हूँ।)

[२६] केशेषु सूर्यरश्मिभ्यो नम , सूर्यरश्मीन् आवाहयामि।

(केशोंमे स्थित सूर्यरश्मियाको नमस्कार है, मैं सूर्यरश्मियोका आवाहन करता हूँ।)

[२७] गोमूत्रे गङ्गायै नम , गङ्गाम् आवाहयामि।

(गौके मूत्रम स्थित भगवती गङ्गाको नमस्कार हे मैं गङ्गादेवीका आवाहन करता हूँ।)

[२८] गोमये यमुनायै नम , यमुनाम् आवाहयामि।

(गोमयम स्थित यमुनाका नमस्कार है मैं देवी यमुनाका आवाहन करता हूँ।)

[२९] क्षीरे सरस्वत्यै नम , सरस्वतीमावाहयामि।

(दूधमे स्थित सरस्वतीदवीको नमस्कार है, मै सरस्वतीदेवीका आवाहन करता हूँ।)

[३०] दध्नि नर्मदायै नम , नर्मदाम् आवाहयामि।

(दहीम स्थित नर्मदादेवीको नमस्कार है मैं नर्मदादेवीका आवाहन करता हूँ।)

[३१] घृते वह्नये नम , वह्निम् आवाहयामि।

(घृतम स्थित वह्निदेवको नमस्कार हे, मैं वह्निदेवका आवाहन करता हूँ।)

[३२] रोमसु त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवेभ्यो नम , त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवान् आवाहयामि।

(गौ माताके रोमोम स्थित तैंतीस काटि दवताआको नमस्कार हे, मैं तैंतीस कोटि देवताआका आवाहन करता हूँ।)

[३३] उदरे पृथिव्यै नम , पृथिवीम् आवाहयामि।

(उदरम स्थित पृथिवीदेवीको नमस्कार ह मैं पृथिवादेवीका आवाहन करता हूँ।)

[३४] स्तनेषु चतुर्भ्य सागरेभ्यो नम , चतुर सागरान् आवाहयामि।

(स्तनाम स्थित चारा सागराको नमस्कार है, मैं चारा सागराका आवाहन करता हूँ।)

[३५] सर्वशरीरे कामधेनवे नम , कामधेनुम् आवाहयामि।

(गौ माताके सम्पूर्ण शरीरमे विराजमान कामधेनुको नमस्कार ह मैं कामधेनुका आवाहन करता हूँ।)

—इस प्रकार सर्वदेवमयी गौका आवाहन करनेके पश्चात्

निम्न मन्त्रोसे पूजन करे। सर्वप्रथम गौदेवीका निम्न मन्त्रसे आसन प्रदान करे—

आसन— नानारत्नसमायुक्त कार्तस्वरविभूषितम्।
आसन ते मया दत्त गृहाण जगदम्बिके॥

ॐ सुरभ्यै नम, आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (पुष्प चढाये।)

हे जगज्जननी! नाना रत्नासे जटित एव स्वर्णस विभूषित यह आसन मैंने तुम्हें दिया है इसे स्वीकार करो।

[फिर पाद्यके लिये जल अर्पण करे]

पाद्य— सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि।
प्रतिगृहाण मया दत्त पाद्य त्रैलोक्यवन्दिते॥

ॐ सुरभ्यै नम, पादयो पाद्य समर्पयामि। (जल चढाये।)

हे सर्वहितकारिणी पापनाशिनी, पावनकारिणी त्रैलोक्य-वन्दिता कामधेनुपुत्री! मेरे द्वारा अर्पित इस पाद्य-जलको ग्रहण करो।

[तदनन्तर निम्न मन्त्रसे अर्घ्य प्रदान करे]

अर्घ्य— देहे स्थितासि रुद्राणि शकरस्य सदा प्रिया।
धेनुरूपेण सा देवी मम पाप व्यपोहतु॥

ॐ सुरभ्यै नम, अर्घ्यं समर्पयामि। (जल चढाये।)

हे रुद्राणी गौ! तुम भगवान् शकरको सदा प्यारी हो तथा उनकी आधी देहमे स्थित रहती हो वही तुम गौके रूपमे मेरे पापका नाश करो।

[तदनन्तर आचमनके लिये जल दे]

आचमन—

या लक्ष्मी सर्वभूतेषु या च देवेष्ववस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम पाप व्यपोहतु॥

ॐ सुरभ्यै नम, आचमनीय जल समर्पयामि। (जल चढाये।)

जो लक्ष्मीदेवी समस्त प्राणियाम व्याप्त हैं और जिनका देवताओमे निवास है वही देवी गौके रूपमे मेरे पापका नष्ट करे।

[फिर निम्न मन्त्रसे स्नान कराये]

स्नान—

सर्वदेवमयी मात सर्वदेवनमस्कृते।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं स्नानार्थं गृह्ण धेनुके॥

ॐ सुरभ्यै नम, स्नानीयं जल समर्पयामि। (जल समर्पण करे।)

समस्त देवताओंद्वारा वन्दित हे कामधेनु माँ! तुम सर्वदेवमयी हो। स्पर्शमात्रसे आनन्द प्रदान करनेवाले इस जलको स्नानके लिये ग्रहण करो।

आचमन देनेके पश्चात् सम्भव होनेपर पञ्चामृत तथा शुद्धोदक आदिसे स्नान कराकर 'आ गावो अग्मन्०' इत्यादि सूक्तसे अथवा श्रीसूक्त या पुरुषसूक्तसे महाभिषेक करे।

[अभिषेकके बाद वस्त्र अर्पित करे]

वस्त्र—

आच्छादन गवे दद्या सम्यक् शुद्ध सुशोभनम्।
सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयता परमेश्वरी॥

ॐ सुरभ्यै नम, वस्त्रोपवस्त्र समर्पयामि। (वस्त्र अर्पित करे।)

मैं गोमाताको अत्यन्त शुद्ध एव सुन्दर वस्त्र अर्पित करता हूँ, इस वस्त्रदानसे परमेश्वरी सुरभिदेवी प्रसन्न हो।

[आचमनके अनन्तर चन्दन अर्पित करे]

चन्दन—

सर्वदेवप्रिय देवि चन्दन चन्द्रसनिभम्।
कस्तूरीकुङ्कुमाढ्य च सुगन्ध प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सुरभ्यै नम, चन्दन समर्पयामि। (चन्दन चढाये।)

हे देवि! चन्द्रमाके समान शीतलता एव आह्लाद प्रदान करनेवाले, सम्पूर्ण देवताओको प्रिय कस्तूरी और केसरसे युक्त इस सुगन्धित चन्दनको स्वीकार करो।

[फिर तिलरूप अक्षत प्रदान करे]

अक्षत—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठे कुङ्कुमाक्ता सुशोभिता।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

ॐ सुरभ्यै नम, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत समर्पित करे।)

हे सुरश्रेष्ठे! हे परमेश्वरि! भक्तिपूर्वक मेरे द्वारा निवेदित कुङ्कुमसे सुशोभित अक्षतोको ग्रहण करो।

इसके अनन्तर निम्न मन्त्रासे सींगोके आभूषणके लिये सोनेका सींग, कण्ठके आभूषणके रूपमे घटी दोहनके लिये कास्यपात्रकी दोहनी तथा सम्पूर्ण अलकारोके निमित्त अपनी शक्तिके अनुसार द्रव्य प्रदान करे और कहे—

ॐ सुरभ्यै नम, शृगभूषणार्थं स्वर्णशृङ्गम्, कण्ठभूषणार्थं घण्टाम्, दोहनार्थं कास्यपात्रम् सर्वालकारार्थं यथाशक्ति

द्रव्यम् सपर्पयामि।

[अनन्तर गौ माताको निम्न मन्त्रद्वारा पुष्प एव पुष्पमालासे अलकृत करे]

पुष्प और पुष्पमाला—

पुष्पमाला तथा जातिपाटलाचम्पकानि च।
पुष्पाणि गृह्ण धेनो त्व सर्वविघ्नप्रणाशिनि॥

ॐ सुरभ्यै नम , पुष्प पुष्पमाला च समर्पयामि। (पुष्प और पुष्पमाला चढाये।)

सम्पूर्ण विघ्नाको नष्ट करनेवाली हे धेनो! तुम मेरे द्वारा प्रदत्त चमेली गुलाब, चम्पक आदि पुष्पोसे बनी हुई इस पुष्पमालाको ग्रहण करो।

[अनन्तर धूपसे आघ्रायित करे]

धूप—

देवद्रुमरसोद्भूत गोघृतेन समन्वितम्।
प्रयच्छामि महाभागे धूपोऽय प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सुरभ्यै नम , धूपमाघ्रापयामि। (धूप दे।)

हे महाभाग्यवती गोमाता! देवदारुवृक्षकी गादसे बनी हुई तथा गोके घीसे मिश्रित यह धूप मैं तुम्हे अर्पण करता हूँ, इसे स्वीकार करो।

[तदनन्तर दीप दिखलाये]

दीप—

आनन्दद सुराणा च लोकाना सर्वदा प्रिय ।
गौस्त्व पाहि जगन्मात दीपोऽय प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सुरभ्यै नम , दीप दर्शयामि। (दीप दिखलाये।)

हे जगन्माता गौ! यह दीपक समस्त लाकोको आनन्द देनेवाला और देवताआको सदा ही प्रिय है इसे स्वीकार करो और मेरी रक्षा करो।

[तदनन्तर गोग्रासके रूपमे नैवेद्य निवेदित करे]

नैवेद्य (गोग्रास)—

सुरभिर्वैष्णवी माता नित्य विष्णुपदे स्थिता।
ग्रास गृह्णातु सा धेनुर्याऽस्ति त्रैलोक्यवासिनी॥

ॐ सुरभ्यै नम , नैवेद्य निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

हे जगदम्बे! तुम पालनी-शक्तिसे सम्पन्न हो तथा तुम्हीं स्वर्गमे रहनेवाली कामधेनु हो। तीनो लोकोमे रहनेवाली हे गोमाता! तुम मेरे द्वारा अर्पित इस ग्रासको ग्रहण करो।

[नैवेद्य निवेदित करके शुद्ध जल प्रदान करे और कपूरकी आरतीकर नमस्कार करे तथा निम्न मन्त्रसे पुष्पाञ्जलि प्रदान करे]

पुष्पाञ्जलि—

ॐ गोभ्यो यज्ञा प्रवर्तन्ते गोभ्यो देवा समुत्थिता ।
गोभ्यो वेदा समुत्कीर्णा सषडङ्गपदक्रमा ॥

ॐ सुरभ्यै नम , पुष्पाञ्जलि समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।)

यज्ञोका प्रवर्तन गौओसे ही होता है तथा देवता भी गौसे ही प्रकट हुए हैं, पद, क्रम आदिसे युक्त समस्त वेद गौसे उत्पन्न हैं।

पूजाकी साङ्गता-सिद्धिके लिये **'ॐ सुरभ्यै नम , दक्षिणाद्रव्य समर्पयामि'**—ऐसा कहकर दक्षिणाद्रव्य निवेदित करे। आरती करे।

इस प्रकार यथाविधि यथालब्धोपचारसे भक्तिभावपूर्वक गोमाताका पूजन करके **'ॐ अनेन पूजनेन गोदेवता प्रीयताम्'** कहकर नमस्कार करे। इसके बाद गौकी पूँछ पकडकर तर्पण करे।

गोपुच्छतर्पण

सव्य होकर पूर्वमुख बैठकर चावल कुश-जलके साथ गौकी पूँछको दाहिने हाथसे पकडकर, पूँछके नीचे भागमे जलपात्रको स्थापित करके निम्न मन्त्रोद्वारा देवतीर्थसे एक-एक अञ्जलि जल दे—

देवतर्पण—ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्, ॐ विष्णुस्तृप्यताम्, ॐ रुद्रस्तृप्यताम्, ॐ मनवस्तृप्यन्ताम्, ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्, ॐ रुद्रातिपुत्रास्तृप्यन्ताम्, ॐ साध्यास्तृप्यन्ताम्, ॐ मरुद्गणास्तृप्यन्ताम्, ॐ ग्रहास्तृप्यन्ताम्, ॐ नक्षत्राणि तृप्यन्ताम्, ॐ योगास्तृप्यन्ताम्, ॐराशयस्तृप्यन्ताम्, ॐ वसुधा तृप्यताम्, ॐ अश्विनौ तृप्येताम्, ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्, ॐ रक्षासि तृप्यन्ताम्, ॐ मातरस्तृप्यन्ताम्, ॐ रुद्रास्तृप्यन्ताम्, ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्, ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्, ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्, ॐ दानवास्तृप्यन्ताम्, ॐ योगिनस्तृप्यन्ताम्, ॐ विद्याधरास्तृप्यन्ताम्, ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्, ॐ दिग्गजास्तृप्यन्ताम्, ॐ देवगणास्तृप्यन्ताम्, ॐ देवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्, ॐ लोकपालास्तृप्यन्ताम्, ॐ नारदस्तृप्यताम्, ॐ जन्तवस्तृप्यन्ताम्, ॐ स्थावरास्तृप्यन्ताम्, ॐ जङ्गमास्तृप्यन्ताम्।

दिव्य मनुष्य-तर्पण—उत्तर मुख करे। यज्ञोपवीतको गलमे मालाकी भाँति धारणकर प्राजापत्य या कायतीर्थसे यवसहित दो-दो अञ्जलि जल दे—

ॐ सनकस्तृप्यताम् (२), ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् (२), ॐ सनातनस्तृप्यताम् (२), ॐ कपिलस्तृप्यताम् (२),

ॐ आसुरिस्तृप्यताम् (२), ॐ वोढुस्तृप्यताम् (२), ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् (२)।

दिव्य पितृ-तर्पण एव यम-तर्पण—दक्षिणकी ओर मुख करके बैठे। अपसव्य हो जाय। तिलोदकसे पितृतीर्थसे तीन-तीन अञ्जलि जल दे—

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् (३), ॐ सोमस्तृप्यताम् (३), ॐ यमस्तृप्यताम् (३), ॐ अर्यमा तृप्यताम् (३), ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्ताम् (३), ॐ सोमपा पितरस्तृप्यन्ताम् (३), ॐ बर्हिषदस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ यमाय नम (३), ॐ धर्मराजाय नम (३), ॐ मृत्यवे नम (३), ॐ अन्तकाय नम (३), ॐ वैवस्वताय नम (३), ॐ कालाय नम (३), ॐ सर्वभूतक्षयाय नम (३), ॐ औदुम्बराय नम (३), ॐ दध्नाय नम (३), ॐ नीलाय नम (३), ॐ परमेष्ठिने नम (३), ॐ वृकोदराय नम (३), ॐ चित्राय नम (३), ॐ चित्रगुप्ताय नम (३)।

मनुष्य-पितृ-तर्पण—पूर्वकी भाँति पितरोको तीन-तीन अञ्जलि दे—

अमुकगोत्र अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिद तिलोदक (गङ्गाजल वा) तस्मै स्वधा नम, तस्मै स्वधा नम, तस्मै स्वधा नम ।

अमुकगोत्र अस्मत्पितामह अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिद तिलोदक (गङ्गाजल वा) तस्मै स्वधा नम (३)।

अमुकगोत्र अस्मत्प्रपितामह अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिद तिलोदक (गङ्गाजल वा) तस्मै स्वधा नम (३)।

अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यतामिद तिलोदक तस्यै स्वधा नम, तस्यै स्वधा नम, तस्यै स्वधा नम ।

अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यतामिद तिलोदक तस्यै स्वधा नम (३)।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यतामिद तिलोदक तस्यै स्वधा नम (३)।

यदि सौतेली माँ मर गयी हो तो उसको भी तीन बार जल दे—

अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकी देवी तृप्यतामिद तिलोदक तस्यै स्वधा नम (३)।

द्वितीय गोत्र-तर्पण—इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहालके) मातामह (नाना) आदिका तर्पण करे। यहाँ भी पहलेकी भाँति निम्नलिखित वाक्योको तीन-तीन बार पढकर तिलसहित जलकी तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थसे दे—

अमुकगोत्र अस्मन्मातामह (नाना) अमुक वसुरूपस्तृप्यतामिद तिलोदक तस्मै स्वधा नम (३)।

अमुकगोत्र अस्मत्प्रमातामह (परनाना) अमुक रुद्ररूपस्तृप्यतामिद तिलोदक तस्मै स्वधा नम (३)।

अमुकगोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह (वृद्ध परनाना)। अमुक आदित्यरूपस्तृप्यतामिद तिलोदक तस्मै स्वधा नम (३)।

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यतामिद तिलोदक तस्यै स्वधा नम (३)।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यतामिद तिलोदक तस्यै स्वधा नम (३)।

पत्न्यादितर्पण—इसके आगे पत्नीसे लेकर आप्तपर्यन्त जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हो उनके गोत्र और नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दे—

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इद सतिल जल तस्यै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मत्सुत (बेटा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इद सतिल जल तस्यै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मत्पितृव्य (पिताके भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मन्मातुल (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी (बूआ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इद सतिल जल तस्यै स्वधा नम । अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इद सतिल जल तस्यै स्वधा नम । अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहन) अमुकी देवी

दा वसुरूपा तृप्यताम् इद सतिल जल तस्यै स्वधा नम । अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इद सतिल जल तस्यै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मच्छ्वशुर (श्वशुर) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मद्गुरु अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इद सतिल जल तस्यै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मच्छिष्य वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम । अमुकगोत्र अस्मदाप्तपुरुष अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इद सतिल जल तस्मै स्वधा नम ।

फिर नीचे लिखे श्लोकाको पढते हुए पितृतीर्थसे मोटक लेकर तिलाञ्जलि दे—

ॐ मातृपक्षाश्च ये केचिद् य केचित् पितृपक्षका ।
गुरुश्वशुरबन्धूना ये कुलेपु समुद्भवा ॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डा पुत्रदारविवर्जिता ।
क्रियालोपगता ये च जात्यन्धा पङ्गवस्तथा॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणै ॥
वृक्षयोनिगता ये च पर्वतत्व गताश्च ये।
पशुयोनिगता य च ये च कीटपतङ्गका ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणै ॥
नरके रौरवे ये च महारौरवसंस्थिता ।
असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाकस्थिताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणै ॥
स्वार्थबद्धा मृता ये च शस्त्राघातमृताश्च ये।
ब्रह्महस्तमृता ये च नारीहस्तमृताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणै ॥
पाशमध्ये मृता ये च स्वल्पमृत्युवशगता ।
सर्वे च मानवा नागा पशव पक्षिणस्तथा।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणै ॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्त देवर्षिपितृमानवा ।
तृप्यन्तु सर्वदा सर्वे गोपुच्छोदकतर्पणै ॥

तर्पण करनेके बाद गादान करनेवाला मव्य हो जाय। तदनन्तर सवत्सा गौको रस्सीसे खालकर गाका मुख पूर्वकी आर करे और स्वय पूँछकी तरफ पूर्वमुख होकर बेठ जाय और गोदान ग्रहण करनेवाला ब्राह्मण गोक दक्षिण तरफ उत्तरकी ओर मुख करके बेठे। अनन्तर गोदान करनेवाला स्वर्ण, कुश अक्षत, जल लकर गोदानका सकल्प कर—

गोदानका बृहत्सकल्प—हरि ॐ तत्सत् (३), इह पृथिव्या जम्बूद्वीपे भारतवर्षे कुमारिकाखण्ड आर्यावर्तैकदेशे अमुक[1]— क्षेत्रे श्रीभागीरथ्या गङ्गाया अमुक- दिग्विभागे इत्यादिदेश समनुकीर्त्य ॐ ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगस्य प्रथमचरणे बौद्धावतारे अमुक- नाम्नि सवत्सरे अयने- ऋतौ- मासे- पक्षे- तिथा- वारे- नक्षत्रे- योग- करणे अमुक- राशिस्थिते चन्द्रे अमुक- राशिस्थिते सवितरि अमुक- राशिस्थिते देवगुरौ शेषपु ग्रहपु यथायथास्थानस्थितपु सत्सु एव गुणविशिष्टे देशे काले अमुक- गोत्र अमुक नामाह मम श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासोक्तफलावाप्तये ज्ञाताज्ञातानेक-जन्मार्जितमनोवाक्कायकर्मजन्यपापापनुत्तये निखिलदु ख-दौर्भाग्यदु स्वप्नदुर्निमित्तदुष्टग्रहबाधाशान्तिपूर्वक धन-धान्यायुरारोग्यद्विपदचतुष्पदसततिचतुर्वर्गादिनिखिलवाञ्छित-सिद्धये गोरोमसख्यकदिव्यवत्सरावच्छिन्नस्वर्गलोकस्थिति-कामश्च पितृणा निरतिशयानन्दब्रह्मलोकावाप्तये च श्रीपरमश्वरप्रीतये इमा सुपूजिता सालकारा सवत्सा गा रुद्रदैवताम् अमुक गोत्राय अमुक- शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमह सम्प्रददे।

—ऐसा कहकर सकल्प ब्राह्मणक हाथम दे दे आर ब्राह्मण 'द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु' कहकर ग्रहण करे। सकल्प ग्रहण करनके अनन्तर ब्राह्मण निम्न मन्त्र पढे—

कोऽदात्कस्मा अदात्कामोऽदात्कामायादात्।
कामा दाता काम प्रतिग्रहीता कामतत्ते॥

अनन्तर गादानकर्ता गोदान-कर्मकी साङ्गता-सिद्धिके लिये तुलसीदलक साथ यथाशक्ति सुवर्ण ब्राह्मणको देते हुए प्रतिष्ठा करे—

प्रतिष्ठा—अद्य कृतैतद्गोदानकर्मण साङ्गतासिद्धये इद सतुलसीदल हिरण्यम् अग्निदैवतम् अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यह सम्प्रददे।

[यजमान प्रार्थना करे]

प्रार्थना— ॐ यज्ञसाधनभूता या विश्वपापाघनाशिनी।
विश्वरूपधरो देव प्रीयतामनया गवा॥

१-रिक्त स्थानोमे पूर्वसकल्पकी भाँति योजना कर ले।

जो गौ यज्ञकी साधनभूता है और संसारके समस्त पापसमूहोंका नाश करनेवाली है, उस गौके दानकर्मसे संसारमें सब देवता, ब्रह्मादि देव प्रसन्न हों।

इसके अनन्तर बन्धु-बान्धवोंके साथ यजमान ब्राह्मण तथा बछड़ेके सहित गायकी चार प्रदक्षिणा करे।

प्रदक्षिणा—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि नाशय धेनो त्वं प्रदक्षिणपदेपदे॥

हे धेनो! जन्म-जन्मान्तरोंमें जो भी पाप मेरे द्वारा हुए हों उन सभीको प्रदक्षिणाके पद-पदपर नष्ट कर दो।

इस प्रकार चार परिक्रमा करनेके बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

प्रार्थना—

ॐ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदयं सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः।
सर्वे देवास्तनौ यस्याः सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे॥

गौएँ मेरे आगे रहें, गौएँ मेरे पीछे रहें, गौएँ मेरे हृदयमें निवास करें और मैं सदा गौओंके बीचमें निवास करूँ। श्रीमती गौओंको नमस्कार। कामधेनुकी संतानोंको नमस्कार। ब्रह्माजीकी पुत्रियोंको नमस्कार। पावन करनेवाली गौओंको नमस्कार। जो गौएँ स्वर्गकी सोपानरूपा हैं, सदासे ही समस्त धन-समृद्धिकी मूलभूत सनातन धारा हैं और जिस गायके शरीरमें सम्पूर्ण देवताओंका निवास है, वह धेनु मेरे लिये वरदायिनी हो।

इसके बाद गौके कानमें निम्न मन्त्रका जप करे—

मन्त्र-जप—ॐ ह्रीं नमो भगवत्यै ब्रह्ममात्रे विष्णुभगिन्यै रुद्रदयितायै सर्वपापप्रमोचिन्यै।

इसके बाद प्रदत्त गौकी पूँछके द्वारा जलसे यजमानके सिरपर अभिषेक करे, फिर स्नान और आचमन करे। तदनन्तर प्रदत्त गौको विसर्जित कर पूँछके जलको छोड़ दे। फिर पूँछको अर्पण करे और निम्न मन्त्रसे भगवान्‌से क्षमा-प्रार्थना करे—

क्षमा-प्रार्थना—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

अनन्तर समस्त कर्म 'ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः' कहकर भगवान्‌को अर्पित कर दे। और फिर अवशिष्ट गोपुच्छोदकको पीपलके मूलमें अथवा किसी तालाब आदिमें विसर्जित कर दे।

वृषभ-दानका फल

बैल पवित्र है, सुन्दर पुण्यका दाता और पवित्र करनेवाला है, इसलिये बैलके दानका विशेष फल है। एक ही बैलके दानको दस गायोंके दानके समान समझना चाहिये, अवश्य ही वह बैल—

मेदोमांसविपुष्टाङ्गो नीरोगः कोपवर्जितः।
युवा भद्रः सुशीलश्च सर्वदोषविवर्जितः॥
धुरं धारयति क्षिप्रं......................॥[१]

'मेद-माससे परिपुष्ट अङ्गोंवाला हो, नीरोग हो, क्रोधरहित—सीधा हो, जवान हो, देखनेमें बड़ा सुन्दर, स्वभावसे सुशील और सारे दोषोंसे रहित हो तथा शीघ्र धुरेको धारण करनेमें समर्थ हो।' ऐसा बैल ब्राह्मणको देनेसे दाता महातेजस्वी होकर चिरकालतक गोलोकमें पूजित होता है।

जो पुरुष धुरोंको धारण करनेवाले दो बैलोंको वेदज्ञ सदाचारी गरीब ब्राह्मणको दान करता है, उसे एक हजार गायोंके दानका उत्तम फल मिलता है और वह भगवान्‌के लोकोंमें जाता है तथा दोनों बैलोंके शरीरपर जितने रोम हैं, उतने हजार वर्षोंतक भगवान्‌के लोकमें पूजित होता है। पर दान करना चाहिये गरीबको ही, धनीको नहीं, क्योंकि वर्षाका फल तालाबोंमें बरसनेसे ही है, समुद्रोंमें बरसनेसे नहीं—

दरिद्रायैव दातव्यं न समृद्धाय पाण्डव।
वर्षाणां हि तडागेषु फलं नैव पयोधिषु॥
(महा० आश्व० १००। १२)

जो पुरुष एक बैल दान करता है, वह स्वर्ग (सूर्यमण्डलका भेदन करके आनेवाला ब्रह्मगत) होता है।
(महा० अनु० ७८। २०)

बैल स्वर्गका मूर्तिमान् साधन है। जो गुणवान् बछड़ेको बैल दान करता है, उसको स्वर्गलोकमें सम्मान होता है।
(महा० अनु० ६६। ४८)

धुरोंको धारण करनेवाले एक उत्तम बैलके दानसे [illegible] दसके दानका और सौ बैलके दानसे हजार गायके दानका

[१] [illegible]

फल होता है। (पद्म०, सृष्टि० ४८। १८०-१८१)

वैलकी जोड़ीके दानका फल

यश्च दद्यादनुडुहौ द्वौ युक्तौ च धुरन्धरौ।
सुवृत्ताय दरिद्राय श्रोत्रियाय विशेषत ॥
सहस्रगोप्रदानेन यत्प्रोक्त फलमुत्तमम्।
तत्पुण्यफलमाप्नोति याति लोकान् स मामकान्॥
यावन्ति चैव रोमाणि तयारनडुहोर्नृप।
तावद्वर्षसहस्राणि मम लोके महीयते॥

(महा० आश्व० १००। ९—११)

जो मनुष्य जुएको भलीभाँति उठा सकनेवाले दा बैलोको जोडीका सदाचारी श्रोत्रिय गरीब ब्राह्मणका विशेषरूपसे दान देता है, वह एक हजार गोदानके उत्तम फलको प्राप्त होता है और फिर मेरे दिव्य लोकमें जाता है तथा उन दोना बैलांके शरीरमे जितने रोम हैं, उतने हजार वर्षोंतक वह मेरे लोकमे पूजित होता है।

गोसेवासे भगवत्प्राप्ति

गाव प्रतिष्ठा भूताना गाव स्वस्त्ययन परम्।

श्रीमद्भागवत (२। ३। १०) में एक श्लोक आता है—

अकाम सर्वकामो वा मोक्षकाम उदारधी ।
तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुष परम्॥

'उदार बुद्धिवाला पुरुष निष्काम हो या समस्त भोगाका इच्छुक अथवा वह मोक्षकी ही अभिलाषा रखनेवाला क्यो न हो, उसे तीव्र भक्तियोगक द्वारा केवल परम पुरुष भगवान् वासुदेवकी आराधना करनी चाहिये।'

यही बात गौआके लिये भी कही जा सकती है। स्वार्थ या परमार्थ कोई भी ऐसी वस्तु नहीं, जा गौदेवीकी कृपासे सुलभ न हो सके। ससारम कौन ऐसा विवेकशील प्राणी होगा, जो भगवान्को पानेके लिये लालायित न हो। युग-युगसे, जन्म-जन्मान्तरासे जीव अपने बिछुड हुए प्रियतम परमात्मासे मिलनेके लिये न जाने कहाँ-कहाँ भटकता है, कितने-कितने साधन करता हे। किंतु अबतक बहुताको सफलता नहीं मिली। साधनका ठीक-ठीक ज्ञान न होनेसे लक्ष्यकी प्राप्तिमे विलम्ब होना स्वाभाविक ही है। भगवत्प्राप्तिके अन्यतम साधनामसे गौकी सेवा भी एक ऐसा ही साधन है, जिससे भगवान् शीघ्र ही सुलभ हो जाते हैं। भगवान् हमारे इष्टदेव हें, परतु ये गौए उनकी भी इष्टदेवी हैं। वे इन्हीकी सेवाके लिये गोपाल-शिरामणि बनकर इस भूतलपर अवतीर्ण होते हैं। भगवान् भी जिनके सेवक है, उनकी सेवासे भगवत्प्राप्तिम क्या सदेह हो सकता हे। जैसे गङ्गाजीके तटपर रहकर भी कोई प्यासा मरे और पानीके लिये दर-दर भटकता फिरे, वही दशा हमारी हे। हम घरमे कामधेनुके होते हुए भी उसकी सेवासे मुँह मोडते और स्वार्थ एव परमार्थ दोनोसे वञ्चित रह जाते हैं।

गोमाता किस प्रकार हमे भगवान्के निकट पहुँचाती है, यह थोडा-सा विचार करनेपर ही सबकी समझमे आ सकता है। उदाहरणके लिये किसी भी गायको सामने रखिये, वह दो प्रकारकी सतानोको जन्म देती है—बछडा और बछिया। पहले बछडेकी उपयागितापर विचार कीजिये। बछडा हृष्ट-पुष्ट होनेपर एक अच्छा साँड या उत्तम बैल बन सकता है। साँडसे दो लाभ होगे। एक तो धर्मशास्त्रीय विधिके अनुसार वृषोत्सर्ग करनेसे वह हमारे पितरोका उद्धार करेगा ओर दूसरे उससे गोवशकी वृद्धि होगी। पितराका उद्धार और गोवशकी वृद्धि—ये दोना ही पुण्यकार्य हैं। अत इनसे धर्मका सम्पादन होगा। यदि बछडेको बैल बना लिया जाय तो उससे भी अनेक लाभ हो सकते हैं। एक तो वह वाहनके काम आता है, छकडो और बैलगाडियोको खींचता है तथा पीठपर भी बोझ ढाता है। इससे अन्न आदि वस्तुआके व्यापारमे सहायता पहुँचेगी। व्यापारसे सम्पत्ति बढेगी ओर उससे लोकम सुख मिलेगा। इस प्रकार आनुषङ्गिक रूपसे 'अर्थ' और 'काम' की भी सिद्धि होती रहेगी। सम्पत्ति होनेपर हम वेदिक विधानके अनुसार यज्ञ कर सकते हैं तथा देश, काल और पात्रके अनुरूप यथेष्ट दान करनेमे भी समर्थ हो सकते हैं। यज्ञ और दान भी धर्मके ही अङ्ग हैं। यह बैलके द्वारा प्राप्त होनेवाले एक लाभकी शाखा हुई।

अब दूसरे लाभकी परम्परापर दृष्टिपात कीजिये।

उत्तम बैल होनेमे अच्छी खेती हो सकती है। खेतीसे पर्याप्त अन्नकी प्राप्ति हागी। फिर अन्नसे भी कई प्रकारके लाभ हो सकते हे। एक तो उससे हमारा जीवन-निर्वाह होगा, ओर हम स्वस्थ तथा सवल बनगे। स्वास्थ्य ठीक रहनेपर मनुष्य उत्तम पुत्र उत्पन्न कर सकता है, जो श्राद्ध ओर तर्पण करके पितराका उद्धार करे और इस प्रकार धर्मके सम्पादनम कारण बने। अन्नसे दूसरा लाभ यह है कि हम स्वय भी उसके द्वारा श्राद्ध करगे। उस श्राद्धसे पितरोका उद्धार होनेके साथ ही हमे भी धर्मकी प्राप्ति होगी। तीसरा लाभ यह है कि अन्नके व्यापारसे प्रचुर धनराशिका उपार्जन किया जा सकता हे। वह धन लाकिक सुखका साधन तो वनेगा ही, यज्ञ एव दानम लगाये जानेपर धर्मवृद्धिका भी कारण हो सकता है। इस प्रकार यहाँ गायकी एक सतान—केवल वछडेद्वारा होनवाले लाभाका दिग्दर्शन कराया गया।

गायकी दूसरी सतान है—बछिया। उसका समुचित-रूपसे पालन करनेपर आगे चलकर वह भी एक अच्छी गाय बन सकती हे। गायस दो प्रकारके लाभ होते हँ—लौकिक और पारलौकिक। पारलौकिक लाभ होता है उसके दानसे। शास्त्रोक्त रीतिसे गौका दान करके मनुष्य अत्यन्त भयकर वैतरणी नदीको सहज ही पार कर सकते हँ। यदि दूसरोके लिये गोदान किया गया तो वे भी वैतरणी पार तो होग ही, उनके उद्धाररूप पुण्यकर्मसे हम भी धर्मके भागी हो सकते हे। लोकिक लाभ भी आगे चलकर पारलौकिक लाभम परिणत हो जाता हे। गाय घरपर रहेगी तो हमारे लिये दूध देगी—यह लौकिक लाभ है। उस दूधका दो प्रकारसे उपयोग हो सकता है—एक तो दही जमाकर या दूधसे ही घी बना लिया जाय अथवा दूधक द्वारा ही नाना प्रकारके खाद्य पदार्थ—दुग्धान्न तैयार कराये जायँ। घी ओर दुग्धान्न दोनो ही मानव-जीवनके लिये अत्यन्त उपयोगी वस्तुएँ हैं। घा परम पवित्र एव सात्त्विक वस्तु है। इमके सेवनसे शरीर आर मन दोनो शुद्ध होग। फिर शुद्ध विचारसे सदाचारकी वृद्धि होगी और सदाचारसे अन्त करणकी पवित्रताक साथ-ही-साथ आयुकी भी वृद्धि होगी। इस तरहके शुद्ध, सात्त्विक एव सदाचारपूर्ण जावनम सदा अधिकाधिक धर्मका सम्पादन होता रहेगा। घीके द्वारा यज्ञ करके भी हम धर्मोपार्जन कर सकत ह। तीसरा लाभ है व्यापार। घीका व्यापार करके सुख-सम्पत्तिका उपार्जन होगा, उससे फिर यज्ञ और दान हागे और उन दोनासे पूर्ववत् धर्मकी वृद्धि होती रहेगी।

घीकी ही भाँति दुग्धान्नसे भी व्यापार, धनोपार्जन, यज्ञ, दान और धर्म-प्राप्तिकी परम्परा सुस्थिर रह सकती है। वह श्राद्धम भी उपयोगी है। श्राद्धसे पितराका उद्धार और उससे धर्मका सम्पादन भी होगा ही। दुग्धान्नका दान भी धर्मक एक अङ्गकी पुष्टि कर सकता है। जीवन-निर्वाहम भी दुग्धान्नका बहुत बडा उपयोग है। स्वास्थ्य-सम्पादन तो उसकी खास विशेपता है ही। स्वस्थ शरीरसे योग्य सतानका उत्पादन और उसके द्वारा पितराके उद्धाररूपी धर्मका पालन भी अवश्यम्भावी है। इस तरह गाय अनेक शाखाआ तथा परम्पराओसे हमे अर्थ और कामकी प्राप्ति करानेके साथ ही धर्मके सम्पादनमे भी अत्यधिक सहायता पहुँचाती है। निष्काम धर्मके प्रभावसे मनुष्यमें भगवच्छरणा-गतिकी योग्यता आती है। वह—

यत्करोपि यदश्नासि यज्जुहोपि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

(गीता० ९। २७)

—इस भगवदाज्ञाके अनुसार अपने समस्त धर्म-कर्म भगवान्‌को भेट करके स्वय भी उनके चरणामे समर्पित हो जाता है। पूर्णरूपसे शरणागत हा जानेपर भक्तको भगवान्‌की प्राप्तिमे तनिक भी विलम्ब नहीं होता। इस प्रकार गोमाता सम्पूर्ण जगत्‌के मानवाको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष-रूपसे भगवान्‌के निकट पहुँचनमे सहायता करती रहती है। गौके समान मनुष्यमात्रकी सच्ची हितकारिणी दूसरी कोई नहीं है, अत हम सब लोगोको तन, मन, धनसे गोमाताकी सेवा और रक्षामे तत्पर रहना चाहिये।

———श्री श्री श्री———

नम्र निवेदन और क्षमा-प्रार्थना

नमो गाभ्य श्रीमतीभ्य सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम ॥

सर्व प्रकारसे पवित्र करनेवाली, लक्ष्मीस्वरूपिणी, कामधेनु सुरभिकी सतान ब्रह्मपुत्री गोआको बारवार प्रणाम करते हुए आज हम पाठकाकी सेवामे इस वर्ष 'कल्याण' के विशेषाङ्कके रूपमे 'गोसेवा-अङ्क' प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस ससारमे गौ एक अद्भुत प्राणी है, जो वास्तवमे सबके लिये महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद है। भारतीय सस्कृतिमे मानव-जीवन प्राप्त करनेका परम उद्देश्य है—अपना कल्याण करना अर्थात् अक्षय सुखकी प्राप्ति। इसक लिये अपने शास्त्राम 'गो-सेवा' से सरल कोई दूसरा साधन नहीं है। शुक्ल यजुर्वेदम एक प्रश्न किया गया हे—'**कस्य मात्रा न विद्यते**'—'किसका परिमाण (उपमा) नहीं है?' (२३। ४७)। इसका उत्तर भी दिया गया है—'**गोस्तु मात्रा न विद्यते**'—'गौका परिमाण (उपमा) नहीं है।' (२३।४८)

गौ और पृथ्वी—ये दानो गोके ही स्वरूप (पर्याय) ह। गौ और पृथ्वी—इन दोनाम अभिन्नता ह। ये दोनो ही परस्पर एक दूसरेकी सहायिका ओर सहचरी हैं। मृत्युलाककी आधारशक्ति 'पृथ्वी' आर दवलोकको आधारशक्ति 'गो' हे। पृथ्वीको भूलोक और 'गो' को गोलोक कहते हैं। भूलोक—अधालोक (नीचे)-मे हे और गोलाक—उर्ध्वलोक (ऊपर)-मे ह। यह अत्युत्तम श्रेष्ठ लोक है। जन्म-जन्मान्तरकी परम साधनाके उपरान्त मानव-जीवनके लक्ष्यको पूर्ण कर लेनेवाले प्राणियाको गालाककी प्राप्ति हाती है, जहाँ पहुँचकर प्राणी इस मृत्युलोकम वापस नहीं लौटता, इसीका नाम हे जन्म-मरणके वन्धनसे मुक्त हाना अथवा स्वयका कल्याण करना। इस गोलोकम ही गोआका निवास है।

एक बार दवराज इन्द्रन ब्रह्माजास यह प्रश्न किया कि गोएँ देवता और लोकपालोक लोकासे भी अति उच्चतम गोलाकमे क्या रहती हें? ब्रह्माजीने इसका उत्तर देते हुए कहा—'गाआको यज्ञका अङ्ग और साक्षात् यज्ञ ही कहा गया ह। इनक बिना किसी प्रकार भी यज्ञ नहीं हो सकता। य अपन दूध ओर घीस प्रजाका धारण-पोषण करती हैं और इनके पुत्र बैल खेतीके कामम आते हैं तथा विविध प्रकारके अन्न एव बीज पैदा करते हे। उनसे यज्ञ होते हैं ओर हव्य-कव्यका कार्य सम्पादन होता है। इन्हींसे दूध, दही और घी मिलता हे। ये गौएँ बडी ही पवित्र होती हैं और बेल बेचार भूख-प्यासका कष्ट सहकर भी भाँति-भाँतिका बोझ ढोते रहते है। इस प्रकार गोएँ अपने कर्मसे प्रजाओका और मुनियाका धारण-पोषण करती रहती हैं। इनके व्यवहारम शठता, कपटता नहीं होती, ये सदा पवित्र कर्ममे ही लगी रहती हैं। इसीसे देवराज! ये गौएँ हम सब लोगाके ऊपर (गोलाकम) निवास करती हैं। (महा० अ० ८३। १७—२२)

अभ्युदय और नि,श्रेयसकी प्राप्तिके लिये यज्ञकी आवश्यकता है। यज्ञ-दान-तप-रूप कर्मको भगवान्ने अवश्य-कर्तव्य—अनिवार्य बतलाया है। '**यज्ञदानतप कर्म न त्याज्य कार्यमव तत्।**' यज्ञकी पूर्णाहुतिके लिये हविकी आवश्यकता हाती है और हविकी प्रदाता गोमाता ही हैं, इसीलिये हमारे शास्त्रोमे गौको 'हविर्दुघा' (हवि देनेवाली) कहा गया है। गोघृत देवताओका परम प्रिय हवि है और यज्ञके लिये भूमिको जोतकर तैयार करने एव गेहूँ, चावल, जो, तिल आदि हविष्यान्न पैदा करनेके लिय गोसतति—बेलोकी परम आवश्यकता है। यही नहीं यज्ञभूमिको परिष्कृत एव शुद्ध करनके लिये उसे गोमूत्रसे छिडका जाता है आर गोबरसे लीपा जाता है तथा गोबरके कडासे यज्ञाग्निको प्रज्वलित किया जाता हे। यज्ञानुष्ठानके पूर्व प्रत्येक यजमानको देहशुद्धिक लिये पञ्चगव्यका प्राशन करना हाता हे ओर यह गायक दूध, दही, गोघृत, गोमूत्र और गायक ही गाबरसे तेयार किया जाता है, इसलिय इसे 'पञ्चगव्य' कहते ह। इसके अतिरिक्त गोदुग्धम पकाये हुए चावल (खीर) को 'परमान्न' (सर्वश्रेष्ठ भोजन) कहा गया है ओर गोघृतको 'सर्वश्रष्ठ रसायन' माना गया है—'**आयुर्वे घृतम्।**' इस प्रकार गाघृत आदि गोमय पदार्थ आराग्यप्रद तज प्रद आयुवर्धक और बलवर्धक माने जाते हैं। अत मनुष्या और देवताआ—दोनाकी तृप्तिके लिये गाकी सर्वोपरि आवश्यकता है।

कहते हैं कि इस मनुष्यलोकमे जीवोके कल्याणके लिये ही गौ-जेसी पवित्र और मङ्गलमय प्राणीका प्रादुर्भाव हुआ।

शास्त्रामे गौको सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी कहा गया है। अत गौक दर्शनसे समस्त देवताओके दर्शन तथा समस्त तीर्थोकी यात्रा करनेका पुण्य प्राप्त होता है। जहाँ गोका निवास होता हे, वहाँ सर्वदा सुख-शान्तिका पूर्ण साम्राज्य उपस्थित रहता है। गोदर्शन, गोस्पर्श, गोपूजन, गोस्मरण, गागुणानुकीर्तन और गोदान करनेसे मनुष्य सर्वविध पापासे मुक्त होकर अक्षयलोकका भोग प्राप्त करता है। गोकी परिक्रमा करनेसे सम्पूर्ण पृथ्वीकी परिक्रमा हो जाती है। इस प्रकार गौ भारतवासियोकी परम आराध्या है। यह तो हुई हमारी आध्यात्मिक एव आधिदेविक दृष्टि।

अधिकाश लोग आजकल भौतिक ओर स्थूल दृष्टिसे गोकी आर्थिक उपयोगितापर भी विचार करते हैं। इस दृष्टिसे भी यदि विचार किया जाय तो गाय-जैसा उपयोगी प्राणी कोई अन्य नहीं है। किसी भी प्रकारका गोवश—बूढा-अपग, अनुत्पादक—लूला-लँगडा, अधा—दश और गोपालकपर भारस्वरूप नहीं है। उसे अनुपयोगी कहना ठीक नहीं। स्थूल दृष्टिस भारतम गोके तीन प्रकारके उपयोग हो सकते हैं— (१) गायके दूधका उपयोग, (२) गोवशके द्वारा कृषि-कार्य तथा (३) गोबर और गोमूत्रका उपयाग।

आहारक रूपमे दूधका सर्वाधिक वैज्ञानिक महत्त्व सर्वत्र स्वीकार किया गया है। जिन उपादानासे शरीरका यन्त्र चालू रह सकता है वे सब दूधमे पाये जाते हैं। वच्चाके भोजनके लिये दूध ही प्रकृतिकी पहली देन हे।

भारतीय औपधिविज्ञानके सुप्रसिद्ध सस्थापक चरकने अपने ग्रन्थम लिखा है कि 'दूध सामान्य रूपसे मनुष्य तथा समस्त चतुष्पद प्राणियाके स्वास्थ्य और विकासके लिये आवश्यक होता है। गायका दूध सर्वश्रष्ठ हे, यह वच्चाको जीवन, जवानाको स्वास्थ्य तथा बूढाको शक्ति प्रदान करता है।' इसा प्रकार ब्रिटिश मडिकल रिसर्च कासिलन घापित किया है—'गायका विशुद्ध और ताजा दूध सर्वापेक्षा हितकर और विश्वस्त पापक तत्त्वासे भरा हाता हे आर उसम लाभदायक जीवाणु तथा दूसरे स्वास्थ्यप्रद उपकरण हाते हैं।'

गावश भारताय कृषि-विकासका आधारशिला हे, जिसका अति प्राचीन कालसे महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन कालसे बैलाका उपयोग कृषिभूमिको जातकर तैयार करना, कुओसे पानी खींचना तथा परिवहन-सम्बन्धी आवश्यकताओकी पूर्तिमे होता रहा है। आजकल नये वेज्ञानिक अनुसधानक अनुसार जमीन जोतनेमे ट्रैक्टराका उपयोग किया जा रहा है, जिसके कारण भूमिकी उर्वरा-शक्तिके क्षीण होनेका खतरा उत्पन्न हो गया है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक अलबर्ट आइनस्टाइनने भारतको यह सदेश भेजा था—'*भारत ट्रेक्टरके द्वारा यन्त्रीकृत खतीकी पद्धतिको न अपनाये, क्याकि इनसे चार सो वर्षकी खेतीम ही अमेरिकाके जमीनकी उर्वरा-शक्ति काफी हदतक समाप्त हो चली है, जबकि भारतका उपजाऊपन दस हजार वर्षकी खतीके वाद भी आज कायम है।* अत दशके किसानोको इस बातपर विशेष ध्यान देना चाहिये कि आनेवाली पीढीके लिये देशकी भूमिकी उर्वरा-शक्ति समाप्त न हो, इसके लिय हमारी प्राचीन परम्परापर आधारित खेतीके कार्यमे गोवशका ही अधिकाधिक उपयोग हाना चाहिये।

प्राचीन कालसे ही गोबर और गोमूत्रका अन्य उपयोगाके साथ-साथ धरतीको उर्वरा-शक्ति प्रदान करनेके लिये खादके रूपमे मुख्य उपयोग किया जाता रहा है परतु आजकल यान्त्रिक खेतीक साथ-साथ रासायनिक खाद और कीटनाशक जहरीली ओपधियाका उपयोग अत्यधिक रूपसे किया जा रहा है, जिससे स्वास्थ्यपर तो असर पड ही रहा है, साथ-साथ भूमिकी उर्वरा-शक्ति भी कमजोर होती जा रही है। रासायनिक खाद धरतीका प्राकृतिक आहार नहीं है इससे शुरूम ता उत्पादन बढता है पर बादम उत्पादन घटता ही जाता है। कुछ समय बाद धरती पूर्णत बजर हो जाती है। गोबरकी खाद धरतीका प्राकृतिक आहार हे। इससे धरतीकी उर्वरा-शक्ति वनी रहती है। गावरसे गेस मुफ्तम प्राप्त होती हे इसकी जानकारी जनसाधारणको हा चुकी हे। गेसका उपयाग ईधन आर राशनीके लिय किया जाता ह। गाँवाम यदि गावर-गेसक सयन्त्र लगा दिय जायँ तो ग्रामाण जनताको ईधन और रोशना मुविधापूर्वक प्राप्त हो सकती है। गावरकी तरह गामूत्र भी खतीक लिय बहुत उपयोगी होता हे उसम धरताका विना किसी प्रकार हानि पहुँचाये कीटाणुनाशक

शक्ति होती है, गोमूत्रका उपयोग मानवकी कई बीमारियोमे ओषधिके रूपम और पेटम कृमिनाशकके रूपमे किया जाता है।

गोबर ओर गोमूत्रका समुचित उपयोग करनेसे जा आय हाती है, उससे गाय-बैलके भरण-पोषणका खर्च निकालनेके पश्चात् भी वचत ही रहेगी। ऐसी स्थितिमे गायका दूध और कृषि आदि कार्योमे बैलका उपयाग एक प्रकारसे विना किसी खर्चके प्राप्त हो जाता है, जो गोपालकोकी समृद्धिका कारण बन सकता है। इसम एक बात ओर ध्यान देनेकी हे कि यह सारी समृद्धि भारतीय नस्लकी गायोसे ही प्राप्त होती है। आजकल दूधके लोभमे जर्सी आदि विदेशी गायोका पालन जोरसे वढ रहा है। यहाँ तक कि भारतीय नस्लकी गायाको भी विदेशी साँडासे गर्भाधान कराकर वर्णसकरी गाय उत्पन्न कर रहे हे। साथ ही कृत्रिम गर्भाधानकी प्रक्रिया भी अपनायी जाती है, जिसमे गायाकी भारतीय नस्ल धीरे-धीरे नष्टप्राय हो रही हैं। यह अत्यन्त गम्भीर ओर विचारणीय विषय हे। शास्त्रीय दृष्टिसे विदशी गायामे गायके लक्षण घटित नहीं होते। उपयोगकी दृष्टिसे भी इनका आवास विशेष स्वास्थ्यप्रद नहीं है। अत आवश्यकता इस वातकी है कि अच्छी नस्लके दशी सॉड तैयार किये जायँ, जिससे गायाकी भारतीय नस्लकी सतति अधिकाधिक रूपम तेयार हो सके।

उपर्युक्त विवेचनस यह बात स्पष्ट हा जाती हे कि गावश किसी भा स्थितिम अनुपयागी ह ही नहीं। अत मासका निर्यात करनक लिय गायकी हत्या करना कितनी वडी अज्ञानता हे यह कहा नहीं जा सकता।

भारतोय सस्कृति आर अन्य देशाकी सस्कृतिमें वहुत वडा अन्तर ह। विदशाम गायकी आर्थिक उपयागिताके आधारपर सेवा-शुश्रूषा की जाती हे। अनुपयोगी होनेपर इस मारनेमे वे हिचकते नही, जिसका अन्धानुकरण हमार देशक कर्णधार भी आज धडल्लेसे कर रहे हैं। यह स्वार्थपरायणताकी पराकाष्ठा है। भारतम गाक भौतिक उपयागके साथ-साथ गायका आध्यात्मिक महत्त्व भी है। हम अपनी सर्वोपरि श्रद्धाका केन्द्र माँके रूपमे गाको सम्बोधित करते हैं ओर अपने शास्त्र तथा मान्यताके अनुसार लाग गौ माताका लोक-परलाक दोनाका जीवनसाथी समझते है। अत गौकी हत्या या गोका वध देशवासियोके लिये कभी भी सह्य नहीं हो सकता। पर दुर्भाग्यवश आजतक यह जघन्य कार्य बद नहीं हो सका, आशा है, भारतके शासकोको परमात्मप्रभु शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करेगे, जिससे यह देशका कलक मिट सके। इसके साथ ही गोरक्षण ओर गासवर्धनके लिये, जनता और सरकारके लिये कुछ आवश्यक कर्तव्य हैं, जिनका कार्यान्वयन यथाशीघ्र होना चाहिये। जिससे भारतकी गोसम्पदा बचायी जा सके—

(१)सुदृढ केन्द्रीय कानून बनाकर गोवशकी हत्या तुरत बद की जाय तथा गोमासका निर्यात करना तत्काल बद किया जाय।

(२)विभिन्न प्रदेशाकी सरकार गौ-पालनके लिये चरागाहके निमित्त गोपालनसे सम्बन्धित सस्थाओको अधिकाधिक भूमि प्रदानकर उनकी सुचारुरूपसे व्यवस्था करे तथा चरागाहके लिये पहले छोडी गयी जमीनको जो लोग अन्य उपयोगम लाये उन्हे कडाईसे पुन चरागाहके उपयोगम लाया जाय।

(३)विभिन्न स्थानामे पशुचिकित्सालयकी स्थापना की जाय तथा पशुचिकित्सक तैयार किये जायँ।

(४)अच्छी नस्लके देशी साँड तेयार किये जायँ, जो विभिन्न स्थानाके गोसदन और गोशालाम रखे जायँ।

(५)विभिन्न स्थानोम एसे गाशाला ओर गोसदन होने चाहिय जो अपने क्षेत्रके बीमार ओर कमजोर गोवशको भरतीकर उनके पालन-पोषणकी समुचित व्यवस्था करे।

(६)अच्छी नस्लकी देशी गाय तैयार की जायँ, जिन्हे गापालनके इच्छुक जनताको वितरण किया जा सके।

(७)गोदुग्धका गाशाला और गोसदनाके द्वारा अपने क्षेत्रम समुचित वितरणकी व्यवस्था की जाय।

(८)कृषि आदि कार्योंमे गोवशका अधिकाधिक उपयोग किया जाय।

यदि उपर्युक्त बातोपर गोशाला, गासदन, गोभक्त जनता ओर हमारी सरकार गम्भीरतापूर्वक ध्यान दे और इसे शीघ्र कार्यान्वित किया जाय तो हम आज भी पुन अपनी समृद्धिको प्राप्त कर सकते हैं।

आजसे लगभग ४९ वष पूर्व सन् १९४५म 'कल्याण' के विशपाङ्कके रूपम 'गो-अङ्क' का प्रकाशन हुआ था।

उन दिना 'कल्याण'की ग्राहक-सख्या सीमित होनेके कारण थोडे ही लोग लाभान्वित हो सके। अत बहुत दिनासे गोभक्ता एव प्रेमी पाठकाका गो-सम्बन्धी विशेषाङ्क पुन प्रकाशित करनेका अत्यधिक आग्रह चलता रहा। भगवत्प्रेरणासे मनम यह विचार आया कि मनुष्य-जीवनके लक्ष्यको प्राप्त करनेका परम साधन अभीके समयम गो-सेवासे बढकर कोई दूसरा नहीं। अत यह निर्णय लिया गया कि तात्त्विक विवेचनासे युक्त यथासम्भव गोसवाकी समस्त विधाओपर प्रकाश डालनवाला गायसे सम्बन्धित समग्र सामग्रियाका एक सकलन 'कल्याण'-विशेषाङ्क' के रूपम लाक-कल्याणार्थ यथाशीघ्र प्रकाशित किया जाय। फलस्वरूप आनन्दकन्द लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीगोपाल कृष्णके अनुग्रहस इस वर्ष कल्याणमयी भगवती गोमाताके स्तवन-अर्चनके रूपम 'गोसेवा-अङ्क' जनता-जनार्दनकी सेवाम प्रस्तुत है।

इस अङ्कम भगवती गोसे सम्बन्धित आध्यात्मिक एव तात्त्विक निबन्धाके साथ-साथ गाका विश्वरूप, गोसेवाका स्वरूप, गोपालन एव गो-सवर्धनकी मुख्य विधाएँ, विविध धर्मों एव सम्प्रदायामे गायका महत्त्व गोवशके विभिन्न रूपाका विवेचन गाका आर्थिक दृष्टिस महत्त्व, हमार स्वास्थ्यको सुरक्षित रखनम गोका यागदान भारतके विभिन्न गोशाला एव गोसदनाके विवरण देशम गोहत्या-बदीके लिये गारक्षा-अभियान गोसेवी सतो, साधको आर भक्ताका परिचय एव आख्यान तथा घटनाआका विवरण देनका प्रयास किया गया है। इसके साथ ही विभिन्न सस्कृतियाम गो-आराधन आर गोसेवाका स्वरूप तथा गोदान एव गो-सेवास भगवत्प्राप्ति आदि विभिन्न विषयोको इस विशेषाङ्कमे प्रस्तुत करनेकी चेष्टा की गयी है।

'गासवा-अङ्क'के लिये लेखक महानुभावाने उत्साहपूर्वक जा सहयाग प्रदान किया है उस हम कभी नहीं भूल सकते। हम आशा नहीं थी कि वर्तमान समयम गासे सम्बन्धित आध्यात्मिक और आर्थिक पहलुआपर प्रकाश डालनेवाले उच्चकोटिके लेख हम सुलभ हा सकग किंतु सुरभि माताकी असीम कृपासे इतने लेख और अन्य सामग्रियाँ प्राप्त हुई कि उन सबका इस अङ्कम समाहित करना सम्भव नहीं था फिर भी विषयकी सर्वाङ्गीणतापर ध्यान रखते हुए अधिकतम सामग्रियाका सयाजन करनका नम्र प्रयत्न अवश्य किया गया है। गौ माताक विशिष्ट भक्त, सवक और सत-विद्वान् जो आज हमार बीच नहीं हैं, उन महानुभावाक कतिपय अति महत्त्वपूर्ण लख भी पूर्व-प्रकाशित अङ्कासे सगृहीत कर लिये गये हैं। जिससे हमारे पाठकाको उन विशिष्ट भक्ता, सत-महात्माआ आर गासवकाके अनुभवाका भी लाभ प्राप्त हा सकगा। विषय और सामग्रीकी अधिकताके कारण इस वर्ष दूसर तथा तीसर मासके दो अङ्क 'परिशिष्टाङ्क' के रूपम विशेषाङ्कक साथ भेजे जा रह हैं। दूसरा अङ्क तो सुविधाकी दृष्टिस विशेषाङ्कके साथ एक जिल्दमे ही समायाजित किया गया हे तथा तीसरा अङ्क अलगसे इसके साथ आपकी सवाम प्रषित ह।

उन लेखक महानुभावाक हम अत्यधिक कृतज्ञ हैं जिन्हान कृपापूवक अपना अमूल्य समय लगाकर गोसवासे सम्बन्धित सामग्री तैयारकर यहाँ प्रषित की। हम उन सबकी सम्पूर्ण सामग्रीको विशेषाङ्कम स्थान न दे सक, इसका हम खद है, इसम हमारी विवशता ही कारण है, क्याकि हम निरुपाय थे। इनमसे कुछ तो एक ही विषयपर अनेक लख होनेसे छप नहीं सके तथा कुछ विचारपूर्ण अच्छे लेख विलम्बसे आय, जिनम कुछ लेखोको स्थानाभावके कारण पयाप्त सक्षेप करना पडा और कुछ नहीं भी दिये जा सके। यद्यपि साधारण अङ्काम इनमसे कुछ अच्छे लेखाको दनेका प्रयत्न किया जा सकता हे, फिर भी बहुतसे लेख अप्रकाशित ही रह सकते हैं, इसक लिये हम लखक महानुभावास हाथ जोडकर विनीत क्षमा-प्रार्थी हैं।

'विशेषाङ्क'के प्रकाशनक समय कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ आर समस्याएँ भी आती हैं, पर उन्हे सहन कर पानकी शक्ति भी भगवान् विश्वेश्वर ही प्रदान करत हैं। इस वर्ष भी विभिन्न कठिनाइयाँ आयीं परतु सुरभिदेवीकी कृपास सबका शमन हुआ।

प्रसन्नताकी बात हे कि पिछल कुछ वर्षोसे 'कल्याण'-की ग्राहक-सख्याम वृद्धि हो रही है। दो वर्ष-पूर्व २० हजार ग्राहक 'कल्याण'क बढे थे। भगवत्कृपासे पिछले वर्ष भी इसी प्रकार ग्राहकोकी सख्याम लगभग २० हजारकी वृद्धि हुई जिसके कारण 'विशेषाङ्क' क सस्करण दो बार पुन छापने पडे। फिर भी सम्पूर्ण माँग पूरी नहीं

की जा सकी। हम भी 'कल्याण'का प्रकाशन-वितरण अधिक सख्याम करना चाहते हैं, जिससे अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सक तथा सर्वसाधारणकी आध्यात्मिक रुचिम वृद्धि हो पर इस कार्यम आपक सहयागकी भी अत्यधिक आवश्यकता है, हम यह चाहते हैं कि प्रत्येक पाठक 'कल्याण' का कम-से-कम एक ग्राहक अवश्य बनाये, इससे आप इस आध्यात्मिक पत्रिकाके प्रचार-प्रसारमे सहायक हो सकगे। इस वर्ष भी गोभक्तोके उत्साहको दखते हुए यह प्रतीत होता है कि 'कल्याण' की माँग बढेगी। स्वभावत इसके प्रचार-प्रसारसे जन-जीवनम आध्यात्मिक चेतनाका विकास होगा और जन-सामान्य कल्याणके मार्गपर अग्रसर हागे।

हम अपने उन सभी पूज्य आचार्यो, परम सम्मान्य पवित्र-हृदय सत-महात्माआ, गोभक्त-सेवक और गोपालक महानुभावोके श्रीचरणाम श्रद्धा-भक्तिपूर्वक प्रणाम करते ह, जिन्हाने 'विशेषाङ्क'की पूर्णतामे किंचित् भी योगदान किया। गोसेवा और गोभक्तिके प्रचार-प्रसारमे वे ही मुख्य निमित्त भी हैं, क्योकि उन्हींके सद्भावपूर्ण एव उच्च विचारपूर्ण लेखोसे जन-सामान्यको गौके वास्तविक स्वरूपका दिग्दर्शन होगा। हम अपने विभागके तथा प्रेसके अपने उन स भी सम्मान्य साथी-सहयोगियोको भी प्रणाम करत हे जिनके स्नेहभरे सहयोगसे यह पवित्र कार्य सम्पन्न हा सका है। हम अपनी त्रुटिया तथा व्यवहार-दोषके लिये उन सबसे क्षमा-प्रार्थी हैं।

'गोसेवा-अङ्क' के सम्पादनम जिन भक्तो गापालका सतो और विद्वान् लेखकासे हम सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है, उन्ह हम अपने मानस-पटलसे विस्मृत नहीं कर सकते। समादरणीय गोभक्त श्रीराधाकृष्णजी बजाज श्रीलक्ष्मी-नारायणजी मोदा, श्रीपुरुषोत्तमलालजी झुनझुनवाला, श्रीपरमानन्दजी मित्तल तथा श्रीसीतारामजी साबू आदि महानुभावोके प्रति मैं हृदयसे आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्हाने 'गोसेवा-अङ्क'के प्रकाशनम अपना प्रेरणापद सहयाग प्रदानकर उत्साह-वर्धन किया। इस सदर्भम हम सर्वाधिक सहयोग 'गोधन' के सम्पादक भाई शिवकुमारजी गायलसे प्राप्त हुआ, जिन्हान गारक्षाके विभिन्न सनानी, सवक आर भक्तोके चरित्र, उनकी कथाएँ और घटनाएँ तथा अपने पूज्य पिता श्रीरामशरणदासजीके सग्रहालयसे प्राप्त कई दुर्लभ सामग्रियाको उपलब्ध कराया। इनके प्रति हम अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते ह। अपन सम्पादकीय विभागके वयोवृद्ध विद्वान् प० श्रीजानकीनाथजी शर्मा तथा कुछ अन्य सहयोगियोके अथक परिश्रमसे ही यह विशेषाङ्क इस रूपमे प्रस्तुत हो सका है। इसके सम्पादन तथा प्रूफ-सशोधन चित्र-निर्माण आदि कार्योम जिन-जिन लोगोसे हमे सहायता मिली है, वे सभी हमारे अपने हे, उनको धन्यवाद देकर हम उनके महत्त्वको घटाना नहीं चाहते। वास्तवम 'कल्याण'का कार्य परमात्मप्रभुका कार्य हे। भगवान् अपना कार्य स्वय करते हैं, हम तो केवल निमित्त मात्र हैं।

इस बार 'गोसेवा-अङ्क' के सम्पादन-कार्यके अन्तर्गत प्रकाशनके निमित्त जो सामग्री प्राप्त हुई, उसके अध्ययन, मनन ओर चिन्तनसे यह अनुभव हुआ कि गौ माता हमारी सर्वोपरि श्रद्धाका केन्द्र है और भारतीय सस्कृतिकी आधारशिला है। वस्तुत गोमाता सर्वदवमयी है। अपने शास्त्राम तैंतीस कोटि देवताआका वर्णन मिलता ह। यदि अपने सम्पूर्ण तैंतीस कोटि देवी-देवताओका षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार-पूजन करना हो तो यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है? 'सर्वे दवा स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गो ' केवल एक गौ माताकी पूजा आर सेवा करनेसे एक साथ सम्पूर्ण देवी-देवताओकी पूजा सम्पन्न हो जाती है, अत प्रय ओर श्रेय अथवा समृद्धि ओर कल्याण—दोनाकी प्राप्तिक लिय गोसेवासे वढकर काई दूसरा परम साधन नहीं है। आशा है 'कल्याण' के पाठकगण भी इससे पूर्ण लाभान्वित हागे।

अन्तमे हम अपनी त्रुटियाक लिय आप सवसे क्षमा-प्रार्थना करते हुए दीनवत्सला करुणामयी सुरभि गोमाताक श्रीचरणोमे प्रणतिपूर्वक यह प्रार्थना करत है कि 'गाय ही हमार आगे हा गाय ही हमारे पीछ हा, सव ओर गाय हा तथा गायाके मध्यम ही हमारा निवास हो'—

गावो ममाग्रत सन्तु गाव पृष्ठत एव च।
गाव सर्वतश्चैव गवा मध्ये वसाम्यहम्॥—

—राधेश्याम खमका
सम्पादक

गीताप्रेस, गोरखपुरके प्रकाशनोका सूचीपत्र

ध्यान देने योग्य कुछ आवश्यक बाते

(१) पुस्तकाक आडरम पुस्तकका कोड न० नाम मूल्य तथा मँगानेवालका पूरा पता डाकघर जिला पिन-कोड आदि हिन्दी या अँग्रजीम सुस्पष्ट लिख। पुस्तके यदि रलसे मँगवानी हा ता निकटतम रलवे-स्टेशनका नाम अवश्य लिखना चाहिय।

(२) कम-स-कम रू० ५०० मूल्यकी कुल पुस्तकाके आर्डरपर डिस्काउन्ट दनका व्यवस्था ह। डिस्काउन्टकी दर मूल्यक बाद ▲ चिह्नवाली पुस्तकापर ३०% एव ■ चिह्नवाली पुस्तकापर १५% है। अन्य खर्च—पैकिंग, रेलभाडा आदि अतिरिक्त देय होगा। रु० १००० से अधिकको पुस्तक एक साथ चलान करनेपर पैकिंग-खर्च नहीं लिया जाता तथा रेलभाडा बाद दिया जाता है।

(३) डाकसे भेजी जानेवाली पुस्तकापर कम-से-कम ५% (न्यूनतम रु० १) पैकिंग-खर्च अङ्कित डाकखर्च तथा रजिस्ट्री/वी० पी० खर्च पुस्तकाके मूल्यके अतिरिक्त देय है। डाकसे शीघ्र एव सुरक्षित मिलनेक लिये वी० पी०/रजिस्ट्रीस पुस्तक मगवाय। रु० २०० मे अधिक मूल्यकी पुस्तकाके साथ अग्रिम राशि भेजनेकी कृपा करे।

☞ (४) सूचीमे पुस्तकोके मूल्यके सामने वर्तमानमे लगनेवाला साधारण डाकखर्च (बिना रजिस्ट्री-खर्चके) ही अकित है। बडी पुस्तकोको रजिस्ट्री/वी० पी० पी० से ही मँगाना उचित है। वर्तमानमे अकित डाकखर्चके अतिरिक्त रजिस्ट्री-खर्च रु० ६ ०० प्रति पैकेट (५ किलो वजनतक) दरसे लगता है।

(५) कल्याण' मासिक या उसके विशेषाङ्कके साथ पुस्तके नहीं भेजी जा सकतीं। अतएव पुस्तकाक लिये गीताप्रेसपुस्तक-विक्रय-विभागके पतेपर कल्याण'के लिये कल्याण'-कार्यालय पो० गीताप्रेसके पतेपर अलग-अलग आर्डर भेजना चाहिये। सम्बन्धित राशि भी अलग-अलग भजना ही उचित है।

(६) आजकल डाकखर्च बहुत अधिक लगता है। अत पुस्तकोका आर्डर दनेसे पहल स्थानीय पुस्तक-विक्रेतास सम्पर्क कर। इससे समय तथा धनकी बचत हो सकती है।

(७) विदेशोमे नियातक मूल्य तथा नियमादिकी जानकारी हेतु पत्राचार कर।

विशेष—जो पुस्तके इस समय तयार नहीं है उनके मूल्य इस सूचीपत्रम अङ्कित नहीं हे अतएव कृपया उन्ह बादमे मँगाये। पुस्तकाक मूल्य डाकखर्च आदिमे परिवतन हानेपर परिवर्तित राशि दय हागी।

व्यवस्थापक—गीताप्रेस, गोरखपुर-२७३००५ फान न० (०५५१) ३३४७२१

पुस्तक-सूची (नवम्बर १९९४)

कोड	[रजिस्ट्रासे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च
	श्रीमद्भगवद्गीता		
1	गीता तत्त्व-विवेचनी—(टीकाकार श्रीजयदयालजी गोयन्दका) गीता-विषयक २५१५ प्रश्न और उनके उत्तर रूपम विवेचनात्मक हिन्दी टीका बृहदाकार सचित्र सजिल्द	६	■ १९
2	ग्रन्थाकार	३	■ ९
3	नवीन सस्करण	२	■ ८
4	गुटका बाइबल पेपर	१५	■ ७
457	अंग्रेजी अनुवाद	२५	■ ८
5	गीता साधक सजीवनी—(टीकाकार स्वामी श्रीरामसुखदासजी) गीताके मर्मको समझने हेतु व्याख्यात्मक शैली एव सरल सुबोध भाषामें हिन्दी टीका बृहदाकार, सचित्र सजिल्द	८	■ २२
6	ग्रन्थाकार	५	■ १२
512	पाकेट साइज (दो खण्डोमें)	४	■ ५
7	मराठी अनुवाद	६ ०	■ १
467	गुजराती अनुवाद	१ ६	■ १
4.6	अँग्रेजी अनुवाद	३५	■ ८
595	अंग्रेजी (दो खण्डोंमें)	१ ४	■ ५
540	बँगला (अध्याय १ से ६ तक)	२	■ ५

कोड	[रजिस्ट्रासे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च
8	गीता दर्पण—(स्वामी रामसुखदासजीद्वारा) गीताके तत्त्वोपर प्रकाश लेख गीता व्याकरण और छन्द सम्बन्धी गूढ विवेचन सचित्र सजिल्द	१५	■ ५
504	(मराठी अनुवाद) सजिल्द	२	■ ५
556	(बगला अनुवाद)	२५	■ ५
468	(गुजराती अनुवाद)	२५	■ ५
493	(अग्रेजी पाकेट साइज)	२	■ २
10	गीता शांकर भाष्य—	३	■ ६
581	रामानुज भाष्य—	२ ०	■ ५०
11	गीता चिन्तन—(श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके गीता विषयक लेखा विचारा पत्रा आदिका सग्रह)	१५	■ ३
17	गीता—मूल पदच्छेद अन्वय भाषा टीका टिप्पणी प्रधान और सूक्ष्म विषय एव त्यागसे भगवत्प्राप्ति लेखसहित सचित्र सजिल्द	१	■ ३०
12	(गुजराती)	१५	■ ४०
13	(बगला)	१	■ ४
14	(मराठी)	१५	■ ४
16	गीता—प्रत्येक अध्यायके माहात्म्यसहित सजिल्द, मोटे अक्षरोंमें	१	■ ३
15	(मराठी अनुवाद)	१५	■ ३
18	भाषा टीका, टिप्पणी प्रधान विषय मोटा टाइप	७५	■ २

कोड	[रजिस्ट्रीसे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
502	गीता—मोटे अक्षर, सजिल्द	१	■	३ ०
19	गीता—केवल भाषा	४ ०	■	१
20	गीता—भाषा टीका	२५	■	१
455	(अंग्रेजी)	२५	■	१
21	श्रीपञ्चरत्नगीता—गीता विष्णुसहस्रनाम भीष्मस्तवराज अनुस्मृति गजेन्द्रमोक्ष (मोटे अक्षरोंमें)	८	■	२
22	गीता—मूल मोटे अक्षरोंवाली	५	■	२ ०
538	गीता मूल मोटा (सजिल्द)	६	■	२
23	मूल विष्णुसहस्रनाम सहित	१ ०	■	१ ०
488	नित्यस्तुति—गीता मूल विष्णुसहस्रनाम सहित	२५	■	१ ०
24	गीता—ताबीजी (माचिस आकार)	१	■	१
566	गीता—ताबीजी एक पन्नेमें सम्पूर्ण गीता (कम से कम ५०० प्रति)	०१	■	
268	गीताके कुछ श्लोकोंपर विवेचन—	०७५	▲	१
289	गीता-निबन्धावली—	२००	▲	१ ०
297	गीतोक्त सन्यास या सांख्ययोगका स्वरूप—	७५	▲	१
388	गीता माधुर्य—स्वामी रामसुखदासजीद्वारा सरल प्रश्नोत्तर शैलीमें (हिन्दी)	६	▲	१
389	(तमिल)	८	▲	२
390	(कन्नड)	४५	▲	१ ०
391	(मराठी)	६	▲	१ ०
392	(गुजराती)	५	▲	१ ०
393	(उर्दू)	६	▲	२००
394	(नेपाली)	५	▲	२
395	(बंगला)	५०	▲	१
487	(अंग्रेजी)	६०	▲	१
470	गीता—रोमन गीता मूल श्लोक एवं अंग्रेजी अनुवाद	६	■	२
503	गीता दैनन्दिनी (1995)—पुस्तकाकार-प्लास्टिक कवर	२	■	४०
615	पाकेट साइज	१	■	३ ०
506	पाकेट साइज (साधारण)	८०	■	३
464	गीता ज्ञान प्रवेशिका-	१ ००	■	२
464A	(सजिल्द)	१२	■	२
508	गीता सुधा तरंगिनी—गीताका पद्यानुवाद	४	■	१००

रामायण

कोड		मूल्य		डाकखर्च
237	* जय श्रीराम चित्र	१	■	
80	श्रीरामचरितमानस बृहदाकार, मोटा टाइप सजिल्द आकर्षक आवरण राजसंस्करण	१३	■	११००
81	सटीक मोटा टाइप आकर्षक आवरण	७	■	१ ०
82	मझला साइज सजिल्द	३	■	५
456	अंग्रेजी अनुवाद सहित	६ ०	■	९
83	„ मूलपाठ मोटे अक्षरोंमें सजिल्द	३५ ०	■	६
84	मूल मझला साइज	२०	■	४
85	मूल गुटका	१२	■	२००
94	„ बालकाण्ड सटीक	१००	■	२
95	„ अयोध्याकाण्ड-	८	■	१
96	अरण्यकाण्ड— „	२०	■	१
97	„ „ किष्किन्धाकाण्ड-	१५	■	१ ०
98	„ सुन्दरकाण्ड-	२२५	■	१
101	लंकाकाण्ड- सटीक	३५०	■	१ ०
102	उत्तरकाण्ड-	४५	■	१
99	सुन्दरकाण्ड-मूल गुटका	१५०	■	१००
100	सुन्दरकाण्ड-मूल मोटा टाइप	२५०	■	१०
86	मानसपीयूष (श्रीरामचरितमानसपर सुप्रसिद्ध तिलक टीकाकार—श्रीअञ्जनीनन्दनशरण (सातों खण्ड)			
87	बालकाण्ड खण्ड-१			
88	खण्ड-२			
89	खण्ड-३			
90	अयोध्याकाण्ड खण्ड-४			
91	अरण्य किष्किन्धाकाण्ड खण्ड-५			
92	सुन्दर तथा लंकाकाण्ड खण्ड-६			
93	उत्तरकाण्ड खण्ड-७			
75	श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण—सटीक सजिल्द (प्रथम खण्ड)	४५ ०	■	८०
76	(द्वितीय खण्ड)	४५ ०	■	८००
77	केवल भाषा	५५ ०	■	१ ०
583	(मूलमात्रम्)	६५	■	११ ०
78	सुन्दरकाण्ड मूलमात्रम्	१	■	२ ०
452	(अँग्रेजी अनुवाद सहित भाग-१)	६	■	८
453	( ) भाग-२	६०	■	८०
454	( ) भाग-३	६५०	■	१०
74	अध्यात्मरामायण—सटीक सजिल्द	३ ०	■	५ ०
223	मूल रामायण—			

अन्य तुलसीकृत साहित्य

कोड		मूल्य		डाकखर्च
105	विनयपत्रिका—सरल भावार्थ-सहित	१३००	■	२००
106	गीतावली—	१२००	■	२००
107	दोहावली—सानुवाद	६०	■	१००
108	कवितावली—	६५	■	१ ०
109	रामाज्ञाप्रश्न—सरल भावार्थ सहित	२०	■	१०
110	श्रीकृष्णगीतावली—	३ ०	■	१०
111	जानकीमंगल—	२ ०	■	१००
112	हनुमानबाहुक—सानुवाद	१५	■	१००
113	पार्वतीमंगल—सरल भावार्थ-सहित	१५	■	१०
114	वैराग्यसंदीपनी— „ „	५	■	१००
115	बरवै रामायण—	१००	■	१

पुराण उपनिषद् आदि

कोड		मूल्य		डाकखर्च
28	श्रीमद्भागवत सुधासागर—सम्पूर्ण श्रीमद्भागवतका भाषानुवाद, सचित्र, सजिल्द	५५००	■	९ ०
25	बृहदाकार, बड़े टाइपोंमें	१५ ०	■	२५ ०
6	श्रीमद्भागवत महापुराण—सटीक—सचित्र सजिल्द (प्रथम खण्ड)	६०	■	१
27	„ „ (द्वितीय खण्ड)	६०००	■	१० ०
564	„ अँग्रेजी (प्रथम खण्ड)		■	
565	(द्वितीय खण्ड)	२००	■	५००
29	„ मूल मोटा टाइप	५ ०	■	६
30	श्रीप्रेम-सुधासागर—श्रीमद्भागवत, दशम स्कन्धका भाषानुवाद, सचित्र सजिल्द	२ ०	■	४०
31	भागवत एकादश स्कन्ध—सचित्र, सजिल्द			

* चित्र ५५०/१००की पेटी/कार्टूनमें ही भेजे जा सकते हैं। फुटकर भेजनेमें चित्रोंके खराब होनेकी सम्भावना है।

कोड	[रजिस्ट्रीसे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
32	महाभारत—हिन्दी टीका-सहित सजिल्द, सचित्र			
	प्रथम खण्ड [आदिपर्व और सभापर्व]	७५	■	१०
33	द्वितीय खण्ड [वन और विराटपर्व]	८५ ०	■	१ ०
34	तृतीय खण्ड [उद्योग और भीष्मपर्व]	८५ ००	■	१
35	चतुर्थ खण्ड [द्रोण कर्ण शल्य सौप्तिक और स्त्रीपर्व]	१ ०००	■	१२ ००
36	पञ्चम खण्ड [शान्तिपर्व]	८० ०	■	१२ ००
37	षष्ठ खण्ड [अनुशासन आश्वमेधिक आश्रमवासिक मौसल महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहणपर्व]	८५ ०	■	११ ०
38	महाभारत खिलभाग हरिवंशपुराण—हिन्दी टीका	७० ००	■	११ ०
39	संक्षिप्त महाभारत—(प्रथम खण्ड) केवल भाषा सचित्र सजिल्द	५५	■	१०
511	(द्वितीय खण्ड)	५५	■	८ ०
44	संक्षिप्त पद्मपुराण सचित्र सजिल्द	६५	■	८ ०
45	संक्षिप्त शिवपुराण सचित्र सजिल्द			
513	, बड़ा टाइप	६ ०	■	८ ०
539	संक्षिप्त मार्कण्डेय-ब्रह्मपुराणाङ्क	६५ ०	■	९
46	संक्षिप्त श्रीमद्देवीभागवत केवल भाषा	६ ०	■	७
48	श्रीविष्णुपुराण सानुवाद सचित्र सजिल्द	३५ ००	■	६ ०
47	पातञ्जलयोग प्रदीप पातञ्जलयोग सूत्रोंका वर्णन	५	■	७ ०
517	गर्गसंहिता-भगवान् कृष्णकी दिव्य लीलाओंका वर्णन सचित्र सजिल्द	४५	■	७ ०
279	स्कन्दपुराण सचित्र सजिल्द	८० ०	■	११ ०
66	ईशादि नौ उपनिषद् अन्वय हिन्दी व्याख्या	२५ ०	■	५ ०
67	ईशावास्योपनिषद् सानुवाद, शांकरभाष्य	२ ०	■	१
68	केनोपनिषद्-	५ ५०	■	१ ०
578	कठोपनिषद्	६ ५०	■	१
69	माण्डूक्योपनिषद्	११ ०	■	१
513	मुण्डकोपनिषद्	५ ००	■	१ ०
70	प्रश्नोपनिषद् „	५	■	१
71	तैत्तिरीयोपनिषद्	० ५	■	१
582	छान्दोग्योपनिषद्	४ ०	■	७
577	बृहदारण्यकोपनिषद् „	६० ०	■	१
72	ऐतरेयोपनिषद्	८	■	१ ०
73	श्वेताश्वतरोपनिषद्	१	■	२
65	वेदान्त दर्शन हिन्दी व्याख्या सहित सजिल्द	१८ ०	■	४ ०
135	पातञ्जलयोगदर्शन „	५५	■	२
201	मनुस्मृति दूसरा अध्याय सानुवाद			
	भक्त चरित्र			
40	भक्तचरिताङ्क सचित्र, सजिल्द	६ ०	■	९
51	श्रीतुकाराम चरित जीवनी और उपदेश			
53	भागवतरत्न प्रह्लाद	७५	■	३ ०
123	चैतन्य चरितावली सम्पूर्ण एक साथ	५५	■	१ ०
167	भक्त भारती-			
168	भक्त नरसिंह मेहता	५५	■	१
169	भक्त बालक गोविन्द मोहन आदिकी गाथा	२५	■	१
170	भक्त नारी मीरा, शबरी आदिकी गाथा	३	■	१
171	भक्त पञ्चरत्न रघुनाथ दामोदर आदिकी भक्तगाथा	३५	■	१०

कोड	[रजिस्ट्रीसे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
172	आदर्श भक्त शिबि रन्तिदेव आदिकी गाथा	३५	■	१०
173	भक्त सप्तरत्न दामा रघु आदिकी भक्तगाथा	३ ०	■	१ ०
174	भक्त चन्द्रिका सखू, विट्ठल आदि छ भक्तगाथा	३ ०	■	१ ०
175	भक्त कुसुम जगन्नाथ आदि छ भक्तगाथा	३५	■	१०
176	प्रेमी भक्त बिल्वमंगल जयदेव आदि पाच भक्तगाथा	३ ०	■	१ ०
177	प्राचीन भक्त मार्कण्डेय उत्तङ्क आदि १५ भक्तगाथा	५ ००	■	१ ००
178	भक्त सरोज गङ्गाधरदास, श्रीधर आदि दस भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
179	भक्त सुमन नामदेव राका बाका आदि भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
180	भक्त सौरभ-व्यासदास प्रयागदास आदि भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
181	भक्त सुधाकर रामचन्द्र, लाखा आदि भक्तगाथा	४ ०	■	१ ०
182	भक्त महिलारत्न रानी रत्नावती हरदेवी आदि भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ०
183	भक्त दिवाकर सुव्रत वैश्वानर आदि आठ भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
184	भक्त रत्नाकर माधवदास विमलतीर्थ आदि चौदह भक्तगाथा	३ ५०	■	१
185	भक्तराज हनुमान् हनुमान्जीका जीवनचरित्र	२ ५०	■	१
608	(तमिल)	४ ०	■	२
186	सत्यप्रेमी हरिश्चन्द्र-	२	■	१
187	प्रेमी भक्त उद्धव			
188	महात्मा विदुर	२ ०	■	१ ००
189	भक्तराज ध्रुव	२	■	१ ०
537	बालचित्रमय बुद्धलीला चित्रमें	३ ००	■	१
194	चैतन्यलीला	३ ०	■	१ ००
292	नवधा भक्ति भरतजीमें नवधा भक्ति सहित	२५	▲	१ ००
385	नारदभक्तिसूत्र सानुवाद	१ २५	▲	१
330	नारदभक्तिसूत्र सानुवाद (बंगला)	१ १५	▲	१ ०
499	(तमिल)	१ ००	▲	१ ००
121	एकनाथ चरित्र	८ ०	■	२
516	आदर्श चरितावली पृष्ठ सं० ६४	२ ५०	■	१ ०
396	आदर्श ऋषिमुनि ( )	२५	■	१ ०
397	आदर्श देशभक्त ( )	२५	■	१ ००
398	आदर्श सम्राट ( )	२५	■	१ ०
399	आदर्श सत ( )	२ ५०	■	१
402	सुधारक सत ( )	२५	■	१ ००
136	विदुरनीति पृष्ठ स० १८४	५ ०	■	२ ०
138	भीष्मपितामह पृष्ठ सं० १३६	४ ५०	■	१ ०
	परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दकाके शीघ्र कल्याणकारी प्रकाशन			
527	प्रेमयोगका तत्त्व (हिन्दी)	६ ०	▲	२
521	प्रेमयोगका तत्त्व (अंग्रेजी अनुवाद)	४	▲	२
5 8	ज्ञानयोगका तत्त्व (हिन्दी)	६ ०	▲	२
5 0	„ „ (अंग्रेजी अनुवाद)	५ ०	▲	२
266	कर्मयोगका तत्त्व (भाग १)	४ ०	▲	१ ००
267	„ (भाग २)	८	▲	१ ०
303	प्रत्यक्ष भगवद्दर्शनके उपाय (भ० द० त० भाग १)	४	▲	१
298	भगवान्के स्वभावका रहस्य (भ०प्रा०त०भाग २)	१ ५०	▲	१

कोड	[रजिस्ट्रीसे मगाने हतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
242	महत्त्वपूर्ण शिक्षा-पृष्ठ ३५८	६ ००	▲	२ ०
243	परम साधन भाग-१ पृष्ठ १९२	५	▲	२ ०
244	„ भाग-२ पृष्ठ १६०	३ ५०	▲	२
245	आत्मोद्धारके साधन भाग-१ पृष्ठ ४६४	४ ००	▲	२ ००
335	अनन्यभक्तिसे भगवत्प्राप्ति (आ० सा० भाग-२)	३ ५	▲	२ ००
579	अमूल्य समयका सदुपयोग-	३ ००	▲	१ ०
246	मनुष्यका परम कर्तव्य भाग १ पृष्ठ १९२	४ ०	▲	२ ०
247	भाग-२	४	▲	२ ००
611	इसी जन्ममे परमात्मप्राप्ति	४ ०	▲	१ ००
588	अपात्रको भी भगवत्प्राप्ति-	४ ०	▲	१
248	कल्याणप्राप्तिके उपाय तत्त्वचिन्तामणि भाग-१	५.	▲	२ ०
275	(बगला)	६.००	▲	२
249	शीघ्र कल्याणके सोपान- भाग-२ खण्ड-१	४ ०	▲	२
250	ईश्वर और ससार- भाग-२ खण्ड-२	४ ५०	▲	२ ०
519	अमूल्य शिक्षा- भाग ३ खण्ड १	३ ५	▲	१
253	धर्मसे लाभ अधर्मसे हानि त० चि० भाग ३ खण्ड-२	३ ५०	▲	२ ०
251	अमूल्य वचन तत्त्वचिन्तामणि भाग-४ खण्ड-१	४	▲	२ ००
252	भगवद्दर्शनकी उत्कण्ठा- खण्ड-२	४ ०	▲	२
254	व्यवहारमें परमार्थकी कला त०चि०भाग ५, खण्ड-१	४ ०	▲	२ ०
255	श्रद्धा विश्वास और प्रेम- भाग ५, खण्ड-२	४ ०	▲	२ ०
258	तत्त्वचिन्तामणि- भाग ६ खण्ड-१	३ ५	▲	२
257	परमानन्दकी खेती- भाग-६ खण्ड २	३ ५	▲	२
260	समता अमृत और विषमता विष भाग ७ खण्ड १	४	▲	२ ००
259	भक्ति-भक्त भगवान् त०चि०भाग ७ खण्ड २	४ ०	▲	२ ०
256	आत्मोद्धारके सरल उपाय पृष्ठ २१४	४ ०	▲	२ ०
261	भगवान्के रहनेके पाँच स्थान-पृष्ठ ५४	२ ०	▲	१
262	रामायणके कुछ आदर्श पात्र पृष्ठ २१४	२ ५०	▲	१ ००
264	मनुष्य-जीवनकी सफलता भाग १ पृष्ठ १४४	४	▲	२ ०
265	भाग-२ पृष्ठ १४४	३ ५०	▲	२ ०
268	परमशान्तिका मार्ग भाग १ पृष्ठ १७६	४	▲	२ ०
69	भाग-२ पृष्ठ १९२	४	▲	२
599	हमारा आश्चर्य	३ ५	▲	१ ०
272	स्त्रियोके लिये कर्तव्य शिक्षा-पृष्ठ १६०	३ ००	▲	१
273	नल दमयन्ती पृष्ठ ७२	२ ०	▲	१
263	महाभारतके कुछ आदर्श पात्र पृष्ठ १९२	२ ५	▲	१
274	महत्त्वपूर्ण चेतावनी-पृष्ठ ११२	२ ५०	▲	१ ०
276	परमार्थ पत्रावली बँगला प्रथम भाग	२ ५०	▲	१
277	उद्धार कैसे हो? ५१ पत्रोका संग्रह पृष्ठ ११२	२ ५०	▲	१ ००
278	सच्ची सलाह ८० पत्रोंका संग्रह पृष्ठ १७२	३	▲	१ ०
280	साधनोपयोगी पत्र ७२ पत्रोंका संग्रह	४ ००	▲	१ ०
281	शिक्षाप्रद पत्र ७० पत्रोंका संग्रह	४ ००	▲	२ ००
82	पारमार्थिक पत्र ९१ पत्रोंका संग्रह पृष्ठ २१४	४	▲	२ ०
84	अध्यात्म विषयक पत्र ५४ पत्रोंका सग्रह	३ ०	▲	१ ००
283	शिक्षाप्रद ग्यारह कहानियाँ ११ कहानियोंका सग्रह	२ ५	▲	१ ०
480	„ (अँग्रेजी)	२ ५०	▲	२ ००
320	वास्तविक त्याग पृष्ठ ११२	२ ५	▲	१ ००
285	आदर्श भातृप्रेम पृष्ठ ९६	२	▲	१ ०

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
286	बालशिक्षा पृष्ठ ६४	१ ५०	▲	१ ००
87	बालकोंके कर्तव्य-पृष्ठ ८८	२ ००	▲	१ ००
290	आदर्श नारी सुशीला पृष्ठ ४८	१ २५	▲	१ ००
312	(बगला)	१ २५	▲	१ ००
291	आदर्श देवियाँ-पृष्ठ १२८	१ २५	▲	१ ००
293	सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय-	० ७५	▲	१ ००
294	सत महिमा-पृष्ठ ६४	० ७५	▲	१ ००
295	सत्संगकी कुछ सार बातें-(हिन्दी)	० ७५	▲	१ ००
296	(बँगला)	० ५	▲	१ ०
466	(तमिल)	० ७५	▲	१ ०
299	ध्यानावस्थामें प्रभुसे वार्तालाप पृष्ठ ६०	२ ००	▲	१ ००
300	नारीधर्म पृष्ठ ४०	१ ५०	▲	१ ००
301	भारतीय संस्कृति तथा शास्त्रोमें नारीधर्म	१ ०	▲	१ ००
310	सावित्री और सत्यवान-पृष्ठ २८	१ ००	▲	१ ००
607	, (तमिल)	१ ००	▲	१ ००
302	श्रीप्रेमभक्ति प्रकाश पृष्ठ १६	१ ०	▲	१ ००
304	गीता पढ़नेके लाभ-	५०	▲	१
536	सत्यकी शरणसे मुक्ति (तमिल)	१ ५०	▲	१ ००
305	गीताका तात्त्विक विवेचन एवं प्रभाव-	१ २५	▲	१ ००
309	भगवत्प्राप्तिके विविध उपाय पृष्ठ ९६ (कल्याण प्राप्तिकी कई युक्तियाँ)	१	▲	१ ००
311	वैराग्य परलोक और पुनर्जन्म	१ ००	▲	१ ००
317	अवतारका सिद्धान्त पृष्ठ ६४	० ७५	▲	१ ००
306	भगवान् क्या हैं? पृष्ठ ४८	० ५०	▲	१ ००
307	भगवान्की दया पृष्ठ ४८	० ५०	▲	१ ००
308	सामयिक चेतावनी-	० ५०	▲	१ ००
313	सत्यकी शरणसे मुक्ति-	० ५	▲	१ ००
314	व्यापार सुधारकी आवश्यकता मुक्ति-	० ५०	▲	१ ००
315	चेतावनी	० ५०	▲	१ ००
316	ईश्वर साक्षात्कार नाम जप सर्वोपरि साधन है-			
318	ईश्वर दयालु और न्यायकारी है	० ५०	▲	१ ००
270	हेतुरहित भगवान्का सौहार्द पृष्ठ ३२	० ५०	▲	१ ००
271	भगवत्प्रेमकी प्राप्ति कैसे हो? पृष्ठ ३२	० ५०	▲	१ ००
319	हमारा कर्तव्य पृष्ठ ३२	० ५०	▲	१ ००
321	त्यागसे भगवत्प्राप्ति (गजलगीतासहित)	० ५०	▲	१ ०
326	प्रेमका सच्चा स्वरूप	० ५०	▲	१ ००
329	शोक नाशके उपाय	० ५०	▲	१ ००
322	महात्मा किसे कहते हैं ?			
323	ज्ञानयोगके अनुसार विविध साधन			
324	श्रीमद्भगवद्गीताका तात्त्विक विवेचन	० ४०	▲	१ ००
328	चतु श्लोकी भागवत	० ३०	▲	१ ००
327	तीर्थोंमें पालन करनेयोग्य कुछ उपयोगी बातें			

परम श्रद्धेय श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार (भाईजी) के अनमोल प्रकाशन

कोड		मूल्य		डाकखर्च
50	पदरत्नाकर पृष्ठ सं० ९७६	६५ ००	■	५ ००
49	श्रीराधा माधव चिन्तन	३५ ०	■	६ ००
58	अमृत कण	१२ ०	■	३ ०
332	ईश्वरकी सत्ता और महत्ता पृष्ठ ४४८	१२ ०	■	३ ००
333	सुख शान्तिका मार्ग पृष्ठ ३०४	८ ५०	■	२ ०
343	मधुर	९ ०	■	२ ०

कोड	[रजिस्टीमे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च
56	मानव-जीवनका लक्ष्य-पृष्ठ २४०	८	■ २
331	सुखी बननेके उपाय-पृष्ठ २५६	८०	▲ २
334	व्यवहार और परमार्थ-पृष्ठ २९६	८	▲ २०
336	नारीशिक्षा पृष्ठ १५२	४५०	▲ १
514	दु खमे भगवत्कृपा-पृष्ठ-स० २२४	७५	▲ २
386	सत्सग-सुधा पृष्ठ २२४	७०	▲ २०
342	सतवाणी-ढाई हजार अनमोल बोल	८०	▲ २
347	तुलसीदल पृष्ठ २९४	८०	▲ २
337	दाम्पत्य-जीवनका आदर्श-पृष्ठ १४४	५	▲ १
339	सत्सगके बिखरे मोती-	६५	▲ २०
340	श्रीरामचिन्तन पृष्ठ १८४	५५०	▲ २
338	श्रीभगवन्नाम-चिन्तन-पृष्ठ २३२	७५	▲ २०
345	भवरोगकी रामबाण दवा-पृष्ठ १४४	४५	▲ १०
346	सुखी बनो-पृष्ठ १२८	४५	▲ १
349	भगवत्प्राप्ति एव हिन्दू-सस्कृति-	१२०	■ ३
350	साधकोका सहारा पृष्ठ ४४०	१२	■ ३
351	भगवच्चर्चा भाग ५	५०	▲ १
352	पूर्ण समर्पण-	१०	■ २०
341	प्रेमदर्शन पृष्ठ-स० १७६	६०	▲ २०
353	लोक-परलोकका सुधार (कामके पत्र भाग-१)	२०	▲ १०
354	आनन्दका स्वरूप-पृष्ठ २६०	२५	▲ १
355	महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर-पृष्ठ २९२	३	▲ १
356	शान्ति कैसे मिले ?-(लो०प० सुधार भाग-४)	८	▲ २
357	दु ख क्यों होते है ?-	३	▲ १
358	कल्याण कुज- (क० कु० भाग-१)	४५	▲ १
359	भगवान्की पूजाके पुष्प (भाग-२)	५	▲ १
360	भगवान् सदा तुम्हारे साथ है (भाग-३)	५५	▲ २
361	मानव कल्याणके साधन- (भाग ४)	८०	▲ २
362	दिव्य सुखकी सरिता (भाग ५)	३५	▲ १
363	सफलताके शिखरकी सीढियाँ- (भाग ६)	४०	▲ १
364	परमार्थकी मन्दाकिनी- (भाग ७)	३५	▲ १०
387	प्रेम-सत्सग सुधा-माला पृष्ठ २०८	७	▲ १०
365	गोसेवाके चमत्कार (तमिल)	३५	▲ १
366	मानव धर्म पृष्ठ ९५	३५	▲ १०
367	दैनिक कल्याण-सूत्र-पृष्ठ ८२	३	▲ २
368	प्रार्थना-इकोस प्रार्थनाओका सग्रह	२	▲ १
369	गोपीप्रेम-		
370	श्रीभगवन्नाम	१	▲ १
371	राधा माधव रस-सुधा सटीक व्रजभाषामे		
372	गुटका	१	▲ १
373	कल्याणकारी आचरण (जीवनमें पालन करने योग्य)	१५	▲ ▲ १
374	साधन पथ-सचित्र	२५	▲ १
375	वर्तमान शिक्षा		
376	स्त्री धर्म प्रश्नोत्तरी पृष्ठ-स० ४८	२	▲ १
377	मनको वश करनेके कुछ उपाय	८	▲ १
378	आनन्दकी लहरें-	१	▲ १
379	गोवध भारतका कलंक एव गायका माहात्म्य-	१	▲ १
380	ब्रह्मचर्य		
381	दीनदुखियोके प्रति कर्तव्य	८	▲ १

कोड	[रजिस्ट्रीसे मगाने हेतु नियम नं० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च
382	सिनेमा मनोरजन या विनाशका साधन	१	▲ १०
384	विवाहमें दहेज-		
348	नैवेद्य	२५	▲ १०
344	उपनिषदोंके चौदह रत्न-	२०	▲ १०
383	भगवान् श्रीकृष्णकी कृपा-		
	परम श्रद्धेय स्वामी रामसुखदासजीके कल्याणकारी प्रवचन		
400	कल्याण-पथ पृष्ठ १६०	५५	▲ २०
605	जित देखूँ तित तू—	५	▲ २
406	भगवत्प्राप्ति सहज है	४	▲ २
535	सुन्दर समाज का निर्माण	५	▲ २०
401	मानसमें नाम वन्दना-पृष्ठ १६०	५०	▲ १
403	जीवनका कर्तव्य- पृष्ठ १७६	५०	▲ १
436	कल्याणकारी प्रवचन-(हिन्दी)	४	▲ १
404	(गुजराती)	४०	▲ १
405	नित्ययोगकी प्राप्ति-पृष्ठ १२८	४५	▲ १०
407	भगवत्प्राप्तिकी सुगमता-पृष्ठ १३६	४५०	▲ १
408	भगवान्से अपनापन-पृष्ठ ९६	३५	▲ १०
409	वास्तविक सुख-पृष्ठ ११२	४०	▲ १
411	साधन और साध्य पृष्ठ ९	३५	▲ १०
412	तात्त्विक प्रवचन (हिन्दी) पृष्ठ ९६	३५	▲ १
413	(गुजराती) पृष्ठ १२०	४	▲ १
414	तत्त्वज्ञान कैसे हो ?-पृष्ठ १२०	४	▲ १
415	किसानोके लिये शिक्षा-	१२५	▲ १
416	जीवनका सत्य पृष्ठ ९६	३५	▲ १
417	भगवन्नाम पृष्ठ ७२	२५	▲ १
418	साधकोके प्रति पृष्ठ ९६	३५	▲ १
419	सत्सगकी विलक्षणता पृष्ठ ६८	२५	▲ १०
420	मातृशक्तिका घोर अपमान-पृष्ठ ४०	२	▲ १
421	जिन खोजा तिन पाइयाँ पृष्ठ १०४	३५	▲ १
422	कर्मरहस्य (हिन्दी)	३	▲ १
423	(तमिल)	३	▲ १०
424	वासुदेव सर्वम् पृष्ठ ६८	२५	▲ १०
425	अच्छे बनो पृष्ठ ८८	३	▲ १
426	सत्सगका प्रसाद पृष्ठ ८८	३०	▲ १
431	स्वाधीन कैसे बने-पृष्ठ ४८	२	▲ १
427	गृहस्थमे कैसे रहे ? (हिन्दी)	४	▲ १
589	भगवान् और उनकी भक्ति	४	▲ १
603	गृहस्थोके लिये (कल्याणवर्ष ६८३-४ से)	१	▲ १
428	गृहस्थमे कैसे रहे ? (बगला)	३	▲ १
429	(मराठी)	६	▲ १
128	(कन्नड़)	२७५	▲ १
430	(उड़िया)	३५	▲ १०
472	(अग्रेजी)	३	▲ १
553	(तमिल)	६	▲ १
432	एकै साधे सब सधै पृष्ठ ८०	३	▲ १
607	सबका कल्याण कैसे हो ?-(तमिल)	१५	▲ १
433	सहज साधना पृष्ठ ६४	२५	▲ १
617	देशकी वर्तमान दशा तथा उसका परिणाम	२५	▲ १
434	शरणागति (हिन्दी)	२५	▲ १

कोड	[रजिस्ट्रीसे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च	
568	शरणागति (तमिल)	३	▲	१ ०
435	आवश्यक शिक्षा-	१५	▲	१
515	सर्वोच्चपदकी प्राप्तिका साधन	१ २५	▲	१०
606	(तमिल)	१५	▲	१
438	दुर्गतिसे बचो-(हिन्दी)	१०	▲	१
449	(बँगला) (गुरुतत्त्व सहित)	२०	▲	१
439	महापापसे बचो (हिन्दी)	१ ०	▲	१००
451	(बगला)	८	▲	१
549	(उर्दू)	१ २५	▲	१००
591	सतानका कर्तव्य (तमिल)	२००	▲	१ ०
440	सच्चा गुरु कौन ?-	१	▲	१ ०
441	सच्चा आश्रय-	८	▲	१०
442	सतानका कर्तव्य- (हिन्दी)	०८	▲	१०
443	(बँगला)	८	▲	१००
444	नित्य-स्तुति -	८	▲	१००
445	हम ईश्वरको क्यों मानें ?(हिन्दी)	८	▲	१ ०
450	(बगला)	१ २५	▲	१००
554	(नेपाली)	२५	▲	१
510	मनकी खटपट कैसे मिटे (उर्दू)	८०	▲	१
446	आहार शुद्धि-(हिन्दी)	८०	▲	१०
551	आहार-शुद्धि-(तमिल)	१ ०	▲	१०
447	मूर्तिपूजा-(हिन्दी)	०८	▲	१
469	(बँगला)	८	▲	१
569	(तमिल)	१	▲	१
448	नाम-जपकी महिमा-(हिन्दी)	८	▲	१०
550	(तमिल)	१	▲	१
	नित्यपाठ साधन-भजन हेतु			
610	व्रत परिचय-	१६ ०	■	३
52	स्तोत्ररत्नावली-सानुवाद	१०	■	२ ०
117	दुर्गासप्तशती-मूल मोटा टाइप	८	■	२
118	सानुवाद	९	■	२०
489	सजिल्द	१२ ०	■	२०
06	विष्णुसहस्रनाम सटीक	२	■	१०
226	मूलपाठ	७५	■	२
207	रामस्तवराज और रामरक्षास्तोत्र-			
211	आदित्य हृदयस्तोत्रम् हिन्दी अग्रेजी अनुवाद सहित	७५	■	१
224	श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्र-भक्त बिल्वमगलरचित सानुवाद	२	■	१
524	ब्रह्मचर्य और सध्या गायत्री-पृष्ठ स० ४८	१५	■	१
231	रामरक्षास्तोत्रम्-	७५	■	१
235	सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्र-			
202	गंगासहस्रनामस्तोत्र-	१००	■	१ ०
495	दत्तात्रेय वज्रकवच सानुवाद	१५०	■	१
229	नारायणकवच सानुवाद	०७५	■	१०
230	अमोघशिवकवच सानुवाद	१ ०	■	१
563	शिवमहिम्नस्तोत्र	०७५	■	१
54	भजन सग्रह-पाँचों भाग एक साथ	१५ ०	■	४ ०
63	पद-पद्माकर			
140	श्रीरामकृष्णलीला भजनावली ३२८ भजनसग्रह	९५	■	२०

कोड	[रजिस्ट्रीसे मगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च	
142	चेतावनी-पद-सग्रह-(दोनों भाग)	९५०	■	२००
144	भजनामृत-६७ भजनोंका सग्रह	३५	■	१०
153	आरती-सग्रह-१०२ आरतियोंका सग्रह	३०	■	१ ०
208	सीतारामभजन-	१०	■	१
221	हरेरामभजन-दो माला (गुटका)			
222	१४ माला	५०	■	२ ०
225	गजेन्द्रमोक्ष सानुवाद, हिन्दी पद्य भाषानुवाद	७५	■	१
227	हनुमानचालीसा-	७५	■	१
600	(तमिल)	१५०	■	१००
228	शिवचालीसा-	०७५	■	१ ०
203	अपरोक्षानुभूति-	१००	■	१००
204	गीताप्रेस-लाला चित्रमन्दिर दोहावली-	१००	■	१००
205	गीताभवन-दोहा-सग्रह-	१०	■	१ ०
139	नित्यकर्म प्रयोग	६	■	२ ०
592	पूजाप्रकाश-	१८	■	३ ०
210	सन्ध्योपासनविधि-मन्त्रानुवादसहित	१ २५	■	१ ०
220	तर्पण एव बलिवैश्वदेवविधि-मन्त्रानुवादसहित	१००	■	१ ०
232	श्रीरामगीता-			
233	दोहावलीके चालीस दोहे-			
61	सूरविनयपत्रिका-			
509	सूक्ति-सुधाकर-			
567	विनयपत्रिकाके ३५ पद-	१५	■	१
234	बलिवैश्वदेवविधि-	१	■	१०
236	साधकदैनन्दिनी-	१	■	१
0614	सन्ध्या	७५	■	१
	बालकोपयोगी स्त्रियोपयोगी एवं सर्वोपयोगी प्रकाशन			
209	रामायण-मध्यमा-परीक्षा पाठ्यपुस्तक-	७५	■	१०
116	लघुसिद्धान्तकौमुदी-	१	■	२
154	ज्ञानमणिमाला-	२	■	१
196	मननमाला-	१ २५	■	१ ०
461	हिन्दी बालपोथी-(भाग-१)	१ २५	■	१०
212	हिन्दी बालपोथी (भाग-२)	२५	■	१
197	सस्कृतिमाला -भाग-१	२	■	१०
198	भाग-२	१५	■	१
199	भाग ३			
200	भाग-४			
59	जीवनमे नया प्रकाश-(ले० रामचरण महेन्द्र)	८	■	२
60	आशाकी नयी किरणें- ( )	९०	■	२
119	अमृतके घूँट- ( )	७००	■	२
132	स्वर्णपथ- ( )	६५	■	२
55	महकते जीवनफूल ( )	१२	■	
57	मानसिक दक्षता पृष्ठ स० २६४	१	■	३००
62	श्रीकृष्ण बाल माधुरी-	६	■	२
64	प्रेमयोग-	४	■	१
103	मानस रहस्य	८ ०	■	२
104	मानस शका समाधान पृष्ठ स० १६०	६	■	२
501	उद्धव सन्देश-पृष्ठ स० २०८	७५	■	२०
460	रामाश्वमेध-	१०	■	२
191	भगवान् कृष्ण पृष्ठ सं ७२	१५	■	१ ०
601	(तमिल)	४०	■	१

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम नं० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
193	भगवान् राम पृष्ठ ६४	२५	■	१ ००
195	भगवान्पर विश्वास-	१ २५	■	१ ००
120	आनन्दमय जीवन-	६ ५०	■	२ ००
133	विवेक-चूड़ामणि-	६	■	२ ००
130	तत्त्वविचार-			
131	सुखी जीवन-	३ ५०	■	१ ००
190	बाल-चित्रमय कृष्णलीला	५ ०	■	२
192	बालचित्र-रामायण (दोनों भाग)	३ ००	■	१ ०
238	कन्हैया-(धारावाहिक चित्रकथा)	५ ००	▲	२ ००
239	गोपाल- ( )	५. ०	▲	२
240	मोहन- ( )	५.	▲	२
241	श्रीकृष्ण- ( )	५.००	▲	२
122	एक लोटा पानी पृष्ठ स० १६०	६	■	२ ००
134	सती द्रौपदी- पृष्ठ-स० १३६	४५	■	२
137	उपयोगी कहानियाँ- पृष्ठ-स० ९६	४ ०	■	१ ०
157	सती सुकला-	१ ५०	■	१ ००
158	महासती सावित्री-	१ ५	■	१
145	बालकोकी बातें पृष्ठ-सं० ९८	४ ००	■	१ ०
146	बड़ोके जीवनसे शिक्षा- पृष्ठ स० ११२	४ ०	■	१ ००
147	चोखी कहानियाँ- पृष्ठ स० ८०	३	■	१
148	वीर बालक- पृष्ठ-स० ८०	३	■	१ ०
149	गुरु और माता पिताके भक्त बालक- पृष्ठ-स० ८०	३	■	१
150	पिताकी सीख- पृष्ठ स० १२४	४ ५०	■	२
152	सच्चे ईमानदार बालक- पृष्ठ स० ७२	२ ५	■	१
155	दयालु और परोपकारी बालक-बालिकाएँ-	२ ५	■	१
156	वीर बालिकाएँ-	२ ५०	■	१
213	बालकोकी बोलचाल-	१ ५	■	१ ०
214	बालकके गुण—	२	■	१
215	आओ बच्चा तुम्हे बतायें	२	■	१
216	बालककी दिनचर्या	२ ०	■	१
217	बालकोकी सीख-	२	■	१ ०
218	बाल-अमृत वचन-	१ ०	■	१
219	बालकके आचरण	२	■	१
159	आदर्श उपकार- (पढो समझो और करो)	४ ५०	■	२
160	कलेजेके अक्षर- ( )	४५	■	२
161	हृदयकी आदर्श विशालता- ( )	४५	■	२
162	उपकारका बदला- ( )	४५	■	२
163	आदर्श मानव हृदय- ( )	४५	■	२
164	भगवान्के सामने सच्चा सो सच्चा- ( )	४५	■	२
165	मानवताका पुजारी- ( )	४५	■	२
166	परोपकार और सच्चाईका फल- ( )	४५	■	२
510	असीम नीचता और असीम साधुता- ( )	४ ५०	■	२
129	एक महात्माका प्रसाद	५.	■	२
151	सत्सगमाला पृष्ठ स ७२	३ ०	■	१
	कल्याण के पुनर्मुद्रित विशेषाङ्क		■	
40	भक्त-चरिताङ्क (कल्याणवर्ष २६)	६	■	९
41	शक्ति अङ्क- (९)	६ ०	■	८
572	परलोक एवं पुनर्जन्माङ्क-(४३)	६५.	■	८
587	सत्कथा अङ्क- (३०)	६५	■	८.

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाव
42	हनुमान अङ्क (कल्याणवर्ष ४९)	४	■	
43	नारी-अङ्क- (२२)	५० ००	■	
44	सक्षिप्त पद्मपुराण- (१९)	६५.	■	
613	शिवपुराण (बड़ा टाइप)(३९)	९०	■	
279	स्कन्दपुराण- (२५)	८० ०	■	१
539	मार्कण्डेय ब्रह्मपुराणाङ्क- (२१)	६५.	■	
511	हिन्दू सस्कृति अङ्क- (२४)	७५. ०	■	
517	गर्ग सहिता- (४४ एव ४५) [भगवान् श्रीराधाकृष्णकी दिव्य लीलाओंका वर्णन]	४५.	■	
573	बालक-अङ्क- (कल्याणवर्ष २७)	५	■	
46	सक्षिप्त श्रीमद्देवीभागवत (३४)	६० ०	■	
28	श्रीभागवत सुधासागर- (१६)	५५	■	
574	सक्षिप्त योगवासिष्ठाङ्क- (३५)	६५ ००	■	९
604	साधनाङ्क- (१५)	६५	■	९
616	योगाङ्क - (१०)	६ ०	■	९
586	शिवोपासनाङ्क- (६७)	४५.	■	८
	कल्याण एवं कल्याण कल्पतरुके पुराने मासिक अंक			
0525	कल्याण मासिक अंक	२५	■	१
0602	Kalyana Kalpataru (Monthly Issues)	2 00	■	1
	गीताप्रेस गोरखपुरके अन्य भारतीय भाषाओंके प्रकाशन			
	बंगला			
540	साधकसजीवनी-(प्रथम खण्ड १ ६ अध्याय)	२	■	५.
556	गीता दर्पण	२५	■	५.
13	गीता-पदच्छेद	१	■	४
275	कल्याण प्राप्तिकेउपाय (तत्त्व चिन्ता भाग १)	६ ०	▲	२
395	गीतामाधुर्य	५ ०	▲	२
428	गृहस्थमें कैसे रहे ? -	३	▲	१
276	परमार्थ पत्रावली- भाग १	२५	▲	१
449	दुर्गतिसे बचो गुरुतत्त्व	२	▲	१
450	हम ईश्वरको क्यो मानें-	१ २५	▲	१
312	आदर्श नारी सुशीला	१ २५	▲	१ ०
330	नारद भक्ति सूत्र-	१ २५	▲	१
451	महापापसे बचो	८	▲	१
469	मूर्तिपूजा-	८	▲	१
296	सत्सगकी सार बातें	५	▲	१
443	सतानका कर्तव्य	८०	▲	१ ०
	मराठी			
7	साधकसजीवनी टीका	६	■	१
504	गीता दर्पण	२	■	५.
14	गीता पदच्छेद	१५	■	४
15	गीता माहात्म्यसहित-	१५	■	४ ०
391	गीतामाधुर्य	६	▲	२ ०
429	गृहस्थमें कैसे रहें ?-	५	▲	२
	गुजराती			
467	साधकसंजीवनी-	६	■	१ ०
468	गीता दर्पण-	२५	■	५ ०
12	गीता पदच्छेद-	१५	■	४
392	गीतामाधुर्य-	५	▲	२
404	कल्याणकारी प्रवचन-	४	▲	२

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम नं० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
413	तात्त्विक प्रवचन	४ ०	▲	२
	तमिल			
389	गीतामाधुर्य	८ ०	▲	२०
553	गृहस्थमें कैसे रहें ?	६ ०	▲	२
536	गीता पढ़नेके लाभ			
	सत्यकी शरणसे मुक्ति	१५०	▲	१००
591	महापापसे बचो संतानका कर्तव्य	२०	▲	१ ०
466	सत्सगकी सार बातें	०७५	▲	१०
365	गासवाके-चमत्कार	३५०	▲	१००
423	कर्मरहस्य	३	▲	१
568	शरणागति	३००	▲	१००
569	मूर्तिपूजा	१ ०	▲	१ ०
551	आहारशुद्धि	१	▲	१ ०
550	नाम जपकी महिमा	१००	▲	१०
499	नारद भक्ति सूत्र			
600	हनुमानचालीसा	१५	■	१००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम नं० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
601	भगवान् श्रीकृष्ण	४००	■	२००
606	सर्वोच्चपदकी प्राप्तिके साधन	१५०	▲	१००
609	सावित्री और सत्यवान	१००	▲	१००
607	सबका कल्याण कैसे हो ?	१५	▲	१००
608	भक्तराज हनुमान्	४००	■	१ ००
	कन्नड़			
390	गीतामाधुर्य	४५०	▲	२
128	गृहस्थमें कैसे रहें ?	२७५	▲	२००
	उड़िया			
430	गृहस्थमें कैसे रहें ?	३५०	▲	१००
	नेपाली			
394	गीतामाधुर्य	५.०	▲	२
	उर्दू			
549	महापापसे बचो	१२५	▲	१००
510	मनकी खटपट कैसे मिटे	८०	▲	१००

Our English Publications

Code	Title	Price		Postage
457	Shrimad Bhagavadgita-Tattva-Vivechani (*By Jayadayal Goyandka*) Detailed Commentary *Pages 736*	25 00	■	8 00
458	Shrimad Bhagavadgita-Sadhak Sanjivani (*By Swami Ramsukhdas*) (English Commentary) Pages 896	35 00	■	8 00
0459	Pocket size Vol I	20 00	■	2.00
0490	„ Vol II	20 00	■	3 00
0493	Shrimad Bhagavadgita- The Gita-A Mirror (Pocket size) Pages 700	20 00	■	3 00
0455	Bhagavadgita (With Sanskrit Text and English Translation) Pocket size	2.50	■	1 00
0470	Bhagavadgita-Roman Gita (With Sanskrit *Text and English Translation)*	*6 00*	■	*2.00*
0487	Gita Madhurya-English (*By Swami Ramsukhdas)* Pages 155	6 00	▲	1 00
0452	Shrimad Valmiki Ramayana (With Sanskrit Text and English Translation) Part I	60 00	■	8.00
0453	Part II	60 00	■	8 00
0454	Part III	65 00	■	8.50
0456	Shri Ramacharitamanas (With Hindi Text and English Translation)	*60 00*	■	*8 50*
	by Jayadayal Goyandka			
0477	Gems of Turth [Vol I] Pages 204	4 00	▲	1 00
0478	[Vol II]	3.50	▲	1 00
479	Sure Steps to God-Realization	5 00	▲	2.00
481	Welts of Clean & *The Divine Bliss*	1.50	▲	1 00
482	What is Dharma? What is God? Pages 64	0 75	▲	1 00
480	Instructive Eleven Stories Pages 104	2.50	▲	1 00
520	*Secret of Jnana Yoga Pages 272*	*5 00*	▲	*1 00*
521	„ Prem Yoga 184	4 00	▲	1.00
522	Karma Yoga	5 00	▲	2.00
0523	„ Bhakti Yoga „	5 50	▲	2.00
	by Hanuman Prasad Poddar			
484	Look Beyond the Veil Pages 208	7 00	▲	1 00
496	How to Attain Eternal Happiness ?	6 00	▲	2.00
483	Turn to God Pages 240			
486	The Divine Message			
485	Path to Divinity Pages 166	6 00	▲	1 00
	by Swami Ramsukhdas			
498	*In Search of Supreme Abode Pages 146*	4 00	▲	*1 00*
471	Benedictory Discoures Pages 192	3 50	▲	1 00
473	Art of Living Pages 124	3 00	▲	1 00
472	How to Lead A *Household Life Pages 72*	3 00	▲	*1 00*
570	Let us Know the Truth Pages 92			
0620	The Divine Name and its Practice	2.50	▲	1 00
474	Be Good			
497	Truthfulness of Life			
476	How to be Self Reliant	1 00	▲	1 00
552	Way to Attain the Supreme Bless	0 60	▲	1 00
494	The Immanence of God *(By Madanmohan Malaviya)*	0 30	■	1 00
0562	Ancient Idealism for Modernday Living	2 00	▲	1 00
0619	Ease in God-Realization	4 00	▲	1 00

१०० चित्रोंके कार्टूनमें उपलब्ध

	मूल्य	(आकार सेमीमें)
जयश्रीराम (भगवान् रामकी सम्पूर्ण लीलाओंका चित्रण	१० ००	१० X ४८
हनुमानजी (भक्तराज हनुमान)	५ ००	५८ X ४५
भगवान् विष्णु	५ ००	५८ X ४५
लड्डू गोपाल (भगवान् श्रीकृष्णका बालरूप) सामान्य संस्करण	५ ००	५८ X ४५
कल्याण चित्रावली (कल्याणमें पूर्व प्रकाशित १५ चित्रोंका सग्रह)	८ ००	५८ X ४५

ॐ श्रीपरमात्मने नम

[परिशिष्टाङ्क—१]

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

विषय-सूची

(सस्करण २ २५ ०००)

कल्याण, सौर फाल्गुन, वि० स० २०५१, श्रीकृष्ण-स० ५२२०, फरवरी १९९५ ई०

इस अङ्कका मूल्य ३ रु०
विदेशमें—US$0 25
वार्षिक शुल्क (भारतमे)
डाक-व्ययसहित ६५ रु०
(सजिल्द ७२ रु०)
विदेशमें—US$10

सस्थापक—ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका
आदिसम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार
सम्पादक—राधेश्याम खेमका
केशाराम अग्रवालद्वारा गोविन्दभवन-कार्यालयके लिये
गीताप्रेस, गोरखपुरसे मुद्रित तथा प्रकाशित

पद्रहवर्षीय शुल्क
डाक व्ययसहित
(भारतमें) ५०० रु०
(सजिल्द ६०० रु०)

'गाव. पवित्र माङ्गल्यम्'

(श्रीरामचन्द्रजी तिवारी, एम्०ए० (सस्कृत) धर्मविशारद)

हमारा दश भारत सदासे धर्म-प्रधान रहा है। इसक कल्याणके लिये गो-रक्षा अनिवार्य धर्म्य कर्तव्य हे। ससारके जो उपकार गोमाताने किये हैं, उनके महत्त्वको जानते हुए भी जो लोग गौकी उपेक्षा करते हैं, गो-रक्षाके प्रश्नपर ध्यान नहीं देते, वे कर्तव्य-रहित ओर अन्यायी हैं। जो लोग गोवध करके स्वधर्म-निर्वाहका स्वाँग रचते हैं, उनके अज्ञानका तो ठिकाना ही नहीं। गो-सदृश उपकारी प्राणीका वध करना कभी भी न्यायसगत अथवा धर्म-सगत नहीं कहा जा सकता।

गो-माहात्म्यका वर्णन हमारे धर्मशास्त्रोम प्रचुर मात्रामे विद्यमान है। गाये पवित्र, मङ्गलकारक हाती हैं, इनम समस्त लोक प्रतिष्ठित हैं। गाय यज्ञका विस्तार करती हैं। वे समस्त पापाका विनाश करती हं। 'विष्णुस्मृति'का वचन है—

गाव पवित्र माङ्गल्य गोपु लोका प्रतिष्ठिता ।
गावो वितन्वते यज्ञ गाव सर्वाघसूदना ॥

गोमूत्र, गोमय, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि और गोरोचन—य गायके छ पदार्थ सर्वदा माङ्गलिक होते हैं—

गोमूत्र गोमय सर्पि क्षीर दधि च रोचना।
षडङ्गमेतत् परम मङ्गल्य सर्वदा गवाम्॥

गायोको नियमित ग्रास मात्र देनेसे भी मनुष्य स्वर्गलोकम सम्मानित होता है—

गवा ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते॥

(विष्णुस्मृति)

यमस्मृति (७१-७२) म भी गायको रग-भेदपूर्वक गो-पदार्थ-भेदसे समस्त पापोका नाश करनेवाली बताया गया हे जैसे—श्वेत रगकी गायका मूत्र, श्याम रगकी गायका गोबर, ताम्र-वर्णकी गायका दूध, सफेद गायका दही और कपिला गायका घृत ये सभी ग्राह्य हैं तथा समस्त पापोका नाश करनेवाले हे—

शुक्लाया मूत्र गृह्णीयात् कृष्णाया गोशकृत् तथा।
ताम्रायाश्च पयो ग्राह्य श्वेताया दधि चोच्यते॥
कपिलाया घृत ग्राह्य महापातकनाशनम्।

स्मृतियाम गो-दानका महत्त्व विस्तारसे बतलाया गया है, जैसे—बक-(बगुला)की हत्या करनेसे नाक लबी होती है, अत उसकी शुद्धिके लिये श्वेत रगकी गायके दानका विधान है। काकघाती पुरुष कर्णहीन होता है, अत उसे श्यामा गौका दान करना चाहिये—

वकघाती दीर्घनसो दद्याद् गा धवलप्रभाम्।
काकघाती कर्णहीनो दद्याद् गामसितप्रभाम्॥

(शातातपस्मृति ८७)

धूर्तता करनेवाला मृगीका रोगी होता है। उसे ब्रह्मकूर्चमयी धेनु और दक्षिणासहित गो-दान करना चाहिये—

धूर्तोऽपस्माररोगी स्यात् स तत्पापविशुद्धये।
ब्रह्मकूर्चमयीं धेनु दद्याद् गा च सदक्षिणाम्॥

(शातातपस्मृति ९९)

परायी निन्दा करनेवाला सिरका गजा होता है, उसे स्वर्णसहित धेनुका दान करना चाहिये। दूसरेकी हँसी उडानेवाला काना होता है, पाप-प्रायश्चित्तके लिये उसे मोतियासे युक्त गौका दान करना चाहिये—

खल्वाट परनिन्दावान् धेनु दद्यात् सकाञ्चनाम्।
परोपहासकृत् काण स गा दद्यात् समौक्तिकाम्॥

(शातातपस्मृति १०९)

सम्यक् आत्मशुद्धिके लिये गोमूत्र, गोमय, क्षीर, दधि तथा घृतका पाँच दिनतक आहार करनेका विधान वसिष्ठस्मृतिमे किया गया हे—

गोमूत्र गोमय चैव क्षीर दधि घृत तथा।
पञ्चरात्र तदाहार पञ्चगव्येन शुध्यति॥

(वसिष्ठस्मृति ३७०)

स्मृतिकाराका कथन है कि गाय यदि बछडेको पिला रही हो तो न तो उसे रोके आर न यह बात उसके मालिकको बताय—

'नाचक्षीत धयन्तीं गाम्' (याज्ञ० १। १४०)
'गा धयन्तीं परस्मै नाचक्षीत न चैना वारयेत्।'

(गौतमस्मृति)

मार्गम गो, ब्राह्मण, राजा और अन्धाको निकल जानेके लिय रास्ता स्वय छोड देना चाहिये—

पन्था दयो ब्राह्मणाय गवे राज्ञे ह्यचक्षुषे।

(बौधायनस्मृति स्नातकव्रतानि ३०)

—इस प्रकार हम दखते हैं कि धर्मशास्त्रामे गायका अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण स्थान हे। इसम तनिक भी सदह नहीं कि गाय हमार समस्त पापाको नष्ट करनेवाली है। जिस गायसे दूध ग्रहण करक हम शक्तिशाली बनते हें, जिस गायके बछडे हमारे क्षेत्राको जोतकर प्रचुर मात्रामे हमे जीवित रहनेके लिये खाद्य-सामग्री प्रदान करते ह, उसी, मर्त्यलाकका ही नहीं, अपितु स्वर्गलोकका भी ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली गोमाताका वध करनेवाले जो लोग स्वय धार्मिक बननेका स्वॉग रचते है वे निश्चितरूपसे निन्दनीय हें। धर्मके वास्तविक स्वरूपको उन्हाने जाना ही नहीं है। कोई भी धर्म किसी भी प्राणीका प्राण लेनेकी अनुमति नहीं देता है। अपार खेदका विषय हे कि गा-सरक्षण एव गो-सेवाभाव दिन-प्रति-दिन लुप्त होते जा रहे है। गौका अपमान होनेके कारण ही हमारा देश, जहाँ घी-दूधकी नदियॉ बहती थीं, आज दूधक लिये तडप रहा हे। कुछ दिनाम देव-पितृकार्यार्थ भी दूध मिलना कठिन हो सकता है। अत गोपालन-रक्षण अत्यावश्यक है। कहा गया है कि जिस घरमे गाय नहीं हे, जहाँ वेद-ध्वनि नहीं होती और जो घर बालकोसे भरा-पूरा न हो वह घर घर नहीं है, अपितु श्मशान है—

यत्र वेदध्वनिध्वान्त न च गोभिरलकृतम्।
यत्र बालै परिवृत श्मशानमिव तद् गृहम्॥

(अत्रिसहिता ३१०)

हम अपने घरको श्मशान न बनाय। गो-पालन करे, घी, दूधकी नदियाँ प्रवाहित करे, जिससे हमारा परिवार, हमारा गाँव, हमारा प्रदश, हमारा देश भारतवर्ष पुन पूर्वप्रतिष्ठाको प्राप्त कर सके। गासरक्षण, गोपालन और गोसवर्धन सर्वथा सर्वत्र होना चाहिये। जब ऐसा होगा तभी हमारा देश कल्याण प्राप्त कर सकेगा और राष्ट्रकी प्रतिष्ठा ऊँची हो सकेगी।

वेदमे गौकी पूज्यता

(प० श्रीलालबिहारीजी मिश्र)

वेदमे गौकी बहुत महिमा गायी गयी है। गौकी उत्पत्ति भी इसकी महिमाकी कम अभिव्यञ्जक नहीं ह। तैत्तिरीय ब्राह्मणमे एक आख्यायिका आती हे—'ब्रह्माजीने प्रजाकी सृष्टिम अपनी सारी शक्ति लगा दी। अब वे अपनेको अशक्त पा रहे थे। प्रजाआके भरण-पोषण आदिकी समस्या उनक सामने खडी थी। इसके लिये उन्हाने फिर तपस्या प्रारम्भ कर दी। इस बार ब्रह्माजीकी इस तपश्चर्यासे इतनी शक्ति उमडी कि उसका धारण कर पाना उनक लिय कठिन हो गया। अन्तम वह असीम शक्ति उनक देहस बाहर निकलकर गाक रूपम परिणत हा गयी। वह इतना मनारम थी कि उस लेनके लिये सभी दवता लालायित हो गय।' (तैत्तिरीय ब्राह्मण १। १। १०)

—इस आख्यायिकास व्यक्त होता हे कि प्रजाआके भरण-पाषणक लिय गाका आविभाव हुआ। इसके दूध दही और घासे दवता पितर और मनुष्याका आहार मिलने लगा ओर इसके गोमय तथा गोमूत्रसे अन्नकी उत्पादन-क्षमता बढ गयी। इस तरह गौसे विश्वभरका कल्याण हो गया। इसीलिये वेदने गौको विश्वरूप ओर सर्वरूप भी कहा है—'एतद्वै विश्वरूप सर्वरूप गोरूपम्।'

(अथर्ववेद ९। ७। २५)

यजुर्वेदन एक मन्त्र (८। ४३) मे गौके बहुतसे गुणाका अभिव्यञ्जन कर दिया है—

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।
एता त अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृत ब्रूतात्॥

—इस श्रुतिने गौके लिये इडा ओर विश्रुति 'विविधं श्रूयते स्तूयते इति विश्रुति।' (यजु० ८। ४३ महीधर-भाष्य)—इन दो पदाका प्रयोग कर यह सूचित किया है कि गौ स्तुत्य ह, उसकी स्तुति की जानी चाहिये। 'काम्या' पदसे सूचित किया कि गो सबकी कामनाआको पूर्ण करनेवाली है। एक अन्य श्रुतिने स्पष्ट शब्दामे कह दिया है

कि 'मनुष्याणा ह्येतासु कामा प्रविष्टा ' (महीधर-भाष्य)। अर्थात् मनुष्योकी सारी कामनाएँ गौमे प्रविष्ट है। श्रुतिने 'चन्द्रा' शब्दसे सूचित किया है कि गौ सबको आह्लाद प्रदान करनेवाली होती है। 'ज्योता' पदसे व्यक्त होता है कि गौ नरक आदि अन्धकारसे निकालकर प्रकाशमे ला देती है। इस तरह वेदकी दृष्टिमे गो देवता है, पूज्य है—

(क) 'देवीं ..गाम्' (ऋग्वेद ८। १०१। १६) तथा (ख) 'उदस्थात् देवी अदिति (गौ)' (तैत्तिरीय ब्राह्मण १।४३)।

वेदने गौके सम्बन्धमे विविध दृष्टिसे विविध महत्त्व बताये है। यहाँ केवल गौकी पूज्यतापर ही सक्षिप्त विचार प्रस्तुत किया जा रहा है—

मनन

उपर्युक्त श्रुतिके वचनासे ज्ञात हो जाता है कि 'गो' कोई साधारण वस्तु नहीं है, अपितु देवता है पूज्य है। श्रुति-वाक्याके श्रवणके बाद मनन अपेक्षित हो जाता है—

श्रोतव्य श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यश्चोपपत्तिभि ।

प्रश्न उठता है कि गो तो प्रत्यक्ष ही पशु है। मनुष्य पशुके स्तरसे ऊपर उठा हुआ प्राणी है, फिर मनुष्य पशुकी पूजा क्यो करता है? आखिर गौमे मनुष्यसे क्या अच्छाई है, जिससे मनुष्य इसके सामने झुके? सच तो यह है कि गोमे मनुष्यकी अपेक्षा ज्ञानकी कमी, धर्मका अभाव और खान-पान भी विचित्र ही है, मनुष्यका सात बरसका बच्चा भी किसी विदेशीको किसी स्थानका ठीक पता बता सकता है, जबकि बूढी भी गो किसी स्थानका कोई पता नहीं बता पाती। मनुष्य चाहे जितना भी भ्रष्ट हो गया हो, कम-से-कम वह माता और बहनका ख्याल अवश्य रखता है, किंतु गोजातिमे न माताका ख्याल रखा जाता है, न बहनका। अत मनुष्य गाके सामने क्यो सिर झुकाये, क्या इसकी स्तुति करे और क्या इसे माने?

यह प्रश्न उस व्यक्तिके लिये हाआ बन जाता है जो वेदकी अपौरुषेयता और अज्ञातार्थ-ज्ञापकतासे अपरिचित है। प्रत्यक्ष और अनुमानसे जो तथ्य हम नहीं जान पाते उस तथ्यका बतलाना ही वेदका वेदत्व है। वेद पूज्यवर्गमे दैवीशक्तिकी धाराका सचार मानता है। वह पूज्यवर्ग उस दैवी धारासे भले ही स्वय प्रकाशित न हो किंतु पूजनसे सम्बद्ध अपने पूजकको प्रकाशित कर ही देता है। जैसे बिजलीके तारमे विद्युत्की धाराएँ प्रवाहित होती रहती है, इन धाराओसे वह भले ही स्वय प्रकाशित न होता हो लेकिन अपनेसे सम्बद्ध बल्वको प्रकाशित कर ही देता है। इस तरह वेदका सिद्धान्त है कि पूज्य अपने कर्तव्यसे मरकर भले नरकमे जाय, किंतु अपने पूजकका कल्याण कर ही देता है।

इस लेखके छोटेसे कलेवरमे वेदकी अपौरुषेयता और इसकी अज्ञातार्थ-ज्ञापकता—इन दोना तथ्योका साङ्गोपाङ्ग विवेचन सम्भव नहीं है, किंतु प्रत्येक ईश्वरवादीको इतना तो मान ही लेना पडता है कि ईश्वरका ज्ञान नित्य हुआ करता है और वह ज्ञान शब्दको छोडकर नहीं रहा करता। अर्थात् प्रत्येक ज्ञानमे शब्दानुवेद अवश्य रहता है— 'अनुविद्धमिव ज्ञान सर्वं शब्देन भासते' (वाक्यपदीय)। इसी ईश्वरीय ज्ञानको प्रकट करनेवाले शब्दराशिको वेद कहते हैं। जैसे ईश्वर नित्य है, उसी तरह उसके नित्य-ज्ञानके प्रतिपादक शब्दराशि-रूप वेद भी नित्य है। उस वेदमे कोई पुरुष दखल नही दे सकता, इसलिये वेद अपौरुषेय है। इस वेदने गौको पूज्य माना है इसलिये यह सिद्धान्त मान्य है और वेदने यह भी बताया है कि गोकी पूजा करनेसे ऐहिक और आमुष्मिक अभ्युदय प्राप्त होता है। तैत्तिरीय ब्राह्मणमे एक आख्यायिका आती है—'एक बार ब्रह्माजीने अचेतन जगत्की सृष्टि कर दी थी। इसके बाद वे चाहते थे कि जीवात्मासे युक्त चेतन-वस्तु उत्पन्न हो इसी कामनासे उन्होने होम किया। उस होमसे अग्नि, वायु और आदित्य-रूप तीन चेतन-देवता उत्पन्न हुए। इन तीनो देवताओने भी चेतन-जगत्के विस्तारके लिये होम किया। उन तीनोके होम करनेके बाद एक गो उत्पन्न हुई—'तथा हुतादजायत गौरेव। ' (तैत्तिरीय ब्राह्मण २। १। ६)। उसे देखकर तीनो देवताओने उसे अपनाना चाहा। प्रत्येकका कहना था कि मेरे होमसे यह गो उत्पन्न हुई है इसलिये यह मेरी है। निर्णयके लिये तीनो देवता ब्रह्माजीके पास गये। ब्रह्माजीने उनसे पूछा कि आप तीनोमेसे किसने किस देवताको आहुति दी? अग्निदेवताने बताया कि मैने प्राण देवताके लिये आहुति दी। वायुदेवताने शरीराभिमानी देवताको

आर आदित्यन नत्राभिमानी देवताको आहुति देनेकी बात कही। तब प्रजापतिने निर्णय लिया कि शरीर ओर चक्षु—ये दाना प्राणके अधीन ह, इनमे प्राण ही मुख्य है, इसलिये प्राणदेवताके हामसे ही गो उत्पन्न हुई आर वह गो अग्निको समर्पित कर दी गयी। तभीसे गोका नाम 'अग्निहोत्र' पड गया। 'गौर्वा अग्निहोत्रम्।' (तैत्ति० ब्राह्मण ३। १। ६)

इसके बाद इसी श्रुतिने बताया हैं कि इस अग्निहोत्री धेनुकी जा पूजा करता है, वह इस लाकम अभ्युदय ता प्राप्त करता ही है, मरनेके बाद उसे स्वर्ग मिलता है—'तृप्यति प्रजया पशुभि । प्र सुवर्ग लाक जानाति। पश्यति पुत्रम्। पश्यति पोत्रम्।' (३। १। ८)'देहपातादूर्ध्वं स्वर्ग प्रजानाति। तत पूर्व दीर्घायुष्यण युक्त पुत्र पोत्र च पश्यति।' (सायण भाष्य)

वदके इस प्रमाणस स्पष्ट हा जाता ह कि पूज्यवर्गम जो देवीशक्तिकी धारा बहती रहती हे, उससे पूजक ता प्रकाशित हो ही जाता है कितु अनास्थारूपी तिमिरराग लग जानेसे अपारुपेय वदक इस पुनीत प्रकाशको मनुष्य देख नहीं पाता। प्रत्यक्ष घटनासे इस रोगकी चिकित्सा हो जाती ह और फिर आँख स्वस्थ हाकर उस पुनीत प्रकाशको देख पाती ह। इसलिय इस सम्बन्धम एक सत्य घटना प्रस्तुत की जा रही है—

कुआँ बनानेवाला एक मजदूर अपनी पत्नीक साथ आम रास्तपर एक कुआँ खोद रहा था। उसकी पत्नी मिट्टी फकनका काम करती थी ओर मजदूर कुआँ खादनेका। शामको घर लाटनेके पहल छोटी नदीस नित्यक्रिया सम्पन्न कर घर लोट जात थ। नदी छाटी थी। उस दिन उसम अचानक पानी बढ गया। अँधेरा बढता जा रहा था। उसे सुनायी पडा कि काई प्राणी जोर-जोरसे साँस खींच रहा है। नजदीक जानेपर एक गोको उसने कीचडम फँसी हुई पाया। वह जल पीने आयी होगी, उसका पाँव दलदलम फँस गया और इसी बीचम पानीका बढाव हो गया। पानी उसक थुँथनेतक पहुँच चुका था। थाडा पानी और बढता तो वह डूब जाती। गायकी यह दुर्दशा उससे देखी नही गयी। गाँवसे लोगोको बुलाकर उसने उसका उद्धार किया। इसके कुछ दिनाके बाद जब वह कुआँ खोद रहा था, कुआँ भहरा गया ओर वह करोडा मन मिट्टीसे दब गया। कितु उसन देखा कि उसके सिरपर वही गाय खडी है, जिसे उसने डूबनसे बचाया था। मिट्टीका बहुत बडा बोझ गायके पीठपर था ओर उसके नीचे वह अपनेको सुरक्षित अनुभव कर रहा था। गायके इशारेसे उसने उसका दूध पीया ओर उसीके इशारेसे वह एक खोहम घुसता हुआ दूसरे कुएँम निकल गया। वहाँ वह आवाज देने लगा कि हमको कोई निकालो। लागाने उसे निकाल दिया।

इस घटनासे स्पष्ट हा जाता है कि जिस गौको उस मजदूरने बचाया था, वह अपने मालिकके यहाँ भूसा खा रही थी, दूध दे रही थी, उसको इस तथ्यका ज्ञान भी न था कि में किसीको बचा रही हूँ, कितु वदसे प्रतिपादित गोकी आधिदेविक शक्तिने गोरूपमे परिणत होकर मजदूरको बचा लिया। तैत्तिरीय श्रुतिके उदाहरणम यह एक प्रत्यक्ष घटना है जिसम बतलाया गया है कि गोकी आधिदैविक शक्ति उसे गालोकतक पहुँचा दती है।

गाय रक्षा करती है

गाय मनुष्यका सर्वश्रेष्ठ हितैषी ह। तूफान, आला, अनावृष्टि या बाढ आव और हमारी फसलाको नष्ट करक हमारी आशाओपर पानी फर द, कितु फिर भी जा बच रहगा उसीस गाय हमार लिये पोष्टिक ओर जीवन धारण करनवाला आहार तैयार कर दगी। उन हजारा बच्चाक लिय जा गाय जीवन हा है, जा दूधरहित वर्तमान नारात्वकी रतीपर पड़ हुए हैं।

हम उसकी सिधाई उसक सोन्दय तथा उसकी उपयागिताक लिय उस प्यार करत ह। उसकी कृतज्ञताम कभी कमी नहा आयी। हमार ऊपर दुभाग्यका हाथ ता हाना हा चाहिय, क्याकि हमलाग सालास अपन कर्तव्यस गिर गय हैं। हम जानत हैं कि गाय हमार एक मित्रक रूपम ह जिसस कभा काई अपराध नहा हुआ, जा हमारा पाई-पाई चुका दती है और घरका—दशाकी रक्षा करती है।—ई० न० नट

श्रीमद्भागवतमें गोसेवाका आदर्श

(श्रीचतुर्भुजजी तोषनीवाल)

यद्यपि हिंदू वेदाकी भाँति गायको भी धर्मका अन्यतम प्रतीक मानत हैं, किंतु कालके फेरसे गायके प्रति सच्ची श्रद्धामे कमी आ जानेसे आज गोसेवा एक आडम्बर मात्र बनकर रह गयी है, उसमे आन्तरिक श्रद्धाका अभाव-सा होता दीखता है। अत गोसेवाके प्राचीन आदर्शका पुन प्रतिष्ठित करनेके लिये हम योगेश्वरेश्वर भगवान् श्रीकृष्णद्वारा प्रस्तुत आदर्शका अनुशीलन करके उसे व्यवहारमे लाना होगा, तभी हम सच्चे गोभक्त, सच्चे गोसेवक कहलाय जा सकगे। इसी महदुद्देश्यसे यहाँ श्रीमद्भागवतमें वर्णित गोमहिमा एव गोसेवाके कुछ प्रसगोको सक्षेपम प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्रीमद्भागवतम महाप्रतापी दैत्यराज हिरण्यकशिपुके राज्यका वर्णन करते हुए कहा गया है कि उसके राज्यम पृथ्वी बिना जाते-बोये यथेच्छ अन्नादि देती थी—'**अकृष्टपच्या तस्यासीत् सप्तद्वीपवती मही**' (७। ४। १६)। इसी प्रकार खान, आकाश, समुद्र, ऋतुएँ—सभी उसके मनोऽनुकूल पदार्थ उपलब्ध कराते थे, किंतु अजितेन्द्रिय होनेके कारण उसे फिर भी तृप्ति नहीं मिलती थी एव उस मदान्मत्तके उच्छृङ्खल व्यवहारसे देवता ऋषि, मनुष्य आदि सभी सत्रस्त रहते थे। देवताओके द्वारा श्रीभगवान्को अपनी व्यथा निवेदन किये जानेपर यह भविष्यवाणी हुई—

यदा देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु।
धर्मे मयि च विद्वेष स वा आशु विनश्यति॥

(७। ४। २७)

'कोई भी प्राणी जब देवता वेद गाय ब्राह्मण, साधु, धर्म एव मुझसे द्वेष करने लगता है तब शीघ्र ही उसका विनाश हो जाता है।' यह सार्वकालिक दैवी विधान है। पृथ्वी और गाय अभिन्न हैं। जब-जब पृथ्वी दुष्टोके भारसे पीडित हुई है तब-तब वह गौका रूप धारण करके ही श्रीभगवान्को अपनी दु खगाथा सुनाती है।

राजा परीक्षित्ने राज्य-निरीक्षण करते समय एक दिन एक पैरवाला वृष तथा एक अत्यन्त दु खित गायको देखा जिसकी आँखोसे आँसुओकी झडी लग रही थी मानो उसका बच्चा मर गया हो। इस दृश्यसे व्यथित होकर राजाने अपनी विचक्षण बुद्धिसे इसके कारणका पता लगा लिया और उन्हे आश्वासन देते हुए राजाका कर्तव्य-निरूपण करनेवाले सुन्दर वचन कहे—

मा सौरभेयानुशुचो व्येतु ते वृषलाद् भयम्।
मा रोदीरम्ब भद्र त खलाना मयि शास्तरि॥
यस्य राष्ट्रे प्रजा सर्वास्त्रस्यन्ते साध्व्यसाधुभि ।
तस्य मत्तस्य नश्यन्ति कीर्तिरायुर्भगो गति ॥

(१। १७। ९-१०)

'हे धेनुपुत्र! अब आप शोक न करें। इस शूद्रसे निर्भय हो जायँ। गोमाता! मैं दुष्टोको दण्ड देनेवाला हूँ अब आप रोये नहीं। आपका कल्याण हो। देवि! जिस राजाके राज्यम दुष्टोके उपद्रवसे सारी प्रजा त्रस्त रहती है उस मतवाले राजाकी कीर्ति आयु, ऐश्वर्य और परलोक—सभी नष्ट हो जाते हैं।' यहाँ तक भी कहा गया है कि गो और ब्राह्मणके हितके लिये एव किसीको मृत्युसे बचानेके लिये असत्यभाषण भी निन्दनीय नहीं है—

गोब्राह्मणार्थे हिंसाया नानृत स्याज्जुगुप्सितम्॥

(८। १९। ४३)

किंतु भगवान् व्यासको इतनेसे ही कहाँ सतोष था। गाय तो श्रीभगवान्का स्वरूप ही है एव श्रीभगवान्ने गायोको विशेषरूपसे अपना ही माना है—'**मदीया**'। श्रीभगवान् सनकादि ऋषियोसे कह रहे हैं—

ये मे तनूर्द्विजवरान् दुहतीर्मदीया
भूतान्यलब्धशरणानि च भेदबुद्ध्या।
द्रक्ष्यन्त्यघक्षतदृशो ह्यहिमन्यवस्तान्
गृध्रा रुषा मम कुषन्त्यधिदण्डनेतु ॥

(३। १६। १०)

तात्पर्य यह है कि 'ब्राह्मण मेरी गाय एव आश्रयहीन अनाथ प्राणी—ये तीनो मेरे ही शरीर हैं। पापोके कारण विवेकहीन हुए जो लोग उन्हे भेददृष्टिसे देखते हैं उन्हे मेरे द्वारा नियुक्त यमराजके गृध्ररूपी दूत—जो सर्पोके समान क्रोधी हैं—अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर चोचोसे नोचते हैं। सब प्राणियोम समदृष्टि नहीं रखनेवालोके प्रति इतना कठोर दण्डविधान अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। मनुपुत्र पृषध्र (जो गुरुजीद्वारा गायोकी रक्षामे नियुक्त था) द्वारा घनघोर अँधेरी रातम गायको बाघसे बचानेके प्रयत्नम भूलसे गाय मारी गयी। इस अनजाने अपराधके लिये भी उसे गुरुशाप भोगना पडा और कठोर तपस्याद्वारा ही उसे ब्रह्मकी प्राप्ति हुई। गायके प्रति किये गये किसी भी अपराधके लिये क्षमा नामकी कोई वस्तु प्राचीन कालम नहीं थी।

ः प्रतिपादित सिद्धान्तको ध्यानमे रखकर अब
। वर्णित भगवान् श्रीकृष्णकी व्रजलीलाके कुछ
ान दे। प्राय सभी अध्यायामे किसी-न-किसी
का प्रसग आया ही है। दशम स्कन्धके प्रथम
ठारहवे श्लोकमें वर्णन आया है कि पृथ्वी दुष्ट
त्याचारासे पीडित होकर ब्रह्मादि देवताओके साथ
ारण करके श्रीभगवान्‌की शरणमे जाती है—
श्रुमुखी खिन्ना क्रन्दन्ती करुण विभो ।'
ाह है कि उसके नेत्रासे आँसुआकी झडी लग रही
हो गयी थी, करुण स्वरसे डकरा रही थी। भगवान्
को अपना अभिन्न स्वरूप ही माना है और व्रजकी
ाका केन्द्रविन्दु गाये और गोपियाँ ही हे। श्रीकृष्ण
सेवक और सखा—सभी कुछ बने हैं। व्रजमे कोई
ाय अथवा उसके द्वारा दिये गये पदार्थोके बिना
होते। मथुरामे श्रीवसुदेवजीके घर जन्म ग्रहण
उनका जन्मावधि कैशोरतकका समय गोपराज
यहाँ गायाके सानिध्यमे ही बीता है। जन्मोत्सवपर
सवत्सा साभूषणा अनेको गाये दानमे दी गयीं और
बेला बछडाको खूब सजाया गया—'गावो वृषा
द्रातैलरूपिता ' (१०। ५। ७)।
दैत्याद्वारा भी योजना बनायी गयी कि चूँकि ब्राह्मण
ावान् विष्णुके शरीर ही हैं और उनकी पुष्टि गव्य
होती है (१०। ४। ४१) अत हम हविष्य
ी गायाका नाश कर देना चाहिये—'गाश्च हन्मो
(१०। ४। ४०)। पूतनावधके पश्चात् गोपियाने
ष्णकी बाधा उनके मस्तकपर गोपुच्छ फिराकर
। कराकर अङ्गामे गोरज और गोबर लगाकर

'गोपुच्छभ्रमणादिभि ॥
ग स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।
रक्षा चक्रुश्च शकृता- ॥'
(१०। ६। १९-२०)

द्वारा अपहृत बालक कृष्णकी यादमे बिलखती माँ
पमा मृतवत्सा गौसे करके—'मृतवत्सका यथा
७। २४)—गायको भी माँका पद दिया गया है।
लरामके नामकरण-संस्कारका स्थान गर्गाचार्यजीद्वारा
ाना जाना भी महत्त्वपूर्ण है। गोवत्साको पूँछ पकड-
ानकी बाललीला उनके 'गोविन्द' बननेकी भूमिका
गृहीतपुच्छै । वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ

(१०। ८। २४)।' तथा 'वत्सान् मुञ्चन् ' (१०। ८। २९)
द्वारा बछडाके प्रति सख्यभाव प्रदर्शित है और वे भी अपनी
माताओका दूध पेट भरकर पी सके, इसलिये यह लीला है।
टीकाकाराने इस श्लोककी अनेक रोचक एव आध्यात्मिक
व्याख्याएँ की है जैसे वत्सरूपी जीवाको तत्क्षणात् मुक्ति प्रदान
करनेकी निरोध-लीला आदि। दामोदर-लीलाका आशय है—माता
यशोदाके दूध एव गायाके दूध-दही-मक्खनका कृष्ण-सेवामे
अर्पित होनेकी प्रतियोगिता-कथा। गाया और गोपियोकी श्रीकृष्णको
अपना स्तन्य-पान करानेकी आन्तरिक कामना पूर्ण करने-
हेतु—अर्थात् उनको भी माँ यशोदाके समान ही वात्सल्य-रसका
आनन्द प्रदान करने-हेतु ही श्रीकृष्णने ब्रह्माद्वारा गोपबालक एव
गोवत्स चुरा लिये जानेपर उन सबका रूप धारण करके पूरे
वर्षभर गोपियो और गायाका स्तन्य-पान किया। 'मुद कर्तुं
तन्मातॄणा', —'सर्वस्वरूपो बभौ॥' (१०। १३। १८-१९)।
इस लीलाका गूढाशय निर्भ्रान्तरूपसे समझानेके लिये प्राय एक
वर्ष-पश्चात् गोवर्धनकी चोटीपर चरती हुई गायोको नीचे बहुत
दूर अपने पूर्व बिआनके बछडाको देखते ही दुर्गम कँटीले
ऊबड-खाबड रास्तेके सब अवरोधाको अमान्य करके दौडते
हुए पहुँचकर अपूर्व वात्सल्य-प्रदर्शनकी लीला वर्णित हुई है।
कारण था श्रीकृष्ण स्वय ही उन बछडोके रूपमे जा थे
'मुक्तस्तनेष्वपत्येषु ' (१०। १३। ३५)। यही हाल पीछे
भागते हुए आये उन ग्वालाका अपने बालकोको देखकर हुआ।
ब्रह्माजीने इस लीलापर मुग्ध होकर कहा है—

अहोऽतिधन्या व्रजगोरमण्य
स्तन्यामृत पीतमतीव ते मुदा।
यासा विभो वत्सतरात्मजात्मना
यत्तृप्तयेऽद्यापि न चालमध्वरा ॥
(१०। १४। ३१)

आपने व्रजकी गाया और ग्वालिनाके बछड तथा बालक
बनकर उनके स्तनोका दूध पिया है। उनका जन्म ही सफल है
वे ही धन्य हैं। किंतु श्रीकृष्ण सृष्टिके सर्वोच्च पदाधिकारी
ब्रह्माद्वारा नाना प्रकारसे क्षमायाचना करनेपर भी उनसे बोले तक
नहीं, क्योकि वे ब्रह्माद्वारा गोपबालको और बछडाके अपहरण
(श्रीकृष्णके सामीप्यसे दूर करना) के अपराधको क्षमा नहीं कर
पाये। गोपबालको और गो-वत्साके साथ कितना आदर्श
सख्यभाव है श्रीकृष्णका।

जगत्‌को गोसेवाका श्रेष्ठ आदर्श श्रीकृष्ण-बलरामने ही
बताया है—

तौ वत्सपालकौ भूत्वा सर्वलोकैकपालकौ।

सप्रातराशौ गोवत्साश्चारयन्तौ विचेरतु ॥
(१०। ११। ४५)

सारे लाकोक एकमात्र पालनकता श्याम और बलराम अब बछडोके चरवाह बने हुए है। लडके हा कलेवकी सामग्री लकर बछडाको चराते हुए वे वन-वन घूमते ह। स्मरणीय है कि कृष्ण-बलराम नगे पेर ही गाय चराने जाया करत थे। नन्द-यशादाद्वारा उपानह् (जूत) धारण करनेके सार आग्रह उन्होने अस्वीकार कर दिये, कारण उनक प्रिय बछडे भी तो बिना पदत्राण ही विचरत हैं—

'कृष्णस्त्वानीते उपानहो नहि नहिकारेण बहिश्चकार।
(श्रीगोपालचम्पू)

इसीलिय गोपियाने इन चरणोका वर्णन किया है—'तृणचरानुग श्रीनिकेतनम्' (१०। ३१। ७)। जिन चरणाका श्रीलक्ष्मी अत्यन्त सावधानीस सवाहन करती हैं वे ही चरण बछडाके पाछे-पीछ उनकी सवामे चल रहे हैं। अधिक क्या कहा जाय गापियाँ गाचारणकी लीलाका स्मरण करके अत्यन्त मर्माहत हो जाती है—

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्
　नलिनसुन्दर नाथ ते पदम्।
शिलतृणाङ्कुरै सीदतीति न
　कलिलता मन कान्त गच्छति॥
(१०। ३१। ११)

'ह प्यारे! जब तुम गायाका चरानेके लिये वनम विचरण करते हा तब यह साचकर कि तुम्हारे सुन्दर सुकामल चरणाम ककड काँटे कुश आदि गड जानेस तुम्ह कितनी पाडा होती हागी हमारा हृदय आकुल-व्याकुल हो जाता है।

गावत्साके साथ भी श्रीकृष्णने अगणित कौतुक किये अपन स्पशसुखदानसे उन्ह परम सुखी बनाकर नाना क्रीडाएँ कीं। कभा गावत्साका मुख-चुम्बन करत कभी हरी-हरो सुकोमल दूब अपन श्राहस्तास चुनकर उन्ह प्यारसे खिलाते अपनी अञ्जलिस उन्ह पाना पिलाते आदि-आदि। उनकी इन माहिना लालाआका मर्म जान ले एसा जगत्म कोई नहीं है। श्रामद्भागवतम इसका सूत्ररूपम उल्लेखमात्र है—

न वेद कश्चिद् भगवश्चिकीर्षित
　तवहमानस्य नृणा विडम्बनम्।
(१। ८। २९)

उधर गाय बल-बछड भी श्रीकृष्णन कितना प्रेम करत ह यह ता तब प्रकट हाता ह जब व श्रीकृष्णका कालियनागक पाराम जकडा हुआ दखत हैं। उस समय—

गावो वृषा वत्सतर्य क्रन्दमाना सुदु खिता।
कृष्णे न्यस्तेक्षणा भीता रुदत्य इव तस्थिरे॥
(१०। १६। ११)

तात्पर्य यह कि गाय, बल बछिया और बछडे आदि सभी व्यथित हाकर डकराने लग और डर हुए-से अचल होकर राते हुए-से एकटक उनकी तरफ असहाय-से देखने लगे।

जब कभी गाया एव अन्य व्रजवासियोपर कोई विपत्ति आयी है श्रीकृष्णने सवदा उनकी रक्षा की है। उनका लक्ष्य सर्वदा यही रहा है कि गाय आर व्रजवासी सुखी रह। अघासुरके मुखसे गापबालको एव बछडाका उद्धार कालियनागको ह्रदसे भगाकर जलका एव तत्सलग्न गोचरभूमिके घासको विषमुक्त करना दो-दो बार दावाग्निका पान करके सबको मृत्युमुखसे निकालकर पुन जीवनदान दना इसके प्रकृष्ट उदाहरण हैं—'गानृभिर्भुज्यता नदी' (१०। १६। ६०) 'गावो वृषा वत्सा लेभिरे परमा मुदम्' (१०। १७। १६)।

श्रीकृष्णने वेश्याके लिये—विशषत व्रजवासियाके लिये जो सदास केवल गोपालन ही करते आये हैं— गोसेवाको परम कर्तव्य बताया—

कृषिवाणिज्यगोरक्षा कुसीद तुर्यमुच्यते।
वार्ता चतुर्विधा तत्र वय गोवृत्तयोऽनिशम्॥
(१०। २४। २१)

इसी युक्तिके आधारपर इन्द्रयज्ञका निवारण करक उन्हाने गिरिराज गावर्धनकी पूजाका प्रवर्तन किया। अपने अपमानस कुपित हुए इन्द्रने व्रजम प्रलयकारी तूफानी वर्षा करवायी, जिससे व्रजके पशु, गोप-गापी सभी पीडित होकर ठिठुरने लगे आर श्रीकृष्णकी शरणम गय। श्रीकृष्णने योगबलस खेल-खेलम गिरिराजको अपनी बायीं अगुलिपर धारण करक व्रजक समस्त गाप-गापियाका गाधन तथा उनक सामानके साथ गिरिराजके नीचे आश्रय दिया ताकि वे वर्षा-तूफानसे बच सक—

यथोपजाय विशत गिरिगर्तं सगोधना ॥
(१०। २५। २०)

भगवान् श्रीकृष्ण गावशसे कितन एकात्म थ गाय-बछड उनकी एक पुकार (श्रामुखसे हो या वशारवस)-पर प्रेम-परवश हुए दौड आत। कुछक स्थलाका आनन्द-आस्वादन करें—

मेघगम्भीरया वाचा नामभिर्दूरगान् पशून्।
क्वचिदाह्वयति प्रीत्या गागोपालमनाज्ञया॥
धेनवो मन्दगामिन्य ऊधोभारेण भूयसा।
ययुर्भगवताऽऽहूता द्रुत प्रीत्या स्नुतस्तनी ॥
(१०। १५। १२ १०। २०। २६)

जब वनम दूर गय हुए गाय और बछडाको श्रीकृष्ण मेघगम्भीर वाणीसे बड प्रेमसे उनके नाम ले-लेकर पुकारते तब गायो आदिका चित्त भी उनक वशम नहीं रहता। उनके स्तनासे दूध झरन लगता और वे दौडती हुई भगवान्‌क पास आ जातीं। वशीपर श्रीभगवान्‌का आह्वान सुनकर गायोके साथ-साथ नदी-वृक्ष आदिकी जो दशा हो जाती है उसका वणन युगलगीतम मनन योग्य ह—

वृन्दशो व्रजवृषा मृगगावो वेणुवाद्यहृतचेतस आरात्।
दन्तदष्टकवला धृतकर्णा निद्रिता लिखितचित्रमिवासन्॥

× × ×

वनचरो गिरितटेषु चरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयति गा स यदा हि॥

(१०। ३५। ५८)

वेणुगीत श्रवण करक गायाकी जो अद्भुत दशा होती ह वही तो हर प्राणीके लिये स्पृहणीय ह—

गावश्च कृष्णमुखनिर्गतवेणुगीत-
पीयूषमुत्तभितकर्णपुटै पिबन्त्य ।
शावा स्नुतस्तनपय कवला स्म तस्थु-
र्गोविन्दमात्मनि दृशाश्रुकला स्पृशन्त्य ॥

(१०। २१। १३)

जब हमार प्यार कृष्ण अपने मुखस बाँसुरीम स्वर भरत हैं और गाय उनका मधुर सगीत सुनती ह तब य अपने दोनों कानोके दोने खड कर लती ह और माना उनस अमृत पी रही हो, इस प्रकार उस सगीतका रस लेती हे। मानो वे प्यारे कृष्णको हृदयम आबद्ध करके उनका आलिगन कर रही हो उनक नेत्राम आनन्दाश्रु छलकने लगते हैं। बछडाकी दशा तो और भी निराली हो जाती ह यद्यपि गायाके स्तनासे दूध अपने-आप झरता रहता ह और व दूध पीते-पीते हठात् वशीध्वनि सुनते हैं तब मुँहम लिया हुआ दूध न तो वे निगल पाते है न उगल पाते हैं। अपने हृदयमे भगवान्‌का सस्पर्श अनुभव करते हुए उनकी आँखासे अश्रुधारा बहने लगती है। वे ठिठके-स ही खडे रह जाते हैं।

वशीकी मधुर तानको सुनकर और श्रीकृष्णके त्रिभुवनसुन्दर मोहिनीरूपको देखकर गो पक्षी हरिण आदि भी रोमाञ्चित तथा पुलकित हो जाते ह—

यद् गोद्विजद्रुममृगा पुलकान्यबिभ्रन्॥

(१०। २९। ४०)

केवल गाय-बछड ही आत्मविभोर होते हो ऐसा नहीं है। गाय चराते हुए जब खुरासे उडी हुई गोरज श्रीकृष्णकी घुँघराली अलकोपर जम जाती है, तब उनके सौन्दर्यम ऐसी अभिवृद्धि होती है कि गोपियाँ उनक इस रूपके दर्शनकी अभिलाषा करती हैं—

त गोरजश्छुरितकुन्तलबद्धबर्ह-
वन्यप्रसूनरुचिरेक्षणचारुहासम् ।

(१०। १५। ४२)

कैसी सुन्दर झाँकी है। दिनभर गोचारण करक व्रज लौटते हुए श्रीकृष्णकी मधुरतम झाँकीका चित्रण युगलगीतम भी दर्शनीय है (१०। ३५। २२-२३)। श्रीकृष्णका अभीष्ट ही है गायो और गोपियोके सर्वविध तापको मिटाना—'मोचयन् व्रजगवा दिनतापम्' (१०। ३५। २५)। व्रजम श्रीकृष्ण गायोकी सर्वविध सेवा अपने हाथस ही करते थे। उन्हे चराना नहलाना गोष्ठकी सफाई इत्यादिक अतिरिक्त गाये दुहनेका कार्य भी दोनो भाई स्वय ही करते थे—'व्रजे गोदोहन गतौ' (१०। ३८। २८)। देखिये तो, गोसेवामें नियुक्त होनेक कारण ही गिरिराजको भक्तश्रेष्ठ एव पूजनीय माना गया—

हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्यो
यद् रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोद ।
मान तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत्
पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलै ॥

(१०। २१। १८)

गायो और कृष्ण-बलरामक लिये विश्राम-हेतु कन्दराएँ, खानेके लिये कन्दमूल जल तथा हरी-हरी घासकी व्यवस्था करनेवाला गिरिराज गोवर्धन धन्य है।

इस प्रकार व्रजलालाम श्रीकृष्णद्वारा गोवशकी अत्यन्त आन्तरिकताक साथ की गयी सर्वविध सेवा क्रीडा रक्षाकी लीलाएँ स्पष्ट ही गायो-बछडोंको उनके अन्तरङ्ग परिकराकी श्रेणीम प्रतिष्ठित कर देती हैं। गायो-बछडोका श्रीकृष्णके प्रति प्रतिव्यवहार भी परिकरो-जैसा ही है। वह परस्पर 'अपनत्व' ही सेवा-धर्मकी कुजी है।

भगवान् श्रीकृष्णने गोसेवाका जो आदर्श प्रस्तुत किया है हम अपने सर्वविध उत्कर्ष-कामनासे उसे अपनाना ही होगा। जय गोपाल जय गोविन्द।

प्राचीन इतिहासमे गौओका स्थान

(श्रीधर्मलालसिहजी)

हिदू गौको बहुत ही पूज्य मानते हैं। इसकी तहमे बडा गहरा कारण है। चारो वेदामे एक स्वरसे गौआका गुणानुवाद है। वेदोम वर्णित गो-सम्बन्धी मन्त्रोको उद्धृत करके विचार किया जाय तो बृहत् ग्रन्थ तैयार हो जायगा। यही दृष्टिकोण स्मृति एव पुराणग्रन्थाका है। सबमे गोप्रशसक वाक्योका भण्डार भरा पडा है।

सायणाचार्यने ऋग्वदकी व्याख्या की है। अपने भाष्यम वे लिखते हैं कि 'सृष्टिके आदिम मनुष्य और गाय दोना आये। दोनो चुप थे। पहले गाय मुँह खोलकर बोली। उसीके सहारे मनुष्यने मुँह खोला और वह बोला अत गायसे मनुष्यको वोली मिली।'

इसीसे मिलता-जुलता उद्धरण आदम और ईवके जीवनक सम्बन्धमे मिलता है। दोना स्वर्गसे निकाले गये। भगवान्ने उनको एक मुट्ठी गेहूँ और एक जोडी बैल दिये।

हिदुआका विश्वास है कि गोलोक सभी लाकाके ऊपर, सबस पवित्र और सर्वोत्तम है।

गोकी उत्पत्तिके सम्बन्धम तीन प्रकारके प्रसग आते हैं—(१) ब्रह्मदेव एक मुँहसे अमृत-पान कर रहे थे, दूसरे मुँहसे फेन निकला जिसस सुरभिकी उत्पत्ति हुई। (२) दूसरे स्थलपर कहा है कि हमलोगाके आदि पिता दक्षप्रजापति हैं। उनके साठ लडकियाँ थी। उनम सबसे प्यारी सुरभि थी। (३) आगे चलकर बतलाया गया है कि ससारके कल्याणार्थ देव दनुज—इन दोनोने मिलकर समुद्रमन्थन किया। उससे चौदह रत्न निकले उन रत्नामे एक सुरभि है। सुरभिसे सुनहरे रगकी कपिला उत्पन्न हुई उसक थनक दूधसे क्षीर-समुद्र बना। कपिलाके बच्चे केलासपर चरते तथा धूम मचाते थे। नीचे भगवान् महादेव ध्यानमग्न थे। उन वच्चाके मुँहका ठडा फेन लगनेसे महादेवजीका ध्यान भङ्ग हा गया। हरने अपने तीसरे नत्रसे उनको देखा। उसी घडीस गोका रग जो पहले सुनहरा था नाना प्रकारका हा गया।

'गोत्र' शब्द 'गो' से बना है। पीछे चलकर हिदुआक विभिन्न वशाके परिचयके लिये इसका सार्वत्रिक व्यवहार होने लगा। ऋषिगण झुड-की-झुड गौएँ रखते थे यही इस 'शब्द' के व्यवहारका मूल है। उस समय लडकियाका प्रधान कार्य गोसवा था। इसीलिये वे दुहिता कहलाती थीं।

कहते हे कि एक दिन भगवान् शकर ब्रह्मदेवके घर गये। पितामहने उनका बडा आदर-सत्कार किया। प्रसन्न होकर स्रष्टाने बहुत-सी गोएँ दीं। उनके आगे स्वर्गकी सम्पदा तुच्छ थी। उन्ह पाकर शकर बडे प्रसन्न हुए, तभीसे उनका नाम 'पशुपति' पडा। महादेवने अन्य शीघ्रगामी सवारियोका त्याग कर अपनी सवारीके लिये नन्दी नामक बैलका वरण किया।

शोणितपुर (वर्तमान नेपाल) के राजा बाणासुर शकरजीके महान् भक्त थे। एक बार महादेवजीने प्रसन्न होकर उन्हे अपने गोकुलमेसे विशिष्ट जातिकी एक दर्जन ऐसी गाय दीं, जिनके आगे ससारकी सम्पदा तुच्छ मालूम पडती थी। उन गायाको पाकर बाण अत्यन्त प्रतापी और शक्तिशाली हुए। बाणासुरकी लावण्यवती पुत्री ऊषाका भगवान् श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धके साथ गुप्त प्रेम हो गया। भेद खुलनेपर बाणने अनिरुद्धको केद कर लिया। नारदजीसे यह सवाद पाकर भगवान् श्रीकृष्ण अपनी विशाल विजयी सनाके साथ शोणितपुर चढ आय। समाचार पाकर बाणने अपने मन्त्रियाको एकत्रित करके मन्त्रणा की। राज्यका चला जाना वे सहन कर सकते थे, परतु उन गायाका चला जाना उनको बरदाश्त नहीं था। सबकी रायसे गाय कुबेरक यहाँ थातीरूपमे इस शर्तपर रख दी गयीं कि वे बाणके सिवा किसीको गाय नहीं दगे। बाण लडाईमे हार गये, सधि हुई। दान-दहेज लेकर श्रीकृष्ण द्वारकाके लिये प्रस्थित हुए। किसीने कानमे धारसे कहा—'भगवन्! आपको असली चीज हाथ नहीं लगी। ससारकी सम्पदाको लजानेवाली इनकी बारह गाय कुबेरके यहाँ छिपाकर रखी गयी ह।' श्रीकृष्ण ठिठक गये। कुबेरको गाय वापस करनेके लिय कहलाया गया। उन्हाने नाहीं कर दिया। फिर लडाईके बाजे बजे। युद्धकी तेयारी हुई। देवता डर गये। शान्ति-दूत दाडे। बडी कठिनतासे उन्हाने श्रीकृष्णका समझा-बुझाकर घर भेजा।

जब-जब पृथ्वीपर घोर अन्याय एव पाप होने लगता है तब-तब वह गोका रूप धारण कर ब्रह्मदवकी शरणम आया

करती ह और पितामह उसका दु ख दूर किया करत ह। इसीसे मिलता-जुलता आख्यान पारसी जातिके इतिहासम भी पाया जाता ह।

द्वापरक अन्तम कलिने वृषरूप धर्मके तीन पैर काट लिये। जव चौथा काटने लगा तव वह भागा और महाराज परीक्षित्ने उसकी रक्षा की।

राक्षसराज रावण नियमितरूपसे राज गौओकी प्रदक्षिणा किया करता था।

इक्ष्वाकुके पात्रन वलक ककुद् (डाल) पर चढकर युद्ध किया इसलिये रामजाक वशाका नाम 'काकुत्स्थ' पडा। व विजयी हुए।

गीताम श्रीकृष्ण भगवान्ने कहा ह कि 'गौआम कामधेनु मैं हूँ।' महाराज दिलीपन एक दिन मार्गम जाती हुई कामधनुको दखकर प्रणाम नहीं किया। उसके शापसे महाराज अपुत्र हो गये। महाराज अपने गुरु वसिष्ठके आश्रमपर गय। अपुत्र हानका अपना मारा हाल गुरुजीका कह सुनाया और शापसे मुक्ति पानक लिय मार्ग-प्रदर्शनके हेतु वडी विनती की। गुरुन उन्ह नन्दिनी द दी और उसकी सव तरहसे पूजा करनके लिये कहा तथा सवा-शुश्रूपाम किसी प्रकारकी त्रुटि न होने पाव--इस वातको पूरी सतर्कता रखनका उपदश दिया। गुरुके आदशानुसार राजा-रानी प्रमपूर्वक उस दिव्य गायकी परिचर्या करन लग। राजा गायको वनम चरानक लिये ले गये। व नन्दिनाक चलनेपर चलते थे वैठनपर वैठत थे, उसके पानी पानपर पानी पात थ। एक दिन राजा वनके दृश्य दखनम लग गय। इतनम नन्दिना जारसे चिल्लायी। एक सिंह नन्दिनाको दवाच जा रहा था। राजा नन्दिनीकी प्राण-रक्षाके लिय धनुप उठाकर सिहस लडनक लिय तयार हो गये। परतु सिहम जब किमी प्रकार भी राजा गौकी रक्षा नहीं कर सके तव अन्तम राजाने अपना शरीर सिहको अर्पण कर दिया और मास-पिडवत् इस प्रतीक्षाम पड रहे कि सिंह अब खायेगा, तव खायगा। वहुत दरक पश्चात् मस्तक उठाकर देखा ता सिंह नहा दिखायी दिया कवल नन्दिनी खडी-खडी हँस रही थी। राजाकी इस अनुपम सवास नन्दिनी प्रसन्न हुई।' राजाको पुत्र हुआ।

प्रसिद्ध दशभक्त महादव गाविन्द रानाडेके सम्वन्धमे भी इसी प्रकारकी कथा प्रचलित हे। उनके माता-पिताके कोई पुत्र नहीं था। वे वृद्ध हो चल थ, वहुत दुखी रहत थे। एक दिनका वात है, उनके दरवाजेपर एक दिव्य साधु आये। दम्पतिने उनकी वडी सेवा की। आदर-सत्कार, सवा-शुश्रूपासे साधु वहुत प्रसन्न हुए। जिज्ञासा करनपर ज्ञात हुआ कि दम्पति पुत्र-रत्नक विना चिन्तित रहा करत हैं। साधुने प्रयाग वतलाया--'दूध देनेवाली सवत्सा काला गाय रखो। उसका सावित पूर्ण गहूँ खिलाओ जो गायके साथ निकल आयेगा उन्हीं दानाको धो-धोकर साफ-सुथरा करके उसीका आटा तैयार करो। ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर उसीकी रोटी खाओ। छ मासतक एसा करो।' दम्पतिने वैसा ही किया। अन्तम उनको पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। काली गायसे पुत्र प्राप्त होनेकी वात भारतवर्पके प्रत्येक गृहस्थको ज्ञात है।

हिंदुओंका विश्वास ह कि गायके शरीरम सभी देवता वास करते हैं, इस प्रसगम एक कथा है कि अन्य सभी दवताओंके गो-देहम प्रवेश कर जानके पश्चात् अन्तम लक्ष्मी आयीं। गायने उनको अपने गोवर और मूत्रम रहनेका स्थान दिया। कहना न होगा कि गोवर और गोमूत्रके वरावर खाद ससारम दूसरी नहीं है।

महर्षि वसिष्ठकी शवला नामक होम-धेनुकी महत्ता सभीको मालूम है। एक दिन महाराज विश्वामित्र अपनी विशाल सेनाके साथ उन्हींके तपोवनके रास्तसे जा रहे थे। ऋषिने उनको रोककर उनका आतिथ्य किया। शवलाकी कृपा तथा दूधसे सारी सेनाने सतुष्ट होकर भोजन किया। गायकी महिमा और चमत्कार देखकर विश्वामित्र अचम्भेमे पड गये। उन्होंने शवलाको ऋषिसे अपने लिये माँगा। ऋषिने देना अस्वीकार कर दिया। राजा इसपर नाराज हो गये और उन्होंने वलपूर्वक गायको ले जाना चाहा। दोनोंम लडाई छिड गयी। गोकी कृपासे राजाको ऋषिने परास्त कर दिया।

एक बार अपनी विशाल सेनाके साथ कार्तवीर्य अर्जुन तपोवनम जमदग्नि ऋषिके अतिथि बने। ऋषिने कामधेनुकी दया और दूधसे सेनासहित राजाका भलीभाँति आतिथ्य किया। राजा गायपर लट्टू हो गये। उन्होंने ऋषिसे गाय माँगी। ऋषिने देनेसे इनकार किया। राजाने अपने आदमियोंको बलपूर्वक गाय ले चलनेके लिये कहा। वे ले चले। ऋषिने उन्हे रोका। राजाज्ञासे ऋषिका मस्तक काट लिया गया। ऋषि-पत्नी रेणुका जोर-जोरसे चिल्लाने लगी। जमदग्निके ख्यातनामा

पुत्र परशुराम निकटके पर्वतपर तपस्या कर रहे थे। उन्होने जब माताका रोना सुना, तब उनका आसन डोल गया। वे शीघ्र घर लौटे। पिताकी दशा देखकर अत्यन्त कुपित हुए। उन्होने क्षत्रियोके साथ भयकर लडाई लगातार कई वर्षोंतक लडी। इक्कीस बार पृथ्वीको क्षत्रियोसे शून्य कर दिया।

पृथ्वीका कक्ष बारह भागोमे बँटा है। हर एक भाग एक-एक राशि है। दूसरी राशिका नाम वृष है।

जहाँसे गङ्गाकी धारा निकलती है, उसका नाम गङ्गोत्तरी है क्योकि उसका मुँह गोमुखके समान है।

धनकी देवी लक्ष्मी पहले-पहल पृथ्वीपर गायके रूपमे आयी, उन्होने जो गोबर त्यागा, उससे बिल्व-वृक्षकी उत्पत्ति हुई।

गङ्गाजीको पहले-पहल जब ससारमे आनेके लिये कहा गया तब वे बहुत आनाकानी करने लगीं। उन्होने बतलाया कि 'पृथ्वीपर पापी लोग मुझमे स्नानादि करके मुझे अपवित्र कर दिया करेंगे, इसलिये मैं न जाऊँगी।' पितामहने किहा कि 'लोग तुम्हे कितना भी अपवित्र करे गायके पैर लगनेसे तुम पवित्र होती रहोगी।'

महर्षि दत्तात्रेय अपनी गाय, कुत्ते और हिरनके साथ बराबर घूमा करते हैं।

याज्ञवल्क्यको पुरोहित बनाकर महाराज जनकने एक हजार गायोका दान किया था जिनके आगे स्वर्गकी सम्पदा भी तुच्छ थी। भगवान् गणेशके जन्मके सम्बन्धमे मनोहर सच्ची आख्यायिका है। गणेशजी ज्यो ही उत्पन्न हुए, भूलसे महादेवजीने उनका मस्तक काट दिया जो किसी अदृश्य स्थानमे चला गया। पार्वती बहुत रोयी-धोयीं देववैद्य अश्विनीकुमार बुलाये गये। पार्वतीसे मुँहमाँगा वरदान मिलेगा—इस शर्तपर उन्होने बालकका मस्तक जोड दिया। वरदानमे उन्होने स्वय महादेवको ही माँगा। बडी जटिल समस्या उपस्थित हुई। देवताओके साथ विष्णुने पचायत की। महादेवका दाम एक गाय रखा गया और वही देकर पार्वतीने छुटकारा पाया। अश्विनीकुमार बडे प्रसन्न हुए।

योगिराज भगवान् श्रीकृष्णके विषयमे भी विचित्र-विचित्र आख्यान कहे-सुने जाते हैं, जो उनके 'गोपाल' नामको चरितार्थ करते है। लडकपनमे बछडे चराना कुछ बडे हो जानेपर गाये चराना गायपर आघात करनेवाले आततायीको मार डालना ब्रह्मदेवका मान-मदन करना, गोवर्धन धारण कर गोरक्षा करना रासलीलाके समय अत्यन्त श्रान्त होनेपर अपने बाये अङ्गसे गायको उत्पन्न करना—जिससे दुग्ध-कुण्ड तैयार हुआ और गोप-गोपिकाओने उस दुग्धको पीकर अपनी क्लान्ति दूर की—इत्यादि अनेक कथाएँ सविस्तर रूपसे हमारे पुराणोमे वर्णित हैं। नटवरका सारा ज्ञान-कोष गो-चारणसे ही प्राप्त हुआ था। जिससे आगे चलकर ससारका उद्धार करनेवाली गीताका ज्ञान निकला।

गुरु नानक बचपनमे गाये चराते थे। एक दिन जेठकी दुपहरीमे गायोको बटोरकर वे एक घने वृक्षके नीचे सो गये। उधरसे निकलनेवाले बटोहीने देखा कि एक विषधर सर्प फन किये नानकके मस्तकके पास खडा है। उन लोगोने ढेला मारकर नानकको जगाया। उनके उठते ही साँप जगलकी तरफ नौ-दो ग्यारह हो गया। कहते हैं कि उसी समयसे नानक ध्यानमग्न रहने लगे। आगे चलकर वे शक्तिशाली सिख-सम्प्रदायके सस्थापक बने।

भगवान् बुद्धके जीवन-चरित्रमे भी एक इसी प्रकारकी मनोहर घटना घटी थी। उन्होने उनचास दिनतक उपवास किया फिर भी उनको ज्ञान एव मुक्ति नहीं मिली जिसकी खोजमे वे राज-पाट त्याग कर भटक रहे थे। गयाके पास बोधि वृक्षके नीचे वे उदास बैठे थे। उसी इलाकेके उरूवेला नामक स्थानके सरदारकी लावण्यवती बेटी सुजाताने वट-वृक्षके अधिष्ठातृ-देवकी मन्नत मानी थी कि यदि 'मेरी मन कामना पूरी हो जायगी तो मैं १६०० गायोके दूधकी खीर वटदेवको भेट चढाऊँगी।' उसकी अभिलाषा पूरी हो गयी। उसने १६०० गायोको जेठी मधुके वनमे चराया। उनको दूहकर उनका दूध आठ सौ गायोको पिलाया। फिर उनको दूहकर उनका दूध चार सौको पिलाया इसी प्रक्रियासे अन्तमे उसने १६ गायोको दूहा और उनका दूध ८ गायोको पिलाया। फिर आठ गायोका दूध लेकर उसने प्रेमपूर्वक खीर तैयार करवायी और उसको सोनेके थालमे परोसे खीर लेकर वह वट-वृक्षके सामने उपस्थित हुई। यह देखकर कि वटदेव मनुष्यरूप धारण कर उसका उपहार ग्रहण करनेके लिये पहलेसे बैठे हैं —सुजाता आनन्दमे निमग्न हो गयी। गौतमने खीर खायी और तुरत उनको ज्ञान और मुक्तिका मार्ग मिल गया जिसके लिये वे उतने दिनोसे व्यग्र थे।

महात्मा ख्राइष्ट भी बचपनमे पशु चराते थे। उन्हीं दिनो उनको ससारकी पापसे रक्षा करनेका ज्ञान प्राप्त हुआ।

महान् शीशोदिया-वशक सस्थापक बाप्पा रावल बचपनमे गाय चराया करते थे। एक दिनकी बात है, एक गायन गोष्ठम आकर दूध नहा दिया। मालिकने बाप्पाको खूब पीटा। मालिकको ख्याल हुआ कि बाप्पाने ही सारा दूध दुहकर पी लिया ह बेकसूर बाप्पाको इससे मर्मान्तक पीडा हुई। दूसरे दिन भी वह गाय चरान गया। प्रतिहिंसाके भाव उसक मनम उठ रहे थे। सध्याका आगमन हुआ। गाय गोष्ठकी तरफ चल पडी। बाप्पा एक झाडीम छिप गया। देखता हे कि एक गाय झुडस अलग होकर एकलिङ्ग महादवके मस्तकपर दूध ढाल रही हे। बाप्पासे अत्र न रहा गया। वह एकलिङ्गक पास दोडा गया लाठी मार-मारकर महादेवके नाको दम कर दिया। भोलबाबा प्रसन्न हुए। बाप्पाको वरदान मिला। उनका प्रताप बढा। व शीशोदिया वशके महान् सस्थापक हुए, जिस वशक राणा साँगा तथा प्रतापने मुसलमानी कालम अपन प्रभावसे ससारको चकित कर दिया।

इसीसे मिलती-जुलती आख्यायिका पारसी जातिके इतिहासम भी मिलती ह। इससे पता लगता हे कि प्रत्येक महापुरुषका सम्बन्ध किसी-न-किसी रूपम गायोके साथ रहा हे। सबका बचपन गो-सेवाम बीता हे। उसीक प्रतापसे सब महान् बने ह।

महाराज नृगन एक करोड गाय ब्राह्मणाको दान दी थी। राजा विराटके पास उत्तम जातिकी एक लाख गाय थी। उन गायाकी प्रशसा सुनकर कौरव बडी भारी सना लकर उनकी राजधानीपर चढ आये किंतु पाण्डवाकी सहायतासे विराटने उनका मार भगाया। महाराज नन्दके पास नौ लाख गाय था।

जैन-युगम भी एक-एक महाजनके पास लाखा गाये रहती थी। विशाखाक विवाहम उसके पिता धनदृष्टिने अपनी बेटीको इतनी गाय दहेजम दी थीं जिनकी गणना नहा हो सका।

महाराज नल ऋतुपर्ण सहदव तथा नकुल प्रसिद्ध गो-चिकित्सक थे। पाण्डवाम यह नियम था कि उनकी स्त्री द्रौपदी जितने समयतक एक भाइक पास रह उतने समयतक दूसरा भाई उस महलम न जाय आर यदि चला जाय तो बारह वर्षतक वनवासी होकर रह। हालम ही अर्जुनकी पारी चीती थी आर युधिष्ठिरकी पारी आयी थी। अर्जुन अपना गाण्डीव उसी महलम भूल आये थे। किसी ब्राह्मणने आकर उनके सामने पुकार की कि 'लुटेरे मेरी गायको हरण किये जा रह हे।' अर्जुनको गाण्डीवकी याद आयी। बारह वर्षोतक वनमे रहनेकी तनिक भी परवा न करके वे भीतर जाकर धनुष ले आये क्याकि गायकी रक्षासे बढकर ससारमे कोई दूसरा धर्म नही है। उन्हे बारह वर्षोतक वनमे रहना मजूर था, परतु गायकी रक्षासे मुँह मोडना मजूर नही था।

च्यवन-ऋषिके विषयम एक बहुत ही रोचक कथा है। वे एक बार गङ्गाजीके गर्भम तपस्या कर रहे थे। मछुए मछली मारने आये। जालम मछलीके बदले मुनिजी आ गये। मछुए उनको नहुषक दरबारमे ल गये। महाराजने मुनिजीके बदले एक थैली सोना दिया, परतु मुनिजी कहने लगे कि 'इतना कम हमारा दाम नहीं होगा।' राजाने आर भी बहुत-सा सोना अन्तम समस्त राज्य मुनिजीके मूल्यमे देना चाहा। इसपर भी मुनिजी बोले—'हमारा मूल्य इतना कम नहीं होगा।' राजाने विनती करके पूछा कि 'महाराज! आप ही बतलायें कि आपका मूल्य क्या होगा?' मुनिने कहा कि 'हमारा मूल्य एक गाय है। आप एक गाय दे दीजिये। बस यही हमारा मूल्य ह।' राजाने एसा ही किया। इससे पता लगता है कि पूर्वकालम एक गायका दाम समूचे राज्यसे भी अधिक माना जाता था।

जब भरत रामजीसे मिलने गये, उस समय उन्होने पूछा कि 'भाई! तुमपर गोपगणका प्रेम है न? तथा गोरक्षा होती है या नही?'

प्राच्य जगत्म पहले गायका बडा मान था। जैसे हमलोग गो-पूजा करते हे उसी प्रकार पारसी लोग साँडकी पूजा किया करते थे। मिश्रम सुनहले बछेकी पूजा हुआ करती थी। वहाँके प्राचीन सिक्कापर बैलोकी मूर्ति अङ्कित रहती थी। ईसासे कई हजार वर्ष पूर्वके बने हुए पिरामिडमे बैलोकी मूर्तियाँ अङ्कित हैं। आज भी केलटिक जातिके लोग जहाँ-कही हे गो-पूजक ह। उस समय तमाम मुसलमानी देशाम भी गायकी पूजा हुआ करती थी तथा उनका मारना दण्डनीय था। पैगम्बर मूसाके समयसे गो-वधका प्रचलन हुआ आर विरोधके बहुत प्रयत्नाके बाद भी भारतम आज गोहत्याका कलक बना हुआ ह। देखे गोमाता कब सद्बुद्धि प्रदान करती हैं।

आर्थिक समृद्धिमें गोवंशका योगदान

(श्रीबाबूलालजी वर्मा)

भारतीय कृषि-सस्कृतिम गो गोरम और गोवश ही नहीं वरन् गोमय तथा गोमूत्रको भी सर्वोपरि महत्त्व दिया गया हे। इसका यह कारण नहीं कि भारत कृषि-प्रधान देश है ओर कृषि-विकासम गोवशका विशेष योगदान है बल्कि धर्म, सस्कृति और सार्वजनिक स्वास्थ्यके साथ भी गाय जुडी रही हे। यही नहीं सृष्टि-रचनाम भी गायका प्रथम स्थान प्राप्त ह। अमृत-तुल्य दुग्ध पेय देनेके अतिरिक्त अपनी पवित्रता, शालीनता निष्काम-सेवा ओर धर्मरक्षामे भी गाय पुरोगामिनी रही है।

भारतकी परम पावन धरती माता गोवशसे ही अनुप्राणित है। वैदिक परम्परामे गाय अनक अर्थोम भारतीय जीवनसे जुडी है। गो एक व्यापक अर्थवाला शब्द हे और 'गो' शब्दके जितने भी अर्थ-नाम ह वे सत्र अवध्य अर्थपरक हैं, क्याकि उनका सम्बन्ध जीवनसे नहीं प्रत्युत जीवनके सचारसे हे जावनकी गतिसे है जीवनके लाभसे हे ओर जीवनके आधारसे है।

भारतीय कृषि और अर्थ-व्यवस्थाका आधार—गोवश

गोपाष्टमीके पर्वपर देशभरमे गोभक्त जनता गोमाताकी पूजा करती है। वास्तवमे गाय हमारी कृषि-विकास एव भारतीय अर्थ-व्यवस्थाकी आधार-शिला है अति प्राचीन कालसे ही इसका महत्त्वपूर्ण स्थान रहा हे। प्राचीन परम्परा ओर भारतीय कृषि-सस्कृतिम गायका विशेष और पूजनीय स्थान रहा हे। गो-भक्ति और गो-सेवाको उच्च स्थान प्राप्त है। सभी धर्मग्रन्थो एव प्राचीन साहित्यम गायके महत्त्वको बतलाया गया हे और यह अनुभवजन्य सत्य हे कि गाय हमारा कृषि-विकास और आर्थिक सम्पन्नताकी रीढ है। गाएँ सर्वश्रेष्ठ पवित्र तथा पूजा करने योग्य और ससारभरम सबसे उत्तम ईश्वरीय दन हे क्याकि अमृत-तुल्य दूध-दही घी आदि हव्यके बिना ससारका कोई यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता। गाय अपने दूध दही घी, गोबर मूत्र हड्डी चमडा बालो और सींगासे हमारा सब प्रकारका हित—कल्याण करती है। गोधनके बराबर जगत्‌म अन्य कोई धन नहीं हे क्याकि गोवश सदा लक्ष्मीका मूल हे, इसलिये गोमाता प्राणिमात्रके लिये माताके समान सुख देनेवाली है। किंतु आज अपनी ही इस गोमाताकी कितनी दुर्दशा की जा रही हे, उसपर कितने अत्याचार किये जा रहे हे यह भी किसीसे छिपा नहीं है।

गोवशके ह्रासकी क्या स्थिति होती जा रही है? इसे कौन समझेगा? कलकत्ता मद्रास बबई केरल तथा देवनारके बूचडखानाम गर्म पानीके फोव्वारासे गायको नहलाया जाता है फिर उसे बिजलीके चाबुकसे पीटकर चारा खाते समय मशीनसे उसका चमडा उतारा जाता हे फिर स्वचालित मशीनासे उसका मास काटकर डिब्बाम भरकर बाहर भेजा जाता है इसके बदलेम दुग्ध-चूर्ण आर पेट्रोलियम पदार्थ आयात किया जाता है। पजाब हरियाणा आर उत्तरप्रदेशसे स्वस्थ गाय-बैलो ओर बछडाको लाकर उन्हे चारा खिलाकर मोटा किया जाता हे। गाभिन गायको बच्चा देनेके दो-चार दिन पूर्व गर्भपातके लिये साबुनका पानी पिलाकर उसका पेट मशीनसे दबाकर अप्राकृतिक रूपसे सुकोमल नवजात शिशुको पेटसे बाहर निकाला जाता है। बछडेकी खाल उतारी जाती है। इस नरम चमडेको 'क्रूम' कहते ह। नवजात बछडेके मासको 'बीफ' कहते ह। बीफ आर क्रूम निर्यात किया जाता हे। अज्ञानवश ही सही इनसे बनी वस्तुओका प्रयोग करनवाले भी गोहत्याके भागीदार हैं। गोवशकी दुर्दशासे व्यथित होकर राष्ट्रकविके मुँहसे बरबस ये पक्तियाँ फूट पडी थी—

दाँतों तले तृण दाब कर हैं दीन गाय कह रही

हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही?

हमने तुम्हे माँ की तरह है दूध पीने को दिया

देकर कसाई को हमे, तुमने हमारा वध किया॥

क्या वश हमारा है भला हम दीन है बल हीन है

मारो कि पालो कुछ करो तुम हम सदैव आधीन है।

प्रभु के यहा से भी कदाचित्, आज हम असहाय है

इससे अधिक अब क्या कहे हा! हम तुम्हारी गाय है॥

जारी रहा क्रम यदि यहाँ यो ही हमारे नाश का

तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।

जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायगी,
यह स्वर्ण-भारत भूमि बस मरघट-मही बन जायगी॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

अमरिकी कृषि-विशेषज्ञ 'इकलसन' ने अपनी पुस्तक 'दुधारु पशु और उत्पादन' में लिखा है—तीन करोड़ रुपयेसे अधिककी खाद प्रतिदिन गायोंके गोबर और मूत्रसे ही प्राप्त हो सकती है। गायके मूत्र और गोबरमें भूमिको उपजाऊ बनानेवाले पदार्थ मौजूद हैं और अन्न उत्पादन अधिक बढ़ सकता है। भारतमें जहाँ रेलगाड़ियोंपर ४ हजार करोड़ रुपया और सड़क-परिवहनपर एक हजार करोड़ रुपया विनियोजित है, वहीं बैलगाड़ियोंपर ३ हजार करोड़ रुपयेकी पूँजी लगी है। भारत सरकारके भू० पू० पशु-विशेषज्ञ 'सर अलबर्ट हावर्ट' ने 'एग्रीकल्चरल टेस्टामेन्ट' नामक अपने ग्रन्थमें कहा है कि—'रासायनिक खाद कृषि-योग्य भूमिको जीवांश (ह्यूमस) प्रदान नहीं करती। गोबरकी कम्पोस्ट खाद और हरी खाद ही प्राकृतिक खाद है, जिसमें असंख्य जैविक और ह्यूमस (बीजाणु और जीवाणु) पाये जाते हैं।' सर अलबर्टने आगे लिखा है—'देशके करोब १७ करोड़ गाय-बैल, भैंस-भैंसा वस्तुतः बिना ईंधन और अन्य सहायताके ५ करोड़ हार्सपावर पैदा कर सकते हैं। इतनी शक्ति पैदा करनेके लिये ५० लाख कीमती ट्रैक्टरों और मूल्यवान् ईंधनकी भारी मात्रामें आवश्यकता पड़ेगी, फिर भी ये ट्रैक्टर कृषि-भूमिकी उर्वरा-शक्ति बढ़ानेवाले गोबर और गोमूत्र नहीं दे सकते। उल्टे उनके तेल और धुएँसे प्रदूषण फैलनेके साथ भूमिकी उर्वरा-शक्तिको क्षति पहुँचती है। भारतकी कृषि-भूमि छोटे-छोटे टुकड़ोंमें बँटी हुई है। अतः ऐसे खेतोंके लिये बैल ही उपयोगी होंगे।

विश्वविख्यात वैज्ञानिक डॉ० अलबर्ट आइनस्टाइनने स्व० डा० अमरनाथ झाके द्वारा भारतको संदेश भेजा था—'भारत ट्रैक्टर, उर्वरक, कीटाणुनाशक (पेस्टीसाइड्स) और यन्त्रीकृत खेतीकी पद्धति न अपनाये; क्योंकि इनसे चार सौ वर्षकी खेतीमें ही अमरिकाके जमीनकी उर्वराशक्ति काफी हदतक समाप्त हो चली है, जबकि भारतका उपजाऊपन कायम है, जहाँ कि दस हजार सालसे खेती हो रही है।' इतना होनेपर भी बड़े दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रदेशोंमें जमीन जोतनेके लिये बैल नहीं मिल रहे हैं। ग्राम्य-जीवन उखड़ रहा है। थोड़े ही दिनोंमें सारे देशमें बैलोंकी कमी होगी, हलमें मनुष्यको जुतना पड़ेगा। आज इंडोनेशियामें यही हो रहा है और भारतके कुछ हिस्सोंमें ऐसा दृश्य भी जा रहा है।

जिन प्रदेशोंमें गोवध-निषेध कानून बने हैं, वहाँ दूध देने तथा कृषि और भारवाहनमें अनुपयुक्त पशुओंको डॉक्टरके प्रमाणपत्रपर बूचड़खानोंमें कटनेकी छूट दी गयी है, जिसके कारण उपयोगी और स्वस्थ गोवंश भी कटते चले जाते हैं। कृत्रिम गर्भाधानसे ८० प्रतिशत बछड़े होते हैं, जो भारतकी गर्म जलवायु सहन नहीं कर सकते तथा विदेशी नस्लके बछड़ोंके कंधा (ठिल्ला) नहीं होता, जिससे कृषि-कार्यके लिये अनुपयोगी होते हैं। ऐसे बछड़ोंको डॉक्टर बेकार घोषित कर कटनेके लिये प्रमाणपत्र जारी कर देते हैं। फलतः कृत्रिम गर्भाधानसे गोहत्याको प्रोत्साहन मिलता है। कुछ समयसे सरकारी तन्त्रद्वारा यह धारणा भी पैदा की गयी है कि 'देशी गाय दूध कम देती है, इसलिये 'जर्सी', 'फ्रीजियन', 'हाल्सटिन्स' प्रजातिकी विदेशी गायोंके पालनको सरकारी अनुदानपर प्रोत्साहित किया जाता है और इसमें विदेशी साँड़ोंसे प्रजनन कराना अनिवार्य है।'

ध्यान देनेकी बात है कि विदेशी गो-नस्लें वास्तवमें गायोंकी नस्ल नहीं हैं, बल्कि जंगली पशु हैं और संकरित की गयी हैं, इनके दूधमें स्वदेशी प्रजातिकी गायोंके दूधके समान गुणवत्ता और पौष्टिकता नहीं है। इनकी शक्ल-सूरत, आकार-प्रकार, रंग-रूप भारतीय गायोंके समान नहीं होता। बोली भयानक लगती है, विषाणुसे ग्रस्त रहती हैं, इन्हें नित्य साबुनसे नहलाना आवश्यक है। जल्दी बीमार होती हैं। इनके लिये पौष्टिक आहार तथा हरे चारेका प्रबन्ध कर पाना सर्वसाधारण किसानके बसका नहीं है। प्रतिकूल जलवायुके कारण दूध घटेगा ही, भारतीय गोवंशके पतनका कारण बनेगा। भारतीय गोवंशकी नस्ल सुधारके लिये अच्छी नस्लके भारतीय साँड़ ही उपयुक्त हैं। पहले देशी साँड़ोंसे प्रजननकी नीति अपनायी गयी थी, जिसके संतोषजनक परिणाम सामने आये थे और भारतीय गोवंशकी नस्लका उत्साहवर्धक सुधार भी दिखायी दिया था। कम दूध देनेवाली देशी गायोंका प्रजनन कराया गया, जिसमें मुख्य थीं—हरियाणा, साहीवाल, गिरि, कांकरेज, थारपारकर, गो, हल्लीकर, मालवी, राठी

देवनी गवलाऊ और नागोरी आदि। विदेशी साँडोसे या कृत्रिम गर्भाधानसे प्रजनित गायाके दूधमे चिकनाई बहुत कम होती है। पर इनमे विदेशी प्रजननकी अपेक्षा अधिक चिकनाई पाया गयी। 'डॉ० परमाई' ने उत्तम नस्लक मालवी राठी सॉडोद्वारा देशी गायापर प्रजनन-प्रयोगकर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। डॉ० परसाईके प्रयोगसे अन्तिम रूपसे यह सिद्ध हो गया है कि देशी साँडोसे प्रजनित स्वदेशी गाये हमारे देशके लिये अधिक उपयुक्त हैं।

यह धारणा सही नहीं है कि स्वदेशी प्रजातिकी गाये दूध कम दती हैं। कुछ वर्ष-पूर्व स्वदशी प्रजातिकी भारतीय नस्लकी करीब ५०० बछिया इजराइल भेजी गयी थीं। वहाँ उनका अच्छा विकास किया गया। य सभी गाय विदशी गायाकी अपेक्षा अधिक दूध देती हैं। भारतीय नस्लकी एक गायने दुग्ध-उत्पादनमे विश्वका रिकार्ड तोड दिया है वह प्रतिदिन ६० लीटर दूध देती है, एक आरन तो कमाल ही कर दिया है जा २४ घटेम चार बार दुही जाती है और चारा बारमे १२० लीटर दूधका उत्पादन होता हे। यह गाय 'गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड' मे दर्ज की गयी है।

श्वेत क्रान्ति सफद झूठ—'विश्व-बेक-सयुक्त पुनर्मूल्याङ्कन मिशन'न भारतमे ऑपरेशन फ्लड (श्वेत क्रान्ति) द्वितीयके अन्तर्गत जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है सही मायनेम नेशनल डेरी डेवलपमेन्ट बोर्ड (एन० डी०डी०बी०) तथा इडियन डेरी कारपोरेशन (आई० डी०सी०) ने जान-बूझकर उसे भारतीय जनतासे छिपाया है। सक्षेपम विश्व-बैंकने भारतको किसी प्रकारकी दुग्ध-सहायता (मिल्क एड) यूरोपसे दिये जानेसे इनकार कर दिया था तथा यह भी कहा था कि भारतमे कहीं भी दूधकी डेरी लाभम नहीं चल रही है। अत श्वेत क्रान्तिके सम्बन्धमे अधिकारियाके सभी दावे दिखावटी ओर सफद झूठ साबित हुए। भारत सरकारका भारतीय दूध डेरीका आधिक विकास दिवास्वप्न साबित हुआ है। सहकारी दुग्ध-डेरियोम राजनैतिक हस्तक्षेपसे व्याप्त भ्रष्टाचार और कुप्रबन्धक कारण कराडाका घाटा हुआ है। 'फ्रीडमफार हगरकेम्पन' याजना सरकारी दुग्ध-सघकी वडा महत्त्वाकाक्षी योजना बतायी गयी थी। पर सरकारा तन्त्रक भ्रष्टाचारके कारण यह असफल रही। १९७६ में ब्रिटिश सरकारकी सहायतासे 'फ्रीडमफार हगरकेम्पेन' योजना शुरू की गयी थी। इस योजनाके तहत गायाके दूधके उत्पादन बढानेके उद्देश्यसे विदेशी जर्सी साँडोके हिमीकृत वीर्यद्वारा स्वदेशा गायाका सकरण करनेकी एक सघन पशु-विकास-योजना शुरू की गयी थी। परियोजनाके अन्तर्गत जब कृत्रिम गर्भाधानका वर्ष-वार लक्ष्य ओर उपलब्धियाकी समीक्षा की गयी तो उपलब्धियाँ नगण्य रहीं। नियन्त्रक महालेखा-परीक्षककी रिपार्ट प्रकाशित होनपर उपलब्धियाके परिणाम उलट गये। उदाहरणके लिये एक रिपोर्टके अनुसार १९७६-७७ मे यदि लक्ष्य था १७,७५० तो उसके विपरीत १७७ गायाका ही हिमीकृत कृत्रिम गर्भाधान सफल हो पाया। शेष गाये जिन्हाने गर्भाधान 'कन्सीव' नहीं किया वे हमेशाके लिये बाँझ हो गयीं। भारतम डेनमार्क नार्वे स्वीडन आदि विदशी साँडोका मूल्य आयात-खर्चसहित १६ हजार रुपये प्रति सॉड बैठता ह। भारतीय जलवायु अनुकूल न होनेके कारण उनके रख-रखावपर करोडा रुपये खर्च करनेके बावजूद हजारो साँड मर गये। जर्सी फ्रीजियन गाया आर बछियाका मूल्य भी ५ से ११ हजार रुपयेतक ह। यहाँकी गर्म जलवायु उनके लिये विपरीत हानेके कारण विदेशी नस्लकी गाय पनप नहीं पातीं। पशु-चिकित्सकाकी एक अध्ययन-रिपार्टक अनुसार इनके पालकाके पूरे परिवार कई असाध्य रोगोसे पाडित पाये गये। चिकित्सकोके अनुसार जर्सी या फ्रीजियन गायाके शरीरसे उनके खुरासे आर गोबर-मूत्रम बेक्टीरिया (विषल काटाणु) विकसित होकर फैलते ह जिससे आस-पासका पर्यावरण विषाक्त हो जाता है। उसम साँस लनवालाके फेफडाम व विषाणु प्रवश कर नयी-नयी बीमारियाँ पदा करत हैं जिसम मस्तिष्क-ज्वर सवस प्रमुख ह। इस आयातित नयी आधुनिक बीमारासे हजारा लागाका मौत हा चुकी है। दूधका उत्पादन भी १६ करोड लीटर दैनिक लक्ष्यकी अपक्षा घटकर ८-१० करोड लीटर रह गया ह। भारतम श्वेत क्रान्ति लानेक बहाने गोहत्याको बढावा दनेका यह विदशी कुचक्र ह जिसके जालम भारत बुरी तरह फँस गया ह।

गोधन और ट्रैक्टर—गाँधाजीन अपन पत्राम अपन भावाका व्यक्त करत हुए कहा है—'दशम लवा आर भारी खर्चीली तथा विदेशी नकलपर दीर्घगामी योजनाआका लागू

करके दोहरी अर्थव्यवस्था कायम न की जाय, यह नितान्त अलोकतान्त्रिक होगा।' पर देशका दुर्भाग्य है कि विदेशी चकाचौंधसे प्रभावित विदेशी विचार और मानसिकताके माहौलमें पालित-पोषित तत्कालीन नीतिविशारदोंको यह बात जँची नहीं जिसका परिणाम यह हुआ कि विदेशी निगमों और पूँजीपतियोंकी घुसपैठ देशमें बढ़ने लगी। राष्ट्रिय पूँजी कुछ हाथोंमें सिमटकर रह गयी। विदेशी कम्पनियोंसे अनुबन्ध और विदेशी पूँजी-निवेशसे विदेशी तकनीकका प्रवाह भारतकी पावन धरतीपर बढ़ने लगा। इस प्रकार विदेशी प्राविधिकी (बासी जूठन) आयातकी खुली छूट देकर बहुराष्ट्रिय निगमोंके लिये शोषणके द्वार खोल दिये गये। 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' ने अपनी कूटनीतिक व्यावसायिक बुद्धिसे देशको २०० वर्षतक गुलाम बनाये रखा और अब सैकड़ों ऐसी बहुराष्ट्रिय कम्पनियाँ भारतको आर्थिक गुलामीके जालमें फँसानेका कुचक्र कर रही हैं। देश गरीबी, अभाव, कंगाली तथा बेकारीके कगारपर खड़ा हो गया है।

जब दक्षिण-पूर्व एशियाके विकासशील देशोंमें आधुनिक टेक्नालॉजी और नयी वैज्ञानिक कृषिकी पश्चिमी देशोंकी नकलपर कृषि-विकासका 'हल्लाबोल' प्रचार शुरू हुआ तो १९६१-६२ में भारतमें भी इसकी आँधी आयी। नयी तकनीकके नामपर सबसे पहले ऐसे नये बीजोंकी प्रजातियोंको ढोल पीटा गया जिसके लिये खेतीकी मशीनोंकरण सिंचाईके आधुनिक प्रणालीके साथ आयातित मशीन रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकोंका प्रयोग आवश्यक बताया गया। कृषि-विकासकी इस नयी प्रक्रियाने बहुराष्ट्रिय कम्पनियों और विश्वबैंकके लिये भारी लाभ कमाया तथा देशके किसानोंका आर्थिक शोषण करनेका मार्ग खुल गया। क्या विदेशी कर्जकी विपुल धनराशि पानीकी तरह बहाकर 'हाहाहूती' मशीन तथा कृषि-उपकरण किसानके खेत-खलिहानपर खड़ाकर जल-प्रबन्धकी विदेशी पद्धतिपर अव्यावहारिक तथा गलत पद्धति अपनाकर प्रतिवर्ष ९० लाख टन उर्वरकोंका तथा ८० हजार टन कीटनाशकोंको प्रतिवर्ष झोंककर स्वदेशी और परम्परागत बीजोंकी गुणवत्ता समाप्तकर भारतीय मिट्टी जलवायु एवं परिस्थितिके विपरीत विदेशी संकरित बीजोंका प्रयोगकर आज ३०-३२ साल बाद उत्पादनमें आशातीत सफलता मिली? क्या हर पञ्चवर्षीय योजनामें ५ प्रतिशत कृषि-विकासका लक्ष्य प्राप्त किया जा सका? प्रति हेक्टेयर १७ टनसे आगे उपज नहीं बढ़ पायी—क्यों? यदि देशमें २ टन प्रति हेक्टेयर उपज कर पाते तो करोड़ ३० करोड़ टन खाद्यान्न पैदा हो सकता था। १९६७ में ८० ५ बीच ३ करोड़ ५८ लाख टन उर्वरकोंका आयात हुआ अर्थात् इस अवधिमें खादका प्रयोग सात गुना अधिक हुआ। पहले कीटनाशक दवाओंका प्रयोग नहीं के बराबर था, पर जबसे अमेरिका आदि पश्चिमी देशोंमें विषैली कीटनाशक दवाओंका प्रयोग प्रतिबन्धित किया गया तभीसे कीटनाशक दवा-निर्माता कम्पनियोंने भारी कमीशन देकर भारतमें फैलाना शुरू किया। कमीशनकी लालचमें फसल-सुरक्षा (?) के नामपर भारत सरकारने कीटनाशकोंका आयात भारी मात्रामें किया। इन विषैली दवाओंका प्रयोग ५०० टनसे प्रारम्भ हुआ और आज इसकी वार्षिक खपत लगभग ६० हजार टनतक पहुँच गया है।

१९६०-६१ में 'हरित-क्रान्ति' अभियानके प्रारम्भके समय देशमें ६३ हजार ट्रैक्टर थे जो १९७३ में बढ़कर ३ लाख ६६ हजार १९८७ तक ५५ लाखसे ऊपर और अब ८५ लाखसे अधिक हो गये। इनका मूल्य १७ खरब रुपया हुआ अर्थात् १७ खरबका विश्व-बैंकका कर्जा हमपर लादा गया। यह अपार धनराशि विदेशी कम्पनियोंकी तिजोरीमें बंद हो गया। ४२ लाख ट्रैक्टर १० सालके बाद कबाड़ा हो गये। डीजलसे चलनेवाले इंजन १९६३ में ५ लाख थे जो अब बढ़कर ८५ लाख हो गये जिनका मूल्य करीब ८५ अरब ५० करोड़ रुपया हुआ। इनमेंसे आधेसे अधिक बेकार हो गये। बिजलीसे चलनेवाले पम्पिंग-सेट ६६ में ४ लाख थे जो ७६ में २८ लाख और अब ६८ लाखसे अधिक हैं। इनपर भी किसानोंका करीब ७० अरब रुपया खर्च हुआ। कृषि-अनुसंधान और कृषि-शिक्षापर ७७० करोड़से अधिक खर्च हो गया। ये ऑकड़े बोलते हैं कि कृषिकी नयी तकनीकके नामपर अरबों-खरबों रुपया स्वाहा हो गया पर इसका क्या नतीजा निकला? इस विपुल पूँजीनिवेशसे कृषि-उपजपर ठीक-ठीक क्या प्रभाव पड़ा? 'हरित-क्रान्ति'-अभियानके दौरान १९६० से ८० के बीच २० वर्षोंके अन्तरालमें करीब

३५०० करोड रुपये मूल्यका विदेशी गेहूँ आयात करना पडा और खरबोका खनिज तल भी। नयी तकनीकके प्रभावसे लाखा एकड कृषि-भूमि ऊसर बन गयी। यह अत्यन्त खेदजनक गम्भीर प्रश्न है, जिसपर राजनेताओ, अर्थशास्त्रियो, कृषि-विशेषज्ञो और देशभक्त वैज्ञानिकाको राष्ट्र-हितमे ठडे दिमागसे विचार करना चाहिये। नयी तकनीक आनेके बाद जिस अनुपातमे पूँजी-निवेश हुआ, उसकी तुलनामे निश्चित ही पैदावार नहीं बढ सकी।

उपर्युक्त सरकारी आँकडोसे स्पष्ट है कि विदेशी विज्ञान और कृषि-तकनीकका सीधा मतलब है अधिक खर्चपर उत्पादकताके क्षेत्रमे अधिक हानि और नाम-मात्रके लाभपर खेतीका धधा करना। इतनी खर्चीली विदेशी तकनीकके आयातमे आशाके विपरीत परिणाम क्यो भोगने पडे? क्या विदेशी धुनके पीछे हमारे नीति-नियामकोका लगाव पागलपनकी निशानी नहीं है? क्या हमारे पास विदशी तकनीकके अलावा कोई स्वदेशी विकल्प नहीं है? अथवा कडवा घूँट पीकर अधे होकर इसीका अनुकरण करते जाना है?

गोधनकी समस्या—भारतवर्ष ५ लाख ७६ हजार गाँवोमे बसा है। इसीलिये भारत माताको 'ग्रामवासिनी' कहा गया है। भारत कृषि-प्रधान देश है और हमारी 'कृषि-सस्कृति' ही मूल सस्कृति है। १९२८ मे जब सरदार पटेल 'बारदोली' सत्याग्रह-आन्दोलनमे जेलमे बद थे—एक अग्रेज पत्रकार उनसे मिलने गया। पत्रकारने व्यग्यात्मक लहजेमे उनसे पूछा—'ह्वाट इज योर कल्चर' (आपकी सस्कृति क्या है?) पटेलजीने तपाकसे सटीक उत्तर दिया—'माई कल्चर इज एग्रीकल्चर' (मेरी सस्कृति कृषि-सस्कृति है) अग्रेज पत्रकार ऐसा निर्भीक उत्तर सुनकर दग रह गया।

कृषि-विकासका आधार गोवशका विकास है। गाय हमारी माता है। ऐसी ममत्व और मातृत्व स्नेहकी भावना चिरकालसे है। गौ माताके अन्तर्गत सभी देवताओका वास है। यह आदिशक्ति 'ॐ' और 'श्री' का प्रतीक है। गोहत्या करना भारतसे देवत्व-भावको समाप्त करना है। जब-जब भारतमे गोवशका ह्रास हुआ—देवत्व-ममत्व-स्नेह-भावका विनाश हुआ है, तब-तब पुन देवत्व-भाव पेदा करनेके लिये, गोवशकी रक्षाके लिये कोई-न-कोई दैवीशक्ति भारतमें अवतरित हुई है।

ऐसे ही समय जब गोवशका तेजीसे ह्रास हुआ, सोना उगलनेवाली धरती रेत-रेह-क्षार उगलने लगी चारो ओर हाहाकार मच गया तभी नररत्न हलधर-बलराम और गोपाल-श्रीकृष्ण युगपुरुषोने जन्म लेकर भारत-वसुन्धराका उद्धार किया। दोनो हरित-क्रान्ति और श्वेत-क्रान्तिके महानायक बन गये। हलधर बलरामने जो महान् कृषि-वैज्ञानिक थे—सारी ऊसर और बाँझ हो गयी धरतीको कृषि-योग्य भूमि बनाकर हरा-भरा कर दिया खाण्डवप्रस्थ (पथरीली भूमि) को इन्द्रप्रस्थमे बदल दिया। गोपाल श्रीकृष्णने गोवश-विकासका आन्दोलन चलाया। ग्वाल-बालो-गोपालकोको सगठित किया और देशमे श्वेत-क्रान्तिकी लहर पैदा कर दी। इन्हीं दो महापुरुषोकी घोर तपस्या—पुरुषार्थ और पौरुष तथा पुण्य-प्रतापसे भारत पुन धन-धान्य-सम्पन्न और वैभव-पूर्ण बन गया। उस समय 'गाय' और 'स्वर्णमुद्रा' वस्तुओके मूल्याङ्कनका मानक माना गया। उस समय सम्पत्ति-मूल्याङ्कनकी कुछ पदवियाँ निर्धारित की गयीं। जैसे १० हजार गाये अथवा १० हजार स्वर्णमुद्रा-धारकको 'गोप' कहा गया तथा एक लाख गाय अथवा एक लाख स्वर्णमुद्रा धारकको 'नन्द'की पदवीसे विभूषित किया गया।

पर अत्यन्त खेदका विषय है कि आजादीके ४७ वसन्त बीतनेके बाद भी गोवशकी हत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सका। गुलामीकालमे १४ सरकारी बूचडखाने थे, जो अब बढकर २१ हो गये हे। कुछ वर्ष-पूर्व केन्द्र-सरकारने निजी क्षेत्रमे नये बूचडखानोके लाइसेस जारी किये थे जो अब बढकर ३,००० हो गये हैं। सभी सरकारी बूचडखाने स्वचालित विद्युत्-सयन्त्रोसे सचालित हैं, जिनमे ३० हजार गोवश रोज काटा जाता है। इस प्रकार १२० लाख गोवश प्रतिवर्ष काटकर गोमास वाफ तथा क्रूम विदेशोको निर्यात कर ३ अरब डालर विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है।

निर्यात-सवर्धन और डालर-प्राप्तिकी ललकमे बदर-कछुआ और मेढक-जैसे जीवित प्राणियोके निर्यातके साथ भारी मात्रामे गोमासका निर्यात कर भारत सरकार खाद्यान्न, दूधका पाउडर, रासायनिक खाद, मशीनके पुर्जे, रपसीड

आयल और पेट्रोलियम पदार्थ मँगाती रही है। गोमास-निर्यातमे वृद्धिके लिये अत्याधुनिक तकनीकपर आटोमेटिक प्लाट लगानेकी विदेशी कम्पनियाको अनुमति मिल गयी है। उसके तहत हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) के 'अल कबीर' मे तथा हरियाणाके गुडगॉव जिलेमे आधुनिक सयन्त्रासे बूचडखाने स्थापित किये जायँगे। इन कारखानाकी चार हजार टन गोमास-उत्पादनकी दनिक क्षमता है। भारत सरकारने गोमास-उत्पादनको भी भेड-बकरी, सुअर मछली मुर्गी आदिके साथ कृषि-उत्पादनम शामिल कर लिया है। ये सभी पदार्थ निर्यात-सूचीम शामिल किये गये हैं।

१९५५-५६ म जब भारत सरकारने भारी उद्योगाके नामपर भारी भरकम विदेशी कर्ज सशर्त स्वीकार किया तभी व्यापारिक अनुबन्ध पी०एल० ४८० के तहत २० वर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत कर्ज-प्राप्तिकी कठिन शर्तोके साथ गोमास बीफ तथा क्रूम आदि निर्यातकर खाद्यान्न रेपसीड आयल खनिज तल, सूखा दूध, मशीन, कल-पुर्जे आदि आयात किया जाता रहा। १९८० म इस समझौतेको १० सालके लिये बढाया गया फिर १९९० मे २००० ई० तकके लिये विदशी कर्ज प्राप्त करनकी ललकमे अनुबन्ध किया गया। यदि यही गति जारी रही तो शायद २१ वी सदीका प्रथम सूर्य जब उदय होगा तो भारत गोवशके दर्शन करनेसे भी वंचित रह जायगा।

१९४७ मे देशम ७० करोड गोवश था। इनमसे ३६ करोड दुधारु गाय और सात करोड जोडी बैल थे। पर १९८१ की गणना (पशु-गणना) के आधारपर २४ करोड गोवश रह गया जिसमसे दूध देनेवाली गाय घटकर ३६ करोडके बजाय ६ करोड रह गयीं और बैलाकी जोडी सात करोडसे घटकर एक करोड रह गयी। १९९१ की गणना-रिपोर्टमे विदेशी गायाकी सख्या बढी पर भारतीय परम्परागत स्वदेशी प्रजातिका गोवश काफी घट गया। बैलाकी सख्या करोडोके स्थानपर लाखाम और दुधारु गायाकी सख्या एक करोड रह गयी। गोवश-विनाशकी यही गति जारी रही तो सचमुच २००० ई० तक यह सख्या शून्यतक पहुँच जायगी।

किसानाकी दशा—भारतमे आज भी ८३ ८६ प्रतिशत किसानाकी सख्या है। देशके ८३ करोड एकड क्षेत्रफलमसे केवल ३५ करोड एकड कृषि-भूमि बची है और इसीपर ८७ करोड जनताका भरण-पोषण होना है। देशम १२५० लाख किसान-परिवार और ३५० लाख भूमिहीन खेतिहर श्रमिक हैं जिनके पास एक एकडसे कम भूमि है या बिलकुल भूमिहीन हैं। ग्रामीण जनसख्या करीब ७० करोड है जिसमेसे ४८ ४ प्रतिशत (३६ करोड) गरीबीकी रेखासे नीचे जी रहे है जिन्हे दो जून भरपेट भोजन नहीं मिलता। २१ करोड भूमिके खातेदार हैं। १७ करोड एकड भूमि आज भी ऊसर-परती-बजर-बीहड-रेतीली और दलदली है। उक्त सारी भूमि कृषि-योग्य बनाकर भूमिहीनाको आवटित की जाय तो हर एकको पाँच एकड भूमि हिस्सेम आयेगी। फिर कोई भूमिहीन नहीं रहेगा और बेरोजगारीके कलकको मिटाया जा सकेगा। इनके पास 'हीरा-मोती' बैलाकी जोडी भी होनी चाहिये।

दस एकडसे अधिक कृषि-भूमि-धारकाकी कुल चार प्रतिशत यानी ८० लाखके करीब है। बैलाके अभावमे विकल्पके रूपमे ८५ लाख ट्रैक्टर जरूर खडे किये गये किंतु अबतक ४२ लाख ट्रैक्टर पुराने हो गये हैं, जो बेकार है। इन्हे भारतभूमिपर खडा करनेके लिये १७ खरब रुपयेका पूँजी-निवेश विदेशी कर्जसे किया गया। विदेशी आर्थिक सहायताका ऐसा मायाजाल है कि इस षड्यन्त्रमे फँसकर अपार धनराशि विदेशी कम्पनियोकी तिजोरियोमे पुन बद होकर रह गयी। यदि आजादी मिलनेके साथ ही विदेशी जालमे न फँसकर स्वदेशी योजना बनायी गयी होती और कुल ५२ करोड एकड (३५+१७) भूमिके लिये २० करोड जोडी बैलाकी जरूरत पूरी करनेके लिये १७ खरब रुपया गोवशके विकासपर खर्च किया गया होता तो आज हर किसानके पास एक जोडी बैल खडे हो जाते। यदि प्रारम्भमे ही गो-हत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर गोवशका समुचित विकास किया जाता तो भरपूर दुग्ध-उत्पादनके साथ देशका आर्थिक सास्कृतिक एव आध्यात्मिक उत्थान भी सहज ही सम्भव हो जाता। देर ही सही यदि अभी भी सद्बुद्धि आ जाय तो इस देशमे दूध-दहीकी नदियाँ बह सकती है। निराश होनेकी जरूरत नही इस ओर दृढ सकल्प कर अग्रसर हो सतत प्रयत्नशील रहनेकी आवश्यकता है।

गोवंशकी रक्षा कैसे हो?

(पञ्चखड पीठाधीश्वर आचार्य श्रीधर्मेन्द्रजी महाराज)

हमारा देश ससारका सबसे बडा लोकतन्त्र है, किंतु जनताकी इच्छाकी अपरिमित शक्तिका अनेक बार प्रत्यक्ष साक्षात्कार करनेपर भी सत्तारूढ शासकोद्वारा जनताकी इच्छाकी जितनी अवहेलना हमारे इस अद्भुत लोकतन्त्रमे होती रही हे, वह भी अपनेमे एक अद्वितीय उदाहरण हे। भारत ही विश्वका वह एकमात्र महादेश है जो भावनाओपर जीता है और भारत ही वह एकमात्र अभागा लोकतन्त्र है, जिसम जन-भावनाआका जनताके द्वारा चुने गये शासकोने कभी भी आदर नहीं किया। यह विसगति न होती तो कोई कारण न था कि स्वाधीनता-प्राप्तिके पूरे ४७ वर्ष पश्चात् आज भी देशके भावुक गोभक्त-समुदायको गावशके निर्मम सहारपर विवशतापूर्ण अश्रुपात करना पडता या गोहत्याके विरुद्ध आज भी सत्याग्रहो उपवासो और आन्दोलनोका आश्रय लेना पडता। गोपाल और गोविन्दके रूपमे भगवान्‌की पूजा करनेवाले और 'गोमाताकी जय' बालनेवाले ८० प्रतिशत गोभक्त मत-दाताआके मतासे चुनी गयी जो सरकार सम्पूर्ण तर्कों ओर सामाजिक न्यायकी अपेक्षाआकी उपेक्षा करके साम्प्रदायिकताक आगे आत्मसमर्पण करती देखी जा सकती हे, वह निरपराध, निरीह गोवशके बहुमूल्य गाधनके निर्मम सहारको रोकनेके लिये बहुसख्यक समाजके किसी भी आन्दोलन, अनुनय-विनय या अनुरोधपर किचित् भी ध्यान देनेको तत्पर नहीं है इससे बडी लज्जाजनक विडम्बना क्या हो सकती ह?

इस दशकी सरकार मगरमच्छोकी लुप्त हाती प्रजातियाकी रक्षाके लिये चिन्तित है, इस देशके तथाकथित बुद्धिजीवी सिंहो, बाघो और चीताके वश-लोपकी सम्भावनापर व्याकुल हो उठत हैं। हिसक जीव-जन्तुआकी रक्षाके लिये इस देशमं अभयारण्योकी व्यवस्था की जाती है, किंतु भारतकी मानव-हितकारिणी अद्वितीय उत्कृष्ट गो-प्रजातियाका सर्वथा उच्छेद होने जा रहा है इसमे न तो इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिको रोकनेके लिये सरकार उत्सुक है न तथाकथित बुद्धिजीवियाको इस ओर ध्यान देनेका अवकाश है।

राजस्थानके मरुप्रदेशम एक पक्षी होता हे—'गोडावण'। कुछ वर्षों-पूर्व उसका शिकार करनेको उद्यत अरब शाहजादाका रोकनके लिये कुछ पक्षीप्रेमी दयालुओने पत्र-पत्रिकाआमें आन्दोलन चलाया ओर सौभाग्यसे अत्यल्प सख्याम पाया जानेवाला वह पक्षी नष्ट—निर्मूल होनेसे बच गया। वैसे तो सभी प्राणियोकी रक्षा होनी उचित है, सा 'गोडावण' की प्राण-रक्षासे सभीका प्रसन्न हाना स्वाभाविक है, किंतु शोकपूर्ण स्थिति तो यह हे कि जिन दूरदर्शियाको बालुकाके अनन्त प्रसारमे छिपा हुआ 'गोडावण' भी दिखायी दे गया उन्हे उसी राजस्थानका प्रत्यक्ष नष्ट हो रहा बहुमूल्य 'गोवश' क्यो नहीं दिखायी देता? राजस्थानके बेजोड राठी गाय, बैल, थारपारकर, साचेरी और नागोरी-वशके गोपशु अब सर्वनाशके कगारपर खडे हैं। प्राकृतिक अकाल और गोहत्याराका विस्तृत जाल—ये दोनो मिलकर उन्हे नष्ट—निर्मूल करनेपर तुले हैं, किंतु देशके तथाकथित बुद्धिजीवी वर्गमे या शासकोम कहीं कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखायी देती।

गोवशकी दुर्लभ प्रजातियाँ हरियाणवी और गिर कलकत्ता-बबई ओर केरलके कसाईखानोम कट-कटकर नष्ट होती जा रही हैं। इस अद्भुत देशम सिहो, बाघो, वनमानुषा और मगरमच्छातकको वकील मिल जाते हैं, किंतु 'गोवश' की रक्षाके नामपर स्वयको पढा-लिखा ओर प्रगतिशील कहनेवाला वर्ग नाक-भौं सिकोडता है और गोरक्षाके प्रयत्नाको तिरस्कारपूर्ण दृष्टिसे देखता है। जो देश-हितैषी गोभक्त गोवशकी रक्षाके लिये आन्दोलन करते रहे हैं उन्हे साम्प्रदायिक ओर पोगापथी कहना तथाकथित प्रबुद्ध-वर्गम फैशन बन गया हे। सत्तामे बैठे लोग या तो उसी तथाकथित प्रबुद्ध-वर्गसे सम्बद्ध हे या गोकशी-साम्प्रदायिक वोटाके हाथा बिके हुए हैं।

एसी अन्धकारपूर्ण स्थितिम निरपराध निरीह गोवशकी रक्षा कैसे हो? यह प्रश्न आज देशके करोडा गोभक्ताके हृदयाको व्याकुल कर रहा हे।

गोहत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवानके लिये १९४७से ही यत्र-तत्र आन्दोलन, अनशन प्रदर्शन ओर प्रयत्न हाते रह, किंतु १९६६ मे दिल्लीम जो सत्याग्रह हुआ वह अभूतपूर्व था। उस आन्दोलनका विवरण देना या उसकी विराटताके प्रमाण प्रस्तुत करना अभीष्ट नहीं है। उस आन्दोलनके व्यापक प्रभावका सबसे बडा प्रमाण है कि १९६७ मे पूरे हिन्दी-भाषी प्रदेशाम सरकारका पराजयका मुख देखना पडा और गाहत्या-विरोधी आन्दालनसे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जुडे विपक्षी दलाकी सविद् सरकार सत्तारूढ हुईं।

गोरक्षाकी भावनासे भारतीय मतदाताका मानस कितना अभिभूत है, इसका यह स्पष्ट प्रमाण था, किंतु फिर भी

गोहत्या बद नहीं हुई और गोभक्षक साम्प्रदायिकताके आगे समर्पित अवसरवादी राजनीति टस-से-मस नहीं हुई।

आज गोरक्षा-आन्दोलन विखरा पडा है। १९८०मे सत विनोबाके द्वारा नैतिक प्रभाव डलवाकर गोवश-रक्षाकी अभीष्ट-सिद्धि करनेका प्रयत्न दुर्भाग्यसे विफल रहा। १९८२से निष्ठावान् गोभक्त बबईके गोहत्या-गृहके द्वारपर अखण्ड सत्याग्रह कर रहे हैं, दिल्लीमे भी उस सत्याग्रहकी भावनाको जाग्रत् करनेके लिये साप्ताहिक सत्याग्रह चलाया गया। सम्पूर्ण देशमे गोहत्या-निषेध-आन्दोलनकी चेतना फिरसे फैलानेकी आवश्यकता है।

आज यह भी बात उठायी जाती है कि देश अनेक गम्भीरतम समस्याओ और वैदेशिक नीतियोके उलझनोमे फँसा हुआ है ऐसी स्थितिमे गोहत्याके प्रश्नको उठाना कहाँतक सगत है, बात कुछ हदतक ठीक भी लगती है किंतु ये समस्याएँ भी उत्पन्न हमींने की है। तो इसके लिये जिम्मेदार भी हम खुद स्वय है। देशकी जनताकी भावनाओकी उपेक्षा ही अभिशापके रूपमे शासकोके सामने खडी है। इसका हल राष्ट्रिय नीतियोमे परिवर्तनसे ही सम्भव है। तभी देशको पतनके मार्गसे बचाया जा सकता है।

गोवशकी रक्षाका प्रश्न इतना तुच्छ या महत्त्वहीन नहीं है कि उसके समाधानके लिये देशकी शेष स ख्याओके हलतक प्रतीक्षा की जाय। भारतकी ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सस्कृतिकी रीढ गोवशके अस्तित्वकी रक्षाका रचनात्मक आन्दोलन अप्रासगिक कैसे हो सकता है?

निश्चय ही देशकी बहुसख्यक जनता आज भी गोवशको नष्ट होते देखकर दुखी है, ८० प्रतिशत ग्रामीण भारतके गोभक्त नर-नारी, गाय और उसके वशको बचाना चाहते है, किंतु इतने विपुल बहुमतकी भावनाको एक सगठित शक्तिके रूपमे जाग्रत् करके गोहत्याका प्रचण्ड प्रतिरोध करनेके लिये जैसे सुयोग्य, कर्मठ और सुदृढ नेतृत्वकी आवश्यकता है, उसका आज नितान्त अभाव है।

केवल कानून बना दिये जानेसे गोवशके प्रति देश और देशवासियोका कर्तव्य पूरा हो जायगा ऐसा नहीं है। प्रबल राष्ट्रिय सकल्प और शासकीय कानूनद्वारा पहले गोवशको कटने और मिटनेसे बचाया जाय और उसके पश्चात् व्यापक गोसवर्धन-गोपालन-योजना बनाकर उसे कार्यान्वित किया जाय तो २१ वीं शताब्दीके आगमनतक देशकी कृषि ग्रामोद्योग और अर्थव्यवस्थाके क्षेत्रमे चमत्कारपूर्ण क्रान्ति आ जायगी।

पृथ्वी और स्वर्गके देवताओकी रक्षा गाय और सत करते हैं, किंतु इन दोनोमेसे किसीपर सकट आये तो कौन रक्षा करेगा? सतोकी रक्षा गाय करेगी और गायोकी रक्षा सत करेगे। सत-सस्कृतिकी सरक्षिका गोमाता है। गोमाता नष्ट हो गयी तो सत भी नष्ट—निर्मूल हो जायँगे। इसलिये गोमाताके भक्तो एव सतोको जगाओ और उन्हे गोमाताकी रक्षाके युद्धकी अग्रिम पक्तिमे लगाओ। आगे सत हो पीछे सत-पूजक सारा भारतीय समाज हो गाय तभी बचेगी, अन्यथा नहीं।

गोशाला कैसी हो?

समुचित गोपालनके लिये गोशाला सुन्दर, स्वच्छ ओर विचारपूर्वक बनायी जानी चाहिये, क्योकि अच्छे स्थानमे रहनेपर पशु सुखी और स्वस्थ रहते हैं। विदेशोंमे बडी-बडी धनराशि लगाकर भव्य गोशालाओका निर्माण किया जाता है। वहाँकी गोशालाओमे तो कहीं-कहीं बिजली तथा रेडियो तकका भी प्रबन्ध होता है।

गोशाला खूब हवादार बनानी चाहिये, क्योकि गायोको प्राणवायु (ऑक्सीजन) की काफी आवश्यकता होती है। इमारत पक्की बनायी जाय तो अच्छा है। साधारण फूस छाकर विधिवत् बनायी गयी कच्ची ओर सस्ती गोशालामे भी पशु आरामसे रह सकते हैं।

स्थान—जहाँतक सम्भव हो गायोके रहनेकी जगह शान्त, खुली हुई और बस्तीसे दूर हो तो अच्छा है। इससे गाडी आदिके आने-जाने, बस्तीके नालोकी गदगी तथा सक्रमणका भय न रहेगा। यहाँ वे स्वच्छन्दतापूर्वक आ-जा सकेगी।

गोशाला समतल तथा ऊँची भूमिपर होनी चाहिये ताकि वहाँ आस-पासका पानी आकर इकट्ठा न हो पाये। इसके आस-पास गदे पानी या कूडा-करकटसे भरे गड्ढे न होने चाहिये। अन्यथा गदी वायु और मच्छर-मक्खीके

प्रकारसे गायोंको कष्ट पहुँचेगा तथा उनका दूध भी दूषित हो जायगा। गोशालाको हमेशा साफ रखना चाहिये।

गोशालासे एक-दो मीलके फासलेपर बहती हुई नदीका होना बहुत सुविधाजनक है, क्योंकि वहाँ जाकर पशु अच्छी तरह नहा सकेंगे और पानी पी सकेंगे। बड़ी गोशालाओंके लिये उपयुक्त स्थान वह है जो बस्तीसे दूर ऊँचे समतलपर तथा नदीके निकट हो।

कच्ची गोशाला—शालाके चारों तरफ बाड़ मिट्टीकी दीवार उठाकर बना लें। काँटोंकी बाड़में पशुओंके खरोंच लगनेका भय रहता है। पशुओंकी संख्याके हिसाबसे लंबा-सा बरामदा बना लें तथा ऊपर सीमेंटकी पक्की छत ढलवा दें। यदि धनाभाव हो तो वहाँ लकड़ीके गोल खंभोंके सहारे फूसका छप्पर बना दिया जाय। इस बरामदेके एक ओर या बीचमें नाँद बनी होनी चाहिये। जहाँतक हो सके कम-से-कम नाँद तो पक्की ही बनवायें अन्यथा मिट्टी और भूसको मिलाकर बनायी गयी कच्ची नाँदसे भी काम चल सकता है। कुम्हारद्वारा बनाये हुए मिट्टीके बड़े-बड़े कुंड भी नाँदके लिये अच्छे होते हैं।

फर्शपर निरी मिट्टी ही होगी तो वहाँ कीचड़ शीघ्र हो जाया करेगा। कुछ ईंटके टुकड़े और रोड़े आदि कूटकर फर्शको पक्का तथा समतल बना देना चाहिये। हर दूसरे दिन नयी मिट्टी और पत्ते आदि बिछाकर पहले दिनकी बिछी हुई इन चीजोंको 'कम्पोस्ट खाद' बनानेके काममें लायें।

दूध-पीते छोटे बछड़-बछियोंको रखनेके लिये बाँस लगाकर बाड़ा बना लें। उनके लिये कम ऊँची नाँदोंमें सानी तथा पानीका प्रबन्ध करना चाहिये। भूसा दाना खली और गोरस रखनेके लिये अलग-अलग कोठरियाँ बना लें। ग्वालेके रहनेके लिये एक कुटिया भी अलग हो।

पक्की गोशाला—इसके बनानेमें काफी खर्च करना होता है पर इससे बहुत समयके लिये सुविधा हो जाती है। इसे चतुर राजमिस्त्रियोंसे बनवाना चाहिये। इसकी चहारदीवारी छः या सात फुट ऊँची हो, ताकि बाहरसे आने-जानेवालोंकी दृष्टि गोशालाके भीतरी कार्यक्रमपर न पड़े। दरवाजा खूब चौड़ा-सा हो और सुडौल हो। यहाँ कोई भी चीज पैनी और नुकीली नहीं होनी चाहिये। गोशालाके बीचमें खुला हुआ आँगन होना चाहिये, जहाँ सुबह-शाम गायें बैठ सकें। गायोंकी संख्याके हिसाबसे बरामदे आठ-नौ फुट चौड़े और लंबे बना लिये जायँ। एक गायको बाँधनेके लिये ५×१० फुट जगह काफी होती है। एक ओर नाँद बनी हो तथा फर्श पीछेकी ओर ढलवाँ हो, जहाँ कि नालीसे गोमूत्र तुरत ही बहकर बाहर निकल जाय।

टीनकी छत धूपसे तप जानेके कारण अच्छी नहीं रहती। कड़ियोंकी छतमें साँप आदि जीव-जन्तु घर बना लेते हैं, अतः वह भी ठीक नहीं। डाट, लिंटर या ऐजबस्टासकी नालीदार छत सबसे अच्छी रहेगी।

नाँद दो फुट लंबी, डेढ़ फुट चौड़ी और ढाई फुट ऊँची होनी चाहिये। इसमें ऐसी नाली बनी होनी चाहिये, जो डाट लगाकर बंद कर दी जा सके तथा साफ करते समय खोल ली जाय। नाँदको हर रोज धोकर साफ कर देना चाहिये। फर्शपर पत्थर या सीमेंट बिछाकर उसे चिकना कर देना ठीक नहीं है, क्योंकि फिसलन हो जानेसे गायके गिरनेका डर रहता है। कंकरीट और चूनेकी रोड़ी मिला लें तथा फर्शपर भली-भाँति कूटकर उसे मजबूत एवं समतल बना दिया जाय। वह ऊँचा-नीचा और गड्डेदार न हो। जगह-जगहपर सीमेंटसे पक्की नालियाँ बनवा लेनी चाहिये। जरूरतकी जगहपर ईंटें लगवा लें। गोशालामें भूसा भरने, खली-दाना रखने, चारा काटनेकी मशीन लगाने तथा गोरस रखनेके लिये अलग-अलग, सुगमतापूर्वक पहुँचवाले, भण्डार होने चाहिये। साइलेज-कूपका बनवाना बहुत लाभदायी होगा।

एक-दो कमरे जरा अलग हटकर ऐसे बने हों, जहाँ बीमार जानवर रखे जा सकें। उसके पास ही दवा सुरक्षित रखनेके लिये एक कोठरी भी होनी चाहिये।

अड़गड़ा (Cattle Crush)—यह लकड़ीका बना होता है। दवावाले कमरेके पास इसका होना भी जरूरी है। इसके भीतर जानवरको फँसाकर सहूलियतसे खड़ा किया जा सकता है और उसकी बीमारीकी जाँच करनेमें सहूलियत रहती है।

प्रसूतिका कमरा—गायके ब्यानेके लिये बड़ा और साफ हवादार एक कमरा होना चाहिये उसमें नरम साफ और सूखी घास आदि बिछा दी जाय, ताकि ब्याते समय गायको आराम मिले। बादमें उसे उठाकर खाद बनानेके कूपमें डाल दें।

गोरस-भण्डार—दूध रखने, तौलने और किताब रखनेके लिये एक छोटा-सा कमरा होना चाहिये। इसमें जालीदार किवाड़ और खिड़की होनी चाहिये ताकि मच्छर-मक्खी न घुसने पायें।

साँडके रहनेके लिये काफी जगह अलग हानी चाहिये। छाटे बच्चांके लिये भी बाडदार बरामदे अलग बने हा।

नाप—गाशाला आवश्यकताके अनुसार लबी-चौडी और खूब फली हुइ हा। एक पशुका खड रहनेके लिय कम-से-कम ५'×१० फाट जगह चाहिय। पाराणिक मतके अनुसार चौडाईको लबाईसे गुणा करक गुणनफलको ८ से भाग देनेपर यदि ५ बच रहे तो वह वृष-आयवाली गोशाला शुभ मानी जाती है।

सिह अथवा सर्पके मुखवाला गोशाला बनाना अच्छा नहीं माना जाता।

पानी—सबसे पहले पशुआके लिये जलका प्रबन्ध करना आवश्यक है। नलके द्वारा जमीनसे हर समय साफ पानीके खींचनेका प्रबन्ध होना चाहिये। यदि साफ पानीका झरना सोता या नल बराबर २४ घट हा झरता रहे ता बहुत अच्छा है। कुएँसे भी काम चल सकता है परतु वह ढका हुआ और ऊँचा हाना चाहिय। पशुआकी नाँदक पास एक हौजम साफ पानी सदैव भरा रहना चाहिये ताकि प्यास लगनेपर पशु भर-पेट पानी पी सक।

गोशालाम पानीकी जरूरत निरन्तर बनी रहती है इसलिये उसके प्रबन्ध करनेका विशेष ध्यान रखना चाहिये।

कुछ सुव्यवस्थित गाशालाआमे छोटा और दो तरफसे खुला हुआ एक हौज (Cattle dip) बना हाता है जिसमे पानी भरा और निकाला जा सकता है। इस पानीमे कृमिनाशक दवाएँ डालकर गायाको तैरा दिया जाता है, जिससे किलनी आदि व्याधियाँ दूर हो जाती हैं। गायाको नदीमे नहलाना भी बहुत लाभदायक है।

सफाई—गोशाला हमेशा साफ-सुथरी रहनी चाहिय। वहाँ बकरी, कुत्ते और मुर्गी आदि जानवराको न जाने दे क्योकि ये गायकी सानीकी चीजाको अशुद्ध कर देते हैं। वहाँकी दीवारोपर हर साल एक बार चूनकी सफेदी करा देनी चाहिये।

पशुआको मक्खियासे बचानेके लिये शालामे नीमके पत्तो या लोबान आदिकी धूपका धुआँ जरूर करना चाहिय। गोशालाकी नालीका सुबह-शाम पानीसे धाकर साफ रखना चाहिये। गाशालाके बाहरकी ओर जहाँ मुख्य एव बडा नाली गिरती हो वहाँ एक बडा-सा हौज बनाकर उसमे एक बर्तन रख दे, जिसमे पशुओका मूत्र और शालाके धोवनका पानी इकट्ठा होता रहे। बरतनके भर जानपर कम्पोस्ट खादक बनानेमे इस पानीका डालना लाभदायी होगा। शाला कभी-कभी फिनैलमे धुलवा दी जानी चाहिये।

गाशालाम रातके समय दीपक जलाना अच्छा माना जाता है। गाशालाके आँगनमे नीम या पीपलके एक सघन छायादार पेडका होना बहुत स्वास्थ्यकारी और उपयोगी होता है। पेडकी छाया जाडे और गर्मियाम हमेशा ही पशुआको आराम पहुँचाती है।

गाशाला एसी हो कि जहाँ सूयका रोशनी अच्छी तरह पहुँच सके ताकि हानिकर कीटाणु वहाँ पैदा न हो पाय। खुली हुई हवादार जगहमे रहनसे गाय-बैल प्रसन्न रहते हैं।

बर्तन—दूध दुहने और रखनेके लिये खास तौरकी बनी बाल्टी आदि बरतन गोशालामे रहने चाहिये। दाना-खली भिगानेके लिये एक बडा-सा बर्तन हो या एक हौज ईंट-सीमेटका बनवा लिया जाय। कुछ बाल्टिया और टोकरियाकी भी जरूरत पडेगी। दवा पिलानेके लिये छोटी-बडी बाँसकी बनी हुई २-३ नाल भी रखी रहे।

किताब—गोशालामे हर एक पशुका जन्मपत्र दाना-खलीका लेखा और दूधका ब्योरा लिखी हुई पुस्तक होनी चाहिये। महीने भरका आमदनी और खर्च भी लिखा रहे। यदि नुकसान नजर आये तो उसके कारणकी तुरत खोज करे। व्यवस्था रखनेसे नुकसान न हो पायगा।

ओषधि—व्यवस्थित गोशालामे साधारणतया काम आनेवाली सारी ओषधियाँ तैयार करके रखनी चाहिये ताकि जरूरत पडनेपर इधर-उधर भटकना न पडे।

अन्य हिदायत—गायको बाँधनेकी रस्सी चिकनी और सनकी बनी होनी चाहिये क्योकि सूतकी रस्सी बडी जल्दी मैली हो जाती है। लोहेकी जजीरसे भी काम लिया जाता है। रस्सी बाँधनेके खूँटे नुकीले न हो बल्कि गोल हों।

पशुआकी गिनती करनेकी सुविधाके लिये उनके कानो या पुट्ठोपर अक दाग दिये जाते हैं जो सदा बने रहते हैं। पशुआको नाम या सख्याके द्वारा सहज ही पहचाना जा सकेगा।

साधारण तौरपर काममे आनेवाले औजार यथा—चाकू, हँसिया कैंची सुई, सूजा सँडासी आदिका होना जरूरी है। इन्हे काममे लानेके पहिले सदा साफ कर लेना चाहिये और कृमिनाशक जलमे उबाल कर कीटाणु-रहित कर लेना चाहिये। उपचार करते समय हाथ तथा नाखूनाको भी साफ करके कृमिनाशक घोलसे धो लेना चाहिये।

श्री श्री श्री

गोशालाओंका विवरण

(१) श्रीकृष्ण गौशाला कैलाशनगर, (गाजियाबाद)

'श्रीकृष्ण गोशाला' अत्यन्त प्राचीन गोशाला है। इसकी स्थापना आजसे लगभग ९० वर्ष-पूर्व सन् १९०४ ई० में कैलाशनगर, गाजियाबादमें हुई। यह गोशाला एक आदर्श गौशालाके रूपमें मान्य रही है। इसने जिला तथा प्रान्त-स्तरपर हुई प्रतियोगिताओंमें सर्वोत्तम गाय तथा सर्वोत्तम साँडके लिये अनेक पुरस्कार भी प्राप्त किये हैं। बीचमें इस गोशालाकी व्यवस्था कुछ अनियमित-सी हो गयी थी, किंतु अब पुनः इसे सुव्यवस्थित कर लिया गया है। गोशाला-परिसर तथा गोष्ठोंका जीर्णोद्धार भी हो गया है। इस गोशालाके प्रयत्नोंसे समय-समयपर अनेक गायोंको कसाइयोंके चंगुलसे मुक्ति प्राप्त हुई और उन्हें उचित संरक्षण भी प्राप्त हुआ है।

इस समय गोशालामें गाय, बैल, बछिया तथा बछड़ोंकी कुल संख्या मिलाकर ३०१ है। जिनमें मुख्य रूपसे हरियाणा, साहीवाल, जर्सी, रेडडेन तथा देशी नस्ल हैं। किंतु आस-पास सघन आबादी होनेसे गोचरभूमि नहीं है। चारा आदिकी व्यवस्था अन्यत्रसे करनी पड़ती है। गायोंसे प्राप्त दूधकी बिक्री तथा गोबर-गैस-संयन्त्र और गौशालाको प्राप्त दानराशिसे सभी कार्य सम्पन्न होते हैं। गायोंकी चिकित्साके लिये चिकित्सक भी नियुक्त हैं। गौ माताकी कृपासे गौशालाका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है।

गोपालन एवं गोसंवर्धनके लिये आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग कितने उपयोगी अथवा अनुपयोगी है तथा गोपालनमें कौन-कौन-सी कठिनाइयाँ आती हैं और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है, इसके साथ ही एक आदर्श गोशालाका स्वरूप कैसा होना चाहिये?—इस सम्बन्धमें इस 'श्रीकृष्ण गौशाला'के अनुभवों, मान्यताओं, विचारों तथा सुझावोंको यहाँ दिया जा रहा है—

आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग

कृत्रिम गर्भाधान तथा भ्रूण-प्रत्यारोपण और इंजेक्शन लगाकर अधिक दूध प्राप्त करनेको 'आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग' कहा जाता है, किंतु यह 'श्रीकृष्ण गोशाला' उसके पक्षमें नहीं है। साथ ही हम अपनी भारतीय नस्लोंको पूर्णतः सुरक्षित रखते हुए उन्नत देशी साँडोंके माध्यमसे गर्भाधान कराकर नसल-सुधार करना चाहते हैं, क्योंकि गोवंशकी संकर-नस्लें हमारे देशकी जलवायुके लिये उपयुक्त नहीं हैं। उनका रख-रखाव महँगा है। वे बहुत अधिक खाती हैं। अधिक बीमार होती हैं। उनमें मृत्यु-दर भी ज्यादा है। गर्मी उन्हें सहन नहीं हो पाती। अतः भारतीय उत्तम नस्लको ही बढ़ावा देना चाहिये।

गोपालनमें कठिनाइयाँ तथा उन्हें दूर करनेके उपाय

(क) प्रशिक्षित एवं समर्पित कर्मचारियों तथा प्रबन्धकोंका अभाव दूर करनेके लिये गोशाला-प्रबन्धन तथा गोसेवा-प्रशिक्षण-शिविर लगाये जायँ और वहाँ इन विषयोंपर विस्तारसे विचार करके उन्हें व्यावहारिक रूप दिया जाय, इससे यह समस्या दूर हो सकती है।

(ख) हमारे देशमें लार्ड मैकाले-प्रणीत शिक्षा-पद्धति लागू रहनेके कारण हमारी नयी पीढ़ी गोवंशके महत्त्वके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं जानती। फलस्वरूप पढ़े-लिखे युवकोंमें गोपालन एवं गोसेवाके प्रति कोई रुचि नहीं है। इतना ही नहीं, वे लोग गोपालनको गंदा एवं निकृष्ट कार्य समझते हैं। गोबरको मल समझकर उससे घृणा करते हैं। इस अज्ञानको दूर करनेके लिये गोवंशके महत्त्वका व्यापक प्रचार-प्रसार करनेकी आवश्यकता है।

(ग) गोपालनके आरम्भमें धनाभावकी भी कठिनाई आती है। जबतक हम अपने गोवंशकी देशी प्रजातियोंको उन्नत नहीं कर पाते हैं, तबतक इस कार्यके लिये आर्थिक सहयोगकी आवश्यकता है। जो राज्य सरकारों तथा 'भारतीय जीव-जन्तु-कल्याण-बोर्ड' मद्राससे अनुदान प्राप्त करके तथा गोप्रेमी सम्पन्न परिवारोंसे दान प्राप्त करके पूरी की जा सकती है।

(घ) चरागाहोंका लगभग समाप्त हो जाना तथा ग्वालोंको गोचारणके लिये न मिलना गोपालनमें सबसे बड़ी कठिनाई है। इसके लिये गोचरभूमि फिरसे आरक्षित करनी होगी तथा ग्वालोंकी व्यवस्था फिरसे करनी होगी। गोशालाएँ प्रायः उन स्थानोंपर स्थापित की जायँ, जहाँ चरागाह उपलब्ध रहें, पानीकी सुविधा हो तथा जीव-जन्तुओंसे कोई भय न हो।

आदर्श गोशाला

भारतमें स्थापित गोशालामें गोवंशकी भारतीय प्रजातियोंकी गाय होनी चाहिये और उनके पालनेके लिये निम्नलिखित व्यवस्था होनी चाहिये—

(१) चारा—भूसा, हरा चारा, खल-चूरी-छिलका, दलिया, नमक तथा अन्य खनिजकी नियमित व्यवस्था होनी चाहिये। चारा काटनेकी मशीन तथा पिसाई-चक्की भी गोशाला-परिसरमें गोशालाकी अपनी होनी चाहिये। चारा विभिन्न आयुके गोवंशको उसकी आवश्यकताके अनुसार मात्रामें दिया जाना चाहिये। गर्भवती गायोंको तथा दूध देनेवाली गायोंको विशेष पौष्टिक चारा दिया जाना चाहिये। दूध बढ़ानेके लिये हरा चारा, जई, बरसीम, बिनौलेकी खली, चनेका छिलका, जौ अथवा गेहूँका दलिया विशेष उपयोगी है।

(२) गायोंके पीने तथा नहानेके लिये पानी—गोशालाके पास गायोंके पीने तथा नहानेके लिये पानीकी अपनी व्यवस्था होनी आवश्यक है। उसके लिये ट्यूबवेल, भूमिगत जलाशय तथा ओवर हेड टैंक होने चाहिये।

(३) आवास—गोशालामें सभी गायोंके लिये आच्छादित आवास, जिसमें गर्मी-सर्दी तथा वर्षासे बचाव हो सके, होना चाहिये। आवासमें उनके चारेके लिये खोर तथा पानी पीनेके लिये पक्की चरई होनी चाहिये। गायोंको बिना पक्के फर्श लगी भूमिपर बैठना सुखद है। इसलिये गायोंके आवासोंमें पक्के फर्श नहीं लगाये जायँ और यदि लगाये भी जायँ तो ऐसे हों कि उनपर गाय फिसल न सकें और साथमें कुछ स्थान कच्चा भी छोड़ दिया जाय।

(४) गोशालामें गोवंशका वर्गीकरण—गोवंशका वर्गीकरण करके प्रत्येक वर्गके गोवंशको अलग-अलग आवास तथा बाड़ोंमें रखा जाना चाहिये। बछिया अलग, बाछे अलग, गर्भवती गाय तथा दूध देनेवाली गाय अलग, दूधसे सूखी गाय, साँड और बीमार गोवंश-ये सब अलग-अलग आवास तथा बाड़ोंमें रखे जाने चाहिये।

(५) नामकरण अथवा क्रमाङ्कन—आदर्श गोशालामें गोवंशका नामकरण अथवा क्रमाङ्कन अवश्य होना चाहिये। यह देखा गया है कि गाय अपना नाम पुकारे जानेपर दौड़ती आती है। नामकरण होनेसे उसे अपने साथ आत्मीयताका भी अनुभव होता है। नामकरण न हो सके तो क्रमाङ्कन (Numbering) कर दिया जाय। इससे भी पहचानमें सुविधा होती है।

(६) गर्भाधान—गर्भाधानका समय होनेपर गाय रँभाती है। उस समय उसका गर्भाधान करवा देना चाहिये। समय निकल जानेपर वह पुनः १४ दिन या २१ दिन बाद रँभाती है। गर्भाधानके लिये गायको उत्तम जातिके ही उत्तम देशी साँडसे प्राकृतिक गर्भाधान कराना सर्वोत्तम है। ज्यादा दूध देनेवाली देशी गायके बछड़ोंको अच्छी तरह खिला-पिलाकर अच्छे साँड तैयार किये जाने चाहिये। उनकी माताके दूधका रिकार्ड भी रखा जाना चाहिये।

(७) चिकित्सा-व्यवस्था—फैलनेवाली छूतकी बीमारियों-जैसे 'खुरपका' 'मुँहपका'की रोक-थाम तथा बीमार पड़नेवाली गायोंकी चिकित्साके लिये एक नियमित चिकित्सक तथा औषधालय होना चाहिये। अनुभवी गोपालकोंका परामर्श लेकर घरेलू दवाओंके प्रयोगसे गायको विशेष लाभ होता है।

(८) स्वच्छता—गायको स्वच्छता पसंद है। वह स्वयं स्वच्छ रहना चाहती है और स्वच्छ स्थानपर ही बैठना चाहती है। गोशालाको स्वच्छ रखनेसे गोवंश बीमारीसे भी बचा रहता है। अतः गोशालाको स्वच्छ रखना बहुत ही आवश्यक है। गायोंके पानी पीनेके चरई, चारेकी खोर तथा आवास सभी स्वच्छ रहने चाहिये। गायोंको प्रतिदिन नहलाया जाना चाहिये। इसके लिये फव्वारा-स्नानकी व्यवस्था हो तो सर्वोत्तम है।

(९) गोबर-गैस संयन्त्र—गोशालामें गोबर प्रचुर मात्रामें होता है, इसलिये वहाँपर गोबर-गैस संयन्त्र लगाने और चलानेसे कई लाभ होते हैं। गोबर-गैस मिलती है उससे भोजन बनानेके लिये गैसका चूल्हा तथा प्रकाशकी व्यवस्था हो सकती है। इसके अतिरिक्त गोबर-गैससे जेनेरेटर सेट चलाकर विद्युत्-उत्पादन भी किया जा सकता है। जिससे बिजलीके पंखे, चारा काटनेकी मशीन, बिजलीके मोटरसे चलनेवाली आटाचक्की—ये सब चल सकते हैं। साथ ही गोबर-संयन्त्रसे बने हुए खादकी गुणवत्ता भी बढ़ जाती है।

(१०) कृषि-भूमि—गोशालाके पास अपनी कृषि-भूमि होनी चाहिये। जिसमें गोवंशके लिये हरा चारा, भूसा तथा मोटे अनाज उत्पन्न किये जा सकें। एक गायके लिये एक एकड़ भूमि होना आदर्श स्थिति है।

(११) चरागाह—गोशालाके निकट एक चरागाह होना चाहिये, जिसमें गोशालामें रहनेवाला गोवंश चरनेके लिये जा सके। गायको चरना तथा भ्रमण करना बहुत पसंद है। इससे वह स्वस्थ रहती है और उसके दूधकी श्रेष्ठता तथा गुणवत्ता भी बहुत बढ़ जाती है।

(१२) निष्ठावान् प्रबन्ध-समिति—गोशालाका आदर्श

गोशाला बनानेमे तथा आदर्श गोशालाके रूपमे चलानेके लिये निष्ठावान् लोगाकी प्रबन्ध-समिति हानी चाहिये और ऐसे ही निष्ठावान् सेवक भी होने चाहिये, जो नि स्वार्थ एव निष्कामभावसे ईश्वरकी प्रसन्नता तथा गोमाताका आशीर्वाद पानेके लिये गोशालाके प्रबन्धमे कार्यरत हो। इससे कम व्यय होनेसे वह गाशाला स्वावलम्बी भी हा जायगी।

(१३) छायादार वृक्ष—गोशालाम छायादार वृक्ष होनेसे गायाको बठनेके लिये छाया मिल जाती है। यह वृक्ष ऐसे हाने चाहिय जिनसे वायुकी भी शुद्धि होती रहे। इस दृष्टिसे नीमका वृक्ष सर्वाधिक उपयोगी है।

(१४) गोवश-सरक्षणकी व्यवस्था—गोशालाके द्वार कसाइयासे छुडाये गये गोवश तथा असहाय, बीमार, वृद्ध ओर दुर्घटनाग्रस्त गोवशके लिये सदैव खुले रहने चाहिये।

(१५) गोवश-सवर्धनकी व्यवस्था—गोशालामे गोवशके पालन एव रख-रखावकी ही नहीं, बल्कि उसके विकासकी भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिये। जो बछिया दूध देनेवाली अच्छी गाय बन सकती हे, उसका गर्भाधान उन्हींकी नसलके अच्छे साँडासे करवाकर, उनको अच्छा पौष्टिक चारा देकर अधिक दूध देनेवाली गाय बनाने, बछडाको अच्छे साँड बनाने अथवा अच्छे बेल बनानेका प्रयास लगातार होते रहना चाहिये।

इस प्रकार इन उपायाके अमलमे लानेसे निश्चित ही गोवशकी अभिवृद्धि होगी, गोसरक्षणको प्रोत्साहन मिलेगा तथा गोमाता भी नृशस-हत्यासे बच सकेगी। अत अधिक-से-अधिक लोगोको प्रयत्नपूर्वक इस दिशामे अवश्य लगना चाहिये, यह एक पुण्यका कार्य है, परोपकारका कार्य है, इससे न केवल लौकिक समृद्धि ही प्राप्त होगी, बल्कि सच्चा सुख-सतोष भी प्राप्त होगा और बुद्धि शुद्ध होकर उनका अध्यात्मपथ भी प्रशस्त हो जायगा।

—श्रीपरमानन्दजी मित्तल
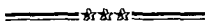
(२) गोशाला, हरिधाम-आश्रम, बिठूर (कानपुर)

इस गोशालाकी स्थापना ब्रह्मलीन स्वामी श्रीप्रकाशानन्द सरस्वतीजी महाराजके सत्प्रयासासे सन् १९७४ ई० मे सम्पन्न हुई। वर्तमानमे गाशालाम ८ गाय, एक साँड २ बाछ तथा ५ बाछी हैं जो साहीवाल जर्सी तथा हरियाणा नस्लके हैं। गामाताकी कृपासे हमारी इस गोशालामे उचित गोपालनके लिये प्राय सभी साधन उपलब्ध हैं। निकटमे गङ्गाजी होनेसे गायाका पानी आदिकी बडी सुविधा है। गोशालासे सलग्न लगभग आधा बीघा भूमि है जिससे प्राय ८ महीने हरा चारा उपलब्ध होता रहता है। चारेका भण्डारण उपयुक्त समयपर कर लिया जाता हे। गायोके उपचारके लिये घरेलू-देशी ओपधियाँ दी जाती हे आर आवश्यकता पडनेपर विशेषज्ञ भी वुलाये जाते हे।

मुख्यत यह 'गाशाला' हरिधाम-आश्रमसे ही सम्बद्ध है। आश्रमम साधु-सत महात्मागण पधारते रहते हैं। गोशालाका गोदुग्ध आदि साधु-सताकी सेवाम प्रयुक्त होता है। आश्रमका अपना गोबर-गैस सयन्त्र भी है उसीम गोमयका प्रयोग हो जाता है। धर्मात्मा दान-दाताआसे प्राप्त धनराशिसे यहाँका प्रबन्ध होता है।

हमारी यह मान्यता हे कि गोशालाम उतना ही गोधन रखना चाहिये जितनेका ठीकसे पालन-पाषण-सरक्षण हो सके। गाको भूखी, प्यासी या चिकित्साके लिये लालायित रखे रहना महान् पापका भागी बनना है। अत जितनी गौओंको ठीकसे खिला-पिला सके उतनी ही गौआको अपनी गोशालामे रखना चाहिये। बाकी गोधनको किसी अन्य गोशाला या गापालकको समर्पित कर देना चाहिये। इसी दृष्टिसे इस गोशालामे गोधनकी सख्या कम रखी गयी है। अत गोआकी दख-रेख आदिमे कोई विशेष कठिनाई हमे नहीं होती।

हमारा यह अनुभव है कि गोपालन किवा गोसवर्धनमे आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग अधिक सफल नहीं हो रहे हैं, अत पूर्णत भारतीय पद्धतिका अनुसरण करना चाहिये। एक आदर्श गोशालाके लिये आवश्यक है कि उसमे उत्तम चारा पौष्टिक दाना, शुद्ध जल, सफाई, चिकित्सा तथा सरदी-गरमीसे बचावकी व्यवस्था होनी चाहिये।

ईश्वरकी सृष्टिम गोका प्रमुख स्थान है, अत गोपालन हमारा परम धर्म है, वैज्ञानिक दृष्टिसे भी यही बात सिद्ध होती है। कई बार ऐसा होता है कि मन बडा उद्विग्न हो जाता है, ऐसी स्थितिमे यदि गोका दर्शन कर लिया जाय तो मनमे बडी शान्ति प्राप्त होती है, ऐसा हमारा व्यक्तिगत अनुभव है।

हमारी जानकारीम एक उत्तम गोशाला गोहाना (हरियाणा) म है, जहाँ रुग्ण तथा अपाहिज गाया, बछिया तथा बछडाकी बडी तन्मयतासे सवा-शुश्रूषा की जाती है।

—स्वामी श्रीश्यामस्वरूपानन्दजी सरस्वती
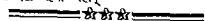
(३) अवध-प्रान्तकी कुछ गोशालाएँ

[भारतीय गोवश-रक्षण, गोसवर्धन एव अनुसधान-परिषद्, नयी दिल्लीके शाखा-कार्यालय, कानपुरसे अवध-प्रान्तकी चार गोशालाओका विवरण तथा अवध-प्रान्तकी गोशालाओकी एक सक्षिप्त सूची गोरक्षा-प्रमुख अवधप्रान्तद्वारा प्राप्त हुई है, जिसे यहाँपर दिया जा रहा है—]

(क) श्रीकानपुर गोशाला सोसाइटी

जरनलगज, कानपुरमे सन् १८८८ ई० म 'श्रीकानपुर गोशाला सोसाइटी' नामसे एक गोशालाकी स्थापना हुई। इमलिया खुर्द कालपीमे भी इस गोशालाकी शाखा है। इस समय इस गोशालाम कुल गोधन ७३ है, जिसमे ४९ गाय हैं। इस क्षेत्रकी विशेष नस्ल देशी फ्री क्रास है। गोशालाके पास गायोके लिये पर्याप्त स्थान हे। लगभग ८४० गौओभरका स्थान है। गोशालाकी व्यवस्था तथा गोधनकी देख-रेख चदा, किराया तथा खेतीद्वारा प्राप्त आयसे होता है। अपना बहुत बडा गोबर-गैस सयन्त्र भी है। किंतु खेद है कि गोशालाकी लगभग ३५० बीघा जमीनपर अधिग्रहण हुआ है। अभी गोशालाके पास जो गाय हैं, उनम अधिकतर दानमे प्राप्त अनुपयोगी गाये हें, जो बूढी तथा कमजोर हैं। इनकी देख-रेखपर विशेष ध्यान देना पडता है। उपयोगी एव दुधार गौओके साथ ऐसी गौआका सरक्षण भी अत्यन्त आवश्यक है। हमारा यह अनुभव है कि अच्छे एव सेवाभावी कर्मचारियाके अभावमे ठीकसे गोशालाका कार्य नहीं हो पाता है। आजकल कुछ ऐसी प्रवृत्ति पनप गयी हे कि जो अच्छे कार्यकर्ता हें, उनको राजनैतिक तथा सामाजिक सस्थाआम कार्य करनेकी अधिक रुचि रहती हें, अपेक्षाकृत धार्मिक सस्थाआके। इसलिये कार्यकी व्यवस्था एव गुणवत्ताम अन्तर आ जाता है, अत यथासम्भव गाशालाआके लिये सेवाभाव तथा गायम प्रेम रखनेवाले कुशल सेवकाकी आवश्यकता होती है।

—श्रीपुरुषोत्तमलालजी

(ख) गो-गगा-कानन, शिवाजीनगर, (कानपुर)

गोसेवा, गोपालन, पर्यावरण-सुरक्षा, वृक्ष-सेवा स्वस्थ प्राकृतिक जीवनकी शिक्षा इत्यादि उद्देश्याको लेकर 'गो-गगा-कानन' नामक इस सस्थाकी स्थापना सन् १९८७ ई० म शिवाजीनगर कानपुरम की गयी है। मुख्य रूपसे गोमाता गङ्गामाता तथा धरतीमाताकी सेवा करना इस सस्थाका प्रमुख ध्येय है। सस्थाके पास इस समय लगभग २० एकड भूमि है, जिसमे जगल भी है। इसीम गाय विचरण करती हैं। गोधनके विकासके लिये कृषि, वानिकी तथा ग्राम्य सस्कृतिका पुनर्जीवित होना बहुत आवश्यक है। इसी दृष्टिसे सस्थाने इससे सम्बद्ध अनेक कार्यक्रमाको प्रारम्भ करनेकी योजना बनायी है।

—श्रीप्रेमचन्द्रजी पाल

(ग) जय श्रीकृष्ण गौशाला, सहार (इटावा)

कुछ ही समय पूर्व (२१ नवम्बर, १९९३ ई०) गोपाष्टमीके पावन पर्वपर सहार (इटावा) म एक गौशाला स्थापित की गयी। यह गौशाला 'विवेकानन्द आश्रम' के एक अङ्गके रूपमे कार्यरत है। यहाँ एक बूचडखाना है। उसी बूचडखानेसे स्थानीय गोवशकी रक्षा-हेतु गोभक्तोके सहयोगसे यह गौशाला स्थापित हुई। गौशालाका अपना भवन भी है। इस समय गौशालामे १७ गाय, ३ बछडे तथा ३ बछडियाँ हैं। अधिकतर देशी नस्लकी गाये हैं। स्थानीय लोगो तथा दानदाताआके सहयोगसे गौशालाका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है। आश्रममे एक ऐसी गाय है, जो एक तरफ अपनी बाछीको दूध पिलाती है तथा दूसरी तरफ एक वृद्ध गायके बछडेको भी दूध पिलाती है। एक दूसरी गाय ऐसी है, जिसके एक तरफ उसका बछडा दूध पीता है तथा दूसरी तरफ दूधको दुहाई होती है।

—श्रीआशुतोषजी शुक्ल

(घ) गोधाम (गोशाला), नयी झूसी (प्रयाग)

सन् १९८५ ई० म नयी झूसी, प्रयागमे 'गोधाम' नामसे एक गोशालाकी स्थापना हुई। इस समय गोशालाके पास ४ एकडका सीमित क्षेत्र है और गोशालाम गोधनकी सख्या लगभग १५ के आस-पास है। गायोसे प्राप्त दूधकी विक्री की जाती है। प्राय देशी नस्लकी गाये हैं। कुछ हरा चारा पैदा किया जाता है, शेष क्रय करना पडता है। खादका उपयोग खेतीके लिये किया जाता है।

—श्रीशिवमगल सिहजी

(ड) अवधप्रान्तकी गोशालाओकी सूची

लखनऊ—(१) अवध गोशाला, (२) नदौली गोशाला निगोहा, तहसील-मोहनलालगज, (३) गोशाला असर्फाबाद, तखास।

हरदोई—(१) गोपाल गोशाला धियर महोलिया, (२) कृष्ण गोशाला, माधोगज, (३) राधा कृष्ण गोशाला शाहाबाद।

लखीमपुर—(१) गोरक्षणी सभा गोशाला निघासन रोड, (२) धर्मार्थ गोशाला गोकरननाथ, (३) हिन्दुस्तान सुगर मिल गोशाला गोला, (४) पाराशर नाथ गोशाला मैकलगज।

सीतापुर—(१) पिजरापोल गोशाला सोसाइटी, (२) हनुमत मशाराम गोशाला बिसवाँ, (३) नैमिशारण्य गोशाला, मिश्रिख।

फैजाबाद—(१) साकेत गोशाला अयोध्या, (२) भगवत गोशाला डुहिया, टाडा, (३) नरसिह गोशाला बीकापुर।

गाडा—(१) हनुमान गोशाला भगवतीगज, बलरामपुर, (२) बलरामपुर गोशाला सोसाइटी नीलगाँव, (३) गायत्री तपोभूमि गोशाला बडगाँव, (४) सरजू गोशाला नवाबगज, (५) देवीपाटेश्वरी गोशाला, (६) गोपाल गोशाला, कर्नलगज।

बहराइच—(१) राजलक्ष्मी गोशाला निन्दीपुर भडारा, (२) जुगलीना गोशाला नानपारा।

फतेहपुर—नदगोशाला बिन्दकी।

कानपुर—(१) कानपुर गोशाला सोसाइटी भौती, (२) पचमुखी हनुमान गोशाला पनकी कटरा, (३) कृष्ण गोशाला पुखरायाँ।

झाँसी—गोपाल गोशाला पचकुइया नई बस्ती।

बाँदा—(१) गोपाल गोशाला, (२) नरसिह गोशाला पेलानी, (३) मुकुन्द गोशाला मुजौली, डाकखाना-तिन्दवारी।

जालौन—जिला जालौन गोशाला समिति, कालपी।

बाराबकी—नागेश्वर नाथ गोपाल गोशाला।

बिल्हौर—(१) गो-गगा कानन गोशाला गुमटी-४९, दरियापुर तहसील, (२) हरिधाम-आश्रम गोशाला बिठूर, (३) आरोग्यधाम आश्रम गोशाला बिठूर।

[प्रेषक—श्रीदिनशचन्द्रजी गुप्त]

(४) श्रीसूर-श्याम सेवा-संस्थान परासौली (मथुरा)

(पूज्यपाद बाबा श्रीगणेशदासजी भक्तमाली)

व्रजधाममे स्थित श्रीगिरिराज-गोवर्धनकी सुरम्य तलहटीमे भगवान् श्रीकृष्णकी महारास-स्थली चन्द्रसरोवर—परासौली नामक एक स्थान है। यह परासौली गावर्धन कस्बसे सोख भरतपुरको जानेवाले राजमार्गपर दो किलोमीटर दूर स्थित है। इस पावन स्थलीके निकट स्थित ग्रामोके गण्यमान्य सदस्याके सयोगसे आश्विनशुक्ला शरद्-पूर्णिमा सवत् २०४५ वि० को 'श्रीसूर-श्याम सेवा-सस्थान' की स्थापना हुई। सस्थानने सर्वदेवमयी गौ तथा उसके वशक सवर्धन एव रक्षार्थ 'सूर-श्याम गोशाला' की स्थापना भी की। इस सूर-श्याम गोशालामे गोवशकी वर्तमान सख्या ३५५ है।

इनमे दूध देनेवाली गौएँ ३४ दूध पीनेवाले बछडे-बछियोकी सख्या ३० बैलोकी सख्या ८, अशक्त-वृद्ध विकलाङ्गकी सख्या १२ और साँडोकी सख्या ५ है। गोशालाक दूध तथा गोवशका विक्रय नहीं किया जाता। दूध 'सूर-श्याम बाल-विद्यामन्दिर' के शिशुओका तथा अतिथियाको पिला दिया जाता है और आर्थिक दृष्टिसे कमजोर गोप्रेमीको उसकी इच्छाके अनुसार एक या दो गौ सेवाके लिये नि शुल्क भी दे दा जाती है। उसके द्वारा वह गौ लौटानेपर पुन गोशालामे प्रवश करा ली जाती है।

गोशालाको आत्मनिर्भर बनानेके लिये 'सूर-श्याम सेवा-सस्थान' गौके गोबर तथा मूत्रसे नॅडेप कम्पोस्ट खाद, गो-देव-दर्शन धूप एव अगराग नामक स्नान-साबुनका निर्माण कराती है, जिससे आयम वृद्धि हुई है ।

भारतवर्षमे ही नहीं, अपितु विदेशामे बहुधा गौशालाएँ ऐसी हैं जो उत्तम नस्लकी दुधार गाय ही रखती हैं। दूध न देनेवाली अवस्थाम या अशक्त-वृद्ध होनेपर उन गायाको हटा दती है। ऐसी गोशालाएँ आथिक लाभ लेनेके लिये ही खोली गयी हैं गोवशके रक्षार्थ या उसके सवर्धनके लिये नहीं परतु

'सूर-श्याम गोशाला' को एक आदर्श रूपम प्रस्तुत करनके प्रयास किये जा रहे हैं। मौसम एव ऋतुके अनुसार प्रत्येक गोवशका हरा चारा भूसा, अनाज, दूध, जल आदि दिया जाता है गिरि-गोवर्धनकी तलहटीम ग्वालाकी दख-रखम उन्ह चरनक लिये ले जाया जाता है, जहाँ व स्वतन्त्र रूपसे आहार-विहार करते हैं। गर्मी, वर्षा, शीतक बचाव-हेतु कच्चे फर्शवाले हवादार पक्के बडे-बड कमरे ह। गायक प्रसवके समय समुचित आहार, ओषधि आदिका विशेष ध्यान रखा जाता है। रुग्णावस्थामे पशु-चिकित्सकसे चिकित्सा कराकर उसे पूर्ण स्वस्थावस्थाम लानेका पूरा प्रयत्न किया जाता है। किसी भी अवस्थाम आयु पूर्ण हानेपर—गालाक पधार जानपर उस गावशके पार्थिव शरीरका विधिवत् प्रजरजका लपन कर फूल-मालाआस सजाया जाता है उचित पवित्र स्थानपर गड्ढा खादकर उसम शवको रखकर औषधि-नमक डालकर भूमिगत किया जाता है। इस अन्तिम सस्कार करनकी अवधिम श्रीहरिनाम-सकीर्तन उच्च स्वरसे हाता रहता हे और अन्तम भी दिवगत आत्माकी शान्तिहतु सकातन किया जाता है।

[प्रेपक—श्रारामलखनजी शर्मा 'राम']
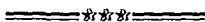
(५) श्रीगोरखनाथ गोशाला (गोरखपुर)

भगवान् गोरखनाथक मन्दिर-परिसरम स्थित यह गाशाला एक प्राचीन गोशाला है। एसी प्रसिद्धि है कि इसको स्थापना शताब्दियापूर्व गोरखनाथ-पीठके तत्कालीन प्रमुख एक-नाथयोगीद्वारा की गयी थी। मन्दिरके आलेखाम गोशालाके स्थापनकालका काइ यथार्थ उल्लख उपलब्ध न हानसे इसकी प्राचीनताकी निश्चित तिथि ज्ञात नहीं हो सकी है।

गोरखनाथ-मन्दिरद्वारा सचालित और सुव्यवस्थित इस गाशालाका उद्देश्य आरम्भसे ही गोरक्षण गोसवा और गासवर्धन रहा है। तदनुरूप आज भी यह एक आदर्श गाशालाक रूपम *'गोसेवा' का सदेश दूर-दूरतक (सर्वत्र) प्रसारित कर रही है।* इस गाशालाम नियमत देशी गाय ही रखी जाती हैं। वर्तमानमे यहाँ गाय तथा गोवशकी कुल सख्या लगभग १२५ है। इनम बूढी, अपग युवा और बच्ची—सभी अवस्थाकी गाये हैं। इनकी दख-रेख ओर सवाक लिय २५ स ३० व्यक्ति नियुक्त हं। गायाके रहनका स्थान बहुत स्वच्छ, हवादार ओर हर मौसमक लिये उपयुक्त बनाया गया है। यहाँ गायाके लिये शुद्ध सुपुष्ट आहार तथा पानक लिय स्वच्छ जलकी व्यवस्था है। समय-समयपर पशु-चिकित्सक और विशपज्ञाद्वारा गायाका स्वास्थ्य-परीक्षण हाता है। गायासे प्राप्त दूधका उपयाग गारखनाथ-पीठम रहनवाल यागिया साधुआ कर्मचारिया एव आगन्तुक अतिथियाके सेवार्थ किया जाता है। भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश हे। गाय और गायस प्राप्त बछडा तथा बैलाका कृषि-कार्यम महत्त्वपूर्ण योगदान हानसे हमारे यहाँ गापालनको सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। हमारा तुष्टि-पुष्टि और सुख-समृद्धिसहित आध्यात्मिक चेतनाका सुदृढ आधार गाय ही है अतएव गारक्षण गापालन और गोसवर्धनके लिय सतत सनद्ध ओर समर्पित गोरक्षपाठका यह गोसदन दार्घकालस जन-जनको गोसेवाका सुसस्कार और शुभ प्रेरणा दे रहा है तथा आग भी दता रहेगा ऐसा विश्वास है।

[प्रेपक—श्रीश्यामसुन्दरजा श्रात्रिय अशान्त']
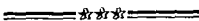
(६) श्रीलक्ष्मी गोशाला, बदनावर (मध्यप्रदेश)

'श्रीलक्ष्मी गाशाला बदनावर'की स्थापना आजसे लगभग ८० वर्ष पूर्व यहाँके नगरसेठ श्रीनदरामजी चोपडाके द्वारा की गयी। बदनावर बसस्टैंडपर गोशाला चलानेक लिये एक भवनका निर्माण कराया। उस आमदनीसे गोशालाका खर्च आज भी चलता हे।

इस समय गोशालाम १५ गाय १५केडा ८ केडी कुल ३८ पशु ह। इस गोशालाका मुख्य उद्देश्य गावशकी रक्षा तथा सवा करना है ओर लूले-लँगड अपाहिज पशु रखना तथा उनकी सवा करना हे साथ ही कत्लखानमे जानेवाले पशुआको रोकना है। गोशालामे मालवी नस्लका गोवश है।

—श्रीमागालालजा अवस्थी
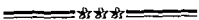
(७) श्रीगौशाला पिंजरापोल, राजनांदगाँव (म० प्र०)

(श्रीदेवीशरणजी खण्डेलवाल)

श्रीकृष्णके उपासक वैरागियोंकी रियासत नंदग्राम आज भक्ति, क्रीडा एवं साहित्यकी त्रिवेणीमें नया कलेवर प्राप्त कर छत्तीसगढ अञ्चलमें राजनांदगाँवके नामसे सुविख्यात है।

रियासतकालीन एक अंग्रेज दीवानद्वारा एक पागल घोडेको गोली मार देनेके हुक्मसे उद्वेलित यहाँकी धर्मप्राण जनताकी भावनाओंको मुखर करते हुए रियासतके सेठ श्रीरामलालजी चोपडा एवं श्रीसाहिबराम सूरजमल ओस्तवाल-परिवारने शहरके मध्य गोशालाके लिये भूमि क्रयकर गोशालाकी स्थापनाका उपक्रम प्रारम्भ किया।

इस प्रकार संवत् १९६१ (सन् १९०५) में संस्थापित यह संस्था अपने लंबे इतिहासमें अनेक उतार-चढाव देख चुकी है और अनेक संस्मरण सँजोये हुए निरन्तर प्रगति-पथपर अग्रसरित है।

सन् १९६० में शासनद्वारा तीस एकड भूमि गोशाला-हेतु मिली। इस ऊसरभूमिको परिवर्तित कर जी० ई० रोडपर गौ-सदनका निर्माण हुआ। इस तीस एकड भूमिमेंसे २० एकड भूमि शासनको प्रदान की गयी, जिसके बदलेमें जिलाध्यक्षद्वारा चालीस एकड भूमि संस्थाको प्रदान की गयी, जहाँपर कृषि-कार्य होता है। १९७० में नगरके मध्य स्थित गोशालामेंसे लगभग १० हजार वर्गफुट भूखण्डपर गोशाला सुपर मार्केटका निर्माण कर गोशालाको ठोस आर्थिक आधार प्रदान किया गया। इससे अर्जित आयसे शहरके मध्यमें गो-सदनका पक्का निर्माण किया गया।

नगरमें सार्वजनिक श्मशान-गृहका भी सफल संचालन गोशालाद्वारा किया जा रहा है। यहाँपर धर्मशाला, जलाऊ लकडी, पानी, स्नानागारकी व्यवस्था है। निम्न आय-वर्गके तपेदिकसे पीडित बच्चोंको संस्था निःशुल्क दूध भी प्रदान करती है।

वर्तमानमें संस्थाके पास १७७ गायें, १० बैल, ५ साँड, ४६ बाछे, ५ भैंसा, १२८ बाछियाँ हैं। जिनमें साहीवाल, गीर, जर्सीक्रास, देशी एवं हरियाणवी नस्लें हैं।

चारा-व्यवस्था—कृषिद्वारा उपजका चारा एवं पशु-आहार चूनी-भूसी, खली आदिका बाजारसे क्रय होता है। पेयजल-हेतु दो कुआँ, दो बोरिंग एवं नलका साधन उपलब्ध है। गोचरभूमिकी समुचित व्यवस्था नहीं है।

आयके परम्परागत साधनोंमें प्रमुख रूपसे गोपाष्टमी-अनुदान, किरायेसे अर्जित आय, कृषि-आय, शहरमें दूधकी बिक्री आदि है।

गोधनका नियमित स्वास्थ्य-परीक्षण पशु-चिकित्सकोंद्वारा किया जाता है। गोबरका उपयोग देशी पद्धतिसे खादका निर्माण करके किया जाता है।

वर्तमानमें हरे चारेकी कमी एवं श्रम-अधिनियमसे गोसदनोंको मुक्त करना जरूरी है। पशु-आहार-हेतु प्रयुक्त तिलहनके किस्मोंमें शासनद्वारा अन्य मदोंके अनुरूप सब्सिडी (शासन-अनुदान) देकर गोपालनको सहज बनाया जा सकता है।

समय-समयपर अवैध रूपसे ले जाये जा रहे गोवंशका संरक्षण किया गया है। जनताके तन-मन-धनके सहयोगसे हमारा यह पावन संस्थान आज नगरके संस्कारका अङ्ग बन चुका है। शायद यही विश्वास इस संस्थाका आधार है जो सदैव पुख्ता होता रहेगा एवं भगवान् श्रीकृष्णका गोवंश अपने आशीषसे जन-जनका कल्याण करता रहेगा।

[प्रेषक—श्रीनथमलजी अग्रवाल]

---

(८) श्रीलक्ष्मी-गोशाला, धार (म० प्र०)

सन् १९१५ ई० में मध्यप्रदेशके मालवा अञ्चलकी तत्कालीन धार रियासतकी महारानी लक्ष्मीबाई पँवार साहिबाके नामसे 'श्रीलक्ष्मीबाई गोशाला' नामक एक गोशाला ४६ बीघा जमीनपर स्थापित की गयी थी, जिसमें आज गोचारण-हेतु खुली भूमि, कर्मचारियोंके आवास, कार्यालय तथा घास-गोदामकी समुचित व्यवस्था है। वर्तमानमें यहाँ ७५ पशु हैं। वास्तवमें यह गोशाला न होकर इस क्षेत्रके लगड-लूले अपाहिज और वृद्ध पशुओं तथा मध्यप्रदेश गोरक्षण-कानूनके अन्तर्गत जब्त पशुओंका शरणस्थल है। यहाँ उन्हें पर्याप्त मात्रामें चारा-पानी और आश्रय मिलता है।

गोशालाकी ४६ बीघा खुली भूमिके सिवाय ग्राम जैतपुराके दक्षिणमें ६२ बीघाकी एक बाड (चक) है, जिससे लगभग एक लाख घास-पिंडा (बीड़ा) प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। यहाँ पानीके अपने अच्छे स्रोत हैं। गोशालाकी रख-रखाव तथा व्यवस्था

आदिका खर्च दान एव गोबर-खाद और कडोकी विक्रीसे प्राप्त धनराशिसे गोशाला-कमेटीके माध्यमसे होता है। यहाँ दूधका उत्पादन और विक्रय नहीं किया जाता, क्याकि अच्छी नस्लके पशु और उनपर होनेवाला व्यय गाशाला-कमेटीकी आर्थिक स्थितिसे ऊपर हे।

इस गाशालाके इतिहासम एक महत्त्वपूर्ण घटना दिनाङ्क १६-१२-८८ की है, जब श्रीमेहताजी, मालेगाँव (महाराष्ट्र) के सहयोगसे वधके लिये ले जायी जा रही ४८८ गायाके झुडको मध्यप्रदेश पुलिसकी सहायतासे पकडकर इस गोशालामे काफी समयतक रखा गया। न्यायालयके आदेश और सस्थाके नियमके अनुसार बादम इन गायोको गोभक्तोमे वितरित कर दिया गया। यह प्रकरण सुप्रीमकार्ट दिल्लीतक चला और अन्तम गाभक्ताकी विजय हुई। इस घटनाक बादसे पुलिसद्वारा जब्त किये गये सैकडा गाय-बैलाको और कृषकोद्वारा उपेक्षित बहुत-से गाय-बैलाको इस गोशालाद्वारा जीवन्दान देनेका क्रम चालू है। गोवशके सरक्षणमे यह सस्था मालवा क्षेत्रमे अग्रणी है।

वर्तमानमे गोशालाका भवन, गोदाम, आवासीय कमरे आदि अत्यन्त पुराने और जीर्ण-शीर्ण-अवस्थाम हो गये हैं।

—प्रो० श्रीउमाकातजी शुक्ल

(९) श्रीगोपाल गोशाला, महिदपुर (उज्जैन)

महिदपुर, जिला उज्जेनमे 'श्रीगोपाल गाशाला' नामक एक गोशाला है। यह गोशाला सन् १९१९ ई०मे स्थापित हुई। इस गाशालामे ४० गाये १७ वछडे तथा एक साँड है। मुख्य रूपसे यहाँ मालवी नस्लकी गाये हे। गोशालाके पास ३० बीघा गोचर-भूमि है। इसलिये गापालन आदिमे सुविधा है चारे आदिकी कठिनाई नहीं रहती। गोशालाकी एक धर्मशाला भी है उससे भी गोशालाको आयकी प्राप्ति होती है। यहाँ न काई वैज्ञानिक प्रयोग किये गये हैं और न गाशालाम चिकित्साकी कोई समुचित व्यवस्था है। स्थानीय चिकित्सालयमे चिकित्सा करायी जाती है। गोशालाके आदर्श स्वरूपके विषयम अच्छी जानकारी उपलब्ध हो जाय तो हम उसे अमलमे लानेकी ओर विशेष सचेष्ट होनेका प्रयत्न करगे। इस ओर हमारा प्रयत्न है। फिर भी इस गोशालाकी वर्तमान स्थिति अच्छी है। हमार आस-पास उज्जैन, आगर, रतलाम तथा आलोटम भी कुछ गोशालाएँ हैं।

—श्रीमधुसूदनजी आचार्य, अध्यक्ष

(१०) श्रीमाधव गौशाला, उज्जैन

श्रीभगवान् महाकालकी पावन नगरी एव भगवान् श्रीकृष्ण तथा सुदामाकी विद्यास्थली उज्जैनमे सन् १८९० में 'श्रीमाधव गाशाला' स्थापित हुई। सस्था लगभग १०४ वर्ष प्राचीन है। गाशालाद्वारा गापालन एव गासवर्धनका पुनीत कार्य सम्पन्न हो रहा है।

गौशालाम २३ दुधार गाय १४ दूधरहित कडी-केड तथा २ साँड हैं। घास-बीडकी व्यवस्था नहीं हानसे वर्तमानम सामित सख्याम अनुपयागी गाधनका पालन-पाषण हा रहा है। सस्थाम अधिक सख्याम वृद्ध गाधनका पालन-पाषण हो सक इसके लिय गम्भारतासे हम प्रयत्नशील हैं।

गोशालामे दैनिक दूधका अनुपात लगभग ११० लीटर है। गोशालाकी ग्राम भूतिया, पण्डयाखेडी तथा सुरासाचकमे कृषि-भूमि एव सुरासा ग्राममे चरागाहकी भूमि है। प्रभु-कृपासे गोशाला एक आत्मनिर्भर सस्था है। गायोके लिये आधुनिक आरामदायक आर० सी० सी० के ३० फुट ×२०० फुट आकारके पक्के शेड-निर्माणकी योजनाको शीघ्र ही कार्यान्वित किया जा रहा है इनमे गोवशकी सुविधाके लिये बिजली, पख नल आदिकी आधुनिक व्यवस्था की जायगी।

गाशाला केन्द्रीय एव राज्य-सहायता-अनुदानके लिये एक मान्यता-प्राप्त सस्था है।

[प्रेषक—श्रीमुरलीधरजी गुप्ता, उपाध्यक्ष]

(११) गोपाल-इफ्तखार गोशाला, जावरा (मध्यप्रदेश)

वर्तमान मध्यप्रदेशके मालवा-अञ्चलमे एक जावरा रियासत थी। यहाँ मुस्लिम-जनसख्या बडी सख्याम थी और शासन भी नवाब साहबका था। यहाँ लगभग २०० गौओका वध प्रतिमाह होता था। इससे स्थानीय ओर पास-पडोसकी अन्य रियासतो, जैसे—रतलाम, सैलाना, मन्दसौर (ग्वालियर) आलाट (हाल्कर)-की हिन्दू-जनता अत्यन्त दुखी थी।

सवत् १९७८ विक्रमीम 'श्रीरतलाम-गोरक्षा-मण्डल' की तरफसे सेठ केशरीमलजी झालानी और सेठ नारायणदासजी पोतदारने नवाब साहब श्रीमेजर इफ्तखार अली खाँ साहबसे उनके राज्यम गावध-बदीक लिये निवेदन किया तथा गोशाला आदिके लिये जमीनके वास्ते भी प्रार्थना की। इसपर नवाब साहबने सहर्ष तत्कालीन पचीस हजार रुपये-मूल्यकी खुली भूमि गोशाला, धर्मशाला बनाने-हेतु प्रदान की। यह एक घटना मात्र नहीं है, अपितु यह श्रीमत नवाब साहबकी उदारता, समभाव और गोभक्तिकी बेजाड मिसाल है। शिष्टमण्डलने अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए गोशालाका नामकरण 'श्रीइफ्तखार गोपाल गोशाला जावरा' रखनेका प्रस्ताव नवाब साहबके समक्ष रखा, किंतु नवाव साहबने 'गोपाल' का नाम पहले होना चाहिये, ऐसा कहते हुए मजूरा प्रदान की। यह उनकी उदारता और महानता है। आज भी यह गोशाला गोमाताकी सेवामं लगी है। इसके साथ ही मालवा क्षेत्रमे उज्जैन, इन्दोर, धार, रतलाम,मदसौर, सैलाना, ताल तथा आलाट आदि स्थानाम भी गाशालाएँ हैं।

—प्रा० श्रीउमाकातजी शुक्ल
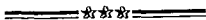
(१२) स्वामी राधाकृष्ण गौशाला, सेन्धवा (मध्यप्रदेश)

दक्षिण-पश्चिम मध्यप्रदेशके महाराष्ट्र प्रान्तकी सीमा-रेखापर सेन्धवा नामका एक नगर स्थित है। प्राकृतिक दृष्टिसे यह क्षेत्र अत्यन्त रमणीय एव भव्य है। इस नगरक उत्तर-पूर्वकी ओर विशाल वटवृक्षकी शाखा-प्रशाखाआसे आच्छादित एक सुरम्य पर्वत-श्रेणीक नीच एक जलकुण्ड हे जा इस वनप्रदशम श्रीदेवझिरी तीर्थस्थलके नामसे सुविख्यात है। यहाँ भगवान् शिव एव श्रीहनुमन्तरायजीका अति सुन्दर मन्दिर एव यज्ञशाला हे।

इसी पुण्यमय पवित्र स्थलको श्रीस्वामी राधाकृष्ण बाबाजीन अपनी भक्तिमय सगीत-साधनासे चैतन्यमय बना दिया था। पूज्य स्वामीजी महान् गाभक्त भी थे। आपके आश्रमम अनेक गौएँ रहती थीं। वे स्वय अपने हाथासे गो-सेवाक सभी कार्य करते थे। श्रीबाबाजीके महाप्रयाणके बाद आपकी स्मृतिको चिरस्थायी बनानेके लिये सेन्धवा नगरक प्रबुद्ध धार्मिक गोभक्ताने सन् १९४९ म स्थानीय साधनसम्पन्न लोगाक सहयोगस एक समितिका गठन किया और स्वामीजाद्वारा स्थापित गाशालाका कार्य आर आगे बढानेका निर्णय लिया। प्रारम्भम अर्थ-व्यवस्था-सम्बन्धी कठिनाइयाँ आयीं किंतु गो माताका कृपासे सारे कार्य सम्पन्न हात गये और वर्तमानम यहाँ गासवाका कार्य अच्छी दशाम चल रहा हे। आज यहाँ गायाक लिय भवन तथा चारा-भडार-गृह भी है। बछडाक आवास-हतु अलग भवन हैं। सत-निवास तथा अतिथिशाला भी है। गौशालास सलग्न हा ४४ एकड कृषिभूमि है, कुएँ हैं। यहाँसे हरा चारा तथा पानी गौआका उपलब्ध कराया जाता है। गौशालासे उपलब्ध गोबरकी खाद खेतीके काम आती हे जिससे अन्नकी गुणवत्ता बनी हुई है। गौआसे प्राप्त दूध उपभोक्ताओका उपलब्ध कराया जाता है। वर्तमानम गोधनकी सख्या ९७ है।

बावे-आगरा-मार्गके सनिकट होनेसे इस मार्गसे वध-हेतु पशुआका निकास होता रहता है। ऐसे पशुओको पकडकर गोशालाद्वारा सरक्षण दिया जाता है, किंतु कानूनी कमजारियाका लाभ उठाकर असामाजिक तत्त्व—कसाई दडित नहीं हो पाते ओर वे गावशको छुडाकर ले जाते हैं। ऐसी स्थिति देखकर बडा दु ख होता ह तथापि इस आर सतत चेष्टा की जाती रही है।

यह सस्था केवल गाशाला, गो-सवर्धनतक ही सीमित नहीं है, वल्कि गापाष्टमी आदि विशेष पर्वोपर जनसाधारणका इस आर बढनक लिये प्रात्साहित किया जाता है। गासेवाक साथ ही सत-सेवा तथा सत्सग आदिके कार्य भी यहाँ चलत रहते हैं। अनेक सत-महात्माआक आशार्वाद इस गौशालाका प्राप्त हैं।

गाधन, गावश एव गासवधन तथा गापालनक लिये सबस मुख्य बात यह है कि गाशालाक पास अधिक-स-अधिक गाचरभूमि हा। गाधनका उपचार स्थानाय दशा चिकित्सापद्धतिस किया जाय। स्थानाय दशा नस्लक पशुधनका

प्रोत्साहन देकर गादुग्धके उत्पादनम पर्याप्त वृद्धि की जा सकती है। अच्छी नस्लके सकरणक नामपर गौआपर होनेवाले अमानुषिक अत्याचार बद किये जायँ। कृषिम गोबरक खादक उपयोग-हेतु कृषकाको प्रात्साहितकर रासायनिक खादसे खतीको बचाया जाय। विदेशास गोबरका आयात और गोमासका निर्यात—भारतीय पशुधन एव अर्थव्यवस्थाको चौपट ही करेगा, अत गोवध-निषेध-हेतु केन्द्रीय सरकारपर दबाव डालकर प्रभावी कानून बनवाकर देशको गाहत्याके कलकसे मुक्त किया जाय। वस्तुत गोसवाका वास्तविक स्वरूप भी यही है। —श्रीहरीलाल गुलजारालालजी

(१३) श्रीगोपाल गौशाला, शिवपुरकलॉ (मध्यप्रदेश)

पूर्व-ग्वालियर-राज्यके तत्कालीन शासकोद्वारा यहाँ प्रत्येक जिलाम गाशालाएँ स्थापित की गयी थीं। उसी समय शिवपुरकलाँ (म० प्र०) म भी सन् १९२५ई० मे एक गाशाला बनायी गयी, साथ ही २९ बीघा भूमि भी इसे प्राप्त हुई। पहले तो बहुत समयतक गौशालाका कार्य प्रगतिपर चलता रहा किंतु बीचम कुछ अव्यवस्था हा गयी थी पुन सन् १९७१ ई० से इसका कार्य ठीक कर लिया गया हे। वर्तमानम कुल गोवशकी सख्या ८२ हे। इस समय दुधार १५ गाय हैं बिन ब्यायी २६ हैं। बछडा-बछडी, बाखरे २८ तथा बछडा-बछडी दुधवारे १५ हैं, २ सॉड हैं। गोशालामे दशी तथा माडवारी नस्लकी गाय हैं। एक बीघा भूमिमे पक्की गोशाला बनी है। चारा-भूसा आदि कुछ क्रय किया जाता ह। दिनम गाय चरनेके लिय जगलम जाती हैं। हमारी जानकारीमे कुछ गाशालाएँ इस प्रकार हैं—श्रीगोपाल गाशाला डोली बुआका पुल, लश्कर (ग्वालियर), श्रीगोपाल गौशाला, मुरेना, शिवपुरी तथा गुना (म० प्र०) आदिम भी गोशालाएँ स्थापित हैं। —श्रीमुरारीलालजी गुप्ता

(१४) मध्यप्रदेश गोशाला-सघ, भोपाल

५ दिसम्बर १९५० को स्व० बाबू तख्तमल जैनकी प्रेरणासे 'मध्यभारत गाशाला-सघ'का स्थापना हुई। नया मध्यप्रदेश बननक बाद महाकोशल ओर मध्यभारतकी गोशाला-सघाका विलीनीकरण होकर १९ मार्च १९६२ मे 'मध्यप्रदश गोशाला-सघ भोपाल'का नया गठन हुआ।

सघने गोरक्षण और गासवर्धनका महत्त्वपूर्ण कार्य किया ओर शासनसे गाशालाआको विकास-कार्योंके लिये आर्थिक सहयोग दिलाया। सघको शिवपुरी ओर आखला नगराम गासदन चलानके लिये सरकारस अनुदान प्राप्त हुआ। सघने दोनो गोसदनाको बडी कुशलता और मितव्ययतासे वर्षोतक चलाया। सघको शासनने निवारी तथा भूतिया ग्रामाम गासवर्धन-केन्द्र चलानेका भी उत्तरदायित्व सौंपा। इन दोना केन्द्राम प्रमाणित नस्लाके साँड रखे गये और उनक द्वारा गायासे अच्छी सतति प्राप्त की गयी। इसी प्रकार विदिशाम भी 'गाँधी-गोशाला' नामक एक गाशाला दुग्ध-उत्पादन तथा गावश-सरक्षणका कार्य कर रही है।

सघक प्रयत्नसे प्रदशम अनक कार्यकर्ताआका गाशाला-व्यवस्थाका प्रशिक्षण दिलाया गया। सघक निर्देशनम गोशालाआम दो विभाग बनाय गय—एकम अच्छा प्रमाणित नस्लकी गाय रखा गयीं ताकि उनके द्वारा गोवशकी नस्ल सुधर और गोसवर्धन-कार्य अग्रसर हा। दूसरे विभागम अपग ओर वृद्ध गाएँ रखी गयीं ताकि उनकी समुचित सवा हा आर उन्ह कसाईकी छुरीस बचाया जा सक। सघके प्रयासासे छत्तीसगढ अञ्चलकी इदौर ओर उज्जैनकी कई गोशालाएँ इस समय उन्नत स्थितिमे हैं जहाँ दुग्ध-उत्पादन नस्ल-सुधार और हरा चारा आदिके कार्य हाते हैं।

मध्यप्रदेशम पजीकृत ४३ गाशालाएँ तथा ९ साधारण गोशालाएँ हैं। प्रतिवर्ष लगभग कुछ गोशालाआको शासकीय अनुदान नियमानुसार मिलता है। मध्यप्रदेशके गोसेवी कार्यकर्ताआके प्रयासासे मध्यप्रदशके मुख्य मन्त्रीने आचार्य विनोबाभावकी जन्मशतीपर उन्ह श्रद्धाञ्जलिके रूपमे गावशकी रक्षाहेतु 'गासवा-आयाग' के गठनका निर्णय किया है। इस गासवा-आयागका मुख्य कार्य गोवशका परिरक्षण-सवर्धन ओर विकास हागा तथा यह गोशालाआ और अन्य पशु-कल्याण-सस्थाआके माध्यमस वृद्ध अपग ओर अनुपयागी पशुआकी दख-भालकी व्यवस्था करेगा। शासकीय गासदन भी इस सापे जायँग आर गावश-सम्बन्धी जो विधान लागू हैं, उसके क्रियान्वयनके लिये आयागकी भूमिका महत्वपूर्ण हागी, एसा हमारा पूरा विश्वास ह।

—डॉ० श्रीक्रान्तिकुमारजा शर्मा मन्त्री

(१५) श्रीटाटानगर गोशाला, जमशेदपुर (बिहार)

आजसे लगभग ७५ वर्ष पूर्व सन् १९१९ ई० मे तत्कालीन गोप्रेमी समाजके जागरूक बन्धुओ तथा समाज-सेवियाने गौके प्रति अपने कर्तव्यका पालन करते हुए गोवशके सरक्षण उसकी सेवा और सवर्धनके लिये 'सनातन-धर्म-गोरक्षिणी-सभा' के नामसे एक गाशालाकी स्थापना की, जो आज 'श्रीटाटानगर गोशाला' के नामसे प्रसिद्ध है। उस समय दानमे प्राप्त एक भूखण्डपर कुछ अपग, अनाथ गायाका साथ लेकर गोसेवाका व्रत लिया गया ओर इस तरह एक लोकोपकारी सस्थाका प्रारम्भ हुआ जो अपनी सेवाओद्वारा इस समय बिहारकी प्रमुख गोशालाआमे परिगणित की जाती है।

इस गोशालामे मुख्य रूपसे सूखी बूढी, बीमार, अपाहिज और अनुपयागी गायाका पालन-पोषण होता है तथा उनकी नि स्वार्थ सेवा की जाती है। शुद्ध दूधकी विशेष आपूर्तिके लिये भी यह सतत चेष्टित है। इस समय गोशालामे दूधका उत्पादन लगभग ११००-१२०० लीटर प्रतिदिन हो रहा है। अपने ७५ वर्षोके पूर्व-इतिहासमे इस गोशालाने अनेक उतार-चढाव देखे हैं और गोपालनकी अनेक कठिनाइयाका अनुभव किया है। इस सम्बन्धमे हमारा कहना है कि गायोके हितम किये जानेवाले कार्योमे देशभरके सभी गोप्रेमियो तथा अनुभवी जनाका सहयोग मिलना आवश्यक है। बिना अनुभवी व्यक्तिके रहते गायोकी देख-रेख तथा सार-सँभालम कठिनाई पडती है। अत सभीको गोसेवाके लिये जागरूक रहना चाहिये।

—व्यवस्थापक
श्रीटाटानगर गोशाला

—श्री श्री श्री—

(१६) श्रीकृष्ण गोशाला—झालरापाटन सिटी (राजस्थान)

आज देशम अधाधुध गोवशकी हत्या हो रही है। सरकार गोवधपर प्रतिबन्ध लगानेम सक्षम नहीं है। कसाइयापर कोई रोक-टोक नहीं है। यह बात सबकी जानकारीमे है, सबके सामने है कितु गोभक्ताद्वारा प्रबल विरोध किये जानेपर भी कोई आशाजनक परिणाम सामने नहीं आ रहा है और न सरकारद्वारा गोपालनकी कोई विशष प्रेरणा प्रोत्साहन ही प्राप्त हो रहा है। यहाँतक कि गोशालाके नामपर भूमि प्राप्त करना और भी कठिन हो गया है। राजस्थानके झालरापाटनमे भी यही स्थिति है।

इसी दृष्टिसे हालहीमे आजसे लगभग २ वर्ष-पूर्व एक गाशाला खोली गयी जिसम कसाइयाद्वारा छुडाये गये गाधनको सरक्षण दिया जाता है। वर्तमानमे गोशालाके गाधनकी सख्या १०० के आस-पास है। कितु दूध देनेवाली गाएँ नही हे। सहायताराशिसे गोशालाका कार्य चलता है। दूध उपलब्ध न हानेपर भी गोधनके गोमूत्रसे विशेष लाभ प्राप्त हो रहा है। कई बीमारियाँ इसकी गन्धसे ही दूर हो जाती हैं। बीमारीवाले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और आस-पासका वातावरण शुद्ध रहता है। सुबह-सुबह गायका मुँह देखनेसे दिन शुभ बीतता है तथा मङ्गल होता है।

अभी इस गाशालाके पास अपनी कोई गोचरभूमि नहीं है। कतलखाने जानेवाला गोधन जो भूखा-प्यासा, बीमार अथवा अपग रहता है, उसके इलाज तथा देख-रेख आदिमे बडी कठिनाई होती है। काफी देख-भालके बाद भी गोधनको बचाना बडा मुश्किल होता है। ऐसा गोधन तो केवल सेवा करनेके लिये होता है। इस असहाय गोधनसे कोई प्रत्यक्ष लाभ तो दीखता नहीं कितु जो पुण्यार्जन होता है, उसकी कोई तुलना नहीं। गायको जीवनदान देनेसे अधिक और क्या पुण्य कार्य हो सकता है। अत सभी लोगोको इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

—श्रीकृष्ण गाशाला एव जनकल्याण-ट्रस्ट

—श्री श्री श्री—

(१७) राजस्थान-गोसेवा-संघ, दुर्गापुरा (जयपुर)

(श्रीमाणिकचन्दजी याहरा, अध्यक्ष)

'राजस्थान-गासेवा-सघ' की स्थापना १९५४ म हुई। गायके विषयम परम्परागत सास्कृतिक भावना और वैज्ञानिक दृष्टिका समन्वय करते हुए गोरक्षण गोपालन और गोसवर्धनके कार्यक्रमाद्वारा भारतीय समाजम गोवशकी पुन स्थापना करना इसका मुख्य उद्दश्य रहा है। प्रथमत यह कार्य 'अखिल भारत-गा-सवा-सघ, वर्धा' की शाखाके रूपम प्रारम्भ हुआ आर १९५४ म एक स्वतन्त्र सस्थाके रूपम इस सघका गठन हुआ।

राजस्थानका सौभाग्य है कि यहाँ भारत-प्रसिद्ध गो-नस्ल पायी जाता हैं और यहाँके निवासियाकी गायके प्रति असीम भक्ति हे। किंतु वार-वार वर्षाका अभाव तथा अकाल भी राजस्थानकी नियति है। अकालके वर्षम गोपालक अपनी गायाको लेकर चारेकी तलाशम मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश आदि समीपवर्ती प्रदशामे जाते थे और 'गोसवा-सघ' ने भी १९५१-५२ के अकालमे यही नीति अपनायी किंतु अनुभव यह रहा कि गय हुए गोधनमसे मुश्किलसे एक तिहाई गोधन वापिस आ पाता था। अतएव बादके अकालाम सघद्वारा बाहरसे चारा लाकर सस्ते दामापर गोपालकाको उपलब्ध कराने तथा पशु-शिविर एव 'चारा-दाना-केन्द्र' खोलनेका कार्यक्रम बनाया। १९५१-५२ से प्रारम्भ करके १९८९-९० तकके अकालामे 'राजस्थान-गासेवा-सघ' ने हर बार अपनी शक्तिके अनुसार दान-दाताआक सहयोगस लाखा गाधनको बचानेका प्रयत्न किया। अकालकी समाप्तिके बाद भा सघके पशु-शिविरामे ऐसा गाधन रह जाता हे जैसे कमजार बूढी अपग गाय बैल बछिया आदि जिन्ह काई सँभालनेके लिये तैयार नहीं हाता ओर अकालकी स्थिति न हानेके कारण राजकाय सहायता भी प्राप्त नहीं हाती। एस गोधनको वर्षोतक पालना भी एक व्ययसाध्य किंतु मानवाय कर्तव्य हे। १९८७-८८ म पडे भयकर अकालकी समाप्तिके बाद 'गोसेवा-सघ' के पास लगभग ६ हजार अनुपयागी गाधन बच गया। जिस सघके विभिन्न गोसदनोम रखा गया। उपयागी पशुधन विश्वस्त गापालकाम वितरण भी किया जाता ह। फिर भा काफी गाधन बचा रहता है।

राजस्थानकी पाकिस्तानस लगी हुई लबी सीमाएँ हैं और पाकिस्तानम गामासका पूर्तिके लिये काफी गाय चोरी-छिप ले जाया जाती ह। अकालसे बची गाय रखनेके लिये एव क़त्लसे छुडाया गायाका रखनेके लिय श्रीगगानगरसे जैसलमेरतक सघक निम्न गोसदन हैं—

(१) छतरगढ—यहाँपर 'राजस्थान भूदान-यज्ञ-बोर्ड'-की ओरसे प्राप्त २००० बीघा ऊवड-खावड टीबावाली असिंचित भूमि (बादम कुछ सिंचित बनायी गया) उपलब्ध है। गासेवा एव वृक्षपालनक लिये यहाँपर व्यापक प्रयत्न हाते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। यहाँ सघकी बडी गोशाला एव गोसदन है। कुल गावश ४७५ है, जिसम अधिकाश अनुत्पादक हैं।

(२) अनूपगढ़—यहाँ सघकी एक बडी गाशाला है ओर १३१ बाघा सिंचित-असिंचित जमीन है। यहाँपर गोधनको सख्या २३२ है।

(३) भादराराय—यह गासदन जैसलमेर जिलेम है। इनमे पलनवाला १,१०० गोधन गर्भित हानेपर गोपालकाम वितरित किया जाता रहेगा। गत अकालामे जेसलमेर जिलेका गोवश काफी कम हो गया है। इस कमीको पूरा करनेमे इस केन्द्रका महत्त्व है। पहले भी काफी गोधन वितरित किया है।

(४) बाजूवाला—यहाँपर सघकी बडी गोशाला एव गासदन है। स्थानीय सहयागसे यहाँ आज ५८७ गोधन पल रहा है।

(५) खाजूवाला—यहाँ गोधनकी सख्या आज केवल ९३ हे। ५०० तककी व्यवस्था है।

(६) रावला—गोधनकी सख्या आज केवल १८३ है। ५०० तककी व्यवस्था हे।

(७) मुण्डा—इसमें गोधन-सख्या आज ४०१ है। ७०० तककी व्यवस्था हे। इस तरह कुल गोधन-सख्या ३०३१ है। कुछ गासदनाम स्थानाय चारा-दानाका सहयोग है। परतु साधन सयाजन एव व्यवस्था-खर्च सघको उठाना ही पडता है।

पाकिस्तानके अलावा बबईकी ओर भी कत्लके लिये गाधन जाता है। इसका रोकथामके लिये उदयपुरके समीप कडिया ग्राममे उपयुक्त स्थानपर 'बडगाँव प्रखण्ड सवा-मण्डल' को आर्थिक सहयाग देकर गासदन प्रारम्भ किया गया है।

गोसवा-सघ' को इन गासदनाकी सहायतासे काफी गाधनका पाकिस्तानकी आर जानेसे राकनेम सफलता मिली है। किंतु परिस्थिति और समस्या जितनी विकट है उसके सामने

साधन बहुत सीमित है।

गोपालन-गोसदन-योजना

एक बडा चिन्ताका विषय है, देशी नस्लकी गायोका निरन्तर ह्रास। गोसदनोमे जो गाये आती हैं, उनमे बडी सख्या बछियाकी रहती है। शहरोमे सडकोपर डोलनेवाले आवारा पशुओसे बछियोकी सख्या काफी रहती है। देशमे शहरीकरणकी प्रवृत्ति बढी है, तबसे गोशालाओपर अनुपयोगी गाये लेनेका भार बहुत बढा है। सघका ओरसे १९५० मे सवाइमाधोपुरमे इण्डाला गोसदन प्रारम्भ किया जिसमे चराईकी खूब सुविधा थी ओर हजारो पशु रख जा सकते थे। किंतु वह सारा क्षेत्र 'व्याघ-परियोजना' मे आ जानेके कारण छोडना पडा और आज ऐसे बडे गोसदनकी आवश्यकता और भी बढ गयी है जहाँ गोशालाएँ अपना ऐसा पशुधन भेज सके।

जैसलमेर जिलेके सीमावर्ती जगलामें सघद्वारा वर्ष ८४-८५ मे अछूते खडे सेवण घासको कटवाकर अकाल-ग्रसित जिलोमे पहुँचाया गया था। जो अपने-आपमे अभूतपूर्व कार्य था।

सघद्वारा इन गोसदनोमे अच्छी नस्लाके सॉड भी रखे जानेकी व्यवस्था है ताकि अनुपयोगी पशुधन उत्पादन-योग्य बन सके।

जैसलमेर फॉडर वैक (चारा-सग्रहण)-योजना

जैसलमेर जिलेमे मोहनगढ लाख सेवण घासका बहुत बडा क्षेत्र है। जहाँ हमने गत वर्षोमे फॉडर बैंकके द्वारा हजारो मन सेवण घासकी कलार लगायी। यह घास अकालके दिनोमे बहुत उपयोगी साबित हुई। उस योजनाको हम पुन शुरू करना चाहते हैं।

गो-विकासकी स्वावलम्बी योजना—गोरस भडार

अकालमे गोरक्षणसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है गायके प्रति पशुपालकोमे रुचि जाग्रत् करना ताकि घर-घर गोपालन हो सके। इस दृष्टिसे गोरस-भडारका प्रयोग काफी सफल रहा है।

'राजस्थान गोसेवा-सघ'ने जयपुर चौमू रोडपर बाडा नदाके क्षेत्रमे अपना दूध-सग्रह-क्षेत्र बनाया और जयपुरमे घर-घर गायके दूधका वितरण किया। बाडी क्षेत्रके ४० गाँवोमे ८० प्रतिशत भैंस तथा २० प्रतिशत गाय थीं। आज ३० वरसके अथक प्रयत्नोके बाद अनुपात उलट गया है—८० प्रतिशत गाय हैं और २० प्रतिशत भैंसे हैं। उस क्षेत्रमे घर-घर गाय पलती देखकर गोप्रेमी मुग्ध हो जाते हैं।

जयपुर बाडी क्षेत्रके प्रयोगसे उत्साहित होकर 'श्रीकृष्ण-जन्म-स्थान मथुरा'मे गोरस-भडार विकसित करनेकी जिम्मेदारी भी 'राजस्थान गोसेवा-सघ'ने ली है।

'राजस्थान गोसेवा-सघ'की योजना है कि राजस्थानके अनेक क्षेत्रोंमें गोरस-भडार कायम करके गोपालनके क्षेत्र विकसित किये जायँ। अभी बीकानेर जोधपुर और दौसा—इन तीन स्थानोपर कार्य प्रारम्भ करनेकी इच्छा है।

राजस्थानकी गोशालाएँ एव गोपालनमे रुचि रखनेवाली सस्थाएँ सुयोग्य भावनाशील कार्यकर्ताओकी कमी महसूस करती है। सघके प्रधान कार्यालयमे कृषि-गोपालन-केन्द्र तो है ही जहाँ गोनस्ल-सुधारका कार्य हो रहा है, किंतु साथ ही प्रशिक्षण-केन्द्रकी व्यवस्था भी है। इन योजनाओके निष्ठापूर्वक कार्यान्वयनसे हम गायको बचानेके साथ जीव-दया शाकाहार पर्यावरण एव गोबर-खादके जरिये अग्रेजी खादद्वारा होती अपनी बरबादीका तथा देश और मानवताको बचा सकेंगे। तेल खत्म होते ही ट्रैक्टर जोत खत्म होगी तब हम बची गायोसे बैल ले सकेंगे। गाय बचेगी तो हम बचेंगे हमारे बच्चे पोषित होंगे और खेत बचेंगे।

━━━━━━
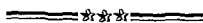
(१८) श्रीपंचायत गोशाला, सूरजगढ (राजस्थान)

राजस्थानके शेखावाटी अञ्चलके उत्तर-पूर्वमे हरियाणा सीमाके सन्निकट सूरजगढ नामक एक नगर है। लगभग दो सौ वर्ष पूर्वकी बात है, एक दिन तत्कालीन बिसाऊ नरेश स्व० सूरजसिंहजी अपने परिकरोसहित भ्रमण कर रहे थे। इस स्थानपर पहुँचनेपर रात्रि हो गयी, अत राजाने ससैन्य वहींपर विश्राम किया। उसी रात वहाँ एक गौ माता अपने नवजात बछडेकी रक्षा-हेतु पूरी रात हिंसक जानवरसे मुकाबला करती रही। सूर्योदय होनेपर इस विस्मयकारी घटनाकी जब ठाकुर साहबको जानकारी हुई तो वे भावविभोर हो गये और उस क्षेत्रको विलक्षण वीरभूमि मानकर उन्होने अपने नामपर 'सूरजगढ स्थापनाका श्रीगणेश किया—ऐसी जनश्रुति है। धीरे-धीरे यहाँ नगर बस गया।

धर्मपरायण, सदाचारी लोगोने सर्वसाधारणके कल्याणके लिये मन्दिर धर्मशाला पाठशाला औषधालय, प्याऊ एव

गोशाला आदिकी स्थान-स्थानपर स्थापना की। उसी क्रममे स्वनामधन्य गोलोकवासी श्रीरामनारायणजी कायाँने विक्रम-सवत् १९६० मे उक्त गोशालाकी स्थापना की।

एक बार बिसाऊ दरबार बिशनसिहजीको कोई असाध्य रोग हो गया था। उसके दोष-निवारणके लिये उन्होने फरट गाँवके पास लगभग ७५० बीघा गोचरभूमि गोशालाको प्रदान की। कहते हैं इससे ठाकुर साहबको उस रोगसे मुक्ति मिली थी। रजवाडोके समयमे क्षेत्रके शासकोका गोशालाको विशेष सहयोग प्राप्त होता रहा, वे स्वय गोपालक थे। उनकी ओरसे भवनके लिये भूमि एव लगभग २५०० बीघा गोचरभूमि (चरागाह) गौ माताओके लिये प्राप्त हुई, जिसपर इस समय पूर्ण स्वामित्व गोशालाका है। इसमे गोशाला एव गाँवकी गाय चरती हैं।

भगवान् गोविन्द गोपालकी असीम अनुकम्पा एव व्यापक जन-सहयोगसे भयकर दुर्भिक्ष तथा विषम परिस्थितियोका भी गोशालाने दृढतासे मुकाबला किया। गोशालाका मुख्य उद्देश्य लूली-लँगडी तथा असहाय गायोकी सेवा-शुश्रूषा करना और गोधनकी निरन्तर वृद्धि करना ही रहा है जो भगवत्कृपासे अनवरत चल रहा है। सचमुच आज यह गोशाला झुंझुनू जिलेकी सर्वाधिक भाग्यशाली गोशाला है। इसके पास कृषि-भूमि पर्याप्त है, जिससे हरा चारा घास गुँवार, कडबी, पाला आदि गोमाताओको सुलभ होता है। समीपवर्ती ग्राम काजडामे भी गोचरभूमि (चरागाह) है, जहाँ गौएँ चरती हैं। भगवत्कृपासे इस समय गोशालामे दूध देनेवाली लगभग ४० गाये हैं और अच्छी नस्लके साँड भी हैं। गोशाला निरन्तर प्रगतिके पथपर अग्रसर होकर गौ माताओकी सेवा करे—यही व्रजनन्दन गोपालसे करबद्ध प्रार्थना है। —श्रीभालचन्द्रजी शर्मा 'गीतेश'

(१९) श्रीकलीकुड मेनालक्ष्मी गौशाला एव स्व० जोरमल लक्ष्मीचन्द पिजरापोल, धोलका (गुजरात)

'श्रीकलीकुड मनालक्ष्मी गोशाला' एव 'स्व० जोरमल लक्ष्मीचन्द पिजरापोल' की स्थापना मकरसक्रान्ति १९८८ ई० को बावला-खेडा हाइवे धोलकाके पास अहमदाबादमे हुई। इसमे 'गोशाला-विभाग' तथा 'पिजरापोल-विभाग'—ये दो विभाग हैं। गोशाला-विभागमे २६ गाय २९ बाछे-बाछी ५साँड तथा ५ बैल हैं इस कुल गोधनकी सख्या ६५ है। इसी प्रकार पिजरापोल-विभागमे ६ गाय १० बैल तथा अन्य जानवर हैं। मुख्यत यहाँ काँकरेज गीर तथा मिश्र नस्लका गोधन है। गोशालाके पास अपनी कोई गोचरभूमि नहीं है किंतु ३ बीघा क्षेत्रफल होनसे उसीमे गाय घूमती-फिरती हैं। उपलब्ध शुद्ध दूध गरीब मरीजोको नि शुल्क दिया जाता है कुछ मन्दिरके कार्यमे प्रयुक्त होता है तथा कुछ विक्री कर दिया जाता है। शेषका घी बनाया जाता है। गोधनकी चिकित्साके लिये स्वयका चिकित्सालय है। अनुपयोगी गोधनकी सख्या बढ जानेपर उसे 'अहमदाबाद पिजरापोल' मे भेज दिया जाता है और बाछे-बाछीको इस शर्तके साथ गरीब पशुपालकको वितरित कर देते हैं कि वह किसी भी हालतमे उन्हे बेचे नहीं और जब अनुपयोगी लगे तो पुन सस्थामे वापस कर दे।

मूलत इस सस्थाकी स्थापना गोसेवाकी दृष्टिसे तथा गोमाताके ऋणसे उऋण होनेके लिये हुई। हमारा यह मानना है कि यदि गायको मातृतुल्य समझकर भक्तिपूर्वक गायकी सेवा होगी तो वही स्वयमे एक आदर्श गोशाला बन जायगी। अत गोशालाओ या पिजरापोलोमे मूलत कर्तव्य और सेवाका ही भाव होना चाहिये। —डॉ० सुरेश एस्० झवेरी

(२०) श्रीगोपालक-सघ (गोरक्षण-सस्था), सोलापुर

'श्रीगोपालक-सघ (गोरक्षण-सस्था)' की स्थापना सन् १९३२-३३ ई० मे सोलापुरमे हुई। इस सस्थाकी स्थापनाका मुख्य उद्देश्य है—जीवदया अहिंसा और गोवध-बदी तथा कतलखानेसे गोवशका बचाव करना एव गोपालन तथा गोसवर्धन करना गोदुग्धकी महत्ता समझाकर अधिकाधिक उत्पादन करना तथा उसका प्रचार-प्रसार करना खेतोके लिये जुताई आदिके हेतु अच्छी नसलके बछडोको तैयार करके उन्हे गरीब किसानोको वितरित करना। हमारी इस सस्थाने शुरूसे आजतक लगभग तीन हजारसे भी अधिक बछडोका वितरण किया है।

इस सस्थामे कुल गोधनकी वर्तमान सख्या १०२ है जिनमे ६५ गाय ८ बैल १ साँड तथा २८ बछडे हैं। मुख्य रूपसे देशी गीर और सकरित नसले हैं। तीन गोसदन हैं।

पानीके लिय एक बडा हाद है। चारम कडवी, मकई तथा हरी घास दी जाती है। जानवर खतम लगभग ५ घंटतक चरते हैं। गायाके लिये एक चरागाह भी है ओर लगभग ९५ एकड गाचरभूमि है। हम अपनी गायासे प्राप्त दूधका उचित दामामे गरीबा, छोट बालका बीमार व्यक्तिया तथा वयावृद्धजनाका उपयागके लिये देते हैं। हमारी गाशाला तथा सस्थाके लोगाका गायापर इतना प्रम हे कि उनकी आवाज सुनकर गाय वहीं खडी हो जाती हैं।

हमारा यह अनुभव है कि गोपालनम आर्थिक कठिनाइयाँ आडे आती हैं, अत गोपालन तथा गोसवर्धनके लिये आयक स्रोताको ठीक रखना चाहिये तथा स्थानीय सक्रिय कार्यकताओ एव सस्थाआके सहयागके साथ ही सरकारकी ओरसे भी विशेष प्रात्साहन एव सहयोग मिलना चाहिये। अलग-अलग गायो-बैला आदिके लिये अलग-अलग हवादार गासदन होने चाहिये। हमारी जानकारीम बीजापुर तथा बार्शीमे दो पिजरापोल सस्थाएँ हैं।—मन्त्री श्रीगोपालक-सघ

(२१) श्रीपॉजरापोल-सस्था, सॉगली (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्रक साँगली शहरमे श्रीगणपति-मन्दिरके पास श्रीपाँजरापोल-सस्था स्थापित है। यह एक प्राचान गाशाला है। इसकी स्थापना सन् १९१९ ई०म हुई। सस्थाक पास कुल १०५ छोट-बड साँड, बछडे तथा गाये हैं। दुधार गाय साँगलीम हैं तथा अन्य बूढी-अपग अपत्यहान गाय कवठेपिरानमे हैं। साँगलाके पास पाँच एकड जमीन ह। इसक अतिरिक्त साँगलीसे लगभग १५ कि० मा० का दूरापर कवठेपिरानकी सस्थाम ९० एकड जमीन नदाक किनार हैं। अत दोना स्थानासे चारे आदिकी व्यवस्था हा जाती हैं। कुछ घास-चारा बाजारसे भी खरीदा जाता है, और खती भी की जाती है। मुख्य रूपसे इस सस्थाके पास गीर, देहाती ओर खिलार नस्लकी गाय हैं।

एक आदर्श गाशालाके लिये आवश्यक हे कि गोशालामे भरसक मात्रामे प्रकाश और प्रदूषणमुक्त शुद्ध हवा होनी चाहिये। साधारणतया एक गायके लिय १०×५ फुटकी जगह हानी चाहिय। चार-पनीकी पर्याप्त सुविधा हो। गोशाला एव गायाकी राज सफाई होनी चाहिये। सेवक-वर्ग कुशल एव कर्मठ तथा गाप्रेमी हा। हर हफ्तेमे याग्य चिकित्सकसे गायाकी देख-भाल करानी चाहिये और गाशालाकी प्रत्येक गायका अलग रेकार्ड दर्शक-कार्ड तथा रजिस्टर हो जिसम उसका प्रत्येक दिनका विवरण हा।—व्यवस्थापक श्रीपाँजरापोल-सस्था—साँगली

(२२) श्रीगौरक्षण-संस्था, धामनगॉव रेलवे, अमरावती (महाराष्ट्र)

अपाहिज बूढ तथा भाखड जानवराका उचित सरक्षण दनक लिये सन् १८८७ ई० म 'श्रागारक्षण-सस्था'की स्थापना की गयी। महाराष्ट्रका गाशालाआम इस 'श्रीगौरक्षण-सस्था'का विशिष्ट स्थान हैं। आज सस्थाका लगभग सो वर्षसे ऊपर हो चुक हैं यह निरन्तर प्रगतिपर हे। सस्थाक पास आज अपनी खुदकी इमारत है जहाँ जानवराका आवास कार्यालय कर्मचारी-निवास, बगीचा तथा जानवराका दवाखाना है। सस्थाक पास १७२ एकड जमीन ह जिसका उपयोग हरा चारा, घास-चारा आदिक लिये होता हे। कुछ जमान चरागाह-हेतु भा प्रयुक्त होती है। गायाके आवास-हेतु सस्थाका इमारतम गाठे बन हुए हैं ओर गायाको सरका ढेप फल्ली ढेप गहूँ, चोकर मक्का चुरी आदि सतुलित आहार दिया जाता है तथा वर्षभर हरा चारा मिलता रहे ऐसी व्यवस्था भी की गयी हे।

सस्थामे प्रतिदिन लगभग १७५ लीटर शुद्ध पाष्टिक दूध हाता है। वह सस्थाक कर्मचारियाद्वारा उचित दामोम घर-घर वितरित किया जाता हे तथा जनहितको ध्यानमे रखते हुए अस्पतालामे मरीजा और सद्य प्रसूता माताआको नि शुल्क वितरित किया जाता है।

इस 'श्रीगोरक्षण-सस्था'म गोधनकी कुल सख्या इस समय १९३ है जिनमसे ६३ गाये ८ बैल ४५ बाछे तथा ७७ बाछी हैं। गायाकी मुख्य नस्लोम जर्सी २८, होस्टन १८, गीर १० तथा गावरानी ७ हैं।

आदर्श गोशालाके सम्वन्धम हमारा कहना है कि आदर्श गाशालाको यथासम्भव पूर्णतया स्वावलम्बी होना चाहिये, उसके आयके स्रोत अपने होने चाहिये तभी ठीकसे गायोका पालन-पोषण और व्यवस्था-सम्बन्धी कार्य हो पाता है। यदि वह कुछ बचत कर सके तो जरूरतमन्द गोशालाआको वितरित कर दे। इसके साथ ही योग्य, कुशल, प्रशिक्षित कामगाराका हाना भी एक अच्छी गोशालाके लिये बहुत आवश्यक है। क्याकि सब साधन रहनेपर योग्य कामगाराके अभावम गोशाला ठीक चल नहीं पाती।

—श्रीझुवरलाल राठी उपाध्यक्ष

(२३) गोसेवा-समिति, कामठी, नागपुर (महाराष्ट्र)

सन् १९८० मे कामठीमे गोरक्षा तथा गोहत्या-बदीके लिये विशाल सत्याग्रह हुआ था। उसी समय गोधनके सरक्षण तथा पालन-पोषणके लिये एक समिति बनानेका निर्णय लिया गया। इसके फलस्वरूप १९८२ ई० म समिति गठित हुई और समितिका गोशालाके लिये ४ ७० एकड भूमि लीजपर प्राप्त हुई आर निर्माण आदि कार्य प्रारम्भ हो गया तथा गोशालाका ठीकसे सचालन १९९२से प्रारम्भ हुआ।

इस समय इस गोशालामे कुल गाधनकी सख्या ३८ हे जिनम २१ गाय १ बैल, ३ साँड ६ बाछे तथा ७ बाछियाँ हे। सभी गाय गॉवरानी नस्लकी हैं। सहयोग-राशिसे गायाके लिये आवास तथा पानीकी व्यवस्था है। अभी गोशालाके पास कोई चरागाह या गोचर-भूमि नहीं है। जिससे चारे आदिकी व्यवस्थामे कठिनाई हाती है। गायासे प्राप्त शुद्ध दूधको विक्री कर दिया जाता है।

आज गोधनकी हत्या देशकी सबसे बडी समस्या है। गोहत्याको राकनेके लिये सभी लोगोको मिलकर प्रयत्न करना चाहिये। कतलखान बद होने चाहिय। जिस राज्यम गोवश-वध-सम्बन्धी कानून नहीं है वहाँ एसा कानून बनना चाहिये और लोगोको कानूनकी जानकारी भी करानी चाहिये।

— प० श्रीमनोहरलालजी शर्मा

(२४) श्रीगौरक्षण-सस्था, यवतमाल (महाराष्ट्र)

यवतमालम 'श्रीगौरक्षण-सस्था' के नामसे एक गाशाला है। यह अत्यन्त प्राचीन गोशाला हे। यह सस्था १९०५ ई० से आजतक सुव्यवस्थित रूपम चल रही है। प्रारम्भमे इस 'गौरक्षण-सस्था' के पास लगभग १६० एकड जमीन थी, किंतु वह सब सीलिगम चली गयी जिसस काफी कठिनाई हुई। शहरमे जमीन है जहाँपर अभी गाशाला आदि चलती है। जगह तो बहुत है, कितु गायाके लिये कोठा बहुत छोटा है और वह भी प्राय जीण हा चुका है इसे बनानेके लिये हम सचष्ट हैं।

गोशालाम इस समय गाय-बैल, बछडाकी सख्या ९३ है। सभी गाय देशी नस्लकी हैं। गायोके लिये चारा खरीदा जाता है। गोपालनम मुख्य समस्या आर्थिक रहती है। सरकारका चाहिये कि गोरक्षण-गोशाला आदिकी जमीन-जायदाद आदिको सीलिग-एक्टसे मुक्त रखे, क्योकि गोरक्षण किसीका व्यक्तिगत कार्य न होकर परोपकारका कार्य है, जीव-दयाका कार्य है। इसपर सरकारका ध्यान दना चाहिये तथा गापालनको विशेष महत्त्व देना चाहिये।

हमारी जानकारीम अमरावती नागपुर धामनगाँव तथा भद्रावतीम भी कई गोशालाएँ हैं।

—एस्० बी० अटल

(२५) श्रीपॉजरापोल गोरक्षण-सस्था, पनबेल (महाराष्ट्र)

आजसे बहुत वर्ष पूर्व हमारे यहाँ गाँवम कुछ गोप्रेमी सज्जनाने गोसेवाके उद्देश्यको ध्यानम रखकर विचार-विमर्श किया आर उस निर्णयके अनुसार सन् १९०८ ई०मे पनवेलम 'श्रापाँजरापाल गारक्षण-सस्था' की स्थापना हुई। आज इस सस्थाको स्थापित हुए लगभग ८६ वर्ष हा गय हैं आर यह धारे-धारे प्रगतिकी आर ही जा रहा है।

इस समय सस्थाम गाधनकी कुल सख्या ९८ है जिसम ३३ गाय ३६ बछड २७ बाछी और २ साँड हैं। गाँवडी गीर, जर्सी किलारी तथा देशी नस्लके गोधन हैं। सस्थाके पास २७५ एकड जमान है गोचर-भूमि भी है। गोचरभूमिके घास-चारेका उपयोग होता है। सभी व्यवस्थाएँ ठीक ह कितु सवाभावी कुशल कर्मचारियाके अभावम गायाकी दख-रख ठीकसे नहीं हा पाती है। एक अच्छी गाशालाके लिय आवश्यक है कि उसम जा भी काम कर व प्राय गौके प्रति श्रद्धा एव प्रम रख तभी सच्ची गासवा हा सकता है। गोपालन एव गासवर्धनके लिये लागाका

अधिक-से-अधिक प्रेरणा देनी चाहिये और गोदुग्धकी विशेष उपयोगिताको समझाते हुए गाया-सम्बन्धी विवरण तथा गोपालन आदिकी वाताके लिये कोई पत्र-पत्रिका प्रकाशमें आनी चाहिये। उसमें ऐसी सामग्री हो जिससे अधिक-से-अधिक लोग इस ओर उन्मुख हा, जिसके पास समय हो, वह समय दे और जिसके पास साधन हो वह साधन उपलब्ध कराये। इस प्रकार पारस्परिक सहयोगसे गोधनकी सेवा तो होगी ही साथ ही गोवशकी रक्षा भी की जा सकेगी।

—व्यवस्थापक
श्रीपाँजरापोल गोरक्षण-सस्था,
पनवेल

(२६) श्रीगोपाल-कृष्ण गोरक्षण-सस्था—मानवत (महाराष्ट्र)

मानवतमे १९७०मे इस 'श्रीगोपाल-कृष्ण गोरक्षण-सस्था' की स्थापना हुई। इस समय गोशालामे २१ गाय, ९ बैल, २ साँड, १४ बाछे तथा २१ बछिया हे। गोशालाके पास अपनी थोडी-सी गोचर-भूमि होनसे चारे आदिकी व्यवस्था है, किंतु फिर भी हरी घास आदि खरीदनी पडती है। गायोसे प्राप्त दूध तथा गोबर आदिकी विक्री की जाती है। थोडी खेती भी होती है। नासिक तथा निजामाबादमे भी गोशालाएँ हैं। —गोरक्षण-सस्था, मानवत

(२७) गुरुनानक गोशाला, कवर नगर, जलगॉव (महाराष्ट्र)

जलगाँवके 'गुरुनानक गोशाला' की स्थापनाका एक रोचक इतिहास है जिसे यहाँपर दिया जा रहा है। मैं 'कल्याण' पत्रका बहुत दिनोसे पाठक रहा हूँ और इस 'गोशाला' की स्थापनाकी मूल प्रेरणा भी मुझे 'कल्याण' पत्रके पढनेसे ही मिली। हुआ यह कि कुछ वर्ष पहले 'कल्याण' के एक साधारण अङ्कके 'पढो, समझो और करो' स्तम्भमे 'दो पैसेका स्कूल' शीर्षकसे एक घटना छपी थी। शीर्षक पढते ही मुझे बडा आश्चर्य हुआ कि दो पैसेका कैसा स्कूल होगा? जिज्ञासावश पूरा लेख पढ गया। मनमे उमग हुई कि मैं भी क्यो न दो पैसेसे गोरक्षाका कार्य शुरू करूँ। गोके प्रति प्रेम तो मेरा था ही। बस, फिर मैंने मनमे सकल्प कर लिया कि गोसेवाके लिये एक गोशाला खोलनी चाहिये।

यहाँ गुरुद्वारेमे सत्सगका कार्य चलता रहता है। अत मुझे अपनी योजनाके प्रचारका अवसर मिल गया। मैंने गोमाताकी महिमा बताते हुए गोरक्षार्थ केवल दो पैसे प्रतिदिन निकालनेकी लोगोसे अपील की। उस अपीलके परिणाम-स्वरूप एक रुपया मासिक चदा गोरक्षाके लिये देनेवाले कुछ सदस्य बन गये। इससे मेरे मनमे उत्साह बढने लगा।

यहाँ शनिवारको पशु-बाजार लगता है जिसमे गोवश विक्रीके लिये आता है। उस बाजारसे जो गोवश अनुपयोगी होता था, उसे स्थानीय पिंजरापोलद्वारा खरीदकर सुरक्षित रखा जाता था। कुछ दिन इसी रूपमे गोरक्षाके कार्यमे लगा रहा। बादमे लोगोके सहयोगसे थोडी-सी जमीन भी गोशालाके लिये मिल गयी। पर अब गाएँ कहाँसे आये। अपने दरबार साहबमे दो गोएँ थीं। उनमसे एक गाय गोशालामे रखी गयी। एक गाय एक अन्य सज्जनने दे दी। इस प्रकार दो गौओसे इस गोशालाका शुभारम्भ हुआ और गुरुजीके नामपर ही 'गुरुनानक गोशाला' नामकरण किया गया। पिंजरापोलके एक सज्जनके सत्परामर्शद्वारा गोशालाका उद्घाटन हुआ और अक्षय तृतीयाको सन् १९६९ ई०मे गोशालाकी स्थापना भी हुई।

इस गोशालाका मुख्य उद्देश्य गोवशको कसाइयोके हाथसे बचाकर गोशालामे उचित सरक्षण देना है। अनुपयोगी गोवशकी भी यहाँ पालना होती है। कई लोग अपने वृद्ध बैल जो खेती करने योग्य नहीं रहते गोशालामे दे जाते हैं। पहले तो उनके लिये कुछ नहीं लिया जाता था, किंतु अब आर्थिक कठिनाईके कारण स्वल्प धनराशि उनसे ली जाती

५३ बुढानपुर ५४ बनोसा (अमरावती), ५५ धामनगाँव, ५६ मारसी (अमरावती), ५७ पढरकवडा (यवतमाल) ५८ पुसाद (यवतमाल), ५९ वून ६० उमरखेड (यवतमाल) ६१ खेरकड (आकाला), ६२ अकोलवी बालापुर, ६३ मुर्तिजापुर (आकोला) ६४ करजा (आकोला), ६५ रिसाड (आकोला) ६६ बुलालेक (बरार), ६७ चिखली (बरार) ६८ काले (बुल्डाना) ६९ मलकापुर, ७० नदूरा ७१ लोनार (बुल्डाना) ७२ दउलगाँव राजा ७३ शगाँव (बुल्डाना)।

बगाल

१ कलकत्ता पिजरापोल सासाइटी २ बरिया (बर्दवान) ३ दूधरा (मुर्शिदाबाद) ४ दार्जलिङ्ग ५ रानीगज, ६ रामकुमार रक्षित लेन (कलकत्ता) ७ लिलुआ (कलकत्ता पिजरापाल सोसाइटी), ८ ताहिरपुर (रानीगज), ९ रामपुर डयरी फार्म १० पञ्चानन तल्ला लेन, हवडा, ११ तालकरघर रोड हवडा १२ म्युनिसिपल मार्केट, हवडा १३ लिलुआ—(अ) मारवाडी गा-रस कपनी (आ) फ्रेड्स डयरा फार्म (इ) दि शर्मा डेयरी फार्म (ई) दि रेलवे डयरी फार्म १४ रगपुर डयरी फार्म लोकनाथ चटर्जी लेन, शिवपुर।

मद्रास

१ कोयम्बापुर (मद्रास) २ मद्रास।

विहार और उडीसा

१ आरा २ विहार ३ बगूसराय (मुगेर) ४ भागलपुर ५ बगहा बाजार (चम्पारन) ६ बरगाम (चम्पारन) ७ चेवासा ८ चतुरबाजार (हजारीबाग) ९ कोलगाँव (भागलपुर) १० चाकुलिया ११ दलसिहसराय (दरभगा) १२ दरभगा १३ दवघर १४ गया १५ गोगरी जमालपुर (मुगर) १६ हजारीबाग १७ हाजीपुर (मुजफ्फरपुर) १८ इस्लामपुर (पटना) १९ झल्दा पुरलिया (मानभूम), २० झरिया (मानभूम) २१ खगडिया (मुगर) २२ किशनगज २३ कटिहार २४ कडुली (मुजफ्फरपुर), २५ कम्तुल डयरा फार्म (दरभगा) २६ लक्खीसराय २७ मधुबनी (पुरानया) २८ मुगर २९ मुजफ्फरपुर ३० मातिहारी ३१ मिराजगज (हजारावाग) ३२ महसी (चम्पारन) ३३ मधुबना (दरभगा) ३४ माहम्मदपुर (छपरा) ३५ नागछिया (भागलपुर) ३६ पटना ३७ पुरलिया (मानभूम) ३८ रामगढ़ (हजारावाग) ३९ रक्साल ४० रसडा (दरभगा) ४१ पुरी श्रीजगन्नाथ, ४२ राँची (छोटा नागपुर) ४३ राजगिर (पटना) ४४ ससराम (आरा), ४५ सिवान, ४६ सिगिया, ४७ समस्तापुर (दरभगा) ४८ सारन (छपरा) ४९ सिलाव (पटना), कटक।

सिध

१ अलिअरकोटेंटो (हैदराबाद) २ अदमाकनटो (हैदराबाद), ३ हेदराबाद ४ हाला (हैदराबाद), ५ जल्लन (हेदराबाद) ६ जैकोबाबाद (हैदराबाद), ७ कम्बर (लरकाना) ८ खेरपुर (सक्खर), ९ खानपुर (हैदराबाद), १० कराची ११ कथकोट १२ लरकाना १३ मीरपुर (हैदराबाद), १४ मेहर (हैदराबाद), १५ नगरथला १६ रोहडी (सक्खर) १७ राबदेसी १८ शिवदरीकुँवर (लरकाना), १९ सक्खर, २० शिकारपुर, २१ टाँडामुहमदखान (हैदराबाद) २२ ट्ठा।

दिल्ली

१ नजफगढ (दिल्ली) २ सोनपत (दिल्ली) ३ दिल्ली पिजरापाल।

हैदराबाद रियासत

१ हैदराबाद।

मैसूर रियासत

१ बगलार।

सीमान्त-प्रदेश

१ नौशेग (पशावर), २ पेशावर, ३ कोहाट, ४ मर्दान ५ देरा इस्माइल खाँ।

बलोचिस्तान

१ थाडर।

मध्य-भारत

१ इदौर २ मऊ छावनी (इदौर) ३ रतलाम ४ सनावद (इदौर) ५ अनूपशहर (ग्वालियर) ६ उज्जैन (ग्वालियर) ७ कोसरपुरा (ग्वालियर), ८ शाहजहाँपुर (ग्वालियर) ९ खाचरोद (मालवा) १० बडानगर स्टेशन (मालवा), ११ राहरच (मालवा) १२ जावरा १३ तल्ल (जावरा) १४ टीकमगढ (ओडछा) १५ जैथारी (रीवाँ रियासत) १६ छतरपुर १७ सिमथर।

राजपूताना

(अ) अजमेर मेरवाड़ा—

१ अजमेर २ ब्यावर ३ नसीराबाद ४ ककडी ५ पुष्कर, ६ किशनवास।

(आ) रियासत—

जयपुर—१ जयपुर २ लक्ष्मणगढ, ३ मॅडावा, ४ चासा, ५ रामगढ ६ फतेहपुर, ७ नवलगढ।

जाधपुर—१ जाधपुर २ डाडवाना, ३ नावाँ ४ रिसालपुर, ५ लाडनूँ, ६ खारची।

बाकानेर—१ बीकानेर गोशाला, २ बीकानेर पिजरापोल ३ रतनगढ ४ चूरू, ५ सुजानगढ, ६ सरदारशहर, ७ सादुलपुर ८ हनुमानगढ ९ नोहर १० रेनी (तारानगर), ११ डूँगरगढ १२ भानासर।

जैसलमेर—१ जसलमर २ बाडमेर।

भरतपुर—१ भरतपुर २ बैरभुसावर ३ बयाना ४ कामबन, ५ खेलरी ६ पहाडी, ७ रूपवास ८ श्रीगढी।

अलवर—१ अलवर २ राजगढ, ३ बटोठरा ४ रामगढ।

धौलपुर—१ धोलपुर।

पजाबकी रियासत

पटियाला—१ पटियाला, २ धूडी ३ बरनाला, ४ भादुल, ५ भटिडा, ६ मनसा ७ धेलीबली।

नाभा—१ नाभा २ भावल भाजाकी, ३ जतूल।

भावलपुर—१ अहमदपुर २ अहमदपुर लबा।

फरीदकोट—१ कोटकपूरा।

कपूरथला—१ कपूरथला २ फगवाडा।

जींद—१ जींद, २ दादरी चर्खी ३ सोतिया।

मडी—१ मडी।

गायसे पुरुषार्थ-चतुष्टयकी सिद्धि

सस्कृत साहित्यमे पृथ्वी, जल तेज (सूर्य, चन्द्रमा, किरण) वायु, दिशा, माता इन्द्रिय ओर वाणी आदि अनेक अर्थोमे 'गो'शब्दका प्रयोग देखा जाता है। इनमसे कोई भी अर्थ लाक्षणिक नहीं है, सभी 'गा'शब्दक वाच्यार्थ हैं। इन सभी रूपाम गोमाता सम्पूर्ण जगत्का कल्याण कर रही है। भगवद्विभूतियाकी भाँति गौकी विभूतियाँ भी सर्वत्र व्यापक ह। हम गामाताके ही अङ्कमे रहते, चलते-फिरते ओर खेलत हैं। गास ही हमे जीवन ओर जीवन-निर्वाहके साधन प्राप्त हात हे। गो ही सुमधुर अन्न, अमृतोपम दूध शीतल जल ओर स्वच्छ हवा प्रदान करक हमारे प्राणोका पाषण तथा शक्ति आर स्वास्थ्यका सवर्धन करती है। हमारी आधारशक्ति, प्राणशक्ति और वाक्-शक्ति सब कुछ गौ ही है। इस महिमामयी गोकी सम्पूर्ण विभूतियाका वर्णन तथा उनका गोरव-गान हम जीवनभर करते रहे तो भी पार नहीं पा सकते। यहाँ केवल धेनु आर धरतीक रूपम प्रतिष्ठित गोविभूतिकी किचित् महिमापर प्रकाश डाला जायगा।

मूर्खस लकर विद्वान्तक सम्पूर्ण जगत्के मानव जो कुछ चाहते ह तथा जिसकी प्राप्तिके लिये जीवनभर अनक उपायाका अवलम्बन एव अथक परिश्रम करते ह उसका नाम है पुरुषार्थ। यह पुरुषार्थ चार भागाम विभक्त ह—धर्म अर्थ, काम ओर मोक्ष। विश्वके अखिल जन-समुदायकी समस्त इच्छाएँ इन्हीं चाराम केन्द्रीभूत हे। अपने-अपने अधिकार और योग्यताके अनुसार कोई इनमसे एककी, कोई दोकी, कोई तीनकी कोई चारोकी और कोई केवल अन्तिम पुरुषार्थकी अभिलाषा रखते हे। उक्त पुरुषार्थोमे दो लौकिक हैं और दो पारमार्थिक। अर्थ ओर काम लाकिक है तथा धर्म और मोक्ष पारमार्थिक। जिसने क्रमश लोकिक और पारलौकिक चारो पुरुषार्थोको हस्तगत किया है, उसीका जीवन सभी दृष्टियोसे परिपूर्ण माना गया है। जीवनकी इस परिपूर्णताको प्राप्त करनेके लिये गा-सेवा एक प्रधान साधन ह। पहले इस बातपर विचार किया जायगा कि गो-सेवासे लाकिक पुरुषार्थोकी—अर्थ ओर कामकी प्राप्ति कहाँतक आर किस प्रकार सम्भव हाती है।

ऊपर यह सकत किया जा चुका है कि धेनु आर धरती एक ही गा-शक्तिकी दो स्थूल विभूतियाँ हे। अत इनम वस्तुत काई भद नहीं है। शास्त्र कहते ह—गोआक भीतर सम्पूर्ण देवताआका वास ह आर मानव-जगत् धरतीपर टिका हुआ हे, यह बात सबको प्रत्यक्ष हे। अत मानवलोकको आधार-शक्तिका नाम धरा या पृथ्वी है आर दवलाककी आधारशक्तिको हम गो कहत हैं। इसालिये

गायसे पुरुषार्थ-चतुष्टयकी सिद्धि

'गोलोक' ऊपर है और 'भूलोक' नीचे। परतु गोलोकम भी दिव्यभूमि है और भूलोकम भी दिव्य शक्तिसम्पन्न गौएँ है। इन दोनाम घनिष्ठ साहचर्य है। दोनो ही एक-दूसरेको सहयोग प्रदान करती हैं। दूसर शब्दाम हम यह भी कह सकत है कि गौएँ ही भूमि है और भूमि ही गौएँ। दोना एक-दूसरीके प्राण ह। परस्परके सख्य और सहयोगसे ही दोना कार्य-क्षम होती हे। एकके क्षीण होनेपर दूसरीका क्षय होना अनिवार्य हे। यदि दानाक सख्य और सहयागमे कोई बाधा न पडे, तभी ये स्वय समुन्नत होकर जगत्‌के लिये अर्थ ओर काम प्रस्तुत कर सकती ह। शास्त्रामे भूदवीका श्रीदेवीकी सहचरी बताया गया है तथा गादेवीक भीतर भा लक्ष्मीका निवास माना गया है, अत इनके सेवनसे अर्थ या धन-सम्पत्तिका विस्तार होना स्वाभाविक ही है।

अन्नपर ही जगत्‌के प्राणियाका जीवन निर्भर है। वह अन्न गेहूँ, धान फल-मूल, पत्र-पुष्प, घास-चारा, दूध-दही आदि किसी भी रूपम क्या न हो, उसके उत्पादनकी आधार-भूमि गौ ही है। 'गो' मे धेनु और धरती दानाकी ओर लक्ष्य है। और इसी व्यापक दृष्टिकोणस गोधनकी अधिक महिमा गायी गयी हे। सब प्रकारक अन्नाको केवल दो भागाम विभक्त किया जा सकता है—दुग्धान्न और कृष्यन्न। दूध तथा उससे तेयार होनेवाल खाद्य पदार्थोका नाम 'दुग्धान्न' है। शष सब अन्न 'कृष्यन्न' के अन्तर्गत समझे जाते ह। इन दानोका पृथक्-पृथक् मण्डल है। जिस मण्डलसे दुग्धान्नका प्रादुर्भाव हाता है उसका नाम 'पशुचक्र' है तथा 'कृष्यन्न' के उत्पादक मण्डलको 'कृषिचक्र' कह सकते हैं। पशुचक्रकी अधिष्ठात्री देवी धेनु माता ह ओर कृषिचक्रकी धरती माता। पशुचक्रसे प्राप्त होनेवाले लाभ गारक्षापर निर्भर ह ओर कृषिचक्रसे होनेवाले लाभ कृषिक विकासपर। य दाना चक्र सदा एक-दूसरको शक्ति पहुँचाते हुए विश्वकी सर्वाङ्गीण उन्नतिमे योग देते रहते ह।

चित्रम जा 'गोरक्षा' आर 'कृषि' नामक दा वृत्त हैं, उनक भातर ध्यानपूर्वक दृष्टिपात करनसे पशुचक्र ओर कृषिचक्रके उपयाग एव पारस्परिक सहयागका रहस्य स्पष्टरूपस समझम आ जायगा। उक्त दाना चक्र षड्दल कमलके रूपम अङ्कित किय गये,हे। पहल पशुचक्रक छहा दलाका विवरण उपस्थित किया जाता ह। ऊपरवाले दलमे धेनु मातासे होनेवाले बछडेका उपयोग दिखाया गया है। गायका समुचित रूपसे पालन-पोषण होनेपर वह उत्तम बछडा पैदा कर सकती है। बछडा आगे चलकर यदि बनाया जाय ता उत्तम सॉड बन सकता है जिसस गावशकी रक्षा आर वृद्धि होगी। यदि बछडका बैल बना लिया गया तो वह खेती और वाहनके काम आ सकता है। इस प्रकार खेतीम सहायक होकर पशुचक्रक बछडसे कृषिचक्रकी उन्नतिम याग प्राप्त होता हे। दूसरे दलम पशुआकी देख-भालका लाभ बताया गया हे। पशुआके आरामसे रहने ओर पालन आदिकी सुव्यवस्था होनेसे तीन प्रकारके लाभ हागे एक ता अच्छा दुधार गायाके रहनेस उत्तम दुग्धालयकी स्थापना हो सकती हे। देख-भालसे उसमे किसी प्रकारकी गडबडका भय नहीं रहता। दूसरे अच्छे बलिष्ठ पशु तैयार हाकर खेतीका अच्छ पैमानेपर बढा सकते ह। तीसरा लाभ यह है कि जो पशु स्वय अपनी मृत्युसे मरगे, उनके चमडोका सग्रह करके एक अहिसक चर्मालयकी व्यवस्था की जा सकता हे। दुग्धालयसे दूधका खेतीसे अनाजका और चर्मालयसे चमडकी बनी हुई वस्तुआका व्यापार हा सकता है, जिससे अर्थकी प्राप्ति होगी। तीसरे दलम खादकी उपयोगिता दिखायी गयी हे। पशुआक गोबर गोमूत्र और रद्दी घास आदिको एकत्र सग्रह करके उससे अच्छी खाद तैयार की जा सकती है, जो धरतीकी उत्पादनशक्तिको बढाकर और पोधाके लिये खूराक पहुँचाकर कृषिकी उन्नतिम याग दगी। चोथे दलम मृत पशुआके शरीरके अवशिष्ट भागकी उपयागिताकी आर ध्यान आकृष्ट किया गया हे। अक्सर लाग मरे हुए पशु चमार आदिको दे डालते हैं या फक दते हैं। यह उसका बहुत बडा दुरुपयोग हे। मृतावशेष हड्डी और मासको जमीनमे गाड देनेसे बहुत अच्छी खाद तैयार हो सकती ह, जा खेतीकी उपजको बढानेमे विशष सहायक सिद्ध होगी और चमडाका सग्रह करके अहिसक चमडे आदिके कारखाने खोल जा सकते हैं, जो आर्थिक उन्नतिके प्रधान साधन ह। गारक्षाका व्रत लनेवाले प्रत्यक विचारशील मनुष्यको एसे ही कारखानाक जूते आदि पहनने चाहिये। पाँचव दलम उत्तम बछियासे होनेवाले लाभकी ओर सकेत हे। धेनु माताकी दो सतान ह—बछडा और बछिया। इनमे बछडके उपयोगकी चर्चा

प्रथम दलके वर्णनमे की जा चुकी है। अब बछियाका उपयाग बताया जाता ह। उत्तम बछिया आगे चलकर बहुत अच्छी 'गाय' बन सकती है। वह दुधार गाय होकर दूध दगी। स्वय भी बछिया आर बछडा पैदा करगी और उसका दिया हुआ बछडा बलवान् वाहन हाकर जगत्को सदा लाभ पहुँचाता रहगा। इस पकार वह 'काम' का साधन प्रस्तुत करती हुई पशुचक्रकी उत्तरोत्तर उन्नतिमे लगी रहेगी। छठे दलमे दूधक चमत्काराका दिग्दर्शन कराया गया है। वैज्ञानिक अन्वपक खूब छानबीन करक इस निश्चयपर पहुँचे हैं कि दूधकी जोडका दूसरा कोई खाद्य पदाथ ससारम नहीं है। शरारका स्वस्थ सबल आर सुपुष्ट बनानेवाले सभी आवश्यक तत्त्व गोदुग्धमे पर्याप्त रूपसे पाय जाते है। उसम ऊँचे दर्जेका विटामिन, स्नेह-पदाथ क्षार-पदार्थ आर बढिया प्रोटीन मौजूद ह। एसे सुधोपम गुणासे युक्त दूध या दूधसे बननवाल खाद्य पदार्थोका सेवन करनेस जगत्क स्वास्थ्यकी रभा हो सकती है। स्वास्थ्य-सुधार कान नहीं चाहता। इस प्रकार धनु माता पशुचक्र आर कृपिचक्रकी उन्नतिक साथ-साथ मनुष्यके 'अर्थ' आर 'काम'-रूपी लाकिक पुरुपार्थोको सिद्ध करता ह।

अब कृपिचक्रपर दृष्टिपात काजिय। इसक भी पूर्ववत् छ दल ह। ऊपरवाल दलम, जिसे प्रथम दल समझना चाहिय, धरतीसे उत्पन्न हानेवाले फल-फूल आदिका उपयागिता बतायी गयी है। फल-फुल और शाक-आदिम उपयोगी विटामिनका अश माजूद रहता है। उनम शर्कराकी प्रधानता हाती हे तथा क्षार-पदार्थकी भी कमी नहीं रहती। इस प्रकार उन्हे बहुत उपयोगी खाद्य माना गया ह। य वनस्पतिसे बननेवाले खाद्य पदार्थ भा ससारके स्वास्थ्य-सम्पादनम विशप सहायक सिद्ध होते हैं इस रूपम इनसे 'काम' की सिद्धि हाता ह। दूसर दलम तिलहनके लाभाका उल्लेख ह। धरती माता हमार लिय जा दूसरा उपयागा वस्तु उत्पन्न करती ह वह तिलहन हे। तिलहनस तल तयार हाता ह। यह खाने आर जलानक भा कामम आता ह। इससे इत्र आर दवा आदि भा बनत हैं। तिलहनम जा स्निग्धता ह उस तलक रूपम पृथक् कर लिया जाता ह आर साठा बच जाता ह। साठाका खली कहत ह जा पशुआक खानक काम आता ह। तल आदि खाद्य पदार्थ उचित रूपसे उपयोगम लनपर जगत्क स्वास्थ्यकी रक्षा करते है। दूसरी आर तेलसे उद्योग-धधाका प्रोत्साहन मिलता ह। तेल आदिके कारखाने चलते हैं। इस प्रकार तिलहनस अथ आर काम दानाकी सिद्धि हाती हे। साथ हा यह खलीके रूपम परिणत हाकर पशुचक्रकी भा पुष्टि करता है, क्याकि खला पशुआका बहुत उत्तम टानिक खाद्य है। खली खादके काम भी आती हे। तीसर दलम खादकी चर्चा हे। धरतीसे तीन प्रकारका खाद तयार होती है—नैसर्गिक खाद नाइट्राजन खाद और मिश्र खाद। ये ताना हा खाद धरतीको अधिक उर्वरा बनाती हे, इसकी उपजाऊ शक्तिका बढाती हे आर इस प्रकार कृपिचक्रकी उन्नतिम योग दती ह। चाथ दलमे तन्तुक गुण दिखाय गये हैं। पाट कपास आर सन आदि तन्तुक अन्तगत समझ जाते हैं। इनस पाट-कपडेकी बडी-बडी मिला आर चरखा-करघा आदि गृहउद्यागाको प्रश्रय मिलता है, जिससे महान् अर्थलाभका सम्भावना रहती ह। दूसरा फायदा यह ह कि पाटसे हरी खाद तयार हाती है, जिसस कृपिचक्रको बल मिलता है। पाँचव दलम घास-चारेका उल्लख है। धरनी माता जा घास-चारा आदि उत्पन्न करती हे, वह गोआ तथा अन्यान्य पशुआका खाम भाजन हे। कुछ कालतक तो हरा चारा पशुआके उपयागम आता है, फिर सूखनपर भूसा पुआल या सूखे चारेक रूपमे उसका सग्रह किया जाता हे, जो सालभर गोआके उपयागम आता ह। साइलज—दाबघासस भी पशुआका पापण हाता हैं। साथ ही घासचारस मिश्र खाद भा तैयार हाती है। इस प्रकार ये घास-चार पशुचक्र आर कृषिचक्र दानाक समान रूपस पापक हात ह। छठ या अन्तिम दलम खुराकका चचा का गयी ह। धरतास गहूँ, धान आदि अनाज अरहर चन आदि दालक काम आनवाल अन्न साग-तरकारी आर इख आदि उत्पन्न हात ह जा मनुष्याक ता खास भाजन हैं ही पशु आदिक भी उपयागम आत ह। अत एक आर ता य पशुचक्रका पुष्टि करत हैं दूसरा आर उत्तम भाज्य प्रस्तुत करक मानव-जगत्का स्वास्थ्य सुधारत आर सब तरहका कामनाआका सिद्धिम सहायक हात ह। तासरा लाभ यह हाता ह कि इखस गुड आर चानाक कारखान चलत ह आर अन्नका मडीम अनाजका भी व्यापार हाता ह इस प्रकार इन

व्यवसायासे महान् 'अर्थ' की सिद्धि होती है।

उपर्युक्त विवेचनस यह स्पष्ट है कि गोदेवी और भूदेवी परस्परकी सहायतासे सुपुष्ट हो प्राणिमात्रके लिये अन्न ओर धन प्रस्तुत करती है। अन्नसे जगत्का स्वास्थ्य जो सबको अभीष्ट है, सुरक्षित रहता हे और धनसे अर्थ-सुलभ 'काम' की भी सिद्धि होती है। अत गौ हमारे लिये लौकिक पुरुषार्थोका—अर्थ और कामका अमोघ साधन है, इस बातमे तनिक भी सदेह नहीं रह जाता। अब पारमार्थिक पुरुषार्थ—धर्म ओर मोक्षकी सिद्धिमे गोका कहाँतक हाथ ह, इस विषयपर विचार किया जाता है। गोदेवीकी कृपाद्वारा स्वास्थ्य आर शक्तिसे सम्पन्न जगत् निष्कामधर्मके अनुष्ठानम समर्थ होता ह और उसक द्वारा परम मोक्ष प्राप्त कर लता है। इस विषयको कुछ अधिक स्पष्ट करनेकी आवश्यकता जान पडती ह। धर्मका प्रधान साधन है स्वस्थ और नीरोग शरीर[१]—'**शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्।**' यहाँ धर्म उपलक्षणमात्र है। वास्तवमे सभी पुरुषार्थ स्वस्थ शरीरद्वारा ही साध्य ह। अत गोमाता जगत्को स्वस्थ बनाकर अप्रत्यक्षरूपसे सभी पुरुषार्थोके साधनमे योग देती है। उक्त चार पुरुषार्थोम धर्मका ही महत्त्व सबसे अधिक हे। उसक साधनसे सभी कुछ सध जात हैं। वही सकामभावस करनेपर अर्थ और कामका साधक होता ह—'**धर्मादर्थश्च कामश्च**' तथा वही निष्कामभावसे पालित होकर मोक्षका प्राप्ति कराता है। धनके प्रमुख साधनाम कृषि, गोरक्षा ओर वाणिज्यका ही नाम लिया जाता हे। इन तीनोकी सफलता गोसेवापर ही निर्भर है। आज ससारके सामने सबस बडी समस्या है अन्न और वस्त्रकी। गोदेवीकी उपेक्षासे ही यह जटिल समस्या हमारे सम्मुख उपस्थित हुई है। रूई ओर अनाज दाना धरतीस ही हानवाली वस्तुएँ ह, इनकी उत्पत्ति गोपुत्रा—बलिष्ठ बैलाके ही अधान है। जिन दशाम मशीनासे खेती का जाती है वहाँकी चचा हम नहीं करत। भारतवषम ता कितने ही युगासे गो-जाति ही अन्न-वस्त्रकी समस्याका हल करती आ रही है। इस मशीनाक युगम जब ससारकी व्यापारिक उन्नति बहुत बढी हुई समझी जाती है, सोने-चाँदी सपने हो रहे हैं। किंतु प्राचीन कालमे जब गोधनकी अधिकता थी, प्रतिदिन लाखो गोआके सीगो और खुराम सोने-चाँदी मढकर उन्ह दान कर दिया जाता था। उस समय धर्ममूलक अर्थका ही बाहुल्य था। कामकी प्राप्तिमे भी धर्मका बहुत बडा हाथ है। कामनाएँ दो प्रकारकी हे—अर्थाधीन ओर दैवाधीन। बाजारोम बिकनेवाली सासारिक सुख-भोगकी वस्तुएँ ही अर्थसे प्राप्त हो सकती ह। धन किसीको पुत्र नहीं दे सकता, दैवी प्रकोपसे किसीकी रक्षा नहीं कर सकता। ये सब कामनाएँ धर्मसाध्य हे। धर्मद्वारा उत्तम प्रारब्धका निर्माण करके अथवा कामनासिद्धिके प्रतिबन्धकोका हटाकर अभीष्ट कामना प्राप्त की जा सकती है। गोसेवासे 'अर्थ' और 'धर्म' दोनाकी प्राप्ति हाती है, अत उसके द्वारा दोना तरहकी कामनाएँ सिद्ध हा सकती हैं।

शास्त्रामे धर्मका आधिदैविक स्वरूप वृषभ बताया गया है। इस दृष्टिसे गोएँ धर्मकी जननी ह। भगवान् श्रीकृष्णने तो इन्द्रकी पूजा बद कराके गो-पूजाका प्रचार किया था जो अबतक प्रचलित है। उन्होने स्पष्ट कहा था—'*गावोऽस्मद्दैवत तात*' (गोएँ हमारे लिये देवता हैं)।' जिन्हे भगवान् भी देवता मान, उनकी महत्ताके विषयम अधिक क्या कहा जा सकता है। देवपूजाका महत्त्व अधिक ह। देवपूजासे किसी एक ही देवताका—जिसकी पूजा की जाती है, उसीको हम प्रसन्न कर सकत ह, परतु गोआकी सेवा ओर पूजासे सम्पूर्ण देवताओ तथा साक्षात् भगवान्की भी प्रसन्नता प्राप्त होती है, क्योकि गोआके प्रत्येक अवयवमे—रोम-रोमम देवताओका निवास हे। गोसेवाके अनेक प्रकार हैं। गौआके रहनेके लिये उत्तम स्थानका प्रबन्ध करे, जहाँ सर्दी, गर्मी, आँधी और पानीसे उनका भलीभाँति रक्षा हो सके। भूमि ऐसी हो, जहाँ वे आरामसे बैठ सकें। उन्हे डाँस-मच्छरासे बचानेका भी पूरा ध्यान रखे। मौसमके अनुकूल उनक खान-पानकी अच्छी व्यवस्था करे। उनकी प्रत्येक सेवाम स्वार्थको छोडकर धर्मको ही आगे रखे। ऐसा न हो कि दूध कम देनेके कारण उनकी

१-प्रत्यक्ष गो-सेवा तथा गो-सेवा-मूलक (गौ और भूमि तथा उनकी प्रजा समस्त प्राणीकी सेवा बने इस) बुद्धिसे जितने भी कार्य होते हे उनसे चित्त-शुद्धिरूप मानसिक स्वास्थ्य तथा मनकी सर्वसिद्धिप्रदायिनी एव परमपुरुषार्थ मोक्षकी ओर ले जानेवाली नीरोगता प्राप्त होती है—यह शास्त्रसिद्ध है।

खूराक ही कम कर दी जाय, उन्हे भूखा रखकर कष्ट दिया जाय। ऐसा करना महान् पाप है। उनके घूमने और चरनेकी अच्छी व्यवस्था हो। उन्हे ठीक समयपर घास-भूसा, दाना और पानी मिलते रहे—इस बातकी ओर पूर्ण ध्यान रखा जाय। उनके शरीरको सहलावे, प्रतिदिन सवेरे-शाम उन्हे प्रणाम करे। रातमे गौओके ही पास सोय, वहाँ दीपक जलाये। प्रतिदिन रसोईमसे पवित्र अन्न निकालकर उन्हे ग्रास अर्पण करे, देवबुद्धिसे उनकी पूजा करे। उन्हे जूँठी अपवित्र वस्तुएँ खानेको न दे। उनके रहने और खाने-पीनेके स्थानको झाड-बुहारकर साफ रखे। जहाँ गोशाला होती है, गौएँ रहती हैं, वहाँ सभी तीर्थो ओर देवताओका वास होता है, अत उसे देवस्थान समझकर स्वच्छ एव पवित्र रखे। गौओको लात न दिखाये, कभी उनपर प्रहार न करे। उनकी ओर थूके नहीं। गौओके स्थानके समीप मल-मूत्र न करे, गदगी न फके। गौओकी ओर पैर करके न सोये। पुण्यपर्वके दिन फूल-मालासे अलकृत करके गौओकी पूजा करे। उन्हे इतना न दुहे, जिससे बछडेको दूध ही न मिले। इस प्रकार सावधानीके साथ गोसेवा करनेवाला मनुष्य धर्मके उत्तम फलको पाता है।

जो लोग स्वार्थ या लोभके वशीभूत होकर गौओके कष्टकी ओर ध्यान नहीं देते वे महापापी हैं। जिनके सहयोग या प्रेरणासे गौएँ कसाइयोके घर पहुँचती हैं, वे अनन्त कालतक नरकोके कष्ट भोगते है। वे कसाई, जो धर्मान्धताके कारण या मोहवश आजीवन इस क्रूरकर्मके द्वारा जीविका चलाते है, उनकी परमात्माके दरबारमे कैसी भयकर दुर्गति होती है—इस बातकी ओर उनका ध्यान नही जा रहा है। हिंदू, मुसलमान, ईसाई—कोई भी क्या न हो, गाएँ सबकी माता हैं। गौओसे सबका जीवन चलता है। गौओका दूध सभी पीते है और गौओकी कमाई सब खाते है। इतना होनेपर भी जो गोमाताके पालन और रक्षाकी ओर ध्यान नहीं देते उलटे उनका वध करके उन्हे उदरस्थ कर लेते है वे राक्षसो तथा पिशाचोसे भी गये-बीते हैं। उन्हे उस ईश्वरीय कोपका सामना करना पडेगा जिससे बढकर भयकर कुछ है ही नहीं। जो लोग फैशनके पुजारी हैं और पैरोमे मुलायम जूते ही पहनना पसद करते हैं उन्हे स्मरण रखना चाहिये कि उन्हीके कारण आज जूतोकी फैक्ट्रियोके लिये अनगिनत बछडोके प्राण इतनी निर्दयताके साथ लिये जाते हैं जिनकी चर्चा करने मात्रसे हृदय काँप उठता है, लेखनी शिथिल हो जाती है। उन्हे इस महापापमे पूरा-पूरा हिस्सा बँटाना पडेगा। परलोकमे जब भयानक यमयातना भोगनी पडेगी, उस समय यह फैशन उनकी रक्षा नही कर सकेगा। अत गौओकी सब प्रकारसे सेवा और रक्षा करना ही मनुष्यमात्रका परम कर्तव्य एव उत्तम धर्म है। वेदो और स्मृतियोमे गौओकी बडी भारी महिमा गायी गयी है। उनके सेवन और सरक्षणजनित धर्मकी भूरि-भूरि प्रशसा की गयी है।

ऊपर जो कुछ कहा गया है, उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गो-सेवासे अर्थ और कामकी प्राप्तिके साथ ही परम दुर्लभ धर्मकी भी सिद्धि होती है। वह धर्म यदि निष्कामभावसे युक्त हो तो वही चित्त-शुद्धिके द्वारा परम मोक्ष या परमानन्दकी प्राप्ति करा देता है। कोई भी शुभकर्म किया जाय, यदि उसमे आसक्ति, फलेच्छा, अहता और ममताका अभाव है तो वह गीतोक्त प्रणालीके अनुसार 'कर्मयोग' बन जाता है। तथा उसका अनुष्ठान करनेवाले मनीषी पुरुष जन्म-मृत्युरूपी बन्धनसे मुक्त हो अनामय परम पदको प्राप्त हो जाते है—'**जन्मबन्धविनिर्मुक्ता पद गच्छन्त्यनामयम्**।' जब सभी शुभकर्मोकी यह स्थिति है, तब गोसेवाके द्वारा मोक्ष होनेमे क्या सदेह हो सकता है? गोसेवा वेदशास्त्रानुमोदित सर्वोत्कृष्ट दिव्य कर्म है। साक्षात् भगवान्ने भी गौओकी सेवा तथा आराधना करके उनका महत्त्व बढाया है। उन्होने उपदेश और आचरण दोनोके द्वारा गोसेवाका आदर्श हमारे सामने उपस्थित किया है। गोसेवासे भगवदाज्ञाका पालन होता है, अत गौओके साथ-साथ भगवान्की भी प्रसन्नता प्राप्त होती है। भगवान्के प्रसन्न होनेपर मुक्तिकी क्या बिसात है जो न मिले। वह तो गोभक्त तथा भगवद्भक्त पुरुषके चरणोकी दासी बन जाती है। वास्तवमे गोसेवा स्वभावसे ही भगवत्प्रीत्यर्थ कर्म है। उसका अनुष्ठान करनेवाला साधक '**स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव**।' के अनुसार निश्चय ही भगवान्का सानिध्य प्राप्त करता है। इस प्रकार गोमाता मानव-जगत्को पुरुषार्थ-चतुष्टयकी प्राप्ति करानेमे सर्वाग्रगण्य है, यह जानकर सबको सदा उसकी सेवा तथा रक्षामे सलग्न रहना चाहिये।

॥ श्रीहरि ॥

'कल्याण' का उद्देश्य और इसके नियम

उद्देश्य

भक्ति ज्ञान वैराग्य, धर्म और सदाचारसमन्वित लेखाद्वारा जन-जनको कल्याणके पथपर अग्रसरित करनेका प्रयत्न करना इसका एकमात्र उद्देश्य है।

नियम

१-भगवद्भक्ति, भक्तचरित, ज्ञान, वैराग्यादि ईश्वरपरक, कल्याण-मार्गमे सहायक अध्यात्मविषयक व्यक्तिगत आक्षेपरहित लेखोके अतिरिक्त अन्य विषयाके लेख 'कल्याण' म प्रकाशित नहीं किये जाते। लेखाको घटाने-बढाने ओर छापन-न-छापनेका अधिकार सम्पादकका है। अमुद्रित लेख बिना माँगे लाटाये नहीं जाते। लेखाम प्रकाशित मतके लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

२-'कल्याण' का वार्षिक शुल्क (डाक-व्ययसहित) भारतवर्षम ६५ ०० (सजिल्दका ७२ ००) और भारतवर्षसे बाहरके लिये (नेपाल, भूटानको छोडकर) US $ 10 (दस डालर) नियत है।

३-'कल्याण' का नया वर्ष जनवरीसे आरम्भ होकर दिसम्बरतक रहता है, अत ग्राहक जनवरीसे ही बनाये जाते हे। यद्यपि वर्षके किसी भी महीनेम ग्राहक बनाये जा सकते हैं तथापि जनवरीसे उस समयतकके प्रकाशित (पिछले) उपलब्ध अङ्क उन्हे दिय जाते हैं। 'कल्याण' के बीचके किसी अङ्कसे ग्राहक नहीं बनाय जाते छ या तीन महीनेके लिये भी ग्राहक नहीं बनाये जात हैं।

४-ग्राहकाको वार्षिक शुल्क मनीआर्डर अथवा बैकड्राफ्टद्वारा ही भेजना चाहिये। वी० पी० पी० से ग्राहकाको वी० पी० पी० डाकशुल्कके रूपम ५ ०० रुपये अधिक भी देने पडते हैं।

५-'कल्याण' के मासिक अङ्क सामान्यतया ग्राहकाको सम्बन्धित मासके प्रथम पक्षके अन्ततक मिल जाने चाहिये। अङ्क दो-तीन बार जाँच करके भेजा जाता है। यदि किसी मासका अङ्क समयसे न मिले तो डाकघरसे पूछताछ करनेके उपरान्त हमे सूचित करे।

६-पता बदलनेकी सूचना कम-से-कम ३० दिनाके पहले कार्यालयम पहुँच जानी चाहिये। पत्राम 'ग्राहक-सख्या', पुराना और नया पूरा पता स्पष्ट एव सुवाच्य अक्षराम लिखना चाहिये। यदि कुछ महीनाके लिये ही पता बदलवाना हो तो अपने पास्टमास्टरको ही लिखकर प्रबन्ध कर लेना चाहिय। पता बदलनेकी सूचना समयसे न मिलनपर दूसरी प्रति भेजनेम कठिनाई हो सकती है। यदि आपके पतेम कोई महत्त्वपूर्ण भूल हो या आपका 'कल्याण' के प्रेषण-सम्बन्धी कोई अनियमितता/ सुझाव हो तो अपनी स्पष्ट 'ग्राहक-सख्या' लिखकर हमे सूचित करे।

७-रग-बिरगे चित्रावाला बडा अङ्क (चालू वर्षका विशेषाङ्क) ही वर्षका प्रथम अङ्क होता है। पुन प्रतिमास साधारण अङ्क ग्राहकाको उसी शुल्क-राशिमे (बिना मूल्य) वर्षपर्यन्त भेजे जाते हैं। किसी अनिवार्य कारणवश यदि 'कल्याण' का प्रकाशन बद हो जाय तो जितने अङ्क मिले हो उतनेम ही सतोष करना चाहिये क्योंकि मात्र विशेषाङ्कका ही शुल्क ६५ ०० रुपये है।

आवश्यक सूचनाएँ

१-ग्राहकाको पत्राचारके समय अपना नाम-पता सुस्पष्ट लिखनेके साथ-साथ अपनी ग्राहक-सख्या अवश्य लिखनी चाहिये। पत्रमे अपनी आवश्यकता और उद्देश्यका उल्लेख सर्व-प्रथम करना चाहिये।

२-एक ही विषयके लिये यदि दोबारा पत्र देना हो तो उसमे पिछले पत्रका दिनाङ्क तथा पत्र-सख्या अवश्य लिखनी चाहिये।

३-'कल्याण' म व्यवसायियाके विज्ञापन किसी भी दरमे प्रकाशित नहीं किये जाते।

४-कोई भी विक्रेताबन्धु विशेषाङ्ककी कम-से-कम ५० प्रतियाँ हमारे कार्यालयसे एक साथ मँगाकर इसके प्रचार-प्रसारमे सहयोगी बन सकते हैं। ऐसा करनेपर ६ ०० रुपये प्रति विशेषाङ्ककी दरसे उन्हे कमीशन दिया जायगा। जनवरी मासका विशेषाङ्क एव फरवरी मासका साधारण अङ्क रेल-पार्सलसे भेजा जायगा एव आगेके मासिक अङ्क (मार्चसे दिसम्बरतक) डाकद्वारा भेजनेकी व्यवस्था है।

'कल्याण' की पद्रहवर्षीय ग्राहक-योजना

पद्रहवर्षीय सदस्यता-शुल्क ५०० ०० (सजिल्द विशेषाङ्कका ६०० ००) है। इस योजनाके अन्तर्गत व्यक्तिके अलावा फर्म प्रतिष्ठान आदि सस्थागत ग्राहक भी हो सकते हैं। यदि 'कल्याण' का प्रकाशन चलता रहा तो १५ वर्षोतक इन ग्राहकाको अङ्क जाते रहगे।

व्यवस्थापक—'कल्याण' पत्रालय—गीताप्रेस-२७३००५ (गोरखपुर)

गोसेवाका यथार्थ स्वरूप

वन्दनीयाश्च पून्याश्च गाव सेव्यास्तु नित्यश ।
गवा गोष्ठे स्थिताना तु य करोति प्रदक्षिणम्। प्रदक्षिणीकृत तेन जगत् सदसदात्मकम्॥
शृङ्गोदक गवा पुण्य सर्वाघविनिपूदनम्। गवा कण्डूयन चैव सर्वकल्मषनाशनम्॥
गवा ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते।
लवण च यथाशक्त्या गवा ये वै ददन्ति च। तेपा पुण्यकृता लोका गवा लोक व्रजन्ति ते॥
योऽग्र भक्त्या किंचिदप्राश्य दद्याद् गोभ्यो नित्य गोव्रती सत्यवादी।
शान्तो बुद्धो गोसहस्रस्य पुण्य सवत्सरेणाप्नुयाद्धर्मशील ॥
गोकुलस्य तृषार्तस्य जलान्ते वसुधाधिप । उत्पादयति यो विघ्न तमाहुर्ब्रह्मघातकम्॥
कृत्वा गवार्थे शरण शीतवातक्षम महत् । आसप्तम तारयति कुल भरतसत्तम॥
मनुष्यैस्तृणतोयाद्यैर्गाव पाल्या प्रयत्नत । देया पून्याश्च पोष्याश्च प्रतिपाल्याश्च सर्वदा॥
घासग्रासादिक देय निशि दीप सुभास्वर । इतिहासपुराणाना व्याख्यान सोपवीजनम्॥
अन्तस्तुष्टैर्यथाशक्त्या परिचर्या यथाक्रमम्। ताडनाक्रोशखेदाश्च स्वप्नेऽपि न कदाचन॥
तासा मूत्रपुरीषे तु नोद्वेग क्रियते क्वचित्। शोधनीयश्च गोवाट शुष्कक्षारादिकै सदा॥
ग्रीष्मे वृक्षाकुल वश्म शीततोये विकर्दमे । वर्षासु चाथ शिशिरे सुखोष्णे वातवर्जिते॥
उच्छिष्ट मूत्रविद्श्लेष्ममल जह्यात्र तत्र च। रजस्वला न प्रवेश्या नान्त्यजातिर्न पुश्चली॥
न लङ्घयेद्वत्सतरीं न क्रीडेद्गोष्ठसनिधौ। न गन्तव्य गवा मध्ये सोपानत्कै सपादुकै ॥
हस्त्यश्वरथयानैश्च सवितानै कदाचन। दक्षिणोत्तरगै प्रह्वैर्गन्तव्य च पदातिभि ॥
गाव कृशातुरा पाल्या श्रद्धया पितृमातृवत्।

गाये प्रतिदिन वन्दनीय पून्य तथा सेवा-उपासनाके योग्य हैं। जो गोशालामे स्थित गौआकी प्रदक्षिणा करता है, उसने मानो सम्पूर्ण चराचर विश्वकी परिक्रमा कर ली। गायाके सींगका जल परम पवित्र है, वह सम्पूर्ण पापाका शमन कर डालता है, साथ ही गायाके शरीरका खुजलाना-सहलाना भी सभी दोष-पापाका शमन करता है—धो डालता है। गायाको गोग्रास देनेसे दाता स्वर्गलोकम पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जो अपनी शक्तिके अनुसार गायाको लवण प्रदान करता है उन्हे श्रेष्ठ पवित्र पुण्यात्माआके लोकाकी प्राप्ति होती है और फिर साक्षात् भगवद्धाम—गोलोक भी प्राप्त हो जाता है। जो सत्यवादी शान्त, गौआका भक्त व्यक्ति भोजन करनेके पहले नित्य थोडा-बहुत गोग्रास सालभरतक गौआको देता है—भोजन कराता है और उसके बाद स्वय भोजन करता है, वह अत्यन्त ज्ञानी बन जाता है और उस धर्मशीलका हजार गोदानका पुण्यफल प्राप्त हा जाता है। जो भूख-प्याससे व्याकुल गायोंको जलाशयमे पानी पीनेसे राकता है, विघ्न उपस्थित करता है उसे ही शास्त्रकाराेने असली ब्रह्महत्यारा कहा है। गौओके लिये सर्दी तथा गर्मीम धूप ओर ठडसे बचानेवाली गाशालाका जो निर्माण करता है, वह अपने सात कुलका उद्धार कर देता है। मनुष्यको जैसे बन पडे घास-फूस आदि खिलाकर प्रयत्नपूर्वक गायोका अवश्य पालन करना चाहिये। गौएँ सदा ही पालनीय पोषणीय पूज्य और दान देनेके याग्य हैं। गायोको श्रद्धापूर्वक तृण, गोग्रास आदि सदा देना चाहिये। रातम तेजोमय दीप भी गोशालाम प्रज्वलित करना चाहिये। गायाको थोडा पखा आदि झलकर इतिहास-पुराणाके प्रसग भी सुनान चाहिये। अन्तर्हृदयसे प्रसन्नतापूर्वक गायोकी यथाशक्ति क्रमपूर्वक शुश्रूषा-परिचर्या करनी चाहिये। उनपर क्रोध, मार-पीट, दुर्व्यवहार आदि तो भूलकर स्वप्नम भी नहीं करना चाहिये। उनके मल-मूत्रके परित्यागके समय तनिक भी बाधा पहुँचाकर उन्ह उद्विग्न नहीं करना चाहिये। गायाके रहनेकी जगहको सूखे खार-पदार्थ आदिसे झाड-बुहारकर पूरी तरह स्वच्छ रखना चाहिये। ग्रीष्मम गायोकी गाशाला वृक्ष-समूहाकी छाया एव शीतल जलवाले स्थानमे, बरसातमे कीचडसे विवर्जित स्थानमे और शिशिर ऋतुमे जहाँ थोडी गर्मी हो, धूप आवे, सुख हो तथा ठडी हवाका भय न हा एसे स्थानम बनानी चाहिये। गाशालाम अथवा उसके आस-पास भूलकर भी किसी प्रकारका जूठन, थूक, खखार, मल मूत्र आदिका परित्याग नहीं करना चाहिये। गोशालामे रजस्वला, पुश्चली या चाण्डाली स्त्रीका प्रवश नहीं होने देना चाहिय। छोटी बछियाके ऊपरसे लाँघकर पार नहीं होना चाहिय (उनक गलेमे बँधी रस्सीका भी उल्लङ्घन नहीं करना चाहिये)। गोशालाके सामन कोई खेल-कूद भी नहीं खेलना चाहिये। जूता या खड़ाऊँ पहनकर भी गायाके बीचम नहीं जाना चाहिये। हाथी घोडा तथा किसी यानपर चढकर या पालकी आदिपर छाता आदि लगाकर भी गायाक बीच नहीं जाना चाहिये। सदा ही पैदल चलकर गायोको दाहिने रखकर नम्रतापूर्वक जाना चाहिये। जो गाये भूख-प्याससे आतुर तथा दुबली-पतली अथवा किन्हीं राग-दु खसे व्याकुल हो, उनकी माता-पिताके समान श्रद्धापूर्वक सेवा करनी चाहिये किसी प्रकार भी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।